वेदाध्ययनसम्पन्ना सर्वे यज्ञाभिनन्दिनः । आशंसन्तो जयं युद्धे बलेनाभिमुखा रणे ॥ ४ ॥ अभियाय च दुर्धर्षां धार्तराष्ट्रस्य वाहिनीम् । प्राङ्मुखाः पश्चिमे भागे न्यविशन्त ससैनिकाः ॥ ५ ॥ समन्तपञ्चकाद्बाह्यं शिबिराणि सहस्रशः । कारयामास विधिवत् कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ६ ॥ शून्येव पृथिवी सर्वा बालवृद्धावशेषिता । निरश्वपुरुषेवासीद्रथकुञ्जरवर्जिता ॥ ७ ॥ यावत्तपति सूर्यो हि जम्बूद्वीपस्य मण्डलम् । तावदेव समावृत्तं बलं पार्थिवसत्तम ॥ ८ ॥ एकस्थाः सर्ववर्णास्ते मण्डलं बहुयोजनम् । पर्याक्रामन्त देशांश्च नदीः शैलान् वनानि च ॥ ९ ॥ तेषां युधिष्ठिरो राजा सर्वेषां पुरुषर्षभ । आदिदेश सवाहानां भक्ष्यभोज्यमनुत्तमम् ॥ १० ॥ सप्ताश्च विविधास्तात तपरात्रौ युधिष्ठिर । एवंवेदी वोद्धव्य

में उतरकर कौरवों के सन्मुख वर्त्तमान हुए, और पराक्रम के द्वारा विजयकी आशा रखनेवाले युद्धभूमि में वर्त्तमान दुर्योधन के उस दुःखसे महाखेदित सेनाके सम्मुख पहुँचकर कुरुक्षेत्र के पश्चिम भाग में सेनाओंके मनुष्यों समेत पूर्वाभिमुख हो स्थिरता से निपतहुए । ५ । फिर कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर ने स्वतन्त्रपञ्चक से बाहर अपनी बुद्धिके अनुसार हजारों शिविर अर्थात् खपड़र तवू तैयार किये और वृद्ध बालक स्त्री इनको छोड़कर सब पृथ्वी के मनुष्य मात्र हाथी घोड़े रथ इत्यादि समेत यहांतक इकट्ठे हुए कि पृथ्वी के मद्देश निर्जन से होगये, हे राजेन्द्र जन्मेजय जहांतक कि सूर्य मेंप्रकाश करता हुआ से तप्त करता है उस पृथ्वी मंडल के सबराजा लोग अपनी २ सेनाओं समेत आकर इकट्ठे हुवे सब वर्णोंने देशनदी पर्वतों को और बहुत योजन के उस पृथ्वी मंडलका उल्लंघन करके एक स्थानमें निवास किया । ९ । तब महा बुद्धिमान राजायुधिष्ठिर ने उन श्रेष्ठ श्रेष्ठी राजाओं से लेकरम्लेच्छपर्यन्त लोगोंके निमित्त बहुत उत्तम २ प्रकारके भोजनों के बनवानेकी आज्ञादी और भोजनके अनन्तर रात्रि के समय सब लोगों का

against the Kauravas Those scholars of the Vedas too great delight in war and being desirous of victory faced the battle field with their troops Approaching the army of Duryodhan the invincible Pandavas stationed their armies to the west of the plain with their faces looking Eastward 5 Yudhishthir the son of Kunti caused thousands of tents to be pitched in a regular order beyond Samantpanchak It seemed as if the whole earth had poured down there all its horses men chariots and elephants and had kept only the children and aged people at home The whole of Jambudvip under the sun joined to make up those forces People of all races assembled there having marched for miles over hills rivers woods and plains 9 Yudhishthir, the best of men ordered good food and other necessities to be supplied to the warriors and their beasts. He gave

पाण्डवेयोऽय मित्युत ॥ ११ ॥ अभिज्ञानानि सर्वेषां सज्ञाश्चाभरणानिच । योजयामास कौरव्यो युद्धकाल उपास्थिते ॥ १२ ॥ दृष्ट्वाध्वजाग्रं पार्थस्य धार्त्तराष्ट्रो महामनाः । सह सर्वैर्महीपालैः प्रत्यव्यूहतपांडवम् ॥१३॥ पाण्डरेणातपत्रेण ध्रियमाणेन मूर्द्धनि । मध्ये नागसहस्रस्य भ्रातृभिः परिवारितः ॥ १४ ॥ दृष्ट्वा दुर्य्योधनं हृष्टाः पाञ्चाला युद्धनन्दिनः । दध्मुः प्रीता महा शङ्खान् भेरीश्च मधुरस्वनाः १५ ततः प्रहृष्टां तां सेनामभिमोक्ष्याथ पाण्डवाः । बभूवुर्हृष्टमनसो वासुदेवश्च वीर्यवान् ॥ १६ ॥ ततो हर्षं समागम्य वासुदेवधनञ्जयौ । दध्मतुः पुरुषव्याघ्रौ दिव्यौ शंखौ रथे स्थितौ ॥ १७ ॥ पञ्चजन्यस्य निर्घोषं देवदत्तस्य चोभयोः । श्रुत्वा तु निनदं योधाः शकृन्मूत्रं प्रसुस्रुवुः ॥ १८ ॥ यथा सिंहस्य नदतः स्वनं श्रुत्वेतरे

उत्तम स्वच्छ बिस्तरों समेत शय्या सोनेकोदीं इस प्रकारसे इस बुद्धिमान पांडवों के बड़े भाई युधिष्ठिरने सबका यथोचित् मान सन्मान करके युद्ध वर्त्तमान होनेके समयपर अपनी सेनाके मनुष्यों की पहचान के लिये सबके चिह्ननाम और आभूषण रथआदि में लगवादिये, तब तो महासाहसी दुर्योधनने अर्ज्जुनकी ध्वजा पताकाको देखकर सब राजाओं समेत अपनी सेनाको पांडवों से लड़नेके लिये युद्धमें सन्नद्ध किया और आपभी अपने श्वेत छत्रको धारण करके भाइयों समेत हजारों हाथी घोड़ों समेत उपस्थितहुआ। १४ । दुर्योधन की इस धूमधाम और तैयारी को देखकर युद्धाभिलाषी प्रसन्नचित्त विजय के चाहने वाले पांचालन बड़े शब्दायमान शंख और मधुरवाणी वाली दुन्दुभी को बजाया तदनन्तर पांडव और श्री कृष्णजी उस अपनी सेनाको प्रसन्नचित्त देखकर महा आनन्दितहुये फिर श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों वीरपुरुषोंने रथमें सवार होकर अपने दिव्य शंखों को ध्वनिकी इनदोनों पुरुष सिंहवीरोंके पांचजन्य और देवदत्त नाम शंखोंकी ध्वनिको सुनतेही कौरवी सेनाके वीरोंने मारे भयके मूत्र और विष्ठा

his men various watchwords in order to distinguish them from others and fixed for them names and badges for recognition during battle Seeing the banner of the son of Kunti, the magnanimous son of Dhritiashtra, with the white umbrella raised over his head, surrounded by a thousand elephants and accompanied by his hundred brothers and kings began to array his own troops against the Pandavas. 14 The warlike Panchals blew their conchshells and beat the sweetsounding cymballs in glee at the sight of Duryodhan Arjun and valiant Vasudev were delighted to see those troops. The best of men, Vasudev and Arjun seated on the same chariot blew their celestial conchshells in great glee. The warriors were terrified by the sound of their peals as deer do on hearing a lion roar. A terrible dust enveloping the sun and hiding all things from view, arose with

मृगाः । त्रसेयुर्भिनदं श्रुत्वा तथासीदत तद्बलम् ॥ १९ ॥ भरातिष्ठद्रजो भौम
न प्राज्ञायत किञ्चन । अस्तं गत इवादित्ये सैन्येन सहसा वृतः ॥ २० ॥ ववर्ष
तत्र पर्जन्यो मांसशोणितवृष्टिमान् । दिक्षुसर्वाणि सैन्यानि तदद्भुतमिवाभवत् ॥२१॥
वायुस्ततः प्रादुरभून् नीचैः शर्करकर्षणः । विनिघ्नंस्तान्यनीकानि शतशोथसहस्रशः
॥ २२ ॥ उभे सैन्ये च राजेन्द्र युद्धाय मुदिते भृशम् । कुरुक्षेत्रे स्थिते यत्ते
सागरक्षुभितोपमे ॥ २३ । तयोस्तु सेनयोरासीद्द्भुतः सतुसङ्गमः । युगान्तेसम
नुप्राप्ते द्वयोः सागरयोरिव ॥ २४ ॥ शून्यासी पृथिवी सर्वा बालवृद्धावशेषिता ।
तेन सेनासमूहेन समानीतेन कौरवै ॥ २५ ॥ ततस्ते समयं चक्रुः कुरुपाण्डव-

करदी जैसे कि सिंहकी गर्जनाका सुनकर अन्य मृगादि पशु भयभीत होकर मूत्र पुरीषादि करडालते हैं वैसेही कौरवी सेनाभी शंखोंके शब्दोंको सुनकर व्याकुल होगई और पृथ्वीकी धूलि आकाशको ऐसी उड़ी जिसके कारण सूर्य अस्तंगतसा होगया और कुछनहीं जानागया । २० । और बादलने उससमय सेनाके चारों तरफ के मनुष्यों पर मांस और रुधिरकीवर्षाकी यहबड़ा आश्चर्यथा हुआ तदन न्तर नीचेकी ओरसे पृथ्वीके कंकड़ोंका खींचनेवाला वायु बड़े वेगसे ऐसा प्रचण्ड- हुआ कि जिसने संपूर्णसेना के मनुष्यों को घायल कर दिया हे राजेन्द्र इस प्रकारसे पीड़ित होकर दोनों ओरकी सेनाओं के मनुष्य युद्धकरनेके लिये अत्यन्त प्रसन्नचित्त कुरुक्षत्रके मैदानमें नियत हो सावधान और व्याकुल होकर शोभित सागरकी समानताको प्राप्तहुए अर्थात् उन दोनों सेनारूपी समुद्रों का ऐसा अपूर्व योग हुआ जैसा कि प्रलयके समय दोनों समुद्रों का सम्पात होता है, और सब पृथ्वी जिसमें केवल बालक और वृद्ध ही शेषरहगयथे वह कौरवोंके बुलायेहुए उनसेनाओंके समूहोंके कारणघोड़े मनुष्य रथ और हाथियों सेभी शून्य होगई २५

the march of the army 20. Flesh and blood dropped from a black cloud over the army It was a strange sight. The wind blew pieces of stone which hit hundreds and thousands of warriors Both the armies stood in great joy ready for action on the field of Kurukshetra, like two agitated oceans The encounter of the two armies, was very wonderful like the two oceans at the end of the Yug. On account of the great muster of the armies by the Kauravas the earth was divested of men and only children and aged people were left at home. 25. The Kauravas and the Pandavas with the Somaks then entered into certain conditions and rules to be observed during the battle as people under similar circumstances do to fight fairly and to secure safety to the party which has to retire Those engaged in contests of words should be fought against with words, those leaving

सोमका । धर्मान् संस्थापयामासुर्युद्धानां भरतर्षभ ॥ २६ ॥ निवृत्ते विहिते युद्धे
स्यात् प्रीतिर्नः परस्परम् । यथारूपं यथा योगं नच स्याच्छलनं पुनः ॥ २७ ॥ वाचा
युद्धे प्रवृत्तानां वाचव प्रतियोधनम् । निष्क्रान्तौ पृतनामध्यान्नहन्तव्या कदाचन २८
रथी च रथिना योद्धयो गजेन गजधूर्गतः । अश्वेनाश्वी पदातिश्च पादाते नैव भारत २९॥
यथा योग्यं यथा काम यथोत्साहं यथा बलम् । समाभाष्य प्रहर्त्तव्य न विश्वस्ते न
विह्वले ॥ ३० ॥ एकेन सह संयुक्तः प्रपन्नो विमुखस्तथा । क्षीणशस्त्रो विवर्माच न हन्
तव्यः कदाचन ॥ ३१ ॥ नसूतेषु न धुर्य्येषु नच शस्त्रोप नायिषु । न भेरी शंखवादेषु
प्रहर्त्तव्य कथञ्चन ॥ ३२ ॥ एवं ते समयं कृत्वा कुरुपाण्डव सोमकाः । विस्मय परमं

तदनन्तर उन कौरव पांडव और सोमकोंने नियम करके युद्धके इन धर्मों को नियतकिया कि इस नियत कियेहुये युद्ध के समाप्त होनेपर हम सबकी प्रीति परस्पर में होवे, इस निमित्त कि फिर किसीके एक से मिलाप में भिन्नभाव न होनेपावे वचन रूप शस्त्रों से सम्मुख होने वालोंको वचनोंहीसे लड़ना योग्य है सेना से बाहर होजाने वालेको कभी न मारना चाहिये रथीरथी से हाथीका सवारसे अश्वारूढ अश्वारूढस पैदल पैदल से लड़ने को योग्यहै अर्थात् जैसा कि उचित युद्ध होता है वैसाही अपने बलपराक्रम के साथ करना योग्य है और मुख से बोल कर शस्त्र प्रहार करना चाहिये परन्तु विश्वासित और व्याकुल मनुष्य पर शस्त्र प्रहार करना अयोग्यहै ३० और एक के साथ भिड़ेहुए शरणमें आयेहुए वा ऐसे व्याकुल लोग जो टूटे शस्त्र और बिना वस्तरके हों उनको कभी न मारना चाहिये इनके सिवाय सोतेहुयों को शस्त्रों के लाने वाले वा बनाने वालोंको भी न मारे और भेरी शंख नगाड़े आदि बाजोंपर किसी दशा में भी शस्त्र न चलाना चाहिये इसप्रकार उनसब परस्परदेखने वाले कौरव पांडव और सोमकों ने नियम करके बड़ा आश्चर्य किया इसके पीछे वह सब महात्मा वीर युद्-

---

ranks should not be slain, a charioteer should have a charioteer for an antagonist, an elephant rider with one of his own sort, a horseman should engage with a horseman and a foot soldier with a foot soldier Guided by considerations of fitness, willingness and courage one should give notice to another before striking No one should strike another who is unprepared, terrified, engaged with another, seeking quarter retreating, having unfit weapons or destitute of armour None should slay chariot drivers, beasts, men engaged in carrying weapons, beaters of drums or blowers of conchshells Having entered into the above-mentioned covenants, the Kauravas, the Pandavas and the Somaks gazed at one another with wonder And having thus formed themselves into battle array, those great warriors

जग्मु. प्रेक्षमाणा. परस्परम् ॥ ३३ ॥ निर्विश्य च महात्मानस्ततस्ते पुरुषर्षभा । रुपा. सुमनसो बभुवु सहसैनिका । ३४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वाण सैन्यशिक्षणे प्रथमोऽध्याय ॥ १ ॥

वैशम्पायन उवाच । तत पूर्वापरे सेने समीक्ष्य भगवानृषिः । सर्ववेदविदांश्रेष्ठो व्यास सत्यवतीसुत' ॥ १ ॥ भविष्यति रणे घोरे भरतानां पितामह' । प्रत्यक्षदर्शी भगवान् भूतभव्यभविष्यवित् ॥ २ ॥ वैचित्रवीर्य राजान स रहस्य ब्रवीदिदम् । शोचन्तमार्त्त ध्यायन्त पुत्राणामनय तदा ॥ ३ ॥ व्यास उवाच । राजन् परीतकालास्ते पुत्राश्चान्ये च पार्थिव । ते हिंसन्तीव सग्रामे समासाद्यतरेतरम् ॥ ४ ॥ तेषु कालपरीतेषु विनश्यत्स्वेव भारत । कालपर्यायमाज्ञाय मास्म शोके मन कृथाः ॥ ५ ॥ यदि चेच्छसि सग्रामे द्रष्टुमतान् विशाम्पते । चक्षुर्ददा

भूमि में प्रवेश करके, अपने पराक्रमी सेना के प्रसन्नचित्त मनुष्यों समेत मनमें प्रसन्न हुए ॥ १४ ॥

अध्याय ॥ २ ॥

वैशम्पायनबोले कि युद्धके नियम होने के पीछे सब वेदज्ञों में श्रेष्ठ सत्यवती के पुत्र भरतवंशियों के पितामह आगे होनेवाले युद्ध के वृत्तान्त के प्रत्यक्षदर्शी भूत भविष्य वर्त्तमान के ज्ञाता समर्थ भगवान वेदव्यास ऋषि कौरव पाण्डवों की सेनाको दोनों ओर तैयार देखकर उस शोचग्रस्त अपने पुत्रो के अन्याय के ध्यान करने वाले राजाधृतराष्ट्र से गुप्त मगाजन के साथ यहवचन बोले कि हे राजन तुम्हारे पुत्र और अन्य तुम्हार सहायक राजा लोग मृत्यु के वशीभूत हैं यह युद्धभूमि में एक २ दूसरे से सन्मुख लड़कर नाशको पावेंगे, हे भरतवंशी उन मृत्यु के वशीभूत और नाश होन वालों में समय की विपरीतता को

and best of men, with their troops betrayed the happiness of their hearts from their cheerful faces 34

CHAPTER II

"Seeing the two armies on the east and west ready to fight," said Vaishampayan, "Vyas the holy sage, son of Satyavati, best of men, scholar of the Vedas and grandfather of the Bharats, to whom the past, present and future were like the present, spoke the following words to Vichitravirya's royal son who was at that time distressed and sorrowful for the destructive policy of his own sons. "The days of thy sons and of other kings," said Vyas to Dhritrashtra, "are numbered They will destroy one another in battle and shall perish all, because the hour of their death is nigh Keep in mind the changes brought about by Time and donot give yourself up to sorrow I shall

निते पुत्र युद्धं तत्र निशामय ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । न रोचये ज्ञातिवधं द्रष्टुं ब्रह्मर्षिसत्तम । युद्धमेतत्त्वशेषेण शृणुयां तव तेजसा ॥ ७ । वैशम्पायन उवाच। एतस्मिन्नेच्छति द्रष्टुं संग्रामं श्रोतुमिच्छति । वराणामीश्वरो व्यासः सञ्जयाय वरं ददौ ॥ ८ । एष ते सञ्जयो राजन् युद्धमेतद्वदिष्यति । एतस्य सर्वसंग्रामे न परोक्षं भविष्यति ॥ ९ ॥ चक्षुषा सञ्जयो राजन् दिव्येनैव समन्वितः । कथयिष्यति ते युद्धं सर्वज्ञश्च भविष्यति ॥ १० ॥ प्रकाशं वाऽप्रकाशं वा दिवा वा यदि वा निशि । मनसा चिन्तितमपि सर्वं वेत्स्यति सञ्जय ॥ ११ ॥ नैनं शस्त्राणि च्छेत्स्यन्ति नैनं बाधिष्यते श्रमः । गावल्गणिरयं जीवन् युद्धादस्माद्विमोक्ष्यते ॥ १२ ॥ अहन्तु कीर्त्तिमेतेषां कुरूणां भरतर्षभ । पाण्डवानाञ्च सर्वेषां प्रथयिष्यामि मा शुचः ॥ १३ ॥

जानकर मनको शोकग्रस्त मत करो हे राजा जो तू इनको युद्धमें देखा चाहता है तो मैं हे पुत्र तुझको नेत्र देता हूं तू उनके युद्धों को देख । ६ । धृतराष्ट्र बोले कि हे ब्रह्मर्षियों में श्रेष्ठ मैं अपने जाति बन्धु और पुत्रोंका मारना नहीं देखना चाहता हूं केवल यही चाहता हूं कि आपके तेज से युद्धका सब वृत्तान्त सुनाकरू, वैशम्पायन बोले कि जब व्यासजीने जाना कि यह युद्ध देखना नहीं चाहता किन्तु पूरा पूरा वृत्तान्त युद्ध का सुनना चाहता है तब महावरदायी होकर उन्होंने सञ्जय को वर दिया और राजा से कहा कि हे राजा यह सञ्जय तुमसे सब लड़ाई का वृत्तान्त कहेगा १० । दिन में वा रात्रिमें गुप्त प्रकट कैसाही वृत्तान्त हो सब तुमसे वर्णन करेगा और यह सञ्जय दूसरे के मनकी सोची हुई बातको भी जानेगा शस्त्रों से इसका घात नहीं होगा और यह परिश्रम से कभी व्यथित भी नहीं होगा हे इन धृतराष्ट्र यह गावल्गनका बेटा इस युद्ध से अलग रहेगा और हे भरतर्षभ मैं इन कौरव पाण्डव और सब राजाओं की कीर्तिको कथाओं के द्वारा विख्यात करूंगा

---

grant thee my son, eyes to see the battle if thou wish to do so Behold the battle! 6 'Best of Brahman sages!' replied Dhritrashtra "I have no desire to see the slaughter of kinsmen, though I would like to hear the minute details of it through thy power' Vaishampayan said that as Dhritrashtra expressed his eagerness to hear of the events of the battle without having to see it with his own eyes Vyas the giver of boons gave him a boon saying "This Sanjaya will describe the battle to thee king Not a single detail of it will escape his notice. Gifted with a divine vision Sanjaya will give thee the details and will have a knowledge of everything 10 Sanjaya will know everything connected with the war whether it be by day or night even to the extent of what men think in their minds. He will be safe from weapons and will not be subject to fatigue This son

दिष्टमेतन्नरव्याघ्र नाभिशोचितुमर्हसि । न चैव शक्यं संयन्तुं यतो धर्मस्ततोजय
॥ १४ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा स भगवान् कुरूणां प्रपितामह ।
पुनरेव महाभागो धृतराष्ट्रमुवाच ह ॥ १५ ॥ इह युद्धे महाराज भविष्यतिमहान्
क्षय । तथेह च निमित्तानि भयदान्युपलक्षये ॥ १६ ॥ श्येना गृध्राश्च काकाश्च कङ्काश्च
सहितावकै । सम्पतन्ति नगाग्रेषु समवायाश्च कुर्वते ॥ १७ ॥ अभ्यग्रञ्च प्रप
श्यन्ति युद्धमानन्दिनो द्विजा । क्रव्यादा भक्षयिष्यन्ति मांसानि गजवाजिनाम्
॥ १८ ॥ निर्दयंश्चाभिवाशन्तो भैरवा भयवेदिन । कङ्का प्रयान्तिमध्येन दक्षिणा
मभितो दिशम् ॥ १९ ॥ उभेपूर्वापरे सन्ध्ये नित्यं पश्यामि भारत । उदयास्तमने
सूर्यं कबन्धै परिवारितम् ॥ २० ॥ श्वेतलोहितपर्यन्ता कृष्णग्रीवा सविद्युत ।

हे नरोत्तम ऐसाही होनेवाला है इस तुमको शोच करना अवश्य नहीं है, यह होनहार बात रोकने में नहीं आसक्ती जिधर धर्म है उधरही विजय है । १४ । वैशम्पायन बोले कि यह कुरुवंशियों के पितामह महाभाग भगवान् व्यासजी ऐसा कहकर फिर धृतराष्ट्र से बोले कि हे महाराज यहां इस युद्धमें बड़ी हानि होगी क्योंकि मैं यहां भयकारी कारण को देखता हूं बाज गिद्ध कौवे और कङ्क नाम पक्षी बगलों समेत वृक्षों की डालियों पर एक साथही गिरते हैं और इकट्ठ होजाते हैं यह सबपक्षी बड़े प्रसन्न होकर युद्धको सम्मुख देखते हैं और कच्चा मास खानेवाले जीव हाथी घोड़ों के मांस को खावेंगे, भयानक और भय उत्पन्न करनेवाले कङ्कनाम पक्षी निर्दयता के शब्द करते हुये मध्य में से दक्षिणदिशा की ओर चलेजाते हैं हे भरतवंशी मैं पहली और पिछली दोनों सन्ध्याओं में उदय और अस्त होनेवाले सूर्य का सदैव प्रतिदिन राहु से घिरा हुआ देखताहूं । २० । श्वेत लाल रक्त इत्यादि अनेक

of Gavalgani will live to see the whole affair. As to myself I shall spread the fame of the Kauravas and the Pandavas. It is predestined thus. Do not give way to grief and sorrow. It cannot be averted. The victory will of course fall on the side where righteousness is. 14. Vaishampayan continued that the blessed and holy grandfather of the Kauravas again addressed Dhritarashtra saying: The carnage at the ensuing battle will be great, O king. I see here omens indicative of disaster — Hawks, vultures, herons, crows and cranes are perching in great numbers on the tops of the trees and are looking down on the field well pleased at the prospect of battle. Beasts of prey will feed on the flesh of horses and elephants. Fierce herons foreboding disaster are hovering from the center to the south. I see the rising and the setting sun daily surrounded by the headless trunk. 20. Three coloured clouds with their ends white and red

त्रिवर्णाः परिघाः सन्धौ भानुमन्तमवारयन् ॥ २१ ॥ ज्वलितार्केन्दुनक्षत्रं निर्विशेषदिनक्षयम् । अहोरात्रं मया दृष्टं तद्भयायभविष्यति ॥ २२ ॥ अलक्ष्यः प्रभया हीनः पौर्णमासीं च कार्त्तिकीं । चन्द्रोभूदग्निवर्णश्च पद्मवर्णे नभस्तले ॥ २३ ॥ स्वप्स्यन्ति निहता वीरा भूमिमावृत्य पार्थिवाः । राजानो राजपुत्राश्च शूराः परिघबाहवः ॥ २४ ॥ अन्तरिक्षे वराहस्य वृषदंशस्य चोभयोः । प्रणादं युध्यतोरात्रौ रौद्रं नित्यं प्रलक्षये ॥ २५ ॥ देवताप्रतिमाश्चैव कम्पन्ति च हसन्तिच । वमन्ति रुधिरं चास्यैः स्विद्यन्ति प्रपतन्ति च ॥ २६ ॥ अनाहता दुन्दुभयः प्रणदन्ति विशाम्पते । अयुक्ताश्च प्रवर्त्तन्ते क्षत्रियाणां महारथाः ॥ २७ ॥ कोकिला शतपत्रश्च चाषा भासाः शुकास्तथा । सारसाश्च मयूराश्च वाचो मुञ्चन्ति दारुणाः

रंग धारण करनेवाली विद्युत्ने संध्या के समय सूर्य को घेर लिया है यह मैं रात्रि दिन देखताहू यह भयंकर उत्पात के सूचक लक्षण हैं और सूर्य चन्द्रमा नक्षत्रादि से अग्नि के कण निकलते मालूम होते हैं यह भी बड़ा अशुभ सूचक उत्पातहैं, कार्त्तिकमास की पूर्णिमासी के दिन आकाश में लालरंग चन्द्रमा प्रभारहित अपने कृष्ण चिह्नके बिना अग्नि के समान वर्णवाला दिखाई दिया, इसका फल यह दिखाई देरहा है कि परिघ के समान प्रलम्ब भुजवाले शूरवीर और मृतक राजालोग वा राजकुमार पृथ्वीको आच्छादित करके सोवेंगे और अन्तरिक्ष में उछलकर लड़ते हुये सूकर और वृषदंश दोनों के भयकारी महाशब्दों को रात्रि के समय निरन्तर देखता और सुनताहूं । २५ । और देवताओं की मूर्त्तियां कांपती हँसती हुई मुखोंसे रुधिर उगलतीहैं और पसीनों में तरहो होकर पृथ्वीपर गिरती हैं और हे राजन दुन्दुभियां बिनाबजाये आप अच्छेप्रकार से बजतीहैं और क्षत्री लोगों के उत्तम और उत्तम दिव्य रथ घोड़ों के विनाही चलते हैं कोकिल शतपत्र नीलकण्ठ भास और तोते सारस मोर यह सब पक्षी भयानक शब्दोंको करते हैं

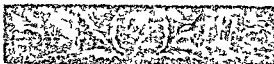
and neck black, charged with lightning assume the forms of maces and envelop the sun both at its rising and setting. I have seen the sun, the moon and the stars all blazing of an evening simultaneously. I have seen this both by day and night. This forebodes consternation. On the full moon night of Kartik, the moon became lightless, invisible and fiery (by turns) and the sky became lotus like in colour. Many valliant kings and princes of great bravery and of arms like clubs, will lie down slain on the earth. Night after night I have been noticing in the air the cries of fighting boars and cats. The images of gods and goddesses have been seen laughing, trembling, vomitting blood from their mouths, sweating or falling down from their pedastals. Drums give sound without beating and the great chariots

॥ २८ ॥ गृहीतशस्त्रा क्रोशन्ति चर्मिणो वाजिपृष्ठगा । अरुणोदये प्रदृश्यन्ते शतश शलभव्रजा ॥ २९ ॥ उभ सन्ध्ये प्रकाशते दिशो दाहसमन्वित । पर्जन्य. पांसुवर्षी च मांसवर्षी चभारत ॥ ३० ॥ या चैषा विश्रुता राजस्त्रैलोक्ये साधुस म्मता । अरुन्धती तयाप्येष वसिष्ठ पृष्ठत कृत ॥ ३१ ॥ रोहिणीं पीडयन्नेष स्थितोराजन् शनैश्चर. । व्यावृत्त लक्ष्म सोमस्य भविष्यति महद्भयम् ॥ ३२ ॥ अनभ्रे च महाघोर स्तनित श्रूयते स्वन । वाहनानाञ्च रुदतां निपतन्त्यश्रुबिन्दव ॥ ३३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वणि श्रीवेदव्यासदर्शने द्वितीयोऽध्याय ॥ २ ॥

और घोड़ोंकी पीठोंपर बैठेहुये बाज अपन]जहा रूपी शस्त्रों से शब्द रूपी आघातों को करतेहैं और सूर्य के उदय होने पर टीड़ियों के हजारों समूह-दृष्ट पडते हैं हे भरतवंशी दिग्दाह युक्त दोनों सन्ध्या प्रकाशमान् होतीहैं और बादलों से मांस और धूलि की वर्षा होती है । १० । और यह जो साधुओं की मानी हुई अरुन्ध. ती तीनों लोकों में प्रसिद्ध है उसने भी वसिष्ठजी की ओर पीठकी है और यह शनिश्चर रोहिणी नक्षत्रको पीड़ित करता हुआ वर्त्तमान है चन्द्रमाका रूप ढक गया इन सब उत्पातोंसे महाभय उत्पन्न होगा और बिना बादलोंके आकाश में बड़ी भारी भयानक गर्जना सुनी जातीहै और रोती हुई सवारियों के अश्रुपातों की वृष्टि पृथ्वी पर होतीहै ११ ॥

of Kshatryas move without being drawn by beasts Cuckoos, woodpeckers, jays cocks, parrots and peacocks cry in shrill tones Horsemen bearing arms and armour cry out of a sudden Hundreds of insects are seen in swarms flying in the morning Both morning and evening the four quarters are seen ablaze and the clouds pour showers of dust and flesh Arundhati celebrated throughout the three regions and praised of the righteous keeps her back turned on Vashishth Shani the planet is seen harassing Rohini The sign of the deer in the moon has changed its proper place All this denotes great evil The cloudless sky sends forth peals of thunder, and tears falls down from the eyes of beasts 3)



व्यास उवाच ॥ खरा गोषु प्रजायन्ते रमन्ते मातृभिः सुताः । अनार्त्तवं पुष्पफलं दर्शयन्तिवन द्रुमाः ॥ १ ॥ गर्भिण्योऽजातपुत्राश्च जनयन्ति विभीषणान् । क्रव्यादाः पक्षि भिश्चापि सहाश्नन्ति परस्परम् ॥ २ ॥ त्रिविषाणाश्चतुर्नेत्राः पञ्चपादा द्विमेहना । द्विशीर्षाश्च द्विपुच्छाश्च दंष्ट्रिणः पशवोऽशिवाः ॥ ३ ॥ जायन्ते विवृतास्याश्च व्याहरन्तोऽशिवा गिरः । त्रिपदाः शिखिनस्तार्क्ष्याश्चतुर्दंष्ट्रा विषाणिनः ॥ ४ ॥ तथैवान्याश्च दृश्यन्ते स्त्रियोवै ब्रह्मवादिनाम् । वैनतेयान् मयूरांश्च जनयन्ति पुरे तव ॥ ५ ॥ गोवत्सं वडवा सूते श्वा सृगालं महीपते । कृकराम् करभाश्चैव शुकाश्चाशुभवादिनः ॥ ६ ॥ स्त्रियः काश्चित्प्रजायन्ते चतस्रः पञ्च कन्यकाः । जातमात्राश्च नृत्यन्ति गायन्तिच

अध्याय ॥ ३ ॥

व्यासजी बोले कि हे राजा गधे गौओं के साथ विषय करते हैं और पुत्र माताओं के साथ रमण करतेहैं और वनके अनेक वृक्ष विना ऋतु के फल फूलोंको दिखलाते हैं गर्भवती पुत्र उत्पन्न करने वाली स्त्रियां भयकारी बालकोंको उत्पन्न करती हैं गधेआदि पशु कच्चे मांस खाने वाले पक्षियों के साथ मिलकर परस्पर भोजन करते हैं, तीन सींग चार नेत्र पांच पैर दोलिंगेन्द्री दो शिर दो पूंछ वाले असभ्य अशुभ रूप मांसाहारी निर्गलाहारी पशु उत्पन्न होते हैं और तीन पंजे चोटी चार डाढ़ सींग धारण किये गरुड नाम पक्षी अशुभ और भयानक शब्दों को बोलते हुये उत्पन्न होते हैं । ४ । इसी प्रकार ब्रह्मवादियों की स्त्रियां भी विपरीत दृष्ट आतीहैं तेरे पुरमें गरुड़ पक्षी मोरों को उत्पन्न करतेहैं हे राजा घोड़ी गौ के बछड़े को और कुतियां शृगाल को और ताते अशुभ बोलने वाले कुक्कुट और करभोंको उत्पन्न करते हैं कोई २ स्त्रियां चार २ पांच २ कन्याओं को एक समय में उत्पन्न करती हैं आश्चर्य यह कि वह कन्या पैदा होतेही नाचती गाती और

CHAPTER III

"Asses," continued Vyas, "are born from kine; sons have sexual pleasure with mothers, forest trees bear fruits and flowers out of season, pregnant and impregnant women give birth to monsters; birds and beasts of prey feed together; ill omened beasts having three horns, four eyes, five legs two sexual organs, two heads or two tails, are born with fierce teeth, and with gaping mouths utter forth ominous cries. Garuds are born with three legs, with crests, with four teeth or with horns. Brahman women in the city have been found giving birth to *garuds* and peacock. Mares give birth to calves, bitches give birth to jackals and cocks, and antelopes and parrots utter ominous cries. Some women gave birth to four of five daughters who, as soon as they were born, set about dancing, singing

हसन्तिच ॥ ७ ॥ पृथक्जनस्य सर्वस्य क्षुद्रकाः प्रहसन्तिच । नृत्यन्ति परिगायन्ति वेदयन्तो महद्भयम् ॥ ८ ॥ प्रतिमाश्चालिखन्त्येताः सशस्त्राः कालचोदिताः । अन्योन्यमभिधावन्ति शिशवो दण्डपाणयः ॥ ९ ॥ अन्योन्यमभिमृद्नन्तिनगराणि युयुत्सवः । पद्मोत्पलानि वृक्षेषुजायन्ते कुमुदानिच ॥ १० ॥ विश्वग्वाताश्च वान्त्युग्राः रजो नाप्युपशाम्यति । अभीक्ष्णं कम्पते भूमिरर्कं राहुस्तथैव च ॥ ११ ॥ श्वेतो ग्रहस्तथा चित्रां समतिक्रम्य तिष्ठति । अभावंहि विशेषेण कुरूणां तत्र पश्यति ॥ १२ ॥ धूमकेतुर्महाघोरः पुष्यमाक्रम्य तिष्ठति । सेनयोरशिवं घोरं करिष्यति महाग्रहः ॥ १३ ॥ मघास्वङ्गारको वक्रः श्रवणे च बृहस्पतिः । भगं नक्षत्रमाक्रम्य सूर्यपुत्रेण पीड्यते ॥ १४ ॥ शुक्रः प्रोष्ठपदे पूर्वे समारुह्य

हँसती हैं और सब नीच मनुष्यों के नातेदार भाई बन्धु काने कुबड़े आदि भी हाकर हास्य करते भयको दिखलाते हुये नाचते और गाते हैं यह शस्त्रधारी मूर्तिया काल के विपरीत होनेसे गिरती हैं और बालक लोग हाथों में दण्ड लियेहुए परस्पर में एक दूसरे के सन्मुख दौड़ते हैं और युद्धाभिलाषी होकर अपने बनाये हुये नगरों को परस्पर विध्वंस करते और स्थानों को ढाते हैं, पद्म, उत्पल कुमुद और सूर्य के उदय में खिलने वाले कमल वृक्षों पर पैदा होतेहैं । १० । और संसार में चलने वाले वायु भयानक चलते हैं और धूलोंका उड़ना शान्त नहीं होता है, पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान होती है और राहु सूर्य से मिलता है । ११ । इसी प्रकार केतु भी चित्रा नक्षत्र को घेरे हुये नियत है यह अधिकतर कौरवों के नाशको देखता है और बड़ा घोर धूम्रकेतु पुष्य नक्षत्र को दबाये हुए उपस्थित है यह महाउग्र ग्रह दोनों सेनाओं के घोर अकल्याण को करेगा । १३ । मंगल तिरछा होकर मघानक्षत्र में और बृहस्पति श्रवण नक्षत्र में है, और सूर्य के पुत्रशनैश्चर से पूर्वाफाल्गुनी वा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र दबकर पीड़ित

and laughing The members of the lowest orders laugh, dance and sing and thus indicate dire consequences. Infants as if actuated by death, draw armed images, run against one another armed with clubs and desirous of battle break down the towns (erected in sport). Lotuses and lilies of sorts blow on trees, strong winds blow and bring dust continuously. Earthquakes are frequent and Rahu is coming towards the sun. 11. Ketu has stopped its course after passing the planet Chitra This in particular foretells the destruction of the Kauravas. A fierce comet has arisen to afflict Pusya. It will cause great destruction to both the armies. Mars inclines towards *Magha* and jupiter towards *Sravan.* *Sani* the offspring of the sun afflicts *Phalguni* by its approach 14. Shukra shines on *Purva-bhadrapad* and conjointly with *Parigh,* casts its influence on *Uttara bhadrapad.*

विरोचते । उत्तरे तु परिक्रम्य सहितः समुदीक्ष्यते ॥ १५ ॥ श्वेतो ग्रहस्तथा प्रज्वलितः
सधूम इव पावकः । ऐन्द्रं तेजस्वि नक्षत्रं ज्येष्ठामाक्रम्य तिष्ठति ॥ १६ ॥ ध्रुवः
प्रज्वलितो घोरमपसव्यं प्रवर्त्तते । रोहिणीं पीडयत्येवमुभौ च शशिभास्करौ । चित्रा
स्वात्यन्तरे चैव विष्ठितः परुषग्रहः ॥ १७ ॥ वक्रानुवक्रं कृत्वा च श्रवणं पावकप्रभः ।
ब्रह्मराशिं समावृत्य लोहिताङ्गो व्यवस्थितः ॥ १८ ॥ सर्वसस्यपरिच्छन्ना पृथिवी
सस्यमालिनी । पञ्चशीर्षा यवाश्चापि शतशीर्षाश्च शालयः ॥ १९ ॥ प्रधानाः सर्व
लोकस्य यास्वायत्तमिदं जगत् । ता गावः प्रस्नुता वत्सैः शोणितं प्रक्षरन्त्युत ॥२०॥
निश्चेरुरर्चिषश्चापान् खड्गाश्च ज्वलिता भृशम् । व्यक्तं पश्यन्ति शस्त्राणि संग्राम

छिपे जाते हैं और शुक्र पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें चढ़कर उसको दबाये हुये प्रकाश
करता है और परिघ नाम उपग्रह के संग होकर उत्तराभाद्रपद नक्षत्रकी ओर
देखता है । १५ । और केतुग्रह सधूम अग्नि के समान जल रहा है और
महाप्रज्वलित भयकारी राहु इन्द्रसे संबंध रखनेवाले तेजस्वी ज्येष्ठा नक्षत्रको व्याप्त
करके वर्त्तमान है । १६ । और अपसव्य होकर वर्त्तमान है वह कठिन
ग्रह चित्रा और स्वाती के मध्यमें वर्तमान रोहिणी नक्षत्र और दोनों सूर्य और
चन्द्रमा को पीड़ा देता है और अग्नि के समान प्रकाशवान् मंगल वारम्वार
तिरछा होकर बृहस्पतिजी से दबाये हुये श्रवण नक्षत्र को पूर्ण दृष्टी से घेरे
हुये वर्त्तमान है, । १८ । खेती से प्रशंसा पानेवाली पृथ्वी सबप्रकार के
खेतोंसे आच्छादित होकर पांचशिर वाले जौ और सौ शिरवाले धानों को उत्पन्न
करती है, संसारमें पूज्य और जिनमें यह सबजगत् वर्त्तमान है ऐसी गौएं अपने
बछड़ों के समीप होकर रुधिरको छोड़ती हैं ।२०। इस का यहफलहै कि धनुषों से
अग्नि निकले और खड्ग अत्यन्त अग्नि रूपहों और शस्त्र व्यक्त होकर संग्राम

15. *Ketu* burns like smoky fire, menacing *Jyeshtha* the bright constellation sacred to Indra. 16. Dhruva, blazing fiercely turns towards the right and afflicts Rohini as well as the sun and the moon. Fierce Rahu is staying between *Chitra* and *Swati.* Mars of fire-like glory in its oblique course casts a full gaze on Shravan which is already under the influence of *Vrahaspati.* The earth which used to produce particular crops at fixed times is covered with the crops of every season—barley and rice at the same time! Cows the best of creatures upon whom all the world depends give out blood when the calves have sucked them. 20. Rays of light come out of bows and swords blaze forth brilliantly. This shows that the weapons themselves are alive to the approach of the great battle which is

मसुपस्थितम् ॥ २१ ॥ अग्निवर्णा यथा भासः शस्त्राणामुदकस्य च । कवचानां
ध्वजानां च भविष्यति महाक्षयः ॥ २२ ॥ पृथिवी शोणितावर्ता ध्वजोडुपसमा-
कुला । कुरूणां वैशसे राजन् पाण्डवैः सह भारत ॥ २३ ॥ दिक्षु प्रज्वलिता
स्याश्च व्याहरन्ति मृगाद्विजाः । अत्याहितं दर्शयन्तो वेदयन्तो महद्भयम् ॥ २४ ॥
एकपक्षाक्षिचरणः शकुनः खचरो निशि । रौद्रं वदति संरब्धः शोणितं छर्दयन्निव
॥ २५ ॥ शस्त्राणि चैव राजेन्द्र प्रज्वलन्तीव सम्प्रति । सप्तर्षीणामुदाराणां सम
वच्छाद्यते प्रभा ॥ २६ ॥ संवत्सरस्थायिनौ च ग्रहौ प्रज्वलितावुभौ । वि-
शाखायाः समीपस्थौ बृहस्पतिशनैश्चरौ ॥ २७ ॥ चंद्रादित्यावुभौ ग्रस्तावेकाह्ना
हि त्रयोदशीं । अपर्वणि ग्रहं यातौ प्रजासंक्षयमिच्छतः ॥ २८ ॥ अशोभिता दिशः

में युद्धको प्रकट देखें और शस्त्रोंकी चमक का रंग अग्नि के समान है कवच
और ध्वजाओंका बड़ा नाशहोगा, हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र पांडवोंके साथ
कौरवोंकी शत्रुता होनेपर पृथ्वीपर रुधिर की नदियां बहैंगी और ध्वजारूप
नौकाओं से व्याप्तहोकर व्याकुल होंगी और अत्यन्त क्रोध रूप मुख मे पशुपक्षी
बड़ेभयको सूचितकरते और अशुभशब्द प्रकाश करते हुए दिशाओंमें चलते हैं
। २४ । रात्रि के समय एक पक्ष एकनेत्र और एकही चरणका रखनेवाला अत्यन्त
क्रोधी आकाशचारी पक्षी रुधिरका उगिलता हुआसा भयकारी शब्दों को करताहै
हेराजेन्द्र शस्त्रअग्नि के समान वर्त्तमानहै जिनसे महातेजस्वी सप्तऋषियों के प्रकाश
मंदहोकर ढकेहुएसे विदित होतेहै । २६ । और अत्यन्त तेजस्वी बृहस्पति और
शनैश्चर दोनोंग्रह वार्षिक गति में नियत होकर विशाखा के सन्मुख नियत दीखते
हैं एकही दिन तेरस तिथिको दोनो सूर्य और चन्द्रमा ग्रसगये और विना पर्वकेराहु
ग्रह से मिले हुये प्रजाके नाशको चाहते हैं, चारों ओर धूलिकी वर्षा से सब दिशा

imminent. The colour of weapons, water, armour and standards is like that of fire. This shows that a great slaughter is at hand. A river of blood will run out of the bodies of the *Kauravas* and the *Pandavas* with the banners for its rafters. Animals and birds on all sides, with their mouths blazing like fire and with fierce cries, are displaying evil omens and terrible consequences. A bird with one wing, one eye and one leg, hovering over the sky in the night, makes a frightful noise and vomits blood 25. The weapons are blazing like fire and the glory of the constellation known as the seven rishis is dimmed. The bright planets, *Vrahaspati* and *Shani*, having approached *Visha kha*, have stopped their annual course. The moon and the sun have undergone an eclipse within thirteen days in the same fortnight. Such a strange coincidence of two eclipses forebodes a great slaughter.

सर्वा पांशुवर्षैः समन्ततः । उत्पातमेघा रौद्राश्च रात्रौ वर्षन्ति शोणितम् २९ ॥ कृत्तिकां पीडयंस्तीक्ष्णैर्नक्षत्रं पृथिवीपते । अभीक्ष्णवाता वायन्ते धूमकेतुमवस्थिताः ॥ ३० ॥ विषमं जनयन्त्येते आक्रन्दजननमहत् । त्रिषु सर्वेषु नक्षत्र नक्षत्रेषु विशाम्पते । गृध्रः सम्पतते शीर्षं जनयन् भयमुत्तमम् ॥ ३१ ॥ चतुर्दशीं पञ्चदशीं भूतपूर्वांश्च षोडशीम् । इमांतु नाभिजानेऽहममावस्यांत्रयोदशीं । चंद्रसूर्यावुभौग्रस्तावेकमासीं त्रयोदशीं ॥ ३२ ॥ अपर्वणिग्रहेणैतौ प्रजाः संक्षपयिष्यतः । मांसवर्षं पुनस्तीव्रमासीत्कृष्णचतुर्दशीं । शोणितैर्वक्त्रसम्पूर्णा अतृप्तास्तत्र राक्षसाः ॥ ३३ ॥ प्रतिस्रोतो महानद्यः सरितः शोणितोदकाः । फेनायमानाः कूपाश्च कूर्दन्तिवृषभा इव ॥ ३४ ॥ पतन्त्युल्का सनिर्घाता शक्राशनिसमप्रभाः । अद्य चैव निशां

अशोभितहोगई और रात्रि के समय वह भयानक उत्पात और रुधिर को मेघ बरसाते हैं, और हे राजन राहु कृत्तिका को पीड़ा देता हुआ अपने कठिनकर्मों से भरा हुआ देखागया है, धूमकेतु नाम उत्पात में नियत होकर वायु चलतेहैं । ३० । यह वायु महा युद्धकारी शत्रुता को उत्पन्न करतेहैं, और हे राजा सब नक्षत्रोंके मध्य रक्षा न करने वाला पापग्रह बड़े भयको पैदा करता हुआ तीनों छत्रों में सबके शिरों के छत्रों कलशों पर गृद्ध पक्षी होकर गिरता है, एक मासकी तेरस तिथिको विना पर्वके चन्द्रमा और सूर्य्य दोनों राहु ग्रहसे ग्रसेगये हैं । ३२ । यह दोनों प्रजाका नाशकरेंगे इस लिये मैं चौदशपूर्णमासी और व्यतीत प्रतिपदा को जानताहूं परन्तु अमावास्या और तेरस के योग का नहीं जानताहूं वहां रुधिर से भरे हुए मुखवाले राक्षस लोगोंकी तृष्णा अधिक शोणित पीनेकी होगी और नदियों में बड़ी नदियां वा विरुद्ध प्रवाह युक्त होगई और छोटी नदियां रुधिर समान जलको बहने लगीं कूएं फेनोंमे भरेहुए बैलों के समान क्रीड़ा करते हैं

The land being overwhelmed in all directions by storms of dust, looks desolate. Fierce and ominous clouds nightly pour forth showers of blood. Fierce Rahu is also afflicting *Krittika*. Rough winds portending ill are constantly blowing. 30. All these portend a dreadful war. One planet or other has shed its evil influence on every one of the three sorts of constellations. A lunar fortnight usually consists of fourteen, fifteen, or sixteen days, but never of thirteen days, yet in the course of the same month there have been lunar and solar eclipses within thirteen days of each other. 32. This will cause a great slaughter of the creatures of the earth. The Rakshases drinking blood by mouthfuls will not yet be satisfied. Great rivers are flowing in opposite directions, their waters have become bloody and the wells foaming up are bellowing like bulls

व्युष्टामनय समवाप्स्यथ ॥ ३५ ॥ विनि सृत्य महोल्काभिस्तिमिर सर्वतो द्रुताम् । अन्यान्यमुपतिष्ठद्भिस्तत्र चोक्त महर्षिभि ॥ ३६ ॥ भूमिपालसहस्राणा भूमिपाल सहस्राणा भूमि पास्यति शोणितम् । कैलासमन्दाराभ्यान्तु तथा हिमवताविभो ॥३७। सहस्रशोमहाशब्द॰ शिखराणिच पतन्तिच । महाभूता भूमिकम्पे चत्वार सागरा पृथक् । वेलामुद्वर्त्तयन्तीव क्षोभयन्तो वसुन्धराम् ॥ ३८ ॥ वृक्षानुन्मथ्यवान्त्युग्रा वाता शर्करकर्षिण । अभग्ना॰ सुमहावातैरशनीभि समाहता ॥ ३९ ॥ वृक्षा पतन्ति चैत्याश्च ग्रामेषु नगरेषुच । नीललोहितपीतश्च भवत्यग्निर्हुतोद्विजै ॥४०। वामार्च्चिर्दुष्टगन्धश्च मुञ्चन्वै दारुणस्वनम् । स्पर्शा गन्धा रसाश्चैव विपरीता महीपत ॥ ४१ ॥ धूमध्वजा प्रमुञ्चन्ति कम्पमाना मुहुर्मुहु॰ । मुञ्चन्त्यङ्गारवर्षंच

और इन्द्र के वज्र के समान प्रकाशमान महाशब्दायमान उल्कापात होतेहैं अब तुम प्रातःकाल अन्याय के फल को पाओगे । ३५ । और महर्षियों ने भी सब दिशाओं में अंधेरा देख मसालें ब ल घरसे बाहर निकलकर परस्पर में एकत्र होकर कहा है कि पृथ्वी हजारों राजाओं क रुधिर का पीवेगी और हे समर्थ इसी प्रकार कैलास मन्दराचल और हिमाचल पर्वतों से हजारों बड़े घोर शब्द शिखरों पर गिरतेहैं, और पृथ्वीके कम्प से चारों समुद्र पृथक् २ अपनी २ मर्यादाओं को उल्लंघन और सब संसारको व्याकुल करत हुए बड़ी वृद्धियुक्त हुए हैं और कंकड़ों से भराहुआ भयानक वायु ऐसा चलता है कि जिसके वगसे बिजली से सताये हुए अनेक वृक्ष टूट २ कर गांवों। सीमाओं और नगरों क भीतर जाकर गिरते हैं और ब्राह्मणों से होमीहुई अग्नि नील रक्त और पीतरं की होती है वह दुर्गंधा वामार्ची भयानक शब्दको करती विदित होती है ह राजा स्पर्श गन्ध और रससबविपरीत हैं, वारंवार कम्पमान होकर ध्वजायें धूमको छोड़तीहैं

Meteors effulgent like Indra's thunderbolt fall with loud hisses Evil consequences will overtake you when this night passes away Great rishis with lighted brands came out of their houses and met together in the thick gloom of the night. After observing these signs they say that the earth will drink the blood of thousands of kings. From the mountains of Kailas Mandar and Himavat thousands of explosions are heard and thousands of summits are tumbling down. In consequence of the earth's trembling the four oceans are much swollen and are ready to transgress their bounds and to afflict the earth Fierce winds charged with sharp pebbles are blowing crushing mighty trees Ordinary and sacred trees in villages and towns are uprooted by fierce winds and lightning When Brahmans pour down libations on fire, it burns with blue, red or yellow flames bending

मेदश्च प्रदहास्तथा ॥ ४२ ॥ शिखराणां समृद्धानामुपरिष्टात् समन्ततः । वायसाश्च
रुवन्त्युग्रं वाम मण्डलमाश्रिता ॥ ४३ ॥ पक्वापक्वेति सुभृश वावाद्यन्तेवयां
सि च । निलीयन्त ध्वजाग्रेषु क्षयाय पृथिवीक्षिताम् ॥ ४४ ॥ ध्यायन्त प्रकर-
न्तश्च व्याला वेपथुसंयुता । दीनास्तुरङ्गमाः सर्वे वारणा सलिलाश्रया ॥ ४५ ॥
एतच्छ्रुत्वा भवानत्र प्राप्तकाल व्यवस्यताम् । यथा लोक समुच्छेद नाय गच्छेत
भारत ॥ ४६ ॥ वैशम्पायन उवाच । पितुर्वचो निशम्यैतत् धृतराष्ट्रोऽब्रवीदिदम् ।
दिष्टमेतत् पुरामन्ये भविष्यति न संशय ॥ ४७ ॥ राजान क्षत्रधर्मेण यद्यवध्य
न्तिसंयुगे । वीरलोक समासाद्य सुख प्राप्स्यन्ति केवलम् ॥ ४८ । इह कीर्ति
परे लोके दीर्घकाल महत् सुखम् । प्राप्स्यन्ति पुरुषव्याघ्रा प्राणांस्त्यक्त्वा महा

और चारोंदिशाओं में अच्छे फूले फले वृक्षों के ऊपर अग्नि मंडल में बैठेहुए काक भयकारी रोदन करतेहैं और पक्षी पका २ अर्थात् नाशहोने वालोंका परस्पर युद्ध है ऐसे अत्यन्त शब्द करतेहैं और राजाओं के नाश सूचन करने को ध्वजाओं की नोकों में छिपजाते हैं दुष्ट हाथी ध्यान करते हुए मूत्र विष्ठाको करत कंपायमान हैं और गरीबहाथी और घोड़े पसीनों में चूरहैं अब तुम यहां यह बातें सुनकर समय के अनुसार निश्चय करो जिस्से कि हे भरतवंशी यह संसार नाश न होवे । ४६ । वैशंपायन बोले कि पिताके इन वचनों को सुनकर धृतराष्ट्र यह बोला कि हे पिता व्यासजी मैं इसको सत्यही होनहार मानताहूं और मनुष्यों का नाश होगा, जो राजा लोग क्षत्रीधर्मसे युद्धमें मरेंगे वह सब वीरों के लोकों को पाकर मोक्षरूप सुख को पावेंगे, हे पुरुषोत्तम भारी युद्ध में

towards the left, yielding stench and accompanied by loud report. Touch smell and taste have lost their powers. The standards tremble and give out smoke drums and cymbals give out showers of coal dust and from the tops of the trees all round, crows wheeling in circles from the left are uttering fierce cries of *pakka*, *pakka* and perching upon the tops of the standards for the destruction of kings Vicious elephants, trembling all over, are running hither and thither giving out urine and excreta. 45 The horses are melancholy and the elephants are resorting to the water Having heard all this do what is needful so that the world may not be depopulated, O king Vaishampayan continued that on hearing these words of his father, Dhritrashtra said, ' I think all this has been ordained of old A great slaughter of human beings will take place. If the kings die, doing the duties of kshatryas, they will obtain bliss in the regions of the heroes. These lions among men,

हवे ॥ ४९ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवं मुनिरतथेत्युक्त्वा कवीन्द्रो राजसत्तम । धृतराष्ट्रेण पुत्रेण ध्यानमन्वगमत् परम् ॥ ५० ॥ स मुहूर्त्तं तथा ध्यात्वा पुनरेवा ब्रवीद्वचः । असशयं पार्थिवेन्द्र कालः संक्षयते जगत् ॥ ५१ ॥ सृजते च पुनर्लोकान् नेह विद्यति शाश्वतम् । ज्ञातीनांवै कुरूणाञ्च सम्बन्धिसुहृदां तथा ॥५२॥ धर्म्यं देशय पन्थानं समर्थो ह्यासि वारणे । क्षुद्रं ज्ञातिवधं प्राहुर्मा कुरुष्वममा प्रियम् ॥ ५३ ॥ कालोऽयं पुत्ररूपेण तव जातो विशाम्पते । न वधः पूज्यते वेदे हितं नैव कथञ्चन ॥ ५४ ॥ हन्यात् स एव यो हन्यात् कुलधर्मं स्वकान्तनुम् । कालेनोत्पथगन्तासि शक्ये सति यथापदि ॥ ५५ ॥ कुलस्यास्य विनाशाय तथैव च महीक्षिताम् । अनर्थो राज्यरूपेण तव जातो विशाम्पते ॥ ५६ ॥ लुप्त

प्राणोंको त्यागकर यहां तो कीर्ति और परलोक में बहुत काल तक महा सुखको पावेंगे । ४९ । वैशंपायन बोले कि हे राजेन्द्र जनमेजय वह कवीन्द्र व्यासदेव मुनि ऐसाही है यह कहकर अपने पुत्र धृतराष्ट्र के साथ चिन्तामें ग्रसितहुये और एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त ध्यानावस्थित होकर यह वचन बोले कि हे राजा निस्सन्देह काल जगत् को नाश करताहै और फिर उत्पन्न भी करता है यहां किसीका सदैवता नहीं पाता है, तुम जातिवाले, कौरव, नातेदार और मित्रों के धर्मरूप मार्गों को उपदेश करो और तुम्हीं उनके रोकनेमेंभी समर्थहो ज्ञातिवालों का मारना नीचकर्म कहाजाताहै इस से इसमेरी अप्रियबातको मतकर हे राजन् यह काल तेरेबेटेदुर्योधन के रूपसे प्रकट हुआहै, मारने वाले को वेदमें अच्छानहीं कहतेहैं और किसीदशा में भी वह हितकारी नहीं है ।५४ जो धर्मको मारताहै वह धर्म उसी को मारताहै कुलका धर्म अपना देहहै, समर्थ होनेपर इसकुल के और इसी प्रकार अन्य राजाओं के नाश के लिये काल से प्रेरित होकर तू आपत्तिकाल के समान कुमार्ग में चलता

dying in the great battle will gain fame in this world and happiness in the next." 49. Vaishampayan continued that on hearing the words of Dhritrashtra, Vyas the prince of poets, concentrated his mind in supreme yoga and having contemplated for a short time, he again said, "No doubt, it is Time that destroys the world and creates it again. Nothing is immortal here. It is your duty to preach righteousness to the Kurus, kinsmen and friends as you have the power to restrain them. The slaughter of kinsmen is sinful and you should not do what I do not like. Death is born in the shape of Duryodhan thy son. The destroyer is not applauded in the Vedas and is not beneficial to any country. 54. He who destroys Dharm is destroyed himself by it, for the Dharm of one's own family is one's body. Being in authority, thou art made by Time to deviate from

धर्मा परेणास धर्मं दर्शय वै सुतान् । किन्ते राज्येन दुर्धर्ष येन प्राप्तोसि किल्विषम् ॥ ५७ ॥ यशो धर्मञ्च कीर्तिञ्च पालयन् स्वर्गमाप्स्यसि । लभन्तां पाण्डवा राज्यं शमं गच्छन्तु कौरवा ॥ ५८ ॥ एवं ब्रुवति विप्रेन्द्रे धृतराष्ट्रोम्बिकासुतः । आक्षिप्य वाक्यं वाक्यज्ञो वाक्यमेवाब्रवीत् पुन ॥ ५९ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ यथा भवान् वेत्ति तथैव वेत्ता भावाभावौ विदितं मे यथार्थौ । स्वार्थे हि सम्मुह्यति तात लोको माचापि लोकात्मक मेव विद्धि ॥ ६० ॥ प्रसादये त्वा मतुलप्रभावं त्व नो गतिर्दर्शयिता च धीरः । न चापि ते मद्वशगा महर्षे नचाधर्मं कर्तुमर्हसि मे मति ॥ ६१ ॥ त्वहि धर्मप्रवृत्तिश्च यशः कीर्तिश्च भारती । कुरूणां पांडवानाञ्च मान्यश्चापि पितामह. ॥ ६२ ॥ व्यास उवाच ॥ वैचित्रवीर्य नृपते यत्ते मनास

है, हे राजा तेरा अनर्थ राजरूप से उत्पन्न हुआहै तू अत्यन्त अधर्मी है अपने पुत्रोंको धर्मका उपदेशकर, हे दुर्धर्ष तुमको राज्य से क्या लाभहै जिसके लिये अनेपापको मिलाया है अपने यश और धर्मका पालन कर जिससे कि तू स्वर्ग को पावेगा पाण्डवोंको राज्य दो और कौरवों को शान्ती दो । ५८ । यह पिताके वचन सुनकर अम्बिकाका पुत्र वचन का जाननेवाला धृतराष्ट्र पिताके इनशिक्षा रूपी वचनों को तिरस्कार करके फिर यहवचन बोला कि जैसा आपजानते हैं वैसाही मैंभी जानताहूं और मुझको अपना और दूसरोंका जीवन वा नाश ठीक २ विदित है हे तात यह लोक अपने प्रयोजन में बड़े २ मोहोंको पाता है आप मुझकोभी लोकरूपही जानो । ६० । हे बड़ा प्रभाव वाले मैं आपको प्रसन्न करता हूं आप पंडित होकर हमारी गति और उपदेश के करनेवालेहो परन्तु हे महर्षी वह पुत्रमेरे स्वाधीन नहीं हैं और मैं बुद्धि से अधर्म करने का नहीं चाहताहूं आप भरत वंशियोंके यश और कीर्तिके कारण रूपहो और कौरव पांडव दोनों के पिता-

---

the path of right in order to cause the destruction of thy family as well as of other kings Thy evil genius clings to thee in the shape of thy kingdom. Thou art very unjust as thou dost not prevent thy sons from doing wrong What is the use of thy being a king, when for the sake of thy kingdom thou art immerging thyself in sin? *Preserve thy fame and virtue so that thou mayst attain heaven Give* kingdom to the Pandavas and peace to the Kauravas" 58 Having heard the words of his father, Dhritrashtra the wise son of Ambica, disregarding the wisdom of Vyas, said in reply, "I know as much as you do about the life and death, but man, in what regards his interests, is unable to use his judgment and I am not an exception to this rule 60 I entreat you, learned and great man, to teach me My sons are beyond my control It is never my intention to lead a

वर्त्तते । अभिधत्स्व यथा काम छेत्तास्मि तव संशयम् ॥ ६३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ यानि लिङ्गानि संग्रामे भवन्ति विजयिष्यताम् । तानि सर्वाणि भगवञ्छ्रोतु मिच्छामि तत्वत. ॥ ६४ ॥ व्यास उवाच ॥ प्रसन्नभा. पावक ऊर्ध्वरश्मि प्रदक्षिणा वर्त्त शिखो विधूम । पुण्या गन्धाश्चाहुतीना प्रवान्ति जयस्यैतद्भाविनो रूपमाहुः ॥ ६५ ॥ गम्भार घोषाश्च महास्वनाश्च शखामृदङ्गाश्च नदन्ति यत्र । विशुद्धरश्मिस्तपन. शशीच जयस्यैतद्भाविनो रूपमाहु ॥६६। इष्टा वाच प्रसृता वायस ना सम्प्रस्थिता नाच गमिष्यताच । ये पृष्ठतस्ते त्वरयन्ति र जन् येचाग्रतस्ते प्रति षेधयन्ति । ६७॥ कल्याण वाच शकुना राजहंसा शुका क्रौञ्चा. शतपत्राश्च यत्र । प्रदक्षिणाश्चैव भवन्ति संख्ये ध्रुव जयस्तत्र वदान्ति विप्रा ॥ ६८ ॥ अलङ्कारै. कवचै केतुभिश्चसुख

पह भीरो, । ६२ । व्यासजी बोले हे राजा धृतराष्ट्र जो तेरेमन में वर्तमान है उस को तू इच्छा पूर्वक कह मैं तेरेसब सन्देह दूर करूंगा। धृतराष्ट्र ने कहा कि युद्ध के बीचमें विजयपान वालोंके जो चिह्न होते हैं उनसबको हे भगवन मैं आपसे मूल समेत सुना चाहताहू, । ६४ । व्यासजी बोले कि स्वच्छ अग्नि प्रकाशमान ऊंची ज्वालायुक्त प्रदक्षिणावर्त्ति निर्धूमहो और जिसमें आहुतियोंकी पवित्र सुगंध उठतीहोय वो विजयपाने वाले पुरुषका शुभलक्षण है, और जहां शंखमृदंगोंकी बड़ी गम्भीर ध्वनिहो और बड़े शब्दसे बजतेहों और सूर्य चन्द्रमा की स्वच्छ किरणें पड़तीहों उसको विजयपानेका लक्षण जानो ।६६ चलतेहुए वा जाना चाहते काकोंके बोले हुये चित्तरोचक ऐसे वचन विदितहों जोकि पीठकी ओरसे तेरी यात्राको जल्दी करते हैं और आगे से तुझको निषेध करते हैं, जिस स्थानपर युद्धभूमि में राजहंस तोते क्रौंच और शतपत्र नामपक्षी शुभवचन बोलतेहुए ।६८। दक्षिणओरको होंय

---

life of sin You are the cause of fame and greatness to the descendants of Bharat as well as the grandfather of both the Kauravas and the Pandavas" 62 "Open thy mind freely to me and I shall remove all thy doubts" said Vyas. Tell me, Bhagwan, in detail, what occurs to those who are victorious" 64 "It is a sign of victory," replied Vyas, "that Agni, when libations are poured over it, burns with a bright flame inclining towards the right without smoke, and gives out a sweet odour The conchshells and cymbals are sonorous and the sun and the moon shed clear light to the victorious. Crows, flying or about to rise on their wings, give out agreeable sounds Those behind urge you to go on, while those that are before keep you back from doing so Where swans, parrots, cranes and wood peckers, utter delightful notes to the right of the battle field, the Brahmans predict victory to that side. 68 The Kshatryas whose

प्रणादैर्हेषितैर्वाद्ययानाम् । भ्राजिष्मती दुष्प्रतीक्षणीया येषाञ्चमूस्ते विजयन्ति
शत्रून् ॥ ६९ ॥ हृष्टा वाचस्तथा सत्वं योधानां यत्र भारत । न म्लायन्ति स्रजश्चैव
ते तरन्ति रणोदधिम् ॥ ७० ॥ इष्टा वाच प्रविष्टस्य दक्षिणा प्रविविक्षतः । पश्चात्
सन्धारयन्त्यर्थमग्रे च प्रतिषेधिकाः ॥ ७१ ॥ शब्दरूपरसस्पर्शा गन्धाश्चाविकृताःशुभाः ।
सदा हर्षश्च योधानां जयतामिह लक्षणम् ॥ ७२ ॥ अनुगा वायवो वान्ति तथा
भ्राणि वयांसिच । अनुप्लवन्ति मेघाश्च तथैवेन्द्रधनूंषिच ॥ ७३ ॥ एतानि जयमानानां
लक्षणानि विशाम्पते । भवन्ति विपरीतानि मुमूर्षूणां जनाधिप ॥ ७४ ॥ अल्पायां वा
महत्यां वा सेनायामिति निश्चयः । हर्षो योधगणस्यैको जयलक्षणमुच्यते ॥ ७५ ॥

उस स्थानपर विजयकाहोना ब्राह्मण वर्णनकरतेहैं जिनक्षत्रियोंकी सेना अलंकारादि और कवच ध्वजा वा घोड़ों के हींसने के सुखदायी शब्दों से शोभायमान कठिन देखने के योग्यहो वह क्षत्री अवश्य शत्रुओं को विजय करतेहैं, हे भरतवंशी जहां शूरवीरों के वचन प्रसन्नता से भरे हुए पराक्रम में तुल्यहुये होते हैं और जिनकी माला कुँभलाती नहीं है वह पुरुषरणरूपी समुद्रको तरजाते हैं । ७० । शत्रुकी सेना में प्रवेश करके देखनेकी इच्छाकरने वाले योद्धाओं के प्रसन्न मन सावधानी से संयुक्त हों उनके वचन विजय का धारण करते हैं और जो सम्मुख निषेध करनेवाले हैं वहभी मृत्युसे विदित करने वाले हैं, रूप, रस, शब्द, गन्ध स्पर्श यह शुभ और रूपान्तर दशासे रहितहों अर्थात् अपने मुख्य रूपों ही नियतहों और योद्धाओं में सदैव प्रसन्नताहोय यहभी विजय पानेवालोंके लक्षणचिह्न हैं, अनुकूलवायुहों इसीप्रकार बादल वा पक्षीगी हों अथवा बादल पीछे चलतेहों और इन्द्रधनुषभी इसीप्रकार हो, हे राजा यह सब विजयीलागोंके लक्षण हैं और यही सब लक्षण मरने वालोंके लिये विपरीत होतेहैं थोड़ी वा बहुत सेनामें योद्धा

---

armies are embellished with armours, banners and the cheerful neighing of horses, are strong enough to conquer their enemis. Those warriors who speak cheerfully with one another, who are full of prowess and whose garlands donot fade, are able to cross the ocean of war. 10. Those who, having entered in the thick of the battle, utter cheerful shouts, who warn their enemies of the approach of death and to whom the objects of senses appear just as they are, can win victory. 72. The winds, the clouds and the birds as well as the rain-bow appearing after the clouds are favourable to the victorious; the same phenomena occurring unfavourably are a sign of destruction. Whether the army be great or small, the cheerful-

एको दीर्णो दारयेत सेनां सुमहतीमपि । तां दीर्णामनुदीर्यन्ते योधाः शूरतरा अपि ॥ ७६ ॥ दुर्निवर्त्तया तदा चैव प्रभग्ना महती चमूः । अपामिव महावेगा स्त्रस्ता मृगगणाइव ॥ ७७ ॥ नैव शक्या समाधातु सन्निपाते महाचमू. । दीर्णा मित्येव दीर्यन्ते सुविद्वांसोपि भारत ॥७८॥ भीतान् भग्नांश्च सम्प्रेक्ष्य भयं भूयोभि वर्द्धते । प्रभग्ना सहसा राजन् दिशो विद्रवते चमू ॥ ७९ ॥ नैव स्थापयितुंशक्या शूरैरपि महाचमूः । सत्कृत्य महतीं सेनां चतुरङ्गांमहीपति. उपायपूर्वं मेधावीयतेतसततोत्थित ॥ ८० ॥ उपायविजयं श्रेष्ठमाहुर्भेदेन मध्यमम् । जघन्य एव विजयो यो युद्धेन विशाम्पत ॥ ८१ ॥ महान् दोषः सन्निपातस्तस्याद्यः क्षय उच्यते ।

लोगों की केवल एक प्रसन्नताही विजयकी देनेवाली है । ७५ । एकभी भागाहुआ योद्धा बहुतबडी सेना को भी भागी हुईसी कर देताहै उस भागे हुएके पीछे बड़े शूरवीर योद्धाभी भागजाते हैं भागी हुई सेना बड़ी कठिनता से फिर लौट सक्ती है जैसे कि जलोंके बड़े वेग और डरहुये मृगों के समूह कठिनतासे नहीं लौटसक्ते इसी प्रकार भागीहुई सेना कोभी जानो, हे भरतवंशी बड़ी सेना को सम्मुख नियत करना असम्भव है क्योंकि भागे हुओं में बड़े बुद्धिमान् भी भाग जाते है, भयभीत और अलग २ होजाने वाले शूरवीरोंको देखकर और भी भय बढ़जाता है हे राजा अत्यन्त व्याकुल सेना अकस्मात् चारों ओरों को भागती है ऐसी बड़ी सेना शूरवीरों से भी नियत करनी कठिन है राजा अपनी चतुरंगिणी सेना को अच्छे प्रकार से ध्यान करके युद्ध करे । ८० । युक्तियों से अर्थात् शत्रु के चाहने से वा कुछ धन देने से जो विजय होती है वह उत्तम विजय कही जाती है और शत्रु के मनुष्यों के मध्यमें विरोधता डलवाने से जो विजय होती है वह मध्यम विजय कहाती है और जो विजय युद्ध के द्वारा होती है उसको निकृष्ट

ness of the warriors is the giver of victory 75. The flight of even one soldier can be ruinous to the whole army, for when one soldier turns back the bravest of the army find it difficult to stand their ground, and when once an army is routed, it cannot be checked like the flow of waters or a herd of panic-stricken deer 77. A large army, when once fallen into disorder, is incapable of being rallied, for even the most-skilful in battle run away after the flying. The terror multiplies on seeing brave men turn back and the whole army is then dispersed in all directions passing out of control A king should therefore keep a careful watch on his army of four kinds of forces 80. The best kind of victory is that which is achieved by negotiations, the middling one is that which is brought about by

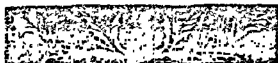
परस्परज्ञाः संहृष्टा व्यपधूताः सुनिश्चिताः ॥ ८२ ॥ अपि पञ्चाशतं शूरा मृद्नन्ति महतीं चमूम् । अथवा पञ्च षट्सप्त विजयन्त्यनिवर्त्तिनः ॥ ८३ ॥ न वैनतेयो गरुडः प्रशंसति महाजनम् । दृष्ट्वा सुपर्णोऽपचितिं महतया अपि भारत ॥ ८४ ॥ न बाहुल्येन सेनाया जयो भवति नित्यशः । अध्रुवो हि जयो नाम दैवञ्चात्रपरायणम् । जयवन्तो हि संग्रामे कृतकृत्या भवन्ति हि ॥ ८५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वणि निमित्ताख्याने तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

विजय जानो क्योंकि युद्ध में बड़े २ दोष होते हैं उसका प्रथम फल तो नाश है । ८२ । परस्पर में ज्ञाता प्रसन्न चित्त स्त्री आदि में मोह से रहित दृढ़ निश्चय रखने वाले पचास शूरवीर पुरुष भी बड़ी भारी सेना को विध्वंस करते हैं अर्थात् ऐसे लड़ते हैं कि सबको मार कर विजय पाते हैं और मुख न फेरने वाले पांच छः वा सात शूरवीरभी पूरी विजय को करते हैं, हे भरतवंशी उत्तम पक्षधारी विनता के पुत्र गरुड़ जी बड़ी सेना से भी हानिको देखकर बड़े भारी समूह को अच्छा नहीं कहते हैं सेनाकी आधिक्यतासे बहुधा नित्य विजय नहीं होतीहै निश्चयकरके विजय नाशवान्है इस में प्रारब्धभी मुख्य है क्योंकि प्रारब्ध वालेही पुरुष युद्ध में विजय प्राप्त करके अपने अभीष्टको सिद्ध करते हैं । ८५ ।

---

causing disunion among the enemies and that which is gained by bloodshed is the worst For war has many defects of which the foremost is destruction. 82 Even fifty warriors, knowing one another, cheerful and free from wordly cares, when firmly resolved, can cause the destruction of a large army. Even five, six or seven warriors may gain complete victory. Vinata's son Garud of beautiful plumage has no desire for an army even when he is surrounded by great numbers It is not always the great numbers that give victory. Victory is uncertain. Fate has much to do in that matter, for it is, the fortunate who gain victory in battles and accomplish their desires. 85.



वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा ययौ व्यासो धृतराष्ट्राद् धीमते । धृतराष्ट्रो पितच्छ्रुत्वा ध्यानमेवान्वपद्यत ॥ १ ॥ समुहूर्तमिव ध्यात्वा विनिःश्वस्य मुहुर्मुहु । सञ्जयं संशितात्मानमपृच्छद् भरतर्षभ ॥ २ ॥ सञ्जयेमे महीपालाः शूरा युद्धाभिनन्दिनः । अन्योन्यमभिनिघ्नन्ति शस्त्रैरुच्चावचैरपि ॥ ३ ॥ पार्थिवाः पृथिवीहेतोः समभ्यस्य जीवितम् । तथा शाम्यंति निघ्नन्तो वर्धयन्ति यमक्षयम् ॥ ४ ॥ भौममैश्वर्यमिच्छन्तो न मृष्यन्ते परस्परम् । मन्ये बहुगुणा भूमिस्तन्ममाचक्ष्वसञ्जय ॥५॥ बहूनिच सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानिच । कोटयश्च लोकवीराणां समेताः कुरुजाङ्गले ॥ ६ ॥ देशानांच परीमाणं नगराणांच सञ्जय । श्रोतुमिच्छामि तत्वेन यत एते

अध्याय ॥ ४ ॥

वैशम्पायन बोले कि हे राजा जनमेजय व्यासजी इस प्रकार की अनेक बातें बुद्धिमान् धृतराष्ट्र से कहकर चलगये और उनकी बातोंका ध्यानकरके धृतराष्ट्रभी चिन्ता युक्त हुआ और हे भरतर्षभ उसने एक मुहूर्त पर्यन्त ध्यानावस्थितहो वारम्बार श्वासलेकर उस बुद्धिमान संजयसे पूछा कि हे संजय इस स्थानपर यह युद्ध में प्रशंसनीय शूरवीर राजा लोग छोटे बड़े शस्त्रों के द्वारा परस्पर में मारतेहैं, यह सब जीवनकी आशाको त्याग हुये बुद्धिमान राजा लोग पृथ्वी के कारण मारते हुये शान्ती को नहीं पाते हैं और यमलोक को बढ़ाते हैं पृथ्वी सबंधी ऐश्वर्यों को चाहते हुये परस्परमें क्षमा संतोष इत्यादि नहीं करते हैं मैं जानता और मानताहू कि पृथ्वी बहुत गुण धारण करने वाली है हे संजय इसको मुझसे कहो । ५ । कुरु और जांगल देशमें संसार के करोड़ोंअधि क्षत्री इकट्ठे हुये सो हेसंजय मैं उनके देश नगर ग्रामोंकी संख्यासमूह समेत सुनना चाहताहू जहां जहां से यह आये हैं, तुम उनपहांगमस्री महर्षिव्यासजी के प्रभावसे दिव्य

CHAPTER IV

Vaishampayan continued. Having spoken, as mentioned above, to King Dhritrashtra, Vyas went away and the former reflected on it in silence During his meditation he heaved deep sighs and asked of wise Sanjaya, "These brave kings of different countries who are so anxious to join the battle, have assembled here to die for the sake of earth and will strike one another with different sorts of weapons They will not be satisfied till they have filled the region of Yam, and are destitute of mercy and peace of mind after worldly gains. Methinks the Earth must possess many attributes. Tell me, Sanjya, all about it. 5. Millions of Kshatriyas have assembled at Kurujangle to die, I wish to know in detail the number of their countries, cities and villages from which they have come. By the

समागता ॥ ७ ॥ दिव्यबुद्धिप्रदीपेन युक्तस्त्व ज्ञानचक्षुषा । प्रसादात्तस्य विप्रर्षे र्व्याख्यास्यामितेजस ॥ ८ ॥ सञ्जय उवाच ॥ यथाप्रज्ञ महाप्राज्ञ भौमान् वक्ष्यामिते गुणान् । शास्त्रचक्षुरवेक्षस्व नमस्तेभरतर्षभ ॥ ९ ॥ द्विविधानीह भूतानि त्रसाणि स्थावराणि च । त्रसानां त्रिविधा योनिरण्डस्वेदजरायुजाः ॥ १० ॥ त्रसानांखलु सर्वेषां श्रेष्ठा राजन् जरायुजाः । जरायुजानां प्रवरा मानवाः पशवश्चये ॥ ११ ॥ नानारूपधरा राजंस्तेषां भेदाश्चतुर्दश । वेदोक्ताः पृथिवीपालयेषुयज्ञाः प्रतिष्ठिताः ॥१२॥ ग्रामस्थानांपुरुषाःश्रेष्ठा सिंहाश्चारण्यवासिनां । सर्वेषामेवभूतानामन्योन्येनोपजीवनं १३ उद्भिज्जाःस्थावराः प्रोक्तास्तेषां पंचैवजातयः । वृक्षगुल्मलतावल्ल्यस्त्वक्साराम्तृणजातयः ॥ १४ ॥ तेषांविंशतिरेकोनामहाभूतेषुपंचसु । चतुर्विंशतिरुद्दिष्टा गायत्रीलोकसम्मता ॥ १५ ॥ यएतां वेदगायत्रींपुण्यांसर्व गुणान्वितां । तत्वेनभरतश्रेष्ठ सर्वलोकेनप्रण

बुद्धिरूप दीपक और ज्ञानरूप नेत्रों से संयुक्तहो, संजय बोले कि हे भरतर्षभ महाज्ञानी धृतराष्ट्र मैं अपनी बुद्धि के अनुसार पृथ्वी के गुणोंका वर्णन करूंगा तुमभी शास्त्ररूपी नेत्रों का धारण किये विचार करो मैं आपको नमस्कार करताहूं यहां दो प्रकारके जीवधारी हैं एकस्थावर दूसरे जंगम अर्थात् नहीं चलने वाले और चलने वाले और सब जीवधारियोंकी उत्पत्ति स्थान तीन प्रकारसे है अर्थात् अंडज स्वेदज जरायुजस है । १० । और जंगम जीवों में जरायुज उत्तमहैं और जरायुजों में मनुष्य वा पशु हैं यह दोनों अत्यन्त उत्तमहैं वही अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाले हैं उनके प्रकार जो वेद में कहेगये हैं वह संख्या में चौदह हैं उन्हीं में यज्ञादि धर्म नियत है और ग्राम वा नगर के वासियों में मनुष्य श्रेष्ठ हैं और वनवासियों में सिंह उत्तम हैं सब जीवों का जीवन निर्वाह

---

boon of the great rishi Vyas, you are endowed with the light of wisdom and the eyes of knowledge" "Best of *Bharats*!" replied Sanjaya. "I shall tell you the merits of the earth to the extent of my knowledge. Hear and compare it with your knowledge of books I bow to you The creatures of the earth are of two kinds, moveable and immoveable They are again divided into three sorts according to their system of birth—Oviporous, Viviporous and those born by effect of heat and damp 10 Of moveable beings those who are born alive are the best and of the latter the foremost are human beings and animals These appear in various forms which according to the Vedas are fourteen in number and on which sacrifices rest. Of those who live in villages and cities, human beings are the best, while lions are the foremost of those living in forests. They all live with the help of one another 16. Those which come out of ground,

श्यति ॥ १६ ॥ अरण्यवासिनः सप्तसप्तैषांग्रामवासिन । सिंहाव्याघ्रावराहाश्चम
हिषावारणास्तथा ॥ १७ ॥ ऋक्षाश्चवानराश्चैव सप्तारण्या स्मृतानृप । गौरजावि
मनुष्याश्चअश्वाश्वतरगर्दभा ॥ १८ ॥ एतेग्राम्या समाख्याता पशव सप्तसाधुभि ।
एतेवैपशवोराजन् ग्राम्यारण्याश्चतुर्दश ॥ १९ ॥ भूमौचजायतेसर्व भूमौसर्वविनश्यति ।
भूमि प्रतिष्टाभूताना भूमिरेवसनातन ॥ २० ॥ यस्यभूमिस्तस्यसर्वजगत्स्थावरजगमम् ।
तत्रातिगृद्धाराजानोविनिघ्नतीतरेतरम् ॥ २१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्वणि भौमगुणकथनं
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

परस्पर में है । १६ । पृथ्वी को फोड़कर उत्पन्न होनेवाले वृक्षादिक स्थावर कहे जाते हैं उनके पांच भेदहै वृक्ष, गुल्म, लता, बल्ली, त्वचासार और तृणजाति, पंच महा भूतों में उनके उन्नीस प्रकार हैं अर्थात् स्थावर जीव ५ और जंगम १४ और लोक में गायत्री भी चौबीस अक्षरों को उपदश कीजाती है सो हे राजा जो जीवधारियों में से उस सर्वगुणसम्पन्न गायत्री को मूल समेत जानता है वह संसार में नाश नहीं होता है, सब पृथ्वी मेंही उत्पन्न होते हैं और पृथ्वीपर ही नाश होजाते हैं पृथ्वी सब जीवों का निवास स्थान होकर बहुत प्राचीन है इनजीवों में सात ग्रामवासी वा सात नगर निवासी हैं सिंह, व्याघ्र, बराह, भैंसा हाथी, रीछ, वानर यह सात वनवासी कहे जाते हैं गौ बकरी भेड़ मनुष्य घोड़ा खिचर गधा इन सातोंको साधूलोग ग्रामवासी कहते हैं और यही ग्रामवासी और वनवासी चौदह पशु हैं इन्हीं चौदह पशुओं में मनुष्यभी गिनाजाता है जिसकी पृथ्वी है उसीका यह सब स्थावर जगम जगत् है उसमें लोभी राजा लोग परस्पर में मारते हैं ॥ २१ ॥

such as trees, etc, are immoveable They are five in number, *viz*, trees, shrubs, creepers *vallis* (creeping on ground) and grasses Thus of moveables and immoveables there are nineteen Their constituents are five which with the above make up twentyfour, the same as the letters of *gayatri* He who knows this *gayatri* possessed of every virtue, is free from destruction All who are born on earth die on it The earth being the refuge of all creatures, is of very old standing Of the animals seven live in forests *viz*, lions, tigers, boars, buffaloes, elephants, bears and monkeys, and seven, *viz*, cows, goats sheep, men horses mules and asses live in habitations Of these, man is one He who possesses the earth, is the lord of all its moveables and immoveables and it is for the sake of the earth that avaricious kings slay one another" 21

धृतराष्ट्र उवाच ॥ नदीनां पर्वतानांच नामधेयानि सञ्जय । तथा जनपदानांच ये चान्ये भूमि माश्रिताः ॥ १ ॥ प्रमाणञ्च प्रमाणज्ञ पृथिव्यामम सर्वतः । निखिलेनसमाचक्ष्व काननानिच सञ्जय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ पञ्चेमानि महाराज महाभूतानि संग्रहात् । जगतीस्थानि सर्वाणि समान्याहुर्मनीषिणः ॥ ३ ॥ भूमिरापस्तथा वायु रग्निराकाश मेवच । गुणोत्तराणि सर्वाणि तेषां भूमिः प्रधानतः ॥ ४ ॥ शब्दः स्पर्शश्च रूपंच रसो गन्धश्च पंचमः । भूमेरेते गुणाः प्रोक्ता ऋषि भिस्तत्त्व वेदिभिः ॥५॥ चत्वारोऽप्सु गुणा राजन् गन्धस्तत्र न विद्यते । शब्दः स्पर्शश्च रूपंच तेजसोथ गुणास्त्रयः । शब्दः स्पर्शश्च वायोस्तु आकाशे शब्द एवतु ॥ ६ ॥ एते पंच गुणा राजन् महाभूतेषु पंचसु । वर्त्तन्ते सर्व लोकेषु येषु भूताः प्रतिष्ठिताः ॥ ७ ॥ अन्योन्यं नाभिवर्त्तन्ते साम्यं भवति

अध्याय ॥ ५ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय नदी पर्वत देश और अन्य अन्य जो पृथ्वी पर नियत हैं उन सबके नामोंको वर्णन करो, हे प्रमाण के भी ज्ञाता संजय पृथ्वीका प्रमाण जैसा कि सब ओरसे है उस सबको मूल समेत मुझ से वर्णन करो, संजय बोले कि हे महाराज पंडित लोगों ने इन सब पञ्च महाभूतों को एकत्र होजाने से ब्रह्माण्डरूप और ब्रह्मरूप वर्णन किया है पृथ्वी जल, वायु, अग्नि, आकाश यह पाँचों क्रमसे एक से दूसरा एक एक गुण अधिक रखनेवाले हैं, मूल जाननेवाले ऋषियों ने पृथ्वी के शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध यह पांच गुण कहे जलमें चार गुण हैं एक गन्ध गुण नहीं है अग्नि के तीन गुण शब्द स्पर्श और रूप वायु में शब्द वा स्पर्श है आकाश में केवल एक शब्दही गुण है, हे राजा पञ्च महाभूत रूप सब लोकोंमें यही पांच गुण वर्तमान हैं, उन्हीं में जीवधारी नियत हैं, निश्चय करके जब प्रलय सुषुप्ति, समाधि, मोक्ष इन चारोंमें ब्रह्म-

CHAPTER V.

Dhritrashtra desired of Sanjaya to name the rivers, mountains, countries and other things of the earth as well as its dimensions. "The learned, O king," replied Saujaya, "regard all things of the universe to be of same form on account of the presence of the five great elements in them. Space, fire, air, water and earth are the elements of which each succeeding one possesses the quality of the former ones in addition to its own. Their attributes are sound, touch, vision, taste and scent respectively. The whole world is made up of these five elements or attributes. All the living beings are made up of these. The eater and that which is to be eaten donot come face to face with each other as long as they are united with Brahm in the four states, viz. *Pralaya*, *sushupti*, *samadhi* and

धे यदा ॥ ८ ॥ यदा तु विपरीभाव माविशन्ति परस्परम् । तदा देहैर्देहवन्तो व्यतिरोहन्ति
नान्यथा ॥ ९ ॥ आनुपूर्व्या विनश्यन्ति जायन्ते चानुपूर्वशः । सर्वाण्यपरिमेयानि तदे-
वरूप मैश्वरम् ॥ १० ॥ तत्र तत्र हि दृश्यन्ते धातवः पांचभौतिकाः । तेषांमनुष्यास्त
र्केण प्रमाणानि प्रचक्षते ॥ ११ ॥ अचिन्त्याः खलु ये भावा न तांस्तर्केण साधयेत् । प्रकृ
तिभ्यः परं यत्तु तदचिन्त्यस्य लक्षणम् ॥ १२ ॥ सुदर्शन प्रवक्ष्यामि द्वीपंतु कुरुनंदन ।
परिमण्डलो महाराज द्वीपो सौ चक्रसंस्थितः ॥ १३ ॥ नदी जल प्रतिच्छन्नः पर्वतैश्चाभ्र
सन्निभैः । पुरैश्चविविधाकारै रम्यैर्जनपदैस्तथा ॥ १४ ॥ वृक्षैः पुष्पफलोपेतैः सम्पन्नधन
धान्यवान् । लवणेन समुद्रेण समन्तात् परिवारितः ॥ १५ ॥ यथाहि पुरुषः पश्ये दादर्शे

भाव होता है तब वह भक्ष्य भक्षक परस्पर में सम्मुख नहीं होते और जब वह ब्रह्मभावसे गिरकर परस्पर भिन्न २ रूपों में प्रवेश करते हैं तब निश्चय करके जीव जीवों पर गिरतेहैं क्रमसे ही उत्पन्न होते हैं और क्रम क्रम से ही नाश होजाते हैं और वह सब असंख्य हैं इस कारण इन सबका ब्रह्मरूप है । १० । फिर प्रलय के पीछे पञ्चभूत सम्बन्धी भूगोल आदि धातु जहां तहां दृष्टिगोचर होते हैं उनके प्रमाणों को मनुष्य बुद्धिकी तर्कणाओं से कहते हैं निश्चय करके जो ध्यान से भी बाहर हैं उनको तर्कणाओं से कैसे सिद्ध करसक्ते हैं, जो तीनों गुण और पञ्चभूतादि से पृथक है वह ध्यान भी अगम्य ब्रह्म का लक्षण है, हे कौरवनन्दन अब मैं सुदर्शन नाम जम्बूद्वीप का वर्णन करता हूं कि यह परिमण्डल नाम द्वीप चारों ओर से देशरूप अथवा चक्र के समान नियत है, नदियों के जल से और बादलों के रूप पर्वतों से अथवा नानाप्रकार के रूपवाले पुर वा देशों से ढकाहुआ है और फूल फले वृक्ष धनधान्य आदि से संयुक्त खारी समुद्र से घिराहुआ है । १५ । जैसे कि मनुष्य दर्पण में अपने मुख को देखता

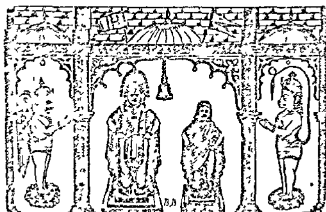
moksh But when, disunited from Brahm, they appear on the earth in different forms, one living being *falls* upon another. The living beings are born one by one and meet their death in the same order. They are innumerable and like Brahm in form. 10. After Pralaya, things made of the five elements are seen here and there. People try to ascertain their dimensions by the exercise of their reasoning powers. But those matters which are inconceivable should never be sought to be tried by reason. That which is beyond nature is an *indication of the inconceivable*. I shall now describe to you the island of Sudarshan, joy of the Kauravas! This island is circular like a wheel. It is covered with rivers, mountains looking like clouds, cities and provinces. It is covered with trees bearing fruits and flowers and with crops of various kinds and other wealth. It is

मुपमात्मनः । एवं सुदर्शनद्वीपो दृश्यते चन्द्र मण्डले ॥ १६ । द्विरंशे पिप्पलस्तत्र द्वि-
रंशे च शशो महान् । सर्वौषधि समावायः सर्वतः परिवारितः ॥ १७ ॥ आपस्ततोऽन्या
विज्ञेयाः शेषः संक्षेप उच्यते । ततोऽन्य उच्यते चाय मेनं संक्षेपतः शृणु ॥ १८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्वणि सुदर्शनद्वीपवर्णने
पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

है उसी प्रकार सुदर्शन द्वीप ब्रह्माण्ड स्वरूप चन्द्रमण्डल रूपी मन में दिखाई देता है, उस चंद्रमंडलके एकभाग में दोरूपधारी पीपलका वृक्ष है और दोभाग एक बड़े खर हे कीनाई दिखाई देते हैं वह सुदर्शन द्वीप सब औषधोंका रखन वाला सब ओर से समुद्र और अन्य देशों से घिरा है इसके अतिरिक्त और जो कुछ है उसको संक्षेप से सुनो । १८ ।

surrounded by the salt waters of the ocean The island is seen in the lunar disc just as we see our faces in a mirror. Two of its parts are seen like a *pipal* tree, while the other two look like a large hare. It is overgrown by medicinal herbs and is surrounded by seas and countries. I shall, in short describe to you what remains besides this." 18.



धृतराष्ट्र उवाच । उक्तोद्वीपस्य सक्षेपो विधिवद्बुद्धिमंस्त्वया। तत्वज्ञश्चासि सर्वस्य
वितरत्ब्रू हि सञ्जय ॥ १ ॥ यावान् भूम्यवकाशोय दृश्यते शशलक्षणे । तस्य
प्रमाणं प्रब्रूहि ततो वक्ष्यसि पिप्पलम् ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंराज्ञासपृ
ष्टस्तु सञ्जयो वाक्यमब्रवीत् । सजय उवाच । प्रागायतामहाराज षडेतेचपर्वता.
अवगाह्युभयतः समुद्रौ पूर्वपश्चिमौ ॥ ३ ॥ हिमवान्हेमकूटश्च निषधश्चनगोत्तम ।
नीलश्च वैदूर्यमय. श्वेतश्च शशिसन्निभ ॥ ४ ॥ सर्वधातुविचित्रश्च शृङ्गवान्नामपर्वत. ।
एतेवै पर्वता राजन् सिद्धचारणसेविता. ॥ ५ ॥ तेषामन्तरविष्कम्भो योजनानि
सहस्रश. । तत्र पुण्या जनपदास्तानि वर्षाणि भारत ॥ ६ ॥ वसन्ति तेषु सत्वानि

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे बुद्धिमान संजय तुमने अपनी बुद्धि के अनुसार जंबूद्वीप का आशय वर्णन किया और तुम मुख्यताके भी जानने वालेहो इससे इसको मूलसमेत ब्योरेवार वर्णनकरो पहले उस भागका वर्णन करो जो खरहे की नाई दिखाई देता है और फिर उसका वर्णन करना जो पीपल की सदृश दिखाई पडता है संजय बोले हेराजा अब जंबूद्वीप का संपूर्ण ब्योरेवार वृत्तान्त सुनो छः खंडों के पर्व्वत दोनों ओरको पूर्व और पश्चिम समुद्रसे मिलेहुयेहैं, हिमवान, हेमकूट, निषध, वैडूर्यनील, शशिप्रभश्वेत, सर्वधातुमय शृगवान पर्व्वत इनछःओं पर्व्वतों पर सिद्ध चारण लोग निवास करतेहैं, हे भरतवंशी इनपर्व्वतों के मध्य स्थलका बिस्तार हजारों योजन है और इन में अनेक पवित्र २ देशहैं उन्हींका खण्डनाम है । ५ । उनखडों में नानाप्रकारके जातिवाले लोग निवास करते हैं यहभारतवर्ष है इस से दूसरा हेमवत नामखण्डहै, और हेमकूट पर्वत से परे हरिवर्षनाम खण्डहै,

CHAPTER VI

"Wise Sanjaya," said Dhritrashtra, 'You have given a good account of Jambudweep Tell me all about it in detail Give me an account of the dimensions of that portion which looks like a hare and then of that portion which resembles a *pipal* tree "Hear a full account of Jambudweep," replied Sanjaya, "Touching the eastern and western seas are six ranges of mountains, viz, *Himuan, Hemcoot, Nishadh, Vaiduryanil, Shashiprabh shwet* and *Shringwan* which is full of all sorts of metals These six mountains are inhabited by *Sidhas* and *charans* The space between them extends for thousands of miles and several holy cities are situated over those areas. They are known as *varshas* 5 People of different tribes live in them and the whole land is known as Bharat-varsh The next portion is

नानाजातीनि सर्वेश ॥ इदन्तु भारत वर्षं ततो हैमवत परम् ॥ ७ ॥ हेमकूटात् परश्चैव हरिवर्ष प्रचक्षते । दक्षिणेनतु नीलस्य निषधस्योत्तरेणतु ॥ ८ ॥ प्रागायतो महाभाग माल्यवान्नाम पर्वत । तत पर माल्यवत पर्वतो गन्धमादन ॥ ९ ॥ परिमण्डलस्तयोर्मध्ये मेरु कनकपर्वत । आदित्यतरुणाभासो विधूमइवपावक ॥ १० ॥ योजनाना सहस्राणि चतुरशीतिरुच्छ्रित । अधस्ताच्चतुरशीतिर्योजना नांमहीपते ॥ ११ ॥ ऊर्ध्वमधश्च तिर्यक् च लोकानावृत्य तिष्ठति । तस्य पार्श्वे त्वमी द्वीपाश्चत्वार सस्थिता विभो ॥ १२ ॥ भद्राश्व केतुमालश्च जम्बूद्वीपश्च भारत । उत्तराश्चैव कुरव कृतपुण्यप्रतिश्रया ॥ १३ ॥ विहग सुमुखोयस्तु सुपर्ण स्यात्मज कुल । स वै विचिन्तयामास सौवर्णान् वीक्ष्य वायसान् ॥ १४ ॥ मेरुरु त्तममध्यानामधमानाच पक्षिणाम् । अविशेषकरो यस्मात्तस्मादेन त्यजाम्यहम् १५

नील पर्व्वत के दक्षिण और निषध के उत्तर ओरसे पूर्व और पश्चिम समुद्र का स्पर्श करनेवाला माल्यवान पर्व्वत है उस माल्यवानसे आगे गन्धमादन पर्वत है और उनदोनों के मध्यमें सुनहरी और चारों ओर से मण्डलवर्ती मेरु पर्वत है, बहतरुण सूर्य के समान प्रकाशमान और निर्धूम अग्नि के समान है। १०। और चौरासी हजार योजन ऊंचा है और नीचे की ओरभीउतनाही है वह ऊंचानीचा तिरछा लोकों को व्याप्त करके वर्त्तमान है, हे समर्थ भरतवंशी धृतराष्ट्र उस मेरु के अन्तर्गत यह चारद्वीप नियत हैं एकमुख्य जंबूद्वीप और तीनउपद्वीप भद्राश्व, केतुमाल, कौरव नाम से पुण्यवान पुरुषों के रचे हुये आश्रम हैं।१३। निश्चय करके जो सुमुख नाम गरुडपक्षी है उसने सुनहरी कौवोंको देख कर विचार कियाहै जोकि मेरुपर्वत उत्तम और विस्तृत वा छोटे २ पक्षियों की भी मुख्यताको नहीं करनेवालाहै इसकारणसे मैं इसको त्याग करताहूं, महाशोका

---

known as Hemvant and *Harivarsh* lies beyond Hemkut To the south of *Nil* and north of *Nishadh*, touching the eastern and western seas, is the range known as *Malyavan* and beyond it lies Gandhmadan Between these two lies the golden *Meru* which is round in shape, shining like the morning sun or smokeless fire. 10 It is eightyfour thousand yojans high and is as much below as above It supports the earth on all sides Besides Meru there are four islands, the chief of which is Jambu and the minor ones are Bhadrashwa, Ketumal and Kaurav, inhabited by virtuous men. 13 The bird Sumukh, son of Suparn, beholding that all the birds on Meru were of golden plumage, thought it better to leave that mountain because there was no difference there of good, middling or bad. 15 The sun always

तमादित्योनुपर्येति सततं ज्योतिषाम्वर । चन्द्रमाश्च सनक्षत्रो वायुश्चैवप्रदक्षिणः ॥ १६ ॥ सपर्वतो महाराज दिव्यपुष्पफलान्वितः । भवनैरावृत सर्वैर्जाम्बूनदपरिष्कृतैः ॥ १७ ॥ तत्र देवगणाराजन् गन्धर्वा सुरराक्षसाः । अप्सरोगण संयुक्ता शैले क्रीडन्ति सर्वदा ॥ १८ ॥ तत्र ब्रह्मा च रुद्रश्च शक्रश्चापि सुरश्वरः । समेत्य विविधै र्यज्ञैर्यजन्तेऽनेकदक्षिणैः ॥ १९ ॥ तुम्बुरुर्नारदश्चैव विश्वावसुर्हहाहुहू । अभिगम्यामरश्रेष्ठांस्तुष्टुवुर्विविधैः स्तवैः ॥ २० ॥ सप्तर्षयो महात्मानः कश्यपश्च प्रजापतिः । तत्रगच्छन्ति भद्रंते सदा पर्वाण पर्वणि ॥ २१ ॥ तस्यैव मूर्धन्युशनाः काव्यो दैत्यैर्महीपते । इमानि तस्य रत्नानि तस्येमे रत्नपर्वताः ॥ २२ ॥ तस्मात् कुबेरो भगवांश्चतुर्थं भाग मश्नुते । ततः कलांशं वित्तस्य मनुष्येभ्यः प्रयच्छति ॥ २३ ॥ पार्श्वे तस्योत्तरे दिव्यं

स्वामी सूर्य सदैव उसकी परिक्रमा करता है और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा और वायुभी उसकी परिक्रमा करते हैं, और वह दिव्यफल फलफूलमूलों से संयुक्त है और सब स्वर्णमय स्थानों से व्याप्त है जिसपर देवताओंके समूह गधर्व असुर राक्षस अप्सराओं के समूहों समेत क्रीड़ा करते हैं, और उसपर ब्रह्मा रुद्र और देवेन्द्र आदि देवता मिलकर बड़े २ यज्ञादिक करतेहैं और तुम्बुरुनाम विश्वावसु हाहाहूहू नाम गन्धर्व उन देवताओं के सन्मुख जाके उनको अनेक स्तोत्रादिकों से प्रसन्न करते हैं । २० । आपका कल्याणहो उस पर्व्वतपर महर्षि सप्तऋषि काश्यप प्रजापति सदैव पर्व पर्व में जाते हैं, और उसी पर्वत के मस्तक पर शुक्र जीभी राक्षसों समेत विहार करते हैं उन शुक्रजी के यह हेमरत्न हैं उन्हीं रत्नों के पहाड़ भी अनेक हैं और कुबेर जी उन के चौथेभाग को भोगते हैं उस धन के सोलहवें भागको मनुष्यों के निमित्त देते हैं, उस मेरुके उत्तरभाग में कर्णिकार राजवृक्षों का वन है जो कि दिव्यरूप सब ओरसे प्रफुल्लित मनोहर

goes round Meru the best of luminaries, and the moon with her attendant constellations and the god of wind follows the wake of the sun. That mountain brings forth celestial fruits and flowers and is dotted all over with houses made of gold. There the gods, the Gandharavas, the asuras and the rakshases join in sport with apsaras. 18. There Brahma, Rudra and Shakra the prince of gods performed many sacrifices with large donations. Tumvuru, Narad, Vishwavasu, Haha and Huhu go there to adore the king of gods with various hymns. 20. The high minded seven rishis and Kashyap the progenitor of all beings go there on every *parva* day. On the brow of the same mountain Shukra roams along with the rakshases. To him belong all the jewels and gold as well as the mountains abounding in such commodities. Kuver enjoys a fourth part of those valuables

सर्वर्तु कुसुमैश्चितम् । कर्णिकार वनं रम्यं शिलाजालसमुद्गतम् ॥ २४ ॥ तत्र साक्षात् पशुपतिर्दिव्यैर्भूतैः समावृत । उमासहायो भगवान् रमते भूतभावन. ॥ २५ ॥ कर्णिकारमयीं मालां बिभ्रत्पादावलम्बिनीम् । त्रिभिर्नेत्रैः कृता द्योतस्त्रिभि सूर्यै रिवोदितै ॥ २६ ॥ तमुग्र तपस. सिद्धा सुव्रता सत्यवादिन. । पश्यन्ति नहि दुर्वृत्तै. शक्योद्रष्टुं महेश्वर. ॥ २७ ॥ तस्य शैलस्य शिखरात् क्षीरधारा नरेश्वर । विश्वरूपापरिमिता भीम निर्घात नि स्वना ॥ २८ ॥ पुण्या पुण्यतमैर्जुष्टा गंगा भागीरथी शुभा । प्लवंतीव प्रवेगेन हृदे चन्द्रमसः शुभ ॥ २९ ॥ तया ह्युत्पादित पुण्य स ह्रद सागरोपम । ता धारयामास तदा दुर्धरां पर्वतैरपि ॥ ३० ॥ शत वर्ष सहस्राणां शिरसैव पिनाकधृक् । मेरोस्तु पश्चिमे पार्श्वे केतुमालो महीपते ॥ ३१ ॥ जम्बूखण्डेतु तत्रैव महाजनपदोनृप ।

शिला जालों से अत्यन्त ऊंचा है उसमेरुके ऊपर जीवोंके उत्पन्न कर्त्ता कर्णिकार फूलोंकी चरण पर्यन्त मालाको पहने हुये सूर्यके समान प्रकाशित तीननेत्रधारी साक्षात् शिवजी महाराज अपनी उमादेवी समेत दिव्य जीवन रियों से व्याप्त रहते हैं । २६ । उग्रतपी शुद्धवर्ती सत्यवक्ता शुद्धलोग उनका दर्शन करसक्ते हैं वह महेश्वरजी कुचाली पुरुषों से देखनेके योग्य नहीं है । २७ । हे राजा उसी महापर्वतके शिखरसे दूध के समान धारा रखने वाली विष्णुरूपा भयानक गम्भीर शब्दवाली वायुसे टक्कर खाती हुई श्रीगंगाजी प्रगट हुई, वह पवित्र और पवित्र मनुष्यों से सेवित शुभ भागीरथी गंगा बड़ी शीघ्रता और तीव्रतासमेत चन्द्रमाके शुभ हृदयमें विलास करतीहुई मग्नहुई है उसीने वह समुद्रोंपर पवित्रहृदय अपनी तीव्रधारासे उत्पन्न किया है जो पहाड़ों से भी धारण नहीं कीजाती थी ऐसी गंगा को शिवजीने एक लाख वर्ष पर्यन्त अपने शिर में धारण किया और मेरुके पश्चिमी कोणमें जंबूद्वीप के मध्य केतुमाल नाम खण्डही उसमें बड़ादेश है । ३१ ।

and gives a sixteenth part of it to men The northern part of Meru is covered with the forest of *Karnikar* trees which bear flowers throughout the year It is very high with its network of stone There resides the creator of all beings, Shiv the three-eyed, wearing a garland of Karnikar flowers extending to his feet, glorious like the sun, accompanied by his goddess *Uma* and surrounded by gods. 26. Great ascetics, observers of vows, the truthful and the pure only can see Him, the great Lord cannot be perceived by the wicked. 27 From the summit of the same Meru flows the Ganges with her milky current extending far and wide and raising a tremendous uproar when her waters come in contact with the wind. Bhagirathi the holy Ganges appears with a tremendous velocity, forming an ocean like lake The Ganges whom even the mountains cannot bear, was kept by Shiv on his head for a hundred thousand years. In the western

आयुर्दशसहस्राणि वर्षाणां तत्र भारत ॥ ३२ ॥ सुवर्ण वर्णाश्चनरा स्त्रियश्चाप्सरसोपमा
अनामया वीतशोका नित्य मुदितमानसा ॥ ३३ ॥ जायन्ते मानवास्तत्र निष्टप्तकनक
प्रभा । गन्धमादन शृंगेषु कुबेर सह राक्षसै ॥ ३४ ॥ संवृतोऽप्सरसां सर्वैर्मोदते
गुह्यकाधिप । गन्धमादन पार्श्वेतु परे त्वपरगण्डिका ॥ ३५ ॥ एकादशसहस्राणि
वर्षाणापरमायुष । तत्र हृष्टा नरा राजस्तेजो युक्तामहाबल । स्त्रियश्चोत्पल वर्णाभा
सर्वा सुप्रियदर्शना ॥ ३६ ॥ नीलात्परतर श्वेत श्वेताद्धैरण्यक परम् । वर्ष मैरावत
राजन्नानाजनपदावृतम् ॥ ३७ ॥ धनु सस्थे महाराज द्वेवर्षे दक्षिणोत्तरे । इलावृत
मध्यमन्तु पञ्चवर्षाणि चैव हि ॥ ३८ ॥ उत्तरोत्तरमेतभ्या वर्षेभ्युद्रिच्यते गुणै ।
आयु प्रमाणमारोग्य धर्मत कामतोर्थत ॥ ३९ ॥ समन्वितानि भूतानि तेषुवर्षेषु

उसमें मनुष्यों की अवस्था सतयुगादि में दश हजार वर्षकी है वहां के मनुष्यों का सुवर्ण के समान वर्णहोता है और स्त्रियां अप्सराओं के समानहोती हैं वहां के मनुष्य नीरोग आनन्दी सन्देह रहित स्वर्ण के समान वर्ण रखनवाले सुन्दर रूपवान उत्पन्नहोते हैं और गुह्यकों के राजा कुबेरजी राक्षसों समेत अप्सराओं के समूहोंसे संयुक्त गन्धमादनके शुके हुए शिखरोंपर आनन्द करते हैं, गन्धमादन के दूसरेभागके समीप अपरगडिका नामछोटे २ पहाड हैं। ३५। वहां के जीव ग्यारह हजार वर्षकी उमरके होते हैं, वहां के मनुष्य तेजस्वी और महाबली हैं और स्त्रियां उत्पल नामकमल के समान सुन्दर अत्यन्त दर्शनीय हैं, नील पर्वतके आगे श्वेतपर्वत है और श्वेतसे आगे हैरण्यकनामखड है और शृंगवान पर्वतके आगे अनेक देशोंसे व्याप्तएरावत खण्ड है और दक्षिणोत्तरमें भरतखण्ड और एरावत खण्ड यह दोनोंधनुष समान अर्थात् त्रिकोणरूप है और बीच में इलावर्त्तादि पांचखण्डवर्त्तमानहैं, उनसे आगे के खण्ड गुणों में अधिकहैं और अवस्था बानी रोगताभी

corner of Meru is *Ketumal* 31 In satyug the people living there attained the age of ten thousand years The men are of the colour of gold and the women are beautiful like apsaras. The people living there are healthy happy free from care and beautiful Kuver the king of Guhyals and yakshes revels with the apsaras on the summits of Gandhmadan In the vicinity of Gandhmadan there are other smaller hills 35 The people living there attain the age of eleven thousand years and are glorious and strong The women are beautiful and of the colour of a lotus flower Beyond the blue mountains are the white mountains and farther on are the golden ones Beyond these are the Airavat hills dotted over with many provinces. Airavat in the north and Bharatvarsh in the south are of the form of a bow These five provinces are in the middle of which the centre

भारत । एवमेषा महाराज पर्वतैः पृथिवी चिता ॥ ४० ॥ हेमकूटस्तु सुमहान् कैलासो नाम पर्वत । यत्र वैश्रवणो राजन् गुह्यकैः सहमोदते ॥ ४१ ॥ अस्त्यु त्तरेण कैलास मैनाक पर्वतं प्रति । हिरण्यशृङ्ग सुमहान् दिव्यो माणमयोगिरिः ॥ ४२ ॥ तस्य पार्श्वे महाद्दिव्यं शुभ्र काञ्चनबालुकम् । रम्य बिन्दुसरो नाम यत्र राजा भगीरथ ॥ ४३ ॥ दृष्ट्वा भागीरथीं गङ्गामुवास बहुला समा । यूपाम णिमयास्तत्र चैत्याश्चापि हिरण्मया ॥ ४४ ॥ तत्रेष्ट्वा तु गत सिद्धिं सहस्रशो महा यशाः । स्रष्टा भूतपतिर्यत्र सर्वलोकैः सनातनः ॥ ४६ ॥ उपास्यते तिग्मतेजा यत्र भूतैः समन्तत । नरनारायणौ ब्रह्मा मनु स्थाणुश्च पञ्चम ॥ ४५ ॥ तत्र दिव्या त्रिपथगा प्रथमन्तु प्रतिष्ठिता । ब्रह्मलोकादपक्रान्ता सप्तधा प्रतिपद्यते ॥ ४७ ॥

एकसे दूसरे में उत्तरोत्तरहै उनखण्डों में सब जीवधारी धर्म काम अर्थ से संयुक्तहै हे राजा इसप्रकार से यह पृथ्वी पर्वतोंसे व्याप्तहै ४० और बड़ापर्वत हेमकूटनाम कैलास है जिसपर कुबेरजी गुह्य यक्षों समेत विश्राम करतेहैं कैलास पर्वत के उत्तर मैनाक पर्वत के सम्मुख दिव्य मुनिलोगों से भरा हुआ हिरण्य शृंग नाम बड़ा पर्वत है, उस के समीप स्वर्णरज युक्त मनोहर और दिव्य बिन्दुसर नामतड़ाग है जिसपर राजाभगीरथने भागीरथीगंगाको देखकर बहुत वर्षोंतक निवास कियाथा वहां मणि जटितयज्ञस्तंभ और सुवर्णजटितवृक्षही यज्ञकी सीमाहैं ४५ वहीं बड़ेयशस्वी इन्द्रनेभी यज्ञको करके महान्सिद्धीको पाया, वहांही सब संसारकेस्वामी सबसे प्रथम महातेजस्वी शिवजी चारोंओर से पवित्रात्मापुरुषों से सेवाकिये जाते हैं और नर नारायण ब्रह्मामनु पांचवें स्थाणु नाम रुद्रजी भी वर्तमानहैं वहांही प्रथम पृथ्वी

---

is Elavrita. Of the seven provinces that which is farther north, excels the one to its immediate south in respect of longevity, stature, health, reghteousness, happiness and profit Creatures live together in these provinces and thus the earth is covered with mountains. 40 The huge mountain named Hemcoot, also called Kailas, is the resort of Kuver and his yakshes and guhyaks To the north of Kailas and opposite Menak is the huge mountain Hiranyashring in the vicinity of which is lake Vmdusar, containing gold dust, on the bank of which king Bhagirath stayed for the sake of the Ganges. There the pillars and trees, studded with gold and gems, mark the boundaries of sacrifices. It was there that Indra of great glory won great success by his sacrifices. It is there that Shiv the lord of all the world and the foremost of glorious beings, is attended by persons possessing pure soul. It is the residence of Nar, Narayan, Brahma,

वस्वौकसारा नलिनी पावनी च सरस्वती । जम्बूनदीच सीताच गङ्गा सिन्धुश्च सप्तमी ॥ ४८ ॥ अचिन्त्या दिव्यसंकल्पा प्रभोरेव सन्निधिः । उपासत यत्र सत्रसहस्रयुगपर्यये ॥४९॥ दृश्यादृश्याच भवतिततस्तत्रसरस्वती । एतासप्ता सप्तगङ्गा त्रिषुलोकेषविश्रुता ॥५०॥ रक्षांसिवैहिमवतिहेमकूटेतुगुह्यकाः । सर्पानागाश्चनिषधेगोकर्णं च तपोवनम् ॥ ५१ ॥ देवासुराणां सर्वेषांश्वेतपर्वत उच्यते । गन्धर्वा निषधेनित्यं नीले ब्रह्मर्षयस्तथा । शृङ्गवांस्तु महाराज देवानां प्रतिसञ्चरः ॥ ५२ ॥ इत्येतानि महाराज सप्त वर्षाणि भागशः । भूतान्युपनिविष्टानि गतिमन्ति ध्रुवाणिच ॥५३॥ तेषमृद्धिर्बहुविधा दृश्यते दैवमानुषी । अशक्यापरि सङ्ख्यातुं श्रद्धेयातुबुभूषता ॥५४॥ यान्तु पृच्छसि मां राजन् दिव्यामेतां शशाकृतिम् । पार्श्वे शशस्य द्वे वर्षे उक्ते

पाताल और स्वर्ग के मार्ग में बहने वाली दिव्यनदी श्रीगङ्गाजी नियत होकर ब्रह्मलोकसे चली हुई सात प्रकारसे वस्वौक, सारा, नलिनी, पावनी सरस्वती, जंबूनदी, शीता गङ्गा, सिंधुनामों से स्थानस अगम्य और दिव्य रूपसे बहती है यह प्रभु ईश्वरकी रचना है हजार यज्ञोंके चक्रों इन्द्र उपासना करते हैं वहीं २ सरस्वती गुप्त और प्रकट होतीहैं, यह सातों गङ्गा दिव्य रूपोंस तीनों लोकों में वर्त्तमानहै । ५० । हिमाचल में राक्षस, हेमकूट में गुह्यक, निषधमें सर्प, गोकर्ण में तपोधन ऋषि लोगहैं, श्वेतपर्वत सब देवता और असुरों का कहाजाता है निषध में गंधर्व और नील पर्वत पर ब्रह्मऋषिलोग सदैव निवास करतेहैं, हे महाराज शृङ्गवान नाम पर्वत देवताओंका विहार स्थान है और यह सातोंखण्ड विभाग किये गये हैं उनसब में स्थावर और जङ्गम जीव रहते हैं उनका देव संबंधी और मनुष्य संबंधी धन बहुत प्रकार का देखने में आताहै । ५४ । हे राजा तुम जिस

Manu and Sthanu It was there that the divine Ganges, flowing on earth, heaven and subterraneon regions, issuing out of the region of Brahma, first showed herself and then dividing herslf into seven streams, flows as the Vaswoksara the Nalini, the cleansing Saraswati the Jambunadi, the Sheeta the Ganges and the Sindhu The supreme Lord has made this arrangement. Indra has performed thousands of sacrifices there The Saraswati is visible in some parts and invisible in others 50 Himachal is the home of rakshases, white mountain of gods and asurs, Hemcoot of Guhyaks, Nishadh of snakes, Golarn of ascetic rishis, Nishadh of Gandharavas, Nil of Brahmrishis and Shringvan is the pleasure ground of gods. These are the seven divisions over which moveables and immoveables are found and possess divine and worldly wealth. I cannot count them, although it

ये दक्षिणोत्तरे । कर्णौ तु नागद्वीपश्च काश्यपद्वीप एव च ॥ ५५ ॥ ताम्रपर्णशिलो राजञ्छ्रीमान् मलयपर्वतः । एतद् द्वितीयं द्वीपस्यदृश्यते शशसंस्थितम् ॥ ५६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्वणि भूम्यादिपरिमाण विवरणे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । मेरोरथोत्तरं पार्श्वं पूर्वं चाचक्ष्व सञ्जय । निखिलेन महाबुद्धे माल्यवन्तञ्च पर्वतम् ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । दक्षिणेन तु नीलस्य मेरोःपार्श्वे तथोत्तरे । उत्तराः कुरवो राजन् पुण्याः सिद्धनिषेविताः ॥२॥ तत्र वृक्षा मधुफला नित्यपुष्पफलोपगाः । पुष्पाणि च सुगन्धीनि रसवन्ति फलानि च ॥ ३ ॥ सर्वकामफलास्तत्र केचिद् वृक्षा जनाधिप । अपरे क्षीरिणो नाम वृक्षास्तत्र नराधिप ॥४॥

दिव्य विराट स्वरूप को मुझसे पूछतेहो उसकी संख्याका प्रमाण करना हमसे असंभव है परन्तु उसका सुननाही श्रद्धाके योग्य है विराट् पुरुषके दोनों ओर दोखण्ड कहे हैं दाहिने में भरतखण्ड अर्थात् कर्मभूमि और बायें में ऐरावत खंड अर्थात् भोगभूमि दोनों कानों में नाग द्वीप और काश्यपद्वीपहै । ५६ ।

अध्याय ॥ ७ ॥

धृतराष्ट्रबोले कि हे बुद्धिमान् संजय प्रथम मेरु पर्वत के उत्तरीय भाग के माल्यवन्त पहाड़के मूल समेत वृत्तान्तों को वर्णन करो, संजय बोले कि हे राजा नील पर्वत के दक्षिण और मेरु के उत्तरभाग में उत्तर कुरुदेश हैं जोकि पवित्र और सिद्धियोंसे शोभितहैं वहांपर वृक्ष मधुर फल फूलोंसे सदैव शोभित रहते हैं और पुष्प अत्यन्त सुगन्धित और फल महा रसील होते हैं, हे राजा वहां कोई कोई वृक्षतो सब अभिलाषाओंके पूर्ण करनेवाले हैं और अन्य बहुत से वृक्ष अ-

---

is good for the believers to hear of them. I have told you about the two divisions, that on the right is called Bharatkhand and that on the left is Airavatkhand. Nagdwip and Kashyap-dwip are the two ears of the hare." 56.

CHAPTER VII

"Tell me Sanjaya," said Dhritrashtra, " of the regions to the North and East of Meru as well as of Malyavat." "On the south of the Nil mountain and the north of Meru," replied Sanjaya, " are sacred northern Kurus the residence of Sidhas The trees there bear sweet fruits and flowers. The flowers are fragrant and the fruits are excellent in taste; some trees give fruits according to desire, while others give milk and other kinds of food of six different flavours.

येऽस्रवन्ति सदा क्षीरं षड्रसममृतोपमम् । वस्त्राणि च प्रसूयन्ते फलेष्वाभरणानि च ॥ ५ ॥ सर्वा मणिमयी भूमिः सूक्ष्मकाञ्चनवालुका । मणिरत्ननिभं रम्यं वज्रवैदूर्यसन्निभम् ॥ ६ ॥ भूभागं दृश्यते तत्र पद्मरागसमप्रभम् । सर्वर्तुसुखसंस्पर्शा निष्पङ्का च जनाधिप ॥ ७ ॥ पुष्करिण्य शुभास्तत्र सुखस्पर्शा मनोरमाः । देवलोकच्युताः सर्वे जायन्ते तत्र मानवाः ॥ ८ ॥ शुक्लाभिजनसम्पन्नाः सर्वे सुप्रियदर्शनाः । मिथुनानि च जायन्ते स्त्रियश्चाप्सरसोपमाः ॥ ९ ॥ तेषां ते क्षीरिणां क्षीरं पिबन्त्यमृतसन्निभम् । मिथुनं जायते काले समन्तच्च प्रवर्द्धते ॥ १० ॥ तुल्यरूपगुणोपेतं समवेशं तथैव च । एवमेव तु रूपं च चक्रवाकसमं प्रभो ॥ ११ ॥ निरामयाश्च ते लोका नित्यं मुदितमानसाः । दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च ॥ १२ ॥ जीवन्ति ते महाराज न चान्योन्यं जहत्युत । भारुण्डा नाम शकुनास्तीक्ष्णतुण्डा महाबलाः ॥ १३ ॥

घृत समान स्वादुयुक्त छः रस से युक्त दूधों के देनेवाले हैं और फलों में वस्त्राभरणों को उत्पन्न करते हैं । ५ । हे राजा सब पृथ्वी मणियों की बनीहुई और दिव्य सुवर्णकी बालू रखनेवाली और सब ऋतुओं में सुख से स्पर्शहोने वाली कीच आदि से रहित है वहांपर देवलोक से पतित लोग उत्पन्नहोते हैं वह सब विष्णुभक्तों से समानकरनेवाले और अत्यन्त स्वरूपवान्होते हैं और अप्सराओं के समान स्त्रियां वहां जोड़ों को उत्पन्न करती हैं वह जोड़े उन दूध देनेवाले वृक्षों के अमृतरूपी दूधों का पीते हैं समयपर जोड़े उत्पन्नहोते हैं और सदैव बढ़ते हैं और रूप गुणसंयुक्त सदैव एकसी पोशाकवाले होते हैं । १० । हे समर्थ वह जोड़ चक्रवाकों के समान एकसे रूपवाले भी होते हैं और नीरोगतापूर्वक सदैव प्रसन्नमन रहते हैं उनकी अवस्था ग्यारह हजार वर्षकी होती है और समान अवस्था होनेके कारण कोई किसी को नहीं मारता है अर्थात् एकही समय में देहोंको त्यागते हैं

They also yield cloths and ornaments. 5 The land abounds with golden sand. One portion of that beautiful land is radiant like rubies, diamonds, or lapis lazuli and other gems All the seasons are agreeable and the earth is without mire. The tanks are charming, delicious and full of crystal water People who are born there, come down from among the gods They are pure of birth and very beautiful. They are born in pairs and the women there are like apsaras in beauty. They suckle on the nectar like milk of these trees and are of equal stature, beauty and virtues, wear the same sort of dress and love each other like chakravaks 11 They are cheerful and free from illness. They live eleven thousand years and never abandon each other. Bharund, a bird with sharp beak and great strength, lifts them up when they are dead and throw them in mountain

तानिह्रन्तीह मृतान् दरीषु प्राक्षपन्तिच । उत्तरा कुरवो राजन् व्याख्यातास्ते समासतः ॥ १४ ॥ मेरोः पार्श्वमहंपूर्वं वक्ष्याम्यथयथातथम् । तस्य मूर्धाभिषेकस्तु भद्राश्वस्य विशाम्पते १५ भद्रसालवनं यत्र कालाम्रश्च महाद्रुमः। कालाम्रस्तुमहाराज नित्यपुष्पफलःशुभः॥१६॥ द्रुमश्च योजनोत्सेधः सिद्धचारणसेवितः । तत्रते पुरुषाःश्वेता स्तेजोयुक्ता महाबलाः ॥ १७ ॥ स्त्रियः कुमुदवर्णाश्च सुन्दर्यः प्रियदर्शनाः । चन्द्रप्रभाश्चन्द्रवर्णाः पूर्णचन्द्र निभाननाः ॥ १८ ॥ चन्द्रशीतलगात्र्यश्च नृत्यगीत विशारदाः । दशवर्षसहस्राणि तत्रायुर्भरतर्षभ ॥ १९ ॥ कालाम्ररसपीतास्ते नित्यं सुस्थितयौवनाः । दक्षिणेन तु नीलस्य निषधस्योत्तरेणतु ॥ २० ॥ सुदर्शनोनाम महान् जम्बूवृक्ष सनातन । सर्वकामफलः पुण्य. सिद्धचारणसेवितः ॥ २१ ॥

यहां बड़े पराक्रमी और तीक्ष्ण दंष्ट्रावाले भारंड नामपक्षी उन पुरुषों को पकड़कर गुफाओं में डाल देते हैं, हे राजा यह मैंने उत्तर कौरव देशका संक्षेप से वर्णन किया । १४ । अब उस मेरुके पूर्वभागके वृत्तान्त को यथावस्थित कहताहूं हे राजा उस भद्राश्वखंडका मूर्द्धाभिषेक नाम महाराज और भद्रशाल नाम वन और कालाम्र नाम वृक्ष है वह कालाम्र नाम शुभ वृक्ष फूल फलयुक्त सिद्ध चारणों से सेवित एक योजन ऊंचा है, जिस स्थानपर श्वेतवर्ण पुरुष तेजसे भरेहुये महाबली और स्त्रियां कुमुद कमल के समान सुंदर स्वरूपवान चन्द्रमा के समान प्रभाव और पूर्ण चन्द्रमा सा प्रकाशवान् मुखवाली और चन्द्रमा के ही समान शीतल देह नृत्य गान में प्रवीण वर्त्तमान हैं और वहां अवस्था दश हजार वर्षकी होती है वह कालाम्र का रस पीने से सदैव तरुणरूपही रहतेहैं । १९ । नीलपर्वत के दक्षिण और निषध पर्वत के उत्तर सुदर्शन नाम बड़ा जंबूवृक्ष सनातन है वह सब अभीष्टों का दाता पवित्र सिद्ध चारणोंसे सेवित है, अर्थात् मनुष्य उसको

---

caves This is, O king, a brief description of the northern kurus 14 I shall now describe the eastern part of Meru Bhdrashwa is the best place there A large forest of Bhadrashals and a tall tree of Kalamras yielding good fruits and flowers, are situated there. This tree is a yojan in height and is adored by Sidhas and Charans. The men of that place are of white complexion very energetic and strong. The women are of the colour of lilies, very beautiful and enchanting. They possess the radiance and whiteness of the moon and their faces resemble a full moon Their bodies are cool like the rays of the moon and they are accomplished in singing and dancing. The duration of life there is ten thousand years, and the people always remain youthful by drinking the milk of the Kalamra tree To the south of Nil and north of Nishadh there is a huge Jamvu tree that is

तस्य नाम्ना समाख्यातो जम्बूद्वीपः सनातन । योजनानां सहस्रञ्च शतञ्च भरतर्षभ ॥ २२ ॥ उत्सेधो वृक्षराजस्य दिवस्पृङ् मनुजेश्वर । अरत्नीनां सहस्रञ्च शतानि दश पञ्च च ॥ २३ ॥ परिणाहस्तु वृक्षस्य फलानां रसभेदिनाम् । पतमानानि तान्युर्व्यां कुर्वन्ति विपुलं स्वनम् । २४ ॥ मुञ्चन्ति च रसं राजस्तस्मिन्रजतसन्निभम् । तस्या जम्ब्वाः फलरसो नदी भूत्वा जनाधिप ॥ २५ ॥ मेरुं प्रदक्षिणं कृत्वा सम्प्रयात्युत्तरान् कुरून् । तत्र तेषां मनःशान्तिर्न पिपासा जनाधिप ॥ २६ ॥ तस्मिन् फलरसे पीते न जरा बाधते च तान् । तत्र जाम्बूनदं नाम कनकं देवभूषणम् ॥ २७ ॥ इन्द्रगोपकसङ्काशं जायते भास्वरन्तु तत् । तरुणादित्यवर्णाश्च जायन्ते तत्र मानवाः ॥ २८ ॥ तथा माल्यवतः शृङ्गे दृश्यते हव्यवाट् सदा सदा ।

नहीं पासक्ते इसलिये कि वहभी दिव्य है इसी के नाम से यह सनातन से जंबूद्वीप प्रसिद्ध हुआ है हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र उस वृक्षराज जंबूवृक्ष की ऊँचाई आकाश को छूनेवाली ग्यारह सौ योजन है उस वृक्षके पकेहुये फटनेवाले फलों का विस्तार ढाई हजार अरत्नी है अर्थात् कोई संख्या विशेष है वह फल जब पृथ्वीपर गिरतेहैं तो बड़ेभारी शब्द को करतेहैं २४। और जहां जहां गिरतेहैं वहां वहां चांदी के समान श्वेत रसको छोड़तेहैं हे राजा उसी जंबूफल के रसकी नदी होकर मेरुको प्रदक्षिण करके उत्तर कुरु देशों को आती है हे राजा वहां पिपासा लगने के कारण उन्होंके चित्तकी शान्ती नहीं है परन्तु उस फलके रस पीनेसे उनको जरावस्था दुःखदायी नहीं होती है वहांही जांबूनद नाम कनक देवताओं का भूषण वीरवधूर्जेव के समान रक्तवर्ण उत्पन्न होता है उसमें बड़ा तेज होताहै वहां मनुष्य तरुण और सुवर्ण उत्पन्नहोते हैं २८ इसीप्रकार माल्यवत के शिखरपर सवर्त्तक नाम अग्नि सदैव दिखाई देती है हे भरतर्षभ वह संवर्त्तक

eternal It is adored by Sidhas and Charans and grants every desire. Jamvudwip draws its name from that tree It is, O prince of Bharats, eleven hundred yojans high and its branches touch the very heavens Its circumference measures twenty five hundred cubits and its fruit bursts open when ripe falling on earth with a loud noise and giving out a silvery juice which flows like a river and passing round Meru comes down to northern Kurus If the juice of that tree is quaffed it conduces to the peace of mind and allays thirst Those who drink of it are never weary and weak There is a species of gold called Jamvunad which is used for the ornaments of gods and shines like glow worms. Men born there are of the colour of the morning sun 28 On the summit of Malyavat is always seen the fire called Samvartak which bursts forth at the end of the yug for-

नाम्ना सम्वर्त्तको नाम कालाग्निर्भरतर्षभ ॥ २९ ॥ तथा माल्यवतः शृङ्गे पूर्वपूर्वानुगण्डिका । योजनानां सहस्राणि पंचषण्माल्यवानथ ॥ ३० ॥ महारजतसंकाशा जायन्तेतत्र मानवाः । ब्रह्मलोकच्युताः सर्वे सर्वेषु साधवः ॥ ३१ ॥ तपस्तप्यन्ति ते तीव्रं भवन्ति ह्यूर्ध्वरेतसः । रक्षणार्थन्तुभूतानां प्रावशंते दिवाकरम् ॥ ३२ ॥ षष्टि स्तानि सहस्राणि षष्टरेव शतानिच्च । अरुणस्याग्रतो यान्ति परिवार्य दिवाकरम् ॥ ३३ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि षष्टिमेव शतानिच्च । आदित्यतापतप्तास्ते विशन्ति शशिमण्डलम् ॥ ३४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वाणि जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्वाणि माल्यवद्वर्णने सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

नाम कालाग्नि है और वैसेही माल्यवान् के शिखरपर चारों ओर को छोटे छोटे पर्वत हैं और माल्यवान् पर्वत ग्यारहहजार योजनहै ।३०। वहां ब्रह्मलोकसे गिरेहुये चांदी के समान श्वेतवर्ण सब के सब साधू मनुष्य उत्पन्नहोते हैं वह मनुष्य कठिन तपस्याओं को करते हुये ऊर्ध्वरेता अर्थात् ब्रह्मचारी होते हैं और जीवोंकी रक्षा के निमित्त सूर्य में प्रवेश करते हैं वह संख्यामें साठहजार बालखिल्यऋषि सूर्य को घेरेहुये अरुण नाम सूर्य के सारथी के आगे २ चलते हैं वह सब छयासठ हजार वर्षतक सूर्य की ऊष्मा से तपेहुये होकर चन्द्रमण्डल में प्रवेश करते हैं अर्थात् सूर्यलोक में विराट पुरुष की उपासना करके मन के स्वामी चन्द्रमामें प्रवेश करते हैं और सूत्रात्म भाव को पाते हैं ॥ ३४ ॥

---

the destruction of the universe. On Malyavat's summit towards the east are many smaller moutains; the former is eleven thousand yojans. 30. People born there are of the complexion of gold. They come down from the region of Brahma and are utterers of Brahma. They perform very severe asceticism and are permanently celebates. They go up to the Sun for the good of all. They proceed in front of Arun and surround the sun to the number of sixty thousand. After being heated for sixtysix thousand years by the rays of the sun they enter the disc of the moon. 34.



धृतराष्ट्र उवाच । वर्षाणाञ्चैव नामानि पर्वताश्च धनञ्जय । आचक्ष्वमे यथा तत्व ये च पर्वतवासिन ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । दक्षिणेनतु श्वेतस्य निषध स्योत्तरेण तु । वर्ष रमणक नाम जायन्ते तत्रमानवा. ॥ २ ॥ शुक्लाभिजन सम्पन्नाः सर्वे सुप्रियदर्शना । निःसपत्नाश्च ते सर्वे जायन्ते तत्र मानवाः ॥ ३ ॥ दशवर्षसहस्राणि शतानिदशपञ्च च । जीवन्तितेमहाराज नित्यमुदितमानसा ॥ ४ ॥ दक्षिणेनतु नीलस्य निषधस्योत्तरेणतु । वर्षहिरण्मय नाम यत्र हैरण्वतीनदी ॥५॥ यत्र चाय महाराज पक्षिराट् पतगोत्तम । यक्षानुगा महाराज धनिन प्रियदर्शना ॥ ६ ॥ महाबलास्तत्र जना राजन् मुदितमानसा । एकादशसहस्राणि वर्षाणातेज नाधिप ॥ ७ ॥ आयु प्रमाण जीवन्ति शतानि दशपञ्च च । शृङ्गाणि च विचित्राणि त्रीण्येव मनुजाधिप ॥ ८ ॥ एकं मणिमय तत्र यथैक रौक्ममद्भुतम् । सर्वरत्न-

अध्याय ॥ ८ ॥

धृतराष्ट्रबोले हे सञ्जय तुम ने खण्डों और पर्वतों का वर्णन किया अब उन पहाड़ों में जा वास करते है उनका मूलसमेत वर्णन करो, सञ्जय ने कहा कि श्वेत पर्वत के दक्षिण और निषधके उत्तर रमणकनाम खण्ड एक पृथ्वीका भाग है वहां ऐसे मनुष्य उत्पन्नहोते हैं जोकि विष्णुभक्तोंके साथ स्नेहरखनेवाले अत्यन्त स्वरूपवान् हैं उनमें कोई परस्परमें शत्रु नहीं होता है, नीलपर्वतके दक्षिण और निषधके उत्तरभाग में हिरण्मय नामखण्ड है वहां हिरण्वती नाम नदी है । ५ । वहांही पक्षियोंमें श्रेष्ठ गरुडजी हैं उसस्थानके धनवान स्वरूपवान् मनुष्य यक्षों के सेवक महाबली और प्रसन्न चित्त होते हैं और सदैव प्रसन्नता पूर्वक रहकर साढे ग्यारह हजार वर्ष पर्यन्त अवस्था को भोगते हैं और कोई उनमें से साढे बारहहजार वर्षतक भी जीते हैं उस पर्वतके तीन बड़े विचित्र शिखरहैं उनमें एकतो मणियोंका शिखर है दूसरा अत्यन्त सुन्दर सुवर्ण का अपूर्व शिखर है

CHAPTER VIII

"Tell me the name of all varshes, mountains and their inhabitants, Sanjaya." Said Dhritrashtra. "To the south of the white mountains and north of Nishadh" Said Sanjaya, "is Romanakvarsh Men of white complexion are born there. They are of noble birth and handsome appearance They have no enemies and live happily for eleven thousand five hundred years. On the south of Nishadh is Hiranmayvarsh where the Hiranvati flows. 5 There lives Garud the foremost of birds. The people are the followers of yakshes, wealthy and handsome They are strong and cheerful and the duration of their life is twelve thousand years. The Shringavat mountains have three beautiful summits, one, made of jewels and

मयश्चैक भवनैरुपशोभितम् ॥ ९ ॥ तत्र स्वयम्प्रभा देवी नित्य वसति शाण्डिली ।
उत्तरेणतु शृङ्गस्य समुद्रान्ते जनाधिप ॥ १० ॥ वर्षमैरावत नाम तस्माच्छृङ्गमत
परम् । न तत्र सूर्यस्तपति न जीर्यन्ते च मानवाः ॥ ११ ॥ चन्द्रमाश्च सनक्षत्रो
ज्योतिर्भूतइवावृत । पद्मप्रभा पद्मवर्णा पद्मपत्रानभेक्षणा ॥ १२ ॥ पद्मपत्रसुगन्धाश्च
जायन्ते तत्र मानवा । अनिष्पन्दा इष्टग धा निराहारा जितेन्द्रिया ॥ १३ ॥ देवलोक
च्युता सर्वे तथा विरजसे नृप । त्रयोदशसहस्राणि वर्षाणान्ते जनाधिप ॥ १४ ॥
आयु प्रमाण जीवन्ति नरा भरतसत्तम । क्षीरोदस्य समुद्रस्य तथैवोत्तरत प्रभु ।
हरिर्वसति वैकुण्ठ शकटे कनकामये ॥ १५ ॥ अष्टचक्र हि तयान भूतयुक्त मनो

और तीसरा शिखर सवरत्नों से मिश्रित अनेक स्थानों से शोभित है । ९ । वहां स्वयं प्रकाशवान शांडिली देवी निवास करती है,' हे राजा शिखरके उत्तर समुद्र के समीप ऐरावत नामखण्ड है इसीकारण यह शृगवान पर्वत से घिराहुआ उत्तम खण्ड कहाता है उसमें सूर्य किसीको संतप्त नहीं करते हैं मनुष्य वृद्ध नहीं होते और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा ज्योति रूपके समान घिरा रहता है वहां के मनुष्य कमल के समान कोमल वा सुन्दर रंगनेत्र और सुगन्ध युक्त उत्पन्न होते हैं । ११ । हे राजा वह सब देवलोक से गिरे हुये गरद से रहित अर्थात् देवताओंके समान इष्ट गन्धधारी निराहारी जितेन्द्री और रजोगुण से रहित हैं और उनकी अवस्था तेरहहजार वर्षतककी होती है इसीप्रकार दूध के समुद्रकी उत्तर दिशा में अनेक मायाओं के स्वामी ज्योतिरूप श्रीहरि नारायणजी सुवर्ण के शकट पर निवास करतेहैं वह सवारी आठ पहियोंकी है जिसमें एक पहिया तो पचकर्मेन्द्रिय समूह दूसरा पचज्ञानेन्द्रिय समूह तीसरा मन बुद्धि चित्त अहकार का समूह चौथा पचप्राण पांचवां पांचों सूक्ष्म तत्त्व छठा अविद्या सातवां काम आठवां

gems, another is very wonderful, being made of all kinds of gems and adorned with palaces. There the self luminous lady, known as Shandili lives On the north of Shringvat, extended to the sea shore, is Airavatvarsh which is superior to all on account of its jewelled mountain. The sun gives no heat there and the people are free from old age The only sources of light are the moon and stars. Beautiful like lotus and having their eyes like lotus petals, the men born there have the fragrance of the lotus. Their eyes donot wink they donot take any food and their senses are under control They come down there from the region of gods and are free from sin The duration of their life is thirteen thousand years. On the north of the milky ocean, Lord Hari of boundless prowess dwells on his car of gold That vehicle having eight wheels, has numerous super-

जवम् । अग्निवर्ण महातेजो जाम्बूनदविभूषितम् ॥ १६ ॥ स प्रभु सर्वभूतानां विभुश्च भरतर्षभ । स्रष्टा स्वतरश्चैव कर्त्ता कारयिता तथा ॥ १७ ॥ पृथिव्या पस्तथाकाश वायुस्तेजश्च पार्थिव । स यज्ञ सर्वभूतान मास्य तस्य हुताशन ॥ १८ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त सजयेन धृत राष्ट्रो महामना । ध्यानमन्वगमद्राजा पुत्रान् प्रति जनाधिप ॥ १९ ॥ सावचिन्त्य महातेजा पुनरेवाब्रवीद्वच । असशय सूतपुत्र काल सक्षिपतेजगत् । २० ॥ सृजतेच पुन सर्व नेह विद्यते शाश्वतम् । नरो नारायणश्चैव सर्वज्ञ सर्वभूतहृत् ॥ २१ ॥ देवावैकुण्ठमित्याहुर्नरा विष्णुमितिप्रभुम् । २२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वाणि जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वाणि धृतराष्ट्रवाक्ये ऽष्टमोऽध्याय ॥ ८ ॥

कर्म भारी शुद्ध ब्रह्मयुक्त मनके समान शीघ्रगामी अग्निवर्ण तेजस्वी जांबूनद नाम सुवर्ण से शोभायमान है, हे भरतर्षभ वह सब संसार का स्वामी व्यापक सबका अपने में लय करनेवाला और प्रकटकरने वाला जीवरूपसे कर्त्ता और ईश्वररूपसे कर्म करनेवाला है हे राजा वही पचतत्त्ववही सबका यज्ञ और मुख उसका अग्नि है। १८ । वैशंपायन बोले कि हे जनमेजय यह सब बातें संजय से सुनकर बडे साहसी राजा धृतराष्ट्रने अपने पुत्रोंकी चिन्ताकरी और फिर भी बहुतसा विचारकरके बोला कि हे सजय निस्सन्देह काल जगत्को भक्षण करता है, और फिर सबको उत्पन्न करता है यहां कोई भी विनाश रहित नहीं है नर नारायण अर्थात् जीव ईश्वर भी दोनों रूपोंमे अविनाशी नहींहैं अर्थात् दोनों एक रूपहोकर अकेलाही सर्वज्ञ और सर्वजीवोंका मित्रहै उसीसमर्थ पुरुषको देवता और मनुष्योंने मायाधीश और सर्वव्यापी वर्णन कियाहै ॥ २१ ॥

---

natural creatures seated on it, and has the speed of the mind It is fiery in colour, is very strong and is adorned with *Jamvunad* gold The lord of all creatures possesses every sort of wealth 17 The universe merges in him and from him it emanates again He is the actor and makes others act He is the earth, water, space, air and fire. He is Sacrifice's self for all creatures and fire is His mouth" Vaishampayan continued "The high minded king Dhritrashtra, thus addressed by Sanjaya, became absorbed in meditation about his sons and having reflected for a time the powerful king said, "Without doubt, Time is the destroyer of universe and Time creates everything again Nothing is eternal Nar and Narayan the omniscient destroy all creatures. The gods calls him Vaikunth while men call him Vishnu" 21.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ यदिदं भारतं वर्षं यत्रेदं मूर्छितं बलम् । यत्रातिमात्रं लुब्धोयं पुत्रो दुर्योधनो मम ॥ १ ॥ यत्र गृद्धाः पाण्डुपुत्रा यत्र मे सज्जते मनः । एतन्मे तत्वमाचक्ष्व त्वं हि मे बुद्धिमान्मतः ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ न तत्र पाण्डवा गृद्धाः शृणु राजन् वचो मम । गृद्धो दुर्योधनस्तत्र शकुनिश्चापि सौबलः ॥ ३ ॥ अपरे क्षत्रियाश्चैव नानाजनपदेश्वराः । ये गृद्धा भारते वर्षे न मृष्यन्ति परस्परम् ॥ ४ ॥ अत्र ते कीर्त्तयिष्यामि वर्षं भारत भारतम् । प्रियमिन्द्रस्य देवस्य मनोर्वैवस्वतस्य च ॥ ५ ॥ पृथोस्तु राजन् वैन्यस्य तथेक्ष्वाकोर्महात्मनः । ययातेरम्बरीषस्य मांधातुर्नहुषस्यच ॥ ६ ॥ तथैव मुचुकुन्दस्य शिवेरौशीनरस्यच । ऋषभस्य तथैलस्य नृगस्य नृपतेस्तथा । कुशिकस्य च दुर्धर्ष गाधेश्चैव महात्मनः ॥ ७ ॥ सोमकस्य च दुर्धर्ष दिलीपस्य तथैव

अध्याय ॥ ९ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि यह भरतखण्ड जिसमें यह सबसेना भूली हुई है उस में यह मेरा पुत्र दुर्योधन अत्यन्त लोभी होरहा है और जिसमें पांडव लोभी हैं और मेरा भी मन लगरहा है उसका पूरा वृत्तान्त मुझसे कहो मैंने तुमको बुद्धिमान माना है, । २ । संजय बोले हे राजा मेरेवचनको सुनो उसमें पांडव लोभी नहीं हैं इसमें केवल दुर्योधन और सौवलका पुत्र शकुनी ही लोभी है, नाना प्रकार के देशों के स्वामी अन्य क्षत्री लोग जो भरतखण्डमें लोभी होकर परस्पर में ईर्षा करते हैं । ४ । इस स्थानपर मैं भरतखण्डका वर्णन तुमसे वर्णन करताहूं कि यह भरतखण्ड इन्द्र देवता और सूर्यके पुत्र वैवस्वत मनुका अभीष्टहै हे राजा धृतराष्ट्र इनके विशेष यह भरतखण्ड पृथु, वैन्य तथा महात्मा इक्ष्वाकु, ययाति, अम्बरीष, औशीनरके पुत्र शिवि, ऋषभ, ऐल, नृग, कुशिक, महात्मा गाधि, सोमक दिलीप

CHAPTER IX.

"Give me a detailed account of Bharatvarsh, where these senseless forces have been collected, which my son Duryodhan covets and which is so desired by the Pandavas and myself as well Tell me all this Sanjaya, for, methinks you are very intelligent in this matter" asked Dhritrashtra of Sanjaya. "Listen, king," replied Sanjaya, "The Pandavas do not covet this country, it is thy son Duryodhan and Shakuni the son of Suval that are covetous I shall now tell thee, descendant of Bharat, of the land known as Bharatvarsh This is the favourite land of Indra and of Manu the son of Vivaswat, of Prithu, of Vainya, of Ikshwaku, of Yayati, of Amvarish, of Mandhata, of Nahush, of Muchkund, of Sivi the son of Ushinar, of Rishabh, of Ila, of king Nrig, of Kushik, of Gadhi, of Somak, of Dilip and of

च। अन्येषांच महाराज क्षत्रियाणां बलीयसाम् ॥ ८ ॥ सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारतम् ॥ ९ ॥ तत्त वर्षं प्रवक्ष्यामि यथाश्रुतमरिन्दम। शृणु मे गदतो राजन् यन्मां त्वं परि पृच्छसि। महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षवानपि ॥ १० ॥ विन्ध्यश्च पारियात्र श्च सप्तैते कुलपर्वताः। तेषां सहस्रशो राजन् पर्वतास्ते समीपतः ॥ ११ ॥ अविज्ञाताः सारवन्तो विपुलाश्चित्रसानव। अन्ये ततोऽपरिज्ञाता ह्रस्वा ह्रस्वोप जीविनः ॥ १२ ॥ आर्या म्लेच्छाश्च कौरव्य तैर्मिश्राः पुरुषा विभो।, नदीं पिबन्ति विपुलां गङ्गां सिंधुं सर स्वतीम् ॥ १३ ॥ गोदावरीं नर्मदांच बाहुदांच महानदीम्। शतद्रूं चन्द्रभागाञ्च यमु नांच महानदीम् ॥ १४ । दृषद्वतीं विपाशांच विपापां स्थूलवालुकाम्। नदीं वेत्रवतीं चैव कृष्ण वेणांच निम्नगाम् ॥ १५ ॥ इरावतीं वितस्तांच पयोष्णीं देविकामपि। वेद स्मृतां वेदवतीं त्रिदिवामिक्षुलांकृमिम् ॥ १६ ॥ करीषणीं चित्रवाहां चित्रसेनांच निम्न

आदि बहुतसे महा पराक्रम क्षत्रियोंका प्यारा है, हे शत्रुहन्ता यह भरतखण्ड कर्म भूमि होनेके कारण सबकाही प्याराहै और महातेजस्वी खण्ड है। ९। इसको मैं कहताहू महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिवान्, पारियात्र ऋक्षवान, विन्ध्याचल यह सातों पर्वत बड़ेकुलवान और प्रतिष्ठितहैं और इन्हीं सातोंके समीप हजारों पर्वत उत्तम पदार्थों के रखनेवाले विस्तृत और पर्वतके निवासियों के निवासस्थान रूप गुप्त हैं, इनसे अन्य छोटे २ पर्वत छोटी २ वस्तुओं के रक्षास्थान रूप सबके जाने हुये हैं हे कौरव्य धृतराष्ट्र जो आर्य मनुष्य अर्थात् वर्णाश्रमी धर्मवाले और म्लेच्छ अर्थात् वेद से विरुद्ध मतवाले उन में निवास करते हैं और गंगा सिंधु सरस्वती इत्यादि बड़ी २ नदियों का जलकर पीते हैं। ११। और गोदावरी, नर्मदा और बाहुदा नाम महानदी शतद्रु, चन्द्रभागा और महानदी, यमुना, दृषद्वती, विपाशा, विपापा, स्थूलवालुका, वेत्रवती, कृष्णवेणी जो नीचे को चलतीहै, इरावती, वितस्ता, पयोष्णी, देविका, वेदस्मृता, वेदवती, त्रिदिवा,

---

many other Kshatryas. I shall now describe to thee, chastiser of foes, the country I have spoken of, as far as I know. 9. Attend to me; king; as I proceed to satisfy your curiosity. Mahendra, Malaya, Sahya, Shuktivan, Pari yatra, Rikshvan and Vindhyas are the seven mountains of the first rank, Besides these there are thousands that are unknown, of hard make, huge and having excellent valleys. Many of the smaller ones are inhabited by barbarians. Aryans and Mlechas live there and drink the waters of the Ganges, the Sindhu, the Sarasvati, the Godavery, the Narmada, the Vahuda, the Shatadru, the Chandrabhaga, the Yamuna, the Drishadvati, the Vipasha, the Vipapa, the Sthulvaluka, the Vetravati, the Krishnvena. 15., the Iravati, the Vitasta, the Payoshni, the Devika, the Vedasmrita, the

गाम्। गोमतीं धृतपापाश्च वन्दनाञ्च महानदीम् ॥ १७ ॥ कौशिकीं त्रिदिवां कृत्यां निचितां लोहितारणीम् ॥ १८ । रहस्यां शतकुम्भाञ्च सरयूञ्च तथैवच। चर्मण्वतीं वेत्रवतीं हस्तिसोमां दिशं तथा ॥ १९ ॥ शरावतीं पयोष्णीञ्च परां भीमरथीमपि । कावेरीं चुलुकांचापि वाणीं शतबलामपि ॥ २० ॥ नीवारां महितां चापि सुप्रयोगां जनाधप । पवित्रां कुण्डलीं सिन्धु राजनीं पुरमालिनीम् ॥ २१ ॥ पूर्वाभिरामां वीराञ्च भीमामोघवतीं तथा । पाशाशिनीं पापहरां महेन्द्रां पाटलावतीम् ॥ २२ ॥ करीषिणीमसिक्नीञ्च कुशचीरां महानदीम् । मकरीं प्रवरांमेनां हेम. घृतवतीं तथा ॥ २३ ॥ पुरावतीमनुष्णाञ्च शैव्यां कापाञ्च भारत । सदानीरामधृष्याञ्च कुशधरां महानदीम् ॥ २४ ॥ सदाकांतां शिवाञ्चैव तथा वीरवतीमपि । वस्त्रां सुवस्त्रां गौरीञ्च कम्पनां सहिरण्वतीम् ॥ २५ ॥ वरां वीरकराञ्चापि पञ्चमींच महानदीम्। रथचित्रां ज्योतिरथां विश्वामित्रां कपिञ्जलाम्। उपेन्द्रां बहुलाञ्चैव कवीरां मधुवाहिनीम् । विनदीं पिञ्जलां वेणां तुङ्गवेणां महानदीम् २७

इक्षुला, कृमि, करीषिणी, चित्रवाहा नीचे चलने वाली चित्रसेना, गोमती, धूतपापा, महानदी, गंडकी, । १७ । कौशिकी, त्रिदिवा कृत्या, निचिता, लोहतारणी, रहस्या, शतकुम्भा, सरयू , चर्मण्वती, वेत्रवती, हस्तिसोमा, दिशनदी, शरावती, पौष्णी, वेणा, भीमरथी, कावेरी, चुलुका, वाणी, शतबली, नीवारा, महिता, सुप्रयोगा, अंजना, पवित्रा, कुंडली, सिन्धु, राजनी, पुरमालिनी, पूर्वाभिरामा, अमोघवती, भीमा, पालाशिनी, पापहरा, महेन्द्रा, पाटलावती, करीषिणी, असिक्नी, कुशचीरा, महानदी, मकरी, प्रवरा, मेना, हेमा, घृतवती, पुरावती, अनुष्णा, शैव्या, कापी, सदानीरा अधृष्या, महानदी, कुशधारा, सदाकान्ता, शिवा, वीरवती, वस्त्रा, सुवस्त्रा, गौरी, कंपना, हिरण्वती, वरा, वीरकरा, महानदी, पंचमी, । २० । रथचित्रा, ज्योतिरथा, विश्वामित्रा, कपिंजला, उपेन्द्रा, बहुला, कुवीरा, अंबुवाहिनी,

Vedavati, the Tridiva, the Ikshula, the Krimi, the Karishini, the Chitravaha, the subterranean Chitrasena, the Gomati, the Dhootpapa, the Mahanadi, the Gandaki, the Kaushiki, the Tridiva, the Kritya, the Nichita, the Lohitarani, the Rahasya, the Shatkumbha, the Saryu, the Charmanwati, the Vetravati, the Hastisoma, the Dishnadi, the Sharavati, the Payoshni, the Vena, the Bhimrathi, the Cavery, the Chuluka, the Vani, the Shatvali, the Neevara, the Mahita, the Suprayoga, the Anjana 20 , the Pavitra, the Kundali, the Sindhu, the Rajani the Purmalini, the Purvabhirma, the Amoghvati, the Bhima, the Palashini, the Paphera, the Mahendra, the Patalavati the Karishini, the Asikli, the Kushchira, the Mahanadi, the Makri, the Pravara, the Mena, the Hema, the Ghritvati, the Puravati, the Anushna, the Shaivya, the Kayee, the Sadanira, the Adhrishya, the Kushdhara, the Sadakanta, the Shiva, the Bevati, the Bastra, the Suvastra, the Gouri, the Campana, the

विदिशां कृष्णवेणांच ताम्रांच कपिलामपि । खलुं सुवामां वेदाश्वां हरिश्रावां महापगाम् ॥ २८ ॥ शीघ्रांच पिच्छिलाञ्चैव भारद्वाजींञ्च निम्नगाम् । कौशिकीं निम्नगां शोणां बाहुदामथ चन्द्रमाम् ॥ २९ ॥ दुर्गां चित्रशिलांचैव ब्रह्मवेध्यां बृहद्वतीम् । यवक्षामथ रोहींञ्च तथा जाम्बूनदीमपि ॥ ३० ॥ सुनसां तमसां दासीं वसामन्यां वराणसीम् । नीलांधृतवतींचैव पर्णाशाञ्च महानदीम् ॥ ३१ ॥ मानवीं वृषभांचैव ब्रह्ममेध्यां बृहत्ध्वनिम् । एताश्चान्याश्च बहुधा महानद्योजना धिप ॥ ३२ ॥ सदानिरामया कृष्णा मन्दगामन्दवाहिनीम् । ब्राह्मणीञ्चमहागौरीं दुर्गामपि च भारत ॥ ३३ ॥ चित्रोपलां चित्ररथां मञ्जुलां वाहिनीं तथा । मन्दाकिनीं वैतरणीं कोशां चापि महानदीम् । शुक्तिमतीमनङ्गाञ्च तथैव वृषसाह्वयाम् ॥ ३४ ॥ लोहित्यां करतोयाञ्च तथैव वृषकाह्वयाम् । कुमारीमृषिकुल्याञ्च मारि

विनदी, पिजला, वेणा, महानदी, तुंगवेणा, विदिशा, कृष्ण वेणा, ताम्रा, कापिला, । २७ । खलु, सुवामा, वेदाश्वा, हरिश्रावा, महोपमा, शीघ्रा, पिच्छला, भारद्वाजी, निम्नगा, निम्नगाकौशिकी, शोणा, बाहुदा, चन्दमा, दुर्गा, मंत्रशिला, ब्रह्मबोध्या, बृहद्वती, यवक्षा, अथरोही, जांबूनदी, सुनसा, तमसा, दासी, वसा, वरुणा, अमसी, नीला, धृतिमती, महानदी पर्णाशा, मानवी, वृषभा, ब्रह्ममेध्या, बृहद्वती इत्यादि सब नदियों का जल पान करतेहैं । ३१ । और हे राजा इनके सिवाय औरभी बहुत प्रकारकी महानदी है जैसे कि सदानीरा, अया, कृष्णा, मंदगा, मन्दवाहिनी, ब्राह्मणी, महागौरी, दुर्गा, चित्रोपला, चित्ररथा, मंजुला, वाहिनी, मन्दाकिनी, वैतरिणी, महानदी, कोशा, मुक्तिमती, अनिगा, पुष्पवेणी, उत्पलावती, लोहित्या, करतोया, वृषका नाम नदी,

Hiranvati, the Vara, the Virakara, the Panchmi 25, the Rathchitra, the Jyotiratha, the Vishwamitra, the Kapinjala, the Upendra the Bahula, the Kuvira, the Ambuvahini, the Vinadi, the Pinjala, the Vena, the Tungavena the Bidisha, the Krishnavena, the Tamra, the Kapila, the Khalu, the Suvama, the Vedashwa, the Harishrava, the Mahopama the Shighra, the Pichala the Bharadwaji, the Nimnaga, the Nimnaga kaushiki, the Shona, the Vahuda, the Chandrama, the Durga, the Chitrashila, the Brahmabodhya, the Brihadwati, the Yavaksha, the Athrohi, the jambundi, the Sunasa, the Tamasa, the Dasi, the Vasa, the Vas, the Amasi, the Nila, the Dhritimati, the Parnasha, the Manavi, the Brashabha, the Brahmamedhya, the Vrihadwati and others 31. Besides these there are other rivers, such as the Sadanira, the Aya, the Krishna, the Mandaga, the Mandvahini, the Brahmani, the Mahagauri, the Durga, the Chitropala, the Chitraratha, the Manjula, the Vahini, the Mandakini, the Vaitarini, the Kosha, the Muktimati, the Anga, the

पाच सरस्वतीम् ॥ ३५ ॥ मन्दाकिनीं सुपुण्यांच सर्वां गङ्गाच भारत। विश्वस्य मातरः सर्वाः सर्वाश्चैव महाफला ॥ ३६ ॥ तथा नद्यस्त्वप्रकाशाः शतशोऽथ सहस्रशः । इत्येता सरितो राजन् समाख्याता यथास्मृति ॥ ३७ ॥ अतऊर्ध्वं जनपदान्निबोध गदतो मम । तत्रेमे कुरुपाञ्चालाः शाल्वामाद्रेयजाङ्गलाः ॥ ३८ ॥ शूरसेनाः पुलिन्दाश्च बोधा मालास्तथैव च । मत्स्याः कुशल्याः सौशल्याः कुन्तयः कान्तिकोसलाः ॥ ३९ ॥ चेदिमत्स्यकरूषाश्च भोजाः सिन्धुपुलिन्दकाः । उत्तमाश्च दशार्णाश्च मेकलाश्चोत्कलैः सह ॥ ४० ॥ पाञ्चालाः कोसलाश्चैव नैकपृष्ठाधुरन्धराः । गोधा मद्रकलिङ्गाश्च काशयोऽपरकाशयः ॥ ४१ ॥ जठराः कुकुराश्चैव सदशार्णाश्च भारत । कुन्तयोऽवन्तयश्चैव तथैवापरकुन्तयः । ४१ ॥ गोमन्ता मन्दकाः षण्डा विदर्भा रूपवाहिकाः । अश्मकाः पाण्डुराष्ट्राश्च गोपराष्ट्राः करीतयः ॥ ४३ ॥ अधिराज्यकुशाद्याश्च मल्लराष्ट्रञ्च केरलम् । वारवास्यायवाहाश्च चक्राश्चक्रातयः शकाः

कुमारी, ऋषिकुल्या, मारिषा, सरस्वती । ३५ । सुपुण्या, मन्दाकिनी, सर्वा, गंगा, यह सम्पूर्ण नदी विश्वकी माता और महाफलकी देनेवाली हैं इसी प्रकार हजारों नदीऔरभीगुप्त हैराजा यहनदियांमैंने स्मरणके अनुसार वर्णनकी।३७। अबमै देशोंका वर्णन करताहूं वहां यह कुरुदेश,पांचालदेश,शाल्व,माद्रेयजांगल,शूरसेनदेश,पुलिन्द, बोधा,माला, मत्स्यदेश,कुशाद्रिदेश,सौशल्य,कुन्तीदेश, कान्तिकोशलदेश,चेदि,मत्स्य, करूष, भोज, सिन्धु, पुलिन्दक, उत्तम दशार्ण देश, मेकल, उत्कल, । ४० । पाञ्चाल कोशल, नैकपृष्ठ, धुरंधर, बोधा, मद्र, कलिन्द, काशय, परकाशय, जठरा, कुकुरा, दशार्ण देशयुक्त, कुंतय, अवन्त्य, अपरकुन्त्य, गोमन्त, मन्दक, खंड, विदर्भ, रूपवाहिक अश्मक, उत्तर, गोपराष्ट्र, करीत, अधिराज्य, कुशाद्य, मल्लराष्ट्र, केवल, वारवास्य,

---

Pushpveni, the Utpalavati, the Lohitia, the Kartoya, the Vrishaka, the Kumari the Rishikulya, the Marisha, the Sarasvati 35, the Supunya, the Mandakini, the Sarva and the Ganga. All these rivers are mothers of the world and a source of great profit There are thousands of others unknown. I have given thee, king, all the names that I remembered. 37 I shall now mention the names of countries — *Kuru, Panchal, Shalwa, Madra Shursen, Pulind, Bodha, Mala, Matsya, Kush, Soshlaya, Kunti, Koshal, Chedi, Matsya, Karush, Bhoj, Sindhu, Pulindak, Dasharna, Mekal, Utkal,* 40, *Panchal, Koshal, Naikprisht, Dhurandhar, Bodha, Madra, Kalind, Kashya, Parkashya, Jathara, Kukura, Dasharn, Kuntya, Avantya, Apar Kuntya, Gomant, Mandal, Khand Vidarbh, Ruprahik, Ashwal, Uttar, Goprashtra, Karit, Adhirajya, Kushadya, Malla Keval, Varvasya,*

॥ ४४ ॥ विदेहा मगधा स्वक्षा मलजा विजयास्तथा । अङ्गा वङ्गा कलिङ्गाश्च यकृल्लोमान एव च ॥ ४५ ॥ मल्ला सुदेष्णा प्रह्लादा माहिका शशिकास्तथा । बाह्लीका वाटधानाश्च आभीरा कालतोयकाः ॥ ४६ ॥ अपरान्ता परान्ताश्च पञ्चालाश्चर्ममण्डला । अटवीशिखराश्चैव मेरुभूताश्च मारिष ॥ ४७ ॥ उपावृत्ता नुपावृत्ता स्वराष्ट्रा केकयास्तथा । कुद्दापरान्ता माहेया कक्षा सामुद्रनिष्कुटा ॥ ४८ ॥ अन्ध्राश्च बहवो राजन्नन्तर्गिर्यास्तथैव च । बहिर्गिर्यास्तथा मलजा मगधामा नवर्जका ॥ ५० ॥ समन्तरा प्रावृषेया भार्गवाश्च जनाधिप । पुण्ड्रा भर्गा किराताश्च सुदृष्टा यामुनास्तथा ॥ ५१ ॥ शका निषादा निषधास्तथैवानर्तनैर्ऋता । दुर्गाला प्रतिमत्स्याश्च कुन्तला कोसलास्तथा ॥५२॥ तीरग्रहा शूरसेना ईजिका कन्यकागुणा । तिलभारा मसीराश्च मधुमत सुकन्दका ॥ ५३ ॥ काश्मीरा सिन्धुसौवीरा गान्धारा दर्शकास्तथा । अभीसारा उलूताश्च शैवला बाह्लिकास्तथा ॥ ५४ ॥ दार्वी च नवदार्वा वातजामरथोरगा । बहुवाद्याश्च कौरव्य सुदामान सुमल्लिका ॥ ५५ ॥ वध्रा करीषका अपि कुलिन्दोपत्यकास्तथा । वनायवो दशा

अपराह, वक्रवक्रात, शक, विदेह, मगध, स्वक्ष्य, मलय, विजय, अग, वग, कलिंग, यकृल्लोम । ४५ । मल्ल, सुदेष्ण, प्रह्लाद, माहिक, शशिक, वाह्लीक, वाटधान, आभीर, कालतोयक, अपरान्त, परान्त, पाञ्चाल, चर्ममंडल, अटवी, शिखर, मेरुभूत, मारिष, अपावृत, अनुपावृत, सौराष्ट्र, केकय, कुद्र, परान्त, माहेय, कक्ष्य, सामुद्रनिष्कुट, अन्ध्र, और हे राजा इनके विशेष पर्वतों में अनेक, देश और पहाड़ों के बाहर अग, मलज, मगध, मानवर्जक, प्रावृतर, प्रावृषेय, भार्गव, पौण्ड्र, भर्ग, किरात, सुदेष्ट, यामुन । ५० । शक, निषाद, निषध, आनर्त, नैर्ऋत, दुर्गाल, प्रतिमत्स्य, कुन्त, कुशल, तीरग्रह,शूरसेन,ईजक,कन्यकागण,तिलभार नमीर, मधुमन्त, सुकुन्दक,काश्मीर, सिंधु सौवीर, गान्धार दर्शक, अभिसार, उलूत, शवल, वाह्लीक, दर्वी, नवदार्वी, वातज, मर्योरग, वाहुवाध, कौरव्य, सुदामान, समुल्लिक, बध्रा, करीषक, कलिन्द, उपत्यक,

Apoth Vakravakrat Shak Videh Magadh Swaksh Malaya Vijaya Ang Vang Kaling Yakrillom 45 Malla Sudeshna Prahlad Mahik Shashik Vahlik Vatdhan Abhir Kaltoyak Aparant Parant Panchal Charmmandal Atavi Sikhar Merubhut Marish Apavrit Anupavrit Swarashtra *Kekaya Kudr Parant* Maheya Kashya *Samudranishku* And other lands which are situated in and out of hill ... Ang Malaj Magadh Manvarjak, Mahyattar Pravisheya Bhargava Pound Bharg, Kirat Sudesht Yamun 50 Shak Nishad Nishadh Anart Nairit Dugal Pratimatsya Kuntal Kushal Tirgrah Sursen Ijak Kanyakagan Tilbhar Samir Madhumatta Mulandak Kashmir Sindhu, Sauvir, Gandhar Darshak, Abhisar Ulut Shaval Vahlik Darvi Navadarvi ... Vahuvadya Kauravya Sudaman Samullik Badhra Karishak Kalind Upatyak Vanayu Daharn Rum Kush

पार्श्वे रोमाण. कुशाविन्द्वः ॥ ५६ ॥ कच्छा गोपालकच्छाश्च जाङ्गला. कुरुवर्णका. । किराता वर्बरा सिद्धा वैदेहास्ताम्रलिप्तकाः ॥ ५७ ॥ औण्ड्राःपौण्ड्राः ससिरिधाः पार्वतीयाश्च मारिष । अथापरे जनपदा दक्षिणा भरतर्षभ ॥ ५८ ॥ द्रविडा.केरला' प्राच्याभूषिका वनवासिकाः। कर्णाटका माहिषका विकल्पामूषकास्तथा ५९ झिल्लिका. कुन्तलाश्चैव सौहृदा नभक नना. । कौकुट्टकास्तथा चोला' कोंकणा मालवानरा ॥ ६० ॥ समंगा. करकाश्चैव कुकुरांगारमारिषा. । ध्वजिन्युत्सवसङ्केतास्त्रिगर्ता शाल्वसेनय व्यूकाः कोक वका. प्रोष्टा समवेगवशास्तथा । तथैवांविन्ध्य चुलिका' पुलिन्दा वल्कलैः सह ॥ ६२ ॥ मालवा वल्लवाश्चैव तथैवापरवल्लवा कुलिन्दाः कालदाश्चैव कुण्डला करटास्तथा ॥ ६३ ॥ मूषकास्तनपालाश्च सनी घटसृञ्जयाः । अठिदा पाशिवाटाश्च तनयाः सुनयास्तथा ॥ ६४ ॥ ऋषिकाविदभाः काकास्तङ्गणा परतङ्गणाः । उत्तराश्चापरे म्लेच्छाः क्रूराभरतसत्तम ॥ ६५ ॥ यवनाश्चीनकाम्बोजा दारुणाम्लेच्छजातय । सकृद्ग्रहा कुलत्थाश्चहूणा पारसिकैः

वानायु, दशार्ण, रुम, कुशविन्द । ५६ । कच्छ, गोपालकच्छ, जांगल, कुरुवर्णक, किरात, वर्बर, सिद्धा, वैदेह, ताम्रलिप्तक, औण्ड्र, पौण्ड्र, सैसिकत, पार्वतीय, मारिष इसके विशेष दक्षिणमें । ५७ । द्रविण, केरल, प्राच्य, भूषिक, वनवासिक, कर्णाटक माहिषक, अविकल्प, मूषक, जिल्लिक, कुन्तल, सौहृद, नभकानन, कौकुट्टक, चोल, कोंकण, मालवानक । ६० । समंग, कारक, कुरर, अंगार, मारिष, ध्वजन्युत्सवसंकेत, त्रिगर्त, शाल्वसेन, वक, कोकवक, प्रोष्ठ, समवेगवश, विन्ध्य, चुलिक, कल्कल सहित पुलिन्द, मालव, मल्लव, परवल्लभ, कुलिन्द, कालद, कुंडल, करट, मूषक, तनवाल, सनीय, घटसृंजय, अलिंदाप, शिवाट, तनय, सुनय, ऋषिक विदर्भ, काक तंगण परतंगण हे भरतर्षभ इसीप्रकार अन्य उत्तर देश वासी कठोरचित्त और म्लेच्छनाम से प्रसिद्ध हैं, यवन, चीनी, कांबोज, सकृद्ग्राह, कुलत्थ, आहूण, पारसियों समेत हूण । ६५ । यह सब म्लेच्छजाति के लोग भयकारी हैं रमण, चीन, दशमालिक

vind 55, Cutch Gopalkuksh, Jangal, Kuruvarnak, Kirat Barbar, Sidha, Vaideh, Tamraliptik, Aundra, Paundra, Saisikat, Pavatiya, Marish and besides these, in the South, Dravin, Keral, Prachya, Bhushik, Vanvasik, Karnatak, Mahishak, Avikalya, Mushak, Jillik, Kuntal, Sauhrid, Nabhkanan, Kaukuttak, Chol, Concan, Malvanak, 60 Samang, Karak, Kurar, Angar, Maurish, Dhwajanyutsaksanket, Strigart, Shalwasen, Vak, Kokvak, Proshth, Samvegvash, Bindhya, Chulik, Pulind with Kalkal, Malav, Mallav, Parvallabh, Kulind, Kalad, Kundal, Karat, Mushak, Tanval, Saniya, Ghatsrinjaya, Alindap, Shivat, Tanaya, Sunaya, Rishik, Bidarbh, Kak, Tangan, Partangan, and others. The northern people are hard-hearted Mlechas These are Yavans, Chinese, Kambojas, Skritgrahs, Kalath, Ahun, and Persians. 65. The Ramans, the Chinese

सह ॥ ६६ ॥ तथैव रमणाश्चीनास्तथैव दशमालिका । क्षत्रियोपनिवेशाश्च वैश्य शूद्रकुलानिच ॥ ६७ ॥ शूद्राभीराश्च दरदा काश्मीरा पशुभिः सह । खाशीराश्च तुखाराश्च पल्हवा गिरिगह्वरा ॥ ६८ ॥ आत्रेयाः सभरद्वाजास्तथैवस्तनपोषिका । प्रोषकाश्च कलिङ्गाश्च किराटानाञ्च जातयः ॥ ६९ ॥ तोमरा हन्यमानाश्च तथैव करभञ्जका । एते चान्ये जनपदाः प्राच्योदीच्यास्तथैवच ॥ ७० ॥ उद्देशमात्रेणमया देशाः सङ्कीर्तिता विभो । यथागुणं बलञ्चापि त्रिवर्गस्य महाफलम् ॥ ७१ ॥ दुह्यते धनं कामधुक् भूमिः सम्यगनुष्ठिता । तस्यां गृध्यन्ति राजानः शूरा धर्मार्थकोविदाः ॥ ७२ ॥ ते त्यजन्त्याहवे प्राणान् वसुगृद्धास्तरस्विनः । देवमानुषकायानां काम भूमिः परायणम् ॥ ७३ ॥ अन्योन्यस्यावलुम्पन्ति सारमेया यथामिषम् । राजानो भरतश्रेष्ठ भोक्तुमामावसुन्धराम् ॥ ७४ ॥ नचापि तृप्तिः कामानां विद्यतेचापि कस्य चित् । तस्मात् परिग्रहे भूमेर्यतन्ते कुरुपाण्डवाः ॥ ७५ ॥ साम्नाभेदेन दानेन

जो कि क्षत्रीयोनिसे उत्पन्न वैश्य और शूद्रों के कुल हैं शूद्र, आभीर, दरद पशुओं समेत काश्मीर, खाशीर अर्थात् [खुरासानी] अन्तचार, पल्हव (जिनकी भाषा पहलवी प्रसिद्ध है) गिरिगह्वर, आत्रेय, भरद्वाज, स्तनपोषिक, प्रोषक, कलिंग, किरातों की जातें, तोमर, हंसमार्ग, करभञ्जक यह और अन्य पूर्वीय और उत्तरीय देशहैं, हे समर्थ धृतराष्ट्र यह मैने सब देश उद्देशमात्रसे कहे । ६९ । मनोरथों के पूर्णकरने वाले कामधेनु रूपी पृथ्वी श्रेष्ठपोषित गुण और बलके समान त्रिवर्ग अर्थात् (धर्म अर्थ काम) हिरण्यगर्भरूपी फलके भी देनेवाले धर्म और अर्थ में कुशल बुद्धि शूरवीर राजालोग उस पृथ्वीकी इच्छापूर्वक लालसाकरते हैं वह शीघ्रता करनेवाले धनके लोभी युद्धभूमि में अपने प्राणों को त्यागकरते हैं, यह पृथ्वी इच्छानुसार देवता और मनुष्यों की देहोंकी रक्षाका स्थान है हे भरतर्षभ पृथ्वी के भोगने की इच्छा रखनेवाले क्षत्रीलोग परस्पर में एक एक को मारते हैं जैसे कि कुत्ते मांसके टुकड़े करते हैं इसीप्रकार से अबतकभी किसीकी तृष्णा न्यून नहीं होतीहै हे राजा इसी

and the Dashmaliks who are Vaishyas and shudras descended from Kshatryas, are very dreadful Abhirs, Darads Kashmere Khashir, Antchar, Pallav Girigahvar, Atreya Bharadwaj, Stanposhik, Proshak Kaling, Kirat, Tomar, Hansmarg and Karbhanjak are other eastern and northern tribes and countries. I have now told thee, wise Dhritrashtra the names of all the countries. This wonderful earth, giver of all desires like the famous Kamdhenu, from which virtue profit and pleasure may be obtained is coveted by virtuous and powerful kings who rashly lose their lives. The earth is the refuge of gods and human beings. It is the bone of contention for powerful kshatryas who desire to obtain it and whose avarice is never satisfied It is thus that the Kauravas and the Pandavas are

दण्डेनैव च भारत । पिता भ्राता च पुत्रश्च खञ्चौश्च नरपुङ्गव । भूमिर्भवति भूतानां सम्यगच्छिद्रदर्शिना ॥ ७६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्वणि भारतीनदीदेशादिनामकथने नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ भारतस्यास्य वर्षस्य तथा हैमवतस्य च । प्रमाणमायुषः सूत बलञ्चापि शुभाशुभम् ॥ १ ॥ अनागत मतिक्रान्तं वर्त्तमानंच संजय । आचक्ष्व मे विस्तरेण हरिवर्षं तथैवच ॥ २ ॥ संजय उवाच ॥ चत्वारि भारते वर्षे युगानि भरतर्षभ । कृतं त्रेता द्वापरंच तिष्यंच कुरुवर्धन ॥ ३ ॥ पूर्वं कृतयुगं नाम ततस्त्रेतायुगं प्रभो । संक्षेपाद् द्वापरस्याथ ततस्तिष्यं प्रवर्त्तते ॥ ४ ॥ चत्वारितु सहस्राणि वर्षाणांकुरुसत्तम । आयुः संख्या कृतयुगे संख्याता राजसत्तम ॥ ५ ॥ तथा त्रीणि सहस्राणि त्रेतायांमनुजाधिप । द्वे सहस्रे द्वापरे तु भुवि तिष्ठन्ति साम्प्रतम् ॥ ६ ॥ न प्रमाणस्थितिर्ह्यस्ति तिष्ये

कारण से कौरव पाण्डव भी साम, दाम, भेद, दण्ड इन चारों नीतों के द्वारा पृथ्वी के विजय करनेमें अनेक उद्योग करते हैं, जिसको अच्छे प्रकार से पूरा छिद्र दर्शन है उसीकी पृथ्वी पिता भाई पुत्री आकाश और स्वर्गरूप भी होती है ॥ ७६ ॥

अध्याय ॥ १० ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सूत संजय इस भरतखण्ड और हैमवतखण्डकी अवस्थाओंकी संख्या बल शुभाशुभ भूत भविष्य वर्त्तमानको भी ब्योरेवार कहिये इसी प्रकार हरिखण्डको भी कहिये संजयबोले कि हे भरतर्षभ और कौरवों की वृद्धि चाहनेवाले धृतराष्ट्र भरतखण्ड में चार युग हैं सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग प्रथम सतयुग फिर त्रेता फिर द्वापर और द्वापर के अन्त से कलियुग जारी होताहै है । ४ । कौरवोत्तम राजेन्द्र सतयुगमें चारहजार वर्षकी अवस्था होती है त्रेतामें तीन हजारकी द्वापर में दोहजार वर्षकी और हे राजन् कलियुगमें अवस्था की संख्या नहीं है इस कलियुग में उत्पन्नहुये बालक और गर्भ में वर्त्तमान बालक

striving to possess by negotiations, disuion, gift and bloodshed It stands in the relation of father, mother, daughter, firmament and paradise to him who looks well to it. 7.

CHAPTER X

"Let me know, Sanjaya," said Dhritrashtra, "all about the period of life, strength, the good and bad things, the future, past and present of Bharat-khand, Hemvat-khand and Harikhand." "Best of the descendants of Bharat and dasirous of the welfare of the Kauravas replied Sanjaya,' there are four yugs, namely, Krit, Treta, Dwapar and Kali successively in Bharatvarsh. Four thousand years is the duration of life in the first, three thousand in the second and two thousand years in the third; but in the last or Kali there is no fixed

ऽस्मिन् भरतर्षभ । गर्भस्थाश्च म्रियन्तेऽत्र तथा जाता म्रियन्तिच ॥ ७ ॥ महाबलामहासत्वा प्रज्ञागुणसमन्विता । प्रजायन्तेच जाताश्च शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ८ ॥ जाताः कृतयुगे राजन् धनिनः प्रियदर्शनाः । प्रजायन्तेच जाताश्च मुनयो वै तपोधनाः ॥ ९ ॥ महोत्साहा महात्मानो धार्मिकाः सत्यवादिनः । प्रियदर्शना वपुष्मन्तो महावीर्या धनुर्धराः ॥ १० ॥ वराहायुधि जायन्ते क्षत्रिया शूरसत्तमाः । त्रेतायां क्षत्रिया राजन् सर्वे वै चक्रवर्त्तिनः ॥ ११ ॥ आयुष्मन्तो महावीरा धनुर्द्धरा युधि । जायन्ते क्षत्रियाः शूराश्चायां वशवर्त्तिनः ॥ १२ ॥ सर्ववर्णाश्च जायन्तेसदाऽश्चैव च द्वापरे । महोत्साहावीर्यवन्त परास्परजयैषिण ॥ १३ ॥ तेजसाल्पेन संयुक्ताः क्रोधनाः पुरुषा नृप । लुब्धा अनृतकाश्चैव तिष्ये जायन्ति भारत ॥ १४ ॥ ईर्ष्या मानस्तथा क्रोधो मायाऽसूया तथैवच । तिष्ये भवति भूतानां रागोलोभश्च भारत ॥ १५ ॥ संक्षेपो वर्त्तते राजन् द्वापरेऽस्मिन्नराधिप । गुणोत्तरं हैमवतं हरिवर्षं ततः परम् ॥ १६ ॥

इति महाभारते भीष्मपर्वणि भारतवर्षे कृतयाद्युगायुर्निरूपणे दशमोऽध्याय १०
समाप्तञ्च जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्व ॥

भी मरते हैं और सतयुगमें बड़े बलिष्ठ पराक्रमी और बुद्धिआदि गुणयुक्त सैकड़ों वा हजारों मनुष्य उत्पन्नहोकर सन्तानोंको उत्पन्न करते थे और धनी प्रियदर्शन तपोधन मुनि उत्पन्नहोकर सन्ततियों के उत्पन्नकर्त्ता हुये बड़े उत्साह मन धार्मिक सत्यवादी प्रियदर्शन उत्तम वर्ण महापराक्रमी धनुषधारी वरके योग्य शूरोंमें श्रेष्ठक्षत्री उत्पन्न होते हैं और त्रेतामें सब क्षत्री चक्रवर्त्ती होते हैं । ११ । और बड़े अवस्थावान् शूरवीर युद्धमें धनुषधारियों में उत्तम राजाओंके आज्ञावर्ती उत्पन्नहोतेहैं द्वापर युगमें सब वर्ण सदैव उत्साह चित्त पराक्रमी परस्परमें विजयाभिलाषी उत्पन्न होतेहैं और कलियुगमें थोड़े पराक्रमी क्रोधी लालची मिथ्यावादी मनुष्य उत्पन्न होतेहैं और कलियुग में जीवधारियों में अहंकार क्रोध ईर्षा छल दूसरे की निन्दा और विषयों में प्रीति करनेवाले लालची उत्पन्न होतेहैं और हे राजन् इस द्वापर की अवधि अब थोड़ी रहगई परन्तु हेमवतखण्ड और हरिखंड सर्वोत्तमहैं ॥ १६ ॥

time of death as some die as soon as they are born while others die in the womb In Sat yug there were hundreds and thousands of wise, strong and energetic people born who produced children Wealthy ascetics of handsome features were born in that age and produced children Energetic, virtuous, truthful and handsome archers of noble birth and great prowess were born among kshtryas In the Treta age all the Kshatrya kings were emperors 11 They lived long and were brave warriors, best of archers and firm on duty. In the dwapar age all the classes are energetic, desirous of victory over one another and full of prowess. Men of Kali age are less warlike, wrathful, covetous and untruthful In that age are born covetous men full of vanity, anger, jealousy, deceit and malice. The *dwapar* age is about to come to its close, but Hemvatkhand and Harikhand are better than Bharatvarsh in these respects. 16

॥ अथ भूमिपर्व ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ जम्बूखण्डस्त्वया प्रोक्तो यथावदिह सञ्जय । विष्कम्भमस्य प्रब्रूहि परिमाणन्तु तत्वत ॥ १ ॥ समुद्रस्य प्रमाणञ्च सम्यगच्छिद्रदर्शनम् । शाकद्वीपञ्च मेब्रूहि कुशद्वीपञ्च सञ्जय ॥ २ ॥ शाल्मलिञ्चैव तत्वेन क्रौञ्चद्वीपं तथैव च । ब्रूहि गावल्गणे सर्वं राहो सोमार्कयोस्तथा ॥ ३ ॥ सञ्जय उवाच । राजन्सुवहवो द्वीपा यैरिदं सन्ततं जगत् । सप्तद्वीपान् प्रवक्ष्यामि चन्द्रादित्यौ ग्रहंतथा ॥४॥ अष्टादश सहस्राणि योजनानि विशाम्पते । षट्शतानि च पूर्णानि विष्कम्भोजम्बुपर्वतः ॥ ५ ॥ लावणस्य समुद्रस्य विष्कम्भो द्विगुण स्मृत । नानाजनपदाकीर्णो मणिविद्रुमचित्रित ॥ ६ ॥ नैकधातुविचित्रैश्च पर्वतैरुपशोभित । सिद्धचारणसंकीर्ण सागर परिमण्डल ॥ ७ ॥ शाकद्वीपञ्च वक्ष्यामि यथावदिह पार्थिव । शृणु

अध्याय ॥ ११ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय तुमने जम्बूखण्ड अर्थात् जम्बूद्वीपका वर्णन यथार्थ कहा अब इसके केन्द्र और परिधिकी संख्याको मूलसमेत वर्णनकरो और समुद्रकी संख्याको भी कहो और सब दृष्टिगोचर शाकद्वीप कुशद्वीप, शाल्मलद्वीप, क्रौंचद्वीप इन सबको राहु चन्द्रमा और सूर्य्यसमेत वर्णनकरो । ३ । संजय बोले कि हे राजा बहुतसे ऐसे ७ द्वीप हैं जिनसे यह युग बड़ाविस्तार युक्त है अब मैं सूर्य्य चन्द्रमा और राहुसमेत सातोंद्वीपोंका वर्णन करताहूं जम्बूद्वीपका केन्द्र और क्षेत्रफल अठारह हजार छःसौ योजन है । ५ । और खारी समुद्र का विस्तार इससे दूना कहा है यह समुद्र नानादेशों से युक्त मणि मूंगे आदि से शोभित नानाप्रकार की धातुओं से विचित्र पर्व्वतों से शोभायमान सिद्धचारणों से सेवित चारोंओर से मंडलाकारहै । ७ । हे राजा अब मैं शाकद्वीपको यथार्थ वर्णन करताहूं हे

CHAPTER XI

Bhumi Parva—"Thou hast duly described Jambukhand to me Sanjaya," said Dhritrashtra; "give me now an accurate idea of its dimensions and extent as well as the extent of the ocean, of Shaka dwip, of Kushadwip of Shalmalidwip of Kraunchadwip, of Rahu of Soma and of the Sun, without leaving any thing" "There are O king," replied Sanjaya, "many islands dotted over the earth I shall however, describe to thee only seven islands besides the moon the sun and the planet Rahu Jambudwip extends for eighteen thousand and six hundred yojans 5 The extent of the salt ocean is said to be twice this. That ocean is covered with many kingdoms and is adorned with gems and corals It is also decked with many mountains covered with metals of various kinds The ocean is

मेरव यथान्याय ब्रुवतः कुरुनन्दन ॥ ८ ॥ जम्बूद्वीपप्रमाणेन द्विगुण सनराधिप । विष्कम्भेण महाराज सागरोपि विभागश ॥ ९ ॥ क्षीरोदो भरतश्रेष्ठ येन सम्परिवारित. । तत्र पुण्याजनपद स्तत्र न म्रियते जन ॥ १० ॥ कुतपवहि दुर्भिक्षं क्षमातेजोयुताहि ते । शाकद्वीपस्य सक्षपो यथावद भरतर्षभ ॥ ११ ॥ उक्तएष महाराज किमन्यत् कथयामिते । धृतराष्ट्र उवाच । शाकद्वीपस्यसंक्षेपो यथावदिह सञ्जय ॥ १२ ॥ उक्तस्त्वया महाप्राज्ञ विस्तर ब्रूहि तत्वत । सञ्जय उवाच । तथैव पर्वता राजन् सप्तात्र मणिभूषिता ॥ १३ ॥ रत्नाकरास्तथा नद्यस्तेषां नामानिमे शृणु । अतीवगुणवत् सर्वं तत्र पुण्य जनाधिप ॥ १४ ॥ देवर्षिगन्धर्वयुतः प्रथमो मेरुरुच्यत । प्रागायतो महाराज मलयो नाम पर्वत. ॥ १५ ॥ ततामेघा प्रवर्त्तन्ते

कौरवनन्दन तुम भी न्यायपूर्व्वक मुझसे सुनो वह द्वीप जंबूद्वीप के विस्तार से दूना है और समुद्र भी विभाग के अनुसार क्षीरोदनामी है हे राजन् जिस समुद्र से वह द्वीप चारों ओर को घिराहुआ है उसमें पवित्र देश हैं वहां मनुष्य नही मरते हैं तौ वहां दुर्भिक्ष कैसे होसक्ता है वह क्षमावान तेजधारी हैं यह तो शाकद्वीप का संक्षेप ठीक २ वर्णन किया अब दूसरी बात क्या सुनना चाहतेहो ।११। धृतराष्ट्र बोले कि हे महाज्ञानी तुमने इसशाकद्वीप का संक्षेप तो ठीक कहा परंतु उसको ब्योरेवार मूल समेत वर्णनकरो संजयबोले कि हे महाराज इसीप्रकार के सातपर्व्वत इसमें मणियों से भूषित वर्त्तमान हैं औरनदियांभी अनेक रत्नोंकी आकारहैं इन के नाम मैं कहताहूं वहां सब लोग पवित्र और गुणवान हैं देवता गधर्व और ऋषिलोगों•से संयुक्त प्रथम पर्व्वत मेरु कहाजाता है और पूर्व्व पश्चिमका स्पर्श करनेवाला दूसरा मलय पर्व्वत है उस पर्व्वतसे सब बादल प्रकटहोकर कर्ममें प्रवृत्तहोते हैं ।१५। हेकौरव्य उससे

circular in form and thickly peopled by sidhas and charans. I shall now speak of Shakdwip Listen to my description Kauravl Its area is twice that of Jamvudwip and the ocean too is twice that island in area. Shakdwip is surrounded on all sides by the ocean. The people inhabiting it are righteous and free from death 10 Famine cannot prevail there. The people are forgiving and energetic. This is a brief account of Shakadwip O king, what more do you desire to hear?" "You have given me Sanjaya," said Dhritrashtra, "a brief account of Shakadwip, but I want to hear it in detail, wise man" 12 "That island" replied Sanjaya, contains seven mountains decked with jewels and full of the mines of gems and precious stones. There are many rivers in that island Listen to me as I recount their names. Everything there is excellent and charming The

प्रभवन्ति च सर्वश । तत परणकौरव्य जलधारो महागिरि ॥ १६ ॥ ततोनित्य मुपादत्ते वासव परम जलम् । ततो वर्ष प्रभवति वर्षकाले जनेश्वर ॥ १७ ॥ उच्चैर्गिरिरैवतको यत्र नित्य प्रतिष्ठता । रेवतीदिव नक्षत्र पितामहकृतो विधि ॥ १८ ॥ उत्तरेण तु राजेन्द्र श्यामो नाम महागिरि । नवमेघप्रभ. प्रांशु श्री मानुज्ज्वलविग्रह ॥ १९ ॥ यत श्यामत्वमापन्ना प्रजा जनपदेश्वर । धृतराष्ट्र उवाच । सुमहान्संशयोमेद्य प्रोक्तोय सञ्जयत्वया ॥ २० ॥ प्रजा कथ सूतपुत्र सम्प्राप्ता श्याम तामिह । सञ्जय उवाच । सर्वेष्वेव महाराज द्वीपेषु कुरुनन्दन ॥ २१ ॥ गौर कृष्णश्च पतगस्तयोर्वर्णान्तरे नृप । श्यामो यस्मात् प्रवृत्तो वै तस्माच्छ्यामोगिरि

पूर्व की ओरएक जलधारा नाम बड़ा पर्व्वत है जहांपर इन्द्र देवता उत्तम जलको ग्रहणकरताहै उसी जलसे वर्षाऋतु में पृथ्वीपर वर्षा होती है और उससे भी बड़ा पर्व्वत रैवतक है वहांस्वर्ग में निवास करनेवाला रेवती नक्षत्र सदैव वर्त्तमान रहताहै यह ब्रह्माजी की उत्पन्न कीहुई रीति है और उत्तर ओरको श्याम नाम बड़ा पर्व्वत है वह नवीन बादल के समान प्रकाशवान ऊंचा शोभायमान उज्ज्वलस्वरूप है हे राजा उसीसे मनुष्यों ने श्यामवर्ण को पाया है धृतराष्ट्रबोले हे संजय अब तुम ने यह मुझसे बड़ा संदेहयुक्त वचन कहा है सूत पुत्र संसार ने कैसे श्यामवर्ण को पाया ।२०। संजय बोले कि हे राजा सब द्वीपोंमें गोरा नररूप जीव और काला नारायण रूप ईश्वर पक्षी है उन दोनों वर्णों में जिस हेतु से नारायण की कलारूप श्यामवर्ण प्रकट हुआ इसी से उसका नाम श्यामगिरि विख्यात हुआ और उस में निवास करने व शाक भोजन करने से मनुष्यों ने भी श्यामवर्ण को पाया हैं कौर-

---

first of those mountains is Meru, the second is Malya, stretching towards the east, on which clouds are produced and disperse on all sides. The next mountain is named Jaldhara from which Indra daily takes water of the best quality 16 It is from that water that we get showers in the rainy season Next comes the high mountain known as Raivatak over which permanently shines Revati from the sky by the order of Brahma himself On the north of these is the huge mountain called Shyam which possesses the splendour of the newly risen clouds, and is very high, beautiful and of bright body, The colour of these mountains is dark and therefore the people living there are of dark complexion" "A great doubt" said Dhritrashtra, "rises in my mind from what thou has said, Sanjaya. What causes the complexion of the people there to be dark?" 20 'The people" said Sanjaya, "of a place are either fair or dark or a mixed breed of the two, and it is from the people of dark colour inhabiting there that

स्मृतः ॥ २२ ॥ ततः परं कौरवेन्द्र दुर्गशैलो महोदयः । केसर केसरयुतो यतो वातः प्रवर्त्तते ॥ २३ ॥ तेषां योजनविष्कम्भो द्विगुण प्रविभागशः । वर्षाणि तेषु कौरव्य सप्तोक्तानि मनीषिभिः ॥ २४ ॥ महामेरुर्महाकाशो जलद कुमुदोत्तरः । जलधारो महाराज सुकुमार इति स्मृत ॥ २५ ॥ रैवतस्य तु कौमारः श्यामस्य मणिकाञ्चनः । केसरस्याथ मौदाकी परेणतुमहापुमान् ॥ २६ ॥ परिवार्य तु कौरव्य दैर्घ्यं ह्रस्वत्वमेव च । जम्बूद्वीपेन सङ्ख्यातस्तस्य मध्ये महाद्रुमः ॥ २७ ॥ शाको नाम महाराज प्रजा तस्य सदानुगा । तत्र पुण्या जनपदा पूज्यते तत्र शंकरः ॥२८॥ तत्र गच्छन्ति सिद्धाश्च चारणा दैवतानि च । धार्मिकाश्च प्रजा राजश्चत्वारोतीव भारत ॥ २९ ॥ वर्णा स्वधर्मनिरता न च स्तेनेऽत्र दृश्यते । दीर्घायुषोमहाराज जरामृत्युविवर्जिताः ॥ ३० ॥ प्रजास्तत्र विवर्द्धन्ते वर्षास्विव समुद्रगाः । नद्यः

वेन्द्र! उससे आगे बढ़कर महोदय दुर्गशैल केशरी और केशरयुत पर्व्वत है उसी से वायु उत्पन्न होती है उन दोनोंके विस्तार की संख्या क्रम से एकसे दूसरे की दूनी है हे राजा इनके मध्यवर्ती ज्ञानियों ने यह सात खण्ड वर्णन कियेहैं जिनके महामेरु, महाकाश, जलद, कुमुद, उत्तर, जलधार, सुकुमार यह सातनाम वर्णन किये हैं, रैवत पहाड़ का खंड कौमार और श्याम गिरि का खण्ड मणिकांचन है । २५ । केदार पर्व्वत का खण्ड मोदाकी है उससे परे महापुमान् है जो छोटे बड़ों को घेरेहुए है उसद्वीप में एक शाकनाम बड़ा वृक्ष जंबूद्वीप के जम्बू वृक्षकी समान है और सब प्रजा उसकी सेवामें तत्परहैं इस द्वीपमें सूक्ष्म देहधारी होने के कारण सब वर्ण अपनेर धर्मों में प्रीति रखने वाले बड़ी अवस्था वाले जरा मरण से रहित हैं जहां चोरनहीं दिखाई देते हैं वहां प्रजा लोगों की ऐसे वृद्धि होती है जैसे कि वर्षा

the mountains are called black After this come the large impregnable mountains Keshri and Keshar over which fragrant breezes constantly blow. Each succeeding one of these is double the size of the former one That island is divided into seven parts, namely Mahameru, Mahakash, Jalad, Kumud, Uttar, Jaldhar and Sukumar. The portion containing Revat mountains, is called Kaumar and that containing the black mountains, is Manikanchan. The portion containing Kedar hills is called Medaki Beyond this is Mahapuman which surrounds many large and small ones. That island contains a large tree known as Shak which is as large as the Jamvu tree of Jamvudvip The people of that country adore it. Possessing divine bodies, the people of all classes there are lovers of virtue, long lived and free from old age and death Thieves are not found there,

पुण्यजलास्तत्र गङ्गा च बहुधागता ॥ ३१ ॥ सुकुमारी कुमारीच शीताशीवेणिकातथा। महानदी च कौरव्य तथा माणजलानदी ॥ ३२ ॥ चक्षुर्वर्धनिका चैव नदाभरत सत्तम। तत्र प्रवृत्ता पुण्योदा नद्य कुरुद्वलोद्वह ॥ ३३ ॥ सहस्रणा शतान्यच यतो वर्षति वासव । नतासा नामधेयानि परिमाण तथैवच ॥ ३४ ॥ शक्यनपरि सख्यातु पुण्यास्ता हि सरिद्वरा । तत्र पुण्या जमपदाश्चत्वारो लाकसम्मता ॥३५॥ मगाश्च मशकाश्चैव मानसा मन्दगास्तथा। मगा ब्राह्मणभूयिष्ठा स्वकर्मानरतानृप ॥ ३६ ॥ मशकेषु तु राजन्या धार्मिका सर्वकामदा । मानसाश्च महाराज वैश्यध र्मोपजीविन ॥ ३७ ॥ सर्वकामसमायुक्ता शूरा धर्मार्थनिश्चिता । शूद्रास्तुमन्दगा नित्य पुरुषाधर्मशीलिन ॥ ३८ ॥ न तत्र राजा राजेन्द्र न दण्डो नच दण्डिका ।

ऋतु में नदियों की वृद्धि होतीहै । ३० । वहां नदियां पवित्र जलवाली हैं और वहुत रूपधारी गंगा भी वर्तमान हैं इनके सिवाय सुकुमारी, कुमारी, शीतासी, वेणिका, महानदी मणिजलानदी, चक्षुवर्धनका नदी इत्यादि लाखों नदियां पवित्र जल वाली हैं जहांसे इन्द्र जलको लेकर वर्षा करता है उनके नाम विस्तार देर्घ्य इत्यादि संख्याकरने के योग्य नही हैं वह उत्तम नदियां पवित्रता और पुण्यकी वढ़ानेवाली हैं वहां सवलोकों में प्रतिष्ठित पवित्र चारदेश हैं वह मृग, मशक मानस, मन्दग नाम से प्रसिद्धहैं । ३५ । मृगनाम देश में वहुतसे ऐसे ब्राह्मणहैं जो अपने कर्मो में सदैव प्रवृत्तहैं और मशक देशमें ऐसे क्षत्री लोगहैं जो धर्मचारी और सब मनोरथों के देने वाले हैं मानस देशवासी वैश्य धर्म से निर्वाह करने वाले हैं मन्दग देश के रहने वाले शूद्र लोग धर्मके अभ्यासीहैं हे राजेन्द्र उन देशोंमें न राजाहै न दण्डहै न दण्डधारी हाकिमहै वहां सवप्रजालोगही धर्मज्ञ होकर अपने२ धर्मो से परस्पर की रक्षा करतेहैं

and the people grow like rivers in the rains 30 The rivers there have pure water and Ganga too of many forms flows there Besides these there flow the Sukumari, the Kumari, the Shitasi, the Venika, the Mahanadi, the Manijala, the Chakshubardhanaka and thousands others of pure water from which Indra draws water to pour as rain It is beyond my power to mention their names The rivers are sin cleansing and givers of purity That land contains four provinces, known as Mrig, Mashak, Manas and Mandag Mrig is inhabited by numbers of Brahmans firm on their duty, Mashak is inhabited by Kshatryas that are virtuous and generous, the inhabitants of Manas are Vaishyas living by trade and those of Mandag are dutiful Shudras Those countries have neither kings nor punishment nor wrongdoers for the people know their duties and are firm on them We know only this

स्वधर्मेणैव धर्मज्ञास्ते रक्षन्ति परस्परम् ॥ ३९ ॥ एतावदेवशक्यन्तु तस्मिन्द्वीपेप्रभाषितुम् । एतदेवचश्रोतव्यं शाकद्वीपे महौजसि ॥ ४० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भूमिपर्वणि शाकद्वीपपर्वणि एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

सञ्जय उवाच ॥ उत्तरेषुच कौरव्य द्वीपेषु श्रूयते कथा । एवं तत्र महाराज ब्रुवतश्च निबोधमे ॥ १ ॥ घृततोय. समुद्रोत्र दाधमण्डोदको परः । सुरोद. सागरश्चैव तथा यो जलसागरः । २ ॥ परस्परेण द्विगुणाः सर्वे द्वीपा नराधिप । पर्वताश्च महाराज समुद्रैः परिवारिता ॥ ३ । गौरस्तुमध्यमे द्वीपे गिरिर्मान शिलो महान् । पर्वत पश्चिमे कृष्णो नारायणसखो नृप ॥ ४ ॥ तत्र रत्नान दिव्यानि स्वयं रक्षति केशव । प्रसन्नश्चाभवत्तत्र प्रजाना व्यदधत् सुखम् ॥ ५ ॥ कुशस्तम्ब कुशद्वीपे मध्ये जनपदै सह ।

उस बड़े प्रकाशवान् शाकद्वीप में इतनाही कह सक्ते हैं और इतनाही सुनने के योग्य है ॥ ४० ॥

अध्याय ॥ १२ ॥

संजय बोले कि हे महाराज वहां पूर्वकहे हुये उत्तर द्वीपोंमें जिस प्रकारसे कथा सुनी जाती है उसको तुम मुझसे सुनो, कि वहां एकतो घृतका समुद्र है दूसरा दधि का तीसरा मदिरा का समुद्र, चौथा मिष्टजलका समुद्र है हे राजा धृतराष्ट्र सबद्वीप और पहाड़ परस्परमें दूनेर समुद्रोंसे घिरेहुये हैं और मध्यवर्त्ती द्वीपमें गौर शिलारूप पर्व्वत है और पिछले द्वीपमें कृष्ण नाम पर्व्वत नारायणका सखारूप है वहां आप केशवमूर्त्ति दिव्यरत्नों की रक्षाकरतेहैं औरप्रसन्नहोकर प्रजालोगोंको सुख देतेहैं ५ और कुशद्वीपमें कुशस्तंभ देशोंसे युक्तहै और शाल्मलद्वीपमें शाल्मली वृक्ष पूजनकिया

---

much about the island of Shaka and it is sufficient for you to hear." 40

CHAPTER XII

"Hear the account of the northern islands, mentioned above," said Sanjaya to Dhritrashtra, One of the seas there has clarified butter for water, another contains curds of milk, the third is full of wine and the fourth contains sweet water. All these islands and mountains are surrounded by seas that are double their size. In the middlemost island is a mountain of red stone and in the next island is the black mountain which is a favourite seat of Narayan who protects the divine jewels there in person and is pleased to deal happiness to his dependents. 5 The Kusha islands consist of the

सम्पूज्य ते शाल्मलिश्च द्वीपेशाल्मलि के नृप ॥ ६ ॥ क्रौंचद्वीपेमहाक्रौंचो गिरिरत्नच याकर. । सम्पूज्यते महाराज चातुर्वर्ण्येन नित्यदा ॥ ७ ॥ गोमत पर्वतो राजन् सुमहान् सर्वधातुकः । यत्र नित्यं निवसति श्रीमान् कमललोचनः ॥ ८ ॥ मोक्षिभिःसगतो नित्यं प्रभुर्नारायणो हरि. । कुशद्वीपेतु राजेन्द्र पर्वतो विद्रुमैश्चितः ॥ ९ ॥ स्वनामनामा दुर्धर्षो द्वितीयो हेमपर्वतः । द्युतिमान्नाम कौरव्य तृतीय कुमुदो गिरि ॥ १० ॥ चतुर्थ पुष्पवन्नाम पञ्चमस्तु कुशेशयः । षष्ठो हरि गिरिर्नाम षडेते पर्वतोत्तमा ॥ ११ ॥ तेषा मन्तर विष्कम्भो द्विगुण सर्वभागश । औद्भिद प्रथम वर्ष द्वितीय वेणु मण्डलम् १२ तृतीय सुरथाकार चतुर्थकम्बलम्मृतम् । धृतिमत्पञ्चमवर्ष षष्ठवर्षप्रभाकरम् ॥१३॥ सप्तमं कापिलं वर्ष सप्तैते वर्षलम्भका. । एतेषु देवगन्धर्वा प्रजाश्च जगतीश्वर ॥ १४ ॥

जाताहै और क्रौञ्चद्वीपमें रत्न समूहोंका भंडारमहाक्रौंच पर्व्वतको सदैव सबवर्ण पूजते हैं हेराजन् उसमें सब धातुओं का रखनेवाला बहुत बड़ापर्व्वत गोमन्त नामहै जिसके ऊपर श्रीमान् कमललोचन विष्णु भगवान् सदैव निवास करतेहैं वह प्रभु नारायण हरि सदैव मुक्त पुरुषोंसे मिलेहुये रहतेहैं और कुशद्वीप ही मे एक पर्व्वत मुख्य २ वृक्षों से आच्छादितहै वह दुर्धर्ष पर्व्वत स्वनाम नामसे प्रसिद्धहै इसमें दूसरा हेम पर्वत है तीसरा द्युतिमान् कुमुद नाम गिरि है । १० । चौथा पुष्पवान नामहै पांचवां कुशेशय नामहै छठा हरिगिरि नाम है यह छओं उत्तम पर्व्वत हैं इनका मध्यवर्ती विस्तार पूर्वक विभाग के अनुसार दूना है प्रथम खण्ड औद्भिद है दूसरा वेणु मण्डल है तीसरा रथाकार है, चौथा कंबल है पांचवां धृतिमत् खंडहै छठवां प्रभाकर नाम खण्ड है सातवां कापिल खण्ड है यह सातों पर्व्वत खण्डों के विभाग करने

---

province of Kushastambh and Shalmali tree is adored in Shalmalidwip And Kraunch mountains, the treasury of all sorts of jewels are adored by all classes of people in the Kraunch island 7 The islands contains the huge mountain called Gomant, containing all sorts of metals, which is the permanent residing place of lotus eyed Vishnu Lord, Narayan or Hari who mingles with emancipated beings In Kushdwip, there is a mountain, covered with large trees, bearing the same name as the island. Next to it are Hem mountains and the third is the glorious hill called Kumud 10 The fourth is known as Pushpvan, the fifth is Kusheshaya and the sixth is Harigiri. All these six mountains are the best The intervening space between these six increases in the ratio of one to two as they proceed further north. The first portion is Audbhid; the second is Venumandal, the third is Rathakar; the fifth is Kambal, the fourth is Dhritimatkhand, the sixth is Prabhakar and the seventh is Kapilkhand,

विहरन्ते रमन्ते च न तेषु म्रियते जन । न तेषु दस्यव सन्ति म्लेच्छजातयोपि
वा नृप ॥ १५ ॥ गौरप्रायेजन' सर्वः सुकुमारश्च पार्थिव । अथाशिष्टेषु सर्वेषु
वक्ष्यामि मनुजेश्वर ॥ १६ ॥ यथाश्रुत महाराज तदव्यग्रमना शृणु । क्रौञ्चद्वीपे
महाराज क्रौञ्चो नाम महागिरिः ॥ १७ ॥ क्रौञ्चात् परोवामनको वामनादन्धका
रक । अन्धकारात् परोराजन् मैनाकः पर्वतोत्तमः ॥ १८ ॥ मैनाकात् परताराजन्
गोविन्दो गिरिरुत्तम । गोविन्दात् परतो राजन् निविडो नाम पर्वतः ॥ १९ ॥
परस्तु द्विगुणस्तेषां विष्कम्भो वंशवर्द्धन । देशास्तत्र प्रवक्ष्यामि तन्मे निगदत
शृणु ॥ २० ॥ क्रौञ्चस्यकुशलो देशो वामनस्य मनोनुग । मनोनुगात् परश्चोष्णो
देश कुक्कुलोद्वह ॥ २१ ॥ उष्णात् पर प्रावरकः प्रावारादन्धकारक । अन्धका
रकदेशात्तुमुनिदेशः पर स्मृत ॥ २२ ॥ मुनिदेशात् परश्चैव प्रोच्यते दुन्दुभि

वाले है इनखंडों में देवता गंधर्व और प्रजालोग विहार पुर्व्वक आनन्द करतेहैं उन में मनुष्य नहीं मरता न चोर म्लेच्छ जाति आदि के लोग रहतेहैं । १५ । और सब प्रजा गौर वर्ण सुकुमार होतेहैं इनके सिवाय शेषद्वीपों कामी तुमसे वर्णन करताहूं इसको आप सावधानीसे सुनो कि द्वीपमें क्रौञ्चनाम वड़ापर्व्वतहै और क्रौञ्च से परे वामनहै वामनसे परे अन्धकारक है अन्धकारक से परे मैनाकनाम उत्तम पर्व्वतहै और मैनाकसे परे गोविन्दनाम उत्तम पर्व्वत है गोविन्दसे परे निविड़ नाम श्रेष्ठ पर्व्वत है इनकाही विस्तारद्विगुणित है, इनके देशोंकाभी वर्णन करता हूं उसको तुम सुनो । २० । क्रौञ्चद्वीपका देशकुशलहै वामनका देश मनोनुगहै, मनोनुगसे परे उष्ण देशहै उष्णसे परे प्रावरक है प्रावरकसे परे अन्धकारक देशहै अन्धकारकसे परे मुनि देशहै मुनि देशसे परे दुन्दुभी स्थान बोला जाताहै, हे राजन् यह सिद्धचारणों का

These seven provinces are divided by mountains and are inhabited by gods, gandharvas and other happy people. They are free from death, thieves and mlechas 15 The people are of white complexion and delicate I shall now give an account of other islands as I have heard Listen attentively, king In the Kraunch island, O king there is a large mountain of the same name Next to Kraunch is, Vamanak and then comes Andhakarak Next to Andhkar, O king, is Menak the best of mountains Next to Menak is Govind and after the latter, comes the mountain known as Nivid. The distance between these mountains increases in the proportion of one to two. I shall now tell thee of the countries that lie there. Listen to me as I speak of them. 20 The country near Kraunch is called Kushal, while that near Vaman is Manonug Next to Manonug is Ushna; after Ushna comes *Pravara* and after *Pravara* is Andhkarak The country next to Andhkar is Munidesh and after Munidesha comes Dundubhisthan full of Sidhas and Charans. The people are of white

स्वनः । सिद्धचारणसंकीर्णो गौरप्रायो जनाधिप ॥ २३ ॥ एते देशा महाराज देवगन्धर्वसेविताः । पुष्करे पुष्करोनाम पर्वतो मणिरत्नवान् ॥ २४ ॥ तत्र नित्यं प्रभवति स्वयं देवः प्रजापतिः । तं पर्युपासते नित्यं देवाः सर्वे महर्षयः ॥ २५ ॥ वाग्भिर्मनोनुकूलाभिः पूजयन्तो जनाधिप । जम्बूद्वीपात् प्रवर्त्तन्ते रत्नानि विविधान्युत ॥ २६ ॥ द्वीपेषु तेषु सर्वेषु प्रजानां कुरुसत्तम । ब्रह्मचर्येण सत्येन प्रजानां हि दमेनच ॥ २७ ॥ आरोग्यायुः प्रमाणाभ्यां द्विगुणं द्विगुणं ततः । एको जनपदो राजन् द्वीपेष्वेतेषु भारत । उक्ता जनपदा येषु धर्मश्चैकः प्रदृश्यते ॥ २८ ॥ ईश्वरो दण्डमुद्यम्य स्वयमेव प्रजापतिः । द्वीपानेतान् महाराज रक्षंस्तिष्ठति नित्यदा ॥ २९ ॥ स राजा स शिवो राजन् स पिता प्रपितामहः । गोपायति नरश्रेष्ठप्रजाः सजडपण्डिताः ॥ ३० ॥ भोजनञ्चात्र कौरव्यप्रजाः स्वयमुपस्थितम् । सिद्धमेव

निवासस्थान वहुत गोरे वर्णवाले मनुष्यों से पूरित है यह सब देश देवगंधर्वों के निवास और विहार स्थानहैं पुष्करद्वीप में पुष्कर नाम पर्व्वत मणिरत्नों का रखनेवाला है । २४ । उसमें आप देवदेव ब्रह्माजी निवास करतेहैं और हेराजन् उन ब्रह्माजी को सब देवता और महर्षि योगमनसे पूजन करते हुये सदैव चारों ओरसे उपासना करते हैं उन सब द्वीपों में प्रजाओं के अनेक प्रकारके रत्न जंबूद्वीपसे आते हैं ब्रह्मचर्य सत्यता और प्रजाओं की शान्ति से नीरोगता पूर्व्वकएक से एकद्वीपकी अवस्था दूनी है इन सब द्वीपोंमें केवल एकही देशहै उसी देश में सब देश कहे जाते हैं वह एक धर्मरूप देश दृष्ट पड़ता है अर्थात् धर्म फलभोगने के लिये छओंद्वीपहैं और जंबूद्वीप कर्म और योगकी भूमि है हेराजन् आप प्रजापति ईश्वर दण्ड धारण करके इनद्वीपों की रक्षाके लिये नियत रहताहै वही राजाहै वहीशिवहै वही पिता पितामह आदि हैं । ३० । वही सब जड़ चैतन्य प्रजाओं की रक्षा करता है हे कौरव यहां के

---

colour. All these places are inhabited by gods and Gandharvas. In Pushkar is a mountain, named Pushkar which abounds in jewels and gems. There always the divine Prajapati is adored by the gods and great rishis. The gems of Jamvudwip are used there. In all these islands the proportion of celibacy, truth, and self control a well as the health and longevity of the inhabitants, is double as the place is more and more remote towards north. All these islands together make up one country as one religion is professed throughout. The supreme Prajapati himself dwells there, dealing punishment and protecting those islands. He is the king, the source of bliss, the father, the grandfather (30) and protector of all moveables and immoveables. The inhabitants of these places have cooked food to

महाबाहो नद्धि भुञ्जन्ति नित्यदा ॥ ३१ ॥ तत परं समानाम दृश्यते लोकसंस्थि तिः । चतुरस्रं महाराज त्रयास्त्रिंशत्तु मण्डलम् ॥ ३२ ॥ तत्र तिष्ठन्ति कौरव्य चत्वारो लोकसम्मताः । दिग्गजा भरतश्रेष्ठ वामनैरावतादयः ॥ ३३ ॥ सुप्रतीकस्तदा राजन् प्रभिन्नकरटामुखः । तस्याहं परिमाणन्तु न संख्यातुमिहोत्सहे ॥ ३४ ॥ असङ्ख्यातः स नित्यं हि तिर्यगूर्ध्वं मधस्तथा । तत्र वै वायवो वान्ति दिग्भ्यः संवाभ्य एवाहि ॥ ३५ ॥ असम्बद्धा महाराज तान्निगृह्णन्ति ते गजाः । पुष्करैः पद्मसङ्काशैर्वर्चकसद्भिर्महाप्रभैः ॥ ३६ ॥ शतधा पुनरेवाशु ते तान् मुञ्चन्ति नित्यशः । श्वसद्भिर्मुच्यमानास्तु दिग्गजैरिह मारुताः ॥ ३७ ॥ आगच्छन्ति महाराज ततस्तिष्ठन्ति वै प्रजाः । धृतराष्ट्र उवाच । परो वै विस्तरोत्यर्थं त्वया सञ्जय कीर्त्तितः ॥ ३८ ॥ दर्शितं द्वीपसंस्थानमुत्तरं ब्रूहि सञ्जय । सञ्जय उवाच । उक्ता द्वीपा महाराजग्रहं वै शृणु तत्वतः ॥ ३९ ॥ स्वर्भानो. कौरवश्रेष्ठ यावदेव प्रमाणतः । परिमण्डलो महा

प्रजालोग स्वतःसिद्ध प्राप्तहुये भोजनको खाते हैं, इसके पीछे समानाम लोकोंकी निवास भूमि दृष्ट पड़ती है हेराजन् वह चतुर्मुख कमलरूपहै और उसका मंडल तेंतीस हजार योजन है हे राजेन्द्र वहां लोकोंके प्रधान चारदिग्गज वामन और ऐरावत नाम आदिसे नियत हैं और इसीप्रकार तीसरा । ३५ । प्रतीक है चौथा प्रभिन्नकरट है उसका प्रमाण मैं वर्णन नहीं करसक्ता वह गजसमूह सदैव तिरछा ऊंचानीचाहै इसमे गणनासे बाहर है । ३६ । वहां पर सब ओरकी वायु चलती है वही गज उनको बड़ी प्रकाशवान खिलेकमलों की समान अपनी सूंड़ोंसे पकड़ते हैं और पकड़कर शीघ्रही सौ भागकरके छोड़तेहैं वही गजोंके श्वासोंकी छोड़ीहुई वायु यहां आतीहै उसीसे सब प्रजालोग जीवते रहतेहैं धृतराष्ट्रबोले हे संजय यह तुमने बहुतबड़ा विस्तार वर्णन किया और द्वीपों काभी रूप दिखाया अब हे संजय इनके विशेष और २ जो भाग है उनका वर्णन करो संजय बोले हे राजन् मैंने द्वीपोंका वर्णन किया अब ग्रहोंका वर्णन

eat without undergoing any trouble for cooking it. After these regions comes the place known as Sama which, starlike, has four corners and thirty three Mandals. There dwell the four diggajes [elephants supporting the four quarters of the globe] adored by all. They are named Vaman, Airavat, Pratik and Prabhinna karat. I can not give you an idea of their size as the length, breadth and thickness of their bodies are as yet unascertained. 35. The winds blow there irregularly from all sides and being caught by those elephant's in their trunks of the colour of lotuses and of great splendour, are let loose again in parts towards us and keep us alive." On hearing this, Dhritirashtra said. "You have given Sanjaya an account of the islands in detail, now tell me about others that remain." I have given you an account of islands," said Sanjaya, "now hear from

राज स्वर्भानुः श्रूयते ग्रहः ॥ ४० ॥ योजनानां सहस्राणि विष्कम्भो द्वादशास्य वै । परिणाहेन षट्त्रिंशद्विपुलत्वेन चानघ ॥ ४१ ॥ षष्टिमाहुः शतान्यस्य बुधाः पौराणिकास्तथा । चन्द्रमास्तु सहस्राणि राजन्नेकादश स्मृतः ॥ ४२ ॥ विष्कम्भेण कुरुश्रेष्ठ त्रयस्त्रिंशत्तु मण्डलम् । एकोनषष्टिविष्कम्भं शीतरश्मेर्महात्मनः ॥ ४३ ॥ सूर्यस्त्वष्टौ सहस्राणि द्वे चान्ये कुरुनन्दन । विष्कम्भेण ततो राजन् मण्डलं त्रिंशता समम् ॥ ४४ ॥ अष्टपञ्चाशतं राजन् विपुलत्वेन चानघ । श्रूयते परमोदारः पतगोऽसौ विभावसुः ॥४५॥ एतत् प्रमाणमर्कस्य निर्दिष्टमिह भारत । स राहुश्छादयत्येतौ यथाकालं महत्तया ॥ ४६ ॥ चन्द्रादित्यौ महाराज संक्षेपोऽयमुदाहृतः । इत्येतत्ते महाराज पृच्छतः शास्त्रचक्षुषा ॥ ४७ ॥ सर्वमुक्तं यथातत्त्वं तस्माच्छममवाप्नुहि । यथोद्दिष्टं मया प्रोक्तं सनिर्माणमिदं जगत् ॥४८॥ तस्मादाश्वस कौरव्य पुत्रं दुर्योधनं

मूलसमेत सुनो ।४०। हे कौरवेन्द्र राहुग्रह गोल सुना जाता है उसका व्यास निश्चय करके बारहहजार योजनहै और मंडल छत्तीसहजार योजनहै और बुद्धिमान पौराणिकों ने उसकी मुटाई में छःहजार योजनसे अधिक कहाहै और चन्द्रमा का व्यास ग्यारह हजार योजन कहाहै उसका मंडल तैंतीसहजार योजनहै और मुटाई उंसठ योजनसे अधिक है और हे राजन् सूर्यका व्यास दशहजार योजन है परन्तु मुटाई में तेरहसौ योजन से अधिकहै इसी हेतुसे इकतीस हजार तीन सौ योजनका मण्डल है यह शीघ्र गामी सूर्य बड़े उदार सुने जातेहैं हे राजन् यह सूर्यका प्रमाण कहा और वहराहु अपने बड़े देहसे समय पाकरदोनों सूर्य चन्द्रमाओंको ढक लेता है यही संक्षेपसे वर्णन किया है महाराज धृतराष्ट्र मैंने शास्त्ररूप दृष्टिसे यह सब वृत्तान्त यथावस्थित कहा यह जगत् समेत मैंने जैसा गुरुसे सुना है उसीके अनुसार तुमसे वर्णन किया इससे आप

---

me, king, about heavenly bodies. 40. We hear that Rahu is globular in form. Its diameter is twelve thousand yojans and the circular measurement is thirtysix thousand yojans. Its thickness as given by the writers of Purans, is more than six thousand yojans. The diametre of the moon is said to be eleven thousand yojans, its circumference is thirty three and its thickness more than fiftynine yojans. The diametre of the sun is ten thousand yojans; but the thickness being more than thirteen hundred yojans, its circumference is thirty one thousand and three hundred yojans. We hear that this fast-going Sun is very generous. I have given you an account of the dimensions of the Sun who like the moon, is sometimes hidden by the huge body of Rahu. I have told you all as I have read in books and heard from my teacher. From this you

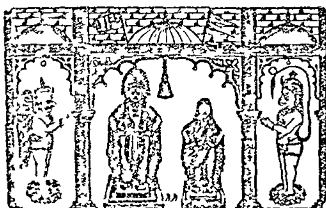
प्रति । श्रुत्वेदं भरतश्रेष्ठ भूमिपर्व मनोनुगम् ॥ ४९ ॥ श्रीमान् भवति राजन्यः सिद्धार्थः साधुसम्मत । आयुर्बलञ्च कीर्तिश्च तस्य तेजश्च वर्द्धते ॥ ५० ॥ य. शृणोति महीपाल पर्वणीदं यतव्रत । प्रीयन्ते पितरस्तस्य तथैव च पितामहाः ॥ ५१ ॥ इदन्तु भारत वर्षं यत्र वर्त्तामहे वयम् । पूर्वैः प्रवर्त्तितं पुण्यं तत् सर्वं श्रुतवानासि ॥ ५२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भूमिपर्वणि उत्तरद्वीपादिसंस्थानवर्णने द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

॥ समाप्तञ्च भूमिपर्व ॥

शान्तीको पाओ इन अनेक कारणों से हे राजन् तुम अपने पुत्र दुर्योधनमें शान्तीको पाओ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ इसचित्तरोचक भूमिपर्व को जो राजा सुनताहै वह धन वानहो अभीष्टको प्राप्तकरके साधुओं में प्रतिष्ठाको पाता है और उसकी आयु बल कीर्त्ति तेज वृद्धि बढ़ती है ओर श्रद्धापूर्वक नियम से जो राजा सुनेगा उसके पिता पितामहादि तृप्तहोते हे यह भरतखंड जिसमें हम सब वर्त्तमान हैं यह पूर्वजोंसे बडा पुण्यका बढ़ाने वाला नियत कियागया है इस सबको तुमने सुनाहै ॥ ५२ ॥

may be pleased to obtain peace of mind and may now induce your son Duryodhan, by giving reasons, to become peaceful Whatever Kshatrya will hear this charming account of the world, will get wealth, respect among righteous men, longevity, power, fame, glory and satisfaction of desires. Whoever hears this portion attentively with observances, gratifies his forefathers You have heard an account of Bharatvarsh where we live and which has ever been praised by our predecessors,' 52"



अथ भगवद्गीतापर्व ॥

वैशम्पायन उवाच । अथ गावल्गणिर्विद्वान् संयुगादेत्य भारत । प्रत्यक्षदर्शी
सर्वस्य भूतभव्यभविष्यावित् ॥ १ ॥ ध्यायते धृतराष्ट्राय सहसोत्पत्य दुःखितः ।
आचष्ट निहतं भीष्मं भरतानां पितामहम् ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । सञ्जयोऽहं
महाराजनमस्ते भरतर्षभ । हतो भीष्मः शान्तनवो भरतानां पितामहः ॥ ३ ॥
ककुदं सर्वयोधानां धाम सर्वधनुष्मताम् । शरतल्पगतः सोऽद्य शेते कुरुपितामहः
॥ ४ ॥ यस्य वीर्यं समाश्रित्यद्यूतंपुत्रस्तवाकरोत् । स शेते निहतो राजन् संख्ये
भीष्मः शिखण्डिना ॥ ५ ॥ यः सर्वान् पृथिवीपालान् समवेतान् महामृधे । जिगा-
यैकरथेनैव काशिपुर्यां महारथः ॥ ६ ॥ जामदग्न्यं रणे रामं योयुध्यदपसम्भ्रमः न
हतो जामदग्न्येयन सहतोद्य शिखण्डिना ॥ ७ ॥ महेन्द्रसदृश. शौर्ये स्थैर्येच

अध्याय ॥ १३ ॥

वैशंपायनजी बोले हे भरतवंशी इसके पीछे सबका वृत्तान्त प्रत्यक्ष देखने वाले भूतभविष्य वर्त्तमान के ज्ञाता बुद्धिमान संजय ने युद्ध भूमि से आकर आकस्मिक ध्यान करनेवाले धृतराष्ट्र के समीप जाकर भरतवंशियों के पितामह का महाघायल होना वर्णन किया जो सब युद्धकर्त्ताओं में ध्वजारूप और धनुर्धारियों में महातीव्र, हैं अब वह कौरवों के पितामह शर शय्यापर सोरहे हैं जिनके पराक्रम के आश्रय को पाकर तेरेपुत्र ने पांडवों से जुवाखेला वही भीष्मजी शिखण्डीसे विदीर्ण घायल होकर शरशय्यापर विराजे हैं । ५ । जिसमहारथी ने काशीपुरी में एकही रथसे महाभारी युद्धमें सब मिले हुये राजाओंको विजय कियाथा और वही महाभयकारी युद्धमें जमदग्नि जी के पुत्र परशुरामजीसे लडे और उनके हाथसे नहीं मारेगये अबवही

CHAPTER XIII

Vaishampayan said that having seen with his own eyes all that had hassed in the field of battle, wise Sanjaya who knew of present, past and future, returned to Dhritrashtra who was plunged in thought and informed him that Bhishm the grandfather was fatally wounded in battle. ' The foremost of all warriors and archers, Bhishm the grand father of the Kaurvas," said Sanjaya to king Dhritrashtra " is sleeping on the bed of arrows He on whose strength thy son engaged in the gambling match with the Pandvas, is lying wounded by the arrows of Shikhandi. 5. The brave warrior who alone conquered a large assembly of kings at Kashi and whom Parashuram the son of Jamadgani could not slay in a duel, lies slain by Shikhandi. He

हिमवानिव । समुद्र इव गाम्भीर्ये सहिष्णुत्वे धरासमः ॥ ८ ॥ शरदंष्ट्रो धनुर्व
क्त्रः खड्गजिह्वो दुरासदः । नरसिंहः पिता तेऽद्य पाञ्चाल्येन निपातितः ॥ ९ ॥
पांडवानां महासैन्यं यद्दृष्ट्वोद्यतमाहवे । प्रावेपत भयाद्विग्नं सिंहं दृष्ट्वेव गोगणः १०
परिरक्ष्य स सेनां ते दशरात्र मनीकहा । जगामास्तमिवादित्यः कृत्वा कर्म सुदुष्क-
रम् ॥ ११ ॥ यः स शक्र इवाक्षोभ्यो वर्षन् बाणान् सहस्रशः । जघान युधि
योधानामर्बुदं दशभिर्दिनैः ॥ १२ ॥ स शेते निहतो भूमौ वातभग्नइवद्रुमः । तवदु-
र्मन्त्रिते राजन् यथा नार्हः स भारत ॥ १३ ॥

इति महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि भीष्ममृत्युश्रवणे
त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

भीष्मजी शिखंडी के हाथ से मारेगये हैं । ७ । जो शूरतामें महा इन्द्र के समान और स्थिरचित्तता में हिमाचल पर्वत के समान और गंभीरता में समुद्रके सदृश और क्षमा में पृथ्वी के तुल्य हैं अबवह बाणरूप दंष्ट्रा और धनुष रूप मुख खड्गरूप जिह्वा दुर्धर्ष नरोत्तम सिंहरूप तेरापिता पांचाल देशी शिखण्डी के हाथसे पृथ्वीपर मारागया पांडवों की सेना जिसको युद्धमें शस्त्र लिये उद्यत देखकर भयसे व्याकुल होकर ऐसे कांपती थी जैसे कि सिंहको देखकर गौओंका समूह व्याकुल होकर थरथराता है वह वीरों का मारनेवाला उसतेरे पुत्रकी सेना को दशदिन रात्रि रक्षाकरके बडे कठिनयुद्धों को करता हुआ घायलों के समान अस्त होगया । ११ । जोकि हजारों बाणों को बरसाता हुआ इन्द्रके समान महा व्याकुलता से पृथक् है उसने अपने दशदिनके युद्धों में एक अर्बुद सेनाको मारडाला हे भरतवंशी वह मेरी बुरीसलाह के होनेसे वायु से गिरेहुये वृक्ष के समान पृथ्वीपर ऐसे सोताहै जैसे कि कभी वह सोनेके योग्य न था ॥ १३ ॥

---

who was brave like Indra, firm like the Himalayas, grave like the ocean and like the earth in forgiveness, who had arrows for his teeth, bow for mouth, and sword for tongue, that invincible father of thine, the best of men, lies dead by the wounds of Shikhandi of Panchal, He at the sight of whose arms the Pandava army trembled like a herd of cows at the sight of a lion, that destroyer of warriors, having protected the army of thy son for ten days and nights and having performed matchless deeds of bravery, has set like the sun 11. He who like Indra himself, scattering arrows by thousands with great skill, daily slew ten thousand warriors for ten days, lies slain, though he did not deserve it, on the bare ground like a tree broken down by the wind, in consequence of thy evil counsels, O Bharat." 13.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ कथं कुरूणामृषभो हतो भीष्मः शिखण्डिना। कथं रथात् स न्यपतत् पिता मे वासवोपमः ॥ १ ॥ कथमासंश्च मे योधा हीना भीष्मेण सञ्जय। बलिना देवकल्पेन गुर्वर्थे ब्रह्मचारिणा ॥ २ ॥ तस्मिन् हते महाप्राज्ञे महेष्वासे महाबले। महासत्त्वे नरव्याघ्रे किमु आसीन्मनस्तव ॥ ३ ॥ आर्तिः परम विशति मनः शंससि मे हतम्। कुरूणामृषभं वीर मकम्पं पुरुषर्षभम् ॥ ४ ॥ के तं यान्तमनुप्राप्ताः के वास्यासन् पुरोगमाः। केऽतिष्ठन् केन्यवर्त्तंत केऽन्यवर्त्तन्तसञ्जय॥५ के शूरारथशार्दूल मद्भुतं क्षत्रियर्षभम्। रथानीकं गाहमानं सहसा पृष्ठतोन्वयुः ॥६॥ यस्तमोर्क इवापोहन् परसैन्यममित्रहा। सहस्ररश्मिप्रतिम. परेषां भयमादधत् ॥ ७ ॥ अकरोद् दुष्करं कर्म रणे पाण्डुसु

अध्याय ॥ १४ ॥

धृतराष्ट्रने कहा कि मेरापिता भीष्म कैसे शिखण्डी के हाथ से घायलहुआ और कैसे रथसे गिराहै संजय उस पराक्रमी देवता के समान अपने पिता शंतनु के लिये ब्रह्मचारी होनेवाली गुरुरूप भीष्मजी के विना मेरे पुत्रों की कौन दशाहुई और ऐसे महाबली धनुर्धारी महाज्ञानी शस्त्रवेत्ता नरोत्तम भीष्म के मारेजाने पर तेरा चित्त कैसा होगया जिस निर्भय कंपरहित कौरवेन्द्र पुरुषोत्तमवीर भीष्मजी को मृतक सुनकर मेराचित्त महापीड़ा से व्याकुल होताहै हे संजय कौन २ क्षत्री इस के आगे और कौन इनके पीछे चलनेवाले हुये कौन स्थिरहुये और कौनलौट आये और कौन से क्षत्री सम्मुख वर्त्तमानहुये ।५। और कौन से शूर उस महारथी क्षत्रियोत्तम युद्ध में सेनाके दबानेवाले भीष्मजीके पीछे की ओरको चले जिसबड़े प्रबल सेनाके स्वामी सूर्य के समान तेजस्वी शत्रुहंताने शत्रुओंकी सेना के मनुष्योंको मारहटाया और

CHAPTER XIV

" How was Bhishm my father wounded by Shikhandi," asked Dhritrashtra of Sanjaya, " and how did he fall from the chariot ? To what state were my sons reduced in the absence of that great elderly warrior Bhishm who was full of prowess like gods and who observed a vow of celibacy for the sake of his father Shantanu! What was the state of your mind at the death of Bhishm the great archer, wise in the use of weapons and best of men ? Bhishm was the great intrepid Kaurava chief and best of men at the news of whose death my mind is perplexed with excessive pain. Tell me, Sanjaya, what Kshatryas were before and after him, which of them stayed there, which returned and which of them faced him. 5. What warriors followed that best of warriors, Bhishm the best of Kshatryas, destroyer of foes and wonderful archer. While he was engaged in battle, what warriors opposed that slayer of foes, glorious like the

तेषुय । असमानमनीकानि य एन पर्यवारयन् ॥ ८ ॥ कृतिनन्त दुराधर्ष सञ्जयास्यत्व मान्तके । कथ शान्तनव युद्धे पाण्डवा प्रत्यवारयन् ॥ ९ ॥ निकृन्तन्त मनीकानि शर दंष्ट्र तरस्विनम् । चापव्यात्ताननं घोर मासि जिह्व दुरासदम् ॥ १० ॥ अनर्हंपुरुषव्याघ्र ह्रीमन्तमपराजितम् । पातयामास कौन्तेय. कथ तमाजत युधि ॥ ११ ॥ उग्रधन्वानमुग्रे षु वर्त्तमान रथोत्तमे । परेषामुत्तमाङ्गानि पचिन्वन्तमथेषुभि ॥ १२ ॥ पाडवानां महत् सैन्य य दृष्ट्वोद्यतमाहवे । कालाग्निमिव दुर्धर्ष समचेष्टत नित्यश. ॥ १३ ॥ परिकृष्य स सेनानु दशरात्रमनीकहा । जगामास्त मिवादित्य. कृत्वाकर्म सुदुष्करम् ॥ १४ ॥ य स शक्र इवाक्षय्य वर्ष शरमय क्षिपन् । जघान युधि योधाना मर्बुद दशभिर्दिनै १५॥

शत्रुओं में महाभयको उपजाया और युद्धमें पाण्डवोंके ऊपर महाकठिन कर्मकिया और हे संजय तुमने उसके सम्मुखहोने वाले युद्धमें कुशल दुष्प्रधर्ष महाबली को भी देखा है जिसने कि इस सेनाके निगलने वाले महावीर धनुर्धारी भीष्मको मारकर हटाया हे संजय पांडवा ने युद्धके बीचमें उन भीष्मजी को कैसे प्रकारसे रोका और सेनाओं के काटनेवाले बाणरूप दंष्ट्रा रखनेवाले वेगवान चापरूपी मुखफइलानेवाले खड्गरूप जिह्वाधारी दुर्धर्षइस दशाके अयोग्य पुरुषोत्तम लज्जावान अजित जितेन्द्री भीष्म जीको अर्जुन ने किसप्रकार से गिराया जो भीष्म कि भयानक धनुष बाणयुक्त उत्तमरथमें आरूढ बाणों से शत्रुओं के शिरों के छेदने वाले होते थे॰उसकाल अग्नि के समान दुर्धर्ष शस्त्र धारण किये सशब्द भीष्मजी को देखकर पांडवोंकी सेनासदैव मृतकप्रायके सदृश चेष्टा करती थी वह शत्रुहन्ता दशरात्रि सेनाको खैंचकर महाकठिन युद्ध कर्मको करके सूर्य के समान अस्तहोगया । १४ ॥ जिसने दशदिन तक इन्द्र के समान अखण्ड बाणों को छोडकर युद्धमें एक अर्बुद संख्याके शूरवीरों को मार

sun, who caused great terror to the warriors of the army and accomplished difficult exploits in the ranks of the Pandavas How did the *Pandavas oppose the son of Shantanu, that accomplished and* invincible warrior, when he was engaged in killing their armies? Have you seen the man who opposed Bhishm and wounded him in battle.? How did Arjun cause the fall of that destroyer of armies having arrows for his teeth, the swift bow for his gaping mouth and sword for his tongue, invincible, undeserving of such a fate, best of men, modest, inconquerable and having control over his organs Bhishm who with his dreadful bow and arrows cut down the heads of the enemies from his seat in his chariot, who was invulnerable like the fire of yug, who appeard like death to the army of the Pandavas, that destroyer of enemies having performed a difficult work in the field of battle for ten days, has set like the sun. 14 He who like Indra, discharged for ten days an incessant shower of arrows and

स शेते निहतो भूमौ वातभुग्न इवद्रुमः । मम दुर्मन्त्रितेनाजौ यथा नार्हति भारत ॥१६॥ कथं शान्तनवं दृष्ट्वा पाण्डवानामनीकिनी । प्रहर्त्तुमशकत्तत्र भीष्मं भीमपराक्रमम् ॥१७॥ कथं भीष्मेण संग्रामं प्राकुर्वन् पाण्डुनन्दनाः । कथञ्च नाजयद् भीष्मो द्रोणे जीवति सञ्जय ॥ १८ । कृपे सन्निहिते तत्र भरद्वाजात्मजे तथा । भीष्मः प्रहरतां श्रेष्ठः कथं स निधनं गतः ॥ १९ ॥ कथञ्चातिरथस्तेन पाञ्चाल्येन शिखण्डिना । भीष्मो विनिहतो युद्धे दैवैरपि दुरासदः ॥ २० ॥ यः स्पर्द्धते रणे नित्यं जामदग्न्यं महाबलम् । अजितं जामदग्न्येन शक्रतुल्यपराक्रमम् ॥ २१ ॥ तं हतं समरे भीष्मं महारथकुलोदितम् । सञ्जयाचक्ष्व मे वीरं येनशर्म न विद्महे ॥ २२ ॥ मामकाः के महेष्वासा नाजहुः सञ्जयाच्युतम् । दुर्योधनसमादिष्टाः के वीराः पर्यवारयन् ॥२३॥

डाला; वह भरतर्षभ मेरेदुर्मन्त्रों से युद्ध में पराजय होकर पृथ्वी में वृक्षके समान गिर कर ऐसा घायल होकर सोता है जैसा कि वह कभी होनहीं सक्ता । १६ । ऐसे प्रतापी महाबली भीष्मजी को युद्ध में सन्नद्ध देखकर पांचाल देशियों की सेना किस प्रकार से उनके ऊपर प्रहारकरने को समर्थ हुई और पांडवोंने भीष्मजी के सम्मुख कैसे लड़ाई की और हे संजय द्रोणाचार्यजी के जीतेहुये होनेपर भीष्मजी ने कैसे विजय को नहीं पाया और प्रहार कर्त्ताओं में श्रेष्ठ भीष्मजी ने भारद्वाज के पुत्र कृपाचार्य और द्रोणाचार्य के वर्त्तमान होनेपर कैसे मृत्यु को पाया और देवताओं से भी महादुर्धर्ष अति रथी भीष्मजी युद्ध में उस पांचाल देशी शिखण्डी के हाथसे कैसे मारेगये।२०।जिन्होंने महाबली परशुरामजीको युद्धमें प्रसन्नकिया अर्थात् उनसे ईर्षापूर्व्वक लड़ाई होनेपरभी उनके हाथसे नहीं मारागया इन्द्र के समान प्रबल महा रथियों में सूर्य रूप महावीर भीष्मजी युद्धमें जैसे मृतक हुए वह सब मुझसे वर्णनकरो और हे संजय मेरे कौन कौनसे बड़े धनुर्धारी बाण फेकने वाले पुत्रों ने उसदुराधर्ष

destroyed a hundred thousand warriors, that scion of Bharat race now lies on the bare ground in the field of battle, deprived of life, like a mighty tree uprooted by the wind, as a result of my evil counsels, although he did not deserve this fate 16 Seeing the son of Shantanu ready to fight, how was the army of the Pandavas able to wound him ? How did the Pandavas fight against Bhishm ? How was it that Bhishm did not conquer although Drona is still alive ? How did Bhishm die when both Drona and Kripacharya are alive ? How did Shikhandi of Panchal kill Bhishm who was invincible even by gods ? He pleased mighty Parashuram in battle and was not killed by him. Let me know in detail how that best of warriors was killed in battle What great archers of my army did not

याऽग्रतशिखण्डिमुखाः सर्वे पाण्डवा भीष्ममभ्ययुः । कच्चित्ते कुरवः सर्वे नाजहुः सत्तमं तम् ॥ २४ ॥ अश्मसारमयं नूनं हृदयं सुदृढं मम । यच्छ्रुत्वा पुरुषव्याघ्र हतं भीष्मं नदीर्यते ॥ २५ ॥ यस्मिन् सत्यमेधाच नीतिश्च भरतर्षभे । अप्रमेयाणि दुर्धर्षे कथं स निहतो युधि ॥ २६ ॥ मौर्वीघोषस्तनयित्नुः पृषत् कपृषतो महान् । धनुर्ह्रादमहाशब्दो महामेघ इवोन्नतः ॥ २७ ॥ योऽभ्यवर्षत कौन्तेयान् सपाञ्चालान् ससृञ्जयान् । निघ्नन् पररथान् वीरो दानवानिव वज्रभृत् ॥ २८ ॥ इष्वस्त्रसागरं घोरं वाणग्राहं दुरासदम् । कार्मुकोर्मिणमक्षय्यमद्वीपं चलमप्लवम् ॥ २९ ॥ गदासिमकरावासं हयावर्त्तं गजाकुलम् । पदाति मत्स्यकलिलं शङ्खदुन्दुभि निःस्वनम् ॥ ३० ॥ हयान् गज पदातींश्च

को त्याग नहीं किया और दुर्योधन के आज्ञावर्ती कौन २ से वीरोंने शत्रुओंको न रोका जिससे कि वह सब पाण्डव जिनमें सब का अग्रगामी शिखण्डीथा भीष्मजी के सम्मुख आये हे संजय उस अजित वीर को सब कौरवों ने तो त्याग नहीं किया मेरा निश्चयकरके वज्रके समान हृदय है जो ऐसे पिता भीष्म पराक्रमी के मरनेपर भी नहीं फटता है । २५ । वह भरतर्षभ दुराधर्ष सत्यवादी बुद्धि स्मरण में सावधान शास्त्रों का ज्ञाता होकर युद्ध में कैसे मरा है जिसका धनुषरूप बादल बाणरूप जल धारा और धनुषकी टंकारही गर्जनायुक्त घोरशब्दवाले बडे बादलही के समान ऊंचा है और जैसे इन्द्र दैत्यों को मारताहै उसी प्रकार शत्रुके रथियों को मारतेहुये जिस वीरने पाण्डव और पांचाल देशीय वा सृंजय लोगों के पद वर्षाकी उसवाण आदि अनेक भयानक अस्त्रों के समुद्र बाणरूपी ग्राहधारी दुराधर्ष धनुष रूप तरंग वाले अविनाशी निराधार नौकाओं से रहित गदाखड्ग रूप मकर जीवों से व्याप्त घोडे रूपी आवर्तों समेत हाथियों से व्याकुल पदातीरूपमीनों से भराहुआ शंख

desert Bhishm? What warriors of my son's army did not help Bhishm in checking the advance of the Pandavas who led by Shikhandi were able to face Bhishm. Did the Kauravas desert that warrior? My heart must be hard like adament as it does not break on hearing of the death of Bhishm. 25 That irresistible bull of Bharat race was truthful, wise and a great politician. Alas! how was he slain in battle? Like a mighty and high cloud he had the twang of his bowstring for the thunder and his arrows for showers, and showered his shafts on the enemy as *Indra does on the Danavas*. What heroes resisted that chastiser of foes as the shore resists the waves of the sea? He was a terrible ocean of arrows and weapons, whose shafts were the irresestible crocodiles and bows were the waves. He was a boundless angry ocean without an island, and without a raft to cross it over,

रथांश्च तरसा बहून् । निमज्जयन्तं समरे परवीरापहारिणम् ॥ ३१ ॥ विदह्यमानं कोपेन तेजसा च परन्तपम् । वेलेवमकरावासं के वीराः पर्यवारयन् ॥ ३२ ॥ भीष्मोयदकरोत् कर्म समरे सञ्जयारिहा । दुर्योधनहितार्थाय के तस्यास्य पुरोऽभवन् ॥ ३३ ॥ केरक्षन् दक्षिणं चक्रं भीष्मस्यामित तेजसः । पृष्ठतः के परान्वीरानपासेधन् यतव्रताः ॥ ३४ ॥ के पुरस्तादवर्तन्त रक्षन्तो भीष्ममन्तिके । के रक्षन् नुत्तरं चक्रं वीरावीरस्य युध्यतः ॥ ३५ ॥ वामे चक्रे वर्त्तमानाः केऽघ्नन्सञ्जय सृञ्जयान् । अग्रतोग्रयमनीकेषु केऽभ्यरक्षन् दुरासदम् ॥ ३६ ॥ पार्श्वतः केऽभ्यरक्षन्त गच्छन्तो दुर्गमां गतिम् । समूहे के परान्वीरान् प्रत्ययुध्यन्तसञ्जय ॥ ३७ ॥ रक्ष्यमाणः कथं वीरैर्गोप्यमानाश्चते

दुन्दुभियों से शब्दायमानयुद्ध में अपने वेगसे बहुतसे हाथीघोडे पैदलों को डुबाने वाले शत्रुओं के वीरों के हटानेवाले क्रोधसे अग्निरूपतेजसे शत्रुओं के संतप्तकरनेवाले को कौन२ से वीरोंने ऐसे रोकलिया जैसे कि समुद्र को उसकी किनारा रूप मर्य्यादा रोकलेती है । ३२ । हे संजय शत्रुहन्ता भीष्मजी ने युद्धमें दुर्योधन के अभीष्ट के लिये जो २ कर्म किये उस समय उनके सम्मुख कौन २ हुए और कौन २ से वीरों ने भीष्मजी के दाहिने पक्षकी रक्षाकरी और पीछेकी ओरसे कौन से सावधान वीरोंने शत्रुके वीरों को हटाया और कौन २ वीर भीष्मजी के समीप में जाकर रक्षा करतेहुए आगे हुए और किन २ वीरों ने भीष्मजी के लड़ते समय उत्तरीय भागकी रक्षाकरी । ३५ । और वाम पार्श्व में होकर किस २ ने संजय देशियों को मारा और किस २ वीरने उस दुर्धर्ष भीष्मजी की आगेसे रक्षाकी और चलते समय में किस २ ने चारों ओरसे उनकी रक्षाकरी हे संजय

having maces and swords for sharks, steeds and elephants for eddies, the numberless *foot soldiers for fishes* and the *noise of conchshells* and drums for its roars. He was an ocean that swallowed horses, elephants and foot soldiers quickly, an ocean that devoured the warriors of the enemy and seethed with wrath and energy as if containing within himself the subterranean fire. 32. When, for the sake of Duryodhan, Bhishm the destroyer of foes achieved feats in battle, who were in his van? *Who were those* that protected the right wheel of that great warrior of immense energy? Who were they that, with great patience and energy, checked the enemy from his rear. Who were stationed in front to protect him; who protected the fore wheel of that warrior while he was fighting. 35. Who stationed themselves on his left to beat off the Srinjayas. Who were they that protected the front ranks of irresistible Bhishm? Who were they that protected him on all sides while he was moving with difficulty and who,

नते । दुर्जयानामनीकानि नाजयंस्तरसायुधि ॥ ३८ ॥ सर्वलोकेश्वरस्येव परमेष्ठिप्रजा पतेः । कथं प्रहर्तुमपि ते नेकुः सञ्जय पाण्डवाः ॥ ३९ ॥ यस्मिन् द्वीपे समाश्वस्य युध्यन्त कुरवः परैः । तं निमग्नं नरव्याघ्रं भीष्मं शंससि सञ्जय ॥ ४० ॥ यस्य वीर्यं समाश्रित्य मम पुत्रो बृहद्बलः । न पाण्डवानगणयत् कथं स निहतः परैः ॥ ४१ ॥ यः पुरा विबुधैः सर्वैः सहाये युद्धदुर्मदः । काङ्क्षितो दानवान् घ्नद्भिः पितामम महाव्रतः ॥ ४२ ॥ यस्मिन्जाते महावीर्ये शांतनुर्लोक विश्रुतः । शोकं दैन्यञ्च दुःखञ्च प्राजहात् पुत्रलक्ष्मणि ॥ ४३ ॥ प्रोक्तं परायणं प्राज्ञं स्वधर्मे निरतं शुचिम् । वेदवेदांग तत्वज्ञं कथं शंस

उस समूहमें से शत्रुओं के वीरों से युद्धकरनेवाले कौन २ वीर थे वीरों से रक्षित भीष्मजी ने और भीष्मजीसे रक्षित उन वीरोंने युद्ध के वीच वेगसे वा दुःखसे विजय होनेवाली राजाओंकी सेनाओंको क्यों नही विजय किया हे संजय जो सव लोकों के ईश्वर प्रजापति के समान भीष्मके मारने के लिये वह पाण्डवलोग कैसे समर्थ हुए, कौरवलोग जिस रक्षाके स्थानपर भरोसा करके शत्रुओं से युद्ध करते हैं उस नरोत्तम भीष्मजी को हे संजय तुम डूबाहुआ कहते हो । ४० । जिस के वलका आश्रयलेकर वड़ी सेना रखनेवाला मेरा पुत्र पाण्डवों को कुछ नहीं समझताथा वह ऐसा प्रतापी भीष्म पांडवों के हाथ से कैसे मारागया, युद्ध में दुर्मद महाव्रती जिसमेरे पिता भीष्मको सहायता में करके देवतालोग दैत्यों के मारनेके लिये उपस्थितहुये और संसार में विदित राजा शन्तनु ने पुत्रो में उत्तम वड़ेपराक्रमी जिस भीष्म के उत्पन्न होनेपर शोकभय और दुखों को अत्यन्त दूर किया और उसी पुत्रको रक्षाका स्थान वड़ाज्ञानी और अपने धर्मो में आते

O Sanjaya, fought with the warriors of the enemy in the genaral engagement? If he was protected by warriors, and if they were protected by him, why then could he not vanquish at once, the *invincible army of the Pandavas? How could the Pandavas destroy* Bhishm who was like Parameshthi or Lord and Creator of all creatures. You speak, O Sanjaya, of the disappearance of Bhishm the best of men, on whose strength the Kauravas are making this war on the enemies. 40 How did the Pandavas destroy that great warrior, relying on whose strength, my son Duryodhan looked down upon the Pandavas? My father Bhishm the great warrior of dreadful vows, whose assistance was sought by the gods to destroy the Danavas and on whose birth famous Shantanu laid aside all his griefs and cares and whom he called his refuge, was very wise, firm on his duty, scholar of the Vedas and their branches and of pure soul;

रस मे हतम् ॥ ४४ ॥ सर्वास्त्र विनयोपेतं शांतं दान्त मनस्विनम् । हतं शान्तनवं
श्रुत्वा मन्ये शेषं हतं बलम् ॥ ४५ ॥ धर्मादधर्मो बलवान् सम्प्राप्त इति मे मतिः । यत्र
वृद्धं-गुरुं हत्वा राज्य मिच्छन्ति पाण्डवाः ॥ ४६ ॥ जामदग्न्यः पुरारामः सर्वास्त्रविद
नुत्तमः । अम्बार्थ मुद्यत संख्ये भीष्मेण युधि निर्जितः ॥ ४७ ॥ तमिन्द्र समकर्माण
ककुदं सर्व धन्विनाम् । हतं शंससि मे भीष्मं किन्तु दुःखमतः परम् ॥ ४८ ॥ असकृत्
क्षत्रियव्राताः संख्ये येन विनिर्जिताः । जामदग्न्येन वीरेण परवीर निघातिना ॥ ४९ ॥
नहतो यो महाबुद्धिः स हतोद्य शिखण्डिना । तस्मान् नूनं महावीर्याद् भार्गवाद्युद्धदुर्म
दात् ॥ ५० ॥ तेजो वीर्य बलैर्भूयान् शिखण्डी द्रुपदात्मजः । यः शूरं कृतिनं युद्ध सर्व
शास्त्र विशारदम् ॥ ५१ ॥ परमास्त्र विदं शूरं जघान भरतर्षभम् । के वीरास्तम मित्रघ्न

यह वेद वेदांग के मूलोंका ज्ञाता महापवित्रात्मा वर्णन किया है संजय ऐसे पुरुष को मराहुआ कैसे कहता है इन सब अस्त्रोंसे शिक्षायुक्त शान्तनु जितेन्द्री उदार बुद्धि भीष्मजी को मृतकसुनकर में शेष बचीहुई सेना कोभी मृतकही मानताहूं । ४५ । कि जिसस्थानपर पांडव अपने वृद्ध गुरुकोभी मारकर राज्यको चाहतेहैं इससे यह मेरा मतहै कि अधर्म धर्मसे प्रबलतर होता है, पूर्व समय में सब अस्त्र शस्त्रों के ज्ञाता अनुपम युद्ध में सन्नद्ध जमदग्निजी के पुत्र परशुरामजीको युद्ध में भीष्मजीने विजय किया उसइन्द्र के समान कर्मकर्त्ता सब धनुषधारियों के ध्वजारूपभीष्मजीका मृतक कहताहै इससे अधिककौनसा दुःखहोगा जिन परशुरामजीने अनेक समय क्षत्रियों के समूहों को बारम्बार विजय किया परन्तु बड़ा बुद्धिमान मेरापिता नहीं मारागया सो अब वह शिखण्डी के हाथ से मारागया इन हेतु से निश्चय करके द्रुपदका पुत्र शिखण्डी बड़ा पराक्रमी युद्ध में परशुराम जीसे भी अधिक तेजस्वी बल पराक्रम में भी अधिक है जिसने शूरवीर पंडित महाशास्त्रज्ञ धर्मअस्त्रके ज्ञाता भरतवंशियोंके उत्तम

how can you say, Sanjaya, that he is dead ? Knowing the use of all weapons and having his passions under control the son of Shantanu was modest, gentle and energetic. Alas ! hearing of his death; I regard the rest of the army as already slain 45. The Pandavas desire to rule by killing their grandsire; from this I conclude that vice is stronger than virtue. What grief can be greater than that of the death of Bhishm the best of archers and of Indra like prowess, who vanquished Parashuram the son of Jamdagni of matchless prowess and knowledge of arms? My wise father who was not slain by Parashuram the destroyer of kshatryas, is now slain by Shikhandi. Indeed Shikhandi the son Drupad must be a greater warrior than Parashuram as he has destroyed the most glorious descendant of

मन्यधु शस्त्रससदि ॥ ५२ ॥ शस मेगत् यथा चासायुद्ध भीष्मस्य पाण्डवै । योपेव
हतवीरा मे सेना पुत्रस्य सजय ॥ ५३ ॥ अगोपमिव चोद्भ्रान्त गोकुल तद्बल मम ।
पौरुष सर्व लाकस्य पर यस्मिन् महाहवे ॥ ५४ ॥ परासक्त चवस्तस्मिन् कथमासीन्
मनस्तदा जीविते ध्यद्य भाधर्य किमि वास्माकु सञ्जय ५५ घातयित्वामहावीर्यं पितर
लाकधार्मिकम् । अगाधे सलिल मग्नां नौका दृष्ट्व पारगा ॥ ५६ ॥ भीष्मे हते भृश
दु खात् मन्य शोचन्ति पत्रका । आद्रिसारमय नून हृदय मम सञ्जय ॥ ५७ ॥ यच्छ्रु
त्वापुरुषव्याघ्र हत भीष्म न दीर्यते । यस्मिन्नस्त्राणिमेधाच नीतिश्च पुरुषर्षभे ॥ ५८ ॥
अप्रमेयाणि दुर्धर्षे कथ स निहतो युधि । न चास्त्रेण न शौर्येण तपसा मेधया नच ५९

प्रतापी वीरको तारा युद्धभूमि में । ५२ । उस शत्रुहन्ता भीष्मजी के पीछे कौन २ वीर चले और जैसे पाण्डवों से और भीष्मजीसे लडाई हुई यह सब मुझसे विस्तार समेत वर्णन करो हे सजय मेरे पुत्रकी वह सेनास्त्री के समान मृतक वीरवालीहै और वही मेरी सेना इस प्रकार व्याकुल है जैसे कि विनागोपके गौओं का कुल होता है जिसभारी युद्ध में सबलोगोंकी वडी वीरता है अब उस भीष्मजीके मरने के पीछे सबका मन कैसाहोगया, हे सजय अबलोक में धर्मवानवडे पिताको मरवाके हमारे पुत्रोंमें जीवनकी क्या सामर्थ्य है भीष्मजी के मरनेपर मेरे वेटेसदैव दुःखसे ऐसे शोचतेहैं जैसे कि पारपर खडे हुए मनुष्य गहरेजल में डूवीहुई नौका को देख कर शोचतेहैं हे सजय निश्चय करके मेरा वज्रसेभी अधिक कठोर हृदयहै जो ऐसे पुरुषोत्तम भीष्मजीके मरनेपरभी नहीं फटताहै जिसपुरुषोत्तम दुराधर्ष में अस्त्रबुद्धि और नीति अत्यन्तथी वह युद्धमें कैसे मारागया कोई भी मनुष्यअस्त्रशूरता तपबुद्धि

Bharat of great renown and skill in arms 52 What warriors followed that destroyer of enemies in the great battle? Tell me in detail how the battle was fought between the Pandavas and Bhishm Our army, in the absence of that hero is like a woman who has lost her protector or like a herd of cows without the herdsman In what state did he leave the army when that warrior of matchless prowess was laid low on the field of battle? What is the use of our life in this world, when we could not save our father from being slain. My sons must be grieved at the death of Bhishm like those who having lost their boat in the midst of a swollen river, are standing on the opposite shore My heart must be hard as adament as it does not break at the death of Bhishm the best of men who was endued with immense skill in arms and policy How has he been killed? No one can escape death by bravery, asceticism, wisdom

नघृत्या न पुनस्त्यागान् मृत्योः कश्चिविमुच्यते । काले नूनं महावीर्यः सर्व लोकदुरत्य
यः ॥ ६० ॥ यत्र शांतनवं भीष्मं हत शसास संजय । पुत्रशोकाभि सन्तप्तो महद्दुःख
मचिन्तयन् ॥ ६१ ॥ आशंसेहं परं त्राणं भीष्माच्छांतनुनन्दनात् । यदाहत्य मिवाप-
श्यत् पातितं भुवि सञ्जय ॥ ६२ ॥ दुर्योधनः शान्तनवं किन्तदा प्रत्यपद्यत । नाहं स्वे-
षांपरेषांवा बुद्ध्या संजय चिन्तयन् ॥ ६३ ॥ शेषं किं चत् प्रपश्यामि प्रत्यनीके महीक्षि
ताम् । दारुणः क्षत्रधर्मोय मृषिभिः सम्प्रदर्शितः ॥ ६४ ॥ यत्र शान्तनवं हत्वा राज्य
मिच्छन्ति पाण्डवाः । वयं वा राज्य मिच्छामो घातयित्वा महाव्रतम् ॥ ६५ ॥ क्षत्रधर्मे
स्थिताः पार्था नापराध्यन्ति पुत्रकाः । एतदार्येणकर्त्तव्यं कृच्छ्रा स्वापत्सुसंजय ॥ ६६ ॥
पराक्रमः पराशक्तिस्तत्तु तस्मिन् प्रतिष्ठितम् । अनीकानि विनिघ्नन्त ह्रीमन्तमपराजितम्
॥ ६७ ॥ कथं शान्तनवं तातं पाण्डुपुत्राव्यवारयन् । यथा युक्तान्यनीकानि कथं युद्धं

धैर्य्य और तपस्या इत्यादिके द्वारा मृत्युसे नहींछूटताहै इससे निश्चयकरके सबलोकों
को दुःखसे उल्लंघन करनेके योग्यकाल महाबली है । ६० । हेसंजय उन शंतनुके
पुत्रभीष्मजीको मृतक कहताहै उनशंतनु नन्दन भीष्मजीसे मैं पुत्रोंके शोकसे दुःखी
बड़ेदुःखोंको स्मरण करताहुआ रक्षाकी आशा करताथा हेसंजय जब सूर्यके समान
अस्तहुए भीष्मजीको दुर्य्योधनने देखा तब मन में क्या विचारकिया और मैं बुद्धिसे
चिन्ता करताहुआ सेनाके मध्यमें अपने पुत्रोंको और अन्यराजाओंको कुछभी नहीं
समझताहूं यह वह भयका कारण क्षत्री धर्म ऋषिलोगोंने दिखायाहै । ६४ । जहां
पांडव लोग भीष्मजी को मारकर राज्यको चाहते हैं अथवा हमकौरव लोग महा
व्रत वाले भीष्मजीको मरवाकर राज्यको चाहते हैं, क्षत्रीधर्म में प्रवृत्त मेरे पुत्र पांडव
भी कुछ अपराध नहीं करते हैं क्योंकि दुःख और आपत्तियों में उत्तम पुरुष को
यह पराक्रम और महासामर्थ्य प्रकटकरने के योग्य है उसमेंही वह सबपांडव नियत
हैं हेतात उनपांडवोंने उन लज्जावान् दुराधर्ष सेना के मर्दनकरनेवाले भीष्मजीको

patience and penances. Surely, Time is too powerful to be transgressed by any one in the world. 60. You say, Sanjay, that Bhishm, the son of Shantanu, is dead. I expected relief from the grief of my sons through Bhishm. What did Duryodhan think when he saw Bhishm setting like the sun ?. I fear for my sons and other kings who are engaged in battle. Hard are the duties of kshatryas enjoined by rishis 64. The Pandavas have killed Bhishm for the sake of the kingdom and we desire the same even after his death. My sons the Pandavas are committing no sin as when one is beset with calamities one must show prowess. How did the Pandavas check Bhishm the invincible, modest and destroyer of enemies ? How were the armies

महात्मभि ॥ ६८ ॥ कथ वा निहतो भीष्म पिता सञ्जय मे परैः । दुर्योधनश्च कर्णश्च शकुनिश्चापि सौबल ॥६९॥ दु शासनश्च कितवो हते भीष्मे किमब्रुवन् । यच्छरीरैरुपस्तीर्णां नरवारण वाजिनाम् ॥ ७० ॥ शरशक्ति महाखड्ग तोमराक्षां महाभयाम् । प्राविशन् कितवा मन्दा सभा युद्ध विशारदाम् ॥ ७१ ॥ प्राणद्यूते प्रति भय केऽदीव्यन्त नरर्षभा । केऽजीयन्ते जितास्तत्र कृतलक्ष्यानिपातिता ॥ ७२ ॥ अन्ये भीष्माच्छान्तनवात् तन्ममाचक्ष्वसञ्जय । नाह म शान्तिरस्तीह श्रुत्वा देवव्रत हतम् ॥ ७३ ॥ पितर भीमकर्माण भीष्ममाहवशोभितम् । आर्त्ति मे हृदय रूढा महती पुत्रहानिजाम् ॥ ७४॥ त्वहि म सर्पिषेवाग्नि मुद्दीपयसि सञ्जय । महान्त भारमुद्यम्य विश्रुत सार्व लौकिकम्

कैसे रोंका और जैसे २ सेनातैयारहुई और सब महात्माओंका युद्धकैसे हुआ और मेरापिता भीष्म दूसरों के हाथसे कैसे मारागया, भीष्मजी के मरनेपर दुर्य्योधन कर्ण और सौबलकेपुत्रशकुनी और छली दुश्शासन ने क्या कहा, जिन देहों के बिछौनों से संयुक्त मनुष्यहाथी । ७० । घोड़ोंसमेत वाण बरछी और बड़े खड्ग तोमर रूप पाशेवाले महा भयकारी सभा में प्रविष्टहुये और वह युद्ध में कुशल नरोत्तम उस भयकारी प्राणदेवत अर्थात् द्यूतरूपमेंखेले उनमेंसे कौनसा विजयी जीवताहै और जोभीष्मजीसे युद्धमें मारेगये इनसबको हेसंजय मुझसे कहो, यहांपर भयकारी कर्म और युद्धमें शोभा पानेवाले महाव्रत पिता भीष्मजीको मृतक सुनकर मेरेहृदय में शान्ती नहीं होती, हे संजय तुम पुत्रकी हानि से उत्पन्न महा पीड़ा को मेरे हृदयमें ऐसे बढ़ातेहो जैसे घृतसे अग्निको बढ़ाते हैं, और संबंधीलोग प्रसिद्ध महाभार को उठाकर और भीष्मजी को मृतक जानकर शोचते हैं और मैं दुर्योधन के उत्पन्न

arrayed and how did the heroes fight ? How was my father Bhishm killed by them What did Duryodhan, Karn, Shakuni the son of Saubal and deceitful Dushasan say at the fall of Bhishm ? The dice board is made of the bodies of men, elephants and horses, (70) where arrows, javelins, swords and darts form dice, and entering that frightful mansion of destruction, were the wretched gamblers that staked their lives Who won, who were defeated, who cast their dice successfully and who besides Bhishm, were numbered with the dead ? Tell me all this Sanjaya, I can have no rest after hearing of the death of Bhishm of dreadful vows. The thought of the death of all my children gives me much pain and thou inflamest the fire of my grief as if by pouring over it clarified butter I think, my sons must be bewailing the loss of Bhishm the world renowned who had taken the burden on himself I shall listen to all the sorrows arising from Duryodhan's acts 74 Tell me, Sanjaya, everything

॥ ७५ ॥ दृष्ट्वा निनिहत भीष्मं मन्ये शोचन्ति पुत्रकाः । श्रोष्यामि तानि दुःखानि दुर्योधन कृतान्यहम् ॥ ७६ ॥ तस्मान्म सर्वं माचक्ष्व यद्वृत्त तत्र सञ्जय । यद्वृत्त तत्र सग्रामे मन्दस्याबुद्धि सम्भवम् ॥ ७७ ॥ अपनीत सुनीत यत् तन्ममाचक्ष्व सञ्जय । यत्कृत तत्र सग्रामे भीष्मेण जय मिच्छता ॥ ७८ ॥ तेजो युक्त कृतास्त्रेण शस तद्याप्य शेषत । यथातदभवद्युद्ध कुरुपाण्डव सेनयो ॥ ७९ ॥ क्रमण येन यस्मिश्च काले यच यथा भवत् ॥ ८० ॥

इति महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि धृतराष्ट्रप्रश्ने चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

सञ्जय उवाच ॥ त्वद्युक्तोय मनुप्रश्नो महाराज यथार्हसि । नतुदुर्योधने दोष मिममासक्तमर्हसि ॥ १ ॥ य आत्मनोदुश्चरितादशुभ प्राप्नुयान्नर । एनसातेननान्यं स उप शाङ्कितुमर्हति ॥ २ ॥ महाराज मनुष्येषु निन्द्य य सर्वमाचरत् । सवध्यः

कियेहुए उन दु खोंको सुनूंगा इस कारण हेसंजय वहांका सब वृत्तान्त मुझसे कहो और जो युद्ध में अल्पबुद्धियों की निर्बुद्धिता से उत्पन्न वृत्तान्त न्याय वा अन्याय संबंधी कैनाहोहो वह सब मुझ से कहो और युद्ध भूमिमें शस्त्रज्ञ और शास्त्रज्ञ विजया भिलाषी भीष्मजी ने जो अपने तेजसे कर्मकिया वह भी विस्तारपूर्वक संपूर्ण कहो और जब जिस क्रमसे समय पाकर कौरव और पांडवों की सेना से परस्पर युद्धहुआ उसमें जैसा २ जो काम जिस२ का हुआ वह सब मुझसे कहो ८० ॥

अध्याय ॥ १५ ॥

संजय बोले कि हे महाराज यह सब प्रश्न जो तुम पूछतेहो सब ठीकहै परन्तु आप इन दोषों को जो लगाते हो सो योग्य नहीं है जो मनुष्य अपने बुरे कर्म से दुःखादि को पावे वह उसपापकी शंका दूसरेपर करने के योग्य नहीं है । २ । हे महाराज जो मनुष्यों के मध्यमें निन्दाके योग्य कर्मको करता है वह निन्दित कर्म

---

that has happened by the folly of my son. Tell me all, whether good or bad, whatever was done in battle by the energy of Bhishm who was desirous of victory. How the battle was fought between the the Kauravas and the Pandavas and the order and manner of each event as it happened." 80.

CHAPTER XV

"This question, great king!" Said Sanjaya to Dhritrashtra, "is worthy of you It is not however, proper to impute this fault to Duryodhan He who incurs evil as the result of his own misconduct should not attribute it to others. He who does injury to others,

सर्वलोकस्य निन्दितानि समाचरन् ॥ ३ ॥ निकारो निकृतिश्चैव पाण्डवैस्त्वत्प्रती
क्षया । अनुभूत सहामात्यै क्षान्तश्चसुचिरं वने ॥ ४ ॥ हयानाच गजानाञ्च
राज्ञाश्चामिततेजसाम । प्रत्यक्ष यन्मयादृष्ट दृष्ट योगबलेनच ॥ ५ ॥ शृणु तत् पृथिवी
पाल मा च शोके मन. कृथा । दिष्टमेतत्पुरानून मिदमेव नराधिप ॥ ६ ॥ नमस्कृत्वा
पितुस्तेद्य पाराशर्याय धीमते । यस्यप्रसादाद्दिव्य तत् प्राप्त ज्ञानमनुत्तमम् ॥ ७ ॥
दृष्टिश्चातीन्द्रियाराजन् दूराच्छ्रवणमेव च । परचित्तस्य विज्ञानमतीतानागतस्य
च ॥ ८ ॥ व्युत्थितोत्पत्ति विज्ञानमाकाशे च गति शुभा । अस्त्रैरसगो युद्धेषु
वरदानान्महात्मन ॥ ९ ॥ शृणुमे विस्तरे णेद विचित्र परमाद्भुतम् । भारताना
मभूद्युद्धं यथा तल्लोम हर्षणम् ॥ १० ॥ तेष्वनीकेषु यत्तेषु व्यूढेषु च विधानत. ।

करनेवाला सबलोकोंसे मारने के योग्य है, छल संयुक्त दुर्योधन आदि ने निरादर किया और पाण्डवोंने मंत्रियो के द्वारा तेरी ओर को ध्यान करके बहुत कालतक वनके बीच बैठकर उस अपमानको क्षमाकिया और मैंने प्रत्यक्षमें घोड़े हाथी और बड़े तेजस्वी राजाओंकी जो दशादेखी और योगबल से भी जो निश्चयकिया हे राजा उसको तुम मुझसे सुनो । ५ । और शोकसे चित्तको हटाओ यही होनहार प्राचीन है मैं आपके बुद्धिमान पिता उन व्यासजीको नमस्कार करके कहताहूं जिन की कृपासे मैंने दिव्यदृष्टि और अनुपम प्रज्ञाको प्राप्तकिया, हे राजा ध्यानसे पृथक् देखना वा दूरसे बातका सुनना अथवा दूसरे के मनका अच्छे प्रकारसे जानना और भूत भविष्यका ज्ञानहोना, उठेहुए अस्त्रकी उत्पत्तिका जानना, आकाश में शुभगमन, लड़ाइयों में अस्त्रोंसे बचजाना इत्यादि सब बातें महात्माके वरदानसे प्राप्तहैं इस अपूर्व विचित्र वृत्तान्त को व्योरेवार तुममुझसे सुनो जैसे कि वह भरतवंशियोंका रोमहर्षण करनेवाला युद्धहुआ । १० । हेमहाराज जब व्यूह रचनाकी रीतिसे उस

deserves to be slain by all men for his wickedness. The sinless Pandavas, with their friends and counsellors, bore the injuries and long exile for your sake and forgave them Hear, O king, what I have seen of horses, elephants and powerful kings by the aid of yog power 5 All this was predestined before Having bowed down to thy father, Vyas the wise, through whose grace I have gained supernatural powers of sight, beyond the range of eyes, hearing from a great distace, knowledge of other people's minds, of past and future, of the effects of weapons thrown, the delightful power of ranging through skies and escape from weapons, listen to me in detail as I recite romantic and wonderful battle that happened between the descendants of Bharat, a battle that makes one's hairs stand on end I 10. When the armies were arranged in phalanxes,

दुर्योधनो महाराज दुःशासन मथाब्रवीत् ॥ ११ ॥ दुःशासन रथास्तूर्णं युज्यन्तां भीष्म रक्षिण । अनीकानि च सर्वाणि शीघ्र त्वमनु चोदय ॥ १२ ॥ अयं समामभिप्राप्तो वर्षपूगाभि चिन्तित । पाण्डवानां ससैन्यानां कुरूणांच समागम ॥ १३ ॥ नात. कार्य तम मन्ये रणे भीष्मस्य रक्षणात् । हन्याद् गुप्तो ह्यसौ पार्थान् सोमकांश्च ससृञ्जयान् ॥ १४ ॥ अब्रवीच्च विशुद्धात्मा नाहं हन्यां शिखण्डिनम् । श्रूयते स्त्री ह्यसौ पूर्वं तस्माद् वर्ज्यो रणे मम ॥ १५ ॥ तस्माद् भीष्मो रक्षितव्यो विशेषेणेति मे मतिः । शिखण्डिनो वध यत्ता सर्वे तिष्ठन्तु मामका ॥ १६ ॥ तथा प्राच्याः प्रतीच्याश्च दाक्षिणात्योत्तराप था. । सर्वशस्त्रेषु कुशलास्ते रक्षन्तु पितामहम् ॥ १७ ॥ अरक्ष्यमाणं हि वृको हन्यात्

सेनाकी तैयारियांहुईं तब दुर्योधनने दुश्शासनसे कहा कि हे दुश्शासन भीष्मजीके रक्षाकरनेवाले रथशीघ्रही तैयारहों और तुमइस बातको सबसेनाको शीघ्रसुनादो कि सेनाके मनुष्यों से पाण्डव और कौरवोंका यह मिलाप वर्धमान हुआहै जोकि बहुत वर्षों से विचारा गयाहै, मैं युद्धकेबीच इनभीष्मजीकी रक्षासे अधिक कोई बडाकाम नहीं समझता हूं क्योंकि जो भीष्मजीकी रक्षाहोगी तो यह अकेलेही पाण्डव सोमक और संजय लोगों समेत सबको मारेंगे ।१४। और इन सत्य वक्ता भीष्मजीने कहाहै कि मैं शिखण्डीपर बाण और शस्त्रप्रहार नहीं करूंगा इसका यह हेतु सुनाजाताहै कि यह पूर्व में स्त्रीथा इसकारणयुद्धमें उसके ऊपर शस्त्र छोडना क्षत्रियोंको निषेधहै इस गुप्त कारणसे भीष्मजी अधिक करके रक्षा करने के योग्य हैं । १५ । इस मेरेमत से हमारी सब सेनाके मनुष्य शिखंडी के मारने में सावधानी से उद्युक्त होजावें और इसीप्रकार से पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण इन चारों दिशाओं के सब शस्त्रधारी युद्ध में कुशल राजा लोगोंको भी योग्यहै कि सब मिलकर भीष्मजीकी रक्षाकरें । १७ ।

Duryodhan said to Dushasan, "Order the preparation of chariots for the protection of Bhishm Give at once notice to all the armies that the encounter of the Kauravas and Pandavas, which has for years been under consideration, is at last about to happen. I donot think any duty to be greater than the protection of Bhishm; for, alone he will destroy all the Pandavas, the Somaks and the Srinjayas, if he is well protected Bhishm the truthful has already said that he would not discharge his arrows and other weapons at Shikhandi who is said to have been once a woman and that no kshatriya ought to kill a woman. This is another cause why Bhishm should be especially protected. 15 Let all the warriors of our army try their best to kill Shikhandi and at the same time protect Bhishm from all sides. 17 Let us not allow Shikhandi to kill Bhishm as a lion when

सिंहं महावलम् । मा सिंहं जम्बुके नेव घातयाम. शिखण्डिना ॥ १८ ॥ वाम चक्रं युधामन्यु रुत्तमौजाश्च दक्षिणम् । गोप्तारौ फाल्गुन प्राप्तौ फाल्गुनोपि शिखण्डिन १९ स रक्ष्यमाण. पार्थेन भीष्मेणच विवर्जित । यथा न हन्याद् गांगेय दु.शासन तथा कुरु ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि दुर्योधनदु शासन-
संवादे पञ्चदशोऽध्याय ॥ १५ ॥

सञ्जय उवाच ॥ ततो रजन्यां व्युष्टायां स शब्दः समभवन् महान् । क्रोशतां भूमि पालाना युज्यतां युज्यता मिति ॥ १ ॥ शख दुन्दुभि घोषैश्च सिंहनादैश्च भारत । हयहेषतनादैश्च रथनेमिस्वनैस्तथा ॥ २ ॥ गजानाबृंहताञ्चैव योधाना चापि गर्जताम् । क्ष्वेलितास्फोटितोत्क्रुष्टैस्तुमुल सर्वतोभवत् ॥ ३ ॥ उद तिष्टन्

महावली रक्षा रहित सिंह को जैसे शृगाल मारे इसी प्रकार शृगाल के समान शिखंडी के हाथमे हम लोगोंको योग्य है कि सिंहरूप भीष्मजीको नहीं मरने दें, रथके वामभागका रक्षक युधामन्यु और दक्षिण भागका उत्तमौजा यह दोनों अर्जुनके रक्षकहैं और अर्जुन शिखंडीका रक्षक हुआ है वह अर्जुनसे रक्षित शिखंडी गंगा के पुत्र भीष्मजीको जिस रीति से मारनेको समर्थ नहो हे दुश्शासन वही उपाय अवश्य करना चाहिये २० ॥

अध्याय ॥ १६ ॥

'संजय बोले कि तदनन्तर रात्रि व्यतीत होनेपर जोडो जोडो ऐसे राजा लोगों के कहे हुए महान् शब्द होतेहुए और हे भरतर्षभ शंख ओर दुन्दुभियों के वडे शब्द ओर वीर पुरुषों के सिंहनाद और घोडा के हीसने के शब्द आर रथके पहियों के महान शब्दों से और हाथियों की चिघाडामे वा मल्लों के क्रीडापूर्वक हाथके और मुखके अनेक प्रकारके शब्दों के कारण चारों ओरसे महातुमुल भयकारी शब्द हुए

---

unprotected is killed by jackals Yudhamanyu protects the left wheel and Uttamauja the right wheel of Arjun who protects Shikhandi Let us so manage Dushasan, that Shikhandi, protected as he is by Arjun may not be able to cause the death of Bhishm." 20

CHAPTER XVI

"At the close of the night," said Sanjaya, "there was a great uproar of warriors, calling on their men to prepare chariots, mingled with the roars of the warriors, the neighing of horses, the rumbling of chariot wheels, the noise of elephants and the clapping of wrestlers

महाराज सर्वं शुक्लमशेषत । सूर्य्योदये महत्सैन्यं कुरुपाण्डवसेनयो ॥ ४ ॥
राजेन्द्र तव पुत्राणां पाण्डवानां तथैवच । दुष्प्रधृष्याणि चास्त्राणि सशस्त्रकवचानि
च ॥ ५ ॥ तत प्रकाशे सैन्यानि समदृश्यन्त भारत । त्वदीयानां परेषाञ्च
शस्त्रवन्ति महान्ति च ॥ ६ ॥ तत्र नागा रथाश्चैव जाम्बूनदपरिष्कृताः । विभ्राज
माना दृश्यन्ते मेघा इव सविद्युत ॥ ७ ॥ रथानीकान्यदृश्यन्त नगराणीव भूरिशः ।
अतीव शुशुभे तत्र पिता ते पूर्णचन्द्रवत् ॥ ८ ॥ धनुर्भिर्ऋष्टिभिः खड्गैर्गदाभिः
शक्तितोमरैः । योधा प्रहरणैः शुभ्रैस्तेष्वनीकेष्ववास्थिता ॥ ९ ॥ गजा पदाता
रथिनस्तुरगाश्च विशाम्पते । व्यतिष्ठन् वागुराकारा शतशोथ सहस्रश ॥ १० ॥
ध्वजा बहुविधाकारा व्यदृश्यन्त समुच्छ्रिताः । स्वेषाञ्चैव परेषाञ्च द्युतिमन्त सहस्र

। ३ । हे महाराज सूर्य्य के उदयहोने पर सब ओरसे तैयार कौरव और पांडवोंकी महाभारी सेना आकर खड़ी हुई और तुम्हारे पुत्रोंके और पांडवों के दु प्रधर्षशस्त्र अस्त्र और कवचभी बड़ी तीव्रता से तैयार हुए इसके पीछे जब बड़ा प्रकाश हुआ उस समयतेरे पुत्रोंकी और पांडवों की सेना के वह मनुष्य दिखाई दिये जो बड़े महात्मा और शस्त्रों को धारण कियेहुये थे । ६ । इसके विशेष वहांपर जंबूनद नाम सुवर्ण से अलंकृत हाथी और रथ भी ऐसे दृष्टपडे जैसे कि विजली समेत वादल दिखाई देते हैं, रथपर सवार वहुतसी सेना नगरोंके समान दिखाईदीं उनसब प्रकारकी सेनाओं में आपके पिता भीष्मजी पूर्ण चन्द्रमासे प्रकाशमान दिखाई देतेथे ।८। और संपूर्ण सेनाभरमें युद्धकर्त्ता लोग धनुष यष्टी खड्ग गदा वरछी और तोमर आदि स्वेतशस्त्रों सहित नियतहुए, और हाथी पैदल रथ घोडे इत्यादि हजारों पशु चारोंओरसे जालके समान घेरेहुए दृष्टि पड़ते थे । १० । और अपने दूसरे लोगोंकी हजारों ध्वजा नानाप्रकारके चिह्नोंकी दिखाईदीं, वह सब ध्वजा सुनहरी

3 At sunrise the armies of the Kauravas and the Pandavas stood in battle array The Kauravas and the Pandavas were armed with irresistible weapons, missiles and armour After this, when it was broad day light, the faces of the warriors of both the armies were clearly discernible 6 The elephants and chariots decked with gold trappings looked like clouds and lightning The army of charioteers looked like a city and in the midst of all those armies was seen Bhishm, your father, glorious like the full moon 8 The warriors of the army armed with bows, swords, scimitars, maces, javelins and other well polished weapons, took up their positions in ranks. Elephants, foot soldiers, chariots, and horses by thousands surrounded on all sides, forming a network 10 There were to be seen thousands of ensigns belonging to both parties The Golden banners shining

श ॥ ११ । काचना मणि चित्राग ज्वलन्त इव पावका । अर्चिष्मन्तो व्यराचन्त ध्वजाग्रेहा सहस्रश ॥ १२ ॥ महेन्द्रकेतव शुभ्रा महेन्द्र सदनेष्विव । सन्नद्धास्ते प्रवीराश्च ददृशुर्युद्ध कांक्षिण ॥ १३ ॥ उद्यतैरायुधैश्चित्रैस्तलबद्धा कलापिन । ऋषभाक्षा मनुष्ये द्राश्चमूमुखगता बभु ॥ १४ ॥ शकुनि सौबल शल्य आव त्योथ जयद्रथ विन्दानुविंदौ कैकेया काम्बोजश्च सुदाक्षिण । १५ ॥ श्रुतायुधश्च कालिंगो जयत्सेनश्च पार्थिव । बृहद्बलश्च कौशल्य कृतवर्माच सात्वत ॥ १६ ॥ दशैते पुरुष व्याघ्रा शूरा परिघ बाहव । अक्षौहिणीनां पतयो यज्वानो भूरि दक्षिणा ॥ १७ ॥ एते चान्येच बहवो दुर्योधन वशानुगा । राजानो राजपुत्राश्चनीति मतो महारथा ॥ १८ ॥ सन्नद्ध समदृश्यन्त स्वेष्वनीकेष्ववस्थिता । बद्धकृष्णाजिना सर्वे बालनो युद्ध शालिन १९ ॥ हृष्टा दुर्योधनस्यार्थे ब्रह्मलोकायदीक्षता । समर्था दशवाहिन्य परिगृह्यव्यवस्थिता ॥ २० ॥ एकादशी च चैराष्ट्री कौरवाणा महाचमू । अग्रत सर्व सैन्याना यत्र शातन

अग्निके समान देदीप्यमान मणियोंसे जटित ऐसी दृष्ट पडतीथी जैसे कि महाइन्द्र के भवनों में उसी महेन्द्रकी श्वेत ध्वजा होतीहैं उन युद्धाभिलापी शस्त्रोंसे अलकृत महा बलवानोंने परस्पर में एक एकको देखा । १३ । आयुधोंको उठाये हुये शस्त्रोंसे शोभित नलको बांधने वाले धनुषधारी शुभ्र नेत्रोंसे प्रकाशमान राजा लोग सेनाके मुखपर आकर सुशोभितहुए, सौबलका पुत्र शकुनी, शल्य, अवन्तीका राजा जयद्रथ विन्द, अनुविन्द, केकय देशी राजा काम्बोज सुदक्षिण । १८ । श्रुतायुध, कालिन्द, राजा जयत्सेन यह दशों महा शूरवीर पुरुषोत्तम परिघसमान भुजाधारी बृहदक्षिणा के यज्ञ करनेवाले अक्षौहिणिया के स्वामी, यहसब और अन्य बहुतसे नीतिज्ञ महारथी राजा और राजकुमार जो कि दुर्योधनकी स्वाधीनतामें वर्त्तमानथे सब अपनी २ सेनामें सावधानी से नियत भूषण शस्त्रादिकों से अलकृत काले मृगचर्म्म धारी महाबली युद्ध म कुशल प्रसन्न और दुर्योधनके निमित्त ब्रह्मलोक के अर्थ

like fire with jewels, looked like the white banners on the palaces of Indra The great warriors, armed with weapons and desirous of battle looked at one another 13 Many glorious kings, armed with arms and armour, great archers with bulging eyes, stood at the head of their armies. Shakuni the son of Suval, Shalya, Jayadrath of Avanti Vind, Anuvind, Kings of Kaikaya Kamboj and Sudakshin, (15) Shrutayudh, Kalind and King Jayatsen all these ten warriors, best of men, having arms like clubs, performers of sacrifices with large donations, each a leader of an *akshauhini* of army all these and many other Politicians, kings and princes under the banner of Duryodhan, stood in the midst of their armies, keeping a careful watch, decked with ornaments and weapons, bearing hides of black deer, of immense strength, skilful in battle, cheerful, ready to lay down their lives for the sake of Duryodhan. They kept their

वोऽग्रणीः ॥ २१ ॥ श्वेतोष्णीषं श्वेतहयं श्वेत वर्माण मच्युतम् । अपश्याम महाराज भीष्म चन्द्र मिवो दितम् ॥ २२ ॥ हेमतालध्वजं भीष्मं राजतं स्यन्दने स्थितम् । श्वेता भ्रइव तीक्ष्णांशुं ददृशः कुरुपाण्डवाः ॥ २३ ॥ सृञ्जयाश्च महेष्वासा धृष्टद्युम्नपुरोगमा । जृम्भमाणं महासिंहं दृष्ट्वा क्षुद्रमृगा यथा ॥ २४ ॥ धृष्टद्युम्नमुखाः सर्वे समुद्विविजिरेमुहुः । एकादशैताः श्रीजुष्टावाहिन्यस्तव पार्थिव ॥ २५ ॥ पाण्डवानां तथा सप्त महापुरुषपालिताः । उन्मत्तमकरावर्त्तौ महाग्राहसमाकुलौ ॥ २६ ॥ युगान्ते समवेतौ द्वौ दृश्येते सागराविव । नैव नस्तादृशो राजन् दृष्टपूर्वो नच श्रुत । अनीकानां समत नां कौरवाणां तथाविध ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

दीक्षित और समर्थ दश संख्याकी सेनाको लेकर स्थिर हुए ।२०। और ग्यारहवीं कौरवी महाभारी दुर्योधनी नाम विख्यात सेना जिसके स्वामी भीष्मजी थे वह सेना सब सेनाओं के आगे वर्त्तमानथी हे राजा ऐसी महा तेजस्वी असंख्य सेनामें हमने श्वेत पगड़ी श्वेतछत्र और कवचको धारण किये दुराधर्ष चन्द्रमा के समान उदय रूप कौरवेन्द्र भीष्मजी को देखा बड़े धनुर्धारी बाण विद्यामें कुशल छोटे मृगों के समान वह संजय देश वासी जिनका अधिपति धृष्टद्युम्न था जंभाई लेतेहुए इस महा सिंहरूपी भीष्मको देखकर महाभयभीत हुए । २४ । हेराजा यह तेरी ग्यारह अक्षौहिणी सेना शोभायमानहुई और इसी प्रकार पाण्डवों की सात अक्षौहिणी महा पुरुषोंसे रक्षित होकर तयार हुई और दोनों सेना ऐसी दिखाई देतीथी जैसे कि युगके अन्त वाली प्रलयमें दोनों ओरसे तरंग उठते हुए महा भयानक मदोन्मत्त मकरग्राहआदि जीवों से भरेहुए दो समुद्र व्याकुल होते हैं हे राजा हमने कौरवों की इकट्ठी हुई सेनाका ऐसा युद्ध प्रथम कभी न देखा था न सुना था २७ ॥

station at the head of the ten divisions of the army 20 The eleventh division, known as the great army of Duryodhan, led by Bhishm, was in advance of all other divisions. In that countless army of great glory, I saw Bhishm the leader of the Kauravas, intrepid, shining like the moon with his white turban, white umbrella and armour on The residents of Srinjaya, under the leadership of Dhrishtadyumn, were terrified like a flock of small animals at the sight of Bhishm the great and skilful archer who seemed to them to be like a yawning lion 24 Thy eleven *akshauhinis* looked grand and so were the seven *akshauhinis* of the Pandavas, also protected by great warriors. Both the armies looked like the waves of two angry seas with their sharks and crocodiles, coming to meet each other at the end of the Yug' I had never seen or heard before a battle of two such great armies." 27.

सञ्जय उवाच ॥ यथा स भगवान् व्यासः कृष्णद्वैपायनोऽब्रवीत् । तथैव सहिताः सर्वे समाजग्मुर्महीक्षितः ॥ १ ॥ मघाविषयगः सोमस्तद्दिनं प्रत्यपद्यत । दीप्यमानाश्च सम्पेतुर्दिवि सप्त महाग्रहाः ॥ २ ॥ द्विधाभूत इवादित्य उदये प्रत्यदृश्यत । ज्वलन्त्या शिखया भूयो भानुमानुदितो रविः ॥ ३ ॥ ववाशिरे च दीप्तायां दिशि गोमायुवायसाः । लिप्समानाः शरीराणि मांसशोणितभोजनाः ॥ ४ ॥ अहन्यहनि पार्थानां वृद्धः कुरुपितामहः । भरद्वाजात्मजश्चैव प्रातरुत्थाय संयतौ ॥ ५ ॥ जयोऽस्तु पाण्डुपुत्राणामित्यूचतुररिन्दमौ । युयुधाते तवार्थाय यथा स समयः कृतः ॥ ६ ॥ सर्वधर्मविशेषज्ञः पिता देवव्रतस्तव । समानीय महीपालानिदं वचनमब्रवीत् ॥ ७ ॥ इदं वः क्षत्रियाद्वारं स्वर्गायापावृतं महत् । गच्छध्वं तेन शक्रस्य ब्रह्मणः सहलोकताम् ॥ ८ ॥

अध्याय ॥ १७ ॥

संजय बोले कि जिसप्रकार उन भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यासजीने कहाहै उसी प्रकार सब राजालोग युद्धभूमिमें आपहुंचे ।१।उसदिन मघानक्षत्रमें चन्द्रमा प्राप्तहुआ और आकाश के मध्यमें सातमहाग्रह राहुकेतु आदि महातेजधारी प्राप्तहुए औरसूर्य्य देवता उदयहोनेके समय दोरूपसे दिखाई दिये फिर वह प्रकाशवान् सूर्य्य अग्नि की ज्वाला के समान उदय हुआ और मांस रुधिर भोजन करनेवाले लोथोंके चाहनेवाले काक और शृगालों के चारों दिशाओं में शब्दहोनेलगे ।४। शत्रुओं के विजयकर्त्ता सावधान चित्त सेनाओं के स्वामी कौरवों के पितामह वृद्ध भीष्मजी और भारद्वाज के पुत्र द्रोणाचार्य जीने वारंवार यहकहा कि कुन्तीके पुत्र पांडव लोगोंकी विजय हो और तेरे निमित्त युद्धकरेंगे इसप्रकारसे वचनकहकर नियम किया, तब सब धर्मोंके जाननेवाले देवव्रत नाम आपके पिता सबराजाओंको बुलाकर यह वचन बोले कि हे क्षत्री लोगो तुम्हारे स्वर्ग के निमित्त यह युद्धरूपी बहुत बड़ा द्वारखुलाहै उस द्वारके द्वारा तुम सब इन्द्र और ब्रह्माजी की सन्निकटताको पावो । ८ । यह

CHAPTER XVII

"The kings of the land," said Sanjaya, "mustered for the encounter, just as Vyas had said. The day on which the battle commenced, Soma had approached the region of Pitris. The seven large planets as they appeared in the sky, looked like the blazing fire. The sun looked as if divided into two, and shone like fire. Carnivorous jackals and crows, expecting corpses, began to utter fierce cries from all directions which seemed on fire. Every day Bhishm the grandfather and Kripacharya used to say early in the morning, "Victory to the Pandavas," although they fought according to their promise. Thy father Devabrat, firm on duty, summoned all the kings and said to them, "Ye Kshatryas, the door of heaven is open for you. Go through it to the regions of Indra and Brahma. The rishis of old have showed you this eternal path. Honour yourself by engaging

एषवः शाश्वतः पन्थाः पूर्वैः पूर्वतरैः कृतः । सम्भावयध्वमात्मानमव्यग्रमनसो युधि
॥ ९ ॥ नाभागोथ ययातिश्च मान्धाता नहुषो नृगः । संसिद्धाः परमं स्थानं गताः
कर्मभिरीदृशैः ॥ १० ॥ अधर्मः क्षत्रियस्यैष यद्व्याधिमरणं गृहे । यदाजौ निधनंयाति
सोऽस्य धर्मः सनातनः ॥ ११ ॥ एवमुक्ता महीपाला भीष्मेण भरतर्षभ । निर्ययुः
स्वान्यनीकानि शोभयन्तो रथोत्तमैः ॥ १२ ॥ स तु वैकर्त्तनः कर्णः सामात्य सह
बन्धुभिः । न्यासितः समरे शस्त्रं भीष्मेण भरतर्षभ ॥ १३ ॥ अपेतकर्णाः पुत्रास्ते
राजानश्चैव तावकाः । निर्ययुः सिंहनादेन नादयन्तो दिशो दश ॥ १४ ॥ श्वेतै-
श्छत्रैः पताकाभिर्ध्वजवारणवाजिभिः । तान्यनीकानि शोभन्ते गजैरथपदातिभिः
॥ १५ ॥ भेरीपणवशब्दैश्च दुन्दुभीनां च निःस्वनैः । रथनेमिनिनादैश्च बभूवा
कुलितामही ॥ १६ ॥ काञ्चनाङ्गदकेयूरैः कार्मुकैश्च महारथाः । भ्राजमाना व्यराजन्त

सनातन मार्ग प्राचीन वृद्धोंने तुम सबलोगों के निमित्त नियत कियाहै तुम युद्धमें सा-
वधान होकर अपनी बड़ीसावधानी से लड़ो,राजा नाभाग, ययाति,मान्धाता आदि
बहुतसे महात्मा ऐसेही युद्धरूप कर्मों के द्वारा सिद्धरूपहोकर उत्तम २ स्थानों को
गये । १० । घरमें रोगादि से जो क्षत्रियों का मरना है वह अधर्म है और जो
युद्ध में शस्त्रके द्वारा मरता है यही क्षत्री का सनातन धर्म है हे भरतर्षभ इसीप्रकार
से भीष्मजी केसमझाये हुए राजालोग अपनी २ सेना उत्तम रथोंसे शोभित और
शस्त्रोंसे अलंकृत करके प्रस्थित हुए और वह सूर्यका पुत्र कर्ण अपने मन्त्री और
भाईबन्धुओं समेत युद्धमें भीष्मजीके कारण शस्त्रोंकात्यागकर गया और आप के पुत्र
और सब राजा लोग कर्ण से पृथक्होकर सिंहनाद करतेहुए दशों दिशाओंको
चले वह सब सेना श्वेत छत्र और ध्वजा पताका हाथी घोड़े रथ और पदातियोंसे
शोभायमान थी । १५ । उस समय भेरी पणव दुन्दुभियों के शब्द और रथ के
चक्रों की ध्वनि से पृथ्वी महाव्याकुल थी और महारथीलोग सुवर्ण के बाजूबंद

in war with attentive minds Nabhag, Yayati, Mandhata, Nehush and Nrig obtained success and high regions of bliss by such deeds of prowess. 10. To die of a disease at home is derogatory to a Kshatrya, to die under arms in battle is his eternal duty" Thus addressed by Bhishm, the kings occupied their excellent cars and proceeded at the head of their respective divisions Only Karan the son of Surya went way from the field of battle on account of Bhishm, your sons and other kings separated themselves from Karan and went on roaring like lions All that army looked beautiful with white umbrellas, banners, elephants, horses chariots and foot soldiers 15 The earth was agitated with the sounds of drums labors, cymbals and the

सागनय पर्वता इव ॥ १७ ॥ तालेन महता भीष्म. पञ्चतारेण केतुना । विमला
दित्यसङ्काशस्तस्थौ कुरुचमूपतिः ॥ १८ ॥ ये त्वदीयामहेष्वासा राजानो भरतर्ष
भ । अवर्त्तन्त यथादेश राजन् शान्तनवस्यते ॥ १९ ॥ स तु गोवासन शैव्य
सहित सर्वराजभिः । ययौ मातङ्गराजेन राजार्हेण पताकिना ॥ २० ॥ पद्मवर्ण
स्त्वनीकानां सर्वेषामग्रत.स्थित । अश्वत्थामा ययौ यत्तः सिंहलाङ्गूलकेतना ॥ २१ ॥
श्रुतायुधश्चित्रसेन पुरामित्रो विविंशति । शल्यो भूरिश्रवाश्चैव ।विकर्णश्च महारथः
॥ २२ ॥ एते सप्त महेष्वासा द्रोणपुत्रपुरोगमा । स्यन्दनैर्वरवर्माणो भीष्मस्यासन्
पुरोगमाः ॥ २३ ॥ तेषामपि महोत्सेधा शोभयन्तो रथोत्तमा. । भ्राजमानाव्यरो
चन्त जाम्बूनदमयाध्वजा ॥ २४ ॥ जाम्बूनदमया वेदी कमण्डलुविभूषिता । केतु

केयूर और धनुषों से प्रकाशित होकर ऐसे शोभायमान थे मानों ज्वालामुखी पर्व्वत हीहैं । १७ । और कौरवों की सेना के रक्षक पचताराधारी ताल वृक्षके समान ऊंचे बड़ी ध्वजा समेत निर्मल सूर्यके समान नियत हुए हे राजा जो बड़े धनुर्धारी शस्त्रके वेत्ता राजालोग तेरी सहायता में आयेहैं वह सबभी अपने २ योग्य स्थानों पर भीष्मजी के समीप वर्त्तमानहुए तदनन्तर गोवाशन शैव्य राजाओंके योग्य गजेन्द्र आदि चिह्नधारी ध्वजाओं से शोभित सब राजाओं समेत चला और राजा कमलवर्ण सब सेनाके आगे चला । २० । और महा सावधान शस्त्रधारी अश्वत्थामा सिंह लांगूलवाली ध्वजा से संयुक्त होकर गया और श्रुतायुध, चित्रसेन, पुरुमित्र, विविंशति, शल्य, भूरिश्रवा, और महारथी विकर्ण यह सातों महारथी वाण प्रहारी उत्तम कवच धारी हैं जिनमें मुख्य अश्वत्थामा रथमें सवार होकर भीष्मजी

---

rumbling of chariot wheels The mighty warriors decked with bracelets and armlets of gold and with their bows, shone like hills of fire With his standered, tall as a palm tree, decked with five stars, Bhishm the general of the Kaurav army, was glorious like the sun. Those mighty archers of kingly rank that were on thy side, took up their positions as Chishm ordered them Shaivya the king of Govasans, accompanied by other king, went out on his royal elephants under a banner. 20 Ashwathama of the complexion of lotus went out, ready for every emergency, putting himself at the head of all the divisions, with his standered bearing the device of the lion's tail Shrutayudh, Chitrasen, Purumitra, Vivinshati, Shalya, Bhurishrava and mighty Vikarn, these seven great archers, seated on their chariots and protected by armour, followed Drona's son, in advance of Bhishm The tall standards of these warriors, made of

राचार्यमुख्यस्य द्रोणस्य धनुषा सह ॥ २५ ॥ अनेकशतसाहस्रमनीकमनुकर्षत । महान् दुर्योधनस्यासीन्नागो मणिमयो ध्वजः ॥ २६ ॥ तस्य पौरवकालिङ्ग काम्बोजा सुदक्षिणाः । क्षेमधन्वाच शल्यश्च तस्थुः प्रमुखतोरथा ॥ २७ ॥ स्यन्दनेन महार्हेण केतुना वृषभेणच । प्रकर्षन्निव सेनाग्रं मागधस्य कृपो ययौ । २८ ॥ तदङ्गपतिना गुप्तं कृपेणच मनस्विना । शारदांबुधरप्रख्यं प्राच्यानां सुमहद्बलम् ॥ २९ ॥ अनीकप्रमुखे तिष्ठन् वराहेण महायशाः । शुशुभे केतुमुख्येन राजतेन जयद्रथ ॥ ३० ॥ शत रथसहस्राणां तस्यासन् वशवर्त्तिन । अष्टौ नागसहस्राणि सादिनामयुता-

---

के आगे चला उन सबकी भी जाम्बूनद सुवर्ण की प्रकाशित ध्वजाएं शोभायमान हुई और आचार्य्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य की ध्वजा जांबूनद सुवर्णकी वेदी और कमण्डलुसे शोभित धनुष समेत प्रकाशित हुई । २५ । और बहुतसी लाखों अनीकों समेत दुर्य्योधनकी बडी भारी ध्वजानाग चिह्न युक्त मणियों से जटित भी शोभित हुई और उसके आगे पौरव कालिंग, कांबोज, सुदक्षिण, क्षेमधन्वा, शल्य, यह सब महारथी नियतहुए और मगध के राजा बडे मूल्य के रथ और वृषभ चिह्न वाली ध्वजा समेत सेना मुखको खैंचते हुए से चले और पूर्वी राजाओं की बडी भारी सेना राजा अंग और महा उदार कृपाचार्य्य से रक्षित शरद ऋतु के बादलों की समान शोभायमानहुई ।२९। और बड़ा यशस्वी वाराहके चिह्न वाली श्रेष्ठ ध्वजा का रखनेवाला महा प्रकाशवान सेना के मुखपर शोभित जिस के आज्ञावर्त्ती एक लाख रथीथे वह राजा जयद्रथ आठ हजार हाथी और छः अयुत रथों से युक्त होकर सेना

---

gold, beautifully set up for adorning their excellent cars, looked highly resplendent The standard of Drona, the foremost of preceptors had the device of golden star with a water pot and the figure of a bow 25 The standard of Duryodhan guiding many hundreds and thousands of divisions bore the device of an elephant decked with gems Paurava the ruler of Kalingas, Sudakshin the ruler of Kamvojas, Kshemdhanwa and Salya took their position in Duryodhan's van On a costly car with his banner bearing the device of a bull and guiding the very van, the ruler of Magadh marched against the foe. The large force of the East looking like the fleecy clouds of autumn was protected by the chief of the Angas and Kripa of great energy. Putting himself in the van of his divisions with his beautiful standard of silver bearing the device of the boar, the famous Jayadrath looked very glorious 30 A hundred thousand chariots, eight thousand elephants and sixty thousand horses were

निषद् ॥ ३१ ॥ तत् सिन्धुपतिना राज्ञा पालित ध्वजिनामुखम् । स्यन्दनरथना गाश्वमशोभत महद्दलम् ॥ ३२ ॥ षष्ट्या रथसहस्रैस्तु नागानामयुतेन च । पतिः सर्वकालिङ्गानां ययौ केतुमतासह ॥ ३३ ॥ तस्य पर्वतसङ्काशा व्यरोचन्त महागजाः । यन्त्रतोमरतूणीरैः पताकाभिः सुशोभिताः ॥ ३४ ॥ शुशुभे केतुमुख्येन पावकेन कलिङ्गकः । श्वेतच्छत्रेण निष्केण चामरव्यजनेन च ॥ ३५ ॥ केतुमानपि मातङ्गं विचित्रपरमाङ्कुशम् । आस्थितः समरे राजन् मेघस्थ इव भानुमान् ॥ ३६ ॥ तेजसा दीप्यमानस्तु वारणोत्तममास्थितः । भगदत्तो ययौ राजा यथा वज्रधरस्तथा ॥ ३७ ॥ गजस्कन्धगतावास्तां भगदत्तेन सम्मितौ । विन्दानुविन्दावावन्त्यौ केतुमन्तमनुव्रतौ ॥ ३८ ॥ सरथानीकवान् व्यूहो हस्त्यङ्गो नृपशीर्षवान् । वाजिपक्षः पतत्युग्रः प्रह

को शोभा देता था ।३१। और सब कलिंग देशों का ध्वजाधारी राजा साठ हजार रथ और दशहजार हाथियों समेत चला । ३३ । उस के बडे २ रथ पहाड के समान शोभायमानहुए और वह अपने यन्त्र तोमर तूणीर पताका आदिसेभी महाशोभितथा और राजा कलिंगक अग्निका चिह्न रखनेवाली उत्तम ध्वजा और श्वेत छत्र माला व्यजन चवर समेत शोभित था । ३५ । और हे राजेन्द्र युद्ध में राजा केतुमानभी विचित्र और महा उत्तम अंकुशवान हाथी पर सवार ऐसा विदित हुआ जैसे कि बादल पर चढ़ाहुआ सूर्य्य दृष्ट पडताहै और तेजसे प्रकाशमान उत्तम हाथीपर चढ़ाहुआ राजा भगदत्त भी ऐसा जाता था जैसे ऐरावत पर इन्द्र जाताहै । ३७ । विन्द, अनुविन्द अवन्ती के राजा लोग भी हाथियों पर सवार होकर उस ध्वजाधारी भगदत्त के समीपवर्ती और आज्ञाकारी हुए वह रथकी अनीक रखने वाला भयानक व्यूह जिसके अंग रूप हाथी राजा रूप शिर और घोडे रूपी पक्ष हैं सबओर को

under his command. The huge division of the van, headed by the king of Sindhu containing numberless cars elephants and cavalry looked glorious. The ruler of Kalingas with Ketumat had in his retinue sixty thousand chariots and ten thousand elephants looking like hills and equipped with machines lances quivers and standered, were glorious to behold. The ruler of the Kalingas with his tall standered shining like fire white umbrella golden sun shade and chamars shone brilliantly. Ketumat too, riding an elephant with a good and beautiful hook was stationed in battle like the sun in the midst of clouds. King Bhagdatta of great energy rode his elephant and looked like Indra, Yind and Anuvind the two princes of Avanti equal in rank to Bhagdatta followed Ketumat on their elephants 38 Arranged by Drona Bhishm, Ashwathama, Vahlik and Kripa, the phalanx had elephants

सन् सर्वतोमुखः ॥ ३९ ॥ द्रोणेन विहितो राजन् राज्ञा शान्तनवेनच । तथैवाचार्य पुत्रेण बाह्लीकेन कृपेण च ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

सञ्जय उवाच । ततोमुहूर्त्तात्तुमुल शब्दो हृदयकम्पनः । अश्रूयत महाराजयोधानां प्रयुयुत्सताम् ॥ १ ॥ शङ्खदुन्दुभिघोषैश्च वारणानांच बृंहितैः । नेमिघोषैरथानांच दीर्यतीववसुन्धरा ॥ २ ॥ हयानां हेषमाणानां योधानाञ्चैव गर्जताम् । क्षणेनैव नभोभूमिः शब्देनापूरितन्तदा ॥ ३ ॥ पुत्राणांतव दुर्धर्ष पाण्डवानां तथैवच । समकम्पन्त सैन्यानि परस्परसमागमे ॥ ४ ॥ तत्र नागा रथाश्चैव जाम्बूनदविभूषिताः । भ्राजमाना व्यदृश्यन्त मेघा इव सविद्युतः ॥ ५ ॥ ध्वजा बहुविधाकारास्ता

मुख किये हुए हँसताहुआ उग्ररूप होकर गिरता है उसको द्रोणाचार्य्य,राजा भीष्म अश्वत्थामा, बाह्लीक और कृपाचार्य्य इन पांचोंने रचाहै ॥ ४० ॥

अध्याय ॥ १८ ॥

संजय बोले हे महाराज इसके पीछे युद्धाभिलाषी महा शूरवीरों के कठिन भयंकर शब्द हृदय के कंपाने वाले सुने गये, शंख दुन्दुभियों के शब्द और हाथियों की चिंघाड वा रथों पहियों के महा शब्दों से पृथ्वी कंपायमान सी होगई घोडोंके हिनहिनाट और गर्जना करते हुए महा मल्ल शूर वीरोंके शब्दों से पृथ्वी और आकाश एक क्षणमात्र में शब्दों से भरगये और वह महा दुर्धर्ष आपके पुत्र और पांडवों की सेना के मनुष्य परस्पर में सम्मुख होकर कंपायमानहुए वहां जांबूनद सुवर्ण से अलंकृत हाथी और रथ ऐसे दिखाई दिये जैसे बिजली समेत बादल दिखाई देतेहैं। ५ ।

---

for its body, the Kings for its head and the cavalry for its wings With face towards all sides, the phalanx seemed to smile and ready to spring 40.

CHAPTER XVIII

Sanjaya said, " Soon after, a loud uproar, shaking the heart, made by the warriors who were ready to fight, was heard The earth seemed to rend with the sounds of conchshells, drums, the grunts of elephants and the rumbling of chariot wheels. And soon the earth and sky were filled with the neighing of horses and the shouts of warriors. The troops of thy sons and those of the Pandavas trembled at the time of encounter. The elephants and chariots, decked in gold, looked glorious like clouds decked with lightning. 5.

वकानां नराधिप । काञ्चनाङ्गदिनो रेजुर्ज्वलिता इव पावकाः ॥ ६ ॥ स्वेष्वप्येव परेषां च समदृश्यन्त भारत । महेन्द्रकेतव शुभ्रा महेन्द्रसदनेष्विव ॥ ७ ॥ काञ्चनैः कवचैर्वीरा ज्वलनार्क समप्रभैः । सन्नद्धाः समदृश्यन्त ज्वलनार्कसमप्रभाः ॥ ८ ॥ कुरुयोधवरा राजन् विचित्रायुधकार्मुकाः । उद्यतैरायुधैश्चैवस्तलबद्धाः पताकिनः ॥ ९ ॥ ऋषभाक्षा महेष्वासाश्चमूमुखगताबभुः । पृष्ठगोपास्तु भीष्मस्य पुत्रास्तव नराधिप । दुःशासनो दुर्विषहो दुर्मुखो दुःसहस्तथा ॥ १० ॥ विविंशतिश्चित्रसेनो विकर्णश्च महारथ । सत्यव्रतः पुरुमित्रो जयो भूरिश्रवाः शलः ॥ ११ ॥ रथा विंशतिसाहस्रास्तथैषाम-नुयायिन । अभीषाहाः शूरसेनाः शिबयोथ वसातयः ॥ १२ ॥ शाल्वा मत्स्यास्तथा

और सुवर्ण के बाजूबंद पहरे हुए आपके पुत्रों की ध्वजाओं में नाना प्रकारके रूप-वाली अग्नि की ज्वाला अग्नि के समान प्रकाशमान हुई इसी प्रकार सब अपने और दूसरे लोगों की भी ध्वजा ऐसी दिखाई देती थी जैसी कि महा इन्द्र के भवनों में उस की तेजस्वी ध्वजा वर्त्तमान हो, अग्नि और सूर्य्य के समान प्रकाशमान और सुवर्ण के कवचों से अलंकृत वीर लोग भी सूर्य्य और अग्नि के ही समान प्रकाशित दृष्टपड़े हेराजा कौरवों की सेना में श्रेष्ठ विचित्र आयुध वा धनुष धारी आयुधों समेत उठाये हुए छत्र ताल और पिनाक नाम धनुषों के बांधने वाले सुन्दर नेत्रधारी बाणविद्या में कुशल सेना के मुख पर वर्त्तमान होकर शोभायमान हुए और हे राजा आगे कहे हुए आपके पुत्रभीष्मजी के रक्षक पीठ के पीछे की ओरहुए अर्थात् दुश्शासन, दुर्वि-षह, दुर्मुख, दुःसह, विविंशति, चित्रसेन, महारथी, विकर्ण, ११ । सत्यव्रत, पुरु मित्र, जय, भूरिश्रवा, शल, और इसी प्रकार बीस हजार रथ इन के पीछे चलनेवाले

The banners of different forms belonging to the warriors on thy side, adorned with golden rings, looked resplendent like fire and resembled the banners of Indra on his celestial palaces. The heroic warriors accoutred in golden coats of mail, blazing like the sun were glorious to behold like fire on the sun. The chief Kaurava warriors with their goods bows and weapons upraised and their hands protected with leather guards, leaning banners, and the mighty archers with eyes as large as those of bulls, placed themselves at the heads of their divisions Those of thy sons who protected Bhishm from behind were [10] Dushasan, Durvishah, Durmukh, Dussah, Vivinshati, Chitrasen and valliant Vikarn. 11. With them were Satyavrat, Purumitra, Jaya, Bhurishrava, Shal and twenty thousand charioteers. The Abhishabas, the Shursenas, the Shivis, the Uasatis, the Shwalyas, the Matsyas, the Amvashtas, the Traigartas, the Kekayas, the Sauvirase,

वष्ठास्त्रिगर्ताः केकयास्तथा । सौवीराकैतवाःप्राच्याः प्रतीच्योदीच्यवासिनः ॥ १३ ॥
द्वादशैते जनपदाः सर्वे शूरास्तनुत्यजः । महता रथवंशेन ते ररक्षुः पितामहम् १४॥
अनीकं दशसाहस्रं कुञ्जराणां तरस्विनाम् । मागधो यत्र नृपातस्तद्रथानीकमन्वयात्
॥ १५ ॥ रथानाञ्चक्ररक्षाश्च पादरक्षाश्च दन्तिनाम् । अभवन वाहनीमध्ये शतानामयुतानि
षट् ॥ १६ ॥ पादाताश्चाग्रतोगच्छन् धनुश्चर्मासिपाणयः । अनेकशतसाहस्रानखप्रासयोधिनः ॥ १७ ॥ अक्षौहिण्यो दशैकाच तव पुत्रस्य भारत । अदृश्यंत
महाराज गङ्गेव यमुनान्तरे ॥ १८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्व्वणि भगवद्गीतापर्व्वणि सैन्यवर्णने
अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

हुए, अभीषाह, शूरसेन, शिवय, वसातय, शाल्व, मत्स्य, अंवष्ट, त्रैगर्ष,केकय,सौवीर, कैतव, और पूर्व्वी पश्चिमी और उत्तरीय राजाओं के समूह इन बारह देशोंके नाम से विख्यात सब शूरवीर देहों के त्यागने वाले राजाओं ने बहुत से रथों समेत पितामह की रक्षाकी, और शीघ्रगामी हाथियों की एकलाख अनीक थी उस रथों की अनीक के साथ मगध का राजा चला और सेना के मध्यवर्त्ती रथों के पहियों की और हाथियों के पैरों की रक्षा करने वाले साठलाख धनुष खड्ग ढाल धारणकियेहुए नख और भासनाम आयुधोंसे लडनेवाले लाखों पदाती आगे को चले, हे महाराज धृतराष्ट्र इस प्रकार से आपके पुत्र की ग्यारह अक्षौहिणी सेना ऐसी दृष्टि पडी जैसे कि गंगा में यमुना अन्तर्गत होकर दीखती है । १८ ।

---

the Kitavas and the people of the East, the west and the North; these twelve brave races were resolved to fight reckless of their lives and protected the grandfather with innumerable chariots. With an army consisting of ten thousand swift elephants, the King of Magadh followed them. Those who protected the elephants and the wheels of chariots, were six millions in number. The foot soldiers that marched in advance, armed with bows swords and shield, numbered many millions. They used also their nails and darts in fighting. The eleven akshauhinis of thy son looked like the Yamuna entering the Ganges." 18.



धृतराष्ट्र उवाच ॥ अक्षौहिण्यो दशैकाच व्यूढांदृष्टवा युधिष्ठिरः । कथमल्पेनसैन्येन प्रत्यव्यूहत पाण्डव ॥ १ ॥ यो वेद मानुष व्यूह दैवं गांधर्व मासुरम् । कथं भीष्मं स कौंतेयः प्रत्यव्यूहतसंजय ॥ २ ॥ संजय उवाच ॥ धार्त्तराष्ट्राण्यनीकानि दृष्ट्वाव्यूढानि पांडव. । अभ्य भाषत धर्मात्मा धर्मराजो धनंजयम् ॥ ३ ॥ महर्षेर्वचनात्तात वेदयन्तिवृहस्पते. । संहतान् योधयेदल्पान् कामं विस्तारयेत् बहून् ॥ ४ ॥ सूचीमुख मनीकं स्या दल्पानां बहुभि सह । अस्माकञ्च तथासैन्य मल्पीय सुतरां परैः ॥ ५ ॥ एतद्वचन माज्ञाय महर्षेर्व्यूह पांडव । एतद छ्रुत्वा धर्मराज प्रत्यभाषत पांडवः ॥ ६ ॥ एष व्यूहामिते व्यूहं राजसत्तम दुर्जयम् । अचलं नाम वज्राख्यं विहितंवज्रपाणिना ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ १९ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि पांडव युधिष्ठिर ने व्यूहरची हुई ग्यारह अक्षौहिणी सेना को देखकर किस प्रकार से अपनी थोड़ी सी सेना से व्यूह की रचना की हे संजय जो युधिष्ठिर कि मनुष्य देवता गन्धर्व और असुर सम्बन्धी व्यूहों को जानता है उस कुंती के पुत्र ने किस प्रकार से अपने व्यूह को रचा, संजय ने कहा कि धर्मात्मा धर्मराज पांडव युधिष्ठिर दुर्योधन की व्यूह रचीहुई सेना को देखकर अर्जुन से कहा कि हे तात अर्जुन बृहस्पति महर्षी के वचनों से हम जानते हैं कि थोडी सेना को मिलाकर लडावे और बहुतसीसेना को इच्छापूर्वक फैलावे बहुत से मनुष्यों से लडने में थोडे मनुष्यों की सेना का सूचीमुख होय इसी प्रकार हमारी सेना थोडी है । ५ । और शत्रुओं की अधिक है सो हे अर्जुन महर्षी के इस वचन को जानकर सेना का व्यूह रच यह सुनकर अर्जुन युधिष्ठिरसे कहा कि हे राजेन्द्र मैं इस तेरी सेना के व्यूह की वह रचना करता हूं जो इन्द्रकी नियत करी हुई वज्ररूप

CHAPTER XIX

Dhritrashtra said, "Seeing the eleven akshauhinis arrayed in the order of battle, how did Yudhishthir the Pandav array his smaller army? How did Kunti's son array his army against Bhishm who was acquainted with all kinds of array, human, celestial, Gandharva and Asura?" "Seeing Dhritrashtra's army arrayed in order of battle, the virtuous Pandav, King Yudhishthir the just addressed Arjun, saying, "Vrihaspati tells us that a smaller army when brought against large numbers should be condensed, while a large army may be spread at pleasure. A smaller army arrayed against a large one should be wedge shaped. Our troops compared with that of the enemy is smaller. Bear in mind the words of the great rishi, arrange the army." " I shall arrange the army into the shape of vajra,

यः सवात इवोद्भूत समरे तु सह परैः । सन. पुरो योत्स्यते वै भीम प्रहरतां वर ॥ ८ ॥ तेजांसि रिपुसैन्यानां मृद्नन् पुरुषसत्तम. । अग्रेऽग्रणीर्योत्स्यति नोयुद्धोपायविचक्षण ॥ ९ ॥ य दृष्ट्वा कुरव सर्वे दुर्योधनपुरोगमाः । निवर्त्स्यन्ति संत्रस्ताः सिंहंक्षुद्रमृगा यथा ॥ १० ॥ त सर्वे संश्रयिष्याम प्राकारमकुतोभया. । भीम प्रहर्तां श्रेष्ठ देवराजमिवामरा. ॥ ११ ॥ न हि सोऽस्ति पुमाल्लोके य सक्रुद्ध वृकोदरम् । द्रष्टुमत्युग्रकर्माणं विषहेत नरर्षभम् ॥ १२ । एवमुक्त्वा महाबाहुस्तथा चक्रे धनञ्जय । व्यूह्य तानि बलान्याशु प्रययौ फाल्गुनस्तथा १३॥ सम्प्रयातान् कुरून् दृष्ट्वा पाण्डवानां महाचमू । गङ्गेव पूर्णास्तिमिता स्यन्दमाना व्यदृश्यत ॥ १४ ॥ भीमसेनोऽग्रगाऽस्तेषां धृष्टद्युम्नश्च वीर्यवान् । नकुल सहदेवश्च धृष्टकेतुश्च पार्थिवः ॥ १५ ॥ विराटश्च तत पश्चाद् राजाथाक्षौहिणीवृत । भ्रातृभि सह

अचल नाम है जो वह लडाई में वायु के समान उठा हुआ शत्रुओं से असह्यप्रहार करनेवालों में मुख्य और युद्ध के विचारों में कुशल पुरुषोत्तम भीमसेन सम्पूर्ण सेना के पञ्जों को विदीर्ण करताहुआ हमारे आगे आगे चलेगा और सब कौरव लोग जिन का अग्रवर्त्ती दुर्योधन है वह सब कौरवी सेना भीमसेन को देखकर ऐसे लौटेगी जैसे कि सिंह को देखकर छोटे छोटे मृगों के यूथ भागते हैं हम सब निर्भय होकर उस प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ पर कोटारूप भीमसेन के समीपी होकर ऐसे रक्षालगे जिस प्रकार से देवता इन्द्रकी रक्षा में होते हैं । ११ । ऐसा मनुष्य इस लोक में कोई नहीं है जो इस क्रोधरूप भयकारी भीमसेन को देखसके ऐसा कहकर उस महाबाहु अर्जुन ने इसी प्रकार से किया और बडी शीघ्रता से अर्जुन व्यूहकी रचना करके चला गया तिस पीछे गंगाजी के समान पूर्ण और अचल पांडवों की सेना कौरवों को देख कर कुछ चलायमान हुई इस सेना के अधिपति भीमसेन, पराक्रमी धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और राजा धृष्टकेतु थे।१५। उस के पीछे राजा विराट एक अक्षौहिणी सेना और

designed by Indra," replied Arjun Bhim who is like the bursting tempest unbearable by the enemy will lead our army 8 Bhim who is so skilful in fighting will work in the van and will crush the troops of the enemy Bhim the great destroyer of enemies, at whose sight the followers of Duryodhan will run away in terror, as lower animals do at the sight of a lion, while our men will seek his shelter as if he were a wall or as gods seek the refuge of Indra 11 No living man can cast his eye on Vrikadar of fierce deeds when he is angry." Having said this, Dhananjay of mighty arms did as he had said and quickly arranging his troops in battle array proceeded against the foe The mighty army of the Pandavas, seeing the Kaurava army in motion, moved like the rapid current of the Ganges 14 Bhimsen, Dhrishtadyum of great energy, Nakul, Sahadev and Dhrishtaketu led the armies 15 King Virat,

पुत्रैश्च सोम्यरक्षतपृष्ठत ॥ १६ ॥ चक्राक्षौ तु भीमस्य माद्रीपुत्रौ महाद्युती । द्रौपदे
या ससौभद्रा पृष्ठगोपास्तरस्विन ॥ १७ ॥ धृष्टद्युम्नश्च पाञ्चालस्तेषा गोप्ता महा
रथ । सहित पृतनाशूरैरथमुख्यै प्रभद्रकै ॥ १८ ॥ शिखण्डीतुतत पश्चादर्जुनेना
भिरक्षित । यत्तो भीष्मविनाशाय प्रययौ भरतर्षभ । १९ । पृष्ठतोप्यर्जुनस्यासीद्
युयुधानो महाबल । चक्ररक्षौतु पाञ्चाल्यौ युधामन्यूत्तमौजसौ ॥ २० ॥ कैकेयो
धृष्टकेतुश्च चेकितानश्च वीर्यवान् । भीमसेनो गदा बिभ्रद्वज्रसारमयीं दृढाम् ।
चरन् वेगेन महता समुद्रमपि शोषयेत् ॥ २१ ॥ एते तिष्ठन्ति सामात्या प्रेक्षन्तस्ते
जनाधिप । धृतराष्ट्रस्य दायादा इति बीभत्सुरब्रवीत् ॥ २२ ॥ भीमसेन तदा राजन्
दर्शयस्वमहाबलम् । ब्रुवाणन्तु तथा पार्थं सर्वसैन्यानि भारत ॥ २३ ॥ अपूजयस्तदावा
ग्भिरनुकूलाभिराहवे । राजा तु मध्यमानीके कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिर ॥ २४ ॥ बृहद्भि

भाई बन्धु पुत्रों समेत भीमसेन की रक्षा के निमित्त पीछे की ओर हुए और भीमसेन
के रथकी रक्षा करने को नकुल और सहदेव दोना भाई नियत हुए उनके पीछे द्रौपदी
के पुत्र अभिमन्यु, रक्षा करने को उपस्थित हुए और पाञ्चाल देशी महारथी धृष्टद्युम्न
शूरों की सेनाओं और प्रभद्रक नाम रथों का रक्षकहुआ और हे भरत वंशियो में श्रेष्ठ
धृतराष्ट्र इन सबके पीछे अर्जुन से रक्षित भीष्म जी के मारने में कुशल शिखंडी चला
और अर्जुन के पीछे रक्षा के लिये महाबली युयुधान हुआ और रथके पहियों की
रक्षा के लिये पाञ्चाल देशी युधामन्यु और उत्तमौजा यह दोनों हुए, केकयदेशवासी
धृष्टकेतु और पराक्रमी चेकितानभी साथ हुए और भीमसेन वज्रसारमयी दृढ़ गदाको
धारण किये बड़े वेग से चलता हुआ समुद्र को भी शोषण करनेवाला था, । २१ ।
हे राजा उसके पीछे अर्जुन भीमसेन से यह वचन बोला कि हे भाई भीमसेन तुम्हारे
देखने को मंत्रियों समेत धृतराष्ट्रके पुत्र वर्त्तमान होकर नियतहैं तुम इनको अपना
अतुल पराक्रम दिखाओ ऐसे वचनोंके कहनेवाले अर्जुनको युद्ध भूमि में देखकर सब

surrounded by an akshauhini of army and accompanied by his brothers and sons, brought up the rear The two sons of Madri, of great glory protected Bhim's wheels while the sons of Draupadi and the son of Subhadra of great energy protected from behind. Dhrishtadyumn the mighty charioteer prince of Panchal with the brave warriors and the foremost of charioteers, the Prabhadraks, protected those princes from behind. Behind him was Shikhandi protected by Arjun advanced with concentrated attention for the destruction of Bhishm Behind Arjun was mighty Yuyudhan, and Yudhamanyu and Uttamoujas protected the wheels of his chariot, along with them were the princes of Kaikaya and Dhrishtaketu with Chekitan Bhimsen, weilding his mace of the hardest metal and moving with great speed could dry up the very ocean The sons of Dhritrashtra with their counsellors were also pointed out by

कुञ्जरैर्मत्तैश्चलद्भिरचलैरिव । अक्षौहिण्याथ पाञ्चाल्यो यज्ञसेनो महामना । विराटमन्व
यान् पश्चात् पाण्डवार्थे पराक्रमी ॥ २५ ॥ तेषामादित्यचन्द्राभाः कनकोत्तमभूषणाः ।
नानाचिह्नधरा राजन् रथेष्वासन् महाध्वजाः ॥ २६ ॥ समुत्सार्य ततः पश्चाद्धृष्टद्युम्नो
महारथः । भ्रातृभिः सह पुत्रैश्च सोऽभ्यरक्षद्युधिष्ठिरम् ॥ २७ ॥ त्वदीयानां परेषां च
रथेषु विपुलान् ध्वजान् । अभिभूयार्जुनस्यैको रथे तस्थौ महाकपिः ॥ २८ ॥
पदातास्त्वग्रतो गच्छन्नसिशक्त्यृष्टिपाणयः । अनेकशतसहस्रा भीमसेनस्य रक्षिणः
॥ २९ ॥ वारणा दशसाहस्राः प्रभिन्नकरटामुखाः । शूरा हेममयैर्जालैर्दीप्यमाना इवा-
चलाः ॥ ३० ॥ क्षरन्त इव जीमूता महार्हाः पद्मगन्धिनः । राजानमन्वयुः पश्चाज्जीमूता

सेनाने अपने अनुकूल वचनों से उसको पूजा और कुन्तीका पुत्र राजा युधिष्ठिर सेना के मध्य में चलायमान पर्वतके समान मतवाले हाथियों से संयुक्त था इन सबके पीछे पाञ्चालदेशी बड़ा साहसी पराक्रमी यज्ञसेन राजा एक अक्षौहिणी सेना समेत राजा विराट के पीछे चला । २५ । जिनके रथों पर सूर्य चन्द्रमा के समान प्रकाशित उत्तम सुवर्ण के आभूषणों से अलङ्कृत अनेक प्रकार की चिह्नवाली बड़ी २ ध्वजा वर्तमानथीं तदनन्तर महारथी धृष्टद्युम्नने सेनाको हटाकर भाई बेटों समेत युधिष्ठिर को रक्षामें किया और हे धृतराष्ट्र तेरेपुत्रोंके और अन्य राजाओं के रथोंपर जो बड़ी बड़ी ध्वजाथीं उन सबको तिरस्कार करके अर्जुन की ध्वजा पर श्रीहनुमान्‌जी अपने अनेक भारोंको लिये वर्तमान हुए बरछी यष्टी आदि के रखनेवाले लाखों पदाती रक्षाकरने के लिये भीमसेनके आगे चले । २९ । और गंडस्थलोंसे मद डालनेवाले बली महाबली सुनहरी जालों से शोभित अकंपी बादल से मद बरसानेवाले बहुमूल्य वाले वर्षाकालीन मेघों के रूपकमल कीसी गन्धवाले दशहजारमदोन्मत्तहाथी

Vibhatsu who directed Yudhishthir's attention towards Bhim While *Parth* was saying this, the troops congratulatd him with respect King Yudhishthir, the son of Kunti took up his position in the centre of the army, surrounded by huge and furious elephants resembling moving hills King Drupad of Panchal of great prowess followed Virat with an Akshauhini of troops for the sake of the Pandavas. On the chariots of these king were tall standards bearing various devices, decked with excellent ornaments of gold and shining like the sun and the moon Leading those kings and making room for Yudhishthir, the mighty charioteer, Dhrishtadyumna accompanied by his brothers and sons, protected Yudhisthir from behind. But higher than all the standards on the chariots of thy army as well as on those of the other side was the one of Arjun bearing the device of Hanuman Hundreds of foot soldiers, armed with swords spears, and scimitars, went forward for the protection of Bhimsen.

इव वार्षिका ३१ भीमसेनो गदामिमा प्रकर्षन् परिघापमाम्। प्रचकर्ष महासैन्य दुराधर्षो
महमना ॥ ३२ ॥ तमर्कमिव दुष्प्रेक्ष्य तप तामिव वाहनीम्। न शक्नु सवयोधास्त प्रति
वीक्षितुमन्तिक ॥ ३३ ॥ वज्रो न मेष स व्यूहा निर्भय सवतामुख । चाप विद्युद्ध्वजा
घोरो गुप्तो गाण्डीवधन्वना ॥ ३४ ॥ य प्रतिव्यूह्य तिष्ठंति पाण्डवास्तव वाहिनीम् ।
अजेयो मानुषे लोक पाण्डवै रभिराक्षत ॥ ३५ ॥ स ध्या तिष्ठत्सु सैन्येषु सूर्यस्यादयं
प्रति । प्रावात्सपृषतो वायुनिरभ्रे स्तन यित्नम न् ॥ ३६ ॥ विष्वग्वाताथ विवबुर्नीचै शर्क
रवर्षिण । रजश्चाद्भूयतमहत्तमआच्छादयज्जगन् ॥ ३७ ॥ पपात महती चोल्का प्रामखी
भरतर्षभ । उद्यन्त सूर्यमाहत्य व्यशीर्यत महास्वना ॥ ३८ ॥ अथ सनह्य मानेषु सैन्येषु

राजाके पीछे चले उसकाल महा साहसी दुराधर्ष परिघ के समान भयानक गदाको धारण किये हुये बडे प्रबल भीमसेन ने बडी भारी सेनाको खैंचा तब उस सूर्य के समान दु खसे देखने योग्य सेनाके तपाने वाले भीमसेनके सन्मुख आकर वह सब सेना समीपसे उसके देखने में असमर्थ हुई और वह वज नाम निर्भय सब ओरको मुख रखनेवाला भयकर ब्यूह बडी भारी ध्वजा रूप विजली से सयुक्त गाडीव धनुप धारी अर्जुनसे रक्षित हुआ है राजा तेरी सेनाके सन्मुख पाण्डवलोग जिसब्यूह को रचकर वर्तमानहै वह ब्यूह चारों ओर पाडवासे रक्षित होकर इसलोक म महादुर्धर्ष है अर्थात् उनका विजय करने वाला कोई नहीं दिखाई देताहै । ३५ । सूर्योदयी स या के समय सब सेना के नियतहोनेपर बिना बादल आकाशीय जल कण रखने वाला महा प्रचण्ड वायुका वेग चला ककडा की रचनेवाली पृथ्वी सवधी महावायु चली उसके कारण बडी भारी धल ऐसी उडी कि जिससे सम्पूर्ण संसार आच्छादित होगया उस समय महा शब्दवाले पूर्व को मुखकिये उग्र उल्कापात हुये और

30 Ten thousand elephants, with juice trickling down their cheeks and mouths like rain drops from clouds possessing great courage shining with golden trappings huge as hills costly and emitting the fragrance of lotuses followed the king like moving mountains. 32 The magnanimous and invincible Bhimsen, whirling his fierce mace, resembling large parigh or club seemed to crush the large army Dazzling the eyes of beholders like the sun, and scorching as it were, the hostile army, none of the warriors could look him in the face or approach too near him The intrepid array, with its face towards all sides called vajra having bows for the sign of lightning and very dreadful was protected by the wielder of Gandiv Disposing their troops in this counter array against thy army, the Pandavas waited for battle and protected by the Pandavas the array was invincible by human beings 36 When both the armies stood at dawn waiting for sunrise a wind began to blow with drops of water and roll of thunder without clouds. The wind brought with it sharp

भरतर्षभ ! निष्प्रभोऽभ्युदयौ सूर्य. सघोषं भूश्चचालच ॥ ३९ ॥ व्यशीर्यत सनादाच भूस्तदा भरतर्षभ । निर्घाता बहवो राजन् दिक्षुसर्वासु चाभवन् ॥ ४० ॥ प्रादुरासीद्रजस्तीव्रं न प्राज्ञायत किंचन । ध्वजानांधूयमानानां सहसा मातरिश्वना ॥ ४१ ॥ किंकिणीजालबद्धानां कांचनस्रग् वराम्बरैः । महतां सपताकानामादित्यसम तेजसाम् ॥ ४२ ॥ सर्वं झणझणी भूत मासीत्तालवनेष्विव । एवन्ते पुरुषव्याघ्रा. पाडवा युद्धनन्दिनः ४३॥ व्यवस्थताः प्रतिव्यूह्य तव पुत्रस्य वाहिनीम् । ग्रसन्त इवमज्जानो योधानां भरतर्षभ ॥ ४४ ॥ दृष्ट्वाग्रतो भीमसेनं गदापाणि मवस्थितम् ॥ ४५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्व्वणि पांडवसैन्यव्यूहे
एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

उदय होनेवाले सूर्यको घातकरके फैल गये इसके पीछे फिर सब सेना के तैयारहोने के समय सूर्यका उदय प्रकाश से रहित हुआ और शब्दों के कारण पृथ्वी कंपायमान हुई और अनेक प्रकार से हिलझुलकर जहां तहां फटभी गई और सब दिशाओं में हवाओं के परस्पर टक्करखाने से बडे २ भयानक शब्द हुये ऐसी भारी कठिन धूल उडीकि कुछ भी नहीं जानपडता था फिर अकस्मात वायुसे कम्पायमान सुनहरी माला वा उत्तम वस्त्रों समेत क्षुद्रघंटिकावाले जालों से मंडित प्रकाशमान ध्वजाओं का ऐसा झंझणा शब्द हुआ जैसा कि ताल वृक्षके बन में होता है हे भरतर्षभ इस प्रकार से वह युद्धको शोभा देनेवाले पुरुषोत्तम हाथ में गदा लिये हुए भीमसेनको आगे नियत देखकर आपके पुत्रकी सेना सन्मुखमें व्यूहको रचकर हमारे वीरोंकी मज्जाको निगल जानेवालोंके समान नियतहुई ४५ ॥

---

pebbles and a thick dust arose covering the world with darkness Large meteors shot eastwards against the rising sun and broke into pieces with a loud noise In the meantime the sun rose without splendour, the earth shook with loud reports and cracked in many places The tall standards furnished with bells and decked with ornaments, flowers and rich drapery, shining like the sun, being shaken by the wind, gave a loud jingling noise like that of a forest of palm trees It was thus that the Pandavas who loved battle, arrayed their army against our own and the very appearance of Bhimsen driving away the life out of our warriors with terror." 45.



धृतराष्ट्र उवाच सूर्योदये सञ्जय के नु पूर्वं युयुत्सवो हृष्यमाणा इवासन्। मामका वा भीष्मनेत्राः समीपं पाण्डवा वा भीमनेत्रास्तदानीम् ॥ १ ॥ केषां जघन्यौ सोमसूर्यौ स वायू केषां सेनाश्वापदाश्चाभषन्त । केषां यूनां मुखवर्णाः प्रसन्नाः सर्वं ह्येतद् ब्रूहि मे त्वं यथावत् ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ उभे सेने तुल्यमियोपयाते उभे व्यूहे हृष्टरूपे नरेन्द्र । उभे चित्रवनराजप्रकाशे तथैवोभे नागरथाश्वपूर्णे ॥ ३ ॥ उभे सेने बृहत्यौ भीमरूपे तथैवोभे भारत दुर्विषह्ये। तथैवोभे स्वर्गजयाय सृष्टे तथैवोभे सत्पुरुषोपजुष्टे ॥ ४ ॥ पश्चान्मुखाः कुरवो धार्तराष्ट्राः स्थिताः पार्थाः प्राङ्मुखा योत्स्यमानाः । दैत्येन्द्रसेनेव च कौरवाणां देवेन्द्रसेनेव च पाण्डवानाम् ॥ ५ ॥ चक्रे वायुः पृष्ठतः पाण्डवानां धार्तराष्ट्रान्

अध्याय ॥ २० ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय सूर्योदय होनेपर भीष्मजी के आज्ञावर्ती मेरे पुत्र अथवा भीमसेनसे रक्षित पाण्डव लोगोंमेंसे युद्धाभिलाषी सेनाके सन्मुख लड़नेको कौन ? प्रसन्नमन हुए किसके पीछेतो वायुसमेत सूर्य्य और चन्द्रमा हुये और किनकी सेनाको फाड़नेवाले श्वान आदि पशुओंने भूंसा और कौन से वीरों का प्रसन्न मुख था यह सब यथातथ्य संपूर्णताके साथ मुझ से कहो, संजयबोले हेमहाराज भरतवंशीपरस्पर सन्मुख जाने वाली दोनों व्यूहित सेना प्रसन्नरूप चित्रित वनकी पक्तिके समान प्रकाशित हाथी घोड़े रथों से युक्त महाभयानक और सुमारहित क्रोधाग्नि रूप स्वर्गके विजय केलिये उत्पन्न सत्पुरुषों से सेवित अर्थात सत्पुरुषों के निवासस्थान थीं उससमय धृतराष्ट्र के पुत्र कोरव तो पश्चिमाभिमुख और युद्धाभिलाषी पाण्डवलोग पूर्वाभिमुख नियतहुए इनदोनोंमें कोरवोंकी सेनाता सेनाकेसमान थी और पाण्डवों की सेना देवेन्द्रकी सेनाके समानथी । ५ । उससमय पाण्डवों

CHAPTER XX

Dhritrashtra said,—"When the sun rose, O Sanjaya, of my army led by Bhishma and the Pandava army led by Bhima, which first cheerfully approached the other, desirous of fight? To which side were the Sun, the Moon, and the wind hostile, and against whom did the beasts of prey utter inauspicious sounds? Who were those young men, the complexions of whose faces were cheerful? Tell me all this truly and duly." Sanjaya said,—"Both armies, when arrayed, were equally joyful O king! Both armies, looked equally beautiful, assuming the aspect of blossoming woods, and both armies were full of elephants, cars, and horses. 3. Both armies were vast and terrible in aspect, and so also, O Bharata, none of them could bear the other. Both of them were arrayed for conquering the very heavens, and both of them consisted of excellent persons. The Kauravas belong-

श्वापदा व्याहरन्त । राजेन्द्राणां मदगन्धाश्रत न्नाश सेहिरे तव पुत्रस्य नागा. ॥ ६ ॥ दुर्योधनो हस्तिनं पद्मवर्णं सुवर्णकक्षं जालवन्तं प्रभिन्नम् । समास्थितो मध्यगत कुरूणां सन्तूयमानो वन्दिभिर्मागधैश्च ॥ ७ ॥ चन्द्रप्रभं श्वेतमथातपत्रं सौवर्णं स्रगभ्राजति चोत्त माङ्गे । तं सर्वत शकुनि. पार्वतीयै सार्द्धं गान्धारैर्याति गान्धारराज. ॥ ८ ॥ भीष्मो ग्रत सर्वसैन्यस्य वृद्ध श्वेतच्छत्र श्वेतधनुः सखड्ग । श्वेतोष्णीष पाण्डुरेणध्वजन श्वेतैरश्वैः श्वेतशैलप्रकाशः ॥ ९ ॥ तस्य सैन्ये धार्त्तराष्ट्राश्च सर्वे वाह्लीकानामेकदेश

के तो पीछेकीअनुकूल वायुचली और धृतराष्ट्रकेबेटोंकी सेन कोकुत्तेभोंकतेथे और हे धृतराष्ट्र तुम्हारे पुत्रोंके हाथीगजेन्द्रोंकी उत्कट मदवाली गंधको न सहसके, और कौरवोंकेमध्य में वन्दीमागधों से स्तुतिमान कमलवर्ण रूपं सुनहरी अंबारी और जालवाले मदोन्मत्त हाथीपर दुर्योधन सवारहुआ, जिसके शिरपर चन्द्रमाके समानमका शित छत्र और सुवर्णकी माला प्रकाशमानथी और गन्धारकाराजा शकुनी सब गन्धारियों और पहाड़ियासमेत उसको सबओरसे घेरेहुए जाताथा, और श्वेत छत्र श्वेत धनुष श्वेतखड्ग और श्वेतही पगडी पहरेहुये श्वेतपर्व्वत के समान श्वेतही घोड़ों समेत पांडु वर्ण की ध्वजायुक्त होकर वृद्ध पितामह भीष्मजी सब सेना के

ing to the Dhritarashtra party stood facing the west, while the Parthas stood facing the east, ready for fighting The troops of the Kauravas looked like the army of the chief of the Danavas, while that of the Pandavas looked like the army of celestials 5. The wind began to blow from behind the Pandavas (against the faces of the Dharitarashtras), and the beasts of prey began to yell against the Dhritarashtras. The elephants belonging to thy sons could not bear the strong odour of the temporal juice emitted by the huge elephants (of the Pandavas) 6. And Duryodhana rode on an elephant of the complexion of the lotus, with rent temples, graced with a golden *Kaksha* [on its back], and cased in an armour of steel net-work And he was in the very centre of the Kurus and was adored by eulogists and bards. 7 And a white umbrella of lunar effulgence was held over his head graced with a golden chain Raja Shakuni the ruler of the Gandharas followed with mountaineers of Gandhara placed all around 8 And the venerable Bhishma was at the head of all the troops, with a white umbrella held over his head, armed with a white bow and sword, with a white head gear, with a white banner (on his car), and with white steeds (yoked thereto), and altogether looking like a white mountain 9 In Bhishma's division were all the sons of Dhritrashatra, and also Cala who was a country

शलश्च । ये चाम्बष्ठाः क्षत्रिया येच सिन्धवस्तथा सौवीराः पञ्चनदाश्च शूराः ॥१०॥ शोणै-
र्हयैरुक्मरथोमहात्मा द्रोणो धनुष्पाणिरदीनसत्वः । आस्ते गुरुः प्रायशः सर्वराज्ञां प
श्चाच्च भूमीन्द्र इवाभियाति ॥ ११ ॥ वार्द्धक्षात्रिः सर्व सैन्यस्य मध्ये भूरिश्रवाः पुरुमित्रो
जयश्च । शाल्वा मत्स्याः केकयाश्चेति सर्वे गजानीकैर्भ्रातरो योत्स्यमानाः ॥ १२ ॥
शारद्वतश्चोत्तरधूर्महात्मा महेष्वासो गौतमश्चित्रयोधी । शकैः किरातैर्यवनैः पल्हवैश्च
सार्धं चमूमुत्तरतोभियाति ॥ १३ ॥ •महारथैर्वृष्णिभोजैः सुगुप्तं सुराष्ट्रकैर्विदितैरात्तश-
स्त्रैः । बृहद्बलं कृतवर्माभिगुप्तं बलं त्वदीयं दक्षिणेनाभि याति ॥ १४ ॥ संशप्तकानाम
युतं रथानां मृत्युर्जयो वार्जुनस्येति सृष्टाः । येनार्जुनस्तेन राजन् कृतास्त्राः प्रयातास्ते

आगे जाते थे उनकी सेनामें आप के सगेरे बाह्लीकों का एक देश, शल, अम्बष्ट, सिन्धु के राजा लोग, सौ वीर और पञ्चनदके सब शूरवीर थे ।१०। और महाबली धनुष हाथ में लिये महात्मा गुरु द्रोणाचार्य्यजी लाल घोड़े के लालही रथपर सवार पर्वतकेसमान अचलकौरव पांडव और अन्य बहुधा राजाओंके गुरु पीछेरजातेथे और सब सेनाके मध्यमें वार्धक्षत्री, भूरिश्रवा, पुरुमित्र, जय, शाल्व, मत्स्य, और केकयदेश वासी सबभाई और युद्धाभिलाषी सेना हाथियों समेत चली, तब महात्मा धनुधारी चित्रयोधी गौतम कृपाचार्यजी शकजाति, किरात, यवन अर्थात यूनानी राजालोगों समेत सेनाके उत्तर ओरको रक्षाकरते हुए जातेथे और संसप्तकनाम दशहजार रथी जो कि मृत्युवा विजय करने के लिये उत्पन्न किये थे वह त्रिगर्त देशी अस्त्रज्ञ शूरवीर लोग जिधर की ओर अर्जुन था उस दिशा की ओर जाते हुए, हे भरतवंशी

man of the Valhikas, and also all those Kshatriyas called Amvastas, and those called Sindhus, and those also that are called Sauviras, and the heroic dwellers of the country of the five rivers 10 And on a golden car unto which were yoked red steeds, the high souled Drona, bow in hand and with never failing heart, the preceptor of almost all the kings, remained behind all the troops, protecting them like Indra. 11. And in the midst of all the forces were Vardhakshatri, and Bhurisravas, and Purumitra, and Jaya and the Shalwas, the Matsyas, and all the Kekaya brothers fighting with their elephant divisions. 12 And Cradawt's son, that fighter in the van, that high souled and mighty bowman, called also Gautama, conversant with all modes of warfare, accompanied by the Cakas, the Kiratas, the Yavanas, and the Palhavas, took up his position at the northern point of the army. 13 That large force which was well protected by mighty car-warriors of the Vrishni and the Bhoja races, as also by the warriors of Surashtra well armed and well-acquainted with the use of weapons, and which was led by Kritvarman, proceeded towards the south of thy army. 14 Ten thousand cars of the Samcaptakas, who were created

त्रिगर्त्ताश्च शूराः ॥ १५ ॥ स श्रं शतसहस्त्रन्तु नागानांतवभारत । नागे नागे रथशतं शत मश्वा रथे रथे ॥ १६ ॥ अश्वेऽश्वे दशधानुष्का धानुष्के दश चर्म्मिणः । एवं व्यूढान्यनीकानि भीष्मेण तव भारत ॥१७॥ संव्यूह्य मानुषं व्यूहं दैवं गांधर्व्व मासुरम् । दिवसे दिवसे प्राप्ते भीष्मः शांतनवो ग्रणीः ॥ १८ ॥ महारथौघ विपुलः समुद्र इव घोषवान् । भीष्मेण धार्त्तराष्ट्राणां व्यूहः प्रत्यंमुखोयुधि ॥१९॥ अनन्तरूपा ध्वजिनीनरेन्द्र भीमात्व दीया ननु पाण्डवानाम् । तांचमन्ये बृहतीं दुष्प्रधर्षां यस्यानेता केशवश्चार्जुनश्च २०॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने विंशोऽध्याय ॥ २० ॥

आपके हाथीभी एकलाखसे ऊपरथे और हरएक हाथी के साथ सौ रथ और प्रत्येक रथके साथ सौ २ घोडे और हर घोडे के पीछे दश दश धनुषधारी और हर एक धनुष धारी के साथ दश दश मनुष्य थे, हे भरतवंशी इस प्रकार से भीष्म जीने आपकी सेना को तैयार किया, शन्तनु के बेटे प्रभु भीष्मजी ने प्रतिदिनकी विद्यमानता में मानुष, देव, गान्धर्व, आसुर नाम चारों प्रकार के व्यूहोंको अच्छी रीति से रचकर युद्धके बीच धृतराष्ट्र के पुत्रोंका व्यूह बड़े २ रथों के समूहोंमे समुद्र के समान विस्तृत और शब्दायमान पूर्व की ओर को रचा, हे महाराज आपकी सेना बहुत रूप और ध्वजा संयुक्त होनेसे ऐसी महा भयानकहै जिसको मैं केशवजी और अर्जुनकी सहायता वाली पांडवों की सेना से भी बडी कठिनतासे धर्षण के योग्य समझताहूं ॥ २० ॥

for the death or fame of Arjun, went in the direction where Arjun was. Your elephants amounted to a hundred thousand. Each elephant was followed by a hundred chariots, each chariot by a hundred horses, each horse by ten archers and each archer by ten men. Thus O Bharat, Bhishm arrayed your army. Lord Bhishm the son of Shantanu, did, each day of his career, arrange the army in human celestial, gandharv or Asur way. Your army consisting of many warriors, extended and roaring like the ocean, was arrayed by Bhishm towards the East, Your army containing numberless warriors and banners was too formidable to be easily intimidated by the Pandava army assisted by Arjun and Keshav." 20.



सञ्जय उवाच । बृहतीं धार्त्तराष्ट्रस्य सेनां दृष्ट्वा समुद्यताम् । विषादमगमद्राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिर ॥ १ ॥ व्यूहं भीष्मेण चाभेद्यं कल्पितं प्रेक्ष्य पाण्डव । अभेद्यमिव सम्प्रेक्ष्य विवर्णोऽर्जुनमब्रवीत् ॥ २ ॥ धनञ्जय कथं शक्यमस्माभिर्योद्धुमाहवे । धार्त्तराष्ट्रैर्महाबाहो येषां योद्धा पितामह ॥ ३ ॥ अक्षोभ्योऽयमभेद्यश्च भीष्मेणामित्रकर्षिणा । कल्पितः शास्त्रदृष्टेन विधिना भूरिवर्चसा ॥ ४ ॥ ते वयं संशयं प्राप्ताः ससैन्याः शत्रुकर्षण । कथमस्मान् महाव्यूहादुत्थानं नो भविष्यति ॥ ५ ॥ अथ जिनोऽब्रवीत्पार्थं युधिष्ठिरममित्रहा । विषण्णमिव सम्प्रेक्ष्य तव राजन्ननीकिनीम् ॥ ६ ॥ प्रज्ञयाभ्यधिकान् शूरान् गुणयुक्तान् बहूनपि ॥ जयन्त्यल्पतरा येन तन्निबोध विशाम्पते ॥ ७ तत्र ते कारणं राजन् प्रवक्ष्याम्यनसूयवे । नारदस्तमृषिर्वेद भीष्मद्रोणौ च पाण्डव ॥ ८ ॥

अध्याय ॥ २१ ॥

संजय बोले कि कुंती के बड़े बेटे राजा युधिष्ठिर ने दुर्योधन की बड़ी सेना को अत्यन्त उद्यत जानकर बड़ी व्याकुलताको पाया, और भीष्मजी के रचे हुये अभेद्य व्यूह को यह जानकर कि यह अभेद्य है महाभयभीत रूपान्तर दशा में होकर अर्जुन से कहा कि हे महाबाहु अर्जुन युद्धमें धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ हम लोग युद्ध करने को कैसे समर्थ होसक्ते हैं जिनकी ओर से युद्ध करने वाले भीष्म पितामह है इन महातेजस्वी शत्रुहन्ता भीष्मजीने शास्त्रोक्त देखीहुई विधिके अनुसार बड़ी सावधानी से इस अभेद्य व्यूहको रचाहै हे शत्रुहन्ता अर्जुन हम सब सेना समेत व्याकुल होते हैं इस महाभारी व्यूह से हमारी कैसे विजय होगी हे राजा धृतराष्ट्र आपकी सेना के देखनेसे व्याकुल हुए युधिष्ठिर की इस बात को सुनकर अर्जुन बोला कि हे राजा युधिष्ठिरथोड़े से भी बुद्धिमान् शूरवीर गुणीपुरुष बहुतभारी सेना को विजयकरते हैं ऐसा निश्चय जानो हे राजा वहा एक एक के छिद्रों को देखता है । ७ । इसका भेद मैं तुमसे कहूंगा इस कारणको नारद ऋषि, भीष्मपितामह,

CHAPTER XXI

Sanjaya continued " *Knowing Duryodhan's army ready for battle, King Yudhishthir the eldest son of Kunti, was much distressed*, and being terrified at the sight of the impregnable phalanx arranged by Bhishm, he said to Arjun, ' How shall we cope in battle with the sons of Dhritrashtra who have Bhishm the grand father for their warrior? Glorious Bhishm the destroyer of enemies has carefully organised according to Shastras this impregnable phalanx. I and my army are much perplexed How shall we be able to conquer this formidable army ?' " Having heard the words of Yudhisthir who was distressed at the sight of your army, Arjun replied as follows —"A small company of wise and skilful warriors can surely win a large army, Yudhisthir Each warrior sees the weakness of his enemy 7 I shall tell you all about it which none

एवमेवार्थं माश्रित्य युद्धे देवासुरेऽब्रवीत् । पितामहः किल पुरा महेंद्रादीन् दि-
वौकसः ॥ ९ ॥ न तथा बलवीर्याभ्यां जयन्ति विजिगीषवः । यथा सत्यानृशं-
स्याभ्यां धर्मेणैवोद्यमेनच ॥ १० ॥ ज्ञात्वा धर्ममधर्मंच लोभंचोत्तम मास्थिताः ।
युध्यध्वमनहङ्कारा यतो धर्मस्ततो जय ॥ ११ ॥ एवं राजन् विजानीहि ध्रुवो
ऽस्माकं रणे जयः । यथा तु नारद प्राह यतः कृष्णस्ततो जयः ॥ १२ ॥ गुणभूतो
जय कृष्णेपृष्ठतो ऽभ्येति माधवम् । तद्यथा विजयश्चास्य सन्नतिश्चापरो गुणः॥१३॥
अनन्ततेजा गोविन्द शत्रुपूगेषु निर्व्यथः । पुरुष सनातनमयो यतः कृष्णस्ततो
जयः ॥ १४ ॥ पुरा ह्येष हरिर्भूत्वा विकुण्ठोऽकुण्ठ सायकः । सुरासुरानवस्फू-
र्जन्नब्रवीत् के जयन्विति ॥ १५ ॥ कथं कृष्ण जयेमेति यैरुक्त तत्र तैर्जितम् । तत्

द्रोणाचार्य्य जी यह तीनों जानते हैं हे निष्पाप युधिष्ठिर पूर्व समय में देवता और असुरोंके युद्ध में ब्रह्माजीने इस प्रयोजन को मानकर महाइन्द्रआदि देवताओं से कहा है कि विजय के चाहने वाले पराक्रमी पुरुष बल पराक्रम से ऐसी विजय नहीं करसक्ते जैसी कि सत्यता दया और एक धर्म से विजय करते हैं। १० । धर्म अधर्म और लोभ को जानकर उत्तम धर्मयुक्त अहंकार रहित होकर युद्धको करो जहां धर्म है वहांही विजय है हे राजा जैसा कि नारदजीने कहाहै उसीप्रकार चित्त में सदैव जानो कि हमारीही विजयहोगी अर्थात् नारदजीने कहाहै कि जिधर श्रीकृष्णजी हैं उधरही विजय होगी क्योंकि विजय श्रीकृष्णजीके पास दास रूपहोकर पीठकी ओरसे सम्मुख होकर स्तुति करती है जिसरीति से इनकी विजय है उसी प्रकार नम्रता आदि उनके दूसरे गुण हैं श्रीगोविन्दजी अत्यन्त तेजस्वी शत्रुओंके समूहों से अथर्प संपूर्ण ब्रह्माण्ड में व्यापक सनातन सच्चिदानन्द रूप हैं इससे जिधर श्रीकृष्ण हैं उधरही विजय निश्चय है पूर्व समय में यह माया से पृथक् अछेद्यआयुध हरिरूप प्रकट होकर देवता और असुरोंको अपनी वज्रसमान वाणीसे चेताकर यह वचन बोला

but Narad, Bhishm the grandfather and Dronacharya knows In former times when the war between the gods and asurs was raging, Brahma who knew the secret, said to Indra and other gods that warriors desirous of conquest could not achieve victory so easily by mere physical force as by truth, mercy and union 10 Knowing the consequences of *dharm*, *adharm* and avarice, and being free from vanity, let us fight, for where there is dhrm, there is victory You must remember, king the words of Narad who said that victory would fall on the side where Krishna is Victory follows Krishna wherever he goes Victory and humility are the two attributes of Krishn He possesses infinite energy. He cannot be intimidated by any number of foes He is eternal and victory follows his wake. Indestructible and invulnerable by weapons, Hari of old said to gods and Asurs "Who amongst you will be victorious?" 15.

प्रसादाद्धि त्रैलोक्यं प्राप्तं शक्रादिभिः सुरैः ॥ १६ ॥ तस्य ते न व्यथां कांचि दिह पश्यामि भारत । यस्य ते जय माशास्ते विश्वभुक् त्रिदिवेश्वरः ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि युधिष्ठिरार्जुन संवादे एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

सञ्जय उवाच ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा स्वां सेनां समनो दयत् । प्रति व्यूहन्ननीकानि भीष्मस्यभरतर्षभ ॥ १ ॥ यथोद्दिष्टान्यनीकानि प्रत्यव्यूहन्त पाण्डवाः । स्वर्गं परम मिच्छन्तः सुयुद्धेन कुरूद्वहाः ॥२॥ मध्ये शिखण्डिनोऽनीकं रक्षितं सव्यसाचिना । धृष्टद्युम्नश्चरन्नग्रे भीमसेनेन पालितः ॥ ३ ॥ अनीकं दक्षिण राजन् युयुधानेनपालितम् । श्रीमतासात्वताग्रयेण शक्रेणेव धनुष्मता ॥ ४ ॥ महेन्द्रयानप्रतिमं रथन्तु सोपस्करं

था कि कौन विजय करता है । १५ । उसके उत्तरमें जिन्हों ने यह कहा कि श्रीकृष्ण,जी की सहायता से विजय करते हैं वहां उन्ही लोगों ने विजयकी और इन्द्रादि देवताओंने उसकी कृपा से तीनालोकों को पाया, हे भरतवंशी वैसी पीड़ामैं तुम्हमें नहीं देखताहूं जिसकी विजय को विश्वका भोक्ता और स्वर्ग का ईश्वर चाहता है । १७ ।

अध्याय ॥ २२ ॥

संजयबोले कि हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ इसके पीछे भीष्मजीके सम्मुख राजा युधिष्ठिर ने अपनी व्यूहितसेना को उपस्थित किया, फिर धर्मयुद्ध से उत्तम स्वर्गके चाहनेवाले कौरवोंके पोषणकरनेवाले पाण्डवोंने गुरुकी आज्ञाके अनुसार सेना को यथायोग्य स्थान पर नियत किया मध्यमें अर्जुन से रक्षित शिखंडीकी सेनाहुई और आगे चलताहुआ धृष्टद्युम्न भीमसेन से रक्षितहुआ और इन्द्रके समान धनुषधारी श्रीमान् युयुधान से दक्षिण की सेना रक्षित हुई और राजायुधिष्ठिर हाथियोंकी

and they conquered who said that the party which had *Hari* for its leader was sure to win By his grace Indra and other gods won victory over the three worlds I see no cause for fear when the Lord of the world as well as of Swarg, himself desires your victory." 17.

CHAPTER XXII

Sanjaya continued" When king Yudhishir had arrayed his armies against those of Bhishm, the latter said, " The Pandavas have arrayed their forces against us in the manner laid down in the shastras Fight fairly, ye sinless ones for the sake of entering heaven!" In the centre of the Pandava army was Shikhandi with his army, protected by Arjun, Dhrishtadyuma, protected by Bhim was in the van; the southern part was led by Yuyudhan, the mighty archer of the Satwata race, resembling Indra himself 4. Yudhishthir was seated on a chariot worthy of carrying Indra himself, adorned with

हाटकरत्न चित्रम् । युधिष्ठिर काञ्चन भाण्डयोक्त्र समास्थितो नागपुरस्य मध्ये ॥ ५ ॥
समुच्छ्रित दन्तशलाकमस्य सुपाण्डुर छत्र मतीव भाति । प्रदक्षिण चैनमुपाचरन्त मह
र्षय सस्तुति भिर्महेन्द्रम् ॥ ६ ॥ पुरोहिता शत्रुवध वदन्तो ब्रह्मर्षि सिद्धा, श्रुतवन्त
एनम् । जप्यैश्च मन्त्रैश्च महौपधीभि समन्तत स्वस्त्य यन ब्रुवन्त ॥ ७ ॥ तत, सव-
स्त्राणि तथैव गाश्च फलानि पुष्पाणि तथैव निष्क न् करूत्तमो ब्राह्मणसान्महात्मा कु-
र्वन् ययौ शक्र इवामरेश ॥ ८ ॥ सहस्र सूर्य शत किंकिणीक पराद्धर्यजाम्बूनदहेम
चित्र । रथोर्जुनस्याग्निरिवार्चिमाली विभ्र जते श्वेत हय सुचक्र ॥ ९ ॥ तमास्थि
त केशव सगृहीत कपिध्वजो गाण्डववाणपाणः । धनुर्धरो यस्य सम पृथिव्या न
विद्यते नोभविता कदाचित् ॥ १० ॥ उद्वर्त्त यिष्यस्तव पुत्रसेना मतीवरौद्र स बिभर्त्ति

सेनामें महेन्द्रकी सवारीके स्वरूप सुन्दर सामग्री वाले सुवर्ण और रत्नोंसे जटित
सुनहरी कलशयुक्त रथपर नियतहुआ ।५। इसकाश्वेतछत्र हाथीदांतकी यष्टीपरशोभित
अत्यन्त ऊंचा देदीप्यमान था महर्षीलोग स्तुति करते हुये इसमहाराज के दक्षिण
चलनेवाले हुये पुरोहित लोग और शास्त्रज्ञ ब्रह्मऋषि अथवा सिद्ध पुरुष मन्त्र जप
और बड़ीबड़ी औषधियों समेत इसका स्वस्त्ययन पढतेहुये शत्रुके मरण को उच्चा-
रण करतेहुये तदनन्तर वह कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर सुन्दर वस्त्र, गौ, फल, फूल
और सुवर्ण मुद्राको ब्राह्मणोंके अर्थ दान और भेटोंको करताहुआ देवेश्वर इन्द्रके
समान चला, और अर्जुन का रथ मणियों के जटित होने से हजारों सूर्य्य के समान
प्रकाशमान और सैकड़ों घंटालियोंसे चिह्नित उत्तम जांबूनद नाम सुवर्णसे मढा
अग्निकेसमान किरणोंसे युक्त श्वेत घोड़े और सुन्दर पहियों से शोभित है वह गांडीव
धनुषधारी हाथ म वाण, रखनेवाला कपिध्वज जिसकी समान धनुषधारी पृथ्वीमें न
कोई है न होगा वह अर्जुन केशवजी को पकड़ेहुये रथपर विराजमान है । १० ।
वह तेरेपुत्र की सेनाको मर्दन करताहुआ बड़े भयकारी रूपको धारण करता है,

an excellent standard, decorated with gold and gems, with gold traces, in the midst of his army of elephants 5 His pure white umbrella with white ivory handle, raised over his head, looked very beautiful Many a great rishi walked round the king, chanting hymns in his praise Many priests, Brahmarishis and Sidhas, singing praises and benedictions, prayed for the destruction of his enemies by means of aphorisms, drugs and ceremonies The magnanimous prince of Kurus gave cows, fruits, flowers, gold pieces and clothes to Brahmans and proceeded like Indra the chief of gods Arjun's chariot, furnished with many bells, decked with burnished gold, having good wheels, shining like fire and drawn by white horses looked brilliant like a thousand suns The chariot whose reins were held by Keshav, was furnished with the standard bearing the figure of Hanuman and was occupied by Arjun the wielder of Gandiv and matchless archer He who assumes the most awful form for the destruction of thy

रूपम्। अनायुधो य सुभुजो भुजाभ्यां नगाइव नागान् युधि भस्म कुर्यात् ॥ ११ ॥ स
भीमसेन साहतो यमाभ्या वृकोदरो वीर रथस्य गोप्ता । त तत्र सिंहर्षभमत्तखेल
लोके महेन्द्रप्रतिमान कल्पम् ॥ १२ ॥ समीक्ष्य सेनाग्रगत दुरासदं संविव्यथु. पंक
गता यथा द्विपा. । वृकोदरं वारणराजदर्प योधास्त्वदीया भयविग्नसत्वा ॥१३॥ अनीक
मध्ये तिष्ठन्त राजपुत्र दुरासदम् । अब्रवीद्भरतश्रेष्ठं गुडाकेशं जनार्दनः ॥ १४ ।
वासुदेव उवाच ॥ य एषरोषात् प्रतपन् बलस्थो योन सेना सिंह इवेक्षतेच । स एष
भीष्म. कुरुवंश केतुर्येनाहृतास्त्रिशत वाजि मेधा ॥ १५ ॥ एतान्यनीकानि महानुभाव
गूहन्तिमेघा इवरश्मिमन्तम्। एतानि हत्वा पुरुषप्रवीर काङ्क्षस्वयुद्ध भरतर्षभेण ॥ १६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि युधिष्ठिरार्जुनसंवादे
द्वाविंशोऽध्याय ॥ २२ ॥

और जो कि अशस्त्र भी सुन्दर भुजदण्ड युक्त युद्धके मध्य मे अपनी महाभुजाओं सेही मनुष्य और हाथियों को मर्दन करता है वह वृकोदर भीमसेन अपने छोटेभाई नकुल सहदेव समेत शूरवीर अर्जुन के रथका रक्षक है, ऐसे महासिंहरूप चाल चलनेवाले लोकमें महाइन्द्र के समान दुराधर्ष सेना के आगे वर्तमान महाबली भीमसेन को देखकर तुम्हारी सेनाके मनुष्य ऐसे कम्पायमान हुये जैसे कि कीचमें फँसे हुये हाथीभयभीत होते हैं उस गजेन्द्र के समान गर्व से भरेहुये भीमसेन को देखकर आप के शूरवीर लोग चित्तसे भयभीत होकर मनसे हारगये, और हे राजा तब सेना में वर्तमान दुराधर्ष अजेय राजकुमार अर्जुन से जनार्दन श्रीकृष्णजी यह वचन बोले, कि हे अर्जुन जिस भीष्म ने अपने क्रोध से सेना को संतप्त किये हुये बलमें नियत सिंहरूपहोकर हमसे बचायाहै वह भीष्म कौरव कुलकी ध्वजाहै जिसने कि तीनसौ अश्वमेध यज्ञ किये, यह सब सेना इस को ऐसे घेरे हुएहैं जैसे कि सहस्र किरण वाले सूर्यको बादल घेर लेते हैं हे पुरुषोंमें बड़े वीर अर्जुन तुम इन सेनाओं को मारकर भरतवंशियों में श्रेष्ठ भीष्मजीके साथ युद्ध करने की इच्छा करो। १६।

sons and thy armies and brings to dust horses and elephants without weapons, that strong armed Bhimsen, known as Vrikodar, accompanied by the twins, became the protector of the Pandav charioteers. Like a sportive lion or like Indra himself in bodily form, the sight of the invincible Vrikodar like a leader of a herd of elephants, stationed *in the van of the warriors, frightened and weakened thy warriors* like elephants sunk in mire 13 To the invincible Gudakesh (Arjun) standing in the midst of his troops, Janardan said, " Yonder is the banner of Bhishm who has performed three hundred sacrifices, who burns us with his wrath and who stands in the midst of his troops ready to attack us like a lion His soldiers surround him on all sides like the clouds round the moon Slay those armies and seek battle with that bull of the Bharat race." 16

सञ्जय उवाच ॥ धार्त्तराष्ट्र बल दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् । अर्जुनस्य हितार्थाय कृष्णो वचन मब्रवी त् ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शुचिर्भूत्वा महाबाहो संग्रामाभिमुखे स्थित । पराजयाय शत्रूणां दुर्गास्तोत्रमुदीरय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्तोऽर्जुनः सङ्ख्ये वासुदेवेन धीमता । अवतीर्य रथात् पार्थः स्तोत्रमाह कृताञ्जलिः ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच । नमस्ते सिद्धसेनानि आर्ये मन्दरवासिनि । कुमारि कालि कापालि कपिले कृष्ण पिङ्गले ॥४ भद्रकालि नमस्तुभ्यं महाकालि नमोऽस्तुते । चण्डि चण्डे नमस्तुभ्यं तारिणि वरवर्णिनि ५॥कात्यायनि महाभागे करालि विजयेजये । शिखिपिच्छध्वजधरे नानाभरणभूषिते ॥ ६ ॥ अट्टशूलप्रहरणे खड्गखेटकधारिणि । गोपेन्द्रस्यानुजे ज्येष्ठे नन्दगोपकुलोद्भवे ॥ ७ ॥ महिषासृक्प्रियेनित्यं कौशिकि पीतवासिनि । अट्टहासे कोकमुखे

अध्याय ॥ २३ ॥

संजय बोले कि हेराजा युद्धके निमित्त सम्मुख वर्त्तमान दुर्योधनकी सेना को देखकर श्रीकृष्णजी अर्जुन के अभीष्ट सिद्ध करनेकेलिये यह वचन बोले कि हे महाबाहु अर्जुन तुम युद्ध के सम्मुख वर्त्तमान होकर बड़ी पवित्रतासे शत्रुओंकी पराजय के लिये श्रीदुर्गाजीके स्तोत्रका पाठकरो, संजय बोले कि इस प्रकार वासुदेवजीकी आज्ञाको सुनकर पाण्डव अर्जुनने रथसे उतरकर हाथ जोड़कर युद्ध भूमिमें आगेलिखे हुए दुर्गाजीके स्तोत्रको पढ़ा, । ३ । हे सिद्ध सेनावाली, आर्ये, मन्दार वासिनि, कुमारि, कालि, कापालि, कपिले, कृष्णपिंगले तुझको नमस्कारहै। हे भद्रकालि, महाकालि, चंडि, तारिणि, वरवर्णिनि तुझको नमस्कारहै। कात्यायनि, महाभागे, करालि, विजये, जये, मोरकेपरों की ध्वजावाली और नाना प्रकार के आभूषणों से भूषित तुझको नमस्कारहै । शूल, खड्ग और ढल धारण करने वाली, गोपेन्द्र की बहिन, ज्येष्ठे, नन्दगोप के कुल में उत्पन्न तुझको नमस्कार है । महिष के रुधिर को नित्य प्रिय रखन वाली, कौशिकि, पीताम्बर धारण

CHAPTER XXIII

Sanjaya continued " Seeing the army of Duryodhan ready to fight, Shree Krishn spoke these words to the benefit of Arjun ' Mighty Arjun ! having cleansed thyself, stand with thy face towards the field of battle and sing hymns in the praises of Durga for the defeat of thy foes " Sanjaya continued that being thus advised by Vasudew, Arjun the Pandav came down from the chariot and with joined hands recited the following hymn in the field of battle.— I bow to thee leader of Sidhas, good goddess living in the forest of Mandar, Kumari, Kali, Kapali, Kapila, Krishna pingala, Bhadrakali, I bow to thee, Mahakali, I bow to thee I bow to thee Chandi, Tarini, Barbarnini, Katyayini, Mahabhaga, Karali, Vijya, Jaya, bearer of the banner of peacock's feathers, decked with ornaments, bearer of awful spear, sword and shield, younger sister of

नमस्तेस्तु रणप्रिये ॥ ८ ॥ उमे शाकम्भरि श्वेते कृष्णे कैटभनाशिनि । हिरण्याक्षि विरूपाक्षि सुधूम्राक्षि नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥ वेदश्रुतिमहापुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदसि । जम्बूकटकचैत्येषु नित्यं सन्निहितालये ॥ १० ॥ त्वं ब्रह्मविद्या विद्यानां महानिद्रा च देहिनाम्। स्कन्दमातर्भगवति दुर्गे कान्तारवासिनि ॥ ११ ॥ स्वाहाकारः स्वधा चैव कला काष्ठा सरस्वती । सावित्री वेदमाता च तथा वेदान्त उच्यते ॥१२॥ स्तुतासि त्वं महादेवि विशुद्धेनान्तरात्मना । जयो भवतु मे नित्यं त्वत्प्रसादाद्रणाजिरे ॥१३॥ कान्तारभयदुर्गेषु भक्तानां चालयेषु च । नित्यं वससि पाताले युद्धे जयसि दानवान् ॥ १४ ॥ त्वं जम्भनी मोहिनी च माया ह्रीः श्रीस्तथैव च । सन्ध्या प्रभावती चैव सावित्री जननी तथा ॥ १५ ॥ तुष्टिः पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्चन्द्रादित्यविवर्द्धिनी । भूतिर्भूतिमतां संख्ये वीक्ष्यसे सिद्धचारणैः ॥१६॥ सञ्जय उवाच । ततः पार्थस्य विज्ञाय भक्तिं मानववत्सला । अन्तरिक्षगतोवाच गोविन्द

करने वाली, वृकमुख धारण करके असुरों को मारने वाली रणप्रिये तुझको नमस्कार है । वेदश्रुति, अतिपवित्र, ब्रह्मण्य, जात वदसि जम्बूखंड के चैत्य में निवास करनेवाली तू ब्रह्मविद्याओं और महानिद्रा की देनेवाली, स्कंद की माता, भगवति, दुर्गा, कठिन स्थानों की रहने वाली, स्वाहा, स्वधा, कला, काष्ठा, सरस्वती, सावित्री, वेद और वेदान्त की माताहै । हे महादेवि, विशुद्धों की अन्तरात्मा में तेरी स्तुति करताहूं हे रणप्रिये तेरे प्रसाद से मेरी सदा जयहो तू सदा भयानक दुर्गम स्थानों और पाताल में निवास करती है भक्तोंका पालन करती है और युद्ध में जयदेती है तू जंभनी, मोहिनी, माया, ह्री, श्री, संध्या, प्रभावती, सावित्री और जननीभी है, तू तुष्टि, पुष्टि, धृति और चंद्रसूर्यकी प्रभावढाने वाली है तू धनियोंको धनदेनेवाली और सिद्ध चारणोंको दिखाई देनेवालीहै । संजयनेकहा कि दुर्गा अर्जुनकी भक्ती को जान

Gopendia, Jyeshtha born in the race of Nand the cowherd, fond of buffalo's blood, Kaushiki, fond of yellow clothes, Attahasa, Kokmukha, I bow to thee warrior goddess Uma, Shakambhari of white or black colour, destroyer of Kaitabh, Hiranyakshi, Viroopaksh, Sudhumakshi, I bow to thee. Thou art Vedic hymn of great holiness, Brahmanya, Jatvedasi, always living in the shrines of Jamvu, learned in the knowledge of Brahm, giver of profound sleep, mother of Skand, Bhagwati, Durga, dweller in inaccessible places, Swaha, Swadha, Kala, Kashtha Savitri, Vedmata and Vedant. I praise thee Mahadevi, soul of saints May victory ever fall to my lot by thy grace on the field of battle In inaccessible places where there is fear, in difficulties in the abodes of thy worshippers, in nether regions thou always dwellest Thou art Jambhani, Tushti, Pushti, Dhriti, Dipti giving light to the moon and the sun, giver of prosperity and seen by Siddhas and Charans" Sanjaya continued that knowing the devotion of Arjun, Durga the protector

स्याग्रतः स्थिता ॥ १७ ॥ देव्युवाच । स्वल्पेनैव तु कालेन शत्रून् जेष्यसि पाण्डव।
नरस्त्वमसि दुर्धर्ष नारायणसहायवान ॥ १८ ॥ अजेयस्त्वं रणे ऽरीणामपि वज्रभृतः
स्वयम् । इत्येवमुक्त्वा वरदा क्षणेनान्तरधीयत ॥ १९ ॥ लब्ध्वा वरन्तु कौन्तेयो मेने
विजयमात्मनः । आरुरोह ततः पार्थो रथं परमसम्मतम् ॥२०॥ कृष्णार्जुनावेकरथौ दिव्यौ
शङ्खौ प्रदध्मतुः । य इदं पठते स्तोत्रं कल्य मुत्थाय मानवः ॥ २१ ॥ यक्षरक्षःपिशाचेभ्यो
न भयं विद्यते सदा । नचापि रिपवस्तेभ्यः सर्पाद्या ये च दंष्ट्रिणः ॥ २२ ॥ न भयं
विद्यते तस्य सदा राजकुलादपि । विवादे जयमाप्नोति बद्धो मुच्यति बन्धनात् ॥ २३ ॥
दुर्गं तरति चावश्यं तथा चौरैर्विमुच्यते । संग्रामे विजयेन्नित्यं लक्ष्मीं प्राप्नोति केवलाम्
॥ २४ ॥ आरोग्यबलसम्पन्नो जीवेद्वर्षशतं तथा । एतद् दृष्टं प्रसादात्तु मया व्यासस्य

कर और मनुष्योंपर कृपालु होकर अन्तरिक्ष से वहां आई जहां गोविन्द थे देवी ने कहा कि थोड़ीदेर में शत्रुओंपर विजय पावेगा हे पाण्डव तू अजय है क्योंकि नारायण तेरे सहायक हैं तुझको इन्द्रभी जयनहीं करसकता यहकहकर वरदायिनी देवी चलीगई अर्जुन ने वरपाकर अपने को युद्ध में विजय पायाहुआ जाना और अपने रथपर फिरचढ़ा श्रीकृष्ण और अर्जुन ने रथपर चढ़ेहुए अपने शंख बजाये जो कोई इसस्तोत्र को प्रातःकाल पढ़ेगा उसका यक्षों, राक्षसों और पिशाचों से कदापि भय नहोगा न उसको सर्पों अथवा राजकुल से भयहोगा वह विवाद में जय पावेगा और बन्धनसें छुटजायगा उसको चौरों और दुर्गम जगहों से कुछभय नहोगा संग्राम में उसकी विजय होगी और लक्ष्मी मिलेगी वह सौवर्षतक आरोग्य और बलवान रहेगा ।२२। मैंने बुद्धिमान् व्यासजीकी कृपा से यह देखा है लोग अपने मोह से इन दोनों नरनारायण ऋषियोंको नहीं जानतेहैं आपके सबपुत्र दुरात्मा औरअभिमानीहैं यह वचन समयके अनुसारहै कि वह कालके फन्देमें फँसेहुएहैं, व्यासजी, नारद,

---

of mankind, appeored in the air and stood before Govind. The goddess: "Sbortly thou sh.lt conquer thy foes, Pandav. Thou art invincible, because Narayan helps thee. Thou art invincible even by the wielder of thunderbolt." Having said this, the giver of boons disappeared. Arjun, having got the boon, regarded himself as already successful and remounted his chariot. Krishna and Arjun seated on the same chariot, blew their celestial conchs. He who reads the above hymn every morning has no fear from yakshes, rakshases and pishaches. He has no fear from toothed serpents and kings, gains victory in discussions and is freed from the bonds of confinement. Difficult places and thieves give him no trouble; he gains victory in battles and gains wealth. He lives for a hundred years free from diseases and becomes strong. I have known all this through the grace of Vyas. People from ignorance do not know the two rishis Nar and Naryan. All your sons are wicked and proud; their time

घमित ॥ २५ ॥ मोहादेतौ न जानति नर नारायणावृषी । तव पुत्रा दुरात्मान सर्वे मन्युवशानुगा ॥ २६ ॥ प्राप्तकालमिद वाक्य कालपाशन गुण्ठता । द्वैपायनो नारदश्च कण्वो रामस्तथा नघ ॥ २७ ॥ अवारयस्तव सुत न चासौ तद गृहीतवान् । यत्र धर्मो द्युति, कान्तिर्यत्रह्री श्रीस्तथा मति । यतो धर्मस्तत कृष्णो यत कृष्णस्ततोजय २८॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि दुर्गास्तोत्रे

त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । केषा प्रहृष्टास्तत्राग्रे योधा युध्यन्ति सञ्जय । उदग्रमनस के वा केवादीना विचेतस ॥ १ ॥ केपूर्व प्राहरस्तत्र युद्धे हृदयकम्पनम् । मामका पाण्डवेयावातन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ २ ॥ कस्य सेनासमुदये गन्धमाल्यसमुद्भव । वाच प्रदक्षिणाश्चैव योधानामभिगर्ज्जताम् ॥ ३ ॥ सञ्जय उवाच । उभया सेनयोस्तत्र

कण्व, परशुराम, नभ इनसब ऋषियोंने आपके पुत्रको बहुत निषेध किया परन्तु इसने उमवातको स्वीकार नहीं किया जहां धर्म है वही तेजकी कान्ति है और जहां नम्रताहै वहां लक्ष्मी है इसीप्रकार जिधर मुनिलोग हैं उधरही धर्म है और जिधर श्रीकृष्णहैं उधरही विजय है २८ ॥

अध्याय ॥ २४ ॥

• धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय उस युद्धभूमि में किधरके शूरवीर अति प्रसन्न मनहोकर लडते हुये स्थिर चित्त और किधरके दुखी मनहोकर उद्विग्न चित्तहैं और युद्ध के बीच मेरेपुत्रों में से अथवा पाण्डवा में से प्रथम किसने हृदय का कंपानेवाला प्रहार किया है संजय इसको मुझ से वर्णन करो और किसकी सेना ओं में सुगन्ध युक्त पुष्प मालाओं के उदय में अत्यन्त गर्जना करने वाले शूरोंके

---

of dea h is near and they are already entangled in the me hes of death Vyas Narad Kanwa Parashuram and Nabh have all prevented thy sons but they gave no ear to their counsels. Glory and beauty go hand in hand wi h dharm and prosperity is attached to modesty Dharm go s with munis and victory f lls on the side where Krishn is 28

CHAPTER XXIV

'The warriors of which s de asked Dhritrashtra of Sanjaya 'advanced cheerfully in the fie d of battle? Who were confident and who were despondent? Who struck the first blow in that dreadful battle mine or those bel ng ng to the Pandavas? Tell me all this O Sanjaya. Wh s warriors adorned with garlands of sweet scented flowe s uttered louder roars indicative of prowess? The warriors,

योधा … ः सुगन्धानामुभयत्र समुद्भवः ॥ ४ ॥ संहतानामनी-
कानां … गात् समुदीर्णानां विमर्द्दः सुमहानभूत् ॥ ५ ॥ वादित्र
शब्दस्… ः । शूराणां रणशूराणां गर्ज्जतामितरेतरम् ॥६॥ उभयोः
सेनयो… वत् । अन्योन्यं वीक्ष्यमाणानां योधानां भरतर्षभ । कुञ्ज
राणांच … हृष्यताम् ॥ ७ ॥

… पर्वणि भगवद्गीतापर्वणि धृतराष्ट्र संजय संवादे
… विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

वचन … नेवाले हैं संजय बोले कि वहां दोनों सेनाओंके शूर
वीर … ला हैं और दोनों सेनाओं में सुगन्धता फैल रहीहै हे
भरत… मिलीहुई मिलाप से बडारूप धारण करने वाली सेना
ओं … और शंख और भेरियों से मिलेहुये परस्पर के शब्द
और … पर गर्जने वाले शूरवीर पुरुषों केभी शब्द सर्वस्थान
में फै… सेनाओं के बीच परस्पर देखने वाले शूरवीर और
गर्जने वाले हाथी और प्रसन्न चित्त सेना के चित्तों में बड़ा खेद हुआ ॥ ७ ॥

---

of both the armies," replied Sanjaya, "are cheerful. The flower garlands of both sides give forth equally sweet smell. Both the formidable armies met in a fierce combat and fought bravely, filling the whole place with the sounds of conchshells and drums and the fierce roars of the warriors. Fierce was, O king, the encounter of the warriors, staring at one another, and of the roaring elephants, giving much trouble to the cheerful warriors." 7.





॥ श्री मद्भगवद्गीता ॥

धृतराष्ट्र उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा । आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् । व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता । ३॥ अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि । युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ ४ ॥ धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् । पुरुजित् कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥ ५ ॥ युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् । सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ ६ ॥ अस्माकन्तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम । नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान् ब्रवीमि ते ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ १ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में मिलेहुए युद्धाभिलाषी मेरेपुत्रों ने और पांडवों ने क्या २ काम किये ।१। संजय बोले कि हे राजा धृतराष्ट्र उस समय राजा दुर्योधन पांडवों की व्यूहरची हुई सेनाको देखकर द्रोणाचार्यजी से यह वचन बोला ।२। कि हे आचार्यजी द्रुपद के बेटे अपने शिष्य धृष्टद्युम्न से व्यूह रचीहुई पांडवोंकी बड़ी सेनाको देखो । ३ । इस सेनामें बड़े धनुषधारी युद्धमें कुशल भीमसेन और अर्जुन के समान जो २ वीर हैं उनके नाम यह हैं युयुधान, विराट, महारथी द्रुपद । ४ । धृष्टकेतु, चेकितान पराक्रमी काशिराज, पुरुजित, कुन्तिभोज नरोत्तम शैब्य । ५ । पराक्रमी युधामन्यु विक्रान्त तथा उत्तमौजा सुभद्राकापुत्र अभिमन्यु द्रौपदी के पांचोपुत्र यह सब महारथीहैं ।६।हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ हमारे जो विशिष्ट

THE BHAGAVAD-GITA

LECTURE I

Dhritrashtra said—' Tell me, O Sanjaya what the people of my own party, and those of the Pandavas, who are assembled at Kurukshetra resolved for war, have been doing" 1 Sanjaya replied—"Duryodhan having seen the army of the Pandavas drawn up for battle, went to his Preceptor, and addressed him thus" —2. "Behold O master," said he, "the mighty army of the sons of Pandu drawn up by thy clever pupil, the son of Drupada 3 In it are heroes, such as Bhim or Arjuna; there is Yuyudhana and Virata and Drupada (4) and Dhrishtaketu and Chekitana, and the valiant prince of Kasi, and Purujit, and Kuntibhoja and Shubya a mighty chief (5) and Yudhamanyu and Vikranta, and the daring Uttamonja, so the son of Subhadra, and the sons of Draupadi all of them great in arms. 6 Know also the names of those of our party who

भवान् भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च स मतिञ्जय । अश्वत्थामा विकर्णश्च सैमिदात्तर्जयद्रथ
॥ ८ ॥ अन्ये च बहव शूरा मदर्थे त्यक्तजीविता । नानाशस्त्रप्रहरणा सर्वे युद्धविशा
रदा ॥ ९ । अपर्याप्त तदस्माक बल भीष्माभिरक्षितम् । पर्याप्त त्विदमेतषा बल
भीमाभिरक्षितम् ॥ १० ॥ अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थता । भीष्ममेवाभिरक्षन्तु
भव त सर्व एव हि ॥ ११ ॥ तस्य सञ्जनयन् हर्ष कुरुवृद्ध पितामह । सिंहनाद विन-
द्योच्चै शख दध्मौ प्रतापवान् ॥ १२ ॥ तत शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुख । सह
सैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ १३ ॥ तत श्वेतर्हयैर्युक्त महति स्यन्दने
स्थितौ । माधव पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मत ॥ १४ ॥ पाञ्चजन्य हृषीकेशो देव

लोगहैं उनके भी नामों को सुनो । ७ । आप, भीष्म, कर्ण युद्धके विजय करने वाले
कृपाचार्य, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्तका पुत्र आदि ।८। अनेक शूरहैं वह सबमेरे
निमित्त जीवनके त्यागने वाले नानाप्रकार के शस्त्रों के धारण करने वाले सबके
सब युद्ध में बडे कुशल हैं । ९ । भीष्मजी मे रक्षित हमारी सेना अधिक होनेके
कारण दुराधर्ष है और भीमसेन से रक्षित पांडवों की सेना न्यून होनेके हेतुसे धर्ष
णा के योग्यहै । १० । सब लोग अपने २ मोरचों पर यथा विभाग स्थितहोकर
भीष्मजीकी चारों ओर से रक्षा करें । ११ । और कौरवों में वृद्ध प्रतापवान भीष्म
जीने दुर्योधन को प्रसन्न करने के लिये सिंहनाद के समान शंख बाने को किया
। १२ । तदनन्तर शखभेरी ढोल, आनक, गोमुख आदि बाजे चारों ओर से बजे
और महा शब्दहुए । १३ । उसके पीछे श्वेत घोड़ोंसे जुतेहुए बडे रथ पर सवारहोकर
माधवजी और पांडव अर्जुन ने दिव्यशंखों को बजाया । १४ । अर्थात हृषीकेश

are the most distinguished. I will mention (a few of) my generals. 7 Thyself, Bhishma, Karna and Kripa, the conqueror in battle, and Aswatthama, and Vikarna, and the son of Somadatta, with others (8) in vast numbers who for my service have forsaken the love of life They are all of them practised in the use of arms and experienced in every mode of fight 9 Our innumerable forces are commanded by Bhishma, and the inconsiderable army of our foes is led by Bhim. 10 Let all the generals, according to their respective divisions stand in their posts, and one and all resolve to support Bhishm 11 The ancient chief Bhishma the grand-sire of the Kurus then shouting with a voice like a roaring lion, blew his shell to raise the spirits of the Kuru chief, (12) and instantly innumerable conch shells, and other warlike instruments, were struck up on all sides, so that the clangour was excessive 13 At this time Krishna and Arjuna seated in a splendid chariot drawn by white horses, sounded their conch shells which were of celestial form 14 the name of the one which was

दत्तं धनञ्जयः । पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ १५ ॥ अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥ १६ ॥ काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः । धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥ १७ ॥ द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते । सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान् दध्मुः पृथक् पृथक् ॥ १८ ॥ स घोषो धार्त्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् । नभश्च पृथिवीञ्चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥ १९ ॥ अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा धार्त्तराष्ट्रान् कपिध्वजः । प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥ २० ॥ हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते । अर्जुन उवाच । सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥ यावदेतान् निरीक्षेऽहं योद्धु

(श्रीकृष्णजी) ने पांचजन्य नाम शंख और अर्जुन ने देवदत्त नाम शंखको बजाया और भीमने पौंड्र । १५ । कुन्ती पुत्र राजा युधिष्ठिर ने अनन्त विजयनाम शंखको और नकुल सहदेव सुघोष और मणिपुष्पक नाम शंखोंको बजाया । १६ । और बड़े धनुषधारी काशिराज, महारथी शिखंडी, और धृष्टद्युम्न, विराट और विजयी सात्यकी, । १७ । द्रुपद और द्रौपदी के पांचों पुत्र, महाबाहु अभिमन्यु इन सबोंने सब ओरसे पृथक् २ शंखों को बजाया । १८ । इन सब शंखों के महा शब्दों से धृतराष्ट्र के पुत्रों के हृदय विदीर्ण से होगये और पृथ्वी से आकाश पर्यन्त शब्द व्याप्त होगया । १९ । तदन्तर वानरध्वज अर्जुन धृतराष्ट्र के पुत्रों को व्याकुल और अच्छे प्रकार से नियत देख कर शस्त्रों के प्रहार होनेके समय धनुष को उठाकर । २० । सब जगत् के स्वामी हृषीकेश श्रीकृष्णजी से यह वचन कहने लगा कि हे अविनाशी कृष्ण मेरेरथको दोनों सेनाओं के मध्य में नियत करो । २१ । प्रथम मैं इन युद्ध में स्थिरशूरवीरों को देखूं कि इस युद्ध के आरंभ में मुझको किस

blown by Krishna was Panchajanya, and that of Arjuna was called Devadatta. Bhim of dreadful deeds blew his capacious shell Pawndra and Yudhishthira the royal son of Kunti sounded Ananta-Vijaya, Nakula and sahadeva blew their shells also; the one called Sughosha, the other Manipushpaka 16 The prince of Kasi of the mighty bow, Sikhandi, Dhrishtadyumna, Virata, Satyaki the invincible, Drupada and the sons of his royal daughter, Krishna, with the son of Subhadra, and all the other chiefs and nobles, blew also their respective shells; 18 so that their shrill sounding noice pierced the hearts of the Kurus and re echoed with a dreadful noise from heaven to earth. 19. In the mean time Arjuna, perceiving that the sons of Dhritarashtra stood ready to begin the fight, and that the weapons began to fly abroad, having taken up his bow, [20] addressed Krishna in the following words *Arjuna* —" I pray thee, Krishna, cause my chariot to be driven and placed between the two armies, [21] that I may behold who are the men that stand

कामान वस्थितान् । कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्नणसमुद्यमे ॥ २२ ॥ योत्स्यमानानवे-
क्षेहं य एतेऽत्र समागता । धार्त्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥ २३ ॥ सञ्जय
उवाच । एवमुक्तो हृषीकेशो गडाकेशेन भारत । सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथो-
त्तमम् ॥ २४ ॥ भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषांच महीक्षिताम् । उवाच पार्थ पश्यैतान्
समवेतान् कुरूनिति ॥ २५ ॥ तत्रापश्यत् स्थितान् पार्थ पितॄनथ पितामहान् ।
आचार्य्यान् मातुलान् भ्रातॄन् पुत्रान् पौत्रान् सखींस्तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान् सुहृदश्चैव
सेनायोरुभयोरपि । तान्समीक्ष्यसकौन्तेयः सर्वान बन्धूनवस्थितान्२७कृपयापरयाविष्टो
विषीदन्निदमब्रवीत् । अर्जुन उवाच । दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सं समुपस्थितम् ॥२८ ॥
सीदन्तिममगात्राणि मुखञ्च परिशुष्यति । वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥ २९ ॥
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात् त्वक्चैवपरिदह्यते । नच शक्नोम्यवस्थातु भ्रमतीव च मे मनः

से वा किस को मुझ से लडना उचित है। २२। जो यह राजा लोग इस दुर्बुद्धी दुर्योधनकी सहायता करने को यहां आये हैं इन सब युद्धाभिलाषियो को मैं देखूं। २३। संजय बोले कि इस प्रकार से अर्जुन के वचनों को सुनकर श्रीकृष्णजी अर्जुन के रथको दोनों सेनाओंके मध्य में नियतकर। २४। भीष्म द्रोणाचार्य आदि सब राजाओं के सम्मुखकर यह वचन बोले कि हे अर्जुन इन मिले हुए कौरवों को देखो।२५।वहां अर्जुनने पिता पितामह आचार्य मामा भाई पुत्र और मित्रोंको और कृतवर्मा आदि श्वशुर और सुहृदों को दोनों सेनाओंके मध्यवर्ती इनसब बांधवादिको।२७। अपने नेत्रों से देखकर यह बड़ी करुणा से वचन बोला कि हे श्रीकृष्णजी इन युद्धाभिलाषी सुजन सुहृद पिता पितामह गुरु भाई बन्धु और पुत्र पौत्रादिकों को अपने सन्मुख युद्ध करनेके निमित्त नियत देखकर। २८। मेरे अंग शिथिल होते हैं मुख में शुष्कताहोकर शरीर में कंप और रोमांचखड़े होतेहैं। २९। हाथ से गांडीव धनुष गिरा पड़ता है और शरीर की त्वचा भस्म हुई जाती है यहां खडे

ready, anxious to commence the bloody fight; and with whom it is that I am to fight in this ready field; [22] and who they are that are here assembled to support the vindictive son of Dhritrashtra in the battle." [23]. *Sanjaya*—" Krishna being thus addressed by Arjuna, drove the chariot in the midst of the two armies, [24] and bade Arjuna cast his eyes towards the ranks of the Kurus 25 He looked at both the armies, and beheld, on either side, none but grand-sires, uncles, cousins, tutors, sons, and brothers, near relations or bosom friends. 26. And when he had gazed for a while, and beheld such friends as these prepared for the fight, he was seized with extreme pity and compunction: and uttered his sorrow in the following words: Arjun —"Having beheld O Krishna! my kindred thus standing anxious for the fight, (28) my members fail me, mouth dries up, the hair stands on end and all my frame trembles,

॥ ३० ॥ निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव । नच श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजन माहवे ॥ ३१ ॥ न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च । किंनो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ ३२ ॥ येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानिच । तइमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च । त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥ ३३ ॥ आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः । मातुलाः श्वशुराः पौत्राः स्याला सम्बन्धिनस्तथा ॥ ३४ ॥ एतान्न हन्तु मिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन । अपि त्रैलोक्य राज्यस्य हेतोः किन्नु महीकृते ॥ ३५ ॥ निहत्य धार्त्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन । पापमेवाश्रयेदस्मान् हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥ तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्त्तराष्ट्रान् सबान्धवान् । स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम

होनेको भी असमर्थ होकर मेरा चित्त चलायमान होता है । ३० । और हे कृष्ण मैं विपरीत शकुना कोभी देखता हूं युद्ध में अपने सुजन लोगों को मारकर पीछे से अपना कल्याण नहीं देखता हूं । ३१ । हे श्रीकृष्ण मैं विजय करके राज्य सम्बन्धी सुखों को नहीं चाहताहूं राज्य से हमको क्या लाभ है और जीवनकरके भोगों से क्याफल होगा । ३२ । हम जिन लोगों के लिये राज्य सुख और भोगों को चाहतेहैं वही सब लोग अपने प्राणधन आदि सुखों को त्याग करके इस युद्ध में वर्त्तमान हैं । ३३ । अर्थात् आचार्य्य, पिता, पितामह, मामा, श्वशुर, पोते साले बहनोई इत्यादि अनेक नातेदार लोग । ३४ । हे मधुसूदन मैं त्रिलोकी के भी राज्य के लिये इन मारने वालोंको भी नहीं मारना चाहताहूं तो क्या पृथ्वी के लिये इनको मारूंगा । ३५ । हे जनार्दन धृतराष्ट्र के भी पुत्रों को मारकर हमको क्या सुख होगा इन आततायियोंकाभी मारनेसे हमको पापही होगा ।३६। इसकारण

29. Even Gandiva, my bow, slips from my hand, and my skin is parched and dried up I am not able to stand; for my head swims. 30. I behold inauspicious omens on all sides. When I shall have destroyed my kindred shall I longer look for happiness? 31. I wish not for victory, Krishna; I want not pleasure; for what is domininion, and the enjoyments of life, or even life itself, 32. when those, for whom dominion, pleasure, and enjoyment were to be coveted, have abandoned life and fortune, and stand here in the field ready for the battle? 33. Tutors, sons and fathers, grandsires and grandsons; uncles and nephews. cousins, kindred, and friends! 34. Although they would kill me, I wish not to fight them, no, not even for the dominion of the three regions of the universe, much less for this litttle earth! 35 Having killed the sons of Dhritrashtra, what pleasure, O Krishna, can we enjoy? Should we destory them,

माघव ॥ ३७ ॥ यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतस । कुलक्षयकृत दोष मित्रद्रोहे च पातकम् । ३८ ॥ कथ न ज्ञेयमस्माभि पापादस्मान्निवर्तितुम् । कुलक्षयकृत दोष प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥ ३९ ॥ कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्मा सनातन । धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्यत ॥ ४० ॥ अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रिय । स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्कर । ४१ ॥ सङ्करो नरकायैव कुलघ्नाना कुलस्य च । पतन्ति पितरो ह्येषा लुप्तपिण्डोदकक्रिया ॥ ४२ ॥ दोषैरेतै कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकै । उत्साद्यन्ते जातिधर्मा कुलधर्माश्च शाश्वता ॥ ४३ ॥ उत्सन्नकुलधर्माणा मनुष्याणा जनार्दन । नरके नियत वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥ ४३ ॥ अहो

हम अपने बांधव धृतराष्ट्र के पुत्रोंके मारने को योग्य नहीहै हेमाधवजी हम सुजनोंको मारकर कैसे सुखी होंगे । ३७ । यद्यपि लोभाकर्षित चित्त होकर लोग कुलके नाश रूप दोषको और मित्रों के साथ शत्रुता करने के पातक को नहीं देखते हैं, । ३८ । हे जनार्दन कुल के नाश होनेसे उत्पन्न दोषो को देखने वाले हम लोगों को इस पाप से अलग रहना क्यों नही चाहिये । ३९ । कुल के नाश में कुल के परम्परा सम्बन्धी कुल धर्म भी नष्ट होतेहैं और धर्म के नष्ट होनेसे सम्पूर्ण कुल अधर्मी होजाता है । ४० । और अधर्म अधिक होनेसे कुलकी स्त्रियां दोषयुक्त होजाती हैं, हे वृष्णि वंशी दुष्ट स्त्रियोंमें वर्णसंकर उत्पन्नहोताहै ।४१। कुल के नाशकरनेवालोंके घरानेका वर्णसंकर नरकही के लिये है उनके पितृ लोग पिंड जल आदि क्रिया के गुप्त होजाने से स्वर्ग से गिरते है । ४२ । कुलके नाश करने वाले पुरुषों के इन वर्णसंकर करने वाले दोषों के कारण प्राचीन कुलधर्म जाते रहते हैं । ४३ । हे श्रीकृष्ण जिनके

---

tyrants as they are sin would take refuge with us 36 It therefore behoves us not to kill such near relations as these. How, O Krishna, can we be happy hereafter, when we have been the murderers of our race ? 37 What if thay whose minds are depraved by the lust of power see no sin in the extirpation of their race, no crime in the murder of their friends (38) is that a reason why we should not resolve to turn away from such a crime we who abhor the sin of extirpating the kindred of our blood ? 39 In the destruction of a family, the ancient virtue of the family is lost Upon the loss of virtue, vice and impiety overwhelm the whole of a race. 40 From the influence of impiety the females of a family grow vicious, and from women that are become vicious are born the spurious brood called Varna Sankar 41 The Sankar provides Hell both for those which are slain and those which survive, and their forefathers being deprived of the ceremonies of cakes and water offered to their manes, sink into the infernal regions 42 By the crimes of those who murder their own relations, sore cause of contamination and birth of Varnasankars,

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् । यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥४५॥
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः । धार्त्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥
सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वार्जुन संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् । विसृज्य सशरं चापं शोक
संविग्नमानसः ॥ ४७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि श्रीकृष्णार्जुन विषाद
योगोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

कुल धर्म लोप होगये हैं उन मनुष्यों को सदैव नरक का निवास होता है यह बड़े लोग कहते आये हैं । ४४ । बड़े दुःख और पश्चात्ताप की बातहैं कि हम उनबड़े पाप करने के निश्चय करने वाले हुये जो राजसुखके निमित्त अपने सुजनोंको लोभसे मारने को उद्यत हुये । ४५ । जो धृतराष्ट्र के पुत्र शस्त्रधारी होकर मुझ अशस्त्रधारी सन्मुखता से रहित को मारें तो मेरा बड़ा कल्याण होवे । ४६ । संजय बोले कि इसप्रकार शोकग्रस्त चित्त अर्जुन युद्ध में ऐसे करुणापूर्वक वचनोंको कहकर धनुषबाणको रखकर रथ में बैठगया ॥ ४७ ॥

the family virtue, and the virtue of a whole tribe is for ever done away with. 43. And we have been told, O Krishna, that the habitation of those mortals whose generation has lost its virtue, shall be in Hell. 44. 'Woe is me! what a great crime are we prepared to commit! Alas! that for the lust of the enjoyments of dominion we stand here ready to murder the kindred of our own blood! 45. I would rather patiently suffer that the sons of Dhritarashtra, with their weapons in their hands, should come upon me, and, unopposed, kill me unguarded in the field.' 46. *Sanjaya*— "When Arjuna had ceased to speak, he sat down in the chariot between the two armies; and having put away his bow and arrows, his heart was overwhelmed with affliction." 47.



सञ्जय उवाच । तन्तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् । विषीदन्तमिदं वाक्य मुवाच मधुसूदन ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् । अनार्य्यजुष्ट मस्वर्ग्य मकीर्त्तिकर मर्जुन ॥ २ ॥ क्लैब्य मास्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते । क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच । कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणञ्चमधुसूदन । इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ।४॥ गुरूनहत्वा हि महानुभवान् श्रेयो भोक्तुं भैक्षमपीह लोके । हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥ न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयम यदि

अध्याय ॥ २ ॥

संजय बोले कि स्नेहयुक्त कृपासे भरेहुये अश्रुपात समेत व्याकुल और दुखी अर्जुन को जानकर मधुसूदन श्रीकृष्णजी यह वचन अर्जुन से बोले । १ । कि हे अर्जुन इस युद्धमें ऐसा मोह तुझको काहेसे उत्पन्न हुआ यह मोहस्वर्ग रोकनेवाला और अपकीर्त्तिका प्रकट करने वाला है ऐसे मोहको नपुंसकलोग करते हैं इससे हे अर्जुन तू नपुंसक मतहो यह तुझको उचित नहीं है हे शत्रुहन्ता अर्जुन हृदयकी इस क्षुद्र दुर्बलताको त्यागकर खड़ाहोजा । २ । यहसुन कर अर्जुन बोले कि हे मधुसूदनजी मैं युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्म पितामह के सम्मुख उनसेशस्त्रोंके द्वारा कैसे लड़ूं हे शत्रुघ्न कृष्ण वह दोनोंमेरे पूज्यतम हैं ।४। बडे प्रभाववाले गुरुओं को न मारकर इसलोक में भिक्षाकाही अन्न खाना उत्तम है और अर्थ के चाहने वाले गुरुओंको मारकर इस लोक में रुधिरसे भरे हुए भोगोंको भोगेंगे ।५। और यह भी हम नहीं जानते कि हम गुरुओंको विजय करेंगे वा गुरू हमको विजय करेंगे

LECTURE II

(*The nature of the soul*)

Sanjaya—" Krishna beholding him thus influenced by compunction, his eyes overflowing with a flood of tears, and his heart oppressed with deep affliction addressed him in the following words' 1 Krishna—' Whence O Arjuna comes unto thee, this folly and unmanly weakness ? It is disgraceful contrary to duty and the foundation of dishonour 2 Yield not thus to unmanliness, for it ill becomes one like thee Abandon this despicable weakness of thy heart, and stand up " 3 Arjuna—" How, O Krishna, shall I resolve to fight with my arrows in the field against such as Bhishma and Drona, who of all men are most worthy of my respect. I would rather beg my bread about the world, than be the murderer of my preceptors to whom such awful reverence is due Should I destroy such friends as these, I should partake of possessions, wealth, and pleasures polluted with their blood 5 We know not whether it would be better that we should defeat them, or they us for those,

वा नो जयेयुः । यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्त्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥ कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः । यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ ७ ॥ नहि प्रपश्यामि ममापनुद्यात् यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् । अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ८ सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परन्तपः । न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥ ९ ॥ तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत । सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥ १० ॥ श्रीभगवानुवाच । अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे । गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥ ११ ॥ नत्वेवाहं

और हम जिनको मारकर जीवन के इच्छावान् नहीं हैं वह धृतराष्ट्र के बेटे सन्मुख वर्त्तमान हैं । ६ । हे कृष्ण मैं दीनता युक्त दूषित प्रकृतिवाला धर्म में असावधान चित्त होकर आपसे पूछताहूं कि जो आपने मेरे निमित्त कल्याण निश्चय किया है उसको कृपाकरके मुझ से कहिये क्योंकि मैं आपका शिष्यहूं आपअपनी शरणागततामें मुझको उपदेश कीजिये । ७ । पृथ्वीपर वृद्धियुक्त निर्विभाग शत्रुता रहित अथवा धन आदि से परिपूर्ण राज्यको और देवताओं की प्रभुता को भी पाकर इन्द्रियोंका सुखाने वाला जो मेरा शोकहै उसके दूरहोने का मैं कोई भी उपाय नहीं देखता हूं । ८ । शत्रुओं का संतप्त करने वाला अर्जुन श्री कृष्ण जी से यह वचन कहकर कि युद्ध नहीं करूंगा मौन होगया । ९ । यहदशादेखकर दोनों सेनाओं के मध्य में हँसतेहुए श्रीकृष्णजी अर्जुनको अत्यन्त दुखी जानकर यह वचन बोले ।१०। कि अर्जुन जो शोक के योग्यही नहीं हैं उनको तू शोचता है और पंडितोंके वचनों को कहता है परन्तु पंडित लोग उन पुरुषोंको जिनके कि शरीर छूटगये अथवा शरीर में प्राण नियत हैं अर्थात् आत्मा के अविनाशी होने

whom having killed, I should not wish to live, are even the sons and *people of Dhritarashtra* who are here *drawn up before* us. 6. My compassionate nature is overcome by the dread of sin Tell me truly what may be best for me to do. I am thy disciple, wherefore instruct me in my duty. 7. For my understanding is confounded by the dictates of my duty, and I see nothing that may assuage the grief which dries up my faculties, although I were to obtain a kingdom whithout a rival upon earth, or dominion over the hosts of heaven "8. Sanjaya —" Arjuna having thus spoken to Krishna, and declared that he would not fight, was silent. 8. Krishna smiling, addressed the afflicted prince, standing in the midst of the two armies, in thee following words. 10. Krishna—" Thou grievest for those who are unworthy to be lamented whilst thy sentiments are those of the wise men. The wise neither grieve for the dead nor for the living. 11

जातु नास त्वं नेमे जनाधिपा । न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥ १२ ॥ देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा । तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ १३ ॥ मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः । आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥ १४ ॥ यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषंपुरुषर्षभ । समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १५ ॥ नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः। उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ १६ ॥ अविनाशितु तद्विद्धि येन सर्वमिदंततम् । विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ १७ ॥ अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः । अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥ १८ ॥ य एनं

से नहीं शोचते हैं ।११। मैं कभी नहीं हुआ और तुमसमेत यह सब राजा लोगभी कभी नहींहुए न इसके पीछे हम सब उत्पन्नहोंगे यहबात नहीं है।१२।जैसे कि स्थूल शरीर में बाल्यावस्था, तरुणावस्था और वृद्धावस्था यह तीनों दशाहोती हैं इसी प्रकार अन्य शरीर की प्राप्ति है, वहां ज्ञानी पंडित मोहको नहीं पाता ।१३। हेकुन्ती पुत्र अर्जुन इन्द्रियों की वृत्तियों के शब्दादि विषय देखना खाना सूंघना और शीतोष्णता आदि सुख दुःख के देने वाले उत्पत्ति नाशयुक्त सब विनाशवान् हैं इससे हे भरतर्षभ तू इनको सहनकर । १४। हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ जिस सुख दुःख में एकसे रहनेवाले ध्यानी और योगी पुरुषको यह पीड़ा नहीं देते हैं वह मोक्षके योग्य समझाजाता है, ।१५। अनावरूपी वस्तुका भावभी नहींहै और सतरूप ब्रह्मका अभाव वर्तमान नहीं है । १६ । उस सत अर्थात् सत्यको जिससे कि यह जगत् व्याप्तहोरहा है अविनाशीजानो इस न्यूनता रहित आत्माके नाशकरनेको कोई भी समर्थ नहीं है । १७ । अति प्राचीन निरवधि अविनाशी आत्मा के यह सब शरीर

I myself never *was not*, nor thou, nor all the princes of the earth; nor shall we ever hereafter *cease to be*. 12. As the soul in this mortal frame finds infancy, youth, and old age; so, in some future frame, will it find the like. One who is confirmed in this belief, is not disturbed by any thing that may come to pass 13. The sensibility of the faculties gives heat and cold, pleasure and pain; which come and go, and are transient and inconstant. Bear them with patience, O son of Bharata. 14. For the wise man, whom these disturb not and to whom pain and pleasure are the same, is *formed for immortality*. 15. A thing imaginary has no existence whilst that which is true is a stranger to non-entity. 16. By those who look into the principles of things, the design of each is seen Learn that he by whom all things were formed is incorruptible, and that no one is able to effect the destruction of this thing which is inexhaustible. 17. These bodies, which envelope the souls which inhabit them are eternal incorruptible, and surpassing all conception, are declared to be finite

वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् । उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ १९ ॥
न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः । अजो नित्यः शाश्वतोऽयं
पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥ वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥ २१ ॥ वासांसि जीर्णानि यथा
विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि । तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि सं
याति नवानि देही ॥ २२ ॥ नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः । न चैनं
क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ २३ ॥ अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य
एव च । नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥ २४ ॥ अव्यक्तोऽयमचिन्त्यो

नाशवान् कहे हैं इसकारणसे हे अर्जुन तुम युद्ध में प्रवृत्तहो । १८ । जो पुरुष इस आत्माको मारनेवाला समझताहै और जो इसको मराहुआ मानताहै वहदोनों अज्ञानी है, यह कभी न मरता है न कोई इसका मारनेवाला है । १९ । यह आत्मा न कभी उत्पन्न होताहै न मरताहै और न पहले उत्पन्नहुआहै न पीछे उत्पन्न होगा यह अजन्मा आत्मा नित्य और प्राचीनता के कारण सदैव एक रूपहै यह अनित्य देहों के मरनेमें नहीं मरताहै । २० । जो इसआत्माको अविनाशी और नित्य अजन्मा और न्यूनतासे रहित जानता है वह सब शरीरोंमें पूर्ण आत्मारूप पुरुष कैसे किसीको मारेगा और किस को मरवावेगा । २१ । जैसे कि मनुष्य पुराने वस्त्रोंको त्यागकर नवीन वस्त्रोंको धारण करताहै इसीप्रकार आत्माभी पुराने देहोंको त्यागकर दूसरे नवीन शरीरोंको प्राप्त करलेता है । २२। इस आत्माको न शस्त्र छेद सक्ते न अग्नि जलासक्ती न जल गलासक्ता न वायु सुखा सक्ती है । २३ । क्योंकि यह आत्मा न छेदनेके योग्य न जलाने के योग्य न गलानेके न सुखाने के योग्यहै यह नित्य रूप सर्वत्र वर्तमान सदैव एक दशा में अचलरूप प्राचीन सनातन और अखंड

beings wherefore O Arjun, resolve to fight 18 He who believes that it is the soul which kills and he who thinks that the soul may be destroyed, are both alike decieved, for it neither kills nor is killed. 19 It is not a thing of which a man may say, it has been it is about to be, or is to be hereafter, for it is a thing without birth, it is ancient, constant, and eternal and is not to be destroyed like the mortal frame. 20 How can the man who believes that this thing is incorruptible eternal, inexaustible and without birth think that he can either kill or cause it to be killed ? 21 As a man throws away old garments and puts on new even so the soul, having quitted its old mortal frames enters into new ones. 22 The weapon divides it not, the fire burns it not, the water corrupts it not, the wind dries it not away, (23) for it is indivisible inconsumable, incorruptible and is not to be dried away it is eternal universal, permanent immoveable (24) it is invisible, inconceivable

यमविकार्य्योयमुच्यते । तस्म देवं विदित्वैन नानुशोचितुमर्हसि ॥ २५ ॥ अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् । तथापि त्वं महाबाहो नैनं शोचितुमर्हसि ॥ २६ ॥ जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च । तस्मादपरिहार्य्येऽर्थे नत्वं शोचितुमर्हसि ॥ २७ ॥ अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत । अव्यक्त निधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ २८ ॥ आश्चर्यवत् पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवत् वदति तथैव चान्य । आश्चर्य्यवच्चैनमन्य शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैवकश्चित् ॥ २९ ॥ देही नित्यमवध्यो य देहे सर्वस्य भारत । तस्मात् सर्वाणि भूतानि नत्वं शोचितुमर्हसि ॥ ३० ॥ स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि । धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ ३१ ॥ यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।

है । २४ । यह गुणरूप ध्यान स अगम्य और रूपान्तर दशासे पृथक कहा जाताहै इन हेतुओंस इसका ऐसा जानकर तुम शाचकरने के योग्य नहीहो । २५ । तू इसको सदैव मरने वाला और जन्मलने वाला मानताहै तौभी सोचनकर । २६ । हे महा बाहु जन्म लेनेवालेकी मृत्यु भी अवश्यहै और मरनेवालेका जन्मभी निश्चय है इस कारण अत भावी है इस का कोई भी उपाय नही है इसमें तेरा शोच करना वृथाहै ।२७। हेभरतवंशी जीवोंका आदि विदित नहीहोता म य विदितहाताहै और अन्तभी विदित नहींहै एसीदशा में विलाप क्यों करना चाहिये । २८ । काई तो उसका आश्चर्यरूप से मानताहै और काई आश्चर्यके समान देखता और कहता है और कोई उसका आश्चर्यकेही समान सुनकर नही जानताहै अर्थात् वह आत्मा देखने सुनने और कहनेमें नही आता है ।२९। हे अर्जुन यह आत्मा सब के शरीरोंमें नित्य और अवध्य है इसकारण हेतातनुमसब जीवधारियोंके शोचनके योग्य नहीहो । ३०। अपने धर्म को देखकर कांपना छोडदो क्योंकि धर्मयुद्ध के सिवाय क्षत्रीका दूसरा

and, unalterable, therefore believing it to be thus thou shouldst not grieve. 25 But whether thou believest it of eternal birth and duration, or that it dies with the body still thou hast no cause to lament it. 26 Death is certain to all things which are subject to birth, and regeneration to all things which are mortal, wherefore it does not behove thee to grieve about that which is inevitable. 27 The former state of beings is unknown, the middle state is evident, and their future state is not to be discovered Why then shouldst thou trouble thyself about such things as these? 28 Some regard the soul as a wonder, whilst some speak, and others hear of it with astonishment, but no one knows what it is 29 This spirit being never to be destroyed in the mortal frame which it inhabits, it is unworthy for thee to be troubled for all these mortals. 30 Cast but thy eyes towards the duties of thy particular tribe, and it will ill become thee to tremble A soldier of the Kshatriya tribe has no duty superior

सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्ध मीदृशम् ॥ ३२ ॥ अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं
न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कीर्तिञ्च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥ अकीर्त्तिञ्चापि
भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् । सम्भावितस्य चाकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥
भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्त त्वां महारथाः । येषाञ्चत्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघ-
वम् ॥ ३५ ॥ अवाच्यवादांश्च बहून् वदिष्यन्ति तवाहिताः । निन्दन्तस्तव साम-
र्थ्यं ततो दुःखतरन्नु किम् ॥ ३६ ॥ हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्य से
महीम् । तस्तादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ ३७ ॥ सुखदुःखे समे कृत्वा
लाभालाभौ जयाजयौ । ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥ ३८ ॥ एषा

कल्याणकारी नहीं है । ३१ । हे अर्जुन विना इच्छा किये स्वर्गका द्वार खुलाहुआ वर्तमान है स्वर्ग का सुख पानेवाले क्षत्री ऐसे युद्ध को पाते हैं । ३२ । जो तू इस धर्मरूप युद्ध को नहीं करेगा तो अपने धर्म और कीर्तिको त्यागकर पाप का भागी होगा । ३३ । बहुत समय तक सब जीव तेरी अपकीर्ति को कहैंगे और प्रतिष्ठावान पुरुषकी अपकीर्ति मरण सेभी अधिक दुखदायी होती है ।३४। और सब महारथी लोग तुझको भयके कारण युद्धसे हटाहुआ मानेंगे उन सब लोगोंके आगे तू महान स्तुतिमानहोकर निन्दायुक्त छुटाई और तुच्छताको पावगा ३५औरतेरेशत्रु तेरे पराक्रम कीनिन्दा करतेहुए कहनेके अयोग्य अनेक अनुचित वातोंको कहैंगे लज्जावानको इस से अधिक और क्या दुःख होगा ।३६। मरकर तो स्वर्गको और विजय करके पृथ्वी के भोगोंको भोगेगा हेअर्जुन इसकारण तू युद्धके निमित्त निश्चयकरके उठ खड़ाहो । ३७ । हानि लाभ जय विजय समानकरके युद्धके निमित्त तैयारीकर इसरीति के

---

to fighting. 31. Just to thy wish the door of heaven is found open before thee. Such soldiers only as are the favourites of Heaven join such a glorious fight as this. 31; But, if thou wilt not perform the duty of thy calling, and fight out the field, thou wilt abandon thy duty and thy honor, and be guilty of a crime. 33. Mankind will speak forever of thy disgrace Disgrace to a man of honour is worse than death. 34. The generals of the armies will think that thy retirement from field arose from fear, and thou wilt become despicable even amongst those by whom thou wert wont to be respected. 35 Thy enemies will speak of thee in words which are unworthy to be spoken, and depreciate thy courage and abilities; what can be more dreadful than this! 36. If thou art slain thou wilt obtain heaven, if thou art victorious thou wilt enjoy a world for thy reward; wherefore son of Kunti, arise and be determined for the battle. 37. Make pleasure and pain, gain and loss, victory and defeat, the same, and then prepare for battle, thus thou shalt

तेभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु । बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥ ३९ ॥ नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते । स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ ४० ॥ व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन । बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥ ४१ ॥ यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः । वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥ ४२ ॥ कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् । क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥ ४३ ॥ भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् । व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ ४४ ॥ त्रैगुण्य

युद्ध में तू कभीपापका भागी नहीं होगा । ३८ । हे अर्जुन यह मैंने उपनिषद और सांख्य सम्बन्धी ब्रह्मज्ञान तुझ से कहा अब इसी ज्ञान को कर्म योग में वर्णन करता हूं इस ज्ञान में प्रवृत्त होकर हे अर्जुन तू कर्म बन्धन को त्याग करेगा । ३९। इस कर्म योग में प्रारम्भ कर्म का नाश नहीं है और पाप भी नहीं है इस फल की इच्छा रहित कर्म रूपी धर्म का थोड़ा भी करना बड़े भारी संसारी भयसे रक्षा करता है । ४० । हे कौरव नन्दन इस कर्म योग में तत्व के निश्चय करनेवाली बुद्धि एकही है और जिनको तत्व का निश्चय नहीं है उनकी बहुत शाखा रखनेवाली अनेक बुद्धियां हैं । ४१ । हे अर्जुन वह तत्व निश्चयसे रहित वेद वाद में प्रीति रखने वाले इच्छा से जीते हुए चित्त से स्वर्ग को उत्तम जाननेवाले अज्ञानीलोग पुष्पित वचनों के समान चित्तरोचक भोग ऐश्वर्य्य की प्राप्ति में साधन रूप जन्म कर्म और फल के देनेवाले अथवा अग्निहोत्रादि की मूल क्रियाको अधिक रखने वाले वेद के वचनों को कहते हैं और यह भी कहनेवाले हैं कि कर्म से उत्तम दूसरा मोक्ष और ज्ञान नहीं है । ४३ । भोग और ऐश्वर्य्य में प्रवृत्त चित्त और उस वचन से हरे हुये चित्त उन पुरुषों की समाधि में तत्त्व की निश्चयात्मिका बुद्धि

incur no sin 38 This knowledge is based on Sankhya shastra; hear what it is in the practical, so that thou mayst be free from the bonds of action 39. In this no effort fails, nor is there any harm A very small portion of this duty delivers a man from great fear. 40 In this there is but one judgment, but that is of a definite nature, whilst the judgment of those of indefinite principles are infinite and of many branches 41 The unwise delighting in the rewards praised in the Vedas, tainted with worldly lusts, and preferring a transient enjoyment of heaven to eternal absorption, whilst they declare there is no other reward, pronounce, for the attainment of worldly riches and enjoyments, flowery sentences, ordaining innumerable and manifold ceremonies, and promising rewards for the actions of this life. 43. The determined judgment of such as are attached to riches and enjoyments, and whose reason is led astray by this doctrine, is not formed upon mature consi-

विषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन । निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्
॥ ४५ ॥ यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके । तावान् सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य
विजानतः ॥ ४६ ॥ कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन । मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा
ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ ४७ ॥ योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय । सिद्ध्य-
सिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ ४८ ॥ दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्ध-
नञ्जय । बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥ बुद्धियुक्तो जहातीह
उभे सुकृतदुष्कृते । तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ ५० ॥ कर्मजं

नहीं होती है । ४४ । तीनों गुणों को कहनेवाले वेद हैं हे अर्जुन तू तीनों
गतियों से विरक्त है । सुख दुःख आदि द्वन्द्व गुणों से पृथक् सर्वत्र सम बुद्धिवाला
होकर सदैव धैर्यवान् वा शुद्ध सतोगुण वृत्ती हो और मनोरथों की प्राप्ति और
रक्षासे पृथक् होकर आत्मवान् हो ।४५। जितना कि बड़ी नदी वा सरोवर आदि में
किसीका प्रयोजन होता है उतनाही प्रयोजन विज्ञानी ब्राह्मणका सब वेदों में होताहै
।४६ । ब्रह्मज्ञानी कर्म में ही तेरा अधिकारहै कर्म के फलों में कभी तेरा अधिकार न
हो और तू कर्मफल का कारण भी मतहो और कर्म न करने मेंभी तेरा मन नहो।४७।
कर्मों की सिद्धी और असिद्धी में समान बुद्धि होकर तू योग में नियत हो और
और अकर्मियों के संगोंको छोड़कर कर्म को कर ऐसी समता को योग कहते हैं
। ४८ । हे अर्जुन फल की इच्छासे कियाहुआ कर्मदान योग से अत्यन्त तुच्छ है,
बुद्धि में रक्षा वा शरण को चाहो जिनके जन्म मरण का कारण कर्मों का फल है
वह दीन अर्थात् दुखी होते हैं । ४९ । इस लोक में बुद्धि से संयुक्त होकर मनुष्य
पुण्य और पाप को त्याग करता है इस हेतु से समतारूप बुद्धि योग में उपाय कर

deration and meditation. 44. The object of the Vedas is of a threefold nature. Be thou free from a threefold nature, be free from duplicity, and stand firm in the path of truth, be free from care and trouble, and turn thy mind to things which are spiritual. 45. The knowing divine requires as little out of the whole Vedas collectively, as are from a reservoir flowing with water. 46. Thou hast a right in the deed, and not in the fruit of it. Be not one whose motive for action is the hope of reward. Let not thy life be spent in inaction. 47. Depend upon application, perform thy duty, abandon all thought of the consequences, and make the event equal, whether it terminate in good or evil; for such an equality is called Yog. 48. Actions are far inferior to the application of wisdom. Seek an asylum in wisdom. Poor are the fruit seeking. 49. Men who are endued with true wisdom cast off good or evil deeds in this world. Study then to obtain this application of thy understanding, for such application

बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिण । जन्मबन्धविनिर्मुक्ता पदं गच्छन्त्यनामयम् ।५१॥
यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति । तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य
च ॥ ५२ ॥ श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला । समाधावचला बुद्धिस्तदा
योगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥ अर्जुन उवाच । स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥ ५४ ॥ श्रीभगवानुवाच । प्रजहाति
यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् । आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥५५॥
दुःखेष्वनुद्विग्नमना सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥५६॥
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत् प्राप्य शुभाशुभम् । नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रति-

क्योंकि ज्ञान योग ही कर्मों में चातुर्य्यता है बुद्धि से संयुक्त पुरुष कर्म जन्य फलोंका त्यागकरके जन्म बंधन से छूटता है और निरुपाधि मोक्षपद को पाता है । ५१ । जब तेरी मोहरूपी बुद्धि शुद्ध होगी तब तू सुनेहुए और सुनने के योग्य शास्त्रों से वैराग्य पावेगा । ५२ । और नानाप्रकार के शास्त्रों को सुनकर संदेहों से भरी हुई तेरी बुद्धि प्रसादरूप ब्रह्म में नियत होकर निर्विकल्प समाधि में अचल वर्त्तमान होगी तब योग को पावेगा । ५३ । अर्जुन बोले कि हे केशवजी जिसकी बुद्धि शुद्ध ब्रह्म में नियत है और समाधि में वर्त्तमान है उसको लोग क्या कहते है और वह बुद्धि में नियत होकर कैसे बोलता है और कहां बैठता है और कैसे विषयों को भोगता है । ५४ । श्री भगवान् बोले हे अर्जुन जब यह योग मन में वर्त्तमान होता है और सब इच्छाओं को त्याग करता है और आत्मा करके अपनेही में तृप्त होता है तब स्थिर बुद्धि कहा जाता है । ५५ । दुःखों में व्याकुलता रहित मन, और सुखों में अनिच्छावान्, राग भय क्रोध से पृथक् स्थिर बुद्धि, मुनि कहा जाता है । ५६ । जो सर्वत्र में प्रीति न रखने वाला जो शुभ पदार्थ को पाकर उसकी हर्ष से

in business is cleverness 50 Wise men, who have abandoned all thought of the fruit which is produced from their actions, are freed from the chains of birth, and go to the regions of eternal happiness. 51 When thy reason shall get the better of the gloomy weakness of thy heart, then shalt thou have attained all knowledge which has been or is worthy to be taught. 52 When thy understanding, by study brought to maturity, shall be fixed immoveably in contemplation, then shall it obtain true wisdom ' 53 *Arjuna,*— "What O Krishna is the distinction of a wise and steady man who is fixed in contemplation? Where does he dwell? How does he act?" 54 *Krishna,*—"A man is said to be confirmed in wisdom, when he forsakes every desire which enters into his mind and is contented in himself. 55. He whose mind is undisturbed in adversity, unelated in prosperity, and who is stranger to anxiety, fear and anger, is called a muni. 56. The wisdom of that man is,

ष्ठिता ॥ ५७ ॥ यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥ विषया विनिवर्त्तन्ते निराहारस्य देहिनः । रसवर्ज्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्त्तते ॥ ५९ ॥ यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः । इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥ ६० ॥ तानि सर्वाणि संयम्य युक्तआसीत मत्परः । वशेहि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥ ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते । सङ्गात् सञ्जायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ॥ ६२ ॥ क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ॥ ६३ ॥ रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् । आत्मवश्यैर्विधे-

प्रशंसा नहीं करता है और अशुभको पाकर दुःखी होकर निन्दा नहीं करता है उसकी बुद्धि स्थिर अर्थात् निश्चल है । ५७ । जब यह पुरुष सब प्रकार से इन्द्रियों को विषयों से कछुएके अंगों के समान खेंचता है तब उसकी बुद्धि स्थिर समझी जाती है । ५८ । इन्द्रियों से विषयों को न ग्रहण करने वाले देहाभिमानी से सब विषय होजाते हैं परन्तु उन के विषयों का अनुराग निवृत्त नहीं होता विषय संबंधी प्रीति भी परब्रह्म को देखकर दूरहोती है ।५९। हेअर्जुन ज्ञानी मनुष्यकी इन्द्रियां भी लुटेरोंके समान चित्तको अत्यन्त चुराती हैं ।६०। उन सबको अपने वशीभूत कर के विधानमनसे मुक्त जगत् के आत्मा को अत्यन्त प्रियतम माने और इन्द्रियोंको आधीन करे उसकी बुद्धि स्थिरहै । ६१ । विषय वासना वालों के विषय ध्यान करने का संग इन्द्रियों पर होताहै उसी संगसे काम उत्पन्न होताहै कामसे क्रोध क्रोध से मोह मोह से विभ्रम, स्मृति के भ्रंश से बुद्धि का नाश और बुद्धिके नाश से मरण होजाता है । ६३ । मनको स्वाधीन रखने वाला योगी उन राग द्वेषों से पृथक् मन के स्वा-

established, who in all things is without affection; and having recieved good or evil, neither rejoices at the one, nor is cast down by the other. 57. His wisdom is confirmed, when like the tortoise he can draw in all his senses, and restrain them from their wonted purposes. 58. The hungry man loses every other object but the gratification of his appetite, and when he is become acquainted with the Supreme, he loses even that. 59. The tumultuous senses hurry away, by force, the heart even of the wise man who strives to restrain them. 60. The inspired man, trusting in me may quell them and be happy. The man who has his passions in subjection is possessed of true wisdom. 61. The man who attends to the inclinations of the senses, is united with them; from this union are created passions, from passions anger, from anger is produced folly, from folly a depravation of the memory, from the loss of memory the loss of reason, and from the loss of reasen the loss of all? 63. *He who has control over his senses,* who despises delights

यात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥ प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते । प्रसन्न चेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ ॥ ६५ ॥ नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना । न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥ ६६ ॥ इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते । तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ ६७ ॥ तस्मा द्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥ या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी । यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ ६९ ॥ आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् । तद्वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥ ७० ॥ विहाय

धीन होने वाली इन्द्रियों से विषयों के समीप घूमता है वह अपने संकल्प विकल्प-रूपी कीचड के धोने से चित्त की शुद्धी को पाता है । ६४ । उस शुद्धी के होने से उसके सब दुःखोंका नाश होता है और उस शुद्ध चित्तवाली बुद्धि से वह ज्ञानको पाता है । ६५ । संशय और विचार से रहित पुरुषको ज्ञान नहीं होसकता ज्ञान-हीन पुरुष ध्यान नहीं करसकता बिना ध्यानके चित्तसावधान नहीं होसकता और बिना चित्तस्थिर हुये उसको सुख कैसे होसक्ता है । ६६ जिसका मन विषयों में जाने वाली इन्द्रियों के पीछे २ चलताहै उसकी ब्रह्मसंबंधी बुद्धिको ऐसेहर लेताहै जैसे कि जलमें नौका को वायु हरलेता है । ६७ । हे महाबाहु इस कारणसे जिस-को इन्द्रियां सब प्रकार करके विषयों से पृथक् होती है उसकी बुद्धि स्थिर कहाती है ६८ । रात्रिमें जितेन्द्री ज्ञानी जागता है और दिनमें जब सब अज्ञानी जीव जागते है ब्रह्मतत्त्व के देखने वाले मुनि लोगों की रात्रि है । ६९ । जैसे कि अचल रहने वाले समुद्र मे जल प्रवेश करते है इसी प्रकार सब प्रकारकी इच्छा जिस ब्रह्म-ज्ञानी में प्रवेश करती है । वह शान्तिको पाता है परन्तु विषयोंका चाहने वाला

and whose mind is in his bidding obtains happiness surpeme 64 In his happiness is born to him an exemption from all his troubles, and his mind being thus at ease, wisdom soon flows to him from all sides 65 The man who attends not to this is without wisdom or the power of contemplation The man who is incapable of thinking, has no rest What happiness can he enjoy who has no rest? 66 The heart, which follows the dictates of the moving passions, carries away the reason, as the storm, does the bark in the raging ocean 67 The man, therefore, who can restrain all his passions from their inordinate desires, is endued with true wisdom 68 Such a one wakes but in the night when all things go to rest. The comtemplative Muni sleeps but in the day time when all things wake. 69 The man whose passions enter his heart as waters run into the unswelling passive ocean, obtains happiness

कामान्यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः । निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ७१॥ एषा ब्राह्मीस्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति । स्थित्वास्यामन्तकालेपि ब्रह्म निर्वाण मृच्छति ॥ ७२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सू० सांख्ययोगोनाम

द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अर्जुन उवाच । ज्यायसी चेत् कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन । तत् किं कर्मणि

त्र्येनबुद्धिं मोहयसीव मे । तदेकं

श्च । लोकेस्मिन् द्विविधानिष्ठा पुरा

इच्छाओं को त्यागकर ममता और
र्थात् केवल देहके निर्वाहके निमित्त
को पाता है । ७१ । हे अर्जुन यह
। नहीं भूलता है इसमें नियत होकर
।
॥
र्म से बुद्धिकी उत्तमता आप मानतेहैं
र्ममें क्यों लगातेहो । १ । आपकभी
र्मों को त्यागकरके ज्ञानी और त्यागीहो
लतेहो सो आप इनदोनोंमें से एकको
। २ । श्रीभगवान् बोले हे निष्पाप

---

he man who having abandoned
inordinate desires, unassuming
s. 71. This is divine depen-
dance. A man being possessed of this confidence in the Supreme goes not astray: even at the hour of death, should he attain it, he shall mix with the incorporeal nature of Brahm." 72.

LECTURE III

Arjuna,—"If according to thy opinion, knowledge be superior to work, why then dost thou urge me to engage in an undertaking so dreadful as this? 1. Thou, as it were, confoundest my reason with a mixture of sentiments; wherefore choose one amongst them by which I may obtain happiness, and explain it unto me." 2 *Krishna*—"It has already been observed by me, that there are

प्रोक्तामयानघ । ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥ ३ ॥ न कर्मणामना रम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषाश्नुते । न च सन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥ ४ ॥ न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् । कार्यते ह्यवश कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥५॥ कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् । इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ ६ ॥ यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेर्जुन । कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगम सक्तः स विशिष्यते ॥ ७ ॥ नियतं कुरु कर्म त्वं कर्मज्यायोह्यक र्मण । शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मण ॥ ८ ॥ यज्ञार्थात् कर्मणोन्यत्रलोकायं कर्मबन्धन. । तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्ग समाचर ॥ ९ ॥ सहयज्ञाः प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति । अनेन

मैंनेप्रथम अध्यायमें कही है निष्ठा इनलोकमें दोप्रकारकी है सांख्य वालोंकी निष्ठा ज्ञानयोगहै और योगियोंकी निष्ठा कर्मयोग है । ३ । क्योंकि यज्ञादि कर्मोंका प्रारंभ करनेसे पुरुष ज्ञान निष्ठाको नहीं पाता है और कर्मयोग से उत्पन्न चित्त शुद्धी के बिना केवल त्याग अर्थात् सन्याससेही मोक्षरूप सिद्धीको नहीं पाताहै ।४। कर्मजनित सिद्धी के विना मनका न जीतने वाला कोई पुरुष समाधिमें भी बुरी वासनाको करके एक क्षणमात्र भी नियत नहीं रहसक्ता है निश्चयकरके सबलोग योग प्रकृति क सत्वादि गुणोंसे कर्म करतेहैं ।५। जो रागादि भरेहुये चित्त से कर्मेन्द्रियोंको स्वाधीन करके मनसे इन्द्रियोंके विषयोंका स्मरण करता हुआ ध्यान के बहाने से एकान्त में बैठाहै वह मिथ्या आचारवाला कहाजाता है । ६ । हे अर्जुन जो पुरुष मनसे ज्ञानेन्द्रियोंको स्वाधीन करके निष्काम कर्मीहो कर्मेन्द्रियोंसे कर्मयोग का प्रारंभ करता है वह पूर्वसेभी श्रेष्ठतरहै । ७ । तू नियम करके कर्मोंका कर सब कर्मेंद्रियोंका रोकने और कर्म के बिना चित्त शुद्धी न होनेसे कर्मही श्रेष्ठ है और चित्त शुद्धी होनेपर भी तुझकर्म न करने वाले क्षत्रीकी शरीर यात्राभी सिद्धनहीं होसक्ती । ८ । एक परमेश्वरके पूजनके लिये जो कर्म किया जाता है उससे स्वर्गादिकी इच्छारूपी

two paths That of those who follow the Sankhya, is the gyan yog, and the practical, or the karm yog is for the yogis. 3 The man enjoys not freedom from action, from the non commencement of that which he has to do, nor does he obtain happiness from a total inactivity 4 No one ever rests a moment inactive. Every man is involuntarily urged to act by those principles which are inherent in his nature. 5 The man who restrains his active faculties and sits down with his mind attentive to the objects of his senses, is called one of an astrayed soul and the practiser of deceit. 6 So the man is praised, who having subdued all his passions, performs with his active faculties all the functions of life, unconcerned about the event 7. Perform the settled functions action is preferable to inaction The journey of thy mortal frame may not succeed from inaction. 8 This busy world is engaged from

प्रसविष्यध्वमेषवोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ १० ॥ देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः । परस्परं भावयन्तः श्रेयःपरमवाप्स्यथ ॥ ११ ॥ इष्टान् भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः । तैर्दत्ता न प्रदायैभ्यो यो भुंक्तेस्तेनएवसः ॥ १२ ॥ यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । भुञ्जतेते त्वघंपापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥ १३ ॥ अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः । यज्ञाद्भवति पर्ज्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥ १४ ॥ कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् । तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥ एवं प्रवर्त्तितं चक्रं नानावर्चयतीहयः । अघायुरि-

अन्यकर्मों में प्रवृत्त होकर यह लोक कर्म बंधनमें फँसनेवाला है हे अर्जुन उस ईश्वर के आराधनके लिये तू निष्काम कर्मोंको करके वर्णाश्रम के योग्य बातोंको अच्छी रीतिसे कर । ९ । पूर्व समय में ब्रह्माजीने सब सृष्टिको यज्ञों समेत उत्पन्न करके कहा कि इसयज्ञ कर्मको तृप्तकरो और वह तुम्हारीवृद्धिकरें और तुम परस्परमें वृद्धि पाते हुए परम कल्याण को पाओगे । ११ । निश्चय करके यज्ञों से पूजित और तृप्त किये हुए देवता तुमको तुम्हारी रुचिके योग्य भोजन वस्त्रादि देंगे, जो पुरुष उन देवताओं के दियेहुये भोगोंको उन देवताओं के अर्पण न करके भोगताहै वह निश्चय चोर है । १२ । वैश्वदेव आदि यज्ञोंमें शेषबचेहुये अन्नादिको भोजनकरते हुए सब हत्यारूपपापोंसे छूटजातेहैं और जो केवल अपनेहीनिमित्त भोजनको बनातेहैं वहपापी अपनेपापोंको भोजन करतेहैं । १३ । अन्नसे जीव उत्पन्नहोतेहैं, अन्नकी उत्पत्ति वर्षासेहै और वर्षा यज्ञोंसे होतीहै और यज्ञ कर्मोंसे पैदा होनेवालाहै । १४। कर्मवेदसे और वेद अविनाशी ईश्वरसे उत्पन्न जानो इसहेतुसे सबदेश काल में वर्तमानरूप ईश्वर में सब नियमों समेत वेद और यज्ञ नियतहै । १५ । इस प्रकार

other motives than the worship of the Deity. Abandon then, O son of Kunti, all selfish motives, and perform thy duty. 9. When in ancient days Bramha created beings along with yajnas, he said: " With this, multiply; verily it is all desire giver. 10. With this serve the gods, that the gods may serve you. Serve one another, and ye shall obtain supreme happiness. 11. The gods being remembered in worship will grant you the enjoyment of your wishes. He who enjoys what has been given to him by them, and offers not a portion to them, is a thief. 12. Those who eat not but what is left of offerings, shall be purified of all their transgressions. Those who dress their meat but for themselves, eat the bread of sin. 13 All beings come from food; food is produced from rain; rain from yajna, and yajna is the result of actions. 14. Know that works come from body (Brahma,) whose nature is incorruptible; wherefore the omnipresent Brahma is present in the worship. " 15. The sinful mortal, who delights in the

न्द्रियारामो मोघ पार्थ सजीवति ॥ १६ ॥ यस्त्वात्मरतिरेवस्या दात्मतृप्तश्च मान
व.। आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्य्यं न विद्यते ॥१७॥ नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह
कश्चन। नचास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रय ॥ १८ ॥ तस्मादसक्त सततंकार्यं
कर्मसमाचर। असक्तोह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पूरुष ॥ १९॥ कर्मणैव हि ससिद्धि
मास्थिता जनकादय । लोकसग्रहमेवापि संपश्यन् कर्तुमर्हसि ॥ २० ॥ यद्यदाचरति
श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन. । स यत् प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते ॥ २१ ॥ नमेपा
र्थास्ति कर्त्तव्य त्रिषु लोकेषु किञ्चन। नानवाप्तमवाप्तव्य वर्त्तएवचकर्मणि ॥ २२ ॥

से सदैव जारी रहनेवाले चक्र में जो नियत नहीं होता अर्थात् यज्ञादि कर्म नहीं करता है हे अर्जुन वह पापरूप जीवनसे इंद्रियों में क्रीडा करनेवाला निरर्थक जीवताहै । १६ । परन्तु जो मनुष्य आत्मा में प्रीति रखनेवाला आत्मा में तृप्त और आत्माही में संतुष्ट है उसको कोई दूसरा कर्म करने के योग्य नहीं है । १७ । उस आत्मामें प्रीति रखनेवाले ज्ञानीको प्रयोजन कियेहुए कर्मों से कुछ भी नहीं है और इसके विपरीत कर्म सेभी उसको कुछ प्रयत्न नहीहै और उसके सुखभोग रूप प्रयोजनका कोई सम्बन्ध किसी जीवमात्र से नहीं है । १८ । इसी हेतुसे तू कर्म फलों से पृथक् होकर सदैव करने के योग्य कर्मोंको कर, फलकी इच्छा रहित कर्म करनेवाला पुरुष अन्तःकरण की शुद्धता से मोक्षपदार्थको पाताहै । १९ । कर्मकेही द्वारा जनकादि ने सिद्धी को पाया अर्थात् धर्म में लोककी संग्रहको देखता हुआ कर्म करनेको योग्यहै । २० । क्योंकि उत्तम पुरुष जो जो कर्म करतेहै उसी कर्म को दूसरे मनुष्यभी करतेहैं और वह श्रेष्ठ पुरुष जिस बातको प्रमाण करतेहै उसी को संसार करताहै । २१ । हे अर्जुन तीनों लोक में मुझको कोई बात करने के योग्य नहीं है अथवा प्राप्त और अप्राप्त होनेके भी योग्य नहीं है परन्तु तौभी मैं

gratification of his passions, and follows not the wheel, thus revolving in the world, lives but in vain 16 But the man who is self-delighted, self satisfied, and happy in his own soul, has nothing to do 17 He has no interest either in that which is done, or that *which is not done, and there is not in all things which have been* created, any object on which he may place dependance. 18 Wherefore, perform thou that which thou hast to do, at all times, unmindful of the event, for he who does his duty, without affection, obtains the Supreme. 19 JANAKA and others have attained perfection even by works. Thou shouldst also observe what is the practice of mankind, and act accordingly 20 The man of low degree follows the example of him who is above him, and *does that which he does.* 21 I *myself, Arjuna, have not, in the* three regions of the universe, any thing which is necessary for me to perform, nor any thing to obtain which is not obtained, and yet

यदिह्यहं नवर्त्तेयं जातुकर्मण्यतन्द्रितः । मम वर्त्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याःपार्थसर्वशः
॥ २३ ॥ उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्य्यां कर्म चेदहम् । सङ्करस्य च कर्त्ता स्यामु
पहन्यामिमाः प्रजाः ॥ २४ ॥ सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत। कुर्य्या
द्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥ २५ ॥ न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गि-
नाम्। जोषयेत् सर्व कर्माणि विद्वान् युक्तः समाचरन् ॥ २६ ॥ प्रकृतेः क्रियमाणानि
गुणैः कर्माणि सर्वशः । अहंकार विमूढात्माकर्त्ताहमिति मन्यते ॥ २७ ॥ तत्त्ववि-
त्तुमहाबाहो गुणकर्मविभागयोः। गुणागुणेषु वर्त्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥ २८ ॥

कर्महीको करताहूं । २२ । जो कदाचित् मैं आलस्यसे कर्मोंको न करूं तो हे अर्जुन सब मनुष्य सब रीति से मेरेही अनुसार चलनेलगें अर्थात् कर्मकरना छोड़दें । २३ । जो मैं कर्मोंको नहीं करुं तो यह सब लोक भ्रष्टहोजायें और मैंभी वर्णसंकरोंका ईश्वर कहलाऊं और इनसब प्रजाओंका नाश करदूं । २४ । हे भरतवंशी जैसे कि कर्मफल के चाहने वाले अज्ञानी लोग कर्मको करते हैं उसी प्रकार कर्म फलके न चाहने वाले ज्ञानीलोग लोक संग्रह अर्थात् संसार को धर्म में नियत करनेके लिये कर्म को करें । २५ । विद्वान् लोग कर्म में प्रवृत्त पुरुषोंकी बुद्धिको कर्म से पृथक् न करें योगीहोकर अच्छी रीतिसे आचरण करता हुआ सब कर्मों को करे और दूसरेसे करावे । २६ । सब प्रकार से प्रकृतिके सतोगुण रजोगुण तमोगुणसे किये हुए कर्म होते हैं जो अहंकारसे अज्ञान बुद्धीहै अपनेकोही कर्त्ता मानता है ।२७। हे महाबाहु जो पुरुष गुण और कर्मके विभागकी मुख्यताका जानने वालाहै और यह मानकर कि इन्द्रियां विषयों में वर्त्तिनी हैं इस से वह अपनेको कर्मका

I am engaged in work. 22. If I were not vigilantly to attend to these duties, all men would presently follow my example. 23. If I were not to perform actions this world would fail in their duty; I should be the cause of spurious births, and should drive the people from the right way. 24. As the ignorant perform the duties of life from the hope of reward, so the wise man, out of respect to the opinions and prejudices of mankind, should perform the same without moitves of interest. 25. He should not create a division in the understandings of the igorant, who are inclined to outward works. The learned man, by industriously performing all the duties of life; should induce the vulgar to attend to them. 26. The man whose mind is led astray by the pride of self-sufficiency, thinks that he himself is the executor of all those actitns which are performed by the principles of his constitution. 27. But the man who is acquainted with the nature of the two distinctions of cause and effect, having considered that principles will act according to their natures, gives up

प्रकृतेर्गुणसमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु । तानकृत्स्नविदो मन्दान् कृत्स्नविन्न विचाल येत् ॥ २९ ॥ मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा । निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥ ३० ॥ ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः । श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥ ३१ ॥ ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् । सर्वज्ञानविमूढांस्तान् विद्धि नष्टानचेतसः ॥ ३२ ॥ सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि । प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥ ३३ ॥ इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ । तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥ ३४ ॥ श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् । स्वधर्मे निधनंश्रेयः

कर्त्ता नहीं मानता है ।२८। प्रकृति के अहंकारादि गुणोंसे अज्ञानी पुरुष शरीरादिक गुण और कर्मोंमें आसक्तहै उन आत्मज्ञानसे रहित अल्पज्ञ पुरुषों को आत्मज्ञानी कर्मनिष्ठा से न हटावे।२९।मोक्षका चाहनेवाला विवेक बुद्धि से सब कर्मोंको मुझ सब के अन्तर्यामी में अर्पणकरै इस से हे अर्जुन तू कर्मफल में आशा रहित और प्राप्तवस्तुको अपनी न माननेवाला होकर शोकस विगत होकर युद्धकर । ३० । जो मनुष्य मेरेइस मत पर काम करतेहै और श्रद्धावान् होकर उस मे दोष दृष्टी नहीं करते वह धर्म अधर्म रुप कर्मों से छूटजाते है । ३१ । जो दोषलगाने वाले इसमरे मतपर कर्म नहींकरते है उनको ब्रह्मज्ञान में अत्यन्त अज्ञानी विवेक रहित स्वर्ग और मोक्षसे भ्रष्टहुए जानो ।३२। ज्ञानवान्‌भी अपने अनुसार चष्टाकरते हैं सब जीवमात्र अपने स्वभाव के अनुसार कर्म कर्त्ता होते है और मैंभी पूर्वकर्म के अनुसार उन स कर्म करताहूं । ३३ । परन्तु यहबात संभव है कि जो दोनों प्रकार की इन्द्रियों के विषयो में राग द्वेष अधिकता से नियत है तो उन दोनोंके स्वाधीन न होवे निश्चयहै कि वह दोनों राग द्वेष इस मोक्ष चाहने वाले के शत्रु है । ३४ । अपने धर्माश्रम के अनुसार

---

attachment. 28, Men who are led astray by the principles of their nature, are interested in the works of the faculties. The man who is all informed should not disturb the mis-informed ignorant. 29 Throw every deed on me and with a heart, over which the soul presides, be free from hope, be unpresuming be free from trouble, and resolve to fight 30 Those who with a firm belief, and without reproach, shall constantly follow this my doctrine, shall be released from works 31 But those who, holding it in contempt, follow not this my counsel, are astrayed from all wisdom, deprived of reason, and are lost. 32 The wise man acts upon the inclination of his own nature All things act according to their natures, what can restraint avail? In every purpose of the senses are fixed affection and dislike A wise man should not put himself in their power, for both of them are his opponents. 34 A man's

परधर्मो भयावहः ॥ ३५ ॥ अर्जुन उवाच । अथ केन प्रयुक्तोयं पापंचरति पूरुष ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजित ॥ ३६ ॥ भगवानुवाच ॥ काम
एषक्रोध एषरजो गुणसमुद्भव । महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥ ३७ ॥
धूमेनाव्रियतेवह्निर्यथा दर्शो मलेनच । यथोल्वेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्
॥ ३८ ॥ आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा । कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणान
लेनच ॥ ३९ ॥ इन्द्रियाणि मनोबुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते । एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमा
वृत्य देहिनम् ॥ ४० ॥ तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्यभरतर्षभ । पाप्मानं प्रजहि

अपना धर्म और गुण भी अच्छीरीति से किये हुए दूसरों के धर्मसे श्रेष्ठ है अपने युद्धादि कर्मों में मरना बहुत उत्तम है और दूसरे का धर्म महाभयकारी है । ३५ । अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी फिर किस से संयुक्त कियाहुआ यह पुरुष पापों को करता है और अनिच्छावान् होकर अपने बल से कर्म में प्रवृत्त हुआ मालूम होता है, । ३६ । श्री भगवान् बोले कि यह इच्छा रजोगुणसे उत्पन्न है यही क्रोधरूप होजाती है और यही इच्छारूप काम महाभोक्ता वा उग्ररूप भयकारी है इसको इसदेह में महाशत्रुरूपही जानो । ३७ । जैसे कि अग्नि धुएं से और दर्पण मैल से ढकजाते हैं और गर्भ जेर से ढका रहता है इसीप्रकार इस इच्छारूप कामसे यह ज्ञान भी ढकाहुआ है । ३८ । हे अर्जुन इस ज्ञानियों के पुराने शत्रु और अग्निके समान पूर्णहोने के अयोग्य इच्छारूप काम से ज्ञान ढकाहुआ है । ३९ । इस इच्छाका निवासस्थान इन्द्री मन बुद्धि है और यह इच्छारूपी काम उन सब के साथ ज्ञानको ढककर देहाभिमानी पुरुषको अत्यन्त मोह और भ्रान्ति में डालता है । ४० । इसकारण हे अर्जुन तुमप्रथम इन्द्रियोंको स्वाधीनकरके इस अत्यन्त भयंकारी

own religion, though contrary to, is better than the faith of an other, let it be ever so well followed. It is good to die in one's own faith, for another's faith is dangerous 35 ARJUNA, By what, O Krishna is man propelled to commit offences? It seems as if, contrary to his wishes, he was impelled by some secret force. 36 KRISHNA— Know that it is the enemy lust, or passion, off spring of the carnal principle, insatiable and full of sin, by which this world is covered as the flame by the smoke, as the mirror by rust, or as the foetus by its membrane 38 The understanding of the wise man is obscured by this inveterate foe, in the shape of desire, who rages like fire, and is hard to be appeased. 39 It is said that the senses, the mind and the understanding are the places where it delights most to rule. By the assistance of these it overwhelms reason, and stupefies the soul 40 Thou shouldst, therefore, first subdue thy passions, and get the better of this sinful

ह्येन ज्ञानावज्ञ ननाशनम् ॥ ४१ ॥ इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्य पर मन । मन
सस्तु परा बुद्धियों बुद्ध परतस्तुस ॥ ४२ ॥ एव बुद्ध परबुध्वा सस्तभ्यात्मान
मात्मना । जाह शत्रु महाबाहो कामरूप दुरासदम् ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्व्वणि भगवद्गीता सूपनिपत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे कर्मयोगोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

श्रीभगवानुवाच । इम विवस्वते योग प्रोक्तवानहमव्ययम् । विवस्वान् मनवे
प्राह मनुरिक्ष्वाकवेब्रवीत् ॥ १ ॥ एव परम्पराप्राप्त मिम राजर्षयोऽविदु । स कालेनेह
महता योगोनष्ट परन्तप ॥ २ ॥ स एवाय मया तेद्य योग प्रोक्त पुरातन ।
भक्तोसि मे सखाचेति रहस्यह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच । अपर भवतो

ज्ञान विज्ञानके नाश करने वाले कामको मूलसे नाशकरो । ४१ । इन्द्रियोंको उत्तम कहाहै, इन्द्रियोंसे उत्तम मन, मनसे उत्तम बुद्धि और जो बुद्धिसे भी उत्तम है वह काम कहाजाता है । ४२ । इसप्रकार परमात्माको बुद्धिसे श्रेष्ठ जानके बुद्धि के द्वारा मनको नियत करके कठिनतासेभी नाश न होनेवाले कामरूप शत्रुको मारडाल ॥ ४३ ॥

अध्याय ॥ ४ ॥

श्री भगवान् बोले हे अर्जुन यह दो प्रकारवाला अविनाशी ज्ञान मैंने सूर्यदेवता से कहाथा और सूर्य्य ने मनुजी से कहा और मनुने इक्ष्वाकुसे कहा ।१। इसप्रकार से परपरापूर्व्वक प्राप्तहुए इस योग को राजऋषियों ने जाना है हेशत्रुहन्ता योग इसलोक में बहुत कालसे गुप्त है । २ । उसी प्राचीन योग को अब मैंने तुझसे कहा है क्योंकि तू मेरा भक्त और सखा है निश्चयकरके यह उत्तम योग गुप्तकरनेके योग्य है

destroyer of wisdom and knowledge 41 The organs are esteemed great, but the mind is greater than they Resolution is greater than the mind, and desire is superior to resolution 42 When thou hast recognised what is superior to resolution and kept thy mind under control, determine to abandon the enemy in the shape of desire 43.

LECTURE IV

ON THE FORSAKING OF WORKS

Krishn—This never failing discipline I formerly taught to Vivaswan Vivaswan communicated it to Manu, and Manu made it known to Ikshwaku Being handed down successively, it was studied by the Rajarshis, but in the course of time, the yog was lost. 2 It is the same discipline which I have this day communicated to thee, because thou art my devotee and my friend It is an ancient and a

जन्म परं जन्म विवस्वतः । कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन । तान्यहं वेद सर्वाणि
नत्वं वेत्थपरन्तप ॥ ५ ॥ अजोपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोपि सन् । प्रकृतिं
स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥ यदायदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् । ७ ॥ परित्राणाय साधूनां विनाशायच
दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ८ ॥ जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं
यो वेत्तितत्त्वतः । त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोर्जुन ॥ ९ ॥ वीतरागभ-
यक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः । बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥ १० ॥

। ३ । अर्जुन बोले कि हे कृष्णजी आपका जन्म तो पीछेहुआ है और सूर्य्यका जन्म बहुत पहले हुआहै तो मैं यह कैसे जानं कि आपने सृष्टीकी उत्पात्ति के प्रारम्भ में कहा । ४ । श्री भगवान् बोले कि हे अर्जुन मेरे और तेरे अनेक जन्म हुए हैं उन सब को मैं जानता हूं तू नहीं जानताहै ।५। मैं अजन्मा अविनाशी सबजीव मात्रों का आत्मा और ईश्वर भी होकर अपनी प्रकृतिको स्वाधीन कर के अपनीही माया के साथ प्रकटहोताहूं । ६ । हे भरतवंशी जब जब धर्मकी न्यूनता और अधर्म की वृद्धिहोती है तब मैं अपनेको प्रगटकरके । ७ । साधुओंकी रक्षा और कुकर्मी पापा-त्माओंका नाश और धर्मके नियतकरन को प्रत्येक युग में प्रगट होताहूं । ८ । मेरा जन्म और कर्म दिव्यहै अर्थात् बनावट का नहीं है जो इस प्रकारसे मूल समेत जान-ताहै हे अर्जुन वह पुरुष शरीर को त्यागकर फिर जन्म नहीं लेताहै अर्थात् मुझको प्राप्त होकर मुझीमें लय होता है । ९ । और जिनलोगोंकी विषयोंमें प्रीति वा अपने मरणका भय, अपने पराये दुःख के क्रोध इत्यादिबातें दूर होगई हैं और मुझीको श्रेष्ठमानकर मेरी शरणागत होकर ज्ञानरूप तपसे पवित्रहैं ऐसे अनेक योगी मेरे भाव

supreme mystery. 3. Arjuna.—Seeing thy birth is posterior to that of Vivaswan, how am I to understand that thou hadst been formerly .the teacher of this doctrine ? 4. Krishna.—Both I and thou have passed many births. Mine are known to me, but thou knowest not of thine 5. Although I am not in my nature subject to birth or decay, and am the lord of all created beings; yet, having command over my own nature, I am made evident by my own power. As often as there is a decline of virtue, and an insurrection of vice and injustice, in the world, I make myself evident. 7. Thus I appear, from age to age, for the preservation of the just, the destruction of the wicked, and the establishment of virtue. 8. He, O Arjuna, who, from conviction, acknowledges my divine birth and actions to be even so, does not upon his quitting his mortal frame enter into another, for he enters into me. 9. Many who were free, from affection, fear, and anger, and, filled with my spirit, depend-

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् । मम वर्त्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थसर्वशः ॥ ११ ॥ काङ्क्षन्तः कर्मणांसिद्धिं यजन्त इह देवता । क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥ चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः । तस्य कर्त्तारमपि मां विद्ध्यकर्त्तारमव्ययम् ॥१३॥ न मां कर्माणि लिम्पन्ति नमेकर्मफले स्पृहा । इति मां योभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ॥ १४ ॥ एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः । कुरुकर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥ १५ ॥ किं कर्म किमकर्मेतिकवयोप्यत्र मोहिताः । तत्तेकर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १६ ॥ कर्मणोह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यञ्च विकर्मणः । अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥ १७ ॥

को प्राप्त हुएहैं अर्थात् मुझमें लयहोगयेहैं ।१०। जो पुरुष मुझ सर्वव्यापीको मित्रता वा शत्रुताके भावसे प्राप्तहोतेहैं मैंभी उनको उसीरीति से सम्मुख होताहूं ।११। इस नरलोकमें कर्मोंसे उत्पन्न लक्ष्मी धन पुत्रादि सिद्धी शीघ्रहोती है इस निमित्त यहां कर्मोंकी सिद्धिजाननेवाले पुरुष जो देवताओंको पूजते हैं वहभी मेरेही भक्तहैं ।१२। मैंने चारोंवर्णों को उनके गुण विभागों समेत उत्पन्न किया माया के योगसे मुझको उनकाभी स्वामी जानो और वास्तवमें अविनाशी और अकर्त्ता जानो ।१३। क्योंकि कर्म मुझको स्पर्श नहीं करते हैं और न मेरी कर्मफल में इच्छाहै जो पुरुष मुझको इस प्रकारसे जानता है वह कर्म बंधनको नहीं पाताहै ।१४। पूर्व समय के मोक्षचाहने वाले ज्ञानियोंने इसीप्रकार से जानकर कर्मोंको किया है इस कारण हे अर्जुन तूभी इन प्राचीन वृद्धों के कियेहुए कर्मको कर ।१५। कर्म क्याहै और अकर्म क्याहै इसके जानने में पंडितलोग भी मोहको प्राप्त होते हैं उनदोनों कर्म और अकर्मोंको मैं तुझसे कहताहूं जिनके जाननेसे तू इस अशुभ संसार से छूटजायगा ।१६। शास्त्रोक्त कर्म की गति भी जानने के योग्य है और शास्त्र से विरुद्ध

ed upon me, having been purified by the power of wisdom have entered into me. 10 I assist those men who in all things walk in my path, even as they serve me. 11. Those who wish for success to their works in this life, worship the Devatas. That which is achieved in this life, from works, speedily comes to pass. 12. Mankind was created by me of four kinds, distinct in their principles, and in their duties. Know me then to be the creator of mankind, uncreat-

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः। स बुद्धिमान् मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् १८॥ यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः। ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः १९॥ त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः। कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित् करोति सः ॥ २० ॥ निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः। शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥ २१ ॥ यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः। समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ २२ ॥ गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः। यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥ २३ ॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्मा

कर्म भी जानने उचित हैं और अकर्म अर्थात् न करने की भी गति जाननी चाहिये क्योंकि कर्म की गति कठिन है ।१७। जो पुरुष कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्मको देखता है वह मनुष्योंमें बुद्धिमान् महायोगी और सबकर्मों का करनेवाला है । १८ । जिस के सबप्रारंभ कर्म इच्छा और संकल्पसे रहितहैं और ज्ञानरूप अग्निसे कर्मोंको भस्म कर दिया है उसको ज्ञानीलोग पंडित कहते हैं । १९ । कर्मफल को त्यागकरके सदैव आत्मलाभ से संतुष्ट अहंकारादि से रहित है वहकर्म में अत्यन्त प्रवृत्तभी कुछ नहीं करता है । २० । जो याग ऐश्वर्यों को नहीं चाहता देह मन बुद्धि और सबइन्द्रियोंका जीतनेवाला है वह केवल शरीर संबन्धी कर्मोंको करता हुआ पापमें रहितहोताहै । २१ । बिना याचनाके मिलेहुए से संतुष्ट हर्षशोकसेरहित दूसरेकेलाभमें प्रसन्नहोनेवाला और सिद्धी असिद्धी में रूपान्तर दशाके बिना कर्म करके भी बंधन को नहीं प्राप्त होता है । २२ । असंग अर्थात् अपनेको अकर्ता माननेवाले कर्म फल की इच्छासे रहित यज्ञादिक कर्मों को ईश्वरार्पण करनेवाले ज्ञान निष्ठलोगों के संपूर्णकर्म नष्ट होजाते हैं । २३ । अर्पणके साधनमंत्रादिक

action, improper action and inaction. The path of action is full of darkness. 17. He who may behold, as it were, *inaction* in action, and *action* in inaction, is wise amongst mankind. He is a perfect performer of all duty. 18. Wise men call him a Pandit, whose every undertaking is free from desire, and whose actions are consumed by the fire of wisdom. 19. He abandons the desire of a reward of his actions; he is always contented and independent; and although he may be engaged in a work, he, as it were, does nothing. 20. He is unsolicitous, of a subdued mind and spirit, and exempt from every perception; and, as he does only the offices of the body, he commits no offence. 21. He is pleased with whatever he may by chance obtain; he has got better of duplicity, and he is free from envy. He is the same in prosperity and adversity; and although he acts he is not bound. 22. The work of him, who has lost all anxiety for the event, who has renounced all and stands with his mind subdued by spiritual wisdom, and who performs sacrifices has nothing else to do God is the

ग्नौ ब्रह्मणा हुतम् । ब्रह्मैव तेन गन्तव्य ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ २४ । दैवमेवापरे यज्ञ योगिन पर्युपासते । ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ २५ ॥ श्रोत्रादी नीन्द्रियाण्य ये संयमाग्निषु जुह्वति । शब्दादीन् विषयानन्ये इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥ २६ ॥ सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे । आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥ द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथा परे । स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतय संशितव्रता ॥ २८ ॥ अपाने जुह्वति प्राण प्राणे पान तथा परे । प्राणापानगती रुध्वा प्राणायामपरायणा ॥ २९ ॥ अपरे नियताहारा॰ प्राणान् प्राणेषु

ब्रह्मरूपही है और अर्पणके हव्य घृतादिक भी ब्रह्म है जो होम कियागया है वह ब्रह्म मेंही है जो अग्नि मे होमा है वह ब्रह्म में है होम करनेवाला और करानेवाला दोनों ब्रह्महै जो यजमानने हवन किया वह ब्रह्मनही कियाहै, जो ब्रह्म कर्म रूप समाधिकेद्वारा उस कर्मका फल मिलनेवालाहै वह भी ब्रह्मही है । २४ । कोई योगी देव यज्ञकी उपासना करतेहै कोई जीव यज्ञ को निरुपाधि रूप के द्वारा ब्रह्मरूप अग्नि मे हवन करते है यह उत्तम ज्ञान यज्ञहै कोई योगी श्रोत्रादि इन्द्रियों को संयम रूप अग्नियोंमे हवन करते हैं कोई शब्दादि विषयों को इन्द्रीरूप अग्नियों में हवन करते है ।२६। कोई योगी इन्द्रियो के सबकर्मो को या प्राणों के सब कर्मों को मन और बुद्धिकी उस संयमरूप अग्निमे जो ब्रह्मज्ञानसे प्रकाशमानहै हवन करते है ।२७। इसीप्रकार द्रव्य यज्ञ तपयज्ञ और योगयज्ञ है और सदेव वेदपाठन पठन में प्रीति रखना स्वाध्याय यज्ञहै और वेदके अर्थको अच्छी रीति से समझकर ब्रह्म में तदाकार रहना यह ज्ञान है इन यज्ञों के करने वाले अथवा उपाय करनेवाले तेजवंत है, । २८ । इसीप्रकार कोई २ योगी अपान में प्राण को हवन करते है अर्थात् रेचक करते है और प्राण अपानकी गति को रोक कर प्राणायाम में प्रवृत्त है विषयों को स्वाधीन करने वाले अर्थात् विषयों के आधीन न होने वाले कोई२

gift of charity, God is the offering God is in the fire of the altar, by God is the sacrifice performed and God is to be obtained by him who makes Him alone the object of his work 24 Some of the devout attend to the worship of the Devatas others with offering, direct their worship unto God in the fire others sacrifice their ears, and other organs, in the fire of constraint, whilst some sacrifice sound and the like, in the fire of their organs 26 Some again sacrifice the action of all their organs and faculties in the fire of self cons traint, lighted up by the spark of inspired wisdom 27 Some sacrifice wealth some sacrifice asceticism, some sacrifice yog some sacrifice self study, and some yatis of fixed resolve perform sarifices of wisdom 28 Some there are who practice pranayam, observing food restrictions, sacrifice pran in apan and apan in pran, and restraining

जुह्वति । सर्वेप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ३० ॥ यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् । नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे । कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ॥ ॥ ३२ ॥ श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप । सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥ ३३ ॥ तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया । उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥ यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव । येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ॥ ३५ ॥ अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्य

योगी मन इन्द्री को मन चित्त अहंकार में क्रम पूर्वक हवन करते हैं तब इनकी समाधि सिद्धी होती है इन सब यज्ञोंके प्राप्त करनेवालेभी अपने यज्ञों के द्वारा पापों में निवृत्त होते हैं अर्थात् इन यज्ञोंका फल पापों से पृथक् होना है । ३० । पञ्चमहायज्ञ में शेष बचेहुये अमृत नाम अन्न के भोजन करने वाले चित्त शुद्धी के द्वारा सनातन ब्रह्मको पाते हैं, हे कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुन यज्ञ न करनेवाले पुरुषको जबयही लोक नहीं है तो परलोक कहांसे होसक्ते हैं । ३१ । इस प्रकार करके वेद के मुख से फैलेहुए अनेक यज्ञ हैं उनसबको कर्मों से उत्पन्नहुआ जानकर तत्त्व ज्ञानके द्वारा तू मुक्तिको पावेगा । ३२ । हे शत्रुतापी जो द्रव्य मय यज्ञ होते हैं उनसे ज्ञानयज्ञ बड़ा श्रेष्ठ है क्योंकि सबकर्म अपने फलोंसमेत संपूर्णता पूर्वक ज्ञान मेंही समाप्त होजाते हैं । ३३ । उस ब्रह्मज्ञान को जानकर शास्त्र जाननेवाले वा अनुभव करनेवाले ज्ञानी तेरी दण्डवत् वा सेवा और पूर्वप्रश्नके द्वारा उपदेश करेंगे । ३४ । हे पाण्डव उसे ब्रह्मज्ञानको जानकर फिर इसप्रकार मोहको नहीं पावेगा तदनन्तर उसब्रह्मज्ञान के द्वारा ब्रह्मासे लेकर तृणपर्यंत जीव मात्रको अपने में

both the currents (pran and apan) sacrifice pran in pran All these different kinds of worshippers are by their particular modes of worship, purified from their sins 30 He who enjoys but the Amrita which is left of his offerings, obtains the eternal Bramha. This world is not for him who does not worship, and where, O Arjuna, is there another? 31 A great variety of modes of worship emanate from the mouth of God Learn that they are all the offspring of action Being convinced of this, thou shalt obtain an eternal release 32 The spiritual wisdom is far better than the worship with offerings of things In wisdom is to be found every work without exception 33 Seek then this wisdom with prostrations with questions, and with attention that those learned men who know its principles may instruct thee in its rules 34 Having learnt it, thou shalt not again, O son of *pandu* fall into folly and shalt

पापकृत्तम. । सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥ ३६ ॥ यथैधांसि समिद्धोऽग्नि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन । ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा ॥ ३७ ॥ न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते । तत् स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥ ३८ ॥ श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः । ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ३९ ॥ अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति । नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥ ४० ॥ योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् । आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ॥ ४१ ॥ तस्मादज्ञानसम्भूत

और फिर मुझ में देखेगा । ३५ । जो सब पापों से भी अधिक पाप का करनेवाला है तौ भी ज्ञानरूपी नौका के द्वारा पापरूपी सब समुद्रों को तर जायगा । ३६ । जैसे महाप्रबल अग्नि इंधन को भस्मकरदेती है उसी प्रकार ज्ञानरूपी अग्नि सब कर्मोंको भस्म करडालती है ।३७। इसलोक में ज्ञानके सिवाय कोई पवित्रता वर्त्तमान नहीं है निष्काम यज्ञों से पूरी शुद्धता पाकर योगी उस ज्ञानको बहुत समय में अपने में पाताहै। ३८। श्रद्धावान् अच्छा जितेन्द्री उस ज्ञानको पाताहै और ज्ञानको पाकर प्रारब्धादि कर्मो के समाप्त होनेमें कैवल्य मोक्षरूप परा शान्ती को पाता है । ३९ । अज्ञानी श्रद्धा से रहित मन में सन्देह रखने वाले नाशको पाते है चित्त में सन्देह रखने वालों को न यह लोक है न परलोक है और न सुख है । ४० । हे अर्जुन योग से कर्मफल के त्यागने वाले अथवा कर्मको ही त्यागनेवाले ज्ञान संशय से रहित शम दमादि के करने वाले आत्मवान् का कर्म बंधन नहीं करसक्ते है । ४१ । हेभरत

---

behold all nature in thyself and then in me 35 Although thou wert the greatest of all offenders, thou shalt be able to cross the gulf of sin with the bark of wisdom 36 As the natural fire, O *Arjuna*, reduces the wood to ashes, so may the fire of wisdom reduce all immoral actions to ashes 37 There is not any thing in this world to be compared with wisdom for purity He who is perfected by practice, in due time finds it in his own soul 38 He who has faith finds wisdom, and, above all, he who has got the better of his passions, and having obtained this spiritual wisdom he shortly enjoys supreme peace. 39 The ignorant, and the man without faith, whose spirit is full of doubt, is lost. Neither this world nor that which is above, nor happiness, can be enjoyed by the man of a doubting mind. 40 The human actions have no power to confine the spiritual mind, which by study, has forsaken work, and which, by wisdom, has cut asunder the bonds of doubt. 41 Where-

हत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः । छित्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥ ४२ ॥
इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुन संवादे यज्ञविभागयोगोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
अर्जुन उवाच ॥ संन्यास कर्मणां कृष्ण पुनर्योगञ्चशंससि । यच्छ्रेय एतयो रेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सन्यासः कर्म योगश्च निःश्रेयसकरा वुभौ । तयोस्तु कर्म संन्यासात् कर्मयोगो विशिष्यते ॥ २ ॥ ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी योनद्वेष्टि न कांक्षति । निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात् प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः । एकमप्यास्थितः सम्य गुभयोर्विंदते फलम् ॥ ४ ॥

वंशी इसीकारण इस अज्ञान से उत्पन्न हृदय में नियत अपने संशयको ज्ञानरूपी खड्ग से काटकर निष्काम कर्म योग में नियतहो ॥ ४२ ॥

अध्याय ॥ ५ ॥

अर्जुन बोले कि हे श्रीकृष्णजी आप कर्मोंके त्यागको कहकर फिर योगकर्म करने को कहतेहो इनदोनों में से कौनसा आपने श्रेष्ठतम निश्चय कियाहै उसको मुझे समुझाइये । १ । श्रीभगवान् बोले कि कर्मों का त्याग और कर्मों का करना यह दोनों ज्ञानकी उत्पत्ति के कारण हैं परन्तु इनदोनों में कर्म करना कर्मके त्याग से श्रेष्ठ है । २ । हे महाबाहु वह सदैव नियत रहने वाला संन्यासी जानने के योग्य है जो न इच्छा करता है न अलग होताहै और विभाग वा द्वन्द्वों से पृथक् है वह सुख पूर्वक मायाके बंधनसे छूटताहै । ३ । अज्ञानी पुरुष ब्रह्मज्ञानरूप सांख्य और कर्म के अनुष्ठानरूप योगको पृथक् २ कहते हैं पंडित नहीं कहते हैं क्योंकि एकमेंभी नियत दोनोंके फलोंको अच्छी रीतिसे पाताहै । ४ । जो मोक्षरूप

fore, O son of Bharata, resolve to cut asunder this doubt, offspring of ignorance, which has taken possession of thy mind, with the sword of wisdom, arise and practise yog. 42.

LECTURE V

Renunciation of Works

Arjuna—Thou now speakest, O Krishna, of the forsaking of works, and now again of performing them. Tell me positively which of the two is better. 1. KRISHNA—Both the renunciation and the practice of works are equally the means of extreme happiness; but of the two the practice of works is to be distinguished above the desertion. 2. The perpetual recluse, who neither longs nor hates, is worthy to be known. Such a one is free from duplicity, and is happily freed from the bond of action. 3. Children only, and not the learned, speak of the speculative and the practical doctrines as two. They are but one, for both obtain the self-

यत् सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते । एकं सांख्यञ्च योगञ्च यः पश्यति स पश्यति ॥ ५ ॥ सन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः । योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म न चिरेणाधि गच्छति ॥ ६ ॥ योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेंद्रियः । सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥७॥ नैव किंचित् करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् । पश्यन् शृण्वन् स्पृशन्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन् स्वपन् श्वसन् ॥ ८ ॥ प्रलपन् विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्त्तन्त इति धारयन् ॥ ९ ॥ ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः । लिप्यते न स पापेन पद्मपत्र मिवाम्भसा ॥ १० ॥ कायेन मनसा बुद्ध्या केवलै रिन्द्रियैरपि । योगिनः कर्म कुर्वंति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ ११ ॥

स्थान ज्ञानियोंको प्राप्त होताहै वह ज्ञानके द्वारा कर्म योगियोंकोभी प्राप्त होताहै ब्रह्मज्ञान और कर्मयोग यह दोनों एकहीहैं जो देखताहै वही अच्छी रीतिसे समझताहै । ५ हे अर्जुन विना कर्मयोगके संन्यास होना बड़ा कठिनहै और कर्म योगमें प्रवृत्त हुआ मुनि थोड़ेही समयमें ब्रह्मको पाता है । ६ । जो योग मे संयुक्त है और जिसकी चैतन्य आत्मा रागि सारूप्य दोष से रहित है और जिसने मनको जीतकर इन्द्रियोंको जीताहै और सब जड़चैतन्य जीव मात्रोंका आत्मारूपहै वह कर्मोंको करता हुआभी उनसे असंग औरनिर्लेप करताहै । ७ । तत्वज्ञ योगी देखता, सुनता, स्पर्श करता सूंघता खाता चलता सोता श्वासलेता बोलता त्याग करता ग्रहण करता आंखोंको खोलता मींचताभी यही मानता है कि मैं कुछनहीं करताहूं।८। और जो ज्ञानी कर्मों को ब्रह्ममें धारण करके अथवा फलों को त्यागकर कर्मोंको करता है वहभी पापोंसे संयुक्त ऐसे नहीं होताहै जैसे कि कमलका पत्ता पानीमे नहीं भीगता । १० । योगी कर्मफलको त्याग कर चित्त शुद्धी के निमित्त ममतासे

---

same end 4. The place which is gained by the followers of the one, is gained by the followers of the other That man sees, who sees that the speculative doctrines and the practical are but one. 5 To be a *Sanyasee*, or recluse, without application, is difficult, whilst the Muni, who is employed in the practice of his duty, presently obtains Bramha, the Almighty 6. He who, employed in yog, is pure minded and has control over his mind and passions, and whose soul is the universal soul, is not tainted though he works.7. The attentive man, who is acquainted with the connection of senses with their objects, thinks that he does nothing although he is engaged in seeing, hearing, touching, smelling, eating, walking, sleeping, breathing, grasping, talking, opening and closing his eyes 9. The man who, performing the duties of life, and quitting all interest in them, ascribes them to Bramha, is not tainted by sin; but remains like the leaf of the lotus unaffected by the waters 10 Yogis perform the offices of life with their bodies, minds, understandings, and senses

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् । अयुक्तः कामकारेण फलेसक्तो
निबध्यते ॥ १२ ॥ सर्वकर्माणि मनसा सन्न्यस्यास्ते सुखं वशी । नवद्वारे पुरे देही
नैव कुर्वन्नकारयन् ॥ १३ ॥ न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः । न कर्मफल
संयोगं स्वभावस्तु प्रवर्त्तते ॥ १४ ॥ नादत्ते कस्यचित् पापं न चैव सुकृतं विभुः ।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥१५। ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः । तेषामा
दित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥ १६ ॥ तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत् परा
यणाः । गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ १७ ॥ विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे

रहितमन वाणीदेह और इन्द्रियों के द्वाराभी कर्म को करतेहै । ११ । योगी कर्म फलको छोड़कर शान्तीको पाता है और अयोगी चित्तकी इच्छाके अनुसार कर्मफल में प्रवृत्तचित्त होकर वारंवार बंधन में पड़ता है । १२ । चित्तका जीतनेवाला देहाधीश आत्मा नवद्वारवती पुरीमें नकरता न कराता हुआ सबकर्मो को मनसे त्यागकर सुखपूर्वक बैठा है । १३ चैतन्यात्मा प्रभु लोक के कर्तृत्व वा कर्मत्व और कर्म फलके संगको उत्पन्न नहीं करता है किन्तु जिसका जैसास्वभाव है वह उसीप्रकार से कर्मो को करता है । १४ । वह व्यापक ईश्वर किसीके पाप पुण्यको नहीं लेता है अज्ञान से ज्ञान ढका हुआहै इसी कारण जीव मोहको पाते है । १५ । जिन लोगो के आत्मा का वह अज्ञान ज्ञानके द्वारा दूरहोगयाहै उनका ज्ञान सूर्य के समान प्रकाशमानहोकर परम आत्म तत्त्वको प्रकाशित करता है । १६ । उस परम तत्त्व में बुद्धि वा आत्माको लगानेवाले उसीम निष्ठावान् और आश्रय करनेवाले योगी जिनके कि पाप ज्ञानसे नाशहुए है वह मोक्ष को पाते है । १७ । जो ब्रह्मज्ञानी पंडित है वह विद्या और

and forsake the consequences for the purification of their souls• 11. Although employed, they forsake the fruit of actions and obtain infinite happiness, whilst the man who is unemployed, being attached to the fruit by desire, remains bound 12 The man who has his passions in subjection, and with his mind forsakes all works, his soul sits at rest in the nine gated city (body), neither acting, nor causing to act 13. The Almighty creates neither the powers nor the deeds of mankind, nor the application of the fruits to action nature prevails 14. The Almighty receives neither the vices nor the virtues of any one Mankind are led astray by their reasons being obscured by ignorance 15 But when that ignorance of their souls is destroyed by knowledge, their wisdom shines forth again with the glory of the sun, and causes the Deity to appear 16 Those whose understandings are in him, whose souls are in him, whose confidence is in him, and whose asylum is in him, are by wisdom purified from all their offences and go from whence they shall never return 17, The learned behold him alike in the Brahmans, per-

गवि हस्तिनि । शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ १८ ॥ इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः । निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥१९॥ न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम् । स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥ २० ॥ बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् । स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षय्यमश्नुते ॥ २१ ॥ ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते । आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥ २२ ॥ शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक् शरीरविमोक्षणात् । कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥२३॥ योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरे

नम्रता से भरेहुए ब्राह्मण गौ हाथी श्वान और चांडालमें समान ब्रह्मके देखने वाले हैं ।१८। जिनका मन सब जीवमात्रों में ब्रह्मभाव रूपी समता से नियतहै वह इसी लोकमें अपने जन्म को सफल करतेहैं, निश्चय ब्रह्म दोष से रहित सम बुद्धी है इस समता बुद्धि से वह ब्रह्ममेंही नियतहैं ।१९। अभीष्टको पाकरभी प्रसन्न न होय और दुखदायी को पाकर व्याकुल न होजाय ब्रह्ममें नियत बुद्धि और ध्यानके द्वारा उत्पन्न होनेवाले मोहसे रहित ब्रह्मज्ञ और ब्रह्ममें नियत होजाय ।२०। बाहर उत्पन्न होने वाले स्पर्श अर्थात् विषय में चित्त न लगानेवाला पुरुप जो सुख आत्मा में पाताहै वह ब्रह्म योग में प्रवृत्त बुद्धि अर्थात् ब्रह्म ज्ञानी मोक्षरूप अविनाशी सुखको पाता है, ।२१। हे अर्जुन विषयों के योग से उत्पन्न होनेवाले जो भोगहैं वह दुःखके उत्पत्ति स्थान हैं क्योंकि आदि अन्त अर्थात् उत्पत्ति नाश रखनेवालेहैं उनमें ज्ञानी पुरुष नहीं रमताहै ।२२। जो मनुष्य इसलोकमें देह त्याग से प्रथमही इच्छासे वा क्रोधसे उत्पन्न होनेवाले वेगको सहताहै वही योगीहै और सुखी है, ।२३। जो आत्मामें सुख माननेवाला विषयोंसे वैराग्यवानहै अथवा आत्माही में क्रीड़ा करने

fected in knowledge, in the ox, in the elephant, in the dog, and in him who eats of the flesh of dogs. 18. Those whose minds are fixed on this equality, gain eternity even in this world. They put their trust in Bramha, the Eternal, because he is everywhere alike, free from fault. 19. The man who knows Bramha confines in Bramha, whose mind is steady and free from folly, should neither rejoice in prosperity, nor complain in adversity. 20. He whose soul is unaffected by the impressions made upon the outward feelings obtains pleasure in his own mind. Such a one, whose soul is thus fixed upon the study of Bramha, enjoys pleasure without end. 21. The enjoyments which proceed from the feelings are as the wombs of future pain. The wise man who is aquainted with the beginning and the end of things, delights not in these. 22. He who can bear up against the violence which is produced from lust and anger in this mortal [illegible] 23. The Yogi who is [illegible]

वय । स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोधिगच्छति ॥ २४ ॥ लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः
क्षीणकल्मषाः । छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥ २५ ॥ कामक्रोधवियुक्तानां
यतीनां यतचेतसाम् । अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्त्तते विदितात्मनाम् ॥ २६ ॥ स्पर्शान्
कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः । प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ
॥ २७ ॥ यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त
एवसः ॥ २८ ॥ भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् । सुहृदं सर्वभूतानां
ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥ २९ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि संन्यासयोगोनाम

पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

सा त्वा स्त्री आदि से रहितहै और उसकी क्रीड़ा के सामानभी आत्मारूपहैं वह जीवन्मुक्तयोगी देवयान पितृयान संबंधी ब्रह्मको पाता है । २४ । जो पापों से और संशयोंमे रहित सब जीवों के हितकारी है वह ब्रह्मज्ञानी ऋषि ब्रह्मनिर्वाण को पाते हैं । २५ । और काम क्रोधमे रहित चित्तके जीतनेवाले ब्रह्मज्ञानी संन्यासी सबदशाओं में मोक्षको बरतने हैं । २६ । आत्मा से बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयोंको बाहर करके और नासिका के भीतर रहनेवाले प्राण और अपानको समान कर के अर्थात् प्राणायाम करके, जो मुनि इन्द्रीमन और बुद्धिका जीतनेवाला वा मोक्षको उत्तमस्थान जाननेवाला इच्छाभय क्रोधसे रहितहै वह सदव मुक्तहै इस प्रकार सावधान चित्तज्ञानी को क्या जानना चाहिये उसको कहते है—उपाधि युक्त स्वामी देवरूप से यज्ञ और तपोंके भोक्तासबलोकों के पितामह सूक्ष्मअन्तर्यामी को जान कर अर्थात् साक्षात्कार करके मेरेभावको पाकर कैवल्य मोक्षरूप शान्तीको पाताहै।२९।

---

within, attains Brahma-Nirvan. 24 Such Rishees as are purified from their sins freed from doubt, of subdued minds, and interested in the good of all mankind, obtain the incorporeal Brahma 25. The incorporeal Brahma is everywhere for such as are free from lust and anger, of humble minds and subdued spirits, and who are acquainted with their own souls 26 Shutting out all outward contact, with eyes fixed between his brows, who makes the breath to pass through both his nostrils alike in expiration and inspiration, who is of subdued faculties, mind and understanding, and has set his heart upon salvation, and who is free from lust, fear and anger, is for ever blessed in this life, and being convinced that I am the cherisher of religious zeal, the lord of all worlds, and the friend of all nature, he shall obtain me and be blessed. 29

श्री भगवानुवाच ॥ अनाश्रितः कर्म फलं कार्यं कर्म करोति यः। स सन्यासी च योगी च न निरग्निर्नचाक्रियः ॥ १ ॥ यं सन्यासमिति प्राहुर्योगन्तं विद्धि पाण्डव । न ह्यसन्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन ॥ २ ॥ आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारण मुच्यते । योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥ ३ ॥ यदाहि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते । सर्वं संकल्पसन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥ उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् । आत्मैव ह्यात्मनोबन्धु रात्मैव रिपुरात्मनः ॥ ५ ॥ बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः । अनात्मनस्तुशत्रुत्वे वर्त्तेतात्मैवशत्रुवत् ॥ ६ ॥ जितात्मनः प्रशा

अध्याय ॥ ६ ॥

श्रीभगवान् ने कहा कि जो कर्म फलका आश्रय न करने वाला करने के योग्य कर्मको करताहै वही संन्यासी है वही योगी है यद्यपि वह वेद और स्मृति संबंधी अग्निको और मनवाणी देहकी क्रियाओंको त्याग करनेवाला नहीं है ।१। जिसको कि संन्यास कहते हैं हे पांडव उसको योगजान संकल्पको त्यागन करने वाला कोई योगी नहीं होता है । २ । ज्ञान योगपर चढ़नेकी इच्छा रखनेवाले मुनिका साधन कर्म कहा है और उसीज्ञान योगपर चढ़ेहुएका साधन कर्मोका त्याग रूप संन्यास कहा है । ३ । जब सब संकल्पोंका अच्छी रीतिसे त्याग करनेवाला कर्म योगी इन्द्रियोंके विषय और कर्मोंमें तदाकार नहीं होताहै तब ज्ञान योगपर चढ़ाहुआ कहाजाता है । ४ । आत्माके द्वारा आत्माको उद्धारकर कभी आत्माका विनाश न करे क्योंकि आत्माही आत्मा का बन्धु और शत्रुहै । ५ । आत्माका बंधुमन है जिसने मन के द्वारा चित्तको जीता है, और जिसने चित्तको नहीं जीता उसकामन शत्रु के समान शत्रुता में नियत होता है । ६ । शीतोष्णता सुख दुःख

LECTURE VI

Of the exercise of soul

Krishna—He is both a *Yogee* and a *Sanyasee*, who performs work as a duty, independent of its fruit, not he who lives without the sacrificial fire and without action 1 Learn, O son of *Pandu* that what they call *Sanyas*, or a forsaking of the world, is the same as *Yoga* He cannot be a *Yogee*, who, in his actions, has not abandoned all intentions. 2 Works are said to be the means for a yogee, so rest is called the means for him who has attained devotion. 3 When the all contemplative *Sanyasee* is not engaged in the objects of the senses, nor in works, then he is called one who has attained devotion. 4 He should raise himself by his mind he should not suffer his soul to be depressed. Self is the friend as well as the enemy of self. 5 Self is the friend of him who has subdued it, but a foe to him who has not conquered the mind 6 The soul of the placid

न्तस्य परमात्मा समा हितः । शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा माना पमानयोः ॥ ७ ॥ ज्ञान
विज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेंद्रियः । युक्तइत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकांचनः ॥८॥
सुहृन्मित्रार्युदासीन मध्यस्थ द्वेष्य बन्धुषु । साधुष्वपिच पापेषु समबुद्धि र्विशिष्यते ९
योगी युंजीत सततमात्मानं रहसि स्थितः । एकाकी यतचित्तात्मा निराशीर परिग्रहः
॥ १० ॥ शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमास नमात्मनः । नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैला जिन
कुशोत्तरम् ॥ ११ ॥ तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रिय क्रियः । उप विश्यासने युंज्या
द्योगमात्म विशुद्धये ॥ १२ ॥ समं काय शिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः । सम्प्रेक्ष्य ना-

मानापमानमें निर्विकार चित्त महाशान्त योगी का मन बड़ी समाधिको पाता है । ७ । वह शास्त्रोपदेश से उत्पन्न बुद्धिरूपज्ञान और विज्ञानसे तृप्तचित्त मोक्ष के अधिकारसे डिगायमान न होनेवाला अर्थात् निर्विकारहोकर इन्द्रियों का जीतने वाला सब लोहा सोना पत्थर आदिको समान जाननेवाला योग सिद्ध पुरुष योगी कहा जाता है । ८ । प्रतीकार बुद्धि बिना उपकार करने वाला शत्रु मित्र में सम भाव प्रिय अप्रिय और साधु असाधु इन सब में समान बुद्धि रखने वाला इन्द्रियों समेत देह मनका जीतनेवाला निरपेक्ष योगाभ्यासी एकान्तमें बैठा हुआ सदैव बुद्धीको आत्मामें लगावे । १० । पवित्र स्थान में अपना ऐसा अचल आसन बिछाकर जो न बहुत ऊंचा न नीचा कुशाका बनाहुआ अथवा कुशाके ऊपर मृगचर्म उसके ऊपर सूत्रवस्त्र बिछाहो । ११ । चित्त की क्रिया और इन्द्रियों की क्रियाओं को विजय करनेवाला योगी उस आसन पर बैठकर मनको एकाग्र करके अन्तःकरण की अत्यन्त पवित्रता के लिये योग का अभ्यास करे । १२ । और मूलाधारसे मस्तक तक सीधा और निश्चल नियत होकर अपने नासाग्र को देखता हुआ दिशाओं को न देखताबैठे । १३ । और उस आसन पर बैठकर ब्रह्म-

conquered spirit is uniform in heat and cold, in pain and pleasure, in honor and disgrace. 7. The man whose mind is replete with divine wisdom and learning, who is constant and has subdued his passions, is said to be devout. To the *Yoge*, gold, iron, and stones, are the same. The man is distinguished who regards impartially his companions, friends, enemies strangers, neutrals, foreigners, kinsmen, saints or sinners. 9. Let the *Yogee* constantly exercise self-concentration, alone and in secret, checking the thoughts of the mind and free from hope and greed. 10. In a pure place, on the firm ground, neither too high nor too low, let him prepare a seat made of Kusha grass covered with deer skin and a cloth. There having made the mind one pointed, restraining all activities of the mind and the senses, let him practise concentration for the purification of his soul. 12. Keeping his head, his neck, and body, steady without motion, his eyes fixed on the point of his nose, looking at no

रसकाग्र स्व दिशश्चानवलोकयन् ॥ १३ ॥ प्रशांतात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थित ।
मन संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्पर. ॥ १४ ॥ युञ्जन्नेव सदात्मान योगीनियत
मानस । शान्ति निर्वाणपरमं मत्संस्थामधिगच्छति ॥ १५ ॥ नात्यश्नतस्तु योगोस्ति न
चैकान्तमनश्नत । न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥ १६ ॥ युक्ताहार विहार
स्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु । युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दु खहा ॥ १७ ॥ यदा
विनियत चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते । निस्पृह सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ १८ ॥
यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता । योगिनो यत चित्तस्य युञ्जतो योगमा
त्मन । १९ ॥ यत्रोपरमते चित्त निरुद्ध योगसेवया । यत्र चैवात्मनात्मान पश्यन्ना
त्मनि तुष्यति ॥ २० ॥ सुखमात्यान्तिक यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् । वेत्ति यत्र न

चर्य्य व्रत में नियत योगी संन्यासी मुझ में चित्त लगानेवाला अपने मनको स्वाधीन करके मुझको सर्वोत्तम जानने वाला होवे । १४ । वह अत्यन्त शान्त चित्त सदैव मनको जीतने वाला योगी इस रीतिसे आत्मा को परमात्मामें एकता को करता हुआ मोक्ष निष्ठावाली शान्ती जोकि मुझ में वर्त्तमान है उसको पाता है । १५ । हे अर्जुन बहुत भोजन करने वाले का भी योग नहीं होता और बहुत कम खाने वाले का भी नहीं होता और अत्यन्त सोने और जागने वाले का भी नहीं होता । १६ । जिसका कि आहार विहार योग्य रीति से है और कर्मों में भी चेष्टा योग्यहै सोना जागनाभी योग्यहै उसका योग दुःखो का दूर करनेवाला होताहै । १७ । जब अच्छी रीतिसे जीता हुआ चित्त आत्मा मेंही नियत होता है और सब कामनाओं से इच्छा रहित होता है वह योगी निर्विकल्प कहाजाता है । १८ । जैसे कि दीपक निर्वात स्थान मे रक्खाहुआ नहीं हिलता है वैसेही चित्त जीतनेवाले और समाधि का अनुष्ठान करनेवाले योगीको जानो । १९ । रुकाहुआ एकाग्र चित्त जिस दशामें लय होताहै अथवा जहां चित्त से आत्माको निर्विकल्प देखताहुआ आत्माही में तृप्त होताहै बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयोमे नहीं होता जो बड़ा ब्रह्मानन्द रूप

o her place around 13 The peaceful soul, fearless, firm in the vow of Brahmcharya, he should restrain the mind, and, fixing it on me, depend on me alone 14 The *Yogee*, ever uniting his mind in me, becomes mind disciplined and obtains happiness incorporeal and supreme in me 15 Meditation cannot be for him arjuna, who eats much or fasts much, him who is addicted to excessive sleeping or excessive waking 16 Meditation destroys pain to him who is moderate in eating, and recreation, whose inclinations are moderate in action, and who is moderate in sleep and waking 17 A man is called harmonised when his mind is fixed within himself, and he is exempt from every lust and desire 18 The *Yogee* of a subdued mind, thus employed in the exercise of his devotion, is compared to an undeceiving flame, standing in a place without wind. 19 That (yog) wherein the restrained mind finds delight, that wherein

चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥ २१ ॥ यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।
यस्मिन् स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ॥ २२ ॥ तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं
योगसंज्ञितम् । स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥ सङ्कल्पप्रभवान्
कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः । मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ॥ २४ ॥
शनैः शनैरुपरमेद् बुद्ध्या धृतिगृहीतया । आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्त
येत् ॥ २५ ॥ यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् । ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव
वशं नयेत् ॥ २६ ॥ प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् । उपैति शान्तरजसं
ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥ २७ ॥ युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः । सुखेन ब्रह्मस

सुख इन्द्रियों से बाहर ब्रह्म ज्ञानरूपी बुद्धि के द्वारा प्राप्त करने के योग्य है और इस सुख में नियतहै वह ब्रह्म के सिवाय दूसरी वस्तु को नहीं जानता है और तत्त्व से पृथक् नहीं होताहै । २१ । इस बड़े लाभ को पाकर उससे अधिक लाभ को नहीं मानता है और इस में प्रवृत्त चित्त होकर पुरुष बड़े दुःखों के कारण से भी पृथक् नहीं कियाजाता है । २२ । उसको दुखों के संग से पृथक् करने वाला योग नाम जाने जिसका चित्त वैराग्य के द्वारा दुख सुखादिका सहनेवालाहै उस से वह योग निश्चय समेत अनुष्ठान करने के योग्य है । २३ । संकल्प से उत्पन्नहुई सब इच्छाओं का सब वासनाओं समेत त्याग करके और चित्त के द्वारा इन्द्रियों के समूह को चारों ओर से रोककर । २४ । अथवा धृति से स्वाधीन कीहुई बुद्धिके द्वारा धीरे २ निमित्त करे और उस मनको आत्मा में नियत करके कुछ भी चिन्तवन न करे।२५। यह चंचल और अस्थिर मन जहां जहां विषयोंमे जावे वहा वहां से रोककर उसको आत्मा के स्वाधीन करे । २६ । इस अत्यन्त शान्तचित्त रजोगुण रहित धर्माधर्म से पृथक् ब्रह्मरूप योगी को ही उत्तम सुखकी प्राप्ती होती है

mind perceiving self rests content in self, 20 that, wherein one feels infinite intellectual supreme bliss, wherein once established, no one would retire from reality, 21 which having obtained, he respects no other acquisition so great as it, in which depending, he is not moved by the severest pain 22 This disunion from the conjunction of pain may be called Yoga spiritual union or devotion It is to be attained by resolution, by the man who knows his own mind 23 When he has abandoned every desire that arises from the will, and subdued with his mind every inclination of the senses, (24) he may, by degrees, find rest, and having, by a steady resolution, fixed his mind within himself, he shou'd think of nothing else 25 Wheresoever the unsteady mind roams, he should subdue it, bring it back, and place it under the control of self 26 Supreme happiness attends the Yogi whose mind is at peace, whose passions are subdued, who is Brahma like, and free from sin 27 The Yogi

स्पर्शम यन्त सुखमश्नुते ॥ २८ ॥ सर्वभूतस्थमात्मान सर्वभूतानि चात्मनि। ईक्षते
योगयुक्त त्मा सर्वत्र समदर्शन. ॥ २९ ॥ योमा पश्यति सर्वत्र सर्वञ्च मयि पश्यति।
तस्याह न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥ ३० ॥ सर्वभूतस्थित यो मां भजत्येक
त्वम स्थित । सर्वथा वर्त्तमानोपि स योगी मयि वर्त्तते ॥ ३१ ॥ आत्मौपम्येन
सर्वत्र सम पश्यति योर्जुन । सुख वा यदि वा दु ख स योगी परमो मतः ॥ ३२ ॥
अर्जुन उवाच । योय योगस्त्वया प्रोक्त साम्येन मधुसूदन । एतस्याह न पश्यामि
चञ्चलत्वात् स्थितिं स्थिराम् ॥३३॥ चञ्चलहि मन कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्। तस्याहं
निग्रहमन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ ३४ ॥ श्रीभगवानुवाच । असशयं महाबाहो

। २७। अविद्या आदि क्लेशों से रहित योगी इस रीति से मनको स्वाधीन करता हुआ सुख पूर्वक ब्रह्मानन्द रूप अनन्त सुखको पाताहै। २८ । योग से सावधान चित्त सब जीवोंमें ब्रह्मका देखनेवाला योगी सब जीवों में वर्त्तमान अखण्ड ब्रह्मरूप आत्माको और सब जीव मात्रों को आत्मा में देखता है। २९ । जो मुझको सब जीवमात्र में देखता है और सबको मुझमें देखता है मै उससे कभी परोक्ष नहीं होताहूं और वह भी मेरा परोक्ष नही है । ३० । जो योगी जीव ब्रह्मकी एकता में नियतहोकर सब जीवोंमें वर्त्तमान मुझको निर्विकल्प समाधि के द्वारा भजता है वह योगी सनप्रकार के व्यवहारो को करता हुआ भी मुझ में वर्त्तमान है। ३१। जो योगी आत्माकी समता के कारण सबजीवों में सुख और दुखको समान देखता है वह योगी उत्तम कहाताहै।३२। अर्जुन बोले हे मधुसूदनजी आपने जो यह समता युक्त योग वर्णन किया सो मैं मनकी चंचलता से उसकी बड़ी स्थिरताको नहीं देखताहूं। ३३। हे श्रीकृष्णजी यह चंचल मन बडापराक्रमी और दृढ़ है उस मनका रोकना मैं वायुके समान महाकठिन मानताहूं। ३४। श्रीभगवान् बोले कि

who is thus constantly vowed to soul, and free from sin, enjoys eternal happiness of contact with Brahma. 28 The man whose mind is absorbed in meditation and who looks on all things alike, sees the supreme soul in all things in the supreme soul 29 He who sees me every where, and sees all this in me, I forsake not him, and he forsakes not me. 30 The Yogee who believes in unity and worships me present in all things, dwells in me in all respects, even whilst he lives 31 The man, O Arjuna, who from what passes in his own breast, whether it be pain or pleasure, beholds the same in others, is esteemed a supreme Yogee. 32 *Arjuna*—From the restlessness of our natures, I conceive not the permanent duration of this doctrine of equality which thou hast told me. 33 The mind O Krishna, is naturally unsteady, turbulent, strong, and stubborn I esteem it as difficult to restrain as the wind 34 Krishna—The unsteady mind.

मनो दुर्निग्रहं चलम् । अभ्यासेनतु कौन्तेय वैराग्येणचगृह्यते ॥ ३५ ॥ असंयता-
त्मनायोगो दुष्प्रापइतिमे मतिः । वश्यात्मना तु यतताशक्योवाप्तुमुपायतः ॥ ३६ ॥
अर्जुन उवाच । अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः । अप्राप्य योगसंसिद्धिकां
गतिं कृष्ण गच्छति ॥ ३७ ॥ कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति । अप्रतिष्ठो
महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥ ३८ ॥ एतन्मे संशयंकृष्णछेत्तुमर्हस्यशेषतः । त्वदन्यः
संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥ श्रीभगवानुवाच । पार्थ नैवेह नामुत्र
विनाशस्तस्य विद्यते । न हि कल्याणकृत् कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ॥ ४० ॥ प्राप्य
पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीःसमाः । शुचीनांश्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोभिजायते ४१॥

हे महावाहु अर्जुन निस्सन्देह यहमन बड़ाचंचल है इसका स्वाधीन होना बड़ा कठिन
है हे अर्जुन इस मनको अभ्यास और वैराग्य के द्वारा स्वाधीन करना योग्य है
। ३५ । जिसने चित्तको अच्छी रीति से न जीता उसको योगका मिलना बड़ा
कठिन है यह मेरा मत है और मनको स्वाधीन करनेवाले वा उपाय करनेवाले को
अभ्यास वैराग्यादिक उपायों से उसका प्राप्तकरना सम्भव है । ३६ । अर्जुन बोले
हे श्रीकृष्णजी कर्म योग से मनको हटाकर श्रद्धायुक्त योगमार्ग में प्रवृत्त थोड़ा
उपाय करनेवाला योग सिद्धी को न पाकर मृतक होके कौनसी गतिको पाता है
। ३७ । और हे महावाहु वासुदेवजी वह कर्मयोग और ज्ञानयोग का
आश्रय न करनेवाला अज्ञानी ब्रह्मप्राप्ती में नियत कर्मयोग ज्ञानयोग इन दोनोंसे
गिराहुआ टूटेहुये वादल के समान नाशदशाको तो नहीं पाता है । ३८ । हे श्री
कृष्णजी अव इन मेरे सम्पूर्ण सन्देहोंको आप दूरकरिये क्योंकि आपके सिवाय
इस संशयका दूर करनेवाला कोई नहीं विदितहोता । ३९ । श्रीभगवान् बोले हे
अर्जुन इसलोक परलोक में उसका किसीप्रकार से नाशनहीं है और हे तात कोई
शुभकर्मी मनुष्य दुर्गती को नहीं पाता है । ४० । योग से भ्रष्टहुये अपने पुण्य

O valiant youth, is undoubtedly difficult to subdue; yet it may be restrained by practice and temperance. 35. In my opinion, *Yoga* is hard to be attained by him, who has not his mind in subjection; but it may be acquired by him who takes pains, and has his mind in his own power. 36. Arjuna—Whither, O Krishna, does the man go after death, who, though ardent has his mind moved away from yog for want of application? Does he who is found not standing in the path of Bramha fall between good and evil, like a broken cloud? Thou; Krishna, canst entirely clear up this my doubts; none except thee can remove this doubt. 39. Krishna.—His destruction is neither here nor in the world above. No man who has done good goes the evil way. 40. A man fallen from Yog having enjoyed for long

अथवा योगिनामेव कुलेभवति धीमताम् । एतद्धि दुर्लभतरं लोकेजन्म यदीदृशम् ४२। तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम् । यततेचततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥४३॥ पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोपिसः । जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्त्तते ॥४४॥ प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः । अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परांगतिम् ॥४५॥ तपस्विभ्योधिको योगी ज्ञानिभ्योपि मतोधिकः । कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्मा द्योगीभवार्जुन ॥ ४६ ॥ योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना । श्रद्धावान् भजतेयो मां स मे युक्ततमो मतः ॥ ४७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि अध्यात्मयोगोनाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ पर्वणितुत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

से उत्पन्न लोकों को पाकर बहुत वर्षतक निवास कर के धनी लोगों के यहां उत्पन्न होता है । ४१ । अथवा वह पुरुष बुद्धिमान् योगियों के घराने में पैदाहोता है परन्तु लोक में ऐसा जन्महोना दुर्लभ है । ४२ । हे कौरवनन्दन वहां पूर्व देह सम्बन्धी उस बुद्धि संयोगको पाता है उसके पीछे वह बड़ी शुद्धी के निमित्त अनेक उपाय करता है । ४३ फिर वह पिछले अभ्यासके कारण से खैंचा जाता है क्योंकि योग जाननेका इच्छावान् शब्द ब्रह्मको उल्लंघन करके कर्म कर्त्ता होता है । ४४ । बड़े२ प्राणायामादि उपाय करने से पापोंसे छूटाहुआ योगी बहुत से जन्मों में मोक्षके योग्य होकर परम कल्याणरूप मोक्षको पाताहै, । ४५ । योगी बड़े २ तपस्वियोंसे भी अधिक है क्योंकि वह शास्त्रज्ञ ज्ञानियों और कर्मकरनेवालों से भी अधिक मानागया है हे अर्जुन इसकारण से तू योगीहो, । ४६ । सब कर्म योगियों में भी जो श्रद्धावान् मुझ वासुदेव में लगेहुये मनके द्वारा मुझको भजता है उसको मैं बड़ायोगी मानताहूं ॥ ४७ ॥

---

years the rewards of his virtues in the regions above, at length is born again in some well to-do family, or perhaps in the house of some learned Yogee But such a regeneration into this world is the most difficult to attain 42 Here he recovers the memory of his former body and begins again to labour for perfection in devotion 43 By the former practice he is attracted involuntarily into Yog, he who desires to know it, passes beyond Shabd Bramha 44 The Yogee who labouring with all his might, is purified of his sins, and, after many births, made perfect, at length goes to the supreme abode The Yogee is more exalted than Tapaswees, he is superior to the *Karmees* and the wise (*Jnanis*), wherefore, O Arjuna, resolve thou to become a Yogee. 46 Of all Yogees, I respect him as the most devout, who has faith in me, and who serves me with a soul possessed of my spirit. 47

श्री भगवानुवाच । मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन् मदाश्रयः । असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥ १ ॥ ज्ञानन्तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः । यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज् ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ २ ॥ मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये । यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ ३ ॥ भूमिरापोऽनलो वायुः खमनो बुद्धिरेवच । अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥ अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्य्यते जगत् ॥ ५ ॥ एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय । अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥ ६ ॥ मत्तः परतरं नान्यत् किञ्चिदस्ति धनञ्जय । मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा

अध्याय ॥ ७ ॥

श्रीभगवान बोले हे अर्जुन मुझ में मनलगानेवाला और योगसमाधिका करनेवाला मेरे आश्रित होकर मुझपूर्ण ब्रह्मको जैसे जानेगा उसको श्रवण करो । १ । मैं इसज्ञान विज्ञानको सम्पूर्णतासमेत तुझसे कहताहूं जिसको जानकर जानने के योग्य दूसरा कोई विज्ञान शेष नहीं रहता है । २ । हजारों मनुष्यों में कोई मोक्षरूप सिद्धियोंके लिये उपाय करता है और उनउपाय करनेवाले सिद्धोंमें कोई२ पुरुष मुझको मूलसमेत जानता है । ३ । पृथ्वी , जल , अग्नि , वायु , खं, मन , बुद्धि और अहंकार यह आठ भाग मेरी प्रकृति के हैं । ४ । परन्तु यह प्रकृति अनुत्तम (अपर) है इससे उत्तम मेरी दूसरी प्रकृति जीवहै जिस्से हे महाबाहु यह जगत धारण किया जाताहै । ५ । यहप्रकृति सब जीवोंकी उत्पत्तिस्थान और नाशकरनेवाली है इसीसे मैं संसार की उत्पत्ति स्थान और लय होनेका स्थान हूं । ६ । हे कुन्ती पुत्र मुझ से उत्तम दूसरा कोई नहीं है यह सब प्रपंच मुझही में

LECTURE VII

Of Supreme saintly wisdom

Krishna.—Hear, O Arjuna, how having thy mind attached to me, *engaged in devotion*, and *relying on me*, thou shalt, without doubt, know me. 1. I will intruct thee in this wisdom and learning without reserve; knowing which there remains nothing more to be known. 2. Few amongst thousands of mortals strive for perfection; and of those who strive and become perfect, scarcely one knows me truly. 3. My nature is divided into eight distinctions: earth, water fire, air, aether, mind, understanding, and Ahankar, (self-consciousness) 4. But besides this, know that I have another nature superior to this, and by which this world is supported. 5. Learn that these two are the wombs of all beings. I am the origin and the *dissolution* of the whole universe. 6. There is nothing greater than I; all things

इव ॥ ७ ॥ रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः । प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥ ८ ॥ पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ । जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥ ९ ॥ बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्। बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥ १० ॥ बलं बलवतांचाहं कामरागविवर्जितम् । धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥ ११ ॥ ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये । मत्त एवेति तान् विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ १२ ॥ त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् । मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम् ॥ १३ ॥ दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया । मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥ १४ ॥ न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः । माययापहृतज्ञाना

ऐसे पुहा हुआ है जैसे कि सूत्रमें मणि पुही होती है । ७ । हे अर्जुन जलमें मैंही रस हूं और सूर्य्य चन्द्रमा दोनों में प्रकाश रूप मै हूं और सब वेदों में प्रणव मैहूं आकाश में शब्द मैहूं सब पुरुषों में पुरुषार्थ मै हूं। ८। पृथ्वी में पवित्र गंध मैं हूं अग्नि में तेज मैंहूं सबजीवों में जीवनरूप मैंहूं तपस्वियोंमें तप मैंहूं। ९। हे अर्जुन मुझको सब जीवों का प्राचीन बीजरूप जान, बुद्धिमानोंमेंबुद्धि मै हूं तेजस्वियोंमें तेज ।१०। बलवानों में काम राग विवर्जित बल मै हूं हे भरतर्षभ जीवोंमें धर्म से अविरुद्ध काम मै हूं, जो सात्विक राजस तामस भावहैं उन सब कोभी मुझसेही हुआ जान वह सब मुझ मे है परन्तु मै उन में नहीं हूं। १२। सत्व रज तम इन तीनों गुणों की तीन रूपान्तर दशाओं के भावोंसे यह सब संसार भूलाहुआ मुझको नही जानताहै कि मै अविनाशी रूपान्तर दशा से रहितहू । १३। यह मेरीमाया दुःखसे उल्लंघन करनेके योग्य है, जो मुझ को अच्छी रीतिसे जानते है वह पुरुष इसमायाको तरतेहै ।१४। परन्तु जो पापात्मा आत्मा अनात्मा के विवेक

hang on me, as gems on a string 7 I am sapidity in water, the light in the sun and moon, *pranava* (Om) in the *Vedas*, sound in the firmament, and virility in men 8 I am the fragrance of earth, glory in fire, in all things I am life, and I am the austerity of the ascetic 9 Know, O Arjuna, that I am the eternal seed of all nature. I am the understanding of the wise, the glory of the proud, the strength of the strong, free from lust and passion, and in beings I am desire not contrary to dharma 11 But know that I am not in those natures which are of the three qualities called *Satwa*, *Raja* and *Tama*, although they proceed from me yet they are not in me 12 The whole of this world being bewildered by the influence of these three-fold qualities, knows not that I am above these and imperishable 13 Thus my divine and supernatural illusion is hard to be overcome except by those who come to me as their refuge. 14. The wicked, the foolish, and the lowminded, devoid of wisdom in

आसुर भावमाश्रिता ॥ १५ । चतुर्विधा भजन्ते मां जना सुकृतिनोर्ऽजुन । आ
र्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ १६ ॥ तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्ति
र्विशिष्यते । प्रियो हि ज्ञानिनो ऽत्यर्थं मह स च मम प्रिय ॥ १७ ॥ उदारा सर्व
एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् । आस्थित स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमा गतिम् ॥१८॥
बहूना जन्मनामन्ते ज्ञानवान् मा प्रपद्यते । वासुदेव सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभ
॥ १९ ॥ कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञाना प्रपद्य न्तेऽन्यदेवता । त त नियममास्थाय प्रकृत्या
नियता स्वया ॥ २० ॥ यो यो या या तनु भक्त श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य
तस्याचला श्रद्धा तामेव विदधाम्यहम् ॥ २१ ॥ स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधन
मीहते । लभते च तत कामान् मयैव विहितान् हितान् ॥ २२ ॥ अन्तवत्तु फल

से रहित मनुष्योंमें नीच मायाके कारण ब्रह्मज्ञान से शून्य आसुरी ज्ञान में आश्रित है वह मुझको न श्रेष्ठ रीतिसे जानतेहैं न प्राप्त होते हैं । १५ । हे भरतवंशी दुखी, ब्रह्मज्ञानके आकांक्षी, धनाकांक्षी, ज्ञानाकांक्षी यह चारों प्रकारके शुभकर्मी पुरुष मुझको भजतेहैं, इनचारोंमें ज्ञानीउत्तमहै वह सदैव मुझमें अनुरक्तहोकर एक भक्तिसे भजन करनेवालाहै क्योंकि मैं ज्ञानी का अत्यन्त प्याराहूं और वह मेराप्याराहै ।१७। यह सबउत्तमहैं परन्तुज्ञानी मेरा आत्माहै क्योंकि वह मुझजगदात्मा में मन को लगानेवालाहोकर मुझ उत्तमगति रूपमेंही नियतहै।१८। वह पुरुष बहुतजन्मोंके पीछे सब संसारको वासुदेवरूप जानकर मुझको पाताहै । १९ । जो कामनाओं से ज्ञान भ्रष्टहोकर अपने स्वभावके द्वारा नियमोंमें चित्तहोके अन्य२ देवताओ को भजते हैं ।२०। यह भक्त जिस२ देवता को श्रद्धा पूर्वक पूजतेहैं मैंउन अचल श्रद्धाको नियत करताहूं।२१।फिर वह श्रद्धामें भरेहुये उसका आराधनकरतेहैं और उसीसेअभीष्टोंको

by illusion, and men of demoniac nature donot come to me 15 I am, O Arjuna worshipped by four classes of men who are good the distressed, the inquisitive, the wishers after wealth, and, the wise 16. Of these the wise man who is constantly united and single loving is the best. I am extremely dear to the wise man, and he is dear to me. 17 All these are exalted, but I esteem the wise man even as myself, because he is my sole devoted and depends on me as his ultimate resource 18 The wise man proceeds to me after many births for the exalted one who believes that, Vasudeva is all, is hard to be found 19 Deprived of wisdom by desires and impelled by nature, people worship other gods, imposing on themselves various observances. 20 Whatever image a devotee wishes, desirous to worship in faith, that very faith in him I render firm 21 Possessed with that faith, whoever devotes himself to that worship, obtains his wishes but they are granted

तेषां तन्त्रवत्यदपमेधसाम् । देवान् देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥ २३ ॥ अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः । परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥ २४ ॥ नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः । मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् । २५ । वेदाहं समतीतानि वर्त्तमानानि चार्जुन । भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥ २६ ॥ इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत । सर्व भूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप ॥ २७ ॥ येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् । ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ २८ ॥ जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये । ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥ २९ ॥ साधि

पातेहैं जो कि मेरेही उत्पन्न कियेहुयेहैं।२२। उन निर्बुद्धियोंका फल विनाशवान्होताहै देवताओंके पूजनेवाले देवताओंको पातेहैं और मेरेभक्त मुझ अनन्तको पातेहैं।२३। निर्बुद्धी लोग मुझ अविनाशी अनूपम अव्यक्त पुरुषको संसारी जीवों के समान देहधारी मानते है । २४ । क्योंकि योग माया से ढकाहुआ मैं सब को नहीं देखाई देताहूं यह अज्ञानी लोग मुझ अज अविनाशी को नहीं जानता है । २५ । उपाधि रहित होनेसे मैं भूत भविष्य वर्त्तमान इन तीनोंकाल के जीवधारियों को जानताहूं परन्तु कोईभी मुझको नहीं जानता है । २६ । हे शत्रुहन्ता अर्जुन सब जीवधारी इच्छा और अनिच्छा आदि मोह द्वन्द्वोंसे इस संसारके विपयमें अविवेकको पाते हैं । २७ । जिन पवित्रकर्मी पुरुषोंका पापनाश हुआहै वह मोहके द्वन्द्वोंसे छुटे हुये ये शम दमादि व्रतोंमें दृढहोकर मुझको भजते हैं । २८ । जो मुझमें समाहित चित्त होकर जरा मृत्यु से छूटनेके निमित्त उपाय करते हैं, वह ब्रह्म अध्यात्म और संपूर्ण कर्म्मों के ज्ञाता है । २९ । जिन पुरुषों ने अधिभूत अधिदैव अधियज्ञ समेत

by me But the reward of such short sighted men is finite. Those who worship the Devatas go to them and those who worship me alone join me The ignorant being unacquainted with my supreme infinite and exalted nature believe me who am invisible, to exist in the visible form 24 I am not visible to all because I am concealed by yogmaya. The ignorant world do not know that I am not subject to birth or decay 25 I know Arjuna, all the beings that were are, and will be but there is not one amongst them who knows me. 26 All beings in birth find their reason fascinated and perplexed by the evils of contrary sensations arising from love and hatred 27 Those men of regular lives, whose sins are done away, being free from the fascination arising from those contending passions worship me 28 They who put their trust in me, and labour for a deliverance from decay and death know Bramha, the whole Adhyatma and every karma 29 The devout souls who

मामधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः । प्रयाणकालेपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ३०।
इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुन संवादे ज्ञानयोगोनाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
अर्जुन उवाच । किंतद्ब्रह्म किमध्यात्मं किंकर्म पुरुषोत्तम । अधिभूतञ्च किं प्रोक्त
मधिदैवं किमुच्यते ॥ १ ॥ अधियज्ञः कथं कोत्र देहेस्मिन् मधुसूदन । प्रयाणकालेच
कथंज्ञेयोसि नियतात्मभिः ॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच । अक्षरं ब्रह्मपरमं स्वभावोऽध्यात्म
मुच्यते । भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥ अधिभूतं क्षरोभावः पुरुषश्चा
धिदैवतम् । अधियज्ञोहमेवात्र देहे देहभृतांवर ॥ ४ ॥ अन्तकाले च मामेव स्मरन्
मुक्त्वा कलेवरम् । यः प्रयाति समद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥ ५ ॥ यं यं वापि
स्मरन् भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् । तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥ ६ ॥

मुझको जाना है अर्थात् उपासनाकी है वह मुझमें चित्त लगाने वाले पुरुष शरीर त्यागके समय में भी मुझको ही जानते और देखते हैं ॥ ३० ॥

अध्याय ॥ ८ ॥

अर्जुनबोले हे पुरुषोत्तम वह ब्रह्म क्याहै अध्यात्म क्या है कर्म क्याहै और अधिभूत अधिदैव और अधियज्ञ कौन कहाताहै । १ । और किस रीतिमें इसशरीर में नियत है और आपसमाधानचित्त पुरुषोंको शरीर त्यागके समय कैसे जाने जाते हो । २ । श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन जो परमअक्षरहै वह ब्रह्महै और जो पदार्थ है वह अध्यात्म है और जो त्यागरूपसत्र है वहजीवों का उत्पन्नकरने वाला कर्म नाम है ।३। जो विनाशवान् कर्म है वह अधिभूतहै पुरुष अधिदैव है हेदेहधारियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन इस शरीर में अधियज्ञ मैंहू अन्तकालमें मुझीको स्मरण करता हुआ शरीर को त्यागकर निस्सन्देह मेरेही भावको पाता है । ५ । हे अर्जुन जिस २ भावको स्मरण करताहुआ अन्तमें शरीरको त्याग करताहै वह सदैव उस भाव से भावित

know me to be the Adhibhuta, the Adhidaiva and the Adhiyajna, know me also in the time of their departure 30

LECTURE VIII

Arjuna—What is that Bramha What is Adhyatma? What is karma O first of men! What is Adhibhoota called? What Adhidaiva? 1 How and who is Adhiyajna in this body! How art thou known in the hour of departure by men of subdued minds? 2 Krishna—Bramha is that which is supreme and indestructible Adhyatma is Swabhava or nature, Karma is that emanation which causes the birth of being, 3 Adhibhuta is of perishable nature, Adhidaiva is Purush and Adhiyajna, O best of men, is myself in this body 4 At the time of death he, who having abandoned his mortal frame departs thinking only of me without doubt unites in me Whatever idea is uppermost at the time of death,

तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्यच । मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशय ॥ ७ ॥
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना । परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिंत
यन् ॥ ८ ॥ कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्य । सर्वस्य धातारमचि-
न्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ९ ॥ प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो
योगबलेन चैव । भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥१०॥
यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः । यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं
चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥ सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य

होकर उसीभावको पाता है । ६ । इसकारण सब समय पर मुझी को स्मरण कर के तू युद्धमें प्रवृत्तहो मुझजगदात्मा में मन और बुद्धिका लगाने वाला अथवा लय करने वाला तू मुझीको पावेगा इसमें कुछभी सन्देह नहींहै । ७ । हेअर्जुन अभ्यास और अभ्यासजन्य योग समाधि इनदोनोंसे संयुक्त अनन्य वृत्ती चित्तके द्वारा अन्त र्यामी परम पुरुषको पाताहै । ८ । अर्थात् सबके जानने वाले पूर्णरूप जगतके अन्तर्य्यामी सूक्ष्मसेभी सूक्ष्म सबकर्म फलोंके विभाग करनेवाले ध्यानसे अगम्य सूर्य्य के समान प्रकाशमान अर्थात् सब जगतके प्रकाशक अविद्या से रहित को स्मरण करै । ९ । शरीर त्यागने के समय मनकी दृढता पूर्वक योगबल से अथवा वासुदेव भगवानकी भक्तिमें प्रवृत्तहोके दोनों भृकुटियों में प्राणको चढ़ाकर उस हिरण्य गर्भनाम दिव्य परमपुरुषको पाताहै । १० । जिसप्रणव अक्षरको वेदज्ञ लोग कहते हैं और जिसमें वैरागी यतीलोग प्रवेशकरते है अर्थात् उसकी शरण लेतेहैं और जिसको इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य्य को करते हैं उसपदको तुझसे ब्योरे समेत कहताहूं सब इन्द्री रूपद्वारों को अपने स्वाधीन करके मनको हृदयमें रोक कर अपने प्राण को सुषुम्ना नाड़ी के मार्ग से मस्तक में धारण करके योग शास्त्र की लिखी

in the mind of a man, he goes to it 6 Wherefore at all times think of me alone and fight. Let thy mind and understanding be set on me alone, and thou shalt, without doubt, go unto me 7 He who longs after the Divine and Supreme Being, with his mind intent upon the practice of devotion, goes to him 8 He who in the last hour thinks on the ancient, the Omniscient, the Ruler, minuter than the atom, the preserver of all, of form unimaginable refulgent like the sun, beyond darkness, with a steady mind fixed in devotion by the power of yog, and with Pran well drawn in between his brows, reaches the Supreme Being 10 I will now summarily make thee acquainted with that path which the learned in the Vedas, call neverfailing, which the men of subdued minds and conquered passions enter, and which, desirous of knowing they live the lives of Bramhacharis 11 He who, having closed up all the doors locked up his mind in his own breast, and fixed his life

च । मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥ १२ ॥ ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म
व्याहरन्मामनुस्मरन् । यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ॥ १३ ॥ अनन्य
चेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः । तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः
॥ १४ ॥ मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् । नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां
गताः ॥ १५ ॥ आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन । मामुपेत्य तु कौन्तेय पुन
र्जन्म न विद्यते ॥ १६ ॥ सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद् ब्रह्मणो विदुः । रात्रिं युगसहस्रान्तां
तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥ १७ ॥ अव्यक्ताद् व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे । रात्र्या
गमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥१८॥ भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते । रात्र्या
गमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥१९॥ परस्तस्मात्तु भावोऽन्यो व्यक्तोऽव्यक्तात् सनातनः ।

हुई धारणामें अच्छी रीतिसे नियत होकर, ॐ इस एक अक्षर ब्रह्मको कहता और मुझको स्मरण करता हुआ देहको त्यागकर जो जाता है वह ब्रह्म लोककी प्राप्तिके द्वारा मोक्ष रूप परमगतिको पाता है । १३ । जो अनन्य बुद्धि से सदैव मेराही स्मरण और कीर्त्तन करता है हे अर्जुन उस योग्य अहार विहार और यम नियम आदि में प्रवृत्त योगीको मैं बड़ा सुलभहूं । १४ । मुझको पाकर दुःखके आलय विनाशवान् पुनर्जन्मको नहीं पाता है । १५ । हे अर्जुन ब्रह्मलोकसे लेकर सब संसारीलोक इस पृथ्वीपर फिर लौटकर आने वाले हैं और मुझको प्राप्तहोकर पुनर्जन्म नहीं होताहै । १६ । जिन लोगोंने सहस्रयुगों का ब्रह्माका एकदिन जाना है और इतनीही रात्रिभी मानी है वह दिनरात्रिके जाननेवाले प्रसिद्ध हैं ।१७। दिनके होतेही सब प्रत्यक्ष पदार्थ स्वप्न दशारूप अव्यक्तसे विदित होते हैं और रात्रिआने पर उसी अव्यक्त नाम में सब अत्यन्त लयहोजाते हैं । १८ । हे अर्जुन वही यह सृष्टि समूह वारंवार प्रकट होकर रात्रिके आने पर अविद्या और कर्म फल के स्वाधीन होकर लयहोजाता है और दिनके आने पर प्रकट होजाता है । १९ ।

breath in his head, firm in yog, and silence thinks of the one-syllabled Om, the Bramha, quits this mortal frame, calling upon me, goes to the Supreme State 13 To the yogi who thinks constantly of me with his mind undiverted by an other object, I will at all times be easily found 14 By attaining me those elevated souls, are no more born in the finite mansion of pain and sorrow. 15 Know, O Arjuna that all the regions between this and the abode of Bramha afford but a transient residence, but he who finds me, returns not again, to mortal birth 16 They who are acquainted with day and night know that the day of Bramha is a thousand Yugas, and that his night extends for a thousand more On the coming of that day, all things proceed from invisibility to visibility, so, on the approach of night they disappear and become *invisible* 18 The universe, is repeatedly dissolved and reproduced

य स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥ २० ॥ अव्यक्तोक्षर इत्युक्तस्तमाहु परमा गतिम् । य प्राप्य न निवर्त्तन्ते तद्धाम परम मम ॥२१॥ पुरुष स पर पार्थ भक्त्यालभ्य स्त्वनन्यया । यस्यान्तस्था नि भूतानि येन सर्वमिदततम् ॥२२॥ यत्रकालेत्वनावृत्तिमावृत्ति चैवयोगिन । प्रयातायान्ति त काल वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥२३॥ अग्निर्ज्योतिरह शुक्ल षण्मासा उत्तरायणम् । तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जना ॥ २४ ॥ धूमो रात्रि स्तथा कृष्ण षण्मासा दक्षिणायनम् । तत्र चान्द्रमस ज्योतिर्योगीप्राप्य निवर्त्तते॥२५॥ शुक्लकृष्णेगत ह्येते जगत शाश्वतेमत । एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्त्तते पुन ॥ २६ ॥ नैते सृती पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन । तस्मात् सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवा

उस अव्यक्त से अन्य सत्तावान् अरूप उपाधि रहित नित्य एकरूप जो सब संसार के नाशहोने पर नाशनहीं होताहै वहगुप्त अविनाशी कहाजाताहै जिसको कि पाकर फिर नहीं लौटकर आतेहैं वही मेरी ब्रह्मज्योतिहै । २१ । हे अर्जुन अनन्य भक्तीसे जो पानेके योग्यहैं वह शुद्ध ब्रह्महै जिसमे सब जीवमात्र ऐसे नियत है जैसे बीज में वृक्षनियतहोताहै और जो जगत् में व्याप्तहै।२२। हे भरतर्षभ कर्मयोगी जिससमय शरीरको त्याग कर चले हुये अनावृति और आवृत्तिको पातेहैं उस समयको वर्णन करताहूं । २३ । अग्नि, ज्योति और दिन शुक्लपक्ष और उत्तरायणइनके उदय प्रताप में ब्रह्मकी उपासना करनेवाले पुरुष शरीरको त्यागकर ब्रह्मलोक को पाते है । २४ । धूमरात्रि कृष्णपक्ष छः महीने दक्षिणायन इनचारों के उदय में योगी चान्द्रमासि ज्योति को पाकर फिर लौट आता है । २५ । संसारकी यह शुक्ल और कृष्ण नामगति प्राचीन मानी गई है एकसे तो अनावृत्ति अर्थात् लौटकर न आना और दूसरी से आवृत्ति अर्थात् लौट आता है । २६ । हे अर्जुन इन दोनों

at the approach of nightand day, by Divine order 19 That which upon the dissolution of all things else, is not destroyed, is superior and of another nature from that visibility, it is invisible and eternal 20 That invisible and incorruptible is called the Supreme Abode, *they who reach it never more return to earth, that is my mansion* 21 That Supreme Being is to be obtained by him who worships Him alone in whom all beings live and who pervades all 22 I will now speak to thee of that time in which departing the yogis return and that when they donot. 23 Those holy men who know *Bramha*, departing in fire, light, day time, the bright fortnight, the six months of the sun's northern course, go to him, but those who depart in smoke night, the dark fortnight and the six months of the southern path of the sun, ascend for a while into the regions of the moon and again return to mortal birth 25. Light and darkness are the world's everlasting paths, by the one he goes who returns not, by the other he who returns again 26 A Yogee, who is acquainted with these

र्जुन ॥ २७ ॥ वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत् पुण्यफलं प्रदिष्टम् । अत्येतितत् सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥ २८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ पर्वणितुद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥३२॥

श्री भगवानुवाच ॥ इदन्तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे । ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १ ॥ राजविद्याराजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् । प्रत्यक्षाव गमं धर्म्यं सुसुखंकर्त्तुमव्ययम् ॥ २ ॥ अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप । अप्राप्य मां निवर्त्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥ मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्त्तिना ।

मार्गों को जानता हुआ कोई ज्ञान योगी नहीं भूलताहै इस कारण हे अर्जुन सदैव योग में मग्नरहो ।२७। वेदोंमें यज्ञोंमें दानों में शास्त्रानुसार जो पुण्य फल कहागयाहै उस सब पुण्यफलको योगी उल्लंघन करके इस विषयका ज्ञाताहोकर ब्रह्मलोकको जाकर स्वयं सिद्ध श्रेष्ठस्थानको पाता है ॥ २८ ॥

अध्याय ॥ ९ ॥

श्रीभगवान् बोले कि मैं इस अत्यन्त गुप्त रखने के योग्य ज्ञान को अपने विज्ञानके द्वारा तुझ अनसूया रहित से वर्णन करता हूं जिसके जानने से तू इस अशुभ संसारसे मुक्त होगा ! यह विद्याओंका और गुप्त देवताओं का राजा महा उत्तम पवित्र कर्त्ता अपरोक्ष ब्रह्मका प्राप्त करनेवाला धर्म में हितकारी अनुष्ठान करने में सुखरूप और अविनाशी है । २ । हे शत्रुओं के संतप्त करने वाले अर्जुन इस ज्ञानधर्म के श्रद्धा न रखनेवाले पुरुष मुझको अप्राप्त होकर जन्म मृत्युरूपी संसार मार्ग में घूमाकरतेहैं ।३। मुझबुद्धि से परे सच्चिदानन्दरूप सगुण रूपधारी से

two paths of action, will never be deluded; wherefore, O Arjuna, be thou at all times employed in devotion. 27. The fruit of virtue pointed out in the Vedas to sacrifice, to mortifications and also to charity, the Yogee who knows this, shall surpass all, and shall obtain a supreme and prior place. 28.

LECTURE IX

of the chief of secrets and Prince of sciences:

Krishna.—I will tell thee, who findest no fault, a most mysterious secret, accompanied by profound learning, which having studied thou shalt be delivered from misfortune. 1. It is a soverign art, a soverign mystery, sublime and immaculate; clear to the sight, virtuous, inexaustible, and easy to be performed. 2. Those who are infidels to this faith, not finding me, return again into the mortal world. 3. This whole world is pervaded by me in my

मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थित । ४ ॥ न च मत्स्थानि भूतानि पश्यमे
योगमैश्वरम् । भूतभृन्नच भूतस्थो ममात्माभूतभावन. ॥ ५ ॥ यथाकाशस्थितोनित्य
वायु सर्वत्रगो महान् । तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय । ६ ॥ सर्व
भूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् । कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजा
म्यहम् ॥ ७ ॥ प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुन । भूतग्रामामिम कृत्स्न
मवशं प्रकृतेर्वशात् ॥ ८ ॥ न च मा तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय । उदासी
नवदासीनमसक्त तेषु कर्मसु ॥ ९ ॥ मयाध्यक्षेण प्रकृति सूयते सचराचरम् । हेतुना
नेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्त्तते ॥ १० ॥ अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुम श्रितम् ।

भिन्न परमात्मा से यह सब जगत् व्याप्तहै मुझ परमात्मा में यहसब स्थावर जंगम
जीव नियत है परन्तु मैं उनमें नियत नहींहूं । ४ । जीवमुझ एकाकी में नियत नहीं
हैं जीवोंके साथमेरे योगको अथवा ईश्वरता संबन्ध रखनेवाले को देख कि मेरा
परमानन्द रूप आत्मा अपने आनन्द से जीवों की वृद्धि करने वाला और धारण
करनेवाला है परन्तु आप उनजीवों में नियत नहीहै । ५ । महान् वायु सर्वत्र वर्त्त-
मान होकर आकाश में सदैव नियतहै इसी प्रकार चैतन्यरूप सबप्राणी मुझमें नि-
यतहै ऐसा तू समझ । ६ । कल्पके अन्तमें सब जड़ चैतन्य शरीर मुझ मायोपहित
ईश्वर की प्रकृति में प्रवेश करतेहै मैं कल्प के प्रारंभ में फिर उनको अनेकप्रकारके
रूपों से उत्पन्न करताहूं ।७। अपनी प्रकृति के आश्रय में होकर मै इस सम्पूर्ण देह
समूहों को वारम्बार नानाप्रकारका बनाकर उत्पन्न करताहूं वह देह समूह स्वभाव
के आधीन होनेसे अवश है । ८ । हे अर्जुन वह कर्म मुझ को बंधनमें नही डाल
सक्ते हैं ।९। हे अर्जुन मुझअध्यक्ष रूप के कारण से प्रकृति सबजड़ चैतन्यों समेत
जगत्को उत्पन्न करती है इसीकारण से जगत् जन्मादि दशाओंमें भ्रमताहै ।१०।
अज्ञानीलोग मेरेउत्तम तत्त्व पदार्थको नजानकर मुझ मनुष्य देहमें नियतहोनेवालेको

invisible form. All things are dependent on me,but I am not de-
pendent on them. 4 Behold my divine connection My creative
spirit is the keeper of all things not the dependent. 5 Understand
that all things rest in me, as the mighty air suspended in space pas-
ses every where. 6 At the end of a Kalpa all things, O son of Kun-
tee, return into my primordial source and at the beginning of an-
other Kalpa, I create them all again 7 Resorting to my nature,
I create, again and again, this assemblage of beings from the power
of nature without power 8 These works confine not me, because I
am like one who sits aloof uninterested in those works. 9 By
my supervision nature produces both the moveable and the im-
moveable. It is from this O Arjuna, that universe revolves. 10
The foolish, being unacquainted with my supreme nature, as lord

पर भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ ११ ॥ मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः । राक्षसीमासुरीञ्चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः ॥ १२ ॥ महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः । भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥ १३ ॥ सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः । नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते१४॥ ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते । एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् १५ अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् । मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥ १६ ॥ पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः । वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च १७॥ गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् । प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्य

अपमान करतेहैं और मै जीवधारियोंका महेश्वरहू ।११। मेरा अपमान करने से वह अज्ञानी निरर्थक आशा और निष्फल ज्ञानी विवेकसे रहित राक्षसी आसुरी चित्त अर्थात् रजोगुण तमोगुण प्रधान स्वभावों में आश्रय लेनेवाले है । १२ । परन्तु जो बडे उदारचित्त देव स्वभाव सतोगुण में आश्रय लगानेवाले है वह पुरुष मुझको सब ससार का आदि अविनाशी जानकर एकाग्र चित्तसे मेरा भजन करते है । १३ । वह शान्तचित्त दृढव्रत जितेन्द्री शम दम आदि में उपाय करनेवाले सदैव मुझी में बुद्धिसे तदाकार होकर मेरा कीर्त्तन करनेवाले नमस्कार पूर्वक बडी भक्ति से मेरी उपासना करते है । १४ । और कोई २ निर्विकल्प समाधिरूप ज्ञान यज्ञ करने से भी मुझको पूजतेहुए उपासना करते है कोई मुझको एकही जानकर और कोई मुझको अनेक रूपवाला मानकर उपासना करतेहै । १५ । क्रतुहू मैही यज्ञहू मैही स्वधारूप पितरोंका अन्नहू मैही औषधिहू और जिसके द्वारा दानादिक दियेजाते है वह मन्त्रभी मैही हू मैही हव्य मैही अग्नि मैही हवनकरनेकी क्रियाहू ।१६। मैही जगत्का पिता माता धाता पितामह ज्ञेय और पवित्र करनेवाला तप इत्यादि हू मैही ओंकार और चारों वेदहू । १७ । मैही गतिहू, मैही कर्म फल का देनेवाला,

of all things, despise me in this human form 11 Having evil, diabolic and deceitful nature they are of vain hope, of vain endeavours of vain wisdom and void of reason 12 But men of great minds trusting to divine natures discover that I am before all things and incorruptible and serve me with unwavering mind 13 Men of firm resolve come before me humbly bowing down, glorifying my name they are constantly employed in my service 14 Others worship me with the worship of wisdom and meditate on me as One and manifold in various shapes 15 I am the sacrifice, the worship, the spices the invocation, the swadha the butter, the fire and the victim 16 I am the father and the mother of this world the grandsire, and preserver I am the holy one worthy to be known, the mystic Om, the Rik the Sama and Yajur Vedas 17 I am the path, the comforter, the creator the

यम् ॥ १८ ॥ तपाम्यहमहं वर्षंनिगृह्णाम्युत्सृजामिच । अमृतञ्चैव मृत्युश्च सदसच्चाह मर्जुन ॥ १९ ॥ त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञै रिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते । ते पुण्य मासाद्य सुरेन्द्रलोक मश्नति दिव्यान् दिवि देव भोगान् ॥ २० ॥ ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति । एवं त्रयीधर्म्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ॥ २१ ॥ अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ २२ ॥ येप्यन्य देवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः । तेपिमामेव कौन्तेय यजन्त्य विधि पूर्वकम् ॥ २३ ॥ अहं हि सर्वं यज्ञानां भोक्ताच प्रभुरेवच ।

पोषण करनेवाला, अन्तर्य्यामी साक्षी, निवासस्थानरूप प्रभु यजमान आदि रक्षक प्रतीकार रहित परोपकारी कर्म फल अर्पण करनेका स्थान संसार का बीज रूप अविनाशीहूं । १८ । मैंही सूर्य्य रूप होकर संसारका तपाताहूं और अपनी किरणोंसे वर्षाको ग्रहणकरताहू और वर्षाऋतुमें अपनी किरणों सेही जलबरसाता हू, हे अर्जुन मैंही जीवन मरण और साधु असाधु हूं । १९ । ऋग् यजु सामवेद रूप विद्यावाले यज्ञों में सोमपान करनेवाले निष्पाप पुरुष यज्ञों से मेरा पूजन करतेहुए स्वर्गगतिको चाहते हैं वह पवित्रात्मा इन्द्रलोकमें जाकर स्वर्ग में देवताओं के दिव्य भोगोंको भोगते हैं । २० । उस बड़ेभारी स्वर्ग के भोगोंको भोगकर कर्म फल समाप्त होजाने पर वह फिर इसी मर्त्यलोक में आते हैं इस प्रकारसे वेदोक्त सफल कर्मों के द्वारा विषयों के चाहनेवाले पुरुष आवागमनको पाते हैं । २१ । जो पुरुष इस रीति से चिंतवन करते हैं कि मैंही भगवान् वासुदेव उपासना के योग्यहू दूसरा नहीं है ऐसी एकत्वताके द्वारा मेरी उपासना करते हैं उन सदैव योगकी उपासना करने वाले भक्तों के स्थान भोजनाच्छादन की मैं आप रक्षा करताहू । २२ । और जो अन्य देवताओं के भक्त है और उनका पूजन करते हैं हे अर्जुन वह पुरुष भी बुद्धिके विपरीत मुझीको पूजते है । २३ । क्योंकि

witness the abode, the asylum and the friend I am the seat, of generation and dissolution repository and the inexhaustible seed. 18 I give heat, I send and hold back rain, I am death and immortality, I am entity and nonentity 19 The followers of the three Vedas, who drink Soma; being purified of their sins address me in sacrifices, and petition for heaven. Those obtain the regions of Indra and feast upon celestial food and divine enjoyments. 20 When they have partaken of that spacious heaven, they sink again, merit exhausted in this mortal life Thus those followers of the three Vedas, pursuers of desire, obtain a transient reward 21. To those who thinking of no other, serve me, alone and are desirous of eternal union with me, I secure permanent union 22 They also who serve other Gods with a firm belief, in an informal manner, worship me 23 I am the partaker of all sacrifices and the sole Lord

न तु मामभि जानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्तिते ॥ २४ ॥ यांति देवव्रता देवान् पितॄन्यांति
पितृव्रताः । भूतानि यांति भूतेज्या यांति मद्याजिनोऽपि माम् ॥ २५ ॥ पत्रं पुष्पं फलं तोयं
यो मे भक्त्याप्रयच्छति । तदहं भक्त्युपहृत मश्नामि प्रयतात्मनः ॥२६॥ यत् करोषि यद
श्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत् कुरुष्व मदर्पणम् ॥ २७ ॥
शुभाशुभ फलै रेवं मोक्ष्य से कर्म बन्धनैः । सन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामु पैष्य
सि ॥ २८ ॥ समोहं सर्व भूतेषु नमे द्वेष्योस्ति न प्रियः । ये भजन्तितु मां भक्त्या मयि
ते तेषु चाप्यहम् ॥ २९ ॥ अपि चेत् सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् । साधुरेव स

मैंहीं सब देवताओं के रूप से सब यज्ञों का भोक्ता फल का देनेवाला प्रभुहूं परन्तु मुझको मुख्यता के साथ अच्छी रीति से नहीं जानते हैं इस हेतुसे वह फिर गिरते हैं। २४ । देवताओं के उपासक देवताओं को और पितरों के उपासक पितरों को पाते हैं और भूतों के उपासक भूतों को प्राप्त होते हैं और एक अविनाशी के पूजनेवाले मुझीको पाते हैं । २५ । जो भक्तिपूर्व्वक पत्र फूल फल और जलभी मुझको देता है उस शुद्ध अन्तःकरण के दिये हुए को मैं ग्रहण करताहूं । २६ । इस कारण जो कुछ काम करे उसको मेरे अर्पण कर जो कुछ खाता है या हवन करता है वा दान करता है वा तप करता है हे अर्जुन उसको मेरेही अर्पण करे । २७ । इस प्रकार से शुभाशुभ कर्म फलों के बंधनों से छूटेगा उसकर्म फल के त्यागरूप संन्यास योगसे सावधान चित्त कर्म बंधनों से अत्यन्त छूटा हुआ वह पुरुष मुझपरमात्माको पावेगा । २८ । मैं सबजीवों में बराबर हूं न मेरा कोई मित्र है न शत्रुहै परन्तु जो भक्ती के साथ मुझको भजते हैं वह मुझीमें हैं और मैं उनमेंहूं जो अत्यन्त दुराचारी भी है और मेरे सिवाय दूसरे में मनको नहीं लगाने वाला है और मुझीको भजता है उसको साधु समझना चाहिये क्योंकि

But because they know not my nature, they fall. 24. Those who worship the Devas go to the Devas, the worshippers of the Pirits go to the Pirits; the servants of the Bhutas go to the Bhutas, but my worshippers come to me. 25. I accept and enjoy the offerings of the humble soul, who in his devotion presents leaves, flowers, fruit, water to me. 26. Whatever thou doest, O Arjuna; whatever thou eatest, whatever thou sacrificest, whatever thou givest, whatever thou doest of tapas, do it as an offering to me. 27. Thou shalt thus be free from good and evil fruits and the bonds of works. Thy mind being joined in the practice of a Sanyasee, thou shalt come unto me. 28. I am the same to all beings: there is none hateful to me nor dear. They who serve me with adoration, I am in them, and they in me. 29. If one whose ways are ever so evil, serves me alone, he is esteemed as virtuous; for he is going on the

मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हिस ॥ ३० ॥ क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति । कौन्तेय प्रतिजानीहि नमे भक्तः प्रणश्यति ॥ ३१ ॥ मांहि पार्थ व्यपाश्रित्य येपि स्युः पापयोनय । स्त्रियो वैश्यास्तथाशूद्रास्तेपि यांति परांगतिम् ॥ ३२ ॥ किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा । अनित्यमसुखं लोक मिमंप्राप्यभजस्वमाम् ॥ ३३ ॥ मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजीमां नमस्कुरु । मामे वैष्यसि युक्त्वैव मात्मानं मत्परायणः

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सू०राज विद्याराज गुह्ययोगोनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ पर्वणितुत्रयस्त्रिंशोऽध्याय ॥ ३३ ॥

श्री भगवानुवाच ॥ भूयएव महाबाहो शृणु मे परम वचः । यत्तेहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥ १ ॥ नम विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः । अहमादिर्हि देवा

वह दृढ़ निश्चय करने वाला है । ३० । वह पुरुष शीघ्रही धर्मात्मा होता है और सदैव मोक्ष रूपगति को पाता है हे अर्जुन तू मेरी आज्ञासे प्रण करके इस बातको दृढजानले कि मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता । ३१ । हे तात यह बात प्रकट है कि जो स्त्री वैश्य शूद्र भी पापात्मा होयं वह भी मेरी शरण को लेकर मोक्ष रूप परमगतिको पाते हैं ।३२। तो क्या पवित्र ब्राह्मण और राजर्षिलोग मेरेभक्त होकर मोक्षरूप परम गतिको नहीं पावेंगे हे अर्जुन इसनाशवान् सुखसे रहित लोकको पाकर तू मुझ को भज । ३३ । अर्थात् मुझी में मनको लगानेवालाहो मेरा भक्तहो और मरेही निमित्त यज्ञ करनेवाला हो मुझीको नमस्कार इत्यादि रीतिसे योग को करके मुझी उत्पत्ति के स्थानमें भक्ति रखने वाला मुझजगदात्मा परमात्मा मेंही लय होगा ॥ ३४ ॥

अध्याय ॥ १० ॥

श्रीभगवान् बोले हे महाबाहु तू फिर मेरे इस उत्तम वचन को सुन जो तेरे भलाईके लिये तुझप्रीति मान से कहताहूं । १ । कि देवताओंने और महर्षियो ने

right way, he soon becomes of a virtuous spirit, and obtains eternal happiness. Recollect, O son of Kunti, that my devotee never perishes. 31. Those even who may be of the womb of sin, women, Vaisyas, or Sudras, shall go on the supreme journey by trusting me 32. How much more holy and devoted Brahmans, and Rajarshis. Consider this world as a finite and joyless place, and worship me. 33. Fix thy mind on me, be my beloved, my adorer, and bow down before me Unite the soul to me, make me thy asylum and thou shalt come to me. 34.

LECTURE X

Of divine nature

Krishna.—Hear again, O valliant youth, my supreme words which, for thy good, I will speak to thee, who art beloved. 1. Nei-

नां महर्षीणांच सर्वशः ॥ २ ॥ यो मामजमनादिंच वेत्ति लोकमहेश्वरम् । असम्मूढः स
मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः । सुख
दुःखं भवो भावो भयञ्चाभयमेवच ।४॥ अहिंसासमता तुष्टिस्तपोदानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥ ५ ॥ महर्षयः सप्त पूर्वे च चत्वारो मनवस्त
था । मद्भावामानसाजाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥ ६ ॥ एतां विभूतिं योगञ्च मम यो
वेत्ति तत्त्वतः । सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥ ७ ॥ अहं सर्वस्य प्रभवो
मत्तः सर्वं प्रवर्त्तते । इति मत्वाभजन्ते मां बुधाभावसमन्विताः ॥ ८ ॥ मच्चित्तामद्ग
तप्राणा बोधयन्तः परस्परम् । कथयन्तश्चमां नित्यं तुष्यन्तिच रमन्तिच ॥ ९ ॥ तेषां स

भी मेरे ऐश्वर्य्य को नहीं जानाहै इसकारणसे कि मैं सब देवता औरमहर्षियोंमें भी
प्रथम हूं जो ज्ञानी है वहमुझ अनादि रूप अजन्मा और सब लोकों के स्वामी को
जानता है और वही मरने वालों में सब पापों से मुक्त होताहै । ३ । बुद्धि, ज्ञान,
असम्मोह, क्षमा, सत्य, दम, शम, सुख, दुःख, उत्पत्ति, मृत्यु, भय, निर्भयता, अहिं
सा, समता, सन्तोष, तप, दान, यश अयश यह जीवधारियों के बीसोंभाव नाना
प्रकारोंके द्वारा मुझही से उत्पन्न होतेहैं । ५ । सब सृष्टिसे प्रथम भृगु मरीच्यादि
महर्षि और सनकादिक ऋषि वा चौदह मनु मुझ हिरण्यगर्भ रूपके मनसे उत्पन्न
हुए हैं जिनसे कि यहसब प्रजा और लोक उत्पन्नहुए हैं । ६ । जो वत्तमाण मेरी
विभूति और योग को मूल समेत जानते हैं वह निर्विकल्प योग समाधि के द्वारा
अचलहोकर निस्संदेह तदाकार होता है । ७ । मैंसब संसार की उत्पत्तिका कारण
हूं बुद्धि आदि के द्वारा जो कुछ कर्म होता है वह मुझसेही संबंध रखनेवाला होता
है ऐसा मानकर ज्ञानीलोग भक्तिसे मुझको भजते हैं । ८ । जिनके मनमें मैंही वर्त्त-
मान हूं और जिनकी इन्द्रियां भी मुझी में मग्न हैं वह परस्पर में श्रुतियों और
युक्तियों के द्वारा मुझको प्रकट करते हैं और सदैव मुझी को रटते हुए तृप्तीको

the the host of Suras, nor the Maharshis, know of my greatness because I am before all the Devas and Maharshis. 2 Whoso free from folly, knows me unborn, beginningless and the mighty ruler of the universe, is delivered from all sins. 3 Reason, knowledge, non illusion, patience, truth humility, meekness, pleasure and pain, birth and death, fear and courage, harmlessness, equanimity, austerity, charity, zeal, renown and infamy, all distinctly come from me. 5 In former days the seven Maharshis and the four Manus were born of my mind, of them are descended all the inhabitants of the earth. 6 He who knows this my power and my connection, is without doubt endued with an unerring yog 7 I am the creator of all things, and all things proceed from me. The wise believe this and worship me 8 Their thoughts and life are in me, they rejoice amongst themselves, and delight in speaking of

सत युक्तानां भजतां प्रीति पूर्वकम् । ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुप यान्ति ते ॥ १० ॥
तेषा मेवानु कम्पार्थं महमज्ञानजं तमः । नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ११
अर्जुन उवाच ॥ परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् । पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेव
मज विभुम् ॥ १२ ॥ आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा । असितो देवलो
व्यासः स्वयंचैव ब्रवीषिमे ॥ १३ ॥ सर्व मेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव ।
न हि ते भगवन् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥ १४ ॥ स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थत्वं
पुरुषोत्तम । भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥ १५ ॥ वक्तुमर्हस्यशेषेणदि-
व्याह्यात्मविभूतयः । याभिर्विभूतिभिर्लोका निमांस्त्वं व्याप्यतिष्ठसि ॥ १६ ॥ कथं
विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् । केषु केषुच भावेषु चिन्त्योसि भगवन्

पाकर मुझी में रमण करतेहैं । ९ । उन सदैव उत्साह युक्त प्रीतिसे भजन करनेवाले महात्माओंको मैं उस बुद्धि योग को देताहूं जिसके द्वारा वह मुझको पातेहैं ।१०। उनके ऊपर दया दृष्टि करने के लिये मैं अन्तःकरणवर्ती होकर प्रकाशरूप ज्ञान दीपकके द्वारा उनके अज्ञानसे उत्पन्न हुए मोहरूपी अंधकार को दूर करताहूं ।११। अर्जुन बोले हे परब्रह्म परमज्योति पवित्रात्मा शरीररूप पुरियों में वर्त्तमान हृदयाकाश में प्रकट होनेवाले सबके आदिरूप व्यापक अजन्मा श्रीकृष्णजी, ऋषि देवर्षि नारद असित देवल व्यासजी इनसब ऋषियों ने तुमको उत्तम २ गुणों से संयुक्त किया और आप अपने श्रीमुख से भी वर्णन करतेहो ।१३। सो हे केशवजी आपके ऐश्वर्य्य को देवता और दानवों में से कोई नहीं जानता है इसबातको मैं सत्यही मानता हूं । १४ । हे जीवों के उत्पन्न करनेवाले ईश्वर, देवदेव जगत्पति, पुरुषोत्तम तुम अपने को आपही जानतेहो । १५ । हे भगवन आप अपनी उन दिव्य विभूतियों को मूल समेत वर्णन कीजिये जिनसे कि आप इन लोकों को व्याप्तकरके नियत रहते हो । १६ । हे षड़ैश्वर्य्य के स्वामी मैं अपने चर्म चक्षु से ध्यान करता

me. They are content and joyful 9 I gladly inspire those who are, constantly thirsty for union, with that use of reason, by which they come to me. 10 In compassion I dissipate the darkness of their ignorance with the light of wisdom 11 Arjuna—All the Rishis, the Devarshis, Narada, Asit, Deval, Vyas (etc) call thee the supreme Bramha, the supreme abode, the most holy, the eternal Purusha the Divine, the First Lord, the birthless, the omnipresent And thou thyself hast told me so 13 I firmly believe, O Keshava, all thou tellest me. Neither the Devas nor the Danavas understand, O Lord, thy manifestation 14 Thou alone knowest thyself, O Purushottam! Source of beings, God of gods, Lord of beings, Ruler of the world! 15 Thou alone art able to tell Thine own glories by which thou pervadest and dwellest in this world. 16 How can I, thy votary, by constant meditation know thee? In

मया ॥ १७ ॥ विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिंच जनार्दन । भूयः कथय तृप्तिर्हि
शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥ १८ ॥ श्रीभगवानुवाच । हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या
ह्यात्मविभूतयः । प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥ १९ ॥ अहमात्मा
गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः । अहमादिश्च मध्यञ्च भूतानामन्त एवच ॥ २० ॥
आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् । मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं
शशी ॥ २१ ॥ वेदानां सामवेदोस्मि देवानामस्मि वासवः । इन्द्रियाणां मनश्चास्मि
भूतानामस्मि चेतना ॥ २२ ॥ रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् । वसूनां
पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥ २३ ॥ पुरोधसाञ्च मुख्यं मां विद्धि पार्थ

हुआ आपको कैसे जानूं आप कौन २ से भावों में मेरे देखने के योग्य हैं । १७ ।
हे जनार्दन आप अपने विश्वरूप योग और ध्यान के योग्य विभूतियों को फिर
विस्तार युक्त वर्णन कीजिये क्योंकि इन मोक्ष साधन युक्त अमृत रूप वचनोंसे मेरी
तृप्ति नहीं होती है । १८ । श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन बहुत श्रेष्ठ है में अपनी
उत्तम दिव्य विभूतियों को तुमसे कहताहूं मेरी विभूतियों के विस्तार का अन्तनहीं
है । १९ । हे गुडाकेश मैं व्यापक आत्मा सब जीवों का आश्रय रूप अचल हूं मैं
सबका आदि मध्य अन्तहूं । २० । मैं अदिती के पुत्रों में विष्णु हूं, ज्योतिरूपों
में सूर्य मैं हूं, मरुद्गणों में मरीचि मैं हूं, नक्षत्र और तारागणों में चन्द्रमा मैं हूं
। २१ । मनोहर गानयुक्त वेदों में सामवेद मैं हूं, देवताओं में इन्द्र मैंहूं, इन्द्रियों
में मन मैं हूं, जीवों की बुद्धिकी वृत्ति मैं हूं, । २२ । ग्यारह रुद्रों में शंकर मैं हूं,
यक्ष राक्षसों में धनाधिप कुबेर मैं हूं, अष्ट वसुओं में अग्नि मैं हूं, शिखर और
रत्न धारी पर्व्वतों में सुमेरु नाम उत्तम पर्व्वत मैं हूं, । २३ । और हे अर्जुन पुरो-

---

what way art thou to be found? 17. Tell me in full, Janardan, thy connection, and thy power; for I am never satisfied with drinking of the living water of thy words. 18. Krishna: Blessings be upon thee! I will tell thee my sovereignty, as the extent of my nature is infinite. 19. I am seated in the bodies of all beings. I am the beginning, the middle, and the end of all things. 20. Of the Adityas I am Vishnu, of the luminous orbs, the radiant sun; I am Marichi amongst the Maruts and of the stars I am the moon. 21. Of the Vedas I am the Sam, and I am Vasava amongst the Devas. Amongst the faculties I am the mind, and amongst animals I am life. 22. I am Shankara amongst the Rudras, and Vittesha amongst the Yakshas and the Rakshasas. I am Pavaka amongst the Vasus and Meru amongst the mountains. 23. Amongst teachers know that I am their chief Brihaspati

बृहस्पतिम् । सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ॥ २४ ॥ महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् । यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥ २५ ॥ अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणाञ्च नारदः । गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥ २६ ॥ उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् । ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणाञ्च नराधिपम् ॥ २७ ॥ आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक् । प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ॥ २८ ॥ अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम् । पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥ २९ ॥ प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम् । मृगाणाञ्च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥३०॥ पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् । झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जा

धसों में बृहस्पति मै हूं, सेनापतियों मे स्कन्द मै हूं, नदी आदि जलाशयों मे समुद्र मैहूं, ।२४। महर्षियों में भृगु मैहू, वाणियो मे ओंकार अक्षर मैहूं, यज्ञोमे जपयज्ञ मै हू, नियत स्थानों में हिमालय पर्व्वत मै हूं, । २५ । सब वृक्षों मे पीपल का वृक्ष मै हूं, देवर्षियोंमें नारदऋषिमैहूं, गन्धर्वोंमें चित्ररथ गन्धर्वमैहू, सिद्धो मे कपिल मुनि मैहू ।२६। घोड़ोमें उच्चैश्श्रवानामैहू, गजेन्द्रोमें ऐरावतनाम हाथीमैहू, मनुष्यों में राजा मैहूं, । २७ । आयुधों में वज्र मैहूं गौओं में कामधेनुमैहू सन्तातिका उत्पन्नकरने वाला कामदेवमैहूं सर्पों में वासुकी सर्प मैहूं । २८ । नागोमें अनन्त शेषनाग मैहूं जलजीवों में और जलके स्वामियों में वरुण मै हूं, पितृगणोंमे अर्य्यमा पितर मैहूं दंड देनेवालोंमे यम मैहूं । २९ । दैत्योंमें प्रह्लाद मैहू, संख्या करनेवालों में कालमैहूं, मृगो में मृगेन्द्र अर्थात् सिंहमै हू, पक्षियों में गरुड़ मैहूं ।३०। पवित्रकरने

amongst warriors I am Skanda and amongst floods I am the ocean. 24 I am Bhrigu amongst the Maharshis and I am the monosyllable (Om) amongst words I am amongst worships the *Japa* (silent worship) and amongst immoveables *Himalaya* 25 Of all the trees I am the *Asavattha*, and of all the *Devarshis* I am Narada I am *Chitraratha* amongst Gandharvas and the Muni Kapila amongst the saints. 26 Know that amongst horses I am *Oochaisshrava* the nectar born, amongst elephants I am *Airavata*, and the sovereign amongst men 27 Amongst weapons I am *Vajra* and amongst cattle, *Kamadhuk* I am the prolific *Kandarpa* (the God of love), and amongst serpents I am *Vasuki* 28 I am Ananta amongst the Nagas, and *Varuna* amongst the inhabitants of the waters. I am *Aryama* amongst the Pitris, and *Yama* amongst all those who rule. 29 Amongst the Daityas I am *Prahalada*, and *Kala* (time) amongst computations. Amongst beasts I am the lion, and Vainateya amongst the birds 30

हनवी ॥ ३१ ॥ सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यञ्चैवाहमर्जुन । अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥ अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च । अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ॥ ३३ ॥ मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् । कीर्तिः श्रीर्वाक् च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥ ३४ ॥ बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् । मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥३५॥ द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् । जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्वंसत्ववतामहम् ॥ ३६ ॥ वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः । मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥ ३७ ॥ दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् । मौनञ्चै

वालोंमें अथवा शीघ्र गतिवालों में वायु मैंहूं, शस्त्रधारियों में राम मैंहूं, मत्स्यादिकों में मगर मैं हूं, नदियों में गंगा मैंहूं, ।३१। हे अर्जुन संपूर्ण संसार का आदि मध्य अन्त मैंहूं, विद्याओं में अध्यात्म विद्या मैंहूं, वितंडा इत्यादि में सिद्धान्त रूप मैंहूं । ३२ । सब अक्षरों में अकार अक्षर मैंहूं मिलेहुएशब्दों में द्वंद्व मैंहूं, मैं अविनाशी कालहूं, मैंही कर्म फलका देनेवालाहूं, मै विश्वतो मुख हूं । ३४ । मैंही सबका मारनेवाला मृत्यहूं, प्राप्त होनेवाले कल्याणों में ऐश्वर्य्य की महत्त्वता और कीर्त्ति मैंहूं,स्वभाव,मृदुभाषण, मेधा, धैर्य्यता, सन्तोष मैंहूं, मामरंदकी । ३४। ऋचाओंमें बृहत् नाम ऋचा मैंहूं, छन्दोंमें गायत्री मैंहूं, महीनोंमें मार्गशीर्ष मैंहूं, ऋतुओंमें वसन्त ऋतु मैंहूं । ३५ । छल करने वालोंमें जुवा मैंहूं, तेजस्वियोंमें तेज मैंहूं, विजय मैंहूं, निश्चय वा उपाय मैंहूं, सतोगुणी पुरुषों में सतोगुण मैंहूं । ३६ । यादवों में वासुदेव मैंहूं, पांडवों में अर्जुन मैंहूं, मुनियोंमें व्यासमुनि मैंहूं, कवियों में शुक्र कवि मैंहूं । ३७ । राजाओं में दण्ड रूप मैंहूं, विजयाभिलाषी पुरुषों में नीतिरूप मैंहूं

Amongst purifiers I am Pavana, and *Rama* amongst those who carry arms Amongst fishes I am the *Makar*, and amongst rivers I am Ganga. 31. Of creation I am the beginning, the middle, and the end Of sciences I am the *Adhyatma Vidya*, and of speakers I am the argument 32. Amongst letters I am the letter a, and of all compound words I am the *Dwandwa*. I am also never-fail time; the preserver, whose face is turned on all sides. 33 I am all-grasping death; and the origin of all to come. Amongst feminines I am fame, fortune, eloquence, memory, understanding, fortitude, patience. 34 Amongst harmonious measures I am the *Gayotree*, and amongst Sams I am the *Brihat Sama*. Amongst the months I am the month Margashursha, and amongst seasons Kusumakara, (spring) 35. Amongst frauds I am gambling; and of all things glorious I am the glory. I am victory, I am industry, and I am the essence of all qualities 36. Of the *Vrishnis* I am Vasudeva and amongst the Pandavas, Dhananjaya I am *Vyasa* amongst the Munis, and amongst the sages I am *Ushana* 37 Amongst rulers I am the rod, and

चास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥ ३८ ॥ यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहम-
र्जुन। न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतंचराचरम् ॥ ३९ ॥ नान्तोस्ति मम दिव्या
नांविभूतीनां परन्तप । एष तूद्देशत प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥ ४० ॥ यद्यद्वि
भूतिमत्सत्वं श्रीमदूर्जितमेवचा । तत्तदेवावगच्छत्वं ममतेजोंशसम्भवम् ॥ ४१ ॥
अथवाबहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन। विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितोजगत् ॥४२॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनि० विभूतियोगोनाम
दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ पर्वणितुचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

अर्जुन उवाच । मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् । यत्वयोक्तं वचस्तेन
मोहोऽयं विगतो मम ॥ १ ॥ भवाप्ययौहि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।

गुप्त वस्तुओं में मौनता मैंहूं, ज्ञानियों में ज्ञान मैंहूं । ३८ । हे अर्जुन जो सब जीव धारियों का तेजहै वह मैंहूं, अर्थात् सबमेंराही विभूतिहैं । ३९ । हे शत्रुहन्ता अर्जुन मेरी दिव्य विभूतियोंका अन्त नहीं है यह मैंने अपनी असंख्य विभूतियोंका संक्षेप तुमसे वर्णन किया, । ४० । जो जो प्राणी ऐश्वर्य्यमान लक्ष्मीवान् शोभावान् और पराक्रम आदिसे भी अत्यन्त युक्त है उसउसको तुम मेरी चैतन्य शक्तिकी अग्निमे उत्पन्न हुआ जानो । ४१ । हे अर्जुन इसबहुतसे ज्ञानसे तुमको क्या प्रयोजन है मैं इस संपूर्ण जगत्को अपने एक अंशमे व्याप्त करके नियतहूं । ४२ ।

अध्याय ११ ॥

अर्जुनबोले कि जो आपने मेरेऊपर अनुग्रहकरनेकी दृष्टि से अत्यन्त गुप्तरूप और गुप्तही करने योग्य आत्मज्ञान को अर्थात् आत्मा अनात्मा के विवेकरूप वचनको वर्णन किया उसके द्वारा यह मेराअविवेकरूपी मोहअत्यन्त दूरहोगया । १ । इसके विशेष हे कमलदललोचन मैंने जीवोंकी उत्पत्ति नाश और आपका महा अविनाशी

amongst those who seek for conquest I am policy. Amongst the secrets I am silence, amongst the wise I am wisdom 38. I am, in like manner, O Arjuna, that which is the seed of all things; and there is nothing animate or inanimate that is without me. 39. My divine distinctions are without end, and the many which I have mentioned are by way of example. 40 And learn, O Arjuna, that every being which is worthy of distinction and pre eminence, is the produce of the portion of my glory 41. But what, O Arjuna hast thou to do with this manifold wisdom? I pervade this whole universe with a portion of myself 42.

LECTURE XI

Visva-rup Samdarshan

Arjuna—This supreme mystery of Adhyatma which, out of loving kindness, thou hast disclosed to me, has dissipated my delusion. 1. I have heard from thee a full account of the creation and

त्वत्तः कमलपत्राक्ष महात्म्यमपि चाव्ययम् ॥ २ ॥ एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमे श्वर । द्रष्टुमिच्छामि ते रूप मैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ मन्यसे यदितच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो । योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ।४॥ श्रीभगवानुवाच ॥ पश्यमेपार्थ रूपाणि शतशोथ सहस्रशः । नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनिच ॥ ५ ॥ पश्यादित्यान् वसून् रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा । बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥ ६ ॥ इहैकस्थं जगत् कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् । ममदेहे गुडाकेश यच्चान्यत् द्रष्टुमिच्छसि ॥ ७ ॥ न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा । दिव्यं ददामिते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥८॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा ततोराजन् महा योगेश्वरो हरिः । दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥ अनेकवक्त्रनयन

महात्म्य भी आपके मुखारविन्दसे सुना।२।हे ईश्वर जैसा आपने अपनेको कहा आप यथार्थ में वैसेही हैं परन्तु हे भगवन् आप के विराट् रूप देखनेकी मुझको बड़ी अभिलाषाहै।३।हेप्रभु योगेश्वर जो आप ऐसा समझे होयँ कि उस रूपको में देखने योग्यहूं तो आप उस अपने अविनाशी आत्माको मुझे दिखलाइये । ४ । श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मेरे सैकड़ों हजारों दिव्यरूप जो नानाप्रकारोंसे अनेकरंग रूप के हैं उनको देख।५।हेभरतवंशी उसीस्वरूपमें सूर्य्य वसु रुद्र दोनोंअश्विनीकुमार वायु इसी प्रकारकी अन्य बहुतसी अद्भुत बातोंको जोतूने प्रथमकभी नहीं देखीहैं उसकोभी देख, हे गुडाकेश अवयहां मेरे शरीरके एकअंशमें वर्त्तमान सब स्थावर जंगमसहित जगतको और जो २ भूत भविष्य स्थूल सूक्ष्म देखनाचाहताहै उनको भी देख । ७ । परन्तु तू इन नेत्रोंसे मेरे देखनेकोसमर्थनहीं है तुझे दिव्यनेत्र देताहूं इन नेत्रों से ईश्वरता संबंधी मेरे योगको देख । ८ । संजय बोले कि हे राजा धृतराष्ट्र बड़े योगेश्वर हरिने इस प्रकारसे प्रश्न करनेवाले अर्जुनको अपने ऐश्वर्य्य संबंधी उन दिव्य उत्तम रूपोंको दिखाया । ९ । जो अनेक मुख नेत्र और अद्भुत दर्शन

---

destruction of all things, and also of thy eternal greatness 2. As thou hast described thyself, Parmeshwara ! I wish to see thy omnipotent form. 3. If, Prabhu ! thou thinkest it may be seen by me, show thyself to me, Yogeshwara. 4. Krishna.—Behold, O Arjuna, my million forms divine, of various species, shapes and colours. 5. Behold the Adityas, and the Vasus, the Rudras, the Aswins and Maruts. Behold many wonders never seen before. 6. Behold, in this my body, the whole world animate and inanimate, and all things else thou hast a mind to see. 7. But as thou art unable to see me with these thy eyes, I give thee a heavenly eye; See my sovereign yog. 8. Sanjaya—The great Lord of yog, Hari, having, O Rajan, thus spoken, showed to Arjuna his supreme sovereign form of many a mouth and eye, many a wondrous sight; many a heavenly ornament;

मनेकाद्भुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ दिव्यमा-
ल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् । सर्वाश्चर्य्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता । यदि भाः सदृशी सा स्याद् भासस्तस्यम-
हात्मनः ॥ १२ ॥ तत्रैकस्थं जगत् कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा । अपश्यद्देव देवस्य
शरीरे पाण्डवस्तदा ॥ १३ ॥ ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः । प्रणम्य
शिरसा देवं कृतांजलिरभाषत ॥ १४ ॥ अर्जुन उवाच । पश्यामि देवांस्तव देव
देहे सर्वांस्तथाभूतविशेषसंघान् । ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च
दिव्यान् ॥ १५ ॥ अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वांसर्वतोनन्तरूपम् । नान्तं न
मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामिव विश्वेश्वर विश्वरूपम् ॥ १६ ॥ किरीटिनं गदिनञ्च

समेत बहुतसे दिव्यभरण वस्त्र और उत्तम शस्त्रों से अलंकृत सुगन्धित पुष्पमालाओं
से शोभित सब ओरको हजारों सूर्य्य के समान देदीप्यमान थे । १२ । तद
नन्तर अर्जुनने उस देवदेव वासुदेव श्रीकृष्णजी के उस शरीरके भीतर एक
अंशमें नियत नानाप्रकारके रूपों समेत संपूर्ण जगतको देखा । १३ । यह देखकर
अर्जुन आश्चर्य्य युक्तहुआ और शरीरमें रोमांच खडे होगये तब उसने हाथ जोड़
कर उनको प्रणाम करके यह वचन कहा । १४ । कि हे प्रकाशमान आपके
शरीरमें देवता और चारों प्रकार के सबजीवोंको और कमलासनपर विराजमान
ईश्वर ब्रह्मा जीको और सबऋषि मुनि यक्ष राक्षस गन्धर्व किन्नर उरगराजों को
भी देखताहूं । १५ । हे विश्वरूप अखिलेश्वर आपको सब ओर अनेकरूप भुजा
उदर मुखनेत्र कान नाकोंसे शोभित देखताहूं फिर आपका आदिमध्य अन्तभी
नहींदेखताहूं । १६। और आपको मुकुट गदा चक्र धारण किये तेज समूहोंसे कठिनता

---

many an upraised weapon; adorned with celestial robes and chaplets; anointed with heavenly unguents; all marvellous, brilliant, infinite and all faced. 11. The splendour of that mighty being resembled that of a thousand suns *blazing out together in the sky*. 12. The Pandava beheld within the body of the Deva of Devas, the whole universe divided forth into its vast variety 13. He was overwhelmed with wonder, and every hair was raised on end He bowed down his head before the Deva, and thus addressed him with joined hands; 14. Arjuna.—I see, Lord I in thy form all the Devas, and every specific tribe of beings. I see *Bramha* sitting on his lotus throne; all the Rishis and heavenly Uragas. 15. I see thyself, on all sides of infinite shape, with countless arms, breasts, mouths, and eyes, but I can neither discover thy beginning, thy middle, nor again thy end, O universal Lord, of form infinite ! 16. I see thee with a crown and armed with club and Chakra, a mass of glory, dazzling every-

क्रिणश्च तेजोराशिं सर्वतोदीप्तिमन्तम् । पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्क
द्युतिमप्रमेयम् ॥ १७ ॥ त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥ १८ ॥ अनादिमध्यान्त
मनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् । पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्व
मिदं तपन्तम् ॥ १९ ॥ द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः ।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ॥ २० ॥ अमी हित्वाऽसुरसंघा
विशन्ति केचिद् भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति । स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः स्तुवन्ति
त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥ रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ
मरुतश्चोष्मपाश्च । गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ॥ २२ ॥

पूर्वक देखने के योग्य चारों ओरसे प्रकाशित अग्नि सूर्य्य के समान देदी प्यमान अप्रमेय देखताहूं । १७ । आप अविनाशी शुद्ध ब्रह्मवेदान्त सेही जानने के योग्यहैं आपही इससंसारके कारण ब्रह्महो और प्राचीनधर्मों के रक्षकहो तुम्हीं को सबने सनातन ब्रह्मपुरुष मानाहै । १८ । मैं आपको आदि मध्य अन्त रहित महा पराक्रमी बहुत भुजाधारी चन्द्र सूर्य्य रूपनेत्रयुक्त प्रकाश मान अग्निरूप मुख अपने तेजसे इस विश्वको संतप्त करनेवाला देखताहूं । १९ । हे महात्मा स्वर्ग पृथ्वी और इन दोनों के मध्यवर्ती आकाश दिशा विदिशाओंकोभी मैं तुम्ही अकेले से व्याप्त देखताहूं इस तेरेअद्भुत भयकारी रूपको देखकर तीनों लोक भयभीत होते हैं । २० । सुर समूह आपकी रक्षामें आतेहैं आपकी कोई भयभीतहोकर स्तुति करते हैं और महर्षि सिद्ध गणलोग कल्याण शब्दकहकर स्तोत्रादिकों से आपकी स्तुति करते हैं । २१ । रुद्र, सूर्य्य, वसु, और साध्यविश्वेदेवा, दोनों अश्विनीकुमार मरुत और उष्णभोजी पितरादि यक्षगंधर्व असुर सिद्धगण यह सब आश्चर्य्यित

where and on all sides dazing, the sight; shining with light immeasurable like the ardent fire or glorious sun. 17. Thou art the Supreme Being, incorruptible, worthy to be known! Thou art prime supporter of the universal orb! Thou art the never-failing and eternal guardian of religion! Thou art the Primal Purusha. 18. I see thee, beginningless, middleless, and endless, of valour infinite; of arms innumerable; the sun and moon thy eyes; thy mouth a flaming fire, and the whole world shining with thy reflected glory! 19. The space between the heaven and the earth in all directions is filled by thee alone, the three regions of the universe, O mighty spirit! behold the wonders of thy awful countenance with troubled minds. 20. Of the celestial bands, some I see fly to thee for refuge; whilst some, afraid, with joined hands sing forth thy praise. Maharshis, holy bands, hail thee, and glorify thy name with adoring praises. 21. The Rudras, the Adityas, the Vasus, and those Sadhyas the

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम्। बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोका प्रव्यथितास्तथाहम् ॥ २३ ॥ नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्। दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमञ्च विष्णो ॥ २४ ॥ दंष्ट्रकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि। दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ २५ ॥ अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपाल संघे भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ॥ २६ ॥ वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि। केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥ २७ ॥ यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवा

होकर आपको देखते हैं। २२। हे महाबाहु बहुभुज जंघा चरण पीठकराल दंष्ट्रायुक्त महारूपधारी आपके रूपको देखकर सबलोक पीड़ामान है और मैं भी पीडामानहूं। २३। हे सर्वव्यापी आपको आकाश में व्यापक प्रकाशमान अनेक वर्णों से शोभित, दिशाओंमें विस्तृत, प्रकाशमान नेत्रवाला देखकर अन्तःकरण से अत्यन्तपीड़ामान होकरमुझे धैर्यता नहीं होती है। २४। हे देवेश्वर कालाग्निके समान आपके मुख और कठिन दंष्ट्राओं को देखकर मारे भयके किसी दिशाको भी नहीं पहिचानता महा दुःखी हूं, हे विश्वरूप प्रसन्नहोकर सुख दीजिये। २५। यहसब धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि पुत्र सबसाथी राजाओ समेत आप के शरीरमें प्रवेश करते है और इसीप्रकार भीष्म द्रोणाचार्य्य सूतका पुत्र कर्णभी हमारे उत्तम योधाओं समेत अनेक शीघ्रता करने वाले आप के मुखों में प्रवेश करते हैं जो मुख तीक्ष्ण दंष्ट्रा और भयानक रूपके है उनमें कोई तो दातों में चिपटे हुये एसे दिखाई देते है जिनके शिर चूर्ण होगये है। २७। जैसे कि नदियोंके जलोंके अनेक समूह

Viswas, the Aswins, the Maruts and the Ooshmapas; the Gandharvas and the Yakshas, asuras and Sidhas, all stand gazing on thee and all alike amazed! The worlds, alike with me, are terrified to behold thy wondrous form gigantic, with many mouths and eyes, with many arms, and legs and breasts, with many bellies, and with rows of dreadful teeth! 23 As I see thee, touching the heavens, effulgent, of various hues, with widely-opened mouths, and bright expanded eyes, I am disturbed within me, my resolution fails me, O Vishnu! and I find no rest! 24 Having seen thy dreadful teeth, and gazed on thy countenance, emblem of Time's last fire, I know not where I am! I find no peace! Have mercy O God of gods! thou refuge of the universe! 25 The sons of Dhritarashtra, with all those rulers of the land, Bhishama, Drona, the son of Suta, and even the fronts of our army, seem to be precipitating themselves hastily into thy mouths having such frightful rows of teeth; whilst some appear to stick between thy teeth with their dodies sorely

भिमुखा द्रवन्ति । तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति
॥ २८ ॥ यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः । तथैव
नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥ २९ ॥ लेलिह्यसे ग्रसमानः
समन्ताल्लोकान् समग्रान् वदनैर्ज्वलद्भिः । तेजोभिरापूर्य जगत् समग्रं भासस्तवोग्राः
प्रतपन्ति विष्णो ॥ ३० ॥ आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद । विज्ञा
तुमिच्छामि भवन्तमाद्यं नहि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥ श्री भगवानुवाच ॥
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान् समाहर्तुमिह प्रवृत्तः । ऋते पि त्वां न भविष्यन्ति
सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥ ३२ ॥ तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रू

वेगसे समुद्रकी। ओर दौड़ते हैं इसी प्रकार यह नरलोकके वीर पुरुप सब ओर से आप के अग्नि मुखों में प्रवेशकरते हैं। २८। जैसे कि अत्यन्त शीघ्रगामी पतंग अपने नाशके लिये बड़ी प्रकाशमान अग्नियों में दौड़कर गिरते हैं इसीप्रकार बड़े वेगवाले लोक अपनेनाशके निमित्त आपके मुखोंमें प्रवेशकरतेहैं ।२९। आप सबलोकों को अपने अग्नियुक्त मुखोंमें निगलतेहो हे विष्णु व्यापक आपका भयानक प्रकाश अपनेतेजोंसे सबसंसारको चारोंओर पूर्णकरके अत्यन्त संतप्तकरताहै।३०।ऐसे भयानक रूपवाले आपकौन हैं यह मुझे समझाइये हे देव आपको नमस्कार है आप प्रसन्न हूजिये मैं आपको सबका आदि कर्त्ता जानता हूं और आपकी चेष्टाओंको नहीं जानताहूं ।३१। श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मैं लोकोंका नाश करने वाला महाकाल नाम परमेश्वर हूं इस युद्धमें लोगों के भक्षण करने को प्रवृत्तहूंजो योधा लोग कि शत्रु की सेना में नियत हैं वहतेरे सिवाय नहीं रहैंगे इसकारण तू युद्धमें खड़ा होकर यशका भागी हो और शत्रुओं को मार धन और राज्य से पूर्ण होकर वृद्धि युक्त राज्य को भोग हे सव्यसाची अर्जुन यह सब जो तू देखरहा है यह

mangled. 27. As the rapid streams of full flowing rivers roll on to meet the ocean's bed, so do these heroes of the human race rush on into thy flaming mouths. 28. As insects, with increasing speed, seek their own destruction in the flaming fire so do these people, with swelling fury, seek their own destruction. 29. Thou involvest and swallowest all the worlds within thy flaming mouths; whilst the whole world is filled with thy glory, as thy awful beams, O Vishnu, shine forth on all sides! 30. Reverence be unto thee, thou most exalted! Deign to make known to me who is this God of awful figure! I am anxious to learn thy source, and ignorant of thy work. 31. Krishna —I am Time, the destroyer of world, come to destroy the world. Except thyself none of all these warriors in these hostile ranks, shall live. Wherefore, arise! seek honor and renown! defeat the foe, and enjoy the full-grown kingdom! They are already, as it were, destroyed by me. Be thou

नु मुंक्ष्वराज्यं समृद्धम् । मयैवैते निहताः पूर्व मेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ३३
द्रोणञ्च भीष्मञ्च जयद्रथञ्च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान् । मया हतास्त्वं जहि मा
व्यथिष्टा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥ ३४ ॥ संजय उवाच ॥ एतच्छ्रुत्वावचनं
केशवस्य कृतांजलिर्वेपमानः किरीटी । नमस्कृत्वाभूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः
प्रणम्य ॥३५॥ अर्जुन उवाच ॥ स्थाने हृषीकेश तवप्रकीर्त्या जगत् प्रहृष्यत्यनुरज्यतेच।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्तिसर्वे नमस्यन्तिच सिद्धसंघाः ॥ ३६ । कस्माच्च ते न
नमेरन् महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोप्यादिकर्त्रे । अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सद्
सत् तत्परं यत् ॥ ३७ ॥ त्वमादि देव पुरुषः पुराणस्त्वमस्यविश्वस्य पर निधानम् ।
वेत्तासिवेद्यञ्च परश्च धाम त्वयाततं विश्वमनन्तरूप ॥ ३८ ॥ वायुर्यमोग्निर्वरुणः शशांं

प्रथमही मुझसे मारे गये हैं तू केवल इनके मारने में कारणही रूप होगा । ३३ ।
तू मुझ से मारेहुये द्रोणाचार्य, भीष्म, जयद्रथ, कर्ण को और इसीप्रकार अन्य
उत्तमवीरों को भी मारडाल दुखी मतहो युद्ध कर तू युद्ध में शत्रुओं को विजय
करेगा । ३४ । संजय बोले कि हे धृतराष्ट्र मुकुटधारी अर्जुन केशवजीके इनवचनों
को सुनकर कांपताहुआ हाथजोड़ अत्यन्त भयभीतहुआ और अत्यन्तझुककर
नमस्कारपूर्व्वक फिर गद्गद्कण्ठसे श्रीकृष्णजीसे बोला । ३५ । हे हृषीकेश अन्त
र्यामी तुम्हारा नामलेनेसे सवसंसार अत्यन्तप्रसन्नहोता है और प्रीतिकरताहै और
तुम्हारी कीर्ति होनेसे राक्षसलोग महाभयभीत होकर इधर उधरको भागतेहैं और
सर्वसिद्धलोगोंके समूह नमस्कार करतेहैं । ३६ । हे महात्मा ब्रह्माजीके भी पितारूप
आपको वह लोग क्यों नहीं नमस्कार करें क्योंकि हे अनन्त देवेश्वर हे जगत् के
उत्पत्ति स्थान अविनाशी कार्य्यकारणरूप आदि देव सर्व शरीरवर्ती पुराण पुरुष
संसारके लय स्थान ज्ञानगम्य ज्योतिस्वरूप अनन्ततुम्ही से सब जगत् व्याप्तहै ।३८।

alone the immediate agent 33 Be not disturbed! Kill Drona, Bhishma, Jayadratha, Karan, and all the other heroes already killed by me. Fight and thou shalt defeat thy rivals in the field. 34 Sanjaya —When the trembling Arjuna heard this from Krishna, he saluted him with joined hands and addressed him in broken accents 35 Arjuna Hrishikesha! the universe rejoice and revel at thy glory. The rakshasas are terrified and flee on all sides; whilst the hosts of siddhas salute thee 36 And wherefore should they not, O mighty Being! bow down before thee, who, greater than Brahma, art the prime Generator! eternal God of gods the world's mansion! Thou art the incorruptible, the effect and the cause, distinct from all things transient! Thou art before all gods, the ancient Purusha, and the supreme supporter of the universe! Thou knowest all things, and art worthy to be known, the supreme mansion, and by thee, O infinite form! the universe is filled. 38

क प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च । नमो नमस्तेस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोपिनमोनमस्ते ॥ ३९ ॥ नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोस्तुते सर्वत एव सर्व । अनन्तवीर्या मितविक्रम स्त्वं सर्वं समाप्नोपि ततोसि सर्वः ॥ ४० ॥ सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हेकृष्ण हे यादव हे सखेति । अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात् प्रणयेनवापि ४१ ॥ यच्चावहासार्थमसत्कृतोसि विहारशय्यासनभोजनेषु । एकोथ वाप्यच्युत तत्समक्षं तत् क्षामयेत्वामहमप्रमेयम् ॥ ४२ ॥ पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्यपूज्यश्च गुरुर्गरीयान् । नत्वत्समोस्त्यभ्यधिकः कुतोन्यो लोकत्रयेप्यप्रतिमप्रभाव ॥ ४३ ॥ तस्मात् प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् । पितेव पुत्रस्यस

आपही वायु, यम, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, प्रजापति, ब्रह्मादि देवताओं के पिताहो आपके अर्थ वारम्वार नमस्कार है हे सर्वरूप हे महापराक्रमी आप अतुलवलहो और अपनी ऐक्यता से सब को व्याप्तकरते हो इस कारण तुम्ही सर्वरूप होकर कर्मों के प्रारंभ और अन्त हो आप सब प्रकार से नमस्कार करने के योग्य है । ४० । आप की महिमाको न जानकर अज्ञान से वा प्रीति से मैंने अपना भाई और मित्र मानकर हे कृष्ण हे यादव हे मित्र इत्यादि शब्दों को जो कहाहै और विहार शय्या भोजन के समय अकेले में वा मित्रों के सम्मुख भी हास्य के निमित्त असत्कारी जो वचन कहा है हे अविनाशी उन अपराधों को मैं आप से क्षमा कराना चाहताहूं । ४२ । तुमइस स्थावर जंगम लोकके स्वामी पूजनीय और गुरुहो आपके समान अप्रमेय प्रभाववाला कोई नहीं है तो तीनोंलोकोंमें आपसेअधिक कहां से होगा । ४३ । इस हेतुसे मैं आपको साष्टांग प्रणामकरके स्तुतिके योग्य आपको प्रसन्न करताहूं जैसे कि पिता पुत्रकाअपराध और मित्र मित्रका अपराध और पति

Thou art Vayu, Agni, Varuna, the moon, Prajapati, and Prapitamaha. Reverence! Reverence to thee a thousand times repeated! Again and again Reverence! Reverence to thee! Reverence be to thee before and behind! Reverence to thee on all sides O all in all! Infinite is thy power and thy glory! Thou includest all things, so thou art All things! 40 Thinking thee friend, I habitually called thee Krishna, Yadava, Friend! I was ignorant of thy greatness, because I was blinded by my affection and presumption. 41 Thou hast, at times, also in sport been treated ill by me, in thy recreations, in thy bed, on thy chair, and at thy meals, in private and in public! for which, O Being inconceivable! I humbly crave thy forgiveness 42 Thou art the father of all things animate and inanimate, thou art the sage instructor of the whole, worthy to be adored! There is none like to thee, nor superior in the three worlds. 43 Wherefore I bow down, and with my body prostrate upon the ground, crave thy mercy, adorable

सेयसत्यु' प्रियःप्रियायार्हसि देव सोढुम् ॥ ४४ ॥ अदृष्टपूर्वं हृषितोस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे। तदेव मे दर्शय देव रूपं प्रसीददेवेश जगन्निवास ४५ किरीटिनं गदिनं चक्रहस्त मिच्छामि त्वांद्रष्टुमहं तथैव । तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भवविश्वमूर्ते ॥ ४६॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्। तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मेत्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥ ४७॥ न वेदयज्ञाध्ययनैर्नदानैर्नच क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः । एवंरूप शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥ मा ते व्यथा माच विमूढभावो दृष्ट्वारूपं घोरमीदृङ्ममेदम् । व्यपेतभीः प्रीतमना' पुनस्त्वं तदेव मे रूप मिदं प्रपश्य ॥ ४९ ॥

अपनी स्त्रीका अपराध क्षमाकरता है इसीप्रकार हे देवदेवेश्वर आप मेरेअपराधों को क्षमाकरनेके योग्यहैं ।४४। मैं पूर्व में नहीं देखेहुए इसरूपको देखकर प्रसन्नहूं परन्तु मेरा चित्त मारेभयके पीड़ामानहै हेपरमेश्वर आप अपने उसीरूपको मुझे दिखलाइये हेदेवदेव जगत् के उत्पत्तिस्थान आप बारंबार प्रसन्नहो।४५।हेसहस्रभुजधारी विश्वरूप मैं तुमको मुकुटगदा चक्रहाथोंमें धारण कियेहुये दर्शनकरना चाहताहूं इस से आप अपनेचतुर्भुजी रूपका दर्शन दीजिये।४६।श्रीभगवानबोले हेअर्जुन मुझ प्रसन्न रूपने अपनी सामर्थ से यह उत्तम चैतन्य तेजोमय आदि अन्तरहित विश्वरूप दर्शन तुझको दिखलाया इसस्वरूपको तेरे सिवाय किसी दूसरे ने कभी न देखाथा ।४७। हे कौरवों में बड़े वीर नरलोक में तेरे सिवाय इस रूपके देखने को वेद यज्ञ जप दान क्रिया तप व्रतादिकों से भी कोई दूसरा पुरुष योग्य नहीं है। ४८ । मेरे इस प्रकार इस भयानक रूपको देखकर तुझको नपीड़ाहोगी नकोई प्रकारका मोह होगा निर्भय और प्रसन्न चित्त होकर फिर उसी पूर्वरूप को देख । ४९ ।

Lord ! for thou shouldst bear with me, as father with the son as friend with friend, as lover with the beloved. 44. At the sight of what I never saw before, I am glad and terrified. Have mercy, then, O heavenly Lord! O mansion of the universe! and shew me thine other form 45 I wish to behold thee with diadem on thy head, and armed with club and Chakra; assume then, O God of a thousand arms, image of the universe ! thy four armed form. 46 Krishna,—Well pleased, O Arjuna, I have shewn thee, by my Divine power, this my supreme form, the universe, in all its glory, infinite and eternal which was never seen by any one except thyself. 47 For no one, O valiant Kuru ! in the three worlds, except thyself, can obtain such a sight of me; nor by the Vedas nor sacrifices, nor profound study, nor by charitable gifts, nor by deeds, nor by the most severe austerities. 48. Having seen my form, thus awful, be not disturbed, nor let thy faculties be confounded. Cast away fear and let thy mind rejoice, behold

सञ्जय उवाच ॥ इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामासभूयः । आश्वा
सयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥ ५० ॥ अर्जुन उवाच ।
दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्य जनार्दन । इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिंगतः
॥ ५१ ॥ श्रीभगवानुवाच । सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम । देवाप्यस्य
रूपस्य नित्यं दर्शनकांक्षिणः ॥ ५२ ॥ नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया ।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥ ५३ ॥ भक्त्यात्वनन्यया शक्यअह
मेवंविधोर्जुन । ज्ञातुंद्रष्टुंच तत्त्वेन प्रवेष्टुंच परन्तप ॥ ५४ ॥ मत्कर्मकृन् मत्परमो
मद्भक्तः सङ्गवर्जितः निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासू० विश्वरूपदर्शननाम
नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ पर्वणिलुपंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

संजय ने कहा हे राजा वासुदेवजी ने इस प्रकार अर्जुन को समझाकर फिर अपने रूपको दिखाया और भयभीत अर्जुन को आश्वासन दिया । ५० । अर्जुन ने कहा हे जनार्दन आपके इस सौम्य नररूपको देखकर अब मैं सचेतहुआ और प्रकृति में स्वस्थताहुई । ५१ । श्रीभगवान् बोले जो तुमने इसमेरे रूपको देखाहै वह बड़ी कठिनता से दृष्टि आनेवाला है इस रूपके देखने को देवतालोग भी सदैव इच्छा करते हैं । ५२ । जैसे तुमने मुझको देखा है उस रीति से वेद यज्ञ तप दान व्रत आदि के द्वाराभी कोई पुरुष मेरेदर्शन करने को समर्थ नहीं है ।५३। हे शत्रुओं को संताप देनेवाले अर्जुन इस प्रकार केरूपसे मैं अखण्ड भक्तीके द्वारा दर्शन के योग्यहूं । ५४ । जो मेरे निमित्त कर्म करनेवाला और मुझी को सर्वोत्तम माननेवाला मेराभक्त सब संग्रहों से पृथक् शरीरी मात्रों में आत्मभाव माननेवाला है वह मुझ शुद्ध ब्रह्मको पाता है ॥ ५५ ॥

---

this my familiar form again. 49. SANJAYA—Vasudeva having thus spoken to Arjuna, shewed him again his wonted form; and having re-assumed his milder shape, he presently assuaged the fears of the affrighted Arjuna. 50. Arjuna Having beheld thy placid, human shape I am again collected, and am restored to my natural state. 51. KRISHNA.— This form of mine which thou hast seen, is difficult to be seen; even Devas are constantly anxious to see it. 52. I am not to be seen as thou hast seen me, by the Vedas, by mortifications, by sacrifices or by gifts. 53. But I am to be seen, known, and obtained by means of bhakti alone. 54. Doing work for me, having me as aim, being my votary, having abandoned all consequences, free from hatred, one comes to me. 55.

अर्ज्जुन उवाच । एवं सततयुक्ताये भक्तास्त्वां पर्य्युपासते । ये चाप्यक्षरमव्य क्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥ १ ॥ श्री भगवानुवाच । मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते । श्रद्धया परये पेतास्तेमे युक्ततमा मताः ॥ २ ॥ ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्य्युपासते । सर्वत्रगमचिन्त्यञ्च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥ ३ ॥ सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धय । ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥ ४ ॥ क्लेशोधिक तरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् । अव्यक्ता हि गतिर्दुःख देहवद्भिरवाप्यते । ५ ॥ ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥ ६ ॥ तेषामहं समुद्धर्त्ता मृत्युसंसारसागरात् । भवामि न चिरात् पार्थ

अध्याय १२ ॥

अर्जुनबोले इसप्रकार सदैव सावधान चित्त भक्तलोग सगुणब्रह्मरूप आप को उपासन करते हैं और अक्षर अर्थात् अविनाशी अव्यक्त शुद्ध ब्रह्मको उपासना करते है उन दोनों में योगके जाननेवाले कौन है । १ । श्रीभगवान बोले हे अर्जुन जो मुझ में मनको प्रवेशकरके सदैव उपाय करने वाले मेरेभक्त मेरी उपासना करते है और श्रद्धावानहै उनको मै मुक्ततम मानताहूं, और जो इन्द्रियोंको मनसमेत स्वाधीन करके अर्थात् आत्मामें लयकरके अविनाशी मन बुद्धिसे परे सर्वव्यापी निर्विकार अचलरूपकी उपासना करतेहै वह दृढ बुद्धि सबजीवो के प्यारे है और इच्छावान होकर मुझ निर्गुण ब्रह्मको प्राप्तहोते है अर्थात् मुझीमें है मुझसे जुदे नही है फिर उनके विषयमें योगवित् यह शब्द कब नियत होसक्ताहै । ४ । निर्गुण ब्रह्ममें चित्तलगाने वालों को अधिकतर दुःख है क्योंकि निर्गुण पदकी प्राप्ति अभिमानी पुरुषों को कठिनतासे मिलती है । ५ । और जो सब कर्मोंको मेरेअर्पण कर के मुझी को लय स्थान समझके अद्वैत बुद्धिसे मेरेही ध्यानमें प्रवृत्त मन होकर मुझ

LECTURE XII

Of serving the deity in his visible and invisible forms

ARJUNA—Of those of thy servants who are always thus employed, who know their duty best ? those who worship thee as thou now art, or those who serve thee in thy invisible and incorruptible nature? 1 KRISHNA Those who, having placed their minds in me, serve me with constant zeal, and are endued with steady faith, are esteemed the best devoted They, too, who, delighting in the welfare of all, serve me in my incorruptible, ineffable, and invisible form omnipresent, incomprehensible, standing on high, fixed and immovable, with subdued passions and understandings, the same in all things, shall also come unto me. 4 Those whose minds are attached to my invisible nature have the greater labour to encounter, because an invisible path is difficult to be found by corporeal beings. 5 Them whose minds are thus attached to me, who leave

मय्यावेशितचेतसाम् ॥ ७ ॥ मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय । निव-
सिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशय ॥ ८ ॥ अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि
स्थिरम् । अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय ॥ ९ ॥ अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि
मत्कर्म्मपरमो भव । मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन् सिद्धिमवाप्स्यसि ॥ १० ॥ अथै
तदप्यशक्तोऽसि कर्त्तुं मद्योगमाश्रितः । सर्वकर्म्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्
॥ ११ ॥ श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते । ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्या
गाच्छान्तिरनन्तरम् ॥ १२ ॥ अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च । निर्ममो निरहङ्कारः
समदुःखसुखः क्षमी ॥ १३ ॥ सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः । मय्यर्पितमनो

को ध्यानकरते हुए उपासना करते हैं, हे अर्जुन मै उनमनमें उपासना करने वालों
को थोड़ेही काल में जन्ममरणरूपी समुद्रसे उद्धार करताहूं । ७ । मुझ विश्वरूप
ईश्वर में संकल्प विकल्पात्मक मनको नियत करके मुझी में बुद्धि को लगायेहुए
जो पुरुष मेरेही रूपमें निवास करेगा वह निस्संदेह मुझी में ऐक्यता पावेगा । ८ ।
जो तू मुझ विश्वरूपमें मन लगानेको समर्थ नहीं है तो हे अर्जुन उपासना मे मनको
दृढ़करके मुझको प्राप्तहो और जो उपासनामें असमर्थ है तो मेरेनिमित्त कर्मोंको करता
हुआ चित्तशुद्धीको पावेगा ।१०। और जो तू मेरी निष्ठाकेभी करने में असमर्थ है तो
सब कर्मों के फलों को त्याग कर दे । ११ । विचार के अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है
और ज्ञान से ध्यान उत्तम है और ध्यान से कर्म फलों का त्याग करना शुभ
है और कर्म फल के त्यागसे पीछे मोक्षरूप शान्ती । १२ । शत्रुता रहित सबजीवों
का मित्र, दयावान्, शरीरादि में निरभिमानी अहंबुद्धिमेरहित रागद्वेष में समभाव
क्षमावान, यथा लाभ संतोषी, श्रवणादि में सदैव मन लगानेवाला इन्द्रियों समेत
देहको स्वाधीन करनेवाला आत्मतत्त्व में दृढ़ निश्चय रखनेवाला और मुझ शुद्ध

all works for me, and, free from the worship of all others, contemplate and serve me alone, I presently raise up from the ocean of this region of mortality, 7. Place then thy heart on me, and penetrate me with thy understanding, and thou shalt, without doubt, hereafter enter unto me 8 But if thou be unable to fix firmly thy mind on me, endeavour to find me by means of practice. 9. If after practice thou art still unable, devote thyself to my works, for by performing works for me, thou shalt attain perfection 10. But shoudst thou find thyself unequal to this task, control thyself and forsake the fruit of actions. 11 Knowledge is better than devotion, meditation is better than knowledge, forsaking the fruit of actions than meditation, for peace is derived from such forsaking 12 That bhakt is dear to me who is free from enmity, benign, merciful, exempt from pride and selfishness, the same in pain and pleasure, patient, contstanly devout, of subdued passions, firm in faith, and whose mind and understanding

बुद्धिर्यो मे भक्त समे प्रिय ॥ १४ ॥ यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते चय ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो य सच मे प्रिय ॥ १५ ॥ अनपेक्ष शुचिर्दक्षउदासीनोगतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागीयोमद्भक्त समेप्रिय ॥ १६ ॥ यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति
न कांक्षति । शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् य समे प्रिय. ॥ १७ ॥ समः शत्रौ
च मित्रेच तथा मानापमानयो । शीतोष्णसुखदु खेषु सङ्गविवर्जितः ॥ १८ ॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी स तुष्टो ये केनचित् । अनिकेत स्थिरमतिर्भक्तिमान् मे प्रियो
नरः ॥ १९ ॥ येतु धर्म्यामृतमिदं यथोक्त पर्युपासते । श्रद्दधाना मत्परमा भक्ता
स्तेतीवमे प्रिया' ॥ २० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीताऽद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥
पर्वणितुषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

ब्रह्म में मन बुद्धिको लयकरनेवाला जो मेरा भक्त है वह मेराप्याराहै । १४ । जिससे लोक नहीं डरताहै और जो लोकसे नहीं डरताहै जो प्रसन्नमन असन्तोषता, भय और व्याकुलता से रहित है वह मेरा प्यारा है । १५ । सुखकी प्राप्ति और दुःख के निवृत्तहोने में अनिच्छावान् बाहर भीतर से पवित्र भगवत् भजन आदि में आलस्यरहित उदासीन अर्थात् प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठा को समान जाननेवाला क्लेशरहित सब कर्मों के प्रारम्भों का त्यागनेवाला जो मेराभक्त है वह मेराप्यारा है । १६ । जो प्रिय प्राप्तिमें प्रसन्न नहींहोता और अप्रियता में दुखीनही होता और प्रियवस्तु के वियोगमें शोचनहीं करता और शुभाशुभ को भी नहीं चाहता हुआ भक्तिमान है वह मेराप्यारा है । १७ । जो शत्रुमित्र में औरमाना पमान में अथवा शीतोष्ण सुख दुःखोंमें समानहोकर संगोंका त्यागनेवाला है और निन्दास्तुतिमें तुल्यभाव मौनी संतोषी त्यागी स्थान से रहितहै और दृढबुद्धि से भक्तिमान है वह पुरुष मेराप्यारा है । १९ । जो श्रद्धावान् मुझ को अपना लयस्थान जानते है और इस अविनाशी मोक्षसाधन का अत्यन्त अनुष्ठान करतेहै वह मुझको अतिशयप्यारे है २० ॥

are fixed on me alone. 14 He also is dear to me of whom mankind are not afraid, and who of mankind is not afraid, and who is free from the influence of joy, impatience, and the dread of harm. That bhakt of mine is dear to me who is unexpecting, pure, proficient, unconcerned, unafflicted and who has forsaken every enterprize. 16 He also is worthy of my love, who neither rejoices nor finds fault, who neither laments, nor covets, and has forsaken both good and evil 17 That bhakt is dear to me who is same in friendship and in hatred, in honor and in dishonor, in cold and in heat, in pain and pleasure, who is free from attachment, to whom praise and blame are as one, who is of little speech, pleased with any thing, is not home t ed, and who is of a steady mind 18 They who seek this *Amrita* of religion even as I have said, and serve me faithfully before all others, are my dearest bhaktas 20

अर्जुन उवाच । प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेवच । एतद्वेदितुमिच्छामि ज्ञानं ज्ञेयञ्च केशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते । एतद्योवेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञइति तद्विदः ॥ २ ॥ क्षेत्रज्ञञ्चापिमां विद्धि सर्वक्षेत्रेषुभारत । क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतंमम ॥ ३ ॥ तत् क्षेत्रं यच्चयादृक् च यद्विकारियतश्च यत् । सचयो यत्प्रभावश्च तत् समासेन मे शृणु ॥ ४ ॥ ऋषिभिर्बहुधागीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ५ ॥ महाभूतान्यहङ्कारोबुद्धिरव्यक्तमेवच । इन्द्रियाणि दशैकञ्च पञ्चचेन्द्रियगोचराः ॥ ६ ॥ इच्छा

अध्याय १३ ॥

अर्जुन बोले हे केशवजी प्रकृति और पुरुष और क्षेत्रवा क्षेत्रज्ञ औरज्ञान वा ज्ञेय इन सबको मैं जाननाचाहताहूं,श्रीभगवान्बोले हेअर्जुन यह शरीर क्षेत्रहै जो इसक्षेत्रको जानताहै क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के जानने वालोंने आत्मा रूप क्षेत्रज्ञ कहा है ।१। हेभरत र्षभ सब क्षेत्रोंमें मुझीको क्षेत्रज्ञ जानो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञका जो ज्ञानहै वह मुझसेही सम्बन्ध रखनेवाला ज्ञानहै इसको ब्रह्मज्ञानियों ने निश्चय कियाहै । २ । वह क्षेत्र जैसरूपका है और जैसे प्रकारका है और जिन जिन विकारों से युक्तहै और जिस जिस विकार से जो जो उत्पन्न होता है और जो वह क्षेत्रज्ञ है अथवा जैसे प्रभाव वाला है उसको मूलसमेत मैं कहताहूं । ३ । जिसको ऋषियों ने अनेकरीतों से गाया और जो अनेक प्रकार के छन्द वेद और मन्त्रोंसे प्रत्येक शाखाओं में सिद्ध किया गया बहुत निश्चय युक्त हेतुवान् ब्रह्मके जतलानेवाले वेदके भागरूप ब्राह्मणों के वचनों से निश्चय किया हुआ । ४ । पंचमहाभूत अहंकार बुद्धि इन्द्रियां और पांचस्थूल विषय।५।इच्छा,द्वेष,सुख, दुख,यह विकारोंसहित क्षेत्रका मिलाहुआ वर्णन

LECTURE XIII.

Matter and Spirit

Arjuna—I, desire, to know O Keshava, about matter and spirit, the field and the knower of it, wisdom and that which ought to be known. Krishna—Learn that by the word field is implied this body, and that he who knows it is called the knower of it by the sages. 10. Know that I am that knower in every field. The knowledge of the field and the knower of it is by me esteemed wisdom. 2. Now hear what that Kshetra or field is, its nature, its origin, its purpose, its knower and his power. 2. Each has been variously sung by the Rishis in various measures, and in verses containing Divine precepts, including arguments and proofs. 4. The elements, Ahankara, Budhi, Avyakta (invisible spirit), the eleven Indriyas (organs), and the five sensibles. 5. Love and hatred, pleasure and pain, constitute kshetra and its

द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः । एतत् क्षेत्रं समासेन सविकार मुदाहृतम् ७॥ अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् । आचार्य्योपासनं शौचं स्थैर्य्यमात्म विनिग्रहः ॥ ८ ॥ इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहङ्कार एव च । जन्ममृत्युजराव्याधि दुःख दोषानुदर्शनम् ॥ ९ ॥ असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु । नित्यञ्च समचित्तत्व मिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ १० ॥ मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी । विविक्तदेश सेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥ ११ ॥ अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्वज्ञानार्थदर्शनम् । एतज् ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोन्यथा ॥ १२ ॥ ज्ञेयं यत्तत् प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतम श्नुते । अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥ १३ ॥ सर्वतः पाणिपादतत् सर्वतो

हुआ । ६ । अपनी प्रतिष्ठा न चाहना देह मन वाणी से किसी जीव को दुःख न देना, अपकार होनेपर चित्तको न विगाड़ना, सरल प्रकृतिहोना, उपासना, भीतर वाहरसे पवित्रता, मोक्ष नियतबुद्धि रहना इन्द्रियों के विषयमें वैराग्यहोना निरहंकारता, जरा जन्म रोगके दुख और दोषोंको अच्छेप्रकार देखना । ८ । पुत्र स्त्री और घरों में ममता न रखना और उनके सुख दुखों में सुखी और दुखी न होना प्रिय अप्रियकेमिलनेमें सदैव एकभाव रहना । ९ । इष्ट अनिष्टकी उपपत्तिमें सदैव समचित्तरहना एकान्त स्थानमें वैठना मनुष्योंकी सभामें प्रीति न करना ।१०। अध्यात्म शास्त्रजन्य ज्ञानमें सदैवनियत रहना तत्त्वज्ञानके प्रयोजनको देखना यह ज्ञान अर्थात् ज्ञानका साधन कहा जो इसके विपरीतहै वही अज्ञानहै । ११ । जो इसज्ञानसे जानने के योग्यहै उसको कहताहूं जिसको जानकर मोक्ष को पाता है आदि रखने वाला जो कार्य्य कारण है उस से श्रेष्ठ जो ब्रह्म है वह न सत् कहाजाता है न असत् कहाजाता है । १२ । वह सब दिशाओंमें वाह्याभ्यन्तर हाथ पैर नेत्र मुख शिर कान रखनेवाला है और लोकमें सबको व्याप्तकरके नियत है ।१३। विना

changes. Thus have I briefly described this aggregate or basis of the soul. 6. Humility simplicity, harmlessness, forgiveness, rectitude teacher's service, chastity, faith, self control, disaffection for the objects of the senses, freedom from pride, insight into the evils of birth, death, decay, sickness and misery, 8. Unattachment, absence of affection for son, wife and home; a constant evenness of temper in good or bad events, 9. Exclusive devotion to me, resort to sequestered places, and a dislike to the society of man; 10. a contant study of the superior spirit, and the study af the knowledge of truths. This is declared to be the wisdom; all against it is ignorance. 11. I will declare that which ought to be known, knowing which one enjoys immortality, the beginningless Bramha, who can neither be called Sat (ens) nor Asat (non ens). 12. All hands and feet, all faces, heads, and eyes and all ears, dwells in the world encompassing all. 13. Shining with all sense faculties, without

च्छिरोमुखम् । सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ १४ ॥ सर्वेन्द्रियगुणा भासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् । असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥ १५ ॥ बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च । सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थञ्चान्तिके चतत् ॥ १६ ॥ अविभक्तञ्च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् । भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णुप्रभविष्णु च ॥१७॥ ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते । ज्ञानज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य धिष्ठितम् ॥ १८ ॥ इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयञ्चोक्तं समासतः । मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥ १९ ॥ प्रकृतिं पुरुषञ्चैव विद्ध्यनादी उभावपि। विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृति सम्भवान् ॥ २० ॥ कार्य्यकारणकर्त्तृत्वेहेतुः प्रकृतिरुच्यते । पुरुषःसुखदुःखानां भोक्तृत्वेहेतुरुच्यते ॥ २१ ॥ पुरुषः प्रकृतिस्थोहि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान् । कारण गुण-

इन्द्रियों के वहसब इन्द्रियों के कार्य करता है सब से पृथक् और सबका धारण करने वाला, निर्गुण सब गुणों का भोगने वाला । १४ । जीवों के बाहर और भीतर चलायमान और अचल, सूक्ष्म, जानने के अयोग्य, दूर और निकट । १५ । विभाग रहित प्राणियों में बहुत रूप वाला भूतोंका धारण करने वाला वह क्षेत्रज्ञ जाननेके योग्य है नाश करने वाला और फिरउत्पन्न करने वाला । १६ । वह प्रकाशमानोंमेंभी ज्योतिरूप है, और अज्ञान से पृथक् कहाजाता है और सब के हृदय में नियत ज्ञानरूप जाननेके योग्य विज्ञान से प्राप्त होने के योग्यहै । १७ । यहक्षेत्रज्ञ और ज्ञान विज्ञान से जानने के योग्य मिला हुआ क्षेत्रज्ञ वर्णन हुआ इनको जान कर मेरा भक्त मेरे भाव के योग्य होता है । १८ । प्रकृति और पुरुष इन दोनों को अनादि जानो और इच्छा आदि विकार और गुणों को प्रकृति से उत्पन्न जानो । १९ । कार्य्य कारण के कर्तृत्व में प्रकृतिही कारण रूप है, और सुख दुःख के भोगने में पुरुष कारण कहा जाताहै । २० । प्रकृति में नियत पुरुषही प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले गुणों को भोगता है उत्तम अनुत्तम योनियों

any senses; unattached, supporting all things; and without quality, enjoying every quality. 14. Without and within all beings, moveable and immoveable, subtle and inconceivable, stands far and yet near. 15. Undivided in things, it stands as the supporter of all things, it is to be known; it destroys and produces. 16. It is the light of lights and is declared to be free from darkness. It is wisdom and obtained by wisdom; and it presides in every breast. 17. Thus have been described Kshetra, knowledge and knowable. My bhakta who knows this, is fitted for my *state.* 18. Learn that both prakriti and Purusha are without beginning. Know also that modifications and qualities are matter-born. 19. Prakriti is the cause of the occurrance of causes and effects. Purusha is the cause of the enjoyments of pain and pleasure. 20. The purusha residing in Prakriti, partakes of the qualities of Prakriti; attach

सङ्गोस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥ २२ ॥ उपद्रष्टानुमन्ता च भर्त्ता भोक्तामहेश्वर । पर मात्मेति चाप्युक्तो देहेस्मिन् पुरुष पर ॥ २३ ॥ य एव वेत्ति पुरुष प्रकृतिञ्च गुणे सह । सर्वथा वर्त्तमानोपि न सभूयोभिजायते ॥ २४ ॥ ध्यानेनात्मनिपश्य न्तिकेचिदात्मानमात्मना । अन्येसांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥ २५ ॥ अन्येत्वेवमजानन्त. श्रुत्वान्येभ्य उपासते । तेपि चाततरन्त्येव मृत्युंश्रुतिपरायणा ॥ २६ ॥ यावत् सञ्जायते किञ्चित् सत्व स्थावरजङ्गमम् । क्षेत्रक्षेत्रज्ञसयोगात्तद्विद्धि भरत र्षभ ॥ २७ ॥ समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्त परमेश्वरम् । विनश्यत्स्वविनश्यन्त य

के जन्मों में इस के गुणोंका संगही कारण है ।२१। द्रष्टा, साक्षी अनुमन्ता और भोक्ता, महेश्वर और परमात्मा इस शरीर में भी परम पुरुष काहा जाता है ।२२। जो इस रीति से पुरुष को और गुणयुक्त प्रकृतिको जानता है वह कर्मों में कैसाही प्रवृत्त हो तौभी फिर जन्मनही लेताहै । २३ । कोई कोई तो शरीर में बुद्धि और ध्यानके द्वारा परमात्माको देखते है और कोई सांख्य योग अर्थात् ब्रह्मज्ञान से और कोई कर्मयोगी पुरुष कर्म फलको ईश्वरके अर्पण करनेसे परमेश्वरको देखते हैं। २४ । और कितनेही पुरुष इस प्रकारको न जानकर दूसरे आचार्यों से सुनकर उपासना करते है वह गुरुसे सुनेहुये उपदेश में पूर्ण विश्वास रखनेवालेभी संसारको अवश्यतरते है । २५ । जितने जड़ चैतन्यजीव उत्पन्न होते है हे भरतर्षभ उनका पैदाहोना क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के योगसे जानो । २६ । जो सब सृष्टि में सदैव नियत नाशहोने वालों में नाश न होनेवाले परमेश्वरको देखता है वही देखने वाला है, । २७ । अपने शरीरके समान सब शरीरोंमें अच्छे प्रकार से नियत ईश्वरको समानता पूर्व्वक देखता हुआ शरीरादिक के सम्बंध हेतुसे

ment to the qualities is the cause of birth in a good or evil body 21 In this body the superior soul who is called Maheshwara, is the observer, the director, the protector, the partaker 22 He who conceives the Purusha and Prakriti, together with the Guna or qualities, whatever mode of life he may lead, he is never born again. 23 Some men, by meditation, behold the spirit within themselves, others by Sankhya yog and others by karma yoga 24 Others again who are not acquainted with this but have heard it from others these also, by adhering to what they have heard, pass beyond the gulf of death 25 Know, O chief of Bharatas, that every creature, whether animate or inanimate is produced from the union of Kshetra and Kshetrajya, matter and spirit. He who sees the Supreme Being alike in all things, indestructible within destructible, sees in reality 27 By conceiving that God in all things is the same, one does not of himself

पश्यतिसपश्यति ॥२८॥ समंपश्यन् हिसर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् । नहिनस्त्यात्मनात्मानं
ततोयातिपराङ्गतिम् ॥२९॥ प्रकृत्यैवचकर्माणि क्रियमाणानिसर्वशः। यःपश्यतितथात्मान-
मकर्त्तारं स पश्यति ॥ ३० ॥ यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति । तत एव च
विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥ ३१ ॥ अनादित्वान् निर्गुणत्वात् परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥ ३२ ॥ यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं
नोपलिप्यते । सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मानोप लिप्यते ॥ ३३ ॥ यथा प्रका-
शयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः । क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥३४॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा । भूतप्रकृति मोक्षञ्च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि सू० क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभाग
योगोनाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥ पर्वणितु सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥३७॥

आत्मारूप ईश्वरको पीडानहीं देताहै वहभीअन्त में मोक्षको पाताहै।२८।जो कर्मोंको प्रकृति से किया हुआ देखता है और इसी प्रकार आत्माको अकर्ता देखताहै वह देखताहै ।२९।जबजीवोंको एकआत्मामें लयहोताहुआ देखताहै औरउसीएकआत्मासे विस्तारको देखताहै तब ब्रह्मको प्राप्तहोताहै ।३०। हे अर्जुन यह अविनाशी परमात्मा आदि रहित और गुणोंसे पृथक् होनेसे शरीरमें वर्तमान होकरभी कर्म नहीं करताहै और न लिप्त होताहै । ३१ । जैसे कि सर्वव्यापी आकाश असंग स्वभावसे लिप्त नहीं होताहै इसीप्रकार देहके भीतर सर्वत्र नियत आत्माभी लिप्तनहीं होताहै ।३२। हे भरतवंशी जैसे कि सूर्य्य इस संपूर्ण लोकको प्रकाशित करता है उसी प्रकार क्षेत्रज्ञ आत्मा नानाप्रकारका रूप धारण करने वाले क्षेत्ररूपशरीरको प्रकाशित करताहै, । ३३ । जिन्होंने इसप्रकारसे क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके भेदको जानकर ज्ञानरूप नेत्रकेद्वारा अथवा आकाशादि भूतोंकी मूलरूप जो त्रिगुणात्मिका अविद्या है उसके विद्यारूपसे मोक्षको जानाहै वह मोक्षको पातेहैं । ३५ ।

---

injure his own soul, and goes to the supreme goal. 28. He who sees all actions performed by Prakriti (matter), sees that Atma is inactive. 29. When he sees the different speciees in nature centred in unity, and proceeding from it, he then reaches Brahma. 30. This supreme and incorruptible Spirit, even when it is in the body, neither acts nor is affected, because it is without beginning and without quality. 31. As the all pervading ether, being subtle, is not affected, even so the omnipresent spirit remains in the body unaffected. 32. As a single sun illumines the whole world, even so does the spirit illumine the whole body. 33. They who, with the aid of wisdom, perceive the body and the spirit to be thus distinct, and that there is a final release from the animal nature, go to the Supreme. 34.

श्री भगवानुवाच । परं भूय प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् । यज्ज्ञात्वा मुनय सर्वे परां सिद्धिमितो गता ॥ १ ॥ इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्य मागता । सर्गेपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥ २ ॥ ममयोनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् । सम्भव सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥ ३ ॥ सर्वयोनिषुकौन्तेय मूर्त्तय. सम्भवन्ति या । तासां ब्रह्म महद्योनिरहं वीजप्रद पिता ॥ ४ ॥ सत्वरज स्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवा । निवध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥ ५ ॥ तत्र सत्व निर्मलत्वात् प्रकाशकमनामयम् । सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥ ६ ॥ रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् । तान्निबध्नाति कौन्तेय कर्मस

अध्याय १४ ॥

श्रीभगवान् वोले कि हे अर्जुन अब मैं महाउत्तम ज्ञानको कहूंगा जिसको जानकर सबमुनि लोगों ने इस संसार मे पृथक् होकर मोक्षरूपा महासिद्धि को पाया है । १ । जिन्होंने इसज्ञानको आश्रयकरके मेरे भावोंको पायाहै वह सृष्टि के उत्पत्ति काल में भी उत्पन्न नही होते है और प्रलय में भी कालाग्नि से पीड़ित नही होते है । २ । मेरी योनि महत्तत्व की आदिभूतामाया है उसमें गर्भको मैं धारण करता हूं हे भरतवंशी उसीसे सब भूतों की उत्पत्ति होती है । ३ । हेअर्जुन सब योनियों में जो जीव उत्पन्न होते है उनकी योनि महत् ब्रह्म है और मैं वीर्य्य का देनेवाला पिताहूं । ४ । हे महाबाहु यह सत्त्व रज तम तीनोंगुण उसमाया से उत्पन्न हुयेहै वहगुण रूपान्तर दशा रहित आत्मा कोभी देहमें बन्धन करते हैं ।५। हे निष्पाप अर्जुन उनगुणों में सतोगुण निर्मलता होनेसे तो सबका प्रकाश करने वाला होता है और सुख और ज्ञानके संग से बन्धन करताहै । ६ । और तृष्णा और संगसे उत्पन्न रजोगुण को राग स्वरूप जानो हे अर्जुन यह रजोगुण

LECTURE XIV.

of the three gunas or qualities.

Krishna—I will now reveal to thee the superior wisdom which having learnt, all the Munis have passed hence to the supreme perfection. Those who embrace this wisdom, attain to my state and are not born at evolution nor suffer at dissolution. 2 The great Brahma is my womb In it I place the germ from which all beings are produced. 3 The great Brahma is the womb of all the forms which are born of every womb, and I am the father who sows the seed. 4 *Satwa*, *Rajas*, and *Tamas* are matter born qualities which confine the incorruptible spirit in the body. 5 The Satwa, because of its purity, is luminous and painless and links (souls) to bliss and wisdom. 6. Rajas is of a passionate nature

नेन देहिनम् ॥ ७ ॥ तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् । प्रमादालस्यनि
द्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥ ८ ॥ सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत । ज्ञानमा
वृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत ॥ ९ ॥ रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत ।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥ १० ॥ सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन् प्रकाश उप
जायते । ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥ ११ ॥ लोभः प्रवृत्तिरारम्भः
कर्मणामशमः स्पृहा । रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥ १२ ॥ अप्रकाशो
ऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च । तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥ १३ ॥
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत् । तदोत्तमविदां लोकानमलान् प्रतिपद्यते
॥ १४ ॥ रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते । तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु

अभिमानी शरीर को कर्मोंकि कर्म फलकी इच्छा से बन्धन करता है । ७ । और सब अभिमानी शरीरोंको मोह करने वाले तमोगुण को अज्ञान रूपमाया की आवरण शक्ति से उत्पन्न जानो हे भरतवंशी वह तमोगुण प्रमाद, आलस्य, निद्रा, इत्यादि से बन्धन करता है । ८ । हे अर्जुन सतोगुण सुख में प्रवृत्त करता है, रजोगुण कर्म में और तमोगुण ज्ञानको ढककर प्रमाद में लगाता है । ९ । हे भरत वंशी रजोगुण तमोगुण को स्वाधीन करने से सतोगुण की वृद्धि होती है और सतोगुण तमोगुण को शांत करने से रजोगुण की वृद्धि होतीहै और सतोगुण रजोगुण को आधीन करनेसे तमोगुण वृद्धि पाता है । १० । जबइस देह के भीतर बाह्याभ्यन्तरकी इन्द्रियरूपद्वारों में प्रकाशरूपज्ञान और सुख उत्पन्न होताहै तब सतोगुण की वृद्धि जानो ११ और हे अर्जुन रजोगुणकी वृद्धि होनेपर लोभ प्रवृत्ति आरम्भ अशान्ति इच्छा इत्यादि सबबातें उत्पन्न होतीहैं १२ और तमोगुणकी अतिशय वृद्धि होनेपर अप्रकाशता, कर्मोंका न करना प्रमाद मोह इत्यादि सब वस्तु उत्पन्न होती हैं । १३ । जब सतोगुण की अतिशयवृद्धि होनेपर किसी का मरना होजाता है तब देवताओं के निर्मल क्लेशरहित लोकों को पाता है । १४ । रजोगुणमें शरीर

arising from desire and attachment; it ties the embodied to work. 7. Tamas begets ignorance and deludes all the embodied beings and by heedlessness it binds one to sloth and sleep. 8. Satwa prevails in felicity, Rajas in action, and Tamas, having clouded wisdom, prevails in intoxication. 9. Overcoming Tamas and Rajas, Satwa prevails; Rajas over Satwa and Tamas; and Tamas over Satwa and Rajas. 10. When wisdom, shines through all the avenues of this body, then shall it be known that Satwa is prevalent. 11. Greed, unrest, undertaking works, disquiet and desire, are produced from the prevalence of the Rajas. 12. The tokens of the Tam are gloominess, idleness, sloth, and distraction of thought. 13. If the body is dissolved whilst Satwa prevails, the soul proceeds to the spotless regions of the blest. 14. When the

जायते ॥ १५ ॥ कर्मण सुकृतस्याहु सात्विक निर्मल फलम् । रजसस्तुफलदु स
महान तमसः फलम् ॥ १६ ॥ सत्वात् सञ्जायते ज्ञान रजसो लोभएवच ।
प्रमादमोहा तमसो भवतोज्ञ नमेवच ॥ १७ ॥ ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्थामध्येतिष्ठन्ति
राजसा । जघन्यगुणवृत्तस्था अधो गच्छन्ति तापसाः ॥ १८ ॥ नान्य गुणेभ्य
कर्त्तार यदाद्रष्टानुपश्यति । गुणेभ्यश्च पर वेत्ति मद्भाव सोधिगच्छति ॥ १९ ॥
गुणानेतानतीत्यत्रीन् देही देहसमुद्भवान् । जन्ममृत्युजरादु खैर्विमुक्तोमृतमश्नुते २०॥
अर्जुन उवाच । कैर्लिङ्गैस्त्रीन् गुणानेतानतीतो भवति प्रभो । किमाचार कथञ्चै
तांस्त्रीन् गुणानतिवर्त्तते ॥ २१ ॥ श्रीभगवानुवाच । प्रकाशञ्चप्रवृत्तिश्च मोहमेवच

त्यागहोने पर कर्मफल चाहनेवाले पुरुषों में उत्पन्नहोता है इसीप्रकार तमोगुण में मरनेवाला चांडाल आदि में वा पशु पक्षियों में उत्पन्नहोता है । १५ । अच्छी रीति से कियेहुये सतोगुणी कर्मका फल दु ख और अज्ञान से रहित निर्मल और ज्ञान वैराग्य आदि युक्त सात्विक धर्महै रजोगुणी कर्म का फल दुःख है और तमो गुणी कर्म का फल अज्ञान है । १६ । सतोगुण से ज्ञान उत्पन्नहोता है रजोगुण से लोभ पैदाहोता है और तमोगुण से प्रमाद मोह और अज्ञान पैदाहोते हैं । १७ । सतोगुणी पुरुष ऊपर जाते है अर्थात् देवभावको पाते है रजोगुणी मध्य में नियत होते है अर्थात् मनुष्य शरीर को पाते है और नीचगुणोंकी वृत्ती में नियत तामसी पुरुष नरक को जाते है अर्थात् पशु पक्षी आदि में उत्पन्नहोते है । १८ । जब द्रष्टारूप जीव सिवाय गुणों के किसी दूसरेको नही देखता है और जो गुणों से परे मुझको जानता है वह मेरेब्रह्मभावको पाता है । १९ । जीवात्मा इन तीनगुणों को जिनसे कि स्थूलशरीर की उत्पत्ति है उल्लंघन करके जराजन्म मरणके दुःखों से रहितहोकर मोक्ष को पाताहै । २० । अर्जुन बोले कि हे प्रभु कौनसे चिह्नों से इन तीनों गुणोंको उल्लंघन करनेवालाहोता है उसका कैसा आचार है और किस

body finds dissolution whilst Rajas is predominant, one is born amongst those who are attached to action Likewise dying when Tamas is prevalent, one is born in the wombs of irrational beings. 15 The fruit of good works is called pure and holy, the fruit of the Rajas is pain, and the fruit of Tamas is ignorance 16 From Satwa is produced wisdom, from Rajas covetousness, and from Tamas madness, distraction, and ignorance. 17 Those fixed in Satwa, mount on high, those of the Rajas stay in the middle, whilst those abject followers of Tamas sink below 18 When the seer perceives no other agent than these qualities, and knows what is beyond them, he enters my state. 19 Surpassing these three qualities, co existent with the body, the soul is delivered from birth and death, old age and pain, and drinks of the water of immortality 20 ARJUNA—By what token is it known that a man has surpassed these three qualities?

च पांडव । नद्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि न निवृत्तानि कांक्षति ॥ २२ ॥ उदासीनवदा सीनो गुणैर्यो न विचाल्यते । गुणा वर्त्तन्त इत्येव योवतिष्ठति नेंगते ॥ २३ ॥ समदुःख सुख स्वस्थ समलोष्टाश्मकांचन । तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुति ॥ २४ ॥ मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयो सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीत. स उच्यते ॥ २५ ॥ माच योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते स गुणान् समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ २६ ॥ ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च । शाश्वतस्यच धर्मस्यसुखस्यैकान्तिकस्यच ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि सू० गुणत्रयविभाग योगोनाम चतुर्दशोऽध्याय ॥ १४ ॥ पर्वणितु अष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

रीति से इन तीनों गुणों को उल्लंघनकरके वर्ताव करता है । २१ । श्रीभगवान् बोले हे पाण्डव प्रकाश, प्रवृत्ति, मोह यह तीनों सत्त्वादि गुणों के कार्यरूप है जो वह अन्तःकरण आदि में वर्तमान होयें तो उन से शत्रुता नहीं करता है । २२ । जो उदासीनके समान नियत होकर गुणों से चलायमान नहीं होताहै अर्थात् ऐसा जानता है कि यह गुणों का वर्त्ताव है इस बुद्धि में नियत होकर जो स्थिरता से नियत है वह चलायमान नहीं होता है । २३ । सुख दुःखको समान जाननेवाला वा अपनी इच्छा से नियत लोहे पत्थर सुवर्ण को बराबर समझनेवाला अथवा प्रिय अप्रिय वा निन्दा स्तुति में समबुद्धि धैर्य्यमान मानापमान रहित शत्रु मित्रमें समभाव होकर जो आरम्भ कर्मों का त्याग करनेवाला है वह गुणातीत कहाजाताहै । २५ । जो मुझको भक्तिमें ध्यान करता है वह इन गुणों को उल्लंघन करके ब्रह्मभाव के योग्य होताहै । २६ । मैं वेदका वा अविनाशी मोक्ष साधन का अथवा प्राचीन धर्म का और मोक्षरूपी सुखका अन्त स्थान हूं । २७ ।

What is his practice? How does he overcome them. 21 Krishna—He O son of Pandu, who despises not lucidity, activity and delusion when they come upon him, nor longs for them when they disappear, 22 who, sitting unconcerned, is unagitated by the qualities, who, whilst the qualities are present, stands still and moves not, 23 who is self dependent and the same in ease and pain, and to whom iron, stone, or gold are as one, firm alike in love and dislike, and the same whether praised or blamed, 24 the same in honor and digrace, the same towards the friend and the foe, and who forsakes all enterprize, such a one has surmounted the influence of the qualities. 25 And he, my servant, who serves me alone with due attention, overcomes the qualities and is fit to be absorbed in Brahma. 26 I am the emblem of the immortal and of the incorruptible, of the eternal justice, and of endless bliss. 27

श्री भगवानुवाच ॥ ऊर्ध्व मूलमध शाख मश्वत्थं प्राहुरव्ययम् । छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ १ ॥ अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः । अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥ २ ॥ न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा । अश्वत्थमेनं सुविरूढ मूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्वा ॥ ३ ॥ ततः पदं तत् परिमार्गितव्यं यस्मिन् गता न निवर्त्तन्ति भूयः । तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥ निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः । द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःख

अध्याय १५ ॥

श्रीभगवान्‌बोले कि ऊपरको मूल रखनेवाला और नीचेकी ओर शाखा रखने वाला वृक्ष अविनाशी वर्णन कियागयाहै उसवृक्षके पत्ते वेद और यज्ञहैं उस वृक्षको जो जानता है वह वेदका जाननेवाला है । १ । उसकी शाखा नीचे और ऊपरको फैलरही हैं और सतोगुणआदि गुणों से महावृद्धि युक्त विषयरूपी पत्तों से व्याप्त हैं और नीचे उस वृक्षकी जड़ें जिनसे कि कर्म बँधेहुये हैं फैलीहुई हैं । २ । उसका रूप नहीं पायाजाता है इससे यहवृक्ष आदि अन्त से रहित है और उसके लय होनेका भी स्थान नहीं है ऐसे अत्यन्त दृढ मूलवाले वृक्षको असंगरूप दृढशस्त्र से काटकर वह ब्रह्मपद निश्चय करने के योग्य है जिस में प्राप्त होनेके पीछे पुरुष फिर नहीं लौटते हैं उस सबके आदिरूप और वहपरब्रह्मकी शरण होताहूं कि आदिरहित संसारी मत्यनुता रूपी प्रवृत्ति निकली । ४ । मोह मान और कर्मों के संगों समेत रागादि दोषोंको जीतनेवाले आत्मानिष्ठ सर्वइन्द्रीजित् हर्षशोक रहित

LECTURE XV

Of purushottama

Krishna.—With roots above and branches below, they speak of Ashwattha indestructible, whose leaves are the Vedas He who knows that, is acquainted with the Vedas. 1 Its branches nourished by the Gunas spread upwards and downwards, its buds are the objects of senses. The roots which spread below, in the regions of mankind, are restrained by action 2 Its form is not understood here, neither its beginning, nor its end nor its source When a man has cut down this Ashwattha with the strong axe of disinterest, that place is to be sought after from whence there is no return for those who find it. Let us seek the first Purusha from whom is produced the ancient progression of all things. 4 Those who are free from pride and ignorance, who have prevailed over the evils of attachment the soul absorbed, freed from

गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययन्तत् ॥ ५ ॥ न तद्भासयते सूर्य्यो न शशांको नपावकः । यद्गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धामपरमं मम ॥ ६ ॥ ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः । मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥ शरीरं यदवाप्नोति यचाप्युत्क्रामतीश्वरः । गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥ ८ ॥ श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनञ्च रसनं घ्राणमेवच । अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥ ९ ॥ उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् । विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥ यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् । यतन्तोप्यकृ-

और विद्या के द्वारा अविद्या दूर करनेवाले पुरुष उसअविनाशी पदको पाते हैं ।५। उस पदमें न सूर्य्य प्रकाश करता है न चन्द्रमा प्रकाशित होता है अग्नि प्रकाश नहीं करसक्ता है जिसको जानकर नहीं लौटते हैं वही मेरी परमज्योति है । ६ । इस जीव लोकमें जीवरूप मेराही अंश और सनातन है वह अपने विषय रूप स्वभाव में नियत होकर छठेमन समेत पांचों इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षण करता है । ७ । और जाग्रत उत्पत्ति और पालनके समय इन इन्द्रियोंको अपने लय स्थानसे विषय के स्थानपर लेजाकर ऐसे प्राप्तहोता है जैसे कि गंधको लेकर वायुप्राप्त होती है ।८। यह श्रोत्र, चक्षु, स्पर्श, रसना, घ्राण, इनपांचों ज्ञानइन्द्रियोंको और मनको व्यापारवान् करके विषयोंको प्रकाश करता है । ९ । उसमन संयुक्त इंद्रियों की देहान्तर करने वाली इन्द्रियों के नियत होनेपर आपभी नियतहोकर इन्द्रियों के भोक्ताहोनेपर भोगनेवाले और गुणोंसे संयुक्त होनेवालेको अज्ञानी लोगनहीं देखते हैं परन्तु ज्ञानरूप नेत्ररखने वाले उनको देखते हैं ।१०। उपाय करनेवाले योगी इस असंग आत्माको बुद्धिमें नियतदेखते हैं और जिन्होंने यज्ञादिकर्मोंके करनेसे मनको शुद्ध करके अपने आधीन नहीं किया वहउपाय करते हुएभी इसपरमात्मा को नहीं

lusts and the pairs of pleasure and pain, tread, undeluded, that enduring path. 5. Neither the sun nor the moon nor the fire enlighten that place from whence there is no return, and which is the supreme mansion of my abode. 6. It is a portion of myself that in this animal world is the universal spirit of all things. It draws towards itself the matter-seated senses and the mind, which is the sixth. 7. Whichever body the lord (soul) enters or quits, it takes them (senses) and goes, as the breeze (takes) the fragrance from the flower. 8. It (soul) presides over hearing, seeing, feeling, tasting and smelling, and the mind and the sense objects. 9. The foolish see it not, attended by the Guna or qualities, in expiring, in being, or in enjoying; but those who are endued with the eye of wisdom behold it. 10. The persistent yogis perceive it planted in their own breasts, while those of unrefined minds and week judgments, labouring, find it not. 11.

तात्मानो नैन पश्यन्त्यचेतस ॥ ११ ॥ यदादित्यगत तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ १२ ॥ गामाविश्यच भूतानि
धारयाम्यहमोजसा । पुष्णामि चौषधीः सर्वा सोमो भूत्वा रसात्मक ॥ १३ ॥
अह वैश्वानरो भूत्वा प्राणिना देहमाश्रित । प्राणापानसमायुक्त पचाम्यन्नंचतु
र्विधम् ॥ १४ ॥ सर्वस्य चाह हृदिसन्निविष्टो मत्त. स्मृतिर्ज्ञानमपोहनञ्च ।
वेदैश्च सर्वै रहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ १५ ॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके
क्षरश्चाक्षर एवच । क्षर, सर्वाणि भूतानि कूटस्थोक्षर उच्यते ॥ १६ ॥ उत्तम
पुरुषस्त्वन्य. परमात्मेत्युदाहृत । योलोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्ययईश्वर ॥ १७ ॥
यस्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादपि चोत्तम । अतोस्मिलोके वेदे च प्रथित पुरुषोत्तम

देखते है । ११ । जो तेज सूर्य्य में वर्त्तमानहोकर संपूर्ण संसारको प्रकाशित करता है और जो तेज चन्द्रमा और अग्नि में है उसको तुम मेराही तेज जानो । १२ । मै पृथ्वी में प्रवेश करके अपने तेजसे संसार को धारण करता हूं और जल रूप चन्द्रमा होकर सब औषधियों को रससयुक्त करके पुष्टकरता हूं। १३। मैंही वैश्वानर नाम अग्निहोकर सब जीवोंके शरीर में नियतहोकर प्राण अपान से संयुक्त भक्ष्य भोज्य चूष्य लेह्य इनचारों प्रकारके पदार्थोको पचाताहूं । १४ । मै सबके हृदयमें वर्त्तमान आत्मा हूं मुझ आत्मा रूपसे स्मृतिज्ञान और अज्ञान है और मैंही सब वेद द्वारा जानने के योग्यहूं और वेदान्तका कर्त्ता और वेदार्थका ज्ञाताहू । १५ । लोकमें यहक्षर अक्षरनाम दोही पुरुष है सब संसार क्षर नामहै और रूपान्तर दशा रहित अक्षर नामसे प्रसिद्धहै । १६ । उपाधि से रहित उत्तम पुरुष परमात्मानाम तीनों लोक वालोंके शरीरों में प्रवेश करके रूपान्तर दशासे रहित सबका पोषण करता है । १७ । जोकि मै क्षरसे पृथक् और उपाधियुक्त जीवसेभी उत्तम हूं

Know that the light in the sun which illumines the whole world, and the light which is in the moon, and in the fire, is mine 12 Permeating the earth, I support all things by my vigour and becoming the juicy moon I nourish all the plants 13 I am the fire residing in the bodies of all living beings, and joined with Prana and Apana, I digest the four fold food 14 I penetrate into the hearts of all, from me proceed memory, knowledge, and the loss of both I am to be known by all the Vedas and I am he who knows the Vedas. 15 There are two kinds of Purusha in the world, the one corruptible and the other incorruptible The corruptible Purusha is the body of all things, the incorruptible one is constant 16 There is another Purusha most high, the Paramatma or supreme soul, who pervades and sustains the three worlds, the incorruptible Ishwara. 17 Because I am above corruption and superior to incorruption, wherefore in this world, and in

॥ १८ ॥ यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् । ससर्वविद् भजतिमां सर्वभावेन भारत ॥ १९ ॥ इति गुह्यतमं शास्त्र मिदमुक्तं मयानघ । एतद्बुध्वाबुद्धिमान् स्यात् कृतकृत्यश्च भारत ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासू० पुरुषोत्तमयोगोनाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥ पर्वणितु ऊनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥३९॥

श्री भगवानुवाच । अभयं सत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः । दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तपआर्जवम् ॥ १ ॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् । दयाभूतेष्वलोलुत्वं मार्दवंह्रीरचापलम् ॥ २ ॥ तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो

इसी कारण से लोक और वेदमें पुरुषोत्तम कहाजाता हूं। १८। जो मुझको संशय आदि रहित होकर पुरुषोत्तम जानताहै वहसर्वज्ञहै और हे अर्जुन वही मुझको सब भाव और रीति से भजता है। १९। हे निष्पाप भरतवंशी अर्जुन मैंने यह अत्यन्त गुप्त शास्त्र तेरे आगे वर्णनकिया इसको जानकर बुद्धिमान् ब्रह्मज्ञानी कर्मों से निवृत मोक्षको पाता है ॥ २० ॥

अध्याय १६ ॥

श्रीभगवान् बोले कि भय न करना, चित्तकी निर्मलता, ज्ञानयोगके निष्ठावान, जितेन्द्री, श्रौतस्मार्त्तयज्ञ, वेद पढ़ना, तप, सरलभाव। १। अहिंसा, सत्य, क्रोध न करना, त्याग, शान्ति, चित्तकी शान्ती, पराये दोषों को न कहना, दुखी जीवोंपर दयाकरना, विपरीत दशासे रहितहोना, मृदुता, लज्जा, नचि कर्मों में किसी अंगको प्रवृत्त न करना। २। तेजसे प्रगल्भता, क्रोधयुक्त न होना, धैर्यता, पवित्रता, शत्रुतारहित होना,

the Vedas, I am called Purushottama. 18, The man of a sound judgment, who knows me as the Purushottam, knows all, and serves me in every principle. 19. Thus, O Arjuna, have I made known to thee this most mysterious Shastra; he who understands it shall be wise and shall have accomplished all that is fit to be done. 20.

LECTURE XVI

Of good and evil Destiny

Krishna.-The man who is born with Divine destiny is endued with the following qualities: Fearlessness, purity of heart, settlement in the yog of wisdom, charity, self-restraint, sacrifices, study, penance, rectitude; (I) harmlessness veracity, absence of anger, resignation, temperance, freedom from slander; universal compassion, uncovetuousness, mildness, modesty, ficklelessness, (2) lustre, patience, fortitude, chastity, unrevengefulness, and free-

नातिमानिता । भवन्ति सम्पद दैवीमभिजातस्य भारत ॥ ३ ॥ दम्भोदर्पोऽभि
मानश्च क्रोध पारुष्यमेवच । अज्ञानञ्चाभिजातस्य पार्थसम्पदमासुरीम् ॥ ४ ॥
दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरीमता । माशुच सम्पद दैवीमभिजातोसि
पाण्डव । ५ ॥ द्वौभूतसर्गौ लोकेस्मिन् दैव आसुर एवच । दैवो विस्तरश
प्रोक्त आसुर पार्थमे शृणु । ६ । प्रवृत्तिञ्च निवृत्तिञ्च जना न विदुरासुरा । नशौचनापि
चाचारो न सत्य तेषुविद्यते ॥ ७ ॥ असत्यमप्रतिष्ठन्ते जगदाहुरनीश्वरम् । अप
रम्परसम्भूत किमन्यत्कामहैतुकम् ॥ ८ ॥ एता दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोल्पबुद्धय ।
प्रभवन्त्युग्रकर्माण क्षयाय जगतोऽहिता ॥ ९ ॥ काममाश्रित्य दुष्पूर दम्भमान

अभिमान न करना, हे भरतर्षभ दैवी सम्पत्तिके आगे जन्मलेने वालोंको यह गुण होते है।३।पाखण्ड, धनका गर्व इत्यादि अपनीमहत्वता चाहना, क्रोध, कठोर वचन, अज्ञ न, यहगुण आसुरी सम्पात्ति के उदय होनेवाले के है ।४। दैवी सम्पात्ति मोक्ष के निमित्त है और आसुरी सम्पत्ति सदैव बन्धन करनेवाली कही जाती है सो हे अर्जुन तू दैवी सम्पत्तिके सम्मुख उत्पन्न हुआहै इससे शोकमतकर । ५ । हे अर्जुन इस लोकमें जीवों के स्वभाव दो प्रकारके है एक दैव दूसरा आसुर इनदोनों में देव स्वभावको तो ब्यौरेवार कहा अब आसुर स्वभाव को कहता हूं । ६ । आसुर मनुष्य प्रवृत्ति निवृत्ति को नही जानकर अपवित्रहोते है और आचार सत्यता आदि से रहित होकर वह पुरुष संसारको भी यथार्थ राहित धर्माधर्म और प्रतिष्ठासे खाली कहते हैं और यहभी कहते है कि इस का कोई ईश्वर नही है यह पुरुष स्त्री के संग से उत्पन्न हुआ है इसका हेतु कामदेव है । ८ । ऐसे निर्बुद्धी भयानक कर्मी दुष्ट लोग जिनके धैर्यादि नष्ट होगये है वह ऐसे प्रमाणको आश्रयकरके जगतके नाशके लिये उत्पन्न होते है । ९ । वह कपटी मानी भ्रष्टव्रती कठिनता से पूर्ण होने वाली कामनाओं को आश्रय करके अज्ञानतासे नीच कर्मों को अंगीकार करके संसारके

dom from vain glory, these are his who is born with the divine properties, O Bharat 3 He who is born with asur properties, *is distinguished by hypocrisy, pride, presumption, anger, harshness of speech and ignoronce,* 4 The divine character is for Moksha and the asur for bondage. Fear not, Arjuna for thou art born of the divine kind. 5 There are two kinds of beings in the world The divine nature has been fully explained. Hear what the evil nature is. 6 Asuras know neither activity nor abstinence, nor is purity, veracity, or morality found in them. They say the world is unreal, without prop and without lord, brought about by mutual union and having lust for its cause 8 Holding this view the lost soul, small-witted, of cruel deeds, vile beings become the ruin of the world. 9. Surrendering themselves to insatiable desires, seizing unlawfully by delusion, associated with hypocrisy, pride and passion and prac-

मदान्विताः मोहाद्गृहीत्वाऽसद्ग्राहान् प्रवर्त्तन्तेऽशुचिव्रताः ॥ १० ॥ चिन्तामपरिमेयांच
प्रलयान्तामुपाश्रिताः । कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥ ११ ॥ आशा
पाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः । ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥१२॥
इदमद्यमयालब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् । इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्
॥ १३ ॥ असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि । ईश्वरोऽहमहंभोगी सिद्धोऽहं
बलवान्सुखी ॥ १४ ॥ आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशोमया । यक्ष्येदा-
स्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥ अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालस
मावृताः । प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥ आत्मसम्भाविताः
स्तब्धा धनमानमदान्विताः । यजन्तेनाम यज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥

नाशके लिये कर्मकर्त्ता होतेहैं । १० । वह लोग मृत्युकारी महा चिन्ताओंमें डूबे हुएहैं और कामादि भोगोंको जीवनका फल मानने वाले हैं।११। और जोकुछ दृश्य मानहै उसको निश्चयकरके वहीमानतेहैं और आशारूपी हजारों बन्धनों से बँधेहुए काम क्रोधइत्यादिको मुख्य स्थान समझने वाले कामभोग के लिये अनर्थों के द्वाराधन समूहों को चाहते हैं । १२ । यह प्राप्तहुआ इस मनोरथ को पाऊंगा यह है और फिर यह सब मेरा धन होगा । १३ । यह शत्रु मैंने मारा और उन शत्रुओंको भी मारूंगा मैं समर्थहूं भोगीहूं शुद्धात्मा हूं बलीहूं और सुखीहूं ।१४। धनीहूं कुलवान् हूं मेरे समान कौनहै यज्ञादि करूंगा दान करूंगा आनन्द करूंगा ऐसे अज्ञानोंमें भूलाहुआहै ।१५। बहुतसे विषयों में प्र त होने से चित्त से व्याकुल मोहरूपी बन्धन में बँधा हुआ काम और भोगों में प्रवृत्त चित्त पुरुष महाघोर नरकों में गिरते हैं । १६ । आपनेको बड़ा मानने वाले स्तब्ध अहंकारी धनके मदमें भरेहुए मनुष्य

tising unholy vows, they prevail. 10. Because of their folly they adopt false doctrines, and continue to live the life of impurity, indulging in sensual appetites as the supreme good. 11. Fast bound by the hundred cords of hope, and given up to lust and anger, they seek by imjustice to hoard wealth for the gratification of their inordinate desires. 12. This, today, has been acquired by me. I shall obtain this object of my heart. This wealth I have, and this shall I have also. 13. This foe have I already slain and others will I forthwith vanquish. I am Ishwara, and I enjoy; I am consummate, I am powerful, and I am happy. 14. I am rich, and well-born; where is there another like unto me? I will make presents at the feasts and be merry." Thus talk those who are infatuated by ignorance. 15 Confounded with various thoughts, entangled in the net of folly, and attached to the gratification of their lusts, they sink at length into the Naraka of iniquity. 16. Being self-conceited, stubborn and puffed up with wealth and pride, they perform nominal sacrifices for show and not according to divine

अहङ्कार बल दर्पं काम क्रोधञ्च संश्रिता । मामात्मपरदेहेषु प्रद्विष तोऽभ्यसूयका ॥ १८ ॥ तानहं द्विषतः क्रूरान् संसारेषु नराधमान् । क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥ १९ ॥ आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि । ममाप्राप्यैव कौन्तेय ततोयान्त्यधमांगतिम् ॥ २० ॥ त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः । कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ २१ ॥ एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः । आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परांगतिम् ॥ २२ ॥ यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्त्तते कामकारतः । न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥२३॥ तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्य्याकार्य्यव्यवस्थितौ । ज्ञात्वाशास्त्रविधानोक्तं कर्मकर्त्तु मिहार्हसि२४

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीता० देवासुरसम्पद्विभागयोगोनाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ पर्वणितुचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

पाखण्ड करके बुद्धिके विपरीत नाममात्र यज्ञों से पूजन करते है, । १७ । अहंकार बल दर्प काम क्रोध इत्यादि को आश्रय करके वा घातादिक कर्मों से अपने शरीर से दूसरे शरीरोंमें मुझ जगदात्मासे शत्रुता करते है । १८ । हे अर्जुन मैं अन्तरात्मा उन शत्रुता करनेवाले निर्दयी सबसे अधम पापात्माओं को सदैव आसुरी योनियों में डालताहू । १९ । फिर वह अज्ञानी आसुरी योनियों में पडे हुए जन्म जन्मान्तर में भीमुझको न पाकर अधम पशु पक्षी वृक्ष आदिके शरीरों को पाते है । २० । यह काम क्रोध लोभरूपी नरकके तीनों द्वार नाश करने वाले हैं इसकारणइन तीनोंको त्यागकरे । २१ । हे अर्जुन इनतीनो नरकके द्वारोसे अत्यन्त अलगहोकर भगवत भजन आदि कल्याणों को कर्त्ताहै तब परममोक्ष रूप गति को पाताहै । २२ । जो मनुष्य शास्त्रबुद्धि को त्यागकर मनके इच्छारूपी कर्मों में प्रवृत्त होता है वह मनकी शुद्धी को और सुखपूर्व्वक मोक्षको नही पाता है । २३ । इसहेतु से कर्त्तव्य अकर्त्तव्य व्यवस्थाओं में तू शास्त्र को प्रमाणकर अर्थात जिसकी जैसी विधिशास्त्र में कही हुई है उसको ठीकही जानकर कर्मों को करना योग्य है । २४ ।

ordination. 17 Placing all their trust in pride, power, ostentation, lust, and anger, they maliciously hate me in themselves and others 18 I cast down upon the earth those furious, abject wretches those evil beings, in demoniacal wombs 19 Entering the wombs of Asuras from birth to birth, at length not finding me, they go to the infernal region 20 There are these three passages to Naraka lust, anger, and avarice, which are the destroyers of the soul wherefore a man should avoid them. 21 Being freed from these dark gates of sin, he advances his own happiness, and at length he goes to the Highest end. 22 He who abandons the dictates of his lusts, attains neither perfection happiness, nor the highest goal. 23 Wherefore, O Arjuna, thy authority is Shastra, in determining what is fit and unfit to be done, thou shouldst perform those works which are declared by the commandments of the Shastra 24.

अर्जुन उवाच । ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः । तेषांनिष्ठातु का कृष्ण सत्वमाहो रजस्तमः ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सास्वभावजा ।, सात्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ॥ २ ॥ सत्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत । श्रद्धामयोयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एवसः ॥ ३ ॥ यजन्ते सात्विका देवान् यक्षरक्षांसि राजसाः । प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसाजनाः ॥ ४ ॥ अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्तेये तपो जनाः । दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥ ५ ॥ कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्रामम चेतसः । माञ्चैवान्तःशरीरस्थं तान् विद्ध्यासुर निश्चयान् ॥६॥ आहारस्त्वपि सर्वस्य

अध्याय ॥ १७ ॥

अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी जो श्रद्धावान् पुरुष शास्त्रविधिको त्यागकरके ईश्वरका भजन पूजन करते हैं उनकी कौन निष्ठा है सतोगुणी वा रजोगुणी अथवा तमोगुणी है, । १९ । श्रीभगवान बोले कि अभिमानी पुरुषों की स्वभावसे उत्पन्न होने वाली श्रद्धा पूर्व जन्म के धर्माधर्म से उत्पन्नहै वह सतोगुणी रजोगुणी और तामसी इनतीन मकारकीहै इनतीनों मकारकी श्रद्धाको कहता हूं ।२। हे भरतवंशी पूर्वकर्म संस्कार के अनुसार जो बुद्धिवलहै उसीके अनुरूपसबकी श्रद्धा बनीहुई रहतीहैयहश्रद्धाहै जो जैसी श्रद्धावाला है वह उसी श्रद्धा के गुणोंसे मसिद्ध होताहै सतोगुणी पुरुष देवताओं को पूजते हैं रजोगुणी मनुष्य यक्ष राक्षसों को और तमोगुणी लोग मेत भूतादिकों को सेवन करते हैं । ४ । वेदादि शास्त्रोंके विरुद्ध घोरतपोंको जो मनुष्य करते हैं और पाखंड पूर्वक अहंकारमें भरे हुए विना विचार किये विषयकी इच्छा से बुरी वासना करके विषय साधन में संयुक्त हैं । ५ । वह अज्ञानी शरीरकी इन्द्रियों को निर्बल करने वाले मुझ शरीरवर्ती को भी अमसन्न

Chapter XVII

The threefold division of Faith

Arjuna—How is that sacrifice characterised, Krishn, which is performed in faith, against the precepts of the Shastra? Is it one of Satwa, Rajas, or the Tamas? I. Krishna.—The faith of mortals is of three kinds, denominated after the three Gunas, Satwik, Rajasee, or Tamasee. Hear what these are. 2. The faith of every one accords with his nature; man is saturated with faith; he is that which his faith is. 3. Sattwic man worships the Dewas; Rajasic the Yakshas and Rakshasas; the Tamasic worship the Pretas and the tribe of Bhutas. 4. Those who perform severe mortifications not authorized by the Shastra, wedded to hypocrisy, pride, lust, passion, and strength, 5. Those fools torment the elements in the body, and me also planted in it. Know them to be of demon

त्रिविधो भवति प्रिय । यज्ञस्तपस्तथा दान तेषां भेद मिम शृणु ॥ ७ ॥
आयुःसत्वबला रोग्यसुखप्रीतिविवर्धना । रस्या स्निग्धा स्थिरा हृद्या आहारा
सात्विकप्रिया ८ ॥ कट्वम्ललवणात्युष्ण तीक्ष्णरूक्षविदाहिन । आहारा राज
सस्येष्टा दु खशोकामयप्रदा ॥ ९ ॥ यातयाम गतरस पूति पर्युषितञ्च यत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्य भोजन तामसप्रियम् ॥ १० ॥ अफलाकाङ्क्षिभर्यज्ञो विधि
दृष्टो य इज्यते । यष्टव्यमेवेति मन समाधाय स सात्विक ॥ ११ ॥ अभिसन्धाय
तु फल दम्भार्थमपि चैव यत् । इज्यते भरतश्रेष्ठ त यज्ञ विद्धि राजसम् १२ ॥
विधिहीनमसृष्टान्न मन्त्रहीनमदक्षिणम् । श्रद्धाविरहित यज्ञ तामस परिचक्षते ॥ १३ ॥
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजन शौचमार्जवम् । ब्रह्मचर्य्यमहिंसाच शारीर तपउच्यते ॥ १४ ॥

करनेवाले है उनको असुरों में निश्चय करनेवाला जानो ।६। अन्नादि भोजन भी सबको तीन प्रकार का प्याराहै इसी प्रकार यज्ञ तप दान भी तीनही प्रकार का प्यारा है इनका विभाग सुनो । ७ । जीवन, उत्साह, सामर्थ्य, नीरोगता, सुख, प्रीतिदायक वस्तु, रसीले कोमल स्थिर अर्थात् शरीर में रसके द्वारा विलम्बतक रहने वाले, देखने में सुन्दर हृदयको प्रसन्नकरनेवाले, ऐसे गुणयुक्त भोजन सात्विकी पुरुषोंको प्यारे होते है । ८ । कडुए, नोनके, खट्टे, अति उष्ण, चर्परे, रूखे, अत्यन्त जलन करनेवाले, दुःख शोक और रोगोंके उत्पन्नकरनेवाले भोजन रजोगुणी को प्यारे है । ९ । दुर्गन्ध युक्त, बासी, उच्छिष्ट, अभक्ष भोजन तामसी लोगोंको प्यारा है । १० । यज्ञही करनेके योग्यहै इसप्रकार अपने मनको समाधान करके फल के न चाहनेवाले पुरुषोंसे जो आवश्यकताके लिये रचाहुआ यज्ञ कियाजाता है वह सात्विकी कहाजाता है, । ११ । हेभरतर्षभ, फलकी इच्छा मनमें धारण कर पाखण्ड और कपट के निमित्त जो यज्ञ कियाजाता है उस यज्ञको राजसी जानो । १२ । शास्त्रकी रीति अन्नदान और मन्त्रदक्षिणा रहित श्रद्धा से निहीन यज्ञको तामसी यज्ञजानो ।१३। देवता ब्राह्मण और माता पिता आचार्य्यइत्यादि गुरु वा

nature. 6 There are three kinds of food which are dear to all men So are sacrifice, austerity and charity Hear what are their distinctions. 7 The food dear to Satwik men is such as increases life, energy, vigour health joy and relish It is tasteful, nourishing substantial and agreeable. 8 The food dear to Rajasic, is bitter, sour, saltish, over hot, pungent, dry and burning, producing pain, griefand sickness. 9 The food dear to Tamasic men is that which is stale, changed, putrid, refuse and impure 10 That law sanctioned sacrifice is Satvic, which is done without the desire of reward, with a firm belief that it is a duty 11 The sacrifice offered with a view to fruit, and with hypocrisy, is of the Rajas. 12 That sacrifice is Tamas which is contrary to law, without the distribution of food, without mantras, gifts and faith 13 Body

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितञ्च यत् । स्वाध्यायाभ्यसनञ्चैव वाङ्मयं तप
उच्यते ॥ १५ ॥ मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः । भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो
मानसमुच्यते ॥ १६ ॥ श्रद्धयापरया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः । अफलाकांक्षिभिर्युक्तैः
सात्त्विकं परिचक्षते ॥ १७ ॥ सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेनचैव यत् । क्रियते तदिह
प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥ १८ ॥ मूढग्राहेणात्मनो यत् पीडया क्रियते तपः । परस्यो
त्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥ १९ ॥ दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे कालेच पात्रेच तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥ २० ॥ यत्तुप्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य

ब्रह्मज्ञानियों का पूजन, पवित्रता, सरलता, सत्यता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा यहसव देह
के तपकहे जाते हैं । १४ । जो वचन दूसरेको सुखदाई, सत्यता, स्नेहता सहित
सबका हितकारी है वह और वेदका अभ्यास यह वाणीकी तपस्या कही जाती है
। १५ । प्रसन्नता चित्तशुद्धी सौम्यता वचनको आधीन रखना मनका रोकना
व्यवहार में औरोंके साथ निश्छलता यह मानसीतप कहाता है ।१६। फलकी इच्छा
न करनेवाले सावधान चित्तपुरुष देह मनवाणी से जो तीन प्रकारकी तपस्या श्रद्धा
पूर्वक करते हैं वह सात्विकी कहाजाता है । १७ । जो तपस्या अपनेमान स-
त्कार और पूजनके निमित्त कपटसे कीजाती है वहतपस्या इसलोकमें फलसे रहित,
नाशवान् रजोगुणी कही जाती है । १८ । अविवेक से उत्पन्न दुराग्रहसे अपने
शरीर की पीड़ा अथवा दूसरेके नाशके निमित्त जो तप किया जाता है वहतामसी
कहाता है । १९ । यह दानके योग्य है इस बुद्धि से फलकी इच्छा रहित जो दान
अनुपकारी पात्रको देशकालके विचारसे पुण्य क्षेत्रादि में दिया जाता है वह सा-
त्विकी दान कहा जाताहै । २० । जो दान बदले के लिये अथवा फलको ध्यान

austerity consists in the worship to the Dewas, the twice born,
the teachers and learned men, in chastity, rectitude and freedom
from injury. 14 Oral austerity consists in gentleness, justness,
kindness, and benignity of speech and attention to the religious
studies 15 Mental austerity consists in good temper, benevolence
quietude, self restraint, and purity of purpose 16 This threefold
austerity done by men, being warm in fervid faith, regardless
of the fruit, and with devotion, is Satwic. 17 The zeal which is
shown by hypocrisy, for the sake of the reputation of sanctity,
honor, and respect, is said to be of the Rajo Guna, and is incons-
tant and uncertain 18 The austerity which is exhibited with
self torture, by the fool, without examination, or for the purpose
of injuring another, is of the Tamo Guna. 19 That charity
which is bestowed, with the idea of duty, on one who is unable to
return it, in due place and season, and to proper objects, is of the
Satwic. 20 That which is given in expectation of a return, or for

वा पुन । दयितेच परिक्लिष्ट तद्दान राजसंस्मृतम् ॥ २१ ॥ अदेशकाले यद्दानमपात्रे
श्यश्च दीयते । असत्कृतमवज्ञात तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥ ओंतत्सदिति
निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविध स्मृत । ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिता पुरा ॥ २३॥
तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतप क्रिया । प्रवर्त्तन्ते विधानोक्ता सतत ब्रह्मवादिनाम्
॥ २४ ॥ तदित्यनभिसन्धाय फल यज्ञतप क्रिया । दानक्रियाश्च विविधा क्रियन्ते
मोक्षकाङ्क्षिभि ॥ २५ ॥ सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत् प्रयुज्यते । प्रशस्तेकर्म
णि तथा सच्छब्द पार्थयुज्यते ॥ २६ ॥ यज्ञे तपसि दाने च स्थिति सदितिचोच्यते ।
कर्म चैव तदर्थीय सदित्येवाभिधीयते ॥ २७ ॥ अश्रद्धयाहुतदत्त तपस्तप्त कृतञ्च

करके धन व्ययहोनेकीचिन्ता समेत कियाजाता है यह राजसी कहाताहै।२१।जो दान देशकालकेविपरीत अपात्रोंकोअप्रतिष्ठा और अनादरसेदियाजाताहैउसको तामसीकहते है ।२२। ओमतत्सत् यह ब्रह्मकानाम तीन प्रकारका हाताहै पूर्व्वकालमें उसीब्रह्मके नामसे ब्राह्मण वा चारोवेद और यज्ञप्रकट किये गये ।२३। इसकारण ओमका उच्चारण करके ब्रह्मवादी अर्थात् वैदिक लोगों के यज्ञदान तपआदि सबक्रिया जो कि वेदविधि में कही है सदैव होती रहती है । २४। कर्मफल को अंगीकार न करके तत कहकर मोक्षके चाहने वाले नानाप्रकारके यज्ञ तप दान आदिकी क्रिया ओंको करतेहै।२५।हेअर्जुन यहसतनाम श्रेष्ठहै जैसे वेदभाव और साधुओं के भाव में संयुक्त कियाजाता है इसी प्रकार उत्तम कर्ममेंभी सतशब्द संयुक्त कियाजाता है । २६ । यज्ञतप और दान में जो निष्ठा है वह सत नाम कही है और ईश्वरकी प्राप्ति के निमित्त जो कर्म है वहभी सतनाम कहाजाता है ।२७। श्रद्धा रहित जो

fruit and with reluctancy, is Rajasic 21 That which is given out of place and season, and to unworthy objects, ungraciously and scornfully, is pronounced to be of the Tamo-Guna. 22 ओम् Om तत् Tat सत् Sat, are the three mystic characters used to denote the Deity By him in the beginning were created the Bramhans, the Vedas and sacrifices. 23 Hence the Vedic sacrifices, gifts and austerities of the expounders of the word of God, constantly begin with the word Om ! 24 With Tat begin the acts of sacrifices and of gift, performed by aspirants of moksh, not wishing for fruit. 25 The word Sat is used for reality and goodness. Sat is also applied to deeds which are praiseworthy 26 Steadfastness in sacrifices, austerity and gifts is called Sat. Deeds which are performed on that account are also named Sat. 27 Whatever is performed without faith, whether it be sacrifices, deeds of

यत्। असदित्युच्यते पार्थ नच तत् प्रेत्यनो इह ॥ २८॥ ※ ※ ※ ※ ※

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि मू० श्रद्धात्रयविभाग योगोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥ पर्वणि एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४१॥

अर्जुन उवाच ॥ संन्यासस्य महाबाहो तत्वमिच्छामि वेदितुम् । त्यागस्यच हृषीकेश पृथक् केशिनिषूदन ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । काम्यानांकर्मणांन्यासं संन्यासं कवयो विदुः। सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥ २ ॥ त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः। यज्ञदानतपःकर्म नत्याज्य मिति चापरे ॥ ३ ॥ निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागेभरतसत्तम । त्यागोहि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः सम्प्रकीर्त्तितः॥ ४ ॥ यज्ञदानतपः

दान तप यज्ञादिक किये जाते हैं हेअर्जुन वह असत् हैं वह न इसलोक में न परलोक में गिनजाते हैं। २८।

अध्याय १८ ॥

अर्जुनबोले हे महाबाहु हृषीकेश केशी सूदन मैं त्याग और संन्यास को मूल समेत जानना चाहताहूं । १ । श्री भगवान् बोले कि जिनमें किसी प्रकार की इच्छा है ऐसे कर्मों के त्याग को सूक्ष्म पदार्थदर्शी पुरुषोंने संन्यास कहा है और पंडित लोगों ने सब कर्म फलों के त्यागको त्याग कहा है । २ । चित्तके जीतने वालों ने केवल कर्मोंहीका त्याग दोषयुक्त रागादिके समान त्याज्य कहा है और परमात्मा के चाहने की इच्छा करने वालों ने यज्ञ दान और तपको नहीं त्यागने के योग्य कहा है । ३ । हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन उस कर्म के त्यागने में मेरेभी निश्चयको तू सुन हे पुरुषोत्तम त्यागतीन प्रकारका कहाहै।४। यज्ञ दान तप

---

charity or mortifications, is called Asat; it is neither for this world nor for the next. 28.

LECTURE XVIII

OF SALVATION

Arjuna.—I wish, O strongarmed! to know the principle of Sanyasa and of Tyaga, O Keshi-slayer. 1. Krishna.—Sages know that Sannyasa means the forsaking of all actions; the wise *say* that Tyaga is the forsaking of the fruits of every action. 2. Certain philosophers declare that work should be abandoned as evil, whilst others say that deeds of sacrifice, mortification and charity should not be forsaken. 3. Hear from me, O best of Bharats, the truth about this Tyaga. Tyaga, O tiger of men, is pronounced to be of three natures. 4. Yajna, Dana and Tapas are not to

कर्म न त्याज्य कार्य्यं मेवतत् । यज्ञो दान तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥ ५ ॥ एतान्यपि तु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा फलानि च । कर्त्तव्यानीति मे पार्थ निश्चत मतमुत्तमम् ॥ ६ ॥ नियतस्यतु सन्यास कर्मणो नोपपद्यते । मोहात्तस्यपरित्यागस्तामस परिकीर्त्तित ॥ ७ ॥ दुःखमित्येव यत् कर्म्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् । स कृत्वा राजस त्याग नैव त्यागफल लभेत् ॥ ८ ॥ कार्य्यमित्येव यत् कर्म्म नियत क्रियतेऽर्जुन । सङ्ग त्यक्त्वाफलञ्चैव सत्याग सात्विको मत ॥ ९ ॥ न द्वेष्ट्यकुशल कर्म कुशले नानुषज्जते । त्यागी सत्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसशय ॥ १० ॥ न हि देहभृता शक्य त्यक्तु कर्माण्यशेषत । यस्तु कर्मफलत्यागी त्यागीत्यभिधीयते ॥ ११ ॥ अनिष्टमिष्ट मिश्रञ्च त्रिविध कर्मण फलम् । भवत्य

और कर्म यह चारों त्यागके योग्य नही है वह अवश्य करनेकेही योग्य है क्योंकि यज्ञ दान तप बुद्धिमानों के मनको पवित्र करनेवाले है । ५ । संगको और कर्म फलों को त्याग करके यज्ञ दान तपादिक कर्म करने के योग्य हैं यह मेरा संमत अत्यन्त निश्चय किया हुआ उत्तम है । ६ । करने के योग्य कर्मोंका त्याग उचित नहीं है मोह से उसका त्याग करना तामसी कहागया है । ७ । यह कर्म दुःख रूप है ऐसा मानकर शरीरके क्लेशके भयसे जो त्याग करता है वह इस राजसी त्याग के चित्त शुद्धी रूपफलको नही पाता है । ८ । हे अर्जुन कर्मको करने केही योग्य मानकर संगफलको त्यागके जो कर्म किये जाते है उसको सात्विकी त्यागमाना है । ९ । दुखदाई कर्म को बुरानही कहता और सुखदायी कर्ममें प्रीति नही करता राग द्वेप से रहित सतोगुण से भरा हुआ त्यागी अर्थात संन्यासी है बुद्धिका स्वामी होकर छिन्न संशय कहाजाता है । १० । देहाभिमानी से सर्व कर्म त्यागकरने महा कठिन और असंभव है जो कर्मोंके फलोंका त्यागी है वही त्यागी कहाजाताहै ।११। जो त्यागी नहीं है उन के कर्मों का फल मरने के पीछे तीनप्रकारका होताहै अर्थात

forsaken they should be performed, for Sacrifices, charity, and mortification are purifiers of the philosopher 5 It is my ultimate opinion and decree that such works as those ought to be done forsaking attachment and fruits Renunciation of works which are prescribed, is improper The forsaking of them through delusion is considered as Tamasa. 7 The forsaking of a work because it is painful, and from the dread of bodily affliction is Rajas and he who thus leaves it undone, derives no benefit from it. 8 The work which is performed as a duty, forsaking attachment and fruit, that forsaking is deemed Satwic 9 The relinquisher imbued with Satwa wise and free from doubt, is neither vexed at adversity nor exults in success. 10 No corporeal being is able totally to restrain from works. He is denominated a Tyagee who forsakes the fruit of action 11 The fruit of action is threefold good, evil

त्यागिनोप्रेत्य न तु सन्न्यासिनां क्वचित् ॥ १२ ॥ पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि
निबोधमे । सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥ अधिष्ठानं तथा
कर्त्ताकरणञ्च पृथग्विधम् । विविधाश्च पृथक् चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ॥ १४ ॥ शरीर
वाङ्मनोभिर्यत् कर्म प्रारभते नरः । न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्यहेतवः
॥ १५ ॥ तत्रैवं सति कर्त्तारमात्मानं केवलन्तुयः । पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति
दुर्मतिः ॥ १६ ॥ यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते । हत्वापि स
इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ॥ १७ ॥ ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचो
दना । करणं कर्म कर्त्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥ ज्ञानं कर्मच कर्त्ता च
त्रिधैव गुणभेदतः । प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ॥ १९ ॥ सर्वभूतेषु

अच्छा बुरा और मध्यम परन्तु संन्यासियों का कुछ नहीं होता है । १२ । हे महाबाहु सबकर्मों के सिद्धी के लिये यह पांचकारण सांख्य शास्त्रों में कहे हैं । १३ । स्थूल शरीर, कर्त्ता और दशोंइन्द्री और नानाप्रकारकी पृथक् २ चेष्टा और इन में पांचवें दैव हैं । १४ । मनुष्य जो कर्म धर्मरूप वा अधर्मरूप मनवाणी और देहके द्वारा प्रारंभ करता है उसी के यह पांचों हेतु हैं । १५ । ऐसी दशाहोने पर जो बुद्धिकी म्लानता से केवल आत्माको कर्त्ता देखता है वह पाप रूप बुद्धिरखने वाला नहीं देखता है । १६ । मैं कर्म का कर्त्ता हूं जिसको कि यह अहंकार नहीं है और जिसकी बुद्धि उस में लिप्तनहीं होती है इनलोकों कोभी जीतकर नहीं मारता है और न बन्धनमें होता है । १७ । ज्ञान ज्ञेय और परिज्ञाता यहतीन प्रकारवाले कर्मो की चेष्टा होती हैं इन्द्रियां कर्म और कर्त्ता यह तीन प्रकार के कर्मों के निवास स्थान हैं । १८ । ज्ञान कर्म कर्त्ता गुणों के विभागसे सांख्यशास्त्र में तीन प्रकार के कहे जाते हैं इनकी भी व्यवस्थाको सुन । १९ । जिस ज्ञान से पृथक् रूपवाली

and mixed, which befals, after death to the non relinquisher, but never to the relinquisher. I2. Learn, O Arjuna, these five causes for the accomplishment of all actions, declared in the Sankhya system. 13. The body, the actor, the implements of various sorts, several *contrivances*, and fifthly *Providence*. 14. The work which a man does, either with his body, speech or mind, whether lawful or unlawful, has these five causes. 15. He then who after this because of the imperfection of his judgment, beholds no other agent, than himself, is of unsound mind and sees not. 16. He who is free from pride, and whose judgment is not affected, although he should destroy those people, neither kills nor is bound. 17. Knowledge, knowable and knower are the three motives to action; the means, the action and the agent are the factors of action. 18. Knowledge, action, and agent are each distinguished in the category of qualities by the influence of the three Gunas. Hear their true nature.

येनैक भावमव्ययमाक्षते । अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धिसात्विकम् ॥ २० ॥ पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञान नानाभावान् पृथग्विधान् । वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञान विद्धि राजसम् ॥ २१ ॥ यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन् कार्य्ये सक्तमहैतुकम् । अतत्वार्थ वदल्पच तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥ नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषत. कृतम् । अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत् सात्विकमुच्यते ॥ २३ ॥ यत्तुकामेप्सुनाकर्म साहङ्कारेणवापुन । क्रियते बहुलायास तद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥ अनुबन्धं क्षयं हिंसामनपेक्ष्यच पौरुषम् । मोहादारभ्यतके मर्यच्चामसमुच्यते ॥ २५ ॥ मुक्तसंगो नहं वादी धृत्युत्साहसमान्वतः । सिद्धयासिद्धयोर्निर्विकारः कर्त्तासात्विकउच्यते ॥ २६ ॥ रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः । हर्षशोकान्वितः कर्त्ता राजसः

सृष्टि में न्यूनाधिकता रहित विना भेद एक चिन्मात्र रूपको देखता है उस ज्ञानको सात्विकी जानो । २० । जिसज्ञान से सब सृष्टि में अनेक भाव भिन्न प्रकार के जानता है वह ज्ञानराजसी है । २१ । और जो ज्ञान एक कार्य में परिपूर्ण के समान प्रवृत्त है वह हेतु से रहित परमार्थ सिद्धान्त नहीं है वह ज्ञानतामसीहै । २२ । कर्म फल न चाहने वाले पुरुषसे जो शास्त्रोक्त कर्म सदैव संग और राग द्वेषसे रहित किया जाता है वह सात्विकी कहाजाता है । २३ । फिर फलकी इच्छा रखने वाले जो अत्यन्त परिश्रम का कर्म अहंकार युक्त होकर करते हैं वह राजसी कहाता है । २४ । जो परिणाम फल और धनका खर्च वा दूसरेका कष्ट वा अपनी सामर्थके वल का विचार न करके मोहसे कर्म किया जाता है वह तामसी है । २५ । संग रहित अपने को कर्त्ता न मानने वाला धैर्य्य और उत्साहसे पूर्ण कर्मों की सिद्धी वा असिद्धी में विपरीत दशासे रहित है ऐसा कर्त्ता सात्विकी कहाता है । २६ । विषयों मे प्रीति रखनेवाला दूसरेके धनका लोलुप पर पीड़ा

19 That knowledge is satwik by which one indestructible being is seen in all beings, indivisible in the divisible 20. That knowlege is Rajas, which regards among all beings, plurality in substance, and variety in quality, as distinct 21 That knowledge is Tamas, which clings to a single object as if it were the whole, without reason, without grasping the reality and narrow 22. That action is Satwik which is done as duty by one who does not desire for fruit, without attachment, love or hate 23 That action is Rajas which is performed to gratify desire by selfishness with great effort 24 The action is Tamas, which is undertaken through ignorance and folly, and without any fore sight of its fatal and injurious consequences. 25 The actor is Satwik, who is free from attachment, pride and arrogance, is endued with fortitude and resolution, and is unaffected by success or failure 26 That actor is Rajas, who is ambitious,

प्रकीर्तित ॥ २७ ॥ अयुक्त प्राकृत स्तब्ध शठो नैकृति कोऽलस । विषादीदीर्घ सूत्रीच कर्त्ता तामस उच्य ते ॥ २८ ॥ बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविध शृणु । प्रोच्य मानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥ २९ ॥ प्रवृत्तिंच निवृत्तिंच कार्या कार्ये भयाभये । बन्ध मोक्षञ्च या वेत्ति बुद्धि सा पार्थ सात्विकी ॥ ३० ॥ यया धर्ममधर्मच कार्यंचा कार्य मेवच । अयथावत् प्रजानाति बुद्धि सा पार्थ तामसी ॥ ३१ ॥ अधर्मं धर्म मितिया मन्यते तमसावृता । सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धि' सा पार्थ तामसी ॥ ३२ ॥ धृत्यायया धारयते मनप्राणेंद्रिय क्रिया । योगेनाव्यभिचारिण्या धृति सा पार्थ सात्विकी ॥३३॥ ययातुधर्म कामार्थान् धृत्याधारयतेऽर्जुन । प्रसङ्गेन फलाकांक्षी धृति सा पार्थ राक्षसी

देनेवाला अपवित्र प्रिय अप्रिय मिलने में प्रसन्न और सुख दुख से संयुक्त कर्त्ता राजसी कहाजाता है । २७ । असावधान, प्राकृत, किसी का आदर न करनेवाला, शठ, छली, दूसरे का अपमान करनेवाला, कार्यासक्त, आलसी, विषादी, दीर्घसूत्री ऐसा कर्त्ता तामसी कहा जाता है । २८ । हे अर्जुन गुणों से बुद्धि और धैर्य्य के तीन प्रकारके भेद मैं तुझसे पृथक् २ करके कहताहूं उन सबों को सुनो । २९ । जो बुद्धिमान प्रवृत्ति निवृत्ति कार्य्य अकार्य्य भय निर्भयता कर्म संबंध बंधन और मोक्षको जानते है वह सात्विकी होते हैं । ३० । जिस बुद्धिसे धर्माधर्म और कार्य्याकार्य्य को खंडित और संदिग्ध जानता है उसकी राजसी बुद्धि कहाती है ।३१। हे अर्जुन जो अज्ञानसे ढकीहुई बुद्धिसे अधर्म को और सब अर्थों को उलटा मानते है उनकी बुद्धि तामसी कहाती है । ३२ । जो चित्तवृत्ति के रोकने के द्वारा जिस समाधि में प्रवृत्तहोकर धैर्य्यता से मनप्राण और इन्द्रियों की क्रियाओं को देरतक नियत करताहै वह धैर्य्य सात्विकी है । ३३ । हे अर्जुन जिस धैर्य्य से धर्म अर्थ कामों को करता है, अथवा धर्मादि के संबंध से फल का आकांक्षी है वहराजसी

who longs for the fruit, who is avaricious, cruel, impure, and a slave to joy and grief 27 The agent is Tamas who is inattentive, vulgar, stubborn, dissembling, mischievous, indolent, melancholy, and dilatory 28 Hear Dhananjaya! the threefold divisions of understanding and firmness, according to the Gunas, which are about to be explained to thee distinctly and without reserve 29 The understanding which can determine action and inaction duty and non-duty, fear and non fear, liberty and bondage, is *Satwic* 30 *That understanding is Rajas*, O Partha! which does not conceive justice and injustice, duty and non-duty 31 That understanding is Tamas which, overwhelmed in darkness, mistakes injustice for justice, and sees all things subverted. 32. That is Satwik firmness of unerring yog by which one restrains the activity of the mind and organs. 33. That interested firmness is Rajas by which a man, from views of profit, persists in Dharm, pleasure and

॥ ३४ ॥ यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेवच । न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी ॥ ३५ ॥ सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ । अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तञ्च निगच्छति ॥ ३६ ॥ यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् । तत् सुखं सात्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ ३७ ॥ विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् । परिणामे विषमिव तत् सुखं राजसंस्मृतम् ॥ ३८ ॥ यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः । निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥ न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः । सत्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात् त्रिभिर्गुणैः ॥ ४० ॥ ब्राह्मणक्षत्रविशां शूद्राणाञ्च परन्तप । कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ ४१ ॥

धैर्य्य है । ३४ । जिसकी बुद्धि बिगड़ी हुई है वह जिस धीरज से स्वप्न, भय, दुःख व्याकुलता और चित्तकी अस्वाधीनता को धारण करता है वह धैर्य्यता तामसी कही जाती है।३५।हे भरतवंशी अर्जुन अब उन तीन प्रकारके सुखोंको कहताहूं जिन सुख समाधियों में अभ्यास करके रमताहै और दुःखके अन्त होनेपर मोक्षको पाता है । ३६ । जोकि वहसुख प्रथम विष के समान अन्तमें अमृत के समान होता है वह बुद्धि की निर्मलता से उत्पन्न हुआ सात्विकी सुख कहलाता है । ३७ । जो विषय इन्द्रियों के योगसे आदि में अमृत के समान है और अन्त में विष के तुल्य है उस सुखको राजसी कहते है । ३८ । जो स्वप्न आलस्य और भूल से उत्पन्न हुआ सुख है वह आदि में और अन्त में बुद्धिको भुलानेवाला है वह तामसी है । ३९ । वह पृथ्वी के जड़ चैतन्य जीवों में और स्वर्ग के देवताओं में भी नहीं है जोकि तीनों गुणों से रहित प्रकृतिवाले होय । ४० । हे शत्रुहन्ता अर्जुन स्वभाव जन्य गुणों के कारण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रों के पृथक् २ कर्म होते है ।४१।

---

wealth 34 That firmness is Tamas by which a fool departs not from sloth, fear, grief, melancholy, and folly 33 Now hear from me, Bharatarshabh, the three kinds of pleasure That pleasure which a man habitually enjoys, wherein he finds the end of his pains, that which in the beginning is as poison, and in the end as nectar and which springs from the blissful knowledge of self, is called Satwik 37 That pleasure is Rajas which arises from the conjunction of the organs with their objects, which in the beginning is as nectar and in the end as a poison. 38 That pleasure is Tamas which in the beginning and the end stupefies the soul, and which arises from drowsiness, idleness, and heedlessness. 39 There is nothing on earth or amongst the hosts of heaven, which is free from these three Gunas born of matter 40 The respective duties of Brahmans, Kshatryas, Vaishyas, and Shudras, are also dete[rmined] by the qualities which are in their constitutions. 41

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेवच । ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभा
वजम् ॥ ४२ ॥ शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् । दानमीश्वरभावश्च
क्षात्रंकर्म स्वभावजम् ॥ ४३ ॥ कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥ ४४ ॥ स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः
संसिद्धिं लभते नरः । स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥ ४५ ॥
यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदंततम् । स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति
मानवः ॥ ४६ ॥ श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् । स्वभावनि-
यतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥ ४७ ॥ सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपिन
त्यजेत् । सर्वारम्भाहि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥ ४८ ॥ असक्तबुद्धिःसर्वत्र

शम, दम, तप, शौच, क्षांति, आर्जव, ज्ञान, विज्ञान, श्रद्धा यह पूर्व जन्मके संस्कार से उत्पन्न हुये ब्राह्मण के कर्म हैं । ४२ । पराक्रम, तेज, धैर्य, चातुर्य्यता, युद्धके सम्मुख होकर न भागना, ईश्वरभाव अर्थात् अपराधियों को दण्डदेना यह क्षत्रियों के पूर्वजन्म संस्कार और स्वभावज कर्म हैं । ४३ । खेती गौकी रक्षा पोषण वनज यह वैश्यके स्वाभाविक कर्म हैं और सेवा करना आदिक शूद्र के स्वाभाविक कर्म कहेजाते हैं ।४४। अपने अपने कर्ममें प्रीति करनेवाला मनुष्य सिद्धि को पाता है और जैसे अपने कर्म में प्रीति रखनेवाला मुख्य सिद्धि को पाता है उसको भी मैं कहताहूं । ४५ । जिस अन्तर्यामी से जीवों की प्रवृत्ति है और जिससे यह सब जगत् भी व्याप्त है उसको मनुष्य अपने कर्मों से पूजन करके मोक्षरूपी सिद्धि को पाता है । ४६ । दूसरे के उत्तम धर्म्म से अपना धर्महीन भी श्रेष्ठतम है स्वभाव जन्य कर्मों के करने से पापका भागी नहीं होताहै । ४७ । हे अर्जुन स्वाभाविक दोषोंसे युक्त कर्मकाभी त्यागनकरे क्योंकि सब कर्मों के प्रारंभ

duties of the Brahmans are peace, self-restraint, austerity, purity, patience, rectitude, wisdom, learning, and theology. 42. The natural duties of the Kshatriya are bravery, glory, fortitude, rectitude, not to flee from the field, generosity, and princely conduct. 43. The natural duties of the Vaishya are agriculture, cattle-farming, and commerce. The natural duty of a Shudra is service. 44. Each man devoted to his own duty obtains perfection. Hear, how that perfection is to be accomplished. 45. One who makes an offering of his own works to that Being from whom all beings proceed, and by whom the whole universe is pervaded, obtains perfection. 46. One's own duties, destitute of merit, are preferable to the duty of another however well pursued. One following the duties which are appointed by his birth, incurs no sin. 47. One's own calling, with all its faults, ought not to be forsaken. Every

जितात्मा विगतस्पृहः । नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ॥ ४९ ॥ सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे । समासेनैव कौन्तेय निष्ठाज्ञानस्य यापरा ॥ ५० ॥ बुद्धया विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च । शब्दादीन् विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥ ५१ ॥ विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्काय मानसः । ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥ ५२ ॥ अहङ्कारं बल दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् । विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ ५३ ॥ ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति । समः सर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ५४ ॥ भक्त्या मामभिजानाति यावान् यश्चास्मि तत्वतः । ततोमां

दोषों से ऐसे आच्छादित हैं जैसे कि अग्नि धुयें से ।४८। सब पदार्थों में बुद्धि न लगाने वाला शान्त चित्त अत्यन्त लोभ और इच्छा से रहित संन्यास के द्वारा उस परम सिद्धिको पाताहै जो कर्म के त्याग और ब्रह्मज्ञान से सम्बन्ध रखने वाली है । ४९ । हेअर्जुन जैसे कि वैराग्य सिद्धि को पाने वाला ब्रह्मको पाता है उसका वृत्तान्त मुझसे सुनो वह वृत्तान्त ज्ञानकी परानिष्ठा है । ५० । अत्यन्त शुद्ध बुद्धिके द्वारा धैर्यतासे शरीर और इन्द्रियोंके समूहको भावों समेत स्वाधीन कर के अर्थात् दृढ़ आसन से शब्दादि विषयोंको त्यागकर रागद्वेष रहितहो और अहंभावको दूर करके सदैव एकान्त वासी अल्पाहारी मनको जीतनेवाला वैराग्य युक्त सदैव ध्यान योग में प्रवृत्त, अहंकार बलक्रोध इच्छा और आत्म भावरूपी परिग्रहको छोड़कर शान्तरूप होकर ब्रह्मभाव के योग्य होता है । ५३ । ब्रह्मरूप योगी प्रसन्न चित्त होकर न शोच करता है न इच्छा करता है और सबजीवमात्रोंमें समदर्शी होता है वह मेरी पराभक्तिको पाता है । ५४ । उस भक्ति के द्वारा ज्ञानी पुरुष जैसा मैं

तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥ ५५ ॥ सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपा
श्रयः । मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥ ५६ ॥ चेतसासर्वकर्माणि
मयि संन्यस्य मत्परः । बुद्धियोगमपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥ ५७ ॥
मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि । अथ चेत्त्वमहङ्कारान्नश्रोष्यसि विनंक्ष्यसि
॥ ५८ ॥ यदहंकारमाश्रित्य नयोत्स्यइति मन्यसे । मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृति
स्त्वांनियोक्ष्यति ॥ ५९ ॥ स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा । कर्त्तुनेच्छसि
यन्मोहात्करिष्यस्यवशोपि तत् ॥ ६० ॥ ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेर्जुनतिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥ ६१ ॥ तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन

वास्तव में हूं वैसाही ठीक जानता है तदनन्तर मुझको मूल समेत जानकर मुझ में ही समाता है । ५५ । उसप्रकारका ज्ञानी मुझ में निवास करने वाला सदैव सब कर्मों को भी करता हुआ मेरी कृपासे अविनाशी सनातन मोक्षपदको पाताहै।५६। विवेकबुद्धि से सब कर्मोंको मुझ में अर्पणकरके मुझको उत्तमलय स्थान जाननेवाला बुद्धि-योगमें प्रवृत्त होकर सदैव मुझी में चित्तका लगानेवालाहो । ५७ । मुझ में चित्त लगाकर तू सब कठिनताओं से तरेगा और जो तू अहंकार से मेरे वचनको नहीं सुनेगा तो नाश पावेगा । ५८ । जो अहंकार में प्रवृत्त होकर तू मानता है कि मैं नहीं लडूंगा यह तेरा निश्चय करना मिथ्याहै तेरा क्षत्री स्वभाव तुझको युद्ध में प्रवृत्त करेगा । ५९ । हे अर्जुन स्वभाव से उत्पन्न होने वाले अपने कर्मों से बँधा हुआ तू जो अज्ञान से युद्ध नहीं करना चाहता है तो तू पराधीन के समान अवश्य उसको करेगा । ६० । हे अर्जुन ईश्वर सब सृष्टि के हृदयस्थानमें लिंगदेहनाम यन्त्र पर आरूढ़ होनेवाला अपनी मायासे सबजीवों को ऐसे घुमाताहै जैसे कुम्हार चाक को ।६१।हे भरतवंशी सब भाव से उसी ईश्वरकी शरणमें जाओ उसकी कृपा से तू

knows well who and what I am; having thus discovered who I am he at length is absorbed in my nature. 55. Doing all works, with trust in me alone, he shall by my grace, obtain the eternal and infinite state; 56. With thy heart dedicate all thy works to me; and resorting to Buddhi-yog, think constantly of me. 57. Thinking of me, thou shalt, by my grace, surmount every difficulty. But if from egoism thou wilt not listen, thou shalt perish 58. If from self-sufficiency thou resolvest that thou wilt not fight, vain will be thy determination, for nature will impel thee. 59. Being bound, Kaunteya! to action by the duties of thy natural calling, thou wilt involuntarily do that which thou wantest, through ignorance, to avoid. 60. Ishwara resides in the breasts of all beings, revolving with his maya all beings, as if mounted on a potter's wheel. 61. Take sanctuary

भाविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥ अध्येष्यते च य इमं धर्म्यसंवाद
मावयोः । ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥ ७० ॥ श्रद्धावाननसूयश्च
शृणुयादपि यो नरः । सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान् प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेणचेतसा । कच्चिदज्ञानसम्मोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय७२॥
अर्जुन उवाच । नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत । स्थितोऽस्मि गत
सन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥ ७३ ॥ सञ्जय उवाच । इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य
च महात्मनः । संवादमिममश्रौषमद्भुतम् लोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥ व्यासप्रसादाच्छ्रुत
वानेतद्गुह्यमहं परम् । योगं योगेश्वरात् कृष्णात् साक्षात् कथयतः स्वयम् ॥७५॥

अधिक मुझको प्यारा पृथ्वीपर कोई नहीं होगा ।६९। जो हमदोनोंके इस धर्मरूप उपाख्यान को पढ़ेगा मैं उस ज्ञानयज्ञ निर्विकल्प समाधि के द्वारा उससे पूजित हूंगा ।७०। श्रद्धावान् अन्य के गुणों में दोष न लगानेवालाजो मनुष्य इस गीता के श्लोकों को सुनेगा वहभी मुक्तहोकर पवित्रात्मा पुरुषों के शुभ लोकोंको पावेगा ।७१। हे अर्जुन तूने एकाग्र चित्त होकर इस गीता शास्त्रको सुना और हे धनंजय तेरा मोह जनित सब अज्ञान अब नष्ट होगया । ७२ । अर्जुन बोले हे अविनाशी आपकी कृपासे मेरा मोह दूर हुआ और स्मृति प्राप्त हुई अब मैं सन्देह से रहितहूं इससे आपके वचनोंको करूंगा । ७३ । संजय बोले कि मैंने महात्मा वासुदेवजी और अर्जुन के इस अपूर्व लोमहर्षण संवाद को सुना । ७४ । मैंने व्यासजी की कृपासे यह अत्यन्त गुप्त योग निज योगेश्वर श्रीकृष्णजी के मुख से सुना । ७५ । हे राजन् ! केशवजी के और अर्जुन के इस अपूर्व पुण्यकारी

service than he, nor shall there be in all the earth one dearer to me 69.—He also who shall read these our religious dialogues, by him I shall be worshipped with the sacrifice of wisdom. This is my resolve. 70. That man too who hears it without doubt, and with due faith, is released and shall obtain the blessed abodes of the righteous 71 Hast thou heard this O Arjuna ! with thy mind fixed to one point ? Is the distraction of thought, which arose from thy ignorance, removed ? 72. Arjun.—By thy grace, Achyuta ! my delusion is destroyed and I have gained wisdom. I am now settled and freed from all doubts; I will do thy bidding." 73. Sanjaya.—In this manner I heard the astonishing and miraculous conversation between Vasudeva, and the magnanimous son of Pandu, 74. I heard this supreme and miraculous doctrine even as revealed from the mouth of Krishna himself, the lord of Yog, by the favor of Vyasa. 75. As, O mighty Prince ! I recollect again and again this holy and wonder-

भारत । तत्प्रसादात्परांशान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥ ६२ ॥ इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरंमया । विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥६३॥ सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः । इष्टोसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ॥ ६४ ॥ मन्मनाभवमद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु । मामेवैष्यसि सत्यन्ते प्रतिजानेप्रियोसिमे ॥ ६५ ॥ सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणंव्रज । अहंत्वासर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥ ६६ ॥ इदन्तेनातपस्काय नाभक्ताय कदाचन । नचाशुश्रूषवेवाच्यं नचमां योऽभ्यसूयति ॥ ६७ ॥ यइदं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति । भक्तिंमयि परांकृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥ ६८ ॥ नच तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मेप्रियकृत्तमः ।

अविनाशी पराशान्ती मोक्ष को पावेगा । ६२ । मैंने यह गुह्य से गुह्य ज्ञान तुम से कहा इस सबको अच्छी रीतिसे विचारकर जैसा चाहो वैसा करो । ६३ । फिर सब से गुह्यतम मेरे उत्तम वचनोंको सुनो तू मेरा बड़ाप्यारा है इसकारण मैं तेरेपरमहित को कहूंगा ।६४। मुझ मेंही चित्तसे लगाहुआ तू मेराभक्तहोकर मेरेहीनिमित्त कर्मका करने वालाहोकर मुझको नमस्कारकर मुझमेंही लयहोगा यह मैं सत्यही प्रतिज्ञा करताहूं क्योंकि तू मेरा बड़ाप्यारा है। ६५ । सब धर्म और कर्म और सुखदुःखादि को अत्यन्त त्यागकर मुझ अकेले की शरण को प्राप्तकर मैं तुझको सब पापों से मोक्ष करूंगा किसी बातका शोक मतकर । ६६ । जो तपसे रहित और भक्तिसे शून्य हैं अथवा गुरुकी सेवासे वहिर्मुख होकर मेरी निन्दा करतेहैं उन से कभी यह मेरा गुप्त ज्ञान कहनेके योग्य नहीं है । ६७ । जो इस मेरे गुप्तज्ञान को मेरेभक्तों में प्रचार करेगा वह मुझमें पराभक्ति को प्राप्तहोकर निश्चय मुक्ति को पावेगा ।६८। मनुष्यों में इसगीता पढ़ानेवालेसे अधिक मेराकोई प्यारा नहीं है और उससे

---

with Him alone, O Bharata, for, by His divine pleasure thou shalt obtain supreme happiness and eternal abode. 62. Thus have I taught thee wisdom which is a superior mystery. Ponder it well in thy mind and act as thou wilt. 63. Attend now to my supreme and most mysterious words, which I will for thy good reveal to thee, because thou art dearly beloved of me. 64. Be of my mind, be my devotee, my worshipper, and prostrate before me, and thou shalt come to me; in troth I pledge thee; thou art dear to me. 65. Forsake all duties, and fly to me alone Grieve not for I will deliver thee from all transgressions. 66. This is never to be revealed by thee to any one who is non-austere and loveless; nor to the undutiful, nor to him who despises me. 67. He who shall teach this supreme mystery to my devotees, will love me deeply and shall undoubtedly come to me. 68. There is not one amongst mankind who does me a greater

भविता नचमे तस्मादन्यःप्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥ अध्येष्यते चय इमं धर्म्यंसंवाद मावयोः । ज्ञानयज्ञेन तेनाहं मिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥ ७० ॥ श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपियो नरः । सोपि मुक्तः शुभाँल्लोकान् प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥ कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेणचेतसा । कच्चिदज्ञानसम्मोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय ७२॥ अर्जुन उवाच । नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत । स्थितोस्मि गत सन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥ ७३ ॥ सञ्जय उवाच । इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः । संवादमिममश्रौषमद्भुतम् लोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥ व्यासप्रसादाच्छ्रुत वानेतद्गुह्यमहं परम् । योगं योगेश्वरात् कृष्णात् साक्षात् कथयतः स्वयम् ॥७५॥

अधिक मुझको प्यारा पृथ्वीपर कोई नहीं होगा ।६९। जो हमदोनोंके इस धर्मरूप व्याख्यान को पढ़ैगा मैं उस ज्ञानयज्ञ निर्विकल्प समाधि के द्वारा उससे पूजित हूंगा ।७०। श्रद्धावान् अन्य के गुणों में दोष न लगानेवालाजो मनुष्य इस गीता के श्लोकों को सुनेगा वहभी मुक्तहोकर पवित्रात्मा पुरुषों के शुभ लोकोंको पावेगा । ७१ । हे अर्जुन तूने एकाग्र चित्त होकर इस गीता शास्त्रको सुना और हे धनंजय तेरा मोह जनित सब अज्ञान अब नष्ट होगया । ७२ । अर्जुन बोले हे अविनाशी आपकी कृपासे मेरा मोह दूर हुआ और स्मृति प्राप्त हुई अब मैं सन्देह से रहितहूं इससे आपके वचनोंको करूंगा । ७३ । संजय बोले कि मैंने महात्मा वासुदेवजी और अर्जुन के इस अपूर्व लोमहर्षण संवाद को सुना । ७४ । मैंने व्यासजी की कृपासे यह अत्यन्त गुप्त योग निज योगेश्वर श्रीकृष्णजी के मुख से सुना । ७५ । हे राजन् ! केशवजी के और अर्जुन के इस अपूर्व्व पुण्यकारी

service than he, nor shall there be in all the earth one dearer to me 69.—He also who shall read these our religious dialogues, by him I shall be worshipped with the sacrifice of wisdom. This is my resolve. 70. That man too who hears it without doubt, and with due faith, is released and shall obtain the blessed abodes of the righteous. 71 Hast thou heard this O Arjuna! with thy mind fixed to one point? Is the distraction of thought, which arose from thy ignorance, removed? 72. Arjun.—By thy grace, Achyuta! my delusion is destroyed and I have gained wisdom. I am now settled and freed from all doubts; I will do thy bidding." 73. Sanjaya.—In this manner I heard the astonishing and miraculous conversation between Vasudeva, and the magnanimous son of Pandu, 74. I heard this supreme and miraculous doctrine even as revealed from the mouth of Krishna himself, the lord of Yog, by the favor of Vyasa. 75. As, O mighty Prince! I recollect again and again this holy and wonder-

राजन् संस्मृत्यसंस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् । केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामिच मुहु-
र्मुहुः ॥ ७६ ॥ तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः । विस्मयो मे महान्
राजन् हृष्यामिच पुनः पुनः ॥ ७७ ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थोधनुर्धरः । तत्र
श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि सू० ब्र० श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
संन्यासयोगोनाम अष्टदशोऽध्यायः ॥ १८ ॥
.पर्वणितु द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

॥ समाप्तं भगवद्गीतापर्व ॥

संवाद को वारम्वार प्रसन्नता पूर्व्वक स्मरणकर आनन्द में मग्न होता हूं । ७६ ।
हे राजन् हरि के उस अपूर्व्व रूपको वारम्वार स्मरण करके मुझको वड़ा
आश्चर्य्य है और वारम्वार प्रसन्न होता हूं । ७७ । जिधर योगेश्वर श्रीकृष्णजी
और जिधर धनुषधारी अर्जुन हैं उधरही लक्ष्मी जय ऐश्वर्य और नीतिहै यहमेरा
निश्चय मत है ॥ ७८ ॥

ful dialogue of Krishna and Arjuna, I continue more and more to rejoice. 76. And as I recall the miraculous form of Hari, my astonishment is great and I marvel and rejoice again and again! 77. Wherever Krishna the lord of yog may be, wherever Arjuna the mighty bowman may be there shall eternally dwell fortune, power, victory, and virtue. This is my firm belief. 78.



॥ अथ भीष्मवधपर्व ॥

सञ्जय उवाच । ततो धनञ्जयं दृष्ट्वा बाणगांडीवधारिणम् । पुनरेव महानादं व्यसृजन्त महारथाः ॥ १ ॥ पाण्डवाः सोमकाश्चैव येचैषामनुयायिनः । दध्मुश्च मुदिताः शंखान् वीराः सागरसम्भवान् ॥ २ ॥ ततो भेर्यश्च पेश्यश्चक्रकचा गोविषाणिकाः । सहसैवाभ्यहन्यंत ततःशब्दोमहान भूत् ॥ ३ ॥ तदा देवाः सगन्धर्वाः पितरश्च जनाधिपः । सिद्धचारणसंघ्श्च समीयुस्तेदिदृक्षया ॥ ४ ॥ ऋषयश्चमहाभागाः पुरस्कृत्य शतक्रतुम् । समीयुस्तत्र सहिता द्रष्टुं तद्वैशसं महत् ॥ ५ ॥ ततो युधिष्ठिरो दृष्ट्वा युद्धाय समवस्थिते । ते सेने सागरप्रख्ये मुहुः प्रचालिते. नृप ॥ ६ ॥ विमुच्य कवचं वीरो निक्षिप्य च वरायुधम् । अवरुह्यरथात्तूर्णं पद्भ्यामेव कृताञ्जलिः ॥ ७ ॥ पितामहमाभिप्रेक्ष्य धर्मराजो युधिष्ठिरः । वाग्यतः

अध्याय ४३ ॥

संजयबोले कि तदनन्तर महारथियों ने बाणों समेत गांडीव धनुषधारी अर्जुन को देखकर महाशब्द करना प्रारम्भ किया ।१। पांडव वा संजय अथवा जो इनके पीछे चलनेवाले महायशी वीर लोग थे उनसबों नेभी बड़े प्रसन्न चित्तहोकर समुद्रोत्पन्न उत्तम२ शंखोंकी ध्वनिकी ।२। और इसीप्रकार भेरी कृकच गोविषाणक नाम सब-बाजे एकसाथही बजनेलगे और महातुमुल शब्द हुआ, तदनन्तर हे राजा धृतराष्ट्र देवता पितर सिद्ध चारण आदि गन्धर्वों समेत सब देवता युद्ध देखनेकी इच्छासे आपहुँचे,और महाभाग ऋषिलोगभी इन्द्रको अग्रभागमेंकरकेउस महाभारी नाशकेदेखने को वर्त्तमान हुये।५तदनन्तर हेराजन् वीर राजा.धर्मराज युधिष्ठिर इन युद्धोंके लिये अच्छे प्रकार सन्नद्ध होकर सागरके समान वारम्वार चलायमान दोनों सेनाओं को देखकर, कवचको उतार धनुष को त्याग शीघ्रही रथसे उतरकर पैदल ही हाथजोड़ेहुए पितामहकी ओर देखकर मौनता साधेहुये पूर्वाभिमुखहोकर

CHAPTER XLIII

Sanjaya continued:- Having seen Arjun, the great archer, once again with his Gandiv bow and arrows, the warriors raised a tremendous cry. The Pandavas, the Srinjayas and the other warriors who followed them, sounded their sea-born conch shells in great glee. Other musical instruments followed suit and the noise was great. Thereupon all the gods accompanied by Pitars, Sidhas, Charans and Gandharvas, came there to see the battle. The fortunate rishis too, preceded by Indra, were present to witness that great destruction. Then the brave warrior prince, Yudhishthir the just, seeing those two armies like the waves of the ocean, put off his coat of mail and leaving the good bow on his chariot, he stood on foot looking towards the grandfather with joined Palms and then turning his face eastward,

प्रययौ येन प्राङ्मुखो रिपुवाहिनीम् ॥८॥ तं प्रयान्तमभिप्रेक्ष्य कुन्तीपुत्रो धनंजय । अव
तीर्य रथा त्तूर्णं भ्रातृभिः सहितोऽन्वयात् ॥९॥ वासुदेवश्च भगवान् पृष्ठतोऽनुजगामतम्
तथा मुख्याश्च राजानस्तच्चित्ता जग्मुरुत्सुका. ॥ १० ॥ अर्जुन उवाच । किन्ते व्यवसि
तं राजन् यदस्मानपहाय वे । पद्भ्यामेव प्रयातोसि प्राङ्मुखो रिपुवाहिनीम् ॥११॥
भीमसेन उवाच । क्वगमिष्यसि राजेन्द्र निक्षिप्तकवचायुध । दंशितेष्वरिसैन्येषु
भ्रातॄनुत्सृज्य पार्थिव ॥ १२ ॥ नकुल उवाच । एव गते त्वयि ज्येष्ठे ममभ्रातार
भारत । भीर्मे दुनोति हृदय ब्रूहि गन्ता भवान्क्वनु ॥ १३ ॥ सहदेव उवाच ।
अस्मिन् रणसमूहे वै वर्तमाने महाभये । उत्सृज्यक्वनु गन्तासि शत्रूनभिमुखो
नृप ॥ १४ ॥ संजय उवाच । एवमाभाष्यमाणोपि भ्रातृभिः कुरुनन्दन. । नोवाच

शत्रुकी सेना में घुसाहुआ चला । ८ । उन धर्मराज को जाते हुए देखकर कुन्ती का पुत्र अर्जुन शीघ्रही रथसे उतरकर भाइयों समेत उसके पीछे चला और हे राजा वासुदेव जी उसके पीछे चले, तिस पीछे सब पृथ्वी के राजा अपने २ मनोरथ सिद्ध करने की इच्छा से उसके पीछे चले । १० । अर्जुन बोले हे युधिष्ठिर आपका क्या निश्चय है जो हम लोगों को त्याग करके पैदल होकर पूर्वाभिमुख शत्रुओं की सेना में जाते हो, भीमसेन बोले हे राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर आप कवच और शस्त्रों को त्यागकर भाइयों को छोड़ कर शस्त्रोंसे सन्नद्ध शत्रुओं की सेना के मनुष्यों में कहां को जाओगे, नकुल बोले हे भरतवंशी आप सरीके मेरे बड़ेभाई को इसप्रकार से जानेपर बड़ा भारी भय मेरे हृदय को पीड़ित करता है कहिये आप अब कहां जाओगे सहदेव बोले हे राजा इस महा भयकारी युद्ध करने के योग्य शत्रुकी सेनाके समूह के सम्मुख होकर कहां जातेहो ।१४। संजय बोले कि हे कौरव नन्दन धृतराष्ट्र भाइयों के इस प्रकार से कहने परभी मौन हुए अवाक् होकर

he walked to enter the forces of the enemy. 8. Seeing him thus proceeding onward, Arjun the son of Kunti at once leaped from his chariot and with the other brothers followed him. Vasudev too followed Arjun's example and was followed by other kings who were intent on doing their duty 10 "What do you intend to do, that you are so leaving us and going eastward on foot amongst the enemy?" said Arjun to Yudhishthir. "Where will you go, prince Yudhishthir, the prince of princes! leaving your armour, weapons and brothers and

पाण्डवतः किञ्चिद् गच्छत्येव युधिष्ठिरः ॥१५॥ तानुवाच महाप्राज्ञो वासुदेवो महामनाः । अभिप्रायोऽस्य विज्ञातो मयेति प्रहसन्निव ॥ १६ ॥ एष भीष्मं तथा द्रोणं गौतमं शल्य मेवच । अनुमान्य गुरून् सर्वान् योत्स्यते पार्थिवारिभिः ॥ १७ ॥ श्रूयते हि पुरा कल्पे गुरूननुमान्य यः । युध्यते स भवेद्‌व्यक्तं मपध्यातो महत्तरैः ॥ १८ ॥ अनुमान्य यथाशास्त्रं यस्तु युध्येन्महत्तरैः । ध्रुवस्तस्य जयो युद्धे भवेदिति मतिर्मम ॥ १९ ॥ एवं ब्रुवति कृष्णेऽत्र धार्त्तराष्ट्रचमूं प्रति । हाहाकारो महानासीन् निःशब्दास्त्वपरेऽभवन् ॥ २० ॥ दृष्ट्वा युधिष्ठिरं दूराद्धार्त्तराष्ट्रस्य सैनिकाः । मिथः संकथयाञ्चक्रुरेषो हि कुलपांसनः ॥ २१ ॥ व्यक्तं भीतइवाभ्येति राजासौ भीष्ममान्तिकम् । युधिष्ठिरः ससोदर्यः शरणार्थं प्रयाचकः ॥ २२ ॥ धनञ्जये कथं नाथे पांडवेच वृको

चला जाता था, तबतो बड़े साहसी वासुदेवजी ने बड़े प्रसन्न होकर कहा कि मैंने इस के चित्तकी इच्छा को जाना, यह युधिष्ठिर भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य और शल्य आदि सब गुरुओं की प्रतिष्ठा पूर्वक परिक्रमा करके उनसे आज्ञाको मांग कर युद्धमें शत्रुओं से लड़ेंगे।१७। प्राचीन शास्त्र में सुनाजाताहै कि जो बांधवोंसमेत गुरु वृद्धों को शास्त्रके अनुसार प्रतिष्ठा देकर अपने से बड़ों के साथ युद्ध करे निश्चय करके युद्धमें उसकी विजय होती है यह मेरामत है, श्रीकृष्ण जी के इस प्रकार कहनेपर शत्रुओं की सेना में बड़ा हाहाकार शब्द हुआ और पाण्डव लोगों के पक्षी राजा लोग चुप होगये दुर्योधन की सेना के वीरों ने युधिष्ठिर को देखकर परस्पर में वार्त्तालाप की कि यह कुलका कलंक है, प्रकट है कि यह राजा युधिष्ठिर भाइयों समेत भयभीत के समान भीष्मजी की शरण लेनेके निमित्त आता है । २१ । पांडव युधिष्ठिर अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव चारों भाइयों समेत किस प्रकार से भयभीतसा होकर सम्मुख आता है निश्चय है कि यह पृथ्वीपर प्रसिद्ध

without giving any reply. Thereupon Vasudev of great energy said in excess of cheer, "I know what passes in his mind. Yudhishthir, will pay his respects to and take the permission of his elders, Bhishm Kripa and Shalya, before the fight begins. 17. We see in old books that he who fights against his elders after paying his respect to them according to the shastras, will surely win victory, and I am of the same opinion." At these words of Shree Krishn, the warriors of the enemy raised cries of grief and the followers of the Pandavas were silenced. At the sight of Yudhishthir, the warriors of Duryodhan's army began to talk with one another, saying, "Yudhishthir is a discredit to the family! He is surely coming with his brothers, like a terrified man to throw himself on the mercy of Bhishm. 21. How does the Pandav Yudhishthir come like a terrified man, followed by his brothers Arjun, Bhim, Nakul and Sahadev? Surely

दरे । नकुले सहदेवेच भीतिरभ्येतिपाण्डवम ॥ २३ ॥ ननूनं क्षात्रियकुले जातः संप्रथितेभुवि । यथास्य हृदयं भीतमल्पसत्वस्य संयुगे ॥ २४ ॥ ततस्ते सैनिकाः सर्वे प्रशंसन्तिस्म कौरवान् । हृष्टाः सुमनसो भूत्वा चैलानि दुधुवुःमह ॥ २५॥ व्यनिर्न्दंथ ततः सर्वे योधास्तत्र विशाम्पते । युधिष्ठिरं समार्दर्य सहितं केशवेनाहि ॥ २६ ॥ ततस्तत् कौरवं सैन्यं धिक्कृत्वातु युधिष्ठिरम् । निःशब्दगभवत् तूर्णः पुनरेव विशाम्पते ॥ २७ ॥ किंनुवक्ष्यति राजसौ किं भीमः प्रतियक्ष्यति । किं भीमःसमरश्लाघी किं तुकृष्णार्जुनाविति॥२८॥विचारितं किमस्येति संशयःसुमहानभूत्। उभयोः सेनयो राजन् युधिष्ठिरकृते तदा ॥ २९ ॥ सोवगाह्यचमूं शत्रो शस्त्र-क्तिसमाकुलाम् । भीष्ममेवाभ्ययात् तूर्णं भ्रातृभिः परिवारितः ॥ ३० ॥ तमुवाच

क्षत्रियों के कुल में उत्पन्न नहीं हुआ काहेसे कि इस अल्प वलरखने वाले का हृदय युद्ध से भयाकुल है, तदनन्तर उन प्रतिपक्षी मनुष्यों ने बड़े प्रसन्न हृदय से कौरवों की प्रशंसा की । २४ । और पृथक् २ चैलों को अर्थात् रूमालों को घुमाया, हे राजा तिसके पीछे वहां सब के वीर उनकेशवजी और सगे भाइयों समेत युधिष्ठिर की ओरको गर्जे हे राजा फिर वह कौरवों की सेना युधिष्ठिर को तुच्छ करके शीघ्रही अवाक् होगई और सब विचारने लगे कि यह राजा क्या कहैगा और भीमसेन क्या कहैगा और युद्ध में प्रशंसनीय भीष्मजी क्या कहैं गे और श्रीकृष्ण वा अर्जुन क्या कहैंगे ।२८। हे धृतराष्ट्र इन विचारों के कारण युधिष्ठिर के जानेसे दोनों ओरकी सेनामें वड़ाभारी संशय उत्पन्न हुआ कि राजा युधिष्ठिरको क्या कहने की इच्छा है, वह राजा युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रुकी सेना के वाण वरछियों से व्याकुल सेना के पारहोकर भीष्म जीके सन्मुख आया, तदनन्तर शंतनु के पुत्र युद्धोत्सुकपितामह भीष्मजी के दोनों चरणों को युधिष्ठिर ने हाथों से दाबकर कहा । ३० । हे दुर्जय पितामह मैं आपसे पूछताहूं कि इस युद्ध में हम

---

he is not born of kshatryas of world wide renown as he seems to be afraid of war." With such remarks the warriors of the enemy praised the Kauravas 24 They waved their handkerchiefs and roared at Keshav the bravest of warriors and at Yudhishthir and his brothers, and saying "FIE on Yudhishthir," kept quiet. They began to think within themselves what Yudhishthir and Bhim will say and what Bhishm the best of warriors will say in reply. They wondered as to what Krishn and Arjun would say. 28. Thus there was a great suspense in both the armies on account of Yudhishthir as they did not know what he was going to say. In the meantime Yudhishthir with his brothers crossed the enemy's army, amidst spears and arrows, and coming before Bhishm, he touched with his hands both the feet of Bhishm the grandfather the son of Shantanu, and said,30. "Invincible grandfather!

ततः पादौ कराभ्यां पीड्य पांडवः । भीष्मं शान्तनवं राजा युद्धायसमुपस्थितम्
॥ ३१ ॥ युधिष्ठिर उवाच । आमन्त्रये त्वां दुर्धर्ष त्वया योत्स्यामहे सह । अनुजानीहि
मां तात आशिषश्च प्रयोजय । भीष्म उवाच । यद्येवं नाधिगच्छेथा युधिमां
पृथिवीपते । शपेयंत्वां महाराज पराभावाय भारत ॥ ३३ ॥ प्रीतोहंपुत्रयुध्यस्व
जय प्राप्नुहि पांडव । यत्तेभिलाषतं चान्यत् तदवाप्नुहि संयुगे ॥ ३४ ॥ व्रियतांच
वरः पार्थ किमस्मत्तोऽभिकांक्षसि । एवं गते महाराज न तवास्ति पराजयः ॥ ३५ ॥
अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्य चित् । इति सत्यं महाराज बद्धोस्म्यर्थेन
कौरवैः ॥ ३६ ॥ अतस्त्वांक्लीववद्वाक्यं ब्रवीमि कुरुनन्दन । भृतोऽस्म्यर्थेन कौरव्य
युद्धादन्यत् किमिच्छसि ॥ ३७ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ मन्त्रयस्व महाबाहो हितैषी मम

आपके साथ लड़ैंगे सो आज्ञा दो और आशीर्वाद भी दो, भीष्मजी बोले हे भरत वंशी महाराज राजा युधिष्ठिर जो तुम इसयुद्धमें इसरीति से मेरेपास न आते तो मैं तुमको पराजयहोने का शाप देता, हे पुत्र मैं प्रसन्न हूं हे पाण्डव युद्ध कर विजय को प्राप्तकरो और युद्ध में जो तेरी दूसरी इच्छा है उसको भी तुम पाओगे, हे राजा युधिष्ठिर वरमांग तू मुझसे क्या चाहता है हे राजा इस प्रकारके तेरे आचरणों से तेरी पराजय नहीं है, पुरुष धन रूपादि अर्थोंका दास है परन्तु अर्थ किसीका दास नहीं है हे महाराज यह सत्य है मैं कौरवों की ओर से अर्थद्वारावशीभूत कियागया हूं, हे कौरवनन्दन मैं इस कारण से कायर के समान तुम से वचन कहताहूं कि मुझको कौरवों ने धनके द्वारा पोषण किया है सो इनके लिये युद्ध तो अवश्य करूंगा तू युद्ध के सिवाय क्या चाहता है । ३६ । युधिष्ठिर बोले हे महाज्ञानी मेरा हित चाहनेवाले तुम सदैवमेरे अन्तको विचारो और दुर्योधनादि कौरवों के निमित्त युद्धकरो और आपका दियाहुआ वर सदैव नियत रहै, भीष्म जी बोले हे कौरव

I beg your permisson to fight with you in the ensuing battle and invoke your blessing. "To this Bhishm replied,"I should have wished your defeat, if you had not come to me at this time, king Yudhishthir, the descendant of Bharat! I am plea-ed with you, go. Gain victory in the battle, Pandav. You will also gain your second desire in battle. You may ask of me any boon you desire, king Yudhishthir: with such a conduct you cannot suffer defeat. Man is a slave to wealth, while wealth is nobody's slave. It is true, king, that I am under the influence of the wealth of the Kauravas. It is therefore like a coward that I say to you that I am maintained by the wealth of the Kauravas and must fight for them; but you may ask of me any other boon except this." "May you always think well of me, wise man!" said Yudhishthir, "Fight for Duryodhan and others, but always bear in mind the boon you have just given me," " What help can I render

नित्यशः । युध्यस्वकौरवस्यार्थे ममैष सततं वरः ।३८॥ भीष्म उवाच ॥ राजन् किमत्र साह्यन्ते करोमि कुरुनन्दन । कामं योत्स्ये परस्यार्थे ब्रूहि यत्ते विवक्षितम् ॥ ३९ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कथं जयेयं संग्रामे भवन्त मपराजितम् । एतन्मे मन्त्रयहितं यदि श्रेयः प्रपश्यसि ॥ ४० ॥ भीष्मउवाच ॥ नैनं पश्यामि कौन्तेय योमां युध्यन्तमाहवे । विजयेत पुमान् कश्चित् शाक्षादपि शतक्रतुः ॥ ४१ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ हन्त पृच्छामि तस्मात्त्वां पितामह नमोस्तुते । वधोपायं ब्रवीहित्व मात्मनः समरेपरैः ॥ ४२ ॥ भीष्म उवाच ॥ नस्मतं तात पश्यामि समरे यं जयेतमां । नतावन्मृत्यु कालोपि पुनराग मनं कुरु ॥ ४३ ॥ संजय उवाच ॥ ततो युधिष्ठिरो वाक्यं भीष्मस्य कुरुनन्दन ।

नंदन युधिष्ठिर इस स्थान पर मैं तेरी कौनसी सहायता करूं दूसरे के लिये अपनी इच्छा के समान लडूंगा और जो तेरी इच्छा है उसको भी कह, युधिष्ठिर बोले हे तात पितामह आपको नमस्कार है मैं आपसे पूछताहूं हे अजेय मैं युद्ध में आप को कैसे विजय करसक्ताहूं इस विषय में मेरे लिये श्रेष्ठ हितकारी शिक्षा दो, भीष्म जी बोले कि हे कुन्ती के पुत्र मैं ऐसा किसी को नहीं देखताहूं जो कोई पुरुष वा साक्षात् देवता इन्द्रभी मुझ युद्ध में लड़ते हुए को विजयकरे । ४० । युधिष्ठिर बोले हे पितामह तुम्हारे अर्थ नमस्कार है मैं आपसे यह हेतु पूछता हूं कि आप युद्ध में अपने विजय करने के उपाय को कहो भीष्मजी बोले हे तात जबतक मेरी मृत्युका समय न होय तबतक कोई मुझको युद्ध में जीतनेवाला नहीं दिखाई देता है, संजय बोले इसके पीछे कौरवनंदन युधिष्ठिर ने भीष्मजी के वचन को शिरसे अंगीकार किया और फिरभी नमस्कार करके वह महाबाहु युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रुकी सेना के सब मनुष्यों के देखते हुए सेना के मध्य में से निकलकर गुरू आचार्य द्रोणाचार्य जीके रथके पासगया, वहां कठिनतासे विजयहोनेवाले द्रोणाचार्य्यजीको परिक्रमापूर्वक नमस्कारकर के वाणी से अपने कल्याणकारी वचन को बोला, हे

you, son Yudhishthir? I shall fight with all my heart for Duryodhan, but you must speak out plainly what you desire." said Bhishm. "I bow to you, grandfather," said Yudhishthir, "may I ask you how I can conquer you in battle? Give me proper advice in this matter." "I donot see," replied Bhishm, "any man or even Indra the prince of gods that can overpower me in fight." 40. "I bow to you, grandfather and ask you the manner of your being overcome in battle" said Yudhishthir. "I cannot be overcome in battle," said Bhishm, "but when the time of my death approaches." Sanjaya said that Yuhdithrhir having heard these words, bowed down to Bhishm and having departed from the middle of the army he went on looking at the warriors of the enemy to the place where Dronacharya the preceptor's chariot was. And having paid his respects to the invincible Dronacharya,

शिरसाप्रति जग्राह भूयस्तमभिवाद्यच ॥ ४४ ॥ प्रायात् पुनर्महाबाहुराचार्य्यस्य रथं प्रति । पश्यतां सर्वे सैन्यानां मध्येन भ्रातृभिः सह ॥ ४५ ॥ स द्रोणमभिवाद्याथ कृत्वाचाभि प्रदक्षिणम् । उवाच राजा दुर्धर्षं मात्मनिः श्रेय संचयः ॥ ४६ ॥ आमन्त्रयेत्वां भगवन् योत्स्ये विगतकल्मष । कथं जये रिपून्सर्वाननुज्ञातस्त्वया द्विज ॥ ४७ ॥ द्रोण उवाच ॥ यदि मां नाभि गच्छेथा युद्धाय कृतनिश्चयः । शपेयं त्वां महाराज पराभावाय सर्वशः ॥ ४८ ॥ तद्युधिष्ठिरः तुष्टोस्मि पूजितश्च त्वयानघ । अनुजानामि युध्यस्व विजयं समं वाप्नुहि ॥ ४९ ॥ करवाणि च ते कामं ब्रूहित्वमसि कांक्षितम् । एवं गते महाराज युद्धादन्यत् किमिच्छसि ॥ ५० ॥ अर्थस्यपुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्य चित् । इति सत्यं महाराज बद्धोस्म्यर्थेन कौरवैः ॥ ५१ ॥ ब्रवीम्येतत् क्लीव

भगवन गुरुदेव मैं आपका पूजनकरता हूं और पूछताहूं कि मैं पापसे युद्धकरूंगा या पापसे रहित युद्धकरूंगा इसको आप कहिये हे विप्रेन्द्र आपकी आज्ञासे मैं किस प्रकारसे सबशत्रुओंको विजयकरूंगा ।४४।द्रोणाचार्य्य बोले कि जो युद्धके निश्चय करने के लिये तू मुझको नहीं मिलता तो हे महाराज सब प्रकार से पराजयहोनेके लिये तुमको शाप देदेता हे निष्पाप युधिष्ठिर मैं तुम से पूजित होकर प्रसन्नहूं मैं आज्ञादेताहूं कि युद्धकरो और विजय को पाओ, तेरेमनोरथको सिद्ध करूंगा जो तेरी इच्छाहोय सो कहो हे महाराज तुम ऐसी दशामें युद्ध के विशेष अन्य कौनसी बात चाहतेहो, पुरुषअर्थका दास है परन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है हे युधिष्ठिर यह सत्यही बातहै कि मैं कौरवों की ओर से अर्थ से वशीभूत कियागया हूं, इस हेतुसे असमर्थों की समान मैं तुझ से कहताहूं कि युद्धतो इनके अर्थ हम करेंगे इस के सिवाय दूसरी बात क्या चाहता है मैं कौरवों के निमित्त लड़ूंगा परन्तु तुम्हारी विजय होनेका आशीर्वाद देताहूं । ५२ युधिष्ठिर बोले हे गुरुदेव मेरी विजय होने

---

he said, "I salute you, Bhagwan! and ask you whether my fighting will be in good cause or not so. I beg to ask of you, best of Brahmans, how I shall be able to conquer all the enemies by your grace." 44 "I should have caused your defeat by all the means in my power and had cursed you, if you had not come to me to ascertain about the propriety of war. I am pleased, Yudhishthir, by your respectful behaviour. I allow you to make war and gain victory. What more do you want besides this war ? Man is a slave to wealth, but the wealth is nobody's slave. I tell you truly that I have been influenced by the wealth of Kauravas and it is therefore that I tell you like a weakling that fight I must, but is there aught that I can do for you ! I shall fight for the Kanravas, but shall pray for your victory."

वत्वां युद्धादन्यत् किमिच्छसि । योत्स्येह कौरवस्यार्थे तवाशास्यो जयोमया ॥ ५२ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ जयमाशास्त्वमे ब्रह्मन् मन्त्रयस्व च मद्धितम् । युध्यस्वकौरवस्यार्थे वर एष वृतो मया ॥५३॥ द्रोण उवाच । ध्रुवस्तेविजयो राजन् यस्य मन्त्री हरिस्तव। अहन्त्वामभिजानामि रणे शत्रून् विमोक्ष्यसे॥५४॥ यतोधर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो जय । युध्यस्व गच्छ कौन्तेय पृच्छमां किं ब्रवीमिते ॥ ५५ ॥ युधिष्ठिर उवाच । पृच्छामित्वा द्विजश्रेष्ठ शृणु यन्मेऽभि काङ्क्षितम् । कथं जयेयं सङ्ग्रामे भवन्तमपराजितम् ॥ ५६ ॥ द्रोण उवाच । न तेऽस्ति विजयस्तावद्यावद्युद्ध्याम्यहं रणे । ममाशु निधने राजन् यतस्व सह सोदरैः ॥५७॥ युधिष्ठिर उवाच । हन्त तस्मान् महाबाहो वधोपाय वदात्मनः । आचार्य्य प्रणिपत्यैष पृच्छामित्वा नमोऽस्तु ते ॥ ५८ ॥ द्रोण उवाच ।

का आशीर्वाद दो और मेरे हितकारी सलाह दो और आप कौरवों के निमित्त युद्ध करिये मुझे वरदो द्रोणाचार्य्य बोले हे राजा तेरी अवश्य विजयहै क्योंकि तेरेमन्त्री हरि हैं मै तुझको अच्छी रीति से जानताहूं कि तू युद्ध में शत्रुओं को जीवनसे मुक्त करेगा जहां धर्म है वही श्रीकृष्णजी है जहां धर्म है वहीं विजय है इससे हे कुन्तीनन्दन जाओ युद्धकरो तुम्हारी विजयहोगी अब मुझ से तू क्या पूछता है । ५५ । युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मणवर्य मै अपनी इच्छा के अनुसार आपसे पूछताहूं हे अजेय मैं युद्ध में आपको कैसे विजय करूंगा, द्रोणाचार्य्य बोले कि हे राजा जबतक मै युद्धभुमिमें लडूंगा तबतक तेरी विजय नही होगी मेरे मरने के पीछे तुम अपने भाइयों समेत शीघ्र उपायकरो, युधिष्ठिर बोले हे महाबाहु बड़े कष्टकी बातहै कि मै आपको नमस्कार करके प्रार्थना करताहूं कि आपअपने मरने के उपायकोबताइये, द्रोणाचार्य्यबोले हे तात मै उस अपने शत्रु को संसार में नहीं देखताहूं जो मुझ क्रोधाग्निमें भरेहुए बाणोंकी वर्षा करतेहुएको युद्धमें मारे, हे राजा इसके विशेष मरनेके निमित्त निश्चय करनेवाले योग बलसे देह त्याग

---

52 "Pray for my victory and give me salutaray advice. Give me this boon and fight on the side of the Kauravas" said Yudhishthir "Your victory is certain, for you have Hari for your adviser," said Drona "I know well that you will destroy the enemies. Where there is Dharm there Krishn and victory are Go, son of Kunti, fight and you will win What more do you ask of me?" 55 "Best of Brahmans!" said Yudhishthir, "I wish to ask of you, inconquerable one how I shall be able to conquer you" To this Dronacharya replied that Yudhisthir could not gain victory as long he was alive and that after his death the Pandavas were sure of it. At this Yudhisthir respectfully asked of Drona the manner of his death, and Drona

न शत्रुं तात पश्यामि योमां हन्याद्रणे स्थितम्। युध्यमानं सुसंरब्धं शरवर्षौघवर्षिणम्
॥ ५९ ॥ ऋते प्रायगतं राजन् न्यस्तशस्त्रमचेतनम्। हन्यान्मां युधि योधानां सत्य मे
तद्ब्रवीमिते ॥ ६० ॥ शस्त्रञ्चाहं रणे जह्यां श्रुत्वा सुमहदप्रियम्। श्रद्धेयवाक्यात्पुरुषा
देतत्सत्यं ब्रवीमिते ॥६१॥ सञ्जय उवाच ॥ एतच्छ्रुत्वा महाराज भारद्वाजस्यधीमतः।
अनुमान्य तमाचार्यं प्रायाच्छारद्वतं प्रति ॥ ६२ ॥ सोऽभिवाद्य कृपं राजा कृत्वाचापि
प्रदक्षिणम्। उवाच दुर्धर्ष तमं वाक्यं वाक्य विदांवरः ॥ ६३ ॥ अनुमान येत्वां योत्स्ये
हं गुरो विगत कल्मषः। जयेयञ्च रिपून् सर्वा नुज्ञातस्त्वयानघ ॥ ६४ ॥ कृपउवाच ॥
यदि मां नाभिगच्छेथा युद्धाय कृत निश्चयः। शपेयंत्वां महाराज पराभावायसर्वशः ६५

करनेवाले मुझको युद्ध में कोई वीर मारने वाला नहीं दीखता है यह मैं निश्चय करके कहताहूं, मैं युद्धमें विश्वासित पुरुष से बहुत बड़े अप्रिय और असत्य वचन को सुनकर शस्त्रोंका त्याग करूंगा यह तुमसे मैं सत्य२ कहताहूं । ६० । संजयबोले हे धृतराष्ट्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के इस वचनको सुनकर उन

वरत्वां युद्धादन्यत् किमिच्छसि । योत्स्येह कौरवस्यार्थे तवाशास्यो जयोमया ॥ ५२ ॥
युधिष्ठिर उवाच ॥ जयमाशास्स्वमे ब्रह्मन् मन्त्रयस्व च मद्धितम् । युध्यस्वकौरवस्यार्थे
वर एष वृतो मया ॥५३॥ द्रोण उवाच । ध्रुवस्तेविजयो राजन् यस्य मन्त्री हरिस्तव ।
अहन्त्वामभिजानामि रणे शत्रून् विमोक्ष्यसे ।५४॥ यतोधर्मस्तत कृष्णो यत कृष्णस्ततो
जय । युध्यस्व गच्छ कौन्तेय पृच्छमां किं ब्रवीमिते ॥ ५५ ॥ युधिष्ठिर उवाच ।
पृच्छामित्वां द्विजश्रेष्ठ शृणुयन्मेऽभि काङ्क्षितम् । कथ जयेयं संग्रामे भवन्तमपरा
जितम् ॥ ५६ ॥ द्रोण उवाच । न तेऽस्ति विजयस्तावद्यावद्युद्ध्याम्यहं रणे । ममाशु
निधने राजन् यतस्वसह सोदरै ॥५७॥ युधिष्ठिर उवाच । हन्त तस्मान् महाबाहो वधो
पाय वदात्मन. । आचार्य्य प्रणिपत्यैषपृच्छामित्वां नमोऽस्तुते ॥ ५८ ॥ द्रोण उवाच ।

का आशीर्वाद दो और मेरे हितकारी सलाह दो और आप कौरवों के निमित्त युद्ध करिये मुझे वरदो द्रोणाचार्य्य बोले हे राजा तेरी अवश्य विजयहै क्योंकि तेरेमन्त्री हरि है मै तुझको अच्छी रीति से जानताहूं कि तू युद्ध में शत्रुओ को जीवनसे मुक्त करेगा जहां धर्म है वही श्रीकृष्णजी है जहां धर्म है वही विजय है इससे हे कुन्तीनन्दन जाओ युद्धकरो तुम्हारी विजयहोगी अब मुझ से तू क्या पूछता है । ५५ । युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मणवर्य्य मै अपनी इच्छा के अनुसार आपसे पूछताहूं हे अजेय मैं युद्ध में आपको कैसे विजय करूगा, द्रोणाचार्य्य बोले कि हे राजा जबतक मै युद्धभूमिमे लडूंगा तबतक तेरी विजय नही होगी मेरे मरने के पिछे तुम अपने भाइयों समेत शीघ्र उपायकरो, युधिष्ठिर बोले हे महाबाहु बडे कष्टकी बातहै कि मै आपको नमस्कार करके प्रार्थना करताहूं कि आपअपने मरने के उपायकोबताइये, द्रोणाचार्य्यबोले हे तात मै उस अपने शत्रु को संसार में नहीं देखताहूं जो मुझ क्रोधाग्निमें भरेहुए बाणोंकी वर्षा करतेहुएको युद्धमें मारे, हे राजा इसके विशेष मरनेके निमित्त निश्चय करनेवाले योग बलसे देह त्याग

---

52 "Pray for my victory and give me salutaray advice. Give me this boon and fight on the side of the Kauravas" said Yudhishthir "Your victory is certain, for you have Hari for your adviser," said Drona "I know well that you will destroy the enemies. Where there is Dharm there Krishn and victory are Go, son of Kunti, fight and you will win What more do you ask of me?" 55 "Best of Brahmans!" said Yudhishthir, "I wish to ask of you, inconquer able one, how I shall be able to conquer you" To this Dronacharya replied that Yudhisthir could not gain victory as long he was alive and that after his death the Pandavas were sure of it. At this Yudhis thir respectfully asked of Drona the manner of his death, and Drona

न शत्रुं तात पश्यामि योमां हन्याद्रणे स्थितम्। युध्यमानं सुसंरब्धं शरवर्षौघवर्षिणम्
॥ ५९ ॥ ऋते प्रायगतं राजन् न्यस्तशस्त्रमचेतनम्। हन्यान्मां युधि योधानां सत्य मे
तद्ब्रवीमिते ॥ ६० ॥ अस्त्रञ्चाहं रणे जह्यां श्रुत्वा सुमहदप्रियम्। श्रद्धेयवाक्यात्पुरुषा
देतत्सत्यं ब्रवीमिते ॥६१॥ सञ्जय उवाच ॥ एतच्छ्रुत्वा महाराज भारद्वाजस्यधीमत'।
अनुमान्य तमाचार्यं प्रायाच्छारद्वतं प्रति ॥ ६२ ॥ सोऽभिवाद्य कृपं राजा कृत्वाचापि
प्रदक्षिणम्। उवाच दुर्धर्षं तमं वाक्यं वाक्य विदांवरः ॥ ६३ ॥ अनुमान येत्वां योत्स्ये
हं गुरो विगत कल्मषः। जयेयञ्च रिपून् सर्वां नुज्ञातस्त्वयानघ ॥ ६४ ॥ कृपउवाच ॥
यदि मां नाभिगच्छेथा युद्धाय कृत निश्चयः। शपेयंत्वां महाराज पराभावायसर्वशः ६५

करनेवाले मुझको युद्ध में कोई वीर मारने वाला नहीं दीखता है यह मैं निश्चय करके कहताहूं, मैं युद्धमें विश्वासित पुरुष से बहुत बड़े अप्रिय और असत्य वचन को सुनकर शस्त्रोंका त्याग करूंगा यह तुमसे मैं सत्य२कहताहूं। ६०। संजयबोले हे धृतराष्ट्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के इस वचनको सुनकर उन आचार्यजी की प्रतिष्ठाकरके नमस्कार कर कृपाचार्य्य जीके पास आया और वह वक्ताओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर उस बड़े दुर्जय कृपाचार्य्यजी को प्रणाम और प्रदक्षिणा करके यह वचन बोला कि मैं गुरुजी को प्रणामादिक करके पापसे पृथक् हुआ लडूंगा या पापसे हे निष्पाप मैं आपसे आज्ञा पाकर सब शत्रुओंको विजयकरूं कृपाचार्य्य बोले हे महाराज जो युद्धके निमित्त निश्चय करने वाला तू मुझसे नहीं मिलतातो मैं तेरेपराजयके निमित्त कठिन शाप देता, पुरुषही अर्थ का दास है परन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है हे महाराज यह सत्यही है कि मैं कौरवों की ओरसे अर्थके द्वारा आधीन किया गया हूं उनके निमित्त युद्ध करना योग्य है हे

replied that he would give up arms on hearing an untruth which was very disagreeable, from one in whom he had a trust." 60. Sanjay continued that having heard the words of Dronacharya, Yudhishthir bowed down to the preceptor and then came to Kripacharya. Yudhishthir the best of speekers saluted the inconquerable Kripacharya and said, "Having bowed down to you shall I fight in a good cause or not? Having got your permission, sinless one, may I conquer my foes?" "Had you not come to me, king, to ascertain about war," said Kripacharya, "I would have cursed you and caused your defeat. Man is a slave to wealth, but wealth is a slave to nobody. It is true that I am bound to the Kauravas for their supply of wealth and shall have to fight for them. This is my opinion and therefore

अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्य चित् । इति सत्यं महाराज बद्धोस्म्यर्थेनकौरवैः ॥ ६६ ॥ तेषामर्थे महाराज योद्धव्य मिति मे मतिः । अतस्त्वांक्लीववद्ब्रूयां युद्धादन्यत् किमिच्छसि ॥ ६७ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ हन्त पृच्छाम ते तस्मा दाचार्य शृणु मे वचः । इत्युक्त्वा व्यथितो राजा नोवाच गतचेतन ॥ ६८ ॥ सञ्जय उवाच ॥ तं गौतम प्रत्युवाच विज्ञायास्य विवक्षितम् । अवध्योहं महीपाल युध्यस्वजयमाप्नुहि ६९. प्रीतस्तेऽभि गमेनाहं जयन्तवनराधिप । आशासिष्ये सदोत्थाय सत्य मेतद् ब्रवीमिते ॥ ७० ॥ एतच्छ्रुत्वा महाराज गौतमस्य विशाम्पते । अनुमान्य कृपं राजा प्रययौ येन मद्रराट् ॥ ७१ ॥ स शल्य मभिवाद्याथ कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् । उवाच राज' दुर्धर्ष

महाराज मेरा यह मत है इसी हेतुसे मै असमर्थ के समान तुझसे कहताहूं कि युद्ध के विशेष दूसरी जो बात चाहै वह मुझ से कह । ६६ । युधिष्ठिर बोले हे आचार्य जी बड़े कष्टकी बात है मैभी इसी हेतुसे आपसे पूछताहूं आपमेरे वचन को सुनो यह कहकर पीड़ावान् और व्याकुल चित्तहोकर कुछ न बोला, संजयबोले कि गौतम कृपाचार्य जी उसके अभिप्राय को अच्छी तरह जानकर यह वचन बोले हे महाराज मैं तो अवध्यही हूं आपयुद्ध करो और विजयको पाओ मैं तेरेआनेसे प्रसन्न हूं हे राजा मै सदैव प्रातःकाल उठकर तेरे विजयहोनेका आशीर्वाद दूंगा यह तुझसे सत्य २ कहताहूं, यह गौतम कृपाचार्य जीके वचनोंको सुनकर उनको प्रदक्षिण पूर्वक नमस्कार करके वहांको चले जहां मद्रदेशके राजाशल्य वर्त्तमानथे । ७० । उस दुर्जय राजा शल्यकी नमस्कार पूर्वक परिक्रमा करके अपने कल्याणकारी वचन को बोला, हे कठिनता से विजय होनेवाले राजा शल्य मै आपकी प्रतिष्ठा करता हुआ प्रणाम करता हूं कि मैं निष्पाप होकर युद्ध करूंगा हे राजा

like a weak man I say that you may ask of me anything except what pertains to war" 66 "It is a painful subject to me," said Yudhishthir, "that I am constrained to speak about Hear me." Having said this, Yudhishthir in the excess of grief could speak no more and remained silent Sanjaya continued that Kripacharya, knowing the purpose of Yudhishthir full well, said to him, "None can kill me, You may fight and gain victory I am much pleased with your coming here I shall pray every morning for your victory and what I say is true" Having heard the words of Kripacharya and having respectfully saluted him, Yudhishthir moved on to the place where Shalya the king of Madra was 70 Having paid respect to the invincible king Shalya, Yudhishthir said, "Invincible Shalya! I respectfully salute you that I may fight a sinless battle. I shall conquer

मात्मनिः श्रेयसं वचः ॥ ७२ ॥ अनुमानये त्वां दुर्धर्ष योत्स्ये विगतकल्मषः । जये यन्नु परान् राजन् ननुज्ञातस्त्वया रिपून् ॥ ७३ ॥ शल्य उवाच ॥ यदि मां नाधि गच्छेथा युद्धाय कृतनिश्चयः । शपेयं त्वांमहाराज पराभावायवै रणे॥७४॥ तुष्टोस्मि पूजितश्चामि यत् कांक्षसि तदस्तुते । अनुजानामि चैवत्वां युध्यस्वजयमाप्नुहि ॥ ७५ ॥ ब्रूहिचैवपरं वीर केनार्थः किं ददामिते । एवं गते महाराज युद्धादन्यत् किमिच्छसि ॥ ७६ ॥ अर्थस्य पुरुषोदासो दासस्त्वर्थो न कस्य चित् । इति सत्यं महाराज.बद्धोस्म्यर्थेन कौरवैः ॥ ७७ ॥ करिष्यामिहि ते कामं भाषसे यथेप्सितम् ॥ ब्रवीम्यतः क्लीववत्त्वां युद्धादन्यत् किमिच्छसि ॥ ७८ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ मन्त्रयस्व महाराज नित्यं मद्धितमुत्त

आपकी आज्ञासे मैं बड़े बलवानशत्रुओं को विजय करूंगा शल्य बोले हे महाराज युधिष्ठिर जो युद्धके निश्चय करने को आप मेरे पास नहीं आते तो मैं तुम्हारे पराजय के निमित्त महाशाप देता, मैं तुमसे पूजित होकर बड़ा प्रसन्न हुआहूं जो इच्छा मैं होय वह मुझसे मांगो और जो तू चाहता है वही.तेरा मनोरथ सिद्धहोगा और मैं तुमको आज्ञा देताहूं कि युद्धकरो और विजय प्राप्तकरो हे वीर इसके सिवाय अपने अभीष्ट को कहो जिसको मैं दूं हे युधिष्ठिर ऐसी दशामें युद्ध के भिन्न दूसरी बात क्या चाहता है, पुरुष अर्थ का दास है और अर्थ किसी का दास नहीं है यह वचन सत्य २ कहता हूं कि मैं कौरवों की ओरसे अर्थ के आधीन किया गया हूं, हे इच्छावान मैं तेरी अभीष्ट इच्छा को पूर्ण करूंगा इस हेतुसे मैं असमर्थों के समान कहता हूं कि तुम युद्धके विशेष कौनसी बात चाहतेहो ।७७। युधिष्ठिर बोले हेमहाराज सदैव सुखदायी मेरेअभीष्ट के विषय में सलाहदो और कौरवों के निमित्त आप युद्ध करो यही मैं वरमांगताहूं । ७८ । शल्य बोले हे राजेन्द्र यहां मैं तेरी कौनसी

the enemies by your permission." "I should have prayed for your defeat, had you not come to me," said Shalya, "I am much pleased by your respectful behaviour. Ask of me what you desire and it shall be fulfilled. I give you permission to fight and to conquer. Tell me if you want anything else besides battle. Man is a slave to wealth, but wealth is slave to none. I tell you truly that I have been overpowered by the wealth of the Kauravas. I would fulfil' your desire and therefore like a weakling I say that except my joining in battle you may ask me anything you desire." 77. "Give me good advice king," said Yudhishthir, "and fight on the side of the Kauravas. This is all I want." 78. "What help can I render you here, prince." said Shalya, "I have promised the Kauravas to fight against you and shall, therefore, fight for them." "It is sufficient for me," said

मम् । काम युद्धपरस्यार्थे वरमेत वृणोम्यहम् ॥ ७९ ॥ शल्य उवाच ॥ किमत्र ब्रूहि
साह्यन्ते करोमि नृपसत्तम । काम योत्स्य परस्यार्थे बद्धो स्म्यर्थेन कौरवै ॥ ८० ॥
युधिष्ठिर उवाच । स एष मे वर शल्य उद्योगे यस्त्वयाकृत । सूतपुत्रस्य सग्रामे
कार्यस्तेजोवधस्त्वया ॥ ८१ ॥ शल्य उवाच । सम्पत्स्यत्येष ते काम कुन्तीपुत्र यथे
प्सितम् । गच्छ युध्यस्व विश्रब्ध प्रतिजाने जयस्तव ॥ ८२ ॥ सञ्जय उवाच । अनु
मान्याथ कौन्तेयो मातुल मद्रकेश्वरम् । निर्जगाम महासैन्याद भ्रातृभि परिवा
रित ॥ ८३ ॥ वासुदेवस्तु राधेयमाहवेभिजगामवै । तत एनमुवाचेद पाण्डवार्थे गदा
ग्रज ॥ ८४ ॥ श्रुत मे कर्ण भीष्मस्य द्वेषात् किल न योत्स्यस । तस्मान् वरय
राधेय यावद् भीष्मो न हन्यते ॥ ८५ ॥ हतेतु भीष्मे राधेय पुनरेष्यासि संयुगम् ।

सहायताकरूं मैं तेरे प्रतिपक्षी कौरवलोगोंकी ओरसे युद्धके लिये वचन बद्धहो-
गयाहूं इससे उनकेही निमित्तलड़ूंगा, युधिष्ठिरबोले कि हेशल्य मुझे वहीवर आपका
दियाहुआ उचितहै जो आपने युद्धके उपाय में मुझसे मणकिया है आपको युद्धमें
कर्ण के तेजका नाश करना चाहिये । ८० । शल्य बोले हे कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर
यह तेरा मनोरथ सिद्धहोगा तुम इच्छा पूर्व्वक युद्धकरो तुम्हारी विजयहोगी।८१।
संजयबोले कि इसप्रकार महावीरों से ऐसे २ वरदान लेकर भाइयों समेत युधिष्ठिर
अपने मामाशल्यको नमस्कार करके बड़ी सेना मेंस बाहर को निकले इसके पीछे
गदके बड़े भाई वासुदेवजी युद्धभूमि में कर्ण के पासगये और पांडवोंके निमित्त
उससे यह बचन बोले, हेकर्ण मैंने सुना है कि तुम निश्चय करके भीष्मकी विरुद्धता
से युद्ध नही करोगे हे कर्ण हमारेसाथचलो और जबतक भीष्मजी नही मारेजायँ
तबतक आपयुद्ध न करोगे भीष्मजीके मरनेपर युद्धके निमित्त संग्राम भूमिमें आकर
जो तुमचाहातो दुर्य्योधनकीसहायताकरो । ८५ । कर्णबोले हे केशवजी मैदुर्य्योधन

Yudhishthir, "if you will keep your promise about your share in the war, namely, that you will have to destroy the vigour of Karan" 80 'This desire of thine shall be fulfilled,' said Shalya, "fight with a light heart for thou shalt win, son of Kunti.' Sanjaya continued that having got the above mentioned boons from the warriors named above, and having respectfully taken leave of his maternal uncle, Yudhishthir came out of the army Then, Vasudeva, the elder brother of Gada, went to Karan in the field of battle and for the good of the Pandavas, spoke to him as follows "I hear, Karan," said he, "that you will not take up arms on account of your quarrel with Bhishm Come and stay with us as long as he is not killed After Bhishma's death you may again come into the field of battle to fight in Duryo-

धार्त्तराष्ट्रस्य साहाय्यं यदि पश्यसि चेत्समम् ॥ ८६ ॥ कर्ण उवाच । न विप्रियं करिष्यामि धार्त्तराष्ट्रस्य केशव । त्यक्तप्राणंहि मां विद्धि दुर्योधन हितैषिणम् ॥ ८७ ॥ तच्छ्रुत्वा वचनं कृष्णः सन्यवर्त्तत भारत । युधिष्ठिरपुरोगैश्च पाण्डवैः सह सङ्गतः संजयउवाच ॥८८॥ अथ सैन्यस्य मध्यतु प्राक्रोशत् पाण्डवाग्रज । योस्मान्वृणोतितमहं वरये साह्यकारणात् ॥ ८९ ॥ अथ तान् समाभवेक्ष्य युयुत्सु रिदमब्रवीत् । प्रीतात्माधर्मराजान कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ ९० ॥ अहं योत्स्यामि भवतः संयुगे धृतराष्ट्रजान् । युष्मदर्थे महाराज यदिमां वृणुषेऽनघ ॥ ९१ ॥ युधिष्ठिर उवाच । एह्येहि सर्वे योत्स्यामस्तव भ्रातृनपाण्डतान् । युयुत्सो वासुदेवश्च वयञ्च ब्रम सर्वशः ॥ ९२ ॥ वृणोमित्वां महाबाहो युध्यस्वममकारणात् । त्वयि पिण्डश्च तन्तुश्च

का अनिष्ट नहीं करूंगा मुझको आपदुर्य्योधनका अभीष्ट चाहनेवाला और उसके निमित्त अपने प्राणोंकाभी त्यागनेवाला जानो, हेभरतवंशी धृतराष्ट्र श्रीकृष्णजी उसके वचनको सुनकर युधिष्ठिरादि पांडवोंसमेत वहांसेलौटे,तदनन्तर राजा युधिष्ठिर सेना में आकर बड़े उच्चस्वर से पुकारे कि जो हमको वरताहै मैं उसको सहायताके कारण वरताहूं तदनन्तर धृतराष्ट्रके पुत्र युयुत्सुने इनको अच्छेप्रकार से सच्चादेखकर बड़े प्रसन्नचित्त होकर कुन्ती के पुत्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर से यह वचन कहा कि हे महाराज मैं आपके निमित्त युद्धभूमि में धृतराष्ट्रके पुत्रों से लड़ूंगा हेनिष्पाप जो तुम मुझको वरतेहो । ९० । युधिष्ठिर बोले हे युयुत्सु आओ हम सब तेरेअज्ञानी भाइयों से लड़ेंगे वासुदेवजी समेत हमसबप्रकार से कहते हैं, हे महाबाहु मैं तुझको वरताहूं मेरेकारण से युद्धकर तूही धृतराष्ट्र के पुत्रों के पिण्डों का सूत्र दिखाई देता है हे बड़े तेजस्वी राजकुमार तुमहम सब चाहने वालोंको चाहो तू निश्चय करके

dhan's cause." 85. "I shall do nothing, said Karan that may be injurious to Duryodhan as I am his staunch well-wisher and can lay down my life for him." On hearing these words, Krishn and the Pandvas returned from that place. Then king Yudhishthir called out in a loud tone, "I accept him for my ally who accepts me." At this Yuyutsu the son of Dhritrashtra, finding the Pandavas true men, spoke cheerfully the following words to Yudhishthir:- "I shall, said he, "fight for you with the sons of Dhritrashtra, if you take me with you." 90. "Come, come, Yuyutsu!" said Yudhishthir in reply, "we shall all fight against thy unwise brothers. V. sudev and I say this. I accept you, brave man, fight for me. Methinks thou art the thread of the cakes that shall be offered to the manes of the sons of Dhritrashtra. Come, glorious prince, to us who accept thee. Know

धृतराष्ट्रस्य दृश्यते ॥ ९३ ॥ भजस्वास्मान् राजपुत्र भजमानान् महाद्युते । न
भविष्यति दुर्बुद्धिर्धार्तराष्ट्रोऽत्यमर्षण ॥९४॥ सञ्जय उवाच ॥ ततो युयुत्सुः कौरव्यान्
परित्यज्य सुतांस्तव । जगाम पाण्डुपुत्राणां सेनां विश्राव्य दुन्दुभिम् ॥ ९५ ॥
ततो युधिष्ठिरो राजा संप्रहृष्टः सहानुजः । जग्राह कवचं भूयो दीप्तिमत् कनको
ज्ज्वलम् ॥ ९६ ॥ प्रत्यपद्यन्त ते सर्वे स्वरथान् पुरुषर्षभाः । ततो व्यूहं यथापूर्वं
प्रत्यव्यूहन्त ते पुनः ॥ ९७ ॥ अवादयन् दुन्दुभींश्च शतशश्चैव पुष्करान् । सिंह
नादांश्च विविधान् विनेदुः पुरुषर्षभाः ॥ ९८ ॥ रथस्थान् पुरुषव्याघ्रान् पाण्ड-
वान् प्रेक्ष्य पार्थिवाः । धृष्टद्युम्नादयः सर्वे पुनर्जहृषिरे तदा ॥ ९९ ॥ गौरवं
पाण्डुपुत्राणां मान्यान् मानयतांश्च तान् दृष्ट्वा महीक्षितस्तत्र पूजयाञ्चक्रिरे भृशम्
॥ १०० ॥ सौहृदञ्च कृपाञ्चैव प्राप्तकालं महात्मनाम् । दयाञ्च ज्ञातिषु परां कथयाञ्
चक्रिरे नृपाः ॥ १०१ ॥ साधुसाध्विति सर्वत्र निश्चेरुः स्तुतिसंहिताः वाचः पुण्याः

जान कि निर्बुद्धि दुर्योधन माराजायगा । ९३ । संजय बोले तबतो युयुत्सु कौरवों और तेरेपुत्रोंको त्यागकरके नगाड़ा बजाकर पांडवोंकी सेनामें गया तदनन्तर बड़े प्रसन्न चित्त उत्साह युक्त राजा युधिष्ठिर ने अपने स्वर्णमय प्रकाशमान महातेजस्वी कवच को धारण किया ।९५। और वह सब उसके साथी पुरुषोत्तमभी अपने२ रथोंपर सवार होकर उसके रथकेपीछे हुये और सबोंने पूर्व्वके समान अपनेव्यूहको सन्नद्ध किया, और सैकड़ों दुन्दुभी वा पुष्करनाम अनेक बाजोंको बजाया और नानाप्रकारके सिंह नादभी उन पुरुषोत्तमोंने किये, तब धृष्टद्युम्न आदि सब राजालोग पुरुषोत्तम पांडवोंको रथोंपर सवार देखकर फिर प्रसन्न हुये, और उन प्रतिष्ठा के योग्य पुरुषोंको प्रतिष्ठा देनेवाले पांडवों के समूह को देखकर राजालोगों ने बड़ी प्रशंसा की, और समय के अनुसार उन महात्माओंकी जात वालोंपर बड़ी सुहृदता और कृपालुता को वर्णन किया, उन कीर्त्तिमानों की प्रशंसासे युक्त पवित्र चित्तों के हृदय आकर्षण करनेवाले बहुत अच्छा बहुत अच्छा कह श्रेष्ठ वचन चारोंओर को फैलगये, जिन

---

for certain that Duryodhan shall die." Sanjaya said that at this Yuyutsu left the army of the Kauravas and joined the Pandavas amidst beat of drums Yudhishthir with a cheerful heart put on his bright armour. 95 All the followers of Yudhishthir got on their chariots again and arrayed themselves as before. Hundreds of musical instruments sounded and the warriors roared like lions. Dhrishtadyumn and other princes, best of men, seeing the Pandavas mounted on their chariots, were glad and praised the respectable Pandavas in songs expresive of their merciful deeds of charity. At the praises of the famous Pandavas the cry of "Well and good"

कीर्तिमतांमनोहृदयहर्षणाः ॥ १०२ ॥ म्लेच्छाश्चार्याश्च ये तत्र ददृशुः शुश्रुवुस्तदा । वृत्तं तत् पाण्डुपुत्राणां रुरुदुस्ते सगद्गदाः ॥ १०३ ॥ ततो जघ्नुर्महाभेरीः शतशश्च सहस्रशः । शंखांश्च गोक्षीरनिभान दध्मुर्हृष्टा मनस्विनः ॥ १०४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मादिसंमानने त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ एवं व्यूढेष्वनीकेषु मामकेष्वितरेषुच । के पूर्वं प्राहरंस्तत्र कुरवः पाण्डवानुकिम् ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच ॥ भ्रातृभिः सहितो राजन् पुत्रो दुःशसनस्तव । भीष्मं प्रमुखतः कृत्वा प्रययौ सहसेनया ॥ २ ॥ तथैव पाण्डवाः सर्वे भीमसेनपुरोगमाः भीष्मेण युद्धमिच्छन्तः प्रययुर्हृष्टमानसाः ॥ ३ ॥ क्ष्वेडा किलकिलाशब्दाः क्रकचा गो

म्लेच्छ और आर्य पुरुषों ने पांडवों के उस चलनको देखा और सुना वह गद्गद् कण्ठों से रुदन करनेलगे तदनन्तर प्रसन्न चित्त साहसी सेना के मनुष्यों ने सैकड़ों भेरी और पुष्करादि अनेक बाजे और दुग्ध समान महाश्वेत उत्तम उत्तम शंखों को बजाया १०४ ॥

अध्याय ॥ ४४ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रोंकी और पाण्डवों की सेना के इस रीति पर तैयार होनेपर पहले किन लोगों ने अर्थात् कौरव पाण्डवों में से पहले किस ने प्रहार किया । १ । संजय बोले कि आपका पुत्र दुश्शासन भाई के उस वचन को सुनकर भीष्मजी को आगे करके सेनाके साथ चला, इसीप्रकार भीमसेन आदि सब प्रसन्न चित्त पाण्डव लोगभी भीष्म जीसे युद्ध करने की इच्छा करके चले ।२। शंखध्वनि और कलकला शब्द पूर्वक क्रकच, गोविषाक,भेरी,मृदंग,मुरज, इत्यादि बाजों के और घोड़े हाथियों के अनेक प्रकारके शब्द होने लगे, हे राजा

spread all round. All the mlechas and Aryans who heard of the conduct of the Pandavas, wept for excess of joy. The cheerful and ambitious warriors of the army sounded hundreds of musical instruments and milk-white conch-shells. 104.

CHAPTER XLIV

"Which side was the first to strike a blow, when the two armies were thus prepared for battle?" asked Dhritrashtra. "Your son, Dushasan," replied Sanjaya, "went forward, led by Bhishm, at the order of Duryodhan; Bhim and other Pandavas, cheerful at heart, proceeded to meet Bhishm in combat Conch shells were sounded, warriors roared, various musical instruments were beaten and blown

विषाणिकाः । भेरीमृदङ्गमुरजा हयकुञ्जरनिस्वनाः ॥ ४ ॥ उभयोः सेनयोरासीत्ततस्ते
ऽन्यान्समाद्रवन् । यत्र तान् प्रति नर्दन्तस्तदासीत्तुमुलं महत् ॥ ५ ॥ महान्त्यनीकानि
महासमुच्छ्रये समागमे पाण्डवधार्त्तराष्ट्रयोः । चकम्पिरे शङ्खमृदङ्गनिस्वनैः प्रकम्पिता-
नीव वनानि वायुना ॥ ६ ॥ नरेन्द्रनागाश्वरथाकुलानामभ्यागतानामशिवे मुहूर्त्ते ।
बभूव घोषस्तुमुलश्चमूनां वातोद्धुतानामिव सागराणाम् ॥ ७ ॥ तस्मिन् समुत्थिते शब्दे
तुमुले लोमहर्षणे । भीमसेनो महाबाहुः प्राणदद्गोवृषो यथा ॥ ८ ॥ शङ्खदुन्दुभिनिर्घो
षं वारणानां च बृंहितम् । सिंहनादश्च सैन्यानां भीमसेन रवोऽभ्यभूत् ॥ ९ ॥ हयानां हेष
माणानामनीकेषु सहस्रशः । सर्वानभ्यभवच्छब्दान् भीमस्य नदतः स्वनः ॥ १० ॥ तच्छ्रुत्वा
निनदं तस्य सैन्यास्तव वितत्रसुः । जीमूतस्येव नदतः शक्राशनिसमस्वनम् ॥ ११ ॥

तदनन्तर वह दोनों सेनाओंके वीर लोग परस्पर में एक दूसरे पर प्रहार करने को महा गर्जनाओं को करके ऐसे दौड़े कि जिनके शब्दों से महातुमुलशब्द होगया । ५ । पांडवों और दुर्योधनादि कौरवो की महायुद्ध करने वाली सेना समागम के समय शंख और मृदंगोंके शब्दों से ऐसी महा कम्पायमान हुई जैसे कि वायु से सब वन कम्पायमान होते है, फिर राजा लोगों से और हाथियों से समाकुल और अशुभ मुहूर्त्त में आनेवाली सेनाओं क ऐसे कठोरशब्द हुए जैसे कि वायुसे चलायमान समुद्रों के शब्द होते है । ७ । शरीर के रोमहर्षण करनेवाले उस तुमुल शब्दक उठने पर महावाहु भीमसेन ऐसा गर्जा कि जिसकी गर्जना के कारण शंख दुन्दुभियों के शब्द और हाथियोंकी चिंघाड़ वा सेनाके मनुष्यों से सिंहनादभी तिरस्कार होगये, इस भीमसेनके शब्द ने सेना के मध्यवर्त्ती हजारों घोड़ो के हिनहिनाहट आदि अनेक शब्दो को दवादिया । १० । उसके उस महावज्र के समान शब्द को सुनकर तेरी सेना के मनुष्य अत्यन्त भयभीत हुए उस वीर के शब्द से सब सवारियों के वाहनों ने ऐसे मूत्र विष्ठा को डाला जैसे

---

and the noise of all these, mixed with the neighing of horses and the grunting of elephants, was excessive The warriors on either side rushed on to fight with tremendous roars 5 The armies of the Pandavas and Kauravas shook with the noise of conch shells and drums as forests shaken by the wind The uproar from the warriors and elephants of the army was like that of the ocean in a storm of wind. 7 Above that fearful din rose Bhim's war cry which was heard above the sounds of conch shells, trumpets, elephants and warriors and subdued the neighing of thousands of horses 10 The people of thy army were afraid to hear the thunder like sound of

वाहनानिच सर्वाणि शकृन्मूत्रं प्रसुस्रुवुः । शब्देन तस्य वीरस्य सिंहस्येवेतरेमृगाः
॥ १२ ॥ दर्शयन् घोरमात्मानं महाभ्रमिव नादयन् । विभीषयंस्तवसुतान् भीमसेनः
समभ्ययात् ॥ १३ ॥ तमायान्तं महेष्वासं सोदर्याः पर्यवारयन् । छादयन्तःशर
व्रातैर्मेघा इव दिवाकरम् ॥ १४ ॥ दुर्योधनश्च पुत्रस्ते दुर्मुखो दुःसहःशलः । दुःशा
सनश्चातिरथस्तथा दुर्मर्षणो नृपः ॥ १५ ॥ विविंशतिश्चित्रसेनो विकर्णश्चमहारथः।
पुरुमित्रो जयो भोजः सौमदत्तिश्च वीर्यवान् ॥ १६ ॥ महाचापानि धुन्वन्तो मेघाइवस
विद्युतः । आददानाश्च नाराचान्निर्मुक्ताशीविषोपमान् ॥ १७ ॥ अथते द्रौपदीपुत्राः
सौभद्रश्च महारथः । नकुलः सहदेवश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ॥ १८ ॥ धार्त्तराष्ट्रान्प्रति
पयुरर्दयन्तः शितैःशरैः । वज्रैरिव महावेगैः शिखराणि धराभृताम् ॥ १९ ॥ तस्मिन्

कि सिंह के शब्द को सुनकर अन्य जंगल के पशु विष्ठा मूत्रको डालते हैं । १२ । वहां भीमसेन अपने शरीर को महा भयानक दिखाता और बड़े घनके समान गर्जता तेरेपुत्रों को डराता हुआ फिर उन्हींके सम्मुख आया, तबतो उस आते हुए बड़े धनुषधारी भीमसेनको दुर्योधन के सहोदर भाइयों ने चारों ओर से बाणों की वर्षा से ऐसा ढक दिया जैसे कि सूर्य को बादल ढकदेता है, हे राजा आपके पुत्र दुर्योधन, दुर्मुख, अतिरथी दुश्शासन, दुस्सह, दुर्मर्षण, विविन्शति, चित्रसेन, महारथी विकर्ण, पुरमित्र, जय, भोज, पराक्रमी सोमदत्त यह सब वीर जैसे बादल बिजली को धारण किये हुए होते हैं उसी प्रकार धनुषों को चढ़ाये हुए कांचली रहित सर्पों के समान नाराच नाम बाणों को हाथों में लिये हुए सम्मुख आये । १७ । तदनन्तर द्रौपदी के पुत्र और सुभद्राका पुत्र महारथी अभिमन्यु नकुल सहदेव पार्षदका पुत्र धृष्टद्युम्न यह सब बड़े तीक्ष्णधारों से ऐसे पीड़ित करते हुए शत्रुओंके सम्मुख गये जैसे बड़े वेगवान वज्रों से शिखरों को पीड़ित करते हुए इन्द्र पर्वतों के सम्मुख जाय, उस पहले युद्धमें तेरेपुत्रोंके और पांडवों के धनुषों की

Bhim, and the animals were so terrified as if they had heard the roar of a lion. 12. Bhimsen, with his formidable appearance, roaring like thunder and terrifying thy sons, came again in front, and the great archer, Bhimsen was covered on all sides by the arrows of Duryodhan's brothers as the sun by the clouds. Your sons Duryodhan, Durmukh, valiant Dushasan, Dussah, Durmarshan, Vivinshati, Chitrasen, valiant Vikarn, Purumitra, Jaya, Bhoj and warlike Somdatta, with their bows bright like lightning and arrows deadly like the serpents who have cast their skins, came to the front. The sons of Draupadi, Abhimanyu the son of Subhadra, Nakul, Sahadev and Dhrishtadyumna the son of Parshad came in front of the enemy, shooting their sharp arrows as Indra strikes his

प्रथमसंग्रामे भीमज्यातलनिस्वने । तावकानां परेषां च नासीत्कश्चित् पराङ्मुख २०
लाघवं द्रोणशिष्याणामपश्यं भरतर्षभ । निमित्तवेधिनां चैव शरानुत्सृजतां भृशम्
॥ २१ नोपशाम्यति निर्घोषो धनुषां कूजतां तथा । विनिश्चेरु शरादीप्ता ज्योतींषीव
नभस्तलात् ॥ २२ ॥ सर्वे त्वन्ये महीपाला प्रेक्षका इव भारत । ददृशुर्दर्शनीयं तं भीमं
ज्ञातिसमागमम् ॥ २३ ॥ ततस्ते जातसंरम्भा परस्परकृतागस । अन्योन्यस्पर्धया
राजन् व्यायच्छन्तमहारथा ॥ २४ ॥ कुरुपाण्डवसेने ते हस्त्यश्वरथसंकुले । शुशुभाते
रणेऽतीवपटे चित्रार्पितेइव ॥ २५ ॥ ततस्त पार्थिवास्सर्वे प्रगृहीतशरासना । सह
सैन्या समापेतु पुत्रस्यतव शासनात् ॥ २६ ॥ युधिष्ठिरेण चादिष्टा पार्थिवास्ते

ज्या प्रत्यंचाओं के भयानक शब्दों से दोनों पक्षवालों मेंसे कोईभी परांमुख नहीं हुआ अर्थात् किसीने मुख न फेरा । २० । हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र मैंने वाणोंको वराबर छोडते और लक्षों को वेधते हुए द्रोणाचार्य के शिष्यों की हस्तलाघवता को देखा, उस समय शब्दायमान धनुषों के शब्द वन्द नहीं होते थे और प्रकाशित बाणभी वरावर ऐसे चले जैसे कि आकाश से नक्षत्रों के पतन वरावर होते है । २२ । हे भरतवंशी अन्य सब राजाओं न कुतूहल देखनेवालों के समान उस दर्शनीय और भय उत्पन्न करने वाले जात भाइयों के युद्धको देखा, तदनन्तर हे राजा उन क्रोधों में भरेहुए परस्पर में अपराधी महा रथियो ने अन्योन्यकी ईर्षासे परस्पर वीरताकी, कौरव और पांडवों की वह दोनों सेना हाथी घोडे और रथों से व्याप्तहोकर युद्धमें ऐसी शोभायमान हुई जैसे चित्र पटों से विचित्र दो वस्त्रहोते है । २५ । तदनन्तर धनुषबाण हाथमें लिये सब राजा लोग आपके पुत्रकी आज्ञासे सेनाके मनुष्यों समेत चारों ओरसे आटूटे उनचारों ओरसें दौडने वालों के व्याकुल शब्द उस समुद्रकी गर्जना से सुनाई दिये जिस समुद्र में हाथी

bolts at a mountain None of the warriors turned back from the arrows of the Pandavas or those of thy sons in that first encounter 20 I saw, O king Dhritrashtra ! the dexterity of the pupils of Dronacharya in discharging arrows and hitting the mark The twang from their bows was continuous and the bright arrows looked like the fall of meteors from the sky 22 Other kings only looked on at the awe inspiring encounter of those brothers and kinsmen Then, O king those angry warriors eager to destroy one another, made use of their skill in fighting The armies of the Kauravas and the Pandavas, with their elephants, horses and chariots looked as beautiful as the pictures on a canvass 25 Then all the kings with bows and arrows in their hands rushed on all sides by the order of your son The hubbub caused by the assailants was like the roar of the ocean having

सहस्रश । विनदत. समापेतु पुत्रस्य तव वाहिनीम् ॥ २७ ॥ उभयो.सेनयोस्तीव्रः सैन्यानांसमागम. । अन्तर्धीयत चादित्य सैन्येनरजसावृत ॥२८॥ प्रयुद्धानां प्रभग्नानां पुनरावर्त्तिनामपि । नात्रस्वेषां परेषांवा विशेष समदृश्यत ॥२९॥ तस्मिन्सुतुमुले युद्धे वर्त्तमाने महाभये । अतिसर्वाण्यनीकानि पितातेऽभिव्यरोचत ॥ ३० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि युद्धारम्भे
चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

सञ्जय उवाच । पूर्वाह्णे तस्य रौद्रस्य युद्धमह्नोविशाम्पते । प्रावर्त्तत महाघोर राज्ञां देहावकर्त्तनम् ॥ १ ॥ कुरूणां सृञ्जयानांच जिगीषूणांपरस्परम् । सिंहा

घोड़ों के शब्द सिंहनाद से मिश्रित और भेरी से व्याकुल शब्दायमान बाणरूप ग्राहवाला धनुष हाथी और खड्गरूप कछुए रखने वाला और चारों ओरसे घोड़ों की चाल रूपवायु को आगे रखनेवाला था, और युधिष्ठिर की आज्ञा पायेहुए हजारों राजालोग अपनी सेना के मनुष्यों समेत आपके पुत्रकी सेनापर पड़े उस समय दोनों ओर के वीरों में परस्पर ऐसा कठिन युद्धहुआ जिसकी धूलिसे सूर्य्य भी आच्छादित होगया, इसीसे दोनोंओर के वीरोंका अत्यन्त लड़ना वा मुखफेरना अथवा लौटना वा किसी की मुख्यता दिखाई नहीं दी इस बड़े भयकारी तुमुल युद्ध के वर्त्तमान होने पर आपके पितामीष्म जी सब सेना को उल्लंघनकर के अत्यन्त शोभायमानहुए ॥ ३० ॥

अध्याय ४५ ॥

संजयबोले कि हेराजा उनभयकारियों के प्रथमभाग में राजाओं के शरीरोंको काटनेवाला महाभारी घोर युद्ध प्रारंभहुआ, युद्धमें विजयाकांक्षी कौरवों के और सृंजियों के सिंहनाद रूपी शब्दों ने पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान कर दिया,

---

the no ses of elephants and horses mixed with the roars of warriors and swords for crocodiles and tortoises and the tramp of horse , hoofs for wind storm At the order of Yudhishthir, thousands of kings with their attendant warriors fell on the army of thy son. The battle on both sides was severe and the sun was hidden by the dust storm raised by them, the feats of warriors, their turning back, the supremacy of one warrior over the other were not distinguishable in that great battle and your father Bhishm was glorious above all 32

CHAPTER XLV

Sanjaya continued "Thus commenced the greatest war, destructive of kings The war cries of the Kauravas and Srinjayas, desirous of

नामिव संह्रादो दिवमुर्वीञ्चनादयन् ॥ २ ॥ आसीत् किलकिलाशब्दस्तलशङ्खरवै
सह। जज्ञिरे सिंहनादाश्च शूराणां प्रतिगर्जताम्। तलत्राभिहताश्चैव ज्याशब्दाभरत
र्षभ। पत्तीनां पादशब्दश्च वाजिनांच महास्वनः ॥ ४ ॥ तोत्राङ्कुशनिपातश्चआ-
युधानांच निस्वनः। घण्टाशब्दश्च नागानामन्योन्यमभिधावताम् ॥ ५ ॥ तस्मिन्
समुदिते शब्दे तुमुले लोमहर्षणे। बभूव रथनिर्घोषः पर्जन्यनिनदोपमः ॥ ६ ॥
ते मनः क्रूरमाधाय समभित्यक्तजीविताः। पांडवानभ्यवर्त्तन्त सर्वएवोच्छ्रितध्वजाः ७
अथ शान्तनवो राजन्नभ्यधावद्धनञ्जयम्। प्रगृह्य कार्मुकं घोरं कालदण्डोपमं रणे ॥८॥
अर्जुनोपि धनुर्गृह्य गाण्डीवं लोकविश्रुतम्। अभ्यधावत तेजस्वी गाङ्गेयं रणमूर्धनि
॥ ९ ॥ तावुभौ कुरुशार्दूलौ परस्परवधैषिणौ। गांगेयस्तु रणे पार्थं विद्ध्वानाकम्प

और धनुषधारियों के धनुषों की टंकारों समेत शंखों की महा ध्वनियों से अत्यन्त कलकला शब्द उत्पन्न हुआ और परस्पर में सम्मुख गर्जनेवाले मनुष्यों के सिंहनाद उत्पन्न हुये, हे भरतर्षभ हस्तत्राण से टक्करखाई हुई मर्यंचाओं के शब्द और पदातियों आदि घोड़ों के चरणोंके शब्दो से और गिरेहुये अंकुश वा अस्त्रों के शब्दों से अथवा परस्पर में सम्मुख दौड़ने वाले हाथियों के घंटोंके शब्दों से, इस युद्धमें शरीर के रोमहर्षण करने वाले तुमुल शब्द उत्पन्न हुये और रथों के शब्द बादलों की गर्जना के समान हुये । ६ । वह सबलोग जिनकी ध्वजा उन्नतथीं और जो जीवनकी आशाको अत्यन्त त्यागकरके कठोर चित्त निर्दय और दूसरों से शत्रुता करनेवाले बनकर पांडवों के सम्मुख लड़ने को उपस्थितहुये हे राजा आप भीष्मपितामहजी कालदण्ड के समान भयानक रूप धारण किये अपूर्व भयकारी धनुष को हाथ में लेकर अर्जुनके सम्मुख दौड़े और संसारमें विदित धनुषधारी महाहस्त लाघव जानने वाला तेजस्वी अर्जुनभी अपने गांडीव धनुषको लेकर भीष्मजी के सम्मुख दौड़ा, कौरवों मे महा श्रेष्ठ वह दोनों परस्पर में मारने की इच्छा में प्रवृत्त हुये परन्तु महाबली भीष्मजी ने अर्जुनको बाणों से भेदकर

victory echoed through the earth and sky, and the noise was great from the twangs of bows, the blasts of the conch-shells and the roar of warriors From the twangs of bows, the tramp of the soldiers and horses, the fall of goads and other weapons and the ringing of the bells of the moving elephants, the noise was tremendous, and the rumbling of the chariot wheels was like thunder 6. I shall mention those who with banners upraised, fought desperately and fearless of life, encountered the Pandavas Bhishm the grandfather, dreadful as the rod of Death, armed with the most dreadful bow, rushed upon Arjun That world-renowned archer too, of very great dexterity of hand, Arjun, armed with the Gandiv bow rushed upon Bhishm and the two best of Kauravas, met each other in combat, wishing to strike each other. But Bhishm of great prowess could not quell Arjun with his

यद्बली ॥ १० ॥ तथैव पांडवो राजन् भीष्मं नाकम्पयद्युधि । सात्यकिस्तु महेष्वासः
कृतवर्माणमभ्ययात् ॥११॥ तयोः समभवद्युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् । सात्यकिं कृतवर्मा
च कृतवर्मा च सात्यकिम् ॥ १२ ॥ आनर्च्छतु शरैर्घोरैस्तक्षमाणौ परस्परम् । तौशरा
चितसर्वाङ्गौ शुशुभाते महाबलौ ॥ १३ ॥ वसन्तेपुष्पशबलौ पुष्पिताविव किंशुकौ ।
अभिमन्युर्महेष्वासः बृहद्बलमयोधयत् ॥ १४ ॥ ततः कोसलराजासावभिमन्यो
र्विशाम्पते । ध्वजं चिच्छेद समरे सारथिञ्चाप्यपातयत् ॥ १५ ॥ सौभद्रस्तुततः
क्रुद्धः पातिते रथसारथौ । बृहद्बलं महाराज विव्याध नवभिः शरैः ॥ १६ ॥ अथा
पराभ्यांभल्लाभ्यां शिताभ्यामरिमर्दनः । ध्वजमेकेनचिच्छेदपार्ष्णिमेकेन सारथिम् ॥१७॥
अन्योन्यञ्च शरैः क्रुद्धौ ततक्षातेपरस्परम् । मानिनं समरे दृप्तः कृतवैरं महारथम् ॥१८॥
भीमसेनस्तवसुतं दुर्योधनमयोधयत् । तावुभौ नरशार्दूलौ कुरुमुख्यौ महाबलौ ॥ १९ ॥

कंपायमान नहीं किया । १० । इसी प्रकार अर्जुनने भी भीष्मजी को बाणों से भेदकर कंपायमान नहीं किया और धनुषधारी सात्विकी कृतवर्माके सम्मुख गया, इनदोनों का भी रोमहर्षण महातुमुल युद्धहुआ सात्विकीने कृतवर्माको और कृतवर्म ने सात्विकीको घायल किया, दोनों ने बड़े२ शब्दोंको कहकर परस्पर में घायल किया, तदनन्तर वहदोनों यादवबाणों से भरेहुये अंगोंसमेत एसे शोभायमान विदित हुये जैसे कि वसन्तऋतु में फूलों से आच्छादित विचित्र किंशुक होते हैं उससमय बड़ाधनुर्धारी अभिमन्यु बृहद्बल से युद्धकरने लगा । १४ । हेराजा तिसपीछे युद्ध में राजा कोसलने अभिमन्यु की ध्वजा को गिराकर उसके सारथी को गिराया ध्वजाकेकाटने और रथसारथीके गिरानेसे अभिमन्युने महाक्रोधाग्निरूप होकर बृहद्बलको नौबाणों से घायल किया, अर्थात् एक बाणसे तो ध्वजाको और एक बाणसे पीछे के रक्षक और सारथी को मारा, शत्रुओंके विजय करने वाले दोनों ने परस्पर में तीक्ष्ण बाणों से घायल किया और महामानी युद्ध में प्रकाशित शत्रुता करनेवाले महारथी आप के पुत्र दुर्योधनसे भीमसेन युद्ध करने लगा, उन

arrows 10 Nor could Arjun shake Bhishm by his arrows. Satwiki the great archer encountered Kritvarma, and the two warriors fought furiously and wounded each other while they spoke high-sounding words The two Yadavas, with their bodies wounded by arrows looked like Kinshuks (a tree with red flowers) in bloom in spring season. Abhimanyu the great archer fought with Vrihadval 14 The king of Kosal felled the banner of Abhimanyu and killed the driver Being infuriated by the fall of his banner and chariot driver, Abhimanyu wounded Vrihadval with nine arrows. With one arrow he cut down his banner, with another he killed the driver and the rear guard The two conquerers of enemies wounded each other Your proud son Duryodhan of great glory in battle, valiant and resentful, met with Bhimsen in combat Both these Kauravas

अन्योन्यं शरवर्षाभ्यां चतुपाते रणाजिरे । तौ वीक्ष्यतुमहात्मानौ कृतिनौ चित्रयोधिनौ ॥ २० ॥ विस्मय सर्वभूतानां समपद्यतभारत । दु शासनस्तु नकुलंप्रत्युद्याय महावलम् ॥ २१ ॥ अविध्यन्निशितैर्वाणैर्बहुभिर्मर्मभेदिभिः । तस्य माद्रीसुत केतु सशरञ्च शरासनम् ॥ २२ ॥ चिच्छेद निशितैर्वाणैः प्रहसन्निव भारत । अथैन पंचविंशत्या क्षुद्रकाणां समार्पयत् ॥ २३ ॥ पुत्रस्तुतवदुर्धर्षो नकुलस्यमहाहवे । तुरङ्गांश्चिच्छिदेवाणैर्ध्वजञ्चैवाभ्यपातयत् ॥२४॥ दुर्मुख सहदेवंच प्रत्युद्यायमहाबलम् । विव्याध शरवर्षेण यतमान महाहवे ॥ २५ ॥ सहदेवस्ततो वीरो दुर्मुखस्य महारणे । शरेण भृशतीक्ष्णेन पातयामाससारथिम् ॥ २६ ॥ तावन्योन्य समासाद्य समरे युद्धदुर्मदौ । त्रासयेतां शरैर्घोरैः कृतप्रतिकृतैषिणौ ॥ २७ ॥ युधिष्ठिरः स्वयराजा मद्रराजानमभ्ययात् । तस्य मद्राधिपश्चापं द्विधा चिच्छेद मारिष ॥ २८ ॥

दोनों नरोत्तम और कौरवोत्तम महारथियोंने । १९ । युद्धभूमिमें अपने २ वाणों की वर्षासे परस्पर में एकने दूसरेको ढक दिया, हे भरतवंशी उन युद्धमें कुशल दोनों महात्मा चित्रयोधियोंको देखकर सब जीवोंको आश्चर्य उत्पन्न हुआ । २० । और दुश्शासन ने महारथी नकुल के सम्मुख जाकर बड़ी प्रसन्नतासे तीक्ष्णवाणों से नकुल को घायल किया और इसीप्रकार हे राजा हँसतेही हुये नकुल नेभी अपने तीव्र वाणों से दुश्शासन की ध्वजा और धनुषवाणको काट डाला और पच्चीस क्षुद्रक नाम बाण उसपर छोड़े । २३ । फिर तेरेपुत्र दुश्शासन ने नकुल के घोड़ों को मारकर उसकी ध्वजा को गिराया, और दुर्मुख ने महावली सहदेव के सम्मुख जाकर उपाय करने वाले सहदेवको अपने बाणोंकी वर्षासे पीड़ामान किया । २५ । तिसपीछे बड़ेवीर सहदेव ने उसी युद्ध के बीच बड़े तीक्ष्ण तीरों से दुर्मुख के सारथीको गिराया उनदोनों दुर्मद घात के बदले घातकरने के इच्छावान् वीरों ने अपने भयकारी वाणों से युद्धमें भय उत्पन्न कर दिया, औरआप राजा युधिष्ठिर मद्रदेश के राजा के सम्मुख गये उसको देखते ही मद्रदेश केराजाने युधिष्ठिर के

are the best of men 19 With the shower of their arrows they covered each other and the lookers on wondered to see the fighting of those two warriors 20 Dushasan met Nakul and, with a cheerful heart, wounded him by his arrows Likewise, Karan two, with a smiling face, cut down with his arrows Dushasan's banner, bow and arrows, and shot twentyfive arrows of small heads at him 23 Then thy son Dushasan killed the horses of Nakul and cut down his banner. Durmukh encountered Sahadev of great valour and wounded him with his arroows 30 The great warrior, Sahadev struck Durmukh's chariot driver down by his sharp arrows. The two dreadful warriors, with their plots and counterplots, caused a great alarm in the field of battle King Yudhishthir himself encountered

तदपास्य धनुश्छिन्नं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । अन्यत्कार्मुकमादाय वेगवद्बलवत्त
रम् ॥ २९ ॥ ततो मद्रेश्वरं राजा शरैः सन्नतपर्वभिः । छादयामास संक्रुद्धस्ति-
ष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ३० ॥ धृष्टद्युम्नस्ततो द्रोणमभ्यद्रवत भारत । तस्यद्रोणः
सुसंक्रुद्धः परासुकरणं दृढम् ॥ ३१ ॥ त्रिधाचिच्छेद समरे पांचालस्यतुकार्मुकम् ।
शरञ्चैव महाघोरं कालदण्डमिवापरम् ॥ ३२ ॥ प्रेषयामास समरे सोऽस्यकायेन्य
मज्जत । अथान्यद्धनुरादाय सायकांश्च चतुर्दश ॥३३। द्रोणंद्रुपदपुत्रस्तुप्रतिविव्याध
संयुगे । तावन्योन्यं सुसंक्रुद्धौ चक्रतु सुभृशं रणम् ॥ ३४ ॥ सौमदत्तिं रणेशाह्नो
रभसं रभसोयुधि । प्रत्युद्ययौ महाराज तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ३५ ॥ तस्य वै दक्षिणं
वीरो निर्बिभेद रणे भुजम् । सौमदत्तिस्तत शह्नं जत्रुदेशे समाहनत् ॥ ३६ ॥
तयोस्तद्भवद्युद्ध घोररूपं विशाम्पते । दृसयो संमरे पूर्वं वृत्रवासवयोरिव ॥ ३७ ॥

धनुष को काट डाला । २८ । तब कुन्ती के पुत्र वेगवान् युधिष्ठिर ने उस कटेहुए धनुष को डालकर दूसरे दृढ़धनुषको धारणकिया, तिसपीछे अत्यन्तक्रोधयुक्त होकर राजा युधिष्ठिर ने तीक्ष्ण बाणों से मद्रदेशाधिपति को आच्छादित किया और तिष्ठतिष्ठ करके अनेक वचनोंको कहा । ३० । हे भरतवंशी इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़ा उससमय महा क्रोध में भरे हुए द्रोणाचार्य ने युद्ध में उस महात्मा पांचाल के दृढ़ धनुष को जोकि मारनेका साधन था काटडाला और महा भयानक काल दण्ड के समान अपने बाणको युद्धमें फेंका वह उसके शरीर में घुसगया तिसपीछे द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष में शायक नाम चौदह बाणों को धारण करके युद्धमें द्रोणाचार्य को घायल किया और दोनों क्रोधरूपों ने परस्पर में बड़ा युद्ध किया । ३४ । हे महाराज युद्ध में शीघ्रता करने वाला शल अपने समान गुणवाले सोमदत्त के सम्मुख गया और तिष्ठतिष्ठ शब्दको बोला तब बड़े वीर सोमदत्तने युद्धमें उसके दक्षिण भुजा को घायल करके अत्यन्तही व्याकुल किया, हे राजा उन दोनों अहंकारियों काभी युद्ध ऐसा महा भयकारी

the king of Madra, who cut down Yudhishthir's bow as soon as he saw him. 28. Then Yudhishthir the son of Kunti dexterously threw away that bow and took up another, a hard one, and in great anger covered the king of Madra with his arrows, saying "Stay, stay" 30. Dhrishtadyumna rushed upon Dronacharya who cut down the hard bow of the Panchal prince with which the latter had come to fight. Dronacharya discharged his arrows like the staff of death which pierced the body of the Panchal prince Dhrishtadyumna the son of Drupad thereupon discharged fourteen arrows from another bow and wounded Drona. Both these enraged warriors fought valiantly. 34. Shakuni the dexterous in battle, faced Somadatta who was his equal, and said, "Stay, stay." Somadatta wounded his right arm which smarted and upset his mind. The encounter between those two

वाह्लीकन्तुरणे क्रुद्धं क्रुद्धरूपो विशाम्पते । अभ्यद्रवदमेयात्मा धृष्टकेतुर्महारथ
॥ ३८ ॥ वाह्लीकस्तु रणेराजन् धृष्टकेतुममर्षण । शरैर्बहुभिरानर्च्छत्, सिंहनाद
मथानदत् ॥ ३९ ॥ चेदिराजस्तु सक्रुद्धो वाह्लीकं नवभिः शरैः । विव्याध
समरे तूर्णं मत्तो मत्त मिव द्विपम् ॥४०॥ तौतत्र समरे क्रुद्धौ नर्दन्तौच पुन पुन ।
समीयतु सुसक्रुद्धावङ्गारकबुधाविव ॥ ४१ ॥ राक्षस रौद्रकर्माणं क्रूरकर्माघटोत्
कच । अलम्बुष प्रत्युदियाद्वल शक्रइवाहवे ॥ ४२ ॥ घटोत्कचस्तत क्रुद्धो राक्षसं
तं महाबलम् । नवत्या सायकैस्तीक्ष्णैर्दारयामास भारत ॥ ४३ ॥ अलम्बुषस्तु
समरे भैमसेनिं महाबलम् । बहुधा दारयामास शरैः सन्नतपर्वभि ॥ ४४ ॥
व्यभ्राजेतां ततस्तौ तु संयुगे शरविक्षतौ । यथा देवासुरे युद्धे वलशक्रौमहाबलौ
॥ ४५ ॥ शिखण्डी समरे राजन् द्रौणमश्युद्ययौ बली । अश्वत्थामा ततः क्रुद्ध

हुआ जैसा देव दानवों का युद्ध होता है । ३७ । तिस पीछे बड़ा साहसी महारथी युद्ध में क्रोध रूप धृष्टकेतु वाह्लीक राजा के सम्मुख गया, तब वाह्लीक ने उस क्षमा से रहित धृष्टकेतु को बहुत से बाणों से आच्छादित करके महा सिंहनाद किया फिर उस महाक्रोधरूप चेदिराज धृष्टकेतु ने भी युद्ध में बड़ी शीघ्रता से नौ बाणों से वाह्लीक को घायल किया और ऐसा युद्ध किया जैसे मत्त और उनमत्त हाथी लड़ते हैं । ४० । और युद्धमें महा क्रोधाग्निरूप दोनों वारंवार शब्दों का करते हुये मंगल और बुधके समान बड़े पराक्रम से लड़े, महा कठिन कर्मी घटोत्कच उसी के समान कठिनकर्मी अलंबुषनाम राक्षसके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि युद्ध में वलिके सम्मुख इन्द्र जाता है, हेभरतवंशी फिर घटोत्कच ने उस महाक्रोध रूप महाबली राक्षस को तीक्ष्ण नौ तीरों से घायल किया । ४३ । और अलंबुष ने भी युद्ध में भीमसेन के पुत्र घटोत्कच को गुप्त ग्रन्थि वाले बाणों से अनेक रीतिसे घायल किया तदनन्तर वह दोनों बाणों से भिदेहुए युद्ध में अत्यन्त शोभाय मान हुए । ४५ । हे राजा महा पराक्रमी शिखण्डी उस युद्ध में अश्वत्थामा से

proud warriors was like that between the gods and the danavas. 37. Next, the great warrior Dhrishtaketu of immense prowess, the very Rage in person, faced king Vahlik. The latter covered the former with a shower of arrows and roared like a lion. Dhrishtaketu the king of Chedi, in his turn, wounded Vahlik with nine swift going arrows. The two heroes fought like mad elephants. 40. The two warriors spoke loudly in a rage and fought like Mangal and Budh. Valiant Ghatotkach faced the rakshas Alamvush of equal prowess with him, as Indra faced Bali, and wounded him with nine sharp arrows. Alamvush too, wounded Ghatotkach the son of Bhimsen with his arrows having hidden knots, and the two, wounded by arrows, looked glorious. 45. Shikhandi of great prowess faced Ash-

शिखण्डिनमुपस्थितम् ॥ ४६ ॥ नाराचेन सुतीक्ष्णेन भृशं विद्ध्वाद्यकं पयत्। शिखंडय
पि ततो राजन् द्रोणपुत्रमताडयत् ॥ ४७ ॥ सायकेन सुपीतेन तीक्ष्णेन निशिते नच।
तौजघ्नतुस्तदान्योन्यं शरैर्बहुविधैर्मृधे ॥ ४८ ॥ भगदत्तं रणे शूरं विराटोवाहिनीपतिः।
अभ्ययात्त्वरितोराजंस्ततोयुद्धमवर्त्तत ॥ ४९ ॥ विराटो भगदत्तन्तु शरवर्षेणभारत।
अभ्यवर्षत्सुसंक्रुद्धो मेघोवृष्ट्याइवाचलम् ॥ ५० ॥ भगदत्तस्ततस्तूर्णं विराटं पृथिवीप-
तिम्। छादयामास समरे मेघः सूर्यं मिवोदितम् ॥ ५१ ॥ बृहत्क्षत्रंतुकैकेयं कृपःशार
द्वतोययौ। तं कृपः शरवर्षेण छादयामास भारत ॥ ५२ ॥ गौतमं कैकयः क्रुद्धः शरवृ-
ष्ट्याऽभ्यपूरयत्। तावन्योन्यं हयान् हत्वा धनुश्छित्वा च भारत ॥ ५३ ॥ विरथावसि

युद्ध करने के लिये उनके सम्मुख गया तब तो क्रोधाग्निरूप अश्वत्थामा ने सम्मुख वर्तमान होनेवाले शिखण्डी को बड़े तीक्ष्ण नाराच नाम बाणों से अत्यन्त घायल करके महा कंपायमान किया, तिस पीछे हे राजा शिखण्डी ने भी बड़े तीक्ष्ण पुंखवाले पीतरंगके शायकों से अश्वत्थामा को घायल किया। ४७। और युद्ध भूमि में परस्पर बहुत प्रकार के बाणोंसे संग्राम किया और सेनापति राजा विराट संग्रामभूमि में राजा भगदत्त के सम्मुख गया तिसपीछे युद्ध होना प्रारम्भहुआ और राजा विराटने महा क्रोधित होकर भगदत्त के ऊपर बाणों की ऐसी वर्षाकी जैसे बादल अपने जल से पर्व्वतपर वर्षा करता है फिर भगदत्त ने भी बड़ी शी-घ्रता से उस राजा विराट को संग्रामभूमि में बाणों के मारे ऐसा आच्छादित कर-दिया जैसे बादल सूर्य्य को आच्छादित करतेहैं। ५०। और शारद्वत कृपाचार्य्य जी केकय देशीय बृहच्छत्र के सम्मुखगये, हे भरतवंशी कृपाचार्य जीने बाणों की वृष्टि से उसको ढक दिया और बृहच्छत्र ने भी महा क्रोध युक्त होकर गौतम कृपाचार्य्य जी को बाणों की वर्षासे व्याप्तकरदिया तदनन्तर हे राजा वह दोनों परस्पर में धनुष को काट घोड़ों को मारके विरथ होकर महाक्रोधों में भरेहुए खड्ग युद्ध करनेलगे। ५३। उन दोनों का वह युद्ध भयानक रूप देखनेवालों को भी

wathama in battle. He was wounded and shaken by the sharp. arrows of furious Ashwathama and wounded him with his own. 47. Both heroes fought bravely with various weapons. King Virat the commander of the army, faced king Bhagdatta in battle. The battle between them was furious. King Virat, in anger, showered his arrows on Bhagdatta as the clouds drop rain over a mountain. King Bhag-datta too covered king Virat with a shower of arrows and hid him like the sun under clouds. 50. Shardwat Kripacharya faced king Vrihachal of Kaikaya and covered him with arrows. King Vrihachal too, in great anger, covered Kripacharya with his own arrows. Both cut down each other's bows, killed the horses, and being deprived of chariots, fought furiously with swords 53. Their furious battle

युद्धाय समीयतुरमर्षणौ । तयोस्तदभवद्युद्धं घोररूपं सुदारुणम् ॥५४॥ द्रुपदस्तु ततो राजन् सैन्धवं वै जयद्रथम् । अभ्युययौ हृष्टरूपो हृष्टरूपं परन्तप ॥ ५५ ॥ ततः सैन्धव को राजा द्रुपदं विशिखैस्त्रिभिः । ताडयामास समरे स च तं प्रत्य विध्यत ॥ ५६ ॥ तयोस्तदभवद्युद्धं घोररूपं सुदारुणम् । ईक्षणप्रीति जननं शुक्रांगारकयोरिव ॥ ५७ ॥ विकर्णस्तुसुतस्तुभ्यं सुतसोमं महाबलम् । अभ्ययाज्जवनैरश्वैस्ततोयुद्धमवर्तत ॥५८॥ विकर्णः श्रुतसोमन्तु विध्वा नाकम्पयच्छरैः । श्रुतसोमा विकर्णञ्च तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ५९ ॥ सुशर्माणं नरव्याघ्रश्चेकितानो महारथः । अभ्यद्रवत् सुसंक्रुद्धः पाण्डवार्थे परा क्रमी ॥ ६० ॥ सुशर्मातु महाराज चेकितानं महारथम् । महता शरवर्षेण वारयामास संयुगे ॥ ६१ ॥ चेकितानोपि संरब्ध सुशर्माणं महाहवे । प्राच्छादयत्त मिषुभिर्महामेघ

भयकारी विदित होताथा, तिसपीछे शत्रु संतापी महा क्रोधाग्नि रूप राजाद्रुपद सिंधु के राजा जयद्रथ के सम्मुखगया तब जयद्रथ ने द्रुपद को तीन विशिखों से युद्ध भूमि में घायल किया और इसी प्रकार द्रुपद ने भी जयद्रथ को फिर उन दोनोंका युद्ध भयानक।५८।दुःख से प्राप्तहोने के योग्यदेखनेवालों को प्रसन्नता देने वाला ऐसाहुआ जैसा कि मंगल और शुक्र का युद्ध होताथा तिसपीछे आपका पुत्र विकर्ण बड़ेशीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा भीमसेन के पुत्र महा पराक्रमी सुतसोमके सम्मुखगया और युद्ध होनेलगा विकर्ण ने सुतसोम को और सुतसोम ने विकर्ण को बाणों से वेधित करके कंपायमान नहीं किया इसमें बड़ा आश्चर्य सा हुआ, नरोत्तम महारथी पराक्रमी पाण्डवों पर अत्यन्त क्रोधरूप चेकितानसुशर्मा के सम्मुख गया, हे महाराज युद्ध होनेलगा और सुशर्मा ने युद्ध में चेकितान को बाणों की बड़ी वर्षा करके रोका तब तो चेकितान ने भी महाक्रोधरूप होकर बाणों की वर्षा से सुशर्मा को ऐसा आच्छादित कर दिया जैसे कि बड़ा बादल पहाड़को आच्छादित कर लेता है । ६१ । हे राजा इसके पीछे पराक्रमी शकुनि

frightened the lookers on Furious king Drupad the destroyer of enemies, faced Jayadrath the king of Sindhu The two heroes wounded each other with their arrows and the battle between them was dreadful 56 Difficult to be seen, pleasing the hearts of the lookers on, the encounter was like that between Mangal and Shukra. Your son, Vikarn rode his swift horses to meet Sutsoma the son of Bhimsen and began fighting The two wounded each other with their arrows but none could shake the other It was a wonderful sight Chekitan the best of men valiant and infuriated against the Pandavas, faced Susharma The two began to fight. Susharma checked the volley of chekitan's arrows, but the latter in great anger covered him with the shower of his arrows as a great cloud covers a mountain 61 Valiant Shakuni proceeded against powerful Prati

इवाचलम ॥ ६२ ॥ शकुनिः प्रति विन्ध्यन्तु पराक्रान्तं पराक्रमी । अभ्यद्रवतराजेंद्र मत्तः सिंह इव द्विपम् ॥ ६३ ॥ यौधिष्ठिरस्तुसंक्रुद्धः सौबलं निशितैःशरैः। व्यदारयत संग्रामे मघवा निव दानवम् ॥ ६४ ॥ शकुनिः प्रतिविन्ध्यन्तु प्रति विध्यं तमाहवे । व्यद्दारयन् महाप्राज्ञः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ६५ ॥ सुदक्षिणन्तु राजेंद्र काम्बोजानांमहारथम् । श्रुतकर्मा पराक्रान्त मभ्यद्रवतसंयुगे ॥ ६६ ॥ सुदक्षिणस्तु समरे साहदेवं महारथम् । विद्ध्वा नाकम्पयन वै मैनाक मिव पर्वतम् ॥६७॥ श्रुतकर्मा ततः क्रुद्धः काम्बोजानांमहारथम् । शरैर्बहुभिरानर्च्छदारयन्निव सर्वशः ॥ ६८ ॥ इरावानथ संक्रुद्धः श्रुतायुषमरिंदमम् । प्रत्युद्ययौ रणे यत्तो यत्तरूपं परन्तपः ॥ ६९ ॥ आर्जुनिस्तस्य समरे हयान् हत्वा महारथः । ननाद बलवान् नादं तत् सैन्यं प्रत्य पूरयत् ॥ ७० ॥ श्रुतायुस्तु ततः क्रुद्धः फाल्गुनेः समरे हयान् । निजघान गदाग्रेण ततो युद्ध मवर्तत ॥ ७१ ॥

महाबली प्रतिविन्ध के सम्मुख इस तीव्रता से गया जैसे कि सिंह मतवाले हाथी के सम्मुख जाता है, युधिष्ठिर के पुत्र प्रतिविन्ध ने महा क्रोधित होकर सुबल के पुत्र शकुनि को तीव्र बाणों से ऐसा अत्यन्त घायल किया जैसे कि इन्द्र दैत्यों को करता है और शकुनि ने भी बड़े ज्ञानी महाबली प्रतिविन्ध को अत्यन्त सपत्तबाणों से विदीर्ण करदिया । ६५ । और श्रुतकर्म्मा कांबोज के महारथीपराक्रमी राजा सुदक्षिण के सम्मुख गया, हे राजा सुदक्षिण ने सहदेव के पुत्र को घायल करके मैनाक पर्वत के समान कंपायमान नहीं किया, इसके पीछे श्रुतकर्मा ने भी कांबोजके महारथी सुदक्षिण को बाणोंसे अनेक रीति करके आच्छादित करादिया तदनन्तर शत्रुसंतापी ,युद्ध में कुशल अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुनका पुत्र इरावान श्रुतायुष के सम्मुख गया, और महारथी बलवान् इरावान ने युद्ध में उसके घोड़ों को मारकर बड़े वेगसे शब्द किया जिससे कि संपूर्ण सेना में शब्द भरगया, और अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायुष ने भी अर्जुनके पुत्र इरावान के घोड़ों को गदाओं से मारडाला फिर युद्धहोनेलगा । ७० । फिर आवंत्य देशके राजाविन्द अनुविन्द

vindh like an infuriated lion against a mad elephant. Prativindh the son of Yudhishthir wounded Shakuni with his sharp arrows as Indra does the daityas, and was wounded by the arrows of Shakuni. 64. Shrutkarma faced the valiant Sudakshin the king of Camboj. Sudakshin wounded the son of Sahadev, but could not shake him like the Menak mountains. Shrutkarma too covered the valiant Sudakshin of camboj on all sides. Then Arjun's son Irawan, the destroyer of enemies and dexterous in battle, angrily faced Shrutayush. Iravan roared loud after killing his horses and the noise of it filled all the armies. The enraged Shrutayush too, killed the horses of Iravan with his mace and the battle continued. 70. Vind and Anuvind the *two princes of* Avanti, faced valiant Kuntibhoj. I saw

विंदानुविन्दावावन्त्यौ कुन्तिभोज महारथम्। ससैनं ससुतंवीरं ससमज्जतुराहवे ७२ तत्राद्भुत मपश्याम तयोर्घोर पराक्रमम् । अयुध्येतां स्थिरौ भूत्वा महत्या सेनया सह ॥७३॥ अनुविंदस्तु गदया कुन्तिभोज मताडयत् । कुन्तिभोजश्च त तूर्णं शरव्रातैरवाकिरत् ॥ ७४ ॥ कुन्तिभोजसुतश्चापि विंदं विव्याध सायकैः । सचत प्रति विव्याध तदद्भुतमिवाभवत् ॥७५॥ केकयाभ्रातर पञ्च गांधारान् पञ्चमारिष। ससैन्यास्ते स सैन्याश्च योधयामासुराहवे ॥ ७६ ॥ वीरबाहुश्चते पुत्रो वैराटिं रथ सत्तमम्। उत्तरं योधयामास विव्याध निशितैः शरैः ॥ ७७ ॥ उत्तरश्चापितं वीरं विव्याधनिशितैः शरैः। चेदिराट् समरे राजन् मुलूक सम भिद्रवत् ॥ ७८ ॥ तथैव शरवर्षेण उलूक सम विव्यधत। उलूकश्चापि तं बाणैर्निशितैर्लोमवाहिभिः ॥ ७९ ॥ तयोर्युद्ध समभवद् घोर रूप विशाम्पते। दारयेतांसुसंक्रुद्धा वन्यान्यमपराजितौ ॥ ८० ॥ एव द्वन्द्व सहस्राणि

दोनों महावीर कुन्तभोजके सम्मुख युद्ध में उपस्थित हुये, हे राजा वहां हमने उन दोनों के अपूर्व भयानक पराक्रमों को देखा अर्थात वह दोनों बड़ी सेना समेत युद्ध करने में प्रवृत्तहुये७२अनुविन्दने गदा से कुन्तिभोज को घायलकिया और कुन्तभोज ने शीघ्रही अपने बाण समूहोंसे उसको ढकादिया, फिरकुन्तिभोजके पुत्रने भी शायकोंसे विन्दको पीड़ामान किया और उसने उसको पीड़ित किया यह भी आश्चर्य सा हुआ,हे धृतराष्ट्र केकयदेशी पांचोंभाइयों ने सेनाओं समेत संग्रामभूमि में नियतहोकर गंधारियों के सम्मुख होकर महायुद्धकिया। ७५। फिर आपका पुत्र वीरबाहु रथियों में श्रेष्ठ विराट के पुत्र उत्तरसे युद्धकरने लगा और नौ बाणों से उसको घायल किया, उत्तरने भी अपने तीत्र बाणों से उस वीरको घायल किया और उलूक ने भी बड़ी तीव्रता से शीघ्र गति वाले बाणों से उसको विदीर्ण किया। ७८। हे राजा उन दोनों का युद्धभी महाघोर भयकारी हुआ और क्रोधित होकर दोनो ने परस्पर एकने दूसरे को घायल किया, इस प्रकार तेरेपुत्र और पांडवों के रथ राज अश्वों से संकुलित युद्ध में हजारों योधा लोगों के द्वन्द युद्ध हुए। ८०। हे

the prowess of the two dreadful warriors in the midst of the armies. 72 Anuvind wounded Kuntibhoj with his mace and was himself covered by the shower of his arrows. Kuntibhoj wounded Vind with his arrows and the encounter of those warriors was wonderful The princes of Kaikaya, with their armies, faced the Gandharas and fought bravely 75 Your son Birvahan faced the best of charioteers, Uttar the son of Virat and wounded him with nine arrows Uttar too wounded him with his arrows The king of Chedi encountered Uluk and wounded him with his sharp arrows Uluk also wounded him with his sharp arrows 78. The encounter between those two warriors was dreadful, as they wounded each other Thus thousands of warriors who rode on chariots, elephants and horses in the armies of your son and those of the Pandavas, fought duels. 80 For a short time their

रथवारणवाजिनाम् । पदातीनांच समरे तव तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ मुहूर्त्त मिव तद्युद्ध
मासीन् मधुर दर्शनम् । तत उन्मत्तवद्राजन् नप्र ज्ञायत किंचन ॥ ८२ ॥ गजोगजेन
समरे रथिनञ्चरथी ययौ । अश्वोश्वं समभिमायात् पदातिश्चपदातिनम् ॥ ८३ ॥ ततो
युद्धंसुदुर्धर्षं व्याकुलं समपद्यत । शूराणां समरे तत्र समासाद्ये तरेतरम् ॥ ८४ ॥ तत्र
देवर्षयः सिद्धाश्चारणाश्चसमागताः । प्रैक्षन्त तद्रणं घोरं देवासुर समद्युति ॥ ८५ ॥
ततो दन्ति सहस्राणि रथानांचापि मारिष । अश्वौघाः पुरुषौघाश्च विपरीतं समाययुः
॥ ८६ ॥ तत्र तत्र प्रदृश्यन्ते रथवारण पत्तयः । सादि नश्च नरव्याघ्र युध्यमाना मुहु-
र्मुहुः ॥ ८७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्व्वणि भीष्मवधपर्व्वणि द्वंद्वयुद्धे
पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

राजा एक मुहूर्त्ततक तो उनका युद्ध अच्छा देखने के योग्यहुआ फिर उन्मत्तोंके समान हुआ उस समय वहां कुछभी नहीं जाना गया अर्थात् ध्यानकरके देखा तो युद्धभूमि में गजारूढ़ गजारूढ़ के साथ रथी रथी के साथ अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ों के और पदाती पदातियों के सम्मुख हुए तिसपीछे परस्पर युद्ध में सम्मुख होकर शूरवीरों का महा कठिन युद्ध हुआ और सब महा व्याकुल होगये । ८३ । वहां युद्ध देखने को आयेहुये देव ऋषियोंने और सिद्धचारणों ने देवता और असुरोंके युद्ध के समान महा भयकारी युद्ध को देखा, हे धृतराष्ट्र तिसपीछे हजारों हाथी रथ और घोड़ों के सवारों के समूह और पुरुषों के समूह मर्यादा रहित होकर परस्पर में युद्ध करनेलगे और जहां तहां रथ हाथी और घोड़ों के सवार वारम्वार लड़ते हुए दृष्टि पड़े ॥ ८७ ॥

---

fighting was worthy to be seen, but after that they fought like mad men, so that there was no order kept. The elephant riders faced the elephant riders, the charioteers faced the charioteers, the horsemen rode against horsemen and the foot soldiers fought the footsoldiers. The warriors on either side fought bravely and were much distressed. 84. The rishis, Sidhas, charans and gods that had come to see the fighting, found it to be like the encounter of gods of asurs. Then there was no order maintained in the battle and the soldiers of various denominations mixed together and fought in confusion." 87.



सञ्जय उवाच । राजन्शत सहस्राणि तत्र तत्र पदातिनाम् । निर्मर्यादं प्रयुद्धानि तत्ते वक्ष्यामि भारत ॥ १ ॥ न पुत्र पितरं जज्ञे न पिता पुत्रमौरसम् । न भ्राता भ्रातरं तत्र स्वस्रीयं नच मातुलम् ॥ २ ॥ न मातुलश्च स्वस्रीयो न सखायं सखा तथा । आविष्टा इव युध्यन्ते पांडवाः कुरुभिः सह ॥ ३ ॥ रथानीकं नरव्याघ्राः केचिदभ्यपतन् रथैः । अभज्यन्त युगैरेव युगानि भरतर्षभ ॥ ४ ॥ रथेषाश्च रथेषाभिः कूबरा रथकूबरैः । सङ्गतैः सहिता केचित् परस्पर जिघांसवः ॥ ५ ॥ नशेकुश्चलितु केचित् सन्निपत्य रथारथैः । प्रभिन्नास्तु महाकायाः सन्निपत्य गजागजैः ॥ ६ ॥ बहुधादारयन् क्रुद्धा विषाणैरितरेतरम् । सतोरणपताकैश्च वारणावरवारणैः ॥ ७ ॥ अभिसृत्यमहाराज वेगवद्भिर्महागजैः । दन्तैरभिहतास्तत्र चुकुशुः परमातुराः ॥ ८ ॥ अभिनीताश्च

अध्याय । ४६ ।

संजय बोले हे राजा जहां तहां लाखों पदाती मर्य्यादा से विरुद्ध लड़ने में प्रवृत्त हुए उसका वृत्तान्त मैं तुमसे कहता हूं, उस युद्ध में पुत्र ने अपनेपिता को न जाना और पितानेपुत्र कोि नहींजाना और भाईने भाई कोनजाना और भानजे ने मामाको और मामा ने भानजेको और मित्र ने मित्रको नहीं जाना भूतादि के आवेश युक्त पुरुषों के समान वह सबलोग कौरव और पांडवों के पक्ष में एक एकसे लड़ते थे । ३ । हे भरतर्षभ कोई २ नरोत्तम शूरवीर रथों में सवारहो होकर सेना के और भागोंपर जा टूटे और रथोंहींसे रथों के जुओंको तोड़डाला, रथाधिश रथाधीशोंसे औरकूबररथकूबरों से खंडित हुए और कोई २ परस्पर में मारनेकी इच्छासे सम्मुख आने वालों से युद्ध करनेलगे । ५ । कोई रथतो रथोंसेहीटक्करें खाकर चलनेके योग्य नहींरहे और बड़े डीलडौल के रथ आदि बड़े २ हाथियों से मिल कर टुकड़े २ होगये, हे महाराज वहां बहुत से क्रोधभरे हाथी दांतोंसे घायल करतेहुए अंबारी और पताकावाले युद्धक महागजेन्द्र हाथियोंसे मिलकर अत्यन्त पीड़ा से

CHAPTER XLVI

Sanjaya continued, "Here and there, foot soldiers fought against rule I shall tell you how:—The father, in that battle, did not know the son; the son did not spare the father; the brother did not know the brother; the maternal uncle did not know his sister's son and friends fought with one another in confusion. All the Kauravas and Pandavas fought like those possessed of spirits. 3. Some brave charioteers fell on portions of the armies and broke the shafts of chariots with their own. All parts of their chariots were thus crushed and broken. Others fought with those who opposed them. 5. Some of the chariots were disabled by dashing against others, while others of large size, were broken into pieces by coming in contact with large elephants. Many elephants shrieked there, wounding with their teeth huge war elephants bearing howdahs and

शिक्षाभिस्तात्राङ्कुशसमाहताः । अनभिन्ना प्रभिन्नानां सम्मुखाभिमुखाययुः ॥९॥ प्रभि
न्नैरपि समत्ताः केचित्तत्र महागजाः । क्रौञ्चवन्निनदं कृत्वा दुद्रुवुः सर्वतो दिशम् ॥१०॥
सम्यक् प्रणीतानागाश्च प्रभिन्नकरटामुखाः । ऋष्टितोमरनाराचैर्निरुद्धावरवारणाः ११
प्रणेदुर्भिन्नमर्माणो निपेतुश्च गतासवः । प्राद्रवतादृशा केचिन् नदन्तोभैरवान्रवान् १२॥
गजानां पादरक्षास्तु व्यूढोरस्काः प्रहारिणः । ऋष्टिभिश्च धनुर्भिश्च विमलैश्च परश्वधैः ॥ १३ ॥ गदाभिर्मुसलैश्चैव भिन्दिपालैः सतोमरैः । आयसैः परिघैश्चापि निस्त्रिं
शैर्विमलैः शितैः ॥ १४ ॥ प्रगृहीतैः सुसंरब्धा द्रवमाणास्ततस्ततः । व्यदृश्यन्त महाराज
परस्परजिघांसवः ॥ १५ ॥ राजमानाश्च निस्त्रिंशाः संसिक्ता नरशोणितैः । प्रत्यदृश्यन्त
शूराणामन्योन्यमभिधावताम् ॥ १६ ॥ अवक्षिप्तावधूतानां मसीनां वीरबाहुभिः । संसक्ते

पुकारते थ । ८ । शिक्षाओं से सीखेहुए चाबुक और अङ्कुशों से घायल बिना
मदवाले हाथी मदों के चूनेवाले उन्मत्त हाथियों के सम्मुखहुए, और कोई २ मद
चूने वाले बडे २ हाथी हाथियों से भिडे हुए क्रौंचके समान शब्दोंको करते हुए
जहां तहां भागे । १० । इस प्रकार अच्छे हमला करने वाले गंडस्थलों
से मदझारनेवाले उत्तम हाथी लाठी तोमर और नाराचों से रुकगये, मर्मस्थलोंमें
मदझारनेवाले उत्तम हाथी लाठी तोमर और नाराचों से रुकगये मर्मस्थलों से
विधे हुए चिग्घारें मारतेहुए पृथ्वीपर गिरकर मृतक वशहुए और कोई २ हाथी
महाभयानक शब्दोंको करते हुए चारोंओर को दौडे हेमहाराज हाथियों के चरण
रक्षक शूरवीर लोग जो कि बडे २ वक्षस्थल युक्त मिले हुए और प्रहार करने
वाले थे वह हाथकी यष्टी धनुष और निर्मल फरसे गदामूसल गोफन तोमर परिघ
और स्वच्छतीक्ष्ण खड्ग, इनसब शस्त्रोंको अच्छे प्रकार से धारण किये हुए अत्यन्त
क्रोधमें भरे परस्परमें एक दूसरे के मारने की इच्छा करते हुए जहां तहां दौडते
दृष्टपडे । १५ । परस्परमें एक एक के सन्मुख दौडते हुए शूरवीरों के खड्ग
मनुष्योंके रुधिरों से भरेहुए शोभायमान दृष्टि में आये, वीरोंकी भुजाओंसे अगे

banners 8 The trained ones wounded by whips and goads, though not themselves musty, were made to encounter others mad ones, while others in rut, huge ones, ran hither and thither shrieking like cranes 10 Thus many good fighting elephants from whose temples dropped juice, were checked by clubs and javelins and being wounded in vital parts shrieked loudly and fell down dead on earth Some elephants, making a dreadful noise ran in all directions The men who guarded the feet of the elephants and who with broad chests, dexterous in the use of great warlike weapons armed with bows, shining battle axes maces catapults, clubs and sharp swords angrily wishing to kill one another, were seen running hither and thither 15 The swords of the encountering combatants reeking in human blood, looked glorious to behold. Falling flat or prone the enemies were

तुमुल. शब्द पतता परमर्मसु ॥ १७ ॥ गदामुसलरुग्णानां भिन्नानांचवरासिभि ।
दन्तिदन्ताविभिन्नानां मृदितानांचदन्तिभिः ॥ १८ ॥ तत्रतत्रनरौघाणां क्रोशतामितरे
तरम् । शुश्रुवुर्दारुणावाचः प्रेतानामिवभारत ॥ १९ ॥ हयैरपि हयारोहाश्चामरापीड·
धारिण । हंसैरिव महावेगैरन्योन्यमभिविद्रुताः ॥ २० ॥ तैर्विमुक्ता महाप्रासाजाम्बू
नदाविभूषणा । आशुगाविमलास्तीक्ष्णा. सम्पेतुर्भुजगोपमा. ॥ २१ ॥ अश्वैरग्र्यजवैः
केचिदाप्लुत्य महतोरथान् । शिरांस्याददिरे वीरारथिनामश्वसादनः ॥ २२ ॥ बहूनपि
हयारोहान् भल्लैः सन्नतपर्वभि. । रथी जघानसम्प्राप्यबाणगोचरमागतान् ॥ २३ ॥
नवमेघप्रतीकाशाश्च क्षिप्य तुरगान्गजाः । पादैरेवविमृद्नन्ति मत्ता कनकभूषणाः
॥ २४ ॥ पाट्यमानेषु कुम्भेषु पार्श्वेष्वपिचवारणा । प्रासैर्विनिहताः केचिद्विनेदु·
परमातुराः ॥ २५ ॥ साश्वारोहान्हयान् काश्चिदुन्मथ्यवरवारणाः । सहसाचिक्षि·

हुए और ऊर्ध्वमुख गिरायेहुए शत्रुओंके मर्मोंपर पड़ेहुए खड्गोंका तुमुलशब्द उत्पन्न हुआ । १७ । गदा और मूसलोंसे टूटेहुए अंग और उत्तम खड्गों से कटेहुए हाथियों के दांतों से घायल हाथियों सेही खुदेहुए मनुष्योंके जहां तहां परस्पर पुकारे हुए भयकारी ऐसे वचन सुनेगये जैसे कि प्रेतों के शब्द सुनने में आते हैं, अश्वा रूढ़ मनुष्योंसे और अन्य तीव्रगामी अश्वोंकी सवारीसे परस्पर में सम्मुखताहुई२० उन के छोड़हुए शीघ्रगामी निर्मलसर्पों के समान जांबूनद सुवर्ण से अलंकृत भाले उन अंगोंपर परस्पर में पड़े कितनेही वीरोंने उत्तम गतिवाले घोड़ोंसे बड़े रथोंको संयुक्त करके घोड़ा समेत रथोंको और सवारों के शिरोंको काटा, और रथके सवारने बहुत से अश्वारूढ़ों को पाकर बड़े झुके हुए पर्ववाले भालों से उन बाणों से भिदेहुओं को मारा, मदोन्मत्त सुनहरी भूषण वाले हाथियों ने नवीन बादल के समान रंगीनघोड़ों को तिरस्कार करके अपने पैरोंसे मर्दन किया ।२४। बड़े भयानक कितनेही हाथी मस्तक और देह में कवच आदि सेभी अलंकृत भालों से मारेहुए बड़े पीड़ामान शब्दों को करते थे फिर वहां महा युद्ध होनेपर कितनही

wounded in vital parts by the warrior's swords which made a great noise. 17 Soldiers with broken limbs by the maces and clubs of warriors, wounded by swords and elephant's tusks and trampled under the feet of elephants, raised, here and there, hideous cries like those of the sprites Horsemen encoutered horsemen or others who rode on swift beasts 20 They slew one another with their swift arrows shining like serpents and their darts decked with pure gold Many warriors, mounted on large chariots drawn by swift horses cut down the chariots, the horses and the heads of soldiers Charioteers killed horsemen with their numerous darts having hooked points. Mad elephants decked with gold ornaments trampled down the horses under their feet. 24. Many formidable elephants whose foreheads and bodies were protected by mail, pierced by darts, shrieked with

पुगतत्रसंकुले भैरवेसति ॥ २६ ॥ साश्वारोहान्विषाणाग्रैरुत्क्षिप्य तुरगान्गजाः। रथौघानभिमृद्नन्तः सध्वजानभिचक्रमुः २७ पुंस्त्वादतिमदत्वाच्च केचिदत्रमहागजाः। साश्वारोहान्हयान् जघ्नुः करैः सचरणैस्तथा ॥ २८ ॥ साश्वारोहांश्च समरे हस्तिसादिभिरेवच। प्रतिमानेषु गात्रेषु पार्श्वेष्वपि च वारणान्। आशुगा विमलास्तीक्ष्णाः सम्पेतुर्भुजगोपमाः ॥ २९ ॥ नराश्वकायान्निर्भिद्य लौहानि कवचानिच। निपेतुर्विमलाः शक्त्योवीरबाहुभिरर्पिताः ॥ ३० ॥ महोल्काप्रतिमा घोरास्तत्र तत्रविशाम्पते। द्वीपिचर्मावनद्धैश्च व्याघ्रचर्मच्छदैरपि ॥ ३१ ॥ विकोशैर्विमलैः खड्गैरभिजघ्नुः परान् रणे। अभिप्लुतमभिक्रुद्धमेकपार्श्वावदारितम् ॥ ३२ ॥ विदर्शयन्तः सम्पेतुः खड्गचर्मपरश्वधैः। केचिदाक्षिप्य करिणः साश्वानपि रथान् करैः ॥३३॥ विकर्षन्तोदिशःसर्वाः संपेतुःसर्वशब्दगाः। शंकुभिर्दारिताः केचित् संभिन्नाश्चपरश्वधैः

उत्तम हाथियों ने सवारों समेत घोड़ों को मथकर वा उठाकर फेंक दिया हाथी अपने दांतों की नोक से सवारों समेत घोड़ों को ऊंचेको उठाये ध्वजाधारी रथ समूहोंको मर्द्दनकरते हुए चारोंओर घूमनेलगे और कितनेही बड़ेहाथियोंने बड़ीवीरता और मदोन्मत्ततासे अपनी सूंड और चरणोंके द्वारा सवारोंसमेत घोड़ों को मारा, चारों ओर से हाथियों के मस्तक वा अंग वा पसली और जंघाओं पर बड़े शीघ्र गामी सर्पोंके समान तीक्ष्ण बाण गिरे, और हे राजा जहां तहां वीरोंकी भुजाओं सेमारीहुई बरछियां लोहे के कवचोंको काटकर मनुष्य और घोड़ों के शरीरों पर पड़ीं वह बरछियां महाभयानक उल्काओं के स्पर्धी । ३० । और इसी संग्राम में चित्र व्याघ्र चर्मसे बँधेहुए और व्याघ्रकेही चर्म में रहनेवाले मियान से बाहर स्वच्छ खड्गों से शत्रुओंको मारा, निर्भय मनुष्य के सम्मुख जाना और काटना आदिक सब कर्मों को करना और बाईं ओर को सवारी करना इत्यादि चेष्टाओं को दिखलाते खड्ग ढाल और परशु नाम शस्त्रों समेत गिरे, कितनेही हाथी सूंड़ों

pain. During the battle many elephants trampled or hurled the horses and their riders. Lifting up the horses and riders on the points of their tusks, trampling the bannered chariots, the elephants roamed; and bravely and madly crushed the horses and their riders under feet. Sharp and swift arrows fell serpent like from all sides on the heads, bodies, sides and legs of the elephants. Here and there, sharp darts hurled by the warriors, pierced through *the steel armour* and entered the bodies of men and horses like sparks of fire.30. Swords were drawn out of the scabbards made of tiger's hide to kill the enemies. Going fearlessly before the enemy, killing and doing deeds of horsemanship, the warriors fell in spite of their swords, shields and battle axes. Some elephants dragged the chariots and horses with their trunks and all those who heard their cries dispersed in different directions. Many men were killed by the wheels and axes, while

॥ ३४ ॥ हस्तिभिर्मर्दिताः केचित्क्षुण्णाश्चान्ये तुरङ्गमैः । रथनेमिनिकृत्ताश्च निकृत्ताश्च परश्वधैः ॥ ३५ ॥ व्याक्रोशन्त नराराज स्तत्रतत्रस्मबान्धवान् । पुत्रानन्येपितॄनन्ये भ्रातॄंश्चसहबन्धुभिः ॥३६॥मातुलान्भागिनेयांश्च परानापचसंयुगे । विकीर्णान्त्रा सुबहवो भग्नसक्थाश्चभारत ॥ ३७ ॥ बाहुभिश्चापरे छिन्नैः पार्श्वेषुच विदारिताः । क्रन्दन्त समदृश्यन्त तृषिताजीवितेप्सवः ॥ ३८ ॥ तृषापरिगताः केचिदल्पसत्वाविशाम्पते । भूमौ निपतिताः सङ्ख्ये मृगयाञ्चक्रिरे जलम् ॥ ३९ ॥ रुधिरौघपरिक्लिन्नाः क्लिश्यमानाश्च भारत । व्यनिन्दन्भृशमात्मान तव पुत्राश्च सङ्गतान् ॥ ४० ॥ अपरे क्षत्रियाः शूराः कृतवैराः परस्परम् । नैवशस्त्रं विमुञ्चन्ति नैव क्रन्दन्ति मारिष ॥ ४१ ॥ तर्जयन्ति च सहृष्टास्तत्रतत्रपरस्परम् । आदश्यदशनैश्चापिक्रोधात् स्वरदनच्छदम् ॥४२॥ भ्रुकुटी

से घोड़ों समेत रथोंकोखैंचतेथे और खैंचनेवाले हाथियों के शब्दों को सुनकर सबके सब चारों ओर को गये, कितनेही मनुष्य डंडोंकी कीलों से कटेहुए और परशुओं से मारे हुए थे और बहुत से हाथियों से मर्दित हुए और कितनेही घोड़ों से अत्यन्त घायलहुए हे महाराज जहां तहां कितनेही मनुष्य बांधवों को पुकारते हुए रथों के पहियों से दबकर परशुओं से कटगये । ३५ । और कहीं संग्राममें अपने पुत्रों को कोई भाइयों को और मामा वा भानजो को अथवा अन्य, लोगों को पुकारते हुए घायल होकर मारेगये, हे भरतवंशी जिनकी आंतें फैलगई और जंघा टूटगई ऐसे सब मनुष्य होगये और बहुतसे कटीहुई भुजाओं समेत अंगों से रहित हुए, और अनेक मनुष्य जीवनकी इच्छाकरते हुए अत्यन्त रोदन करते दृष्पड़े बहुतेरे प्यासे और धैर्य्य को छोड़िहुए जल को खोजते थे, हे राजा उन रुधिरों से भरे हुए दुखियों ने आप समेत आपके पुत्रों की निन्दाकी, हे धृतराष्ट्र अच्छे शूरवीर क्षत्रिय न तो शस्त्रको छोड़ते है न रोते और पुकारते है । ४० । हे राजा जहां तहां अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरलोग क्रोधसे अपने दांतों के द्वारा ओठोंको काटकर निंदा युक्त वचनों का कहते है, कोई २ धैर्य्यवान् महाबली बाणों से

others were crushed by elephants Some were wounded by the horses and others calling on their kinsmen were crushed under the wheels 35 Some calling upon their sons and others calling upon their brothers, maternal uncles, nephews and others, were wounded and slain Their entrails came out of their bodies, their thighs were broken and their arms and other limbs were cut off Many men, wishing to live longer were seen weeping, others, thirsty and forlorn, searched for water . The blood stained wretches cursed you and your sons, O king! But good soldiers did not let the weapons go out of their grasp, and neither wept nor cried 40 Here and there cheerful warriors, biting their lips in anger, uttered words of blame. Some tenacious warriors, though mortally wounded, bore the pain in

कुटिलैर्वक्रैः प्रेच्छन्तिचपरस्परम् । अपरे क्लिश्यमानास्तु शरार्ता व्रणपीडिताः ॥४३॥ निष्कूजाः समपद्यन्त दृढसत्वामहाबलाः । अन्येच विरथा शूरा रथमन्यस्यसंयुगे ॥ ४४ ॥ प्रार्थयानानिपतिताः संक्षुण्णावरवारणैः । अशोभन्त महाराज सपुष्पाइव किंशुकाः ॥ ४५ ॥ सस्वभूवुरनीकेषु बहवो भैरवस्वनाः । वर्त्तमाने महाभीमेतस्मिन् वीरवरक्षये ॥ ४६ ॥ निजघानपितापुत्रं पुत्रश्चपितरं रणे । स्वस्रीयो मातुलञ्चापि स्वस्रीयञ्चापि मातुलः ॥ ४७ ॥ सखासखायञ्चतथा सम्बन्धीबान्धवंतथा । एवं युयुधिरे तत्र कुरवः पाण्डवैः सह ॥ ४८ ॥ वर्त्तमाने तथा तस्मिन् निर्मर्य्यादेभयानके । भीष्ममासाद्य पार्थानां वाहिनी समकम्पत ॥ ४९ ॥ केतुनापञ्चतारेण तालेन भरतर्षभ । राजतेन महाबाहुरुच्छ्रितेन महारथे । बभौभीष्मस्तदा राजं श्चन्द्रमा इवमेरुणा ॥ ५० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वणि संकुलयुद्धे

षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

महा व्याकुल और घावों से पीड़ित होकर महाकष्टसे मौन होगये, कितनेही शूरवीर युद्ध में रथसे विहीन और उत्तम हाथियों से अत्यन्त घायल दूसरे के रथों की इच्छा करते हुए मार्ग में गिरपड़े, हे महाराज वह फूलेहुए किंशुक वृक्ष के समान शोभायमान हुए ।४४। और इसके विशेष सेनामें भयकारी अनेक शब्द प्रकटकरते हुए, इस बड़े भयानक और उत्तम वीरों के नाश करने वाले युद्धके होनेपर संग्राम भूमि में पिता ने पुत्रको और पुत्र ने पिताको मारा, मामाने भानजेको और भानजे ने मामा को मित्रने मित्रको इसी प्रकार बांधवों ने बांधव आदि संबंधियों को भी मारा, इस रीतिसे पांडवों मे और कौरवों से उस भयानक रूप मर्यादासे रहित बड़े भयकारी **युद्ध** के होनेपर यह सर्व संहार हुआ । ४७ । हे भरतर्षभ पांच नक्षत्रवाले तालध्वजा समेत भीष्मजी के सम्मुख होकर पांडवों की सेना अत्यन्त कंपायमान हुई उससमय वह महाबाहु भीष्मजी सुवर्ण निर्मित उत्तम ध्वजा समेत विस्तृत रथ में बैठेहुए ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि मेरु पर्व्वत पर चन्द्रमा शोभित होता है ॥ ५० ॥

silence. Many warriors, deprived of their chariots in the field of battle and wounded by elephants, fell down dead in the way, desiring to get other chariots They looked glorious like Kinshuk plants in bloom. 44. Besides these there were other dreadful noises in the armies. During this dreadful war destructive of warriors, fathers and sons, maternal uncles and nephews, friends and kinsmen killed one another. All such atrocities occured in that dreadful war of the Kauravas and Pandavas which was without rule. 47. Bhishm, with his ensign of the palm tree and five stars, shook the armies of the Pandavas with his golden ensign, and mounted on a large chaiot, looked glorious like the moon on mount Meru. 49.

सञ्जय उवाच । गतपूर्वाह्णभूयिष्ठे तस्मिन्नहनि दारुणे । वर्त्तमाने तथा रौद्रे महावीर वरक्षये ॥ १ ॥ दुर्मुखः कृतवर्मा च कृपः शल्यो विविंशतिः । भीष्मं जुगुपुरासाद्य तव पुत्रेणचोदिताः ॥ २ ॥ एतैरतिरथैर्गुप्तः पञ्चभिर्भरतर्षभः । पाण्डवानामनीकानि विजगाहे महारथः ॥ ३ ॥ चेदिकाशिकरूषेषु पञ्चालेषुच भारत । भीष्मस्यबहुधा तालध्वजतुकेतुरदृश्यत ॥ ४ ॥ स शिरांसिरणेऽरीणां रथांश्चसयुगध्वजान् । निचकर्त्तमहावेगैर्भल्लैः सन्नतपर्वभिः ॥ ५ ॥ नृत्यतो रथमार्गेषु भीष्मस्यभरतर्षभ । भृशमार्त्तस्वरं चक्रुर्नागा मर्मणि ताडिताः ॥ ६ ॥ अभिमन्युः सुसंक्रुद्धः पिशङ्गैस्तुरगोत्तमैः संयुक्तं रथमास्थाय प्रायाद्भीष्मरथं प्रति ॥ ७ ॥ जाम्बूनदविचित्रेण कर्णिकारेण केतुना । अभ्यवर्त्तत भीष्मञ्च तांश्चैव रथसत्तमान् ॥ ८ ॥ सतालके

अध्याय ॥ ४७ ॥

संजयबोले हे राजा उस महा भयानक दिनके मध्याह्न व्यतीतहोने और इस रीति से उत्तम लोगों के नाश वर्त्तमान होनेपर, आपके पुत्रकी आज्ञालेकर दुर्मुख कृतवर्मा कृपाचार्य शल्य और विविन्शति ने भीष्मजी के पास आकर उनकी रक्षा की, हे भरतर्षभ इनपांच अतिरथी वीरों से रक्षित महारथी भीष्मजी ने पाण्डवों की सेना में प्रवेश किया, और हे धृतराष्ट्र चेदि काशि करूष और पांचाल देशकी सेना के मध्य में भीष्मजी की तालरूप ध्वजा बहुत सुन्दर दृष्ट पड़ी, उस वैरिणी युद्धमें बड़े वेगवान् अतिशय झुकेहुए भल्लनाम बाणों से भीष्मजी ने शिरों और ध्वजायुक्त रथों को रथ के जुए आदि अंगों समेत काटा ।५। हेभरतर्षभ, नक्षत्र के समान भीष्मजी के घूमने पर मर्मस्थलों से घायल कितनेही हाथियों ने पीड़ा के शब्द किये, उस समय अभिमन्यु अत्यन्त क्रोधमें भराहुआ पिंगल वर्ण उत्तम घोड़ों के रथ में बैठकर भीष्मजी के रथ के सम्मुख आया, और जांबूनद सुवर्णसे रचित कर्णिकार वृक्षके चित्रवाली ध्वजा समेत भीष्मआदि उन उत्तम पांचों रथियों के

CHAPTER XLVII

In the afternoon of that dreadful day," said Sanjaya, "when those good men were thus being destroyed, Durmukh, Kritvarma, Kripa, Shalya and Vivinshati went to Bhishm by the order of your son and protected him. Protected by those five great warriors, Bhishm entered the army of the Pandavas. Bhishm's ensign of the palm tree looked very glorious in the midst of the armies of Chedi, Kashi, Kurush and Panchal. In that destructive war Bhishm cut down the heads and the yokes of bannered chariots by his hooked arrows. 5. When Bhishm was thus circling like a meteor, mad elephants wounded in the vital parts shrieked with pain. Then Abhimanyu in a rage drove his good steeds of yellow colour and brought his chariot face to face with that of Bhishm. He encoun-

तोऽस्तीक्ष्णेन केतुमाहत्य पत्रिणा । भीष्मेण युयुधे वीरस्तस्य चानुरथैःसह ॥ ९ ॥ कृतवर्माणमेकेन शल्यं पञ्चाभराशुगैः । विध्वानवभिरानच्छैश्छितारैः प्रपितामहम् ॥ १० ॥ पूर्णायतविसृष्टेन सम्यक् प्रणिहितेनच । ध्वजमेकेन विव्याध जाम्बूनदपरिष्कृतम् ॥ ११ ॥ दुर्मुखस्य तु भल्लेन सर्वावरणभेदिना । जहारसारथेःकायाच्छिरः सन्नतपर्वणा ॥ १२ ॥ धनुश्चिच्छेद भल्लेन कार्त्तस्वरविभूषितम् । कृपस्य निशिताग्रेण तांश्च तीक्ष्णमुखैः शरैः ॥ १३ ॥ जघान परमक्रुद्धो नृत्यन्निवमहारथः । तस्य लाघवमुद्वीक्ष्यतुतुषुर्देवता अपि ॥ १४ ॥ लब्धलक्षतया कार्ष्णेः सर्वे भीष्ममुखारथाः । सत्ववन्तममन्यन्त साक्षादिव धनञ्जयम् ॥ १५ ॥ तस्य लाघवमार्गस्थमलातसदृशप्रभम् । दिशः पर्य्यपतच्चापं गाण्डीवमिव घोषवत् ॥ १६ ॥ तमासाद्य महा

सम्मुख हुआ, फिर वह वीर भीष्मजी की ताल ध्वजा को तीक्ष्ण बाणों से छेदकर उनके पीछे चलनेवाले पांचों रथियों से युद्ध करनेलगा, एक बाणसे कृतवर्मा को और पांच बाणों से शल्य को और नौ उत्तम बाणों से पितामह को घायल किया । १० । और जांबूनद सुवर्ण से शोभित एक उत्तम शायक से उनकी ध्वजा को काटा, और सब पर्दो के भेदन करनेवाले झुकेहुए पर्ववाले एक भल्ल नाम बाण से दुर्मुख के सारथी का शिर देह से पृथक् करादिया, सुवर्ण से बनेहुए महा शोभायमान कृपाचार्य्य जी के उत्तम धनुष को तीक्ष्ण नोकवाले भल्ल से काटा और महा क्रोधरूप होकर उस महारथीने अपने तीव्र बाणों से उनसब को भी घायल किया देवता लोग भी आकाश से उस शीघ्र हस्तलाघवता को देखकर प्रसन्नहुए, और भीष्मआदि सब रथियों ने उस अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के लक्ष भेदनेसे उसको साक्षात् अर्जुन के समान पराक्रमी माना । १५ । और घुमाये हुएउल्मुक के समान प्रकाशित निर्विघ्न मार्ग में नियत उसका मण्डल दिशाओं में गिरा और गांडीव धनुपके समान उसको शब्दायमान किया, तब शत्रुओं के

tered the five great warriors beginning with Bhishm of the ensign of golden palm. Having pierced the palmyra ensign of Bhishm with his sharp arrows, he began to fight with the five warriors who rode behind him and wounded Kritvarma with one of his arrows, Shalya with five and the grand father with nine.10. And with one of his gold-bedecked arrows he cut his bannerstaff. He cut down the head of Durmukh's chariot driver with one of his pie cing, hooked arrows. He cut the good gold bow of Kripacharya with one of his sharp pointed darts and wounded all those warriors. The g ds in the sky were pleased to see the dexterity of his hand and Bhishm and other warriors judged him to be as good in hitting marks as Arjun himself. 15 Shining like a circle of fire, of unceasing motion, his bow sent round its shower of arrows and its twang was heard like that of the Gandiv.

घेगैर्भीष्मो नवभिराशुगै । विव्याधसमरे तूर्णमार्ज्जुनिं परवीरहा ॥ १७ ॥ ध्वजञ्चास्य त्रिभिर्भल्लैश्चिच्छेद परमौजस । सारथिञ्च त्रिभिर्बाणैराजघान यतव्रत ॥ १८ ॥ तथैव कृतवर्माचकृप शल्यश्च मारिष । विव्यानाकम्पयत् कार्ष्णिं मैनाकमिव पर्वतम् ॥१९॥ सतं परिवृत शूरा धार्त्तराष्ट्रैर्महारथै । ववर्ष शरवर्षाणि कार्ष्णि पञ्चरथान्प्रति ॥२०॥ ततस्तेषां सहस्राणि निवार्य्य शरवृष्टिभि । ननादबलवान् कार्ष्णिर्भीष्माय विसृजन् शरान् ॥ २१॥ तत्रास्यसुमहद्राजन् बाह्वोर्बलं ददृश्यत । यतमानस्यसमरे भीष्ममर्द्दयत शरै ॥ २२ ॥ पराक्रान्तस्य तस्यैव भीष्मोपिप्राहिणोच्छरान् । सतांश्चिच्छेदसमरे भीष्मचापच्युतान्शरान् ॥२३॥ ततो ध्वजममोघेषुर्भीष्मस्य नवभि शरै । चिच्छेदसमरे वीरस्तत उच्चुक्रुशुर्ज्जना ॥ २४ ॥ स राजतो महास्कन्धस्तालो हेमविभूषिता ।

मारनेवाले भीष्मजी ने शीघ्रता पूर्व्वक उससे आगे होकर युद्धभूमि में शीघ्र गति वाले नौबाणों से तत्कालही उस अर्जुन के पुत्रको घायल किया, और बडे पराक्रमी दृढव्रत सावधान भीष्मजीने उसकी ध्वजा को तीन भल्लों से काटा और उसके सारथी को तीन बाणों से मारा, हे राजा इसीप्रकार कृतवर्म्मा कृपाचार्य्य और शल्यनेभी अर्जुनके पुत्र को घायलकरके ऐसे कंपायमानही किया जैसे मैनाक पर्व्वतका कंपायमाननही करसक्ते । १९ । फिर उन महारथियों से घिराहुआ अर्जुन कापुत्र अभिमन्युपाचों रथियों के ऊपर बाणों की वर्षा करके पांचोंके अस्त्रोंको अप ने बाणों से रोककर भीष्मजीके ऊपर बाणों को छोडताहुआ बडे वेग से गर्जा । २१ । उससमय हे राजा वहां उस युद्ध में उपाय करने वाले और बाणों से भीष्मको मारने वाले अभिमन्युका वडाभारी भुजबल विदित हुआ, तब भीष्मजी ने भी उस पराक्रमी के ऊपर बाणों को छोडा फिर उसने युद्ध में भीष्मजी के धनुष से छुटेहुए बाणोंको काटा, तिसपीछे उस सफल बाणवाले वीरने भीष्मजी की ध्वजाको फिर नौतीरों से काटा इस कारण सबलोग बडे शब्द से पुकारे

Then Bhishm the destroyer of enemies faced the son of Arjun in great haste and wounded him at once with nine swift arrows And wise Bhishm of great prowess and firm vow, cut his banner with three darts and killed his driver with three others Kritvarma, Kripacharya and Shalya too wounded the son of Arjun, but could shake him no more than they could mount Menak 19 Then surrounded by those warriors, Arjun's son Abhimanyu showered his arrows over the five warriors, and checking their weapons with his own, he wounded Bhishm with a tremendous roar 21 Trying hard in that battle and hitting Bhishm with his arrows, Abhimanyu displayed his great prowess. Bhishm too discharged arrows at the warrior and Abhimanyu cut them down with his own Then the marksman cut the banner of Bhishm with nine arrows and at this there was a great

सौभद्रविशिखै इछन्न पपातभुविमरत ॥२५॥ ततु सोभद्र विशिखैः पातितमरतर्षभ । दृष्ट्वाभीमोननादोच्चैः सौभद्रमभिहर्षयन् ॥ २६ ॥ अथ भीष्मो महास्त्राणि दिव्यानिसु बहूनच । प्रादुश्चक्रे महारौद्र रणे तस्मिन्महाबलः ॥ २७ ॥ ततः शरसहस्रेण सौभद्रं प्रपितामह । अवाकिरदमेयात्मा तदद्भुतमिवाभवत् ॥ २८ ॥ ततो दश महेष्वासा पाण्डवानां महारथा । रक्षार्थमभ्यधावन्त सौभद्रं त्वरिता रथै ॥ २९ ॥ विराट सह पुत्रेण धृष्टद्युम्नश्चपार्षत । भीमश्च केकयाश्चैव सात्यकिश्च विशाम्पते ॥३०॥ तेषाजवेनपतता भीष्म शान्तनवोरणे । पाञ्चाल्य त्रिभिरानर्च्छत् सात्यकिं नवभि शरैः ॥३१॥ पूर्णायतविसृष्टेन क्षुरेणनिशितेनच । ध्वजमकेन चिच्छेद भीमसेनस्य पत्रिणा ॥ ३२ ॥ जाम्बूनदमय श्रीमान् केसरी सनरोत्तम । पपात भीमसेनस्य भीष्मेण

। २४ । हे भरतवंशी वह बड़ी शाखा युक्त सुवर्ण से शोभित सुवर्णित ताल वृत्त अभिमन्यु के विशिखनाम बाणों से कटा हुआ पृथ्वीपर गिरा, हे भरतर्षभ अभिमन्यु के विशिखों से गिरीहुई ध्वजाको देखकर भीमसेन ने महा प्रसन्न होकर उस अभिमन्यु को प्रसन्न करके बड़ी गर्जनाकी । २६ । इसके पीछे महाबली भीष्मजी ने उस महाभयकारी युद्ध में बहुत से दिव्यमहा अस्त्रों को प्रकट करके सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु को सहस्र बाणों से ढकादिया यह आश्चर्यसा होगया । २८ । यह देखकर हे राजा पांडवों के दस महारथी बड़े धनुषधारी रथों में सवार होकर शीघ्रही अभिमन्युकी रक्षा के लिये दौड़े उनके नाम यह हैं। अपने पुत्र उत्तरसमेत राजा विराट, पृषतका पुत्र धृष्टद्युम्न, भीमसेन, केकय और सात्यकी, शंतनु के पुत्र भीष्मजी ने युद्धमें उनतीव्र आनेवालों के मध्य में धृष्टद्युम्न को तीन बाणों से और सात्यकी को नौबाणों से घायल किया, और कर्ण पर्य्यन्त खैंचकर छोड़ेहुये तीक्ष्णधार वाले एक बाणसे भीमसेन की ध्वजाको काटा । ३२ । हे नरोत्तम भीमसेन की ध्वजा सिंह के चित्रकी स्वर्णमयी भीष्म से गिराईहुई पृथ्वीपर गिरी

shout of the people 24 The golden palm, dissevered by Abhimanyu's arrows fell to the ground and at the sight of it Bhim uttered a great war cry to cheer Abhimanyu Then Bhishm of immense prowess made use of his celestial weapons and covered Abhimanyu at once with a thousand arrows, making it appear as a wonder 28 Upon this, ten warriors of the Pandavas at once drove in their chariots to help Abhimanyu King Virat with his son Uttar, Dhrishtadyumn the son of Prishat, Bhim, Kaikaya and Satyaki were among those who came to help him In the midst of those warriors, Bhishm the son of Shantanu, wounded Abhimanyu with three arrows and Satyaki with nine He cut Bhim's banner with one arrow, shot from the bow which was drawn to the ear 32 Bhim's banner, having the figure of a lion wrought in gold, cut down by

मथितोरथात् ॥ ३३ ॥ ततो भीमस्त्रिभिर्विध्वा भीष्मं शान्तनवं रणे । कृपमेकेन विव्याध कृतवर्माणमष्टभिः ॥ ३४ ॥ प्रगृहीताग्रहस्तेन वैराटिरपि दन्तिना । अभ्यद्रवत् राजानं मद्राधिपतिमुत्तरः ॥ ३५ ॥ तस्य वारणराजस्य जवेनापततो रथे । शल्यो निवारयामास वेगमप्रतिमं शरैः ॥ ३६ ॥ तस्य क्रुद्धः स नागेन्द्रो बृहतः साधुवाहिन । पदा युगमधिष्ठाय जघानचतुरो हयान् ॥ ३७ ॥ सहताश्वे रथे तिष्ठन् मद्राधिपतिरायसीम् । उत्तरान्तकरीं शक्तिं चिक्षेप भुजगोपमाम् ॥३८॥ तयाभिन्नतनुत्राणः प्रविश्यविपुलंतमः । सपपातगजस्कन्धात् प्रमुक्तांशुकतोमरः ॥३९॥ असिमादाय शल्योपि अवप्लुय रथोत्तमात् । तस्य वारणराजस्य चिच्छेदाथमहा करम् ॥ ४० ॥ भिन्नमर्मा शरशतैश्छिन्नहस्तः स वारणः । भीममार्तस्वरंकृत्वा

तदनन्तर भीमसेनने शंतनु के पुत्र भीष्मजी को बाणों से घायल करके एक बाण से कृपाचार्य को और आठबाणों से कृतवर्मा को घायल किया। ।३४। और उत्तरनाम विराट्का पुत्र अग्रभाग में सूंड़की कुंडली बनाने वाले हाथी पर सवार होकर मद्रदेश के राजा शल्य के सम्मुख दौड़ा, शल्य ने बड़ी तीव्रता से रथपर गिरने वाले उसगजेद्र के महावेगको रोका, फिर उस क्रोधित गजेन्द्र ने चरणों से रथके जुयेको दबाकर उसके चारों उत्तम सवारी के घोड़ों को मारा, ।३७। मृतक घोड़े वाले रथपर नियत राजा मद्रने सर्प के समान और उत्तर के नाश करने वाली लोहेकी बरछी को फेंका, उसबरछीसे जिसका कवच कटगया ऐसा वह उत्तर विस्मरणता में आकर हाथी के ऊपरसे नीचे गिरपड़ा और गिरतेही उस के हाथ से अंकुश और तोमर छूटपड़े, फिर शल्य ने अपने रथसे उतर खड्ग हाथ में लेकर बड़े पराक्रम से उसके गजेन्द्र की बड़ीभारी सूंडको काटडाला, वह हाथी बाण समूहों से भिदाहुआ कवचटूटा कटीहुई सूंड़ से भयानक शब्द करता हुआ

Bhishm, fell on earth Thereupon, Bhim wounded Bhishm with his arrows and pierced Kripachaiya with one arrow and Kritvarma with eight. 34 Uttu, the son of king Virat, rode the elephant which had formed a circle of its trunk and encountered Shalya the king of Madra. Shalya speedily checked the elephant which was advancing towards his chariot, but the elephant trampled the yoke of his chariot under foot and killed the four horses which drew it. 37. Seated on the chariot of which the horses were slain, the king of Madra hurled his serpent like iron spear to kill Uttar. Uttar with his armour cut by the spear, fell down in a swoon from the elephant and all the weapons fell down from his grasp Shalya then leaped from his chariot and with great bravery cut down the trunk of the huge elephant, which already pierced by the arrow through the

पपात च ममार च ॥ ४१ ॥ एतदीदृशकं कृत्वा मद्रराजो नराधिप । आरुरोह रथं तूर्णं भास्वरं कृतवर्मणः ॥४२॥ उत्तरंवै हतं दृष्ट्वा वैराटिर्भ्रातरंतदा । कृतवर्मणाच सहितं दृष्ट्वा शल्यमवस्थितम् ॥ ४३ ॥ श्वेत क्रोधात्प्रजज्वालहविषाहव्यवाडिव । सविस्फार्यमहच्चापंशक्रचापोपमंबली ॥४४॥ अभ्यधावज्जिघांसन्वै शल्यंमद्राधिपंबली । महतारथवंशेनसमंतात्परिवारितः ॥ ४५ ॥ मुंचन्बाणमयंवर्षं प्रायाच्छल्यरथंप्रति । तमापतंतंसंप्रेक्ष्यमत्तवारणविक्रमम् ॥ ४६ ॥ तावकानांरथाः सप्तसमंतात्पर्यवारयन् । मद्रराजमभीप्संतोमृत्योर्दंष्ट्रांतरंगतम् ॥ ४७ ॥ बृहद्बलश्चकौसल्योजयत्सेनश्चमागधः । तथारुक्मरथोराजन् शल्यपुत्र प्रतापवान् ॥ ४८ ॥ विंदानुविंदावावंत्यौकांबोजश्च सुदक्षिणः । बृहत्क्षत्रस्यदायादः सैंधवश्चजयद्रथः ॥ ४९ ॥ नानावर्णविचित्राणि

महादुःखों से पृथ्वीपर गिरकर मरगया ।४१। हे राजा ! शल्य ऐसाकर्म करके शीघ्रही कृतवर्म्मा के प्रकाशवान् रथ पर चढ़गया, तब विराट्का पुत्र श्वेत भाई उत्तरको मृतक देखकर और साथ में बड़े वीरलोगों को जानकर क्रोधकी अग्नि में ऐसा प्रज्वलित हुआ जैसे अग्नि घृतडालने से प्रज्वलित हो वह वीर इन्द्रके धनुप की समान अपने धनुपको कानतक खैंचकर मद्रपति शल्य के मारने को दौड़ा और बाणोंकी वर्षा करताहुआ वह बहुत से रथियों सहित शल्य के रथकी ओर चला पुरुपार्थ में वेगवान् हाथीकीनाई उसको रण के लिये दौड़ता देख सातमहारथियोंनेउसे सब ओरसे घेर लिया और काल के मुखमें आयेहुए मद्रपतिकी सहायताकी ।४७। उन सातमहारथियोंके नाम ये हैं कोशलराज, बृहद्बल, मगधका राजा जयत्सेन, शल्यका पुत्र रुक्मरथ अवन्तिके विंद और अनुविंद काम्बोजराज सुदक्षिण और सिंधुराज जयद्रथ और बृहच्छत्र का सम्बन्धी इन वीरों के धनुप विचित्र रंगों से

armour fell down shrieking on earth with the wounds. Having done this brave deed, Shalya soon mounted the chariot of Kritvarma. Then Shwet the son of Virat, seeing that Uttar his brother was slain and that his destroyer was surrounded by brave warriors, burnt with anger like a flame of fire fed with clarified butter. And drawing his bow, like the bow of Indra, to his ear, he ran to kill Shalya the king of Madra. Accompanied with many charioteers, he advanced towards the chariot of Shalya, showering his arrows upon him. Seeing him advancing like a furious elephant, the warriors surrounded Shalya on all sides, desiring to protect him who was then like one about to fall in the jaws of death. The warriors who helped Shalya were Vrihadbal the king of Kosal, Jayatsen of Magadh, Shalya's son Rukmarath, Vind and Anuvind of Avanti, the king of Camboj, Sudakshin, Jayadrath the king of Sindhu and Vrihadbal's kinsmen.

धनूंषिचमहात्मनाम् । विस्फारितानिदृदृशुस्तोयदेष्विवविद्युत. ॥५०॥ तेतुबाणमयवर्षं श्वेतमूर्धन्यपातयन् । निदाघातेऽनिलोद्धूतामेघाइवनगेजलम् ॥५१॥ तत क्रुद्धोमहेष्वास. सप्तभल्लै सुतेजनै. । धनूंषितेषामाच्छिद्यममर्दपृतनापति. ॥ ५२ ॥ निकृत्तान्येधनानि हेमसमदृदृशुन्तभारत । ततस्ते तु निमेषार्धात् प्रत्यपद्यन् धनूंषिच ॥ ५३ ॥ सप्त चैव. पृषत्कांश्च श्वेतस्योपर्यपातयन् । तत पुनरमेयात्माभल्लै. सप्तभिराशुगै । निच कर्त महाबाहुस्तेषां चापानि धन्विनाम् ॥ ५४ ॥ ते निकृत्तमहाचापास्त्वरमाणामहारथा. । रथ शक्ती. परामृश्य विनेदुर्भैरवान् रवान् ॥ ५५ ॥ अन्वयुर्भरतश्रेष्ठ सप्तश्वेत रथ प्रति । ततस्ताज्वलिता सप्त महेन्द्रा शनि नि स्वना ॥ ५६ ॥ अप्राप्ता सप्तभिर्भल्लै श्चिच्छेद परमास्त्र वित् । तत समादाय शर सर्वकाय विदारणम् ॥ ५७ ॥ प्राहिणोद्भ रतश्रेष्ठ श्वेतो रुक्म रथ प्रति । तस्य देह निपतितो बाणो वज्राति गामहान् ॥ ५८ ॥

विद्युत की समान चमकतेथे । ५० । उन सब ने श्वेतके शिरपर बाणोंकी वर्षा की मानो बादल गर्मी के अन्त में पहाड़पर जलकी वर्षा करतेहैं उससेनापति धनुषधारी ने क्रोधयुक्तहोके गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से उन के धनुषोंको काटा, हे भरतवंशी वह धनुष कटेहुये दीखपड़े तदनन्तर उन्होने अर्द्ध निमेषों मेंही अपने सबधनुषों को तैयार कर के सातबाण श्वेत को मारे तदनन्तर अपारबुद्धि श्वेत ने सप्त भल्लों से उन धनुषधारियों के धनुषों को काटा । ५४ । वह धनुष कटेहुये महारथी दिव्यबर छोंको हाथ में लेकर भयकारी शब्दोंको करनेलगे और सातोंबरछोंको उन्होंने श्वेत के रथपर छोड़ा तिसपीछे परम अस्त्रों के जाननेवाले श्वेत ने उन ज्वालारूपप्रकाशित उल्का और वज्रके समान शब्दायमान सातों बरछोंको अपने सातभल्लों से बीचहीमें काटडाला, तदनन्तर हेभरतवंशियों में श्रेष्ठ श्वेतने सब शरीर के छेदनेवाले बाणको रुक्मके रथपर चलाया, वहबाण उसके दुखको उल्लंघन करके बड़ीशीघ्रता

The bows of these warriors, of many c lours, shone like lightning 50 All these showered arrows over Shwet like rain falling on a moun tain aft r the hot weather That great archer and leader of armies was filled in a rage and cut down their bows with his arrows. We saw their bows cut down, but all the warriors soon refitted their bows and shot seven arrows at Shwet The wise archer, Shwet again cut down their bows 54 When the bows of those warriors were cut, they took up bright spears and with dreadful noises hurled the seven spears at Shwet, but the latter, adept in the use of arrows, cut down with his darts, in the mid air, the seven spears shining like sparks and hissing like vajra. Then, O best of Bharats ! Shwet shot at Rukmarath an arrow which could pierce all the parts of the body,

ततो रुक्मरथो राजन् सायकेन दृढाहतः । निषसाद रथोपस्थे कश्मलञ्चाविशन्महत्
॥ ५९ ॥ तं विसंज्ञं विमनसं त्वरमाणस्तु सारथिः । अपोवाहन संभ्रान्तः सर्वलोकस्य
पश्यतः ॥६०॥ ततोऽन्यान्षट् समादाय श्वेतो हेमविभूषितान् । तेषांषण्णां महाबाहुर्ध्वज
शीर्षाण्यपातयत् ॥ ६१ ॥ हयांश्च तेषांनिर्भिद्य सारथींश्च परन्तप । शरैश्चैतान् समा
कीर्य प्रायाच्छल्यरथं प्रति ॥ ६२ ॥ ततो हलहलाशब्दस्तत्र सैन्येषुभारत । दृष्ट्वासेनाप
तिं तूर्णं यान्तं शल्यरथं प्रति ॥ ६३ ॥ ततो भीष्मं पुरस्कृत्य तव पुत्रो महाबलः । वृतस्तु
सर्व सैन्येन प्रायाच्छ्वेत रथं प्रति ॥ ६४ ॥ मृत्योरास्यमनुप्राप्तं मद्रराजममोचयत् ।
ततो युद्धं समभवत् तुमुलं लोमहर्षणम् ॥ ६५ ॥ तावकानां परेषांच व्यतिषक्तरथ द्विप
म् । सौभद्रे भीमसेनेच सात्यकौच महारथे ॥ ६६ ॥ कैकेये च विराटे च धृष्टद्युम्ने च.

से उसके शरीर में प्रवेशकरगया । ५८ । इस के पीछे हे राजा रुक्म रथी शायक नाम बाणसे घायलहोकर रथ के बैठने के स्थान में बैठगया और वही अचेतता में प्रवृत्तहुआ परन्तु शीघ्रता करनेवाला उसका सावधान सारथी उसको अचेत जानकर सबको देखतेहुये बहुत दूर लेगया । ६० । तदनन्तर महाबाहु श्वेतने सुवर्ण से शोभित दूसरे घोड़ोंको लेकर उनछओंकी ध्वजाओंकी नोकोंको गिराया फिर हेराजा वहश्वेत शेषबचेहुये घोड़ोंको बाणों से आच्छादित करके शल्य के रथपर गया, हे भरतवंशी इस के अनन्तर शल्य के रथपर जातेहुये सेनापति श्वेतको देखकर आप की सेनाके मनुष्यों में बड़ा हलचलका शब्दहुआ । ६३ । फिर आपका पुत्र महा बली भीष्मजीको आगेकर के सब सेनाके मनुष्यों समेत श्वेत के रथपर गया और मृत्यु के मुखमें फँसेहुये मद्र के राजा शल्यको बचाया, इस के पीछे आपकेपुत्र और प्रतिपक्षियों में महारोमहर्षण करनेवाला तुमुल युद्ध हुआ जिस में रथ और हाथी संयुक्त थे, कौरवोंके पितामह वृद्ध भीष्म ने अभिमन्यु भीमसेन महारथी सात्विकी केकय

---

and it entered his mouth and passed into his body. 58. Wounded by that arrow, Rukmarath swooned in his chariot and succumbed in his seat. But his wise chariot driver, knowing this, took him farther away from the sight of all. 60. Then the warrior Shwet took other horses decked with gold and cut the banner heads of those six warriors; and covering their horses with his arrows, came forward against Shalya. Seeing Shwet falling on Shalya, there was a great commotion in your army. 63 Then, your son, preceded by valiant Bhishm and followed by his soldiers, encountered Shwet and thus rescued the king of Madra from the jaws of death Then there was a severe fighting between your sons and the other side The chariots and elephants got mixed together. The old grandsire of the Kurus showered his arrows on Abhimanyu, Bhimsen, Valiant Satwiki,

पार्षते । एतेषु नरसिंहेषु चेदि मत्स्येषु चैवह । ववर्ष शर वर्षाणि कुरु वृद्धः पिता मह ॥६७॥ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि श्वेतयुद्धे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ एव श्वेते महेष्वासे प्राप्ते शल्यरथं प्रति । कुरव पाण्डवेयाश्च किमकुर्वत सञ्जय ॥ १ ॥ भीष्म. शांतनव किंवा तन्ममाचक्ष्व पृच्छत ॥ सञय उवाच ॥ राजन् शत सहस्राणि तत क्षत्रियपुंगवा ॥ २ ॥ श्वेत सेनापतिं शूर पुरस्कृत्य महारथा । राज्ञो बल दर्शयन्तस्तवपुत्रस्य भारत ॥ ३ ॥ शिखण्डिनं पुरस्कृत्य त्रातु मैच्छन् महारथाः । अभ्यवर्तन्त भीष्मस्य रथ हेम परिष्कृतम् ॥ ४ ॥ जिघांसन्त युधा श्रेष्ठं तदासीत् तुमुल महत् । तत्तेहं सम्प्रवक्ष्यामि महावैशसमच्युत ॥ ५ ॥ तावकाना

विराट् धृष्टद्युम्न पर्वतकापौत्र इननरोत्तमों पर और राजाचंदेली की सेनाके पुरुषों पर बाणोंकी दृष्टिकी ॥ ६७ ॥

अध्याय ॥ ४८ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसप्रकार शल्य के रथ के पास बड़े धनुषधारी श्वेत के वर्त्तमानहोनेपर कौरव और पाण्डवों ने क्या क्या कर्म किये और शांतनु भीष्म जीने क्या किया उसको मेरेआगे वर्णन करो, संजयबोले हे राजा इस के पीछे लाखों उत्तम शूरवीर और महारथी क्षत्री उससेनापति श्वेतको आगे करके आपके पुत्र राजा दुर्य्योधनको अपना पराक्रम दिखलाते हुये शिखण्डी को आगे कररक्षा करनेकी इच्छा करके, युद्धकर्त्ताओं में उत्तम भीष्मजीको मारने की अभिलाषा करते हुये उनके सुवर्ण जटित रथ के समीप उनकी सम्मुखता में आकर वर्त्तमान हुये उससमय बड़ाभारी युद्धहुआ । ४ । अब मैं उसयुद्ध को कहताहूं जिसरीति से तुम्हारे पुत्र और दूसरे लोगोंका युद्ध प्रचलितहुआ उसयुद्धमें भीष्मजीने रथीलोगों

Kakaya, Virat, Dhrishtadyumna the grandson of Parshat and on the armies of the king of Chandeli 67.

CHAPTER XLVIII

Dhritrashtra asked of Sanjaya —"When Shalya and the great archer Shwet were thus facing each other, what did the Kauravas and the Pandavas do? What did Bhishm the son of Shantanu do? Let me know all this." Sanjaya replied, 'Then hundreds of thousands of warriors and charioteers, led by their general Shwet, showed their prowess to Duryodhan. They made Shikhandi to face Bhishma the best of warriors and protected the former from all sides in order to bring about the destruction of Bhishm. On their approaching the gold bedecked chariot of Bhishm, a severe fight ensued. 4. I shall now describe to you how they fought. Bhishm killed numbers of chariot

परेपांच यथायुद्ध मवर्तत । तत्राकरोद्रथोपस्थान् शून्याञ्शातयो बहून् ॥ ६ ॥ तत्राद्भुतं महच्चक्रे शरैराछैद्रथोत्तमान् । समावृणोच्छरैरर्कं मर्कतुल्य प्रतापवान् ॥ ७ ॥ नुदन् समन्तात् समरे रवि रुधन् यथा तमः । तेनाजौ प्रेपिता राजन् शराःशतसहस्रशः ८॥ क्षत्रियांतकराः संख्ये महावेगा महाबलाः । शिरांसि पातयामासुर्वीराणांशतशोरणे ९॥ गजान् कण्टकसन्नाहानवज्रेणेव शिलोच्चयान् । रथा रथेषु संसक्ता व्यदृश्यन्त विशाम्पते ॥ १० ॥ एकेरथंपर्यवहंस्तुरगाः स तुरङ्गमम् । युवानं नाहतं वीरं लम्बमानं सकार्मुकम् ॥ ११ ॥ उदीर्णाश्च हयाराजन् वहतस्तत्रतत्रह । बद्धखड्गनिषङ्गाश्च विध्वस्तशिरसोहताः १२ शेतराःपतिताभूमौ वीरशय्यासुवीरते । परस्परेण धावन्तः पतिताः पुन रुत्थताः ॥ १३ ॥ उत्थायच प्रधावन्तो द्वन्द्वयुद्धमवाप्नुवन् । पीडिताःपुनरन्योन्यं

के स्थानोंको खाली करके उनके शिरों को काटा, सूर्य के समान प्रतापी युद्धमें चारों ओर से पीड़ित करतेहुये भीष्मजीने वाणों से सूर्यको ऐसेढकदिया जैसे उदयहोकर सूर्य अंधेरेकोढक देता है । ७ । हे राजा उन्होंने युद्धके बीच क्षत्रियों के नाश करने वाले बड़े शीघ्रगामी लाखों तीव्र वाणोंकी वर्षा की, युद्ध में अनेक शूरोंके शिरोंको गिराया हे राजा भल्ल और वाणों से युक्त शिरसे रहित बहुतसे रथी रथ में बैठेहुये दिखाई दिये रथी रथीके ऊपर अश्वपति अश्वपति के ऊपर वर्त्तमानहुये । १० । और सेनाके साथ मरे हुये धनुर्धरों समेत रथमें पड़ेहुये वीरोंको उनके रथों के घोड़े इधर उधर लेजाते हुए दृष्टपड़े, खड्ग और तूणीर के बांधनेवाले कटेहुए शिरोंसे वर्त्तमान हुए और सैकड़ों पृथ्वीपर पड़ेहुए वीरोंकी शय्याओंपर सोते हैं, और परस्पर में दौड़ते गिरते हुए और उठकर अत्यन्त दौड़नेवालों ने द्वन्द्वयुद्ध को मचाया, फिर परस्पर में पीड़ित होकर युद्धभूमि में फिरने लगे मतवाले हाथी चारों

eers and cut down their heads. Glorious like the sun, spreading destruction on all sides, Bhishm covered the sun with his arrows as the sun covers the darkness by his appearance. 7. He showered millions of kshatrya killing arrows and cut down the heads of many brave warriors Many charioteers with their bodies pierced through with darts and their heads chopped off, were to be seen in their chariots. Charioteers fell upon charioteers and horsemen upon horsemen. 10. Killed in the midst of the army, pierced by arrows in their chariots and lying on their seats, the warriors were seen carried hither and thither by the horses. The wielders of swords and quivers were deprived of their heads and hundreds of warriors lay dead on the field of battle. Running against one another, falling and rising again, the warriors fought duels. Wounded by one another, the mad elephants in the field of battle fell down dead in all directions. Other elephants and horses were killed because they had no riders to guide them. 14. The charioteers met the charioteers all

लुण्ठतोरणमूर्धान ॥ १४ ॥ सचापा सनिषङ्गाश्च जातरूपपरिष्कृताः । विसृष्टघृतवीराश्च शरैः पार्थपीडिता ॥ १५ ॥ तेनतेनाभ्यधावंतविसृजंतश्च मारुत । मत्तोगजः पर्यवर्तद्धयाश्चहतसादिन ॥ १६ ॥ सरथारथिनश्चापि विमृद्नंत समंततः । स्यंदनादपतत्कश्चिन्निहतोऽन्येनसायकै ॥ १७ ॥ हतसारथिरप्युच्चैः पपातकाष्ठवद्रथः । युध्यमानस्यसंग्रामेव्यूढेरजसिचात्थिते ॥ १८ ॥ धनुःकूजितविज्ञानंतत्रासीत्प्रतियुध्यत । गात्रस्पर्शेन योधानांव्यज्ञायतपरिपंथिनम् ॥ १९ ॥ युध्यमानंशरैराजन् सिंजिनीध्वजिनीरवात् । अन्योन्यंवीरसंशब्दोनाश्रूयतभटैः कृतः ॥ २० ॥ शब्दायमानेसंग्रामेपटहेकर्णदारिणि । युध्यमानस्यसंग्रामे कुर्वतः पौरुषं स्वकम् । २१॥ नाश्रौषंनामगोत्राणिकीर्तनंचपरस्परम् ।

और से गिरे और जिनके सारथी मारेगये वहभी हाथी घोड़े गिरपड़े । १४ । रथों के साथ रथीलोग चारों ओर से मर्दन करनेलगे और कोई किसी के बाणसे मरा हुआ रथसे गिरा, और जिसका सारथी मारा गया वह बड़ा रथभी काष्ठ के समान गिरा और द्वन्द्व युद्ध में धूलके उठने पर, लड़नेवालों का विज्ञान और सम्मुख युद्ध करने वालों के शब्द ध्वंसहुये युद्ध करनेवालों का शरीर छूने से शत्रुका ज्ञानहोता था । १७ । हे राजा धनुषकी ज्या के शब्दों पर बाणों से लड़नेवालों ने बाण मारे और वीरों के कहे हुये वीर शब्द परस्पर में सुनाई नहीं दिये, युद्धके शब्दायमान होने और कर्ण फाड़नेवाले पटहशब्द होने पर युद्ध करते हुये अपनी शूर वीरता करने का परस्पर में पिछली शूरताओं का वर्णन करना भी नहीं सुना गया भीष्मजी के धनुष से निकले हुये बाणों से पीड़ामान और युद्धमें लड़नेवालों का भी वर्णन नहीं सुनाई दिया, एकने दूसरे वीरोंके मनोंको कंपित किया उस बराबर व्याकुल करनेवाले रोमहर्षण तुमुल युद्धमें, कोई पिता अपने निज पुत्र को नहीं जानताथा ।२०। रथके पहिये और जुए टूटगये और एक भारवाहक घोड़ा मारागया , जुए के और पहिये के टूटने और रथ को स्वाधीन रहित होनेपर

round and destroyed one another. Some fell down on earth from their chariots pierced through by arrows The huge chariots, whose drivers were killed, fell down on earth like logs of woods. In the fury of the battle the dust storm rose so thick that the fighters could not distinguish the faces and voices of their adversaries and the only source of knowledge to them was the contact of their bodies 17. The archers, O king! shot arrows at the sound of bowstrings; the heroic words of the warriors were not heard In the midst of that tremendous uproar of battle and the account of the former exploits of the warriors could not be heard Wounded by the arrows shot from the bow of Bhishma, the warriors uttered inaudible sounds. The warriors shook the minds of one another. During that terrible battle the father, could not disinguish the son 20. The wheels and the yokes of the chariots were broken and the horses were slain. On the chariots

भीष्मचापच्युतैर्बाणैरार्तानांयुध्यतांमृधे ॥ २२ ॥ परस्परेर्णावीराणांमनांसिसमकंपयन् ।
तस्मिन्नत्याकुलेयुद्धे दारुणेलोमहर्षणे ॥ २३ ॥ पिताप्रत्रसमेनाभिज्ञानातिकश्चन ।
चक्रेभग्नेयुगेच्छिन्नेएकधुर्येहयेहतः ॥ २४ ॥ आक्षिप्तःस्यंदनाद्वीरः ससरथिर्जिह्मगैः ।
एवंचसमरेसर्वेवीराश्चविरथीकृताः ॥ २५ ॥ तेनतेनस्मदृश्यंते धावमाना समंततः ।
गजोहतः शरैश्छिन्नंमर्मभिन्नहयोहतः॥२६॥ अहतःकोपिनैवासीद्भीष्मोनिघ्नतिशात्रवान् ।
श्वेतः कुरूणामकरोत्क्षयंतस्मिन्महाहवे ॥ २७ ॥ राजपुत्रान्रथोदारानवधीच्छतसंघशः ।
चिच्छेदरथिनांबाणैः शिरांसिभरतर्षभ ॥ २८ ॥ सांगदान्बाहवश्चैवधनूंषिचसमंततः ।
रथेषांरथचक्राणितूणीराणयुगानिच ॥ २९ ॥ छत्राणिचमहार्हाणिपताकाश्चविशांपते ।
हयौघाश्चरथौघाश्चनरौघाश्चैवभारत ॥ ३० ॥ वारणाःशतशश्चैवहताःश्वेतेनभारत ।

सारथी समेत वीर लोग सूधे चलनेवाले बाणों के द्वारा रथों से गिराये गये, और परस्पर में लड़ते हुये दृष्टपड़े जो मारागया वह शिरसे रहित हुआ कोई मर्मस्थलों में घायल होकर मरा, भीष्मजी के हाथ से शत्रुओं के मनुष्यों को मारते हुये कोईभी बिना घायल के नहीं। यथा कौरवों के उसबड़े युद्ध में आप श्वेतने, राजकुमारों को और सैकड़ों समूहवाले बड़े २ पुरुषों को मारा और हजारों समूह युक्त रथियों के शिरोंको काटा ।२४। हे भरतवंशी उस युद्ध भूमि में चारों ओर से बाजूबन्दों समेत भुजा वा धनुष और रथी पदाती रथवारथों में सवार छोटी बड़ी पताका अथवा घोड़ों के और रथों के समूह वा मनुष्यों के समूह सैकड़ों हाथियों समेत श्वेत शूरवीरके हाथों से मारेगये उसके पीछे हमभी श्वेत के भयसे भयभीत होकर अपने उत्तम रथ को छोड़कर दूर चलेगये और यहां आपकी चिन्ताको देखते हैं सो हे कौरवनन्दन हमसब कौरव लोग बाणोंकी झड़ीको बचाकर वहां पर नियत, शान्तनु भीष्मजी को देखनेलगे वह नरोत्तम बड़े उदार प्रतापी हमारे वृद्ध पितामह भीष्मजी भयके समय बड़े भारी युद्धमें निश्चल मेरु पर्वतके समान अकेलेही नियत

being thus disabled, the warriors and the chariot drivers were slain by the arrows which came in straight lines The heads of some warriors were cut off and others died of receiving wounds in vital parts No individual of the enemy's army escaped unhurt while Bhishm was fighting. In that war of the Kauravas, Shwet killed hundreds of princes and warriors of renown and beheaded thousands of chari t-eers. 24. In that battle, O descendant of Bharat! numerous jewelled arms, bows, charioteers, foot soldiers, banners and bannerets, horses and chariots with men and elephants were cut down by the great warrior Shwet. I myself, being afraid of Shwet, left my good chariot and went farther off and thus was able to see you once more plunged in grief. So all the Kauravas stood removed from the shower of arrows and looked on Bhishm. That best of men, of great prowess, our grandfather Bhishm, firm like mount meru at the time of danger, in the thick of battle, stood alone. 30. And as in

घयेश्वेतमपाङ्गंतिविहायरथसत्तमम् ॥ ३१ ॥ अपयातास्तथापश्चाद्विसुंपश्यामधृष्णव ।
शरपातमतिक्रम्यकुरवः कुरुनंदन ॥ ३२ ॥ भीष्मंशांतनवंयुद्धेस्थिताःपश्यामसर्वशः ।
अदीनोदीनसमयेभीष्मोस्माकंमहाहवे ॥ ३३ ॥ एकस्तस्थौनरव्याघ्रोगिरिमेरुरिवाचलः ।
आददानइवप्राणान्सविताशिशिरात्यये ॥ ३४ ॥ गभस्तिभिरिवादित्यस्तस्थौशरमरी-
चिमान् । समुमोचमहेष्वास शरसंधानेनकशः ॥ ३५ ॥ निघ्नन्नमित्रान्समरेवज्रपा-
णिरिवासुरान् । तेवध्यमानाभीष्मेणप्रजहुस्तंमहाबलम् ॥३६॥ स्वयूथादिवतेयूथान्मुक्तं
भूमिपुदारुणम् । तमेवमुपलक्ष्यैकोहृष्टःपुष्टः परंतप ॥३७॥दुर्योधनप्रियेयुक्तःपांडवान्परि

हुए। ३० । और जैसे चैत्र वैशाख में सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी के रसादिकों को आकर्षण करता हुआ नियत होता है उसी प्रकार वह शीतल किरणों वाला भीष्मभी शत्रुओंके प्राणोंको खैंचताहुआ नियतहुआ युद्धमें शत्रुओंको मारतेहुए उस धनुष धारी ने बहुत प्रकार से बाणों के समूहोंको ऐसे छोड़ा जैसे कि चक्रधारी विष्णु असुरों पर छोड़ते हैं तब भीष्मजी से घायल हुए वीर लोगों ने भीष्म को त्याग किया और अपने सब समूहों कोभी काष्ठ से छुटीहुई अग्नि के समान शत्रुओंके समूहों से पृथक् किया प्रसन्न चित्त देहसे प्रफुल्लित शत्रु संतापी दुर्योधन के प्रयोजनकरनेमें प्रवृत्त चित्त अकेले भीष्मजी ने उस अकेले श्वेतको अपने सम्मुख देखकर पांडवोंको बहुत शोषण किया । ३४ । हे राजा जीवनको और उससे उत्पन्न हुए भयको त्यागकर उस महा युद्ध में पांडवों की सेना के मनुष्यों को मारकर गर्दमर्द किया फिर आपके पितादेवव्रत भीष्मजी उस सेनाओं के मारनेवाले सेनापति को देखकर बड़ी शीघ्रगति से सम्मुख हुए उस समय उसश्वेतने बाणों के महाजालों से भीष्मजी को आच्छादित कर दिया, इसीप्रकार भीष्मजी नेभी बाणोंके समूहों से श्वेतको ढकदिया । ३७ । और फिर वह दोनों बैलोंके समान गर्जते हुए

summer, the sun stands drawing humidity from out of the earth, so did Bhishm of cool rays stand attracting the life out of the enemies. Killing the enemies in the field of battle, that archer let go his shower of arrows as does Vishnu the wielder of discus discharge his arrows at asuras. Wounded by Bhishma's arrows, the warriors removed themselves away from Bhishm and went away with their men out of the field of battle as fire does when it is separated from wood. Cheerful of body and mind, the destroyer of enemies, Bhishm stood alone for the sake of Duryodhan and seeing Shwet before him he killed many warriors af the Pandavas. 34. Leaving all care for his life and body, O king? your father Devabrat Bhishm destroyed the Pandva army; and seeing their leader of the army coming towards him, he at once faced him. Shwet covered Bhishm with the network of his arrows and Bhishm did the same. And then

शोचयन् । जीवितदुस्त्यजत्यक्त्वा भयचशुमहाहवे ॥ ३८ ॥ पातयामाससैन्यानि
पांडवानांविशांपते । प्रहरन्तमनीकानिपिताद्देवव्रतस्तव ॥ ३९ ॥ दृष्ट्वासेनापतिर्भीष्म
स्त्वरित श्वेतमभ्ययात् । सभीष्मशरजालेनमहतासमवाकिरत् ॥ ४० ॥ श्वेतचापि
तथाभीष्म शरौघै समवाकिरत् । तौवृषाविवनर्दन्तौमत्ताविवमहाद्विपौ ॥ ४१ ॥ व्याघ्रा
विवसुसंरब्धावन्योन्यमभिजघ्नतु । अस्त्रैरस्त्राणिसंवार्यततस्तौपुरुषर्षभौ ॥ ४२ ॥
भीष्म श्वेतश्चयुयुधेपरस्परवधैषिणौ । एकाह्नानिर्दहेद्भीष्म पांडवानामनीकिनीं ॥ ४३ ॥
शरै परमसक्रुद्धोयदिश्वेतोनपालयेत् । पितामहततोदृष्ट्वा श्वेतेनाविमुखीकृत ॥ ४४ ॥
प्रहर्षपांडवाजग्मु पुत्रस्तेविमनाभवत् । ततोदुर्योधन क्रुद्ध पार्थिवै परिवारित ॥ ४५ ॥
ससैन्य पांडवानीकमभ्यद्रवतसंयुगे । दुर्मुख कृतवर्माचकृप. शल्योविशांपति ॥ ४६ ॥

बड़े मतवालेहाथी और व्याघ्रके समान अत्यन्त क्रोध में भरे परस्परमें आघातकरने लगे, तदनन्तर वहदोनों पुरुषोत्तम अस्त्रोंसे अस्त्रोंको रोककर, परस्परमारनेके इच्छा वान युद्धमें प्रवृत्तहुए अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजी पांडवों की सेनाकोएकही दिन्मे भस्मकर डालते जो श्वेत रक्षा न करता । ४० । तिस पीछे श्वेतसे मुख फेरेहुए पितामह को देखकर पांडवोंने बड़ाहर्ष मनाया, और आपका पुत्र उदास हुआ तदनन्तर क्रोधमें भराहुआदुर्य्योधन अपनेसाथी राजाओं समेत सेनाके मनुष्योंको साथ लिये युद्धमें आकर पांडवों की सेनाके सम्मुख दौड़ातब श्वेतने गंगाके पुत्र भीष्मजीको छोड़कर बड़ी तीव्रतासे आपके पुत्रकी सेना का ऐसे नाशकिया जैसेवायु अपने वेगसे वृक्षों का नाशकरताहै, वह क्रोध से भराहुआ विराट्का श्वेतनाम बड़ा पुत्र दुर्य्योधनकी सेनाका नाशकरके वहां से लौट कर फिर वहीं आपहुँचा जहां भीष्मजी नियतथे । ४१ । हेराजन वह दोनों प्रकाशवान् महाबली महात्मा परस्पर में फिर ऐसे युद्ध करने लगे जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्र लड़तेथे और परस्पर मारनेकी इच्छाकरतेथे श्वेतने अपने धनुषको हाथ में लेकर भीष्मजी को

---

both roaring like bulls they fought with each other like two angry elephants or lions And each checking the weapons of the other and desiring to kill each other, they engaged in combat The enraged Bhishm would have extirpated the army of the Pandavas in one day, were there no Shwet to protect it 40 Then seeing the grandfather turn back on Shwet, the Pandavas raised a great cry of joy. Your son was grieved at this and accompanied by kings and armies, rushed upon the army of the Pandavas Shwet then left Bhishm the son of Ganga and began swiftly to destroy your army as the wind destroys trees by its force The enraged son of Virat, Shwet, having routed Duryodhan's army returned to the place where Bhishm was. 41 Both glorious warriors of great renown fought with each other like Vritrasur and Indra and desired to kill each other

भीष्मस्तुपुरासाद्यतवपुत्रेणनोऽर्दिता । दृष्ट्वातुपार्थिवे सर्वैर्दुर्योधनपुरोगमैः ॥ ४७ ॥
पांडवानामनीकानि वध्यमानानिसंयुगे । श्वेतोगांगेयमुत्सृज्यतवपुत्रस्यवाहिनीं ॥ ४८ ॥
नाशयामासवेगेनवायुर्वृक्षानिवौजसा । द्रावयित्वाचमराजन्वैराटि क्रोधमूर्च्छित ४९॥
आपतत्सहसाभूयोयत्रभीष्मोव्यवस्थित । तौतत्रोपगतौराजन् शरद्भौमहाबलौ ॥ ५०॥
अयुध्येतामहात्मानौयथोभौवृत्रवासवौ । अन्योन्यंतुमहाराजपरस्परवधैषिणौ ॥ ५१ ॥
निगृह्यकार्मुकश्वेतोभीष्मंविव्याधसप्तभि ॥ पराक्रमंततस्तस्यपराक्रम्यपराक्रमी ॥ ५२ ॥
तरसावारयामासमत्तोमत्तमिवद्विपम् । श्वेत शातनवभूय शरै सन्नतपर्वभि ॥ ५३ ॥
विव्याधपञ्चविंशत्यातदद्भुतमिवाभवत् । तंप्रत्यविध्यद्दशभिर्भीष्म शातनवस्तदा ५४॥

सात वाणों से विदीर्ण किया इसके पीछे इस पराक्रमी ने उसपराक्रमी को वड़े पराक्रम से ऐसेहटा दिया जैसे कि मतवालाहाथी मतवाले हाथी को हटादेता है । ४७ । फिर क्षत्रियों के प्रसन्न करनेवाले विराटके पुत्र श्वेतने क्रोध करके युद्धमें धनुषको खेंच कर भीष्मजीको घायल किया, इसी प्रकार शंतनु भीष्मजी ने भी उसको दश वाणों से विह्वल करादिया, वह पराक्रमी भीष्मजीसे घायल होकर भी पर्व्वत के सामान कम्पायमान नहीं हुआ तदनन्तर फिर श्वेतने गुप्त ग्रन्थि वाले पच्चीस वाणों से भीष्मजी को घायल किया, यह आश्चर्यसा हुआ और युद्धमें होठ को चाबने वाले श्वेतने अत्यन्त हँसकर, दश वाणों से भीष्मके धनुषको दश खण्ड कर दिये तिसपीछे वाणोंकेभी छेदनेवाले विशिखों को चढ़ाकर,उन महात्मा भीष्मजी की तालध्वजा के शिर को मथन किया फिर आपके पुत्रोंने भीष्मजी की ध्वजाको गिरा हुआ देखकर भीष्मजी को श्वेत के आधीन वर्त्तमान मृतक रूप माना और प्रसन्न चित्त पाण्डवोंने भी चारों ओर शंखोंको वजाया । ५३ । महात्मा भीष्मजी की तालध्वजा को गिरा हुआ देखकर दुर्योधन ने वड़े क्रोध से

other. Shwet pierced Bhishm with seven arrows and was himself repulsed with equal force by Bhishm, as one mad elephant repulses another 47. Then Virat's son Shwet, the joy of kshatryas, drawing his bow in great anger, wounded Bhishm In the same manner Bhishm also wounded him with ten arrows. The brave man, wounded by Bhishma's arrows, remained unshaken like a mountain and again wounded Bhishm with swift sharp arrows His deed was a wonder. And biting his lips in the field of battle, with a smile on his face, Shwet cut the bow of Bhishm into ten pieces with ten arrows Then he discharged more arrows and cut down the banner of Bhishm with the figure of palm tree on it. Your sons, seeing the banner of Bhishm down, thought that he was vanquished and slain by Shwet and the Pandavas cheerfully blew their conch shells. 53 Seeing the Palm ensign of great Bhishm struck down, Duryodhan

सविद्धस्तेनबलवान्शाकंपतयथाऽचलः । वैराटि समरेक्रुद्धोभृशमायम्यकार्मुकम् ॥५५॥
आजघानततोभीष्मंश्वेत क्षत्रियनंदनः । संप्रहस्यततःश्वेतःसृक्किणीपरिसंलिहन् ॥५६॥
धनुश्चिच्छेदभीष्मस्यनवभिर्दशभिःशरैः । संधायविशिखंचैवशरंलोमप्रवाहिनम् ॥५७॥
उन्ममाथततस्तालंध्वजशीर्षंमहात्मनः । केतुंनिपतितंदृष्ट्वाभीष्मस्यतनयास्तव ॥ ५८ ॥
हतंभीष्ममन्यंतश्वेतस्यवशमागतम् । पांडवाश्चापिसंहृष्टादध्मुःशंखान्मुदायुताः ॥५९ ॥
भीष्मस्यपतितंकेतुंदृष्ट्वातालंमहात्मनः । ततोदुर्योधनःक्रोधात्स्वमनीकमचोदयत् ॥६०॥
यत्ताभीष्मंपरीप्सध्वंरक्षमाणाःसमंततः । मानःप्रपश्यमानानांश्वेतान्मृत्युमवाप्स्यति ॥६१॥
भीष्मःशांतनवःशूरस्तथासत्यंब्रवीमिवः । राज्ञस्तुवचनंश्रुत्वात्वरमाणामहारथाः ॥ ६२ ॥
बलेनचतुरंगेणगांगेयमन्वपालयन् । बाह्लीकःकृतवर्माचशलःशल्यश्चभारत ॥ ६३ ॥

अपनी सेनाको जताया कि उन देखनेवालोंको भी श्वेत मारेगा तब शान्तनु भीष्मजी भी मारे जायँगे इसलिये मैं तुम लोगों से कहता हूं कि बड़े उपाय से भीष्मजी के जीवनकी इच्छा से तुम चारोंओर से उनकी रक्षा करो यहबात मैं सत्य सत्यही कहताहूं राजा दुर्योधनके वचनको सुनतेही शीघ्रता करनेवाले महारथियोंने चार अंग वाली सेनासमेत गंगा के पुत्र भीष्मकी रक्षाकी, बाह्लीक कृतवर्म्मा कृपाचार्य शल्य जरासन्धकापुत्र विकर्ण चित्रसेन विविंशति हे भरतवंशी उन सब शीघ्रता करने वालों ने चारों ओर से भीष्मजी को मध्य में करके श्वेत के ऊपर अस्त्रों की वर्षाकी, हस्त लाघवताके दिखानेवाले और शीघ्रता करनेवाले महाबली बड़े बुद्धिमान् श्वेतने उन क्रोध भरेहुओं को अपने तीव्रबाणोंसे रोका, जैसेकि सिंह हाथियोंको रोकता है उसीप्रकार श्वेतने उन सबोंको रोककर बाणों की बड़ी वर्षासे भीष्मजीके धनुषको काटा, तदनन्तर हे राजन् युद्ध भूमिमें शांतनु भीष्मजी ने दूसरे धनुषको लेकर कंकपक्ष युक्त शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणों से श्वेतको घायल किया, तिस पीछे हे राजन् लड़ाई में सबलोगों के देखते बड़े क्रोधयुक्त श्वेतने भीष्मजी को बड़े २ लोहेके बाणों से विदीर्ण किया, इसके अनन्तर राजा

in anger ordered his warriors not to let Shwet destroy Bhishm as long as they lived. He directed them to guard Bhishm on all sides with great care as he said that Shwet was sure to kill all the warriors if he got victory over Bhishm. At his command the warriors guarded Bhishm the son of Ganga on all sides. Vahlik, Kritvarma Kripacharya, Shalya, Vikarn the son of Jarasandh, Chitrasen and Vivinshati at once stationed themselves round Bhishm and showered their weapons on Shwet. Dexterous in the use of arms, the wise Shwet checked those angry ones with sharp arrows, as a lion checks elephants. Having checked those warriors with a shower of his arrows, he cut down Bhishma's bow. But Bhishm at once took up onother bow and wounded Shwet by his arrows sharpened by grinding on stone and fitted with quills. Then, within sight of all,

जलसघोधिकर्णश्च चित्रसेनोविविंशति । त्वरमाणास्त्वराकाले परिवार्यसमतत ॥६४॥
शरव्रष्टिंसुतुमुलांश्वेतस्योपर्यपातयन् । तान्क्रुद्धोनशितैर्बाणैस्त्वरमाणोमहारथ ॥६५॥
अवारयदमेयात्मादर्शयन्पाणिलाघवम् । सनिवार्यतुतान्सर्वान्केसरीकुञ्जरानिव ॥ ६६॥
महताशरवर्षेणभीष्मस्यधनुराच्छिनत् । ततोऽन्यद्धनुरादायभीष्म शांतनवोयुधि ॥ ६७ ॥
श्वेतंविव्याधराजेंद्र कङ्कपत्रैः शितैः शरैः । तत सेनापति क्रुद्धोभीष्मंबहुभिरायसे ॥ ६८ ॥
वि याधसमरराज सर्वलोकस्यपश्यत । तत प्रव्यथितोराजाभीष्मंदृष्ट्वानिवारितं ॥६९॥
प्रवीरसर्वलोकस्यश्वेतेनयुधिवैतदा । निष्टानकश्चसुमहांस्तवसैन्यस्यचाभवत् ॥ ७० ॥
तंवीरवारितंदृष्ट्वाश्वेतेनशरावृतम् । हतश्वेतनमन्यतश्वेतस्यवशमागतम् ॥ ७१ ॥
तत क्रोधवशप्राप्त पितादेवव्रतस्तव । ध्वजमुन्माथ्यदृष्ट्वाताञ्चसेनांनिवारिताम् ॥७२॥

दुर्योधन उन सब लोगों के आगे बडे वीर भीष्मजी का युद्ध मे श्वेत से रुका हुआ देखकर वडा दु खी हुआ, आपकी सेनाका वहुत देर तक निवासरहा । ६४ । और श्वेतके वाणोंसे विदीर्ण उस वीर भीष्मको देखकर श्वेतके आधीन वर्त्तमान होकर उसके हाथसे मृतकरूप माना इसपीछे आप के पिता देवव्रत भीष्मजी क्रोधके वशीभूत हुए, हेमहाराज ध्वजाको मथितकरके उस सेनाको रोके हुए देखकर श्वेतके ऊपर अनेक शायकों की वर्षा की, फिर रथियों में श्रेष्ठ श्वेतने वाणों को रोककर फिरभी आपके पिता भीष्मके धनुषको भल्लोंसे काटडाला, हे राजन् क्रोधमें भरे हुए भीष्मजी ने धनुष को त्यागकर दूसरे अत्यन्त दृढ धनुषको लेकर शिलको तीक्ष्ण किये हुए सात भल्लों को चढ़ाकर चार वाणोंसे तो श्वेतके चारों घोडोंपर मारा और दोवाणों से ध्वजाको काटा और सातवें भल्ल से सारथीके शिरकोकाटा । ७० । फिर वह महारथी श्वेत जिसके सारथी और घोडे मरगयेथे रथसे कूदकर क्रोधसे व्याकुलहुआ पितामह ने रथियों में श्रेष्ठश्वेतको रथसे विहीन देखकर वडे तीक्ष्ण वाणों से उसको चारों ओरसे घायल किया, युद्धमें भीष्मजीके वाणों से

Shwet pierced Bhishm with long iron arrows Seeing Bhishm thus checked in battle by Shwet Duryodhan was much grieved Your army stood there long 64 And seeing Bhishm wounded by Shwet's arrows and checkmated they took him already for dead Then your father Devavrat was beset with anger and seeing his banner broken and his army checked he showered many arrows at Shwet Then Shwet the best of charioteers again checked his arrows and cut his bow in twain Then filled with anger Bhishm left that bow and taking another and stronger one shot seven arrows at him With four arrows he killed the four horses of Shwet with two he cut down his standard and with the seventh he beheaded the driver 70 The great warrior Shwet being thus deprived of the driver and horses leaped from his chariot and was much agitated with anger The grandfather seeing Shwet the best of warriors deprived of the use

श्वेतंप्रतिमहाराजव्यसृजत्सायकान्बहून। तानांचापरणेश्वेतोभीष्मस्यरथिनांवरः ॥ ७३ ॥
धनुश्चिच्छेदभल्लेनपुनरेवपितुस्तव। उत्सृज्यकार्मुकंराजन्गांगेयःक्रोधमूर्छितः ॥ ७४ ॥
अन्यत्कार्मुकमादायविपुलंबलवत्तरम्। तत्रसंधायविपुलान्भल्लान्सप्तशिलाशितान् ॥ ७५ ॥
चतुर्भिश्चजघानाश्वान्श्वेतस्यपृतनापतेः। ध्वजंद्वाभ्यांतुचिच्छेदसप्तमेनचसारथेः ॥ ७६ ॥
शिरश्चिच्छेदभल्लेनसंक्रुद्धोऽलघुविक्रमः। हताश्वसूतात्सरथादवप्लुत्यमहाबलः ॥ ७७ ॥
अमर्षवशमापन्नोव्याकुलःसमपद्यत। विरथंरथिनांश्रेष्ठंश्वेतंदृष्ट्वापितामहः ॥ ७८ ॥
ताडयामासनिशितैःशरसंघैःसमंततः। सताड्यमानःसमरेभीष्मचापच्युतैःशरैः ॥ ७९ ॥
स्वरथेधनुरुत्सृज्यशक्तिंजग्राहकांचनीं। ततःशक्तिंरणेश्वेतोजग्राहोग्रांमहाभयां ॥ ८० ॥
कालदंडोपमांघोरांमृत्योर्जिह्वामिवश्वसन्। अब्रवीचतदाश्वेतोभीष्मंशांतनवंरणे ॥ ८१ ॥
तिष्ठेदानींसुसंरब्धःपश्यमांपुरुषोभव। एवमुक्त्वामहेष्वासोभीष्मंयुधिपराक्रमी ॥ ८२ ॥

घायल हुए श्वेतने अपने रथपर धनुषको छोड़कर दिव्य सुवर्णित बरछीको धारण किया, तदनन्तर युद्धमें घोर भयानक उग्र कालदण्ड के समान नाश करने में महा समर्थ अपनी बरछी को लेकर, महा क्रोधरूप बुद्धिमान् श्वेत ने भीष्म भीष्म ऐसा कहकर सर्प के समान बरछी को फेंका, हे राजन उससमय आपके पुत्रों ने बड़ा हाहाकार किया कि पांडवों के निमित्त पराक्रम करने वाला श्वेत आपका अनर्थ करना चाहताहै। ७७। ऐसी सर्पाकार रूप वाली नाश घोतक श्वेत की छोड़ी हुई बरछी को देखकर आपके पुत्रों में बड़ा हाहाकार हुआ। ७८। हेराजन् उसकी फेंकीहुई बरछी एकाएकी उल्कापात के समान आकाशसे गिरी तब भ्रांती से युक्त आपके पिता देवव्रतने उस पृथ्वी और आकाशके बीच, प्रकाशवान् किरणों से युक्त बरछी को आठ बाणोंसे काटकर नौटुकड़े किये वह उत्तम सुवर्णवाली बरछी तीक्ष्णबाणों से कटगई इस के पीछे हे भरतर्षभ आपके सबपुत्र बड़े शब्दों को करके पुकारे, तब क्रोधसे भरे काल से विदीर्ण चित्त श्वेतने उसबरछीको खंडित

of his chariot, pierced him with sharp arrows on all sides. Shwet his wounded in battle by the arrows of Bhishm, left his bow ing his chariot and took up his celestial golden spear. Th the staff of spear, dreadful in battle and capable of destroying and hurled it .Death, wise Shwet said in anger "Bhishm, Bhi cry of ah and alas like a serpent. Your sons then raised a gr an injury to your cause. at the probable consequences of Shwet's d our sons expressed signs of Seeing that destructive spear of Shwe O king, fell down suddenly like grief. 78. The spear hurled by father Devabrat, cut that spear of a meteor from the sky; but yo in the midst of the earth and sky luminous rays with eight rows parts. That good golden spear was cut and divided it into ni ws and at this, O best of Bharats! all your sons down by sharp arr Shwet, agitated by anger and broken hearted at the cried for joy.

तन शक्तिमेयात्माचिक्षेपभुजगोपमां । पांडवार्थेपराक्रांतस्तथानर्थंचिकीर्षुकः ॥ ८३ ॥
हाहाकारोमहानासात्पुत्राणांतेविशांपते । दृष्ट्वाशक्तिंमहाघोरांमृत्योर्दंडसमप्रभाम् ८४॥
श्वेतस्यकरनिर्मुक्तांनिर्मुक्तोरगसन्निभाम् । अपतत्सहसाराजन्महोल्केवनभस्तलात् ८५॥
ज्वलन्तीमंतरिक्षेतांज्वालाभिरवसंवृताम् । असंभ्रांतस्तदाराजन्पितादेवव्रतस्तव ॥ ८६ ॥
अष्टभिर्नवभिर्भीष्मःशक्तिंचिच्छेदपत्रिभिः । उत्कृष्टहेमविकृतांनिकृतांनिशितैः शरैः ॥८७॥
उच्चुक्रुशुस्ततःसर्वेतावकाभरतर्षभ । शक्तिंविनिहतांदृष्ट्वावैराटिः क्रोधमूर्च्छितः ॥ ८८ ॥
कालोपहतचेतास्तुकर्तव्यंनाभ्यजानत । क्रोधसमूर्च्छितोराजन्वैराटिःप्रहसन्निव ॥ ८९ ॥
गदांजग्राहसंहृष्टोभीष्मस्यनिधनंप्रति । क्रोधेनरक्तनयनोदंडपाणिरिवांतकः ॥ ९० ॥
भीष्मंसमभिदुद्रावजलौघइवपर्वतम् । तस्यवेगमसंवार्यंमत्वाभीष्मःप्रतापवान् ॥ ९१ ॥
प्रहारविप्रमोक्षार्थंसहसाधरणींगतः । श्वेत क्रोधसमाविष्टोभ्रामयित्वातुतांगदां ॥ ९२ ॥

हुई जानकर करने के योग्य कर्म को नहीं जाना, फिर क्रोधयुक्त और प्रसन्नमूर्त्ति श्वेतने भीष्मजी के मारनेके लिये गदाको हाथ में लिया, और क्रोधसे अत्यन्त रक्त नेत्र दूसरे काल के समान भीष्मजी के ऊपर ऐसा दौड़ा जैसे कि बादल पर्वतपर दौड़ता है, प्रभाव के जानने वाले भीष्मजी उसके वेगको नरोकने के योग्य मान कर अपने बचाव के लिये शीघ्रही पृथ्वीपर उतरपड़े, क्रोधके आधीनहोकर श्वेत ने अपनी उसगदा को घुमाकर भीष्मजी के रथ पर ऐसा फेंका जैसे कि धनेश कुवेर अपनी गदाको फेंकताहै, उसभयानक घात करनेवाली गदाने घोड़ोंसमेत रथ सारथी और ध्वजाको भस्मकर दिया फिर महारथी भीष्मजी को रथसे विहीनदेखकर रथियोंमें श्रेष्ठ शल्य आदिक महारथी एकसाथ दौड़े तदनन्तर महादुःखी भीष्मजी दूसरेरथमें बैठकर धनुषको टंकारकर हँसतेहुए धीरे से श्वेतके निकटआये। ९०। इसी अन्तरमें भीष्मजी ने आकाश से उत्पन्न वा अपना भला करनेवाली इस दिव्य वाणी को सुना, कि हे भीष्म हेमहाबाहु इसके विजयकरने में शीघ्र उपाय करयह समय ईश्वर

w.of his spear, did not know what to do. Then the enraged Shwet eyes cheerful face, took up his mace to destroy Bhishm and with a cloud in anger rushed upon him like a second Death or like knowing his over a hill. Knowing the fury of the onset and ed from his chariobility to bear the attack, Bhishm at once alight-of Bhishm as Kuver the Shwet in anger hurled his mace at the chariot ful destructive mace destrd of wealth hurls his own. That dread horses and banner. Seeing the chariot together with the driver, his chariot, Shalya and other great warrior Bhishm deprived of with a heavy heart, mounted upon arriors rushed at once. Bhishm, low approached Shwet with a smiling face er chariot and twanging his Bhishm heard from the sky these celestial word 90. In the meantime, him:— "Bhishm of great arms! make haste to conqu of great benefit to him. This is

रथेभीष्मस्यचिक्षेपयथादेवोधनेश्वरः । तयाभीष्मनिपातिन्यासारथोभस्मसात्कृतः ॥ ९३॥
सध्वजःसहसूतेनसाश्व-सयुगबंधुरः । विरथंरथिनांश्रेष्ठं भीष्मंदृष्ट्वारथोत्तमाः ॥ ९४ ॥
अभ्यधावंतसहिताःशल्यप्रभृतयोरथाः । ततोन्यंरथमास्थायधनुर्विस्फार्यदुर्मनाः ॥ ९५ ॥
शनकैरभ्ययाच्छ्वेतंगांगेयप्रहसन्निव । एतस्मिन्नंतरेभीष्मःशुश्रावाविपुलांगिरम् ॥ ९६ ॥
आकाशादीरितांदिव्यामात्मनोहितसंभवाम् भीष्मभीष्ममहाबाहोशीघ्रंयत्नंकुरुष्ववै ९७॥
एषह्यस्यजयेकालोनिर्दिष्टोविश्वयोनिना । एतच्छ्रुत्वातुवचनंदेवदूतेनभाषितम् ॥ ९८ ॥
संप्रहृष्टमनाभूत्वावधेतस्यमनोदधे । विरथंरथिनांश्रेष्ठं श्वेतंदृष्ट्वापदातिनम् ॥ ९९ ॥
सहिताःस्वभ्यवर्त्तंतरथिनस्तेमहारथाः । सात्यकिर्भीमसेनश्चधृष्टद्युम्नश्चपार्षतः ॥१००॥

से कहाहुआहै, देवदूत के कहेहुए आकाशसे उस वचन को सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त हो भीष्म जी ने उसके मारने में मनको लगाया, सात्विकी भीमसेन पार्षतकापोता धृष्टद्युम्न केकय धृष्टकेतु पराक्रमी अभिमन्यु यहसब महारथी उत्तरथियोंमें श्रेष्ठ श्वेतको रथसे विहीन देख कर एकसाथ ही चारोंओरको देखतेहुए दौड़े उनको चारों ओर से प्राप्त हुये देखकर बड़े बुद्धिमान भीष्मजी ने द्रोणाचार्य्य शल्य और कृपाचार्य्यको साथ लेकर उनको ऐसे रोका जैसे कि वायु के वेगोंको पर्व्वतरोके, महात्मा पाण्डव और सबकेरुकजानेपर श्वेतने खड्गको खैंचकर भीष्मके धनुषको काटा, फिर शीघ्रता करने वाले पितामहने उस टूटेहुए धनुषको छोड़कर और देव दूत के वचनको याद करके उसके मारनेमें मनको प्रवृत्त किया, इसके पीछे आप के पिता महारथी शीघ्रता करनेवाले देवव्रत भीष्मने दूसरे धनुषको लेकर उस इन्द्रायुध के समान प्रकाशित धनुष को क्षणमात्र मेंही तैयारकिया । ९९ । फिर हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ फिर आपके पिता भीष्मजी उन भीमसेन आदि पुरुषोत्तमों से चाहाहुआ उस महारथी श्वेतको देखकर उसके मारने में प्रवृत्तहुए, इसके पीछे

the time fixed by God." Having heard the word of the divine messenger from the sky, Bhishm, with a mind full of cheer, set his heart on killing Shwet. In the meantime, seeing Shwet destitute of chariot, Satwiki, Bhimsen, Dhrishtadyumna the grandson of Parshat, Kakaya, Dhrishtaketu and valiant Abhimanyu ran at once to his help. But wise Bhishm, when he saw them coming, checked their advance with the help of Dronacharya, Shalya and Kripacharya, as a mountain resists the fury of the winds. When the Pandavas were thus checked in their advance, Shwet drew forth his sword and cut into pieces the bow of Bhishm. The grandfather left the broken bow and remembering the words of the celestial messenger, set his heart on killing him. After this, your valiant father, Devebrat Bhishm, took up another bow and prepared it in an instant like the weapon of Indra. 99. Then, O best of Bharats seeing that Shwet was protected by Bhim and other warriors, your father prepared to kill him. Seeing,

कैकेयोधृष्टकेतुश्चअभिमन्युश्चवीर्यवान् । एतानापततःसर्वान्द्रोणशल्यकृपैःसह ॥ १०१॥
अवारयदमेयात्मावारिवेगानिवाचलः । सन्निरुद्धेषुसर्वेषुपांडवेषुमहात्मसु ॥ २ ॥
श्वेतःखड्गमथाकृष्यभीष्मस्यधनुराच्छिनत् । तदपास्यधनुश्छिन्नंत्वरमाणःपितामहः ॥३॥
देवदूतवचःश्रुत्वावधेतस्यमनोदधे । ततःप्रचरमाणस्तुपितादेवव्रतस्तव ॥ ४ ॥ अन्यत्
कार्मुकमादायत्वरमाणोमहारथः । क्षणेनसज्यमकरोच्छक्रचापसमप्रभम् ॥ ५ ॥
पितातेभरतश्रेष्ठश्वेतंदृष्ट्वामहारथैः । वृतंतमनुजव्याघ्रैर्भीमसेनपुरोगमैः ॥ ६ ॥ अभ्यवर्त
तगांगेयःश्वेतसेनापतिद्रुतम् । आपतंततोभीष्मोभीमसेनप्रतापवान् ॥ ७ ॥ आजघ्नेवि-
शिखैःषष्ट्यासेनान्यंसमहारथः । अभिमन्युंचसमरे पितादेवव्रतस्तव॥ ८ ॥ आजघ्नेभरत
श्रेष्ठस्त्रिभिःसन्नतपर्वभिः । सात्यकिंचशतेनाजौभरतानांपितामहः ॥ ९ ॥ धृष्टद्युम्नंच

प्रतापवान् महारथी भीमसेनने उस बढ़ते हुए सेनापति भीष्मको देखकर साठवाणों से घायल किया फिर तो आपके पिता देवव्रत नेभी युद्धके बीचमें अपने घोरवाणों से अभिमन्यु आदि सवमहारथियोंको रोककर, उसी युद्धमें गुप्तग्रन्थीवाले तीन वाणों से श्वेतको घायल किया । १०३ । और एकसौ वाणों से सात्विकी को और बीसवाणों से धृष्टद्युम्नको और पांचवाणों से केकय को और वहुतसे वाण समूहोंसे शेष सवराजाओं को घायल करके रोकदिया जब सवरुकगये तब श्वेत के सम्मुखदौड़े तिसपीछे भीष्मजीने मृत्युके समान कठिनता से आश्चर्य होनेवाले वाण को तरकससे खैंचकर चढ़ाया, उसव्रह्मअस्त्रसे युक्त वज्रकोभी काटनेवाले वाणको देवता गन्धर्व पिशाच सर्प और राक्षसों ने देखा वहवाण अग्निके समान प्रकाशित और महावज्रके समान ज्वलित श्वेतके कवचको काटकर उसकी नाभिमें ऐसे समागया जैसे अस्तगतहोता हुआ सूर्य शीघ्रही अपनेप्रकाश को लेकर चलाजाताहै इस रीतिसे वह वाण श्वेत के जीवन को लेकरगया हमने इस प्रकारसे युद्ध में उस नरोत्तम को भीष्मजी के हाथ से मराहुआ पृथ्वीपर गिरताहुआ ऐसादेखा जैसे

the advance of general Bhishm, Bhim wounded him with sixty arrows. But your father Devabrat checked the advance of Abhimanyu and others with his arrows and wounded Shwet with three of his dreadful darts having hidden joints. 103. He checked and wounded Satwiki with a hundred arrows, Dhrishtadyumna with twenty, Kakaya with five and all the other kings with numerous arrows. When he had thus checked them all, he rushed upon Shwet and out of his quiver he put on his bow an unerring and fatal arrow. The gods, gandharvas, pishachas, serpents and rakshases saw that arrow united with Brahmastra, fit to pierce vajra itself. That arrow, luminous like fire and burning like the great vajra, pierced the armour of Shwet and entered his navel, and as the setting sun takes with him his own light, it took away the life out of Shwet. We saw that best of men killed in the field of battle by Bhishm and fallen

विंशत्या कैकेयचापिपंचभिः । तांश्चसर्वान्महेष्वासान् पितादेवव्रतस्तव॥१०॥वारयित्वा
शरैर्घोरैः श्वेतमेवाभ्यद्रुवे । ततः शरंमृत्युसमं भारसाधनमुत्तमम् ॥ ११ ॥ विकृष्यबल
वान्भीष्म समःधराटुरासदम् । ब्रह्मास्त्रेणतु संयुक्तं तं शरंलोमवाहिनम् ॥ १२॥ ददृशु
र्देवगंधर्वाः पिशाचो रगराक्षसा । सतस्य कवचंभित्वा हृदयंचामितौजसः ॥ १३ ॥
जगाम धरणींबाणो महाशनिरिवज्वलन् । अस्तं गच्छन्यथादित्यः प्रभामादायसत्वरः
॥ १४ ॥ एवंजीवित मादाय श्वेतदेहाज्जगामह । तंभीष्मेणनरव्याघ्रं तथा विनिहतंयुधि
॥ १५ ॥ प्रपतंतमपश्याम गिरे शृंगमिवच्युतम् । अशोचन्पांडवास्तत्र क्षत्रियाश्च
महारथाः ॥ १६ ॥ प्रहृष्टाश्च सुतास्तुभ्यं कुरवश्चापि सर्वशः । ततो दुःशासनोराजन्
श्वेतंदृष्ट्वानिपातितम् ॥ १७ ॥ वादित्र निनदैर्घोरैर्नृत्यतिस्मसमंततः । तस्मिन् हते
महेष्वासे भीष्मेणाहवशोभिना ॥ १८ ॥ प्राद्रवंतमहेष्वासाः शिखण्डि प्रमुखारथाः ।
ततो धनंजयो राजन् वार्ष्णेयश्चापि सर्वशः ॥१९॥ अवहारं शनैश्चक्रुर्निहतेवाहिनीपतौ ।
ततोवहारः सैन्यानां तवतेषां च भारत ॥२०॥ तावकानां परेषां च नर्दतांच मुहुर्मुहुः ।
पार्था विमनसोभूत्वा न्यवर्तंतमहारथाः । चिंतयंतोवधं घोरं द्वैरथेन परंतपाः ॥ १२१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि श्वेतवधे
अष्टाचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

पर्वतसे गिरता हुआ शिखरहोता है उस स्थान में पाण्डव आदि जो महारथी थे वह सब उसे देखकर युद्ध करने से बंदहुए और आपके पुत्रों समेत सब कौरव प्रसन्न हुए, तदनन्तर हे राजा दुश्शासन श्वेतको गिराहुआ देखकर,-बड़े बड़े बाजोंसे घोर शब्दों को करके चारों ओरको घूमने लगा युद्धमें शोभा पाने वाले भीष्मजी के हाथसे उस बड़े धनुषधारी के मरनेपर शिखण्डी आदि रथी अत्यन्त कम्पायमान हुए हे राजा इस सेनापतिके मरनेपर अर्जुन और श्रीकृष्णजी नेभी सब रीतियों से धीरे धीरे युद्धका विश्राम किया, तदनन्तर आपके पुत्रों के और पांडवों के गर्जने और प्रसन्न होनेपर दोनों सेनाओंका विश्राम हुआ, हे शत्रु सन्तापी धृतराष्ट्र महारथी पाण्डव कौरवों के घोर मरणको शोचते उदास मन होकर स्थित हुए ॥ १२१ ॥

like a monntain peek. 116. The Pandavas and other warriors present there stopped fighting at the horrible sight to the joy of the Kauravas and your sons. Seeing the fall of Shwet, Dushasan caused a tremendous noise to be made from the musical instruments and turned round and round Shikhandi and other warriors shook with fear when that great archer was killed by glorious Bhishm and at the death of that commander of the army Shree Krishna and Arjun gradually caused the fighting to cease and the two armies retired amid roars of your sons and those of the Pandavas. The Pandava warriors returned with heavy hearts, devising the destruction of the Kauravas." 121.

धृतराष्ट्र उवाच । श्वेतेसेना पतौतात संग्रामे निहतपरै । किमकुर्व महेष्वासा पचाला पाडवै सह ॥ १ ॥ सेनापतिं सम कर्ण्य श्वेत युधि निपातितम् । तदर्थ यतता चापि परेषा प्रपलायनम् ॥ २ ॥ मन प्रीणाति मेवाक्य जय संजय शृण्वत । प्रत्युपाय चिंतयत सज्जना प्रसवतिमे ॥ ३॥ स हिवीरो नुरक्तश्च वृद्ध कुरुपतिस्तदा । कृतवैर सदातेन पितु पुत्रेणधीमता ॥ ४ ॥ तस्योद्वेग भयाचापि संश्रित पाडवान् पुरा । सर्व बलपरित्यज्य दुर्ग सश्रित्य तद्गत ॥ ५ ॥ पाडवाना प्रतापेन दुर्गदेश निवेशयन । सपत्नान् सततवाघयार्यवृत्ति मनुष्ठित ॥ ६ ॥ आश्चर्यवै सदा तेषा पुराराज्ञा सुदुर्मति । ततो युधिष्ठिरभक्त कथसजयस् दित ॥ ७ ॥ प्रक्षिप्त समत क्षुद्र पुत्रोमपुरुषाधम । नयुद्ध रोचयेद्भीष्मो नचाचार्य कथचन ॥ ८ ॥ नकृपो नच गाधारी नाह संजयरोचय । न वासुदेवो वार्ष्णेयो धर्मराजश्च पाडव ॥ ९ ॥

अध्याय ॥ ४९ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे तात युद्धमे दूसरों के हाथ से श्वेत सेनापति के मरनेपर पांचालो ने पाडवों के साथ क्या किया, हे संजय युद्धमें गिराये हुए सेनापति श्वेत को और उसके लिये उपाय करनेवाले वा अहकार करनेवाले दूसरों कोभी विजय करनेके वचनों को सुनकर मेरा चित्त प्रसन्न होता है और मानसी पापों कोभी विचारता हुआ मेरामन लज्जा युक्त नही होता है । ३ । हे संजय पाण्डव लोग विराट के घरमें जाके वडे सुख पूर्वक रहेथे उस विराट के दोनों पुत्रों को युद्धमें मरवाडाला इससे उनको कुछ लज्जाभी आई या नही आई अब हमारे विचार को तुमसत्य सत्यकहो कि अब महा अनर्थकामूल उत्पन्न हुआ कि इसी श्वेतकेमरने के हेतु पार्थ और भीमसेन महा क्रोधमें होकर अनेक वीरों को मारकर इस पृथ्वी को रुधिर से भरदेंगे देखो इस दुर्योधनको हमने गाधारी ने श्रीकृष्णजी ने और कृपा चार्य भीष्मजी द्रोण,राम, विदुर, व्यास इत्यादि अनेक गुरुइष्टमित्रों ने समझाया

CHAPTER XLIX

'What did the Panchals and the Pandavas do' asked Dhritrashtra of Sanjaya 'when Shwet the commander of the armies was slain? I like to hear of the fall of Shwet of his allies and his proud conquerers. I am not ashamed of my own mental sins 3 How were the Pandavas, who had once taken refuge in the house of king Virat, effected by the death of his two sons within their very sight Methinks truly we have exposed ourselves to greater danger, for enraged at the death of Shwet Arjun and Bhim will fill the earth will blood. I myself, as well as Gandhari Shri Krishn Kripachar , Bhishm,

नभोमोनार्जुनश्चैव नयमौपुरुषर्षभौ। वार्यमाणो मयानित्यं गांधार्याविदुरेणच ॥१०॥ जामदग्न्येन रामेण व्यासेनच महात्मना । दुर्योधनोयुध्यमानो नित्यमेवांहसंजय ॥ ११ ॥ कर्णस्य मतमास्थाय सौबलस्यच पापकृत् । दुःशासनस्यच तथा पांडवान्नान्व चिंतयत् ॥ १२ ॥ तदयाहं व्यसनं घोरं मन्येप्राप्तंतु संजय । श्वेतस्य च विनाशेन भीष्मस्य विजयेनच ॥ १३ ॥ संक्रुद्धः कृष्णसहितः पार्थः किमकरोद्युधि । अर्जुनाद्ध भयंभूयस्तन्मे तातनशाम्यति ॥ १४ ॥ सहि शूरश्च कौंतेयः क्षिप्रकारीधनंजयः । मन्येशरैः शरीराणि शत्रूणांप्रमथिष्यति ॥ १५ ॥ ऐंद्रिमिंद्रानुज समं महेंद्र सदृशं बले । अमोघ क्रोध सकल्पं दृष्ट्वावः किमभून्मनः ॥ १६ ॥ तथैव वेद विच्छूरो ज्वलनार्कसमद्युतिः । इन्द्रास्त्रविदमेयात्मा प्रपतन्समितिंजयः ॥ १७ ॥ वज्र

परन्तु इस निर्बुद्धिने किसीकाभीकहना नहींमाना औरसंबपांडवों केभी मनमें परस्पर स्नेह रखने कीही इच्छाथी तौभी दुर्योधन ने हठकरके इससंग्रामको रचा देखिये अब ईश्वर क्या करता है हे संजय वह पापकर्मी दुर्योधन कर्ण और शकुनि के मत में नियत होकर दुश्शासन का साथी बनके पांडवों की निन्दा करने लगा । १२ । मैं उसका फल उसके घोर दुःखका होना अवश्य वर्त्तमान देखताहूं श्वेत के नाश होने से महा क्रोध रूप होकर अर्जुनने भीष्मजी के विजय करनेके हेतु श्रीकृष्णजी से क्या विचार किया अर्जुनही से मुझको बड़ा भयहै हे तात वह मेराभय दूरनहीं होताहै वह संसारके सबपदार्थोंका विजय करने वाला कुन्ती का पुत्र अर्जुन अत्यन्त हस्तलाघव करनेवाला प्रतापी शूर है मैं निश्चय जानता हूं कि वह बाणों से शत्रुओं के शरीरों को मर्दन करेगा । १५ । उस इन्द्रके पुत्र और इन्द्रके छोटे भाईके बरा बर युद्धमें विष्णु के समान क्रोध और संकल्प में सफल वाले अर्जुनको देखकर तुमसब लोगोंका कैसा चित्त होता है, वह शूरवीर वेदज्ञ और प्रतापमें सूर्य और अग्निके समान इन्द्रके अस्त्रों का ज्ञाता बड़ा बुद्धिमान् युद्धमें कुशल महा विजयी

ably, but Duryodhan would not consent to anything but war. Let us see how God disposes. This sinful Duryodhan, O Sanjaya, acted upon the advice of Karan, Shakuni and Dushasan and made enemies of the Paudavas. 12. I fore see that as a result of this he will come to grief. Arjun and Shree Krishna will put their heads together to devise some plan for killing Bhishm because he has killed Shwet. I am very much afraid of Arjun and cannot shake off this feeling. Kunti's son, Arjun the world conquerer is a warrior of great prowess and dexterity of hand. I believe he will pierce the bodies of his enemies with his sharp arrows. 15. How do all of you feel at the sight of Arjun the son of India and of equal prowess to Vishnu the younger brother of Indra That brave man, scholar of the Vedas, glorious like the sun or Agni, skilful in using the weapons of Indra, very

संस्पर्शरूपाणामस्त्राणांच प्रयोजकः । सखड्गाक्षेप हस्तस्तु धोपं चक्रेमहारथा ॥१८॥
ससंजय महाप्राज्ञो द्रुपदस्यात्मजोवली । धृष्टद्युम्न किमकरोच्छ्वेते युधि निपातिते
॥ १९ ॥ पुराचैवापराधेन वधेनचचमूपतेः । मन्येमनः प्रजज्वाल पांडवानां महात्मनाम्
॥ २० ॥ तेषां क्रोधं चिंतयंस्तु अहःसुचनिशासुच । नशांति मधिगच्छामिदुर्यो
धनकृतेनहि । कथंचाभून्महायुद्धं सर्वमाचक्ष्व संजय ॥ २१ ॥ संजय उवाच ।
शृणुराजन् स्थिरोभूत्वा तवापनयनो महान् । नचदुर्योधने दोष मिममाधातुमर्हसि
॥ २२ ॥ गतोदके सेतुबंधो यादृक्तादृङ्मतिस्तव । संदीप्तेभवनेयद्वत्कूपस्यखननं
तथा ॥ २३ ॥ गतपूर्वाह्णे भूयिष्ठे तस्मिन्नहनि दारुणे । तावकाना परेषांच पुनर्युद्ध
मवर्तत ॥ २४ ॥ श्वेतंतु निहतंदृष्ट्वा विराटस्यचमूपतिं । कृतवर्मणाच सहितंदृष्ट्वा

युद्ध करने को उपस्थित, जो वह कुन्तीका पुत्र महारथी वज्रके समान स्पर्श वाला अनेकरूप वा अस्त्रोंको शत्रुओं के ऊपर चलाने वाला है, हे संजय उसद्रुपद के पुत्र वड़े ज्ञानी बलवान् धृष्टद्युम्न ने युद्धमें श्वेतके मरनेपर क्या किया, पूर्व्व समय के अपराधों से और श्वेतके मारेजाने से मैं मानताहूं कि महात्मा पांडवों का हृदयक्रोध से अग्निरूप होगया । २० । मैं रात्रिदिन उनके क्रोधों को शोचता हुआ दुर्योधनके कारण शान्ती को नहीं पाताहूं, इसके सिवाय यह वड़ाभारी युद्ध कैसे हुआ है संजय उस सबको मुझ से कहो ।२१। संजय वोले हेराजा स्थिर चित्त होकर सुनो कि इसमें आपकाही वड़ा भारी अन्याय है यहदोष आप को दुर्य्योधन में लगाना योग्य नहीं है जैसे विना जलके नदी में पुल और अग्निसे जलते हुए घरमें पानी के निमित्त कुएंका खोदना निरर्थक है, उसी प्रकारकी आपकी बुद्धि है, हे भरतवंशी दिन के तीसरे भाग में भीष्मजी के हाथ से श्वेत सेनापति के मरजाने पर, कृतवर्म्मा के साथ शल्य को नियत देखकर शत्रुकी सेनाको मारने वाला युद्ध में विजयरूपी कीर्त्ति वाला विराटका पुत्र शंखनाम शीघ्रही ऐसा

wise in battle, conquerer of wars, ready to fight, hard to touch like vájra, uses different sorts of weapons. What did brave and wise Dhrishtadyumna, the son of Drupad, do at the death of Shwet! With the former wrongs and the death of Shwet, I believe that the Pandavas must be enraged like fire. I donot find peace of mind and constantly fear for Duryodhan. Tell me how this great war is going on, Sanjaya!" 21 "Hear me, king, attentively," said Sanjaya, "the main fault lies in you. It is useless to attribute it to Duryodhan, for your wisdom is as vain as a bridge over a waterless place or digging a well when a house is on fire. In the third quarter of the day, when Shwet the commandar had been slain by Bhishm, seeing Shalya stationed with Kritvarma, Shankh the son of Virat, destroyer of foes and conquerer in battle, was enraged like blazing fire when libation is poured

शल्यमवस्थितम् ॥ २५ ॥ शंख क्रोधात्प्रजज्वाल हविषा हव्यवाडिव । स विस्फार्य महच्चापं शक्रचापोपमं बली ॥ २६ ॥ अभ्यधावज्जिघांसन्वै शल्यं मद्राधिपं युधि । महतारथसंघेन समंतात् परिरक्षित ॥ २७ ॥ सृजन्बाणमयं वर्षं प्रायाच्छल्यरथं प्रति । तमापतंतं संप्रेक्ष्य मत्तवारण विक्रमम् ॥ २८ ॥ तावकानां रथाः सप्त समंतात्पर्यवारयन् । मद्रराजं परीप्सन्तो मृत्योर्दंष्ट्रांतरंगतम् ॥ २९ ॥ बृहद्बलश्च कौसल्यो जयत्सेनश्च मागध । तथा रुक्मरथो राजन् पुत्र शल्यस्य मानित ॥ ३० ॥ विंदानुविंदावावंत्यौ कांबोजश्च सुदक्षिण । बृहत्क्षत्रस्य दायाद सैंधवश्च जयद्रथ ॥ ३१ ॥

क्रोधरूप होगया जैसे कि हव्य से अग्निकी प्रचण्डता होती है वह बलवान् शंख इन्द्रधनुष के समान बड़े धनुष को टंकारकर मद्रदेश के राजा के मारने की इच्छा से चारों ओरको बड़े रथों से रक्षित होकर सम्मुख दौड़ा । २७ । और बड़े बाणों की वर्षा करता हुआ शल्य के रथके समीप आया उस मतवाले हाथी के समान पराक्रमी शंखको आताहुआ देखकर मृत्युके मुख में फंसे हुए राजा मद्रकी रक्षाकरने के लिये तुम्हारे पुत्रों के साथ इन रथियों ने उसको चारों ओर से रोका कौशल दृहद्बल जयत्सेन मागध उसी प्रकार शल्यका पुत्र रुक्मरथ विंद अनुविन्द और आवन्तिका के राजालोग सुदक्षिण कांबोज दृहत्क्षत्रका पुत्र जयद्रथ सिंधुका राजा इन सब लोगों के धनुष नानाप्रकारकी धातुओं से जटित ऐसे दृष्टि पड़े जैसे कि बादलों में बिजली दिखाई देती है, उन वीरों ने बाणरूप वर्षा शंख के मस्तक पर ऐसी की जैसे कि वर्षाऋतु में वायु से प्रकट बादल आकाशी जलको बरसाते हैं, इसके पीछे बड़ा धनुषधारी सेनापति शंख महाक्रोधित होकर उन लोगों के धनुषों को अपने सातभल्लों से काटकर महा ध्वनि से गर्जा, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी बादल के समान गर्जते तालवृक्ष के समान धनुष को लेकर उसयुद्ध में शंख के सम्मुख दौड़े, उस बड़े धनुषधारी महाबली को उदयरूप देखकर पांडवों की सेना

over it, and twanging his bow which was like that of Indra, he rushed upon Shalya, accompanied with many charioteers, in order to kill him 21 He approached the chariot of Shalya, showering arrows Seeing Shankh coming like a mad elephant and desiring to rescue Shalya from the jaws of death, your sons checked his advance with the assistance of Kosala, Vrihadval, Jayatsen, Magadh, Rukm rath the son of Shalya, Vind, Anuvind, the princes of Avanti, Sudakshin, Camboj, Jayadrath the son of Vrihachatra and the king of Sindhu The bows of all these warriors, decked with various metals, looked like lightning in the midst of clouds They showered their arrows over the head of Shankh Then the archer Shankh, the commander of armies, cutting the bows of all those warriors with seven of his darts, roared a loud roar Then Bhishm of great arms,

रथास्तूर्णमुत्पतंतिपतत्रिणः । येंतरिक्षं भूमिश्च सर्वतः समवस्तृता ॥ ४१ ॥
पंचालानथ मत्स्यांश्च केकयांश्चप्रभद्रकान् । भीष्मः प्रहरतांश्रेष्ठः पातयामासपत्रिभिः
॥ ४२ ॥ उत्सृज्यसमरे राजन् पांडवसैन्य सायुचनम् । अभ्यद्रवतपांचाल्यं द्रुपदंसेन
यावृतम् ॥ ४३ ॥ प्रियंसंबंधिनं राजन् शरानवाकरन्बहून । अग्निनेवप्रदग्धानिवना
निशिशिरात्यये ॥ ४४ ॥ शरदग्धान्यदृश्यंत सैन्यानिद्रुपदस्यह । अत्यतिष्ठद्रणेभीष्मोवि
धूमइवपावकः ॥ ४५ ॥ मध्यंदिने यथादित्यं तपतमिवतेजसा । नशेकुःपाण्डवेयस्य
योधाभीष्मंनिरीक्षितुम ॥ ४६ ॥ वीक्षांचक्रुः समंतात्तेपांडवाभयपीडिताः । त्रातारंना
ध्यगच्छंतगावःशीतार्दिताइव ॥ ४७ ॥ सातुयौधिष्ठिरीसेना गांगेयशरपीडिता ।
सिंहेनेवविनिर्भिन्नाशुक्लागावइवगोपतेः ॥ ४८ ॥ हतेचप्रद्रुतेसैन्ये निरुत्साहेविमर्दिते ।
हाहाकारोमहानासीत् पांडुसैन्येषुभारत ॥ ४९ ॥ ततोभीष्मःशांतनवो नित्यंमंडल
कार्मुकः । मुमोचबाणान् दीप्ताग्रानहीनाशीविषानिव ॥ ५० ॥ शरैरेकायनीकुर्वन् दिशः
सर्वायतव्रतः । जघानपांडवरथानादिश्यादिश्यभारत ॥ ५१ ॥ ततःसैन्येषु भग्नेषु

की सेना बाणों से भस्महुई दृष्टपड़ी और भीष्मजी अग्निके समान दिखाई दिये, जैसेकि मध्याह्नके समय संतप्त करनेवाले महाप्रचण्ड सूर्य के देखने को लोग असमर्थ होते हैं उसी प्रकार पांडवों के युद्ध में भीष्मजी के देखने को कोई समर्थ नहीं हुआ । ४६ । पांडव लोगों की सेना भयसे पीड़ित होकर चारों ओर को अपना कोई रक्षक ऐसे नहीं देखती थी जैसेकि जाड़े से दुःखी गौएं अपना कहीं रक्षक नहीं देखतीं, हे राजा फिर वह युधिष्ठिरकी सेना भीष्मजी के बाणों से ऐसी पीड़ामान हुई जैसेकि सिंहसे भयभीत हुई श्वेत गौएं, हे भरतवंशी सेना के मरने भागजाने साहस छोड़ने और मर्दन होनेपर पांडवों की सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, फिर सदैव मण्डलरूपी धनुषधारी भीष्मजी ने विषमें बुझेहुये सर्प के समान तीक्ष्णबाणों को छोड़कर अपने बाणों से सब ओरकी सफाई करके रथियों को तिष्ठतिष्ठ शब्द करके मारा, जब सेनाके इधर उधर भागने और मर्दन होने वा सूर्यके अस्त होनेपर

dearly loved brother-in-law Drupad as fire does in a dry wood in summer. Drupad's army seemed consumed by the arrows of Bhishm who looked like fire. No warrior of the Pandavas could look Bhishm in the face like the noonday sun. 46. The army of the Pandavas, shaking with fear, could find no one to protect them on all sides and was distressed like cows in winter. The army of Yudhishthir was so distressed by Bhishm's arrows as cows are by a lion. With the death, flight, terror and destruction in the Pandav army there arose a terrible cry of distress. Bhishm, circling his bow and discharging his arrows like poisonous serpents, destroyed many warriors, saying 'stay, stay!' At the set of sun nothing was discernible except des-

नानाधातु विचित्राणि कार्मुकाणि महात्मनाम् । विस्फारितान्य दृश्यततोयदेष्विवविद्युत ॥ ३२ ॥ तेद्युवाणमद्य सर्वे शंखम् विन्यपातयन् । निदाघांते नलोद्धूतामेघा इवनगेजलम् ॥ ३३ ॥ तत क्रुद्धोमहेष्वासः सत्समहै सुतेजने । धनूंपितेष माच्छि चनन्दपृगनापातः ॥ ३४ ॥ ततोभीष्मोमह वार्दविनद्यजलदोयथा । तालमात्रधनुर्गृह्य द्रावसम्भ्यद्रवद्रणे ॥ ३५ ॥ तमुद्यंत मुदीक्ष्याथमहेष्वासं मह बलम् । सन्त्रस्तापां डवीसेनावातवेगहतेवनौ ॥ ३६ ॥ ततार्जुन सत्वारत्तः शंखस्याशात्पुरःसरः । भीष्माद्रक्ष्योयमद्येति ततोयुद्धमवर्तत ॥ ३७ ॥ हाहाकारोमहानासीद्योधानांयुधियुध्यताम् । तेजस्तेज सिसंपृक्त मित्येवं विस्मयययु ॥ ३८ ॥ अथशल्योगदापाणि रवतीर्यमहारथात् । शंखस्य चतुरावाहानहनद्भरतपभ ॥ ३९ ॥ सहताश्वाद्रथात्तूर्णं खड्गमादाय विद्रुत । बीभत्सोश्वरथं प्राप्यपुन शांतिमविंदत ॥ ४० ॥ ततोभीष्म

ऐसी भयभीतहुई जैसेकि वायु के वेग से टक्कर खाईहुई नौकाडामाडोल होती है, उसयुद्ध में अर्जुनभी यह शोचकर शख के आगे चलने वाला हुआ कि अब यह भीष्मजी से रक्षा करने के योग्य है युद्ध में लड़ने वाले युद्धकर्त्ताओं का बड़ा हाहाकार हुआ । ३८ । तदनन्तर गदाधारी शल्य ने वड़े रथसे उतरकर शंखके चारों घोड़ोंको मारा वह मृतक घोड़ों के रथ से शीघ्रही उतरकर खड्ग लेकर दौड़ा और अर्जुन के रथको पाकर फिर शान्त होगया इसके अनन्तर भीष्मजी के रथसे शीघ्रही बाण ऐसे उछलनेलगे जिनसे पृथ्वी और आकाश व्याप्त होगये । ४१ । प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने वाणों से पांचाल, मत्स्य, केरल और प्रभद्रक नाम अनेक वीरों को गिराया । ४२ । हे राजा भीष्मजी युद्ध में अर्जुन को छोड़कर सेना समेत वहुत वाणों को फेंकतेहुए अपने प्यारे समधी द्रुपद के सम्मुख ऐसे दौड़े जैसेकि चैत्र वैशाख के महीने में वनका जलाने वाला अग्नि दौड़ता है द्रुपद

---

thundering like clouds, rushed upon Shankh with his bow like the palm tree Seeing the great archer come forth, the Pandava army shook with fear like a boat in a storm of wind. Arjun came between Shankh and Bhishm to protect the former from the latter, and the warriors shouted loudly 38. Then Shalya the bearer of mace, coming down from his huge chariot, killed the four horses of Shankh's chariot Shankh jumped, sword in hand, from his horseless chariot and found shelter in Arjun's chariot. Then there came out a shower of arrows from the chariot of Bhishm, covering the heaven and earth 41. Bhishm the best of warriors killed with his arrows many a warlike man of Panchal, Matsya, Karel and Prabhadrak armies. 42. Bhishm, accompanied by his army, left Arjun and rushed upon his

रथात्तूर्णं मुत्पतंति गतात्रिणः । यैरंतरिक्षं भूमिश्च सर्वतः समवस्तृता ॥ ४१ ॥
पंचालानथ मत्स्यांश्च केकयांश्चप्रभद्रकान् । भीष्मः प्रहरतांश्रेष्ठः पातयामासपत्रिभिः
॥ ४२ ॥ उत्सृज्यसमरे राजन् पांडवंसव्य साचिनम् । अभ्यद्रवतपांचाल्यं द्रुपदंसेन
यावृतम् ॥ ४३ ॥ प्रियंसंबंधिनं राजन् शरानवाकरन्बहून । अग्निनेवप्रदग्धानिवना
निशिशिरात्यये ॥ ४४ ॥ शरदग्धान्यदृश्यंत सैन्यानिद्रुपदस्यह । अत्यतिष्ठद्रणेभीष्मोवि
धूमइवपावकः ॥ ४५ ॥ मध्यंदिने यथा दित्यं तपंतमिवतेजसा । नशेकुः पाण्डवेयस्य
योधाभीष्मंनरीक्षितुम ॥ ४६ ॥ वीक्षांचक्रुः समंतात्तेपांडवाभयपीडिताः । त्रातारंना
ध्यगच्छंतगावःशीतार्दिताइव ॥ ४७ ॥ सातुयौधिष्ठिरीसेना गांगेयशरपीडिता ।
सिंहेनेवविनिर्भिन्नाशुक्लागौरिवगोपतेः ॥ ४८ ॥ हतेचप्रद्रुतेसैन्ये निरुत्साहेविमर्दिते ।
हाहाकारोमहानासीत् पांडुसैन्येषुभारत ॥ ४९ ॥ ततोभीष्मःशांतनवो नित्यंमंडल
कार्मुकः । मुमोचबाणान् दीप्ताग्रानहीनाशीविषानिव ॥ ५० ॥ शरैरेकायनीकुर्वन् दिशः
सर्वायतव्रतः । जघानपांडवरथानादिश्यादिश्यभारत ॥ ५१ ॥ ततःसैन्येषु भग्नेषु

की सेना बाणों से भस्महुई दृष्टपड़ी और भीष्मजी अग्निके समान दिखाई दिये, जैसेकि मध्याह्नके समय संतप्त करनेवाले महाप्रचण्ड सूर्य के देखने को लोग असमर्थ होते हैं उसी प्रकार पांडवों के युद्ध में भीष्मजी के देखने को कोई समर्थ नहीं हुआ। । ४६ । पांडव लोगों की सेना भयसे पीड़ित होकर चारों ओर को अपना कोई रक्षक ऐसे नहीं देखती थी जैसेकि जाड़े से दुःखी गौएं अपना कहीं रक्षक नहीं देखतीं, हे राजा फिर वह युधिष्ठिरकी सेना भीष्मजी के बाणों से ऐसी पीड़ामान हुई जैसेकि सिंहसे भयभीत हुई श्वेत गौएं, हे भरतवंशी सेना के मरने भागजाने साहस छोड़ने और मर्दन होनेपर पांडवों की सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, फिर सदैव मण्डलरूपी धनुषधारी भीष्मजी ने विषमें बुझेहुये सर्प के समान तीक्ष्णबाणों को छोड़कर अपने बाणों से सब ओरकी सफाई करके रथियों को तिष्ठतिष्ठ शब्द करके मारा, जब सेनाके इधर उधर भागने और मर्दन होने वा सूर्यके अस्त होनेपर

dearly loved brother-in-law Drupad as fire does in a dry wood in summer. Drupad's army seemed consumed by the arrows of Bhishm who looked like fire. No warrior of the Pandavas could look Bhishm in the face like the noonday sun. 46. The army of the Pandavas, shaking with fear, could find no one to protect them on all sides and was distressed like cows in winter. The army of Yudhishthir was so distressed by Bhishm's arrows as cows are by a lion. With the death, flight, terror and destruction in the Pandav army there arose a terrible cry of distress. Bhishm, circling his bow and discharging his arrows like poisonous serpents, destroyed many warriors, saying 'stay, stay!' At the set of sun nothing was discernible except des-

मथितेषु च सर्वशः । प्रतिचास्त दिनकरेनप्राज्ञायतकिंचन ॥ ५२ ॥ भीष्मंचसमुदीर्यं तं दृष्ट्वा पार्था हाहवे । अवहारमकुर्वंत सैन्यानांभरतर्षभ ॥ ५३ ॥ ॐ ॐ ॐ

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि शङ्खयुद्धे प्रथमदिवसावहारे एकोनचत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४९ ॥

सजय उवाच । कृतेऽवहारेसैन्यानां प्रथमेभरतर्षभ । भीष्मेचयुद्धसंरब्धेहृष्टेदुर्योधनेतथा ॥ १ ॥ धर्मराजस्ततस्तूर्णमभिगम्य जनार्दनम् : भ्रातृभिःसहित सर्व सर्वैश्चैव जनेश्वरैः ॥ २॥ शुचापरमयायुक्तश्चिंतयानः पराजयम् । वार्ष्णेयमब्रवीद्राजन्दृष्ट्वा भीष्मस्य विक्रमम् ॥ ३ ॥ कृष्ण पश्य महेष्वासं भीष्मं भीमपराक्रमम् । शरैर्दहंतंसैन्यं मे भीष्मेकक्षमिवानलम् ॥ ४ ॥ कथमेनं महात्मानं शक्ष्यामः प्रतिवीक्षितुम । लेलिह्यमानं सैन्यं मे हविष्मन्तं मिवानलम् ॥ ५ ॥ एतं हि पुरुषव्याघ्र धनुष्मन्तं महाबलम् । दृष्ट्वा विद्रुतं सैन्यं समरे मार्गणाहतम् ॥ ६ ॥ शक्यो जेतुंयमः

कुछ नहीं जाना गया तबतो पांडवों ने उस महायुद्ध में भीष्मजी को अग्नि बरसाता हुआ देखकर सेनाका विश्राम किया ५३ ॥

अध्याय ॥ ५० ॥

संजय बोले हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ उस प्रथम दिन में सेना के मनुष्यों के विश्राम करने और युद्ध में भीष्मजी के क्रोध रूप होने अथवा दुर्योधन के प्रसन्न होने पर, धर्मराज ने सब भाइयों और राजाओं समेत जनार्दनजी के पास जाकर, बड़े शोक युक्त होकर अपनी परजय को शोच भीष्मजी के पराक्रमको देख कर श्रीकृष्णजी से कहा । ३ । कि हे श्रीकृष्णजी इसबड़े धनुषधारी भयानक पराक्रमी भीष्मजी को देखिये कि यह बाणों के मारे मेरी सेना को ऐसे भस्म किये डालते हैं जैसे कि ऊष्मऋतु में अग्नि वन और वन की सूखी घास को, हव्य भोजन करने वाले अग्नि के समान मेरी सेना को चाटने वाले इस महात्मा की ओर देखने को भी हम कैसे समर्थ होसक्ते हैं, इसी धनुषधारी महाबली पुरुषोत्तम को देखकर बाणों से महाव्याकुल हमारी सब सेना इधर उधर को भाग गई, युद्धमें क्रोधाग्नि

truction all r and The Pandavas still seeing Bhishm showering his fiery arrows, ordered their armies to retire. 49.

CHAPTER L

Sanjaya continued, "After the retreat of his army from before the enraged Bhishm and cheerful Duryodhan, Yudhishthir the just went with his brothers and kings to Janardan, and fearing defeat by the prowess of Bhishm, he said to Krishn. "Look at that dreadful archer Bhishm With his arrows he consumes my army as fire does a dry forest in summer. How can we face that great man who consumes our armies as fire does the libations. Our soldiers run away at the sight of that great warrior. We may conquer angry Yamraj.

क्रुद्धोवज्रपाणिश्चसंयुगे । वरुणःपाशभृद्वापि कुवेरोवागदाधरः ॥ ७ ॥ नतुभीष्मो
महातेजाः शक्योजेतुंमहाबलः । सोहमेवंगतेमग्नो भीष्मागाधजलेऽप्लुवे ॥८॥ आत्मनो
बुद्धिदौर्बल्याद्भीष्ममासाद्यकेशव । वनंयास्यामि वार्ष्णेयश्रेयोमे तत्रजीवितुम् ॥ ९ ॥
नत्वेतान्पृथिवीपालान् दातुंभीष्मायमृत्यवे । क्षपयिष्यतिसेनांमे कृष्णभीष्मोमहास्त्र
वित् ॥ १० ॥ यथाऽनलंप्रज्वलितंपतंगा समभिद्रुताः । विनाशायोपगच्छंति तथामे
सैनिकोजनः ॥ ११ ॥ क्षयंनीतोऽस्मिवार्ष्णेय राज्यहेतो पराक्रमी । भ्रातरश्चैवमेवीराः
कर्शिता शरपीडिताः ॥ १२ ॥ मत्कृतेभ्रातृहार्देनराज्याद्भ्रष्टास्तथा सुखात् । जीवितं
वहुमन्येहंजीवितंह्यद्य दुर्लभम् ॥ १३ ॥ जीवितस्यच शेषेण तपस्तप्स्यामि दुश्चरम् ।
नघातयिष्यामि रणे मित्राणीमानिकेशव ॥ १४ ॥ रथान् मे वहुसाहस्रान् दिव्यैरस्त्रै

रूप यमराज वा वज्रधारी इन्द्र वा पाशधारी वरुण वा गदाधारी कुवेरको भी चाहैं विजय करना संभव है परन्तु महाबाहु अति पराक्रमी भीष्मजी को विजय करना असंभव है । ७ । सो मैं ऐसी दशा में भीष्मरूपी अथाह जलमें विना नौका के डूबा जाता हूं, हे श्रीकृष्णजी मैं अपनी बुद्धिकी निर्बलतासे भीष्मजी के सम्मुख होकर वनको चला जाऊंगा अथवा हे वृष्णिवंशी मेरे जीवन में कल्याण नहीं है, परन्तु इन राजाओं को भीष्मरूपी मृत्यु के वश करने को मैं योग्य नहीं हूं, हे श्री कृष्णजी महाबली भीष्मजी मेरी सेनाको नाश करडालेंगे जैसे कि पतंग ज्वलित अग्निकी ओर दौड़ते हुए अपने नाशके निमित्त जाते हैं इसी प्रकार मेरी सेनाके मनुष्य भीष्मजी की ओर को जाने वाले हैं । ११ । राज के निमित्त मैं पराक्रम करने वाला नाश होता हूं और मेरे वीरभाई लोगभी बाणों से पीड़ित होकर महा दुर्बलांग हैं, वह मेरे कारण अथवा भाई विरादरी की शुभचिन्तकता के कारण अपने राज्य सुखों को त्यागने वालेहुए मैं जीवनको वहुत मानता हूं अब जीवनहोना कठिन मालूम होता है, शेष जीवन से तपस्या करूंगा हे केशवजी मैं युद्ध में इन मित्रों को

Indra the wielder of Vajra, Varun the bearer of noose or Kuver the wielder of mace; but to conquer braver Bhishm is impossible. I am about to be drowned in the bottomless ocean of Bhishm for want of a boat. Being unable to withstand Bhishm, I shall go away to live in forest; for I see no good in living here, Krishn! I donot like to give up these kings to be slaughtered by Bhishm The great warrior, Bhishm will destroy my army. My men run into the jaws of death by going before Bhishm, like insects falling into fire 11. I shall die fighting for the sake of kingdom and my brave brothers are getting weaker in body with the wounds of the arrows. They have forsaken all pleasure for my sake and for the good of the kinsmen. It appears that I shall lose the life which I hold so dear. I intend practising penance during the rest of my life and shall no long-

महाबलः । घातयत्यनिशं भीष्मः प्रवराणांप्रहारिणाम् ॥ १५ ॥ किंनुकृत्वाहितंमे-
स्यादब्रूहि माधव माचिरम् । मध्यस्थ मिवपश्यामि समरे सव्य साचिनम् ॥ १६ ॥
एकोभीमः परंशक्त्या युध्यत्येव महाभुजः । केवलं बाहुवीर्येण क्षत्रधर्ममनुस्मरन्
॥ १७ ॥ गदयावीर यातिन्यायथोत्साहं महामनाः । करोत्यसुकरं कर्म रथाश्वनरदं
तिषु ॥ १८ ॥ नालमेष क्षयंकर्तुं परसैन्यस्यमारिष । आर्जवेनैव युद्धेन वारवर्ष
शतैरपि ॥ १९ ॥ एकोऽस्त्रवित्सखातेऽयं सोप्यस्मान् समपेक्षते । निर्दह्यमानान्
भीष्मेण द्रोणेनच महात्मना ॥ २० ॥ दिव्यान्यस्त्राणि भीष्मस्य द्रोणस्य च
महात्मनः । धक्ष्यंति क्षत्रियान् सर्वान् प्रयुक्तानि पुनःपुनः ॥ २१ ॥ कृष्ण भीष्मः
सुसंरब्धः सहितः सर्व पार्थिवैः । क्षपयिष्यतिनोनूनं यादृशोस्यपराक्रमः ॥ २२ ॥
सत्वं पश्य महाभाग योगेश्वरमहारथम् । भीष्मंयः शमयेत्संख्ये दावाग्निं जलदो

नहीं मरवाऊंगा, महाबली भीष्मजी अपने दिव्य अस्त्रों से मेरेहजारों उत्तम शूरवीर
रथियों को बराबर मारते हैं । १५ । सो आप शीघ्रता से कृपाकरके बतलाइये कि
कैसे मेरा कल्याणहो मैं इस युद्ध में अर्जुनकोभी उदासीनके समान देखता हूं, यह
महाबाहु अकेला भीमसेन क्षत्री धर्म को स्मरण करता केवल भुजा द्वारा बड़ी सा-
मर्थ्य से लड़ता है, यह बड़ा साहसी अपने साहस के अनुसार वीरोंकी मारने वाली
गदासे रथघोड़े हाथी और मनुष्यों के मध्य में कठिन कर्मको करता है, हे श्रेष्ठ वह
वीर सत्ययुद्ध के द्वारा वर्षोंमें भी शत्रुकी सेना के नाशकरने को समर्थ नहीं है, यह
आपका एक मित्र (अर्जुन) अस्त्रों का जाननेवालाहै वहभी महात्मा द्रोणाचार्य और
भीष्मजी के हाथ से बराबर भस्मीभूतहोताहुआ देखकर हमलोगोंको कुछनहीं समझ-
ता है । २० । महात्माभीष्मजी और द्रोणाचार्य के बारम्बार चलायेहुये दिव्यअस्त्र
सब क्षत्रियोंको जलाते हैं, हे कृष्णजी निश्चयकर के क्रोधरूप भीष्मजी सब
राजाओं समेत हमको मारेंगे ऐसा इनका पराक्रम है, हे योगेश्वर तुम उसमहाभाग
महारथीकोदेखो और विचारो जो युद्धमें भीष्मजीको ऐसे शान्त करे जैसे बादल

or cause the destruction of my friend in battle. Brave Bhishm is killing thousands of my warriors with his celestial weapons. 15. Pray let me know without delay in what lies my welfare. This brave Bhimsen alone is firm on his duty and fights very diligently. He performs very hard task with his warrior destroying mace in the midst of chariots, elephants, horses and men; but by his own bravery alone he cannot, even in course of years, destroy all the armies of the enemy. Your friend Arjun alone knows how to use weapons, but he does not care in the least to save us from being destroyed by great Dronacharya and Bhishm. 20. The celestial weapons of Dronacharya and Bhishm burn all the warriors again and again; the enraged Bhishm will surely destroy us along with all the kings by his matchless prowess. You Lord of yog! know the warrior who can

यथा ॥ २३ ॥ त्वत्प्रसादाद्गोविंद पांडवा निहतद्विपः । स्वराज्य मनुसंप्राप्तामो-
दिष्यंते सबांधवाः ॥ २४ ॥ एवमुक्त्वा ततः पार्थो ध्यायन्नास्ते महामनाः । चिरमंतर्म
नाभूत्वा शोकोपहतचेतनः । शोकार्तमथोज्ञात्वा दुःखोपहतचेतसम् ॥ २५ ॥ अब्र
वीत्तत्रगोविंदो हर्षयन् सर्व पांडवान् । माशुचोभरत श्रेष्ठ नत्वं शोचितुमर्हसि ॥२६॥
यस्यते भ्रातरःशूराः सर्वलोकेषु धन्विनः । अहंचाप्रियकृद्राजन् सात्यकिश्च महायशाः
॥ २७ ॥ विराटद्रुपदौचेमौ धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । तथैव सबलाश्चेमे राजानो राज
सत्तम ॥ २८ ॥ त्वत्प्रसादं प्रतीक्षंते त्वद्भक्ताश्च विशांपते । एषते पार्षतो नित्यं हित
काम.प्रियेरतः ॥ २९ ॥ सैनापत्य मनुप्राप्तो धृष्टद्युम्नो महाबलः । शिखंडीच
महाबाहो भीष्मस्य निधनं किल ॥ ३० ॥ एतच्छ्रुत्वा ततो धर्मो धृष्टद्युम्नमहारथम् ।
अब्रवीत्समितौतस्यां वासुदेवस्यशृण्वतः ॥ ३१ ॥ धृष्टद्युम्नानिबोधेदंयत्वांवक्ष्यामि

दावानल अग्नि को, हे गोविन्दजी आपकी कृपासे पांडव शत्रुओंको नाशकर के अपने राज्य से मिलेहुए बांधवों समेत आनन्द करेंगे, तदनन्तर बड़ा साहसी युधिष्ठिर इस प्रकारकी बातें कहकर शोक से पीड़ित चित्त देरतक मनको हृदय में नियत करके ध्यान करता हुआ बैठा। २५। फिर गोविन्दजी पांडवों को दुःख शोक से पीड़ित और उदास रूप देखकर सब पांडवों को प्रसन्न करते हुये यह वचन बोले, हे भरतवंशियों में उत्तम तू शोच मतकर और तू शोच करनेके योग्य नहीं है क्योंकि तेरेभाई तो महा शूरवीर हैं और वह सब संसार में विख्यात हैं, हे राजा धर्म में और महारथी सात्विकी, विराट् द्रुपद और धृष्टद्युम्न आपके मनोरथ पूर्ण करनेवाले हैं, हे राजेन्द्र युधिष्ठिर इसी प्रकार सब राजा लोगभी अपनी २ सेना समेत तेरी प्रसन्नता कीही बाटदेखते हैं और आपके परमभक्त हैं। २९। सदैव भलाई चाहनेवाले आपके प्यारे प्रीतिमान् महारथी धृष्टद्युम्न ने सेनाध्यक्षी के अधिकारको पाया, निश्चयकरके यह महाबाहु शिखण्डी भीष्मका नाशकरनेवाला है राजा युधिष्ठिर यह कृष्णके वचन को सुनकर उसी सभा में वासुदेवजी के

subdue Bhishm in battle as rain does the flames of a forest. By your grace, Govind, the Pandavas can destroy their enemies and enjoy their kingdom with their kinsmen." Having said this, Yudhishthir of great prowess, distressed with grief, meditated a long while in silence. 25. Seeing the Pandavas full of distress and sorrow, Govind said, "Donot be grieved, best of the descendants of Bharat! Having such brave brothers of world wide renown you need not be anxious for your victory. You have, king, on your side Dharm, myself, brave Satwiki, Virat, Drupad and Dhrishtadyumna. The other kings, likewise, are solitous to please you, Prince Yudhishthir! 29. Your ever well wisher and dear friend Dhrishtadyumna is the commander of your armies! Surely, brave Shikhandi is the destroyer of Bhishm!" Having heard these words of Shree Krishna, Yudhish-

मारिष । नातिक्रम्यं भवेच्चच्च वचनं ममभाषितम् ॥ ३२ ॥ भवान्सेनापतिर्मह्यं
वासुदेवेन संमितः । कार्त्तिकेयो यथा नित्यं देवानाम भवत्पुरा ॥ ३३ ॥ तथात्वम
पिपार्थानां सेनानीः पुरुषर्षभ । सत्वंपुरुषशार्दूल विक्रम्य जहि कौरवान् ॥ ३४ ॥
अहंच तेनुयास्यामि भीमः कृष्णश्चमारिष । माद्रीपुत्रौच साहतौ द्रौपदेयाश्चदंशिताः
॥ ३५ ॥ येचान्येपृथिवीपालाः प्रधानाः पुरुषर्षभ । ततउद्धर्षयन् सर्वान् धृष्टद्युम्नोभ्य
भाषत ॥ ३६ ॥ अहंद्रोणांतकःपार्थ विहितः शंभुनापुरा । रणे भीष्मंकृप द्रोणं तथा
शल्यं जयद्रथम् ॥ ३७ ॥ सर्वानद्यरणे दृप्तान् प्रतियोत्स्यामि पार्थिव । अथोत्कुष्टं
महेष्वासैः पांडवैर्युद्धदुर्मदैः ॥ ३८ ॥ समुद्यतेपार्थिवेंद्रे पार्षतेशत्रुसूदने । तमब्रवी
त्ततःपार्थः पार्षत पृतनापतिम् ॥ ३९ ॥ व्यूहःक्रौंचारुणोनाम सर्वशत्रु निवर्हणः ।

आगे धृष्टद्युम्न से बोला कि हे धृष्टद्युम्न जो मैं आपसे कहताहूं उसको अच्छी रीति से समझो वह मेरा वचन उल्लंघन करने के योग्य नहीं है आप वासुदेवजी के विचार से मेरी सेना के सेनापतिहो, पूर्वसमय में जैसे कार्त्तिकेय देवताओं की सेना के सेनापति हुये इसी प्रकार से आप पांडवों के सेनापतिहो हे पुरुषोत्तम तुम अपने पराक्रमको करके कौरवों को मारो और बडभागी मैं व भीमसेन और श्रीकृष्णजी तेरेपीछे चलेंगे एक साथ दोनों नकुल और सहदेव और द्रौपदी के शस्त्रधारी पुत्र और अन्य सब राजा लोगभी तुम्हारे साथ पीछे चलेंगे । ३६ । यह सुनकर धृष्टद्युम्न सबको प्रसन्नकरके बोला कि हे राजा पहले समय में शिवजीकी ओर से मैं द्रोणाचार्य के नाश करनेवाला नियत हुआ था इसी हेतु से हे राजा अब मैं इस युद्ध में भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, शल्य और जयद्रथ आदि सब अहंकारियों से अवश्य लडूंगा तदनन्तर शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न के अच्छी रीतिसे सन्नद्ध होनेपर युद्ध में आकर महादुर्म्मद और धनुषधारी पांडवों ने उच्चस्वर से शब्द किया, फिर युधिष्ठिर ने सेनापति धृष्टद्युम्न से कहा कि सब शत्रुओं का नाश करनेवाला

thir said to Dhrishtadyumna in the midst of that assembly and in the presence of Vasudev —"Hear Dhrishtadyumna what I say to you and attend to it carefully without fail You are the commander-in-chief of my armies as Vasudev says:—You are the commander of the Pandavas, armies as Karlikeya was of those of gods. Kill the Kauravas with your prowess and I as well as Bhimsen and Krishna will follow you along with Nakul and Sahadev, the brave sons of Draupadi and other kings" 36 On hearing this, Dhrishtadyumna pleased the audience by the following reply —"I am born, O king," said he, "to destroy Drona by the order of Shiva, and therefore, I shall face Bhishma, Drona, Kripa, Shalya, Jagadrath and other proud warriors in the field of battle." When Dhrishtadyumna had made his preparations, he stood in the field of battle and the brave Pandavas raised a loud war cry. And Yudhishthir thus addressed

यंबृहस्पतिरिंद्रायतदा देवासुरेब्रवीत् ॥ ४० ॥ तंयथावत्प्रतिव्यूहं परानीकविनाशनम् । अदृष्टपूर्वंराजानः पश्यंतुकुरुभिः सह ॥ ४१ ॥ यथोक्तः सनृदेवेन विष्णुर्वज्रभृता यथा । प्रभाते सर्व सैन्यानामग्रे चक्रे धनंजयम् ॥ ४२ ॥ आदित्यपथगःकेतुस्तस्या द्भुतमनोरमः। शासनात्पुरुहूतस्यानिर्मितो विश्वकर्मणा ॥ ४३ ॥ इंद्रायुधसवर्णाभिः पताकाभिरलंकृतः। आकाशगइवाकाशे गंधर्व नगरोपम. ॥ ४४ ॥ नृत्यमानइवाभा तिरथचर्यासुमारिप । तेनरत्न वतापार्थः सचगांडीव धन्वना ॥ ४५ ॥ बभूवपरमो पेतः सुमेरु रिव भानुना । शिरोभूद्द्रुपदो राजा महत्या सेनया वृतः ॥ ४६ ॥ कुंति भोजश्च चैद्यश्च चक्षुर्व्यास्तांजनेश्वरौ । दाशार्णकाः प्रभद्राश्च दाशेरकगणैः सह ॥ ४७॥ अनूपकाः किराताश्च ग्रीवायां भरतर्षभ । पटचरैश्च पौंड्रैश्च राजन् पौरवकैस्तथा ॥४८॥

क्रौंचारुण नाम व्यूह जिसको देव दानवों के युद्धमें बृहस्पति जीने देवेन्द्र से कहा था उसी शत्रुहन्ता व्यूहको आप विधि के अनुसार रचो । ४१ । उस अपूर्व व्यूहको राजाओं समेत कौरव लोग देखें धृष्टद्युम्न से राजा धर्मराज ने इस प्रकार से यह वचन कहा जैसे कि वज्रधारी इन्द्रने विष्णुजी से कहाथा, प्रातःकाल के होतेही सब सेना के आगे अर्जुनको किया उससमय प्रकाशित और मनको प्रसन्न करने वाली अपूर्व्व ध्वजा सूर्य के मार्ग में वर्त्तमान थी उस ध्वजा को इन्द्रकी आज्ञा से विश्वकर्मा ने बनाया इन्द्र वज्रके समान पताकाओं से अलंकृत, आकाश में गन्धर्व नगर के समान नियत थी हे राजा वह ध्वजा रथके भ्रमण करने में नाचती हुई प्रकाशमान थी । ४५ । और वह युधिष्ठिर उस रत्नवान गांडीव धनुषधारी श्रेष्ठ पुरुषके कारण ऐसा शोभित हुआ जैसे कि सुमेरु पर्वत सूर्य से सुशोभित होता है हे राजा बड़ी सेना संयुक्त राजा द्रुपद तो शिर हुआ और कुन्तभोज और चन्देल राजा आंखें हुये हे भरतर्षभ प्रभद्रक शार्नक और अशीरक नाम समूहों के साथ अनूपक किरात ग्रीवा में वर्त्तमान हुआ। ४८।

Dhrishtadyumna the commander in chief:—"Array the armies in the Krauncharun array, explained to Indra by Vrihaspati in the war of the gods and danavas. 41. Let the Kaurava princes see the matchless array." These words were addressed to Dhrishtadyumna by Yudhishthir as they were done by Indra to Vishnu. Early in the morning Arjun led the army. The bright banner, cheeinrg the heart, shone like the sun. It was made by Vishwakarma by Indra's order. It was decked with banners like Indra's vajra and stood in air like the city of Gandharvas. It danced with the advance of chariots 45. Yudhishthir, in company with the best of men the bearer of Gandiv bow decked with jewels, looked glorious like Sumeru with the sun shining upon. Of that array king Drupad with his army became the head; kings Kuntibhaj and Chandel were the eyes; Anuped the Kirat with the Parbhadraks, the Sharnaks and the Ashiraks stood

निषादैं सहितश्चापि पृष्ठमासीद्युधिष्ठिर । पक्षौतुभीमसेनश्च धृष्टद्युम्नश्चपार्षत ॥४९॥ द्रौपदेयाभिमन्युश्च सात्यकिश्च महारथ । पिशाचादरदाश्चैव पुण्ड्राकुण्डीविषे सह॥५०॥ मारुता धेनुकाश्चैव तगणा परतगणा । बाह्लिकास्तित्तिराश्चैव चोला पाण्ड्याश्च भ रत ॥ ५१ ॥ एतजनपदाराजन् दक्षिण पक्षमाश्रिता । अग्निवेश्यास्तु हुडाश्चमाल वादानभारत ॥ ५२ ॥ शबराउम्भसाश्चैव वत्साश्च सहनाकुलै । नकुल सहदेवश्च वामपक्षसमाश्रिता ॥ ५३ ॥ रथानामयुत पक्षौ शिरस्तु नियुतंतथा । पृष्ठमर्बुदमेवासीत् सहस्राणिच विंशति ॥ ५४ ॥ ग्रीवाया नियुतचापि सहस्राणि च सप्तति । पक्ष कोटि प्रपक्षेषु पक्षातपुच्छ वारणा ॥ ५५ ॥ जग्मु परिवृता राजश्चलत इवपर्वता । जघन पालयामास विराट सहकेकयै ॥ ५६ ॥ काशिराजश्च शैब्यश्च रथानामयुतै

और राजा युधिष्ठिर पटश्चर पौंडर और निषादों के साथ उसकीपीठ हुआ और भीमसेन, पर्षत का पौत्र धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र व अभिमन्यु औरमहारथी सात्यिकी पक्षबने, और कुण्डी व ऋषियों समेत पिशाच दारद पौंड़ू यवन, धेनुक तगण परतगण वाल्हीक तित्तिर चोल पाण्ड्य इन देशोंके निवासी दक्षिणपक्ष में नियत हुए, अग्निवेश्य गजतुण्ड मलद आश्कारव शवर कुम्भस मालुकोंसमेत वत्स नकुल सहदेव यह सबवामें पक्ष में नियत हुए एक अर्बुद रथ पक्षमें रहे और इसी प्रकार रथोंका एक नियुत शिर हुआ और एक अर्बुद और बीसहजारकी पृष्ठहुई और सत्तरहजार ग्रीवामें हुये । ५४ । हे राजा ऐसे पक्षी रूपी व्यूहके आगे वा पक्ष और पूंछके स्थानोंपर चलनेवाले पर्वतोंके समान चारों ओरसे रक्षाकरते हुए हाथी चले, राजा विराट् न केकय लोगोंके साथ और काशीराज शैबीने तीनअयुत रथोंके साथ जघन स्थानकी रक्षा करी हे राजा वह सब पाण्डव इसप्रकार से इस

in the place of neck 48 King Yudhishthir with the Poundras and the Nishadas represented the back Bhimsen with the grandson of Parshal (Dhrishtadyumna) the sons of Draupadi, and Abhimanyu and brave Satwiki represented the wings. And Kundi with the Pishaches, the Rishes, the Dardas, the Paundras, the Yavanas, the Dhenuks the Tangans the Partaugans, the Vahliks, the Titturs, the Cholas and the Pandyas stood on the right wing, and the Agnivesh yas the Gajatundus the Maladas, the Ashkaravas, the Shabars, the Kumbhases and Nakul and Sahadev with the Malukas and the Vatsas stood on the left. A thousand millions of chariot occupied the wings, ten thousand occupied the head, a thousand millions and twenty thousand occupied the back and seventy thousand stood on the neck 51 Elephants moved all round, before, on the wings and on the tail of that array to ming a bird King Virat with the Kekayas and the Shaivya king of Karhi with thirty, thousand chariots protected the hip and the loins Thus, O king, did the Pandavas

स्त्रिभिः । एवमेनं महाव्यूहंव्यूह्यभारत पांडवाः ॥ ५७ ॥ सूर्योदयंतइच्छंतः स्थितायुद्धायदंशिताः । तेषामादित्यवर्णानि विमलानि महांतिच । श्वेतच्छत्राण्य शोभंत वारणेषु रथेषुच ॥ ५८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि क्रौंचव्यूहनिर्माणे पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

संजय उवाच । क्रौंचंदृष्ट्वाततोव्यूह मभेद्यं तनयस्तव । रक्ष्यमाणं महाघोरं पार्थेनामिततेजसा ॥ १ ॥ आचार्यमुपसंगम्य कृपंशल्यंच पार्थिव । सौमदत्तिंविकर्णंच सोश्वत्थामानमेवच ॥ २ ॥ दुःशासनादीन् भ्रातॄंश्च सर्वानेवच भारत । अन्यांश्च सुबहून् शूरान् युद्धाय समुपागतान् ॥ ३ ॥ प्राहेदंवचनं काले हर्षयंस्तनयस्तव । नानाशस्त्रप्रहणा सर्वे युद्धविशारदाः ॥ ४ ॥ एकैकशःसमर्थाहियूयंसर्वे महारथाः । पांडुपुत्रान् रणेहंतुससैन्यान् किमुसंहताः ॥ ५ ॥ अपर्याप्तं तदस्माकंबलं

बड़े उत्तमव्यूह को रचकर बड़ी सज धजके साथ शस्त्रों को धारण किये सूर्योदय को चाहते हुए युद्धके निमित्त नियत हुए, उन लोगोंके छत्रजो सूर्य्य वर्ण निर्मल और अत्यन्त श्वेतरूप थे वह हाथी और रथोंके ऊपर दिखाईदिये ॥ ५८ ॥

अध्याय ॥ ५१ ॥

संजयबोले हे श्रेष्ठभरतवंशी राजा धृतराष्ट्र इस के अनन्तर आपका बड़ा बेटा बड़े तेजस्वी पाण्डवोंके रचेहुए घोर और अभेद्यमहाव्यूहको देखकर आचार्य द्रोणाचार्यजी के पास जाकर कृपाचार्य राजाशल्य सोमदत्त विकर्ण अश्वत्थामा, दुश्शासनआदि सबभाइयों और युद्धके निमित्त समीप आयेहुए अन्य बहुत से राजाओं को, समयपर प्रसन्नकरताहुआ यह वचनबोला कि तुम सबनानाप्रकारके शस्त्रधारी और अस्त्रों के अर्थ में पंडितहो, आप सबमहारथी एकाही युद्ध में पांडवों के मारने में समर्थहोतो साथियोंके मिले हुये होनेसे क्यों नहीं समर्थहोगे, हमारी सब सेना भीष्मआदि की रक्षासे अजेय है और यह उनकी सेना भीमआदि से रक्षितपराजय

array their army and stood in great glory, armed with weapons, waiting for the sunrise. Their shining sunshades, pure white in colour, were seen above elephants and chariots." 59.

CHAPTER LI

Sanjaya continued thus, addressing Dhritrashtra:— Seeing the dreadful and impregnable phalanx the glorious Pandavas, your eldest son went to Dronacharya and thus spoke out, cheering Kripacharya, King Salya, Somdatta, Vikarna, Ashwathama, Dushasan and other brothers and kings assembled there for fighting with his words:— All you warriors! wielders of different weapons adept in the art of fighting and capable of destroying singly all the Pandavas, are surely able to defeat them when put together.* Our army is incon-

भीष्माभिराचतम् । पर्याप्तमिदमेतेषां बलंमे भाभिरक्षितम् ॥ ६ ॥ संस्थाना.शूरसे
नाश्च वेत्रिका कुकुरास्तथा । आरोचकास्त्रिगर्ताश्चमद्रकाय वनास्तथा ॥ ७ ॥
शत्रुंजयेन सहितास्तथा दुःशासनेनच । विकर्णेनच वीरेण तथा नंदोपनंदकैः ॥ ८ ॥
चित्रसेनेन सहिता सहिता पारिभद्रकै । भीष्ममेवाभि रक्षतु सहसैन्य पुरस्कृता
॥ ९ ॥ ततो भीष्मश्च द्रोणश्च तवपुत्राश्चमारिष । अव्यूहंत महाव्यूहं पांडूनां प्रतिबाधकम्
॥१०॥ भीष्म सैन्येन महता समतात्परिवारितः । ययौप्रकर्षन्महतीं वाहिनींसुरराडिव
॥११॥ तमन्वयान्महेष्वासो भारद्वाज· प्रतापवान् । कुतलैश्चदशार्णैश्चमागधैश्चविशांपते
॥ १२ ॥ विदर्भैर्मेकलैश्चैव कर्णप्रावरणै रपि । सहिता सर्वसैन्येनभीष्ममाहव शोभिनम्
॥ १३ ॥गांधारा सिंधु सौवीरा शिबयोथवसातय । शकुनिश्चस्वसैन्येन भारद्वाज
मपालयत् ॥ १४ ॥ ततो दुर्योधनो राजा सहितः सर्वसोदरैः । अश्वातकैर्विकर्णैश्च
तथाचांबष्ठकोसलै ॥ १५ ॥ दरदैश्चशकैश्चैव तथाक्षुद्रकमालवै । अभ्यरक्षतसंहृष्ट

होनेके योग्य है, संस्थान विकर्ण शूरसेन कुकुट रेचक त्रिगर्त मद्रक यवन शत्रुंजय दुश्शासन बड़े वीर विकर्ण नन्द उपनन्द मणिभद्रकों समेत चित्रसेन सेना के मनुष्योंसमेत सम्मुखहोकर भीष्मकी रक्षाकरो, हे श्रेष्ठ इस के पीछे आप के पुत्रों ने पांडवों के रोकने के लिये बड़ेभारी व्यूहको रचा, भीष्मजी तो चारों ओर सेना से रक्षित देवराज के समान बड़ीसेना समेतचले, और बड़े धनुषधारी प्रतापी भारद्वाज द्रोणाचार्यजी कुन्तल मागध और दशार्ण के साथ भीष्मजी के साथ चले और विदर्भ मेकलकर्ण प्रावरकर्मी सब सेनासमेत भीष्मजी केही साथचले, गांधार सिंधु सौवीर शैब्य विशातय और शकुनीने सेनासमेत भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजीको रक्षितकिया, तदनन्तर राजादुर्योधन और सब सगेभाई अश्वातक विकर्ण वामन

querable, well protected as it is by Bhishm Let Samasthanas, the *Surasens, the Kukkars, the Rechaks, the Trigartas the Madrakas*, the Yavanas, with Satrnujaya, Dusshasana, that excellent hero Vikarna, Nanda, Upandaka, (8) and Shilasena, along with the Manibhadrakas, protect Bhishma with their troops 9 O sire, Then *Bhishma and Drona and thy sons formed a mighty* array for resisting that of Parthas. 10 And Bhishma surrounded by a large body of troops advanced leading a mighty army, like chief of the celestials himself 11 And that mighty bowman, the son of Bharadwaja, endued with great energy, followed him, with the Kuntalas, the Dashrnas, and the Magadhas, O king, and with the Vidarbhas, the Melakas, the karnas and the Pravaranas also And the Gandharas, the Sindhusauviras, the Shvis, and the Vasatis, with all their combatants also (followed) Bhishma that ornament of battle. And Shakuni, with all his troops, protected the son of Bharadwaja. 14 And that king Duryodhan, united with all his

सौबलेयस्य वाहिनीम् ॥ १६ ॥ भूरिश्रवाः शलः शल्यो भगदत्तश्च मारिष । विंदानु
विंदा वावन्त्यौ वामंपार्श्वं मपालयन् ॥ १७ ॥ सौमदत्तिः सुशर्मांच कांबोजश्चसुद
क्षिणः । श्रुतायुश्चा च्युतायुश्च दक्षिण पक्षमास्थिताः ॥ १८ ॥ अश्वत्थामा कृपश्चैव कृत
वर्माच सात्वतः । महत्या सेनया सार्धं सेनापृष्ठे व्यवस्थिताः ॥ १९ ॥ पृष्ठगोपास्तु त
स्यासन् नानादेश्यजनेश्वराः । केतुमान् वसुदानश्च पुत्रः काश्यस्यचा भिभूः ॥ २० ॥
ततस्ते तावकाः सर्वे हृष्टा युद्धाय भारत । दध्मुः शंखान् मुदायुक्ताः सिंहनादांस्तथो
न्नदन् ॥ २१ ॥ तेषां श्रुत्वातु हृष्टानां वृद्धः कुरु पितामहः । सिंहनादं विनद्योच्चैः शंखं
दध्मौ प्रतापवान् ॥ २२ ॥ ततः शंखाश्च भेर्यश्च पेशयश्चविविधाः परैः । आनकाश्चाभ्य
हन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ २३ ॥ ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ । प्रद

कोसल दरद वृक और बालवलोगों के साथ क्षुद्रक पांडवलोगों की सेना के सम्मुख दौड़ा हे राजा भूरिश्रवा शैल शल्य भगदन्त और विन्द अनुविन्द अवन्ति देश के राजालोगोंने बायें भागको रक्षितकिया, ।१७। सोमदत्ति सुशर्मा कांबोज सुदक्षिण सतायुष श्रुतायु यहसब दक्षिणओर नियतहुए, अश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्मा यादव यह सब बड़ीसेना समेत पीछेकी ओर को नियतहुए उसके पीछे से रक्षक अनेक देशों के राजा केतुमान वसुदान और काशीके राजाका पुत्र इत्यादिहुए।२०। हे भरतवंशी इसके अनन्तर आपके उन सब पुत्रों ने जोकि युद्धके लिये बहुतप्रसन्न चित्त थे शंखोंको बजाकर सिंहनादों को किया, कौरवों के वृद्धपितामह प्रतापवान् भीष्मजीने उन प्रसन्नचित्तों के सिंहनादोंको सुनकर बड़े शब्दसे सिंहनादकरके अपने शंखको बजाया तदनन्तर दूसरी ओर के शंख भेरी आदि अनेकबाजे चारों ओरसे बजे और तुमुलशब्द हुआ तिसपीछे श्वेत घोड़ों से युक्त बड़े रथपर वर्तमान

---

brothers and with Ashwatak, Vikarn, Kosal, Darad, Vrik and Balav warriors, advanced against the Pandav armies. Bhurishrava, Shal, Shalya, Bhagdant with Vind and Anuvind the princes of Avanti, guarded the left flank. 17. Somdatti, Susharma, Kamboj, Sudakshin Shatayush and Shrutayu stood on the right; and Ashwathama, Kripacharya, Kritvarma and the Yadavas with a large army stood on the rear and were themselves guarded by Ketuman, Vasudev, the son of the king of Kasi and others. 20. Then, O descendant of Bharat; your sons cheerfully blew their conch shells in the field of battle. At this the other side too, blew their conch shells, trumpets and other musical instruments and the noise was tremendous Then riding their huge chariot drawn by white horses, Krishna and Arjun blew their conch shells decked with gold and jewels. Krishn- the lord of

ध्मतुः शंखवरौ हेमरत्नपरिष्कृतौ ॥ २४ ॥ पांचजन्यं हृषी केशो देवदत्तं धनञ्जयः। पौंड्रं दध्मौ महाशखं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ २५ ॥ अनन्त विजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः। नकुल. सहदेवश्च सुघोषमणि पुष्पकौ ॥ २६ ॥ काशिराजश्च शैब्यश्च शिखण्डी च महारथः। धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्च महारथः ॥ २७ ॥ पांचाल्यश्च महेष्वासा द्रौपद्याः पञ्चचात्मजाः। सर्वे दध्मुर्महाशखान् सिंहनादांश्च नेदिरे ॥ २८ ॥ स घोष सुमहांस्तत्र वीरैस्तैः समुदारितः। नभश्च पृथिवींचैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥ २९ ॥ एव मेते महाराज प्रहृष्टाः कुरुपाण्डवाः। पुनर्युद्धाय संजग्मुस्तापयानाः परस्परम् ॥ ३० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि कौरवव्यूहरचनायां एकपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

श्रीकृष्णजी और अर्जुनने, सुवर्ण और रत्नों से जटित उत्तम शंखों को बजाया फिर इन्द्रियोंके स्वामी जगदात्मा श्रीकृष्णजी ने तो पांचजन्य नाम शंखको और अर्जुनने देवदत्त नाम अपने शंख को बजाया, और भयकारी भीमसेन ने पौण्ड्रनाम महाशंखको बजाया औरकुन्तीकेपुत्र राजायुधिष्ठिरने अनन्त विजयनाम शंखको बजाया और नकुल सहदेवने सुघोष और मणिपुष्पकनाम शंखको बजाया और शैब्यकाशिराज और महारथी शिखंडी धृष्टद्युम्न विराट महारथी सात्यिकी बड़ाधनुर्धर पांचाल द्रुपद और द्रौपदीके पांचोंपुत्रोंने सिंहनादकोकरके अपने महाशंखोंको बजाया सब वीरों ने अच्छेप्रकार उत्तम शब्दकिये, तुमुलशब्द से आकाश और पृथ्वी शब्दायमान होगई हे महाराज इसरीति से यह कौरव और पांडव परस्पर में संतप्त करते हुए फिर युद्ध के निमित्त गये ॥ ३० ॥

?he senses and soul of the world, blew his Panchjanya conch and Arjun blew his Devadatta. Bhimsen the dreadful, blew Paundra, and Prince Yudhishthir the son of Kunti blew Anantvijaya Nakul and Sahadev blew Sughosh and Manipushpak. Shaivya the prince of Kashi, Shikhandi the great warrior, Dhrishtadyuman, Virat, brave Satyaki, Drupad the great archer of Panchal and the five sons of Draupadi roared like lions and blew their conchshells. The loud sounds of the warriors rang through the earth and sky. Thus, O Prince, did the Kauravas and the Pandavas advance aganist each other with dreadful noises." 30.



धृतराष्ट्र उवाच । एवंव्यूढेष्वनीकेषु मामकेष्वितरेषु च । कथं प्रहरतां श्रेष्ठाः
सम्प्रहार प्रचक्रिरे ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच ॥ समं व्यूढेष्वनीकेषु सन्नद्धरुचिरध्वजम् ।
अपारमिव संदृश्य सागरप्रतिमं बलम् ॥ २ ॥ तेषांमध्ये स्थितो राजन् पुत्रो दुर्य्यो
धनस्तव । अब्रवीत् तावकान् सर्वान् युद्ध्यध्वमिति दंशिताः ॥ ३ ॥ तेमनः क्रूरमाधाय
समभित्यक्तजीविताः । पाण्डवानभ्यवर्त्तन्त सर्वे एवोच्छ्रितध्वजाः ॥ ४ ॥ ततो युद्धं
समभवत्तुमुलं लोमहर्षणम् । तावकानां परेषाञ्च व्यतिषक्तरथद्विपम् ॥ ५ ॥ मुक्तास्तु
रथिभिर्बाणाश्चारुपुङ्खाः सुतेजसः । सन्निपेतुरकुण्ठाग्रा नागेषुच हयेषुच ॥ ६ ॥ तथा
प्रवृत्ते संग्रामे धनुरुद्यम्य दंशित । अभिपत्य महाबाहुर्भीष्मो भीमपराक्रमः ॥ ७ ॥
सौभद्रे भीमसेने च शैल्यकौच महारथे । कैकेये च विराटेच धृष्टद्युम्नेच पार्षते ॥८॥

अध्याय ५२ ॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय इस रीति से मेरेपुत्र और पांडवोंकी सेना के व्यूह रचनेपर प्रहार करनेवालोंमें उत्तम शूरोंने परस्परमें कैसे कैसे प्रहार किये । १ । संजय बोले कि इस रीति से सेनाके व्यूहितहोनेपर समुद्ररूप सेना को अपार देखते हुए उनवीरों के कवच तैयार हुए जिनकी ध्वजा महासुन्दर और मनोहरथीं, हे राजा उन सब में नियतहोकर आपका पुत्र दुर्योधन आप के सबपुत्रों को बुलाके कहने लगा कि तुमसब शस्त्रधारण करके युद्धकरो यह जीवनको त्यागे हुए ध्वजाको ऊंची करनेवाले सब मन मे निर्दयरूपहोकर पांडवों के सम्मुख लड़नेको उपस्थितहुए तदनन्तर आपके पुत्र और दूसरोंका युद्ध जिस में रथ और हाथी संयुक्त थे रोमहर्षण और तुमुल शब्दों से व्याप्तहुआ । ५ । सुवर्ण पंख और अत्यन्त प्रकाशित और तीक्ष्णबाण रथीलोगों के हाथोंसे छूटेहुये हाथी और घोड़ों पर गिरे इसीप्रकार युद्ध प्रारम्भहोनेपर भयकारी पराक्रमी शस्त्रधारी पितामह भीष्मजी ने धनुष को उठाये

CHAPTER LII.

"Having thus formed an array of their armies, how did the warriors of my sons and those of the Pandavas fight with one another? asked Dhritrashtra of Sanjaya 1. "Having arrayed their armies in the manner mentined above," replied Sanjaya, "that boundless ocean of their armies, shining with panoply and excellent banners, looked glorious to behold. In the midst of those armies your son Duryodhan collected his brothers and said to them, "Take up your arms for fighting." And regardless of their lives all your sons, with cruel hearts, faced the Pandavas in battle. The battle between your sons and the other party, with chariots and elephants mixed together raged furiously with tremendous noise. 5 The sharp arrows, with bright golden feathers, discharged by charioteers, fell upon the elephants and horses. At the commencement of the battle, Bhishm the great archer of dreadful prowess faced with his bow, brave Abhi-

एतेषु नरवीरेषु चेदिमत्स्येषुचाभिभुः। ववर्ष शरवर्षाणि वृद्धः कुरुपितामहः ॥ ९ ॥ अभिद्यत ततो व्यूहस्तस्मिन् वरिसमागमे। सर्वेषामेव सैन्यानामासीद्व्यतिकरोमहान् ॥ १० ॥ सादिनो ध्वजिनश्चैव हत प्रवरवाजिनः। विप्रद्रुतरथानीकाः समपद्यन्त पांडवाः ॥ ११ ॥ अर्जुनस्तु नरव्याघ्रो दृष्ट्वाभीष्मं महारथम्। वार्ष्णेयमब्रवीत् क्रुद्धो याहि यत्र पितामहः ॥ १२ ॥ एषभीष्म सुसंक्रुद्धो वार्ष्णेय मम वाहिनीम्। नाशयिष्यति सुव्यक्तं दुर्य्योधनहिते रतः ॥ १३ ॥ एष द्रोण कृप शल्यो विकर्णश्च जनार्दन। धार्त्तराष्ट्राश्च सहिता दुर्योधनपुरोगमाः ॥ १४ ॥ पंचालान्निहनिष्यन्ति रक्षिता दृढधन्विना। सोऽहं भीष्मं वधिष्यामि सैन्यहेतोर्जनार्दन ॥ १५ ॥ तमब्रवीद् वासुदेवो यत्तो भवधनञ्जय। एषत्वां प्रापयिष्यामि पितामहरथं प्रति ॥ १६ ॥ एवमुक्त्वा

हुए सम्मुख आकर, महारथी अभिमन्यु भीमसेन अर्जुन, केकय, विराट, धृष्टद्युम्न, चेदि, मत्स्य, विभु इन नौवीरों पर बाणोंकी वर्षाकरी । ९ । उस बड़े वीर के सम्मुख बड़ी सेना अत्यन्त कम्पायमान हुई और सब सेना के लोगोंको बड़ाखेद उत्पन्नहुआ, और वह अत्यन्त उत्तम घोड़ों के रथोंके सवार मारेगये जिनकी सेना हट गई थी ऐसे अकेले पांडव वर्त्तमान हुए नरों में उत्तम क्रोधरूप अर्जुन महारथी भीष्मको देखकर श्रीकृष्णजी से बोले कि वहां चलो जहां पितामहहैं । १२ । हे वृष्णिवंशी यह निश्चय है कि यह अत्यन्त क्रोधरूप भीष्म दुर्य्योधन के अभीष्ट में प्रवृत्त मेरी सेनाको अवश्य मारेंगे, हे जनार्दनजी यह द्रोणाचार्य कृपाचार्य शल्य विकर्ण और सब धृतराष्ट्रके पुत्र जिनमें अग्रगामी दुर्य्योधन है, वह सब धनुषधारियों से रक्षितहोकर पांचाल देशियों को मारेंगे सो हे जनार्दनजी मैं भी सेना समेत भीष्मजीको मारूंगा । १५ । वासुदेवजी बोले कि हे अर्जुन सावधानहो मैं तुमको अभी पितामह के रथके पास पहुँचाताहूं, हे राजा ऐसा कहकर वासुदेवजी ने उसको शीघ्रही भीष्मजी के रथके पास पहुंचाया, वह पाण्डव अर्जुन बगले के समान श्वेत

manyu, Bhimsen, Arjun, Kaikaya, Virat, Dhrishtadyumna, Chedi, Matsya and Vibhu, and showered his arrows on them. 9. The great army trembled before that great warrior and was much distressed. The riders of very excellent horses were slain and the armies of the Pandavas were dispersed When the Pandavas were left alone, brave Arjun enraged at the sight of Bhishm asked Krishna to lead him in the vicinity of the grandfather. "Surely," said he to Krishna, "Bhishm in his rage will destroy my armies for the good of Duryodhan. Dronacharya, Kripacharya, Shalya, Vikarn and all the sons of Dhritrashtra having Duryodhan at their head and protected by all the good archers, will destroy the Panchals I wish therefore, O Janardan, to destroy Bhishm and his army" 15. "Be wide awake, Arjun," said Vasudev, "I shall forthwith take you to the vicinity of Bhishm's chariot." and drove the chariot close to that of Bhishm.

ततः शौरी रथं तं लोकविश्रुतम् । प्रापयामास भीष्मस्य रथंप्रति जनेश्वर ॥ १७ ॥
ध्वलद्ध्रुपताकेन बलाकावर्णवाजिना । समुच्छ्रितमहाभीम नदद्वानरकेतुना ॥ १८ ॥
महता मेघनादेन रथेनामिततेजसा । विनिघ्नन् कौरवानीकं शूरसेनांश्च पाण्डवः
॥ १९ ॥ आयाच्छरणदः शीघ्रं सुहृदां हर्षवर्द्धनः । तमापतन्त वेगेन प्रभिन्नमिव
वारणम् ॥ २० ॥ त्रासयन्तं रणे शूरान् मर्दयन्तञ्च सायकैः । सैन्धवप्रमुखैर्गुप्त प्रा-
च्यसौवीरकेकयैः ॥ २१ ॥ सहसा प्रत्युदीयाय भीष्मः शान्तनवोऽर्जुनम् । कोहि
गाण्डीवधन्वानमन्यः कुरुपितामहात् ॥ २२ ॥ द्रोणवैकर्त्तनाभ्यां वा रथी संयातु
मर्हति । ततो भीष्मो महाराज सर्वलोकमहारथः ॥ २३ ॥ अर्जुनं सप्तसप्तत्या नारा-
चानांसमवाचनोत् । द्रोणश्च पञ्चविंशत्या कृपश्चाशतापरैः ॥ २४ ॥ दुर्योधनश्चतुः
षष्ट्या शल्यश्च नवभिः शरैः । सैन्धवो नवभिश्चैव शकुनिश्चापि पञ्चभिः ॥ २५ ॥

घोड़ों के रथपर सवार बड़ी ऊंची प्रकाशमान ध्वजाको फहराता बड़े बादल के समान गरजता हुआ सूर्य के समान प्रकाशित रथके द्वारा कौरवों की सेना और शूरसेनों को संहारकरता हुआ, मित्रों के उत्साहोंको बढ़ाने वाला शीघ्रही युद्ध भूमि में आया उस मदोन्मत्त हाथी के समान महा वेग युक्त आतेहुए युद्धमें शूरोंको कंपाते और अपने बाणों से प्रहार करके गिराते हुए अर्जुनको देखकर पूर्वी सौविर केकय जयद्रथ और सिन्धु आदि के राजाओं से रक्षित, भीष्मजीएकाएकी सम्मुख वर्त्तमान हुए कौरवों के पितामह भीष्म द्रोणाचार्य और कर्ण के सिवाय दूसरा कौनरथीहै जो गांडीवधनुषधारी अर्जुन के सम्मुख जासके तदनन्तर हे महाराज कौरवों के पितामह भीष्मजी ने तो सतत्तर बाणोंसे अर्जुनको खूबपीड़ामान किया और द्रोणाचार्य्य व कृपाचार्य ने पच्चीस २ बाणों से । २४ । दुर्योधनने चौंसठ बाणोंसे शल्यने नौंबाणोंसे और नरोत्तम अश्वत्थामाने साठ बाणोंसे विकर्ण ने तीनबाणों से और आर्त्तायनिने तीनभल्लबाणों से पांडव अर्जुन को खूब घायल किया वह

Arjun the Pandav rode on the chariot drawn by horses white as heron, over which fluttered gloriously the high banner, and roaring like thunder and destroying the Kauravas and Shursenas from his chariot, he entered the army to the great joy of his friends. Seeing him coming like a mad elephant and shaking and killing the warriors with the shower of his arrows, Bhishm, protected by the Sauvirs of the East, the Kaikeyas, jayadrath and the princes of Sindhu and other places, turned upon him. Who else except Bhishm the grandfather of the Kauravas, Dronacharya or Karan could face Arjun the bearer of Gandiv! Then, O king! Bhishm the grandfather wounded Arjun with seventy seven arrows and Dronacharya and Kripacharya each of them wounded him with twenty five. 24. Duryodhan shot sixty four arrows; Shalya nine; Ashwathama, the best of men, sixty; Vikarn three and Artayani too, hit and wounded Arjun the Pandava

विकर्णोदराविभिर्भल्ले राजन् विव्याधपाण्डवम् । स तैर्विद्धो महेष्वासः समन्तान्निशितैः शरैः ॥ २६ ॥ न विव्यथे महाबाहुर्भिद्यमान इवाचलः । स भीष्मं पञ्चविंशत्या कृपञ्च नवभिः शरैः ॥ २७ ॥ द्रोणं षष्ट्या नरव्याघ्रो विकर्णञ्च त्रिभिः शरैः । शल्यं चैव त्रिभिर्बाणै राजानञ्चैव पञ्चभिः ॥ २८ ॥ प्रत्यविध्यदमेयात्मा किरीटीभरतर्षभ । तं सात्यकिर्विराटश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ॥ २९ ॥ द्रौपदेयाभिमन्युश्च परिवव्रुर्धनञ्जयम् । ततो द्रोणं महेष्वासं गाङ्गेयस्य प्रिये रतम् ॥ ३० ॥ अभ्यवर्त्तत पाञ्चाल्यः संयुक्तः सह सोमकैः । भीष्मस्तु रथिनां श्रेष्ठो राजन् विव्याध पाण्डवम् ॥ ३१ ॥ अशीत्या निशितैर्बाणैस्ततोऽक्रोशन्त तावकाः । तेषां तु निनदं श्रुत्वा स हृष्टानांप्रहृष्ट वत् ॥ ३२ ॥ प्रविवेश ततो मध्यं नरसिंहः प्रतापवान् । तेषांमहारथानां मध्यं प्राप्य धनञ्जयः ॥ ३३ ॥ चिक्रीड धनुषा राजँल्लक्ष्यं कृत्वामहारथान् । ततो दुर्यो

महाबाहु अर्जुन उनके चारोंओर की बाणवृष्टि से पर्वत के समान आच्छादित और घायल भी होकर पीड़ामान नहीं हुआ फिर उस नरोत्तम अर्जुनने भीष्मजी को पच्चीस बाणों से कृपाचार्य्य को नौबाणों से द्रोणाचार्य्य को साठ बाणों से विकर्ण को तीन बाणों से आर्तायनि को भी तीनबाणों से और राजादुर्योधन को भी पांच बाणों से घायल किया, जो कि अर्जुनबड़ा साहसी और मुकुटधारी था तो भी हे भरतर्षभ सात्विकी विराट धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पांचो पुत्र और अभिमन्यु इन सबने आकर अर्जुन को चारोंओर से रक्षितकिया तदनन्तर राजाद्रुपद भीष्म के मनभीष्ट में प्रवृत्त द्रोणाचार्य के सम्मुख उपस्थित हुआ फिर रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने शीघ्रही पांडव अर्जुन को । ३१ । तक्षिण अस्सी बाणों से घायल किया उसने आपके पुत्र प्रसन्न हुए तदनन्तर रथियों में उत्तम प्रतापी अर्जुन उन प्रसन्न चित्तों की गर्जनाको सुनकर बड़े प्रसन्न चित्त के समान सेनामें घुसा हे राजा,वह अर्जुन उन उत्तम रथियों के मध्यको पाकर महारथियों को चिह्नितकर

with three of his broad pointed arrows. But though Arjun was covered with arrows like a mountain with clouds, he did not shake in spite of the wounds he had received. Arjun the best of men pierced Bhishm with twenty five arrows, Kripacharya with nine, Dronacharya with sixty, Vikarn with three, Artayani with three and prince Duryodhan with five. Arjun the bearer of diadem, of great prowess, was assisted by Satwiki, Virat, Dhrishtadyumna, the five sons of Draupadi and Abhimanyu who guarded him on all sides. Then Drupad, intent on doing harm to Bhishm, faced Dronacharya and Bhishm the best of charioteers faced Arjun the Pandva (31) and wounded him with eighty arrows to the great joy of your sons. Then Arjun of great prowess hearing their cheerful cries, entered the army with a cheerful mind and roared in the midst of the charioteers

घनो राजा भीष्ममाह जरेश्वर। ॥ ३४ ॥ पश्यमानं स्वकं सैन्यं दृष्ट्वापार्थेन सद्गुण। एष पाण्डुसुतस्तात कृष्णेनसहितोबली ॥ ३५ ॥ यततांसर्व सैन्यानां मूलं नः परिकृन्तति। त्वयिजीव त गाङ्गेयद्रोणे च रथिनां वरे ॥३६॥ त्वत्कृते चैवकर्णोऽप न्यस्तशस्त्रो विशाम्पते। न युध्यात रणे पार्थं हितकामः सदामम ॥ ३७ ॥ सतथा कुरु गाङ्गेय यथा हन्येत फाल्गुनः। एवमुक्तस्ततो राजन् पिता देवव्रतस्तव ॥ ३८ ॥ धिक् क्षात्रंधर्ममित्युक्त्वा प्रायात् पार्थरथंप्रति। उभौ श्वेतहयौ राजन् संसक्तौप्रेक्ष्य पार्थिवाः ॥ ३९ ॥ सिंहनादान्भृशंचक्रु शंख न्दध्मुश्च मारिष। द्रौणिर्दुर्योधनश्चैव विकर्णश्च तवात्मजः ॥ ४० ॥ परिवार्य रणे भीष्मं स्थिता युद्धाय मारिष। तथैव पाण्डवाः सर्वे परिवार्य धनञ्जयम् ॥ ४१ ॥ स्थिता युद्धाय महते ततो युद्धमवर्त्तत।

के धनुपलिये हुए घूमने लगा तदनन्तर राजा दुर्योधन युद्ध में अपनी सेनाको अर्जुन के हाथ से पीड़ामान देखकर भीष्मसे बोला हेतात यह बलवान् पांडव श्रीकृष्णजी के साथ। ३५। सब सेनाओंको मारता गिराताहुआ रथियों में श्रेष्ठ गांगेय और द्रोणाचार्य के जीवते होनेपर हमारेमूलको काटे डालता है हेराजा आपहीके कारण सदैव मेरा हित चाहने वाला यह कर्ण भी वेसलाह होकर युद्धमें पांडवों से नहीं लड़ता है। ३७। हे भीष्मजी सो तुम ऐसाही करो जिससे अर्जुन नाशको पावे तदनन्तर हे राजा इसप्रकार कहे हुए आपके पिता देवव्रत भीष्मजी क्षत्री धर्मको धिक्कार है ऐसा शब्द कहकर अर्जुन के रथके समीप आये हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र राजाओं ने उनदोनों महाबली श्वेत घोड़े वालों को मिलाहुआ देखकर अत्यन्त सिंहनादक शंखों को बजाया अश्वत्थामा और आपका पुत्र दुर्योधन और विकर्ण। ४०। यहसब युद्ध में भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित करके युद्धके निमित्त नियत हुए और हे राजा इसी प्रकार से सब पाण्डव लोग अर्जुनको चारों ओर से घेरकर बड़े युद्ध करने के निमित्त नियतहुए इसके पीछे युद्ध प्रारंभ हुआ फिर

hitting the best of them. Seeing his army thus destroyed by Arjun, Duryodhan said to Bhishm, "Father, this brave Pandav, assisted by, Shree Krishn, (35) is destroying my armies in the presence of you and Dronacharya the best of charioteers and will thus uproot us. Having quarrelled with you, Karan will not fight against the Pandavas. 37. Cause the destruction of Arjun in some way or other." Hearing this, Devabrat Bhishm cursed the Kshatrya duties and came near Arjun's chariot. Seeing those two great warriors face to face, the kings roared like lions and blew their conch shells Ashwathama and your sons Duryodhan and Vikarn (40) guarded Bhishm on all sides and prepared for fighting. In the same manner all the Pandavas surrounded Arjun and stood ready to fight. Then

गाङ्गेयस्तु रणेपार्थं मानर्च्छन्नवभिःशरैः ॥४२। तमर्जुनःप्रत्यविध्यत् दशभिर्मर्मभेदिभिः। ततः शरसहस्रेण सुप्रयुक्तेन पाण्डवः ॥ ४३ ॥ अर्जुनः समरश्लाघी भीष्मस्यावारयद्दिशः। शरजालं ततस्तत्तु शरजालेन मारिष ॥ ४४ ॥ वारयामास पार्थस्य भीष्मः शान्तनवस्तदा। उभौ परमसंहृष्टावुभौ युद्धाभिनन्दिनौ ॥ ४५ ॥ निर्विशेषमयुध्येतां कृतप्रतिकृतैषिणौ। भीष्मचापविमुक्तानि शरजालानि संघशः ॥ ४६ ॥ शीर्यमाणान्यदृश्यन्त भिन्नान्यर्जुनसायकैः। तथैवार्जुनमुक्तानि शरजालानि सर्वशः ॥ ४७ ॥ गाङ्गेयशरनुन्नानि प्रापतन्तमहीतले। अर्जुन पञ्चविंशत्याभीष्ममार्च्छच्छितैःशरैः ४८॥ भीष्मोपि समरे पार्थं विव्याध निशितैः शरैः। अन्योन्यस्यहयान् ध्वजौ च सुमहाबलौ ॥ ४९ ॥ रथेषां रथचक्रेच चिक्रीडतुररिन्दमौ। ततः क्रुद्धो महाराज भीष्मः प्रहरतांवरः ॥ ५० ॥ वासुदेवं त्रिभिर्बाणै राजघान स्तनान्तरे। भीष्मचापच्युतैस्तैस्तु निर्विद्धो मधुसूदनः ॥ ५१ ॥ विरराज रणे राजन् सपुष्प इव किंशुकः।

गंगापुत्र भीष्मजी ने युद्धमें नववाणों से अर्जुनको घायल किया। ४२। फिर अर्जुनने मर्मभेदी दशवाणों से उनको घायल किया तदनन्तर युद्ध में प्रशंसनीय पांडव अर्जुनने अच्छे प्रकार से चलाये हुए हजार वाणों से भीष्मजी की दिशाओं को रोका, तदनन्तर भीष्मजी ने अपने वाणों से अर्जुनके उनवाणों के जालोंको रोका, दोनों युद्ध में प्रसन्न चित्त और उत्साह मानने वाले प्रहार के वदले प्रहार करने की इच्छावाले युद्ध में अतिशयता पूर्वक प्रवृत्त हुए, भीष्मजी के धनुष से छूटेहुए वाणजालों के समूह अर्जुन के वाणों से कटे हुए दृष्टपड़े, इसीप्रकार अर्जुन के छोड़े हुए वाणजाल भीष्मजीके वाणों से टूट२कर पृथ्वीपर गिरपड़े फिर अर्जुन ने पच्चीस तीक्ष्ण शरोंसे भीष्मजीको व्यथित किया। ४८। भीष्मजी नेभी नव वाणों से अर्जुन को घायल किया वह दोनों महावली शत्रुओं के जीतनेवाले युद्ध में घोड़ों को और रथोंको परस्पर घायल करके, क्रीड़ा करने वाले होगये तदनन्तर हे राजा महाक्रोध रूप महाप्रहारी भीष्मजी ने, तीन वाणों से वासुदेवजी को स्तनान्तर में घायल किया, उन भीष्मजी के धनुष से निकले हुये वाणों से घायल

the fighting began. Bhishm wounded Arjun with nine arrows and recieved ten from him. Then Arjun ths best of warriors, spread a thousand well aimed arrows round Bhisam and both the warriors returned each other's blows with great skill. The network of arrows was cut down by those of Bhishm. Arjun then wounded Bhishm with twenty five arrows. 48. Bhishm too wounded Arjun with nine arrows. The two great warriors, conquerers of enemies, wounded the horses of each other's chariot and delighted in their work. Then Bhishm the great warrior struck Vasudev in the midle of the breast with three arrows. Wounded by the arrows of Bhishm, Madhusudan looked like a Kinshuk tree in bloom. Seeing Madhav wounded by

ततोर्जुनोभृशंक्रुद्धो निर्विद्धं प्रेक्ष्यमाधवम् ॥ ५२ ॥ सारथिं कुरुवृद्धस्य त्रिभिर्भेदाशितैः
शरैः। यतमानौतुतौ वीरा वन्योन्यस्य वधंप्रति ॥ ५३ ॥ नशक्नुतां तदान्योन्य
मभिसंधातु माहवे। तौमंडलान चित्राणि गतप्रत्यागतानिच ॥ ५४ ॥ अदर्शयेतां
बहुधा सूतसामर्थ्य लाघवात्। अंतरंच प्रहारेपुतर्कयंतौ परस्परम् ॥ ५५ ॥ राजन्
तरमार्गस्थोस्थितावारतांमुहुर्मुहुः। उभौ सिंहरवोन्मिश्रं शंखशब्दं च चक्रतुः ॥ ५६ ॥
तथैव चापनिर्घोषं चक्रतुस्तौ महारथौ। तयोः शंखाननादेन रथनेमिस्वनेनच ५७॥
दारिता सहसा भूमिश्चकंपच ननादच। नोमयोरंतरंकश्चिद्दृदर्शे भरतर्षभ ॥ ५८ ॥
बलनौ युद्ध दुर्धर्षा वन्योन्यसदृशावुभौ। चिह्नमात्रेण भीष्मंतु प्रजज्ञुस्तत्र कौरवाः
॥ ५९ ॥ तथा पाण्डुसुताः पार्थं चिह्न मात्रेण जज्ञिरे। तयोर्नृवरयोर्दृष्ट्वा तादृशंतं
पराक्रमम् ॥ ६० ॥ विस्मयं सर्व भूतानि जग्मुर्भारतसंयुगे। नतयोर्विवरंकश्चिद्रणे पश्य

मधुसूदनजी, युद्धमें फूले हुये किंशुक वृक्षके समान शोभायमान हुए तदनन्तर माधवजीको घायल देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अर्जुन नेभी भीष्म के सारथी को तीन वाणोंसे घायल किया तब युद्धमें एक दूसरे के रथपर उपाय करने वाले दोनों वीर, परस्पर में गिरानेको समर्थ नहीं हुए फिर उन्हों ने सूतके बलकी तीव्रता से वारंवार विचित्र मंडलोंको दिखलाकर, अवकाश के मार्ग देखने में नियत दोनों वीरों ने वारंवार प्रहारों के बीचमें अवकाश को तकने हुए सिंहनाद पूर्वक शंखों के शब्दों को किया । ५६ । और इसीप्रकार दोनों महारथियों ने धनुषों के भी शब्दों को किया, उन दोनों के शब्दोंसे और रथोंके शब्दोंसे अकस्मात् पृथ्वी फटगई और कंपायमान होकर शब्दायमानभी हुई हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उनदोनों के अन्तरको किसीनेभी नहीं देखा दोनों युद्धमें बलवान् शूरवीर परस्पर में समान थे वहां कौरव लोग केवल चिह्नों को देखकर भीष्म जीके पासगये, इसीप्रकार पाण्डवों ने भी केवल चिह्नही मात्र से अर्जुनकोपाया हेराजाधृतराष्ट्र उन दोनों

those arrows Arjun too, in great anger, wounded the chariot driver of Bhishm with three arrows Thus wounding each other, the two warriors could not defeat each other and with the skill of their charioteers described circles of their arrows again and again. Watching an opportunity to gain advantage over each other, they blew their conchshells and roared like lions 56- Both the warriors twanged their bows. The earth cracked and shook with a noise at the sound of those warriors and rumbling of their chariot wheels. None could see any distinction between the two warriors; both were strong, brave and of equal prowess. The Kauravas could approach Bhishm by seeing his banner and the Pandavas came near Arjun by the same means. All beings were amazed to see the great prowess of those

तिभारत ॥६१॥ धर्मेस्थितस्यहि यथानकश्चिद्वृजिनं कथंचित् । उभौच राजा लेन तावद्दृश्यौ बभूवतुः ॥ ६२ ॥ प्रकाशौच पुनस्तूर्णं बभूवतुरुभौरणे । तत्रदेवाः स गंधर्वाश्चारणाश्चर्षिभिः सह ॥ ६३ ॥ अन्योन्यं प्रत्यभाषंत तयोर्दृष्ट्वा पराक्रमम् । नशक्यौ युधि संरब्धौ जेतुमेतौ कथंचन ॥ ६४ ॥ स देवासुर गंधर्वैर्लोकैरपिमहा रथौ । आश्चर्यभूतं लोकेषु युद्धमेतन्महाद्भुतम् ॥ ६५ ॥ नैत दृशानि युद्धानि भवि ष्यंति कथंचन । नहि शक्यो रणे जेतुं भीष्म. पार्थेन धीमता ॥ ६६ ॥ सधनुःसरथः साश्वः प्रवपन् सायकान्रणे । तथैव पांडवं युद्धे देवैरपि दुरासदम् ॥ ६७ ॥ नवि जेतुंरणे भीष्म उत्सहेत धनुर्धरम् । आलोकादपि युद्धंहि सममेतद्भविष्यति ॥ ६८ ॥ इतिस्मवाचोऽश्रूयंत प्रोचरत्यस्ततस्ततः । गांगेयार्जुनयोः संख्ये स्तव युक्ता विशांपते ॥ ६९ ॥ त्वदीयास्तुतदायोधाः पांडवेयाश्च भारत । अन्योन्यं समरे जघ्नुस्तयोस्तत्र

नरोत्तमों के उस महापराक्रम को देखकर युद्धमें सब जीवमात्रों ने आश्चर्य्य किया और कोई भी उनदोनों के अन्तरको ऐसे नहीं देखसक्ताथा जैसे कि धर्मवान् पुरुष का कोई पाप कहीं दिखाई नहीं देता वह दोनों बाणजालों में गुप्तहोगये । ६२ । इस के पीछे दोनों शीघ्रही प्रकटहोगये वहां गंधर्वो समेत देवताओं ने और महर्षियों समेत चारण लोगों ने इनदोनों के पराक्रमको देखकर परस्पर में वार्त्तालाप की कि यह युद्धमें क्रोध रूप दोनों महाबली देवता असुर औरगंधर्वों से भी किसी दशा में लोकमें जीतने के योग्य नहीं है यह बड़ाभारी अपूर्व्व युद्ध इसलोक में होरहा है ऐसा युद्धकभी नहीं होगा । ६५ । धनुपरथ और घोड़ोंसमेत युद्ध भूमि में शायकों को छोड़ते हुए भीष्मजी युद्धमें बुद्धिमान् अर्जुन को विजय करने के योग्य नहीं हैं इसीप्रकार युद्ध में देवताओं से भी अजेय धनुषधारी पांडवोंकी विजय करने को भीष्मजीभी उत्साह नहीं करते देखने सेभी यह युद्ध बराबर का होगा, हे राजा भीष्म और अर्जुनकी प्रशंसा के यह वचन जहांतहां फैलेहुए सुनेगये ।६९। तदनन्तर उनदोनों के पराक्रमहोने पर आपके शूरवीर और पांडवों ने परस्पर में युद्ध किया

---

two best of men and could find no distinction in either as one does not find a sin in a virtuous man. Both were hid within the network of arrows. 62. They appeared again in a short time. The gandharvas, the gods and the maharshis with the Charans, present there, saw their prowess and talked with one another as follows:—"These enraged warriors are not be conquered in battle by gods, asurs and gandharvas. The world has not seen such a fight nor is likely to see it again. 65. Discharging arrows with the help of his bow, chariot and horses, Bhishm cannot conquer Arjun nor does he aspire to conquer the Pandava archers who are inconquerable even by gods. Both the warriors are equal in prowess." Such words of the

पराक्रमे ॥ ७० ॥ शितधारैस्तथा खड्गैर्विमलैश्च परश्वधैः । शरैरन्यैश्च बहुभिः शस्त्रै नानाविधैरपि ॥ ७१ ॥ उभयोः सेनयोः शूरान्यकृंतत परस्परम् । वर्तमाने तथाघोरेतस्मिन्युद्धे सुदारुणे । द्रोणपांचाल्ययोः राजन् महानासीत् समागमः ॥ ७२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मार्जुनयुद्धे द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथंद्रोणो महेष्वासः पांचाल्यश्चापि पार्षतः । उभौ समीयतुर्युद्धे तन्ममाचक्ष्व संजय ॥ १ ॥ दिष्टमेव परंमन्ये पौरुषादिति मेमतिः । यत्रशांतनवो भीष्मो नातरद्युधि पांडवम् ॥ २ ॥ भीष्मोहि समरे क्रुद्धो हन्याल्लोकांश्चराचरान् । सकथ पांडवं युद्धेनातरत् संजयौजसा ॥ ३ ॥ संजय उवाच । शृणुराजन् स्थिरोभूत्वा युद्धमेतत्सुदारुणम् । नशक्यः पांडवाजेतु देवैरपि सवासवैः ॥ ४ ॥

इसीप्रकार तीव्रधार खड्ग और निर्मल परशे बाण और अन्य २ प्रकार के अनेक शस्त्रों से दोनों ओरके शूरवीरों ने परस्पर में एकने दूसरेको प्रहार किया हे राजा इसी रीति से उसघोर और महा भयानक युद्धहोनेपर द्रोणाचार्य और द्रुपदकी बड़ी भारी लड़ाई हुई ॥ ७२ ॥

अध्याय ॥ ५३ ॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्नदोनों बुद्धिमान् कैसे युद्धमें परस्पर सम्मुख हुए उसका वृत्तान्त मुझ से कहो, हे संजय मैं उद्योग से प्रारब्धको बड़ा मानताहूं जहां युद्ध में शान्तनु भीष्मजी ने पांडव अर्जुनको विजय नहीं किया जो भीष्म रण में क्रुद्धहोकर सबस्थावर जंगमजीवों कोभी मारसक्ता है उस महावीरने किस हेतु से युद्धमें पराक्रमकरके पांडव अर्जुनको नहीं मारा । ३ । संजय बोले कि हे राजा तुम स्थिरचित्त होकर इस बड़े भारी भयानक युद्धको सुनो कि पांडव अर्जुन इन्द्रादि देवताओं सेभी विजय करने के योग्य नहीं है द्रोणाचार्य

---

praises of Bhishm and Arjun were heard on all sides. 69. Your sons and the Pandavas then fought with bright axes and other weapons. The fighting between Dronacharya and Drupad was very furious."72

CHAPTER LIII

"Describe the encounter between Dronacharya and Dhrishtadyumna, Sanjaya. I believe fate to be superior to prowess; for Bhishm did not conquer Arjun the Pandav in battle, though he could destroy all the moveables and immoveables. How it was that he did not kill the Pandav Arjun in spite of all his prowess," asked Dhritrashtra of Sanjaya 3. "Hear attentively, king" replied Sanjaya "about the dreadful war. Arjun the Pandav is inconquerable even by gods. Dronacharya wounded Dhrishtadyumna with many arrows

द्रोणस्तु निशतैर्बाणैर्धृष्टद्युम्नमविध्यत । सारथिं चास्य भल्लेन रथनीडाद पातयत्
॥ ५ ॥ तथास्य चतुरो वाहाश्चतुर्भिः सायकोत्तमैः । पीडयामास सक्रुद्धो धृष्टद्युम्नस्य
मारिष ॥ ६ ॥ धृष्टद्युम्नस्तता द्रोण नवत्यानिशतैः शरैः । विव्याध प्रहसन्वीरस्तिष्ठतिष्ठे
तिचाब्रवीत् ॥ ७ ॥ तत पुनरमेयात्मा भारद्वाज प्रतापवान् । शरैः प्रच्छादया
मास धृष्टद्युम्नममर्षणम् ॥ ८ ॥ आददे च शरं घोरं पार्षतातचिकीर्षया । शक्राशनि
समस्पर्शं कालदण्डमिवापरम् ॥ ९ ॥ हाहाकारो महानासीत् सर्वसैन्येषु भारत ।
तमिषुसंधितदृष्ट्वा भारद्वाजेन संयुगे ॥ १० ॥ तत्राद्भुतमपश्याम धृष्टद्युम्नस्य पौरुषम् ।
यदेकः समरे वीरस्तस्थौ गिरिरिवाचल ॥११॥ तच्चदीप्तं शरं घोरं मायान्तं मृत्युमात्मन ।
चिच्छेद शरवृष्टिं च भारद्वाजे मुमोच ह ॥ १२ ॥ तत उच्चुक्रुशुः सर्वे पञ्चाला पाण्डवै
सह । धृष्टद्युम्नेन तत्कर्म कृतं दृष्ट्वा सुदुष्करम् ॥ १३ ॥ तत शक्तिं महावेगां

ने नाना प्रकार के वाणों से धृष्टद्युम्नको घायल किया और भल्लों से उसके सारथी को रथके नीडसे नीचे गिरा के महाक्रोधित होकर उस धृष्टद्युम्न के घोडोंकोभी चार शायकों से महापीडत किया, ताभी वडे वीर धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य को नव्वे तीक्ष्ण शरों से घायल किया और तिष्ठतिष्ठ शब्दो काभी किया तदनन्तर वडे प्रतापी द्रोणाचार्य जीने उस धृष्टद्युम्नको मारे वाणो के आच्छादित करादिया । ८ । और उसके मारने के लिये इन्द्रवज्र के समान स्पर्श वाले मृत्युदण्डके समान घोर वाणको हाथ में लिया, हे राजा उस युद्ध में द्रोणाचार्य के चढायेहुए उसशरको देखकर सब सेना में हाहाकार हुआ, उसस्थान में हमने धृष्टद्युम्न के अपूर्व पराक्रमको देखा कि अकेला ही शूरवीर युद्धमें पर्वतके समान अचल होकर नियत खडा रहा । ११ । और उस प्रकाशित घोर मृत्युरूप आये हुए वाणको अपने वाणोसे काटडाला और द्रोणाचार्य्य के ऊपर वाणोंको वरसाया तदनन्तर धृष्टद्युम्नके कियेहुए उस कठिन कर्मको देखकर पाण्डवों समेत पांचाल

---

and killed his chariot driver who fell down from his seat Then in great anger he wounded Dhrishtadyumna's horses with four broad pointed arrows *Dhrishtadyumna pierced Dronacharya with ninety* sharp arrows and challenged him with the cry of stay, stay' Then Dronacharya of great prowess covered Dhrishtadyumn with a shower of arrows 8 He took up a hard arrow like vajra or the staff of Death to destroy Dhrishtadyumna All the warriors of the army who saw that arrow on the bow of Dronacharya expressed signs of grief. We saw there the matchless prowess of Dhrishtadyumn who alone stood in battle immoveable like a mountain 11 And seeing that dreadful arrow coming towards him like Death himself, cut it with his own arrows and showered his arrows over Dronacharya The Pandavas with the Panchals cried loudly at the sight of Dhrishta-

स्वर्णवैदूर्यभूषिताम् । द्रोणस्यनिधनाकांक्षी चित्रोपसपराक्रमी ॥ १४ ॥ तामापतंतीं सहसा शक्तिं कनकभूषिताम् । चिच्छेद समरे भारद्वाजोहसन्निव ॥ १५ ॥ शक्तिं विनिहतां दृष्ट्वा धृष्टद्युम्न प्रतापवान् । ववर्ष शरवर्षाणि द्रोणं प्रति जनेश्वर १६॥ शरवर्षं ततस्तत्तु सन्निवार्य महायशाः । द्रोणो द्रुपद पुत्रस्य मध्ये चिच्छेद कार्मुकम् ॥ १७ ॥ सच्छिन्न धन्वा समरे गदांगुर्वीं महायशाः । द्रोणाय प्रेषयामास गिरिसार मयीं बली ॥ १८ ॥ सा गदावेगवन्मुक्ता प्रायाद्द्रोण जिघांसया । तत्राद्भुतमपश्याम भारद्वाजस्यपौरुषम् ॥ १९ ॥ लाघवाद् ध्वंसयामास गदांहेम विभूषिताम् । ध्वंसयित्वा गदांतांच प्रेषयामास पार्षतम् ॥ २० ॥ भल्लान् सुनिशितान् पीतान् स्वर्ण पुंखान् सुदारुणान् । ते तस्य कवचं भित्वा पपुः शोणित माहवे ॥ २१ ॥ अथान्यद्धनुरादाय धृष्टद्युम्नो महारथः । द्रोणं युधिपराक्रम्य शरैर्विव्याधपञ्चभिः ॥ २२ ॥ रुधिराक्तौ ततस्तौतु

देशी लोग उच्चशब्द को पुकारे। ११ । तदनन्तर द्रोणाचार्य के मारने की इच्छा करनेवाले उस पराक्रमी ने बड़ी वेगवान सुवर्ण वैडूर्य जटित महाघोर बरछी को मारा इस बरछी को आता देखकर प्रसन्नचित्त द्रोणाचार्य्य ने शीघ्रही अपने बाणों से मार्ग में काटकर गिरा दिया। १५ । हे राजा तब उस धृष्टद्युम्न प्रतापी ने अप नी उग्रबरछीको कटा हुआ जान के द्रोणाचार्य के ऊपर अनेक बाणोंको बरसाया फिर महायशस्वी द्रोणाचार्य्य ने धृष्टद्युम्नकी बाणोंकी बरसाको रोककर उसके धनुप को मध्य मेंसे काटडाला, फिर उस कटे हुए धनुप वाले महाप्रतापी ने अपनी एक भारीलोहे की गदाको फिराकर द्रोणाचार्य्य के ऊपर फेंका, उसके हाथकी छूटी गदा द्रोणाचार्य्यके मारनेको शीघ्रही आई तो वहांहमने द्रोणाचार्य्यके अपूर्व पराक्रमको देखा। १९ । कि उससुवर्णित घोरगदाको खण्ड २ करके अत्यन्त तीक्ष्ण पीतांग सुनहरी शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणको धृष्टद्युम्नके ऊपर फेंका उसबाण ने उसके कवचको काटकर उसके रुधिर को पिया, तदनन्तर बड़ेवीर धृष्टद्युम्नने दूसरे धनुपको लेकर युद्धमें महा पराक्रमकरके पांचबाणों से द्रोणाचार्य्य

dyumna's deed of prowess. 18. Then wishing to kill Dronacharya, he hurled at him his swift spear, adorned with gold and gems. Seeing the dreadful dart coming towards him, Dronacharya, with a cheerful mind, cut it down with his arrows. 15. Seeing his good spear thus cut down by Drona, Dhrishtadyumn showered his arrows on him. Dronacharya checked the shower of Dhrishtadyumna's arrows and cut his bow from the middle. The brave warrior, with his bow cut asunder, hurled his iorn mace at Dronacharya. We saw the matchless prowess of Dronacharya when the mace was coming on to kill him. 19. He cut down the g lden dreadful mace into pieces and discharged a sharp arrow of golden colour at him. The arrow pierced through the armour and drank his blood. Brave Dhrishtadyumn then took up another bow and with great prowess

शुशुभाते नरर्षभौ । वसन्तसमये राजन् पुष्पिताविव किंशुकौ ॥ २३ ॥ अमर्षितस्ततो राजन् पराक्रम्य चमूमुखे । द्रोणोद्रुपद पुत्रस्य पुनश्चिच्छेद कार्मुकम् ॥ २४ ॥ अथैनं छिन्नधन्वानं शरैः सन्नतपर्वभिः अभ्यवर्षदमेयात्मा वृष्ट्यामेघ इवाचलम् ॥ २५ ॥ सारथिं चास्य भल्लेन रथनीडाद पातयत् । अथास्य चतुरो वाहांश्चतुर्भिर्निशितैः शरैः ॥ २६ ॥ पातयामास समरे सिंहनादं ननादच ।ततो परेण भल्लेन हस्ताच्चाप मथाच्छिनत् ॥ २७ ॥ सच्छिन्न धन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः । गदापाणि रवारोहत् ख्यापयन् पौरुषंमहत् ॥ २८ ॥ तामस्य विशिखैस्तूर्णं पातयामास भारत । रथादनवरूढस्य तदद्भुत मिवाभवत् ॥ २९ ॥ ततः स विपुलं चर्म शत चंद्रंच भानुमत् । खड्गंच विपुल दिव्य प्रगृह्य सुभुजो वली ॥ ३० ॥ अभिदु द्राव वेगेन द्रोणस्य वधकांक्षया । आमिषार्थी यथा सिंहो वनेमत्तमिवद्विपम् ॥ ३१ ॥

को घायल किया, तदनन्तर वहदोनों रुधिरसे भरेहुएवीर ऐसेशोभायमानहुये जैसे कि वसंतऋतुमें लालफूलवाले किंशुक वृक्षशोभादेते हैं । २३ । हेराजा तदनन्तर युद्धभूमि में महाक्रोधरूप द्रोणाचार्य्य ने बड़े पराक्रम से धृष्टद्युम्नके धनुष को काट कर उसको मारे वाणों के ऐसे ढक दिया जैसे बादल वरसाकरके पर्व्वत को ढक देता है, फिर भल्लों से इसके सारथी को रथ के नीढ से गिरादिया और चारों घोड़ोंकोभी चार तीक्ष्ण वाणों से पृथ्वीपर गिरा दिया, और सिंहनाद कर के दूसरे वाणसे उसके दूसरे धनुषको भी गिराया । २७ । वह धनुष रथ और घोड़े सारथी मृतकवाला धृष्टद्युम्न गदाको हाथ में लेकर अपनी वीरताको प्रकटकरता हुआ रथसे उतरा उससमय द्रोणाचार्य्य ने बड़ी शीघ्रता से रथ से उतरनेभी नहीं पाया था कि उसकी गदाको एक विशिख वाणसे काटकर गिरादिया यह बड़ा आश्चर्य्यसा हुआ तदनन्तर वह सुन्दर भुजाधारी महावली सुवर्णकी सूर्य्य चन्द्रमावाली बड़ी ढाल और दिव्य खड्गको लेकर द्रोणाचार्य्य के मारनेकी इच्छासे बड़े वेग युक्तहोकर सम्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि मांसका चाहनेवाला सिंह वन में मतवाले हाथीके ऊपर दौड़ताहै ।

wounded Dronacharya with five arrows. Then the two bleeding warriors looked like Kinshuk trees in bloom in the season of spring. 23 Then Dronacharya, in the excess of rage, cut down Dhrishtadyumna's bow and covered him with arrows like a hill with clouds. Then he killed his chariot driver who dropped down from his seat, killed all the four horses with sharp darts and with a lion's roar cut down his second bow. 27. Destitute of bow, chariot, horses and driver, Dhrishtadyumna leapt down from his chariot, mace in hand, showing his prowess; but as soon as he had come down from his chariot, Dronacharya cut the mace down from his hand with a sharp arrow. All this was a work of wonder. Then that brave warrior of handsome arms, took up his huge golden shield bearing the sun and the

तत्राद्भुतमपश्याम भारद्वाजस्य पौरुषम् । लाघवंचास्त्र योगंच बलंबाह्वोश्च भारत
॥ ३२ ॥ यदेनं शरवर्षेण वारयामास पार्षतम् । न शशाकततो गन्तुं बलवानपि संयुगे
॥ ३३ ॥ निवारितस्तु द्रोणेन धृष्टद्युम्नो महारथः । न्यवारयच्छरौघांस्तांश्चर्मणा
कृतहस्तवत् ॥ ३४ ॥ ततो भीमोमहाबाहुः सहसाभ्यपतद्बली । साहाय्यकारीस
मरे पार्षतस्य महात्मनः ॥ ३५ ॥ सद्रोणंनिशितैर्बाणै राजन् विव्याध सप्तभिः ।
पार्षतंच रथं तूर्णं स्वकमारोपयत्तदा ॥ ३६ ॥ ततो दुर्योधनो राजन् भानुमंतमचो
दयत् । सैन्येन महतायुक्तं भारद्वाजस्य रक्षणे ॥ ३७ ॥ ततः सामहतीसेनाक
लिंगानांजनेश्वर । भीमसभ्युद्ययौ तूर्णं तव पुत्रस्य शासनात् ॥ ३८ ॥ पांचाल्य
मथसंत्यज्यद्रोणोपि रथिनांवरः । विराटद्रुपदौ वृद्धौ वारयामास संयुगे ॥ ३९ ॥
धृष्टद्युम्नोपि समरे धर्मराजानमभ्ययात् । ततः प्रववृते युद्धं तुमुलंलोमहर्षणम् ॥ ४० ॥

। ३१ । हे राजा वहां हमने द्रोणाचार्य्य की वीरता और अस्त्रयोग से हस्तलाघवता अपूर्व्व प्रकारकी देखी कि अकेलेनेही बाणोंकी बरसा कर के धृष्टद्युम्न को रोक दिया तदनन्तर उस महायुद्ध में कोई महाबली भी जानेको समर्थ नहींहुआ, वहां हमने बड़े रथके समीप नियत और बाण विद्यामें कुशलके समान बाणसमूहों को ढालसे रोकते हुये धृष्टद्युम्न को देखा । ३४ । तदनन्तर महाबाहु पराक्रमी भीमसेन युद्धमें महात्मा धृष्टद्युम्न की सहायता करने वाला अकस्मात् आकूदा, हे राजा उस ने आतेही अकस्मात् सात बाणों से द्रोणाचार्य्य को घायल किया और शीघ्रही धृष्टद्युम्न को दूसरे रथपर सवार किया इस के पीछे राजा दुर्य्योधन ने बड़ी सेना समेत राजा कलिंगको द्रोणाचार्य्यजी की रक्षा के निमित्त भेजा । ३७ । तदनन्तर हे राजा आपके पुत्रकी आज्ञासे कलिंग देशियों की बड़ी भारी भयानक सेना भीमसेन के सम्मुख आई, रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य भी धृष्टद्युम्न को छोड़कर मिले हुए वृद्ध विराट् और राजा द्रुपद से युद्ध करने लगे और धृष्टद्युम्नभी युद्धमें धर्मराज युधिष्ठिरके पास गया तिस पीछे उस युद्धभूमि में कलिंग देशियों से और

moon, and with his celestial sword ran upon Dronacharya like a ravenous lion upon a mad elephant. 31. Then we saw the matchless prowess and dexterity of Dronacharya's hand. He alone checked the advance of Dhrishtadyumna with his arrows. No warrior could enter the field of battle at that time. We saw Dhrishtadyumna stationed like a skilful warrior near his chariot, receiving the shower of arrows on his shield. 34. Then Bhimsen of great prowess came suddenly in the field of battle to help Dhrishtadyumna and wounded Dronacharya with seven arrows. He made Dhrishtadyumna ride another chariot. Duryodhan sent the king of Kaling to the help of Drona and the dreadful army of Kaling faced Bhim. Droncharya too left Dhrishtadyumna and faced the old kings Virat and Drupad. Dhrishtadyumna

कलिंगानांच समरे भीमस्यच्च महात्मन । जगतः प्रक्षयकर घोररूपभयावहम् ॥४१॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि धृष्टद्युम्नद्रोणयुद्धे त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ तथाप्रनि समादिष्टः कालिंगो वाहिनीपतिः । कथमद्भुत कर्माण भीमसेन महाबलम् ॥ १ ॥ चरंत गदयार्वरं दंडहस्तमिवांतकम् । योधया मास समरे कालिंग. सहसेनया ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । पुत्रेण तवराजेंद्र सतयो क्तोमहाबलः । महत्या सेनयायुत प्रायाद्भीमरथ प्रति ॥ ३ ॥ तामापततीं महतींकलिंगाना महाचमू । रथाश्वनाग कलिलां प्रगृहीतमहायुधाम् ॥ ४ ॥ भीमसेनः कालिंगानाम च्छेंद्भारतवाहिनीं । केतुमंतच नैषादि मायात सहचेदिभि ॥ ५ ॥ तत श्रुतायु सक्रुद्धो राज्ञाकेतुमतासह । आससादरणे भीम व्यूढ नीकेपुचेदिषु ॥ ६ ॥ रथैरनेक साहस्रै कलिंगानांनराधप । अयुतेन गज नाच निषादै.सह केतुमान् ॥ ७ ॥

महात्मा भीमसेन से महाघोर रोमहर्षण संसारका मृत्युकारी घोररूप भयानक युद्ध हुआ ॥ ४१ ॥

अध्याय ॥ ५४ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि उस आज्ञा पाने वाले कलिंगके राजा ने अपनी सेना समेत युद्धभूमि में आकर उस अपूर्वकर्मी महा बलिष्ठ मृत्यु दण्ड समान गदा हाथ में लिये वीर भीमसेन से युद्ध करने को मन किया, संजय बोले हे राजेन्द्र इस रीति से आपके पुत्र से आज्ञा पाकर वह कलिंग देशका राजा भीमसेन के रथ के पास आया, हे भरतवंशी भीमसेन ने घोड़े हाथी और रथों से युक्त उत्तम शस्त्रधारी कलिंगों की बड़ी सेनाको चेदिदेशीय लोगों के साथ आते हुए देखकर केतुमान निषादों के राजा को घायल किया । ५ । तदनन्तर व्यूहित सेना समेत शस्त्रों को धारण किये अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायु केतुमान नाम निषादों के राजा के साथ उस युद्धमें भीमसेन के सम्मुख आया, हे महाराज कलिंग देशों के राजा केतुमान ने

went to Yudhishthir and the battle between Bhim and the Kaling warriors was dreadful to the extreme" 41

CHAPTER LIV

"How did the king of Kaling, ordered by your son, come into the field of battle, followed by the army? How did he fight with Bhim the mighty warrior of matchless strength and bearer of mace!" said Dhritrashtra to Sanjaya, "Having got the permission of your son, replied Sanjayn, 'the king of Kaling approached the chariot of Bhim, who, seeing him approach with horses, elephants, chariots and the soldiers of Chedi, wounded Ketuman the king of Nishadas. 5 Then with his army of armed soldiers, Shrutayu, accompanied with Ketuman the king of Nishadas, faced Bhimsen in battle Ketuman the king of Kalingas surrounded Bhimsen with his army consisting

भीमसेनं रणे राजन् समंतात्पर्यवारयत् । चेदिमत्स्य करूषाश्च भीमसेनपदानुगाः ॥ ८ ॥ अभ्यधावंत समरे निषादान् सहराजभिः । ततः प्रववृतेयुद्धं घोरं रूपंभया वहम् ॥ ९ ॥ न प्राजानंतयोधाः स्वान्परस्परजिघांसया । घोरमासीत्ततो युद्धं भीमस्यसहसापरैः ॥ १० ॥ यथेंद्रस्य महाराज महत्यादैत्य सेनया । तस्य सैन्य स्यसंग्रामे युध्य मानस्यभारत ॥११॥ बभूव सुमहान्शब्दः सागरस्येव गर्जतः । अन्यो न्यंस्मतदायोधा विकर्षतोविशांपते ॥ १२ ॥ महींचक्रुश्रितां सर्वां शश लोहित संनि-भाम् । योधांश्च स्वान् परान्वापि नाभ्यजानन् जिघांसया ॥ १३ ॥ स्वानप्या ददत स्वाश्शूराः परमदुर्जयाः । विमर्दः सुमहानासीदल्पानां बहुभिः सह ॥ १४ ॥ कलिंगैः सहचेदीनां निषादैश्च विशांपते । कृत्वा पुरुषकारंतु यथाशक्ति महाबलाः ॥ १५ ॥ भीमसेनं परित्यज्य संन्यवर्तंतचेदयः । सर्वैः कालिंगैरासन्नः सन्निवृत्तेषु चेदिषु १६ ॥

बहुत हजार रथ और दश हजार हाथियों और निषादों को साथ में लेकर चारों ओर से भीमसेन को घेर लिया, और भीमसेन के आगे चलने वाले चेदिमत्स्य और करूष देशोंके वासी वीर राजाओं समेत एकाएकी निषादों के सम्मुख आकर वर्त्तमान हुए तिस पीछे घोर रूप भयानक युद्ध जारी हुआ, फिर एकाएकी परस्पर में एक दूसरे को मारने की इच्छासे दौड़ते हुए वीरों का और शत्रुओं के साथ भीमसेन का घोर युद्ध जारी हुआ, हे राजा जैसे कि इन्द्र का युद्ध दैत्यों की सेनाके साथ होता है इसी प्रकार हे भरतवंशी युद्ध में लड़ने वाले बहुत बड़े शब्दों से गर्जना करते हुए सागरके समान हुए, हे राजा इसके पीछे परस्परमें प्रहार और घात करने वाले युद्ध कर्त्ताओं ने सब पृथ्वी को मांस और रुधिर से पूरित करके शोभित किया और मारने की इच्छासे अपने और पराये युद्ध कर्त्ताओं को नहीं पहिचाना । १३ । फिर युद्ध में दुर्जय शूरवीरों ने अपनी सेना के लोगों को भी शस्त्रों से मारा घोड़ों का बहुतों के साथ बड़ाभारी युद्ध हुआ, हे राजा चेदि देशवाले शूरवीरोंका युद्ध कलिंग और निषादों के संग हुआ तब चेदिदेशी अपनी सामर्थ्य के अनुसार वीरता को करके । १५ । उस भीमसेन को त्यागकर अलग होगये चेदिदेशियों

of thousands of chariots, myriad of elephants and Nishadas. The soldiers of Chedi, Matsya and Krosh countries with brave princes, faced the Nishadas all of a sudden and a dreadful fight ensued. Bhimsen fought bravely with the warriors who ran to fight and kill one another. The descendants of Bharat roared like the ocean and the fighting was as dreadful as that between the gods and asurs. The brave fighters filled the land with flesh and blood and did not distinguish friends from foes in the heat of encounter. 13. The inconquerable warriors killed with their weapons the people of their own army and the battle was furious. The soldiers of Chedi fought against those of Kaling and Nishad, and having done their best the people

स्वबाहुबलमास्थायसैन्यमवर्ततपांडवः । नचचाल रथोपस्थाद्भीमसेनोमहाबलः ॥ १७ ॥ शितैरवाकिरद्वाणैः कलिंगानांवरूथिनीं । कालिंगस्तु महेष्वासःपुत्रश्चास्यमहारथः॥१८॥ शक्रदेवइति ख्यातो जघ्नतु-पांडवं शरैः । ततोभीमो महाबाहुर्विधुन्वन्रुचिरंधनुः ॥१९॥ योधयामास कालिंगं स्वबाहुबलमाश्रितः। शक्रदेवस्तुसमरे विसृजन्सायकान्बहून्२०॥ अश्वान् जघान समरे भीमसेनस्य सायकैः । तं दृष्ट्वा विरथं तत्र भीमसेनं मरिंदमम् ॥ २१ ॥ चक्रदेवोभि दुद्राव शरैरवाकिरन् शितैः । भीमस्यो परि राजेंद्र शक्र इवो महा बलः ॥ २२ ॥ ववर्ष शरवर्षाणि तपांते जलदो यथा । हताश्वेतु रथे तिष्ठन् भीमसेनो महाबलः ॥ २३ ॥ शक्र देवाय चिक्षेप सर्व शैक्यायसीं गदाम् । स तयानिहतोराजन् कालिंग तनयो रथात् ॥ २४ ॥ विरथः सहसूतेन जगाम धरणीतलम् । हतमात्मसुतं दृष्ट्वा कलिंगानां जनाधिपः ॥ २५ ॥ रथैरनेकसाहस्रैर्भीमस्यावारयद्दिशः । ततो भीमो

के अलग होजानेपर सब कलिंग देशियों के सम्मुख होकर पांडव भीमसेन अपने भुजावल में स्थिर होकर खड़ारहा अर्थात् वह महावली भीमसेन अपने रथ से नहीं हटा । १७ । और कलिंग देशवासियों को भी अपने तीव्रबाणों से ढक दिया तब बड़े धनुषधारी कलिंग के राजा और उसके पुत्र महारथी शक्रदेवने बाणों से भीमसेन को घायल किया तदनन्तर अपने भुजबल से रक्षित सुन्दर धनुष को हिलाते हुए महाबाहु भीमसेन ने राजा कलिंगको लड़ाया और युद्ध में अनेकबाण छोड़ते हुए शक्रदेवने भीमसेन के चारों घोड़ों को मारा फिर शक्रदेव उस शत्रुहन्ता भीमसेनको विरथ देखकर अपने तीक्ष्ण बाणों से ढकता हुआ उसके सम्मुख दौड़ा फिर महावली शक्रदेवने भीमसेन के ऊपर बाणों की ऐसी वरसाकरी जैसे वर्षा ऋतु में मेघ जल को वरसाता है मृतक घोड़ों के रथपर चढ़ेहुए महावली भीमसेन ने । २३ । अपनी लोहेकी गदाको शक्रदेव के ऊपर फेंका हे राजा कलिंग के राजा का पुत्र उस गदासे मरकर ध्वजा और सारथी समेत रथसे पृथ्वी पर गिरा कलिंग देशके महारथी ने अपने पुत्रको मराहुआ देखकर । २५ । हजारों रथों समेत

of Chedi left Bhimsen to fight alone. At this, Bhimsen the Pandav faced the armies of Kaling and stood firmly fighting in his own chariot. 17. He covered the Kalingas with his arrows. Then the great archer king of Kaling and his brave son Shakradev wounded Bhimsen with their arrows. Bhim, protected by the strength of his own arms alone, fought with the king of Kaling. Shakradev killed all the four horses of Bhimsen with his arrows and seeing him destitute of the use of his chariot covered him with his arrows like a shower of rain. Bhimsen, mounted on his chariot with the horses dead, hurled his mace at Shakradev. The son of the king of Kaling, struck by that mace, fell down dead upon earth together with the banner and driver. Then the warrior king of Kaling, seeing his son dead, 25, checked

महावेगां रथस्यानुगां महागदाम् ॥ २६ ॥ निस्त्रिंशमाददे घोरं चिकीर्षुः कर्म
दारुणम् । चर्म चाप्रतिमं राजन् न पर्मं पुरुषर्षभ ॥ २७ ॥ नक्षत्रैरर्द्धचन्द्रैश्च शातकुम्भ
मयैश्चितम् । कालिंगस्तु ततः क्रुद्धो धनुर्ज्यामवमृज्यच ॥ २८ ॥ प्रगृह्य च शरंघोर मेकं
सर्पं विषोपमम् । प्राहिणोद्भीमसेनाय वधाकांक्षी जनेश्वरः ॥ २९ ॥ तमापतन्तं वेगेन
प्रेरितं निशितं शरम् । भीमसेनो द्विधाराजंश्चिच्छेद विपुलासिना ॥ ३० ॥ उदक्रोशच्च
संहृष्टस्त्रासयानोवरूथिनीम् । कालिंगोथततः क्रुद्धो भीमसेनाय संयुगे ॥ ३१ ॥ तोमरान्
प्राहिणोच्छीघ्रं चतुर्दश शिलाशितान् । तानप्राप्तान महाबाहुः खगतानेवपाण्डवः ३२॥
चिच्छेदसहसाराजन् असंभ्रांतो वरासिना । निकृत्यतु रणे भीमस्तोमरांश्च चतुर्दश ३३
भानुमन्तं ततो भीमः प्राद्रवत् पुरुषर्षभः । भानुमांस्तुततो भीमं शरवर्षेणच्छादयन्
॥ ३४ ॥ ननाद बलवन्नादं नादयानो नभस्तलम् । नचतं मम्रृषे भीमः सिंहनादं महाह
वे ॥ ३५ ॥ ततः स्वरेण महता विननाद महास्वनः । तेन नादेन वित्रस्ता कालिंगानां

भीमसेनकी दिशाओं को रोका तदनन्तर हे राजा पुरुषोत्तम भीमसेन ने गदाको छोड़कर अनुपम खड्ग और ढालको हाथमें लिया वहढाल सुनहरी नक्षत्र और अर्द्धचन्द्रों से जटितथी तदनन्तर क्रोधमें आकर राजा कालिंग ने धनुषकी ज्याको चढ़ाकर सर्पके विषके समान एकमहाघोर बाणको लेकर मारनेकी इच्छाकरके भीमसेनके ऊपर फेंका।२९।हे राजा उस गिरतेहुए विष संयुक्त बाणको भीमसेनने अपने खड्गसे दो खण्ड करदिये । ३० । और आपकी सेनाको भयभीत करता हुआ बड़ा प्रसन्नचित्त बड़े शब्द से पुकारा तदनन्तर राजा कलिंग ने महाक्रोधित होकर शीघ्रही भीमसेनके ऊपर शिलासे तीक्ष्ण कियेहुए चौदह तोमरोंको फेंका तब भीमसेन ने अपने उत्तम खड्ग से समीप में न पहुंचने वाले उन तोमरों को बीचही में काटा हे पुरुषोत्तम वह भीमसेन उस युद्धमें चौदह तोमरों को काटकर समीप आये हुए भानुमन्तके सम्मुख दौड़ा तदनन्तर भानुमन्त तीरों की वर्षासे भीमसेन को ढककर आकाश और पृथ्वी को शब्दायमान करके महाशब्द का करनेवाला हुआ तब भीमसेन उस सिंहनादको न सहकर अपनी महागर्जना करके गर्जा कलिंग देशों की सेना उस

Bhimsen, on all sides with thousands of chariots. Then Bhim the best of men left his mace and took up the matchless sword and the shield decked with gold stars and half moons. The king of Kaling, in great anger, shot from his bow an arrow dreadful like a venomous serpent, but Bhimsen cut it down with his sword. 30. And causing fear in your army he uttered a loud roar with a cheerful heart. Then the king of Kaling, in the excess of anger, shot Bhim with fourteen sharp arrows, but Bhimsen cut them all with his sword before they had touched him. Having cut those fourteen arrows, Bhim attacked Bhanumant who was near. The latter covered Bhim with arrows and filled the earth and firmament with his roar. Unable to bear that roar,

पकधिनी ॥ ३६ ॥ नभीमं समरे मेने मानुष भरतर्षभ । ततो भीमो महाबाहुर्नदित्वावि पुल स्वनम् ॥ ३७ ॥ सासचर्मावदाप्लुत्य दन्ताभ्यामारणोत्तमम् । आरुरोह ततोमध्य नागराजस्य मारिष ॥ ३८ । ततो मुमोच कालिंग शक्तिमाकरोद्रथा । खड्गेन पृथुनामध्ये भानुमन्त मथाच्छिनत् ॥ ३९ ॥ सोंतरायुधि न हत्वा राजपुत्रमरिंदम । गुरु भारसह स्कन्धे नागस्यासि मपातयत् ॥ ४० ॥ छिन्नस्कन्ध सविनदन् पपातगजयूथ प. । आरुग्ण सिंधु वेगेन सानुमानिव पर्वत ॥ ४१ ॥ ततस्तस्मादवप्लुत्य गजाद्भारत भारत । खड्गपाणिरदीनात्मा तस्थौ भूमौ सुदंशित ॥ ४२ ॥ सचचारबहून्मार्गा नभि त पातयन्गजान् । अग्नि चक्र मिवाविद्ध सर्वत प्रत्यदृश्यत ॥ ४३ ॥ अश्व वृंदेषुनागे षु रथानीकेषु चा भिभू । पदातीनाच संघेषु विनिघ्नञ्शोणितो क्षित ॥ ४४ ॥ श्येनवद्

शब्द से भयभीत हुई । ३६ । हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र युद्ध में सबोंने भीमसेन को मनुष्य नहीं माना इसके पीछे भीमसेन बड़े उच्चशब्द को करके, खड्ग समेत महावेगसे दौडकर हाथी के दांतों के द्वारा उत्तम हाथीपर चढ़गया और शीघ्रही हाथीकी पीठपरहोगया, फिर बड़ेखड्गसे भानुमन्तकी कमरको काटकर उस शत्रुहन्ताने युद्धभूमि में उस राजकुमार को मारकर बडेभारी खड्ग को हाथीके कंधेपर गिराया उसके प्रहारसे वह गजराज हाथी पृथ्वीपर ऐसे गिरपडा ।४०। जैसे कि रत्नों से प्रकाशित पहाड समुद्र के वेग से टूटकर गिरपडता है हे भरतवंशी वह महाबली भीमसेन गिरते हुए हाथी से कूदकर हाथ में खड्ग लिये महा अलंकृत शस्त्रयुक्त प्रसन्न मन होकर पृथ्वी पर नियत हुआ और निर्भय होकर अनेक हाथियों को गिराताहुआ बहुतसे मार्गों में घूमा । ४२ । फिर वह समर्थ घोडों के हाथियों के और रथोंके समूहों में सब ओर से गोल अग्नि के समान दिखाई दिया, महाबली भीमसेन उस युद्धभूमि में पक्षीरूप पदातियों के समूहों में बाज पक्षी के समान सब को मारता और घूमता हुआ पडा, फिर वह बड़ा वेगवान् भीमसेन तीक्ष्ण धार वाले

Bhim roared a louder roar and terrified the Kalingas 36. From the prowess of Bhim in battle people regarded him as superhuman Having uttered the dreadful roar, Bhim ran sword in hand, and mounting the elephant by the tusks cut asunder the body of Bhanumant at the waist. And having killed the prince in the field of battle Bhimsen let his sword fall over the elephant's shoulder With that blow the elephant fell to the ground (40) like a gem bedecked mountain by the action of the sea. Bhim of great prowess leapt down from the shoulder of the *falling elephant* and sword in hand stood on earth with a cheerful mind He fearlessly cut down several elephants and roamed through many paths 42* That capable warrior, roaming through horses, elephants and chariots seemed like a circle of fi Brave Bhimsen looked like a hawk entering and

व्यचरद्भीमो रणेऽरिपुबलोत्कटः । छिंदस्तेषांशरीराणि शिरांसिच महाबलः ॥ ४५ ॥
खड्गेन शितधारेण संयुगे गजयोधिनाम् । पदाति रेकः संक्रुद्धः शत्रूणांभयवर्द्धन. ४६॥
संमोहया मास स्तान् कालांतक यमोपमः । मूढाश्चते तमे वाजौ विनदन्तः समाद्र
वन् ॥ ४७ ॥ सास मुत्तम वेगेन विचरन्तं महारणे । निकृत्य रथिनांचाजौ रथेषाश्वयुगा
निच ॥ ४८ ॥ जघान रथिनश्चापि बलवान् रिपु मर्दन. । भीमसेनश्चरन्मार्गान् सुवहून्
प्रत्यदृश्यत ॥ ४९ ॥ भ्रांतमाविद्ध मुद्भ्रांत माप्लुतंप्रसृतंप्लुतम् । सम्पातं समुदीर्णंच
दर्शयामास पाण्डवः ॥ ५० ॥ केचिदग्रासिनाच्छिन्ना· पांडवेन महात्मना । विनेदुर्भिन्न
मर्माणो निपेतुश्चगतासवः ॥५१॥ छिन्नदन्ताग्रहस्ताश्च भिन्नकुम्भास्तथा परे । वियोधाः
स्वान्यनीकानि जघ्नुर्भारतवारणाः ॥ ५२ ॥ निपेतुरुर्व्यां च तथा विनदन्तो महास्वान् ।

खड्ग से उन युद्धकर्त्ता हाथियों के सवारों के शिर और देहोंको काटता हुआ देखने में आया । ४५ । शत्रुओंके भय उत्पन्न करनेवाले अत्यन्त क्रोधरूप मृत्युके समान पदाती अकेले भीमसेनने उन सब शूरवीरोंको मोहितकिया, उसमहाभारी युद्ध में हाथमें तीक्ष्ण खड्ग को लिये बड़े वेगवान् भीमसेनको घूमता हुआ देखकर सब लोग अत्यन्त व्याकुल और अचेतहोकर पुकारते हुए भागे, फिर शत्रुहन्ता पराक्रमी भीमसेन ने युद्ध में रथियों के रथ जुए आदि को काटकर रथियों को भी मारा । ४८ । और बहुत मार्गों में घूमताहुआ दिखाई दिया हे भरतवंशी फिर भ्रांत उद्भ्रांत आविद्ध आप्लुत प्रसृत संपात समुद्रण अर्थात् घुमाना ऊंचाघुमाना टेढ़ा घुमाना शरीर में लपकाना झुकेपर झुकाना सब खड्ग का प्रहार बड़े बलसे मारना क्रमसे इन सब दशाओं को दिखाया हे राजा कितनेही शूरवीर भीमसेन के खड्ग के अग्रभाग से कटगये और टूटे कवचवाले गर्ज २ कर मरगये इसीप्रकार से हे राजा दांत और सूंड़ों की नोक टूटे मस्तक फटे चोट खायेहुए शूरवीरोंसे रहित हाथियों नेभी अपनी ही सेनाको मारा और बड़े भारी शब्दोंको करके वह सब पृथ्वीपर गिरपड़े ।५२। औरहे राजा कटेहुए तोमर वा बड़े भारी शिर वा सुवर्णसे जटित परशे वा सुवर्ण से

killing the foot soldiers like a flight of birds. Then he was seen cutting asunder the heads and bodies of the elephant riders. 45. Terrifying the enemy, that angry figure like Death, Bhimsen alone made all the warriors insensible. With the sharp sword in his hand, in the field of battle, Bhimsen was the terror of all the warriors. They ran away from him crying for fear. Bhimsen of immense prowess cut asunder the yokes of chariots and killed the charioteers. 48. Roaring through many paths and performing various feats with his sword, Bhimsen cut down numerous warriors who fell dead crying, pierced through their armour. The elephants with their tusks, trunks and heads cut and broken and destitute of their riders fell upon their own army and fell down on earth with hideous cries. 52. We saw the weapons, heads, golden axes, the gem bedecked trappings

छिन्नांश्चतोमरान्राजन् महामात्रशिरांसिच ॥ ५३ ॥ परिस्तोमांश्चिचित्रांश्च कक्ष्याश्चकनकोज्ज्वलाः । ग्रैवेयाण्यथ शक्तीश्च पताकाः कणपांस्तथा ॥ ५४ ॥ तूणीरानथ यंत्राणि विचित्राणि धनूंषिच । अग्निकुण्डानि शुभ्राणितोत्राणि चांकुशैः सह ॥ ५५ ॥ घण्टाश्च विविधा राजन् हेमगर्भान्त्सरूनपि । पततः पातितांश्चैव पश्यामः सहसादिभिः ॥ ५६ ॥ छिन्नगात्रावर करैर्निहतैश्चापि वारणैः । आसीदभूमिः समास्तीर्णापतितैर्भूधरैरिव ॥ ५७ ॥ विमृद्यैवं महानागान् ममर्दाश्वान्महाबलः । अश्वारोहवरांश्चैव पातयामास संयुगे ॥ ५८ ॥ तद्घोरमभवद्युद्धं तस्य तेषांच भारत । खलीनान्यथ योक्त्राणि कक्ष्याश्चकनकोज्ज्वलाः ॥ ५९ ॥ परिस्तोमाश्च प्रासाश्च ऋष्टयश्चमहाधनाः । कवचान्यथचर्माणि चित्राण्यास्तरणानिच ॥ ६० ॥ तत्र तत्रापविद्धानि व्यदृश्यंतमहाहवे । प्रासैर्यंत्रैर्विचित्रैश्च शस्त्रैश्च विमलैस्तथा ॥ ६१ ॥ सचक्रेवसुधांकीर्णां शवलैःकुसुमैरिव । आप्लुत्यरथिनः कांश्चित्परामृश्य महाबलः ॥ ६२ ॥ पातयामास गड्गेन सध्वजानपि

जटित स्वच्छ झूलें वा ग्रीवा के भूषण हाथियों की भूषणों समेत पताका वा तूणीर यन्त्र विचित्र धनुष वा श्वेत वर्ण के अग्निदण्ड वा अंकुशों से युक्त चावकोंको वा नानाप्रकारके घंटे और सुनहरी खड्गों की मूठोंको भी, सवारों समेत गिरेहुए और जहां तहां पड़ेहुओं को देखताहूं जिनके अंग और आगे की सूंड़ के भाग कटगये और जो मरभी गये उन हाथियों से वह पृथ्वी ऐसी होगई जैसी कि गिरेहुए पहाड़ोंसे होजाती है, उस नरोत्तम ने इसप्रकार बड़े २ हाथियों को मारकर घोड़ोंको भी मर्दन किया । ५७ । और घोड़ों के उत्तम २ सवारों को भी मारकर गिराया है भरतर्षभ तेरे पुत्रों का और पाण्डव लोगों का वह महा घोर युद्ध हुआ, विचित्र लगाम और उत्तम सुवर्ण से मंडित झूलें परशे तोमर प्रास दुधारेखड्ग कवच ढालें और अनेक रत्नवाले विस्तर यह सब उस महायुद्ध में जहां तहां कटेहुए बहुमूल्यके दिखाई दिये । ६० । इसके विशेष उसने विचित्र पोथयन्त्र और स्वच्छ खड्गोंसे भी पृथ्वी को ऐसा व्याप्त करदिया कि जैसे कमलोंसे शवल व्याप्त होताहै, महाबली पांडव भीमसेनने सेनामें जाके कितनेही रथियोंको मर्दनकरके खड्ग से ध्वजाधारियों

and neck ornaments of elephants, banners, quivers, machinery bows of sorts, fire weapons, goads, whips, bells, swords with gold handles and riders fallen down on earth here and there. With the carcases of elephants the ground looked as if it was strewn over with hills That best of men cut and killed the elephants and horses. 57. He killed the best riders as well. Thus the battle was dreadful between your sons and the Pandavas. Various sorts of bridles, golden trappings, battle axes, tomars, prases, double edged swords, arrows, shields and gem bedecked beds of great value were seen lying cut and mangled here and there. 60. Besides these the ground was strewn with other weapons and bright swords like lilies on a tank. The Pandav Bhimsen of great prowess entered the lists and cut down the chariot-

पांडवः । मुहुरुत्पततो दिक्षुधावतश्च यशस्विनः ॥ ६३ ॥ मार्गांश्चरतश्चित्रं॰व्यस्मयंत॰
रणेजनाः । ससघानपदाकांश्चिदन्याक्षिप्यान्यानपोथयत् ॥६४॥ खड्गे नान्यांश्चच्छिन्दे
दनादेनान्यांश्च भीषयन् । ऊरुवेगेन चाप्यन्यान्पातयामास भूतले ॥ ६५ ॥ अपरेचैनमा
लोक्य भयात्पञ्चत्व मागताः । एवंसा बहुला सेना कलिंगानां तरस्विनाम् ॥ ६६ ॥
परिवार्य रणे भीष्म भीमसेन मुपाद्रवत् । ततः कालिंग सैन्यानां प्रमुखे भरतर्षभ ६७॥
श्रुतायुष मभिप्रेक्ष्य भीमसेनः समभ्ययात् । तमायांत मभिप्रेक्ष्य कालिंगोनवभिःशरैः
॥ ६८ ॥ भीमसेन ममेयात्मा प्रत्यविध्यत्स्तनांतरे । कालिंगबाणाभि हतस्तोत्रार्दित
इवाद्विपः ॥ ६९ ॥ भीमसेनः प्रजज्वाल क्रोधेनाग्निरिवेंधितः । अथाशोकः समादाय
रथंहेम परिष्कृतम् ॥ ७० ॥ भीमसंपादयामास रथेनरथसारथिः । तमारुह्यरथं तूर्ण
कौंतेयः शत्रुसूदनः ॥ ७१ ॥ कालिंगमभ्य द्रुद्राव तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् । ततःश्रुतायु

कोभी गिराया, युद्ध में उस उग्र रूपके वारम्वार इधर उधर दिशाओं में गिरते दौड़ते और चित्रमार्गोंमें घूमतेहुये को देखके मनुष्य बड़े आश्चर्य में हुये, किननोंको लातघूसोंहीसे मारा किसीको खैंचकर मारा । ६३ । किसीको खड्गसे मारा किसीको शब्दसे भयभीत किया,किसीको जंघाओंके वेगसे पृथ्वीपर गिरायाइनसबबातोंको देखतेहुये अन्यलोग बड़ेभयातुर होकर भागगये, इसरीतिसे मरीकुटीविगबम्क कलिंगदेशियोंकी बड़ीसेना युद्धमें भीष्मजीको मध्यवर्त्ती करके भीमसेन के सम्मुख दौड़ी, तदनन्तर भीमसेन कलिंगकी सेनाके आगे श्रुतायुषको देखकर उसके सम्मुख गया उस बड़े बुद्धिमान् कलिंगदेशीने भीमसेनको आताहुआ देखकर नवतीरोंसे हृदयके मध्य में घायल किया, अंकुशसे पीड़ित हाथीके समान बाणोंसे घायल भीमसेन क्रोधसे ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि इंधनसे अग्नि प्रज्वलित होती है, तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ अशोकने सुनहरी अंगवाले रथको लायकर भीमसेनको सवार कराया शत्रुहन्ता भीमसेन बड़ी शीघ्रता से उसरथ पर चढ़कर । ७० । श्रुतायुषके सम्मुख दौड़ा और तिष्ठतिष्ठ शब्दको कहा, तदनन्तर अपनी हस्तलाघवताको दिखातेहुये

eers and banners with his sword. Seeing that dreadful form again and again falling, running and roaming in various paths, the people were much amazed. Some he killed with his feet, others he dragged down to death. 63. Some he killed with his sword, others he frightened with his roar. Some he hurled down with the velocity of his legs, others fled in terror at the sight of these atrocities. Thus destroyed and cut down, the large army of the Kalingas, with Bhishm at their head, rushed upon Bhim. Seeing Shrutayush in front of the Kaling army, Bhim came upon him. That wise Kalinga, seeing Bhimsen coming towards him, wounded him in the middle of the breast. Like an elephant wounded by goad, Bhimsen wounded by the arrows, flew into a rage, as fire burns with dry wood. Then Ashok the best of warriors caused Bhimsen to mount a golden chariot.

वैलगान्भीमयानिशितान् शरान् ॥ ७२ ॥ प्रेषयामास संक्रुद्धो दर्शयन् पाणिलाघवम् ॥ सकार्मुकवरोत् सृष्टैर्विभिर्निशितैः शरैः ॥ ७३ ॥ समाहतो महाराज कालिंगेन महात्मना । संचुक्रुशे भृशं भीमो दंडाहतइवोरग. ॥ ७४ ॥ क्रुद्धश्चापमायम्य बलवद्बलिनां वरः । कालिंगमवधीत् पार्थो भीमः सप्तभि रायसैः ॥ ७५ ॥ क्षुराभ्यां चक्ररक्षौच कालिंगस्यमहाबली । सत्यदेवं च सत्यंचप्राहणोद्यमसादनम् ॥ ७६ ॥ ततः पुनरमेयात्मा नाराचैर्निशितैस्त्रिभिः । केतुमंतरणे भीमो गमयद्यमसादनम् ॥ ७७ ॥ ततःकालिंगाःसंक्रुद्धा भीमसेनममर्षणम् । अनीकैर्बहुसाहस्रैः क्षत्रियाः समवारयन् । ७८ ॥ ततः शक्तिगदा खड्गतोमरर्ष्टि परश्वधैः । कालिंगाश्च ततो राजन् भीमसेनमवाकिरन् ॥ ७९ ॥ संनिवार्य सतां घोरांशरवृष्टिं समुत्थिताम् । गदामादायतरसासानिपत्यमहाबलः ॥ ८० ॥ भीमः सप्तशतान् वीराननयद्यमसादनम् । पुनश्चैवद्विसाहस्रान् कालिंगान

महाक्रोध रूप बलवान् श्रुतायुपने बड़े तीक्ष्णवाणोंको भीमसेनकेऊपर फेंका, हेराजा श्रुतायुपके उत्तमधनुपसेछुटेहुये तीव्रनववाणोंसेघायल महावली भीमसेन ऐसामहाक्रोधितहुआ जैसे कि लकड़ीसेघायल सर्प क्रोधित होताहै, पराक्रमियोंमें श्रेष्ठ क्रोधित भीमसेन नेवड़ेभारी धनुपको चढ़ाकर, सातलोहेकेवाणोंसे श्रुतायुपकोमारा ७४। और वाणों सेही श्रुतायुके दोनों महावलीपार्योंके रक्षकसत्यदेव और सत्यको यमलोक भेजा । ७६ । इसके पीछे महा साहसी भीमसेन ने तीव्रनाराचोंसे केतुमन्तको यम लोकमें पहुंचाया फिर कलिंग देशी क्षत्रियों ने अत्यन्त क्रोधित होकर हजारों सेनाओं से उस क्रोधित भीमसेन को लड़ाया तदनन्तर हे राजा सैकड़ों कलिंग देशियोंने वरछी गदा खड्ग तोमर दुधाराखड्ग और परशों के द्वारा भीमसेन को रोका,.तब भीमसेन ने उनको और उनके वाण समूहों को बहुत अच्छी रीति से रोककर, गदाहाथ में लिये बड़ी तीव्रतासे दौड़कर सातसौ वीरोंको यमलोक में पहुंचाया । ८० । फिर उसी शत्रुहन्ताने कलिंग देशियों के दोहजार वीरों को

Bhim attacked Shrutayush with a cry of 'stand stand' Then showing his skill of hand Shrutayush in great anger wounded Bhimsen of great prowess with his arrows. This made Bhimsen angry like a serpent hit by a stick. Bhimsen of great prowess in the excess of anger, pierced Shrutayush with seven steel arrows shot from his huge bow.74. With two arrows he killed Satyadev and Satya the two powerful guards of Shrutayu. 74. Then with three sharp arrows Bhimsen of great prowess killed Ketumant. The kshatryas of Kaling attacked Bhimsen in great numbers and hurled at him hundreds of spears, maces, swords, *tomars*, double edged swords and axes. Bhimsen checked the shower of their weapons and arrows very bravely and rushing upon them, mace in hand, killed seven hundred of the Kaling warriors in a short time. 80. Then the destroyer of enemies killed two

रिमर्द्दनः ॥ ८१ ॥ प्राहिणोन्मृत्यु लोकायतदद्भुत मिवाभवत् । एवं सतान्यनीकानि
कलिंगानां पुनः पुनः ॥ ८२ ॥ विभेदसमरे तूर्णं प्रेक्ष्यभीष्म महारथम् । हतारोहा-
श्चमातंगाः पाण्डवेन कृतारणे ॥ ८३ ॥ विप्रजग्मुरनीकेषु मेघावात हताइव । मृद्नंतः
स्वान्यनीकानि विनदत शरातुराः ॥ ८४ ॥ ततो भीमो महाबाहुः खड्गहस्तोमहाभुजः ।
संप्रहृष्टो महाघोरं शङ्खंप्राध्मापयद्बली ॥ ८५ ॥ सर्वं कालिंग सैन्यानां मनांसि समकंप
यत् ॥ मोहश्चापि कलिंगानामा विवेशपरंतप ॥ ८६ ॥ प्राकंपतच्च सैन्यानि वाहना
निचसर्वश ॥ भीमेन समरे राजन् गजेंद्रेणेवसर्वशः ॥ ८७ ॥ मार्गान् बहून् विचरता
धावताच ततस्ततः । मुहुरुत्पतताचैव संमोहः समपद्यत ॥ ८८ ॥ भीमसेन भयत्रस्तं

कालवश किया यह बड़ा आश्चर्यसा हुआ, इसप्रकार उसभयानक पराक्रमी महावीर भीमसेन ने कलिंग देशियों की उन सेनाओंको युद्धमें वारंवार भगाया, और असंख्य हाथियों को सवारों से रहित किया फिर वह हाथीभी वाणों से पीडित होकर अपनी सेना को मारते खूंदते अत्यन्त गर्जते हुए सेनाके मध्य में से ऐसे भाग गये जैसे कि वायु से टक्कर खाये हुए वादल इधर उधर होजाते हैं । ८३ । तदनन्तर खड्गहाथ में लिये महावली, अत्यन्त प्रसन्न चित्त भीमसेन ने वड़े घोर शंखको वजाकर सब कलिंग देशी सेना के हृदयको कंपाया, हे परन्तप धृतराष्ट्र कालिंग देशियों में मोह पैदाहुआ और सवारियों समेत सब सेना के लोग अत्यन्त भयभीतहुए, युद्धमें सब ओर से गजेंद्र के समान मार्गोंमें घूमते और जहां तहां सब दौड़ते अथवा वारम्वार उछलते भीमसेन के देखने से वड़ामोह अर्थात् विह्वलता प्राप्तहुई । ८७ । वह सेना भीमसेन के भयसे ऐसी अत्यन्त कम्पायमान हुई जैसे वड़े ग्राहसे पीडित सरोवरहोताहै, भीमसेन से कौरवोंके भयभीत होनेसे और चारों ओरसे उनकलिंग देशियों के लौटने और भागजाने पर पाण्डवों के सेना पति ने

thousand warriors of the Kalingas, causing wonder to all Thus, Bhimsen of dreadful deeds, again and again, routed the Kaling army and made numerous elephants riderless. The elephants, wounded by arrows, fled through the midst of the army trampling down the soldiers and shrieking, and vanished like clouds propelled by the wind 85. Then, sword in hand, that great warrior blew his conch in the excess of cheer and shook the hearts of the Kalingas. They became faint hearted and all the people of the army with their beasts were much frightened Roaming like the prince of elephants in the way and running hither and thither, with occasional jumps and bounds, Bhimsen was the cause of uneasiness to all The army trembled with the fear of Bhimsen like a lake agitated by a large crocodile. When the Kauravas were so awe struck by Bhim and the Kalingas were running away or turning back, the leader of the Pandav army

सैन्यंच समकंपत । क्षोभ्यमाणमसंबाधं ग्राहेणेव महत्सरः ॥ ८९ ॥ त्रासितेषुच सर्वेषु भीमनाद्भुत कर्मणा । पुनरावर्तमानेषु विद्रवत्सुच सघशः ॥ ९० ॥ सर्वकालिंग योधेषु पांडूनांध्वजनीपतिः । अब्रवीत् स्वान्यनीकानि युध्यध्वमिति पार्षतः ॥ ९१ ॥ सेनापति वचः श्रुत्वा शिखण्डि प्रमुखागणाः । भीममेवाभ्यवर्तत रथानीकैः प्रहारिभिः ॥ ९२ ॥ धर्मराजश्चतान् सर्वा नुपजग्राह पांडवः । महतामेघ वर्णेन नागानीकेनपृष्ठतः ॥ ९३ ॥ एवं संनोद्यसर्वाणि स्वान्यनीकानि पार्षतः भीमसेनस्य जग्राह पार्ष्णिं सत्पु रुपैर्वृतः ॥ ९४ ॥ नांहि पंचालराजस्य लोकेकश्चन विद्यते । भीम सात्यकयोरन्यः प्राणेभ्यः प्रियकृत्तमः ॥ ९५ ॥ सोपश्यचकालिंगेषुचरंतमरिसूदनः । भीमसेनं महाबाहुं पार्षतः परवीरहा ॥ ९६ ॥ ननर्द बहुधा राजन् हृष्टश्चासीत्परंतपः । शंखंदध्मौच समरे सिंहनादं ननादच ॥ ९७ ॥ सचपारावताश्वस्यरथेहेम परिष्कृते । कोविदारध्वजं दृष्ट्वा भीमसेनः समाश्वसत् ॥ ९८ ॥ धृष्टद्युम्नस्तुतंदृष्ट्वा कालिंगैः समभिद्रुतम् । भीमसेनम

आज्ञादी कि तुमभी लड़ो । ९० । हे भरतवंशी शिखण्डी जिनमें उत्तमहैं वहसेना सेनापतिके वचनको सुनकर, प्रहारकर्त्ता रथियों समेत भीमसेनके पास वर्त्तमान हुई, और धर्मराज युधिष्ठिर ने मेघवर्ण हाथियों की बड़ी सेना समेत पीछे की ओर से उन सबको रक्षित किया इस रीतिसे धृष्टद्युम्न सेनापति ने अपनी सब सेना को चलाकर अच्छे पुरुषों समेत भीमसेनके पृष्ठभाग को रक्षित किया।इस लोक में भीमसेन और सात्यकी के सिवाय पांचालेश राजाधृष्टद्युम्नको कोई अन्य प्राणों से प्यारा नहीं है वह शत्रुहन्ता धृष्टद्युम्न कलिंगोंके मध्यमें घूमतेहुए महाबाहु भीमको देखकर सबओर को गर्ज कर महा प्रसन्न हुआ । ९६ । फिर उनसे युद्धमें शंखको बजाकर महा सिंहनाद को किया तब वह भीमसेन उस कपोत के समान घोड़ों से युक्त सुवर्णसे मंडित रथपर कचनार वृक्षकी ध्वजा धारी को बैठाहुआ देखकर विश्वास युक्तहुआ और बड़साहसी धृष्टद्युम्न उन कलिंग देशियोंको भीमसेनकी ओर दौड़ते देखकर उसकी रक्षाके लिये युद्धमें घुसकर उसके पास आया तबउन महासाहसी धृष्टद्युम्न और भीमसेन दोनों वीरों को कलिंग देशकी सेना दूरसे युद्धमें वर्त्तमान देखकर

ordered his men to make an assault.90 The army led by Shikhandi the best of leaders approached Bhimsen and his fighting charioteers. Yudhishthir the just, with a large army of elephants, protected the rear. Thus Dhrishtadyumna moved his whole army and protected Bhim from the back. The prince of Panchal Dhrishtadyumna loved none so dearly as he did Bhimsen and Satyaki. Seeing Bhim the great warrior, roaming in the midst of the Kalingas, Dhrishtadyumna the destroyer of enemies roared loudly with a cheerful heart. 96 He blew his conch in the field of battle and roared a loud roar. Bhimsen took courage at the sight of that warrior seated on his golden chariot drawn by horses of the colour of pigeons with his banner lifted high on a Kachnar tree. Seeing the Kalingas with Bhimsen running in

मेघात्मा आणायाजौ समम्ययात् ॥ ९९ ॥ तौदूरात् सात्यकिं दृष्ट्वा धृष्टद्युम्न वृकोदरौ । कलिंगान् समरे वीरौ योधयेतामनस्विनौ ॥ १०० ॥ स तत्र गत्वा शैनेयो जवेनजयतां वर । पार्थपार्षतयोः पार्ष्णिं जग्राहपुरुषर्षभः ॥ १०१ ॥ स कृत्वा दारुणं कर्म प्रगृहीत शरासन आस्थितो रौद्र मात्मान कलिंगानन्ववैक्षत ॥ २ ॥ कलिंग प्रभवांचैव मांसशोणितकर्दमां । रुधिरस्यंदिनीं तत्र भीम प्रावर्तयन्नदीं ॥ ३ ॥ अन्तरेण कलिंगानां पाण्डवानांच वाहिनीं । तासन्तताारदुस्तारां भीमसेनो महाबल ॥ ४ ॥ भीमसेन तथादृष्ट्वा प्राक्रोशंस्तावकानृप । कालोय भीमरूपेण कलिंगैः सहयुद्ध्यते ॥ ५ ॥ तत शांतनवो भीष्मः श्रुत्वात निनदरणे । अभ्ययात्वरितो भीम व्यूढानीक समततः ॥ ६ ॥ तंसात्यकिर्भीमसेनो धृष्टद्युम्नश्च पार्षत । अभ्य द्रवत भीष्मस्य रथ हेमपरिष्कृतम् ॥ ७ ॥

महा भयभीत हुई फिर उस शीघ्रगामियों में श्रेष्ठ सात्यकि ने वहां जाकर भीमसेन और धृष्टद्युम्नकी पृष्ठकोराक्षित किया और बड़ी धनुषधारी सेना को मारकर भयानक रूपमें नियतहुआ और भीमसेन ने कलिंग देशियों से उत्पन्न रुधिर रूपकीचसे भरी हुई, रुधिर के बहने वाली नदीको जारी किया इसी अन्तर में महाबली भीमसेन कलिंगदेशीय और पांडवोंकी महादुर्गम सेनाको अच्छेमकारसे तरगया।१०२। हे राजा तब तुम्हारी सेना के लोग भीमसेनको देखकर पुकारे कि यह काल पुरुष भीमरूप से कलिंग देशियों के साथ लडता है तदनन्तर शान्तनु भीष्मजी युद्धमें उस शब्दको सुनकर सेनाको चारों ओरसे तयार करके बड़ी शीघ्रता से सेना के सम्मुख आये उनको आते हुये देखकर सात्यकी व भीमसेन और धृष्टद्युम्न भीष्मजी के रथके सम्मुख दौड़े और सबो ने बड़ी शीघ्रता से गंगा पुत्र भीष्मजी को चारों ओरसे घेरकर तीन२शीघ्रगामी बाणोंसे घायलकिया।१०६। फिर आपके पिता देवव्रतभीष्मजी ने उन सब उपाय करनेवाले बड़े धनुष धारियों को सीधे चलने वाले तीन२ बाणों

their midst, brave Dhrishtadyumn entered the list of warriors and came to the help of Bhim The Kaling army was exceedingly terrified at the sight of those two great warriors, Bhimsen and Dhrishtadyumna Satyaki the foremost of agile warriors, protected the two warriors on the back and stood there killing the enemies from behind Bhim produced a stream of blood from the bodies of the Kalinga warriors and crossed over the impregnable armies of the Pandavas and Kalingas, 102. Then the people of your army cried out, "This dreadful warrior Bhim brings death to the Kaling warriors." Hearing these words in the field of battle, Bhishm rallies his forces from all sides and led them there Satyaki, Bhimsen and Dhrishtadyumna ran on to meet the chariot of Bhishm as soon as they saw him With great rapidity they surrounded the son of Ganga on all sides and each of them pierced him with three sharp arrows 106. Then your father

परिवार्यतु ते सर्वे गांगेयं तरसारणे । त्रिभिस्त्रिभिः शरैर्घोरैर्भीष्ममानर्छुरोजसा ॥ ८ ॥ प्रत्यविध्यत तान् सर्वान् पितादेव व्रतस्तव । यतमानान्महेष्वासांस्त्रिभिस्त्रिभिरजिह्मगैः ॥ ९ ॥ ततः शरसहस्रेण सन्निवार्य महारथान् । हयान् कांचन सन्नाहान् भीमस्य न्यहनच्छरैः ॥ ११० । हताश्वे सरथे तिष्ठन् भीमसेनः प्रतापवान् । शक्तिंचिक्षेप तरसा गांगेयस्य रथंप्रति ॥ ११ ॥ अप्राप्तामथतां शक्तिं पितादेव व्रतस्तव । त्रिधाचिच्छेदसमरे सापृथिव्यामशीर्यत ॥ १२ ॥ ततः शैक्यायसींगुर्वी प्रगृह्यबलवानगदाम् । भीमसेनस्ततस्तूर्णं पुप्लुवे मनजर्षभ ॥ १३ ॥ सात्यकोपि ततस्तूर्णं भीमस्य प्रियकाम्यया । गांगेय सारथिं तूर्णं पातयामास सायकैः ॥ १४ ॥ भीष्मस्तु निहतेतस्मिन् सारथौ रथिनांवरः । वाताय मानैस्तैर श्वैरपनीतो रणाजिरात् ॥ १५ ॥ भीमसेन स्ततो राजन्नपयाते महाव्रते । प्रजज्वाल यथा वह्निर्दहन्कक्षामिवैधितः ॥ १६ ॥

से घायल किया तिसके पीछे हजार वाणों से उन महारथियों को रोककर सुनहरी कवचरूप वस्त्रों से अलंकृत भीमसेन के घोड़ों को वाणों से मारा फिर मृतक घोड़े वाले रथपर नियत प्रतापवान भीमसेन ने वड़ी तीव्रतासे भीष्मजी के रथपर उग्रवरछी को फेंका।१०९। फिर आपके पिता देवव्रतने उस न पहुंची हुई वरछीको वीचही में दो खंड करके पृथ्वी में गिरादिया तदनन्तर पुरुषोत्तम भीमसेन वड़ी शीघ्रता से शक्या यशी वड़ीगदाको लेकररथसे कूदा।१११।और महारथी धृष्टद्युम्न उसको अपने रथपर सवार करके सब सेनाके देखते हुए दूर लेगया तदनन्तर सात्यकी ने भी भीमसेन के अभीष्ट के लिये शीघ्रही शायकों से कोरवों के पितामह भीष्मजी के सारथीको रथमे गिराया उस सारथी के मरने पर रथियों मे श्रेष्ठ भीष्मजीभी उन वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्धभूमि मे दूर चले गये तदनन्तर हे राजा उस महारथी भीष्मके दूरचले जाने पर भीमसेन को ऐसा महाकोप उत्पन्न हुआ जैसे कि वनको जलाने वाली अग्नि प्रचंडहोती है और सब कलिंग देशियों को

Devabrat Bhishm wounded each of them with three sharp arrows and checking them all with a thousand arrows he killed Bhim's horses decked with gold armour and trappings. And from his horseless chariot Bhim hurled a dreadful spear at Bhishm 109. Your father Devabrat cut the spear in two pieces before it had reached him. Thereupon Bhim jumped down from the chariot with the mace in his hand. Dhrishtadyumna took Bhim on his own chariot and went away with him farther away To please Bhim Satyaki killed the driver of Bhishma's chariot and Bhishm drove his horses, swift as the wind, far from the field of battle. After the departure of that great warrior, Bhim flew into a rage like fire in a burning forest and entered the Kaling army intending to destroy all None of your warriors could face Bhim at that time. 116, Then Bhim the bestof the descend

सहत्वा सर्वं कालिंगान् सेनामध्ये व्यतिष्ठत । नैनमभ्युत् सहन् केचित्तावकाभरतर्षभ ॥ १७ ॥ धृष्टद्युम्नस्तमारोप्य स्वरथे रथिनांवरः । पश्यतां सर्व सैन्यानामपोवाहयश स्विनम् ॥ १८ ॥ संपूज्यमानः पांचाल्यैर्मत्स्यैश्च भरतर्षभ । धृष्टद्युम्नंपरिष्वज्य समे याद्य सात्यकिं ॥ १९ ॥ अथाब्रवीद्भीम सेनं सात्यकिः सत्यविक्रमः । प्रहर्षयन् यदुव्याघ्रो धृष्टद्युम्नस्य पश्यतः ॥ १२० ॥ दिष्ट्या कालिंग राजश्च राजपुत्रश्च केतुमान् । शक्रदेवश्च कालिंगः कलिंगाश्च मृधेहताः ॥ २१ ॥ स्वबाहु बलवीर्येण नागाश्वरथ संकुलः । महापुरुष भूयिष्ठो वीरयोध निषेवितः ॥ २२ ॥ महाव्यूहः कालिंगना मेकेनमृदितस्त्वया । । एवमुक्त्वाशिनेर्नप्ता दीर्घबाहुररिंदम ॥ २३ ॥ रथाद्रथमभिद्रुत्य पर्यष्वजत पांडवम् ।। ततः स्वरथमारुह्य पुनरेवमहारथः । तावकान वधीत्क्रुद्धो भीमस्य बलमादधत् ॥ १२४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधप० द्वितीययुद्ध दिवसे कलिंग राजवधे चतुष्पंचा शत्तमोऽध्यायः ॥ १२४ ॥

मारकर सेना में आगया, हे भरतवंशी आपका कोई वीर इसके सम्मुख होनेको समर्थ नहीं हुआ।११९। फिर भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ भीमसेन पांचाल और मत्स्यदेशियोंसे अच्छी रीति प्रशंसित धृष्टद्युम्न को छोड़कर सात्यकी से मिला तदनन्तर यादवों में श्रेष्ठ सत्य पराक्रमी सात्यकि धृष्टद्युम्न के देखते हुए भीमसेनकी प्रशंसा करके यह वचन बोले कि प्रारब्धसे राजा कलिंग और राजकुमार केतुमान् और कलिंगदेशी शक्रदेव और अन्य सब कलिंगदेशी लोग युद्धमें मारेगये सो तुम अकेलेनेही अपने भुजबलके पराक्रम से कलिंग देशियों के घोड़े हाथी और रथोंसे संकुल महाबली शूरवीरोंसे सेवित महाव्यूहको मरदन ।१२०। किया, शत्रुओंका जीतनेवाला और लम्बी भुजावाला सात्विकी इस प्रकार कहकर उस रथपर नियत पांडवों के पास जाकर मिला, तदनन्तर उस क्रोधसे भरे सात्यकि ने भी आपकी सेना के मनुष्योंको मारा और भीमसेनकी सेना को रक्षित किया ॥ १२४ ।

---

ants of Bharat, praised by the people of Matsya and Panchal, left Dhrishtadyumna and came to Satyaki. Satyaki of true prowess, the best of the Yadavas, praised Bhim in the presence of Dhrishtadyumna and said, "It was by fate that the king of Kaling, prince Ketuman and Shakradev and other Kalingas were killed in the field of battle. You alone have by the prowess of your arms killed all the *Kalings together with the chariots, horses and elephants.*"120. Hearing this, Satyaki of long arms drove in his chariot to the Pandavas and he too, destroyed the people of your army in a great rage and protected the army of Bhimsen. 124.

संजय उवाच। गतपूर्वाह्णे भूयिष्ठे तस्मिन्नहनि भारत। रथनागाश्व पत्तीनां सादिनांच महाक्षये ॥ १ ॥ द्रोण पुत्रेण शल्येन कृपेणच महात्मना। समसज्जतपांचाल्य स्त्रिभरेतैर्महारथैः ॥ २ ॥ सलोक विदितानश्वान्निजघान महाबलः। द्रौणे: पांचालदायादः शितैर्दशभिराशुगैः ॥ ३ ॥ ततः शल्य रथंतूर्ण मास्थाय हतवाहनः। द्रौणि.पांचालदायाद मभ्यवर्ष दथेषुभिः ॥ ४ ॥ धृष्टद्युम्नंतु संयुक्तं द्रौणिनावीक्ष्य भारत। सौभद्रोऽभ्यपतत्तूर्ण विकिरन्निशितान् शरान् ॥ ५ ॥ सशल्यं पंचविंशत्याकृपंच नवभिः शरैः। अश्वत्थामान मष्टाभिर्विव्याध पुरुषर्षभ ॥ ६ ॥ आर्जुनिंतु ततस्तूर्णं द्रौणिर्विव्याध पत्रिणा। शल्योथ दशभिश्चैव कृपश्चानशितैस्त्रिभिः ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ ५५ ॥

संजयबोले हे भरतवंशी उस मध्याह्न के अन्तहोनेपर रथघोड़े हाथी और सवार पैदलों के बड़े नाशहोने पर धृष्टद्युम्न अकेला ही अश्वत्थामा शल्य और महात्मा कृपाचार्य इन तीनों महाबलियोंके सम्मुख हुआ, और बड़ी शीघ्रतासे तीव्र और शीघ्रगामी बाणों से अश्वत्थामा के प्रसिद्ध घोड़ोंको मारा तदनन्तर मृतक घोड़ेवाला अश्वत्थामा बहुतशीघ्र शल्यके रथपर चढ़कर उसी रीतिसे बाणसंयुक्त होकर धृष्टद्युम्न के सम्मुखहुआ, हे भरतवंशी सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु अश्वत्थामा से भिड़ेहुए धृष्टद्युम्न को देखकर बड़े तीव्र बाणोंको फेंकताहुआ शीघ्रही सम्मुख दौड़ा, और वहां जाकर उस अभिमन्युने शल्यको पच्चीसबाणोंसे कृपाचार्यको नौ बाणों से और अश्वत्थामा को आठबाणोंसे घायल किया, ।६। इसके पीछे अर्जुनके पुत्र अभिमन्युको अश्वत्थामा ने एकबाण से शल्यने बारह बाणों से और कृपाचार्य

CHAPTER LV

"In the afternoon," said Sanjaya, "after the great destruction of chariots, horses, elephants and soldiers Dhrishtadyumna alone faced Ashwathama, Shalya and great Kripacharya and with great dexterity destroyed the famous horses of Ashwathama. Ashwathama, when his horses were killed, mounted the chariot of Shalya and faced Dhrishtadyumna. Abhimanyu the son of Subhadra saw Dhrishtadyumna fighting with Ashwathama and at once came there shooting sharp arrows. He wounded Shalya with twenty five arrows, Kripacharya with nine and Ashwathama with eight. 6. Then, Abhimanyu, the

लक्ष्मणस्तवपौत्रस्तु सौभद्रसमवस्थितम् । अभ्यवर्तत संहृष्टस्ततो युद्धमवर्तत ॥८॥ दौर्योधनिस्तु संक्रुद्ध सौभद्र परवीरहा । विव्याध समरे राजंस्तदद्भुत मिवाभवत् ॥ ९ ॥ अभिमन्युःसुसंक्रुद्धो भ्रातरं भरतर्षभ । शरैः पंचाशतै राजन् क्षिप्रहस्तोऽभ्यविध्यत ॥ १० ॥ लक्ष्मणोपि पुनस्तस्य धनुश्चिच्छेदपत्रिणा । मुष्टिदेशे महाराजततस्ते चुक्रुशुर्जना ॥ ११ ॥ तद्विहाय धनुश्छिन्नं सौभद्र परवीरहा । अन्यदादत्तवांश्चित्रं कार्मुकवेगवत्तरम् ॥ १२ ॥ तौ तत्र समरे युक्तौ कृतप्रति कृतैषिणौ । अन्योन्यंविशिखैस्तीक्ष्णैर्जघ्नतु पुरुषर्षभौ ॥ १३ ॥ ततो दुर्योधनो राजा दृष्ट्वा पुत्रमहारथम् । पीडितं तव पौत्रेण प्रायात्तत्र प्रजेश्वरः ॥ १४ ॥ सन्निवृत्तेतवसुते सर्व एवजनाधिपा । आर्जुनिं रथवंशेन समंतात्पर्यवारयन् ॥ १५ ॥ सतैःपरिवृतःशूरैः शूरोयु

ने तीन तीक्ष्णवाणों से घायल किया, फिर आपका पोता लक्ष्मण उस सम्मुख आये हुये अभिमन्यु को देखकर महाकोपित होकर उसके आगे वर्त्तमान हुआ और उनदोनोंका बड़ा युद्ध हुआ। हे राजा इसके पीछे महाक्रोधी दुर्योधन के पुत्र ने युद्ध में उस सुभद्रा के पुत्रको तीव्रवाणों से घायल किया यह आश्चर्य्यसा हुआ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ फिर उस क्रोधरूप अभिमन्यु ने अपनी हस्तलाघवता से शीघ्रहीपांचसौ वाणोंसे भाई लक्ष्मणकोघायलकिया ।१०। फिरलक्ष्मणनेभी एकवाण से उसके धनुषको मुष्ट देश से काटा इसकारण से मनुष्यों ने बड़ा शब्द किया, फिर वीर शत्रुहन्ता अभिमन्युने उस टूटे हुए धनुषको छोड़कर बड़े वेगवान जड़ाऊ धनुषको हाथमें लिया, फिर युद्धकर्म में मदत्त द्वन्द्वयुद्ध करने वाले दोनों पुरुषोत्तमों ने तीक्ष्णधार वाले वाणों से परस्पर एकको एकने घायल किया, इसके पीछे महा राजा दुर्योधन अपने महावली पुत्रको आपके पोतेसे पीड़ामान देखकर वहां आया फिर आपके पुत्र के अलग होजाने पर सब राजालोगों ने रथोंके समूहों समेत अर्जुनके पुत्र अभिमन्युको रोका ।१५। हे राजा युद्ध में अजेय श्रीकृष्णजी के समान

son of Arjun was hit by one arrow of Ashwathama's, twelve of Shalya's and three sharp ones of Kripacharya. Your grandson Lakshman, seeing the advance of Abhimanyu attacked him in great anger. Both the warriors fought bravely. The enraged son of Duryodhan wounded the son of Subhadra with sharp arrows and did wonders. Abhimanyu was thereupon much enraged and wounded his cousin Lakshman by dexterously shooting five hundred arrows at him. 10 Lakshman cut down the bow of Abhimanyu by an arrow to the acclamation of the people. Brave Abhimanyu dropped that bow and took up another, decked with gems. Both the warriors wounded each other in battle. Prince Duryodhan, seeing his son in trouble at the hands of Abhimanyu, came there and with innumerable chariots the kings checked Abhimanyu the son of Arjun. 15.

धिष्ठुदुर्जयै. । नरसमवत्यवते राजन् कृष्णतुल्य पराक्रमः ॥ १६ ॥ सौभद्रमथसंसक्तंदृष्ट्वा तत्र धनंजयः । अभिदुद्रावयेगेन त्रातुकामः स्वमात्मजम् ॥ १७ ॥ ततः सरथनागा श्वाभीष्मद्रोणपुरोगमा । अभ्यवर्तत राजानः सहिताः सव्यसाचिनम् ॥ १८ ॥ उद्धूतं सहसा भौमं नागाश्वरथपत्तिभिः । दिवाकररथं प्राप्य रजस्तीव्रमदृश्यत ॥१९॥ तानिनाग सहस्राणि भूमपाल शतानिच । तस्य वाणपथं प्राप्य नाभ्यवर्ततसर्वशः ॥ २० ॥ प्रणेदुः सर्वभूतानि वभूवुस्तिमिरादिशः । कुरूणांचानयस्तीव्रः समदृश्यत दारुणः ॥ २१ ॥ नाप्यं तरिक्षं नदिशो नभूमिनचभास्करः । प्रजज्ञेभरतश्रेष्ठ शस्त्रसंघैः किरीटिनः ॥ २२ ॥ सादिता रथनागाश्च हताश्वारथिनोरणे । विप्रद्रुतरथा केचि दृश्यंते रथयूथपाः ॥ २३ ॥ विरथा रथिनश्चान्ये धावमानाः समंततः । तत्रतत्रैव दृश्यंते सायुधाः सांगदैर्भुजैः ॥ २४ ॥ हयारोहाहयांस्त्यक्त्वा गजारोहाश्चदंतिनः ।

पराक्रमी शूरवीर अभिमन्यु उनशूरों से घिरा हुआ भी व्याकुल नहीं हुआ, तदनन्तर अर्जुन वहां अभिमन्युको भिड़ाहुआ देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अपने पुत्रकी रक्षा करनेको सम्मुख दौड़ा तदनन्तर रथ घोड़े और हाथियों समेत वह राजा लोग जिनमें अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य थे अकस्मात आकर अर्जुन के सम्मुख वर्त्तमान हुए। १८ । मनुष्य घोड़े और रथोंके चलने से एका एकी पृथ्वी से धूल उड़ी और सूर्य के मार्गको पाकर तेज दिखाईदी वह हजारों हाथी और राजा लोग उस अर्जुनके वाणों के मार्गको पाकर सवरीतों से सम्मुख वर्त्तमान नहीं रहे । २० । सब जीवजन्तु पुकारे और दिशाओंमें अन्धकारहुआ और कौरवोंका अन्यायरूप भयानक फल उत्पन्न हुआ हे नरोत्तम मुकट धारी। अर्जुनके वाणों से अन्तरिक्ष अर्थात् पृथ्वी और आकाश के मध्य में दिशा पृथ्वी और सूर्य नहीं दिखाई दिये हाथी ध्वजाओं से रहित हुए और असंख्यों रथी मृतक घोड़े वाले हुए और कोई महारथी ऐसे दृष्ट पड़े कि जिनके रथी भाग गये कहीं रथी लोग अपने रथों से रहित शस्त्र और वाजूबन्दों समेत इधर उधर दौड़ते हुए जहां तहां दिखाई देते थे हे राजा अर्जुनके

querable in battle, like shree Krishn in prowess brave Abhimanyu, surrounded by those warriors, did not lose heart. Seeing his son so surrounded, Arjun hastened to protect him. With chariots, horses and elephants the kings led by Bhishm and Dronacharya, opposed Arjun. 18. Men, horses and chariots, moving together, caused a storm of dust which rose to the sun. The kings with all their array of elephants could not withstand Arjun's arrows. 20. All the creatures cried out with fear and there was darkness in all directions, showing the fruit of the injustice of the Kauravas. The earth and firmament was covered with Arijun's arrows; the elephants became destitute of banners and numerous chariots lost their horses. Some warriors lost their chariot drivers others lost chariots and were seen roaming this way or that, with weapons and armour on. The riders of

अर्जुनस्य भया राजन् समंताद्विप्रदुद्रुवुः ॥ २५ ॥ रथेभ्यश्च गजेभ्यश्च हयेभ्यश्च
नराधिपाः । पतिताः पात्यमानाश्च दृश्यंतेऽर्जुनसायकैः ॥ २६ ॥ स गदानुद्यतान्
बाहून् स खड्गांश्च विशांपते । स प्रासांश्च स तूणीरान् स शरान् स शरासनान्
॥ २७ ॥ सांकुशान् स पताकांश्च तत्र तत्रार्जुनो नृणां । निचकर्त्त शरैरुग्रै रौद्रं वपुरधार
यत् ॥ २८ ॥ परिघाणां प्रदीप्तानां मुद्गराणांच मारिष । प्रासानां भिंदिपालानां
निस्त्रिंशानांच संयुगे ॥ २९ ॥ परश्वधानां तीक्ष्णानां तोमराणांच भारत । वर्मणां
चापविद्धानां कांचनानांच भूमिप ॥ ३० ॥ ध्वजानांचर्मणांचैव व्यजनानांच सर्वशः ।
छत्राणांहेम दंडानां तोमराणांच भारत ॥ ३१ ॥ प्रतोदानांच योक्त्राणांकशानांचैव
मारिष । राशयःस्मात्रदृश्यंते विनिकीर्णारणक्षितौ ॥ ३२ ॥ नासीत्तत्र पुमान्क-
श्चित्तव सैन्यस्यभारत । योऽर्जुनं समरे शूरं प्रत्युद्यायात्कथंचन ॥ ३३ ॥ योयोहि
समरेपार्थं प्रत्युद्यातिविशांपते । ससंख्येविशिखैस्तीक्ष्णैः परलोकायनीयते ॥ ३४ ॥

भयसे घोड़े के सवार घोड़ों को और हाथी के सवार हाथियों को त्याग करके चारोंओरसे भागे।२५। और बहुतसे राजालोग अर्जुनके बाणोंसे रथहाथी और घोड़ों से गिराये वा गिरते हुए दृष्ट पड़ते थे हे राजा अर्जुन ने जहां तहां गदा समेत उठाये हुए और खड्ग पराश. तूणीर बांण धनुष इत्यादि को उठाये हुए अथवा अंकुश और पताकाओं समेत उठाये हुए मनुष्यों की भुजाओं को अपने कराल बाणों से काटकर रुद्ररूप धारण किया । हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र युद्ध में कटे हुए परिघ, मुद्गर प्राश, भिंदिपाल खड्ग तीक्ष्ण परसे तोमर औरधनुपसे काटेहुए सुनहरी कवचभी हजारों पृथ्वीपर पड़े हुए दृष्ट आये और सबप्रकारकी ध्वजा ढाल पंखे और सुनहरी दंडवाले छत्र तोमर चाबुक कोड़े और रस्सियों के ढेरोंके ढेर युद्ध भूमि में फैले हुए दिखाई दिये ।३२।हे श्रेष्ठ आपकी सेनाका कोई मनुष्यभी ऐसा न हुआ जो युद्धमें उसशूरवीर अर्जुन के सम्मुख जाय हे राजा युद्ध में जो २ अर्जुनके सम्मुख जाता है वह बाणों के द्वारा यमपुर को भेजा जाता है सब रीति से आपके शूरों के भागजाने पर अर्जुन और वासु

elephants and horses lost their beasts and fled in different directions.25 And many kings, hit by Arjun's arrows, were seen falling from their chariots, horses or elephants. Arjun assumed dreadful form as he cut down the hands which were in the act of raising maces, swords, quivers, arrows, bows, goads or banners. There were seen on the field of battle thousands of clubs, maces, swords, sharp arrows and golden armour pierced through by Arjun's arrows. All sorts of banners, shields, fans and umbrellas with gold handles, whips and ropes were seen in heaps on the field of battle.32. Not a single warrior of your army could face Arjun in the field of battle. Whoever came in Arjun's way, was sent to the region of Yam by Arjun's arrows. When your army was thus routed, both Shree Krishn and Arjun sounded their good Conch shells. Your father Devabrat, seeing

तेषुविद्रवमाणेषु तवयोधेषुसर्वशः । अर्जुनो वासुदेवश्च दध्मतुर्वारिजोत्तमौ ॥ ३५ ॥ तत्प्रभग्नंबलं दृष्ट्वा पितादेवव्रतस्तव । अब्रवीत्समरे शूर भारद्वाजस्मयन्निव ॥ ३६ ॥ एषपांडु सुतोवीर कृष्णनसहितोबली । तथा करोति सैन्यानि यथाकुर्याद्धनंजय । ॥ ३७ ॥ नह्येष समरे शक्यो विजेतुंहि कथंचन । यथास्यदृश्यतेरूप कालांतकयमोपम ॥ ३८ ॥ ननिवर्तयितुं चापि शक्येयं महतीचमू । अन्योन्य प्रेक्षयापश्य द्रवतीयं वरूथिनी ॥ ३९ ॥ एष चास्तं गिरिश्रेष्ठ भानुमान् प्रतिपद्यते । चक्षूंषि सर्वलोकस्य संहरन्निव सर्वथा ॥ ४० ॥ तत्रावहार सम्प्राप्त मन्येहं पुरुषर्षभ । श्रान्ताभीताश्च नोयोत्स्यन्तियोत्स्यतिकथंचन ॥ ४१ ॥ एवमुक्त्वा ततो भीष्मो द्रोणमाचार्यसत्तमम् । अवहारमथोचक्रे तावकानां महारथः ॥ ४२ ॥ ततोवहार. सैन्यानां तवतेषाचभारत । अस्तंगच्छतिसूर्येऽभूत्सध्याकालेच वर्तति ॥ ४३ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वितीययुद्ध दिवसा वहारे पंचपंचाशत्तमोऽध्याय ॥ ५५ ॥

देवजी ने उत्तम शंखोंको बजाया फिर आपके पिता देवव्रत उस सेनाको भागाहुआ देखकर बड़ा आश्चर्य करके युद्ध में महा शूरवीर द्रोणाचार्यजी से बोले कि यह पांडु का बेटा धीर बलवान् श्री कृष्णजी के साथ में होकर उसी प्रकार सेनाओंको मारकर काटे डालताहै जैसे कि संसारी धनका विजय करने वाला करताहै अर यह किसी प्रकारसे भी युद्ध में जीतने के योग्य नहीं है, इसका रूपकालवा अन्तक वा यमनाप मृत्युके समान दृष्ट आता है और यह बड़ी सेनाभी नाश करवाने के योग्य नहीं है देखो-यह सेना परस्परकी सहायता से निर्बल है यह सूर्य सब रीति से सबलोकों की दृष्टि को हरता हुआ पर्वतों में श्रेष्ठ अस्ताचल को प्राप्त होता है हे पुरुषोत्तम ऐसी दशामें मैं सेनाके विश्रामको चाहताहूं, जो युद्धकर्त्ता भयभीत हुए थकगये हैं वह कभी नहीं लड़ेंगे महारथी भीष्मजी ने आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य से इस रीति से कहकर आपकी सेनाओं का विश्राम किया है श्रेष्ठ सूर्यके अस्तंगत होनेपर आपकी और पांडवोंकी सेनाका विश्राम हुआ और सन्ध्यावर्त्तमान हुई ॥ ४३ ॥

the defeat of your armies made in great amazement the following remark with a hearing of brave Dronacharya —"This son of Pandu, accompanied by Shree Krishna, kills and destroys the armies like a winner of worldly wealth He is in no way conquerable in battle He looks like Yam or death in bodily form. We should not leave this large army to be thus destroyed by him The soldiers are tired and the sun is setting down, depriving people of the use of their sight. Under these circumstances I desire the retreat of the army The warriors who are tired or afraid will fight no longer." Having said this to Dronacharya, Bhishm sounded the retreat of the army, and as it was nearly dark, the two armies retired for the night "43.

संजय उवाच । प्रभातायांच शर्वर्यां भीष्मः शांतनवस्तदा । अनीकान्यनुसंयाने व्यादिदेशाथभारत ॥ १ ॥ गारुडंच महाव्यूहं चक्रेशांतनवस्तदा । पुत्राणांतेजयाकांक्षी भीष्मः कुरुपितामहः ॥ २ ॥ गरुडस्यस्वयं तुंडे पितादेव व्रतस्तव । चक्षुषीच भरद्वाजः कृतवर्माच सात्वतः ॥ ३ ॥ अश्वत्थामा कृपश्चैव शीर्षमास्तांयशस्विनौ । त्रैगर्त्तैरथकेकैयैर्वाटधानैश्च संयुगे ॥४। भूरिश्रवाःशलःशल्योभगदत्तश्चमारिप । मद्रकाःसिंधु सौवीरास्तथापांचनदाश्चये ॥५। जयद्रथेन सहिताग्रीवायां सन्निवेशिताः। पृष्ठे दुर्योधनो राजा सोदर्यैः सानुगैर्वृतः ॥ ६ ॥ विन्दानुविंदावावन्त्यौ काम्बोजश्चशकैः सह । पुच्छ मासन्महाराज शूरसेनाश्च सर्वशः ॥ ७ ॥ मागधाश्च कलिंगाश्च दासेरकगणैः सह । दक्षिणं पक्षमासाद्य स्थिताव्यूहस्य दंशिताः ॥ ८ ॥ कारूषाश्च विकुञ्जाश्च

अध्याय ॥ ५६ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे शत्रु संतापी भीष्मजी ने प्रातःकाल के समय चढ़ाई करने के निमित्त सेनाओं को आज्ञाकरी तब आपके पुत्रों की विजय चाहने वाले कौरवोंके पितामह वृद्ध भीष्मजी ने गारुड़नाम महाव्यूहको रचा, उस में आपके पिता देवव्रत तो गरुड़की चोंच पर हुए और भारद्वाज द्रोणाचार्य व कृतवर्मा यादव यहदोनों नेत्रों के स्थानमें हुए और यशस्वी अश्वत्थामा और कृपाचार्य शिरके स्थान में हुए और जो त्रिगर्त्तमत्स्य वा केकय यह सब वाटधानों से युक्त थे और भूरिश्रवा शल शल्य भगदत्त मद्रक सिंधु सौवीर और पंचनदवासी लोग यह सब जयद्रथके साथ ग्रीवामें नियत हुए और राजा दुर्योधन अपने सगे भाइयों समेत अपने पीछे चलने वाले शूरवीरों से युक्त पीछेकी ओर नियतहुए विंद और अनुविन्द अवन्तिके राजा लोग और कांबोज यहसब शकलोगों वा शूरसेन देशी वीर लोगोंके युक्त गरुड़ की पूंछकी ओर नियतहुए।७। और मगध देशी व कलिंग देशी व अंसुर लोगोंके समूह यह सब गरुड़ के दक्षिण पक्षपर नियत हुए और

CHAPTER LVI

Sanjaya continued. "Bhishm the destroyer of enemies, led his armies at the break of day and desirous of the conquest over your sons he arrayed the forces in the form of a bird. Your father devabrat stationed himself in the place of the beak; Bharadwaj, Dronacharya and Kritvarma the Yadav represented the eyes; glorious Ashwathama and Kripacharya with the Trigarts, the Matsyas, the Kaikayas and the Vatdhans stationed themselves at the head; Bhurishrava, Shal, Shalya, Bhagdatta, and the people of Madrak, Sindhu, Sauvir and, Panchnad led by Jayadrath, stood at the neck. Prince Duryodhan and his brothers with their attendant warriors stood on the back. Vind, Annvind the princes of Avanti and Kambhoj with the Shakas and Shursenas stood at the tail.7. The armies of Magadh and Kaling

मुण्डाः कुण्डी वृषास्तथा । बृहद्बलेन सहिता वामपार्श्वं मयस्थिता॰ ॥ ९ ॥ व्यूह दृष्ट्वातु तत् सैन्य सव्यसाची परन्तप । धृष्टद्युम्नेन सहित प्र यव्यूहतसयुगे ॥ १० ॥ अर्द्धचन्द्रेण व्यूहेन व्यूह तमति दारुणम् । दाक्षिण शृङ्ग मास्थाय भीमसेनो व्यरोचत ॥ ११ ॥ नानाशस्त्रौघ सम्पन्नैर्नादिदेश्यैर्नृपैर्वृत । तदन्वेव विराटश्च द्रुपदश्च महारथ १२॥ तदनन्तर मेवासीन्नीलोनीलायुधै सह । नीलादनन्तरश्चैव धृष्टकेतुर्महाबल ॥१३॥ चेदि काशिककरूपैश्च पौरवैरपि सवृत । धृष्टद्युम्न शिखण्डीच पञ्चालाश्च प्रभद्रका ॥ १४ ॥ मध्ये सैन्यस्य महत स्थिता युद्धाय भारत । तत्रैव धर्मराजोऽपि गजानीकेन सवृत॰ ॥ १५ ॥ ततस्तु सात्यकी राजन् द्रौपद्या पञ्चचात्मजा । अभिमन्युस्तत शूर इरावा श्च तत॰ परम् ॥ १६ ॥ भैमसेनिस्ततो राजन् केकयाश्च महारथा । ततोभूद् द्विपदां श्रेष्ठो वाम पार्श्वं मुपाश्रित॰ ॥ १७ ॥ सर्वस्य जगतो गोप्ता गोप्ता यस्य जनार्दन॰ । एव

कारुप विकुंज मुंड कौंडी वृष यह सब वृहद्बलसमेत बायें पक्षपर उपस्थितहुए।९। उस युद्धभूमि में शत्रुहन्ता परन्तप अर्जुनने उस व्यूहित सेना को देखकर धृष्टद्युम्नकी सलाह से उसकी समानताका अपनी सेनाकाभी व्यूहरचा अर्थात् सब पाण्डवों ने आपके उसव्यूह को देखकर अर्द्धचन्द्राकार व्यूहसे अपनी भयानक सेनाको सुशोभित किया।११। और नानाप्रकार के शस्त्रोंके समूह और अनेक देशी राजा लोगों सेयुक्त भीमसेन दाहिने शृंगपर नियतहोकर शोभायमानहुआ, उसीके पीछे महारथी विराट और द्रुपद नियतहुए फिर उन के पीछे अपने नीले आयुधों समेत राजानील और नील के पीछे चंदेरी व काशी व करूपदेशी व पौरवदेशी इन सबको साथ लिये राजा धृष्टकेतु वर्त्तमानहुए और हेमरतपभ धृष्टद्युम्न शिखण्डी पांचालदेशी और प्रभद्रक॰यह सब अत्यन्त सेना समेत युद्धकरने के लिये बीचमें नियतहुए।१५।और उसीस्थानमें हाथियोंकी सेना समेत राजा धर्मराज युधिष्ठिरभी वर्त्तमानहुये और उस के पीछे सात्विकी व द्रौपदीके पांचों पुत्र थे उन से पीछे अभिमन्यु अभिमन्यु के

stood at the right wing, and Karush, Vikunj, Mund, Kaundi, Vrish and Vrihadval were on the left wing 9 In that field of battle, glorious Arjun the destroyer of enemies, seeing that array of the Kaurava army, arrayed his own army with the advice of Dhrishtadyumna. The Pandav army was arrayed in the form of a crescent moon. 11 Bhimsen with a collection of weapons and princes of different places, stood at the right horn in great glory Kings Virat and Drupad stationed themselves behind Bhimsen Behind them, with blue arms and armour, stood king Nil, and on his back stood the warriors of Chanderi, Kashi, Karush and Paurav countries led by Dhrishtaketu Dhrishtadyumna and Shikhandi of Panchal and the Prabhadraks with a large army stood in the middle 15 Near them was king Yudhishthir with a large number of elephants, and on his back were

मैतं महाव्यूहं प्रत्यव्यूहन्त पाण्डवा. ॥१८॥ वधार्थंतवपुत्राणां तत्पक्ष्ये येच संगताः। ततः प्रववृतेयुद्धं व्यतिषक्तरथद्विपम् ॥ १९ ॥ तावकानां परेषाञ्च निघ्नतामितरेतरम्। हयौघाश्च रथौघाश्च तत्र तत्र विशाम्पते ॥ २० ॥ सम्पतन्तो व्यदृश्यन्त निघ्नन्तस्ते परस्परम्। धावतांच रथौघानां निघ्नताञ्चपृथक्पृथक् ॥ २१ ॥ बभूव तुमुलः शब्दो विमिश्रो दुन्दुभिस्वनैः। दिवस्पृक् नरवीराणां निघ्नतामितरेतरम्। सम्प्रहारेषु तुमुले तव तेषांच भारत ॥ २२ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीयेयुद्ध दिवसे परस्पर व्यूहरचनायां पट्पंचा शत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

पीछे इरावान और उसके पीछे भीमसेनका पुत्र घटोत्कच और महारथी केकयदेशी उसके पीछे नरोत्तम सब जगत् का रक्षक जिसके रक्षक जनार्दन थे वह अर्जुन हुआ ।१९। इसरीतिसे पांडवोंने आपके पुत्रों के और उन के सहायकों के मारनेके निमित्त इस बड़ेभारी व्यूह को रचा, तदनन्तर आपके पुत्र और पांडवों में परस्पर वह युद्ध जिसमें हाथी घोड़े और रथ संयुक्त थे जारीहुआ, हे राजा जहां तहां वह हाथी और रथोंके समूह परस्परमें मारते और गिरते हुये दृष्ट पड़ते थे, और दौड़ते वा पृथक् २ लड़नेवाले रथ के समूहों के महाकठिन शब्द दुन्दुभियों के शब्दों से मिलेहुये सुने जाते थे, हे भरतवंशी उसतुमुलयुद्ध में परस्पर में मारतेहुये आपके और दूसरों के शूरवीरोंके शब्द आकाशतक व्याप्तहुये २३ ॥

Satyaki, the five sons of Draupadi and Abhimanyu. Behind Abhimanyu was Iravan and Ghatotkach the son of Bhimsen was on the back of Iravan. Behind them were the warriors of Kaikaya with the best of men, Arjun who was himself protected by Janardan the protector of all. 19. Thus the Pandavas arrayed, that formidable army to destroy your sons and their allies. Then the two armies consisting of elephants, horses and chariots, mixed together, met in combat. The groups of elephants and chariots were seen destroying one another, and the rumbling of chariot wheels, which were constantly rolling in the field of battle, was dreadful. The noise made by the chariot wheels; mixed with that from the horns was tremendous; and the cries of the warriors on both sides rang through the firmament. 23.



सञ्जय उवाच ॥ ततो व्यूढेष्वनीकेषु तावकेषु परेषु च । धनञ्जयो रथानीकमवधीत्त्वभारत ॥ १ ॥ शरैरतिरथो युद्धे दारयन्रथयूथपान् । ते वध्यमाना पार्थेन कालेनेव युगक्षये ॥ २ ॥ धार्त्तराष्ट्रा रणे यत्ता पाण्डवान् प्रत्ययोधयन् । प्रार्थयाना यशोदीप्तं मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ३ ॥ एकाग्रमनसो भूत्वा पांडवानां वरूथिनीम् । बभञ्जुर्बहुशो राजस्ते चासज्जन्त संयुगे ॥ ४ ॥ द्रवद्भिरथ भग्नैश्च परिवर्त्तद्भिरेव च । पाडवैः कौरवेयैश्च न प्राज्ञायत किञ्चन ॥ ५ ॥ उदतिष्ठद्रजो भौमं छादयान दिवाकरम् । न दिशः प्रदिशो वापि तत्र जज्ञुः नरा ॥ ६ ॥ अनुमानेन संज्ञाभिर्नामगोत्रैश्च संयुगे । वर्त्तते च तथा युद्धं तत्र तत्र विशाम्पते ॥ ७ ॥ न व्यूहो भिद्यते तत्र कौरवाणां कथञ्चन । रक्षितः सत्यसन्धेन भारद्वाजेन संयुगे ॥ ८ ॥ तथैव पाडवानाञ्च रक्षितं सव्यसाचिना । नाभिद्यत महाव्यूहो भीमेन च सुरक्षित ॥ ९ ॥ सेनाग्रादपिनिष्पत्य

अध्याय ॥ ५७ ॥

संजय बोले हेभरतवंशी इसके अनन्तर आपके पुत्रों की और पांडवोंकी सेना के व्यूहितहोनेपर बाणों से महारथियों को गिराते हुए अति रथी अर्जुनने रथके यूथपों को इस रीतिसे मारा जैसे कि युग के अन्तमें काल सबका नाश करता है, इस रीति से अर्जुन से घायल और पीड़ित उन धृतराष्ट्र के पुत्रों ने युद्ध में महा कुशल पांडव लोगों से युद्ध किया हे राजा अपनी कीर्त्ति के चाहने वाले उन कौरवों ने मृत्युको न लौटने वाली मानकर चित्तको स्थिर करके पांडवो की सेनाको ,अनेक रीतों से छिन्न भिन्न करके आपभी युद्धसे छिन्न भिन्न होगये, फिर भागते और छिन्न भिन्नहोते अथवा लौटते समय में कौरव पांडवों की धूमधाम में कुछ नही जाना गया और धूल ऐसी उड़ी कि जिससे पृथ्वी और सूर्य ढकगये और अन्धकार ऐसा मचगया जिसमें दिशा विदिशाका कुछ भी ज्ञान न रहा, हे राजा उस समय वहां संग्राम भूमि में ध्यान और नाम गोत्रों के द्वारा युद्धजारी रहा, हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र

CHAPTER LVII

Sanjaya continued, "When the armies of your sons and those of the Pandavas were thus arrayed Arjun began to destroy the great warriors and charioteers as Kal destroys all the living beings at the end of the yug Wounded and distressed by the arrows of Arjun, the sons of Dhritrashtra fought against the Pandav warriors The Kauravas desirous of fame, knew that death was inevitable and fought steadily, killing others and being killed themselves. Nothing was discernible in the fury of the battle and the dust arising from the two armies covered the whole firmament, so that neither the sun nor the earth could be distinguished.6 The warriors fought with their adversaries by distinguishing their voices and asking their names Protected by Dronacharya the Kaurava armies could not be

प्रायुध्यंस्तत्रमानवाः । उभयोः सेनयो राजन् व्यतिपक्तरथद्विपः ॥ १० ॥ हयारो हैर्हयारोहाः पात्यन्तेस्म महाहवे । ऋष्टिभिर्विमलाभिश्च प्रासैरपि च संयुगे ॥११॥ रथी रथिनमासाद्य शरैः कनकभूषणैः । पातयामास समरे तस्मिन्नतिभयङ्करे १२॥ गजारोहा गजारोहान् नाराच शरतोमरैः। संसक्तान् पातयामासुस्तव तेषांचसर्वशः ॥ १३ ॥ पत्तिसंवारणे पत्तीन् भिन्दिपालपरश्वधैः । न्यपातयंत संहृष्टाः परस्पर कृतागसः॥ १४ ॥ रथीच समरे राजन्नासाद्य गजयूथपम्। स गजं पातयामास गजी चरथिनांवरम् ॥ १५ ॥ रथिनंच हयारोहः प्रासेन भरतर्षभ । पातयामास समरे रथीच हयसादिनम् ॥ १६ ॥ पदातीरथिनंसंख्ये रथीचापिपदातिनम्। न्यपातय च्छितैःशस्त्रैः सेनयोरुभयोरपि ॥ १७ ॥ गजारोहाद्धयारोहान् पातयांचक्रिरेतदा। हयारोहागजस्थांश्च तदद्भुतमिवाभवत् ॥१८॥ गजारोहवरैश्चापि तत्र तत्र पदातयः ।

वहां भारद्वाज द्रोणाचार्य से रक्षित वह कौरवों का व्यूह छिन्न भिन्न नहीं होता था और इसी प्रकार अर्जुन से रक्षित पांडवों का बड़ा व्यूहभी भीमसेन से आश्रित होकर पराजय नहीं होता था फिर वहां रथ हाथियों से संयुक्त दोनों सेनाओं के मनुष्य सेना के आगे से निकल कर युद्धकरने लगे, तब उस महा युद्धके बीच तीक्ष्ण धार वाले दुधारा खड्ग और परशों के द्वारा घोड़ों के सवारों के हाथसे घोड़ों के सवार गिराये गये, फिर उस अत्यन्त भयकारी सेना में सुनहरी बाणों से रथीने रथीको सम्मुख होकर गिराया, फिर आपके और उनके हाथियों के सवारों के समूहों ने नाराच शर और तोमरों के द्वारा सम्मुख होकर हाथियों के सवारों को गिराया और उस रण में पत्तिसिंह नाम सेना के भागने भिण्डिपाल और परशों के द्वारा पत्तियों को गिराया और रथी ने हाथी के सवार को सम्मुख होकर मारा और हाथी के सवारने इसी प्रकार से रथी को जागिराया हे भरतर्षभ घोड़ों के सवारों ने प्रासों के द्वारा रथी को और रथी ने घोड़ों के सवारको और दोनों

routed and the armies of the Pandavas remained firm under the protection of Arjun and Bhimsen 9. Then the warriors of the two armies broke the lines and advanced to fight Then in that great battle horsemen were killed by the double-edged sharp swords and battle axes of horsemen. Amid those dreadful armies charioteers slew charioteers with their golden arrows. The elephant riders of the two armies fought with arrows and slew one another. The foot soldiers fought with battle axes and other weapons. Charioteers faced elephant riders and slew one another. The horsemen and charioteers slew one another with sharp arrows. Some horsemen and elephant riders met in combat and destroyed one another in a wonderful way. 18. The foot soldiers were seen destroyed by elephant riders who were sometimes killed by the foot soldiers. Horsemen and foot

पातिताः समदृश्यंत तैश्चापि गजयोधिनः ॥ १९ ॥ पत्तिसंघाहयारोहैः स दिसंघाश्चप-
त्तिभिः । पात्यमानाव्यदृश्यंत शतशोथसहस्रशः ॥ २० ॥ ध्वजैस्तत्रापविद्धैश्च कार्मुकै
स्तोमरैस्तथा । प्रासैस्तथा गदाभिश्च परिघैःकंपनैस्तथा ॥ २१ ॥ शक्तिभि कवचै-
श्चित्रै कणपैरंकुशैरपि । निस्त्रिंशैर्विमलैश्चापि स्वर्णपुंखैः शरैस्तथा ॥ २२ ॥ परिस्तो
मैःकुथाभिश्च कंवलैश्चमहाधनैः । भूर्भातिभरतश्रेष्ठ स्त्रग्दामैरिवचित्रिता ॥ २३ ॥ नरा
श्वकायैः पतितैर्दंतिभिश्च महाहवे । अगम्य रूपापृथिवी मांसशोणितकर्दमा ॥२४॥
प्रशशामरजोभौमं व्युक्षितंरणशोणितैः । दिशश्च विमलाः सर्वाः संवभूवुर्जनेश्वर ॥२५॥
उत्थितान्य गणेयानि कबंधानि समंततः । चिह्नभूतानि जगतो विनाशार्थायभारत
॥ २६ ॥ तस्मिन् युद्धे महारौद्रे वर्तमानेसुदारुणे । प्रत्यदृश्यंतरथिनो धावमानाःसमंततः
॥ २७ ॥ ततो भीष्मश्च द्रोणश्च सैंधवश्च जयद्रथः । पुरुमित्रोजयोभोजः शल्यश्चापि स

सेनाओं के हाथी के सवारों ने तीक्ष्ण शस्त्रों से घोड़ों के सवारों को और घोड़ों के सवारोंने हाथी के सवारोंको विध्वंस किया यहभी आश्चर्य सा हुआ औरजहां तहां अच्छे २ हाथी के सवारों के हाथ से पदाती भी मारे हुए दृष्ट पड़े और उन पदातियों के हाथ से हाथियों के सवार मरेहुए देखने में आये घोड़ों के सवारों से पत्तियों के समूह और पत्तियों से सवारों के समूह गिराये हुए दिखाई दिये हजारों गिरते हुए हजारों ध्वजा और धनुषों समेत और हजारों तोमर परिस्तोम और कुथों समेत और बहुतेरे बहु मूल्य कंबलों को ओढ़े हुए प्रास गदा परिघ कंपन शक्ति और विचित्र कवचों को धारण किये भूमि में गतप्राण दीखे हे भरतर्षभ हजारों कुणप अंकुश और सुवर्ण पुंखवाले बाणों से भूमि ऐसी शोभायमानथी जसे कि मालाओं से पूरित होकर शोभित होती है और उस महायुद्ध में मनुष्य घोड़े और हाथियों के गिरे हुए शरीरों से ढकी हुई पृथ्वी मांस रुधिर रूपी कीच से महा दुर्गम और देखने के अयोग्य थी और मनुष्यों के रुधिरों से छिड़की हुई पृथ्वी

soldiers fought and slew one another. Thousands were seen falling, with their banners and bows cut down Other weapons by thousands, precious wrappers, maces, spears and armour of sorts were seen on those who had fallen in battle. Thousands of goads and arrows with golden feathers beautified the field as if strewn with flower chaplets 22. In that great battle men, horses and elephants covered the field with their flesh, blood and corpses, and the scence was dreadful to behold The dust, sprinkled over with human blood, subsided; the directions cleared up and innumerable headless bodies sprang up all round indicating destruction of the world. 26. And in that dreadful battle charioteers were seen running away in all directions Then Bhishm, Drona, Jayadrath the ruler of Sindhu. Purumitra, Vikarn and Shakuni the son of Suval, all those warriors invincible in battle and

स सौबलः ॥ २८ ॥ एतेसमरदुर्धर्षाः सिंहतुल्यपराक्रमाः । पांडवानामनीकानि
बभंजुःस्मपुनःपुनः ॥ २९ ॥ तथैव भीमसेनोपि राक्षसश्च घटोत्कचः । सात्यकिश्चेकिता-
नश्च द्रौपदेयाश्च भारत ॥ ३० ॥ तावकांस्तवपुत्रांश्च सहितान् सर्व राजभिः । द्राव
यामासुराजौते त्रिदशादानवानिव ॥ ३१ ॥ तथाते समरेन्योन्यं निघ्नंतःक्षत्रियर्षभाः ।
रक्तोक्षिता घोररूपा विरेजुर्दानवाइव ॥३२॥ विनिर्जित्य रिपून्वीराः सेनयोरुभयोरपि ।
व्यदृश्यंतमहामात्रा ग्रहाइवनभस्तले ॥ ३३ ॥ ततो रथसहस्रेण पुत्रोदुर्योधनस्तव ।
अभ्ययात् पांडवं युद्धे राक्षसं च घटोत्कचम् ॥ ३४ ॥ तथैव पांडवाः सर्वे महत्या
सेनयासह । द्रोणभीष्मौ रणे यत्तौ प्रत्युद्ययुररिंदमौ ॥ ३५ ॥ किरीटीच ययौक्रुद्धः

की धूल अत्यन्त शान्त होगई हे राजा सब दिशा शुद्ध हुई और कबन्ध अर्थात् विना शिरके रुण्ड चारों ओर से असंख्य उत्पन्न होकर सब संसारके नाशकारक हुए फिर उस बड़े भारी भयानक युद्ध जारी होनेपर चारों ओरसे दौड़ते हुए अनेक रथी दृष्ट पड़े इसके पीछे भीष्म द्रोणाचार्य जयद्रथ राजा सिंधु पुरुमित्र विकर्ण शकुनि सौबल यह सब युद्धमें दुर्धर्ष सिंहके समान पराक्रमी पांडवोंकी सेना के मारने को उपस्थितहुए, । २९ । इसी प्रकारहे भरतवंशी भीमसेन घटोत्कच राक्षस सात्यिकी चेकितान द्रौपदी के पांचों पुत्र इन वीरों ने भी सब राजाओं समेत युद्धभूमि में नियत होकर आपके शूरवीरों समेत सब पुत्रों को ऐसे छिन्न भिन्न कर दिया जैसे कि देवता लोग दानवों को करदेते हैं इसीप्रकार से वह सब क्षत्री परस्पर में युद्ध प्रहार करते हुए रुधिर भरे हुए शरीरों से घोररूप किंशुक वृक्षों के समान शोभायमान दिखाई देनेलगे ।३२। हे राजा दोनों ओर की सेनाके शूरवीर अपने २ शत्रुओं को विजय करके ऐसे देखने में आते थे जैसे कि आकाश मंडल में सूर्यादि बड़े ग्रह दिखाई देते हैं इसके उपरान्त आपका पुत्र दुर्योधन हजार रथों के साथ उस युद्ध में पांडव और घटोत्कच राक्षस के सम्मुख आया वैसेही सब पांडवभी अपनी बड़ी सेना समेत भीष्मजी और द्रोणाचार्य के सम्मुख गये यह सब पांडव आदि युद्ध में शूरवीर शत्रुओं के विजय करने वाले हैं इसके पीछे दिव्य मुकुटधारी क्रोध

Possessing the strength of lions, broke the ranks of the Pandavas. 29. In the same manner Bhimsen, Ghatotkach, Satyaki, Chekitan, the five sons of Draupadi and other warrior princes beat your sons and warriors, as gods did the danavas. Thus all those warriors fighting against one other looked glorious like Kinshuk trees in bloom with their blood stained bodies. 32. The warriors on both sides, conquering their enemies, looked as if they were suns on high. Then your son Duryodhan, accompanied with a thousand chariots, faced the Pandav Ghatotkach of rakshas blood, and the Pandavas, with their armies, faced Bhishm and Dronacharya. All these Pandavas are brave warriors and conquerers of foes. Then Arjun, with his celestial dia-

समंतात्पार्थियोत्तमान् । आर्जुनि· सात्यकिश्चैव ययतुः सौवलंबलम् ॥ ३६ ॥ ततः प्रववृतेभूयः संग्रामोलोमहर्षणः । तावकानांपरेषांच समरेविजयैषिणाम् ॥ ३७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीयेयुद्ध दिवसे संकुलयुद्धे सप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

सञ्जय उवाच । ततस्तेपार्थिवाः क्रुद्धा फाल्गुनंवीक्ष्य संयुगे । रथैरनेकसाहस्रैः समंतात्पर्य वारयन् ॥ १ ॥ अथैनं रथवृन्देन कोष्ठकीकृत्यभारत । शरैःसुबहुसाहस्रैः समंतादभ्यवारयन् ॥ २ ॥ शक्तीश्च विमलास्तीक्ष्णा गदाश्च परिघैःसह । प्रासान्परश्वधांश्चैव मुद्गरान् मुसलानपि ॥ ३ ॥ चिक्षिपुः समरेक्रुद्धाः फाल्गुनस्यरथंप्रति । शस्त्राणामथतां वृष्टिं शलभानामिवायतीं ॥ ४ ॥ रुरोध सर्वतः पार्थः शरैः कनकभूषणैः । तत्र तल्लाघवं दृष्ट्वा बीभत्सोरति मानुषम् ॥ ५ ॥ देव दानव गंधर्वाः पिशाचो रगरा

में भरा अर्जुन सब ओरके राजाओं के सम्मुख गया और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु व सात्यकी यह दोनों शकुनी की सेना के सम्मुख गये तिसके पीछे परस्पर में विजय की इच्छा रखने वाले आपके पुत्रों का और दूसरों का रोमहर्षण करने वाला महायुद्ध फिर जारी हुआ ॥ ३७ ॥

आध्याय ॥ ५८ ॥

संजय बोले कि फिर उन क्रोधरूप राजाओं ने अर्जुन को युद्ध में देखकर हजारों रथ समेत उसको आनकर घेर लिया तदनन्तर हे भरतवंशी उसको रथ समूहों से घेरकर चारों ओर से हजारों बाणों से भी रोका फिर युद्ध में क्रोधरूप उन लोगों ने स्वच्छ बरछी तीक्ष्ण गदा प्राश परस्वध मुद्गर और मूशलों को परिघों समेत अर्जुन के रथपर छोड़ा और अर्जुनने भी अपने सुनहरी बाणों से उस टीड़ी के समूहके समान राजाओं की शस्त्र और बाणोंकी वर्षा चारोंको ओर से रोका हे राजा उस युद्ध में अर्जुन की हस्तलाघवता जो कि दृष्टि से बाहरथी उसको देव दानव गन्धर्व पिशाच उरग और राक्षसों ने देखकर अर्जुनकी बड़ी

dem on, encountered all the princes, while his son, Abhimanyu together with Satyaki, faced Shakuni's army. Then a dreadful fight ensued between your sons and the Pandavas."37.

CHAPTER LVIII

Sanjaya continued. "The enraged princes, seeing Arjun in the field of battle, surrounded him on all sides with thousands of chariots, and while he was thus surrounded they checked him from all directions with thousands of arrows. And the enraged warriors in that battle hurled at Arjun bright spears, maces, clubs and other weapons. Arjun too, with his golden arrows, checked the locust like flight of the weapons and darts of those princes. The gods, danavas, gandhar-

क्षसाः । साधु साध्विति राजेंद्र फाल्गुनं प्रत्यपूजयन् ॥ ६ ॥ सात्यकिश्चाभिमन्युश्च महत्या सेनयावृत्तौ । गांधारान् समरे शूरान् जग्मतुः सहसौबलान् ॥ ७ ॥ तत्र सौबलकाः क्रुद्धा वार्ष्णेयस्य रथोत्तमम् । तिलशश्चिच्छिदुः क्रोधाच्छस्त्रैर्नानाविधैर्युधि ॥ ८ ॥ सात्यकिस्तु रथं त्यक्त्वा वर्तमाने भयावहे । अभिमन्यो रथं तूर्णमारुरोह परंतपः ॥ ९ ॥ तावेकरथसंयुक्तौ सौबले यस्य वाहिनीं । व्यधमेतां शितैस्तूर्णं शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ १० ॥ द्रोणभीष्मौ रणे यत्तौ धर्मराजस्य वाहिनीम् । नाशयेतां शरैस्तीक्ष्णैः कंकपत्रपरिच्छदैः ॥ ११ ॥ ततो धर्मसुतो राजा माद्रीपुत्रौ च पांडवौ । मिषतां सर्वसैन्यानां द्रोणानीकमुपाद्रवन् ॥ १२ ॥ तत्रासीत्सुमहद्युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् । यथा देवासुरं युद्धं पूर्वमासीत्सुदारुणम् ॥ १३ ॥ कुर्वाणौ सुमहत्कर्म भीमसेनघटोत्कचौ । दुर्योधनस्ततोभ्येत्य तावुभावप्यवारयत् ॥ १४ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम

प्रशंसा धन्य धन्य शब्दोंसे की ।६। और सात्यकी और अभिमन्युने बड़ी सेना वाले युद्ध में शूरवीर गांधारियों को सौवल के पुत्रों समेत युद्ध में रोकदिया, इसके पीछे क्रोध में भरेहुए सौवलके पुत्रों ने वृष्णिवंशी सात्यकी के उत्तम रथको नाना प्रकार के शस्त्रों से तिलके समान टुकड़े २ करडाला, हे शत्रुसन्तापी धृतराष्ट्र फिर तो सात्यकी उस महाभारी युद्ध के होनेपर उस रथको त्याग शीघ्रही अभिमन्यु के रथपर चढा फिर एकही रथपर सवार।१०। उनदोनोंने बड़ी शीघ्रता से गुप्त ग्रन्थी वाले वाणों से शकुनी की सेनाको मारा, और युद्ध में कुशल द्रोणाचार्य और भीष्मजी ने कंकपक्ष वाले तीक्ष्ण वाणों से धर्मराज युधिष्ठिर की सेना का विध्वंस किया इसके अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर माद्रीनन्दन नकुल सहदेव आदि पांडवों की सव सेनाके देखते हुए द्रोणाचार्य की सेनाके सम्मुख दौड़े फिर वहां रोमहर्षण करने वाला वहुत भारी ऐसा तुमुल युद्ध हुआ जैसे कि पूर्व समय में देवता और असुरों का महा भयानक युद्ध हुआथा।१३।फिर भीमसेन और घटोत्कच ने वड़ा कर्म किया

vas, pishaches, Uragas and rakshases who saw the unseen dexterity of Arjun's hand, praised his skill in loud words. 6. Satyaki and Abhimanyu checked the gandhars together with the sons of Shakuni in that great battle, and thereupon they broke into very minute pieces the chariot of Satyaki. At this dreadful mutilation of his chariot, O invincible Dhritrashtra, Satyaki shared the chariot of Abhimanyu. Then both those warriors, seated on the same chariot, began to destroy the army of Shakuni with a swift discharge of their arrows.10. Dronacharya and Bhishm. adept in the art of war, destroyed the army of Yudhishthir with their feathered arrows. Thereupon, Yudhishthir with Nakul and Sahadev the sons of Madri and the Pandav army, rushed upon the army of Dronacharya, and the fight was so furious as that betweeen the gods and danavas of old.13. Bhimsen and Ghatot-

हैडिंयस्यपराक्रमम् । अतीत्यपितरयुद्धे यद्युध्यतभारत ॥ १५ ॥ भीमसेनस्तु संक्रुद्धो दुर्योधनममर्पणम् । हृद्यविध्यत्पृषत्केन प्रहसन्निवपाडव ॥ १६ । ततो दुर्योधनोराजा प्रहारवरपीडित । निषसादरथोपस्थे कश्मलचजगामह ॥ १७ ॥ त विसन्न विदित्वातु त्वरमाणोस्यसारथि । अपोवाहरणाद्राजस्तत सैन्यमभज्यत ॥ १८ ॥ ततस्ताकौरवींसेना द्रवमाणासमतत । निघ्नन्भीम शरैस्तीक्ष्णै रनुवव्राजपृष्ठत ॥ १९ ॥ पार्षत श्चरथश्रेष्टो धर्मपुत्रश्चपाडव । द्रोणस्यपश्य सैन्य गागेयस्य च पश्यत ॥ २० ॥ जघ्नतु र्विशिखैस्तीक्ष्णै परानीकविनाशनै । द्रवमाणतु तत्सैन्य तव पुत्रस्यसयुगे ॥ २१ ॥ नाशक्नुता वारयितु भीष्मद्रोणौ महारथौ । वार्यमाणश्च भीष्मेण द्रोणे नच महात्मना ॥ २२ ॥ विद्रवत्येव तत् सैन्य पश्यतो द्रोणभीष्मयो । ततो रथ सहस्त्रेषु विद्रवत्सुतत स्तत ॥ २३ ॥ तावास्थितावेकरथ सौभद्र शिनि पुङ्गवौ । सौवर्ली समरे सेना शात

तवतो दुर्योधन ने सम्मुख आकर उनदोनों को भी रोका, हे भरतवशी वहां हमने हिडिंवा के पुत्र घटोत्कचका अपूर्व पराक्रम देखा कि युद्ध में पिता कोभी उल्लघन करगया।१५। फिर अत्यन्त क्रोध भरे अशातरूप भीमसेन ने हँसकर प्रशस्तनाम वाण से दुर्योधन के हृदय में प्रहार किया तव उस महारथी के वज्ररूप प्रहार से पीडामान राजा दुर्योधन रथके वैठने के स्थान में वेठगया, हे राजा फिर उस का सारथी उसको अचेत जानकर वडी शीघ्रता पूर्वक युद्ध भूमि से दूर लेगया इस के पीछे सेना इधर उधर विखर गई, फिर भीमसेन जहां तहां से भागने वाली उस कौरवी सेनाको तीक्ष्ण वाणोंसे मारता हुआ पीछे की ओरसे चला।१९ हे भरतवशी युद्ध में कुशल धृष्टद्युम्न और धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य और भीष्मजी के देखते हुये शत्रुहनने वाले विशिखों से उस सव सेनाको मारा और सेना ऐसी भागी कि जिसके रोकने को भीष्म और द्रोणाचार्यभी समर्थ नही हुये और हे परतप जहा तहां हजारों रथके टूटनपर उन एक रथपर वेठने वाले अभिमन्यु और सात्यकी नेभी

kach did prodigies of valour and Duryodhan himself came round to check them There we saw the extraordinary prowess of Ghatotkach the son of Hidimba who surpassed his father in deeds of valour 15 Then Bhimsen enraged and dissatisfied hit Duryodhan s breast with an arrow which he shot smiling Wounded by that dreadful weapon hard like vajra, prince Duryodhan became motionless in his seat. His coachman, seeing him senseless carried him farther away from the army At this the army broke up Bhimsen chased the army of the Kauravas and shot many a sharp arrow from behind 19 Dhrishtadyumn the skilful warrior and Yudhishthir the son of Dharm killed the Kaurav warriors within sight of Dronacharya and Bhishm There was a total defeat of your armies and even Dronacharya and Bhishm could not check the soldiers from flight Thousands of chariots were seen broken here and there by Abhimanyu and Satyaki seated in the

येतां समन्ततः ॥ २४ ॥ शुशुभाते तदा तौ तु दौहित्रकुरुपुङ्गवौ । अमावास्यांगतौ यद्वत् सोमसूर्यौ नभस्तले ॥ २५ ॥ अर्जुनस्तु ततः क्रुद्धस्तव सैन्यं विशाम्पते । ववर्ष शर वर्षेण धाराभिरिव तोयदः ॥ २६ ॥ वध्यमान ततस्तत्र शरैः पार्थस्य संयुगे । दुद्राव कौरवं सैन्यं विषाद भय कम्पितम् ॥ २७ ॥ द्रवतस्तान् समालक्ष्य भीष्मद्रोणौ महा रथौ । न्यवारयेतां संरब्धौ दुर्योधन हितैषिणौ ॥ २८ ॥ ततो दुर्योधनो राजा समा श्वास्य विशांपते । न्यवर्तयत तत् सैन्यं द्रवमाणं समन्ततः ॥ २९ ॥ यत्र यत्र सुतन्तु त्वं यं यं पश्यति भारत । तत्र तत्र न्यवर्त्तन्त क्षत्रियाणां महारथाः ॥ ३० ॥ तान्निवृत्ता समीक्ष्यैव ततोऽन्येपीतरे जनाः । अन्योन्य स्पर्धया राजन् लज्जयाचावतस्थिरे ॥ ३१ ॥ पुनरावर्त्ततां तेषां वेग आसीद् विशाम्पते । पूर्णतः सागरस्येव चन्द्रस्योदयनं प्रति ३२ सन्निवृत्तांस्ततस्तांस्तु दृष्ट्वा राजासुयोधनः । अब्रवीत् त्वरितो गत्वा भीष्मं शांतनवं

शकुनि की सेना का नाश कर दिया।२४। इसके पीछे वह दोनों अभिमन्यु और सात्यकी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि अमावास्याके दिन आकाश मंडलमें वर्त्तमान सूर्य और चन्द्रमा शोभित होते हैं, हे राजा इसके अनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुनने आपकी सेना पर ऐसी बाणों की वर्षा की जैसेकि धारों से बादल जलको बरसाता है, फिर इसके पीछे युद्धके बीच अर्जुनके बाणोंसे घायल और भयसे विह्वल और कंपायमानहोकर वह कौरवी सेना युद्धसे भाग गई, फिर दुर्योधनके अभीष्ट चाहनेवाले महाबली भीष्म और द्रोणाचार्यने उस भागीहुई कौरवी सेनाको बड़े क्रोधसेरोका हेराजा इसके पीछे राजादुर्योधनभीने अच्छी रीतिसे विश्वास देकर उस भागीहुई अपनी सेनाको चारोंओरसे लौटाया हेभरतवंशी जहां जहां जिस जिसने आपके पुत्रको देखा वहां २ से वह क्षत्रिय महारथी लौटे।३०। इसके पीछे हेराजा उनलौटेहुओंको देखकर अन्य मनुष्यभी परस्पर की ईर्षासे व लज्जा से लौटकर नियत हुए फिर उन लौटनेवालों का ऐसा वेग हुआ जैसे कि चन्द्रमाके उदय में पूर्ण होते हुए समुद्र का वेग होता है इस के पीछे राजा दुर्योधन उन लौटेहुओंको देखकर बहुत शीघ्रही शांतनु भीष्मजीके पास

same chariot, who brought about the destruction of Shakuni's army. 24. The two warriors looked glorious like the sun and the moon in the sky on the day of *Amarasya*. Then the enraged Arjun showered his arrows like rain from clouds on your army. Wounded by Arjun's arrows in the field of battle, terrified and shaking, the Kaurav army fled from the field. The well wishers of Duryodhan, valliant Bhishm and Dronacharya checked the Kaurav army in great anger. Prince Duryodhan too, encouraged the army by his presence and brought them back from all sides. Whatever soldiers saw your son, returned to the field of battle.30. Seeing the brave warriors returning to their duty, others too, by example or shame, returned and stationed themselves on their posts. The returners rallied with a force like the ocean tide at the full moon. Seeing his soldiers return, prince Duryo-

घच ॥ ३३ ॥ पितामह निबोधेदं यत्वा वक्ष्यामि भारत । नानुरूपमहं मन्ये त्वयिजीव
ति कौरव ॥ ३४ ॥ द्रोणे चास्त्र विदांश्रेष्ठे सपुत्रे ससुहृज्जने । कृपे चैव महेष्वासे द्रवते
यद्वरूथिनी ॥ ३५ ॥ न पाडवान्प्रतिबलास्तवमन्ये कथञ्चन । तथा द्रोणस्य संग्रामे
द्रौणेश्चैव कृपस्यच ॥ ३६ ॥ अनुग्राह्या पाण्डुसुतास्तव नून पितामह । यथेमांक्षमसेवीर
वध्यमाना वरूथिनीम् ॥ ३७ ॥ सोस्मि वाच्यस्त्वया राजन् पूर्वं मेव समागमे । न योत्
स्ये पाडवान् सङ्ख्ये नापि पार्षत सात्यकी ॥ ३८ ॥ श्रुत्वातुवचन तुभ्य माचार्यस्यकृप
स्यच । कर्णेन सहित कृत्य चिन्तयानस्तदैवहि ॥ ३९ ॥ यदिनाह परित्याज्यो युवाभ्या
मिह संयुगे । विक्रमेणानु रूपेण युध्येता पुरुषर्षभौ ॥ ४० ॥ एतच्छ्रुत्वा वचो भीष्म
प्रहसन्वै मुहुर्मुहु । अब्रवीत् तनय तुभ्य क्रोधादुद्वृत्य चक्षुषी ॥ ४१ ॥ वहुशोसिमया

जाकर यह वचनबोला।३३ हेभरतवंशी पितामह आप मेरे इस वचनको समझिये हे
कौरवों में श्रेष्ठ मै यह उचित नही समझता हू कि आपके और सकल शस्त्र विद्याके
ज्ञाता द्रोणाचार्य जी और उन के पुत्र अश्वत्थामा और महाधनुर्धर कृपाचार्य व
उनके मित्रों के विद्यमान रहतेहुए सेना भागती है, मै किसी दशा में भी किसी को
आपके समान पराक्रमी नहीं जानता हू इसी प्रकार द्रोणाचार्य कृपाचार्य और
अश्वत्थामा के भी समान युद्ध में पांडव लोग नहीं है।३६। हे पितामह निश्चयकरके
पाडव लोग आपकी कृपा के योग्य है हे वीर इसीसे इस घायल और मारी कुटी
हुई सेनापर आप क्षमा करतेहो सो हे राजा आपको प्रथमही सम्मुखता में कहना
योग्य था कि मै इस युद्ध में पांडव लोगों से व सात्यकी और धृष्टद्युम्न से
नहीं लडूगा हे भरतवंशी जो मै आपके और आचार्यजी के वचनों को सुनता तो
उसी समय कर्णसे कर्म करवाने के विचार को करता आप दोनों को इस युद्ध में
मेरा त्यागना योग्य नहीं है, आप दोनों पुरुषोत्तम अपने योग्य पराक्रम के द्वारा
युद्धकरो।४०। भीष्मजी उस की बातोंको सुनकर वारम्वार हँसते हुए क्रोध से दोनों

dhan came to Bhishm and said 33 "Descendant of Bharat! gradfather, give ear to my words. I donot understand why soldiers should run away from battle when you, Dronacharya the master of the science of arms, his son Ashwathama valliant Kripacharya and your friends are present here I never think anyone else to be stronger than you nor are the Pandavas a fit match for Dronacharya, Kripacharya and Ashwathama 36 There is no doubt, grandfather, that the Pandavas are worthy of your love and this is the reason why you donot punish them for the mutilation of your army, but you should have told me before, that you would not fight against the Pandavas, Satyaki or Dhrishtadyumna. Had you and Dronacharya told this to me before, I could have asked Karan to do battle for me. You two should not leave me in the lurch now Fight therefore and show a prowess worthy of you "40 Bhishm laughed at these words, and opening wide his eyes

राजंस्तथ्यमुक्तो हितं वचः । अजेयाः पांडवा युद्धे देवै रपि सवासवैः ॥ ४२ ॥ यत्तु शक्यं मया कर्तुं वृद्धे नाद्य नृपोत्तम । करिष्यामि यथा शक्ति प्रेक्षेदानीं सबांधवः ४३॥ अद्य पाण्डु सुता नेकः ससैन्यान् सह बन्धुभिः । सोहं निवार यिष्यामि सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ ४४ ॥ एवमुक्तेतु भीष्मेण पुत्रास्तवजनेश्वर । दध्मुः शंखान् मुदा युक्ता भेरीः संजघ्निरेभृशम् ॥ ४५ ॥ पांडवाहि ततो राजन् श्रुत्वातं निनदं महत् । दध्मु शंखांश्च भेरीश्च मुरजांश्चाप्यनादयन् ॥ ४६ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीययुद्ध दिवसे भीष्मदुर्य्योधन सम्वादे अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ।

नेत्रों को अच्छी रीति से खोलकर आपके पुत्र से बोले कि हे राजा मैंने बहुत बार तुम से तुम्हारा हितकारी वचन कहा है, कि पांडव लोग युद्ध में इन्द्र समेत देवताओं सेभी अजेय हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ जो मुझ वृद्ध से करने के योग्य है उसको मैं अपनी सामर्थ्य के अनुसार करूंगा तू अब बांधवोंसमेत देख कि मैं सेना समेत पांडवों को तेरे और सब लोकों के देखते हुए हटाऊंगा हे राजा भीष्म से कहे हुए ऐसे वचनों को सुनकर आपके आनन्द भरे पुत्र ने शंख और भेरीको बजाया इसके पीछे पांडवों ने भी इस बड़े शब्दको सुनकर शंखों को बजाकर भेरी मुरजादिकों को अच्छी रीति से बजाया ॥ ४६ ॥

---

in anger, spoke these words to your son:–"I have often given you good advice, king," said he, "and told you that the Pandavas were invincible even by the gods including Indra. I do my duty to the best of my ability and age. You and your kinsmen will now see how I make the Pandavas and their army give way."44. Hearing these words from Bhishm, your son sounded his conch and bugle in glee. The Pandavas heard the loud sound and blew their conchs and bugles in reply. 46.



धृतराष्ट्र उवाच । प्रतिज्ञाते ततस्तस्मिन् युद्धे भीष्मेण दारुणे। क्रोधितो मम पुत्रेण दु:खितेन विशेषतः ॥ १ ॥ भीष्मः किमकरोत्तत्र पाण्डवेयेषु भारत। पितामहे वा पञ्चालास्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ गतपूर्वाह्णे भूयिष्ठे तस्मिन्नहनि भारत । पश्चिमां दिशमास्थाय स्थितेचापि दिवाकरे॥ ३ ॥ जयं प्राप्तेषु हृष्टेषु पाण्डवेषु महात्मसु । सर्वधर्म विशेषज्ञः पिता देवव्रतस्तव ॥४॥ अभ्ययाज्जवनैरश्वैः पाण्डवानामनीकिनीम्। महत्या सेनया गुप्तस्तव पुत्रैश्च सर्वशः॥५॥ प्रावर्त्तत ततो युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम्। अस्माकं पाण्डवैः सार्धं मनयात्तव भारत ॥ ६ ॥ धनुषां कूजतां तत्र तलानांचाभि हन्यताम् । महान् समभवच्छब्दो गिरीणामिव दीर्यताम् ॥ ७ ॥ तिष्ठ स्थितोऽस्मि विध्यैनं निवर्त्तस्व स्थिरोभव। स्थिरोस्मिप्रहरस्वेति शब्दोश्रूयत सर्वशः ॥ ८ ॥ कांचनेषु तनुत्रेषु किरीटेषु ध्वजेषुच।

अध्याय ॥ ५९ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसके अनन्तर उस भयानक युद्ध में मेरे पुत्र के कहने से भीष्मजी के कोप युक्त होकर प्रण करने पर, भीष्म जीने पांडवों के ऊपर और पांचाल देशियों के पितामह के ऊपर क्या २ काम किये वह मुझ से आप वर्णन कीजिये, संजय बोले कि हे भरतवंशी उस दिन के मध्याह्न समय के व्यतीत होनेपर सूर्य के पश्चिम ओर होने के काल में और महात्मा पांडवोंके विजयी होकर प्रसन्न होनेपर सब धर्मों के ज्ञाता आपके पिता देवव्रत भीष्मजी सब रीति से आपके पुत्र और सेनाओं से रक्षित होकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा पांडवों की सेनाके सम्मुख गये, हे भरतवंशी इसके पीछे आपके अन्याय के कारण पांडवों से हमारा रोम हर्षण करने वाला महातुमुल युद्ध हुआ, अर्थात् धनुषों के शब्दों से और तालों के बजने से ऐसा तुमुल शब्द हुआ जैसे कि पर्वतों के फटनेका हुआ करता है, तिष्ठ तिष्ठ खड़ाहूं खड़ाहूं इसको देख, लौट लौट नियतहो, नियतहूं, प्रहार कर

CHAPTER LIX

"Being asked by my son in the field of battle, what did Bhishm, who had made the promise in his raze, do to the Pandavas and the Pandavas to Bhishm? Pray tell me all, Sanjaya," said Dhritrashtra. "In the afternoon of that day," replied Sanjaya, "when it was nearly evening time and the Pandavas were making merry at their conquest, your father Devabrat Bhishm, acquainted with all dharmas, being protected by your son's armies from every side, faced the army of the Pandavas on very swift horses. Then, on account of your injustice, we fought a dreadful fight with the Pandavas. 6. The sounds made by bows and beating of palms caused a noise like that of the rending of mountains. 'Stand, Stand; I stand; look here; return, return; keep standing; begin etc.' were the words heard

शिलानामिव शैलेषु पतितानाममूत्स्वनिः ॥ ९ ॥ पतितास्युत्तमाङ्गानि बाहवश्चावि
भूषिताः । व्यचेष्टन्त महीं प्राप्य शतशोथ सहस्रशः ॥१०॥ हृतोत्तमाङ्गाः केचित्तु तथैवो
द्यतकार्मुकाः । प्रगृहीतायुधाश्चापि तस्थुः पुरुषसत्तमा ॥ ११ ॥ प्रावर्त्तत महावेगा
नदी रुधिरवाहिनी । मातङ्गाङ्गशिलारौद्रा मांस शोणितकर्दमा ॥ १२ ॥ वराश्वनर
नागानां शरीरप्रभवा तदा । परलोकार्णवमुखी गृध्रगोमायु मोदिनी ॥ १३ ॥ न दृष्टं नश्रुतं
चापि युद्धमेतादृशं नृप । यथा तव सुतानाञ्च पांडवानांच भारत ॥ १४ ॥ नासी
द्रथपथस्तत्र योधैर्युधि निपातितैः । गजैश्चपतितैर्नीलैर्गिरिशृङ्गैरिवावृतः ॥ १५ ॥
विकीर्णैः कवचैश्चित्रैः शिरस्त्राणैश्च मारिष । शुशुभे तद्रणस्थानं शरदीवनभस्तलम्
॥ १६ ॥ विनिर्भिन्ना शरैः केचिदन्त्रापीडप्रकर्षिणः । अभीताः समरे शत्रूनभ्यधावन्त

इत्यादि अनेक प्रकार के शब्द सुनाई दिये, सुनहरी कवच कमठ और ध्वजाओं पर ऐसे महा शब्द हुए जैसे कि पर्व्वतों पर शिलाओं के गिरने से शब्द होते हैं, हजारों भूषणों से अलंकृत शिर और भुजा पृथ्वीपर गिरकर नानाचेष्टा करनेलगे, कितनेही शिर कटेहुए पुरुषोत्तम धनुष उठायेहुए वा शस्त्रों को धारण कियेहुए उसी दशा में नियतहुए तब रुधिरसे जारीहोनेवाली घोर नदी हाथियोंके अंगरूप शिला और मांस रुधिररूप कीचड़ से भरीहुई बड़े वेगवान् उत्तम घोड़े हाथी और मनुष्यों के शरीरसे प्रकट गिद्ध शृगालोंकी प्रसन्नता देनेवाली परलोक समुद्ररूपा घोरनदी बड़े प्रवाहसे बही ।१३। हे राजा जैसा कि आपके पुत्रोंका और पांडवोंका युद्ध हुआ वैसा आज तक देखागया न सुनागया, उस युद्धमें गिरायेहुए शूर वीरों के कारण कहींभी रथों के जानेका मार्ग नहींरहा और हाथियों के गिरने से वह पृथ्वी नीले पहाड़ों के शिखरों के समान दिखाईदी, हे श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मित कवचों के और शिर त्राणों के फैले हुए होने से वह युद्धभूमि ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि शरद ऋतु में आकाश मण्डल शोभित होता है। १६ । कोई मनुष्य अत्यंत घायल आंत वा पैरोंसेभी

from different sides. 8. The din of the fall of golden coats of mail and helmets was tremendous like that of stones on mountains. Thousands of heads and arms decked with jewells, falling on earth, trembled and shook in various ways. Many warriors remained in the posture they were before—raising up their bows or other weapons when their heads were cut off their bodies. Then the river of blood, having the bodies of elephants for its stones and flesh and blood for its mire, sprang from the bodies of warrior horses, elephants and men, pleasing the vultures and jackals, flowed with great velocity like the ocean of the other world. 13. The world has not yet seen or heard a battle like that between the Pandavas and your sons. On account of the carcases of warriors there was no way left for the chariots to pass over. From the bodies of the elephants fallen over the place the ground looked as if strewn over with blue crags From the

दर्पिता ॥ १७ ॥ तात भ्रात सखे बन्धो वयस्य मम मातुल । मामा परित्यजे त्यन्ये चुक्रुशु पतिता रणे ॥ १८ ॥ अथाभ्येहित्वमागच्छ किं भीतोसि क्वयास्यसि। स्थितोहं समरे मामैगीति चान्ये विचुक्रुशु ॥ १९ ॥ तत्र भीष्म शान्तनवो नित्य मण्डलकार्मुक । मुमोच बाणान् दीप्ताग्रानहीनाशीविषानिव ॥ २० ॥ शरैरेकायनी कुर्वन् दिश सर्वा यतव्रत । जघान पाण्डवरथानादिश्य भरतर्षभ ॥ २१ ॥ स नृत्यन्वैरथोपस्थे दर्शयन् पाणिलाघवम् । अलातचक्रवद्राजस्तत्र तत्र स्मदृश्यते ॥ २२ ॥ तमेक समरे शूर पाण्डवा सृञ्जयै सह । अनेकशतसाहस्त्र समपश्यन्तलाघ वात् ॥ २३ ॥ मायाकृतात्मानमिव भीष्म तत्र स्म मेनिरे । पूर्वस्या दिशित दृष्ट्वा प्रती च्यादृश्यतार्जुना ॥ २४ ॥ उदीच्याचैव चालोक्य दक्षिणस्या पुन प्रभो । एव समरेशूर

कटेहुए मन से अदीन और अहंकारी होकर उस युद्धमें शत्रुओं के सम्मुख दौड़े, कोई हे पिता हे भाई हे मित्र हे बांधव हे समान अवस्थावाले हे मामा हे काका मुझको मतसताओ मतसताओ ऐसा कहकर पुकारे, और कोई सम्मुख वर्त्तमानहो तुम आओ क्या भयभीत है कहा जायगा मैं युद्ध मे नियतहू भय न कर इत्यादि बातें कहकह कर पुकारते थे, उस युद्ध में शान्तनव भीष्मजी न जिनका धनुप मण्डल के समान था विषके बुझेहुए तीव्रलोक के सर्पाकार बाणो को छोडा, हे भरतवंशी बाणो से सब दिशाओं को बराबर करने वाले सावधान व्रत भीष्मजी रथ के मार्गों मे नृत्य करते और हस्तलाघवता को दिखाते हुए उल्का के समान जहां तहां फिरते और चमकते हुए दृष्टि पड़े, पाडवो ने सृजयों समेत युद्ध भूमि में उस अकेले शूरवीरकी हस्तलाघवता के कारण लाखो के समान जानकर भीष्मजी को महा मायावी के सदृश माना, क्योंकि उसको अभी पूर्व मे देखकर फिर पश्चिम दिशा मे देखा, इसी प्रकार उत्तर मे देखकर दक्षिण दिशा में भी देखा, इस रीति

fallen coats of mail and turbans fallen here and there the field of battle looked like the sky in cold weather 16 Some men, mortally wounded with their entrails and legs cut down, cheerfully and proudly rushed on the enemy Others cried 'Father, brother, friend, kinsman, companion, maternal uncle donot abandon me, donot kill me!' Some cried out, 'Come and face me! Come! Art afraid? Where goest? Don't be afraid I am here' &c Bhishm the son of Shantanu whose bow moved like a circle shot sharp pointed arrows like venomous serpents 20 Discharging an equal number of arrows in all directions Bhishm of rigid vows, slew the Pandava warriors after calling out their names Bhishm was seen dancing in his chariot in all directions, and exhibiting the dexterity of his hand and looked like sparks of fire in all directions. The Pandavas with the Srinjayas regarded him as though he was a myriad of warriors in one by magical power He was seen now in the East, now in the west, now in the south and then in the

गाङ्गेयः प्रत्यदृश्यत । २५ ॥ नचैवं पाण्डवेयानां कश्चित् शक्नोति वीक्षितुम् । विशि खानेव पश्यन्ति भीष्म चापच्युतानहम् ॥ २६ ॥ कुर्वाणं समरे कर्म सूदयानञ्च वाहिनीम् । व्याक्रोशन्त रणे तत्र नरावह्न विचावह्न ॥ २७ ॥ अमानुषेण रूपेण चरन्तं पितरं तव । शलभा इव राजानः पतन्ति विधिचोदिताः ॥ २८ ॥ भीष्माग्निमभिसंक्रुद्धं विनाशाय सहस्रशः । न हि मोघः शरः कश्चिदासीद् भीष्मस्य संयुगे । २९ ॥ नरनागाश्व कायेषु बहुत्वाल्लघुयोधिनः । भिनत्त्येकेन बाणेन सुमुक्तेन पतत्रिणा ॥ ३० ॥ गजकण्टक सन्नद्धं वज्रेणेव शिलोच्चयम् । द्वौ त्रीनपि गजारोहान् पिण्डितान् वर्मितानपि ३१॥ नाराचेन सुमुक्तेन निजघान पिता तव । यो यो भीष्मं नरव्याघ्रमभ्येति युधि कश्चन ॥ ३२ ॥ मुहूर्त्तदृष्टः समया पतितो भुवि दृश्यते । एवंसा धर्मराजस्य वध्यमानामहा

से वह गांगेय भीष्मजी युद्ध में महायुद्ध करते हुए दृष्टिआये । २५ । पांडवों का कोई शूरवीर उनके युद्धके देखनेको समर्थ नहीं हुआ इन भीष्मजी के धनुष से गिरे हुए अनेक विशिख नाम बाणही दिखाई पड़ते थे, उस संग्राम में उस कर्म करनेवाले सेनाको मारते देवरूप घूमते हुए आपके देवव्रत पिताको देखकर युद्धमें लोग अनेक रीतों से पुकारते थे, और अत्यन्त मोहित हजारों राजा लोग उसभीष्मरूप अग्नि में सलभाओं के समान गिरकर काल वशहुए, युद्धभूमि में उस हस्तलाघवतासे लड़ने वाले भीष्मजी का कोईभी बाण मनुष्य हाथी घोड़े आदि के शरीर में लगकर निष्फल नहीं गया, वह भीष्म युद्धमें झुकेहुए पर्ववाले एकही बाण से दन्तमण्डल धारी हाथी को ऐसे मारडालते थे जैसे कि वज्र से पर्वतको इन्द्रमारता है आपके पिताने अत्यन्त तीव्र नाराच नाम बाणसे मिले हुए पर्वतों के समान दो वा तीन हाथियों के सवारों कोभी मारा । ३१ । जो कोई युद्धमें इस नरोत्तम भीष्मके सम्मुख आता था वह भयसे एक मुहूर्त्तनक पृथ्वीपर गिराहुआ दृष्टपड़ता था, इस रीति से अतुल बल भीष्मजी से घायल हुई युधिष्ठिरकी सेना हजारों प्रकार से दुखी और

North. The son of Ganga was thus seen fighing in battle. 25. None of the Pandav warriors could face Bhishm in battle. The sharp arrows shot from Bhishm's bow were seen here and there. Seeing your father Devabrat doing that difficult work killing the warriors and roaring like a god, the people uttered various cries. Thousands of kings lost their senses and fell into the Bhishmic fire like so many insects. None of the arrows shot by dexterous Bhishm was ineffectual on man elephant or horse; With single hooked arrows Bhishm killed elephants having large tusks as Indra breaks down mountains with his vajra. Your father killed with his sharp pointed arrows many an elephant rider by twos and threes at a time. 31. Whoever faced Bhishm the best of men fell on earth with fear and remained insensible for a while. Thus wounded by Bhishm of immense prowess Yudhishthir's army was distressed and frightened. That large

चमूः ॥ ३३ ॥ भीष्मेणातुलवीर्येण व्यशीर्यंतसहस्रधा । प्राकंपतमहासेना शरवर्षेण तापिता ॥ ३४ ॥ पश्यतोवासुदेवस्य पार्थस्याथ शिखण्डिनः । यतमानापिनेवीराद्रव माणान्महारथान् ॥ ३५ ॥ नाशक्नुवन्वारयितुं भीष्मबाणप्रपीडितान् । महेंद्रसमवीर्येण वध्यमानामहाचमूः ॥ ३६ ॥ अभज्यतमहाराज न च द्वौसहधावत । आविद्धनरनागाश्व पतितध्वजकूबरम् ॥ ३७ ॥ अनीकं पाण्डुपुत्राणां हाहाभूतमचेतनम् । जघानात्रपितापुत्र पुत्रश्चपितरंतथा ॥ ३८ ॥ प्रियसखायंचाक्रंदे सखादैवबलात्कृत । विमुच्यकवचा न्यन्ये पाण्डुपुत्रस्य सैनिका ॥ ३९ ॥ विमुक्त केशाधावंत प्रत्यदृश्यतभारत । तद्गो कुलमिवोद्भ्रातमुद्भ्रातरथयूथपम् ॥ ४० ॥ ददृशे पाण्डुपुत्रस्य सैन्यमार्तस्वरंतदा । प्रभ ज्यमानं सैन्यंतुदृष्ट्वा यादवनन्दनः ॥ ४१ ॥ उवाचपार्थं बीभत्सुं निगृह्यरथमुत्तमम् ।

भय भीतहुई, वह पांडवों की बड़ी सेना भीष्मजी के बाण समूहों से पीड़ित होकर वासुदेवजी और महात्मा अर्जुनके देखते हुए बड़ी कम्पायमान हुई, उपाय करनेवाले वीरलोगभी भीष्मजी के बाणों से अत्यन्त पीड़ामान भागतेहुए महारथियों के लौटाने को समर्थ नहीं हुए हे महाराज महाइन्द्र के समान पराक्रमी भीष्मसे उच्छिन्न पांडवों की बडीभारी सेना पराजय को प्राप्त हाहाकार रूप होकर अचेत होगई और रथमें हाथी घोड़े भी घायल होकर ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर पड़ेहुए थे । ३७ । उस युद्धमें पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको वा मित्रने प्रियमित्रको मारा हे भरतवंशी पाण्डवोंकी सेनाके मनुष्य कवचोंको त्याग शिर के बालोंको फैलाकर दौड़ते हुए दृष्टपड़े, तब पाण्डवों की वह सेना जिसके महारथी भ्रान्ति से युक्त थे व्याकुल दुखी और भयकारी शब्दों को करते हुये दिखाई दिये फिर यादवों के प्रसन्न करनेवाले श्रीकृष्ण जी सेनाको पराजय में प्राप्त देखकर अपने उत्तम रथको रोककर अर्जुनसे बोले कि हे अर्जुन अब यह समय आगया है जो तेरा अभीष्ट है हे नरोत्तम जो तू

army of the Pandavas, hit by the arrows of Bhishm, was much shaken within sight of Krishn and Arjun Even the bravest of men could not keep the soldiers from running away Routed by Bhishm of Indra like prowess the Pandav army suffered defeat and became insensible with cries of ah and alas. Chariots, elephants and horses too, fell down on ground 37 The father struck son the son struck father, and the friend struck friend in that great battle The people of the Pandav army, leaving their armour were seen running away with dishevelled hair Then the army of the Pandavas, whose warriors had lost their wits, distressed and frightened were seen uttering frightful sounds. Shree Krishn the joy of the Yadavas seeing the army of the Pandavas in the act of suffering defeat, checked his chariot and thus spoke to Arjun — 'The time has now come, Arjun which you were so long wishing for. Attack Bhishm, if you have

अयंसकालः संप्राप्तः पार्थयस्तेऽभिकांक्षितः ॥ ४२ ॥ प्रहरस्वनरव्याघ्र नचेन्मोहा
द्विमुह्यसे। यत्वयाकथितं वीर पुरा राज्ञांसमागमे ॥ ४३ ॥ भीष्मद्रोण मुखान्सर्वान्धार्त
राष्ट्रस्य सैनिकान्। सानुबंधान् हनिष्यामि येमांयोत्स्यंति संयुगे ॥ ४४ ॥ इतिनत्कुरु
कौंतेय सत्यंवाक्यमरिंदम। वीभत्सोपश्य सैन्यंस्वंभज्यमान ततस्ततः ॥ ४५ ॥ द्रवतश्च
महीपालान्पश्ययौधिष्ठिरे बले। दृष्ट्वाहि भीष्मं समरे व्यात्ताननमिवांतकम् ॥ ४६ ॥
भयार्ता प्रपलायंते सिंहात्क्षुद्रमृगाइव । एवमुक्तः प्रत्युवाचवासुदेवं धनंजयः ॥ ४७।
नोदयाश्वान्यतो भीष्मो विगाह्यैतद्बलार्णवम् । पातयिष्यामि दुर्धर्षं वृद्धकुरुपितामहम्
॥ ४८ ॥ सञ्जय उवाच । ततोश्वान् रजतप्रख्यान्चोदयामासमाधवः । यतोभीष्म
रथो राजन् दुष्प्रेक्ष्योरश्मिवानिव ॥ ४९ ॥ ततस्तत्पुनरावृत्तं युधिष्ठिरबलंमहत्। दृष्ट्वा
पार्थं महाबाहु भीष्मायोद्यतमाहवे ॥ ५० ॥ ततो भीष्मः कुरुश्रेष्ठ सिंहवद्विनदन्मुहुः ।

मोहसे अज्ञान नहीं है तो इनके ऊपर प्रहार कर। ४२। हे महावीर पूर्व्व समयमें राजा ओं के मिलाप में जो तुमने कहा है, कि दुर्योधनकी सेना के भीष्म द्रोणाचार्य्य आदि लोगों को उन के सहायकों समेत मारूंगा जो कि मुझ से युद्धको करेंगे, हे शत्रुंजय अर्जुन तू अपने उस वचनको सत्यकर तू इधर उधर छिन्न भिन्न हुई अपनी सेनाको देख, युधिष्ठिर की सेनामें युद्ध कुशल मृत्यु के समान भीष्मको देखकर इन भागते हुये राजाओं को देखो। ४६। यह सब भयसे पीड़ित होकर ऐसे नाश हुए जाते हैं जैसे कि छोटे मृगसिंहको देखकर भयसे मरजाते हैं यह कृष्ण के वचन सुनकर अर्जुन ने वासुदेव जीको उत्तर दिया, कि आप घोड़ोंको उधर चलाओ जहां भीष्मजी हैं मैं अब इस सेना रूपी समुद्रको उतरकर इस अजेय और वृद्ध कौरवों के पितामहको गिराऊंगा हे राजा तबतो माधवजी ने चांदी के समान श्वेत रंगके घोड़ोंको उधरहीको चलाया जिधर सूर्य के समान कठिनता से देखने के योग्य भीष्मजी थे, इस के अनन्तर भीष्मके निमित्त युद्ध में प्रवृत्त महाबाहु अर्जुन को देखके युधिष्ठिरकी वह बड़ी भारी सेना फिर लौटआई, । ५० । तदनन्तर

not lost your senses 42. You said in the presence of kings that you would destroy Bhishm Drona, and other warriors of the Kauravas with their allies in battle Fulfil your promise, destroyer of foes! Look at your army scattered here and there and look at brave Bhishm roaming like Death and causing the kshatryas, flight. 46 They die with fear like lower animals in the presence of a lion." To these words of Vasudev Arjun gave the following reply:—"Lead the horses to the place where Bhishm is I shall cross the ocean of the army and shall destroy the old grandfather of the Kauravas. At this, Madhava drove the silvery horses towards Bhishm who stood in great glory and could not be gazed at like the sun Seeing Arjun ready to fight with Bhishm, the army of Yudhishthir came back. 50. Then

धनंजयरथं शीघ्र शरधैरवाकिरत् ॥ ५१ ॥ क्षणेन सरथस्तस्यसहयः सहसारथिः ।
शरवर्षेण महतासंछन्नोनप्रकाशते ॥ ५२ ॥ वासुदेवस्त्व सम्भ्रांतो धैर्यमास्थाय सत्व
व न् । चोदयामासतानश्वान् विचितान् भीष्मसायकै ॥ ५३ ॥ ततःपार्थोधनुर्गृह्य
दिव्यंजलदनि स्वनम् । पातयामासभीष्मस्य धनश्छित्वात्रिभिः शरैः । ५४ ॥ सच्छिन्न
धन्वाकौरव्यः पुनरन्यन्महद्धनु । निमिषांतरमात्रेण सज्जंचक्रेपितातव ॥ ५५ ॥
विचकर्षततोदोर्भ्यां धनुर्जलदनि स्वनम् । अथ स्यतद्धपिक्रुद्धश्चिच्छेदधनुरर्जुन. ॥५६।
तस्यतत्पूजयामास लाघवंशान्तना सुत । साधुपार्थमहाबाहो साधुभोपाण्डुनन्दन ५७
त्वय्येवैतद्युक्तरूपं महत्कर्मधनंजय । प्रीतोस्मिसुभृशं पुत्र कुरुयुद्ध मयासह ॥ ५८ ॥
इति पार्थं प्रशस्याथ प्रगृह्यान्यन्महद्धनु । मुमोच समरे वीरः शरान् पार्थरथं प्रति
॥ ५९ ॥ अदर्शयद् वासुदेवो हययाने परं बलम् । मोघान् कुर्वन् शरांस्तस्य मण्डला.

सिंहसमान गर्जने कौरवों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने शीघ्रही बाणोंकी वर्षा से अर्जुनको ऐसा ढकदिया कि उसकारथ ध्वजा सारथी समेत क्षणभर में बाणों से आच्छादित होकर दिखाई नहीं दिया, फिरतो भ्रान्ति सेरहित बुद्धिमान वासुदेवजी ने धैर्यतामें नियत होकर भीष्महीके शायकों से उन्हीं के धनुषको काटकर पृथ्वीपर गिरा दिया, फिर उसटूटे हुए धनुष वाले पितामह भीष्मने शीघ्रही दूसरे बड़ेभारी धनुषको लेकर एक निमिषमें ही तैयार कर लिया १५५। तदनन्तर उसबादलके सामान गर्जने वाले धनुषको भीष्मने दोनों हाथों से खेंचा फिर क्रोधयुक्त अर्जुनने उनके उसधनुष कोभी काटा, अर्जुनकीइस हस्तलाघवताको देखकर भीष्मजीने प्रशंसाकी कि हे महा बाहु अर्जुन धन्यहै हे पांडवनन्दन तुमको धन्यहै, हे संसारके धनोंके विजय करनेवाले यह बड़ाकर्म तुम्हीमें है योग्य है योग्य है हे पुत्र मैं तेरे इसकर्मसे अत्यन्त प्रसन्नहूं तू मेरेसंग युद्धकर इसरीतिसे इसवीरने अर्जुनकी प्रशंसाकरके फिर दूसरे बड़े धनुषको लेकर अर्जुनके रथपर बाणोंकी वर्षाकरी, फिर वासुदेवजीने भीष्मके बाणों को

roaring like a lion, Bhishm the best of the Kauravas soon covered Arjun with the shower of arrows so that neither the chariot nor the coach man or standard was discernible. Then wise Vasudev with great skill caused the bow of Bhishm to be cut down by his own arrows. Bhishm the grandfather then took up another large bow and prepared it for action in a trice. 55 Bhishma drew with both hands the bow which roared like thunder, but Arjun cut this second bow too. At this dexterity of Arjun's hand Bhishm praised him, saying. "Well done, brave Arjun! Well done son of Pandu It was worthy of you Dhananjaya! I am much pleased with this work of thine, my son! Fight with me! Having thus given praise to Arjun, Bhishm took up another large bow and showered his arrows on him. Vasudev turned the horses of chariot, now this way now that way,

न्याचरल्लघु ॥ ६० ॥ ततस्तु भीष्मः सुदृढं वासुदेव धनञ्जयौ । विव्याध निशितैर्बाणैः सर्वगात्रेषु भारत ॥ ६१ ॥ शुशुभाते नरव्याघ्रौ तौ भीष्मशरविक्षतौ । गोवृषाविव संरब्धौ विषाणोल्लिखिताङ्किनौ ॥ ६२ ॥ पुनश्चापि सुसंक्रुद्धः शरैः शत सहस्र । कृष्णयोर्युधि संरब्धो भीष्म आवार यद्दिशः ॥ ६३ ॥ वार्ष्णेयञ्च शरैस्तीक्ष्णैः कम्पयामास रोषितः । मुहुरभ्युत्स्मयन् भीष्मः प्रहस्य स्वनवत्तदा ॥ ६४ ॥ ततः कृष्णस्तु समरे दृष्ट्वा भीष्मपराक्रमम् । सम्प्रेक्ष्यच्च महाबाहु पार्थस्य मृदुयुद्धताम् ॥ ६५ ॥ तं भीष्मं शरवर्षाणि सृजन्त मनिशं युधि । प्रतपन्तमिवादित्य मध्यमासाद्य सेनयोः ॥ ६६ ॥ वरान् वरान् विनिघ्नन्त पाण्डुपुत्रस्य सैनिकान् । युगान्तमिव कुर्वाणं भीष्मं यौधिष्ठिरे बले ६७ ॥ अमृष्यमाणो भगवान् केशवः परवीरहा । अचिंतयदमेयात्मा नास्तियौधिष्ठिरंबलम् ६८

निष्फल करके तेजमंडलों में घूमने हुये घोड़ोंके चलाने में बड़ा पराक्रम दिखाया ६० इसके पीछे भीष्मजीने अपने तीक्ष्ण बाणों से वासुदेवजी को और अर्जुन को बहुत घायल किया, उनबाणों से अत्यन्त घायल वह दोनो पुरुषोत्तम ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि गर्जते और शाखाओं के घातसे चिह्नित दो उत्तम बैलहोते हैं, इसके पीछे अत्यन्त क्रोध में भरे हुए भीष्मजीने लाखों बाणों से इनदोनों कृष्ण अर्जुन की दिशाओं को रोक दिया, फिर वारम्वार अत्यन्त अहंकार और क्रोधयुक्त भीष्मजी ने बड़े ऊंचे शब्द से हँसकर तीव्र बाणों से वृष्णिवंशी श्री कृष्णजी को कंपायमान कर दिया । ६४ । इस के अनन्तर महाबाहु श्रीकृष्णजी युद्ध में भीष्मजी के महा पराक्रम को देखकर और अर्जुन के मृदु युद्ध को अच्छी रीति से विचार और युद्धमें वारम्वार बाणोंको छोड़ते हुए दोनों सेनाओंके बीचको पाकर पांडवोंकी उत्तम सेनाको और सेनाके उत्तम शूरवीर पुरुषों को सूर्यके समान संतप्त करते वा मारते, युधिष्ठिर की सेनामें प्रलय मचातेहुए भीष्मको देखकर उस बड़े ज्ञानी शत्रुओं के मारनेवाले क्षमाशील भगवान् केशवजीने, यह चिन्ताकी कि युधिष्ठिरकी सेनानहीं रहेगी क्योंकि भीष्मजी एकही दिन में युद्धके बीच दैत्य दानवों कोभी

and made the downpour of *Bhishm's* arrows futile. Then *Bhishm* wounded much Vasudev and Arjun with his sharp arrows. Wounded with those arrows the two best of men looked glorious like two bellowing bulls wounded with the horns of each other. Then Bhishm in great rage checked Krishn and Arjun with thousands of his arrows, and they could not move in any direction. Bhishm, full of pride and anger, with loud laughs shook Krishn of the Vrishni family by his arrows. 64 Then brave Krishn, seeing the great prowess of Bhishm and seeing also the mildeness of Arjun's fighting and seeing the continuous downpour of Bhishma's arrows over the Pandav army and the consequent destructinn, the wisest of men, destroyer of enemies Bhagwan Keshav of forgiving nature thought that Yudhishthirs army would be extirpated as Bhishm could destroy al the gods andds

एकाह्नाद्धि रणे भीष्मो नाशयेद्देव दानवान् । किन्तुपाण्डुसुतान् युद्धे सबलान् सपदानुगान् ॥ ६९ ॥ द्रवतेच महासैन्यं पांडवस्य महात्मनः । पतेच कौरवास्तूर्णं प्रभग्नान्वीक्ष्यसोमकान् ॥ ७० ॥ प्राद्रवंति रणेऽदृष्ट्वा हर्षयन्त पितामहम् । सोऽहं भीष्मं निहत्य च पांडवार्थाय दंशितः ॥ ७१ ॥ भारमेत विनेष्यामि पांडवानां महात्मनाम् । अर्जुनोऽपि शरैस्तीक्ष्णैर्वध्यमानोऽपि संयुगे ॥ ७२ ॥ कर्तव्यंनाभि जानाति रणेभीष्मस्य गौरवात् । तथा चिंतयतस्तस्य भूयएवपितामहः । प्रेषयामासक्रुद्धः बाणान्पार्थरथंप्रति ॥ ७३ ॥ तेषांवहुत्वात्तु भृशंशराणां दिशश्चसर्वाः पिहिताबभूवुः । नचांतरिक्षं न दिशो नभूर्मिनभास्करो दृश्यतरश्मिमाली ॥ ७४ ॥ ववुश्चवातास्तुमुलाः सधूमादिशश्चसर्वाः क्षुभिताबभूवुः । द्रोणोविकर्णोऽथजयद्रथश्च भूरिश्रवाः कृतवर्माकृपश्च ॥ ७५ ॥ श्रुतायुरंवष्ठपतिश्च राजाविंदाविंदौच सुदक्षिणश्च । प्राच्याश्चसौवीरगणाश्च

नाशकरनेवाले हैं तो सेना और सहायकों समेत पांडवों का मारडालना उनको कितनी वड़ी वातहै । ६९ । और इन महात्मापांडवोंकी सेना भागीभी जातीहै, और यह कौरवलोग सोमकों को युद्धसे भागेहुए देखकर वड़े प्रसन्न चित्त पितामहको आनन्ददेते हुए चारोंओर से दौड़ेचले आते हैं सो अव मैंभी शस्त्र धारण करके पांडवों के निमित्त भीष्मको मारके महात्मा पांडवों के इस महाभारको दूर करूंगा, और अर्जुनभी युद्ध मेंतीव्र वाणों से पीड़ामान है वहइस युद्धमें भीष्मजीकी महत्तता से करनेके योग्य कर्मको नहीं जानताहै, इसप्रकार उन श्रीकृष्णजी के विचार करतेहीमें फिर अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजीने अर्जुन के रथपर वाणोंको फेंका । ७३ । उनवाणोंकी अत्यन्त आधिक्यतासे सव दिशाढकगईं उस समय आकाश औरदिशा कुछभी दिखाई नहीं देतेथे और न किरणसमूह धारी सूर्य दिखाई देताथा वायुमहा तुमुल धूमासव दिशाओं में धुआंसाव्याप्त होकरमहाव्याकुलतामचगई द्रोणाचार्य विकर्ण जयद्रथ भूरिश्रवा कृतवर्मा कृपाचार्य्य श्रुतायु अंवष्ठपति विन्द अनुविंद सुदक्षिण पश्चिमी राजा सौवीरोंकेगण सर्वविशातगण क्षुद्रकमालव यह सवराजालोग शीघ्रही

danavas in a day and therefore the destruction of the Pandavas and their allies was no great work for him. 69. The army of the great Pandavas is running away, and the Kauravas, seeing the flight of the Samaks, are swarming from all sides to the joy of the grandfather. So I shall take up arms for the good of the Pandavas and shall relieve than from this danger by killing Bhishm Arjun too is wounded by sharp arrows and does not know what to do out of respect for Bhishm. When Shre Krishn was thus thinking, Bhishm again showered his arrows over the chariot of Arjun. 73. The thick shower of arrows covered all the directions of space, and neither the sky nor earth was visible. The rays of the sun were hidden with those arrows; the wind blew a gale. There was an uneasiness on all sides and there was something like smoke spread all over. Dronacharya, Vikarn,

सर्वे वशातय- क्षुद्रकमालवाश्च ॥ ७६ ॥ किरीटिनं त्वरमाणा विसमुपेदिरे शूगा नान्त नवस्थराज्ञः । तवाजि पादातरथौघजालैरनेकसाहस्रशतैर्ददर्श ॥ ७७ ॥ किरीटिनं संपरिवार्यमाणं शिनेर्नप्ता वारणयूथपैश्च । ततस्तु दृष्ट्वार्जुनवासुदेवौ पदाति नागाश्वरथैः समन्तात् ॥ ७८ ॥ अभिद्रुतो शस्त्र भृतांवरिष्ठो शिनिप्रवीरोभि ससारतूर्णम् । सताम्यनीकानि महाधनुष्मान् शिनिप्रवीरः सहसाभिपत्य ॥ ७९ ॥ चकारसाहाय्यमथार्जुनस्य विष्णुर्यथा वृत्रनिषूदनस्य । विशीर्णनागाश्व रथध्वजौघं भीष्मेणवित्रासित सर्वयोधम् ॥ ८० ॥ युधिष्ठिरानीकमभिद्रवंतं प्रोवाच सदृश्यशिनि प्रवीरः । क्वक्षत्रियायास्यथनैषधर्मः सतांपुरस्तात्कथितः पुराणैः ॥ ८१ ॥ मास्वांप्रतिज्ञांत्य जतप्रवीराः स्वंवीरधर्मं परिपालयध्वम् । तान्वा स वाने तरजो निशाम्य नरेंद्रमुख्यान् द्रवतःसमंतात् ॥ ८२ ॥ पार्थस्य दृष्ट्वा मृदुयुद्धतांच भीष्मंच संख्ये समर्दयमाणम् । अमृष्यमाणः- सततोमहात्मा यशस्विनं सर्व दशार्हभर्त्ता ॥ ८३ ॥ उवाचशैनेयमभि

भीष्मजी के आज्ञावर्त्ती होकर अर्जुन की ओरको दौड़े जब सात्यकि ने उसअर्जुन को घोड़े हाथी रथ और पदातियों के लाखों जालों से और हाथियों के स्वामियों से घिराहुआ देखा वहांजाकर उसशूरवीर धनुषधारी सात्यकिने उन सेनाओंके सम्मुख पहुंचकर । ७८ । अर्जुनकी ऐसीसहायता की जैसी कि विष्णु भगवान् इन्द्रकी सहायता करते हैं फिर वह महाबली सात्यकि युधिष्ठिर की रथहाथी घोड़े और पदातियों समेत उस भागनेवाली सनाको जिसकी सबध्वजा गिरी हुई और शूरवीर भीष्मजी से भयभीत हुए देखकर यह वचन बोला कि हे क्षत्रियो कहां जातेहो पुराणों ने यहधर्म श्रेष्ठपुरुषोंका नहीं कहा है । ८१ । हे श्रेष्ठवीर लोगो अपने मणों को मतत्यागो अपने वीरधर्मों से पुरुषार्थ करो तुमअर्जुन को मृदु युद्ध कर्त्ता और भीष्म को भयंकर युद्ध कर्त्ता और चारों ओरसे गिरते हुए कौरवोंको

Jayadrath, Bhurishrava, Kritvarma, Kripacharya, Shrutayu, the ruler of Amvashta, Vind, Anuvind, Sudakshin, the princes of the West, the armies of Sauvirs, the Vishats and the Kshudraks attacked Arjun by Bhishma's order. When Satyaki saw Arjun surrounded by thousands of horses, elephants, chariots, foot soldiers and elephant riders, he came at once to the rescue When there the brave warrior helped Arjun as Vishnu helped Indra. The brave warrior Satyaki, seeing the chariots, elephants, horses and foot soldiers of Yudhishthir in a state of disorder, their banners fallen and the whole army terrified by the brave deeds of Bhishm, he cried out:—"Where are you going Kshatryas? This has never been the practice of good men in ancient times.81. Do not lose your lives, good warriors. Do your duty manfully. You think Arjun to be mild in fight and Bhishm to be a dreadful fighter, and therefore you are running away at the sight of the Kauravas

प्रशंसनदृष्ट्वा कुरूनापततः समग्रान् । येयांतितेयांतुशिनि प्रवीरयेपितिष्ठंता सात्व ततेपियांतु ॥ ८४ ॥ भीष्मंरथात्पद्यनिशात्यमानं द्रोणं च संख्ये स गणंमयाद्य। नमेरथीसात्वतकौरवाणां कुद्धस्यमुच्येतरणेद्य कश्चित् ॥ ८५ ॥ तस्मादहं गृह्यरथांगमुग्र प्राणंहरिष्यामि महाव्रतस्य । निहत्य भीष्मं स गणं तथाजौ द्रोणंचशैनेय रथप्रवीरौ ॥ ८६ ॥ प्रीतिंकरिष्यामि धनंजयस्य राज्ञश्चभीमस्य तथाश्विनोश्च । निह त्यसर्वान्धृतराष्ट्रपुत्रांस्तत्पक्षिणो येचनरेंद्रमुख्याः ॥ ८७ ॥ राज्ये न राजानमजातशत्रुं संपादयिष्याम्यहमद्यहृष्ट । ततःसुनाभं वसुदेवपुत्रः सूर्यप्रभंवज्रसमप्रभावम् ॥ ८८ ॥ क्षुरांतमुद्यम्य भुजेन चक्रं रथादवप्लुत्य विसृज्यवाहान् । संकंपयन्गांचरणैर्महात्मा

देखकरभागे जातेहो यह वचन सुनकर सब यादवों के भर्त्ता महात्मा श्रीकृष्णजी बड़ी प्रशंसा करके उस यशस्वी सात्यकि से वोले कि हे सेनापतियों में बड़े वीरजो जातेहैं वह चले जायँ और जो नियत हैं वहभी चाहे चले जायँ । ८४ । अब युद्ध के बीच रथ हाथी घोड़े और सब सेना समेत भीष्म को और द्रोणाचार्य्य को मेरेहाथ से गिरे हुए देखो हे यादव सात्यकि कौरवों की सेनामें कोई ऐसा नहीं है जो अब युद्धमें मुझ क्रोधयुक्त केसाथ युद्धकरने को समर्थहो, इस कारण अब मैं महाव्रतभीष्म के प्राणों को हरूंगा हे सात्यकि रथियों में बडेवीर भीष्म और द्रोणाचार्य्य को सेना के समूहों समेत इस युद्धभूमि में मारकर, राजा युधिष्ठिर अर्जुन भीमसेन नकुल और सहदेवकी प्रसन्नता को करूंगा अब मैं प्रसन्न मनहोकर धृतराष्ट्र के सब पुत्रोंको और जो उनके सहायक राजाहैं उनको मारकर । ८७ । अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर को राज्यसे युक्त करूंगा, यह कहकर वासुदेव श्रीकृष्णजी सुन्दर रूपसूर्य्यके समान प्रकाशित हजारवज्र के सदृश कठोर छुरेके समान तीक्ष्ण धारारखनेवाले चक्रकोऊंचा घुमाकर और घोड़ोंको छोड़ रथसे उतर चरणों

advancing on all sides!" At this, Krishn the lord of the Yadavas praised Satyaki and said, "Bravest of commanders, let them go who are unwilling to stay. I care not if the remaining ones also leave us. 84 You will now see the fall of Bhishm and Dronacharya with the chariots, elephants, horses and soldiers by my hands in the field of battle. There is none, O Satyaki, in the midst of the Kauravas that can withstand me in my rage. I shall therefore deprive Bhishm of his life. Having killed brave Bhishm and Dronacharya with all the hosts in the field of battle, I shall please king Yudhishthir, Arjun, Bhishm, Nakul and Sahadev. I shall, with great pleasure destroy all the sons of Dhritrashtra and their allies 87. I shall instal prince Yudhishthir on the throne." Having said this, Vasudev Shree Krishn turned on high his discus of beautiful form, glorious like the sun, a thousand times as hard as the vajra and having a sharp edge all

वेगेन कृष्ण प्रससारभीष्मम् ॥ ८९ ॥ मदान्धमाजौ समुदीर्णदर्पं सिंहोजिघांसन्निव वारणेन्द्रम् । सोऽभिद्रवन्भीष्ममनीकमध्ये क्रुद्धो महेन्द्रावरज प्रमाथी ॥ ९० ॥ व्यालम्बि-पीतान्त पटश्चकाशे घनोयथ खेतडितावनद्ध । सुदर्शनचास्यरराजशौरेस्तच्चक्रपद्म सुभुजोरुनालम् ॥ ९१ ॥ यथादिपद्मतरुणार्कवर्णरराजनारायणनाभिजातम् । तत्कृष्णको पोदयसूर्यबुद्ध क्षुरान्ततीक्ष्णाग्रसुजातपत्रम् । ९२ ॥ तस्यैवदेहोरुसर प्ररूढरराजना रायणबाहुनालम् । तमात्तचक्रप्रणदन्तमुच्चै क्रुद्धमहेन्द्रावरजसमीक्ष्य ॥ ९३ ॥ सर्वाणि भूतानि भृशंविनेदु क्षयं कुरूणामिवचिन्तयित्वा । स वासुदेव प्रगृहीतचक्र संवर्तयिष्य न्निवसर्वलोकम् ॥ ९४ ॥ अभ्युत्पतन्लोकगुरुर्बभासे भूतानिधक्ष्यन्निवधूमकेतु ।

से पृथ्वी को अत्यन्त कंपायमान करते हुए महात्मा भीष्मकी ओरको ऐसे चले जैसे कि युद्धभूमि में महामदोन्मत्त अहंकारी गजेन्द्र के मारने को सिंह दौड़े । ९० । उससमयशरीर में वर्त्तमान उत्तम पीताम्बर ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि आकाश में सुन्दर अलंकारों से युक्त बादल बिजलीसहित हो, और इन श्रीकृष्णजी का वह सुदर्शनचक्र रूप कमल जिसकी बड़ी नाल्ही सुन्दर भुजा थीं ऐसा शोभायमान विदित हुआ जैसे कि नारायण की नाभि से उत्पन्न तरुण सूर्य्यके समान वर्णवाला नवीन कमल शोभायमान हुआ था, यह कमल श्रीकृष्णजी के क्रोधरूप सूर्य्य के उदय से खिलाहुआ और छुराओं से युक्ततीव्रनोंकरूपपत्तेवाला उनके शरीररूपी बड़े तड़ागमें नियत शोभायमान हुआ ऐसे चक्रधारी उच्चस्वर से गर्जना करने वाले महाइन्द्रके छोटे भाई श्रीकृष्णजीको देखकर सबजीव यह चिन्ता करके अत्यन्त पुकारे कि यह कौरवों की प्रलय वर्त्तमानहुई फिर यह चक्रधारी लोकों के स्वामी जीवलोक के नाश करने को सम्मुख गिरते हुए ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि सबजीवमात्रों का भस्म करनेवाला अग्नि देदीप्यहोता है ऐसे पुरुषोत्तम

round like that of a razor He left the reigns of the horses and jumping down from his chariot, ran towards Bhishm, shaking the earth under his feet, like a lion assaulting an elephant. 90 At that time the yellow cloth which he had on his body, shone like lightning in the midst of clouds The Sudarshan chakra (discus) of Shree Krishn, having his arm for its stem, looked like a new lotus arising out of the navel of Narayan, like the sun in all its vigour That lotus flower opening at the rise of the sun of Shree Krishna's anger and provided with sharp edges for its petals, looked very handsome over the lake of Shree Krishna's body Seeing Krishn the bearer of discus and younger brother of Indra, roaring loudly, all creatures cried in terror and thought that the end of the Kauravas was nigh. Then that wielder of the discus, the lord of the world, ready to destroy the world, looked glorious like fire the destroyer of all things. Seeing

तमाद्रवंतंप्रगृहीतचक्रं दृष्ट्वादेवंशांतनवस्तदानीं ॥ ९५ ॥ असंभ्रमंतद्विचकर्षदोर्भ्यां
महाधनुर्गांडिवतुल्यघोषम् । उवाचभीष्मस्तमनंतपौरुषं गोविंदमाजावविमूढचेताः
॥ ९६ ॥ एह्येहिदेवेशजगन्निवासनमोस्तुते माधवचक्रपाणे । प्रसह्यमांपातयलोक
नाथरथोत्तमात्सर्वशरण्यसंख्ये ॥ ९७ ॥ त्वयाहतस्यापि ममाद्यकृष्णश्रेयः परस्मिन्नि
हचैवलोके । संभावितोस्म्यंधकवृष्णिनाथलोकैस्त्रिभिर्वीरतवाभियानात् ॥ ९८ ॥
रथादवप्लुत्यततस्त्वरावान् पार्थोप्यनुद्रुत्य यदुप्रवीरम् । जग्राहपीनोत्तमलंबबाहुंबाहुभ्यां
हरिंव्यायतपीनबाहुः ॥ ९९ ॥ निगृह्यमाणश्च तदादिदेवो भृशंसरोषः किलचास
योगी । आदायवेगेन जगामविष्णुर्जिष्णुंमहावातइवैकवृक्षम् ॥ १०० ॥ पार्थस्तु कि-

देव देव चक्रधारी को आता देखकर, धनुष बाण हाथ में रखनेवाले रथारूढ़ भीष्मजी निर्भयता से बोले कि हे देवेश्वर हे जगन्निवास हे शार्ङ्गधन्वा गदा खड्ग धारी आओ मैं तुमको नमस्कार करताहूं हे लोकनाथ हे जीवों के आश्रय और रक्षा के स्थान तुम युद्ध में हठकरके मुझको इसउत्तम रथसे गिराओ हे श्रीकृष्णजी अब तुम्हारे हाथसे मुझमरे हुएका इसलोक और परलोकमें कल्याण है । ९७ । हे अन्धक वृष्णी क्षत्रियों के नाथ मैं तीनों लोकों में प्रसिद्ध प्रभाववाला होकर अंगीकार हुआहूं बड़े वेगसे दौड़ते हुए श्रीकृष्णजी भीष्मके इस वचन को सुन कर उन से बोले कि अब तुम्हीं इस संसारके नाश के मूलहो सो तुम अबदुर्योधन का नाश देखोगे क्योंकि दुष्टद्यूतका खेलने वाला राजा धर्ममार्ग में नियत मन्त्री से निवारण करने के योग्य है अथवा जो काल से विपरीत बुद्धी होकर धर्मको उल्लंघन करके चले वह कुलका कलंकी है वह त्यागही करने के योग्य है इस बात को सुनकर वह राजा देवव्रत भीष्मजी यादवों में बड़ेवीर परम देवदेव श्रीकृष्णजी से यह वचनबोले कि दैव प्रबल है यादवों ने अपने प्रयोजन के सिद्धकरने

that best of men, the god of gods and wielder of mace, Bhishm, armed with bow and arrows, said fearlessly from his seat in the chariot:- "Lord of gods! asylum of the world! Wielder of Sharang bow, mace and sword! welcome. I bow to you Lord of the world! refuge of beings! you may well make me fall from this good chariot. It will be good for me in this world and the next, if I fall by your hand. 97. Lord of the Andhaks and the Vrishnis! I shall deem myself fortunate above the three worlds, if I am accepted by you." Hearing the words of Bhishm, Shree Krishna who was coming towards him in great haste, replied, "You are at the root of all this bloodshed and will see the destruction of Duryodhan; for honest ministers should check a king from the wickedness of gambling, and he who acts unjustly without regard for time and place, is a curse to the family and worthy of being abandoned." Having heard this, Devabirat Bhishm gave the following reply to the greatest warrior of the Yadavas, Shree Krishn

इत्यपयलेनपार्थो भीष्मांतिकंतूर्णमभिद्रवंतम् ॥ बलान्निजग्राहहरिंकिरीटीपदेपदेजन्दशमे कथंचित् ॥ १ ॥ अवस्थितंचप्रणिपत्यकृष्णंप्रीतोर्जुनःकांचनचित्रमाली ॥ उवाचकोपप्रतिसंहरेतिगतिर्भवान्केशवपांडवानां ॥ २ ॥ नहास्यतेकर्मयथाप्रतिज्ञंपुत्रैःशपेकेशव सोदरैश्च ॥ अंतंकरिष्यामियथाकुरूणांत्वयाहमिंद्रानुजसंप्रयुक्तः ॥ ३ ॥ ततःप्रतिज्ञां समयंचतस्यजनार्दनः प्रीतमनानिशम्य । स्थितःप्रियेकौरवसत्तमस्यरथंसचक्रंपुनराहरोह ॥ ४ ॥ सतानभीषून्पुनरादादानः प्रगृह्यशंखंद्विषतां निहंता । विनादयामासततोदिशश्च स पांचजन्यस्यरवेणशौरिः ॥ ५ ॥ व्याविद्धनिष्कांगदकुंडलंतंरजोविकीर्णांचितपक्ष्मनेत्रम् । विशुद्धदंष्ट्रंप्रगृहीतशंखं विचुक्रुशुःप्रेक्ष्यकुरुप्रवीराः ॥ ६ ॥ मृदंगभेरीपणव

के लिये कंसकोमारा वह राजाभी समझाने से नहीं समझा प्रारब्ध से दुःख के लिये जिसकी विपरीत बुद्धि है उसको अभीष्ट सुनाने वाला कोई नहीं है, इसके पीछे लम्बे और मोटे भुजावाले शीघ्रता करने वाले अर्जुनने रथसे कूदकर पैदल चलके मोटे ऊंचे और लम्बेभुजा वाले यादवों में बड़े वीर हरिको दोनों भुजाओं से पकड़ लिया, तब आदिदेव आत्मयोगी और अत्यन्त क्रोध रूप पकड़े हुए विष्णुजी अर्जुन को लेकर ऐसी शीघ्रतासे चले जैसे कि बड़ा वायु अकेले वृक्षको लेकर चलताहै ।१००। हेराजा फिर महात्मा अर्जुन ने बलसे दोनों चरणोंको पकड़कर बड़ी शीघ्रतासे भीष्मजी की ओर दौड़ते हुएको दशवेंपाद चिह्नपर बड़ी सुगमता पूर्वक बलसे पकड़ लिया, सुनहरी जड़ाऊ मालाधारी प्रसन्न चित्त अर्जुन उन ठहरेहुए श्रीकृष्णजीको दण्डवत् करके बोले कि आप क्रोधको दूर करिये हे कृष्ण आपही पांडवोंकी गतिहो । १०२ । आप अपने प्रणके अनुसार कर्मको मत छोड़ो, हे केशवजी मैं पुत्र और भाइयोंकी शपथ खाताहूं हे इन्द्रके छोटे भाई मैं अवश्य आप के साथ में होकर कौरवों का नाश करूंगा तदनन्तर उसकेप्रण और

the god of gods:—"Fate is very powerful. The Yadavas, for their own good, destroyed Kans who was dead to all good advice No one can bring him to right path whose understanding is weak because he is fated to fall in misery." In the meantime, Arjun of long and thick arms jumped down from his chariot and caught the bravest of the Yadavas in both his arms. But the ancient god, atma-yogi, Vishnu, in the excess of rage, rushed on along with Arjun as a storm of wind carries away with it a lonely tree. 100. Arjun thereupon held both his feet fast before he had gone ten paces towards Bhishm. And bowing before Krishn, Arjun decked with gold necklace, thus addressed him:—"Subdue your wrath. Krishn. You alone are the refuge of the Pandavas. 102 Remember your promise and act accordingly. I swear by my brothers and sons, O younger brother of Indra, that in company with you I shall destroy all the Kauravas." Hearing his pro-

प्रणाशनेमिस्वनदुंदुभिनिः स्वनाढ्य । स सिंहनादाश्च बभूवुरुग्राः सर्वेष्वनीकेषु ततः कुरूणां ॥ ७ ॥ गांडीवघोषः स्तनयित्नुकल्पो जगामपार्थस्य नभो दिशश्च । जग्मुश्चबाणा विमला प्रसन्नाः सर्वा दिशः पांडवचापमुक्ताः ॥८॥ तं कौरवाणामधिपोजवेन भीष्मेणभूरिश्रवसाचसार्द्धम् । अभ्युद्ययावुद्यतबाणपाणिः कक्षंदिधक्षन्निवधूमकेतुः ॥ ९ ॥ अथार्जुनाय प्रजिघायभल्लान् भूरिश्रवाः सप्तसुवर्णपुंखान् । दुर्योधनस्तोमरमुग्रवेगं शल्यो गदां शांतनवश्चशक्तिं ॥ १० ॥ स सप्तभिः सप्तशरप्रवेकान् संवार्यभूरिश्रवसा विसृष्टान् । शितेन दुर्योधनबाहुमुक्तं क्षुरेणतत्तोमरमुन्ममाथ ॥ ११ ॥ ततः शुभामापततीं स शक्तिं विद्युत्प्रभांशांतनवेनमुक्ताम् । गदांच मद्राधिपबाहुमुक्तांद्वाभ्यां शराभ्यां निचकर्तवीरः ॥ १२ ॥ ततो भुजाभ्यांबलवद्विकृष्य चित्रंधनुर्गांडिवमप्रमेयम् ।

नियमको सुनकर जनार्दनजी महा प्रसन्न होकर उस कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुनके अभीष्ट सिद्धकरने में प्रवर्त्त हुए और चक्र समेत रथपर सवार हुए फिर उन लगामोंको हाथ में लेनेवाले शत्रुओं के मारने वाले उन श्रीकृष्णजी ने हाथमें पांचजन्य शंखको लेकर ऐसी ध्वनिकी कि जिसके कारणसब दिशाओं समेत आकाश शब्दायमान होगया उस निष्कबाजूबंद और कुंडलों से अलंकृत रजसे भरे पद्मनेत्र विशुद्ध दंष्ट्रायुक्त शंख को धारण कियेश्री केशवमूर्तिको देखकर महाबली कौरवलोग पुकारे तदनन्तर मृदंग भेरी पटहाओंके व रथकेचक्रों के और दुन्दुभियों के भयकारी शब्द शंखध्वनियों समेत कौरवोंकी सेनामेंभी होनेलगे । १०७ । और अर्जुनकें गांडीव धनुषका शब्द बादलकी गर्जना के समान आकाश और दिशाओं में व्याप्तहुआ तदनन्तर पांडव अर्जुनके धनुषसे निकले हुए बहुत निर्मल और प्रकाशित बाण सब दिशाओं में चले तब कौरवों का राजादुर्योधन जिसनेबाण हाथ में ऊंचाकररक्खा था वह अपनी सेना व भीष्म भूरिश्रवाको साथ में लेकर अर्जुनके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि वनको जलाताहुआ अग्निजाताहै इसकेपीछे भूरिश्रवाने सुवर्ण पुंखवाले सात

mise and condition, Janradan was much pleased and engaged himself in doing what Arjun desired. He mounted the chariot together with his discus. And taking the reigns in his hand, Krishn the destroyer of enemies blew his conch, known as Panchjanya, so loudly that the sky with all the directions rang with the echo. The Kauravas cried in dismay at the sight of Krishn decked with bracelets and earrings and having eyes like lotus. Then the sounds of drums, trumpets, horns, chariot wheels and bugles rose loud from the army of the Kauravas. 107. But the sound of Arjun's Gandiv bow rose like a peal of thunder above all the din. The arrows shot from Arjun's bow were to be seen in all directions. Duryodhan the prince of the Kauravas with his arrows raised up, accompanied by Bhishm and Bhurishrava and folowed by a large army, faced Arjun like fire, burn-

माहेन्द्रमस्त्रंविधिवत्सुघोरं प्रादुश्चकाराद्भुततमं तरिक्षे ॥ १३ ॥ तेनोत्तमास्त्रेण ततो महात्मा, सर्वाण्यनीकानि महाधनुष्मान् । शरौघजालैर्विमलाग्निवर्णैर्निवारयामास किरीटमाली ॥ १४ ॥ शिलीमुखाः पार्थधनुः प्रमुक्ता रथान्ध्वजाग्राणि धनूंषिबाहून् । निकृत्य देहान् विविशुः परेषां नरेन्द्रनागेन्द्रतुरंगमाणाम् ॥ १५ ॥ ततो दिशः सोनुदिशश्च पार्थः शरैः सुधारैः समरे वितत्य । गांडीव शब्देन मनांसि तेषां किरीटमाली व्यथितां चकार ॥ १६ ॥ तस्मिंस्तथाघोरतमे प्रवृत्ते शंखस्वनादुंदुभि निस्वनाश्च । अंतर्हितागां

भल्ल अर्जुनके ऊपरफेंके, औरदुर्य्योधनने बड़े शीघ्रगामी भयकारी तोमरको और शल्यने गदा को और भीष्मजी नेबरछीको मारा फिर अर्जुनने अपनेसात बाणोंसे भूरिश्रवाके चलायेतीव्र सातों बाणोंको काटकर क्षुरप्रनाम बाणसे दुर्य्योधनके छोड़े हुए तोमरको काटा तिस पीछे भीष्मजी की बिजय के समान तीव्र बरछी को, और शल्यकी फेंकी हुई गदा को अपने दोबाणों से काट कर ॥ ११२ ॥ महा कठिन और अतुल प्रभाववाले अपने गांडीव धनुष का दोनों भुजाओंसे खैंचकर बुद्धि के अनुसार महाघोर अपूर्व माहेन्द्र अस्त्रको अन्तरिक्षमें प्रकट किया इसके पीछे बड़े धनुषधारी महात्मा मुकुटमालाधारी ने उस उत्तम धनुष के द्वारा निकले हुए बड़े स्वच्छ और तीव्र बाणों के समूहों से सब सेना को हटाया फिर उसके गांडीव से निकले हुए शिलीमुख बाण रथ हाथी घोड़े और ध्वजाओं के शिरोंको वा धनुषोंको और भुजाओं को काटकर शत्रुपक्ष के गजगजेन्द्र और राजाओं के शरीर में प्रवेश करगये फिर उस मुकुट मालाधारी अर्जुन ने उत्तमधारवाले तीव्रबाणों से दिशा और विदिशाओं को पूर्णकरके गांडीव धनुपके शब्दों से उन सबके हृदयों को महापीडित किया इस प्रकार उस बड़े भयानक अस्त्रों के युद्ध में शंख दुन्दुभि-

ing a forest. Bhurishrava shot at Arjun seven golden darts with feathers; Duryodhan hurled his *Tomar*, Shalya his mace and Bhishm his spear. Arjun cut down the seven arrows of Bhurishrava with his own. With one arrow he cut down the weapon of Duryodhan and with two more he cut down the spear of Bhishm and the mace of Shalya 112. Drawing his Gandiv bow of immence strength with both his arms, he carefully shot in the air the weapon given him by Indra. And then that great archer, decked with diadem and garlands, with his numerous bright arrows shot from the bow made all the warriors turn their faces. The sharp edged arrows shot from his bow, cut asunder the chariots, elephants, horses, banner heads, bows and arms and pierced through the bodies of the elephants and the princes of the enemy. Then Arjun decked with diadem and garlands filled all the directions with his sharp arrows and shook the hearts of the enemies with the twang of the Gandiv bow. Thus in that war of dreadful weapons the peals from conchs and trumpets were subdued by the twang of

डिव निःस्वनेन प्रभुरुग्राश्वरथप्रणादाः ॥ १७ ॥ गांडीव शब्दं तमथो विदित्वा विराट राजप्रमुखाः प्रवीराः । पांचालराजो द्रुपदश्च वीरास्तं देशमाजग्मुरदीनसत्वाः ॥ १८ ॥ सर्वाणि सैन्यानितु तावकानि यतो यतो गांडिवजःप्रणादः । ततस्ततः सम्प्रति मेयजग्मुर्नेतं प्रतीपोभिससारकश्चित् ॥ १९ ॥ तस्मिन्सुघोरेनृपसंप्रहारे हताःप्रवीरा सरथाश्वसूताः । गजाश्वनाराच निपातितास्ता महापताकाः शुभरुक्मकक्ष्याः ॥ २० ॥ परीतसत्वाः सहसा निपेतुः किरीटिनाभिन्नतनुत्रकायाः । दृढहता. पत्रिभिरुग्र वेगैः पार्थेनभल्लैर्विमलैः शिताग्रैः ॥ २१ । निकृत्तयन्त्रानि हतेन्द्र कीला ध्वजामहांतो ध्वजिनी मुखेषु । पदातिसंघाय रथाश्वसंख्ये हयाश्च नागाश्च धनंजयेन ॥२२॥ बाणाहतास्तूर्णं गपेतसत्वा विष्टभ्यगात्राणि

यों के शब्द, गांडीव धनुष के शब्दों मे छुपगए और रथों के भी महाभयानक शब्द मन्दहोगये ।११७। इसके पीछे उस गांडीव के शब्दों को जानकर नरोंमें वीर राजा विराट् आदि और पांचाल और द्रुपद यह महापराक्रमी उसस्थानपर आये और आपके पुत्रोंकी भी सब सेना वहां आई जहां कि गांडीवके बड़े शब्द होरहे थे और सबों ने अपने को न्यूनही समझा कोई प्रतिपक्षी उसके सम्मुख नहीं गया हे राजा उसबड़े भयानक युद्ध में रथ वा सूतों समेत बड़े २ शूरवीर मारे गये और सुनहरी जड़ाऊ झूलों से अलंकृत बड़ी पताका रखने वाले हाथी भी नाराचोंके आघात से झुलहुए से होकर अर्जुनके हाथ से कटे हुए शरीर से निर्जीव होकर अकस्मात् गिरपड़े, सेनाओं के मुखों पर राजा लोगों की ध्वजायें अर्जुन के भयानक वेग तीक्ष्ण धार युक्त निशित फलवाले वाणों से अत्यन्त विध्वंश होगई और यन्त्र कटेहुये हजारों इन्द्रजाल भी वारंवार नाशको प्राप्तहुए और युद्धमें रथ हाथी घोड़े और पदातियों के समूहभी उस अर्जुन के वाणों से घायल और असामर्थ अंगोंको विना साधे शीघ्र ही पृथ्वीपर गिरपड़े, हे राजा ऐसे बड़े युद्धमें उस ऐन्द्रनाम उत्तम अस्त्र से कवच टूटे और शरीर जर्जरी भूतहोगये । १२३ । तदनन्तर अर्जुन के तीव्रवाण समूहों से

the Gandiv and the rumbling of chariot wheels was heard no more. 117. Then hearing the sound of the Gandiv, the best of warriors, king Virat and others, with the Panchals and Drupad, came there. The whole army of your sons came there where the twang of the Gandiv proceeded from. None of the enemies dared approach Arjun. In that great battle, the warriors with their chariots and coachmen were destroyed and the large elephants bearing large banners and decked with gold trappings fell down wounded by the hand of Arjun. The banners of the princes at the heads of the armies, cut down by the arrows of Arjun, fell down on earth and thousands of machines were destroyed. The elephants horses and foot soldiers wounded in large numbers by Arjun's arrows fell down on earth. Coats of mail as well as the bodies of the warriors were pierced through and through by the weapon of Indra. 123. Then by Arjun's sharp

निपेतुरुर्व्यां। यन्त्रेणतेनाग्र्य वरेण राजन् महाहवेभिन्नतनुत्रदेहाः ॥ २३ ॥ ततः शरौघैर्नि
शितैः किरीटिना नृदेहशस्त्रक्षतलोहितोदा। नदीसुघोरा नरमेदफेनाप्रवर्त्तित तत्ररणाजिरे
वै ॥२४। वेगेनसातीव पृथुप्रवाहाप्रसूत नागाश्वशरीररोधा। नरान्त्रमज्जोच्छ्रितमांसपङ्का
प्रभूत रक्षो गणभूत सेविता ॥ २५ ॥ शिरः कपाल कुल केशशाद्वला शरीर संघात
सहस्र वाहिनी। विशीर्णनाना कवचोर्मि सङ्कुला नराश्वनागास्थि निकृत्तशर्करा
॥ २६ ॥ श्वकङ्कदात्रा वृकगृध्रकाकैः क्रव्यादसंघैश्च तरक्षुभिश्च। उपेतकूलाददृशु
र्मनुष्याः क्रूरामहावैतरणी प्रकाशाम् ॥ २७ ॥ प्रवर्तितामर्जुन बाण संघैर्मेदोवसा
सृक्प्रवहांसुभीमाम्। हतप्रवीरांश्च तथैव दृष्ट्वा सेनाकुरूणामथफाल्गुनेन ॥ २८ ॥
तेचेदिपाञ्चाल करूषमत्स्याः पार्थाश्च सर्वे सहिताः प्रणेदुः। जयप्रगल्भाः पुरुषप्रवीराः
संत्रासयन्तः कुरुवीरयोधान् ॥ २९ ॥ हतप्रवीराणि बलानि दृष्ट्वा किरीटिनाशत्रुभ-

मनुष्यों के देहमें शस्त्रों से निकलेहुए रुधिररूपी जलवाली नदी वहां वह निकली उस नदीमें मनुष्योंकी वसा तो जलका फेनथा वह नदी तीव्रतासे बड़ी प्रवाहवाली और मृतक हाथी और घोड़ोंके शरीरों के किनारेवाली मनुष्यों के आंत भेजने उत्पन्न मांस रूप कीचको धारण कियेहुएथी और बहुत से राक्षसों के अवताररूप राजाही उस के हंसथे। १२५। और शिरों के कपालों से व्याकुल मृतक बालरूप घाससे शोभित देशों से युक्त शरीरों के समूहों से हजारों माला रखनेवाली हजारों प्रकारकी कवच रूपी लहरों से व्याकुल और मरेहुए मनुष्य हाथी घोड़े और मनुष्यों के हाड़रूप उसमें कंकड़ और रेतके समान थे। १२६। मनुष्यों ने उस शृगालकंक गिद्ध और कच्चेमांस खानेवाले राक्षस पशुपक्षी आदिके समूह वा छोटे व्याघ्रों से संयुक्त किनारेवाली कठिन वैतरणीरूपीनदी को देखा, अर्जुन के बाण समूहों के द्वारा कटेहुए कपालरक्त रुधिर से बहनेवाली अत्यन्त भयानक नदीको देखकर अथवा इसीप्रकार अर्जुन के हाथसे मृतक शूरवीर वाली कौरवी सेनाको देखकर वह चन्देरी

arrows there flowed from the bodies of warriors a river of blood, having fat for its foam, the carcases of elephants and horses for its banks, the flesh and entrails of men for its mire and the rakshases in the guise of princes for its trees. 125. Full of human skulls, with the hair of the dead for its weeds, garlanded with human bodies of various countries, having the dead bodies of men and elephants and their bones for its pebbles and sand, that river was difficult to be crossed like the Baitarni and its banks were seen to be full of jackals, herons, vultures, carnivorous rakshases and tigers At the sight of those heads cut down by Arjun's arrows, the dreadful river of blood and the Kaurava army whose warriors were destroyed by Arjun, the warriors of Chanderi, Panchal and Matsya as well as all the Pandavas desirous of victory, raised a dreadful war cry terrifying the Kauravas.

पावहेन । विगाह्य सेनांध्वजिनी पतीनां सिंहो मृगाणामिव यूथसंघान् ॥ १३० ॥ विनेदतुस्तावति हर्षयुक्तौ गांडीव धन्वाच जनार्दनश्च । ततः रविसंवृतःदिव्यजालं दृष्ट्वा भृशाशस्त्रपरिक्षतांगाः ॥ ३१ ॥ तदैंद्रमस्त्र विततंच घोरमसह्य मुद्वीक्ष्ययुगां तकल्पम् । अथापयान कुरवः सभीष्मा स द्रोणदुर्योधन बाह्लिकाश्च ॥ ३२ ॥ चकर्निशांसंधि गतां समीक्ष्य विभावसोर्लोहितराग युक्ताम् । अवाप्यकीर्तिंच यशश्च लोके विजित्यशत्रूंश्च धनंजयोऽपि ॥ ३३ ॥ ययौनरेंद्रै सहसोदरैश्च समाप्तकर्मा शिविरंनिशायाम् । ततः प्रजज्ञेतुमुलः कुरूणां निशामुखे घोरतम प्रणादः ॥ ३४ ॥ रणे रथानामयुतं निहत्य हतागजा सप्तशतार्जुनेन । प्राच्याश्च सौवीरगणाश्च सर्वे निपातिताः क्षुद्रकमालवाश्च ॥ ३५ ॥ महद्भुतं कर्म धनंजयेन कर्तुं यथा नार्हतिक श्चिदन्य । श्रुतायुरंबष्ठपतिश्चराजा तथैव दुर्मर्षण चित्रसेनौ ॥ ३६ ॥ द्रोणकृपः

पांचाल और मत्स्यादिक देशीवीर और सब शूरवीरपाण्डव विजय में बुद्धि रखने और पुरुषों में बड़ेधीर उनकौरवी सेनाके बड़ेशूरवीरोंको डराते हुए सब एक साथही महागर्जना करते हुए, शत्रुओं को भय उत्पन्न करने वाले मुकुटधारी अर्जुन के हाथसे मृतक वीरोंवाली सेनाको देखकर और जैसे कि मृगोंके यूथों को सिंह भयभीत करे उसी प्रकार सेनापतियों की सेनाको भयभीत करके वह अति प्रसन्नमन गांडीवधनुषधारी और जनार्दनजी अत्यन्तता से गर्जे तदनन्तर शस्त्रोंसे अत्यन्त घायल अंग भीष्म व द्रोणाचार्य व दुर्योधन बाह्लीक आदि कौरवों ने निशाकी सन्धिको देखकर और उस प्रलय के समान असह्य और घोर फैले हुए ऐन्द्रास्त्रको देखकर अथवा सूर्य की अरुणता से युक्त संधिगतरात्रिको देखकर युद्ध से निवृत्ती की और नरोंका इन्द्र अर्जुनभी लोक में यशी और कीर्त्तिमान होकर शत्रुओं का मर्दन करके युद्ध कर्मको समाप्त करनेवाला अपने निज भाइयों समेत रात्रिके समय अपने डेरेको गया इसके पीछे रात्रिके प्रारंभमें कौरवोंके बड़े घोर शब्द उत्पन्न हुए। १३४। अर्जुन ने दश हजार रथियों को मारकर सातसौ

Seeing the warriors of the army destroyed by Arjun, who wore diadem on his head and who was the terror of the enemies they terrified the leaders of your army with their roars as a lion does a herd of deer. The cheerful wielder of Gandiv bow and Janardan too, roared very loud roars. Then Bhishm, Dronacharya, Duryodhan, Vahlik and other Kauravas, much wounded, seeing the approach of night and the dreadful havoc done by the weapon of Indra prepared to retire. Arjun the best of men having won the honour and fame of that day's victory and having destroyed many enemies, retired to his camp along with his brothers During that night a dreadful howling was heard from the camp of the Kauravas. 134. Arjun destroyed on that day ten thousand charioteers and seven hundred

सैंधववाह्लिकौच भूरिश्रवा शल्यशलौवराजन्। अन्येचैवयोधाः शतशः समेता युद्धेन पार्थेन रणस्यमध्ये ॥ ३७ ॥ स्वबाहुवीर्येण जितास्समीप्माः किरीटिनालोकमहारथेन। इतिब्रुवंत शिबिराणिजग्मुः सैन्यगणाभारतपार्थवीयाः ॥ ३८ ॥ वहकासहस्रैश्च सुसंप्रदीप्तैर्विभ्राजे मार्गेम्बरवासप्रदीपे। किरीटिविचेोसितं सर्वे योधांचक्रे निवेशंध्वजि मीकुरूणाम् ॥ १३९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीयदिवसावहारे एकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

संजय उवाच। व्युष्टां निशाभारत भारतानां भीष्मः क्रोधात् प्रमुखेमहात्मा। ययौ स पश्चात् प्रतिजातकोपो वृत सर्वसमग्रेण बलेन भीष्म ॥ १ ॥ तंद्रोण दुर्योधनबाह्लिक काश्च तथैव दुर्मर्षण चित्रसेनौ। जयद्रथश्चाति बलोबलौघैर्नृपास्तथान्ये प्रययुःसमतात्

हाथी मारे और सब पूर्वदेशी शूरवीर सौवीरगणों समेत क्षुद्रक मालवों को मारा यह अर्जुन ने ऐसा बड़ाभारी कर्म किया जैसा कि दूसरा कोई भी नहीं करसक्ता है राजा श्रुतायु और अंबष्टपति दुर्मर्षण चित्रसेन द्रोणाचार्य कृपाचार्य सैंधव वाह्लीक भूरिश्रवा शल्य शल और भीष्मजी समेत सैकड़ों योद्धाओंको युद्ध में इस हस्तलाघवी महावली लोक महारथी कोपित अर्जुन ने विजय किया है भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र आपके सब शूरवीर हजारों मसालें दलमाके इस बातको कहते हुए कि किरीटी अर्जुन से सब शूरवीर भयभीत हुए हैं कौरवोंकी सेना के डेरों में गये १३९।

अध्याय ॥ ६० ॥

संजय बोले हे भरतवंशी इस के अनन्तर प्रातःकाल के समय महात्मा भीष्मजी जिनका क्रोध शत्रुओं के ऊपर उत्पन्न हुआ वह सब सेना समेत भरतवंशियों की सेनाके आगे गये द्रोणाचार्य दुर्योधन वाह्लीक दुर्मर्षण चित्रसेन महावली जयद्रथ और अन्य राजा लोग सेनाओं के समूहों समेत चारों ओरसे भीष्मजी के पास

elephants including the Sauvirs, the malavas and the Kshudrahs of the east. Arjun's deed of prowess was matchless. Shrutayu and Durmarshan the ruler of Ambasht, Chitrasen, Dronacharya Kripacharya, Saindhav, Vahlik, Bhurishrava, Shalya Shal, and Bhishma with hundreds of other warriors sufferd defeat at the hands of Arjun the bravest and most dexterous warrior of the world. Thousands of your warriors with burning torches returned to their camps saying, "The bravest of the warriors are afraid of Arjun the wearer of the diadem." 139.

CHAPTER LX

"Early the next morning," said Sanjaya to Dhritrashtra, "Bhishma, the great, whose anger upon the enemies was intense, led all the army of the descendants of Bharat. Dronacharya, Duryodhan, Vahlik, Durmarshan, Chitrasen, valliant Jayadrath and other kings

यदूनामृषभेणसख्ये । कपिध्वजं प्रेक्ष्य विषेदुराजो सहैव पुत्रैस्तवकौरवेन्द्र ॥ ९ ॥ प्रकर्षताग्रम महायुधेन किरीटिनालोकमहारथेन । तद्व्यूह राजन् ददृशुस्त्वदीयाश्चतुःसहस्रैः द्विपैः कर्णम् ॥ १० ॥ यथाद्यपूर्वे दृष्ट धर्म राजा व्यूह कृत कौरवसत्तमेन । तथा नभूतो भुविमानवेष नदृष्टपूर्वो नचसंश्रुतश्च ॥ ११ ॥ ततो यथा दृश्यन्ते तत्र पाचालमुख्या सहचेदिमुख्यैः । तत. समा देश समाहतानि भेरी सहस्राणिविनेदुराजौ ॥ १२ ॥ शंखस्वनास्तूर्य रथस्वनाश्च सर्वेष्वनीकेषु स सिंहनादा । तत सबाणानि महास्वनानि विस्फार्यमाणानि धनूंषिवीरै ॥ १३ ॥ क्षणेनभेरीपणवप्रणादा नतद्दघु शंखमहास्वनाश्च । तच्छंखशब्दावृतमन्तरिक्षमुद्धूतभौमद्रुतरेणुजालम् ॥ १४ ॥ महा वितानावततप्रकाश मालोक्यवीरा सहसाभिपेतु । रथी रथेनाभिहत ससूत पपात

शोभित कपि-रज अर्जुन को और यादवपति श्रीकृष्ण सारथी से ऊंचेकी ओर बांधेहुए पनवाले रथको युद्धभूमि में देखकर महा व्याकुल हुए आपके पुत्र और सबशूरवीरों ने लोक महारथी शस्त्रधारी सेनाको विध्वंस करने वाले मुकुटधारी अर्जुन से रक्षित चार सहस्रमत्त हाथियों से संयुक्त उस व्यूहराजको देखा । १० । जैसे कि प्रथम दिन में कौरवोंमें श्रेष्ठ धर्मराज ने व्यूह को बनाया था उसप्रकार का व्यूह इसलोकमें मनुष्योंने प्रथम कभी न देखाथा न सुना था, इसके पीछे सब सेनाके बीच युद्धभूमि में बड़े वड़े बजाईहुई हजारोंभेरी शब्दायमानहुई औरशंखोंके व हजारों तूर्योंके शब्दभी बड़ेवेग से हुए, इससे पीछे वीरों के छोड़े हुए बाणों के शब्दों से संयुक्त चलाये हुए धनुषों के और शंखों के बड़े शब्दों ने क्षणमात्र मेंही भेरी और ढोलों के कठिन शब्दों को गुप्त कर दिया, शंखों के उन शब्दों से सब अन्तरिक्ष व्याप्त होगया और शीघ्रही पृथ्वी से धूलोंके समूह आकाशकी ओर उड़े तदनन्तर बड़े वितानों से प्रकाश को देखकर वीरलोग अकस्मात् दौड़उठे, रथीरथ से भिड़कर घोड़े समेत रथी ध्वजा

---

great array 8 Then all the Kauravas, accompanied by your sons, seeing Arjun with his banner of the ensign of monkey and Shree Krishn the prince of Yadavas as driver, were much perplexed Your sons and their warriors, saw that bravest of charioteers, Arjun the destroyer of foes, protected by four thousand elephants. None of the people of this world had seen or heard an array of armies like the one formed on the previous day by that best of men, Yudhishthir the just Then from the midst of all that army, rang through all the battle-field thousands of trumpets and conchs with loud peals, but the sounds made by the discharge of arrows and the conchs of warriors surpassed the noise made by trumpets and drums. All the air was filled with the blasts of conchs and soon the sky was overcast with dust The warriors rushed to battle as soon as the light was strong —Charioteers met charioteers in combat and fell down together

॥ २ ॥ सतैर्महद्भिश्च महारथैश्च तेजस्विभिर्वीर्यवद्भिश्च राजन् । रराज सा सुरराजमुख्यैर्वृतः सदेवैरिव वज्रपाणिः ॥ ३ ॥ तस्मिन्ननीकप्रमुखे विषक्ता दोधूयमानाश्च महापताकाः । सुरक्तपीतासित पांडुराभा महागजस्कंध गताविरेजुः ॥ ४ ॥ सावाहिनीशान्तनवेन गुप्ता महारथैर्वारणवाजि मिश्रा । बभौ स विद्युत्स्तनयित्नुकल्पा जलागमे द्यौरिवजातमेघा ॥ ५ ॥ ततोरणायाभि मुखीप्रयाता प्रत्यर्जुनं शान्तनवाभिगुप्ता । सेनामहोग्रा सहसा कुरूणां वेगोयथा भीम इवापगायाः ॥ ६ ॥ तव्यालनानाविधगूढसारं गजाश्वपादात रथौघपक्षम् । व्यूहं महा मेघ समं महात्मा ददर्श दूरात्कपि राजकेतुः ॥ ७ ॥ विनिर्ययौ केतुमता रथेन नरर्षभः श्वेतहयेनवीरः । वरूथिना सैन्यमुखेमहात्मा वधेधृतः सर्व स पत्नयूनाम् ॥ ८ ॥ सूपस्करां सोत्तरबंधुरेषयत्त

आये । २ । हे राजेन्द्र धृतराष्ट्र वह भीष्मजी उन महापुरुष महारथी तेजस्वी पराक्रमी राजाओं के बीच में ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि देवताओं के मध्य में देवराज इन्द्रशोभित होता है, उस सेना के आगेलगी हुई बड़े २ हाथियों के कंधों पर वर्त्तमान लाल पीली काली श्वेत कम्पायमान पताकाभी शोभित हुई और वह सेना राजा भीष्म व महारथी वा हाथी घोड़ों से विद्युद्धारी बादलके समान ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि जलके आगमनमें बादलों से भरा हुआ आकाश होताहै ।५। इसके पीछे भीष्मजी से रक्षित राजा लोग युद्ध के निमित्त अर्जुन के सन्मुख गये और कौरवी सेनाभी अकस्मात् ऐसे चली जैसे कि गंगाजी का भयानक वेग चलता है फिर कपिध्वज महात्मा अर्जुन ने दूरही से उन हाथी घोड़े रथ रथी और पदातियों समेत बड़े वेग से भरे हुए बादल के समान नानाप्रकार के पक्षों समेत व्यूहको देखा, और सेनाओं के आगे खड़ा हुआ दोनों सेनाओं से संयुक्त महात्मा वीर अर्जुन श्वेत घोड़े और ध्वजाधारी रथकी सवारी में सुशोभित होकर सब शत्रुओंकी सेना के ओर चला ।८। तब आपके पुत्रों समेत सब कौरवलोग उस सब सामान से

at the head of armies came round Bhishm 2 Surrounded by those great warriors and the glorious kings of great prowess, Bhishm looked like Indra the prince of gods in the midst of the gods In the front of that army, on the shoulders of elephants, fluttered red, yellow, black and white banners That army of princes, warriors, elephants and horses, led by Bhishm, looked like the sky overcast with clouds with flashes of lightning. Then the kings protected by Bhishm, came face to face with Arjun, ready for fighting, and the Kaurav armies followed them like the waves of the Ganges with dreadful velocity. Arjun with his banner bearing the figure of Hanuman saw from a great distance that large army consisting of elephants, horses, chariots, charioteers and foot soldiers, coming on in great force like clouds Brave Arjun, mounted on his bannered chariot, drawn by white horses and advanced at the head of his army towards that

यद्भूतस्तूवभेणसव्ये । कपिध्वज प्रेक्ष्य विषेदुराजा सहैव पैस्तावकीश्चैव ॥ ९ ॥
प्रकर्षनाजुन मदायुधेन किरीटिनालोकमहारथेन । व्यूहं नागैः दहशुस्तदीयास्तथाम्बुदन्त
दर्यालसहस्रकर्णम् ॥ १० ॥ यथाहि पूर्वे हनि धर्मराजा व्यूहः कृत कौरवसत्तमेन । तथा
नभूतो भुविमानवेषु नदृष्टपूर्वो नजसंश्रुतश्च ॥ ११ ॥ ततो यथा दृशमेत्य तासु
पाचालमुख्या सहचेदिमुख्यैः । तत सम देश समाहतानि भेरी सहस्राणि विनेदुराजौ
॥ १२ ॥ शङ्खध्वनास्तूर्य रथध्वनाश्च सर्वेष्वनीकेषु स सिंहनादा । तत सशराणि
महास्वनानि विस्फार्यमाणानि धनूंषि वीरैः ॥ १३ ॥ क्षणेनभेरीपणवप्रणादा नतर्दधु
शङ्खमहास्वनाश्च । तच्छङ्खशब्दावृतमन्तरिक्षमुद्भूतभौमद्रुतरेणुजालम् ॥ १४ ॥ महा
वितानावततप्रकाश मालोक्यवीरा सहसाभिपेतु । रथी रथेनाभिहत ससूत पपात

शोभित कपिध्वज अर्जुनको और यादवपति श्रीकृष्णजी सारथी से उनकेओर बांधेहुए पत्ताल रथको युद्धभूमि में देखकर महा व्याकुल हुए आपके पुत्र और सवशूरवीरों ने लोक महारथी शस्त्रधारी सेनाको विध्वंस करने वाले मुकुटधारी अर्जुन से रक्षित चार सहस्रमत्त हाथियों से संयुक्त उस व्यूहराजको देखा । १० । जैसे कि प्रथम दिन में कौरवोंमें श्रेष्ठ धर्मराज ने व्यूहको बनाया था उस प्रकार का व्यूह इसलोकमें मनुष्योंने प्रथम कभी न देखाथा नसुना था, इसके पीछे सब सेनाके बीच युद्धभूमि में बडे रूपसे बजाईहुई हजारों भेरी शब्दायमानहुईं और शङ्खोंकेव हजारों तूर्योंके शब्दभी बडेवेग से हुए, इसके पीछे वीरों के छोडे हुए बाणों के शब्दों से संयुक्त चलाये हुए धनुषों के और शङ्खों केबडे शब्दों ने क्षणमात्र मेंही भेरी और ढोलों के कठिन शब्दों को गुप्त कर दिया, शङ्खों के उन शब्दों से सब अन्तरिक्ष व्याप्त होगया और शीघ्रही पृथ्वी से धूलोंके समूह आकाशकी ओर उडे तदनन्तर बडे वितानों से प्रकाश को देखकर वीरलोग अकस्मात् दौडउठे, रथीरथ से भिडकर घोडे समेत रथी ध्वजा

great array 8 Then all the Kauravas, accompanied by your sons seeing Arjun with his banner or the ensign of monkey and Shree Krishn the prince of Yadavas as driver, were much perplexed. Your sons and their warriors saw that bravest of chariotcers, Arjun the destroyer of foes protected by four thousand elephants. None of the people of this world had seen or heard an array of armies like the one formed on the previous day by that best of men, Yudhishthir the just. Then from the midst of all that army, rang through all the battle-field thousands of trumpets and conchs with loud peals but the sounds made by the discharge of arrows and the conchs of warriors surpassed the noise made by trumpets and drums. All the air was filled with the blasts of conchs and soon the sky was overcast with dust. The warriors rushed to battle as soon as the light was strong.—Chariotcers met chariotcers in combat and fell down together

साश्व स रथ सकेतुः ॥१५॥ गजो गजेनाभिहतः पपात पदाति माचाभिहत पदातिः ।
आवर्त्ते मानान्यभिवर्तमानैर्घोरी कृतान्यद्भुतदर्शनानि ॥ १६ । प्रासैश्च खड्गैश्च समा
हतानि सदश्वपृष्ठानि सदश्ववृन्दैः । सुवर्ण तारागण भूषितानि सूर्यप्रभाभासिशरा
वराणि ॥ १७ ॥ विदार्यमाणानि परश्वधैश्च प्रासैश्च खड्गैश्च निपेतुरुर्व्याम् । गजैर्विषाणै
र्वरहस्तरुग्णा केचित्ससूतारथिन प्रपेतु ॥ १८ ॥ गजर्षभाश्चापि रथर्षभेणनि
पातिता बाणहता पृथिव्याम् । गजौघवेगोद्धतसादितानां श्रुत्वा विषेदुः सहसा मनुष्या.
॥ १९ ॥ आर्त्तस्वनं सादिपदातियूनां विषाणगात्रावरताडितानाम् । संभ्रांतनागाश्व
रथे मुहूर्ते महाक्षये सादिपदातियूनाम् ॥ २० ॥ महारथैः सपरिवार्यमाणो ददर्श भी-
ष्म कपिराजकेतुम् । तं पंचतालोच्छ्रित तालकेतु सदश्ववेगाद्भुतवीर्ययानः ॥ २१ ॥

को भी लेकर गिरा और हाथी से माराहुआ हाथी गिरा इसीप्रकार पदातीसे मारा हुआ पदाती गिरा । १५ । और घोड़े के सवार परस्परमें परशे और खड्गों से लड़कर पृथ्वी पर मारे गये, और सुनहरी तारागणों के समूहों से शोभायमान सूर्य की समान प्रकाशित ढालैं परश्वध मारे और खड्गोंसे खण्ड २ होकर पृथ्वी पर गिरीं, और कितनेही रथी हाथियों के दांतों से चबाये हुए पृथ्वीपर गिरे और रथी के बाण से रथी पदाती के बाण से पदाती पृथ्वीपर गिरे, हाथियों के समूहों के वेग से कम्पायमान व सवारों और हाथियों के दांत व अंग व जंघाओं से घायल सवार और पदातियों के आक्रंदित शब्दों को सुनकर मनुष्य अनेक प्रकार से व्याकुल हुए जिस में हाथी घोड़े और रथों की व्याकुलता और सवार पदाती वीरोंकी विध्वंसताथी ऐसे मुहूर्त्त में महारथियोंसे घिरे हुए भीष्मजीने हनुमानजीकी ध्वजा धारण करने वाले अर्जुन को देखा । २० । पांचताल की उन्नत ध्वजा धारण करने वाले भीष्मजी उन उत्तमघोड़ोंकी तीव्रतासे बड़े भारी अस्त्रकोलिये

---

with their horses, the chariots and the banners Elephants were killed by elephants and foot soldiers by foot soldiers 15. The horsemen fighting against horsemen, were cut down by axes and swords. The shields, decked with gold stars and shining like the sun, were cut down into pieces by the blows of swords and clubs. Many a charioteers mangled by the tusks of elephants, fell down on earth Chariots fell down by the arrows of charioteers and foot soldiers by the arrows of foot soldiers. Shaking with the velocity of elephants, the horsemen were wounded by horsemen and by the tusks of elephants, in their limbs and thighs, were perplexed with the cries of horsemen and foot-soldiers. Elephants, horses, chariots, horsemen and foot soldiers were destroyed in large numbers. At that time, Bhishm surrounded by warriors, saw Arjun with his banner of the figure of Hanuman. 20. Bhishm the bearer of the high standard over which blazoned the five palm

महाबल बाणाशनिर्दीप्तिमंतं किरीटिनं शांतनवोऽभ्यधावत् । तथैवशक्रप्रतिमप्रभाव मिंद्रात्मजं द्रोणमुखाविसस्रुः ॥ २२ ॥ कृपश्चशल्यश्च विविंशतिश्च दुर्योधनः सौमदत्तिश्च राजन् । ततो रथानां प्रमुखादुपेत्य सर्वास्त्रविद्कांचन चित्रवर्मा ॥ २३ ॥ जवेन शूरोभि स सारसर्वांस्तानर्जुन स्यात्मसुतोभिमन्युः । तेषां महास्त्राणि महा(प्य)नानस ह्यकर्माविनिहत्य कार्ष्णिः ॥ २४ ॥ बभौ महामंत्रहुतार्चि माली सदोगतः सन्भग-वानिवाग्नि. । तत सतूर्ण रुधिरो दफेनां कृत्वानदीमाशुरणेरिपूणाम् ॥ २५ ॥ जगामसो मद्रमतीत्यभीष्मो महारथंपार्थ मदीनसत्वः । ततः प्रहस्याद्भुत विक्रमेणगांडीव मुक्तेन शिलाशितेन ॥ २६ ॥ विपाठजालेन महास्त्रजालं विनाशयामास किरीट माली । तमुत्तमं सर्व धनुर्धराणा मसक्तकर्माकपिराजकेतुः ॥ २७ ॥ भीष्मंमहात्मा

बिजली से चमकपर अर्जुन के सम्मुख दौड़े और इसीप्रकार कृपाचार्य्य शल्य विविंशति दुर्योधन सोमदत्त यह सबभी द्रोणाचार्य्यजी को आगे करके इन्द्रके समान महाबली इन्द्र पुत्र अर्जुन के सम्मुख गये, इसके पीछे सर्व अस्त्रोंका ज्ञाता सुवर्ण का जड़ाऊ कवच पहरने वाला महाशूर अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु रथके सेनामुखसे निकल कर बड़े वेगसे उन सबके सम्मुख चला, फिर वह असहिष्णु शील कर्मी अभिमन्यु उनमहाबलवानों के बड़े अस्त्रोंको काटकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि महामन्त्रआहुति से संयुक्त महाज्वालामान सभा में वर्त्तमान अग्नि देवता होता है तदनन्तर वह महापराक्रमी भीष्मजीमहीं युद्धमें शत्रुओं के रुधिर रूपी जलसे उसनदी को पूर्णकरके महारथी अर्जुन और अभिमन्यु कोभी उल्लंघन कर गया ॥ २५ ॥ फिरमुकुट मालाधारी अर्जुनने बड़े हठकोकरके गांडीवधनुषकेशब्दसे महा शब्दायमान विपाठनाम बाणोंके जालसे उन प्रबल शत्रुओं के जालोंका नाशकिया, फिर कर्म फलके चाहनेवाले हनुमानजी की ध्वजारखने वाले महात्मा अर्जुनने बड़े तीक्ष्णधारवाले स्वच्छ भल्लोंसे उस सर्व धनुर्धारियों में श्रेष्ठभीष्म जीके ऊपर वर्षा

trees, rode on his swift horses, with weapons upraised, to meet Arjun with the speed of lightning. In the same manner Kripacharya, *Shalya Vivinshati, Duryodhan and Somdatta led by Dronacharya,* faced Arjun the son of Indra. Then the adept in the use of all sorts of weapons, clad in gold bedecked armour, Arjun's son Abhimanyu the bravest of warriors, came out of the lists and encountered all those warriors, And cutting their weapons with his own, he stood in glory like Agni fed with libations in the midst of a court. Then Bhishm of great prowess, making a river to flow with the blood of the enemy surpassed Arjun and Abhimanyu in bravery. 25. Then Arjun the wearer of diadem and garland with his hissing arrows shot from the Gandiv bow, dispersed the net work of his adversary's arrows. Wishing to gain success, the bearer of the standard with the monkey's brand, showered his sharp and bright

निवर्वर्मतूर्गे शरौघजालैर्विमलैश्चमत्तै । तथैव भीष्माद्दतगतंश्चित्ते महास्त्रजालकपि राजकेतो. ॥ २८ ॥ विशीर्यमाण ददृशुस्त्वदीया दिवाकरेणेव तमोभिभूतम्। एव विध कार्मुक भीमनाद मदीनवत्सत्पवीच्चमाभ्याम् । ददर्शलोक. कुरुसृञ्जयाद्य तद्द्वैरथ भीष्म धनजयाभ्याम् ॥ २९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मार्जुनद्वैरथे षष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

सञ्जय उवाच । द्रौणिर्भूरिश्रवा शल्यश्चित्रसेनश्च मारिष । पुत्र. सांयमनेश्चैव सौभद्रपर्यवारयन् ॥ १ ॥ संसक्तमति तेजाभिस्तमेक ददृशुर्जना । पञ्चभिर्मनुज व्याघ्रैर्गजै. सिंह शिशुंयथा ॥ २ ॥ नाभिलक्ष्य तथा कश्चिच्छौर्येन पराक्रमे। बभूव सदृश कार्ष्णेर्नास्त्रे नापिचलाघवे ॥ ३ ॥ तथा तमात्मज युद्धे विक्रम तमरिंदमम्।

की इसी प्रकार आपके पुत्रों ने भी अन्तरिक्ष मे अर्जुनके बड़ अस्त्र जालों का भीष्मजीके हाथमे ऐसे टूटे और व्यर्थहुए देखा जैसे कि सूर्य से तिरस्कार किया हुआ अंधकार होताहै, इस रीतिसे प्रसन्नचित्त कौरव सृंजय आदि सबलोगोंने उन सत्पुरुषों मे श्रेष्ठ भीष्म और अर्जुन दोनोंके इस प्रकार द्वैरथयुद्धका जो कि भयकारी धनुषों के शब्दोंसेसंयुक्तथा देखा ॥ २९ ॥

अध्याय ॥ ६१ ॥

संजय बोले हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र उन अश्वत्थामा व भूरिश्रवा शल्य चित्रसेन और सांयमन के पुत्र इन सबने अभिमन्यु से युद्ध किया, मनुष्यों ने उस अकेले अभिमन्यु को इन पांचों व्याघ्ररूपों से लड़ता हुआ ऐसा देखा जैसे हाथियों से लड़ता हुआ एकसिंह का बच्चा होता है, बड़ी लक्ष भेदन पूर्वक शूरता और अस्त्रो के कारण पराक्रम और हस्तलाघवता में अभिमन्यु के समान कोई भी नहीं हुआ, इसके पीछे युद्धमें सावधान अर्जुन ने अभिमन्युको परा

arrows over Bhishm the best of archers In the same manner your sons saw the network of Arjun's weapons, broken and dispersed by Bhishm like darkness at sunrise Thus the cheerful Srinjayas and other Kuravas saw those best of men, Bhishm and Arjun, fighting with one another and making dreadful noise with their bows" 29

CHAPTER LXI

Sanjaya continued " Ashwathama Bhurishrava, Shalya, Chitrasen and the son of Samyaman attacked Abhimanyu People saw brave Abhimanyu fighting alone against those five warriors like a lion fighting against elephants Hitting the marks with great precision, Abhimanyu surpassed them in deeds of prowess and dexterity of hand The skilful warrior, Arjun seeing the deeds of prowess done against the enemies by Abhimanyu roared like a lion

20178

दृष्ट्वा पार्थः सुसंयत्तं सिंहनादमथानदत् ॥ ४ ॥ पीडयानन्तु तत्सैन्यं पौत्रं तव विशां पते । दृष्ट्वा त्वदीया राजेन्द्र समन्तात्पर्यवारयन् ॥ ५ ॥ ध्वजिनीं धार्तराष्ट्राणां दीन शत्रुर्व्यलिखत । प्रययौ स सौभद्रस्तेजसा च बलेन च ॥ ६ ॥ तस्य लाघवमार्गस्थ मादित्य सदृशप्रभम् । व्यदृश्यत महच्चापं समरे युध्यतः परैः ॥ ७ ॥ स द्रौणि मिषुणैकेन विध्वा शल्यं च पञ्चभिः । ध्वजं सायमनेश्चैव सोऽष्टाभिरपि चिच्छिदे तत ॥ ८ ॥ रुक्मदण्डां महाशक्तिं प्रेषितां सौमदत्तिना । शितेनोरगसंकाशां पत्रिणापजहार ताम् ॥ ९ ॥ शल्यस्य च महावेगा नस्यतः समरे शरान् । निवार्यार्जुनदायादो जघ्ने चतुरो हयान् ॥ १० ॥ भूरिश्रवाश्च शल्यश्च द्रौणिः सायमनिः शलः । नाभ्यवर्तन्त संरब्धा कार्ष्णेर्बाहुबलोदयम् ॥ ११ ॥ ततस्त्रिगर्ता राजेन्द्र मद्राश्च सहकेकयैः । पञ्चविंशति साहस्रास्तव पुत्रेण चोदिताः ॥ १२ ॥ धनुर्वेद विदामुख्या अजेयाः शत्रुभिर्युधि ।

क्रम करने वाले शत्रुओंका ऐसामर्दन करनेवाला देखकर बड़े वेगसे सिंहनाद किया, हे राजेन्द्र आपके पुत्रोंने इसरीति से सेनाको पीड़ामान करता आपके पोते अभिमन्युको देखकर चारों ओरसे आकर रोकलिया । ५ । फिर शत्रुसंतापी अर्जुन बहुत हर्षित मन के समान अभिमन्यु सपेत वज्रपराक्रम युक्त आपके पुत्रोंकी सेना के सम्मुख गया, युद्धमें शत्रुओं से संग्राम करनेवाले उस अर्जुन का बड़ा धनुषहस्त लाघवता के मार्ग में नियतहोकर सूर्य के समान प्रकाशमान दिखाईदिया, उस ने एकबाण से अश्वत्थामाको और पांचबाणों से शल्यको घायल करके आठबाणों से सांयमन के पुत्रकी ध्वजाको गिराया, और सोमदत्तकी फेंकी हुई सुनहरी दंड वाली सर्पाकृति शक्तिको तीव्रबाणों से काटा, फिर अर्जुन के पुत्रनेबाण के फेंकनेवाले शल्यके महाघोर सैकड़ों बाणों को रोककर उसके चारों घोड़ों को मारा । १० । फिरता अत्यन्त क्रोधमें भरेहुए भूरिश्रवा शल्य अश्वत्थामा सांयमनका पुत्र और शल उस अभि मन्युके महाभुजबलपराक्रमके आगेठहर न सके, इस के पीछे हेराजा आपके पुत्रकेकहनेसे

Seeing your grandson Abhimanyu thus destroying your armies, your sons checked him on all sides. Then Arjun the destroyer of enemies, with a cheerful heart, accompanied Abhimanyu to try his strength on your armies. Arjun's bow looked like the sun on account of the dexterity of his hand in shooting arrows. He wounded Ashwathama with one arrow and Shalya with five, and cut down the banner of Samaymana's son with eight. He cut down the serpent like spear of Somdatta with his arrows. Arjun's son checked the shower of Shalya's thousands of arrows and killed all the four horses of his chariot. Then Baurishrava, Shalya, Ashwathama, Samyaman's son and Shal could not stand against that great warrior Abhimanyu. Then at the request of your son, the skilful archers, unconquerable in battle with, twenty five thousand Trigartas,

सहपुत्रं जिघांसन्तं परिवव्रुः किरीटिनम् ॥ १३ ॥ तौ तु तत्र पितापुत्रौ परिक्षिप्तौ महा
रथौ । ददर्श राजन् पांचाल्यः सेनापतिररिंदम ॥ १४ ॥ सवारणरथौघानां सहस्रैर्ब
हुभिर्वृतः । वाजिभिः पत्तिभिश्चैव वृतः शतसहस्रशः ॥ १५ ॥ धनुर्विस्फार्य संक्रुद्धो नो
दयित्वा च वाहिनीम् । ययौ तन्मद्रकानीकं केकयांश्च परंतप ॥ १६ ॥ तेन कीर्तिम
ता गुप्तमनीकं दृढधन्वना । संरब्धरथनागाश्वं योत्स्यमानमशोभत ॥ १७ ॥ सोऽर्जुन
प्रमुखे यांतं पांचालकुलवर्धनः । त्रिभिः शारद्वतं बाणैर्जत्रुदेशे समार्पयत् ॥ १८ ॥
ततः समद्रकान् हत्वा दशभिर्दशभिः शरैः । पृष्ठरक्षं जघानाशु भल्लेन कृतवर्मणः ॥ १९ ॥ दमनं
चापि दायादं पौरवस्य महात्मनः । जघान विमलाग्रेण नाराचेन परंतप ॥ २० ॥
ततः सांयमनेः पुत्रः पांचाल्यं युद्धदुर्मदम् । अविध्यत् त्रिंशता बाणैर्दशभिश्चास्य

धनुर्वेदके ज्ञाता युद्धमें अजेय पच्चीसहजार त्रिगर्त्तदेशी और मद्रदेशियोंने केकयदेशियों समेत उस पुत्र समेत अर्जुन के मारनेकी इच्छा से चारोंओरसे उनको घेरलिया ।१५। हे राजा वहां सत्रुजयी सेनापति धृष्टद्युम्न ने उनपिता पुत्रोंकोरथों से चारों ओरको घिराहुआ देखा तदनन्तर वह शत्रुसंतापी सेनापति महा क्रोधित होकर हजारों घोड़े रथ हाथियोंके पतियों से युक्त अपने धनुषको चढ़ाकर सेनाको आज्ञा देकर और मद्र केकय देशियों के सम्मुख गया, उस कीर्तिमान् दृढ़धनुषधारी से रक्षित रथहाथी घोड़े से युक्त युद्ध करनेवाली सेना शोभायमान हुई पांचालकुलावतंस उस धृष्टद्युम्न ने तीन बाण से अर्जुन के सम्मुख जानेवाले कृपाचार्य्य को घायल किया, फिर दश तीक्ष्ण बाणोंसे मद्रकोंको घायल करके शीघ्रही एक भल्लसे कृपाचार्य्य के सारथी को मारा, फिर उस शत्रु संतापी ने बड़े तीक्ष्ण नाराचोंसे पौरवके पुत्र दमन को मारा । २० । इसके पीछे चित्रसेनने दुर्मद धृष्टद्युम्न को दश बाणों से और उसके सारथीको भी दश बाणों से घायल किया फिर उस महा

Madras, and Kaikayas, surrounded Arjun and his son on all sides in order to kill them Dhrishtadyumn, the commander of armies and destroyer of enemies, saw Arjun and his son surrounded by the enemies, and with thousands of horses, chariots and elephants he advanced againt the armies of Madra and Kaikaya, shooting his arrows against them. Protected by that glorious archer, the chariots, elephants and horses of the army looked glorious Dhrishtadyumna the descendant of the Panchals wounded with three arrows Kripacharya who was advancing to attack Arjun, and having shot ten arrows at Shalya, killed the chariot driver of Kripacharya with one arrow. Then with sharp arrows, that destroyer of enemies killed *Daman* the son of Paurav. 20. Chitrasen wounded brave *Dhrishtadyumna* with ten arrows and his chariot driver with ten more. Wounded with those

सारथिम् ॥ २१ ॥ सोति विद्धो महेष्वासः सृक्किणी परिसंलिहन् । भल्लेनभृशतीक्ष्णेन निचकर्तास्यकार्मुकम् ॥ २२ ॥ अथैनं पञ्चविंशत्या क्षिप्रमेव समार्पयत् । अश्वांश्चास्या वधीद्राजन् उभौतौपार्ष्णिसारथी ॥ २३ ॥ सहताश्वे रथे तिष्ठन् ददर्श भरतर्षभ । पुत्र. सोमकेः पुत्र पाञ्चाल्यस्यमहात्मनः ॥ २४ ॥ सप्रगृह्य महाघोरं निस्त्रिंशवरमायसम् । पदातिस्तूर्ण मागच्छं द्रुपदं पुरुषर्षभः ॥ २५ ॥ तं समोघ मिवायांत पातयन्त मिवोरग म् । भ्रांतावरण निस्त्रिंशं कालोत्सृष्ट मिवांतकम् ॥ २६ ॥ दीप्यमान मिवा दित्यं मत्तवा रण विक्रमम् । अपश्यन्पांडवास्तत्र धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ॥ २७ ॥ तस्य पांचाल दायादः प्रतीप मभि धावतः । शित निस्त्रिंश हस्तस्य शरावरणधारिणः ॥ २८ ॥ बाण वेग मती तस्य तथा भ्यास मुपेयुषः । त्वरन्सेनापतिः क्रुद्धो बिभेद गदया शिरः ॥ २९ ॥ तस्य राजन् स निस्त्रिंशं सुप्रभञ्च शरावरम् । हतस्यपततोहस्ताद्वेगेन न्यपतद्भुवि ॥ ३० ॥ तं निहत्य गदाग्रेण सलेभेपरमांयशम् । पुत्रः पांचाल राजस्य महात्मा भीम विक्रमः

धायल धृष्टद्युम्न ने होठोंको चबाकर बड़े तीक्ष्ण भल्लसे इसके धनुषको काटा, हे राजा इसी प्रकार इसको भी पच्चीस बाणों से पीड़ामान करके उसके घोड़ों को दोनों सारथियों समेत मारडाला, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ फिर उस मृतक घोड़ेवाले रथमें बैठेहुए चित्रसेन ने उस द्रुपद के यशस्वी पुत्रको देखा, और देखतेही रथसे उतर पैदल होकर शीघ्रही महाघोर खड्गको धारण करके रथपर बैठे हुए धृष्टद्युम्न की ओरको चला । २५ । उस महा भयानक खड्गधारी को आता हुआ देखकर पाण्डव और धृष्टद्युम्न ने उसको सूर्यके समान प्रकाशित और मतवाले हाथीके समान महाबली रूप देखा, फिर शीघ्रता करने वाले सेनापति धृष्टद्युम्न ने उस महा कालरूप सम्मुख आनेवाले घोर खड्गधारी के शिरको गदा से तोड़ा, हे राजा वह अपने खड्ग और ढाल समेत मरकर पृथ्वी पर गिरा । ३० । राजा धृष्टद्युम्न ने उसको गदा की नोकसे मारकर बड़े यश को पाया, हे श्रेष्ठ

arrows, Dhrishtadyumna bit his lips, and with a sharp arrow cut his bow from the middle. He then wounded Chitrasen with twenty five arrows and killed his horses with the drivers. Then, O best of the descendants of Bharat, Chitrasen seated in the chariot with dead horses, saw the glorious son of Drupad and leaping down from his chariot, sword in hand advanced towards him. 25. Seeing the dreadful sword bearer coming towards him like the sun in glory and like a mad elephant in the pride of power, the skilful commander of armies Dhrishtadyumna broke with his mace the head of that advancing warrior of dreadful sword, and caused him to fall down with his shield and sword. 30. King Dhrishtadyumna gained great fame by killing that warrior with the point of his mace At the death

॥ ३१ ॥ तस्मिन् हते महेष्वासे राजपुत्रे महारथे । हाहाकारो महानासीत्तवसैन्यस्य मारिष ॥ ३२ ॥ ततः सांयमनिः क्रुद्धो दृष्ट्वा निहतमात्मजम् । अभिदुद्राव वेगेन पांचालयं युद्धदुर्मदम् ॥ ३३ ॥ तौ तत्र समरे शूरौ समेतौ युद्धदुर्मदौ । ददृशुः सर्व राजानः करव पांडवास्तथा ॥ ३४ ॥ ततः सांयमनिः क्रुद्धो पार्षतं परवीरहा । आजघान त्रिभिर्बाणैस्तोत्रैरिव महाद्विपम् ॥ ३५ ॥ तथैव पार्षतं शूरं शल्यः समितिशोभनः । आजघानोरसि क्रुद्धस्ततो युद्धमवर्तत ॥ ३६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि चतुर्थयुद्धदिवसे सांयमनिपुत्रवधे एकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

धृतराष्ट्र उवाच दैवमेव परं मन्ये पौरुषादपि संजय । यत्सैन्यं मम पुत्रस्य पाण्डुसैन्येन बाध्यते ॥ १ ॥ नित्यं हि मामकांस्तात हतानेव हि शंससि । अव्यग्रांश्च प्रहृष्टांश्च नि-

धृतराष्ट्र उस बड़े धनुषधारी महारथी राजकुमार के मरने पर आपकी सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, इसके अनन्तर क्रोध में भरा हुआ सांयमनी अपने पुत्रको मृतक देखकर बड़े वेगसे धृष्टद्युम्न के सन्मुख दौड़ा तब सब राजा व कौरव और पाण्डवोंने युद्धमें जुटेहुए उत्तम रथों समेत दोनों शूरवीरों को देखा, इसके पीछे शत्रु विजयी सांयमनी ने महा क्रोधित होकर तीन बाणों से धृष्टद्युम्न को ऐसा घायल किया जैसे कि अंकुश आदि से बड़े हाथीको करते हैं इसी प्रकार युद्धभूमिको शोभित करने वाले क्रोधरूप शल्य ने उस शूरवीर धृष्टद्युम्नको छातीमें घायल किया इस पीछे युद्ध होना जारी हुआ ३६ ॥

अध्याय ६२ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं प्रारब्ध को उपायसे भी बड़ा मानताहूं जो मेरे पुत्रकी सेना पाण्डवों की सेनासे मारी जाती है हे सूत तू सदैव हमारे शूरवीरों को मृतक कहता है और पाण्डवोंको सदैव अत्यन्त प्रसन्न और अक्षत कहा करता है

of that great warrior prince there was a great cry of distress raised in your army. Samayamani, enraged at the death of his son, rushed against Dhrishtadyumna. Then all the warriors of the Kauravas and Pandavas saw those brave charioteers engaged in combat. Samayamani the destroyer of foes wounded Dhrishtadyumn with three arrows like a large elephant with goads. In the same manner, Shalya the pride of the field of battle, wounded Dhrishtadyumna in the breast and the battle continued."36

CHAPTER LXII.

"Seeing that my son's armies are destroyed by those of the Pandavas, I hold fate to be superior to expedients!" said Dhritrashtra to Sanjaya, "You always say that such and such warriors of my army

त्वशक्तिपाड मन्-॥-२ ॥ नैन नृपुरुष कारेण मामकानमम्ऽजय । पातितान्पा-
त्यम नांश्च हतानेवचशसति ॥ ३ ॥ युध्यमानान् यथाशक्ति घटमानान्जयमाति ।
पाण्डवा हि जयत्येव जीयते चैवमामका ॥ ४ ॥ सोहर्तानादि दु खानि दुर्योध कृता
निच । श्राप्यानि सततात दु सहानि बहूनिच ॥ ५ ॥ तमुपाय न पश्यामि जयं
स्युर्येनपाण्डवान् । मामक विजय युद्धे प्राप्नु युर्येनसजय ॥ ६ ॥ सञ्जय उवाच ।
क्षयमनुष्य देह नां गजवाजि रथक्षयम् । शृणुराजन् स्थिरोभूत्वा तवैवापनयामहान्
॥ ७ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु शल्येन पीडितोनवभि शरै । पीडयामासक्रुद्धो मद्राधिपति
मायसै ॥ ८ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम पार्षतस्य पराक्रमम् । न्यवारयतयस्तूर्ण शल्य
समिति शोभनम ॥ ९ ॥ नान्तर दृश्यते तत्र तयोश्चरविनोस्तदा । मुहूर्तमिवतद्युद्ध
तयो समभिवामवत् ॥ १० ॥ तत शल्यो महाराज धृष्टद्युम्नस्य सयुगे । धनुश्चिच्छे

हे संजय अब हमारे शूरवीरों को गिरते गिराते दोनों प्रकारसे पराक्रम से रहित कहता है इसी से पाण्डव लोग सामर्थ्य के अनुसार लड़ते विजय में उपाय करते हुए जयको पाते है और मेरे बेटेपर जय को पाते है, हे तात सो मैंने दुर्योधन से उत्पन्न हुए दुःखके सहनेके योग्य अनेक दुःखों को बारम्बार सुना, हे संजय मैं उस उपाय को नहीं देखता हूं जिसके द्वारा पाण्डवों की हार होय और मेरेपुत्रों की विजय होय । ६ । संजय बोले कि हे राजा तुम सावधानी से सुनो कि यह मनुष्यों का और रथ घोडे हाथी आदि का नाश होना तुम्हारेही अन्यायका फल है, शल्य के नौ बाणों से पीड़ित अत्यन्त क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने लोहेके तीरसे मद्र देश के राजाको पीड मान किया, वहां हम ने धृष्टद्युम्न के अपूर्व पराक्रम को देखा जो युद्ध में शोभा पानेवाले शल्य को शीघ्रही हटादिया, किसीने इसयुद्ध में इनदोनों क्रोध युक्तों के अन्तर को नहीं देखा दोनों का युद्ध एक मुहूर्त्त तक अच्छा हुआ । १० । इसके पीछे हे महाराज शल्यने युद्धभूमिमें पीले तीव्रधार वाले

are dead, while you represent the Pandav warriors to be indestructible and cheerful You say that killing or falling, our warriors are destitute of prowess and consequently the Pandavas are again and again victorious, while our side is the loser I am tired of hearing the troubles of Duryodhan I see no expedient Sanjaya how to cause the defeat of the Pandavas and the victory of my sons' 6 'Hear O king patiently," said Sanjaya in reply "The destruction of men, chariots horses elephants and others is the result of your own injustice,' Wounded by the nine arrows of Shalya Dhrishtadyumna, much enraged, wounded the king of Madra with iron arrows. There we witnessed the great prowess of Dhrishtadyumna who soon made Shalya turn back Both the warriors fought for a time without any distinction 10 Then Shalya with one sharp arrow cut asunder

द्भल्लेन पीतेन निशितेनच ॥ ११ ॥ अथैनं शरवर्षेण च्छादयामास संयुगे । गिरिंजला गमेयद्वज्जलदाजल वृष्टिभि ॥ १२ ॥ अभिमन्युस्ततः क्रुद्धो धृष्टद्युम्नेचपीडिते । पीडिते । अभिदुद्राव वेगेन मद्रराजरथं प्रति १३ । ततो मद्राधिपरथे कार्ष्णि प्राप्याति कोपन । आर्त्तायनिममेयात्मा विव्याधनिशितै शरैः ॥ १४ ॥ ततस्तु तावका राजन् परीप्सतोऽर्जुनिंरणे । मद्रराजरथंतूर्णं परिवार्यावतस्थिरे ॥ १५ ॥ दुर्योधनो विकर्णश्च दु शासनाविविंशती । दुर्मर्षणो दुःसहश्च चित्रसेनोथदुर्मुख ॥ १६ ॥ सत्यव्रतश्च भद्रंते पुरुमित्रश्चभारत । एतेमद्राधिपरथं पालयतः स्थिता रणे ॥ १७ ॥ तान्भीमसेन सक्रुद्धो धृष्टद्युम्नश्च पार्षत । द्रौपदेया भिमन्युश्च माद्रीपुत्रौ च पांडवौ ॥ १८ ॥ धार्तराष्ट्रान् दशारथान् दशैव प्रत्यवारयन् । नाना रूपाणि शस्त्राणि विसृजन्तो विशांपते ॥ १९ ॥ अभ्यवर्तन्त सहृष्टा परस्परवधै

भल्ल से धृष्टद्युम्न के धनुषको काटकर इनको बाणों की वर्षा से ऐसे ढक दिया जैसे कि वर्षाऋतु में जल भरेहुए बादल पर्वत को ढकदेते है। फिर धृष्टद्युम्न के पीड़ामान होने पर अत्यन्त क्रोधरूप अभिमन्यु बड़े वेगसे राजामद्र के रथकी ओर दौड़ा, तदनन्तर महासाहसी क्रोधमें भरेहुए अभिमन्युने राजा मद्रके रथको पाकर आर्त्तायनि को तीन पैने तीरों से घायल किया हे राजा फिर तो अभिमन्यु दबानेकी इच्छासे आपके पुत्र शीघ्रही राजामद्रके रथके चारों ओर आकर नियत हुए । १९ । दुर्योधन विकर्ण दुश्शासन विविंशति दुर्मर्षण दुस्सह चित्रसेन सुदुर्मुख सत्यव्रत पुरोमित्र महारथी विकर्ण यह सब राजामद्र के रथकी रक्षा करते हुए युद्धमें नियत हुए, इनको देखकर हेराजा महाक्रोधित भीमसेन धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पांचोंपुत्र अभिमन्यु और माद्रीके पुत्र नकुल औरसहदेव इननाना प्रकारके शस्त्रोंके प्रहार करनेवाले दशों शूरवीर धृतराष्ट्रके महारथी दशोंपुत्रोंको रोककर परस्परमें मारनेके इच्छावान् अत्यन्त क्रोधरूप सम्मुख वर्त्तमानहुए हेराजा निश्चय

the bow of Dhrishtadyumn and covered him with the shower of his arrows like a hill with the clouds of rains. When Dhrishtadyumn was thus wounded, Abhimanyu in great rage rushed against the chariot of Shalya The brave warrior Abhimanyu, full of prowess, wounded Artayani with the sharp arrows. Your sons soon came round the chariot of the king of Madra to punish Abhimanyu Duryodhan, Vikarn, Dushasan, Vivinshati, Durmarshan, Dussah, Chitrasen, Sudurmukh, Satyabrat Puromitra and the great warrior Vikarn protected the chariot of the king of Madra. Seeeing them thus stationed, Bhimsen, Dhrishtadyumna the five sons of Draupadi, Abhimanyu and the sons of Madri—Nakul and Sahadev discharging various sorts of weapons, checkad the ten warriors of the Kauravas and the two sides fought for life and death. All this was the result

विणः । तेवैसमेयुः संग्रामेराजन् दुर्मैत्रितेतव ॥ २० ॥ तस्मिन्दशरथे युद्धेवर्तमाने महाभये । तावकानां परेषांच प्रेक्षकाश्थिनो भवन् ॥ २१ ॥ शस्त्राण्यनेकरूपाणि विसृजन्तो महारथाः । अन्योन्यमभिनर्दंतः संप्रहार प्रचक्रिरे ॥ २२ ॥ ते तदाजात संरंभाः सर्वेऽन्योन्यं जिघांसवः । अन्योन्यमभिमर्दंत स्पर्धमानाः परस्परम् ॥ २३ ॥ अन्योन्यस्पर्धया राजन् ज्ञातयः सगतामिथ. । मह स्त्राणि विमुंचतः समापेतुरमर्षिणः ॥ २४ ॥ दुर्योधनस्तु संक्रुद्धो धृष्टद्युम्नं महारणे । विव्याध निशितैर्बाणैश्चतुर्भिः समरेद्रुतम् ॥ २५ ॥ दुर्मर्षणश्च विंशत्या चित्रसेनश्च पंचभिः । दुर्मुखोनवमिर्बाणै र्दुःसहश्चापि सप्तभिः ॥ २६ ॥ विविंशतिः पञ्चभिश्चत्रिभिर्दुःशासनस्तथा । तान्प्रत्य विध्यद्राजेंद्र पार्षत. शत्रुतापनः ॥ २७ ॥ एकैकंपञ्चविंशत्यादर्शयन् पाणिलाघवम् । सत्यव्रतं च समरे पुरु मित्रंचभारत ॥ २८ ॥ अभिमन्युरविध्यत्तुदशभिर्दशभि. शरैः ।

करके आपकी बुरीसलाह करनेपर वह लोग युद्ध करने में अत्यन्त प्रवृत्त हुए ।२०। उन दशोंरथियों के और बड़े भयके वर्त्तमान होनेपर आपके पुत्र और पाण्डवों के रथीयुद्ध क्रीड़ा देखनेवालेहुए वह सब नाना प्रकारके शस्त्रोंको चलातेहुए परस्परमें एक-एकके सम्मुख गर्जतेहुए महारथी लोगोंने अच्छेप्रकारसे युद्ध किया तबतो वह सब अत्यन्त क्रोधमें भरे हुए परस्पर मारनेके इच्छावान् सम्मुखहोकर गर्जना करते हुए एकएकसे ईर्षाकरनेलगे हेराजा ज्ञातिके लोग अपने ज्ञातिवालोंसे परस्परकी ईर्षा के द्वारा युद्ध करतेहुए क्रोध से पूर्ण बड़े अस्त्रोंको त्यागतेहुए सम्मुख दौड़े, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधनने चार तीक्ष्ण बाणों से धृष्टद्युम्नको घायलकिया ।२५। दुर्मर्षणने बीसबाणसे चित्रसेनने पांच बाणसे दुर्मुखने नौबाणसे दुस्सहने सात बाणोंसे विविंशतिने पांचबाणोंसे दुश्शासनने तीन बाणोंसे घायल किया हेराजा उनशत्रुतासंतापी हस्तलाघव दिखानेवाले धृष्टद्युम्नने उन प्रत्येकोंको पच्चीस २ बाणोंसे घायल किया हेभरतवंशी फिर अभिमन्युने सत्यव्रत और पुरोमित्रको दश २ बाणों से घायल किया फिर माताको प्रसन्न करनेवाले माद्रीनंदन नकुल

of your evil policy. 20. When the ten warriors were thus fighting bravely, your sons and the Paudav warriors looked on the scene of battle. Discharging various sorts of weapons and roaring at one another, the great warriors fought bravely. They tried to kill one another and roared fearfully The kinsmen, envious of one another fought in great anger and leaving their missiles aside, rushed upon one another. Duryodhan in great rage wounded Dhrishtadyumn with four arrows. 25. Durmarshan shot twenty arrows, Chitrasen five, Durmukh nine, Dussah seven, Vivinshati five and Dushasan three. Dhrishtadymna the destroyer of enemies wounded each of them with twentyfive arrows shot dexterously. Abhimanyu wounded Satyabrat and Purumitra with ten arrows each. Then Nakul and Sahadev,

माद्रीपुत्रौतु समरे मातुलंमातुनंदनौ ॥२९॥ अविध्येतांशरैस्तीक्ष्णैस्तदद्भुतमिवाभवत्। ततः शल्यो महाराज स्वस्रीयौ रथिनांवरौ ॥ ३० ॥ शरैर्बहुभिरासंख्यैश्छादयामास कृतप्रतिकृतैषिणौ। छाद्यमानौ ततस्तौतु माद्रीपुत्रौ नचेलतुः ॥ ३१ ॥ अथ दुर्योधनं दृष्ट्वा भीमसेनो महाबलः। चिकीर्षुः कलहस्यान्तं गदां जग्राह पांडवः ॥ ३२ ॥ तमुद्यतगदं दृष्ट्वा कैलासमिवशृंगिणम्। भीमसेनं महाबाहुं पुत्रास्त प्राद्रवन्भयात् ॥ ३३ ॥ दुर्योधनस्तुसंक्रुद्धो मागधं समचोदयत्। अनीकं दशसाहस्रं कुंजराणांतरस्विनाम् ॥ ३४ ॥ गजानीकेन सहितस्तेन राजासमागधः। मागधं पुरतः कृत्वा भीमसेनं समभ्ययात् ॥ ३५ ॥ आपतंतञ्च तं दृष्ट्वा गजानीकं वृकोदरः। गदापाणिः रथात्तस्मात् सिंहइवोन्नदन् ॥ ३६ ॥ अद्रिसारमयीं गुर्वीं प्रगृह्यमहतीं गदाम्। अभ्यधावद्गजानीकं व्यादितास्यइवांतकः ॥३७॥ स गजान्गदया निघ्नन् व्यचरत्समरेबली। भीमसेनो महाबाहुः सवज्र इव

और सहदेवने युद्धमें अपने मामा शल्यको तीव्र वाणोंसे ढक दिया यह आश्चर्य सा हुआ इसके पीछे हेराजा शल्यनेभी उन रथियोंमें श्रेष्ठ प्रहारकोंपर प्रहार कर्म करनेके इच्छावान् दोनोंभानजों को बहुत से बाणोंसे ढकदिया इसके पीछेबाणों से आच्छादित होकरभी वह दोनों नकुल सहदेव व्याकुल नहींहुए ।-३१-। फिर महाबली भीमसेनने दुर्योधनको देखकर युद्धके अंतकरनेकी इच्छासे अपनी गदाको हाथमें लिया कैलाश पर्व्वत की समान उस गदाके उठानेवाले भीमसेन को देखकरआपके पुत्र भयभीत होकर भागे फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने राजा मगधको चेताया और वेगमान हाथियों की दश हजार सेनाको आज्ञाकी राजा दुर्योधन उस हाथियोंकी सेना समेत राजा मगधको आगेकरके भीमसेन के सम्मुख गया । ३५ । भीमसेन उसहाथियोंकी सेनाको चारोंओरसे गिराता हुआ देख कर सिंहके समान उच्चस्वरसे गर्जताहुआ हाथमें गदा लिये रथसे उतरा और उस महाभारी लोहेकी गदाको पकड़करउस सेनाको अपना भक्षपदार्थ समझकर हाथियोंकी सेनाके सम्मुख दौड़ा और वहां जाकर अपनी गदासे हाथियों को

the joy of their mother Madri, covered their maternal uncle Shalya with the shower of their arrows. The whole was a wonder. Shalya too covered his sister's sons with his arrow, but being overwhelmed with the shower of his arrows they did not lose heart. 31. The great warrior, Bhimsen, seeing Duryodhan and wishing to end the war, took up his mace. With that mace like the Kailash mountain, Bhimsen was the terror of your sons. Then Duryodhan in great anger ordered the king of Magadh with an army of ten thousands of elephants to advance against Bhimsen and himself followed that army. 35. Seeing that array of elephants coming from all sides Bhimsen roared like a lion, and dismounting from his chariot with mace in his hand he ran against them, thinking them to be his prey. Killing the elephants with his mace he roamed amidst that army like

वासवः ॥ ३८ । तस्य नादेन महता नरोहृदयकंपिना । व्यपद्यन्त संहत्य गजा
भीमस्य गर्जतः ॥ ३९ ॥ ततस्तु द्रौपदीपुत्राः सौभद्रश्च महारथः। नकुल सहदेव
श्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षत ॥ ४० ॥ पृष्ठं भीमस्य रक्षन्तः शरवर्षैः वारणान् । अभ्यधावंत
धावन्तो मेघाइव गिरीन्यथा ॥ ४१ ॥ क्षुरैः क्षुरप्रैर्भल्लैश्च पीतैरंजलिकैः शितैः ।
उत्तमांगानि पाण्डवा गजयोधिनाम् ॥ ४२ ॥ शिरोभिः प्रपतद्भिश्च बाहुभिश्च
विभूषितैः । अश्मवृष्टिरिवाभाति पाणिभिश्च सहांकुशैः ॥ ४३ ॥ हृतोत्तमांगाः स्क
न्धेषु गजानां गजयोधिनः । अदृश्यन्ताचलाग्रेषु द्रुमाभग्न शिखाइव ॥ ४४ ॥ धृष्ट
द्युम्नहतानन्यानपश्याम महागजान् । पततः पात्यमानाश्च पार्षतेन महात्मना ॥ ४५ ॥ माग
धोऽथ महीपालो गजमैरावणोपमम् । प्रेषयामास समरे सौभद्रस्य रथं प्रति ॥ ४६ ॥
तमापतंतं संप्रेक्ष्य मागधस्य महागजम् । जघानैकेषुणा वीरः सौभद्रः परवीरहा ॥ ४७ ॥

मारता हुआ ऐसा घुसा जैसे दानवोंके बीच वज्रधारी इन्द्र गर्जताहुआ दौड़ता है हृदयके कँपानेवाले भीमसेन के बड़े शब्दसे सब मिलेहुए हाथी अत्यन्त चलायमान हुए, फिर द्रौपदीके पांचोंपुत्र और महारथी अभिमन्यु, नकुल सहदेव धृष्टद्युम्न यह सब भीमसेन के पृष्ठभाग की रक्षा करतेहुये बाणोंकी वर्षाको करकर हाथियों के सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि पर्वतों पर बादल दौड़ते हैं । ४१ । तीव्र बिजली के समान भल्लों से पाण्डवोंने युद्धमें हाथीवानोंके और हाथीके सवारोंके शिरोंको काटा फिर तो हाथियों से गिरनेवाले मृतकों की शोभा पाषाण वृष्टीसी मालूम होती थी और हाथियों के कन्धों पर बिना शिरके सवार ऐसे दृष्टिपड़े जैसे कि चलने हुए पर्वतोंपर चोटी कटे हुए वृक्षहोते हैं इनके अतिरिक्त धृष्टद्युम्न के मारेहुए वा गिरायेहुये पड़ेहुए दूसरे बड़े हाथियों को देखा । ४५ । इसके पीछे मगधके राजा ने ऐरावतके समान हाथी युद्ध में अभिमन्यु के रथपर भेजा उसहाथी को आता हुआ देखके शत्रुओं के विजयी अभिमन्युने उसको बाणों से मारकर सुवर्ण के पुंख

Indra the wielder of Vajra in the midst of the Danavas The elephants were much terrified by the roar of Bhimsen. Then the five sons of Draupadi with Abhimanyu, Nakul, Sahdev and Dhrishtadyumna protected Bhim from behind and rushed upon the elephants showering their arrows on them like clouds showering rain over hills. 44. The Pandávas cut down the heads of the drivers and riders of elephants with sharp arrows bright as lightning and then they dropped like stones from their backs The headless riders on the backs of elephants looked like trees on mountains with their tops chopped off. We saw elephants also cut and killed by Dhrishtadyumna's arrows. 45. Then the king of Magadh sent his elephant, huge as Airavat, on the chariot of Abhimanyu, who as soon as he saw it coming towards him killed it with his arrows of golden feathers and beheaded the king

तस्यावर्जितनागस्य कार्ष्णि परपुरञ्जय । राज्ञोऽजातुशत्रुसेन महेनापाहरच्छिरः ॥४८॥
विगाह्य तद्गजानीकं भीमसेनोऽपि पाण्डव । व्यचरत्समरे मृद्नन् गजानिन्द्रो गिरीनिव
॥ ४९ ॥ एकप्रहार निहता भीमसेनेन दंतिन । अपश्याम रणे तस्मिन् गिरीन्वज्रहता
निव ॥ ५० ॥ भग्नदन्तान् भग्नकटान् भग्नसक्थांश्च वारणान् । भग्नपृष्ठत्रिकानन्यान्नि
हतान् पर्वतोपमान् ॥ ५१ ॥ नदत सीदतश्चान्यान् विमुखान् समरेगतान् । वि
त्रान् भयसंविग्नांस्तथा विशकृतोपरान् ॥ ५२ ॥ भीमसेनस्य मार्गेषु पतितान्पर्व
तोपमान् । अपश्यन्निहतान्नागान् राजञ्छीर्णानिवोपगान् ॥ ५३ ॥ वमन्तो रुधिरंचान्ये
भिन्नकुम्भामहागजा । विह्वलंतो गताभूमिं शैलाइवधरातले ॥ ५४ ॥ मेदो रुधिरदि
ग्धांगो वसामज्जा समुक्षित । व्यचरत्समरे भीमो दण्डपाणि रिवान्तक ॥ ५५ ॥ गजा
नां रुधिरक्लिन्नां गदां बिभ्रद्वृकोदर । घोर प्रतिभयश्चासीत्पिनाकीव पिनाकधृक् ।५६॥

वाले भल्लसे उस हाथी के न रोकने वाले राजा के शिरका भी काटा, फिर भीमसेन भी उसहाथियों की सेना को व्यथित करता हुआ ऐसा घूमा जैसे कि इन्द्र पर्व्वतों को मथन करता घूमता है, हमने उस युद्ध में भीमसेन के एकही प्रहार से मरे हुए हाथियोंको ऐसा देखा जैसे कि वज्र से प्रहारित पर्व्वतदीखते हैं। ५० । भग्न दांत गंडस्थल जंघा पीठ और कमर टूटकर मरेहुए पर्व्वताकार हाथियों को और कितनेही भागडालकर मरहुए हाथियों को भी हमनेदेखा, कितनेही बड़े हाथी कुंभ टूटे रुधिरको वमन करते भयसे विकल पृथ्वीपरऐसे गिरे जैसे कि पर्व्वतपृथ्वी पर गिरते हैं, रुधिर मज्जासे लितेहुए अंग और कपालोंकी मज्जासे छिड़का हुआ भीमसेन दंडधारी मृत्यु के समान युद्धमें घूमा हाथियों के रुधिर से भीजा हुआ गदाको धारण किये हुए भीमसेन पिनाक धारी शिवजी के समान घोर और भयानक रूपहुआ । ५४ । क्रोधयुक्त भीमसेन के हाथ से मथेहुए कुष्ठित हाथी अकस्मात् आपकी सेना को दबातेहुए भागे।५७। अभिमन्यु आदि बड़े २ धनुषधारी रथियों ने उस युद्ध करनेवाले वीर भीमसेन की चारों ओर से ऐसी रक्षाकी जैसे इन्द्रकी

who was seated on its back. Bhimsen too, was seen roaming hither and thither, destroying the elephants as Indra destroys hills. 50 We saw elephants destroyed by the single blow of Bhim, falling down like mountains destroyed by lightning. We also saw, elephants huge as mountains dying of wounds received in their eyes, tusks, cheeks, thighs and backs, and dropping foam from their mouths. Many elephants fell down on earth wounded, vomiting blood and falling like mountains. Bhimsen with his bloodstained body roamed there like Death the bearer of staff. Bathed in the blood of elephants Bhim the bearer of mace looked as dreadful in appearance as Shiv the bearer of Pinak. Wounded by the blows of Bhimsen, the elephants ran away crushing your armies. 55. Abhimanyu and other great archers and warriors protected Bhim on all sides as the gods

संमथ्यमाना: क्रुद्धे न भीमसेनेन दंतिनः । सहसाप्राद्रवन् क्लिष्टामृद्नंतस्तवध्वजिनीम्
॥ ५७ ॥ तं वीरं महेष्वासं सौभद्रप्रमुखारथाः । पर्यरक्षंत युध्यंतं वज्रायुधमिवामराः
॥ ५८ ॥ शोणिताक्तांगदां बिभ्रदुक्षितांगजशोणितैः । कृतांत इव रौद्रात्मा भीमसेनो
व्यदृश्यत ॥ ५९ ॥ व्यायच्छमानं गदया दिक्षुसर्वासु भारत । अपश्याम रणे भीमं
नृत्यन्त मिव शंकरम् ॥ ६० ॥ यमदंडोपमां गुर्वी मिंद्राशनिसमस्वनाम् । अपश्याम
महाराज रौद्रां विशसनीं गदाम् ॥ ६१ ॥ विमिश्रां केशमज्जाभिः प्रदिग्धां रुधिरेणच ।
पिनाक मिव रुद्रस्य क्रुद्धस्याभिघ्नतः पशून् ॥ ६२ ॥ यथा पशूनां संघातं यष्ट्यापालः प्रका
लयेत् । तथा भीमो गजानीकं गदयासमकालयत् ॥ ६३ ॥ गदयावध्यमानास्ते
मार्गणैश्चसमंततः । स्वान्यनीकानि मृद्नंतः प्राद्रवन्कुंजरास्तव ॥ ६४ ॥ महा
वातइवाभ्राणि विधमित्वासवारणान् । अतिष्ठत्तुमुले भीमः श्मशान इव शूलभृत् ॥ ६५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि चतुर्थदिवसे भीमयुद्धे
द्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

रक्षा देवता करते हैं, रक्तसे भरेहुए और हाथियों के रुधिर से छिड़कीहुई गदाको धारण किये भीमसेन मृत्यु के समान रुद्रात्माही दृष्टिपड़ा, हे भरतवंशी हमने गदा युक्त भीमसेन को सब दिशाओंमें नाचताहुआ शंकरजी के समान देखा, फिर हम ने यमराज के दण्डकी समान और इन्द्रके वज्र की समान शब्दायमान नाशकी करने वाली रौद्रीरूप महाभारी गदाको देखा वह गदा केशोंसे युक्त कपाल और रुधिरसे ऐसी भरी हुईथी जैसेकि क्रोध युक्त शिवजी के हाथमें पशुओं का मारने वाला पिनाक धनुष होताहै, और जैसे गाय चराने वाला अपनी यष्टी से पशुओं के समूहों को हटाताहै इसीप्रकार भीमसेन ने भी अपनी गदासे हाथियोंको हटाया, इसके पीछे गदा औरबाणोंमें घायल वहहाथी अपनेरथोंको दबाते तोड़तेहुए इधरउधर को भागे, जैसे कि वायु बादलों को इधर उधर तितरबितरकरदेता है उसीप्रकार युद्ध से भिन्न २ हाथियोंको करके भीमसेन युद्ध भूमि में ऐसे नियत हुआ जैसे कि श्मशान भूमि में रुद्रजी नियतहोते हैं ६५ ॥

protect Indra. Reeking in blood with the blood-stained mace, Bhim looked as ferocious as the god of Death. We saw Bhimsen the bearer of mace dancing in all directions like Shankar. Then like the staff of Death or the vajra of Indra, we saw his mace dealing hard sounding blows with blood and hair of heads on it like the bow of Shiva the destroyer of beasts. Bhimsen beat back the elephants with his club, as a herdsman drives cattle with his staff. Then wounded by the mace and arrows, the elephants rushed hither and thither, crushing the chariots on their own side. Dispersing the elephants as the wind disperses the clouds, Bhimsen stood in great glory like Rudra standing on the cremation ground "63.

सञ्जय उवाच । हतेतस्मिन् गजानीके पुत्रोदुर्योधनस्तव । भीमसेनंघ्नतेत्येवं
सर्वसैन्यान्यचोदयत् ॥ १ ॥ ततः सर्वाण्यनीकानि तवपुत्रस्य शासनात् । अभ्यद्रव
न्भीमसेनंनदन्तं भैरवान्रवान् ॥ २ ॥ तंबलौघमपर्यन्तं देवैरपिदुरुत्सहम् । आपतंतं
सुदुष्पारं समुद्रमिव पर्वणि ॥ ३ ॥ रथनागाश्वकलिलं शंखदुन्दुभिनादितम् ।
अनन्तरथपादातं नरेन्द्रस्तिमितह्रदम् ॥ ४ ॥ तं भीमसेनः समरे महोदधि मिवापरम् ।
सेनासागर मक्षोभ्यं वेलेवसमवारयत् ॥ ५ ॥ तदाश्चर्य मपश्याम पांडवस्य महात्मनः ।
भीमसेनस्य समरे राजन् कर्मातिमानुषम् ॥ ६ ॥ उदीर्णान्पार्थिवान् सर्वान् साश्वा
न्सरथ कुञ्जरान् । असंभ्रमं भीमसेनो गदयासमवारयत् ॥ ७ ॥ ससंवार्य बलौघांस्तान्
गदया रथिनांवरः । अतिष्ठत्तुमुले भीमो गिरिर्मेरु रिवाचलः ॥ ८ ॥ तस्मिन्सुतुमुले घोरे
काले परमं दारुणे । भ्रातरश्चैव पुत्राश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ॥ ९ ॥ द्रौपदेयाभिमन्युश्च

अध्याय ६३ ॥

संजय बोले कि उस हाथियों की सेना के मारे जाने पर आपके पुत्र दुर्योधन ने सब सेनाको चैतन्यकिया और आज्ञा दी कि भीमसेन को मारो तदन तर आपके पुत्रकी आज्ञा से सब सेना महाभयकारी शब्दोंको करती हुई भीमसेन के सम्मुख दौड़ी, फिर उस अत्यन्त देवताओं सेभी कठिनता से सहने योग्य समुद्रके समान अत्यन्त दुस्तर रथ हाथी घोड़ों समेत कवचधारी शंखभेरियों से शब्दायमान असंख्य रथ हाथी पद ती लोगों से भरीहुई सबओरसे धूल उड़ाती हुई भारी समुद्र के समान अव्य कुल सेनाको भीमसेन ने रोकदिया । ५ । हे राजा हम ने उस महात्मा भीमसेन के उस अद्भुत कर्मको देखा, अर्थात् भीमसेन ने बड़ी निर्भयता से घोड़े हाथी और रथों समेत उन सब राजाओं को अपनी गदा सेही हटादिया, वह पराक्रमियों में श्रेष्ठ भीमसेन तुमुल युद्धमें उन सेनाओं के समूहोंको गदा से हटा कर मेरुपर्वतके समान निश्चलहोकर नियत हुआ, उसघोर और महा भयानक युद्धमें भय के उत्पन्न होनेपर भाई बेटे धृष्टद्युम्न द्रौपदीके पांचोंपुत्र अभि

CHAPTER LXIII

"When that army of elephants was destroyed," continued Sanjaya, "your son, Duryodhan, addressing all the army, ordered them to kill Bhim. And all the army with a tremendous noise rushed against Bhimsen. Then that warrior, unbearable even by gods, checked that army roaring like the ocean, consisting of numerous chariots, elephants and foot soldiers and raising a storm of dust. 5. We saw then the wonderful prowess of Bhimsen who fearlessly defeated all those princes with their armies of horses, elephants and chariots, with his mace, and himself remained immoveable like mount Meru. During that dreadful fighting, in spite of the presence of great danger Bhimsen was not deserted by his brothers, sons, Dhrishtadyumna

शिखण्डी चापराजितः । नाजहन् भीमसेनं भये जाते महाबलम् ॥ १० ॥ ततः शैक्याय-
सीं गुर्वीं प्रगृह्य महतीं गदाम् । अवाधावत् तावकान् योधान् दण्डपाणिरिवान्तकः ॥ ११ ॥
पोथयन् रथवृन्दानि वाजिवृन्दानि चाभिभूः । व्यचरत् रथवृन्दानि बाहुवेगेन पाण्डवः १२
विनिघ्नंस्तावकान् संख्ये युगान्ते काल इवाभिभुः । ऊरुवेगेन संकर्षन् रथजालानि पाण्डवः
॥ १३ ॥ बलानि सर्वमर्दन्तु नड्वलानीव कुञ्जरः । मृद्नन् रथेभ्यो रथिनो गजेभ्यो गज-
योधिनः ॥ १४ ॥ सादिनश्चाश्वपृष्ठेभ्यो भूमौ चापि पदातिनः । गदयाऽव्यधमत् सर्वान्
वातो वृक्षानिवौजसा ॥ १५ ॥ भीमसेनो महाबाहुस्तव पुत्रस्य वै बले । सा गदा गज-
मांसैः मज्जासृग्रुधिरैर्गजा ॥ १६ ॥ अदृश्यत महारौद्रा गदा नागाश्वपातनी । तत्र तत्र
हतैश्चापि मनुष्यैश्च वाजिभिः ॥ १७ ॥ रणाङ्गणं समभवन् मृत्योराघातसन्निभम् ।

मृत्यु और महा विजयी शिखण्डी ने उस महाबली भीमसेन को त्याग नहीं किया । १० । इसके पीछे दंडधारी मृत्यु के समान उस लोहेकी गदाको लेकर महाबली भीमसेन आपके शूरवीरों पर दौड़ा, और रथ घोड़े हाथियों के समूहोंको मारता हुआ ऐसा घूमा जैसे युगके अन्त में अर्थात् प्रलय काल में अग्नि दौड़ता है, जैसे कि प्रलय के समय में काल सबको मारता है उसी प्रकार युद्धभूमि में कालरूप भीमसेन शूरवीरोंको मारता हुआ अपनी जंघाओं के वेग से रथके जालोंको खैंचता, आपकी सेनाको ऐसे मर्दन करने लगा जैसेकि हाथी नलों के जंगलोंको मर्दन करता है रथोंको रथोंसे वा युद्ध करनेवाले हाथियों के सवारोंको हाथियों से मर्दन करता हुआ, सवारों को घोड़ों की पीठसे पदातियों को पृथ्वीपर मर्दन करताहुआ घूमने लगा, फिरउस महाबाहु भीमसेनने आपके पुत्रकीसेनामें जाकर गदा से सबको ऐसामारा जैसे किवायु देवता अपने बलसे वृक्षों को गिराता है । १५ । फिरवह भीमसेनी कराल भयंकर गदा मांस रुधिर से भरीहुई हाथीघोड़ोंकी मारनेवाली रौद्री रूप से दृष्टि पड़ी और स्थानर में मरेहुए हाथी घोड़े और सवारोंसे वह युद्ध भूमि संहारभूमि के समान होगई, चारों ओर से वर्णाश्रम रहित पशुओं के समान

the five sons of Draupadi, Abhimanyu and Shikhandi the best of conquerers. 10. Then Bhimsen, with his mace like the staff of Death rushed upon your army, and destroying the horses, chariots and elephants, he ran like Agni at the end of a yug. As Kal destroys everything at the end of the yug, so did Bhim destroy your armies, killing the warriors and dragging the nets of chariots along with his thighs. He roamed crushing chariots with chariots, killing elephant riders, horsemen and foot soldiers as an elephant crushes the forest of reeds. Then Bhimsen of long arms, entering the lists of your sons destroyed the warriors with his mace as the wind destroys the trees of the forest. 15. Bhimsen's mace of dreadful form, filled in flesh and blood of elephants and horses, looked like the weapon of Rudra. The field of battle was strewn with the dead bodies of elephants, horses and the riders.

रिनाकमियर्कद्रस्य क्रुद्धस्याभिघ्नतः पशून् ॥ १८ ॥ यमदंडोपमांमुग्रां मिंद्राशनिसमं स्वनाम् । ददृशुर्भीम सेनस्य रौद्रीं विशसनींगदाम् ॥ १९ ॥ आविध्यतागदां तस्य कौंतेयस्य महात्मनः । यमोरूपं महाघोरं कालस्येव युगक्षये ॥ २० ॥ तमस्तां महतींसेनां द्रावयंत पुनःपुनः । दृष्ट्वामृत्यु मिवायान्तं सर्वे विमनसोभवन् ॥ २१ ॥ यतो यतः प्रेक्षतेस्मगदामुद्यम्य पाँण्डव । तेन तेनस्मदीर्यंते सर्वे सैन्यानिभारत ॥२२॥ प्रदारयंतं सैन्यानि बलेनामित विक्रमम् । ग्रसमानमनीकानि व्यादितास्यमिवांतकम् ॥ २३ ॥ तन्तथाभिमकर्माणं प्रगृहीतमहागदम् । दृष्ट्वावृकोदर भीष्मः सहसैव समभ्ययात् ॥ २४ ॥ महतारथघोषेण रथेनादित्यवर्चसा । छादयन् शरवर्षेणपर्ज न्यइववृष्टिमान् ॥ २५ ॥ तमायान्त तथा दृष्ट्वाव्यात्ताननमिवांतकम् । भीष्मंभीमो

मनुष्यों को मारने वाले क्रोधरूप रुद्रजी के पिनाक धनुष के समान यमदण्ड के सदृश भयानक और इन्द्र वज्र के समान प्रकाशित नाश करने वाली रौद्री भीमसेन की गदा को हमने देखा, गदाको मारते हुए उस महात्मा भीमसेन का रूप महा प्रकाशित और घोररूप ऐसा होगया जैसे कि संसार के नाश में महाकालका रूप होता है । २० । इसरीति से उस बड़ी सेना को वारम्वार भगातेहुए मृत्युके समान भीमसेन को आता हुआ देखकर सबलोग चित्त से महा व्याकुलहुए हे भरतवंशी उस भीमसेनने गदा को उठाकर जिधर २ को देखा उधर उधरकी सेना व्याकुल होकर छिन्न भिन्न होगई जैसे कि सेनाओंको छिन्न भिन्न करते हुए सेना समूहोंसे अजेय अत्यन्त भक्षण करनेवाली मृत्यु के समान सेनाओंको निगलते भयकारी कर्म करते बड़ी गदा के उठाने वाले उस भीमसेन को देखकर सूर्य के समान प्रकाशमान बादल से शब्दायमान रथपर सवार होकर भीष्मजी बाणोंकी वर्षा करते हुए अकस्मात् उसके सम्मुख आये । २५ । इस रीति से उस मृत्युरूप भीष्मजीको आता देखकर महाबाहु भीमसेन बड़ा क्रोधरूप अग्नि के समान होकर

Killing the people of all orders like beasts, the destroyer of men, like the bow of Shiv, the staff of Yam or the vajra of Indra, Bhimsen's mace was seen shining dreadfully. Bhim's form, when he was using his mace, looked bright and dreadful like Death himself at the time of the destruction of the world. 20. Thus setting that large army again and again to flight, Bhimsen was seen there frightening the lookers on. The warriors were scattered in disorder, in whatever direction he looked with his mace raised on high. Dispersing the armies, indefatigable by large numbers, like Death devouring all, doing dreadful deeds of valour, wielder of the huge mace, Bhimsen was seen and encountered by Bhishm, showering arrows from his chariot bright like the sun and rolling like thunder, 25. At the sight of Bhishm coming like Death, Bhim was enraged like fire and rushed at once to

महाबाहुः प्रत्युदीयादमर्षितः ॥ २६ ॥ तस्मिन् क्षणे सात्यकिः सत्यसंधः शिनिप्रवी
रोऽभ्यपतत्पितामहम् । निघ्नन्नमित्रान् धनुषा दृढेन संकम्पयंस्तव पुत्रस्य सैन्यम् ॥ २७ ॥
तं यान्तमश्वै रजतप्रकाशैः शरान् क्षिपन्तं निशितान् सुपुंखान् । नाशक्नुवन् वारयितुं
तदानीं सर्वे गणा भारत ये त्वदीयाः ॥ २८ ॥ अविध्यदेनं दशभिः पृषत्कैरलम्बुषो
राक्षसोऽसौ तदानीम् । शरैश्चतुर्भिः प्रतिविद्ध्य तं च नप्ता शिनेरभ्यपतद्रथेन ॥ २९ ॥
अन्वागतम् वृष्णिवरम् निशम्यतम् शत्रुमध्ये परिवर्तमानम् । प्रद्रावयन्तं कुरुपुंगवांश्च
पुनःपुनश्च प्रणदन्तमाजौ ॥ ३० ॥ योधास्त्वदीयाः शरवर्षैरवर्षन् मेघा यथा भूधरमंबुधौघैः ।
तं पितामहो वारयितुम् न शेकुर्मध्यम् दिनसूर्यमिवातपंतम् ॥ ३१ ॥ न तत्र कश्चिन्न विषण्ण
आसीदृते राजन्सोमदत्तस्य पुत्रात् । स वै समादाय धनुर्महात्मा भूरिश्रवा भारत सायकांश्च

उनके सम्मुख गया, उससमय महावीर सत्यसंकल्प सात्यकी बड़े दृढ़ धनुषसे शत्रुओं को मारता हुआ आपके पुत्रकी सेनाको कंपाता पितामह के सम्मुख जाभिड़ा, हे भरतवंशी आपके सब मनुष्य उस चांदी के समान श्वेतघोड़ों के रथपर चढ़ेहुए सुन्दर पंखवाले बाणों के प्रहार करने वाले सात्यकी के रोकने को समर्थ नहीं हुए, तब अलंबुष नाम राक्षस ने मपक्त नाम दश बाणों से उसको घायल किया फिर सात्यकी भी उसको चार बाणों से घायल करके रथकेद्वारा सम्मुख दौड़ा, फिर वृष्णी वीर सात्यकी को समीप आया हुआ और शत्रुओं में घूमने वाला उत्तम कौरवों का नाशकर्त्ता युद्ध में वारम्वार गर्जता हुआ देखकर, आपके शूरवीर लोग उस पर ऐसी बाणों की वृषा करने लगे जैसे कि बादल जलों के वेगसे पहाड़ पर वर्षा करते हैं, मध्याह्न समय के सूर्य के समान तपाने वाले पितामह भी उस सात्यकी के रोकने को समर्थ नहीं हुए, हे राजा वहां सोमदत्त के लड़के के सिवाय कोईभी स्थिर चित्त नहीं हुआ, हे भरतर्षभ वह सोमदत्त का पुत्र

meet him. Then that bravest of warriors of true vows, Satyaki came on destroying and shaking the armies of your sons by his hard bow and encountered Bhishm the grandfather. All your people, O descendant of Bharat, were unable to withstand Satyaki who rode on his chariot drawn by silver white horses, discharging arrows of beautiful plumage. Then the rakshas named Alamvush wounded him with ten arrows. Satyaki replied him with four arrow wounds and rushed on to meet him. Seeing Satyaki the warrior of the Vrishni race, roaming among the enemies and destroying the Kauravas with continuous roars, your warriors covered him with showers of arrows as clouds do a mountain. Even the grandfather, glorious like the mid-day sun could not withstand Satyaki. None except the son of Somdatta could remain firm there. Bhurishrava the son of

॥ ३२ ॥ दृष्ट्वारथान् स्वान्व्यपनीयमानान् । प्रत्युद्ययौ सात्यकिं योद्धुमिच्छन् ॥ ३३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्व्वणि भीष्मवधपर्व्वणि सात्यकि भूरिश्रवःसमागमे त्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

सञ्जय उवाच । ततो भूरिश्रवा राजन् सात्यकिं नवभिः शरैः । प्राविध्यद्भृश संक्रुद्धस्तोत्रै रिवमहाद्विपम् ॥ १ ॥ कौरवं सात्यकिश्चैव शरैः सन्नतपर्वभिः । अवारयदमेयात्मा सर्व लोकस्यपश्यतः ॥ २ ॥ ततो दुर्योधनो राजासोदर्यैः परिवारितः । सोमदत्तिं रणेयत्तः समंतात्पर्यवारयत् ॥ ३ ॥ तथैवपाण्डवाः सर्वे सात्यकिं रभसरणे । परिवार्यस्थिताः सख्ये समंतात्सुमहौजसः ॥ भीमसेनस्तु संक्रुद्धो गदा मुद्यम्यभारत । दुर्योधनमुखान् सर्वान् पुत्रान्ते व्यवारयत् ॥ ५ ॥ रथानेकसाहस्रै क्रोधामर्षसमन्वितः । नंदकस्तवपुत्रस्तु भीमसेनंमहाबलम् ॥ ६ ॥ विव्याधविशिखैः षड्भिः कंकपत्रै शिलाशितैः । दुर्योधनश्च समरे भीमसेनं महारथम् ॥ ७ ॥ आजघानो

भूरिश्रवा अपने रथी लोगों को दूरहटा हुआ देखकर महा भयानक वेग युक्त धनुष को हाथ में लिये युद्ध की इच्छासे सात्यकी के सम्मुख गया ॥ ३३ ॥

अध्याय ६४ ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे अत्यन्त कोपयुक्त भूरिश्रवाने नौ बाणों से सात्यकी को इस रीतिसे घायल किया जैसेकी अंकुश से बड़े हाथी को घायल करते हैं, फिर उस महा साहसी सात्यकी नेभी सबके देखते हुए गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से भूरिश्रवाको रोका, फिर अपने निज भाइयों समेत दुर्योधन ने युद्धमें उपाय करनेवाले भूरिश्रवाकी चारों ओरसे रक्षाकी इसी प्रकारसे महा पराक्रमी सब पांडवलोग भी युद्धभूमि में चारोंओर से सात्यकी को रक्षितकर के नियत हुए हे भरतवंशी भीमसेन को गदाउठाये कोप में देखकर आपके सब क्रोधी और असन्तोषी दुर्योधनादिक पुत्रोंने बहुत से असंख्य रथों को साथ लेकर उसको चारों ओरसे रोका फिर आपके पुत्रनन्दकने उसमहाबली भीमसेनको शिलापर तीक्ष्ण किये हुए तीव्र और तेजनोक वाले बाणोंसे घायल किया इसके पीछे क्रोध

Somdatta, seeing his charioteers give way advanced to meet Satyaki with his bow of dreadful velocity.

CHAPTER LXIV

Sanjaya continued: "Then, O king, Bhurishrava in great rage, wounded Satyaki with nine arrows like an elephant with goads. Satyaki too, of great prowess, checked Bhurishrava with his arrows of hidden knots. Duryodhan and his brothers protected Bhurishrava. Seeing Bhimsen with his mace upraised in anger, your engraged and dissatisfied sons, Duryodhan and others, with numerous chariots, checked him from all sides. Then your son Nandak wounded Bhim-

रसिक्रुद्धो मार्गणैर्नवभिः शितैः । ततो भीमो महाबाहुः स्वरथं सुमहाबलः ।८। आरु
रोह रथश्रेष्ठं विशोकं चेदमब्रवीत् । एते महारथाः शूरा धार्त्तराष्ट्राः समागताः ॥ ९ ॥
मामेवभृशसंक्रुद्धा हंतुमभ्युद्यतायुधि । मनोरथ द्रुमोऽस्माकं चिंतितो यदुर्यार्पिकः ॥१०॥
सफलः सूत चाद्येह योह पश्यामि सोदरान् । यत्राशोकसमुद्दिष्टा रेणवोरथनेमिभिः
॥ ११ ॥ यथाक्रूयत्यन्तरिक्षंहि शरवृष्टैर्दिगन्तरे । तत्र तिष्ठति सन्नद्धः स्वयं राजासुयो
धनः ॥ १२ ॥ भ्रातरश्चास्यसन्नद्धाः कुलपुत्राम्महोत्कटाः । एतानद्यहनिष्यामि पश्यतस्तेत
संशय ॥ १३ ॥ तस्मान्ममाश्वान् संग्रामे यत्त संयच्छसारथे । एवमुक्त्वा ततः पार्थ
स्तवपुत्रं विशाम्पते ॥ १४ ॥ विव्याध निशितैस्तीक्ष्णैः शरैः कनकभूषणैः । नन्दकञ्च
त्रिभिर्बाणै रभ्यविध्यत्स्तनान्तरे ॥ १५ ॥ तंतु दुर्योधन षष्ट्या विद्धाभीमं महाबलम् ।
त्रिभिरन्यैः सुनिशितैर्विशोकं प्रत्य विध्यत ॥ १६ ॥ भीमस्यच रणे राजन् धनुश्चिच्छेद

युक्त दुर्योधनने उस बड़ेयुद्धमें बड़ेतीक्ष्ण बाणोंसे छातीपर घायल किया इसकेपीछे महाबली महाबाहु भीमसेन बड़े उत्तम रथपर सवार होकर विशोकसे बोला कि यह धृतराष्ट्र के पुत्र बड़े शूर और महाबली अत्यन्त कोपित युद्धमें मेरे मारने को तैयार हुए हैं इनको निस्सन्देह मैं तेरेदेखतेही में मारूंगा । १० । इस हेतु से हे सारथी तू इसयुद्धमें बड़ी सावधानी से मेरेघोड़ों को सम्हाल ऐसा कहकर हे राजा भीमसेन ने तेरे पुत्रको बड़े तीक्ष्ण सुनहरी भूषित दश बाणों से अत्यन्त घायल किया और नन्दकको तीन बाणों से स्तनों के मध्य में विदीर्ण किया फिर दुर्योधन ने सातबाणों से उस महाबली भीमसेन को घायल किया और अत्यन्त तीक्ष्ण तीन बाणों से विशोक सारथी को घायल किया फिर युद्धभूमि में हँसतेहुए दुर्योधन ने तीन महा पैने बाणोंसे भीमसेन के उस धनुषको मूठ के स्थानपर से काट डाला । १४ । हे महाराज तब भीमसेन ने आपके धनुषधारी पुत्र के विशिखों से महापीड़ामान अपने विशोक सारथी को देखकर, असहनशील और महा क्रोधित होकर आपके पुत्रके मारने के लिये दिव्य धनुषको धारणकिया और क्रोधमें भर

son with sharpend and piercing arrows. Duryohan in his rage wounded Bhimsen on the breast. Bhim, mounted on his goodly chariot, said to Bishok: "These brave sons of Dhritrashtra are ready to kill me in battle, but you will see how I make their death secure. 10 You should therefore keep my horses steady." Having said this Bhimsen wounded your son with ten golden arrows. He wounded Nandak with three arrows in the middle of the breast. Duryodhan wounded that brave warrior, with seven and Bishok the driver with three arrows, and with a smile, he cut down the bow of Bhim from the place where he was grasping it 14 Bhimsen severely wounded by the arrows of your son and seeing the condition his coachman was in, took up his divine bow to kill Duryodhan. He put

भासुरम् । मुष्टि देशे भृशं तीक्ष्णै स्त्रिभिर्भल्लैर्हसन्निव ॥ १७ ॥ समरे प्रेक्ष्यपतार विद्यो
कन्तु वृकोदर । पीडित विशिखैस्तीक्ष्णैस्तव पुत्रेण धन्विना ॥ १८ ॥ अमृष्यमाण सर
ब्धो धनुर्दिव्य परा मृशत् । पुत्रस्य ते महाराज वधार्थं भरतर्षभ ॥ १९ ॥ समादधत्सुस
कुद्ध क्षुरप्र लोमवाहिनम् । तेन चिच्छेद नृपतेर्भीम. कार्मुक मुत्तमम् ॥ २० ॥ सोपवि
द्धधनुश्छिन्न पुत्रस्ते क्रोधमूर्छित । अन्यत्कार्मुक मादत्त सत्वर वेगवत्तरम् ॥ २१ ॥
सदधे विशिखघोर कालमृत्युसमप्रभम् । तेनाजघानसक्रुद्धो भीमसेनंस्तनान्तरे ॥ २२ ॥
सगाढ विद्धो व्यथित स्व दनोरस्थ ।विशत् । सनिषण्णोरथो पस्थे मूर्छामभिजगा
मह ॥ २३ ॥ त दृष्ट्वाव्यथित भीम मा मन्यु पुरोगमा । नामृष्यन्तमहेष्वासा पाण्डवा
ना महारथा ॥ २४ ॥ ततस्तुतुमुलाॅवृ ः शस्त्राणा तिग्मतेजसाम् । पातयामासुरव्यग्राः
पुत्रस्य तव मूर्धनि ॥ २५ ॥ प्रतिलभ्य तत सज्ञा भीमसेनो महाबल । दुर्योधन त्रिभि
र्विध्वा पुनर्विव्याधपञ्चभि ॥ २६ ॥ शल्यञ्च पञ्चविंशत्या शरैर्विव्याध पाण्डव । रुक्म
पुङ्खैर्महेष्वासः सविद्धो व्यपयाद्रणात् ॥ २७ ॥ प्रत्युद्ययुस्ततो भीमं तवपुत्राश्चतुर्दश ।

कर वाणोंके काटनेवाले चुरप्र वाणको धनुषमें चढ़ाकर उसमे दुर्योधनके उत्तम धनुषको पीछेकी ओर को काटा, फिर महाक्रोध में भरे हुए तुम्हारे पुत्रने उस कटेहुए धनुषको डाल कर शीघ्रही बड़े वेगवान् दूसरे धनुषको लेके काल मृत्युके समान प्रकाशित बड़े भयानक विशिख वाणको चढ़ाकर बड़े कोप से भीमसेन के स्तनों के मध्यस्थान को घायल किया, फिर वह महा घायल और पीड़मान् रथके बैठने के स्थान में बैठकर महा अचेत होगया, । २० । फिर पांडवों के उन महारथियोंने जिनका अग्रगामी अभिमन्यु था उस पीड़ामान भीमसेनको देखकर महा क्रोधित होकर आप के बेटेके मस्तकपर महाउग्र तीक्ष्ण वाणोंकी तुमुल वर्षा की इसके पीछे महाबली भीमसेन ने सचेतहोकर दुर्योधन को तीन वाणों से घायल करके फिर पांच वाणों से व्यथित किया और पन्चीस वाणों से शल्यको घायल किया इन वाणों से घायलहोकर वह महाधनुषधारी शल्य युद्ध से हटगया ।२१। इसके पीछे आपके यह चौदह १४ पुत्र इस वीरके सम्मुख गये सेनापति, सुषेण, जलसन्ध, सुलो-

very sharp arrows to his bow and cut down his bow from the back. Then your son in great rage threw down the bow which was cut asunder and taking up another strong one, he put up a dreadful arrow like Death's stroke and wounded Bhimsen in the breast which caused him to fall back in his place 20 The great warriors of the Pandavas, headed by Abhimanyu, finding Bhimsen in a swoon, showered a heavy shower of arrows on the head of your son Then the great warrier Bhim came to himself and wounded Duryodhan with eight arrows. He wounded Shalya with twentyfive arrows and made him turn his back much wounded 24 Then fourteen of your sons, namely Senapati, Sushen, Jalsandh, Sulochan, Ugra, Bhimrath, Bhim,

सेनापतिः सुषेणश्च जलसंधः सुलोचनः ॥ २८ ॥ उग्रो भीमरथो भीमो वीरबाहुरलो
लुपः । दुर्मुखो दुष्प्रधर्षश्च विवित्सुर्विकटः समः ॥ २९ ॥ विसृजन्तो बहून् बाणान् क्रोध
संरक्त लोचनाः । भीमसेन मभिद्रुत्य विव्यधुः सहिता भृशम् ॥ ३० ॥ पुत्रांस्तुतवसंप्रे
क्ष्य भीमसेनो महाबल. । सृक्किणी विलिहन्वीरः पशुमध्ये यथा वृकः ॥ ३१ ॥ अभि
पत्यमहाबाहुर्गरुत्मानिव वेगितः । सेनापते. क्षुरप्रेण शिरश्चिच्छेद पांडवः ॥ ३२ ॥ सं
प्रहृष्टस्त्रिभिर्बाणैर्महाभुजः । जलसन्ध विनिर्भिद्य सोनयद्य मसादनम् ॥३३॥
सुषेणञ्चततो हत्वा प्रेषयामास मृत्यवे । उग्रस्य सशिरस्त्राणं शिरश्चन्द्रोपमंभुवि ॥३४॥
पातयामास भल्लेन कुण्डलाभ्यां विभूषितम् । वीरबाहुंचसप्तत्या साश्वकेतुं ससारथिम्
॥ ३५ ॥ निनाय समरेवीरः परलोकाय पांडवः । भीमभीमरथौ चोभौ भीमसेनो हस
न्निव ॥ ३६ ॥ पुत्रौ ते दुर्मदौ राजन् ननयद्यमसादनम् । ततः सुलोचन भीमः क्षुरप्रेण
महामृधे ॥ ३७ ॥ मिषतां सर्वसैन्याना मनयद्यमसादनम् । पुत्रास्तुतवतं दृष्ट्वा भीमसेन

चन, उग्र, भीमरथ, भीम, वीरबाहु, अलोलुप, दुर्मुख, दुष्प्रधर्ष, विवित्सु, विकट, सम, इन सब क्रोधमें भरेहुए बाणोंके बरसाने वालोंने, एक साथही भीमसेन के सम्मुख जाकर अत्यन्त घायल किया फिर महाबली महाबाहु भीमसेन ने आपके पुत्रों को अच्छी रीतिसे देखकर भेडिये के समान होठोंको चाटकर गरुड़ के समान वेग से सम्मुख दौड़कर अपने क्षुरम बाणसे सेनापतिके शिर को काटा फिर उस महाबाहु प्रसन्न चित्त ने अत्यन्त आनन्दित होकर तीन बाणोंसे जलसिन्ध को विदीर्ण करके यमलोकको पठाया। ३०। फिर सुषेणको मार कर मृत्यु के पास पहुँचाया, फिर एक भल्लसे उग्रके मुकुट समेत चन्द्रमा के समान कुंडलों से शोभित शिर को पृथ्वीपर गिराया, फिर सत्तर बाणोंसे घोड़े ध्वजा और सारथी समेत वीरबाहु को मारा, फिर हँसते हुए भीमसेनने भीम और भीमरथ दोनों वेगवान् भाइयोंको भी यमपुरको पठाया, इससे अनन्तर सब सेनाके देखते हुए सुलोचन

Birvahu, Alolup, Durmukh, Dushpradhatsh, Vivitsu, Vikat and Sam faced Bhimsen and all those enraged warriors showered their arrows at once on him with effective aim Then Bhimsen of long arms and great strength, looking attentively at your sons and licking his lips like a wolf, rushed upon them in great force. He beheaded Senapati with his sharp arrow and then with a cheerful mind wounded Jalsandh with three sharp arrows and sent him to the region of Yam. 30. Having killed Sushen he cut down with a single dart the head of Ugra decked with diadem and earrings. With seventy arrows he killed Birvahu and cut down his banner with the horses and the driver. Then with a smile Bhimsen sent the two brothers Bhim and Bhimrath to the region of Yam. Then within sight of the whole army, he killed Sulochan with one sharp arrow. Then the rest of

पराक्रमम् ॥ ३८ ॥ शेषा येन्ये भवंस्तत्र ते भीमस्य भयार्दिताः । विप्रद्रुतादिशोराजन् वध्यमाना महात्मना ॥ ३९ ॥ ततोऽब्रवीच्छान्तनवः सर्वानेव महारथान् । एषभीमो रणे क्रुद्धो धार्तराष्ट्रान्महारथान् ॥ ४० ॥ यथाप्राग्रयान् यथा ज्येष्ठान् यथ शूरांश्च समागतान् निपात यत्युग्र धन्वा तं प्रगृह्णीत माचिरम् ॥ ४१ ॥ एवमुक्त्वा ततः सर्वे धार्तराष्ट्रस्य सैनिका । अभ्यद्रवन्त संक्रुद्धा भीमसेनं महाबलम् ॥ ४२ ॥ भगदत्तः प्रभिन्नेन कुञ्जरेण विशाम्पते । अभ्ययात्सहसा तत्र यत्रभीमो व्यवस्थितः ॥ ४३ ॥ आपतन्नेव चरणे भीमसेनं शिलीमुखैः । अदृश्य समरे चक्रे जीमूतइवभास्करम् ॥ ४४ ॥ अभिम पुत्रुखा स्ततु नामृष्यन्तमहारथा । भीमस्यच्छादनं सख्ये स्वबाहुबलमाश्रिता ॥ ४५ ॥ तपन्त शरवर्षेण समं तात्पर्य वारयन् । गज च शर वृष्ट्या तु विभिदुस्ते समं तत ॥ ४६ ॥ स

को लुरमवाण से मारा, हे राजा तब यहां जो आपके शेषबचे हुए पुत्र थे वह भीमसेन के बलको देखकर उससे घायल और भयभीत होकर युद्ध से भागे । ३९ । इसके पीछे भीष्मजी सब महारथियों से बोले, कि यह युद्धमें क्रोधरूप भयानक धनुषधारी भीमसेन जो धृतराष्ट्र के महा शूरवीर बुद्धिमान पुत्रोंको गिराता और मारता है उसको पकड़ो, इसके पीछे दुर्योधन की सेनाके सबलोग इस आज्ञाको पाकर अत्यन्त क्रोध में भरकर उस महाबली भीमसेन के सम्मुख दौड़े, हेराजा राजाभगदत्त मतवाले हाथी की सवारी पर अकस्मात् वहां आदृश जहां भीमसेन नियतथा । ४० । और युद्धभूमि में गिरतेही शिलाके घिसेहुए बाणों से भीमसेनको दृष्टि से ऐसा गुप्त करदिया जैसे कि बादल सूर्यको करता है यहां अपने भुजबलमें नियत और रक्षित अभिमन्यु आदि महारथी भीमसेनके [illegible] को न सहसके

शस्त्रवृष्ट्याभिहतः समन्तात्तैर्महारथैः । प्रभिन्नोऽपि गजो राजन् नानालिङ्गैः सुतेजनैः
॥ ४७ ॥ संजातरुधिरोत्पीडः प्रेक्षणीयोऽभवद्रणे । गभस्तिभिरिवार्कस्य संस्यूतो जल
दो महान् ॥ ४८ ॥ स चोदितो मदस्रावी भगदत्तेन वारणः । अभ्यधावत तान् सर्वान्
कालोत्सृष्ट इवान्तकः ॥ ४९ ॥ द्विगुणं जवमास्थाय कम्पयंश्चरणैर्महीम् । तस्य तत्सुमह
द्रूपं दृष्ट्वा सर्वे महारथाः ॥ ५० ॥ असह्यं मन्यमानाश्च नातिप्रमनसोऽभवन् । ततस्तु नृप
तिः क्रुद्धो भीमसेनं स्तनान्तरे ॥ ५१ ॥ आजघान महाराज शरेणानतपर्वणा । सोऽतिवि
द्धो महेष्वासस्तेन राज्ञा महारथः ॥ ५२ ॥ मूर्छयाभिपरीताङ्गो ध्वजयष्टिं समाश्रयत् ।
तांस्तु भीतान्समालक्ष्य भीमसेनञ्च मूर्छितम् ॥ ५३ ॥ ननाद बलवन्नादं भगदत्तः प्रता
पवान् । ततो घटोत्कचो राजन् प्रेक्ष्य भीमं तथा गतम् ॥ ५४ ॥ संक्रुद्धो राक्षसो घोरस्त
त्रैवान्तरधीयत । स कृत्वा दारुणां मायां भीरूणां भयवर्धिनीम् ॥ ५५ ॥ अदृश्यत निमे

तीव्र बाणों से घायल रुधिर के श्रोतों से युद्धमें ऐसा देखने के योग्यहुआ जैसे कि सूर्यकी किरणों से व्याप्त बड़ाबादल होताहै ।४४। फिर वह मदोन्मत्त कालरूप मृत्यु के समान राजा भगदत्तका पेला हुआ हाथी अत्यन्ततीव्र होकर पृथ्वी को अपने चरणों से कँपाता हुआ उन सब वीरों के सम्मुख दौड़ा उसके उस बड़े रूपको देखकर वह सब महारथी, उसको सहनेके योग्य न समझकर भयभीत हुए हे नरोत्तम फिर उसके अनन्तर राजा भगदत्तने महा क्रोधित होकर गुप्तग्रन्थी के बाणों से भीमसेन के वक्षस्थलको व्यथित किया।उस राजा से अत्यन्त घायल किया हुआ वह बड़ा धनुषधारी, महारथी मूर्च्छा युक्तहोकर ध्वजाकी यष्टी के सहारेसे नियत हुआ फिर उनको भयभीत और भीमसेनको मूर्च्छा युक्त देखकर, वह प्रतापी भगदत्त बड़े शब्दको करता हुआ गर्जा । ५० । हे राजा इसके पीछे घटोत्कच उस मूर्च्छावान् भीमसेन को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसीस्थान में गुप्त होगया और फिर घोररूप महाभयकारी मायाको रचके घोररूप में नियत होकर के

wounded by the sharp and bright arrows of the various warriors, dropped streams of blood and looked like a cloud over which the sun's rays fall 44 Then the mad elephant, urged by Bhagdatta and assuming the form of Death in his fury, rushed upon those warriors, shaking the earth with his feet All the warriors seeing his great size and thinking themselves unable to withstand his fury were much frightened. Then king Bhagdatta in great anger, with his sharp arrows, wounded Bhimsen who fainted with the loss of blood and held fast the staff of his banner to keep himself from falling down off his seat. Seeing those warriors terrified and Bhimsen in a swoon, Bhagdatta roared a loud roar. 50. Seeing Bhimsen in this state, Ghatotkach was much enraged and disappeared in the very place where he was standing. He reappeared in a short time on his own

पराक्रमम् ॥ ३८ ॥ शेषा येन्ये भवंस्तत्र ते भीमस्य शरार्दिताः । विप्रद्रुता दिशो राजन्
धर्ममार्गा महात्मना ॥ ३९ ॥ ततोऽब्रवीच्छान्तनवः सर्वानेव महारथान् । एष भीमो
रणे क्रुद्धो धार्तराष्ट्रान्महारथान् ॥ ४० ॥ यथाप्राग्र्यान् यथा ज्येष्ठान् यथ शूरांश्च सगतान्
निपात्यत्युग्रधन्वा तं प्रगृह्णीत माचिरम् ॥ ४१ ॥ एवमुक्त्वा ततः सर्वे धार्तराष्ट्रस्य
सैनिकाः । अभ्यद्रवन्त संक्रुद्धा भीमसेनं महाबलम् ॥ ४२ ॥ भगदत्तः प्रभिन्नेन कुञ्ज
रेण विशाम्पते । अभ्ययात्सहसा तत्र यत्रभीमो व्यवस्थितः ॥ ४३ ॥ आपतन्नेव चरणे
भीमसेनं शिलीमुखैः । अदृश्यं समरे चक्रे जीमूतइवभास्करम् ॥ ४४ ॥ अभिमन्युमुखा
स्तत्तु नामृष्यन्तमहारथाः । भीमस्याच्छादनं सख्ये स्वबाहुबलमाश्रिताः ॥ ४५ ॥ तपन्तं
शरवर्षेण सम तास्पर्य वारयन् । गजं च शर वृष्ट्यातु बिभिदुस्ते समं ततः ॥ ४६ ॥ स

को क्षुरप्रबाण से मारा, हे राजा तब वहां जो आपके शेषबचे हुए पुत्र थे वह भीमसेन के बलको देखकर उससे घायल और भयभीत होकर युद्ध से भागे । ३६ । इसके पीछे भीष्मजी सब महारथियों से बोले, कि यह युद्धमें क्रोधरूप भयानक धनुषधारी भीमसेन जो धृतराष्ट्र के महा शूरवीर बुद्धिमान पुत्रोंको गिराता और मारता है उसको पकड़ो, इसके पीछे दुर्योधन की सेनाके सबलोग इस आज्ञाको पाकर अत्यन्त क्रोध में भरकर उस महाबली भीमसेन के सम्मुख दौड़े, हेराजा राजाभगदत्त मतवाले हाथी की सवारी पर अकस्मात् वहां आटूटा जहां भीमसेन नियतथा । ४० । और युद्धभूमि में गिरतेही शिलाके घिसेहुए बाणों से भीमसेनको दृष्टि से ऐसा गुप्त करदिया जैसे कि बादल सूर्यको करता है वहां अपने भुजबलमें नियत और रक्षित अभिमन्यु आदि महारथी भीमसेनके ढकजानेको न सहसके, और क्रोधित होकर उन्होंने चारों ओरसे उसको अपने बाणोंकी वर्षासे रोककर चारों दिशाओं से मारे बाणों के उसकेहाथीको घायल किया, हे धृतराष्ट्र वह राजा प्राग्ज्योतिषका हाथी उन सब महारथियों के नाना प्रकार के चिह्नधारी प्रकाशित

your sons see ng the gieat stiength of Bhimsen fled from the battle field wounded and frightened 36 Thereupon Bhishma, addressing all the warriors, said, "This enraged and dieadful archer, Bhim who is killing and felling the brave and wise sons of Dhritarashtra, must be checked " All the warriors of Duryodhan's army, having received these o ders rushed upon Bhimsen in a great rage, and king Bhagdatta, mounted upon a mad elephant, pounced upon him 40 And as soon as he came there he hid Bhimsen with the sho ver of his arrows as clouds do the sun Then, Abhimanyu, firm in and protected by the strength of his own arms, could not bear the hiding of Bhimsen and in a great rage, Abhimanyu and his companions wounded Bhagdatta's elephant with the shower of their arrows and checked him The elephant of the king of Pragjyotish,

शरवृष्ट्याभिहतः सैमस्तैस्तैर्महारथैः । स गैयोतिप गजो राजन् नाना लिंगैः सुतेजनैः ॥ ४७ ॥ संजात रुधिरोत्पीडै प्रेक्षणीयो भवद्रणे । गैभस्तिभिरिवार्कस्य संस्यूतो जलदो महान् ॥ ४८ ॥ सचोदितो मदस्रावी भगदत्तेन वारणः । अभ्यधावत तान् सर्वान् काले त्सृष्ट इवांतकः ॥ ४९ ॥ द्विगुणं जव मास्थाय कम्पयंश्चरणैर्महीम् । तस्यतत्सुमहद्रूपं दृष्ट्वासर्वे महारथाः ॥ ५० ॥ असह्यं मन्यमानाश्च नैतिर्मनसो भवन् । ततस्तु नृपतिः क्रुद्धो भीमसेनंस्तनांतरे ॥ ५१ ॥ आजघान महाराज शरेणानतपर्वणा । सोति विद्धो महेष्वासस्तेनराज्ञामहारथः ॥ ५२ ॥ मूर्छयाभि परीतांगो ध्वजयष्टिं समाश्रयत् । तांस्तुभीतांन्समालक्ष्य भीमसेनञ्च मूर्छितम् ॥ ५३ ॥ ननाद बलवन्नादं भगदत्त. प्रतापवान् । ततोघटोत्कचो राजन् प्रेक्ष्यभीमं तथा गतम् ॥ ५४ ॥ संक्रुद्धो राक्षसो घोरस्तत्रैवांतरधीयत । सकृत्वादारुणां मायां भीरूणां भय वर्धिनीम् ॥ ५५ ॥ अदृश्यत निमे

तीव्र बाणों से घायल रुधिर के श्रोतों से युद्धमें ऐसा देखने के योग्यहुआ जैसे कि सूर्यकी किरणों से व्याप्त बड़ाबादल होताहै ।४४। फिर वह मदोन्मत्त कालरूप मृत्यु के समान राजा भगदत्तका पेला हुआ हाथी अत्यन्ततीव्र होकर पृथ्वी को अपने चरणों से कँपाता हुआ उन सब वीरों के सम्मुख दौड़ा उसके उस बड़े रूपको देखकर वह सब महारथी, उसको सहनेके योग्य न समझकर भयभीत हुए हे नरोत्तम फिर उसके अनन्तर राजा भगदत्तने महा क्रोधित होकर गुप्तग्रन्थी के बाणों से भीमसेनके वक्षस्थलको व्यथित किया उस राजा से अत्यन्त घायल किया हुआ वह बड़ा धनुषधारी, महारथी मूर्च्छा युक्तहोकर ध्वजाकी यष्टी के सहारेसे नियत हुआ फिर उनको भयभीत और भीमसेनको मूर्च्छा युक्त देखकर, वह प्रतापी भगदत्त बड़े शब्दको करता हुआ गर्जा । ५० । हे राजा इसके पीछे घटोत्कच उस मूर्च्छावान् भीमसेन को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसीस्थान में गुप्त होगया और फिर घोररूप महाभयकारी मायाको रचके घोरहीरूप में नियत होकर के

wounded by the sharp and bright arrows of the various warriors, dropped streams of blood and looked like a cloud over which the sun's rays fall. 44. Then the mad elephant, urged by Bhagdatta and assuming the form of Death in his fury, rushed upon those warriors, shaking the earth with his feet All the warriors seeing his great size and thinking themselves unable to withstand his fury were much frightened. Then king Bhagdatta in great anger, with his sharp arrows, wounded Bhimsen who fainted with the loss of blood and held fast the staff of his banner to keep himself from falling down off his seat. Seeing those warriors terrified and Bhimsen in a swoon, Bhagdatta roared a loud roar. 50. Seeing Bhimsen in this state, Ghatotkach was much enraged and disappeared in the very place where he was standing. He reappeared in a short time on his own

पार्थोद्घोररूप समास्थितः। ऐरावणं समारूढः सवै मायाकृतं स्वयम् ॥ ५६ ॥ तं च
चान्येपि दिङ्नागा बभूवुरनुयायिनः। अञ्जनो वामनश्चैव महापद्मश्च सुप्रभः ॥ ५७ ॥ त्रय
एते महानागा राक्षसैः समधिष्ठिताः। महाकायास्त्रिधा राजन् प्रस्रवन्तो मदं बहु ॥५८॥
तेजोवीर्य बलोपेता महाबल पराक्रमाः। घटोत्कचस्तु स्वं नाग चोदयामास तत्र वै ५९
सनागं भगदत्तन्त हन्तुकाम. परंतपः। ते चान्ये चोदितानागा राक्षसैस्तैर्महाबलै ॥६०॥
परिपेतु सुसंरब्धाश्चतुर्दंष्ट्राश्चतुर्दिशम्। भगदत्तस्य तं नाग विषाणैरभ्यपीडयन् ॥ ६१ ॥
सम्पीड्यमानस्तैर्नागैर्वेदनार्त. शराहतः। अनदत्सुमहानाद मिन्द्राशनिसमस्वनम् ॥ ६२॥
तस्य तं नदतो नादं सुघोर भीमनिःस्वनम्। श्रुत्वाभीष्मोऽब्रवीद्द्रोण राजानंच सुयोधनम्
॥ ६३ ॥ एष युध्यति संग्रामे हैडिम्बेन दुरात्मना। भगदत्तो महेष्वासः कृच्छ्रेच परि

अपने रचे हुए माय रूपी ऐरावत पर चढ़कर आधे ही निमेष में दृष्टिगोचर हुआ, और महा सुन्दर प्रभावी अंजन, वामन, महा पद्मनाम दूसरे दिग्गज उसके पीछे चलने वाले हुए। ५४। हे राजा वह बड़े शरीर वाले सब अंगों से मद चुने वाले तीनों महा गजराज राक्षसों समेत नियत हुए, जोकि तेजी से पराक्रम युक्त बड़े वेगवाले थे फिर घटोत्कच ने अपने हाथीको युद्ध में भेजा, हे शत्रुसन्तापी धृतराष्ट्र वह हाथी भगदत्त के मारनेको उपस्थित हुआ और वह दूसरे महावली हाथीभी राक्षसों के प्रेरित अत्यन्त क्रोधित चार २ दांतों से महा भयानकरूप दिशाओं में पहुँचे और भगदत्त के हाथीको अपने दांतों से महापीड़ामान किया तबतो इन हाथियों से महापीड़ित दुःखों से व्याकुल और वाणों से घायल उस हाथी ने इन्द्रके वज्र के समान महाघोर शब्द किया उसके महाघोर शब्दको सुनकर, भीष्मजी द्रोणाचार्य और राजा दुर्योधन से बोले। ६०। कि यह बड़ा धनुषधारी भगदत्त युद्धमें दुरात्मा घटोत्कचके साथ लड़ताहै और आपत्तिमें फँसा है। ६१। यह राक्षस बड़े शरीरवाला है और राजाभी बड़ाक्रोधकरनेवाला है निश्चय करके कालमृत्यु

elephant followed by Anjan, Baman, Mahapadma and other elephants of great beauty and prowess. These huge princes of elephants with juice dropping down from their limbs were ridden over by rakshases of great velocity and strength. Ghatokach then urged forward his own elephant which was soon ready to kill Bhagdatta. The other powerful elephants too, urged by the rakshases rushed in a great rage in different directions and with their sets of four tusks wounded the elephant of Bhagdatta. Wounded and harrassed by those elephants, the elephant of Bhagdatta made a tremendous noise like that of thunder. Hearing that noise Bhishm said to Dronacharya and Duryodhana. 60 "This great archer Bhagdatta fighting with ill-natured Ghatotkach is fallen in great trouble. The rakshas is very huge of body and the king is much enraged, surely these two warriors

वर्तते ॥ ६४ ॥ राक्षसश्च महाकायः सत्त्वराजाति कोपनः। एतौ समेतौ समरे कालमृत्यु समावुभौ ॥ ६५ ॥ श्रूयते चैव हृष्टानां पांडवानां महास्वनः। हस्तिनश्चैव सुमहान् भीतस्य करितस्वनिः ॥ ६६ ॥ तत्र गच्छाम भद्रं वो राजानं परिरक्षितुम्। अरक्ष्यमाणः समरे क्षिप्रं प्राणान् विमोक्ष्यति ॥ ६७ ॥ ते त्वरध्वं महावीर्याः किं चिरेण प्रयामहे। महान् हि वर्तते रौद्रः संग्रामो लोमहर्षणः ॥ ६८ ॥ भक्तश्च कुलपुत्रश्च शूरश्च पृतनापतिः। युक्तं तस्य परित्राणं कर्तुमस्माभिरच्युत ॥६९॥ भीष्मस्य तद्वचः श्रुत्वा सर्व एव महारथाः। द्रोणभीष्मौ पुरस्कृत्य भगदत्तपरीप्सया ॥ ७० ॥ उत्तमं जवमास्थाय प्रययुर्यत्र सोऽभवत्। तान् प्रयातान् समालोक्य युधिष्ठिर पुरोगमाः ॥ ७१ ॥ पंचालाः पांडवैः सार्धं पृष्ठतोऽनुययुः परान्। तान्यनीकानि संप्रेक्ष्य राक्षसेंद्रः प्रतापवान् ॥ ७२ ॥ ननाद सुम

के समान दोनों युद्ध में जुटे हुए हैं और पांडवों के प्रसन्नता के बडे शब्द सुने जाते हैं, और उसभयभीत हाथी के व्याकुलता के भी बहुतसे शब्दसुने जाते हैं आप लोगों की भलाई के लिये हम राजाकी रक्षा के लिये वहां पर चलें, नहीं तो युद्ध में अरक्षितहोकर वह शीघ्रही प्राणोंको त्यागेगा हे बड़े पराक्रमियो इस हेतुसे शीघ्रता करो विलम्ब मतिकरो, यह रोमहर्षण करनेवाला महारुद्र रूप युद्ध वर्तमान है यह सेनापति भगदत्त भक्तकुल पुत्रहोकर वड़ाशूरहै हेविजयीलोगो हमलोगों को उसकी रक्षाकरनी योग्यहै ।६९। भीष्मजीके इसवचनको सुनकर सब राजा लोग द्रोणाचार्य को आगे करके भगदत्त पर प्रीति करके वड़ी तीव्रता से उसके समीपगये इन जाते हुए शत्रुओं को देखकर पांडवों समेत पांचाल देशी अपने आगे राजा युधिष्ठिर को करके पीछेकी ओरसे चले, फिर राक्षसोंका राजा प्रतापी घटोत्कच उन सेनाओं को देखकर आकाशको शब्दायमान करता हुआ बड़े शब्दसे गर्जा, उसके शब्दको सुनकर और लड़ते हुए हाथियों को देखकर भीष्मजी द्रोणाचार्य से बोले, कि मुझको इस महासाहसी घटोत्कच के साथ में युद्ध करना अच्छा नहीं

are engaged in mortal combat and it is therefore that we hear the cheerful cries of the Pandavas at the terrified noise of that elephant. Let us go to the help of the king, for in so doing lies our welfare. Unprotected in battle the king will soon lose his life. Hasten thither, warriors! The fight is very thick and dreadful. Bhagdatta the commander of our armies is a very brave man of a noble family. It is our duty to protect him 66. At these words of Bhishm all the princes led by Dronacharya, hastened to the battle field out of compassion for Bhagdatta, and seeing them advance the Pandavas with the Panchalas led by Prince Yudhishthir followed in their wake, Brave Ghatotkach the prince of rakshases, filled the firmament with his roars at the sight of those warriors. On hearing his war cry and at the sight of those fighting elephants, Bhishm said to Dronacharya

हानाद् विस्फोटमशने रिव । तस्य त निनद श्रुत्वा ह्द्वानागांश्च पुप्यत. ॥ ७३ ॥ भी
ष्म शातनवो भूयो भारद्वाज मभाषत । नरोच तेमे सग्रामो हैडिंबेन दुरात्मना ।७४।
बलवीर्य समा विष्ट ससहायश्च साम्प्रतम् । नैवशक्यो युधाजेतु मपिवज्रभृतास्वयम्
॥ ७५ ॥ लब्ध लक्ष प्रहारीच वयच श्रान्त वाहना. । पचालै पाडवैश्च दिवस क्षत
विक्षता ॥ ७६ ॥ तन्नमेरोचते युद्ध पाडवैर्जित काशिभि । घुष्यतामवहारोद्य श्वोयो
त्स्याम. परै सह ॥ ७७ ॥ पितामह वच. श्रुत्वा तथा चक्रु स्मकौरवाः । उपायेनाप
यानते घटोत्कचभयार्दिता ॥ ७८ ॥ कौरवेषु निवृत्तेषु पाडवाजित काशिन । सिंह
नाद न्भृश चक्रु शखान् दध्मुश्च भारत ॥ ७९ ॥ एव तद् भवद्युद्ध दिवस भारतर्षभ।
पाडवाना कुरूणाच पुरस्कृत्यघटोत्कचम् ॥ ८० ॥ कौरवास्तुततो राजन् प्रययु शिबिर
स्वकम् । व्रीडमाना निशाकाले पाडवैर्ये पराजिता. ॥ ८१ ॥ शरविक्षत गात्रास्तु पाडु

विदित होता है क्योंकि वह इस समय बल पराक्रम से भराहुआ महामद वाला है,
यह इन्द्रसे भी विजय करने के योग्य नहीं है, और लक्षभेदी होकर प्रहार करने
वाला है और हम थलकी सवारी वाले है, पांचाल और पांडवों से सब दिन घायल
हुए इसी हेतु से विजय से शोभा पानेवाले पांडवों के साथ युद्ध करना अच्छा
नहीं ज्ञात होताहै, अब विश्राम करो प्रातःकाल शत्रुओं से लड़ेंगे । ७४ । अत्यन्त
प्रसन्न चित्त शूरवीरों ने इस पितामह के वचनको सुनकर वैसाही किया, फिर वह
घटोत्कच के भयसे महापीड़ित युक्ति के द्वारा युद्ध सेहटगये कौरवों के हटजाने पर
विजय से शोभापाने वाले पांडवों ने, शंख और बंशियों के शब्दों समेत सिंहनाद
किये हे राजा इस रीति से कौरव और पाडवोंका यह युद्ध घटोत्कच को आगे कर
के दिन भर हुआ तदनन्तर रात्रिही कौरव लोग पांडवों से पराजित बाणों से
घायल लज्जा में भरे रात्रि के समय अपने २ डेरों को गये हे महाराज शत्रु
फिर महारथी पांडवभी युद्ध में प्रसन्न चित्त भीमसेन और घटोत्कच को आगे कर

We donot like to fight against Ghatotkach for he is at this time f— of prowess and strength and unconquerable by Indra himself. He hits the marks precisely, while we are mounted on earthly cars. Being wounded at the hands of the Panchals and the Pandavas thoroughout the day it is not well to fight against the conquering Pandavas. Let us retire to rest now. We shall fight the enemies in the morning" 74. The warriors with a cheerful mind acted upon the advice of the grandfather and being much afraid of fighting against Ghatotkach, they retired from battle. At the retreat of the Kauravas the conquering Pandavas mixed their roars with blasts from the conchs and trumpets. Thus the Kauravas and the Pandavas fought the whole day under the leadership of Ghatotkach, and the Kauravas vanquished and wounded by arrows slunk away in shame to their

पुत्रामहारथाः । युद्धे सुमनसो भूत्वा जग्मुः स्व शिविरं प्रति ॥ ८२ ॥ पुरस्कृत्य महाराज भीमसेन घटोत्कचौ । पूजयन्तस्तदान्योन्यं मुदापरमया युताः ॥ ८३ ॥ नदन्तो विविधान्नादांस्तूर्यस्वनविमिश्रितान् । सिंहनादांश्च कुर्वन्तो विमिश्रान् शंखनिस्वनैः ॥ ८४ ॥ विनर्दन्तो महात्मानः कम्पयन्तश्च मेदिनीम् । घट्टयन्तश्च मर्माणि तवपुत्रस्य मारिष ॥ ८५ ॥ प्रयाताः शिविरायैव निशाकाले परन्तप । दुर्योधनस्तु नृपतिर्दीनो भ्रातृवधेनच ॥ ८६ ॥ मुहूर्त्त चिंतयामास बाष्पशोक समाकुलः । ततः कृत्वा विधिं सर्वं शिविरस्य यथाविधि । प्रदध्यौ शोकसन्तप्तो भ्रातृव्यसनकर्शितः ॥ ८७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि चतुर्थ दिवसावहारे चतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

के अपने डेरों में गये, और वहां जाकर वह शत्रुसंतापी महात्मा बड़ी प्रसन्नतासे युक्त प्रशंसा करते हुए तुरीय बाजे बजाते शोभा युक्त होकर नानाप्रकार के शब्दों से गर्जे और सिंहनाद युक्त शंखों को बजाते गर्जनाओं से पृथ्वी को कंपायमान करते, और आपके पुत्रों के मर्मों को चलायमान करते हुए सायंकाल के समय डेरों में गये, फिर अश्रुपात युक्त चिन्ता और शोक से व्याकुल भाई बिरादरियों के मरणसे दुःखित राजा दुर्योधन एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त चिन्ता में मग्न हुआ, तदनन्तर बुद्धि के अनुसार डेरों के सब प्रबन्धको करके शोकसे खिन्न भाइयों के शब्दसे निर्बल होकर बड़े विचार में प्रवृत्त हुआ ॥ ८७ ॥

---

camps for the night. The Pandavas, preceded by Bhimsen and Ghatotkach went cheerfully to their tents and there they blew their horns and roared in glee, giving praises to their warriors. With the sounds of musical instruments and roars they shook the hearts of your sons as they entered their tents for the night Prince Duryodhan, careworn, shedding tears for the loss of his kinsmen, remained plunged in grief for some time, and having made arrangements about the comforts of his army he was again plunged in grief for the death of his brothers." 83.



धृतराष्ट्र उवाच । भयंमे सुमहज्जातं विस्मयश्चैवसञ्जय । श्रुत्वा पांडुकुमाराणां कर्मदेवैः सुदुष्करम् ॥ १ ॥ पुत्राणांच पराभावं । श्रुत्वा सञ्जय सर्वशः । चिंता मेमहती सूतभविष्यति कथंत्विति ॥ २ ॥ ध्रुव विदुरवाक्यानि धक्ष्यंति हृदयंमम । यथाहि दृश्यते सर्वं दैवयोगेनसञ्जय ॥ ३ ॥ यत्र भीष्म मुखान् सर्वान् शस्त्रज्ञ योधसत्तमान् । पांडवानामनीकेषु योधयंति प्रहारिण ॥ ४ ॥ केनावध्यामहात्मानः पांडुपुत्रामहाबलाः । केनदत्तवरास्तात किंवाज्ञान विदंतिते ॥ ५ ॥ येनक्षयनगच्छंति दिवितारागणाइव ॥ पुनःपुनर्नमृष्यनिहतसैन्यतुपांडवै ॥ ६ ॥ मय्येवदंडः पतनिदैवात्परमदारुणः ॥ यथा ऽवध्याः पाण्डुसुतायथावध्याश्चमेसुताः ॥ ७ ॥ एतन्मेसर्वमाचक्ष्वयाथातथ्येनसञ्जय ॥ नहिपारंप्रपश्यामिदुःखस्यास्यकथंचन ॥ ८ ॥ समुद्र

अध्याय ॥ ६५ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय देवताओंसे भी कठिनता से करने के योग्य पांडवों के कर्मको सुनकर मुझको बड़ाभय और आश्चर्य उत्पन्न होता है हे संजय सब प्रकार से अपने पुत्रोंकीही पराजयको सुनकर मुझको यही चिन्ता है कि परिणाम कैसा होगा, निश्चय विदुरजीके वचन मेरेहृदय को जलाते हैं हे संजय दैवयोग से उन्हीं का कहना सत्यहोता दिखाई देता है जहां कि पांडवों की सेना के वह शूर वीर उन युद्ध कर्त्ताओं से जिन में शस्त्रवेत्ता महाप्रतापी भीष्म जी मुख्यहैं युद्ध करतेहैं, उन महाबली महात्मा पांडवों ने कौनसी तपस्या की है वा किससे कौनसा वरदान पाया है अथवा वह किस ज्ञान को जानते हैं, जिस कारण से कि वह नाशको नहीं पाते हैं हे संजय पांडवोंसे वारम्वार मारे हुए सेना के मनुष्यों को मैं नहीं सह सकताहूं, दैवमुझ को ऐसा कठिन दंड देता है कि पांडव निर्विघ्न हैं और मेरे पुत्र घायल हैं, हेसंजय इसका हेतुमुझसे मल समेत वर्णन करो मैं किसी दशामें भी इस दुःखका अन्त ऐसे नहीं देखताहूं जैसे कि भुजाओं से तिरता हुआ मनुष्य म-

CHAPTER LXV

I am awed and amazed," said Dhritrashtra to Sanjaya," to hear the brave hard deeds of the Pandavas Hearing the defeat of my sons on all occasions, I am afraid of the result Surely the words of Vidur burn my breast. It appears that the words of Sanjaya are fated to be realised The Pandava warriors fight against those warriors who have for their leader Bhishm the master of the use of weapons and of immense prowess. I donot know what penances the great Pandavas have performed, what boon they have received or what knowledge they are master of that they donot die I cannot bear the continuous destruction of my armies by the Pandavas. Gods gives me a severe punishment in as much as the Pandavas are safe and sound and my sons are wounded. Tell me the reason of all this in detail, Sanjaya. I donot see the end of my miseries like one swimming in the midst

स्येचमहतोंमज्जांश्यांप्रतरन्नरः ॥ पुत्राणांव्यसनंमन्ये ध्रुवंप्राप्तसुदारुणम् ॥ ९ ॥ घात यिष्यतिमे सर्वान् पुत्रान् भीमो नसंशयः॥ नहि पश्यामितंवीरंयोमेरक्षेत्सुतान्रणे॥१०॥ ध्रुव विनाशः संप्राप्त पुत्राणां मम संजय । तस्मान्मेकारणं सूत शंसि चैव विशे षतः ॥ ११ ॥ दृष्ट्वतांवै यथा तत्वं सर्व माख्यातु मर्हसि ।"दुर्योधनश्च यच्चक्रे दृष्ट्वास्वा न् विमुखान् रणे" ॥ १२ ॥ भीष्मद्रोणौ कृपश्चैव,सौबलश्च जयद्रथः । द्रौणिर्चापि महे ष्वासो विकर्णोवा महाबलः ॥ १३ ॥ निश्चयोवापि कस्तेषां तदाह्यासीन् महात्मनाम् । विमुखेषु महाप्राज्ञ ममपुत्रेषु संजय ॥ १४ ॥ संजय उवाच ॥ शृणुराजन्नवहितः श्रुत्वा चैवावधारय । नैव मन्त्र कृत किंचिन् नैव मायांतथा विघाम् ॥ १५ ॥ नवै विभीषिकां कांचि द्राजन् कुर्वति पांडवाः । युध्यन्ति ते यथान्याय शक्तिमतश्च संयुगे ॥१६ ॥ धर्मेण सर्व कार्याणि जीवितादीनि भारत । आरभते सदा पार्थाः प्रार्थयानैर्मे हयशः ॥ १७॥

मुद्रको अन्तनहीं पाता हैं मैं निश्चय करके मानताहूं कि मेरेपुत्रों को महाभयानक दुःख वर्त्तमान हुआ मैं निस्सन्देह जानताहूं कि भीमसेन मेरे सब पुत्रोंको मारेगा, मैं ऐसावीर किसीको नहीं देखताहूं,जो युद्धमे मेरे पुत्रोंको बचावे । १० । हे संजय युद्ध में मेरेपुत्रों का नाश निश्चय होता दीखता है हे सूत इस हेतुसे तुमसब हेतु पूर्व्वक वृत्तान्त मुझ से वर्णन करो और दुर्य्योधन ने युद्ध में अपने युद्धकर्त्ताओं को विमुख देखकर जो जो किया अथवा भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य शकुनि जयद्रथ महाधनुषधारी अश्वत्थामा और महापराक्रमी विकर्ण ने जो २ किया, उस को और हे महाज्ञानी मेरेपुत्रोंके उदासीन होनेपर इन महात्माओं ने जो निश्चय किया इन सब बातोंको ब्योरे समेत यथार्थ मुझ से वर्णन करो । १४ । संजय बोला कि हेराजा सावधान होकर सुनो और सुनकर विश्वास करो कि पाण्डवों का न तो कुछ अनुष्ठानहै न किसी प्रकारकी मायाहै, न वह किसी प्रकारकी भया- नकता करते हैं वह केवल युद्ध में समर्थ होकर न्याय के अनुसार लड़ते हैं, हे भरत वंशी बड़े यशको चाहने वाले पाण्डव जीवन आदिसब कर्मों को सदैव धर्मयुक्त हो-

of the ocean with the help of his arms alone. "Surely I believe that my sons are in great trouble. I know for certain that Bhimsen will destroy all my sons I see no warrior that can save the life of my sons. 10. I am sure of the destruction of my sons in battle. Tell me the reason of all this, Sut! Tell me all that Duryodhan did on finding his warriors turn back. Tell me of the deeds done by Bhishma, Dronacharya, Kripacharya, Shakuni, Jayadrath the great archer, Ashwathama and Vikarn of immense prowess. Tell me all that these warriors resolved to do when my sons were in distress" 14 "Hear attentively and believe me king!" said Sanjaya "that the Pandavas have neither recourse to aphorism nor to deception or cruelty; but they are endowed with strength and fight according to law. The Pandavas

नले युद्धा न्निवर्त्तंते धर्मोपेता महाबला । श्रियापरमया युक्ता यतो धर्मस्ततो जय
॥ १८ ॥ तेनावध्यारणे पार्था जययुक्ताश्च पार्थिव । तवपुत्रा दुरात्मान पापेष्वभिरता
सदा ॥ १९ ॥ निष्ठुराहीन कर्माणस्तेनहीयन्तिसयुगे । सवहूनि नृशंसानि पुत्रैस्तव ज
नेश्वर ॥ २० ॥ निकृतानीह पांडूनां नीचै रिव यथा नरै । सर्वच तदनादृत्य पुत्राणातव
किल्विषम् ॥ २१ ॥ सापह्नवा सदैवासन् पाडवा पाडुपूर्वज । नचैतान् बहु मन्यते
पुत्रास्तव विशाम्पते ॥ २२ ॥ तस्य पापस्य सतत क्रियमाणस्य कर्मण । सांप्रतं सुम
हद्घोर फल प्राप्त जनेश्वर ॥ २३ ॥ सत्व भुक्ष्व महाराज सपुत्र ससुहज्जन । नावबु
ध्यसि यद्राजन् वार्यमाणा सुहृज्जनै ॥२४॥ विदुरेणाथ भीष्मेण द्रोणेनच महात्मना ।
तथामयाचाप्यसकृद्वार्यमाणो नबुध्यसे ॥ २५ ॥ वाक्यं हितञ्च पथ्यञ्च मर्त्यं पथ्य मिवौ

कर प्रारंभ करते है वह धर्मवान् महाबली बड़ी शोभा पूर्वक युद्ध से मुख नहींमोड़ते।
जिधरधर्म है उधरही विजय होती है, इस हेतुसे पाण्डवलोग युद्ध में निर्विघ्न होकर
विजयको पातेहैं और आपके निर्बुद्धी पुत्र सदैव पापों में प्रीतिकरनेवाले, कठोरवक्ता
और दुष्कर्म्मी है इसी हेतुसे युद्ध में पराजयको पाते हैं हे राजन् आपके पुत्रों ने
पाण्डवोंके ऊपर हिंसायुक्त ऐसे अनेक दुष्कर्म किये जैसे कि नीच मनुष्य करते हैं
हे पाण्डुके बड़ेभ्राता धृतराष्ट्र पाण्डव आपके पुत्रो के उनसब आप अपराधोंको
क्षमा करके वैसेही निश्छल बनेरहे आपके पुत्र इनको अच्छे प्रकारसे नहीं मानते है
।२२। उसबारंबार किये हुये पाप कर्मों का बड़ाघोर फल किंपाक वृक्षफलके समान
वर्त्तमान हुआहै, हे महाराज आपने अपने सुहृदों के निषेध करने से भी नहींमाना
इस हेतुसे आप अपनपुत्र सहायकों समेत उसफल को भोगोगे, विदुरजी भीष्मजी
द्रोणाचार्यजी और अन्य श्रेष्ठलोगों समेत मैंने भी वारंवार आपको समझाया परन्तु
आपनमाने नही अवसावधानहोरहेहो, और परिणाममें आनन्द देनेवाले वचनोंकोभी
ऐसे नहीं सुनते हो जैसे कि निर्बुद्धी मनुष्य पथ्य और गुणदायी औषधी को नहीं

desirous of fame begin all their work in life with honesty Those brave warriors donot turn back from fighting in a just cause and victory is sure to fall on the side of justice. For these reasons the Pandavas gain victory without any mishap, while your sons, foolish lovers of sin, are cruel in words and deeds and suffer defeat. Your sons were cruel and harsh to the Pandavas like low born men but the Pandavas forgave all those faults of your sons and remained free from deception, yet they are not respected by your sons. 22
The dire fruit of all these sinful deeds, committed again and again is about to become ripe. You did not hear king, the advice of your friends, and therefore you will reap the fruit of your so doing together with your sons and friends. Vidur, Bhishm, Dronacharya and other good men, as well as myself remonstrated with you again and again, but you neither heard nor attended to us before nor you would wake even now

पथम् । पुत्राणां मतमाज्ञाय जितान् मन्यसि पांडवान् ॥ २६ ॥ शृणुभूयोयथातत्वं यन्मां त्व परिपृच्छसि । कारण भरतश्रेष्ठ पांडवानांजय प्रति ॥ २७ ॥ तत्तेहं कथ यिष्यामि यथाश्रुत मरिंदम । दुर्योधनेनसंपृष्ट एतमर्थं पितामहः ॥ २८ ॥ दृष्ट्वाभ्रातृन्रणे सर्वान् निर्जितांस्तु महारथान् । शोकसंमूढ हृदयो निशाकालेस्म कौरव. ॥ २९ ॥ पितामहं महाप्राज्ञं विनये नोपगम्यह । यद्ब्रवीत्सुतस्तेसौ तन्मे शृणु जनेश्वर ॥ ३० ॥ दुर्योधन उवाच ॥ द्रोणश्चत्वंच शल्यश्च कृपो द्रौणिस्तथैवच । कृतवर्माच हार्दिक्यः कांबोजश्च सुदक्षिणः ॥ ३१ ॥ भूरिश्रवा विकर्णश्च.भगदत्तश्चवीर्यवान् । महारथा समाख्याता. कुलपुत्रास्तनुत्यजः ॥ ३२ ॥ त्रयाणामपि लोकानां पर्याप्ताइति मे मति । पांडवानां सम स्ताश्च नातिष्ठन्तपराक्रमे ॥ ३३ ॥ तत्र मे संशयोजातस्तन्ममाचक्ष्व पृच्छत । यं समा श्रित्य कौंतेया जयं त्यस्मान् क्षणे क्षणे ॥ ३४ ॥ भीष्म उवाच ॥ शृणु राजन् वचोमह

पाता तुम अपने पुत्रों के मतमें,नियत होकर पाण्डवोंको विजयी देखतेहो । २६ । और हे भरतर्षभ जो पाण्डवोंकी विजयका हेतु तुम पूछतेहो, उसकोभी मैं कहताहूं हे राजन् जैसा कि मैंनेसुना है और उसी को दुर्य्योधनने भीष्मजी से पूछा है, अर्थात् युद्धमें पराजित सब महारथी भाइयोंको देखकर शोक से व्याकुल मन आ पका पुत्र दुर्य्योधन रात्रि के समय बड़ी नम्रता से महाज्ञानी भीष्म पितामह के पास जाकर जो वचन बोला वह सब मैं तुमसे कहताहूं । ३० । तात्पर्य यह है कि दुर्यो- धन ने कहा कि द्रोणाचार्य और तुम व शल्य व कृपाचार्य अश्वत्थामा व कृतवर्मा व हार्दिक्य व कम्बोज सुदक्षिण व भूरिश्रवा व विकर्ण व पराक्रमी भगदत्त यह सब महारथी और सब कौरव लोग शरीर के त्यागने वाले, तीनों लोकों में सामर्थ्यवान् प्रसिद्धहैं मेरी बुद्धि से यहसब लोग पाण्डवों के पराक्रम में नियत नहीं होतेहैं यह मुझको बड़ा सन्देहहै कि ऐसे हमारे सहायकोंके होनेपरभी पाण्डव लोग हमको पद

You donot give ear to advice which may bring you good in the end. Your case is like that of a foolish patient who takes neither wholesome food nor good medicine Acting upon the opinion of your sons you see the Pandavas again and again victorious 26. I shall tell you the cause of the Pandavas' victory if you are inclined to hear it. I quote the words which Bhishm said in reply to Duryodhan's question to the same effect. Finding all his brothers defeated in battle, Duryodhan, uneasy of mind and much humiliated, went to wise Bhishm the grandfather. I shall tell you the purport of what he said 30. "You and Dronacharya, Shalya, Kripacharya, Ashwathama, Kritvarma, Hardikya, Camboj, Sudakshin, Bhurishrava, Vikarn and valliant Bhagdatta, all these warriors and Kauravas," said Duryodhan, are ready to die for me. They are famous throughout the three worlds for their great strength and yet they donot equal in prowess to the Pandavas I have a grave doubt in my mind, for having such celebrated

यथा वक्ष्यामि कौरव । बहुशश्चानयोक्तोसि नच मे तत्त्वयाकृतम् ॥ ३५ ॥ क्रियतांपाड
वै सार्धं शमो भरत सत्तमं । एतत्तान महं मन्ये पृथिव्यास्तैवचा विभो ॥ ३६ ॥ भुङ्क्ष्वे
मां पृथिवीं राजन् भ्रातृभि सहित सुखी । दुर्हृदस्तापयन् सर्वान् नदयश्चापिबांधवान्
॥ ३७ ॥ नच मे क्रोशतस्तात श्रुतवानसि वै पुरा । तदिद समनुप्राप्तं यत्पाण्डूनवमन्यसे
॥ ३८ ॥ यश्च हेतुरवध्यत्वे तेषामक्लिष्टकर्मणाम् । तं शृणुष्वमहीपालवाहो मम कीर्त्तयत
प्रभो ॥ ३९ ॥ नास्ति लोकेषु तद्भूत भविता नो भविष्यति । योजयेत्पांडवान्सर्वान्
पालिताञ्छार्ङ्गधन्वना ॥ ४० ॥ यत्तु मे कथितं तात मुनिभिर्भावितात्मभि । पुराणगी
त धर्मज्ञ तच्छृणुष्व यथा तथम् ॥ ४१ ॥ पुराकिल सुरा सर्वे ऋषयश्च समागता ।
पितामह मुपसेदु पर्वते गन्धमादने ॥ ४२ ॥ तेषामध्ये समासीनः प्रजापतिर
पश्यत । विमान प्रज्वलद्भासास्थित प्रवरमंबरे ॥ ४३ ॥ ध्यानेना वेद्यतद्ब्रह्मा कृत्वा

पदपर विजय करते है । ३४ । भीष्मजी वोले हे कौरवों के राजा मेरे कहनेको सुन भैने तुझको वहुतवार समझाया परन्तु तैने न माना भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ पाण्डवों से तुमसन्धि करलो हे दुर्य्योधन इसी में तेरी और सबसंसारकी कुशल है, हेतात भाइयों समेत सबमित्रों को प्रसन्न करके अपने बांधवों समेत आनन्दपूर्वक इस पृथ्वी को भोगो और पहलेभी हमने वारंवार कहा उसको तुमने नहीं सुना सुनो जो कोई पांडवोंका अपमान करता है उसका यहीफल वर्त्तमान होना है वही अब तुमकोभी वर्त्तमान है, हे समर्थ महाराजउन सुगमकर्म्मी पांडवों के अवध्य होनेका जो हेतु है उसको मुझसे सुन, लोकोंमें ऐसाकोई बलीनही है नकभीकोईहोगा जो शार्ङ्गधनुष धारी के शरणमें रक्षित सबपांडवोंको विजयकरे । ४० । हेधर्मज्ञ जो शुद्धअन्तःकरण वाले मुनियों ने पुराणो में कहा है उसको तुम ठीकठीक पूर्णता से सुनो, निश्चय है कि प्राचीन समयमे सब देवता और ऋषियों ने इकट्ठेहोकर गन्धमादन पर्व्वत पर पितामहजी की उपासना की फिर उन सबोंमें बैठेहुए प्रजापति ब्रह्माजीने तेज

men for my allies, the Pandavas gain victory over us at each step" 34 "Hear my words, Prince of the Kauravas," said Bhishma in reply, "I have often remonstrated with you, but to no purpose Make peace with the Pandavas best of the descendants of Bharat, for the safety of you and of all the world lies in this Make your brothers, friends and kinsmen happy, and rule over the earth I have often said this to you in vain. Whoever will make war on the Pandavas will get the same result as you are about to do Hear the reason why the Pandavas are indestructible There is no warrior in the world, nor there will ever be, who can conquer the Pandavas as long as they are under the protection of the wielder of Sharang bow 40 Hear in detail what the pure minded munis of old have said In the days of yore, all the gods and rishis together were worshipping Brahma who, seated in their midst, saw a glorious celestial in the firmament above

च नियतोंजलिम् । नमश्चकार हृष्टात्मा पुरुषं परमेश्वरम् ॥ ४४ ॥ ऋषयस्त्वथ देवाश्च दृष्ट्वाब्रह्माण मुत्थितम् । स्थिताः प्रांजलयः सर्वे पश्यतो महदद्भुतम् ॥ ४५ ॥ यथावच्चतमभ्यर्च्य ब्रह्माब्रह्मविदांवरः । जगादजगतः स्रष्टापरंपरमधर्मवित् ॥ ४६ ॥ विश्वावसुर्विश्वमूर्तिर्विश्वेशो विष्वक्सेनोविश्वकर्मावशीच । विश्वेश्वरो वासुदेवो सितस्मायोगात्मानं दैवतंत्वामुपैमि ॥ ४७ ॥ जयविश्वमहादेव जय लोकहितेरत । जययोगीश्वर विभो जय योगपरावर ॥ ४८ ॥ पद्मगर्भ विशालाक्ष जयलोकेश्वरेश्वर । भूतभव्य भवन्नाथजयसौम्यात्मजात्मज ॥ ४९ ॥ असंख्येय गुणाधार जय सर्व परायण । नारायणसुदुष्पार जय शार्ङ्गधनुर्धर ॥ ५० ॥ जयसर्व

से प्रकाशित अत्यन्त सुन्दर आकाशमें वर्त्तमान उत्तमविमान को देखा, ब्रह्माजीने ध्यानकेद्वारा जानकर हाथजोड़के उस घटघटवासी को नमस्कार किया, फिरसब देवता और ऋषिलोगभी वहांसे उठे हुए ब्रह्माजीको और उसअपूर्व्व अद्भुतरूपको देखकर हाथजोड़कर नियतहुए, फिर ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठ धर्मज्ञ संसारकेस्वामी ब्रह्माजीने बुद्धि के अनुसार उसका पूजन करके इस परम उत्तम और पवित्र स्तोत्रको पढ़ा ॥ स्तोत्र । विश्वावसुर्विश्व मूर्त्ति र्विश्वेशो विष्वक्सेनो विश्वकर्मा वशीच ॥ विश्वेश्वरो वासुदेवो सितस्मायोगात्मानंदैवतं त्वामुपैमि । ४७ । जयविश्वमहादेव जय लोकहितेरत ॥ जय योगीश्वर विभो जय योगपरावर । ४८ । पद्म नाभ विशालाक्ष जय लोकेश्वरेश्वर ॥ भूतभव्यभवन्नाथजयसौम्यात्मजात्मज । ४९ । असंख्येयगुणाधार जय सर्वपरायण । जय कृष्ण सुदुष्पार जय शार्ङ्गधनुर्धर । ५० ।

Brahma knew him by meditation and with joined palms bowed down to the Dweller-within-all. The gods and the rishis stood up and casting their eyes on Brahma as well as on the wonderful being joined their palms in token of respect. Brahma the best of those who know Brahm and dharm, worshipped Him according to his wisdom and recited the following hymn of praise:—Protector of the Universe, having the Universe for thy form, Lord of the Universe, Refuge of the world Maker of the world, controller and Supreme Lord of the Universe, Vasudev, I seek refuge in thee the soul of Yoga and the highest Divinity. 47. Victory to thee, Supreme God of the universe. Victory to thee, benefactor of the world. Victory to thee Lord of yog and All-powerful. Victory to thee, thou before and after the yog. 48. Thee from whose navel the lotus grew, possessor of large eyes, Victory to thee Lord of lords. Lord of the Past, Prsent and Future, Victory to thee embodiment of gentleness, son of sons 49. Victory to thee, seat of untold attributes and refuge of all. Victory to thee, Narayan, unknowable and wielder of Sharang bow. Victory to thee seat of all attributes of the form of universe and ever healthy. Victory to

गुणोपेत विश्वमूर्त्ते निरामय। विश्वेश्वरमहाबाहो जयलोकार्थतत्पर ॥ ५१ ॥ महो
रगवराहाद्य हरिकेश विभोजय । हरिवास दिशामीश विश्ववासामिताव्यय ५२॥
व्यक्ताव्यक्तामितस्थान नियतेंद्रियसत्क्रिय । असंख्ये यात्मभावज्ञजयगंभीरकामद
॥ ५३ ॥ अनत विदितब्रह्मन् नित्यभूत विभावन । कृतकार्य कृतप्रज्ञ धर्मज्ञविजया
वह ॥ ५४ ॥ गुह्यात्मन् सर्व योगात्मन् स्फुटसम्भूतसंभव । भूताद्यलोक तत्वेश
जयभूत विभावन ॥ ५५ ॥ आत्मयोने महाभाग कल्पसंक्षेपतत्परम् । उद्भावनमनो
भावजयब्रह्मजनप्रिय ॥ ५६ ॥ निसर्गसर्ग निरतकामेशपरमेश्वर । अमृतोद्भवसद्भाव
मुक्तात्मन् विजयप्रद ॥ ५७ ॥ प्रजापति पतेदेव पद्मनाभमहाबल । आत्मभूतमहा
भत सत्वात्मन् जयसर्वदा ॥ ५८ ॥ पादौत स्वधरादेवी दिशोबाहू दिवंशिरः। मूर्तिस्तेह

जयसर्व गुणोपेत विश्व मूर्त्ते निरामत ॥ विश्वेश्वर महाबाहो जयलोकार्थ तत्पर ।५१।
महोरगवराहाद्य हरिकेश विभोजय ॥ हरि वास दिशा मीश विश्ववासा मिताव्यय
। ५२ । व्यक्ता व्यक्त मितस्थान नियतेन्द्रियसत्क्रिय ॥ असंख्ये यात्म भावज्ञ जयगं
भरिकामद । ५३ । अनन्त विदित ब्रह्मन् नित्यं भूत विभावन। कृत कार्य कृतप्रज्ञ
धर्मज्ञ विजया वह । ५४ । गुह्यात्मन्सर्व योगात्मन्स्फुटं संभूत संभव ॥ भूताद्य तत्वलो
केश जयं भूत विभावन । ५५ । आत्मयोने महाभाग कल्प संक्षेप तत्परम् ॥ उद्भा
वनमनो भाव जय ब्रह्म जन प्रिय । ५६ । निसर्ग सर्ग निरत कामेशपरमेश्वर ॥
अमृतोद्भवसद्भाव मुक्तात्मन् विजयप्रद । ५७ । प्रजापतिपतेदेव पद्मनाभ महाबल ॥
आत्मभूत महाभूत कर्म्मात्मन् जय सर्वदा । ५८ । पादौतवधरादेवी दिशोबाहु
दिंवः शिरः । मूर्त्ति स्तेहं सुराकायश्चन्द्रा दित्यौच चाक्षुषी । ५९। बलं तपश्च सत्यं

thee, Lord of the worlds, of mighty arms, benefactor of the world 51. Victory to thee, great Urag, Boar, first cause, of tawny locks, Almighty, of yellow robes Lord of the directions, Omnipresent, Infinite and free from decay. 52. Manifest and Unmanifest, Immeasurable space, controller of senses and achiever of what is good, immeasurable, self-knowing, Deep and giver of boons, victory to thee 53. Endless, Brahm, Eternal creator, Victorious, wise, just, giver of victory, mysterious soul of yog, the great cause of all beings, Knowledge of self, Lord of the world and creator of all beings, Victory to thee. 55. Self create, highly blessed, Destroyer of all, inspirer of thoughts and dear to those who know Brahm, Victory to thee. Victory to thee whose works are creation and destruction, who has all wishes under control, the Supreme Lord, the fountain of Amrit, All existant, Agni of the last conflagration and giver of victory. 57. Divine lord of all created beings whose navel is the seat of the lotus, Almighty, Self create, the great Element and the soul of all rites, victory to thee that givest all 58. The Earth represents thy feet, the directions thy arms and the heavens thy head. I am thy form the gods are

सुराः कायश्चंद्रादित्यौच चक्षुषी ॥ ५९ ॥ बलंतपश्च सत्यंच कर्मधर्मात्मजंतव ।
तेजोऽग्निःपवन श्वासःआपस्ते स्वेदसंभवाः ॥ ६०॥ अश्विनौ श्रवणौ नित्यौ देवीजिह्वा
सरस्वती । वेदाः संस्कारनिष्ठाहित्वदीयं जगदाश्रितम् ॥ ६१ ॥ नसंख्यानं परिमाणं
न तेजो न पराक्रमम् । न बलं योगयोगीश जानीमस्ते न सम्भवम् ॥ ६२ ॥ त्वद्भ
क्तिनिरता देव नियमैस्त्वां समाश्रिताः । अर्चयामः सदा विष्णो परमेशं महे
श्वरम् ॥ ६३ ॥ ऋषयो देवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः । पिशाचा मानुषाश्चैव
मृगपक्षिसरीसृपाः ॥ ६४ ॥ एवमादि मया सृष्टं पृथिव्यां त्वत्प्रसादजम् । पद्म
नाभ विशालाक्ष कृष्ण दुःस्वप्ननाशन ॥ ६५ ॥ त्वं गतिः सर्वभूतानां त्वंनेतात्वं
जगद्गुरुः । त्वत्प्रसादेन देवेश सुखिनो विबुधाः सदा ॥ ६६ ॥ पृथिवी निर्भया
देव त्वत्प्रसादात् सदाभवत् । तस्माद्भव विशालाक्ष यदुवंशविवर्द्धनः ॥ ६७ ॥
धर्मसंस्थापनार्थाय दैत्यानांच वधायच । जगतो धारणार्थाय विज्ञाप्य कुरुमेविभो

च धर्म कर्मात्मजं तव ॥ तेजोग्निःपवनश्वासः आपस्ते स्वेद संभवाः । ६० । अश्वि
नौश्रवणौ नित्यौ देवी जिह्वासरस्वती ॥ वेदाः संस्कार निष्ठाहि त्वदीयं जगद् श्रितं
।६१ । नसंख्यानंपरीमाणंनतेजनपराक्रमं । नबलंयोगयोगीशजानीमस्तेनसंभवं ६२।
त्वद्भक्तिनिरतादेवनियमैस्त्वांसमाश्रिताः ॥ अर्चयमासदाविष्णोपरमेशमहेश्वरं । ६३ ।
ऋषयोदेवगंधर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ पिशाचामानुषाश्चैवमृगपक्षिसरीसृपा । ६४ ।
एवमादिमयासृष्टंपृथिव्यांत्वत्प्रसादजं ॥ पद्मनाभविशालाक्षकृष्णदुःस्वप्ननाशनं । ६५ ।
त्वंगतिःसर्वभूतानांत्वंनेतात्वंजगन्मुखं ॥ त्वत्प्रसादेनदेवेशसुखिनोविबुधा सदा । ६६ ।
पृथिवीनिर्भयादेवत्वत्प्रसादात्सदाभवत् ॥ तस्माद्भवविशालाक्षयदुवंशविवर्द्धनः । ६७।
धर्मसंस्थापनार्थायदैत्यानांवधायच ॥ जगतोधारणार्थाय विज्ञाप्यंकुरुमेविभो । ६८ ।

thy limbs, and the sun and the moon are thy eyes. Penances and truth, born of morals and religious rites, constitute thy strength. Fire is thy energy, the wind is thy breath and the waters are thy sweat. 60. The twin Aswins are thy ears and Saraswati is thy tongue. The Vedas are thy knowledge and the universe rests upon thee. Lord of yog and yogis, we donot know thy extent, measure, energy, prowess, might and origin. O God, Vishnu, filled with thy devotion and depending on thee with vows and observances we ever worship thee as the highest Lord and the God of gods The rishis, the gods, the gandharvas, the yakshases, the rakshes the pannags, the pishaches, men, beasts, birds and reptiles were created by me by Thy grace. From thy navel springs the lotus and thy eyes are large, O Krishna, dispeller of woes 65. Refuge and guide of all creatures thou hast the Universe for thy mouth Through thy grace, O lord of the gods, the gods are ever happy. Through thy grace the Earth remains free from danger; be born among the Yadus, large eyed one, Grant my request for the sake of consolidating dharma, for the destruction of

॥ ६८ ॥ यत्तत् परमकं गुह्यं त्वत्प्रसादादिदं विभो । वासुदेव तदेतत्ते मयोद्गीतं
यथातथम् ॥ ६९ ॥ सृष्ट्वा सङ्कर्षणं देवं स्वयमात्मानमात्मना । कृष्ण त्वमात्मनो
साक्षी प्रद्युम्नं चात्मसम्भवम् ॥ ७० ॥ प्रद्युम्नादनिरुद्धं त्वं य विदुर्विष्णुमव्ययम् ।
अनिरुद्धोऽसृजन्मा वै ब्रह्माणं लोकधारिणम् ॥ ७१ ॥ वासुदेवमयः सोऽहं त्वयैवास्मि
विनिर्मितः । विभज्य भागशोत्मानं व्रज मानुषतां विभो ॥ ७२ ॥ तत्रासुरवधं
कृत्वा सर्वलोकसुखाय वै । धर्मं प्राप्य यशः प्राप्य योगं प्राप्स्यसि तत्वतः ॥७३॥
त्वां हि ब्रह्मर्षयो लोके देवाश्चामित विक्रम । तैस्तैर्हि नामभिर्युक्ता गायन्ति परमात्म
कम् ॥ ७४ ॥ स्थिताश्च सर्वे त्वयि भूतसंघाः कृत्वाश्रयं त्वां वरदं सुबाहो ।
अनादिमध्यान्त मपारयोगं लोकस्य सेतुं प्रवदन्ति विप्राः ॥ ७५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विश्वोपाख्याने
पंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

यत्तत्परमकंगुह्यंत्वत्प्रसादादिदंमभो ॥ वासुदेवतदेतत्तेमयोद्गीतंयथातथम् । ६९ ।
सृष्ट्वासंकर्षणंदेवस्वयंमात्मानमात्मना । कृष्णात्वमात्मनासाक्षीःप्रद्युम्नोस्त्वात्मसंभवं ७०
प्रद्युम्नोच्चानिरुद्धन्तुत्वयंविदुर्विष्णुमव्ययं । अनिरुद्धोसृजन्मांवैब्राह्मणंलोकधारिणं ७१
वासुदेवमय सोऽहंत्वयैवास्मिविनिर्मितः ॥ विसृज्यभागशोत्मानंव्रजमानुषतांविभो। ७२ ।
तत्रासुरवधंकृत्वासर्वलोकहितायवै ॥ धर्मस्थाप्ययशःप्राप्ययोगंप्राप्स्यासितत्वतः ७३ ।
त्वांहिब्रह्मर्षयोलोकेदेवाश्चामितविक्रम ॥ तैस्तै स्वनामाभिर्युक्तागायन्तिपरमाद्भुतं ।७४।
स्थितश्चसर्वेत्वयिभूतसंघाःकृत्वाश्रयंत्वांवरदंसुवाहो। ॥ अनादिमध्यान्तमपारयोगंलोक-
स्यसेतुंप्रवदन्तिविप्राः ॥ ७५ ॥

Daityas and for the protection of the world. Thy mystery has been sung by me through thy grace, Vasudev. Having created the divine Sankarshan through thy grace, thou art born as Pradyumna, O Krishn. 70. From Pradyumn thou hast created Anirudh who is known as everlasting Vishnu I was created by Anirudh to protect the world. Being created by Vasudev, I have in reality been created by thee. Divide thyself into parts and take birth, O lord, among men. Destroy the Asuras for the good of all creatures, win renown and yog to establish righteousness. The twice born rishis on the face of the earth and the gods devoted to thee, sing songs in thy praise, mighty one. Possessor of good arms, all creatures rest on thee and have their refuge in thee, giver of boons. The twice born speak of thee as the world's bridge, without beginning, middle and end, and possessed of boundless yog. 75.

भीष्म उवाच। ततः स भगवान् देवो लोकानामीश्वरेश्वरः। ब्रह्माणं प्रत्युवाचेदं स्निग्धगम्भीरयागिरा ॥ १ ॥ विदितं तातयोगान्मे सर्वमेतत्तवेप्सितम्। तथातच्च वितायत्वा तत्रैवान्तरधीयत ॥ २ ॥ ततो देवर्षिगन्धर्वा विस्मयंपरमंगताः। कौतूहल पराः सर्वे पितामहमथाब्रुवन् ॥ ३ ॥ कोन्वयं यो भगवता प्रणम्य विनयाद्विभो। वाग्भिः स्तुतो वरिष्ठाभिः श्रोतुमिच्छामतंवयम् ॥ ४ ॥ एवमुक्तस्तु भगवान् प्रत्यु वाच पितामहः। देव ब्रह्मर्षिगन्धर्वान् सर्वान् मधुरया गिरा ॥ ५ ॥ यत्तत्परं भविष्यञ्च भवितव्यंचयत्परम्। भूतात्मा च प्रभुश्चैव ब्रह्म यच्चपरं पदम् ॥ ६ ॥ तेनास्मि कृतसंवादः प्रसन्नेन सुरर्षभाः। जगतोनुग्रहार्थाय याचितो मे जगत्पतिः ॥ ७ ॥ मानुषं लोकमातिष्ठ वासुदेव इति श्रुतः असुराणां वधार्थाय सम्भवस्व मही तले ॥ ८ ॥ संग्रामे निहता ये ते दैत्यदानव राक्षसाः। त इमे नृषु सम्भूता घोर

अध्याय ६६ ॥

भीष्मजी बोले कि इसके पीछे वह योगेश्वरोंके ईश्वर भगवान् स्निग्ध गंभीर वाणीकेद्वारा ब्रह्माजी से बोले, हे तात यहतेरे मनकी इच्छा मुझको योगसे विदित है वह उसी प्रकार से होगा यहकह कर वह उसी स्थानमें गुप्त होगये, इसके अन न्तर देवर्षि और गन्धर्वोंने बड़ा आश्चर्य किया और सबने मिलकर ब्रह्माजी से कहा कि हे समर्थ यह कौनथा जिसको आपने बड़ी नम्रतासे नमस्कार पूर्वक उत्तम वाणियों से स्तुति किया हम उसको जानना चाहतेहैं। ४। इसरीतिसे देव र्षिगन्धर्वों के पूछनेपर बड़ी मधुर वाणी से ब्रह्मा जी बोले, जो सर्वोत्तमरूप आगे प्रकट होनेवालाहै वही श्रेष्ठ सबजीवमात्रोंका आत्मारूप प्रभु है उसीको ब्रह्म और ज्योति स्वरूपकहतेहैं, हे श्रेष्ठ पुरुषो मैंने उसी प्रसन्न मूर्त्ति परमेश्वर से वार्त्तालाप की है और जगत् के अनुग्रह के लिये वह जगत्पति मेरी प्रार्थना से वासुदेवनाम से प्रसिद्ध होगा तुमसब लोग मर्त्यलोक में नियत होकर असुरोंसे मारनेके लिये पृथ्वी पर प्रकट होजाओ। ६। जो दैत्य दानव और राक्षस युद्ध में मारेगये हैं वही

CHAPTER LXVI

Bhishm continued: "Then the Lord of yogis gave the following reply to Brahma in a sweet and solemn tone of voice:—"I know by the power of yog what passes in your mind. It will be as you desire." Having said this he disappeared at that very place. At this the gods and gandharvas were much astonished and unanimously asked of Brahma to tell them all about him whom he had bowed down and praised in such high terms 5. Being thus asked by them, Brahma replied in a very sweet voice that the good form appearing before them was the soul and lord of all beings, known as Brahm and light. "I have talked, said he with that cheerful form, the Lord of all. At my request and for the good of the world that lord of the Universe will appear in this world as Vasudev. You too must go to the world of mortals

कामहाबलाः ॥ ९ ॥ तेषां वधार्थं भगवान् नरेण सहितो वशी । मानुषीं योनि
मास्थाय चरिष्यति महीतले ॥१०॥ नरनारायणौ यौतौ पुराणावृषिसत्तमौ । सहितौमानु
षेलोके सम्भूताव मितद्युती ॥ ११ ॥ अजेयौसमरे यत्तौ सहितै रमरैरपि । मूढास्त्वेतौ
न जानन्ति नरनारायणावृषी ॥ १२ ॥ तस्याहमग्रजः पुत्रः सर्वस्य जगतः प्रभुः ।
वासुदेवोर्चनीयो वः सर्व लोकमहेश्वरः ॥ १३ ॥ तथा मनुष्योयमिति कदाचित्
सुरसत्तमाः । नावज्ञेयो महावीर्यः शंखचक्रगदाधरः ॥ १४ ॥ एतत् परमकंगुह्य
मेतत्परमकं पदम् । एतत् परमकंब्रह्म एतत्परमकं यशः ॥ १५ ॥ एतदक्षरमव्यक्त
मेतद्वैशाश्वतंमहः । यत्तत् पुरुषसंज्ञवै गीयते ज्ञायतेनच ॥ १६ ॥ एतत परमकं तेज
एतत परमकं सुखम् । एतत् परमक सयं कीर्त्तित विश्वकर्मणा ॥ १७ ॥ तस्मात्
सेन्द्रैःसुरैः सर्वैं लोकैश्चामित विक्रमः । नाव ज्ञेयो वासुदेवो मानुषोयमिति प्रभु १८।
यश्च मानुषमात्रोय मिति ब्रूयात् स मन्दधीः । हृषीकेशमवज्ञानात्तमाहुः पुरुषाधमम्

आकर इनघोररूपमहाबली मनुष्यों में उत्पन्न हुये हैं, इन्हों के मारने के निमित्त अतुल पराक्रमी भगवान् नर संयुक्त मनुष्य योनि में नियत होकर पृथ्वीपर विचरेंगे, वही दोनों पुराण पुरुष ऋषियों में श्रेष्ठनरनारायण रूप मिलेहुए सावधान युद्ध में देवताओं से भी विजय करने के योग्य नहीं हैं वही महा तेजस्वी एकसाथ नर लोक में प्रगटहुए इनदोनों नरनारायण ऋषियों को अज्ञानी लोगनहीं जानते है ११ मैं जिसके आत्मा से उत्पन्न होनेवाला पुत्र सब जगतका पति हूं वह सब लोकोंका महेश्वर वासुदेव तुम्हारा पूज्य है, हे उत्तम देवताओ इसी प्रकार का वह महापरा क्रमी शंखचक्र गदाधारी ऐसा जानकर कि यह मनुष्य है कभी अपमान करने के योग्य नहीं है, यह अत्यन्त गुप्तरूप और परमज्योतिहै यही परब्रह्म है यहीयश है यही अविनाशी सनातन और यज्ञ पुरुष है यही दृश्यअदृश्य नाम से गायाजाता है और जानाजाता है सब यहीहै, यह परमतेज सुख और सतविश्वकर्त्ता कहाजाता है इस कारणसे बड़ा पराक्रमी प्रभुवासुदेव इन्द्रादिक देवता और सब असुरोंसे भी मनुष्य जानकर अपमानके योग्य नहीं है, जो इस वासुदेवको केवल मनुष्य समझे

and be born there to destroy the asurs The Daityas, *Danavas* and rakshases, killed in battle are born as brave warriors among men. To destroy them, Bhagwan of matchless prowess, together with Nar, will be born among men and will move on earth. Both those ancient purushes, the best of rishis, known as Nar and Narayan, are inconquerable even by gods. Both glorious ones are born among men. Ignorant people donot know Nar and Narayan. 12. The mighty Lord, Vasudev whose son I am the lord of creation, is worthy of respect by you. That wielder of conch, mace and discus, of great prowess, is not to be despised in human form, goo[illegible] He is the most mysterious, the best ligh[illegible]ove Brahm. [illegible] fame in

॥ १९ ॥ योगिनं तं महात्मानं प्रविष्टं मानुषीं तनुम् । अवमन्येद्वासुदेवं तमाहुस्ता
मसंजनाः ॥ २० ॥ देवं चराचरात्मानं श्रीवत्साङ्कं सुवर्चसम् । पद्मनाभं न
जानाति तमाहुस्तामसं बुधाः ॥ २१ ॥ किरीटकौस्तुभधरं मित्राणामभयङ्करम् ।
अवजानन् महात्मानं घोरे तमसि मज्जति ॥ २२ ॥ एवं विदित्वा तत्त्वार्थं लोका
नामीश्वरेश्वरः । वासुदेवो नमस्कार्यः सर्वलोकैः सुरोत्तमाः ॥ २३ ॥ भीष्म उवाच ।
एवमुक्त्वा स भगवान् देवान्सर्षिगणान्पुरा । विसृज्य सर्वभूतानि जगाम भवनं स्वकम्
॥ २४ ॥ ततो देवाः सगन्धर्वा मुनयोऽप्सरसोऽपि च । कथां तां ब्रह्मणा गीतां श्रुत्वा
प्रीता दिवं ययुः ॥ २५ ॥ एतच्छ्रुतं मया तात ऋषीणां भावितात्मनाम् । वासुदेवं
कथयतां समवाये पुरातनम् ॥ २६ ॥ रामस्य जामदग्न्यस्य मार्कण्डेयस्य धीमतः। व्यास
नारदयोश्चापि शकाशाद् भरतर्षभ ॥२७॥ एतमर्थञ्च विज्ञाय श्रुत्वा च प्रभुमव्ययम् ।

वह इन्हीं हृषीकेशजी के अपमान से निर्बुद्धी नीचपुरुष है जो इसयोगी महात्मा मानुषी शरीरवर्त्ती वासुदेवजी को अपमान करता है उसको महापुरुष लोग तामसी कहते हैं । २० । जो इस जड़ चैतन्य के आत्मा श्रीवत्सचिह्न धारी तेजस्वी पद्मनाभजी को नहीं जानता है वहभी तामसीबोला जाता है, जोमुकुटकुंडल और कौस्तुभधारी शत्रु भयवर्द्धन महात्मापुरुषको अपमानकरताहै वहघोर तामिश्र नामनरक में गिरताहै हे श्रेष्ठदेवर्षियो इसरीति से तत्वार्थको जानकर लोकेश्वरों का ईश्वर वासुदेव सबलोकों से नमस्कार करने के योग्य है । २३ । भीष्म जी बोले कि पूर्व समय में भगवान् ब्रह्माजी देवता और ऋषियों के समूहों से इस प्रकार कहकर सब प्राणियों को विदा करके अपने भवन को गये । २४ । इस के पीछे देवता गन्धर्व ऋषिमुनि और अप्सरादिकभी ब्रह्माजी की कही हुई इसकथा को प्रीति संयुक्त सुनकर स्वर्ग को गये, हेतात इसरीति से मैंने शुद्ध अन्तःकरण वाले देवता ऋषिआदि की सभा में यह प्राचीन वृत्तान्त सुनाई है शास्त्रमें कुशल

destructible, eternal and subject of sacrifices. He is sung and known as Visible and Invisible. He is All in all, best Light, Happiness and Creator of the world. Vasudev the lord of great prowess is not to be despised in human form by Indra and other gods. 20. He who regards Vasudev as an ordinary man, is a despicable fool. He who looks down upon Vasudev the great yogi in the human form, is regarded by great men as fallen in darkness. He who does not know this soul of the moveables and immoveables having the mark of Shreevats, the glorious lotus navelled, is fallen in darkness. He who despises this great being adorned with diadem, earrings and Kaustubh jewel, this terror of foes, falls into the dire hell known as Tamishra. Knowing these facts, good rishis divine, Vasudev the lord of lords is worthy of worship." 23. "Having said this, to the gods and rishis," continued Bhishm, "lord Brahma bade farewell to all beings and went

वासदेव मह त्मानं लोकानामीश्वरेश्वरम् ॥ २८ ॥ यस्य चैवात्मजो ब्रह्मा सर्वस्य
जगत पिता । कथ न वासुदेवोयमर्च्यश्चेज्यश्च मानवैः ॥ २९ ॥ वारितोसि
मया तात मुनिभिर्वेद पारगैः । मा गच्छ सयुग तेन वासुदेवेन धन्विना ॥ ३० ॥
मा पाण्डवैः सार्द्धमिति ह्त्वं मोहान्न बुध्यसे । मन्ये त्वा राक्षस क्रूरं तथा चासि
तमोवृत ॥ ३१ ॥ यस्मात् द्विषसि गोविन्द पाण्डवैन्त धनञ्जयम् । नरनारायणौ
देवौ कान्यो द्विष्याद्धि मानव ॥ ३२ ॥ तस्माद्ब्रवीमि ते राजन्नेष वै शाश्वतोव्यय ।
सर्वलोकमयो नित्य शास्ता धात्री धरो ध्रुव ॥ ३३ ॥ योधारयति लोकांस्त्रींश्चरा
चरगुरु प्रभु । योद्धा जयश्च जेता च सर्वप्रकृतिरीश्वर ॥ ३४ ॥ राजन् सर्वमयो

दुर्योधन जमदग्न्यजी के पुत्र परशुरामजी और बुद्धिमान् मार्कण्डेय व्यास और नारदजी सेभी सुना है, इस अर्थ को अच्छी रीति से सुन और जानकर न्यूनता रहित लोकेश्वर प्रभु वासुदेवजी को ध्यान करो। जिसकी आत्मा से उत्पन्न होने वाला ब्रह्मा सबजगतका पिता है वह वासुदेव महात्मा रूप किस प्रकार से मनुष्यों से पूज्यनहीं है अर्थात् सबका पूज्यतम है, हेतात प्राचीन समय में तो शुद्ध अन्तःकरण वाले मुनियों ने सदैव निषेध किया है कि उस धनुषधारी वासुदेवजी से कभीयुद्ध मतकरो । ३० । और न कभी पांडवोंसे लडो परन्तु तू अपने मोह से सावधान नहीं होताहै इसकारण मैं तुझको राक्षस और निर्दय जानता हूं जो कि तू अज्ञान में डूबाहुआ है इसी कारण से तू गोविन्दजी समेत पांडव अर्जुन से शत्रुता करता है कौनसा ऐसामनुष्य है जो इनदोनों नर नारायण देवताओंसे शत्रुताकरे, हेराजन् इस हेतुसे मैं तुझ से कहताहूं कि यह सनातन अविनाशी विश्वरूप पृथ्वी का धारण करने वाला अचल है, और जो चराचर का रूप प्रभुतीनोंलोकों को धारण करता है वह युद्धकर्त्ता विजयरूप विजयी सबकी प्रकृति और ईश्वरहै,

to his abode. Then the gods grandharvas, rishis, munis, apsaras and others, having cheerfully heard the words of Brahma went to heaven I heard this ancient account in the meeting of gods and rishis of pure mind I have heard the same from Parashuram the son of Jamadagni from wise Markandeya Vyas and Narad Having thoroughly heard and known this, think of lord Vasudev the creator of the world. Is not lord Vasudev whose son Brahma is the father of the world worthy of respect? The pure-minded Munis of old have forbidden all to fight against the great archer Vasudev 30 They have forbidden to fight against the Pandavas too but thou dost not awaken from thy stupefication and therefore I hold you to be a cruel rakshas. Thou bearest enmity with Vasudev and Arjun because thou art plunged in ignorance. What man will be an enemy to Nar and Narayan I therefore say to you king that this ancient immortal and universal form is the immoveable supporter of earth That lord of the immoveables and

होय तमो राग विवर्जितः । यतः कृष्णस्ततो धर्मो यतो धर्मस्ततो जयः ॥ ३५ ॥ तस्य माहात्म्ययोगेन योगेनात्ममयेनच । धृताः पाण्डुसुता राजन् जयश्चैषां भविष्यति ॥ ३६ ॥ श्रेयोयुक्तां सदा बुद्धिं पाण्डवानां दधाति यः । बलंचैव रणे नित्यं भयेभ्यश्चैव रक्षति ॥ ३७ ॥ स एष शाश्वतो देवः सर्वगुह्यमयः शिवः । वासुदेव इति ख्यातो यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ ३८ ॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैश्च कृतलक्षणैः । सेव्यतेऽभ्यर्च्यते चैव नित्ययुक्तैः स्वकर्मभिः ॥ ३९ ॥ द्वापरस्य युगस्यान्ते आदौ कलियुगस्य च । सात्वतं विधिमास्थाय गीतः सङ्कर्षणेनवै ॥ ४० ॥ सएष सर्वं सुरमर्त्यलोकं समुद्रकक्ष्यान्तरितां पुरींच । युगे युगे मानुषञ्चैव वासं पुनः पुनः सृजते वासुदेवः ॥ ४१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विश्वोपाख्याने
षट् षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

हेराजन् यह सतोगुण रजोगुण तमोगुणसे जुदाहै जिधर श्रीकृष्ण हैं उधर धर्म है जिधरधर्म है उधरही विजय है । ३५ । हेराजन् पांडवलोग उन श्रीकृष्णजी के माहात्म्य योग वा उत्तमरूप योगसे धारण किये हुए हैं, इन्होंकीही विजयहोगी वही श्रीकृष्ण पांडवोंकी कल्याण मिश्रित बुद्धिको और युद्धमें पराक्रम कोभी सदैव धारण करता है और भयों से रक्षाकरताहै वही सनातन ब्राह्मणरूप शिव और वासुदेव कहा जाता है हे भरतवंशी लक्षण युक्त स्वकर्मोंसे नित्य मुक्तब्राह्मण क्षत्री वैश्यशूद्रों करके वह सदैव सेवा किया जाता है उसी को द्वापर के अन्त पर कलियुग के आरंभमें सतोगुणी बुद्धि में नियत होकर संकर्षणजी ने गाया है, वही युग युगमें देवलोक मृत्यु लोक और समुद्रान्तर वर्त्तीपुरी और मनुष्यों के विश्राम स्थानों को वारंवार उत्पन्न करता है । ४१ ॥

moveables is the supporter of the three worlds. That conquering warrior is the lord of all He is separate from the qualities of Sat, Raj and Tam. Dharm is on the side of Shree Krishn and conquest is on the side of Dharm. 35. The Pandavas O king are supported by the greatness and yog of Shree Krishn and they will conquer. Shree Krishn helps the Pandavas by his good advice and prowess and protects them from danger. The same ancient Brahman is called Shiv and Vasudev. By good deeds that always free Brahman is served by Brahmans, kshatryas, Vaishyas and Shudras. Sankarshan sang of him at the end of Dwapar and the beginning of Kali. He creates again and again in every yug the regions of gods and mortals, the country beyond the sea and the habitations of human beings." 41.



दुर्योधन उवाच । वासुदेवो महद्भूतं सर्वलोकेषु कथ्यते । तस्यागमं प्रतिष्ठां च ज्ञातुमिच्छे पितामह ॥ १ ॥ भीष्म उवाच । वासुदेवो महद्भूतं सर्वदैवतदैवतम् । न परं पुण्डरीकाक्षाद् दृश्यते भरतर्षभ ॥२॥ मार्कण्डेयश्च गोविन्दं कथयत्यद्भुतं महत् । सर्वभूतानि भूतात्मा महात्मा पुरुषोत्तमः ॥ ३ ॥ आपो वायुश्च तेजश्च त्रयमेतदकल्पयत् । स सृष्ट्वा पृथिवीं देवीं सर्वलोकेश्वरः प्रभुः ॥ ४ ॥ अप्सु वै शयनं चक्रे महात्मा पुरुषोत्तमः । सर्वतेजोमयो देवो योगात् सुष्वाप तत्र ह ॥ ५ ॥ मुखतः सोऽग्निमसृजत् प्राणाद्वायुमथापि च । सरस्वतीं च वेदांश्च मनसः ससृजेऽच्युतः ॥६॥ एष लोकान् ससर्जादौ देवांश्च ऋषिभिः सह । निधनं चैव मृत्युं च प्रजानां प्रभवाप्ययौ ॥७॥ एष धर्मश्च धर्मज्ञो वरदः सर्वकामदः । एष कर्ता च कार्यं च पूर्वदेवः स्वयंप्रभुः ॥८॥ भूतं भव्यं भविष्यच्च पूर्वमेतदकल्पयत् । उभे सन्ध्ये दिशः खं च नियमांश्च जनार्दनः ॥९॥

अध्याय ६७ ॥

दुर्योधन बोले कि सबलोकों के मध्य में वासुदेव जीही महद्भूत कहे जाते हैं हे पितामह जी मैं उनके आगम और प्रतिष्ठाको जाना चाहताहूं, भीष्मजी बोले हें भरतवंशियों में श्रेष्ठ वासुदेव जी ही महद्भूत और सब देवताओं के देवता हैं इन पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्णजी से परे कोई नहीं दिखाई देता है, मार्कण्डेय ऋषि भी गोविन्द जी को अत्यन्त अपूर्व और बड़ा कहते हैं इसी पुरुषोत्तम महात्मा जीवात्मा ने पृथिवी आदि पांचों तत्वोंको उत्पन्न किया है इसी परमेश्वरने पृथ्वीको न देखकर जलमें शयन किया फिर उस बड़ेसाहसी वासुदेवजी ने मुखसे अग्निको प्राणसे वायुको उत्पन्न करके वेदों को प्रकट किया इसनेही प्रारंभ में लोकों समेत देवता और ऋषियों के समूहको उत्पन्न किया और जन्म मरण नाश सहित मृत्युको भी इसीने उत्पन्न किया, यहधर्म और धर्मात्मा वरका देनेवाला यही आदि देव प्रभुकर्त्ता और कर्मरूप है इसीने भूतवर्तमान भविष्य इनतीनोंकालों को उत्पन्न किया यही प्रभु अविनाशी जगतका कर्त्ता और वरदाता है इसीने सबके आदि

CHAPTEL LXVII

"Vasudev" said Duryodhan, "is called the great being throughout the world. I wish to hear of his incarnation and greatness." 1. "Best of Bharats," said Bhishm, "Vasudev is the greatest of beings and lord of lords. There is none superior to Shreo Krishn. Markandey calls Govind matchless and great. This supreme being the greatest soul has created the five elements earth and others. This Parmeshwar took rest on the waters which covered the face of the earth. 5 Vasudev of great prowess having created Agni from his mouth and Vayu from his breath gave out the Vedas. In the begining he created the gods and rishis. He created Brith and Death. He is Dharm Dharmatma, giver of boons, Primo God, Lord, Maker and deed. He created the Past, Present and Future. He is the indestructible creator of the

ऋषींश्चैवहि गोविंदस्तपश्चैवाप्यकल्पयत् । स्त्रष्टारं जगतश्चापि महात्माप्रभुरव्ययः ॥१०॥
अग्रजं सर्व भूतानां सङ्कर्षणमकल्पयत् । तस्मान्नारायणो जज्ञे देवदेवः सनातनः ॥११॥
नाभौपद्मं बभूवास्य सर्व लोकस्यसम्भवात् । तस्मात्पितामहोजातस्तस्माज्जातास्त्विमाः
प्रजाः ॥ १२ ॥ शेषंचाकल्पयद्देव मनंतंविश्वरूपिणम् । योधारयति भूतानि धरांचेमांस
पर्वताम् ॥ १३ ॥ ध्यान योगेन विप्राश्च तं विदंति महौजसम् । कर्णस्रोतो भवच्चापि
मधुनाम महासुरम् ॥ १४ ॥ तमुग्रमुग्रकर्माण मुग्रांबुद्धिं समास्थितम् । ब्रह्मणोपचितिं
प्राप्तुं जघानपुरुषोत्तमः ॥ १५ ॥ तस्य तात वधादेव देवदानव मानवाः । मधुसूदन
मित्याहुर्ऋषयश्च जनार्दनम् ॥ १६ ॥ वराहश्चैव सिंहश्च त्रिविक्रमगतिः प्रभुः । एष
माता पिताचैव सर्वेषांप्राणिनांहरिः ॥ १७ ॥ परंहि पुंडरीकाक्षान्न भूत न भविष्यति ।
मुखतः सोसृजद्विप्रान् बाहुभ्यांक्षत्रियांस्तथा ॥ १८ ॥ वैश्यांश्चाप्युरुतो राजन्शूद्रा
न्वैपादतस्तथा । तपसा नियतो देवो निधानं सर्वदेहिनाम् ॥ १९ ॥ ब्रह्म भूतममावास्यां

भूत संकर्षणजीको उत्पन्न किया उसीको शेषकल्पना करके अनन्त नामसे प्रसिद्ध किया ।१०। वही शेषजी पर्व्वत और समुद्रों समेत इसपृथ्वीको धारण करतेहैं उस को महातेजस्वी कहते हैं, पुरुषोत्तमजीने ब्रह्माजी के उपकारके लिये कर्ण से उत्पन्न महा तेजस्वी पराक्रमी दैत्य मधुको मारा, हे तात इसी के मारनेसे इनको सब संसार मधुसूदन कहते हैं यही वराह नृसिंह अवतार धारण करने वाला तीन चरणों से सब जगत् को मापने वाला है, यहीहरि सबजीवोंका पिता और माता है इनसे बढ़ कर न कोई है न था न होगा । १९ । हे राजन् इसने ब्राह्मणों को मुखसे क्षत्रियों को भुजाओं से वैश्योंको चरणों से उत्पन्न किया है, इस सावधानने तपके द्वारा जीवोंकी हव्य कव्यादिक विधियों को ब्रह्मरूपी अमावास्या वा पूर्णमासी में उत्पन्न किया, जो इन योगरूप केशव जीकी सेवा करता है वह महा ऐश्वर्य को पाताहै, हे राजा इन केशवजी को मुनियोंने ऐसा कहा है इसी को आचार्य्य पिता और गुरु

world and giver of boons He created Sankarshan the first of beings. He is known by the appelations of Shesh and Anant. 10. The same Shesh supports the Earth with her mountains and seas. He is the most glorious. For the good of Brahma he destroyed Madhu a Daitya of great glory and prowess, produced from the ear, and gained the name of Mandusudan He is Barah, Nrisinha and he who measured the universe with three paces. This Hari is the father and mother of all beings, there never was any one greater than him nor ever shall be. • He produced the Brahmans from his mouth, the Kshatryas from his arms, the Vaishyas from his thighs and the Shudras from his feet With his great power he ordained the sacrifices on the days of no moon and full moon. He who serves this yogi, Keshav, gets great wealth. The munis call this Keshav, preceptor, father and superior. He to

पौर्णमास्यां तथैवच । योगेभूतं परिचरन् केशवं महदाप्नुयात् ॥२०॥ केशव परमतेजः सर्व लोकपितामहः । एवमाहुर्हृषीकेशं मुनयो वैनराधिप ॥ २१ ॥ एवमेनं विजानीहि आचार्यं पितरंगुरुम् । कृष्णोयस्य प्रसीदेत लोकास्तेनाक्षयाजिताः ॥ २२ ॥ यश्चैवैनं भयेस्थाने केशवंशरणं व्रजेत् । सदानरः पठश्चेदं स्वस्तिमान् स सुखीभवेत् ॥ २३ ॥ येच कृष्णं प्रपद्यंते तेन मुह्यन्ति मानवाः । भयेमहति मग्नांश्च पाति नित्यं जनार्दनः ॥२४॥ सतं युधिष्ठिरो ज्ञात्वा याथातथ्येन भारत सर्वात्मनामहात्मानं केशवंजगदीश्वरम् । प्रपन्नः शरणं राजन् योगानांप्रभुमीश्वरम् ॥ २५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विश्वोपाख्याने सप्तषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६७ ।

भीष्म उवाच । शृणु चेदं महाराज ब्रह्मभूतं स्तवं मम । ब्रह्मर्षिभिश्च देवैश्च यः पुरा कथितो भुवि ॥ १ ॥ साध्यानामपि देवानां देवदेवेश्वरः प्रभुः । लोकभावनभावज्ञ इतित्वां नारदोऽब्रवीत् ॥ २ ॥ भूतभव्य भविष्यज्ञ मार्कण्डेयोऽभ्युवाचह । यज्ञंत्वां

जानना योग्य है जिसके ऊपर श्रीकृष्णजी प्रसन्न होयं वह अविनाशी लोकोंका विजय करने वालाहै, जो प्राणों के भयके स्थान में इनकी शरण में जाता है वह मनुष्य इसको स्मरण करता हुआ आनन्द पूर्वक निर्विघ्न होताहै और जो इनको प्राप्त होते हैं वह मनुष्य मोहमें नहीं फँसते हैं, यह जनार्दनजी बड़े भारी भय में डूबे हुये अपने भक्तोंकी सदैव रक्षा करते हैं हे महाभाग राजादुर्योधन वहयुधिष्ठिर इस प्रकारसे ठीक २ जानकर सर्वात्मारूपसे उस योगीश्वर जगदीश केशव मूर्तिकी शरणमें आश्रित है ॥ २५ ॥

अध्याय ६८ ॥

भीष्मजी वोले हे महाराज इसमेरे कहेहुये ब्रह्मरूप स्तोत्र को सुनो जोकि पूर्व समय में पृथ्वीपर देव ऋषि और देवताओं ने वर्णन किया है ।१। भीष्मउवाच ॥ साध्यानामपि देवानां देव देवेश्वरःप्रभुः । लोक भावन भावज्ञ इतित्वांनारदो ऽब्रवीत् ।।२।। भूत भव्यं भविष्यज्ञ मार्कण्डे योभ्यु वाचह ॥ यज्ञंत्वां चैव देवानां

whom shree Krishn is kind, ... indestructible and conqueror of the world. He who seeks his protection from danger, gains happiness without interruption ... as he remembers him. He who attains to him, is freed from foolishness. Janardan always protects his devotees from danger. Yudhishthir knows these facts well and is devoted, life and soul, to Keshav the lord of yogis as well as of the world." 24.

CHAPTER LXVIII

"Hear from me, king," said Bhishm, "the song of praise, sung by Brahma, which was repeated by divine rishis and gods: "Narad described thee as the Lord of the Sadhayas, and of the gods, god of gods as well as loved by the world and knower of essence. 2. Markandeya

चैव देवानां तपश्चतपसामपि ॥ ३ ॥ देवानामपिदेवञ्च त्वामाह भगवान्भृगुः । पुराणञ्चैव
परमं विष्णो रूपं दवेति च ॥ ४ ॥ वासुदेवो वसूनांत्वं शक्रस्यापपितिं तथा । देव
देवोसि देवाना मिति द्वैपायनोब्रवीत् ॥ ५ ॥ पूर्वे प्रजापतेः सर्गे दक्षमाहुः प्रजापतिम् ।
स्रष्टारं सर्वलोकाना मङ्गिरास्त्वां तथाऽब्रवीत् ॥ ६ ॥ अव्यक्तंते शरीरोत्थं व्यक्तन्ते
मनसि स्थितम् । देवास्त्वत्सम्भवाश्चैव देवलस्त्व सितोब्रवीत् ॥ ७ ॥ शिरसा ते
दिवं व्याप्तं बाहुभ्यां पृथिवी तथा । जठरं ते त्रयो लोका पुरुषोसिसनातनः ॥ ८ ॥ एवं
त्वामभिजानन्ति तपसा भाविता नरा । आत्मदर्शन तृप्तानामृषीणां चापि सत्तमः
॥ ९ ॥ राजर्षीणामुदाराणा माहवेष्वनिवर्त्तिनाम् । सर्वे धर्म प्रधानानां त्वङ्गतिर्मधुसू
दन ॥ १० ॥ इति नित्यं योगविद्भिर्भगवान् पुरुषोत्तमः । सनत्कुमारप्रमुखैः स्तूयतेभ्य
र्च्यते हरिः ॥ ११ ॥ एषते विस्तरस्तात संक्षेपश्च प्रकीर्त्तितः । केशवस्य यथातत्वं.
सुप्रीतो भजकेशवम् ॥ १२ ॥ सञ्जय उवाच । पुण्यं श्रुत्वैतदाख्यानं महाराजसुन

तपश्च तपसामपि ॥३॥ देवानामपि देवंच त्वा माह भगवान्भृगु ॥ पुराणं चैव परमं
विष्णो रूपं तवेतिच ॥ ४ ॥ वासुदेवो वसू नांत्वं शक्रस्याप पतांतथा ॥ देव देवोऽ
सिदेवा ना मिति द्वैपायनो ब्रवीद ॥५॥ पूर्वे प्रजापतेः सर्गे दक्षमाहुः प्रजापतिम ॥
सृष्टारं सर्वलोकाना मंगिरास्त्वांतथाऽब्रवीत् ।६। अव्यक्तंते शरीरोत्थंव्यक्तं ते मनसि
स्थितम । देवास्त्वत् संभवाश्चैव देवलस्त्व सितोब्रवीत् ।७ शिरसाते दिवंव्याप्तं बाहु
भ्यां पृथिवीतथा ॥ जठरंते त्रयो लोकाः पुरुषोसिसनातनः । ८ । एवं त्वामभिजान
न्ति तपसा भवितानरा । आत्मदर्शन तृप्ताना मृषीणां चापिसत्तमः ९ राजर्षीणामुदारा
णा माहवेष्व निवर्त्तिनाम ॥ सर्व धर्म्मप्रधानानां त्वं गतिर्म्मधुसूदन । १० । इतिनित्यं
योगविद्भिर्भगवान पुरुषोत्तमः ॥ सनत्कुमारप्रमुखैः स्तूयतेभ्यर्च्यतेहरि । ११ । एषते
विस्तरस्तात संक्षेपश्च प्रकीर्त्तित । केशवस्ययथातत्वं सुप्रीतो भव केशवम । १२ ।

speaks of thee as the Past, the Present and the Future, the sacrifices of the gods and the austerity of the ascetics. Bhagwan Bhrigu speaks of thee as the god of gods, the most ancient Vishnu. Dwaipayan speaks of thee as Vasudev, Indra among Vasus and the god of gods, 5. Angira says that thou art the Prajapati of old, Daksh the father of all. 6. Deval spoke of thee as unmanifest of body and manifest in mind and the creator of gods. 7. Thy head pervades the heavens, thy arms surround the earth, thy stomach contains the three worlds and thou art the eternal being 8. Thus the ascetics know thee and those best of rishis that have an insight into self. Magnanimous rajarshis who never turn back from battle and who are of good morals seek thy refuge, slayer of Madhu ! 10. Hari the illustrious and supreme being is adored and worshipped by Sanatkumar and other ascetics and yogis This has been told thee in detail and in brief, turn thy heart in love to Keshav. Sanjaya continued: You have heard

स्तव। केशवं बहुमेने स पाण्डवांश्च महारथान्॥ १३ ॥ तमब्रवीन्महाराज भीष्मः
शान्तनवः पुनः। माहात्म्यन्ते श्रुतं राजन् केशवस्य महात्मनः ॥ १४ ॥ नरस्य च
यथातत्त्वं यन्मां त्वं परिपृच्छसेनृप। यदर्थं नृषुसम्भूतौ नरनारायणावुभौ ॥ १५ ॥
अवध्यौ च यथा वीरौ संयुगेष्वपराजितौ। यथा च पाण्डवा राजन्नवध्या युधिकस्य
चित्॥ १६ ॥ प्रीतिमान् हि दृढ कृष्णः पाण्डवेषु यशस्विषु। तस्माद्ब्रवीमि राजेन्द्र
शमो भवतु पाण्डवैः ॥ १७ ॥ पृथिवीं भुङ्क्ष्व सहितो भ्रातृभिर्बलिभिर्वशी। नरनारा
यणौ देवाववज्ञायन विनश्यसि ॥ १८ ॥ एवमुक्त्वा तव पिता तूष्णीमासीद्विशाम्पते।
व्यसर्जयच्च राजानं शयनञ्च विवेश ह ॥ १९ ॥ राजा च शिबिरं प्रायात् प्रणिपत्य
महात्मने। शिश्ये च शयने शुभ्रे रात्रिं तां भरतर्षभ ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विश्वोपाख्याने
अष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

संजयने कहा हे महाराज तुमने यहसब पवित्र आख्यान केशव तथा पांडवों का
सुनाजब शान्तनुके पुत्र भीष्मजीने कहा तुमने केशवका महात्म्य सुना और नरका भी
वृत्तान्त जैसा तुमने पूछाथा मैंने सुनाया यहभी सुना कि नरनारायण ने क्यों अव-
तार लिया है दोनों वीर मिलकर अपराजित हैं और पांडव भी अवध्य हैं कृष्ण
को पांडवों से अधिक प्रीति है इस लिये हे राजन् मैं तुम से मेलकरने को कहताहूं
अपने बली भाइयों के साथ राज्य भोगो नर और नारायणका अपमान करने से
तू नाशको प्राप्त होगा यहकह कर बुद्धिमान् पितामह चुपहोगये और राजाको
भेजकर अपने शिविर में चले गये राजाभी नमस्कार पूर्वक अपने शिविर को गया
और रात्रि को शयन किया २० ॥

---

this holy description of the magnanimous Keshav and of the Pandava warriors. Bhishm the son of Shantanu further said, "Thou hast heard of the greatness of Keshav and of Nar as thou askedst of me, as well as the cause of the incarnation of Nar and Narayan. You know why those two warriors joined together are inconquerable and why no one can kill the Pandavas. Krishn bears great love to the sons of Pandu and it is therefore that I advise you to make peace with them. 17. Enjoy the kingdom together with your brothers, Prince By desregarding Nar and Narayan thou shalt court thine own ruin. Having said this wise Bhishm became silent and having bidden good night to the king, entered his own tent. The prince too, having paid his respects to Bhishm went away to his tent and laid himself down to repose for the night. 20.

सञ्जय उवाच ॥ व्युषितायांतु शर्वर्य्यां मुदिते च दिवाकरे । उभे सेने महाराज युद्धायैव समीयतुः ॥ १ ॥ अभ्यधावन्तसंक्रुद्धाः परस्पर जिगीषवः । ते सर्वे सहिता युद्धे समालोक्य परस्परम् ॥ २ ॥ पांडवाधार्त्तराष्ट्राश्च राजन् दुर्मन्त्रिते तव । व्यूहौ च व्यूह्य संरब्धाः सम्प्रहृष्टाः प्रहारिणः ॥ ३ ॥ अरक्षन् मकरव्यूहं भीष्मो राजन् समन्ततः । तथैव पांडवा राजन् नरक्षन् व्यूह मात्मनः ॥ ४ ॥ स निर्ययौ महाराज पिता देव व्रत स्तव । महता रथवंशेन सम्वृतो रथिनावरः ॥ ५ ॥ इतरेतर मन्वीयुर्यथाभाग मवस्थिताः । रथिनः पत्तयश्चैव दन्तिनः सादिनस्तथा ॥ ६ ॥ तान् दृष्ट्वा भ्युद्यतान् संख्ये पांडवाहि यशस्विनः । श्येनेन व्यूहराजेन तनाजय्येन संयुगे ॥ ७ ॥ अशोभत मुखे तस्य भीमसेनो महाबलः । नेत्रे शिखण्डी दुर्धर्षो धृष्टद्युम्नश्च पार्षत. ॥ ८ ॥ शीर्षे तस्याभव

अध्याय ६९ ।

संजयबोले हे महाराज रात्रिव्यतीत होने और सूर्य के उदय होने पर फिर दोनों सेना सम्मुख वर्त्तमान हुईं, वहसब एकसाथ युद्ध में परस्पर देखकर अत्यन्त क्रोधित होके परस्पर में विजय की इच्छा से सम्मुख दौड़े, हे राजा आपकी बुरी सलाहों के होने से आपके पुत्र और पांडव व्यूहों को रचकर अत्यन्त प्रसन्न और अलंकृत होके प्रहारों को करने लगे, फिर भीष्मजीने चारों ओर से अपने मकर नाम व्यूहकी रक्षाकी इसी प्रकार पांडवोंने अपने व्यूहकी रक्षाकी है महाराज बड़े रथसमूहों समेत रथियोंमें श्रेष्ठ आपके पिता भीष्मजी चले । ५ । और दूसरी ओरके भी रथी हाथीपति और घोड़ों के सवार इत्यादि सब अपने २ स्थान और अधिकार में नियत होकर पीछे २ चले, यशस्वी पाण्डव कौरवोंको युद्धमें सन्नद्ध देखकर उस युद्धमें अजेय राजश्येन नामव्यूह से युद्ध होकर सम्मुखता में वर्त्तमान हुए उसव्यूह के मुखपर महाबली भीमसेन शोभायमान हुआ और नेत्रों पर दुर्जय शिखण्डी और धृष्टद्युम्न नियतहुए, सत्य पराक्रमी महाबली सात्यकी उसके शिर

CHAPTER LXIX.

Sanjaya to Dhritrashtra:—"At the close of the night, at suprise, both the armies faced one another, and rushed against one another in anger to gain victory. On account of your ill advice, King, your sons and the Pandavas, having arrayed their armies and decked themselves with a cheerful mind, discharged their weapons against one another. Bhishm protected from all sides his array which he had formed of the shape of a crocodile. The Pandavas too, protected their array. Your father the best of charioteers rode on followed by numberless chariots. 5. The charioteers, elephant riders, horsemen and others of the opposite party, stationed in their proper places, followed them. The glorious Pandavas, seeing the Kauravas ready for action, faced them with their invincible array of the form of a royal hawk. At the mouth of this array was Bhim the bravest of warriors; at the eyes

द्वीरः सात्यकि सत्य विक्रमः । विधुन्वन् गाण्डिवं पार्थो ग्रीवायांसमवस्तदा ॥ ९ ॥
अक्षौहिण्या समं तत्र वामपक्षो भवत्तदा । महात्मा द्रुपदः श्रीमान् सह पुत्रेण संयुगे
॥ १० ॥ दक्षिणश्चाभवत् पक्षः कैकयोऽक्षौहिणी पतिः । पृष्ठतो द्रौपदेयाश्च सौभद्रश्चापि
वीर्यवान् ॥ ११ ॥ पृष्ठे समभवच्छ्रीमान् स्वयं राजा युधिष्ठिरः । भ्रातृभ्यां सहितोवीरो
यमभ्यां चारु विक्रमः ॥ १२ ॥ प्रविश्यतु रणे भीमो मकरं मुखतस्तथा । भीष्ममासा
द्य संग्रामे छादयामास सायकैः ॥ १३ ॥ ततो भीष्मो महास्त्राणि, छादयामास भारत ।
मोहयन् पाण्डु पुत्राणां व्यूह सैन्य महद्वरे । समुह्यति तदा सैन्ये त्वरमाणो धनञ्जयः ।
भीष्मं शरसहस्रेण विव्याधरणमूर्धनि ॥ १५ ॥ प्रति संवार्य चास्त्राणि भीष्ममुक्तानि
संयुगे । स्वेनानीकेन हृष्टेन युद्धाय समुपस्थितः ॥ १६ ॥ ततो दुर्योधनोराजा भारद्वा·

पर विराजमान हुआ और अर्जुन अपने गांडीव धनुषको चलायमान करता हुआ ग्रीवामें वर्त्तमान हुआ, और श्रीमान् महात्मा द्रुपद अपने पुत्रों समेत एक अक्षौहिणी सेना समेत व्यूह के बायें पक्ष में हुआ । १० । और दाहिने पक्षमें एक अक्षौहिणी को लिये केकय नियत हुआ और द्रौपदी के पांचो पुत्र और महाबली अभिमन्यु पीछेकी ओर हुए और उत्तम पराक्रमी श्रीमान् राजा युधिष्ठिर नकुल सहदेव भाइयों समेत व्यूह के पृष्ठभाग में शोभितहुए, तबभीमसेन ने मुखके मार्ग से उस कौरवों के मकर व्यूह में प्रवेश करके भीष्मजी को पाकर उसयुद्ध में शायकों से ढक दिया. फिर पराक्रमी भीष्मजी ने भी बड़े अस्त्रों को फेंका और बड़ायुद्ध कर के पांडवों के व्यूहको मोहित कर दिया फिर सेना के मोहित होजाने पर बड़ी शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने उस युद्ध भूमि में आकर हजार बाणों से भीष्मजी को घायल किया । १५ । युद्ध में भीष्मजी के छोड़े हुए बाणों के प्रहारको सहकर अपनी प्रसन्न सेना के साथ युद्धकरने को उपस्थित हुआ

were brave Shikhandi and Dhrishtadyumna. Brave Satyaki of true prowess stood at the head and Arjun, with his Gandiv bow moving hither and thither, stationed himself at its neck. Great Drupad of *good fortune together with his akshauhini of army stood* on the left wing. 10. And on the right wing, with an akshauhini of army, stood King Kaikaya. The *five sons of Draupadi and* brave Abhimanyu were on the rear, and Prince Yudhishthir of great prowess, together with his brothers Nakul and Sahadev, brought up the rear. Bhimsen entered the mouth of the crocodile array of the *Kauravas, and seeing* Bhishm there, covered him with arrows. Then Bhishm, full of prowess discharged his powerful weapons and stupefied the armies of the Pandavas. When the army was thus stupefied the dextorous Arjun came into the field of battle and covered Bhishm with thousands of arrows. 15. Receiving the shower of Bhishma's arrows he fought at the head of his cheerful warriors. Then brave Prince

जमभाषत । पूर्वं दृष्ट्वा वधं घोरं बलस्य बलिनांवरः ॥ १७ ॥ भ्रातॄणांच वधं युद्धे स्मरमाणो महारथ. । आचार्य सततं हित्वं हितकामो ममानघ ॥ १८ ॥ वयहित्वा समाश्रित्य भीष्मं चैव पितामहम् । देवानपि रणे जेतुं प्रार्थयामो न संशय ॥ १९ ॥ किमु पाण्डुसुतान् युद्धे हीनवीर्य पराक्रमान् । स तथा कुरु भद्रन्ते यथा वध्यन्ति पाण्डवा. ॥ २० ॥ एवमुक्तस्ततो द्रोणस्तव पुत्रेण मारिष । अभिनत् पाण्डवानीकं प्रेक्षमाणस्य सात्यकेः ॥ २१ ॥ सात्यकिस्तु ततो द्रोणं वारयामास भारत । तयोः प्रववृते युद्धं घोररूप भयावहम् ॥ २२ ॥ शैनेयन्तु रणे क्रुद्धो भारद्वाजः प्रतापवान् । अविध्य न्निशितैर्वाणैर्जत्रुदेशेह स्मयन्निव ॥ २३ ॥ भीमसेनस्ततः क्रुद्धो भारद्वाजमविध्यत । संरक्षन् सात्यकिं राजन् द्रोणाच्छस्त्रभृतांवरात् ॥ २४ ॥ ततो द्रोणश्च भीष्मश्च तथा शल्यश्च मारिष । भीमसेनं रणे क्रुद्धाश्छादयाञ्चक्रिरे शरैः ॥ २५ ॥ तत्राभिमन्युः सक्रुद्धो द्रौपदेयाश्च मारिष । विव्यधुर्निशितैर्वाणैः सर्वांस्तानुद्यतायुधान् ॥ २६ ॥ द्रोण

इस के पीछे पराक्रमी राजादुर्य्योधन पूर्व दिनमें सेना समेत भाइयोंके मरणको देखकर द्रोणाचार्य्यजी से बोला कि हे पापोंसे रहित आचार्य्यजी आप सदैव मेरा हित चाहनेवाले हो हमसव आपकी और भीष्मजी की रक्षामें होकर देवताओंकोभी निस्सन्देह युद्धमें विजय करसक्ते हैं, युद्धमें बल पराक्रम रहित पांडवों को विजय करना कितनी बातहै आपका कल्याण हो आपवही कामकरो जिसमें पांडव मारे जायँ ।२०। तदनन्तर आपके पुत्र के इसरीतिपर कहनेसे द्रोणाचार्य्य जीने सात्यकी के देखते हुए पांडवों की सेनाको वाणोंसे भेदा, इसके पीछे हे भरतवंशी सात्यकीने द्रोणाचार्य्य को रोका फिरतो महाघोररूप युद्धहोनेलगा, फिर महाप्रतापी द्रोणाचार्य्य ने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर सात्यकी को दश वाणों से शत्रुस्थान में घायल किया इसके पीछे सात्यकी की रक्षा के निमित्त उग्रक्रोधरूप भीमसेन ने द्रोणाचार्य्य जी को वाणों से वेधा फिर द्रोणाचार्य्य भीष्म और शल्य ने बड़े वाणों से भीमसेन को ढक दिया ।२५। इसके पीछे महाक्रोध भरे अभिमन्यु और द्रुपद के

Duryodhan, remembering the destruction of his brothers and warriors, said to Dronacharya —"Sinless acharya, you are always my well wisher. Protected by you and Bhishm we aspire to win even the gods in battle, how easy it is to conquer the weak Pandavas! Be careful to destroy the Pandavas" 20. Hearing the words of your son, Dronacharya pierced the armies of the Pandavas within sight of Satyaki. Then, O descendant of Bharat, Satyaki checked Dronacharya and the battle was dreadful in the extreme. Valliant Dronacharya in great anger, wounded Satyaki with ten arrows in the field of battle, and for the protection of Satyaki, Bhimsen wounded Dronacharya. Then Dronacharya, Bhishm and Shalya covered Bhim with their long arrows. 25. Then the enraged Abhimanyu and the sons of Drupad wounded those warriors with sharp arrows. Then the

भीष्मौ तु संकुद्धावा।तन्तौ महावलौ। प्रत्युद्ययौ शिखण्डीतु महेष्वासो महाहवे॥२७॥ प्रगृह्य बलवद्वीरो धनुर्जलदनि स्वनम्। अभ्यवर्षच्छरैस्तूर्णं छादयानो दिवाकरम्॥२८॥ शिखण्डिन तमासाद्य भरतानां पितामह । अवर्जयत सग्राम स्त्रीत्व तस्यानुसंस्मरन् ॥ २९ ॥ ततो द्रोणो महाराज अभ्यद्रवत तरणे । रक्षमाणस्तदाभीष्म तव पुत्रेणचोदित. ॥ ३० ॥ शिखण्डीतु समासाद्य द्रोणशस्त्रभृतावरम्। अवर्जयतसन्त्रस्तो युगान्ताग्निमिवोल्वणम्॥ ३१ ॥ ततो बलेन महता पुत्रस्तव विशाम्पते। जुगोप भीष्ममासाद्य प्रार्थयानोमहद्यशः ॥ ३२ ॥ तथैव पाण्डवाराजन् पुरस्कृत्यधनञ्जयम्। भीष्ममेवाभ्यवर्त्तन्त जये कृत्वा दृढामतिम्॥ ३३ ॥ तद्युद्धमभवद् घोरं देवाना दानवैरिव । जय माकांक्षतां सख्ये यशश्च सुमहाद्भुतम्॥ ३४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि पञ्चमदिवसयुद्धारम्भे ऊन सप्ततितमोऽध्यायः। ६९ ॥

पुत्रों ने उन सब शस्त्रधारियों को बड़े तीक्ष्ण बाणों से बेधा फिर महाधनुषधारी शिखण्डी उनमहा क्रोधरूप अतुलपराक्रमी भीष्म और द्रोणाचार्य्य के सम्मुखगया, वहवीर शीघ्रही बादलके समान गर्जना करतावड़े भारी धनुषको लिये बाणों से सूर्य्य को ढककर तीव्रबाणों की वर्षाकरनेलगा, फिरभरतवंशियों के पितामह भीष्मजी ने इस रीति से शिखण्डीको सम्मुख पाकर उसके स्त्रीभावको स्मरणकरके उससे युद्ध करना त्याग किया, हे महाराज इसके पीछे आपके पुत्रके कहनेसे भीष्मजी की रक्षाकरते हुए द्रोणाचार्य्यजी संग्रामभूमिमें उसके सम्मुख दौड़े ।३०। फिर भयभीत शिखण्डी ने उनमहाशस्त्रवेत्ता प्रलयकी अग्निके समान प्रकाशमान द्रोणाचार्य्य को अच्छीरीतिसे सम्मुखहोकर रोका, हे राजा इसके पीछे युद्धाभिलाषी आपके पुत्र ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी की रक्षाकी, और इसी रीति से पांडव अर्जुन को आगे करके और विजयमें दृढ़ बुद्धि होकर भीष्मजी के सम्मुख हुए, वह ऐसा महावोर युद्ध हुआ जैसा कि देव और दानवोंका संग्राम होता है उस युद्ध में विजयाभिलाषी शूरवीरों कीबड़ीअपूर्व कीर्ति विख्यात हुई ३४ ॥

great archer Shikhandi faced the great warriors Bhishm and Dronacharya. That great warrior rolling like thunder, showered arrows from his bow and covered the sun with them. Then Bhishm the grandsire of the Kauravas, seeing Shikhandi before him and remembering his womanhood, ceased fighting. Then, at the request of your son, Dronacharya rushed to face Shikhandi to protect Bhishm 30 Shikhandi, though terrified, resisted well the attack of Dronacharya the great master of the use of weapons and glorious like the fire of *pralaya* Then, O king, your son desirous of fighting, protected Bhishm with his great army. In a like manner, the Pandavas, headed by *Arjun* and resolved on conquering, encountered Bhishm. The battle raged as fierce as that between the gods and the Danavas to the great fame of the warriors desirous of conquest. 340.

सञ्जय उवाच ॥ अकरोत्तुमुलं युद्धं भीष्मः शान्तनवस्तदा । भीमसेन भया द्विच्छ न् पुत्रांस्तार.यितुं तव ॥ १ ॥ पूर्वाह्णे तन् महारौद्रं राज्ञां युद्धं मवर्तत । कुरूणां पांडवानांच मुख्यशूर विनाशनम् ॥ २ ॥ तस्मिन्नाकुल संग्रामे वर्त्तमाने महाभये । अभवत्तुमुलः शब्दः संस्पृशन् गगनं महत् ॥ ३ ॥ नदद्भिश्च महानागै र्हेषमाणैश्चवाजिभिः । भेरी शंख निनादैश्च तुमुल समपद्यत ॥ ४ ॥ युयुत्सवस्ते विक्रान्ता विजयाय महाबलाः । अन्योन्यमभि गर्जन्तो गोष्ठेष्विव महर्षभाः ॥ ५ ॥ शिरसां पात्यमानानां समरे निशितैः शरैः । अश्ममृष्टि रिवाकाशे बभूव भरतर्षभ ॥ ६ ॥ कुण्डलोष्णीषधारीणि जातरूपोज्ज्वलानि च । पतितानि स्म दृश्यन्ते शिरांसि भरतर्षभ ॥ ७ ॥ विशिखोन्मथितैर्गात्रैर्बाहुभिश्च सकार्मुकैः । सहस्ताभरणैश्चान्यै रभवच्छादिता मही ॥ ८ ॥ कवचोपहितैर्गात्रैर्हस्तैश्च समलंकृतैः । मुखैश्च चन्द्रसंकाशै रक्तान्तनयनैः शुभैः ॥ ९ ॥ गजवाजि मनुष्याणां

अध्याय ७० ॥

संजय बोले कि आप के पुत्रों की रक्षा चाहने वाले शांतनु भीष्मजी ने वड़ा कठिन युद्ध किया, वह वड़ा भारी युद्ध दिनके पूर्व भाग में पांडव और कौरवों के राजाओं का नाश करने वाला हुआ, उस बड़े भयानक सब को व्याकुल करने वाले महा घोर युद्ध के होनेपर आकाश को व्याप्त करने वाला महाघोर शब्द हुआ, और हाथियों की चिंहाड़ और घोड़ों के हिनहिनाटों से वह शब्द अत्यन्त कठोर होगया, फिर वह पराक्रमी शूरवीर विजयाभिलाषी होकर परस्पर में युद्ध करतेहुए ऐसे गर्जे जैसे कि गौओं की शालाओं में वड़े वड़े गर्जना करते हैं । ५ । हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उस युद्ध में तीक्ष्ण वाणों से कटे हुए शिरों की ऐसी दृष्टिहुई जैसी कि आकाश से पाषाणों की वर्षा होती है और वड़े सुन्दर सुनहरी कुण्डल और मंडीलें पहरे हुए शिर पृथ्वी पर गिरे हुए दृष्टि गोचर हुए, विशिखों से भिदे हुए अंग और कुण्डलधारी शिर और अनेक हाथों के भूषणों

CHAPTER LXX

Sanjay: "Shantanu's son, Bhishm the wellwisher of your sons, fought a hard fight. The severe fighting in the early part of the day was destructive of the allies of the Kauravas and the Pandavas. At the commencement of that dreadful war, there was a great uproar which filled the firmament. The shrieking of elephants and the neighing of horses made the uproar yet more tremendous. The brave warriors, desirous of victory, roared so loud during the battle as bulls bellow in the midst of cows. 5. O best of the descendants of Bharat! the heads struck by sharp arrows fell thick like a shower of stones from the sky. Heads decked with beautiful gold earrings and turbans, were seen here and there on the ground. The bodies pierced through with darts, the heads adorned with earrings and various ornaments of hands covered the ground. The bodies decked with armour

सर्वं गात्रैश्च भूपते । आसीत् सर्वा समास्तीर्णा मुहूर्त्तेन वसुन्धरा ॥ १० ॥ रजो मेघैश्च
तुमुलैः शस्त्र विद्युत्प्रकाशिभि । आयुधानांच निर्घोषः स्तन यित्नु समो भवत् ॥ १० ॥
ससंप्रहारस्तुमुलः कटुकः शोणितोदकः । प्रावर्त्तत कुरूणांच पांडवानांच भारत ॥१२॥
तस्मिन्महाभये घोरे तुमुले लोमहर्षणे । ववृषुः शरवर्षाणि क्षत्रिया युद्ध दुर्मदाः ॥१३॥
आक्रोशन् कुञ्जरास्तत्र शरवर्ष प्रतापिताः । तावकानांपरेषांच संयुगे भरतर्षभ ॥ १४ ॥
संरब्धानांचवीराणां धीराणाम मितौ जसाम् । धनुर्ज्या तल शब्देन न प्राज्ञायत किंचन
॥ १५ ॥ उत्थितेषु कबन्धेषु सयतः शोणितोदके । समरे पर्य धावन्त नृपा रिपुवधोद्यता
॥ १६ ॥ शरशक्तिगदाभिस्ते खड्गैश्चामित तेजसः । निजघ्नुः समरे न्योन्यं शूरा परिघ
बाहवः ॥ १७ ॥ बभ्रमुः कुञ्जराश्चात्र शरैर्विद्धा निरंकुशाः । अश्वाश्च पर्यधावन्त हतारो

से पृथ्वी व्याप्तहोकर गुप्तसी होगई, हे राजा अंगों में कवच विभूषित भुजाचन्द्रमा के समान मुख और लाल नेत्रों से और, हाथी घोड़े और मनुष्यों के सब अंगों से सब युद्धभूमि एक मुहूर्त में ही भरकर पूर्ण होगई ।१०। धूलके कठिन बादलों में शस्त्ररूप बिजली प्रकाशितथी और उन्हीं शस्त्रों के शब्दोंसे बादलकी गर्जनासी होतीथी, हेराजा कौरव और पांडवों के वह शस्त्रोंका परस्पर प्रहार महा कठिन सहने के अयोग्य हुआ जिसमें रुधिर की नदी बह निकली उस महा भयानक घोर तुमुलवाले रोम हर्षण युद्धमें दुर्मद क्षत्रियों ने बाणों के जालों को बरसाया, यहां बाणोंकी वर्षा से अत्यन्त पीड़ामान् हाथी पुकारे और पाण्डवों के शूरवीर शस्त्रों से शोभित होकर चारों ओर से दौड़े, अत्यन्त कोपयुक्त पराक्रमी शूरवीरों के धनुषों के टंकार शब्दों से कुछभी नहीं जान पड़ताथा । १५ । सब ओरसे जलरूप रुधिर के मध्य में बिन शिर घोड़ों के उड़ने पर शत्रुओं के मारने को उपस्थित दूसरे राजालोग चारोंओरको दौड़े, बड़ेतेजस्वी परिघ के समान भुजाधारी वीरोंने युद्ध में बाणबरछी गदा और खड्गों से परस्पर में एक को एक ने मारा, और बाणों से घायल हाथी अंकुश के बिनाही इधर उधर घूमने लगे और जिनके सवार मारेगये ऐसे घोड़ेभी

the faces like the moon, the red eyes and the limbs of elephants, horses and men, filled the whole field of battle. 10. Weapons shone like lightning through the clouds of dust and clashed like thunder. The mutual strokes of the Kauravas and the Pandavas, O king, were hard to bear and a river of blood flowed down. In that hard contest the brave warriors showered networks of arrows. With the shower of arrows elephants shrieked and the Pandav warriors armed with weapons rushed from all sides. The twang of the bows of the enraged warriors deafened the ears. 15. Into that river of blood, the warriors rushed upon those who were mounted on headless horses. The brave warriors with their arms like clubs, discharged at one another their arrows, spears, maces and swords. The elephants wounded by arrows rushed hither and thither without the agency of the goad

ह्रा दिशोदिशं ॥ १८ ॥ उत्पत्य निपतन्त्यन्ये शरघात प्रपीडिताः । तावकानां परेषांच योधा भरत सत्तम ॥ १९ ॥ बाहानामुत्तमांगानां कार्मुकाणांच भारत । गदानां परिघाणांच हस्तानांचोरु भिःसह ॥२०॥ पादानां भूषणानांच केयूराणांचसंघशः । रादायस्तत्र दृश्यन्ते भारत भीष्मं भीमसमागमे ॥२१॥ अश्वानांकुञ्जराणांच रथानांचा निवर्तिनाम् । सघाता-स्मप्रदृश्यन्ते तत्र तत्र विशाम्पते ॥ २२ ॥ गदासिरसिभिः प्रासैर्वाणैश्चनत पर्वभिः । जघ्नुः परस्परं तत्र क्षत्रिया-कालचा गते ॥ २३ ॥ अपरे बाहुभिर्वीरा नियुद्ध-कुशलायुधि । बहुधा समसज्जन्त आयसैः परिघैरिव ॥ २४ ॥ मुष्टिभिर्जानुभिश्चैव तलै श्चैव विशांपते । अन्योन्यं जघ्निरे वीरास्तावकाः पाण्डवैःसह ॥ २५ ॥ पतितैः पात्य मानैश्च विचेष्टद्भिश्च भूतले । घोरमायोधन जज्ञे तत्र तत्र नरेश्वर ॥ २६ ॥ विरथारथि नश्चात्र निस्त्रिंशवरधारिणः । अन्योन्यमभिधावन्त परस्परवधैषिणः ॥ २७ ॥ ततो दुर्यो

दशों दिशाओं में दौड़ते फिरतेथे, और कोई बाणों से पीड़ितहोकर उठकर गिरते थे और आपके व पांडवों के शूरवीर भ्रमण करनेलगे ।१९। पृथ्वीपर गिरेहुए बाण बरछी गदा खड्ग और परिघ जांघ और हाथों से युक्त चरण भूषण समेत कपड़ों के तोदे भीमसेन और भीष्मजी के सम्मुख पड़ेहुए दृष्टिपड़ते हैं, हेराजा जहां तहां दौड़ते हुए घोड़े और लौटतेहुए हाथियोंके समूह दृष्टिगोचरहुए, वहां कालके प्रेरित क्षत्रियों ने गदा खड्ग प्रास और झुकेहुए पर्ववाले बाणों से एकने एकको परस्पर में मारडाला युद्ध में भुज बलकरने में कुशल शूरवीर लोहेके परिघ समान अपनी भुजाओं के द्वारा बहुत प्रकार से बढ़े, हे राजा पांडवोंके साथ आपके शूरवीरों ने मुष्टिका जानुतल और कीलोंसे भी परस्पर में घात किया । २५ । और जहां तहां गिरे और गिराये हुए पृथ्वीपर चेष्टाकरने वाले शूरवीरोंसे युद्धभूमि महा भयकारी दीखने लगी, और रथी रथमें पृथक् अथवा उत्तम खड्गके धारण करनेवाले परस्पर घातके आकांक्षी एकएक के सम्मुख दौड़े, तदनन्तर बहुत से कलिङ्ग देशियों से युक्त राजा दुर्य्योधन युद्ध में भीष्मजी को आगे करके पाण्डवों के सम्मुख वर्त्तमान

The riderless horses were seen running on all sides. Some wounded by arrows rose and fell again, and the warriors of your sons and those of the Pandavas roamed all through 19. The arrows, spears, maces, swords, clubs, legs and arms with ornaments and heaps of clothes were seen before Bhishm and Bhim. Numbers of running horses and returning elephants were to be seen all round. The warriors, urged on by Death killed one another with their maces, swords and arrows. The brave warriors, dexterous in the art of fighting, with their arms hard like steel, rushed upon one another. Your warriors and those of the Pandavas too hit hard blows with their fists and legs 25. The warriors, fallen on the ground made the scene hideous with their bodies moving in various manners. The charioteers deprived of chariots and the swordsmen wishing to use their swords, rushed upon one another

घनो राजा कलिङ्गैर्बहुभिर्वृतः । पुरस्कृत्य रणे भीष्मं पाण्डवानभ्यवर्त्तत ॥ २८ ॥ तथैव पाण्डवाः सर्वे परिवार्य्य वृकोदरम् । भीष्ममभ्यद्रवन् क्रुद्धास्ततो युद्धमवर्तत ॥ २९ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥

सञ्जय उवाच । दृष्ट्वाभीष्मेण संसक्तान् भ्रातृनन्यांश्च पार्थिवान् । समभ्यधावद्गाङ्गेयमुद्यतास्त्रोधनञ्जयः ॥१॥ पाञ्चजन्यस्य निर्घोषं धनुषो गाण्डिवस्य च । ध्वजञ्चदृष्ट्वा पार्थस्यसर्वान्नोभयमाविशत् ॥२॥ सिंहलांगूलमाकाशे ज्वलन्तमिवपर्वतम् । असज्जमानं वृक्षेषु धूमकेतुमिवोत्थितम् ॥३॥ बहुवर्णं विचित्रञ्च दिव्यं वानरलक्षणम् । अपश्याम महाराज ध्वजं गाण्डीव धन्वनः ॥४॥ विद्युतं मेघमध्यस्थां भ्राजमानामिवाम्बरे । दद्यु

हुआ, और इसी प्रकार युद्ध में क्रोधयुद्ध शीघ्रगामी सवारियों वाले सब पाण्डव भीमसेन को मध्य में करके भीष्मजी के सम्मुख दौड़े । २९ ॥

अध्याय ७१ ॥

संजय बोले कि भीष्मजी से युक्त भाइयों और अन्य बांधवों को देखकर अस्त्रधारी अर्जुन गांगेय भीष्म के सम्मुख दौड़ा फिर पांच जन्यशंख और गांडीव धनुषका शब्द सुनकर और अर्जुनकी ध्वजा को देखकर हमसब लोगों में भय उत्पन्न हुआ, हे महाराज हमने गांडीव धनुषधारी की उसध्वजा को आकाश में देखा जो सिंहलांगूलनाम आकाशमें प्रकाशित पर्व्वत समान वृक्षों में न रुकने वाली ऊंची उठी हुई अनेक रंगों से युक्त श्रीहनुमान् जीके चिह्न से अलंकृत थी, जैसे कि आकाशके बादलों में नियत शोभायमान बिजली दिखाई देती है उसी प्रकार शूरवीरों ने भारी युद्ध में सुनहरी पृष्ठवाले गांडीवधनुष को देखा, फिर हमने इन्द्र के समान सम्मुख गर्जना करते और आपकी सेनाको मारते हुए अर्जुन के नर्नोंके महाघोर शब्दों को बारम्बारसुना, जैसे कठिन वायुयुक्त बादल बिजली और भ्रमके साथ होताहै उसी प्रकार अर्जुन ने चारों ओरसे बाणों की वर्षा से

Duryodhan accompanied with a large number of Kalingas led by Bhishm encountered the Pandavas In a like manner the enraged Pandavas headed by Bhim, rushed upon Bhishm " 29.

CHAPTER LXXI

Sanjaya ' Seeing the brothers and their kinsmen in company with Bhishm, Arjun armed with his weapons, encountered Bhishm the son of Ganga. Hearing of the sounds of the Gandiv bow and of the conch known as Panchjanya, and the sight of Arjun's banner, terrified us We saw, O king, the banner of the wielder of the gandiv which like a lion's tail shone against the sky, which though lifted on high could not be arrested by trees and which was decorated with the figure of Hanuman in different colours. The warriors saw in the field of battle that wielder of the golden Gandiv like lightning

गाण्डिवं योधा रुक्मपृष्ठं महामृधे ॥ ५ ॥ अशुश्रुम भृशं चास्य शक्रस्येवाभि गर्जतः । सुघोरं तलयोः शब्दं निघ्नतस्तव वाहिनीम् ॥ ६ ॥ चण्डवातो यथा मेघः सविद्युत् स्तनयित्नुमान् । दिशः संप्लावयन्सर्वाः शरवर्षैः समन्ततः ॥ ७ ॥ अभ्यधावद्गांगेयं भैरवास्त्रो धनंजयः । दिशं प्राचीं प्रतीचीं च न जानीमोस्त्र मोहिताः ॥ ८ ॥ कान्दिग्भूताः श्रान्तपत्रा हताश्वा हतचेतसः । अन्योन्यमभि संश्लिष्य योधास्ते भरतर्षभ ॥ ९ ॥ भीष्ममेवाभ्य लीयन्त सह सर्वैस्तवात्मजैः । तेषामार्तायनमभूद्भीष्मः शान्तनवो रणे ॥ १० ॥ समुत्पतन्ति वित्रस्ता रथेभ्यो रथिनस्तथा । सादिनश्चाश्व पृष्ठेभ्यो भूमौ चापि पदातयः ॥ ११ ॥ श्रुत्वा गाण्डीव निर्घोषं विस्फूर्जित मिवाशनेः । सर्वे सैन्यानि भीतानि व्यवालीयन्त भारत ॥ १२ ॥ अथ काम्बोजजैरश्वैर्महाद्भिः शीघ्रगामिभिः । गोपानां बहुसाहस्रैर्बलैर्गोपायनैर्वृतः ॥१३॥ मद्रसौवीरगान्धारैस्त्रिगर्तैश्च विशाम्पते । सर्वकालिङ्गमुख्यैश्च कलिङ्गाधिपतिर्वृतः ॥ १४ ॥ नानानरगणौघैश्च दुःशासनपुरःसरः । जयद्रथश्च नृपतिः

दिशाओं को चलायमान करदिया । ५ । भयानक अस्त्रवाला अर्जुन भीष्मजीके सम्मुख दौड़ा उससमय हमने अस्त्रोंसे व्याकुल होकर पूर्व्वादि दिशाओं कोभीनहीं पहचाना, हे भरतर्षभ आपके अचेत होने वाले शूरवीर जिनकी सवारी थकी और घोड़े मरे वा किसी दशा में नियत थे, वहसब परस्पर में मिलकर आपके पुत्रों समेत भीष्मजी केही आश्रय में होते थे और भीष्मजी उनकी रक्षा करते थे । १० । भयभीत रथी अपने रथों से और सवार घोड़े की पीठसे और पदाती पृथ्वीसे अत्यन्त उछलते थे, हे भरतवंशी गांडीव धनुष के वज्र के समान शब्दों को सुनकर सेना के सब मनुष्यमारे भयके भागे, इसके पीछे राजा कालिंग बड़े शीघ्र गामी कांबोज देशीय उत्तमघोड़ों के द्वारा गोपायन नाम गोपों की असंख्य सेना युक्त भद्र सौवीर गान्धार त्रिगर्तदेशी और कलिंगों की उत्तमसेनाके शूरवीरों समेत नानाप्रकार की सेनाओंके समूहों को साथ लिये जिनमें मुख्य दुश्शासन था और सबराजाओं

in the clouds. 5. We heard again and again the dreadful sounds of Arjun's claps thundering like Indra and killing your armies. He filled with the shower of his arrows all the directions like a thunderstorm of mixed clouds and lightning. Arjun the wielder of dreadful weapons rushed against Bhishm and, distressed by his weapons we could not distinguish the east from west. Your fainting warriors, O king, with their animals tired and horses killed, rallied round Bhishm for protection and he saved them from slaughter. 10. The terrified charioteers jumped down from their chariots, the horsemen from their horses and foot soldiers from the ground. Heaing the vajra like sounds of the Gandiv bow the people of the army fled with terror. Then the king of Kaling together with swift Cambojes and the numberless horsemen of the Gopayans, Bhadras, Sauvirs, Gandhars, Trigarts and Kalingas with armies of different sorts, headed by Du-

सहितं सर्वराजभिः ॥ १५ ॥ हयारोहवराश्चैव तव पुत्रेण चोदिताः । चतुर्दशसहस्राणि सौबलं पर्यवारयन् ॥ १६ ॥ ततस्ते सहिताः सर्वे विभक्तरथवाहनाः । अर्जुन समरे जघ्नुस्तावका भरतर्षभ ॥ १७ ॥ रथिभिर्वारणैरश्वैः पादातैश्च समीरितम् । घोर मायोधनं चक्रे महाभ्रसदृशं रजः ॥ १८ ॥ तोमरप्रासनाराच गजाश्वरथयोधिनाम् । बलेन महता भीष्मः समसज्जत् किरीटिना ॥ १९ ॥ आवन्त्यः काशिराजेन भीमसेनेन सैन्धवः । अजातशत्रुर्मद्राणामृषभेण यशस्विना ॥ २० ॥ सहपुत्र सहामात्यः शल्येन समसज्जत । विकर्णः सहदेवेन चित्रसेनः शिखण्डिना ॥ २१ ॥ मत्स्या दुर्योधनं जग्मु शकुनिश्च विशाम्पते । द्रुपदश्चेकितानश्च सात्यकिश्च महारथः ॥ २२ ॥ द्रोणेन समसज्ज त

समेत राजा जयद्रथ और आपके पुत्रके भेजे हुए चौदह हजार उत्तम अश्व सवार इन सबोंने चारोंओर से सौबलके पुत्रको मध्य में करालिया । १६ । इसके पीछे उन सब पांडवोंने जिनके रथ और सवारियां बुद्धिके अनुसार विभाग युक्तथीं एकसाथ ही आकर आपके शूरवीरों को मारा, रथी हाथी घोड़े और पदातियोंसे अच्छेप्रकार से चलायमान युद्ध भूमि बड़े बादलों के समान धूलि से महा भयकारी विदित हुई भीष्मजी तोमर प्रास नाराच और हाथी घोड़े रथों से युद्ध करनेवाली शूर वीरोंकी सेना समेत अर्जुन से अत्यन्त लड़े राजा अवन्ती काशी के राजा के साथ और भीमसेन जयद्रथ के साथ और राजा युधिष्ठिर पुत्र और प्रधानों समेत मद्रदेश के राजा शल्यके साथ अत्यन्त शूरतासे लड़े और विकर्ण सहदेवसे चित्रसेन शिखंडीसे लड़ने लगा । २१ । हे राजा मत्स्यदेशी शूरवीर दुर्योधन और शकुनी के साथबड़े पराक्रम करने वाले हुए और महारथी द्रुपद चेकितान और सात्यकी महात्मा द्रोणाचार्य्य और उनके पुत्र से युद्ध करनेवाले हुए कृपाचार्य्य और कृतवर्मा दोनों धृष्ट

shasan and all the kings with Jaydrath and the fourteen thousands of horse sent by your son, surrounded the son of Suval on all sides. 16. Then the Pandavas whose chariots and ranks were divided in a regular manner, at once rushed upon your warriors. With the chariots, elephants, horses and foot soldiers the field of battle seemed moving like clouds of dust dreadful to behold. Bhishm, accompanied by an army of warriors, armed with *Tomars*, *Prases* and arrows, and mounted over elephants, horses and chariots, fought a severe fight with Arjun. The king of Avanti fought with the king of Kashi, Bhimsen joined in combat with Jayadrath, and prince Yudhishthir, accompanied by sons and chiefs, fought bravely with the king of Madra. Vikarn fought against Sahadev and Chitrasen against Shikhandi. 21. The warriors of Matsya, O king, fought bravely against Duryodhan and Shakuni. The great warriors, Drupad, Chekitan and Satyaki fought against Dronacharya and his son. Both Kripacharya and Kritvarma rushed upon *Dhrishta-*

सपुत्रेण महात्मना। कृपश्च कृतवर्मा च धृष्टद्युम्नमभिद्रुतौ ॥ २३ ॥ एवं प्रमाजिताश्वानि भ्रान्तनागरथानि च। सैन्यानि समसज्जन्त प्रयुद्धानि समन्ततः ॥ २४ ॥ निरभ्रे विद्युतस्तीव्रा दिशश्च रजसा वृताः। प्रादुरासन्महोल्काश्च सनिर्घाता विशाम्पते ॥ २५ ॥ प्रादुर्भूतो महावातः पांसुवर्षं पपात च। नभस्यन्तर्दधे सूर्यः सैन्येन रजसावृतः ॥ २६ ॥ प्रमोहः सर्वसत्वानामतीव समपद्यत। रजसा चाभिभूतानामस्त्रजालैश्च तुद्यताम् ॥ २७ ॥ वीरबाहुविसृष्टानां सर्वावरणभेदिनाम्। सङ्घातः शरजालानां तुमुलः समपद्यत ॥ २८ ॥ प्रकाशं चक्रुराकाशमुद्यतानि भुजोत्तमैः। नक्षत्रविमलाभानि शस्त्राणि भरतर्षभ ॥ २९ ॥ आर्षभाणि विचित्राणि रुक्मजालावृतानि च। सम्पेतुर्दिक्षु सर्वासु चर्माणि भरतर्षभ ॥ ३० ॥ सूर्यवर्णैश्च निस्त्रिंशैः पात्यमानानि सर्वशः। दिक्षु सर्वास्वदृश्यन्त शरीराणि शिरांसि च ॥ ३१ ॥ भग्नचक्राक्षनीडाश्च निपातितमहाध्वजाः। हताश्वाः पृथिवीं जग्मुस्तत्र तत्र महारथाः ॥ ३२ ॥ परिपेतुर्हयाश्चात्र केचिच्छस्त्रकृतव्रणाः। रथान्विपरिकर्षन्तो

द्युम्नके सम्मुख दौड़े इसरीति से स्थान२ पर चारोंओरसे ऐसे युद्धहोनेलगे कि जिन के घोड़े माणगत और हाथी रथ भ्रान्ति से युक्तहोगये हे राजा उस समय आकाश में बिनाही बादलों के महातीव्र विद्युत्पात होनेलगा और दिशा धूल से आच्छादित होगईं और महा उल्कापात होकर परस्पर में बड़े घोर शब्द प्रगट हुए। २५। महा वायु चलनेलगा। और धूलकी ऐसी अत्यन्त वर्षा हुई जिसके कारण सूर्य्य ढककर आकाश में गुप्त होगया। धूलसे छुपे हुए और अस्त्रों के जालों से लड़नेवाले सब जीवों को बड़ी अचेतता प्राप्तहुई, वीरों की भुजाओंसे छुटे सब पदोंके भेदन करने वाले बाणों के जालोंसे महाकठोर शब्द उत्पन्न हुए हे भरतर्षभ उत्तम भुजाओं से उठाये हुए निर्मल नक्षत्रों के समान प्रकाशमान शस्त्रों ने आकाश को प्रकाशित करादिया। और सब दिशाओं में उत्तम जड़ाऊ सुनहरी ढालें पृथ्वी पर गिरीं ।३०। सब रीतों से सूर्य्य रूप खड्गों से गिराये हुए शरीर और शिरसब ओर को पड़ेहुए दिखाई दिये, जिनके पहिये अक्ष और नीड़ टूटगये थे और बड़ी २ ध्वजायें गिर

dyumn. Thus in several places the warriors fought all round. Their horses were killed and the elephants became mad. At that time lightning flashed in the sky without clouds, the directions were filled with dust and the cinders fell down with a hissing sound. 25. The wind blew a gale and the storm of dust overspread the sun in the sky. Covered with dust and fighting with arrows, the warriors became insensible. Discharged from the arms of the warriors, the network of arrows fell down with a crash. The weapons raised by powerful arms lit the firmament like shining stars. The good shields, decked with gems and gold, fell down on earth. 30 Killed by the swords, shining like the sun, the bodies and heads of the warriors were seen lying in all directions. The huge chariots

बभौ । सरःसुनलिनीजालं विपक्तमिवकर्षताम् ॥ ४२ ॥ एवं संछादितं तत्र बभूवायोधनं महत् । सादिभिश्चपदातैश्च सध्वजैश्चमहारथैः ॥ ४३ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे
एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

सञ्जय उवाच ॥ शिखण्डी सह मत्स्येन विराटेन विशांपते । भीष्ममाशु महेष्वास माससार सुदुर्जयम् ॥ १ ॥ द्रोणं कृपं विकर्णं च महेष्वासंमहाबलम् । राज्ञश्चान्यान् रणे शूरान् बहूनार्च्छद्धनञ्जयः ॥ २ ॥ सैन्धवञ्च महेष्वासं सामात्यं सह बन्धुभिः । प्राच्यांश्च दाक्षिणात्यांश्च भूमिपान् भूमिपर्षभ ॥ ३ ॥ पुत्रञ्च ते महेष्वासं दुर्योधनम मर्षणम् । दुःसहञ्चैव समरे भीमसेनोऽभ्यवर्तत ॥ ४ ॥ सहदेवस्तु शकुनि मुलूकञ्चमहारथम् । पितापुत्री महेष्वासावभ्यवर्तंत दुर्जयौ ॥ ५ ॥ युधिष्ठिरो महाराज गजानीकं

हुए सब दिशाओं को दौड़े, उन खैंचनेवाले हाथियों का रूप ऐसा शोभित हुआ जैसे कि तड़ागों में लगे हुए सुन्दर कमलों के खैंचने वाले हाथियों का रूप शोभायमान होता है, वह युद्ध भूमि सवार पदाती और बड़े ध्वजावाले रथों से पूरित होगई ॥ ४३ ॥

अध्याय ७२ ॥

संजय बोले हे राजा शिखंडी ने मद्रके राजा विराटसमेत बड़ी शीघ्रतासे महारथी दुःप्रधर्ष भीष्मजी से सम्मुखताकी और अर्जुन ने द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और राजा दुर्य्योधन के बहुत से बड़े२ धनुषधारी महाबली शूरवीरोंको मोहित किया, हे राजेन्द्र प्रधान और भाइयोंके साथ बड़े धनुषधरी राजासिंध और पूर्वी पश्चिमीय व आपके क्रोधीपुत्र बड़े धनुषधारी दुर्य्योधन आदि अन्य अनेक राजाओं के सम्मुख इस युद्धमें भीमसेन वर्त्तमान हुए और महारथी सहदेव शकुनी और उलूक के सम्मुख हुए और वह बड़े धनुषधारी दुःप्रधर्ष पितापुत्र भी सम्मुख वर्त्तमान हुए ।५। और

draggel them along with themselves rushing on in all directions. The elephants dragging the chariots looked beautiful like those dragging out lotus plants from a lake, and the field was strewn over with horsemen and the chariots with high banners" 43.

CHAPTER LXXII

Sanjaya said to the king:—"Shikhandi and Prince Virat of Madra hastened to face invincible Bhishm, and Arjun made Dronacharya, Kripacharya and Prince Duryodhan with many other warriors insensible. And O king, Bhimsen, faced the great archers, the kings of Sindhu—Eastern and Western, your enraged son Duryadhan the great archer and other princes. Brave Sahdev faced Shakuni, Uluk and the great Dushpradharsh archers, father and son 5. Brave Yudhish-

दतेषु रथयंधिषु ॥ ३३ ॥ शराहताभिन्न देहा बद्धयोक्त्राहयोत्तमाः। युगानिपर्य्यकर्षन्त तत्र तत्र समभारत ॥ ३४ ॥ अदृश्यन्त सचूताश्च साश्वाः सरथयोधिनः। एकेन वलिना राजन् वाणेन विमर्दिताः ॥ ३५ ॥ गन्धहस्तिमदस्रावमाघ्राय वहवो रणे। सन्निपाते बलौघानां वीतमादद्दिरेगजाः ॥ ३६ ॥ सतोमरैर्महामात्रैर्निपतद्भिर्गतासुभिः। वभूवायोधनंछन्नं नाराचाभिहतैर्गजैः ॥ ३७ ॥ सन्निपातेबलौघानां प्रेषितैर्वरवारणैः। निपेतुर्युधि सभग्नाः सयोधाः सध्वजागजाः ॥ ३८ ॥ नागराजोपमैर्हस्तैर्नागैराक्षिप्यसंयुगे। व्यदृश्यंतमहाराजसंभग्नारथकूवराः ॥ ३९ ॥ विशीर्णरथसंघाश्च केशेष्वाक्षिप्यदंतिभिः। द्रुमशाखाइवाविध्यनिष्पिष्टारथिनोरणे ॥४०॥ रथेषुच रथान् युद्धे संसक्तान्वरवारणाः। विकर्षंतोदिशः सर्वाः संपेतु सर्वशब्दगाः ॥ ४१ ॥ तेषां तथा कर्षतांतु गजानांरूपमा-

पड़ी थीं वा घोड़े भी मरगये थे ऐसे वड़े २ रथ स्थान २ पर गिरे पड़े थे और कितने ही घोड़े शस्त्रों से घायल हुए पृथ्वी में चारों ओर घूमते थे हे भरतवंशी वाणों से घायल देहवाले उत्तम घोड़े जिन के अंगोंपर ईषा दण्ड बँधाथा उन्होंने जुओंको स्थान स्थान पर खैंचा । ३५ । उस युद्ध में कोई २ एकही बाण से सारथी घोड़े और रथ समेत मारे हुए शूरवीर दिखाई पड़े, सेना के समूहों के चढ़ाई होने पर बहुत से हाथियों ने हाथी के मद से निकली हुई गन्ध को सूंघकर वायु को भक्षण किया, और नाराचों से मारे हुए वड़े डील डौल वाले तोरनों समेत गिरे हुए मृतक हाथियों से युद्ध भूमि गुप्त होगई, फिर सेना के चलायमान होनेपर भागे हुए हाथियों मे घायल हुए दूसरे हाथी अपने शूरवीर सवारों समेत अवओरसे पृथ्वीपर गिरे हे महाराज उसयुद्ध में गजराज के समान हाथियों की सूंड़ोंसे खिचकर रथोंकेकूवर अत्यन्तटूटे हुए दिखाईपड़े, जिनके रथों के जाल टूटे ऐसे रथी युद्ध में वृक्षकी समान शिरके वालोंमें हाथियों से खिंचकर और घायलहोके फँसगये और युद्ध में उत्तम हाथी रथों में चिपटे हुए रथोंको खैंचते सब हाथियों के शब्दों पर चलते

with broken yokes, wheels and banners and the horses killed fell here and there, and the horses wounded by weapons ran all round. The good horses wounded in their bodies decked with *Isha Dand*, dragged the yokes this way and that. 35 Some warriors were killed there—horses, driver and chariot all—with single arrows. With the advance of the army, numbers of elephants sniffed in the air the stench coming out of the juice of elephants, and the ground was covered with the huge bodies of elephants fallen in battle. In the bustle of the battle, many elephants were wounded and fell down with their brave riders, by the rush of other elephants running away from the field. The chariots, dragged by the trunks of powerful elephants, were broken into pieces. The warriors, with their chariots broken down, were dragged by the hair and dashed on the ground by the elephants. In the field of battle the elephants clung to chariots and

प्रभौ । सरःसुनलिनीजालं विपक्कमिवकर्षताम् ॥ ४२ ॥ एवं संछादितं तत्र बभूवायोधनं महत् । सादिभिश्चपदातैश्च सध्वजैश्चमहारथैः ॥ ४३ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे
एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

सञ्जय उवाच ॥ शिखण्डी सह मत्स्येन विराटेन विशांपते । भीष्ममाशु महेष्वास माससाद सुदुर्जयम् ॥ १ ॥ द्रोणं कृपं विकर्णं च महेष्वासंमहाबलम् । राजश्चान्यान् रणे शूरान् बहूनर्च्छद्धनञ्जयः ॥ २ ॥ सैन्धवश्च महेष्वासं सामात्यं सह बन्धुभिः । प्राच्यांश्च दाक्षिणात्यांश्च भूमिपान् भूमिपर्षभ ॥ ३ ॥ पुत्रञ्च ते महेष्वासं दुर्योधनम मर्षणम् । दुःसहञ्चैव समरे भीमसेनोऽभ्यवर्तत ॥ ४ ॥ सहदेवस्तु शकुनि मुलूकञ्चमहा रथम् । पितापुत्रौ महेष्वासावभ्यवर्तत दुर्जयौ ॥ ५ ॥ युधिष्ठिरो महाराज गजानीकं

हुए सब दिशाओं को दौड़े, उन खैंचनेवाले हाथियों का रूप ऐसा शोभित हुआ जैसे कि तड़ागों में लगे हुए सुन्दर कमलों के खैंचने वाले हाथियों का रूप शोभायमान होता है, वह युद्ध भूमि सवार पदाती और बड़े ध्वजावाले रथों से पूरित होगई ॥ ४३ ॥

अध्याय ७२ ॥

संजय बोले हे राजा शिखंडी ने मद्रके राजा विराट समेत बड़ी शीघ्रतासे महारथी दुःप्रधर्ष भीष्मजी से सम्मुखताकी और अर्जुन ने द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और राजा दुर्योधन के बहुत से बड़े२ धनुषधारी महाबली शूरवीरोंको मोहित किया। हेराजेन्द्र प्रधान और भाइयोंके साथ बड़े धनुषधरी राजा सिंध और पूर्वी पश्चिमीय व आपके क्रोधीपुत्र बड़े धनुषधारी दुर्य्योधन आदि अन्य अनेक राजाओं के सम्मुख उस युद्धमें भीमसेन वर्त्तमान हुए और महारथी सहदेव शकुनी और उलूक के सम्मुख हुए और वह बड़े धनुषधारी दुःप्रधर्ष पितापुत्र भी सम्मुख वर्त्तमान हुए । ५ । और

dragged them along with themselves rushing on in all directions. The elephants dragging the chariots looked beautiful like those dragging out lotus plants from a lake, and the field was strewn over with horsemen and the chariots with high banners" 43.

CHAPTER LXXII

Sanjaya said to the king:—"Shikhandi and Prince Virat of Madra hastened to face invincible Bhishm, and Arjun made Dronacharya, Kripacharya and Prince Duryodhan with many other warriors insensible. And O king, Bhimsen, faced the great archers, the kings of Sindhu—Eastern and Western, your enraged son Duryadhan the great archer and other princes. Brave Sahdev faced Shakuni, Uluk and the great Dushpradharsh archers, father and son 5. Brave Yudhish-

महारथ । समवर्तत सग्रामे पुत्रेण निकृतस्तव ॥ ६ ॥ माद्रीपुत्रस्तु नकुल शूर सङ्क्रन्दनो युधि । त्रिगर्तानाबले साध समसज्जत पाण्डव ॥ ७ ॥ अभ्यवर्तन्तसङ्क्रुद्धा समरे शाल्वकेकयान् । सात्यकिश्चेकितानश्च सौभद्रश्चमहारथ । ८ ॥ धृष्टकेतुश्च समरे राक्षसश्चघटोत्कच । पुत्राणा ते रथानीकं प्रत्युद्याता सुदुर्नया ॥ ९ ॥ सेनापतिरमेयात्माधृष्टद्युम्नो महाबल । द्रोणेन समरे राजन् समीयायोग्रकर्मणा ॥ १० ॥ एवमेते महेष्वासास्तावका पाण्डवै सह । समेत्य समरे शूरा सम्प्रहार प्रचक्रिरे ॥ ११ ॥ मध्यन्दिनगतेसूर्ये नभस्याकुलताङ्गते । कुरव पाण्डवेयाश्च निजघ्नुरितरेतरम् ॥ १२ ॥ ध्वजिनोहेमचित्राङ्गा विचरन्तो रणाजिरे । सपताका रथा रेजुर्वैयाघ्रपरिवारणा ॥ १३ ॥ समेतानाच समरे जिगीषूणा परस्परम् । बभूव तुमुल शब्द सिंहानामिवनर्दताम् ॥ १४ ॥ तत्राद्भुत मपश्याम सम्प्रहार सुदारुणम् । यदकुर्वन् रणे शूरा सृञ्जया कुरुभि सह

आपके पुत्र से ठगाहुआ महारथी युधिष्ठिर युद्धमें हाथियोंकी सेनाके सम्मुख वर्त्तमानहुआ, औरयुद्धमें गर्जनेवाला माद्रीनन्दन वीरनकुल त्रिगर्त्त देशियोंके बड़े रथोंसे युद्धकरनेवालाहुआ, और अजेय महाबली सात्यकी व चेकितान और अभिमन्यु यह तीनों शाल्य और केकय लोगोंसे युद्ध करने के लिये उपस्थित हुए और धृष्टकेतु व घटोत्कच राक्षस युद्धमें आपके पुत्रों की रथवाली सेनाके सम्मुख गये, हे राजा महारथी सेनापति धृष्टद्युम्न महाभयकारी कर्मकरता द्रोणाचार्य्यके सम्मुख जाभिडा । १० । इस प्रकार से आपके इतने धनुषधारी पराक्रमी शूरोंने पाडवों के सम्मुख होकर प्रहारों को किया, दिवस में सूर्य्य के वर्त्तमान होने और आकाश में व्याकुलता होनेपर कौरव और पाडवों ने परस्पर मे मारना प्रारम्भ किया, और सुवर्ण जटित ध्वजा उस युद्धमें घूमने लगी और व्याघ्रचर्म से मढेहुए रथ और पताकाओं समेत महा शोभायुक्त हुए, युद्धमें भिडे हुए परस्पर विजयाभिलाषी सिंह के समान गर्जना करनेवाले शूरवीरों के महाकठोर शब्द होनेलगे, वहां हमने बड़े भयानक उस अपूर्व प्रहार को देखा जिसको बड़े शूर वीर सृजय लोगों ने कौरवों के साथ किया

thir, he who was deceived by your son faced the line of elephants in the field of battle The joy of Madri, Nakul stood roaring to *fight* against the great archers of Trigart. And invincible Satyaki of great strength Chekitan and Abhimanyu all these three were ready to fight against the Shalwas and Kaikayas. Dhrishtaketu and Ghatotkach the rakshas encountered the charioteers of your sons. Brave Dhrishtadyumn the great commander of armies fought bravely against Dronacharya 10 Your brave archers attacked the Pandavas with their weapons The fighting began when the sun had risen high on the sky The gold bedecked banners fluttered in the sky and the bannered chariots covered with the lions hide looked very glorious Brave warriors aspiring for victory roared like lions We saw the brave deeds of Srinjayas in fighting against the Kauravas. 15 The

॥१५॥ नैव स्वं न दिशोराजन्नसूर्य शत्रुतापन। विदिशो वापिपश्यामः शरैर्मुक्तैः समन्ततः ॥१६॥ शक्तीनां विमलाग्राणां तोमराणां तथास्यताम्। निस्त्रिंशानांच पीतानांनीलोत्पल निभाः प्रभाः ॥ १७॥ कवचानां विचित्राणां भूषणानांप्रभास्तथा। खं दिशः प्रदिशश्चैव भासयामासुरोजसा॥ १८॥ वपुर्भिश्च नरेन्द्राणां चन्द्रसूर्यसमप्रभैः। विरराज तदाराजं स्तत्र तत्र रणाङ्गनम्॥ १९॥ रथसंघा नरव्याघ्राः समायांतश्च संयुगे। विरेजुः समरे राजन् ग्रहा इव नभस्तले ॥ २०॥ भीष्मस्तु रथिनां श्रेष्ठो भीमसेनं महाबलम्। अवारयत सङ्क्रुद्धः सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ २१॥ ततो भीष्म विनिर्मुक्ता रुक्मपुंखाः शिलाशिताः। अभ्यघ्नन् समरे भीमं तैलधौताः सुतेजनाः ॥ २२॥ तस्य शक्तिं महा वेगां भीमसेनो महाबलः। क्रुद्धाशीविषसंकाशां प्रेषयामास भारत ॥ २३॥ तामा पतन्तीं सहसा रुक्मदण्डां दुरासदाम्। चिच्छेद समरे भीष्मः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ २४॥ ततोपरेण भल्लेन पीतेननिशितेनच। कार्मुकं भीमसेनस्य द्विधाचिच्छेदभारत

। १६। हे शत्रुहन्ता हमने चारों ओरसे छोड़ेहुए बाणों के कारण आकाश सूर्य्य दिशा विदिशा आदि किसीको नहीं देखा, तीक्ष्णधार बरछी और छोड़ेहुए तोमर और विषयुक्त नीले कमल के समान खड्गोंके और जड़ाऊ कवचोंके वा आभूषणों के प्रकाश ने आकाश दिशा विदिशाओं को प्रकाशित करादिया है राजा उससमय वह रणभूमि चंद्रमा सूर्य से प्रकाशमान मुखवाले राजाओं के शरीरों से शोभा-यमान हुई, हे राजा रथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम युद्ध में जुड़ेहुए उस युद्धमें ऐसे शोभाय मान विदित होते थे जैसे कि आकाश में ग्रहों समेत सूर्य चंद्रमा शोभा देते हैं २० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त महारथी भीष्मजी ने सब सेनाके देखते उस महाबली भीम-सेन को रोका और अपने तीक्ष्ण शिलापर घिसे हुए सुंदर प्रकाशित सुवर्ण पुंखवाले बाणों से उसके शरीरको घायलकिया हे भरतवंशी फिरउस महाबली भीमसेनसे शीघ्र गामी सूर्य्य के समान तीव्र बरछी को बड़े क्रोध कर के भीष्म के ऊपर फेंका, फिर भीष्म ने उस सुनहरी दण्डवाली महा असह्य अकस्मात गिरनेवाली बरछी को अपने

---

sun in the sky was hid from our view by the shower of arrows in all directions. The sharp edged spears, javelins, poisoned swords of the colour of blue lotus, the jewelled armours and ornaments shone in all directions. The battle field was glorious to behold on account of the sun and moon like faces of the kings. The best of warriors, O king, engaged in battle, looked lustrous like the luminaries in the sky. 20. Brave Bhishm, in great rage, checked brave Bhim within sight of all, and with his beautifully shining and sharpened arrows furnished with golden feathers, wounded his body. Then O descendant of Bharat, Bhim threw his swift spear, bright as the sun, against Bhishm; but the latter cut down with his arrows containing hidden knots that unbearable spear of golden staff coming suddenly upon him,

॥ २५ ॥ सात्यकिस्तु ततस्तूर्णं भीष्ममासाद्य संयुगे । आकर्णप्रहितैस्तीक्ष्णैर्निशितैश्चित्र
मतेजनैः ॥ २६ ॥ शरैर्बहुभिरानर्च्छत् पितरं ते जनेश्वर । ततः सन्धाय वै तीक्ष्णं शरं
परमदारुणम् ॥ २७ ॥ वार्ष्णेयस्य रथाद्भीष्मः पातयामास सारथिम् । तस्याश्वाः
प्रद्रुता राजन् निहते रथसारथौ ॥ २८ ॥ तेन तेनैव धावन्ति मनोमारुतरंहसः । ततः
सर्वस्य सैन्यस्य निःस्वनस्तुमुलोऽभवत् ॥ २९ ॥ हाहाकारश्च सञ्जज्ञे पाण्डवानां महात्
मनाम् । अभिद्रवत् गृह्णीत हयान् यच्छत धावत ॥ ३० ॥ इत्यासीत्तुमुलः शब्दो युयुधान
रथं प्रति । एतस्मिन्नेव काले तु भीष्मः शान्तनवस्तदा ॥ ३१ ॥ न्यहनत् पाण्डवीं सेना
मासुरीमिव वृत्रहा । ते वध्यमाना भीष्मेण पाञ्चालाः सोमकैः सह ॥ ३२ ॥ स्थिरां युद्धे
मतिं कृत्वा भीष्ममेवाभिदुद्रुवुः । धृष्टद्युम्नमुखाश्चापि पार्थाः शान्तनवं रणे ॥ ३३ ॥

गुप्तग्रन्थीवाले वाणों से काटा, तदनन्तर अपने तीक्ष्ण पीतरंगवाले भल्ल से भीमसेन के धनुष को काटा ।२५। इसके पीछे सात्यकी ने भीष्मजी के सम्मुख आकर बड़े वेग से कानोंतक खैचे हुए तीक्ष्ण प्रकाशित वाणों से आप के पिता को मोहित कर दिया फिर भीष्मजी ने वडे भयानक तीक्ष्ण वाणको चढाकर सात्यकी के सारथी को रथ से गिराया हे राजा सारथी के मरनेपर उसके घोड़े मन और वायुकी गतीके समान इधर उधर दौड़ने लगे, इस के पीछे सम्पूर्ण सेना में कठिन शब्द प्रकटहुआ और महात्मा पाण्डवोंका हाहाकार उत्पन्न हुआ । ३० । चलो दौड़ो घोडों को थांमो यह कठोर शब्द केवल सात्यकी के रथ के विषय में हुआ फिर उसीसमय शंतनुके पुत्र भीष्म जी ने पाण्डवों की सेनाको ऐसे मारा जैसे कि असुरों की सेनाको इंद्र मारता है, वह पांचाल देशी सोमकों समेत भीष्म के हाथ से घायल युद्ध में उत्तम बुद्धिको करके भीष्म के सम्मुख दौड़े और अग्रगामी धृष्टद्युम्न समेत पाण्डव भी आपके पुत्रकी सेना के मारने की इच्छा से उस भीष्म के संमुख दौड़े, हे राजा इसी प्रकार

and with his dart of yellow colour he cut down Bhim's bow 25 Then Satyaki coming suddenly upon Bhishm, your father made him insensible with his sharp bright arrows discharged from his bow drawn to the ear Bhishm put up his dreadful sharp arrow to his bow and with it he caused the chariot driver of Satyaki to fall down from his seat on the chariot At the death of the driver the horses ran hither and thither with the speed of the mind or the wind and the noise was tremendous throughout the army of the Pandavas. 30 "Come, run, check the horses." were the cries on all sides regarding the chariot of Satyaki In the meantime Bhishm destroyed the army of the Pandavas as Indra does the *asuras* The Panchals with the Somaks, wounded by Bhishm, thought it wise to run away from the presence of Bhishm The Pandava armies, headed by Dhrishtadyumn,

अभ्यधावन् जिगीषंतस्तवपुत्रस्य वाहिनीम् । तथैव कौरवा राजन् भीष्मद्रोणपुरोगमाः ॥ ३४ ॥ अभ्यधावन्त वेगेन ततो युद्धमवर्त्तत ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वन्द्वयुद्धे सप्ततितमोऽध्यायः ७२॥

सञ्जय उवाच । विराटोथ त्रिभिर्बाणैर्भीष्ममार्च्छन्महारथम् । विव्याधतुरगांश्चास्य त्रिभिर्बाणैर्महारथः ॥ १ ॥ तं प्रत्यविध्यद्दशभिर्भीष्मः शांतनवः शरैः । रुक्मपुंखैर्महेष्वासः कृतहस्तो महाबलः ॥२॥ द्रौणिर्गाण्डीवधन्वानं भीमधन्वामहारथः । अविध्यदिषुभिःषड्भिर्दृढहस्तः स्तनान्तरे ॥३॥ कार्मुकंतस्य चिच्छेद फाल्गुनःपरवीरहा । अविध्यच भृशं तीक्ष्णैः पत्रिभिः शत्रुकर्शन ॥४॥ सोन्यत् कार्मुकमादाय वेगवान् क्रोधमूर्च्छितः । अमृष्यमाणःपार्थेन कार्मुकच्छेदमाहवे ॥ ५ ॥ अविध्यत् फाल्गुनं राजन् नवत्यानिशितैः

आपके भीष्म आदिक वीर भी पाण्डवों के संमुख बड़े वेगसे दौड़े और युद्ध होने लगा ॥ ३४ ॥

अध्याय ॥ ७३ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे राजा विराट ने तीन बाणों से महारथी भीष्म को मोहित किया और भीष्म ने अपने तीनबाणों से उसके घोड़ों को घायल करके अपने तीक्ष्ण दश बाणों से उसको घायल किया और बड़े धनुषधारी महारथी दृढ़ हस्त अश्वत्थामा ने छः बाणों से अर्जुन की छाती को घायल किया फिर शत्रुओं के मारनेवाले और बलसे हीन करनेवाले अर्जुनने उसके धनुष को काटकर बड़ेतीव्र बाणों से उसको घायल किया । ३ । हे राजा उस वेगवान् क्रोध से मूर्च्छित युद्धमें अर्जुनके हाथ से टूटेहुये धनुषको असह्य मानकर अश्वत्थामा ने दूसरे धनुष को लेकर, नौ तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को घायल किया और सत्तर तेजबाणों से वासु

encountered Bhishm to destroy the armies of your sons. Your warriors too, joined in fighting and the battle was furious." 34.

CHAPTER LXIII

Sanjaya continued:—"King Virat made brave Bhishm insensible with three arrows and the latter having wounded his horses with three arrows, shot at him ten more Hard handed Ashwathama wounded Arjun in the breast with six arrows, and the latter, destroyer of enemies cut down his bow and wounded him with his sharp arrows. 3. Insane with anger, Ashwathama could not bear the high hardiness of Arjun in cutting down his bow and having taken up another, wounded him with nine sharp arrows and Vasudev with seventy. With his eyes red in anger and with deep sighs and care worn face on account of Vasudev, Arjun pressed hard the Gandiv

शरैः। वासुदेवश्च सप्तत्या विव्याध परमेषुभिः ॥ ६ ॥ ततः क्रोधाभिताम्राक्षः कृष्णेन सह फाल्गुन। दीर्घमुष्णञ्च निःश्वस्य चिन्तयित्वा मुहुर्मुहुः ॥ ७ ॥ धनुः प्रपीड्य वामेन करेणामित्रकर्शनः। गाण्डीवधन्वा संक्रुद्धः शितान् सन्नतपर्वणः ॥ ८ ॥ जीवितान्तकरान् घोरान् समादत्त शिलीमुखान्। तैस्तूर्णं समरेऽविध्यद्द्रौणिं बलवतांवरः ॥ ९ ॥ तस्य ते कवचं भित्वापपुः शोणितमाहवे। न विव्यथे च निर्भिन्नो द्रौणिर्गाण्डीवधन्वना ॥१०॥ तथैव च शरान् द्रौणिः प्रविमुञ्चन्नविह्वलः। तस्थौ स समरे राजंस्त्रातुमिच्छन् महाव्रतम् ॥११॥ तस्य तत् सुमहत्कर्म शशंसुः कुरुसत्तमाः। यत् कृष्णाभ्यां समेताभ्यां सम्यापततसंयुगे ॥ १२ ॥ स हि नित्यमनीकेषु युध्यतेऽभयमास्थितः। अस्त्रग्रामं ससंहारं द्रोणात् प्राप्य सुदुर्लभम् ॥ १३ ॥ ममैष आचार्यसुतो द्रोणस्यापि प्रियः सुतः। ब्राह्मणश्च विशेषेण माननीयो ममेति च ॥ १४ ॥ समास्थाय मतिं धीरो बीभत्सुः शत्रुतापनः। कृपां चक्रे रथश्रेष्ठो भारद्वाजसुतं प्रति ॥ १५ ॥ द्रौणिं त्यक्त्वा ततो युद्धे कौन्तेयः श्वेतवाहनः। युयुधे तावकान्निघ्नंस्त्वरमाणः पराक्रमी ॥ १६ ॥

देवजी को घायल किया, इसके पीछे श्रीकृष्णजी समेत क्रोध से लाल नेत्र अर्जुन ने बड़ी लम्बी उष्ण श्वासें लेकर बारम्बार बड़ी चिन्ता युक्त होकर वाम हाथ से गांडीव धनुष को बहुतसा दबाकर गुप्तग्रन्थी युक्त जीवनके नाश करने वाले भयानक शिलीमुख नाम बाणों को धनुष पर चढ़ाया और बड़ी शीघ्रता से उन बाणों के द्वारा अश्वत्थामा को घायल किया, उन बाणों ने युद्ध में उसके कवच को काटकर उसके रुधिर को पान किया। फिर अर्जुनसे घायल किया हुआ पीड़ामान अश्वत्थामाभी उसी रीति के अर्जुन को बाण मारताहुआ और महाव्रत भीष्मजीकी रक्षाकरता हुआ बड़े धैर्य्य से युद्धमें नियतरहा। १०। उसके उस महाकर्म को देखकर कौरवों ने बड़ी प्रशंसा की जो युद्ध में श्रीकृष्ण के संमुख दौड़ा, और द्रोणाचार्य्य से अतिदुःप्राप्य संहार समेत अस्त्र समूहों को पाकर भयभीत सेना में युद्ध करने वाले शत्रु संपाती वीर अर्जुन ने इस बात को विचार करके कि यहमेरे गुरूका पुत्र गुरूको अत्यन्त प्यारा और मुख्यकर ब्राह्मण होकर मेरापूजनीय है उस को अवध्य जानकर नहींमारा। १५। इसके पीछे श्वेत अश्ववाला शीघ्रकर्मी अर्जुन

bow with his left hand, put on his bow dreadful arrows having hidden knots destructive of life, and with them he wounded Ashwathama in great haste The arrows thus shot pierced through his armour and drank his blood. Wounded by Arjun's arrows, Ashwathama shot his arrows in turn and stood firmly for the protection of Bhishm. 10. The Kauravas highly praised his brave deed as he had assailed Shree Krishn. Arjun spared his life because he was worthy of respect as a Brahman and was the dearly loved son of Dronacharya from whom he (Arjun) had acquired the knowledge of arms so difficult of achieving. 15. Then dexterous Arjun, the possessor of white horses, left Ashwathama and engaged in fighting against and killing

दुर्य्योधनस्तु दशभिर्गार्ध्रपत्रैः शिलाशितैः । भीमसेनं महेष्वासं रुक्मपुङ्खैः समर्पयत्
॥ १७ ॥ भीमसेनः सुसंक्रुद्धः परासुकरणं दृढम् । चित्रं कार्मुकमादत्त शरांश्च निशि-
तान्दश ॥ १८ ॥ आकर्णप्रहितैस्तीक्ष्णैर्वेगवद्भिरजिह्मगैः । अविध्यत्तूर्णमव्यग्रः
कुरुराजं महोरसि ॥ १९ ॥ तस्य काञ्चनसूत्रस्थः शरैः छन्नादितोमणिः । रराजोरसि
वै सूर्यो ग्रहैरिव समावृतः ॥ २० ॥ पुत्रस्तु तव तेजस्वी भीमसेनेन ताडितः ।
नामृष्यत यथा नागस्तलशब्दमदोत्कटः ॥ २१ ॥ ततः शरैर्महाराजरुक्मपुंखैः शिला
शितैः । भीमं विव्याधसंक्रुद्धस्त्रासयन्ते वरूथिनीम् ॥ २२ ॥ तौ युध्यमानौ समरे
भृशमन्योन्यविक्षतौ । पुत्रौ ते देवसङ्काशौ व्यरोचेतांमहाबलौ ॥२३॥ चित्रसेनं नरव्याघ्रं
सौभद्रः परवीरहा । अविध्यद्दशभिर्बाणैः पुरुमित्रञ्च सप्तभिः ॥ २४ ॥ सत्यव्रतञ्च
सप्तत्या विद्ध्वा शक्रसमो युधि । नृत्यन्निव रणे वीर आर्तिं नः समजीजनत् ॥ २५ ॥

युद्धमें अश्वत्थामा को छोड़कर आपके शूरवीरों को मारताहुआ युद्ध में प्रवृत्त हुआ फिर दुर्य्योधन ने गृध्रपक्ष युक्त सुनहरी पुंखशिलापर तीक्ष्ण कियेहुए दश बाणों से बड़ेबली धनुषधारी भीमसेन को घायल किया, तब अत्यन्त कोपित भीमसेनने मृत्यु कारक रत्नोंसे जटित बड़े दृढ़ धनुष को हाथ में लिया और दश तीक्ष्णबाणों को चढ़ाकर बड़ी शीघ्रतासे अधिक खैंच कर राजा दुर्य्योधनको छाती में घायल किया, उसकी सुवर्णित सूत्र से बँधी हुई छाती की मणि बाणों से संयुक्त होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि आकाशमें ग्रहोंसे व्याप्त सूर्य्य होताहै, २० फिर भीमसेन से घायल आपके तेजस्वी पुत्रने ऐसे नहीं सहा जैसे कि हाथ की हथेली के शब्द से जागाहुआ सर्प शान्तनहीं होता है, हे महाराज सेनाकी रक्षा करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधन ने सुनहरी पुंखके पैनेकिये हुए बाणों से भीमसेन को घायल किया, फिर आप के वह दोनों महाबली पुत्र युद्ध में लड़ते और परस्परघायल करते देवताओं के समान शोभायमान हुए, और नरोत्तम शत्रुहन्ता अभिमन्युने सात तीक्ष्णबाणों से चित्रसेन और पुरुमित्रको घायल किया फिर युद्ध में नृत्यकरते इन्द्रके समान पराक्रमी अभिमन्युने सत्तरबाणों से सत्यव्रतको घायल करके हम लोगोंको पीड़ित किया । २५ । चित्रसेनने शिलीमुख नाम दशबाणोंसे और

your other warriors. Then Duryodhan wounded Bhim the great warrior and archer with his ten arrows sharpened on stone having gold feathers and vulture quills stuck in them. The latter, in a rage *took up his fatal bow decked with gems, and drawing it swiftly and* more closely he wounded the former with ten sharp arrows in the breast. The gold thread of his breast jewel, pierced with arrows looked beautiful like the sun surrounded by stars. 20. Your glorious son could not bear being wounded by Bhim like a serpent awakened by the clap of hand. Duryodhán the protector of armies, in a great rage, wounded Bhimsen with his sharpened arraws having gold feathers. Both your sons, fighting with and wounding each other look-

तं प्रत्यविध्यद्दशभिश्चित्रसेनः शिलीमुखैः । सत्यव्रतश्च नवभिः पुरुमित्रश्च सप्तभिः
॥ २६ ॥ स विद्धो विक्षरन्रक्तं शत्रुसंवारणं महत् । चिच्छेद चित्रसेनस्य चित्रं कार्मुक
मार्जुनिः ॥ २७ ॥ भित्त्वा चास्य तनुत्राणं शरेणोरस्यताडयत् । ततस्ते तावका वीरा
राजपुत्रा महारथाः ॥ २८ ॥ समेत्य युधि संरब्धा विव्यधुर्निशितैः शरैः । तांश्च सर्वान्
शरैस्तीक्ष्णैर्जघान परमास्त्रवित् ॥ २९ ॥ तस्य दृष्ट्वा तु तत्कर्म परिवव्रुः सुतास्तव ।
दहन्तं समरे सैन्यं वने कक्षं यथोल्बणम् ॥ ३० ॥ अपेतशिशिरे काले समिद्धमिव
पावकम् । अत्यरोचत सौभद्रस्तव सैन्यानि नाशयन् ॥ ३१ ॥ तत्तस्य चरितं दृष्ट्वा
पौत्रस्तव विशाम्पते । लक्ष्मणोऽभ्यपतत्तूर्णं सात्वतीपुत्रमाहवे ॥ ३२ ॥ अभिमन्यु

सत्यव्रतने नव बाणोंसे पुरुमित्रने सातबाणों से उसको घायल किया, उस घायल और रुधिर को डालने वाले अभिमन्युने चित्रसेनके उस जड़ाऊ शत्रुओंके हटाने वाले बड़े धनुषको काटा, और बाणही से उसके कवचको काटकर छातीमें घायल किया फिर आपके उन महावली राजकुमारों ने और महारथियों ने भी उसको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया फिर उस महा अस्त्रज्ञने उन सबकोभी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया, फिर युद्धमें महाक्रुद्धके समान आपके वीरोंके जलाने वाले उस अभिमन्यु के उस कर्मको आपके पुत्रों ने देखकर उसको चारों ओर से घेरलिया, । ३० । चैत्र वैशाखकी तीव्र अग्नि के समान अभिमन्यु आपकी सेना को नाश करता बड़ा शोभित हुआ, हे राजा आपका पौत्र लक्ष्मण उस चरित्र को देखकर शीघ्रही अभिमन्यु के सम्मुख आभिड़ा, फिर अत्यन्त कोपित अभिमन्युने शुभ लक्षण वाले लक्ष्मणको छः विशिखोंसे और सारथी को तीनबाणों से पीड़ा मान किया । ३३ । हे महाराज धृतराष्ट्र उसी प्रकार से लक्ष्मण ने भी अपने

ed glorious like gods And Abhimanyu the best of men and destroyer of foes wounded Chitrasen and Purumitra with seven sharp arrows Then dancing in the battle field full of prowess like Indra, Abhimanyu wounded Satyabrat with seventy arrows and gave us much trouble 35 Chitrasen wounded him with ten arrows sharpened on stone, Satyabrat with nine and Purumitra with seven Abhimanyu, wounded and bleeding, cut down Chitrasen's bow, jem bedecked and destroyer of enemies, and with the same arrow, piercing through his armour, wounded him in the breast. Then your brave sons and warriors too, wounded him with their sharp arrows and that great warrior wounded them with their sharp arrows. Then seeing the great bravery of enraged Abhimanyu the destroyer of foes, your sons surrounded him on all sides 30 Like the fierce fire of the Spring, Abhimanyu looked very glorious when he destroyed your armies Seeing his brave deeds, O king, your grandson Lakshman came at once before Abhimanyu and fought with him Abhimanyu thereupon,

रतुसंक्रुद्धोलक्ष्मणं शुभलक्षणम् । विव्याध निशितैः षड्भिः सारथिञ्चत्रिभिः शरैः ॥३३॥
तथैव लक्ष्मणो राजन् सौभद्रं निशितैः शरैः । अविध्यत महाराज तदद्भुत मिवाभ
वत् ॥ ३४ ॥ तस्याश्वांश्चतुरो हत्वा सारथिञ्च महाबलः । अभ्यद्रवत सौभद्रो लक्ष्मणं
निशितैः शरैः ॥ ३५ ॥ हताश्वेतु रथे तिष्ठन् लक्ष्मणः परवीरहा । शक्तिं चिक्षेप संक्रुद्धः
सौभद्रस्य रथं प्रति ॥ ३६ ॥ तामापतन्तीं सहसाघोररूपांदुरासदाम् । अभिमन्यु-शरै
स्तीक्ष्णैश्चिच्छेद भुजगोपमाम् ॥ ३७ ॥ ततः स्वरथमारोप्य लक्ष्मणं गौतमस्तदा । अपो
वाह रथेनाशो सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ ३८ ॥ ततः समाकुले तस्मिन् वर्तमाने महाभये ।
अभ्यद्रवन् जिघांसन्तः परस्परवधैषिणः ॥ ३९ ॥ तावकाश्च महेष्वासाः पाण्डवाश्च
महारथाः । जुह्वंतः समरे प्राणान् निजघ्नुरितरेतरम् ॥ ४० ॥ मुक्तकेशा विकवचा
विरथाश्छिन्नकार्मुकाः । बाहुभिः समयुध्यन्त सृञ्जयाः कुरुभिःसह ॥ ४१ ॥ ततो भीष्मो
महाबाहुः पाण्डवानां महात्मनाम् । सेनां जघान संक्रुद्धो दिव्यैरस्त्रैर्महाबलः

बाणों से अभिमन्यु को ऐसा घायल किया जिसके देखने से आश्चर्यसा होताहै फिर महारथी अभिमन्यु उसके चारों घोड़ों को सारथी समेत मारकर लक्ष्मण के संमुख दौड़ा, फिर मृतक घोड़ों के रथपर नियत शत्रु के वीरों के मारनेवाले अत्यन्त क्रोधित लक्ष्मण ने अभिमन्यु के रथपर बरछीको फेंका, अभिमन्यु ने उस भयानक रूप अजगरसर्पाकृति आनेवाली बरछी को अपने तीव्र बाणों से काटा, फिर कृपाचार्य्य जी लक्ष्मण को अपने रथपर बैठाकर सबसेना के देखते हुए उसको रथके द्वारा दूर लेगये, फिर बड़े भयकारी तुमुल युद्धके वर्त्तमान होनेपर परस्पर विजयाभिलाषी शूरवीर एक एकको मारतेहुए सम्मुख दौड़े, आपके बड़े धनुषधारी और महारथी पांडव युद्धमें प्राणोंको होमते हुए परस्पर में मारने लगे फिर छुटेबालकवचरहित टूटे धनुष सृंजय लोग अपनी भुजाओं से कौरवों से अत्यन्त युद्ध करने वाले हुए, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी ने बड़े क्रोध युक्त होकर अपने

in great rage, wounded Lakshman with six darts and his chariot driver with three. Lakshman too, in the same manner, O king Dhritrashtra, wounded Abhimanyu in a wonderful way. Thereupon Abhimanyu killed all his four horses and the driver and rushed upon him. Seated on the chariot of which the horses were dead, enraged Lakshman the destroyer of foes, hurled a spear at the chariot of Abhimanyu. The latter cut down with his arrows the unbearable spear coming towards him like a serpent. Kripacharya then seated Lakshman on his own chariot and carried him far away from the sight of the enemy. Then there was a serve fighting and the warriors desirous of victory rushed against one another killing and destroying. Your great archers and the Pandav warriors, careless of their lives fought bravely, and with dishevelled hair and destitute of armour and with broken bows the Srinjayas and Kauravas fought a hard contested

॥ ४२ ॥ हतेश्वरैर्गजैस्तत्र नरैरश्वैश्च पातितैः । रथिभिः सादिभिश्चैव समास्तीर्यत मेदिनी ॥ ४३ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वंद्वयुद्धे त्रिसप्ततितमोऽध्यायः॥ ७३ ।

सञ्जय उवाच । अथ राजन् महाबाहुः सात्यकिर्युद्धदुर्मदः । विकृष्य चापं समरे भारसाहमनुत्तमम् ॥१॥ प्रामुञ्चत्पुंखसंयुक्तान् शरानाशीविषोपमान् । प्रगाढं लघुचित्रञ्च दर्शयन् हस्तलाघवम् ॥ २ ॥ तस्य विक्षिपतश्चापं शरानन्यांश्च मुञ्चतः । आददानस्य भूयश्च सन्दधानस्य चापरान् ॥ ३ ॥ क्षिपतश्चपरांस्तस्य रणे शत्रून्विनिघ्नतः । ददृशे रूपमत्यर्थं मेघस्येव प्रवर्षतः ॥ ४ ॥ तमुदीर्यन्तमालोक्य राजा दुर्योधनस्ततः । रथानामयुतं तस्य प्रेषयामास भारत ॥ ५ ॥ तांस्तु सर्वान्महेष्वासान् सात्यकिः सत्यविक्रमः । जघान परमेष्वासो दिव्येनास्त्रेण वीर्यवान् ॥ ६ ॥ स कृत्वा दारुणं कर्म प्रगृहीतशरासनः । आससाद ततो वीरो भूरिश्रवसमाहवे ॥ ७ ॥ स हि संदृश्य सेनां ते युयुधानेन

दिव्यअस्त्रों से महात्मा पांडवोंकी सेनाको मारा, उस समय विनासवारी के हाथी मनुष्य घोड़ों के वा रथी और अश्वारूढ़ों के गिरने से युद्धभूमि अत्यन्त व्याप्त होगई ४३॥

अध्याय ७४ ॥

संजय बोले हे राजा फिर युद्धमें दुर्मद महाबाहु सात्यकी ने अपने उग्र धनुषको खेंचकर, अपनी हस्तलाघवता को दिखाते सपुंख सर्पाकृति तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते और बड़ी शीघ्रता से अनेक बाणों को फेंकते शत्रुओं को मारते हुए सात्यकी का ऐसा रूप दिखाई दिया जैसे कि अत्यन्त बरसते हुए बादलका रूप दिखाई देता है, फिर राजा दुर्योधन ने उस गर्जने वाले सात्यकीको देखकर उसके ऊपर दशहजार रथियोंको भेजा ।५। फिरसत्य विक्रम महाबली उग्रधनुषधारी सात्यकी ने अपने दिव्यास्त्रों से उन बड़े २ धनुषधारियोंको मारा, फिर इसवीर धनुषधारी ने महा कठिन कर्मको कर के भूरिश्रवा को सम्मुख पाया, वह कौरवों की कीर्त्तिका

battle Then brave Bhishm, in great anger, discharged his celestial weapons at the Pandav army At this the field was strewn over with the bodies of the riderless elephants, men, horses and charioteers" 43

CHAPTER LXXIV

Sanjaya to Dhritrashtra —' Satyaki the best of warriors, Drawing his bow and showing the dexterity of his hand, discharged feathered arrows of the form of snakes, and with great rapidity discharging many arrows and destroying the enemies, Satyaki's form appeared like that of a raining cloud. Prince Duryodhan, seeing that roaring Satyaki, sent ten thousands of charioteers against him 5 But Satyaki the great archer of true prowess killed those great archers with his arrows And the brave archer in doing that deed of valour, found

प नितार्म् । अभ्यधावत संक्रुद्धः कुरूणां कीर्त्तिवर्द्धनः ॥ ८ ॥ इन्द्रायुधसवर्णं तु विस्फार्य सुमहद्धनुः । सुसृवानवज्रसङ्काशान् शरानाशीविषोपमान्॥९॥ सहस्रशो महाराज दर्शयन् पाणिलाघवम् । शरांस्तान्मृत्युसंस्पर्शान् सात्यकेयपदानुगा ॥१०॥ न विषेहुस्तदा राजन् दुद्रुवुस्ते समन्ततः । विहाय सात्यकिं राजन् समरे युद्धदुर्मदम् ॥११॥ तं दृष्ट्वा युयुधानस्य सुता दश महाबला । महारथा समाख्याताश्चित्रवर्मा युधध्वजाः ॥ १२ ॥ समासाद्य महेष्वासं भूरिश्रवसमाहवे । ऊचुः सर्वे सुसंरब्धा यूपकेतुं महारणे ॥१३॥ भोभो कौरवदायाद सहास्माभिर्महाबल । एहि युध्यस्व संग्रामे समस्तैः पृथगेव वा ॥ १४ ॥ अस्मान् वा त्वमपराजित्य यशः प्राप्स्यसि संयुगे । वय वा त्वां पराजित्य प्रीतिं धास्यामहे पितुः ॥ १५ ॥ एवमुक्तस्तदा शूरैस्तानुवाच महाबलः । वीर्य्यश्लाघी नरश्रेष्ठस्तान् दृष्ट्वासमवस्थितान् ॥ १६ ॥ साध्विदं कथ्य ते वीरा यद्येवं मति रेवंवः ।

बढ़ाने वाला भूरिश्रवा उस सेनाको सात्यकी के हाथ से पीड़ित देखकर बड़ा क्रोध युक्तहो के सम्मुख दौड़ा हे राजा उसनेभी अपनी हस्तलाघवता को दिखाकर इन्द्र वज्रके समान धनुष को टंकारकर सर्पों के समान वज्रके सदृश हजारों बाणों को छोड़ा, और सात्यकी के साथी शूर वीर उनमृत्यु के समान स्पर्श वाले बाणों को नहीं सहसके और सब उसदुर्मद सात्यकी को युद्धमें अकेलाही छोड़कर चारों ओर को भागे । ११ । फिर सात्यकी के बड़े धनुषधारी महारथी कवचों से शोभित दश पुत्रों ने उस सेना को भागता देखकर बड़ाक्रोधित होके उस यूपध्वज बड़े धनुषधारी भूरिश्रवाके सम्मुखहोकर बोले, हे कौरवों के प्यारे पुत्र महाबली आओ और युद्धमें हमसबों के साथ अथवा जुदे २ के साथ युद्ध को करो, तुमसंग्राममें हमको विजय करके कीर्त्तिवानहोगे अथवा हम तुमको विजय करके पिताको आनन्ददेंगे, तबउन शूरवीरों से ऐसा कहा हुआ अपने बलसे प्रशंसा पाने वाला नरोत्तम महाबली भूरिश्रवा उनको सम्मुख नियत देखकर बोला । १६ । हे वीरलो

Bhurishrava before him. Bhurishrava the perpetuator of the fame of the Kauravas, seeing the destruction of the Kauravas, rushed upon him in a rage. And showing the dexterity of his hand and twanging his bow like the vajra of India, discharged thousands of arrows like vajra or snakes. The warriors who accompanied Satyaki, could not bear the wounds of those fatal arrows and ran away in all directions, leaving Satyaki alone 11. Then the ten brave sons of Satyaki, great archers sheathed in armour, seeing the flight of the army, faced the great archer Bhurishrava and said,— "Darling of the Kauravas! come and fight with us jointly or separately. Either you will gain fame by conquering us or we shall please father by conquering you." Thus challenged by these warriors, the famous warrior Bhurishrava the best of men, seeing them in his presence, said, 16 "Well, warriors!

युध्यध्वं सहिता यत्ता निहनिष्यामि वो रणे ॥ १७ ॥ एवमुक्तामहेष्वास्ते वीराः क्षिप्र कारिणः । महता शरवर्षेण अभ्यधावन्नरिन्दमम् ॥ १८ ॥ सोपराह्णे महाराज सग्राम स्तुमुलो भवत् । एकस्यच बहूनांच समेतानांरणाजिरे ॥ १९ ॥ तमेकं रथिनां श्रेष्ठं शरै स्ते'समवा किरन् । प्रावृषीव यथामेरुं सिषिचुर्जलदानृप ॥ २० ॥ तैस्तु मुक्तान् शरान् घोरान् यमदण्डा शनिप्रभान् । असम्प्राप्ता नस भ्रांतश्चिच्छेदाशुमहारथः ॥ २१ ॥ परि वार्य महाबाहुं'निहन्तुमुपचक्रमुः । सौमदत्तिस्ततः क्रुद्धस्तेषां चापानि भारत ॥ २२ ॥ चिच्छेद समरे राजन् युध्य मानो महारथैः । ते हता न्यपतन् राजन् वज्रभग्ना इव द्रुमा ॥ २३ ॥ तान् दृष्ट्वा निहतान्वीरा रणे पुत्रान्महाबलान् । वार्ष्णेयो विनदन्राजन्

गो यह बहुत उत्तम है जो अबतुम्हारी ऐसीही इच्छा है तो हमसे सब इकट्ठे होकर लड़ो मैं युद्ध में तुमसब उपाय करने वालों को मारूंगा, ऐसे परस्पर कहकर बड़े धनुषधारी शीघ्रता करने वाले शत्रुओंके पराजय करनेवाले उन वीरों ने बाणों की वर्षाचारों ओरसे की हे महाराज तीसरे पहर तक एक का बहुतों के साथ महा युद्ध हुआ फिर इन सबोंने उस रथियों में श्रेष्ठ अकेले को बाणों से ढक कर ऐसा सींचा जैसा कि वर्षा ऋतु में सुमेरु पर्व्वत को बादल सींचते हैं । २० । उस भ्रान्ति रहित महारथी ने उन सबों के छोड़े हुए यमदण्ड वा इन्द्र वज्र के समान प्रकाशित बाणसमूहों को बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक मार्ग में ही काटा, हे राजा हमने वहां पर सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवाके अद्भुत पराक्रम को देखा कि जो अकेलाही निर्भयके समान अनेकों से लड़ा, दश महारथियों ने बाणोंकी वर्षाको छोडकर उस महाबाहुको चारोंओरसे घेरकर मारनेका विचारकिया, हेभरतर्षभ तब तो महा रथी भूरिश्रवा ने अत्यन्त कोपयुक्त होकर एक निमिषही में अपने दश बाणों से उनके दशों धनुषों को काटा, तदनन्तर इन टूटे धनुषवाले वीरोंके शिरों को अपने गुप्तग्रन्थी वाले भल्लोंसे काटडाला, वह मरकर पृथ्वीपर ऐसे गिरे जैसे कि वज्रसे

I shall gratify your desire by fighting with you all at once." Thus bandying words with one another, those great and dexterous warriors, destroyers of foes, showered their arrows from all sides. The one O king, fought against many till afternoon and they all covered him with the shower of their arrows as the clouds do Sumeru mountains. 20 That warrior with a calm and collected mind, cut down all their arrows like the vajra of Indra or the staff of Yam, in the way. There we saw, O king, the matchless prowess of Somdatta's son Bhurishrava who alone, like an intrepid warrior, fought against many Then the ten warriors, stopping their shower of arrows, surrounded him from all sides in order to kill him. Thereupon, Bhurishrava in great rage cut down in a trice the ten bows of those warriors with ten of his arrows and then cut down their heads with his arrows having hidden

भूरिश्रव संमभ्ययात् ॥ २४ ॥ रथं रथेन समरे पीडयित्वा महाबलौ । तावन्योन्यंहि
समरे निहत्य रथवाजिनः ॥२५॥ विरथा वभिवल्गन्तौ समेयातां महारथौ । प्रगृहीतमहा
खड्गौ तौ चर्म वरधारिणौ ॥ २६ ॥ शुशुभाते नरव्याघ्रौ युद्धाय समवस्थितौ । ततः
सात्यकि मभ्येत्य निस्त्रिंशवरधारिणम् ॥ २७ ॥ भीमसेनस्त्वरन् राजन् रथ मारोपयत्
तदा । तथापि तनयो राजन् भूरिश्रव समाहृये ॥ २८ ॥ आरोपयद्रथं तूर्णं पश्यतां सर्व
धन्विनाम् । तस्मिंस्तथा वर्तमाने रणे भीष्मं महारथम् ॥ २९ ॥ अयोधयन्त संरब्धाः
पाण्डवा भरतर्षभ । लोहितायति चादित्ये त्वरमाणो धनञ्जयः ॥ ३० ॥ पञ्चविंशति
साहस्रान्निजघान महारथान् । ते हि दुर्योधनादिष्टास्तदा पार्थनिवर्हणे ॥ ३१ ॥ सम्प्रा-
प्यैव गता नाशं शलभा इव पावकम् । ततो मत्स्याः केकयाश्च धनुर्वेदविशारदाः ॥३२॥

टूटे हुए वृक्ष पृथ्वी पर गिरते हैं, हे राजा युद्धमें मरेहुए महाबली वीर पुत्रों को देखकर, बड़ी गर्जना करता हुआ सात्यकी भूरिश्रवा के सम्मुख गया और दोनों महाबली युद्ध में रथ से रथको टक्कर देकर रथोंके घोड़ोंको परस्पर मार विरथ होके सम्मुख गर्जते हुए द्वन्द्व युद्ध करने लगे, फिर वह बड़े२ खड्ग और ढालोंको धारण किये हुए युद्धमें प्रवृत्त महा शोभायमान हुए । २६ । हे राजाइस के पीछे भीमसेन ने उत्तम खड्ग धारी सात्यकी के पास आकर उनको रथपर सवारकिया फिर आपके पुत्र ने भी सब धनुष धारियों के देखते हुए शीघ्रही भूरिश्रवा को रथ पर सवारकिया, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ इस प्रकार से उस युद्ध के प्रवृत्त होनेपर महा क्रोधित पांडव और भीष्मजी भी युद्ध में प्रवृत्तहुए. सूर्य्य के अस्त होने पर बड़ी शीघ्रता करने वाले अर्जुन ने पच्चीस हजार महारथियों को मारा । ३०। फिर वह दुर्य्योधन की आज्ञा से अर्जुन के मारनेकी इच्छा में अर्जुन को नपाकरही ऐसे नष्ट होगये जैसे कि अग्नि में टीड़ीभस्म होजाती हैं, इस पीछे धनुर्वेदमें पंडित मत्स्य और केकयों ने आकर पुत्रसमेत अर्जुनकी चारों ओर के रक्षाकी फिर

knots. They fell dead on the ground like trees struck down by lightning. Seeing his brave sons dead in the field of battle, O king, Satyaki faced Bhurishrava with a tremendous roar. The two warriors then dashed their chariots against each other, and having killed each other's horses, they dismounted from their chariots and continued their duel. Both looked very glorious with their shields and swords. 26. Then O king, Bhimsen came to Satyaki the wielder of good sword and mounted him on his own chariot. Your son too, within sight of all the warriors, took Bhurishrava on his own chariot When the battle was thus raging, O best of the descendants of Bharat, the enraged Pandavas and Bhishm join'd in Combat. Before sunset Arjun had destrored twentyfive thonsands of warriors.30. They had come by Duryodhan's order to destroy Arjun but unable to have their hands on him they were themselves destroyed in the attempt as the locusts in

परिवव्रुस्तदा पार्थं सहपुत्रं महारथम्। एतस्मिन्नेव कालेतु सूर्यस्तमुपगच्छति ॥ ३३ ॥
सर्वेषां चैव सैन्यानां प्रमोहः समजायत। अवहारं ततश्चक्रे पितादेवव्रतस्तव ॥ ३४ ॥
सन्ध्याकाले महाराज सैन्यानां श्रान्तवाहनः। पाण्डवानां कुरूणाञ्च परस्परसमागमे
॥३५॥ ते सेने भृशसंविग्ने ययतु स्वनिवेशनम्। ततःस्वशिविरङ्गत्वा न्यविशंस्तत्रभारत।
पांडवाःसृञ्जयैःसार्धं कुरवश्च यथाविधि ॥ ३६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि पंचमदिवसावहारे
चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

अच्छे प्रकारसे उठीहुई धूल के बादलों से सूर्य्यास्तसा होगया उस समय सूर्यास्त के कारण सेना में बड़ा मोह उत्पन्न हुआ, इस के पीछे हे महाराज, आपके पिता देवव्रत जिनके घोड़े थकेहुए थे उन भीष्मजी ने सायंकालके समय सेनाको विश्राम दिया, पांडव और कौरवों के परस्पर युद्धसे अत्यंत व्याकुल वह दोनों ओर की सेना अपने निवासस्थान को गई, इसके पीछे सृंजयों समेत पांडव और कौरव बुद्धि के अनुसार अपने २ डेरोंमें जाकर स्थित हुए ॥ ३६ ॥

---

fire. Then the great archers of Matsya of Kaikaya, protected Arjun and his son from all sides. The sun at that time was so covered with the rising dust that it appeared as if he was about to set and the armies became insensible on account of the darkness. Then, O king, your father Devabrat whose horses were tired, issued orders to them to rest for the night. Both the armies depressed much on account of the excessive fighting between the Kauravas and the Pandavas, retired as well as the Kauravas and entered their tents." 36.



सञ्जय उवाच । तेविश्रम्य ततो राजन् सहिता कुरुपाण्डवाः । व्यतीतायांतुशर्वर्यां पुनर्युद्धायनिर्ययुः ॥ १ ॥ तत्रशब्दो महानासीत्तव तेषाञ्च भारत । युज्यतारथमुख्यानां कल्पतां चैव दन्तिनाम् ॥ २ ॥ सन्नह्यतांपदातीनां हयानाञ्चैव भारत । शङ्खदुन्दुभि नादश्च तुमुल सर्वतोभवत् ॥ ३ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजाधृष्टद्युम्नमभाषत । व्यूहंव्यूहमहाबाहो मकरंशत्रुनाशनम् ॥ ४ ॥ एवमुक्तस्तु पार्थेन धृष्टद्युम्नोमहारथ व्यादिदेशमहाराज रथिनोरथिनांवर ॥ ५ ॥ शिरोभूद्द्रुपदस्तस्य पाण्डवश्चधनञ्जय । चक्षुषी सहदेवश्च नकुलश्चमहारथः ॥ ६ ॥ तुण्डमासीन् महाराज भीमसेनोमहाबल । सौभद्रोद्रौपदेयाश्च राक्षसश्चघटोत्कच ॥ ७ ॥ सात्यकि धर्मराजश्च व्यूहग्रीवासमास्थिता । पृष्ठमासीन्महाराज विराटोवाहिनीपति ॥ ८ ॥ धृष्टद्युम्नेन सहितो महत्यासेनयावृत । केकयाभ्रातर पञ्चवामपार्श्वं समाश्रिता ॥ ९ । धृष्टकेतुर्नरव्याघ्रश्चेकितानश्चवीर्यवान् । दक्षिणपक्षमा

अध्याय । ७५ ॥

संजय बोले हे राजा फिर वह कौरव पांडव रात्रि को व्यतीत करके प्रातः कालही युद्ध करने को चले, इसके पीछे उन पांडवों के और आप के पुत्रों के उत्तम रथों के जुड़ते हुए घोड़ों के महा शब्द होने लगे और सब ओरसे शंख वा दुन्दुभियों के कठिन शब्द भी सुनाई दिये तब राजा युधिष्ठिरने धृष्टद्युम्न से कहा कि हेमहाबाहु तुम मकरव्यूहको तैयार करो वह व्यूह शत्रुओं का संतप्त करनेवाला है, युधिष्ठिर की आज्ञा पातेही उस महारथी धृष्टद्युम्न ने रथी शूरवीरोंको आज्ञा की उस व्यूहका शिर तो राजा द्रुपद और अर्जुन हुआ और नेत्रमें महारथी नकुल और सहदेवहुए । ६ । और मुखमें महा बली भीमसेन हुआ और व्यूहकी ग्रीवा में अभिमन्यु द्रौपदी के पांचो पुत्र घटोत्कच राक्षस, सात्यकी, और धर्मराज हुए और पीठ पर बड़ी सेना युक्त सेनापति धृष्टद्युम्न और विराट उपस्थित हुए और बाम भागमें पांचों भाई केकय वर्त्तमान हुए, और नरोत्तम धृष्टकेतु और पराक्रमी

CHAPTER LXXV

"At the close of the night," continued Sanjaya, "early in the morning, the Kauravas and the Pandavas started for fighting The horses which drew the chariots of the Pandavas and those of your sons, made a tremendous noise with their neighing The peals from the conchs and trumpets were yet more prominent. Then Prince Yudhishthir thus addressed Dhrishtadyumna —"*Arrange your armies in the form of a crocodile great warrior, that army will destroy the enemies.*" At Yudhishthir's command, Dhrishtadyumna arranged the warriors. King Drupad and Arjun were stationed at the head, and Nakul and Saha dev formed the eyes. 6 At the month stood brave Bhim and at he neck were Abhimanyu, the five sons of Draupadi, Ghatothach the rakshas, Satyaki and Yudhishthir On the back were stationed Dhrish tadyumna the commander and Virat with a large army On the left

श्चिरथ स्थितोव्यूहस्यदक्षिणे । १० ॥ पादयोस्तु महाराज स्थितः श्रीमान्महारथः । कुन्ति
भोज शतानीको महत्या सेनयावृत ॥ ११ ॥ शिखण्डीतुमहेष्वास सोमकै संवृतोवली ।
इरावांश्चतत पुच्छेमकरस्य व्यवस्थितौ ॥ १२ ॥ एवमेत महाव्यूहं व्यूह्यभारतपाण्डवाः ।
सूर्योदये महाराज पुनर्युद्धायदंशिता ॥१३॥ कौरवानभ्ययुस्तूर्णं हस्त्यश्वरथपत्तिभि ।
समुच्छ्रितैर्ध्वजैश्छत्रै. शस्त्रैश्चविमलै शितै ॥ १४ ॥ व्यूहंदृष्ट्वातु तत्सैन्य पितादेव
व्रतस्तव । क्रौञ्चेनमहताराजन् प्रत्यव्यूहतवाहिनीम् ॥ १५ ॥ तस्यतुण्डेमहेष्वासो भारद्वाजो
व्यरोचत । अश्वत्थामाकृपश्चैव चक्षुरासीन्नरेश्वर ॥ १६ ॥ कृतवर्मातु सहित काम्बोजवर
बाह्लिकै । शिरस्यासीन्नरश्रेष्ठ श्रेष्ठ सर्वधनुष्मताम् ॥ १७ ॥ ग्रीवायांशूरसेनश्च तव
पुत्रश्चमारिष । दुर्योधनोमहाराजराजभिर्बहुभिर्वृत. ॥ १८ ॥ प्राग्ज्योतिषस्तु सहितोमद्रसौ
वीरकेकयै । उरस्यभून्नरश्रेष्ठ महत्यासेनयावृत ॥ १९ ॥ स्वसेनयाच सहित सुशर्मा

चेकितान दक्षिण पक्षमे नियत होकर व्यूहके दक्षिण ओर नियत हुए । १० । और हे राजा बड़ी सेना समेत श्री मान् महारथी कुन्तभोज और शतानीक व्यूहके चरणों पर स्थिर हुए, फिर बडा धनुषधारी बलवान् शिखंडीसोमकों समेत और राजा इरावान् उस मकरव्यूहकी पूंछपर नियत हुए, इस रीति से मकरव्यूहको रचकर सूर्य्य के उदय हानेपर सब पांडव फिर युद्ध करने को शस्त्रधारी होकर उपस्थित हुए और रथ हाथी घोड़े और बड़ी ऊंची ध्वजा वाले क्षत्रियों से युक्त सब प्रकार के स्वच्छ अस्त्रों समेत कौरवों के सम्मुख गये, हे धृतराष्ट्र आपके पिता भीष्मजी ने उस अलंकृत सेनाको देखकर अपनी सेनाको भी क्रौंच नामबड़ेव्यूह में बड़ी रचना से बनाया । १५ । उसके मुखपर बड़े धनुर्द्धर द्रोणाचार्य और नेत्रोंपर अश्वत्थामा और कृपाचार्य हुए और शिरपर और कृतवर्मा वाल्हीकऔर काम्बोज वाले हुए, और ग्रीवा में सब राजाओं समेत आपका पुत्र दुर्योधन और शूरसेन नियत हुए, और बड़ी सेनासमेत राजा प्राग्ज्योतिष भद्र और केकयोंसमेत सौवीर

---

wing were the five Kukaya brothers, and Dhrishtaketu the best of men with brave Chekitan was stationed on the right wing 10
And brave Kuntibhoj and Shatanik stood, O king, at the feet of that array Then the great archer Shikhandi together with the Somaks and King Irawan stood at the tail Thus having arrayed the army in the form of a crocodile the Pandavas armed with weapons stood ready to fight at sunrise and with chariots, elephants, horses and warriors having high banners and well polished weapons they faced the Kauravas. And seeing O king, that well arranged army, your father Bhishm formed his armies into an array named Kraunch 15
At its mouth was the great archer Dronacharya and Ashwathama and Kripacharya were at the eyes At its head were Kritvarma, Vahlik and the Cambojes and at the neck was Duryodhan your son together with all the princes and Shursen. King Pragjyotish with a

प्रस्थलाधिप । वाम पक्ष समाश्रित्य दंशित समवास्थित ॥ २० ॥ तुषारा यवनाश्चैव शकाश्चसह चूचुपै । दक्षिण पक्षमाश्रित्य स्थिताव्यूहस्य भारत ॥ २१ ॥ श्रुतायुश्च शतायुश्च सौमदत्तिश्च मारिष । व्यूहस्य जघनेतस्थुःरक्षमाणा परस्परम् ॥ २२ ॥ ततो युद्धाय सञ्जग्मु पाण्डवा, कौरवै सह । सूर्य्योदये महाराज युद्धमभून्महत् ॥२३॥ प्रतीपू रथिनो नागा नागांश्च रथिनोययु । हयारोहान् रथारोहा रथिनश्चापि सादिन ॥ २४ ॥ सादिनश्च हयान् राजन् रथिनश्च महारणे । हस्त्यारोहान् हयारोहा रथिन सादिनस्तथा ॥ २५ ॥ रथिन पत्तिभि, सार्द्धं सादिनश्चापि पत्तिभि । अन्योन्य समरे राजन् प्रत्यधावन्नमर्षिता ॥ २६ ॥ भीमसेनार्जुनयमैर्गुप्ता चा पैर्महारथै । शुशुभेपाण्डवी सेना नक्षत्रैरिवशर्वरी ॥ २७ ॥ तथा भीष्मकृपद्रोणशल्यदुर्य्योधनादिभि । तथापि

छातीपर नियतहुआ और प्रस्थल देशका राजा सुशर्मा अपनी सेना समेत बायें भाग में शस्त्रों को धारण करके नियत हुआ । २० । और तुषारयवन और शक चोल्कों समेत व्यूहके दाहिने भाग में बड़ी सावधानी से वर्त्तमान हुए, और श्रुतायु शतायु सोमदत्त मारिष यह सब . व्यूहकी जंघापर रक्षा करनेवाले हुए इसके पीछे हे राजा सूर्य्यके उदय होने पर पाण्डव कौरवोंके समूह युद्ध के निमित्त चले फिर युद्धहोना प्रारम्भ हुआ, हाथी रथियों के सम्मुख गये और रथी हाथियों के सम्मुख हुए अश्वारूढ अश्वारूढ़ों के औररथी अश्वारूढों के और अश्वारूढ़ घोड़ों के सम्मुख पहुँचे और हाथी हाथी के सवारों से और रथी रथियोंके सम्मुख उपस्थित हुए हे राजा रथि और अश्वारूढ पत्तियों से युद्ध करने लगे और युद्धमें महाक्रोधित होकर परस्पर सम्मुख दौड़े २६।और भीमसेन अर्जुन और नकुल व सहदेव यहसब अन्य महारथियोंसेरक्षित होकर ऐसी बड़ी शोभा को प्राप्तहुए जैसी कि नक्षत्रों से रात्रिकी शोभा होती है, इसी प्रकार आपकी सेना भी भीष्म कृपाचार्य्य

large army, Bhadras and the Kulayas with the Sauvas stood at the breast The king of Prasthal named Susharma together with his armed soldiers, stood on the left side 20 Tushar yavan and Shak with the Cholkas, stood on the right wing, and Shrutayu, Shatayu, Somdatta and Marish guarded the thigh portion of the array Then O king, when the sun had risen, the armies of the Kauravas and the Pandavas advanced to battle and the fighting commenced The elephants faced the chariots, the horsemen encountered the horsemen and charioteers faced the horsemen Elephant riders encountered the elephant riders and charioteers attacked charioteers. The charioteers and horsemen attacked those on foot and ran against one another in anger 26 Bhimsen, Arjun, Nakul and Sahadev, protected by other charioteers, embellished the battle field as the stars do the night. In the same manner, your army was glorious by the presence of Bhishm,

युध्यन्त भारत ॥ ३६ ॥ प्रतिसवार्य चास्त्राणि तेन्योन्यस्य विशाम्पते । युयुधु पाण्डवा श्चैव कौरवाश्च महाबला ॥ ३७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि षष्ट दिवसयुद्धारम्भे पंच सप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । एवं बहुगुणं सैन्य मेव बहुविधंपुरा । व्यूहमेव यथाशास्त्रममोघञ्चैव सञ्जय ॥ १ ॥ हृष्टमस्माकमत्यन्तमभिकामञ्चन॰ सदा । प्रह्वमव्यसनोपेतं पुरस्ताद्दृष्टविक्रमम् ॥ २ ॥ नातिवृद्धमबालञ्च न कृशं न च पीवरम् । लघुवृत्तायतप्राय सार योधमनामयम् ॥ ३ ॥ आत्तसन्नाहशस्त्रञ्च बहुशस्त्रपरिग्रहम् । असियुद्धे नियुद्धे च गदायुद्धे च कोविदम् ॥ ४ ॥ प्रासर्ष्टितोमरेष्वाजौ परिघेष्वायसेषुच । भिन्दिपालेषु शक्तीषु मुसलेषु च सर्वशः ॥ ५ ॥ कम्पनेषु च चापेषु कणपेषुचसर्वशः । क्षेपणीयेषु

एक स्थान पर वर्त्तमान होकर सब युद्ध में प्रवृत्तहुए वह कौरव पाण्डव उस महायुद्ध में परस्पर अस्त्रोंको प्रहार करके युद्ध करते हुए ३७ ॥

अध्याय ७६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय यह सेनाबहुगुण संपन्न अनेक प्रकार के शास्त्रके अनुसार अलंकृत और युद्धमें सफल है, और हमारी सेना भी सदैवप्रसन्न सकल रूप और उदार है जिसका कि पराक्रम प्रारंभमेंही देखाजाता है, न बहुत वृद्धा न बालक न दुर्बल न पुष्टहै किन्तु हस्तलाघवता आदि उपायोंमें कुशल अत्यन्त दृढअंगवाली और नीरोगहै, कवच और शस्त्रोंकी धारणा करने वाली अनेक शस्त्र समूहों से पूर्ण भुजा खड्ग गदा इत्यादि से युक्त लड़ाई में बड़ी तीव्रहै, प्रास तुवारासदृश तोमर परिघ लोहके भिन्दपाल बरछी मुसल कम्पनधनुष कणप इत्यादि शस्त्रों में और उनके चलाने आदिकी अनेक अद्भुतनामें व मदोन्मत्तता के युद्धोंमें संग्रामभूमिपर नियतहोकर सबप्रकार से योग्य, विद्याओंमें पूर्ण अथरामल्ल युद्धमें सबल शस्त्र

your sons and the opposite side engaged there Both the Kauravas and the Pandavas discharged their weapons at one another' 37

CHAPTER LXXVI

'These armies,' said Dhritrashtra addressing Sanjaya 'possess various qualities, are decked according to the Shastras and are skilful in fighting Our armies too, are always cheerful successful and magnanimous and their prowess is well proved from the beginning They are neither too old nor too young, neither lean nor fat They possess dexterity of hand and strong of body and healthy They possess arms and armour as well as different sorts of weapons like swords maces and others and are champion fighting They possess and are capable of using prases, double edged swords tomars clubs Bhindipalas spears mushalas bows kampanas etc and are good fighters

च चभो सेना ग्रहैर्द्यौरिव सनुना ॥ २८ ॥ अभिसेतस्तु कौन्तेयो द्रोणं दृष्ट्वा पराक्रमी ।
अभ्ययाज्जवनैरश्वैर्भारद्वाजस्य वाहिनीम् ॥ २९ ॥ द्रोणस्तु समरे क्रुद्धो भीमं नवभि
रायसैः । विव्याध समरश्लाघी मर्माण्युद्दिश्य वीर्यवान् ॥ ३० ॥ दृढाहतस्ततो
भीमो भारद्वाजस्य संयुगे । सारथिं प्रेषयामास यमस्य सदनं प्रति ॥ ३१ ॥ स संगृह्य
स्वयं वाहान् भारद्वाज प्रतापवान् । व्यधमत् पाण्डवीं सेनां तूलराशिमिवानलः ३२ ॥
ते वध्यमाना द्रोणेन भीष्मेण च नरोत्तमाः । सृञ्जयाः केकयैः सार्द्धं पलायनपराभवन्
॥ ३३ ॥ तथैव तावकं सैन्य भीमार्जुनपरिक्षतम् । मुह्यते तत्र तत्रैव समदेव वराङ्गना
॥ ३४ ॥ अभिद्यंता ततो व्यूहौ तस्मिन् वीरवरक्षये । आसीद्व्यतिकरो घोरस्तव
तेषांच भारत ॥ ३५ ॥ तदद्भुतमपश्याम तावकानां परैः सह । एकायनगताः सर्वे यद

द्रोणाचार्य्य शल्य और दुर्योधन से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि ग्रहों से भराहुआ आकाश शोभित होता है, फिर कुन्ती का पुत्र पराक्रमी भीमसेन द्रोणाचार्य्य को देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों की सवारी से उनकी सेना के सम्मुख गया, फिर युद्ध में क्रोधित पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने मर्मस्थलों को ताककर नौ लोहे के बाणों से भीमसेन को घायल किया १३० । तदनन्तर उस युद्ध में द्रोणाचार्य्य से बहुत घायल हुए भीमसेन ने उनके सारथी को मारा, फिर उस प्रतापी द्रोणाचार्य्यजी ने आप घोड़ों को पकड़कर पांडवों की सेना का ऐसा विध्वंस किया जैसे कि अग्नि रुई को भस्म करता है, हे नरोत्तम द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी से घायल होकर वह सृंजय केकयों समेत भाग गये, इसी प्रकार भीमसेन और अर्जुन से भयभीत आपकी भी घायल सेना जहां तहां ऐसे भागी जैसे कि मतवाली श्रेष्ठ स्त्री जहां तहां भागती है, हे भरतवंशी इस के पीछे उस उत्तम वीरों के नाश में दोनों व्यूह भिन्न भिन्न होगये और आपके पुत्रों को और पांडवों को महाघोर दुःख हुआ हेराजा हमने आपके पुत्रों का शत्रुओं के साथ वह आश्चर्य्य देखा जो

Kripacharya, Dronacharya Shalya and Duryodhan like the sky full of stars. Brave Bhimsen the son of Kunti sped on swift horses towards Dronacharya Dronacharya full of prowess and anger wounded Bhim with nine iron arrows well aimed at the vital parts 30 Excessively wounded by Dronacharya, Bhimsen killed his chariot driver and Dronacharya taking up the reigns of his steeds himself destroyed the Pandava army as fire does cotton Wounded by Dronacharya and Bhishm, the Srinjayas and the Kaikayas fled from the field In the same manner, terrified by the attack of Bhim and Arjun, your wounded army dispersed in all directions like a mad woman Then O descendant of Bharat, both the arrays were broken on account of the destruction of the warriors, leaving your sons as well as the Pandavas plunged in grief. We saw, O king, the wonderful fight of

युध्यन्त भारत ॥ ३५ ॥ प्रतिसंवार्य चास्त्राणि तेऽन्योन्यस्य विशाम्पते । युयुधुः पाण्डवाश्चैव कौरवाश्च महाबलाः ॥ ३७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि षष्ठ दिवसयुद्धारम्भे पंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । एवं बहुगुणं सैन्य मेवं बहुविधंपुरा । व्यूढमेव यथाशास्त्रममोघञ्चैव सञ्जय ॥ १ ॥ हृष्टमस्माकमत्यन्तमभिकामञ्चनः सदा । प्रह्वमव्यसनोपेतं पुरस्ताद् दृष्टविक्रमम् ॥ २ ॥ नातिवृद्धमबालञ्च न कृशं न च पीवरम् । लघुवृत्तायतप्राय सार योधमनामयम् ॥ ३ ॥ आत्तसन्नाहशस्त्रञ्च बहुशस्त्रपरिग्रहम् । असियुद्धे नियुद्धे च गदायुद्धे च कोविदम् ॥ ४ ॥ प्रासर्ष्टितोमरेष्वाजौ परिघेष्वायसेषुच । भिन्दिपालेषु शक्तीषु मुसलेषु च सर्वशः ॥ ५ ॥ कम्पनेषु च चापेषु कणपेषुचसर्वशः । क्षेपणीषु

एक स्थान पर वर्तमान होकर सब युद्ध में प्रवृत्तहुए वह कौरव पांडव उस महायुद्ध में परस्पर अस्त्रोंको प्रहार करके युद्ध करते हुए ३७ ॥

अध्याय ७६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय यह सेनाबहुगुण संपन्न अनेक प्रकार के शास्त्रके अनुसार अलंकृत और युद्धमें सफल है, और हमारी सेना भी सदैवप्रसन्न सकल रूप और उदार है जिसका कि पराक्रम प्रारंभसेही देखाजाता है, न बहुत वृद्धा न बालक न दुर्बल न पुष्ट हैकिन्तु हस्तलाघवता आदि उपायोंमें कुशल अत्यन्त दृढअंगवाली और नीरोगहै, कवच और शस्त्रोंकी धारण करने वाली अनेक शस्त्र समूहों से पूर्ण भुजा खड्ग गदा इत्यादि से युक्त लड़ाई में बड़ी तीव्रहै, प्रास कुठारखड्ग तोमर परिघ लोहेके भिन्दपाल बरछी मुसल कंपनधनुष कनप इत्यादि शस्त्रों में और उनके चलाने आदिकी अनेक अद्भुतताओंमें व मदोन्मत्तता के युद्धोंमें संग्रामभूमिपर नियतहोकर सबप्रकार से योग्य, विद्याओंमें पूर्ण अथवामल्ल युद्धमें सफल शस्त्र

your sons and the opposite side engaged there. Both the Kauravas and the Pandavas discharged their weapons at one another" 37.

CHAPTER LXXVI

'These armies," said Dhritarashtra addressing Sanjaya, "possess various qualities, are decked according to the Shastras and are skilful in fighting. Our armies too, are always cheerful, successful and magnanimous and their prowess is well proved from the beginning. They are neither too old nor too young, neither lean nor fat. They possess dexterity of hand and strong of body and healthy. They possess arms and armour as well as different sorts of weapons like swords, maces and others and are sharp in fighting. They possess and are capable of using prasas, double edged swords, tomars, clubs, bhindipalas, spears, mushals, bows, kampas etc. and are good fighters,

विनेषु शुद्धियुद्धेषु च श्रमम् ॥ ६ ॥ अपरोक्षं च विद्यासु व्यायामेचकृतश्रमम् । शस्त्रग्रहण विद्यासु सर्वासु परिनिष्ठितम् ॥ ७ ॥ आरोहे पर्यवस्कन्दे सरणे सान्तरप्लुते । सम्यक्प्रहरणे यानेव्यपयाने च कोविदम् ॥ ८ ॥ नागाश्व रथयानेषु बहुशः सुपरीक्षितम् । परीक्ष्य च यथान्याय वेतनेनोपपादितम् ॥ ९ ॥ न गोष्ठ्यानोप कारेण न च बंधुनिमित्ततः । न सौहृदबलेनापि नाकुलीन परिग्रहैः ॥ १० ॥ समृद्धजन मार्यं च तुष्टसत्कृत बांधवम् । कृतो पकार भूयिष्ठं यशस्वि च मनस्वि च ॥ ११ ॥ स्वजनैस्तु नरैर्मुख्यैर्बहुशो दृष्टकर्मभिः । लोकपालोपमैस्तात पालितं लोकविश्रुतम् ॥ १२ ॥ बहुभिः क्षत्रियैर्गुप्तं पृथिव्यां लोक संमतैः । अस्मानभिगतैः कामात्सबलैः सपदानुगैः ॥ १३ ॥ महोदधि मिवापूर्णमापगा भिःसमततः । अपक्षैः पक्षिसंकाशैः रथैर्नागैश्च सवृतम् ॥ १४ ॥ नानायोध जल भीमं वाहनोर्मितरंगिणम् । क्षेपण्यसि गदाशक्ति शरप्रासससमाकुलम् ॥ १५ ॥ ध्वजभूषण संबाधं रत्नपट्टसुसंचितम् । परिधावद्भिरश्वैश्च वायुवेग विकंपितम् ॥ १६ ॥ अपार

विद्याके ज्ञाता सब विद्याओंमें पंडित, सवारहोने वा डेरेमें रहने वा चलने वा दोनों के अन्तरसे चलने वा शस्त्र चलाने वा चढ़ाई करने वा समय देखकर हटजानेमें कुशल बुद्धि, हाथी घोडे और रथोंकी सवारियों में वहुधा परीक्षा कियेहुए और परीक्षालेकर न्यायके अनुसार मासिक आदि वेतन के योग्य हैं । ७ । और सभा उपकार नातेदारी और मित्रों के और कुटुम्बियों के बल और सामानों के कारण अधिकार नही पाने वाले हैं, बुद्धियुक्त वा उत्तम मनुष्य जिन में बांधव प्रसन्न और प्रतिष्ठावान है और वहुत उपकारी यशस्वी साहसी वेगवान उत्तम कर्मी लोकपालों के समान ससार में प्रसिद्ध मनुष्यों से पोषित अपनी इच्छा से सेना समेत पीछे चलनेवाले वहुत से क्षत्रियों को लेकर हमारे समीप आनेवाले चारों ओर से समुद्रके समान उमगते हाथी रथघोडों समेत अनेकशूरवीरोंसे शोभित वड़े भयानक क्षेप खड्ग गदा वरछी वाणपरशु इत्यादि अनेक शस्त्रों से अलंकृत रत्नजटित रेशमी वस्त्रों से मंडित अनेक ध्वजाओं समेत चारों ओरको दौड़नेवाली सवारियों में बैठे समुद्र

having a complete knowledge of all sorts of warlike and wrestling exercises. They are learned in all sorts of sciences and are good at horsemanship camp management, marches, use of weapons, making assaults or timely retreat. They have often been tested in riding and driving the elephants horses and chariots and are worthy of receiving the pay 7 They are not taken into service by social influence, kinsmanship friendship and recommendations or friends. They are of good and respectable families and are kind hearted, glorious, courageous, nimble, good, brought up by those who are famous like lokpals willing to follow the armies, having many friends among warriors, brave like the rising ocean, possessed of elephants, chariots and horses, decked with swords, maces, spears, arrows and other warlike weapons, clad

गिव गर्जन्तं सागरं प्रतिमं महत् । द्रोण भीष्माभि गुप्त गुप्तंच कृतवर्मणा ॥ १७ ॥ कृपदुःशासनाभ्यां च जयद्रथ मुखैस्तथा । भगदत्त विकर्णाभ्यां द्रौणिसौबलबाह्लिकैः ॥ १८ ॥ गुप्तं प्रवीरैर्लोकैश्च सारवद्भिर्महात्मभिः । यद्हन्यत संग्रामे दैवमत्र पुरातनम् ॥ १९ ॥ नैतादृशं समुद्योग दृष्टवंतो हि मानुषा । ऋषयोवा महाभागाः पुराणाभुवि सञ्जय ॥ २० ॥ ईदृशोपि बलौघस्तु संयुक्तः शस्त्रसम्पदा । वध्यते यत्र संग्रामे किमन्यद्भा ग्यधेयतः ॥ २१ ॥ विपरीत मिदं सर्वं प्रतिभाति हि सञ्जय । यत्रेदृशं बल घोरं पांडवा न्नातरद्रणे ॥ २२ ॥ पाण्डवार्थाय नियतं देवास्तत्र समागताः । युध्यते मामकं सैन्य यथा वध्य संजय ॥ २३ ॥ उक्तोहि विदुरेणाद्द हितं पथ्य च नित्यदा । नचजग्राहतन् मद पुत्रो दुर्योधनोमम ॥ २४ ॥ तस्य मन्येमति पूर्वं सर्वज्ञस्य महात्मनः । आसीद्यथागत

के समान गर्जनेवाले द्रोणाचार्य और भीष्म से रक्षित कृतवर्मा, कृपाचार्य्य, दुश्शासन जयद्रथ भगदत्त विकर्ण अश्वत्थामा शकुनि बाह्लीक इनबड़े २ वीरों से और महात्माओं से रक्षित जो सेना युद्ध में मारी गई इसमें होनहारही प्रबलहै, हे संजय पृथ्वीपर ऐसे युद्धको बड़े २ ऋषि मुनि और महात्मा मनुष्यों ने भी कभी नहीं देखा । २० । । शस्त्रधन लक्ष्मी से युक्त ऐसा सेनाका समूहभी जिस युद्धमें मारा जाता है वहां प्रारब्ध के सिवाय क्या समझना चाहिये, हे संजय यहसब विपरीत दृष्टपड़ता है कि जहां ऐसी भयानक सेनाने युद्ध में पांडवों को नहीं जीता, हे संजय पाडवों के निमित्त देवतातो आनकर हमारी सेना से नहीं लड़ते हैं कि इतनी प्रबल सेना घायलहो जातीहै, इसस्थान पर सदैव हितकारी फल दायक वचन विदुरजीने कहा है परन्तु मेरा अभागा बेटा दुर्योधन उस वचन को नहीं मानताहै मैं मानता हूं क्योंकि उस सर्वज्ञ महात्मा विदुरका पहला कहा हुआ प्रबसत्यहुआ है तात उस

in jem bedecked silk clothes, running hither and thither with high banners, riding good carriages, roaring like the ocean and protected by Dronacharya, Bhishm, Kritvarma, Kripacharya, Dushasan, Jayadrath, Bhagdatta, Vikarn, Ashwathama, Shakuni, Vahlik and such other warriors and great men The destruction of such an army may be ascribed to fate alone. Rishis munis and great men of the world have never seen such a war. 20. Such a large destrution of weapons and wealth as is being done in this war, may be ascribed to fate alone. All this is preposterous, Sanjaya, in as much as such a tremendous army could not win the Pandavas. Is it the gods that fight for the Pandavas and disable our strong armies! Vidur always gave good advice regarding this matter, but my unfortunate son Duryodhan never gave any attention to it. I own that the saying of

तात येनदृष्ट विदुरा ॥ २५ ॥ अथवा भाव्यमेवं हि संजये तेन सर्वथा । पुराधात्रायथा सृष्ट तत्तथा नैतदन्यथा ॥ २६ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि धृतराष्ट्रचिंतायां षट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७६ ॥

संजय उवाच ॥ आत्मदोषात्त्वया राजन् प्राप्तं व्यसनमीदृशम् । नहि दुर्योधनस्तानि पश्यते भरतर्षभ ॥ १ ॥ यानि त्वं दृष्टवान् राजन् धर्मसङ्करकारिते । तव दोषात्पुरा वृत्तं द्यूतमेव विशांपते ॥ २ ॥ तव दोषेण युद्धश्च प्रवृत्तं सह पाण्डवैः । त्वमेवाद्यफलं भुंक्ष्व कृत्वाकिल्विषमात्मना ॥ ३ ॥ आत्मनैव कृतं कर्म ह्यात्मनैवोपभुज्यते । इह च प्रेत्य वा राजंस्त्वयाप्राप्तं यथा तथम् ॥ ४ ॥ तस्माद्राजन् स्थिरो भूत्वा प्राप्येदं व्यसनं महत् । शृणुयुद्धं यथावृत्तं शंसतो मे नराधिप ॥ ५ ॥ भीमसेनः सुनिशितैर्बाणैर्भित्वा महाचमूम् । आससाद ततो वीरः सर्वान् दुर्योधनानुजान् ॥ ६ ॥ दुःशासनंदुर्विषह

ने पूर्वही ऐसा देखाथा, हे संजय इस प्रकार की होनहार को उस ने पूर्वही देख लिया कि ईश्वर को अब ऐसा करना है इसके विपरीत कभी नहीं होसक्ता २६ ॥

अध्याय ॥ ७७ ॥

संजय बोले हे राजा तुम ने अपने दोष से ऐसे दुःखों को पाया हे भरतर्षभ इसको दुर्योधन नहीं देखता है, हे राजा जिनको तुम ने देखा है वह सब धर्म को अधर्म से मिलानेवाले हैं हे राजा पूर्व समय में आपही के दोष से यह जुवा जारी हुआ, आपके ही दोष से पांडवों से युद्ध प्रारंभ हुआ, और अब तुमही अपने पाप को करके उसके फलको भोगो, आपने ही कर्म कियाहै इसका फल इसलोक में वा परलोक में आपही को भोगना पड़ेगा हे राजा जैसा तुमने कियाथा वैसाही फलभी ठीकपाया, इससे हे धृतराष्ट्र तुम चित्त को समाधान करके इसमहादुःख को पाकर इसयुद्ध होनेका वृत्तान्त मुझसे सुनो ५। तदनन्तर वीर भीमसेनने बड़े तीक्ष्ण बाणों से आपकी बड़ी सेनाको चलायमान करके दुर्योधन के इनसब भाइयों को

Vidur the wise and great has proved true. He foresaw long ago what was coming to pass and it will never happen otherwise" 26

CHAPTER LXXVII

"Your miseries, said Sanjaya, "are the results of your own sins, king Duryodhan does not see this, O best of Bharats Those whom you have seen O king, are mixing adharm with dharm It was through your fault, king, that the gambling took place and the war with the Pandavas commenced. You yourself will reap the fruit of your sins You will suffer the punishment of your own wickedness either in this or the next world You have reaped O king, what you had sown. Compose your mind, O king and hear from me the account of this war which has brought you so much trouble 5 With sharp arrows brave Bhimsen, while destroying your armies, found himself

दु सह दुर्मद जयम् । जयत्सेनं विकर्णच चित्रसेन सुदर्शनम् ॥ ७ ॥ चारु चित्र सुव
र्माण दुष्कर्णं कर्ण मेवच । एताश्चान्यांश्च सुबहून् समीपस्थान् महारथान् ॥ ८ ॥ धार्त्त
राष्ट्रान् सुसंक्रुद्धान् दृष्ट्वाभीमो महारथ । भीष्मेण समरे गुप्तां प्रविवेश महाचमूम् ॥९॥
अथाहूय प्रविष्टन्त मूचुस्ते सर्व एवतु । जीवग्राह निगृह्णीमो वयमेन नराधिप
॥ १० ॥ सतं परिवृत पार्थो भ्रातृभि कृतनिश्चयै । प्रजासंहरणे सूर्य क्रूरैरिव महा
ग्रहै ॥ ११ ॥ सम्प्राप्य मध्य सैन्यस्य नभी पाण्डवमा विशत् । यथा देवासुरे युद्धे महे
न्द्र प्राप्य दानवान् ॥ १२ ॥ तत शत सहस्राणि रथिना सर्वशः प्रभो । छादयानि शरै
स्तीर्व्रैस्तमेकं परि वव्रिरे ॥ १३ ॥ स तेषा प्रवरान् योधान् हस्त्यश्वरथसादिन । जघान
समरे शूरो धार्त्तराष्ट्रा न चिंतयन् ॥ १४ ॥ तेषा व्यवसित ज्ञात्वा भीमसेनो जिघृक्षताम्

सम्मुख पाया, दुश्शासन, दुर्विषह, दुःसह दुर्मद, जयसेन, विकर्ण, चित्रसेन सुद-
र्शन, चारुमित्र, सुवर्माण दुष्कर्ण कर्ण इनके सिवाय और बहुत से रथ मे चढे
समीपी महारथी इनसबको महाक्रोध रूप महाबली भीमसेन देखकर
युद्धमें भीष्मजी से रक्षित बडीउग्र सेनामें घुसगया । ९ । इससेनामें घुसेहुए भीम
सेनको देखकर वहसब बोले कि हेराजाओ हमसब इसको जीताही पकडें । १० ।
जैसे कि संसारके नाश करने में सूर्य बडे २ क्रूर ग्रहो से घिराहुआ होता है इसी
प्रकार यह भीमसेन इन निश्चय करनेवाले भाइयों से घिराहुआ वर्त्तमान हुआ,
सेना के मध्यमें भी जाकर इसको ऐसे भय नहीं हुआ जैसे कि महाइन्द्र देवता
असुरोंके युद्ध में दानवोंको पाकर भयभीत नहीं होता है, तदनन्तर घोर बाणोंके
समूहोंको फेंकतेहुए एकलाख शस्त्रधारी रथियोंने इस अकेलेको घेरलिया, धृतराष्ट्रके
पुत्रोंको ध्याननकरके उसमहाबलीने उससेना के बडे जंगी हाथी घोडे रथऔरसवा
रोंको मारा, हेराजा पकडनेके इच्छावान उनलोगों कोजानकर उस पराक्रमी भीम-
सेन ने सबके मारनेकोमनोरथ किया, और रथ को त्यागकर गदाहाथ में लेके उन

face to face with Dushasan, Durvishah Dussah, Durmad, Jayasen, Vikarn, Chitrasen, Sudarshan, Charumitra Suvarman, Dushkarn and Karn the brothers of Duryodhan. Besides these there were many warriors. Bhimsen in great anger, seeing all these, entered that large army protected by Bhishm. Seeing Bhimsen there in the midst of the army they all cried out with one voice, 'Let us catch him alive'' 10 Just as the sun is surrounded by fierce constellations, Bhimsen was surrounded by the brothers resolved to capture him, But he was not afraid of the enemies as Indra, during the war of the gods and asurs is not afraid of the Danavas. Then discharging thick showers of arrows a hundred thousand of the warriors wounded him but Bhimsen not caring fo the sons of Dhritrashtra in the least, destroyed the huge elephants, horses, chariots and horsemen of that large army And knowing them to be desirous of capturing him, he resolv-

समस्तानां वधे राजन् म तैं चक्रे महामना ॥ १५ ॥ ततो रथ समुत्सृज्य गदामादाय पाण्डव । जघान धार्त्तराष्ट्राणां तं बलौघमहार्णवम् ॥ १६ ॥ भीमसेने प्रविष्टेतु धृष्टद्युम्नोपि पापत । द्रोणमुत्सृज्य तरसा प्रययौ यत्र सौवल ॥ १७ ॥ निवार्य महतीं सेना तावकाना नरर्षभ । आससाद रथ शून्य भीमसेनस्य सयुगे ॥ १८ ॥ दृष्ट्वा विशोक समरे भीमसेनस्य सारथिम् । धृष्टद्युम्नो महाराज दुर्मना गतचेतन ॥ १९ ॥ अपृच्छद्वाष्पसरुद्धो निःश्वसन् वाचमीरयन् । ममप्राणै प्रियतम क्व भीम इति दुःखित ॥ २० ॥ विशोकस्तमुवाचेद धृष्टद्युम्न कृताजलि । सस्थाप्यमामिह बली पाण्डवेयः पराक्रमी २१ ॥ प्रविष्टो धार्त्तराष्ट्राणा मेतद्बल महार्णवम् । मामुक्त्वा पुरुषव्याघ्र प्रीतियुक्त मिदंवच ॥ २२ ॥ प्रति पालय मां सूत नियम्याश्वान्मुहूर्त्तकम् । यावदेतान्निहन्म्यद्य य इमे मद्वधोद्यता ॥ २३ ॥ ततो दृष्ट्वा प्रधावन्त गदाहस्त महाबलम् । सर्वेषामेव सैन्यानां सहृष सम जायत ॥ २४ ॥ तस्मिन् सुतुमुले युद्धे वर्त्तमाने भयानके । भित्वा राजन्

आपके पुत्रों समेत सेनाके महा समूहको मारा । १६ । फिरसेना में भीमसेन के प्रवेश करनेपर पृषतका पुत्र धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य को छोड़कर बड़ीशीघ्रता से वहां गया जहां शकुनी वर्त्तमान था, उसनरोत्तम ने युद्ध में आपके पुत्रकी बड़ी सेनाको हटाकर भीमसेनके रथको पाया, हे महाराज वहा भीमसेन के विशोकनाम सारथी को देखकर बड़ाखिन्न चित्त अचेतहो अश्रुपात युक्त गदगद कण्ठ से महादुःखित श्वासालेकर धृष्टद्युम्न बोला और पूछा कि मेरे प्राणों से भी प्रियतम भीमसेन कहां है । २० । यह सुनकर हाथजोड़कर विशोक धृष्टद्युम्न से बोला कि महाबली भीमसेन मुझको यहां नियत करके, अकेलाही धृतराष्ट्र के पुत्रों की असंख्य समुद्र रूपी सेना में घुसाहै और मुझसे ऐसे प्रीति पूर्वक वचन कहकर गया है कि हे सूत तुम घोड़ों को एक मुहूर्त्त तक थांभ के मेरी वाट देखो मैं इन के मारने को जाताहूं जो कि मेरे मारने की इच्छा कररहे है, सो गदाहाथ में लिये उस महाबली को दौड़ता देखकरसब सेना में बड़ी प्रसन्नता हुई, हे राजा उसबड़े भयकारी तुमुल युद्धके

ed to kill them all He Jumped down from his chariot, mace in hand and destroyd your sons along with other warriors 15 - While Bhimsen was in the midst of the army, Dhrishtadyumn the son of Prashat left Dronacharya and went there where Shakuni was That best of men pushed through the army of your son and found Bhim's chariot there and seeing Vishok the chariot driver, he with a troubled mind, faint voice, tearful eyes, choked throat and deep sighs, asked of the whereabouts of Bhim, saying "Where is Bhim who is dearer to me than life!"20. At this, Vishok with joined palms, said, "Brave Bhim, having stationed me here has alone entered the innumerable armies of the sons of Dhritrashtra. He told me in affectionate tone to keep the horses here for sometime as he was going to kill those who intended to destroy him All the warriore were pleased to see him

महाव्यूहं प्रविवेश वृकोदरः ॥ २५ ॥ विशोकस्य वचः श्रुत्वा धृष्टद्युम्नोऽपि पार्षतः । प्रत्यु वाच ततः सूतं रणमध्ये महाबलः ॥ २६ ॥ न हि मे जीवितेनापि विद्यतेऽद्य प्रयोजनम् । भीमसेनं रणे हित्वा स्नेहमुत्सृज्य पाण्डवैः ॥ २७ ॥ यदि यामि विना भीमं किं मां क्षत्रं वदिष्यति । एकायनगते भीमे मयि चावस्थिते युधि ॥ २८ ॥ अस्वस्ति तस्य कुर्वन्ति देवाः शक्रपुरोगमाः । यः सहायान् परित्यज्य स्वस्तिमानाव्रजेद्गृहम् ॥ २९ ॥ मम भीमः सखा चैव सम्बन्धी च महाबलः । भक्तोऽस्मान्भक्तिमांश्चाहं तमप्यरिनिषूदनम् ॥ ३० ॥ सोऽहं तत्र गमिष्यामि यत्र यातो वृकोदरः । निघ्नन्तं मामरीन्पश्य दानवानिव वासवम् ॥ ३१ ॥ एवमुक्त्वा ततो वीरो ययौ मध्येन भारत । भीमसेनस्य मार्गेषु गदाप्रमथितैर्गजैः ॥ ३२ ॥ स ददर्श तदा भीमं दहन्तं रिपुवाहिनीम् । वातो वृक्षानिव बलात् प्रभञ्जन्तं

वर्त्तमान होनेपर आपका मित्र बड़ी सेनाके व्यूहको हटाकर प्रवेश करगया है।२५ यह विशोक के वचन सुनकर वह महाबली धृष्टद्युम्न जी उससूत से यह वचन बोला, कि पाण्डवों के साथ प्रीति करके और भीमसेन को युद्धमें छोड़कर अपनेजीवन से मुझको कुछ प्रयोजन नहीं है मैंभी बिना भीमसेन के कभी न जाऊंगा क्योंकि भीमसेन के बिना जाऊंगा तो मुझको सबक्षत्री क्या कहेंगे युद्ध में भीमसेनके एक ओर जाने औरमेरे नियत होनेपर इंद्रसमेत सबदेवता उनके अकल्याणको करतेहैं जो सह, यकोंको त्यागकर जीतेघरको जातेहैं, हेशत्रुहन्ता वह महाबली भीमसेन मेरामित्र नातेदार और परमभक्तहै और मैंभी उसमेंभक्ति रखनेवालाहूं । ३० । सो हे सूत मैंभीवहीं जाऊंगा जहां भीमसेन गया है मुझको भी तू देख कि मैं शत्रुओंको कैसामारताहूं जैसे कि इन्द्रदानवों को मारताहै, हे राजा ऐसाकहकर वह महाबलीभीमसेन की गदा से मारेहुए हाथियों से उत्पन्न भीमसेन के मार्गो में होकर चला वहां उस ने शत्रुओंको भस्म करते और जैसे कि वायु वृक्षोंको काटताहै उसी प्रकार युद्धमें राजाओं को

rushing mace in hand and that friend of his had fought his way through that large array. 25. Having received this information from Vishok, brave Dhrishtadyumn said, "Loving the Pandavas as I do I shall live no longer without Bhim. All the Kshatryas will despise me, if I shall leave him here alone India and other gods will give me the reward of those who leave their friends in the lurch, if I shall desert him now. Brave Bhimsen is my friend, kinsman and devotee, and I too, am devoted to him. 30. I, too, O Sut, will follow the footsteps of Bhim; you will see how I kill the enemies as Indra destroys the Danavas." Having said this, O king, he went over the path made by Bhimsen by killing the elephants with his mace and saw him there destroying the enemies and princes as the wind fells down trees. Wounded by Bhim the terrified charioteers, horsemen, foot soldiers and

रणेरिपून् ॥ ३३ ॥ तेवध्यमानाः समरे रथिनः सादिनस्तथा । पादाता दंतिनश्चैव चक्रुरार्तस्वरंमहत् ॥३४॥ हाहाकारश्च सञ्जज्ञे तव सैन्यस्य मारिष । वध्यतो भीमसेनेन कृतिनाचित्रयोधिना ॥ ३५ ॥ ततः कृतास्त्रास्ते सर्वे परिवार्यवृकोदरम् । अभीताः समवर्तंत शस्त्रवृष्ट्यापरंतप ॥ ३६ ॥ अभिद्रुत शस्त्रभृतांवरिष्ठं समंततः पाण्डवंलोकवीरः । सैन्येन घोरेण सुसंहितेन दृष्ट्वा बलीपार्षतो भीमसेनम् ॥ ३७ ॥ अथोपगच्छच्छरविक्षतांगं पदातिनं क्रोधविषं वमंतम् । आश्वासयन् पार्षतो भीमसेनं गदाहस्तं कालमिवांतकाले ॥ ३८ ॥ विशल्य मेनंचचकारतूर्णं मारोपयच्चात्मरथंमहात्मा । भृशं परिष्वज्यच भीमसेनं आश्वासयामासशत्रुमध्ये ॥३९॥ भ्रातॄनथोपेत्य तवापिपुत्रस्तस्मिन् विमर्दे महति प्रवृत्ते । अयं दुरात्मा द्रुपदस्यपुत्रः समागतो भीमसेनेन सार्धम् ॥ ४० ॥ तंयाम सर्वे महता बलेन मायोरिपुः प्रार्थयतामनीकम् । श्रुत्वातुव चवंतममृष्य

छिन्न भिन्न करते हुए भीमसेन को देखा, युद्ध मे भीमसेनसे घायल और पीड़ितरथी सवार पदाती और हाथियोंने महा भयभीत औरपीड़ामान होकर घोर शब्द किया, हे राजा आपकी सेनामें वड़ा हाहाकार उत्पन्नहुआ और यह शब्द पुकारने लगे कि सावधानहो अपूर्व युद्धकरनेवाले भीमसेनके हाथसे सेना नाशहुईजाती है ।३५। इसके पीछे वड़े निर्भय अस्त्रों के ज्ञाता उनवीरों से भीमसेन को चारों ओरसे घेर कर सब ओर से अस्त्रो की वर्षाकरी, फिर वलवान धृष्टद्युम्न वड़ी मिलीहुई घोर सेना से सम्मुख हुए महावली लोक में प्रसिद्ध भीमसेन को देखकर, उसके पास गया और वाणों से छिदे हुए क्रोधरूप विषको उगलते प्रलयके काल पुरुषकी समानगदा लियेहुए भीमसेनको विश्वास कराया, फिर उस महात्मा ने बहुत शीघ्रही उसको वाणों से छुटाया और अपने रथपर सवार किया और शत्रुओं के मध्यमेंही अच्छे प्रकार मिलकर विश्वास कराया, इस के पीछे आपका वेटाभी उस युद्ध में अकस्मात् भाइयों से मिलकर वोला कि यह द्रुपद का वेटा निर्वुद्धी भीमसेन के साथमें आया है । ४० । इस के मारने को हमसव एक साथही चलें क्योंकि हमारा

elephant riders were raising terrible cries of distress There was a cry of 'Ah! and alas!' in your army and the people said "Be careful. The army is being destroyed by Bhimsen of matchless prowess." 35. Then the intrepid warriors, well knowing the science of arms, surrounded him on all sides and poured on him a volley of weapons Then brave Dhrishtadyumna, seeing the famous warrior Bhim surrounded by those terrible foes, went to him and by his presence cheered Bhimsen who being pierced with the arrows was vomitting forth the poison of his rage, standing mace in hand like Death He soon disentangled his body from the net of arrows and further cheered him in the midst of the enemies by making him mount his chariot Then your son collected his brothers in haste and addressed them thus.—"This son of Drupad," said he, "has joined foolish Bhim 40 Let us all go to

माणा ज्येष्ठाज्ञयानोदिताधार्त्तराष्ट्राः ॥ ४१ ॥ वधाय निष्पेतु रुदायुधास्ते युगक्षये केतवो यद्दुग्राः । प्रगृह्यचास्त्राणि धनूंषिवीरा ज्यानेमि घोषैः प्रविकंपयन्तः ॥ ४२ ॥ शरैरवर्षं द्रुपदस्य पुत्रं यथांबुदाभूधरं वारि जालैः । निहत्यतांश्चापि शरैः सुतीक्ष्णैर्न विव्यथे समरे चित्रयोधी ॥ ४३ ॥ समभ्युदीर्णांश्चतवात्मजांस्तथा निशाम्यवीरा नभितः स्थितान् रणे । जिघांसुरुग्रं द्रुपदात्मजो युवा प्रमोहनास्त्रं युयुजे महारथः ॥ ४४ ॥ क्रुद्धो भृशं तवपुत्रेषु राजन् दैत्येषु यद्वत्समरे महेन्द्रः । ततो व्यमुह्यन्तरणे नृवीराः प्रमोहनास्त्राहतबुद्धिसत्वाः ॥ ४५ ॥ प्रदुद्रुवुः कुरवश्चैव सर्वे सवाजिनागाः सरथाः समंतात् । परीतं कालानि वनष्टसंज्ञान् मोहोपेतांस्तवपुत्रान्निशम्य ॥ ४६ ॥ एतस्मिन्नेव कालेतु द्रोणः शस्त्र भृतांवरः । द्रुपदं त्रिभिरासाद्य शरैर्विव्याध दारुणैः ॥ ४७ ॥ सोतिविद्धस्त

शत्रु होके हमारी सेनामें न मिले इस के पीछे वह क्रोधी पुत्र अपने भाई दुर्य्योधन के इस वचन को सुनकर और आज्ञामान कर शस्त्रों को लेकर उसके मारने को ऐसे दौड़े जैसे कि प्रलयकाल में पूंछलतारे वह वीर रत्नजटित धनुषधारी कवच पहरे रथके पहियों की ध्वनि से सबको कम्पायमान करते हुए, बाणों से द्रुपद के पुत्रपर ऐसी वर्षा करने लगे जैसे कि बादल पानी की झड़ियों से पर्व्वतपर वर्षा करते हैं उस समय वह अपूर्व्व युद्ध करने वाला धृष्टद्युम्न अपने तीक्ष्ण बाणों से उनको पीड़ामान करने परभी आप पीड़ा युक्त नहीं हुआ, और बड़े साहसी आपके शूर वीर पुत्रोंको देखकर युद्ध में नियत हुआ फिर उस द्रुपदपुत्र महारथी मारनेकी इच्छा करनेवालेने प्रमोहननाम बड़े भयानक अस्त्रको प्रयोग किया और आपके पुत्रों पर ऐसा अत्यन्त क्रोधित हुआ, जैसे कि इन्द्रयुद्ध में दैत्योंपर क्रोधित होताहै । ४५ । फिर वह सब आप के वीर युद्धमें परशुओं और अस्त्रों से घायल होकर बड़े अचेत होगये फिर आपके पुत्रों को कालफांस में फंसेहुए अचेतरूप देखकर सब कौरव घोड़े और रथों के साथ घोर शब्द करते हुए चारों ओर से भागे उस समय शस्त्र

kill him, so that, being an enemy, he may not mix with our soldiers." *The enraged princes, hearing the words of their brother, obeyed his* orders, and armed with weapons to destroy him, they rushed upon him like meteors of pralaya. The brave warriors having bows decked with jewels, shook in armour and shaking all with the rumbling of their chariot wheels. They showered their arrows on the son of *Drupad as clouds pour rain over a mountain.* That wonderful warrior Dhrishtadyumn, while wounding them with their sharp arrows, was not wounded by them and seeing your brave sons before him, he stood ready to fight. *Drupad's son, desiring to destroy them, discharged* his dreadful weapon known as Pramohan (causing insensibility) and was enraged at your sons as Indra does at Daityas 45 All your warriors, wounded by axes and other weapons, became unconscious. Seeing your sons in the meshes of Death and unconscious, all the

तो राजन् रणे द्रोणेन पार्थिव । अपायाद्द्रुपदो राजन् पूर्ववैरमनुस्मरन् ॥ ४८ ॥ जित्वा तु द्रुपदं द्रोणः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् । तस्य शङ्खस्वनं श्रुत्वा वित्रेसुः सर्वसोमकाः ॥ ४९ ॥ अथ शुश्राव तेजस्वी द्रोणः शस्त्रभृतां वरः । प्रमोहनास्त्रेण रणे मोहितानात्मजांस्तव ॥ ५० ॥ ततो द्रोणो महाराज त्वरितोऽभ्याययौ रणात् । तत्रापश्यन्महेष्वासो भारद्वाजः प्रतापवान् ॥ ५१ ॥ धृष्टद्युम्नञ्च भीमञ्च विचरन्तौ महारणे । मोहाविष्टांश्च ते पुत्रानपश्यत्स महारथः ॥ ५२ ॥ ततः प्रज्ञास्त्रमादाय मोहनास्त्रं व्यनाशयत् । अथ प्रत्यागतप्राणास्तव पुत्रा महारथाः ॥ ५३ ॥ पुनर्युद्धाय समरे प्रययुर्भीमपार्षतौ । ततो युधिष्ठिरः प्राह समाहूय स्वसैनिकान् ॥ ५४ ॥ गच्छन्तु पदवीं शक्त्या भीमपार्षतयोर्युधि । सौभद्रप्रमुखा वीरा रथा द्वादश दंशिताः ॥ ५५ ॥ प्रवृत्तिमधिगच्छन्तु न हि शुध्यति मे मनः ।

धारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्यजी ने धृष्टद्युम्न को पाकर तीन उग्रबाणों से पीड़ित किया, हे राजा तब वह राजा द्रुपदका पुत्र द्रोणाचार्य्य से अत्यन्त घायल पूर्व की शत्रुता को स्मरण करके हटगया ।४७। प्रतापवान द्रोणाचार्य्य ने द्रुपद को जीतकर शंखको बजाया उनके शंखके शब्दको सुनकर सब भयभीत हुए, इसके पीछे महा शस्त्रधारी द्रोणाचार्य्यने युद्धमें आपके पुत्रोंको प्रमोहन अस्त्रसे अचेतहोना सुना ।५०। और बड़ी शीघ्रतासे संग्रामभूमि मे उनके पास आये वहां प्रबल युद्धमें संग्राम करते हुए धृष्टद्युम्न और भीष्मजी को देखा और आपके पुत्रोंकोभी मोहसे महा अचेत देखा फिर उन्हों ने प्रज्ञा अस्त्रको लेकर मोहन अस्त्रको काटा, इस के पीछे आप के महारथी पुत्रों के प्राण फिर लौट आये फिर युद्धमे लड़ने के लिये भीमसेन और धृष्टद्युम्नके संमुख गये इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनी सेनाके मनुष्योंसे बोले कि तुम अपनी सामर्थ से संग्राम भूमि में भीमसेन और धृष्टद्युम्नके मार्गमें जाओ तुम अभिमन्युको मुख्य करके बारह वीर वहां जाकर निज वृत्तान्तको देखो ।५६। मेरा चित्त सन्देहसे निवृत्त नहीं होता है वह सब शूरवीर सिंहके समान युद्ध करनेवाले

Komaras rushed with their chariots and horses from all sides Dronacharya the best of warriors wounded Dhrishtadyumn with three terrible arrows. Drupad's son seriously wounded by Dronacharya and remembering the former enmity, gave way 47 Glorious Dronacharya, having conquered Drupad's son, sounded his conch, terrifying all with the peal Dronacharya who knew the use of all weapons, heard of unconciousness of your sons by swoon-bringing weapon 53 He soon came there from the field and saw Bhishm and Dhrishtadyumn engaged in fighting, while your sons were unconcious. He then removed the effect of that weapon by the Pragya weapon and they were all restored He then went on to fight against Dhrishtadyumn and Bhim The cupon Prince Yudhishthir ordered his twelve warriors to force their way through the ranks of the enemy with Abhimanyu as the leader to bring news of Dhrishtadyumn and

तप्त समनन्नाश शैराविक्षातयोधिन ॥ ५६ ॥ यान्मित्येव मुक्त्वातु सर्वे युद्धमानि
नः। मध्ये दिवि गते सूर्ये प्रययु सह पार्थिवैः ॥ ५७ ॥ केकया द्रौपदेयाश्च धृष्टकेतुश्च वीर्य
वान्। अभिमन्यु पुरस्कृत्य महत्यासेनयावृतः ॥ ५८ ॥ ते कृत्वा समरे व्यूहं सूचीमुख
मरिंदमाः। बिभिदुर्धार्तराष्ट्राणां तद्रथानीकमाहवे ॥ ५९ ॥ तान्प्रयातान्महेष्वासानभि
मन्युपुरोगमान्। भीमसेन भयाविष्टा धृष्टद्युम्न विमोहिता ॥ ६० ॥ न संवारयितुं शक्ता
तवसेना जनाधिप। मदमूर्च्छान्वितात्मानं प्रमदेवा ध्वनि स्थिता ॥ ६१ ॥ तेऽभिजाता
महेष्वासा सुवर्ण विकृतध्वजा। परीप्सन्तोऽभ्यधावन्त धृष्टद्युम्नवृकोदरौ ॥ ६२ ॥ तौ
च दृष्ट्वा महेष्वासा वभिमन्युपुरोगमान्। बभूवतुर्मुदा युक्तौ निघ्नन्तौ तववाहि
नीम् ॥ ६३ ॥ दृष्ट्वातु सहसा यान्तं पाञ्चाल्यो गुरुमात्मनः। नाशंसत वधं वीर पुत्राणां तव
भारत ॥ ६४ ॥ ततो रथं समारोप्य केकयस्य वृकोदरम्। अभ्ययद्‌ सुसंक्रुद्धो द्रोण

युधिष्ठिर की आज्ञा पातेही मध्याह्नके समय युद्धकी ओर गये, पांचो केकय और पांचो द्रौपदी के पुत्र धृष्टकेतु यह सब अपनी भारी सेना समेत अभिमन्यु को आगे करके प्रस्थित हुए और वहां युद्ध में व्यूहको सूची मुख बना के धृतराष्ट्र के पुत्रों की रथवाली सेना को छिन्न भिन्न कर दिया, भीमसेन के भयसे भरे हुए और धृष्टद्युम्न के हाथ से अति अचेत आपकी सेना उन अभिमन्यु आदि बडे धनुषधारियों के सम्मुख होने को समर्थ नहीहुई, और मूर्छा में भरेहुये स्त्री के समान मार्ग में नियतहुए। ६१। वह महा धनुर्धर सुवर्णित ध्वजा युक्त धृष्टद्युम्न और भीमसेन के देखने को सम्मुख दौडे उन अभिमन्यु आदि वीरों को देखकर वह दोनों भीमसेन और धृष्टद्युम्न बडे आनन्दित हुए, फिर शूर वीर धृष्टद्युम्न नें अकस्मात आये हुए अपने गुरुको देखकर आपके पुत्रों को नहीं मारा तदनन्तर भीमसेन को केकय के रथपर सवार करके अत्यन्त कोप में भराहुआ धृष्टद्युम्न

Bhim 5a "My mind," said he "is much disturbed on their account." All those warriors having obtained Yudhishthir's orders entered the battle field at midday. The five Kaikeya brothers, the five sons of Draupadi and Dhrishtketu with a large army were led by Abhimanyu, and having formed themselves into a wedge like shape, they dispersed the armies of the sons of Dhritrashtra. Already terrified by Bhim and wounded by Dhrishtadyumn, your armies could not withstand the great archers, Abhimanyu and others, and stood like an unconscious woman in the way 61 The great archers with golden banners rushed on to see Dhrishtadyumn and Bhimsen. Seeing those brave warriors, Abhimanyu and others, Bhim and Dhrishtadyumn were much pleased. Then brave Dhrishtadyumn, seeing his preceptor before him did not destroy your sons and mounting Bhim on the chariot of Kaikaya, Dhrishtadyumn in a great rage, rushed against Dronacharya — perfect in archery and oth r

मिथ्वस्त्रागमम् ॥ ६५ ॥ तस्याभि पततस्तूर्णं भारद्वाज प्रतापवान् । क्रुद्धश्चिच्छे
द बाणेन धनुः शत्रुनिबर्हणः ॥ ६६ ॥ अन्यांश्च शतशो बाणान् प्रेषयामास पार्षते ।
दुर्योधन हितार्थाय भर्तृपिण्डमनुस्मरन् ॥ ६७ ॥ अथान्यद्धनुरादाय पार्षतः पर
वीरहा । द्रोणं विव्याध विंशत्या रुक्मपुङ्खैः शिलाशितैः ॥ ६८ ॥ तस्य द्रोणः
पुनश्चापं चिच्छेदामित्रकर्शनः ॥ हयांश्च चतुरस्तूर्णं चतुर्भिः सायकोत्तमैः ॥ ६९ ॥
वैवस्वत क्षयं घोरं प्रेषयामास भारत । सारथिं चास्य भल्लेन प्रेषयामास मृत्यवे ॥ ७० ॥
हताश्वात्स रथात्तूर्णं मवप्लुत्य महारथः । आरुरोह महाबाहुरभिमन्योर्महारथम्
॥ ७१ ॥ ततः सरथ नागाश्वा समकम्पत वाहिनी । पश्यतो भीमसेनस्य पार्षत
तस्य चापश्यतः ॥ ७२ ॥ तत्प्रभग्नं बलं दृष्ट्वा द्रोणेनामिततेजसा । नाशक्नुवन्वारयितुं
समस्तास्ते महारथाः ॥ ७३ ॥ वध्यमानं तु तत्सैन्यं द्रोणेन निशितैः शरैः । व्यभ्रमत्तत्र

बाण और अस्त्रों के पारंगत द्रोणाचार्य्य के सम्मुख दौड़ा ।६५। शत्रुहन्ता प्रतापी द्रोणाचार्य्य ने बहुत क्रोधित होकर बड़ी शीघ्रता से उस सम्मुख आनेवाले धनुष को भल्ल से काटा, और स्वामी के हित के निमित्त अन्य सैकड़ों बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल किया, फिर शत्रु के मारनेवाले धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर शिला पर घिसे सुनहरी पुंखवाले, बाणों से द्रोणाचार्य्य को घायल किया, फिर शत्रुहन्ता द्रोण ने उसके दूसरे धनुष को भी काटा और बड़े तीव्र चार शायकों से चारों घोड़ों को यमके लोक को भेजा फिर इस के सारथी को भी एकही भल्ल से मारडाला ।७०। फिर वह महाबाहु महारथी शीघ्रही मृतक घोड़ों के रथ से उतरकर अभिमन्यु के महारथ पर सवार हुआ, इसके अनन्तर भीमसेन और धृष्टद्युम्न के देखते हुए रथ हाथी घोड़े आदि समेत सेना भयसे कम्पितहुई, फिर द्रोणाचार्य्य जी से व्याकुल सेना को देखकर वह सब महारथी उसके रोकने को समर्थ नहीं हुए, द्रोणाचार्य्य के तीक्ष्ण बाणों से घायल वह सेना समुद्र के समान महा व्याकुल

weapons 65. Brave Dronacharya the destroyer of enemies, cut down the bow of his adversary with his dart, and with hundreds of arrows wounded him for the good of his employer Then Dhrishtadyumn the destroyer of foes, taking up another bow, wounded Dronacharya with his arrows sharpened on stone and having gold feathers Drona the destroyer of foes cut down his second bow too and killed the four horses of his chariot with four arrows and the driver with one 70 That warrior soon jumped down from his chariot of which the horses were dead, and mounted on Abhimanyu's chariot. Then within sight of Bhimsen and Dhrishtadyumn your armies full of chariots, elephants and horses, trembled with fear and could not withstand the fury of Dronacharya's attack. Wounded by the sharp arrows of Drona, the army was agitated like the ocean and

तत्रैव क्षोभ्यमाणश्चार्णव ॥ ७४ ॥ तथा दृष्ट्वा च तत्सैन्यं जहृषेतावकंबलम् । दृष्ट्वा चार्थिसुसंक्रुद्धं पतंतारिंपुथाहिनीम् । चुकुशुःसर्वतोयोधाः साधुसाध्विति भारत ॥ ७५ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे द्रोणपराक्रमे सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

सञ्जय उवाच । ततो दुर्य्योधनो राजा मोहात्प्रत्यागतस्तदा । शरवर्षैः पुनर्भीमं प्रत्यवारयदच्युतम् ॥ १ ॥ एकीभूतास्ततश्चैव तव पुत्रा महारथाः । समेत्य समरे भीमं योधयामासुरुद्यताः ॥ २ ॥ भीमसेनोऽपि समरे सम्प्राप्य स्वरथंपुनः । समारुह्य महाबाहुर्ययौ येन तवात्मजः ॥ ३ ॥ प्रगृह्य च महावेगं परासुकरणं दृढम् । सज्जं शरासनं संख्ये शरैर्विव्याध ते सुतम् ॥ ४ ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा भीमसेनं महाबलम् । नाराचेन सुतीक्ष्णेन भृशं मर्मण्यताडयत् ॥ ५ ॥ सोऽतिविद्धो महेष्वासस्तवपुत्रेणधन्विना । क्रोधसंरक्तनयनो वेगेनाक्षिप्य कार्मुकम् ॥ ६ ॥ दुर्य्योधनंत्रिभिर्बाणैर्बाह्वोरुरसिचार्पयत् । सतत्र शुशुभे

होकर जहां तहां भागने लगी, फिर आपकी सेना उस सेना को भागती देखकर बड़ी प्रसन्न हुई, हे भरतर्षभ इस रीतिसे शत्रुकी सेना को मारताहुआ क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य को देखकर शूरवीर लोग चारों ओरसे धन्य २ करके पुकारने लगे ७५ ॥

अध्याय ७८ ॥

इसके पीछे राजा दुर्य्योधन ने व्यूह से पृथक् होकर अपने बाणों की वर्षा से दुर्जय भीमसेन को रोका, फिर आपके महारथी पुत्रभी इकट्ठे होगये और सब मिलकर भीमसेन से लड़ने लगे फिर महाबाहु भीमसेन भी युद्ध में अपने रथ को पाकर उसपर चढ़के वहां को गया जहां आपका पुत्र था, वहां उस वेगवान ने जीव निकालनेवाले दृढ़ और जड़ाऊ धनुष को चढ़ाकर बाणों से आपके पुत्रको पीड़ित किया, इसके पीछे हे राजा दुर्य्योधन ने भी अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचों से महाबली भीमसेन को मर्मस्थलों में घायल किया, फिर उस महाक्रोध रूप धनुष धारी भीमसेन ने आपके पुत्र से घायल होकर बड़े लाल नेत्र करके उत्तम प्रबल

began to run away this way and that. Your army was much pleased at the flight of the opposite party. Thus destroying the army of the enemy, Dronacharya was much praised by all the warriors. 75.

CHAPTER LXXVIII

Prince Duryodhan then separated him self from the rest of the army and checked invincible Bhimsen with a shower of arrows. Your other sons too came together and began to fight against Bhim Bhimsen mounted on his chariot and went to the place where your son was and wounded him with the arrows shot from his jewelled bow. Prince Duryodhan, too, wounded him in vital places with his exceedingly sharp arrows Wounded by your son, Bhim with eyes red in anger, drew up his bow and with three arrows wounded Dur-

गजा शिखरैर्गिरि गाडिव ॥ ७ ॥ तौ दृष्ट्वा समरे क्रुद्धौ विनिघ्नन्तौ परस्परम्। दुर्योधनानुजाः सर्वे शूराः संत्यक्तजीविताः ॥ ८ ॥ संस्मृत्य मन्त्रितं पूर्वं निग्रहे भीमकर्मणः। निश्चयं मनसा कृत्वा निग्रहीतुं प्रचक्रमुः ॥ ९ ॥ तानापतत एवाजौ भीमसेनो महाबलः। प्रत्युद्ययौ महाराज गजः प्रतिगजानिव ॥ १० ॥ भृशं क्रुद्धश्च तेजस्वी नाराचेन समार्पयत्। चित्रसेनं महाराज तव पुत्रं महायशाः ॥ ११ ॥ तथेतरांस्तव सुतांस्ताडयामास भारत। शरैर्बहुविधैः संख्ये रुक्मपुङ्खैः सुतेजनैः ॥ १२ ॥ ततः संस्थाप्य समरे तान्यनीकानि सर्वशः। अभिमन्युप्रभृतयस्ते द्वादश महारथाः ॥ १३ ॥ प्रेषिता धर्मराजेन भीमसेनपदानुगाः। प्रत्युद्ययुर्महाराज तव पुत्रान् महाबलान् ॥ १४ ॥ दृष्ट्वा रथस्थांस्ताञ्शूरान् सूर्याग्निसमतेजसः। सर्वानेव महेष्वासान् भ्राजमानान् श्रियावृतान् ॥ १५ ॥ महाहवे दीप्यमानान् सुवर्णकवचोज्ज्वलान्। तत्यजुः समरे

धनुषको खैंचकर अपने तीन बाणों से दुर्योधन की भुजा और छाती को घायल किया, हे राजा इस रीति से घायल होकर भी वह दुर्योधन पर्वत के समान चलायमान नहीं हुआ फिर दुर्योधन के शूर वीर युद्ध मे देह के त्यागने वाले भाइयों ने दोनों वीरों को परस्पर मारने में प्रवृत्त देखकर भयकारी भीमसेन के पकड़ने का पूर्व कर्म स्मरण करके बड़े निश्चय पूर्वक उस के पकड़नेका उपाय किया, हे महाराज महाबली भीमसेनभी उन युद्ध मे प्रवृत्त वीरों के सम्मुख ऐसा चला जैसे कि हाथी हाथियो के सम्मुख जाता है हे महाराज बड़े यशस्वी तेजवान् अत्यन्त क्रोधित भीमसेन ने आप के पुत्र चित्रसेनको नाराचसे घायल किया, और इसी प्रकारसे अनेक उत्तम बाणों से आपके अन्य पुत्रों को भी घायल किया, तदनन्तर धर्मराजके भेजे हुए भीमसेन के पीछे चलनेवाले वह अभिमन्यु आदि बारह महारथी युद्ध में अपनी सेना को सब ओर से नियत करके उन महारथी राजपुत्रों के सम्मुख गये, उनशूर रथोंपरसवारसूर्य अग्निके समान प्रकाशितशोभायमान लक्ष्मी से युक्त भूमि मे तेजस्वी सुवर्ण भूषणा से अलकृत सब बड़े धनुषधारियों

yodhan in the arm and breast Duryodhan remained immovable like a mountain even after receiving the wounds The brave brothers of Duryodhan ready to die for him seeing those two warrior engaged in combat and remembering their former resolution tried hard to capture Bhim The latter faced those brave warriors as an elephant faces other elephants Glorious Bhimsen of great prowess in great anger wounded Chitrasen with an arrow and with others he wounded the others Then the twelve warriors, Abhimanyu and others, sent by Yudhishthir to help Bhim having stationed their forces all round, faced those brave princes. Seeing those brave men mounted on chariots glorious like the sun or fire, decked with ornaments of great value and armed with bows, your brave sons left Bhim but the latter

भीमं तव पुत्रा महाबलाः । तान्नामृष्यत कौन्तेयो जीवमाना गता इति ॥ १६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीमपराक्रमे

अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

सञ्जय उवाच । अन्वीय च पुनः सर्वास्तव पुत्रानपीडयत् । शथाभिमन्युं समरे भीमसेनेन संगतम् ॥१॥ पार्षतेन च सम्प्रेक्ष्य तव सैन्ये महारथाः । दुर्य्योधनप्रभृतयः प्रगृहीतशरासनाः ॥ २ ॥ भृषमश्वैः प्रजवितैः प्रययुर्यत्र ते रथाः । अपराह्णे महाराज प्रावर्त्तत महारणः ॥ ३ ॥ तावकानाञ्च बलिनां परेषांचैव भारत । अभिमन्यु विकर्णस्य हयान् हत्वा महाहवे ॥ ४ ॥ अथैनं पञ्चविंशत्या क्षुद्रकाणां समार्पयत् । हताश्वं रथमुत्सृज्य विकर्णस्तु महारथः ॥ ५ ॥ आरुरोह रथं राजंश्चित्रसेनस्य भारत । स्थितावेकरथे तौ तु भ्रातरौ कुलवर्धनौ ॥६॥ आर्जुनिः शरजालेनच्छादयामास

को देखकर आपके महाबली पुत्रों ने युद्धमें भीमसेन को त्याग दिया परन्तु भीम सेन उन जीतते जानेवालों को देखकर रह न सका १६ ॥

अध्याय ७९ ॥

संजय बोले कि इस के पीछे भीमसेन समेत अभिमन्यु ने पीछा करके आपके सब वेरों को घायल किया, फिर धनुषधारी महारथी दुर्योधनादिक आपकी सेना को धृष्टद्युम्न के हाथमें महा व्याकुल देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा वहां पहुँचे जहां कि वह रथी वर्त्तमानथे तदनन्तर मध्याह्नके पीछे आपके और दूसरों के शूर वीरोंका महायुद्ध प्रारम्भ हुआ हे भरतवंशी अभिमन्युने विकर्णके घोड़ों को मारकर २५ क्षुद्रकबाणों से उसको आच्छादित कर दिया फिर महारथी विकर्ण मृतक घोड़ों के रथको त्यागकर चित्रसेन के प्रकाशमान रथपर चढ़े हुए दोनों भाइयों को अभिमन्यु ने बाणों से ढक दिया तब दुर्जय और विकर्ण ने पांचलोहेके बाणों से अभिमन्यु को पीड़ित किया परन्तु मेरु पर्व्वतके समान दृढ़ अभिमन्यु उस

could not bear their going away alive 16.

CHAPTER LXXIX

Sanjaya continued.—"Abhimanyu and Bhimsen then chased your sons and wounded them all. Then the great charioteers of your army Duryodhan and others seeing their armies, much distressed by Dhrishtadyumn, rode on their swift horses to the place where those warriors were, and in the afternoon there was a severe fight between the soldiers of the two parties. Having killed the horses of Vikarn, Abhimanyu covered him with twenty five sharp arrows Brave Vikarn, thereupon, left his chariot with the dead horses and mounted the shining chariot of Chritrasen. Abhimanyu covered with his arrows, both the brothers mounted on the same chariot. Durjaya and Vikarn wounded Abhimanyu with five iron arrows, but the latter remained firm like a mountain and could not be shaken with the wounds. Dushasan fought a won-

भारत। चित्रसेनो विकर्णश्च कार्ष्णिं पञ्चभिरायसैः ॥ ७ ॥ विव्यधा तेन चाकम्पत् कार्ष्णिर्मेरुरिवस्थित । दुःशासनस्तु समरे केकयान् पञ्च मारिष ॥ ८ ॥ योधयामास राजेन्द्रतदद्भुतमिवाभवत्। द्रौपदेया रणे क्रुद्धा दुर्य्योधनमवारयन् ॥ ९ ॥ शरैराशी विषाकारैः पुन तव विशाम्पते। पुत्रोपि तव दुर्द्धर्षो द्रौपद्यास्तनयान्रणे ॥ १० ॥ साय कैर्निशितैराजन्नाजघान पृथक्पृथक्। तैश्चापि विद्ध शुशुभे रुधिरेण समुक्षित ॥११॥ गिरि प्रस्रवणैर्यद्वद्गैरिकादि विमिश्रितैः ।भीष्मोपि समरेराजन् पाण्डवानाम नीकिनीम् ॥ १२ ॥ कालयामास बलवान् पाल पशुगणानिव। ततो गाण्डीवनिर्घोष प्रादुरासी द्विशाम्पते ॥ १३ ॥ दक्षिणेन वरूथिन्या पार्थस्यारीन् विनिघ्नत । उत्तस्थु समरे तत्र कवन्धानि समन्तत ॥ १४ ॥ कुरूणाञ्चैव सैन्येषु पाण्डवानाञ्च भारत। शोणितोदशरावर्त्त गजद्वीप हयोर्मिणम ॥ १५ ॥ रथनौभिर्नरव्याघ्रा प्रतेरु सैन्यसा

चोटसे कंपित नहीं हुआ फिर हे राजेन्द्र दुश्शासन ने पांचों केकयों को लडाया यह एक आश्चर्यसा हुआ और युद्धमें कोपित द्रौपदी के पुत्रोंने दुर्य्योधन को रोका फिर प्रत्येकने तीन २ बाणों से आपके बेटेको पीडामान किया और उसने भी दुर्जय द्रौपदी के सब पुत्रो को बडे तीक्ष्ण शायकों से जुदा २ घायल किया और फिरवह दुर्य्योधन उन पांचोंसे घायल रुधिर चूता हुआ ऐसा शोभा युक्त हुआ जैसे कि पहाड़ी धातु मिश्रित झिरनोंसे पर्व्वत शोभायमान होता है और हे राजा महाबली भीष्मजीने भी पाण्डवों की सेनाको ऐसाघायलाकिया जैसे कि ग्वाल अपने पशुओं के समूहों को ताडित करताहै। १२। इसके पीछे सेनाके दक्षिण ओर अर्जुन के शत्रु हन्ता गांडीव धनुषका शब्द सुनाई दिया, वहांभी कौरव और पांडवों की सेनाओंमें हजारों रुंडखड़े होहोकर युद्धकरनेवाले हुए, उसयुद्धमें भी नरोत्तमों ने रुधिररूप जल और बाणरूप भवँर हाथी रूप टापू घोड़े रूप लहरें ऐसे सेना रूपी सागर को रथरूप अपनी नौकाओंके द्वारा तरणकिया उस संग्राम

derful fight with the five Kaikaya brothers, and the five sons of Draupadi checked in battle the enraged Duryodhan Each of them wounded your son with three arrows and the latter wounded them separately with his own sharp arrows Duryodhan wounded and bleeding by those five warriors looked glorious like a mountain with its fountains of mineral waters The army of the Pandavas was beaten down by Bhishma like a herd of cattle by the herdsman 12. In the south of the army was heard the twang of Arjun's Gandiv bow the destroyer of foes and thousands of headless bodies were to be seen there in the armies of the Kauravas and the Pandavas In that battle, too, the best of warriors crossed with the canoes of their chariots the ocean having blood for its waters, the arrows for its eddies, the elephants for its islands and the horses for its billows Thousands of warriors

गरम। छिन्नहस्ता विकवचा विदेहाश्च नरोत्तमाः ॥ १६ ॥ दृश्यन्ते पतितास्तत्र शत शोथसहस्रशः । निहतैर्मत्तमातङ्गैः शोणितौघपरिप्लुतैः ॥ १७ ॥ भूर्भाति भरतश्रेष्ठ पर्वतैराचितायथा । तत्राद्भुतमपश्याम तव तेषाञ्च भारत ॥ १८ ॥ न तत्रासीत्पुमान् कश्चिद्यो युद्धं नाभिकांक्षति । एवं युयुधिरे वीरा प्रार्थयाना महद्यशः । तावकाः पाण्डवैः सार्द्धं माकांक्षितो जयंयुधि ॥ १९ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे

ऊनाशीतितमोऽध्यायः ॥ ७९ ॥

सञ्जय उवाच । ततो दुर्य्योधनो राजा लोहितायति भास्करे । संग्रामरभसो भीम हन्तुकामोऽभ्यधावत ॥ १ ॥ तमायान्तमभिप्रेक्ष्य नृवीरं दृढवैरिणम् । भीमसेन सुसंक्रुद्ध इदम्वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ अयं सकाल सम्प्राप्तो वर्षपूगाभिकांक्षितः । अद्यत्वां निह निष्यामि यदि नोत्सृजसे रणम् ॥ ३ ॥ अद्यकुन्त्या परिक्लेशं वनवासञ्च कृत्स्नशः ।

में हाथ कवच टूटे देहके अहंकार से रहित हजारों नरोत्तम पृथ्वी पर गिरे हुए दृष्टि गोचरहुए, हे भरतर्षभ मृतक हुए रुधिरोंमें भरे मतवाले हाथियों से पृथ्वी ऐसी दिखाई दी मानों पर्वतों से भरा है, वहां हमने आपके पुत्रोंका और पांडवों का अपूर्व वृत्तान्त देखा अर्थात् कोई ऐसा वहां पुरुष नहीं था जो युद्धकरना न चाहता हो, इस रीतिसे बड़े यशके चाहनेवाले युद्धमें विजयाभिलाषी आपके वीरपुत्र पाण्डवों के साथयुद्धकरनेवालेहुए १९॥

अध्याय ८० ॥

संजय बोले फिर सूर्य्यके अरुण होनेपर युद्धमें वेगवान् राजा दुर्य्योधन भीमसेनके मारनेको इच्छावान् सम्मुख दौड़ा, तब अत्यन्त कोपयुक्त भीमसेन उस आतेहुए नर वीर बड़ी शत्रुतारखनेवाले को अपने सम्मुख देखकर यह वचन बोला, कि बहुत वर्षों से चाहाहुआ यह समय आया है अब मैं अवश्य तुझको मारूंगा जो तू युद्धसे न भागेगा, अब तेरे मारनेमें मैं कुन्ती के और द्रौपदी के वनवासके दुःखोंको दूर

were seen there falling down deprived of their hands, armour and pride of power. The ground looked full of hills with the bleeding bodies of mad elephants There we saw the wonderful prowess of your sons and that of the Pandavas There was no person there who did not desire for fighting. Thus the great seekers after fame and victory, your sons as well as the Pandavas fought bravely "19.

CHAPTER LXXX

Sanjaya continued —"When the sun was red, Prince Duryodhan of great energy rushed to destroy Him in fight, and the latter, in a rage seeing his brave enemy coming towards him, said, "The long-wished for time has come! I shall surely kill you, if you do not run away from the field I shall wash away with your blood the sorrows of Kunti and Draupadi at our exile You will now reap the fruit of

द्रौपद्याश्च परिक्लेशं प्रणेष्यामि हते त्वयि ॥ ४ ॥ यत्पुरा मत्सरी भूत्वा पाण्डवानव
मन्यसे । तस्य पापस्य गान्धारे पश्य व्यसनमागतम् ॥ ५ ॥ कर्णस्य मतमास्थाय
सौबलस्य च यत्पुरा । अचिन्त्य पाण्डवान् कामाद्यथेष्टं कृतवानसि ॥ ६ ॥ याच
मानञ्च यन्मोहाद्दाशार्हमवमन्यसे । उलूकस्य समादेशं यद्ददासि च हृष्टवत् ॥ ७ ॥
तेन त्वा निहनिष्यामि सानुबंधं सबान्धवम् । शमं करिष्ये तत्पापं यत्पुराकृतवानसि
॥ ८ ॥ एवमुक्त्वा धनुर्घोरं विकृष्योद्भ्राम्य चासकृत् । समाधत्त शरान् घोरान् महा
शनिसमप्रभान् ॥ ९ ॥ षड्विंशतिमसं क्रुद्धो मुमोचाशु सुयोधने । ज्वलिताग्निशिखा
कारान् वज्रकल्पानजिह्मगान् ॥ १० ॥ ततोस्यकार्मुकं द्वाभ्यां सूतं द्वाभ्याञ्च विव्यधे ।
चतुर्भिरश्वान्जवनान नयद्यमसादनम् ॥ ११ ॥ द्वाभ्याञ्च सुविकृष्टाभ्यां शराभ्यामरि
मर्दन । छत्रं चिच्छेद समरे राज्ञस्तस्य नरोत्तम ॥ १२ ॥ षड्भिश्चतस्य चिच्छेद
ज्वलन्तं ध्वजमुत्तमम् । छित्वा तञ्च ननादोच्चैस्तव पुत्रस्य पश्यत ॥ १३ ॥ रथाच्च

करूंगा, जिस हेतुसे कि पूर्व्वसमय में तैने ईर्षा करके पाण्डवों का अपमान कियाथा
हे गांधारी के पुत्र तू उस पापके फल को देख और जिसकारण से कि तैंने कर्ण
और शकुनी के मत में नियत होकर पांडवों को साधारण समझकर अपनी इच्छा
से वह कर्म कियाहै, और जिस दशामें कि भूलमे तैंने श्रीकृष्णजी का अपमान
किया है इनसब हेतुओंसे मैं बांधवोंसमेत तुझको मारूंगा और उस पापको शांतकरूंगा
जो पूर्व्व समयमें किया है, उस क्रोधरूप भीमसेन ने इस प्रकार से कहकर अपने
घोर धनुष को खैंचकर वारम्वार ऊंचा घुमाकर घोर महावज्र के समान प्रकाशमान
अग्नि शिखा के समान ज्वलित वज्रके समान सीधे चलने वाले छब्बीस बाणों को
बड़े वेग से शीघ्रता पूर्व्वक दुर्य्योधनपर फेंका।१०। और दो बाणों से उसके धनुष
को काटा और दोही बाणों से उसके सूत को घायल करके चार तीक्ष्ण बाणों से
उसके घोड़ों को मारडाला, फिर उस शत्रुहन्ता ने अच्छे प्रकार खैंचेहुए दो बाणों
से उस राजा के छत्रको भी उत्तम रथ से काट गिराया, फिर तीन बाणों से
उसकी उत्तम ध्वजा को पृथ्वी पर काटकर दुर्य्योधनके देखतेहुए बड़े शब्द

your envy and contempt of the Pandavas, son of Gandhari 5. And because you have acted on the evil counsel of Karan and Shakuni have fought against the Pandavas and thought them to be ordinary men, and have by your stupidity looked down upon Shree Krishn, I shall therefore destroy you and your kinsmen to avenge the wrongs done by you in former days" Having said these words Bhim in his rage, drew his bow and swinging it high several times, discharged ceaselessly at Duryudhan, twenty six arrows straight and shining like vajra and burning like a flame. 10 With two of his arrows he cut down his bow and having killed his chariot driver with two more, he killed his horses with four Then that destroyer of foes with two more well aimed arrows cut down the shade from the chariot. And

स ध्वजः श्रीमान् नानारत्नविभूषितात् । पपात सहसा भूमौ विद्युज्जलधरादिव ॥१४॥ ज्वलन्तं सूर्यसङ्काशं नागं मणिमयं शुभम् । ध्वजं कुरुपतेश्छिन्नं ददृशुः सर्वपार्थिवाः ॥ १५ ॥ अथैनं दशभिर्बाणैस्तोत्रैरिव महाद्विपम् । आजघान रणे घोरं स्मयन्निव महारथ ॥ १६ ॥ ततः स राजा सिन्धूनां रथश्रेष्ठो महारथः । दुर्य्योधनस्य जग्राह पार्ष्णि सत्पुरुषैर्वृतः ॥ १७ ॥ कृपश्च रथिनां श्रेष्ठः कौरव्यममितौजसम् । आरोपयद्रथं राजन् दुर्य्योधनममर्षणम् ॥ १८ ॥ स गाढविद्धो व्यथितो भीमसेनेन संयुगे । निषसाद रथोपस्थे राजन् दुर्य्योधनस्तदा ॥ १९ ॥ परिवार्य ततो भीमं जेतुकामो जयद्रथः । रथैरनेकसाहस्रैर्भीमस्यावारयद्दिशः ॥ २० ॥ धृष्टकेतुस्ततो राजन्नभिमन्युश्च वीर्यवान् । केकया द्रौपदेयाश्च तव पुत्रानयोधयन् ॥ २१ ॥ चित्रसेनः सुचित्रश्च चित्राङ्गदश्चित्रदर्शनः ।

से गर्जा वह नानाप्रकार के रत्नों से शोभित उत्तम ध्वजा अकस्मात रथ से ऐसी गिरी जैसे कि बादल में बिजली गिरती है, सब राजाओं ने कुरुपति दुर्य्योधन की प्रकाशमान अग्नि के समान ज्वलित मणियों से जटित ध्वजा को कटाहुआ देखा । १५ । तब अहंकार युक्त महारथी भीमसेन ने उस को दश बाणों से ऐसे घायल किया जैसे कि दण्ड से महागजेन्द्र को घायल करते हैं, इसके अनन्तर सिंधुदेशियों के राजा रथियों में श्रेष्ठ महाबली ने हाथ में परशों को धारण करके दुर्य्योधन की पीठ को पकड़ा, रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य ने बड़े तेजस्वी क्रोध युक्त कौरवी दुर्य्योधन को रथपर सवार किया, फिर वह राजा दुर्य्योधन भीमसेन के हाथ से अत्यन्त घायल और पीड़ामान् रथ में बैठ गया, तब मारने की इच्छा करनेवाले जयद्रथने भीमसेन को चारों ओरसे घेरकर हजारोंरथियों से उसकी सब दिशाओं को रोका । २० । इसके पीछे हेराजा धृष्टकेतु व पराक्रमी अभिमन्यु व पांचों केकय व पांचों द्रौपदी के पुत्र आपके पुत्रों से युद्ध करने लगे चित्रसेन

having severed his banner with three arrows he roared within sight of Duryodhan. Decked with jewels the banner fell suddenly from the chariot as lightning does from clouds 14. All the princes saw the fall of the jewelled and shining banner of Duryodhan the Prince of the Kurus. Bhim then wounded Duryodhan with ten arrows as a driver wounds an elephant. At this the king of Sindhu a great warrior armed with axe, protected Duryodhan on the back. Kripacharya the best of charioteers mounted the glorious prince of the Kauravas on his own chariot. Prince Duryodhan, much wounded and distressed at the hands of Bhim, sat on the chariot. And desiring to kill Bhimsen, Jayadrath surrounded him on all sides with thousands of chariats. 20. Dhrishtketu, valliant Abhimanyu, the five Kaikayas and the five sons of Draupadi fought against your sons. Chitrasen, Suchitra, Chitrang, Chitradarshan, Sucharu, Charumitra, Nand and Upnandak, these eight warriors of great prowess

चारु चित्र सुचारुश्च तथा नंदोपनंदको ॥ २२ ॥ अष्टावेते महेष्वासा सुकुमारायश स्विन । अभिमन्युरथ, राजन् समतात् पर्यवारयन् ॥ २३ ॥ आजघ्न ततस्तूर्ण मभि मन्युर्महामना । एकैकं पंचभिर्वाणै शितै सन्नतपर्वभि ॥ २४ ॥ वर्ज्रमृत्यु प्रतीकाशै र्विचित्रायुध नि सृतै । अमृष्यमाणास्ते सर्वे सौभद्रं रथसत्तमम् ॥ २५ ॥ ववृषुर्मार्गणै स्तीक्ष्णैर्मेरुमिवाम्बुदा । सपीड्यमान समरे कृतास्त्रोयुद्धदुर्मद ॥ २६ ॥ अभिमन्यु र्महाराज तावकान् समकपयत् । यथा देवासुरे युद्धे वज्रपाणिर्महासुरान् ॥ २७ ॥ विकर्णस्य ततो भल्लान् प्रेषयामास भारत । चतुर्दश रथश्रेष्ठो घोरानाशीविषोपमान् ॥ २८ ॥ स तैर्विकर्णस्य रथात् पातयामास वीर्यवान् । ध्वज सूतं हयांश्चैव नृत्यमान इवाहवे ॥ २९ ॥ पुनश्चान्यान् शरान् पीतानकुण्ठाग्रान् शिला शितान् । प्रेषयामास सक्रुद्धो विकर्णायमहाबल ॥ ३० ॥ ते विकर्णं समासाद्य कङ्कबर्हिणवासस । भित्वा

सुचित्र चित्रांग चित्रदर्शन सुचारु, चारुचित्र इसी प्रकार नन्द उपनन्दक, इन बड़े २ धनुषधारी सुकुमार यशस्वी आठों ने अभिमन्यु के रथको चारों ओर से घेरा, फिर बड़े साहसी अभिमन्यु ने शीघ्रही गुप्तग्रन्थिवाले पांच ५ बाणों से प्रत्येक को घायल किया, वह बाण जड़ाऊ धनुष से निकले हुए वज्ररूप मृत्युके समान थे वह सब भी क्रोधयुक्त होकर, रथियों में श्रेष्ठ अभिमन्युपर। २५। अपने तीक्ष्ण बाणों की ऐसे वर्षा करने लगे जैसे कि मेरु पर्वत पर बादल वर्षा करते हैं हे महाराज उस अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्मद, पीड़ामान अभिमन्यु ने आप के पुत्रों को ऐसा अत्यन्त कंपित किया जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में वज्रधारी इन्द्र बड़े २ असुरों को कपायमान करताहै हे।२७। राजा इसी प्रकार उस अभिमन्युने विष भरेहुए घोर चौदह भल्लों को विकर्ण के निमित्त भेजा, फिर उस पराक्रमी ने युद्ध में नृत्य करने वालेके समान उन बाणों से विकर्ण की ध्वजा घोड़े रथ सूत और धनुष को भी रथ से गिराया, और पीतरंग के प्रकाशित नोक और सीधे चलने वाले और बाणोंको विकर्णपर फेंका। ३०। वह कंक और मोरके परोसे संयुक्तवाण विकर्णको पाकर

surrounded Abhimanyu's chariot, but the latter wounded each of them with five arrows containing hidden knots Those arrows shot from the gem decked bow were fatal in effect like vajra and those best of warriors, in a rage, showered their arrows on Abhimanyu as clouds pour forth rain on Sumeru That great archer Abhimanyu, being much wounded by their arrows, shook your sons with his arrows as Indra the wielder of vajra shakes the asurs in the war between the gods and the asurs 27 With fourteen poisonous darts, he wounded Vikarn Like a dancer in the field of battle he felled Vikarn's banner, horses, chariot, driver and bow from the chariot, and discharged more yellow coloured arrows at him 30 These arrows furnished with the feathers of vultures and peacocks, pierced through the body of

देह गता भूमिं ज्वलन्त इव पन्नगा ॥ ३१ ॥ ते शरा हेमपुङ्खाग्रा व्यदृश्यन्त महीतले । विकर्णरुधिरक्लिन्ना वमन्त इव शोणितम् ॥ ३२ ॥ विकर्णं वीक्ष्य निर्भिन्न तस्यैवान्ये सहोदरा । अभ्यद्रवन्त समरे सौभद्रप्रमुखान् रथान् । ३३ ॥ अभियात्वा तथैवान्यान् रथास्तान्सूर्यवर्चसः । अविध्यन् समरेन्योन्यं संरंभाद्युद्धदुर्मदा ॥ ३४ ॥ दुर्मुख श्रुतकर्माणं विध्वा सप्तभिराशुगैः । ध्वजमेकेन चिच्छेद सारथिञ्चास्य सप्तभि ॥ ३५ ॥ अश्वान्जाम्बूनदैर्जालैः प्रच्छन्नान् वातरंहस । जघान षड्भिरासाद्य सारथिञ्चाभ्यपातयत् ॥ ३६ ॥ स हताश्वे रथे तिष्ठन् श्रुतकर्मा महारथ । शक्तिं चिक्षेप सक्रुद्धो महोल्का ज्वलितामिव ॥३७॥ सा दुर्मुखस्य विमलं वर्म भित्वा यशस्विन । विदार्य्यप्राविशद्भूमिं दीप्यमाना स्वतेजसा ॥ ३८ ॥ तं दृष्ट्वा विरथ तत्र सुतसोमो महारथ. ।

उसके शरीर को घायल कर सर्पोंके समान श्वासलेते हुए पृथ्वी पर गिरे, फिर वह सुनहरी पुंख नोकवाले वाण विकर्णके रुधिरसे भरे रुधिर को उगलते हुए पृथ्वी पर पड़े दृष्टआये, विकर्ण को घायल देखकर उसके दूसरे सगे भाई युद्धमें अभिमन्यु आदि रथियों के सम्मुख दौड़, और इसी प्रकार उन क्रोधयुक्त युद्ध दुर्मद रथियों ने उनके सम्मुख जाकर उन सूर्य्य के समान तेजस्वी रथियों को परस्पर में घायल किया, फिर दुर्मुखने शीघ्रगामी सात वाणों से श्रुतकर्मा को घायल करके एक वाण से उसकी ध्वजाको काटा और सात वाणों से उसके सारथीको घायल किया।३५। फिर सुनहरी जालोंसे ढकेहुए वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको छः वाणों से मारकर उसके सारथी को भी गिराया उसमृतक घोड़ों के रथपर नियत उस महाबली श्रुतकर्मा ने बड़े क्रोधयुक्त होकर महाज्वलित उल्काके समान वरछी को उस के ऊपर फेंका, वह वरछी उस यशस्वी दुर्मुख के बड़े कवचको काटकर अपने तेज से उसको फाड़के बड़ी प्रकाशमान होके पृथ्वी में प्रविष्टहोगई वहां महाबली सुतसोमने उसको विरथ देखकर सब सेनाके देखते हुए अपने रथ पर

Vikarn and fell down on the ground like hissing serpents. Those pointed arrows with gold feathers, vomitting forth the blood of Vikarn, were to be seen on the ground Seeing Vikarn wounded, his other brothers rushed against Abhimanyu and others, and those brave warriros, proud of their power, wounded those glorious charioteers in battle Durmukh wounded Shrutkarma with seven swift arrows and having cut down his banner with an arrow he wounded the driver with seven more And with six more arrows having killed the horses covered with gold nets and swift as the wind, he killed the driver also Seated on the chariot with the horses dead, brave Shrutkarma in great anger, hurled at him a javelin bright as fire The javelin cut through the armour of brave Durmukh with

पश्यतां सर्वसैन्यानां रथमारोपयत्स्वकम् ॥ ३९ ॥ श्रुतकीर्त्तिस्तथा वीरो जयत्सेनं सुतं तव । अभ्ययात् समरे राजन् हन्तुकामो यशस्विनम् ॥ ४० ॥ तस्य विक्षिपतश्चापं श्रुतकीर्तेर्महात्मनः । चिच्छेद समरे तूर्णं जयत्सेनः सुतस्तव ॥ ४१ ॥ क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन प्रहसन्निव भारत । तं दृष्ट्वा छिन्नधन्वानं शतानीकः सहोदरम् ॥ ४२ ॥ अभ्यपद्यत तेजस्वी सिंहवन्निनदन् मुहुः । शतानीकस्तु समरे दृढं विस्फार्य कार्मुकम् ॥ ४३ ॥ विव्याध दशभिस्तूर्णं जयत्सेनं शिलीमुखैः । ननाद सुमहानादं प्रभिन्न इव वारणः ॥ ४४ ॥ अथान्येन सुतीक्ष्णेन सर्वावरणभेदिना । शतानीको जयत्सेनं विव्याध हृदये भृशम् ॥ ४५ ॥ तथा तस्मिन् वर्त्तमाने दुष्कर्णो भ्रातुरन्तिके । चिच्छेद समरे चापं नाकुलेः क्रोधमूर्च्छितः ॥ ४६ ॥ अथान्यद्धनुरादाय भारसाहमनुत्तमम् । समादत्त शरान् घोरान् शतानीको महाबलः ॥ ४७ ॥ तिष्ठ तिष्ठेति चामन्त्र्य दुष्कर्णं भ्रातुरग्रतः ।

सवार किया। इस के पीछे हे राजा महाबली श्रुतकीर्ति आपके यशस्वी जयसेन पुत्र के मारने की इच्छा से उसके सम्मुख गया, तब आपके पुत्र जयसेन ने उस धनुष खैंचने वाले श्रुतकीर्ति के धनुषको अपने क्षुरप्रबाणोंसे बड़े हास्यपूर्वक काटा फिर तेजस्वी शतानीक उस धनुषटूटेहुए अपने निज भाई को देखकर सिंहके समान बारंबार गर्जता हुआ सम्मुख आया और युद्धमें अपने दृढ धनुषको खैंचकर बड़ी शीघ्रता से दश शिली मुख बाणों से जयसेनको घायल किया और मदोन्मत्त हाथी के समान महाशब्द करके गर्जा, तदनन्तर इसने बड़े २ तीक्ष्ण ढाल खड्गों के काटने वाले अन्य बाणोंसे जयसेनको अत्यन्त घायल किया।४५। इसी प्रकार युद्धके वर्त्तमान होनेपर भाई के समीप नियतक्रोधमें व्याकुल दुष्कर्ण ने शतानीकके बाण समेत धनुषको काटा, फिर महाबली शतानीकने बड़े बोझ के साधने वाले अन्य दृढ धनुषको लेकर बड़े घोरबाणों को हाथमें लिया। ४७। और भाई के सम्मुखहोकर दुष्कर्ण से तिष्ठ तिष्ठ शब्द कहके उसके ऊपर बड़े तीक्ष्ण और ज्वलित सर्प के

its sharp edge and then glancing out entered the ground below. Sutsom of great prowess seeing him destitute of chariot took him up on his own chariot within sight of the armies. Then brave Shrutkirti faced your valliant son Jayasen in order to kill him; but the latter with a smiling face, cut down the bow of Shrutkirti with his sharp arrows. Shatanik seeing his brother's bow cut down, roared again and again like a lion and drawing up his bow for the purpose of fighting, soon wounded Jayasen with ten arrows sharpened on stone, and like a mad elephant roared a loud roar. Then with very large arrows which could cut shields, swords and bows, he wounded Jayasen more and more. When the battle was thus raging, Dushkarn stationed near his brothers, in great anger, cut down the bow and arrow of Satanik, who took up another bow capable of bearing great weight and put to it his dreadful arrows. 47. In the presence of his brother, he

मुमोचास्मै शितान् बाणान् ज्वलितान् पन्नगानिव ॥ ४८ ॥ ततोस्य धनुरेकेन द्वाभ्यां सूतञ्च मारिष । चिच्छेद समरे तूर्णं तञ्च विव्याध सप्तभिः ॥ ४९ ॥ अश्वान् मनोजवांस्तस्य कर्बुरान् वातरंहसः । जघान निशितैस्तूर्णं सर्वान् द्वादशभिः शरैः ॥ ५० ॥ अथापरेण भल्लेन संयुक्तेनाशु पातिना । दुष्कर्णं सुदृढं क्रुद्धो विव्याध हृदये भृशम् ॥ ५१ ॥ स पपात ततो भूमौ वज्राहत इव द्रुमः । दुष्कर्णं व्यथितं दृष्ट्वा पञ्च राजन् महारथाः ॥ ५२ ॥ जिघांसन्तः शतानीकं सर्वतः पर्य्यवारयन् । छाद्यमानं शरव्रातैः शतानीकं यशस्विनम् ॥ ५३ ॥ अभ्यधावन्त संक्रुद्धाः केकयाः पञ्च सोदराः । तानभ्यापततः प्रेक्ष्य तवपुत्रा महारथाः ॥ ५४ ॥ प्रत्युद्ययुर्महाराज गजा इव महागजाः । दुर्मुखो दुर्जयश्चैव तथा दुर्मर्षणो युवा ॥५५॥ शत्रुञ्जयः शत्रुसहः सर्वे क्रुद्धा यशस्विनः । प्रत्युद्याता महाराज केकयान् भ्रातरः समम् ॥ ५६ ॥ रथैर्नगरसङ्काशैर्हयैर्युक्तैर्मनोजवैः । नाना

समान बाणों को छोड़कर एक बाणसे उनके धनुषको और दो बाणों से उनके सारथी को काट मारकर बड़ी शीघ्रतासे सात बाणों से उसको घायल किया, फिर प्रसन्नमूर्ति सात्यकी ने बड़ी शीघ्रतासे बारह तीक्ष्ण बाणों से उसके सब घोड़ोंको जो कि वल के अनुसार शीघ्रगामी और कल्मापी रंगथे मारडाला ।५०। फिर हेराजा उन क्रोधरूपने शत्रुहन्ता और महा भयकारी भल्लनाम बाणसे दुष्कर्ण को व्यथित किया और वह उन के आघात से वज्रसे टूटे हुए वृक्षकी समान पृथ्वीपर गिरा हे राजा पांचमहारथियों ने दुष्कर्ण को मराहुआ देखकर मारने की इच्छाकरके शतानीक को चारों ओरसे घेर लिया, फिर बाणों से ढके हुए यशस्वी शतानीक को देखकर, अत्यन्त क्रोध में भरे पांचों निजभाई केकय उनके सम्मुख दौड़े, हे राजा उन पांचों महारथियों को आता देखकर आपके पुत्र ऐसे सम्मुख गये जैसे कि हाथी महागजेन्द्रोंके सम्मुख जाय दुर्मुख दुर्जय दुर्द्धर्षण ।५५। शत्रुंजय शत्रुसह यह सब यशस्वी महा क्रोध युक्तहोकर केकय लोगों के सम्मुख गये, मन के अनुसार

challenged Duryodhan with a cry of 'stay, stay' and discharged sharp and bright arrows like serpents at him. With one arrow he cut down his bow; with two more his cut and killed the driver and very soon he pierced his body with seven sharp arrows. Then Satyaki with a cheerful face, killed all his swift horses of variegated colour with twelve sharp arrows. 50 And with dreadful darts, destroyers of foes, he wounded Dushkarnn, O King Wounded by those darts he fell down like a tree struck down by lightning. The five warriors seeing Dashkarn dead surrrounded Shatanik on all sides in order to kill him. And seeing Shatanik covered with their arrows, the five Kaikaya brothers, rushed on to the front Seeing those five warriors rushing on towards him, your sons faced them as elephants face elephants. Durmukh, Durjaya, Durdharshan 55 Shatrunjaya, Shatrusah, all these in great anger, faced the Kaikayas. Mounted on

वर्णविचित्राभि पताकाभिरलङ्कृते ॥ ५७ ॥ पश्वापधरावीरा विचित्रकवचध्वजा । विविशुस्ते पर सैन्य सिंहा इव वनाद्वनम ॥ ५८ ॥ तेषासु तुमुलं युद्ध व्यतिषक्तरथ द्विपम। अवर्त्तत महारौद्र निघ्नतामितरेतरम ॥ ५९ ॥ अन्योन्यागस्कृता राजन् यम राष्ट्रविवर्द्धनम। युद्धस्तांस्तमिते सूर्ये चक्रुर्युद्ध सुदारुणम ॥ ६० ॥ रथिन सादिनश्चात्र व्यदृश्यन्त सहस्रश । तत शान्तनत्रु क्रुद्ध शरे सन्नतपर्वभि ॥ ६१ ॥ नाशयामास सेनांता भीष्मस्तेषा महात्मनाम। पञ्चालानाञ्च सैन्यानि शरैर्निन्येयमक्षयम ॥ ६२ ॥ एव भित्वामहेष्वास पाण्डवानामनीकिनीम । कृत्वाऽवहार सैन्याना ययौस्वशिबिर नृप ॥ ६३ ॥ धर्म्मराजोपि सम्प्रेक्ष्य धृष्टद्युम्नवृकोदरौ । मूर्ध्नि चैतावुपाघ्राय प्रहृष्ट शिबिर ययौ ॥ ६४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्व्वणि भीष्मवधपर्व्वणि भीष्मद्रोणसवादे
अशीतितमोऽध्याय: ८० ॥

शीघ्रगामी घोड़ों से संयुक्त नाना प्रकारके विचित्ररथों और पताकाओं समेत रथों में बैठे उत्तम धनुषधारी चित्र विचित्र कवच पहिरे वह वीरशत्रुओंकी सेना में आकर ऐसे वर्तमानहुये जैसे कि सिंह एक वन से दूसरे वनमें वर्त्तमान होतेहैं ।५८। हे राजा परस्पर मारते और एक एकका अपराध करने वाले लोगों का वह युद्ध हाथी घोड़ों समेत महातुमुल और घोर भारी हुआ वह सब यमलोक की वृद्धि करने वाले सूर्य्यास्त के समय बड़े घोरयुद्धकरने वाले हुए, हजारों रथी और घुड़चढ़े व्य कुल हुए इस के पीछे शंतनु के बेटे क्रोध युक्त भीष्मजी ने गुप्तग्रन्थी वाले वाणों से, उन महात्माओं की उस सेनाको नष्ट करदिया और पांचलों की सेना को भी यम लोक में पहुँचाया, इसरीति से वह बड़े धनुषधारी पांडवों की सेनाको घायल कर के सब सेनाओं का विश्राम करके अपने डेरे को गये, धर्मराजभी धृष्टद्युम्न और भीमसेन को देखकर दोनों के मस्तकको सूंघकर अपने डेरों को गये ६४।

various, chariots drawn by horses swift like the wind and furnished with banners those best of archers, sheathed in armour, came into the field of battle like lions coming from one forest to another 58 Killing one another and wounding those warriors, he fought hard with the help of elephants and horses and filled the region of Yam till sunset. Thousands of charioteers and horsemen were disabled Then Bhishm the son of Shantanu, in great anger, with arrows having hidden knots, destroyed the armies of the great Pandavas and the Panchals sending many to the region of Yam Thus the great archer having wounded the army of the Pandavas dismissed the armies for the night and himself went to his tent Dharmraj too, smelt the foreheads of Bhimsen and Dhrishtadyumn and then went to camp 64

सञ्जय उवाच । अथ शूरा महाराज परस्परकृतागसः । जग्मुः स्वशिविराण्येव रुधिरेण समुक्षिताः ॥ १ ॥ विश्राम्य च यथान्यायं पूजयित्वा परस्परम् । सन्नद्धाः समदृश्यन्त भूयो युद्धचिकीर्षया ॥ २ ॥ ततस्तव सुतो राजंश्चिन्तयाभिपरिप्लुतः । विस्रवच्छोणिताक्ताङ्गः पप्रच्छेदं पितामहम् ॥ ३ ॥ सैन्यानि रौद्राणि भयानकानि व्यूढानि सम्यग्बहुलध्वजानि । विदार्य हत्वा च निपीड्य शूरास्ते पाण्डवानां त्वरिता महारथाः ॥ ४ ॥ सम्मोह्य सर्वान् युधि कीर्तिमन्तो व्यूहञ्च तं मकरं वज्रकल्पम् । प्रविश्य भीमेन रणे हतोऽस्मि घोरैः शरैर्मृत्युदण्डप्रकाशैः ॥ ५ ॥ क्रुद्धन्तमुद्वीक्ष्य भयेन राजन् सम्मूर्छितो नालभे शान्तिमद्य । इच्छे प्रसादात्तव सत्यसन्ध प्राप्तुं जयं पाण्डवेयांश्च हन्तुम् ॥ ६ ॥ तेनैवमुक्तः प्रहसन् महात्मा दुर्योधनं मन्युगतं विदित्वा । तं प्रत्युवाचा विमना मनस्वी गङ्गासुतः शस्त्रभृतां वरिष्ठः ॥ ७ ॥ परेण

अध्याय ८१ ॥

संजय बोले हे महाराज इसके पीछे परस्पर अपराध करने वाले शूररुधिर से भरे देह अपने २ डेरोंको गये, फिर न्याय के अनुसार विश्राम कर परस्पर पूजन को करके युद्ध कर ने की इच्छा से कवच और अस्त्र शस्त्रों से, अलंकृत दृष्टपड़े हे राजा इसके अनन्तर चिन्तायुक्त आपके पुत्रने गिरतेहुये रुधिरसे भरेहुये शरीर वाले भीष्मपितामहसे पूंछा कि पांडवों के वहशूर महारथी घोर भयानक और शस्त्रोंसे अलंकृत बहुत ध्वजायुक्त सेनाओंको मार और पीड़ित करके कीर्तिवानहो युद्धमें प्रवृत्तहुये और उसवज्रके समान मकरव्यूहमेंप्रवेश कर के मृत्युदण्ड के समान प्रकाशित और घोर भीमसेनके बाणों से मैं महाव्याकुल और घायल होगयाहूं ।५। हे राजा उस क्रोधरूप भीम को देखके भय से मूर्च्छावान् होकर अबतक मैं शान्ती को नहीं पाता हूं हे सत्यसंकल्प मैं आपहीकी कृपा से पाण्डवोंको मारकर विजय पाना चाहताहूं इतनी बात के सुनतेही दुर्य्योधन को व्याकुल और क्रोधयुक्त देख

CHAPTER LXXXI

Sanjaya continued, "Then, O king, wounding one another, the warriors with blood stained bodies went to their respective camps And having rested during the night, they saluted one another and were seen again well decked with arms and armour. Then your son, plunged in grief said to Bhishm the grandfather whose body dropped blood —"The brave warriors of the Pandvas, armed with dreadful weapons, have in battle killed and cut our soldiers and banners and gained great fame, and having entered the impregnable crocodile array of our army, Bhimsen wounded me with his dreadful arrows shining like the staff of Death. 5 Having seen the angry form of Bhimsen, I fainted with terror and my mind is not yet composed. Observer of true vow! by your grace I hope to destroy the Pandavas and gain victory." Having heard these words and seeing Duryodhan

यत्नेन विगाह्य सेनां सर्वात्मनाहं तव राजपुत्र । इच्छामि दातुं विजयं सुखञ्च न चात्मानं छादये ह त्वदर्थे ॥ ८ ॥ एते तु रौद्रा बहवो महारथा यशस्विनः शूरतमाः कृतास्त्राः । ये पाण्डवानां समरे सहाया जितक्लमाः क्रोधविषं वमन्ति ॥ ९ ॥ ते नैव शक्याः सहसा विजेतुं वीर्य्योद्धताः कृतवैरास्त्वया च । अहं सेनां प्रतियोत्स्यामि राजन् सर्वात्मना जीवितं त्यज्य वीर ॥ १० ॥ रणे तवार्थाय महानुभाव न जीवितं रक्ष्यतमं ममाद्य । सर्वांस्तवार्थाय सदेवदैत्यान् लोकान् दहेयं किमु शत्रुसेनाम् ॥११॥ तान् पाण्डवान् योधयिष्यामि राजन् प्रियञ्च ते सर्वमहं करिष्ये । श्रुत्वैव चैतद्वचनं तदानीं दुर्योधनः प्रीतमना बभूव ॥ १२ ॥ सर्वाणि सैन्यानि ततः प्रहृष्टो निर्गच्छतेत्याह नृपांश्च सर्वान् । तदाज्ञया तानि विनिर्ययुद्रुतं गजाश्वपादातरथायुतानि ॥१३॥ प्रहर्षयुक्तानि तु तानि राजन् महान्ति नानायुधशस्त्रवन्ति स्थितानि नागाश्वपदातिमन्ति विरेजु

कर भीष्मजी हँसकर बोले, हे राजपुत्र मैं सर्वांग पूर्वक बड़े उपायों से सेना को मथकर विजय और सुखको देना चाहताहूं और मैं अपने शरीर को तेरेप्रयोजन के लिये किसी प्रकार से बचाता हूं, बहुतसे महारथी शूर और रुद्ररूप अस्त्रज्ञ परिश्रम से अखिन्न क्रोधरूप विष के उगलने वाले जो पांडवों के युद्ध में सहायक हैं वह बल में बड़े हैं उन्हीं के साथ तुमने शत्रुताकरी है वह युद्ध में एकाएकी विजय करने के योग्य नहीं हैं हे वीर राजा दुर्य्योधन मैंइस जीवनको त्याग करके सबप्रकारसे उनके साथ लड़ूंगा ॥१०॥ हेमहानुभाव अब युद्धमें तेरेप्रयोजन के लिये मैं अपने प्राणों की रक्षा करना योग्यनहीं समझताहूं अर्थात् अपनेप्राणोंकी रक्षानहींकरसक्ताहूं मैंतेरे निमित्त देवता और दैत्यों समेत सबलोकोंकोभी जीत सक्ताहूं तो इस स्थानपर तेरे शत्रुओं का जीतना कितनी बड़ी बात है हे दुर्य्योधन मैं पांडवों से लड़कर तेरे सब अभीष्टों को करूंगा इस बातको सुनकर दुर्योधन भीष्मजी से बहुत प्रसन्न हुआ, इसके अनन्तर उस प्रसन्न चित्तने सब सेनाओं समेत राजाओं से कहा कि चलो चलो हे धृतराष्ट्र

much enrag d and disturl ed in mind, Bhishm replied with a smile, "With all my heart, O Prince, I desire to destroy all the warriors and to gain victory and happiness For this purpose and for your sake I cared to live any how Many a brave warrior of dreadful form, adept in the science of weapons, vomitting forth the poison of anger, help the Pandavas in this war You have made enemies of very strong men who can not easily be conquered Careless of life, I shall fight against them Prince Duryodhan ' 10 I shall no longer spare my life in battle for your sake I can, for your sake, win all the worlds with the gods and the danavas, it is not so difficult to conquer your enemies here I shall fulfil all your desires by fighting against the Pandavas" Duryodhan was much pleased to hear this from Bhishm and the latter with a cheerful mind ordered the soldiers and the princes to march At his command, O Dhrit-

राजों तव राजन् बलानि ॥ १४ ॥ वृन्दैः स्थितश्चापि सुसम्प्रयुक्त स्वभादि दन्तिगणा समन्तात् । शस्त्रास्त्रविद्भिर्नरदेवयोधैरधिष्ठिता सैन्यगणास्त्वदीया ॥ १५ ॥ रथाश्व पादातगजाश्वसंघैः प्रयाद्भिराजौ विधिवत् प्रणुन्नैः । समुद्धतं चैरणपार्थिवर्णं रजो वभौच्छादयत् सूर्यरश्मीन् ॥ १६ ॥ रेजुः पताका रथदन्तिमस्था वातेरिता भ्राम्यमाणाः समन्तात् । नानारङ्गाः समरे तत्र राजन् मेघैर्युता विद्युत इव यथैव ॥ १७ ॥ धनूंषि विस्फारयतां नृपाणां वभूव शब्दस्तुमुलोऽतिघोरः । विमथ्यतो देवमहासुरौघैर्यथार्णवस्या दियुगे तदानीम् ॥ १८ ॥ तदुग्रनादं वहुरूपवर्णं तवात्मजानां समुदीर्णमेवम् । वभूव सैन्यं रिपुसैन्यहन्तृ युगान्तमेघौघ निभन्तदानीम् ॥ १९ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सप्तमयुद्धदिवसे एकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

उसकी आज्ञा पातेही रथ घोड़े हाथी और पैदलों की सब सेना शीघ्रही चलदी, हे तात फिर आपकी बड़ी सेना अति प्रसन्न होकर नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र धारण करके हाथी घोड़े पैदलों समेत संग्राम भूमि में नियत होकर शोभायमान हुई और हाथियों के समूह अच्छे प्रकार उचित स्थानोंमें नियत होकर चारों ओरसे प्रकाशित हुए और आपके अस्त्र शस्त्र वेत्ताओंके समूह नरदेव शूरवीरों से संयुक्त होकर अपने २ कर्मको करने लगे, फिर उन रथ घोड़े हाथी और पैदलों से उठी हुई धूल भी बड़ी उठी कि सूर्यभी ढकगये, हे राजा युद्ध में चारों ओरसे घूमते नाना रंगधारी रथ हाथी घोड़े और पदाती और इनके चढ़ने वाले अपनी २ सवारियों समेत ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बादलों से संयुक्त और वायु से पृथक् हुई बिजलियां आकाश में प्रकाशित होती हैं, फिर धनुष चढ़ाने वाले राजाओं के शब्द ऐसे बड़े कठोर और घोर हुए जैसे कि युगकी आदि में देवासुरों के हाथ से मथे हुए समुद्र के शब्दहुए थे, तब वह आप के पुत्रों की सेना भयकारी शब्दों से और शत्रुओं के मारने वाले अनेक रूपों से प्रलयकाल के बादलों के समानहोगई ॥१९॥

rashtra, all the armies of chariots, horses, elephants and foot soldiers marched for battle. Your large army armed with all sorts of weapons, marched cheerfully with the elephants, horses and foot soldiers into the field of battle. The elephants were arrayed in proper places all round and the parties of warriors and valliant soldiers engaged in doing their duties. 15. The dust raised by chariots, horses, elephants and footmen covered the sun. On all sides, roaming in the field of battle, the chariots, elephants and horses of various colour and their riders and the footmen looked glorious like lightning flashes detached from clouds. The sound of the bowstrings of the warriors was tremendous like that of the churning of the ocean by the gods and the asurs in the begining of creation. Then the armies of your sons with their dreadful noises and the slaughter of enemies looked like the clouds of pralaya." 19.

संजय उवाच । अथात्मजं तव पुनर्गाङ्गेयो ध्यानमास्थितम् । अभ्यभाषत्भरतश्रेष्ठः सम्प्र हर्षकरं वचः ॥ १ ॥ अहं द्रोणश्च शल्यश्च कृतवर्मा च सात्वतः । अश्वत्थामा विकर्णश्च भगदत्तोऽथसौबल. ॥ २ ॥ विन्दानुविन्दावावन्त्यौ वाह्लीक सह वाह्लिकै । त्रिगर्त राजोबलवान् मागधश्च सुदुर्जय. ॥ ३ ॥ बृहद्बलश्च कौशल्यश्चित्रसेनो विविंशतिः । रथाश्च बहुसाहस्रा शोभनाश्च महाध्वजा. ॥ ४ ॥ देशजाश्च हया राजन् स्वारूढा हय सादिभिः । गजेन्द्राश्च मदोद्वृत्ता प्रभिन्नकरटामुखा ॥५॥ पादाताश्च तथा शूरा नाना प्रहरणायुधा. । नानादेशसमुत्पन्नास्त्वदर्थे योद्धु मुद्यताः ॥ ६ ॥ एते चान्ये च बह वस्त्वदर्थे त्यक्तजीविताः । देवानपि रणे जेतुं समर्था इति मे मतिः ॥ ७ ॥ अवश्यं हिमया राजंस्तव वाच्य हितं सदा । अशक्या पाण्डवा जेतु देवैरपि सवासवैः ॥ ८ ॥ वासुदेवसहायाश्च महेन्द्रसम विक्रमा । सर्वथाहन्तु राजेन्द्र करिष्ये वचनन्तव

अध्याय ॥ ८२ ॥

संजय बोले कि हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ इसके पीछे भीष्मजी ध्यानमें नियत होकर फिर आपके पुत्रकी प्रसन्नता के बचन बोले कि मैं द्रोणाचार्य शल्य कृतवर्मा अश्वत्थामा सोमदत्त और सिन्धु देशियों समेत विन्द अनुवन्द अवन्ति देश के राजा बाह्लीकदेशी और बलवान् राजा त्रिगर्त और महादुर्जय राजा मगध, बृहद्बल कौशल्य चित्रसेन विविंशति और बड़ी ध्वजा वाले शोभायमान हजारों रथ और घुड़चढ़े समेत देशी घोड़े और मद से लाल नेत्र वाले मदोन्मत्त गजेन्द्र पदाती और नाना प्रकारके शस्त्रधारी शूरलोग भी नाना प्रकार के देशों में उत्पन्न होने वाले सब लोग तेरेही निमित्त युद्ध करने को तैयार हैं । ६ । इन के सिवाय और बहुत से लोग तेरे लिये जीवन के त्यागने वाले हैं बहुत से इन में देवताओं को भी युद्ध में विजय करने वाले हैं यह मेरा मत है परन्तु हे राजा मुझ को तेरेभियकारी वचन अवश्य कहने के योग्य हैं उनको भी सुनो कि इन्द्र समेत देवताओं से भी पांडवों का विजय करना असंभव है । ८ । क्योंकि वह वासुदेवजी को

CHAPTER LXXXII

Sanjaya continued —"Then, O best of the descendants of Bharat! Bhim thought for a while and spoke these words to cheer up your son:—"I, Dronacharya, Shalya Kritvarma, Ashwathama, Somdatta, Vind and Anuvind with the Somaks, the princes of Avanti, Vahliks, valliant king Trigart, the invincible king of Magadh, Vrihadval, Kosal Chitrasen, Vivinshati, thousands of bannered chariots of beautiful form, horsemen, mad elephants with red eyes, footmen and armed soldiers of different countries are ready to fight for you 6 Besides these there are others ready to lay down their lives for you and many of them can win even the gods in battle. This is my opinion, but I must give you some salutary advice. Hear it attentively:—Even the gods led by Indra cannot conquer the Pandavas, because they

॥ ९ ॥ पाण्डवांश्च रणे जेष्ये मां वा जेष्यन्ति पाण्डवाः । एवमुक्त्वा ददावस्मै विशल्यकरणीं शुभाम् ॥ १० ॥ ओषधीं वीर्य्यसम्पन्नां विशल्यश्चाभवत्तदा । ततः प्रभाते विमले स्वेन सैन्येन वीर्य्यवान् ॥ ११ ॥ अव्यूहत स्वयं व्यूहं भीष्मो व्यूह विशारदः । मण्डले मनुजश्रेष्ठो नानाशस्त्रसमाकुलम् ॥ १२ ॥ सम्पूर्ण योधमुख्यैश्च तथा दन्तिपदातिभिः । रथैरनेकसाहस्रैः समन्तात् परिवारितम् ॥ १३ ॥ अश्ववृन्दैर्महद्भिश्च ऋष्टितोमरधारिभिः । नागे नागे रथाः सप्त सप्त चाश्वा रथे रथे ॥ १४ ॥ अन्वश्वं दश धानुष्का धानुष्के दशचर्मिण. । एवं व्यूढं महाराज तव सैन्यं महारथैः ॥ १५ ॥ स्थितं रणाय महते भीष्मेण युधि पालितम् । दशाश्वानां सहस्राणि दन्तिनाञ्च तथैव च ॥ १६ ॥ रथनामयुतञ्चापि पुत्राश्च तव दंशिताः । चित्रसेना

सहायक रखनेवाले होकर महाइन्द्र के समान पराक्रमी हैं हे राजेन्द्र मैं सबप्रकार से तेरेवचनको करूंगा । ९ । पांडवों को युद्ध में विजय करूंगा अथवा पांडव मुझको विजय करेंगे इस प्रकार की बातें करके उसके निमित्त वह औषधियां जो घावको आनन्द करनेवाली और सामर्थ्य की बढ़ाने वालीथीं दीं उनके लगातेही वह घावों से रहित हुआ तदनन्तर बड़े प्रातःकाल उठकर शुद्धहो व्यूहकी रचना में बड़े कुशल भीष्मजी ने अपनी सेनाके व्यूहको आप तैयार किया फिर उसनरोत्तम ने अपनी सेनाके मंडलको शस्त्रों से अलंकृत किया, और उत्तम शूरवीर हाथी और पैदलों से भराहुआ हजारों रथों से चारों ओरको घिराहुआ दुधारे खड्ग तोमर धारण करने वाले सवारों से व्याप्त एक २ हाथी के साथ सात २ रथी और प्रत्येक रथके साथ सात २ घोड़े और घोड़े २ के पीछे दश २ धनुषधारी और हरएक धनुष धारी के पीछे सात २ पदाती हुए हे महाराज आपकी सेना इस रीति से महारथियों से शोभायमान हुई युद्धमें भीष्मजी से रक्षित बड़े संग्राम के लिये नियत किये हुए दशहजार घोड़े और दशहजार हाथियों के समूहों के साथ आपके

have Vasudev for their ally and are themselves full of prowess like *Indra*. *I shall do thy bidding, Prince, with all the means in my power.* Either I shall win the Pandavas or they shall conquer me." Having said these words he gave him medicines for the cure of wounds and for restoration of strength. His wounds were healed as soon as the medicines were applied to them Then having performed his morning ablutions, Bhishm, very clever in forming phalanxes, arrayed the armies and decorated the circle with weapons. 12. Full of brave warriors, elephants and foot men, surrounded by thousands of chariots and abounding in numerous horsemen armed with double-edged swords and tomars, that array had seven chariots for each elephant, seven horse for each chariot, ten archers following each horse and each archer followed by seven footmen. Thus, O king, your army became glorious with the warriors. Protected by Bhishm, ready for action with

द्यः शूरा अभ्यरक्षन् पितामहम् ॥ १७ ॥ रक्ष्यमाणस्ततैः शूरैर्गोप्यमानाश्च तेनते। सन्नद्धाः समदृश्यन्त राजनश्च महाबलाः ॥ १८ ॥ दुर्योधनस्तु समरे दंशितो रथमास्थितः। व्यराजत श्रिया जुष्टो यथा शक्रस्त्रिविष्टपे ॥ १९ ॥ तत शब्दो महानासीत् पुत्राणां तव भारत। रथघोषश्च विपुलो वादित्राणाञ्च निस्वनः ॥ २० ॥ भीष्मेण धार्त्तराष्ट्राणां व्यूढः प्रत्यं मुखो युधि। मण्डल स महाव्यूहो दुर्भेद्योऽमिप्रघातनः ॥ २१ ॥ सर्वतः शुशुभे राजन् रणेऽरीणां दुरासदः। मण्डलन्तु समालोक्य व्यूहं परमदुर्जयम् ॥ २२ ॥ स्वयं युधिष्ठिरो राजा वज्रं व्यूहं मथाकरोत् । तथा व्यूढेष्वनीकेषु यथास्थानमवास्थिताः ॥ २३ ॥ रथिनः सादिनःसर्वे सिंहनादमथानदन्। बिभित्सवस्तता व्यूहं निर्ययुर्युद्धकाङ्क्षिणः ॥ २४ ॥ इतरेतरत शूराः सहसैन्याः प्रहारिण। भारद्वाजो ययौ मत्स्यं द्रौणिश्चापि शिखण्डिनम् ॥ २५ ॥ स्वयं

चित्रसेन आदि शूरवीरोंने पितामहको चारों ओर से रक्षित किया वह, भीष्मजी उन उन शूरोंसे रक्षित और शूर उनसे रक्षित हुए और महाबली राजालोगभी शस्त्र धारण किये युद्धको तैयार दृष्ट पड़े, फिरशस्त्रों से अलंकृत रथपर बैठाहुआ दुर्योधन भी शोभा से युक्त ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसा कि स्वर्ग में इन्द्र प्रकाशमानहोता है इस के पीछे हे भरतर्षभ आपके पुत्रों के महाशब्द हुए और रथ और रथांगों के भी घोर शब्दहुए।२०। फिर वह धृतराष्ट्र के पुत्रों का व्यूह भीष्मजी का रचा हुआ अतिदुर्जय मंडलरूपवनाहुआ पश्चिमकी ओरको चला, हे राजा शत्रुओं से दुर्जय होनेवाला वह व्यूह सबओरसे शोभित हुआ फिर उस मंडलवाले भयानक व्यूह को देखकर राजा युधिष्ठिरने अपने हाथों से अपनी सेना के वज्रव्यूहको तैयार किया इस रीतिसे सेनाओंके तैयार होनेपर सबरथी पदाती आदि अपने २ स्थानों पर नियत होकर सिंहनाद करने लगे इसके पीछे व्यूहके तोड़ने को युद्धाभिलाषी पराक्रमी शूरवीर लोग एक दूसरे के सम्मुख गये, द्रोणाचार्य्य जी राजा मत्स्यके

a myriad of horse and elephants, your brave sons, Chitrasen and others, protected the grandfather on all sides. 17. And protected by those warriors was Bhishm who himself protected him. The brave princes, armed with weapons were ready to fight Duryodhan mounted on his chariot and armed with weapons looked glorious like Indra in heaven. Then, O best of Bharats, there was a tremendous noise made by your sons 20 The chariots and their parts too, made a loud noise. The array of the sons of Dhritrashtra, formed by Bhishm, made invincible in a circular form, moved towards the west. Indefatigable by enemies, that array was beautiful to look at from all sides Seeing that array of formidable appearance, Yudhishthir himself arrayed the army in the form of vajra. When the armies were thus prepared, all the charioteers, footmen and others, stationed on their seats, uttered war cries. Intent on breaking the arrays and desirous of fighting, valliant men

दुर्य्योधनो राजा पार्षत समुपाद्रवत् । नकुल सहदेवश्च मद्रराजानमीयतु ॥ २६ ॥ विन्दानु विन्दावावन्त्या विराचन्तमभिद्रुतौ । सर्वे नृपास्तु समरे धनञ्जयमयोधयन् ॥ २७ ॥ भीमसेनो रणे याव हार्दिक्य समवारयत् । चित्रसेन विकर्णञ्च तथा दुर्मर्षण विभु ॥ २८ ॥ आर्जुनि समरे राजस्तव पुत्रानयोधयत् । प्राग्ज्योतिषो महेष्वासो हैडिंब राक्षसोत्तमम् ॥ २९ ॥ अभिदुद्राव वेगेन मत्तो मत्तमिव द्विपम् । अलम्बुषस्तदा राजन् सात्यर्कि युद्ध दुर्मदम् ॥ ३० ॥ ससैन्य समरे क्रुद्धो राक्षस समुपाद्रवत् । भूरिश्रवा रणे यत्तो धृष्टकेतुमयोधयत् ॥ ३१ ॥ श्रुतायुष च राजान धर्मपुत्रं युधिष्ठिर । चेकितानश्च समरे कृपमेवान्वयोधयत् ॥ ३२ ॥ शेषा प्रति ययुर्यत्ता भीमसेन महारथम् । ततो राज समूहास्ते परिवव्रुर्धनञ्जयम् ॥३३। शक्तितोमरनाराच

सम्मुख गये अश्वत्थ मा शिखण्डीके सम्मुखहुआ। २५ राजादुर्य्योधन आप धृष्टद्युम्नके सम्मुख दौडा और नकुल सहदेव राजा मद्रके सम्मुख गये, विन्द अनुविन्द अवन्ति के राजा लोगोंके और युधाम युके सम्मुख दौडे और सब राजालोग इकट्ठे होकर अर्जुन से लडनेको उपस्थितहुए फिर, सावधान और समर्थ सात्यकी ने युद्ध में भीमसेन को रोका, हे राजा अर्जुन, का समर्थ पुत्र अभिमन्यु , चित्रसेन विकर्ण और दुर्मर्षण नाम आपके तीनों पुत्रों से युद्ध करनेलगा फिर हिडम्बा का पुत्र राक्षसोत्तम घटोत्कच बडे वेगसे राजा प्राग्ज्योतिष के सम्मुख ऐसे दौडा जैसे कि मदोन्मत्त हाथी मदोन्मत्त हाथीपर दौडता है हे राजा युद्ध में महा क्रोधरूप अलम्बुष राक्षस सेना समेत युद्ध में महादुर्मद सात्यकी के सम्मुख दौडा और युद्ध में कुशल भूरिश्रवा धृष्टकेतुसे लडनेलगा ।३१। फिर धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने राजा श्रुतायुष से और चेकितान न कृपाचार्य से युद्धकरना प्रारम्भ किया, शेष बचेहुए राजा लोग महारथी भीमसेन के सम्मुख हुए, इसके पीछे हजारों राजाओं ने अर्जुनको घेरलिया उन सब राजाओं के हाथोंमें बरछी तोमर नाराचगदा और परिघइत्यादि

faced one another in battle Dronacharya attacked the king of Matsya and Ashwathama faced Shikhandi 25 Prince Duryodhan himself faced Dhrishtadyumn and Nakul and Sahadev faced the king of Madra Vind and Anuvind the princes of Avanti attacked Udhamanyu All the kings in a body prepared to fight against Arjun Valliant Satyaki with a collected mind checked Bhimsen. Abhimanyu the valliant son of Arjun fought against Chitrasen, Vikarn and Durmarshan your three sons. Hidimva's son, Ghatotkach the best of rakshasas rushed against the king of Pragjyotish like a mad elephant. Alamvush the rakshas of dreadful visage followed by a large army, faced valliant Satyaki and Bhurishrava clever in battle, fought with Dhrishtaketu Yudhishthir the son of Dharm fought with Shrutayush and Chekitan with Kripacharya The rest of the kings faced Bhim Then thousands of kings surrounded Arjun All those warriors were armed with spears tomars,

गदापरिंघ पाणय । अर्जुनोथ भृश क्रुद्धो वार्ष्णेयमिद मब्रवीत् ॥ ३४ ॥ पश्य माधव सैन्यानि धार्त्तराष्ट्रस्य संयुगे । व्यूढानि व्यूह विदुषा गाङ्गेयेन महात्मना ॥ ३५ ॥ युद्धाभिकामान् शूराश्च पश्य माधव दंशितान् । त्रिगर्तराजं सहित भ्रातृभि पश्य केशव ॥ ३६ ॥ अद्यैनान् नाश यिष्यामि पश्यतस्ते जनार्दन । य इमे मा यदुश्रेष्ठ योद्धु कामारणा जिरे ॥ ३७ ॥ एतदुक्त्वातुकौन्तेयो धनुर्ज्या मवमृज्यच । ववर्षशरवर्षाणि नराधिप गणान् प्रति ॥ ३८ ॥ ते पित परमेष्वासा शरवर्षैर पूरयन् । तडागं वारिधारा भिर्यथाप्रावृषि तो यदा ॥ ३९ ॥ हाहाकारो महातासीत्तव सैन्ये विशाम्पते । छाद्य मानौ रणे कृष्णौ शरैर्दृष्ट्वामहारणे ॥ ४० ॥ देवादेवर्षयश्चैव गन्धर्वाश्चसहोरगैः । विस्मय परम जग्मुर्दृष्ट्वा कृष्णौ तथा गतौ ॥ ४१ ॥ तत क्रुद्धोऽर्जुनोराजन् नैन्द्रमस्त्र मुदैरयत् । तत्राद्भुत मपश्याम विजयस्य पराक्रमम ॥ ४२ ॥ शस्त्रवृष्टि परैर्मुक्ता श

अनेक अस्त्र शस्त्र शोभायमान, थे उससमय अर्जुन अत्यन्त कोपित होकर श्री कृष्णजी से बोला कि, हे माधवजी व्यूहविद्या में कुशल महात्मा भीष्मजी से व्यूहित करी हुई दुर्योधन की सेनाको सग्राम भूमि में देखो ३५ और युद्धाभिलाषी शूरोंको कवच और शस्त्र धारण कियेहुए देखो और भाइयों समेत राजात्रिगर्त्तकोभी देखो हे जनार्दनजी अब आपके देखते हुए इन सबको मैं मारूंगा हे यादवेन्द्र जो यह सग्राम भूमि में मेरे मारने के लिये इच्छा कर रहेहैं, इतना कहकर अर्जुन ने अपने धनुषकी प्रत्यंचा को ठीककरके राजाओं के समूहों पर बाणोंकी वर्षाको वरसाया फिर उन बड़े २ धनुषधारियों नेभी उस अर्जुनको बाणोंकी वर्षा से ऐसा भरदिया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल तडागों को जलसे भरदेते हैं, हे राजा उस बडे सग्राम में दोनों कृष्ण अर्जुनको अत्यन्त बाणोंसे ढकाहुआ। ४० । देखकर आपकी सेनामें बड़ा हाहाकारहुआ देवता ऋषि गधर्व और महाउरगों ने इस प्रकार बाणों से ढकेहुए दोनों कृष्ण अर्जुन को देखकर बडा आश्चर्य्य किया, इसके पीछे हे राजा महाकोप युक्त अर्जुन ने इन्द्रास्त्रको प्रकट किया उस समय हमने अर्जुन के

arrows maces clubs and other weapons of sorts Arjun in great anger then said to Shree Krishn — Look at the array of Duryodhan formed by Bhishm the skilful in war, O Madhav ! 35 Look at the warriors armed with weapons and armour Look at the king of Trigart too I shall within sight of you, destroy all of those who are desirous of killing me. Having said this, Arjun twanged his bow and showered arrows at the kings. Those warrior princes too filled Arjun s chariot with arrows as clouds fill tanks with rain water 40 Seeing both Krishn and Arjun covered with the shower of arrows, there was a great cry raised from your armies. The gods, the rishis the gandharvas and the uragas wondered at the sight of Krishn and Arjun so covered with arrows Then, O king Arjun in great anger

महार्णवः ॥ ४६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सप्तमदिवसयुद्धारम्भे द्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

सञ्जय उवाच । तथा प्रवृत्ते संग्रामे निवृत्ते च सुशर्मणि । भग्नेषु चापि वीरेषु पाण्डवेन महात्मना ॥ १ ॥ क्षुभ्यमाणे बले तूर्णं सागरप्रतिमे तव । प्रत्युद्याते च गाङ्गेये त्वरितं विजयंप्रति ॥ २ ॥ दृष्ट्वा दुर्य्योधनो राजा रणे पार्थस्य विक्रमम् त्वर

अपूर्व पराक्रम को देखा, कि अपने बाणों के समूहों से शत्रुओं के छोड़े हुए अस्त्र समूहों को रोकदिया कोई मनुष्यभी शस्त्रों से घायल हुए विना नहीं रहा और हे धृतराष्ट्र हजारों राजा घोड़े हाथी और शूरवीर लोगोंको अर्जुन ने दो २ तीन ३ बाणों से पीड़ामान किया इसके पीछे वह अर्जुन से घायल हुए शन्तनु के पुत्र भीष्म जी के पास आये तब भीष्मजी इन अथाह जलमें डूबे हुओंके रक्तकहुए, हे महाराज वहांपर उन आनेवालों से आपकी सेना तिरे बिरे होकर ऐसे महा व्याकुल हुई जैसे कि वायु से महासमुद्र उथल पुथल होता है ४६ ॥

अध्याय ॥ ८३ ॥

संजय बोले कि इस रीति से युद्ध जारीहोने व राजा सुशर्मा के लौटने व महात्मा अर्जुन के हाथ से वीरों के अस्तव्यस्त होनेपर, और बड़ी शीघ्रता से समुद्र के समान आपकी सेना के व्याकुल होने व शीघ्रही अर्जुन के ऊपर भीष्मजी के चढ़ाई करने पर राजा दुर्य्योधन युद्धमें अर्जुन के पराक्रम को देखकर बड़ी शीघ्रता

discharged the weapon of Indra and we saw at that time the immense prowess of Arjun who checked the shower of enemy's arrows with his own. There was not a single man present who did not receive a wound. He wounded thousands of warriors, horses, elephants and princes with two or three arrows each. Those warriors wounded by Arjun's arrows, came to Bhishm, the son of Shantanu, who protected them from being drowned in that bottomless ocean. Then O king, your armies were dispersed by those comers as the ocean is agitated by the wind storm" 46.

CHAPTER LXXXIII

Sanjaya continued:—"When the battle was thus going on, Prince Susharma gave way; the army was being destroyed by Arjun and was dispersing like ocean waves; Bhishm attacked Arjun and on seeing the prowess of Arjun, Prince Duryodhan thus addressed the

माण समभ्येत्य सर्वास्तानब्रवीन्नृपान् ॥ ३ ॥ तेषान्तु प्रमुखे शूर सुशर्माणं महा
बलम् । मध्ये सर्वस्य सैन्यस्य भृश सहर्षयन् निव ॥ ४ ॥ एष भीष्मः शान्तनवो योद्धु
कामो धनञ्जयम् । सर्वात्मना कुरुश्रेष्ठस्त्यक्त्वा जीवितमात्मन ॥ ५ ॥ त प्रयान्त
रणेवीर सर्वं सैन्येन भारतम् । सयत्ता समर सर्वे पालयध्व पितामहम् ॥ ६ ॥ बाढ
मित्येवमुक्त्वातु तान्यनीकानि सर्वश । नरद्राणामहाराज समाजग्मु पितामहम् ॥ ७ ।
तत प्रयात सहसा भीष्म शान्तनवोर्ऽर्जुनम् । रणे भारतमायान्तमाससाद महाबल
॥ ८ ॥ महाश्वेताश्वयुक्तेन भीमवानरकेतुना । महता मेघनादेन रथेनातिविराजता
॥ ९ ॥ समरे सर्वसैन्यानामुपयान्त धनञ्जयम । अभवत्तुमुलोनादो भयाद्दृष्ट्वा किरीटि
नम् ॥ १० ॥ अभीषुहस्त कृष्णञ्च दृष्ट्वादित्यमिवापरम् । मध्यन्दिनगत सङ्ख्ये नशेकु
प्रतिवीक्षितुम् ॥ ११ ॥ तथा शान्तनव भीष्म श्वेताश्व श्वेतकार्मुकम् । नशेकु पाण्डवा

से सबराजाओं से मिलकर और इन्हीं लोगों के सम्मुख सब सेनाके मध्यमें महावली सुशर्मा को अत्यन्त प्रसन्न करताहुआ यह वचन बोला, कि यह कौरवों में श्रेष्ठ शन्तनु के पुत्र भीष्मजी अपने जीवनको त्यागकरके सर्वभावसे अर्जुन से युद्ध करना चाहतेहैं। तुमसब सावधान होकर सेनासमेत उनशत्रुओंपर चढाई करनेवाले भरतवंशी पितामहकी रक्षाकरो। फिर राजाओं की वह सब सेना उस के वचनको अंगीकार करके पितामहके पीछेचली, इसकेपीछे शन्तनुके पुत्र भीष्मजी अकस्मात् अर्जुन की ओरको चले और बडेश्वेत घोडों के कपिध्वजवाले घनके समान शब्दायमान महा उत्तम रथपरचढ़े सब सेनाके सम्मुख जातेहुए महाबली अर्जुनको पाया और अर्जुन को देखतेही भयसे कठोर शब्दहुए।१०। दिवसहीमें सूर्य के वर्तमानहोनेपर द्वितीय सूर्य के समान बागडोर हाथमें रखनेवाले श्रीकृष्णजी को देखकर उनके सम्मुख देखने को भी समर्थ नहींहुए, इसी प्रकार पाण्डव भी श्वेतघोडे और श्वेत धनुषधारी

assembly of princes and warriors, cheering brave Susharma with his words—"This best of the Kauravas, Bhishm the son of Shantanu is desirous of fighting against Arjun without caring for his life 5 You must carefully protect with your armies the grandfather of Bharat family who is fighting against the enemies." The assembly of kings and warriors in obedience to his commands, followed the grandfather. Then Bhishm the son of Shantanu rushed at once towards Arjun and found him mounted on the monkey bannered chariot, drawn by large white horses the rumbling of whose wheels was like thunder and which was followed by the whole army. The cries of fear were heard at the sight of Arjun 10 In the light of the sun, seeing Shri Krishn holding the reigns like the second sun, no one could look him in the face. The Pandavas too, could not face Bhishm the son of Shantanu coming like a rising sun. Thus the

ङ्कु श्वेतग्रहमिवोदितम् ॥१२॥ स सर्वत परिक्षितस्त्रिगर्तै सुमहात्मभि । भ्रातृभिःसह पुत्रैश्च तथान्यैश्चमहारथै, ॥१३॥ भारद्वाजस्तु समरे मत्स्य विव्याध पत्रिणा । ध्वजञ्चास्य शरेणाजौ धनुश्चैकेन चिच्छिदे ॥ १४ ॥ तदपास्य धनुश्छिन्न विराटो वाहिनीपति । अन्यदादत्त वेगेन धनुर्भारसह दृढम् ॥१५॥ शराश्चाशीविषाकारान् ज्वलितान् पन्नगानिव । द्रोण त्रिभिश्चविव्याध चतुर्भिश्चास्य वाजिन ॥ १६ ॥ ध्वजमेकेन विव्याध सारथिमस्य पञ्चभि । धनुरेकेणुणाविध्यत्तत्राक्रुध्यद्द्विजर्षभ ॥ १७ ॥ तस्य द्रोणो वधीदश्वान् शरैः सन्नतपर्वभिः । अष्टाभिर्भरतश्रेष्ठ सूतमेकेन पत्रिणा ॥ १८ ॥ स हताश्वादवप्लुत्य स्यन्दनाद्धतसारथि । आरुरोह रथ तूर्ण पुत्रस्य रथिनाम्वर. ॥ १९ ॥ ततस्तु तौ पितापुत्रौ भारद्वाज रथे स्थितौ । महता शरवर्षेण वारयामासतुर्बलात्

श्वेतग्रहके उदय समान शन्तनु के पुत्रभीष्मजी के देखने को समर्थ नहींहुए इसरीति से वह महात्मा भीष्म त्रिगर्त्त देशी भाइयों व आपके पुत्रों अथवा अन्य बड़े २ महारथियों से रक्षितहुए फिर द्रोणाचार्य्य ने युद्ध में बाणों से राजामत्स्यको पीड़ित किया और एक २ बाणने उसकी ध्वजाको और धनुष को काटा फिर वाहिनीपति विराटने उसटूटे धनुष को डालकर भारसहनेवाले दूसरे दृढ धनुष को बड़ी तीव्रता से हाथमें लिया।१५। और सर्पाकृति पन्नगनाम सर्पोंके समान ज्वलित बाणों को लेकर तीनबाणने द्रोणाचार्य्य को और चारबाणों से उनके घोड़ों को घायलकिया, एकसे ध्वजाको काटा और पांच से उनकेसारथीको व्यथित करके एक बाणसे धनुषको तोड़ा उसस्थानपर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य जीने बड़े क्रोधयुक्त होकर गुप्तग्रन्थी के आठबाणों से उसके घोड़ों को और बाणसे उसके सारथी को मारा, वह रथियों में श्रेष्ठ सारथी को मरा देख, मृतकघोड़ों के रथ से कूदकर शीघ्रही पुत्रके रथपर सवारहुआ फिर उसके पीछे रथपर नियत उनदोनों पितापुत्रों ने बलसे मारे बाणों के द्रोणाचार्य्य को रोका । २० । हे राजा इसके पीछे क्रोधरूप द्रोणाचार्य ने सर्प

great Bhishma was protected by the warriors of Trigart and other great archers together with your sons. Dronacharya wounded the king of Matsya with his arrows With one arrow he cut down his banner and with another his bow Virat the leader of armies put down the broken bow and speedily took up another capable of bearing great strain 15 And taking serpent like arrows, known as pannags, he wounded Dronacharya with three arrows and his horses with four With one arrow he cut down his banner and having wounded the driver with five more, he cut down his bow with one Then Dronacharya the best of Brahmans in great anger, killed his horses and driver with eight arrows Seeing the driver killed, he jumped down from the chariot of which the horses were slain and soon mounted his son's chariot. Then seated on the same chariot the, father and son checked Dronacharya with their strength 20 Then, O king, Dro

॥२०॥ भारद्वाजस्ततः क्रुद्धः शरमाशीविषोपमम् । चिक्षेप समरे तूर्णं शङ्खं प्रति जनेश्वर ॥ २१ ॥ सतस्य हृदयं भित्वा पीत्वा शोणितमाहवे । जगाम धरणीं बाणो लोहितार्द्रेचरच्छदः ॥२२॥ सपपात रणेतूर्णं भारद्वाजशराहतः । धनुस्त्यक्त्वाशरांश्चैव पितुरेव समीपत. ॥२३॥ हतं तमात्मजं दृष्ट्वा विराटः प्राद्रवद्भयात् । उत्सृज्य समरे द्रोणं व्यात्ताननमिवान्तकम् ॥ २४ ॥ भारद्वाजस्ततस्तूर्णं पाण्डवानां महाचमूम् । दारयामास समरे शतशोथ सहस्रशः ॥ २५ ॥ शिखंडीतु महाराज द्रौणिमासाद्य संयुगे । आजघान भ्रुवोर्मध्ये नाराचैस्त्रिभिराशुगैः ॥२६॥ स बभौ रथशार्दूलो ललाटे संस्थितैस्त्रिभिः । शिखरैः काञ्चनमयैर्मेरुस्त्रिभिरिवोच्छ्रितैः ॥२७॥ अश्वत्थामा ततः क्रुद्धो निमेषार्धात्शिखण्डिनः । ध्वजं सूतमथो राजंस्तुरगानायुधानिच ॥ २८॥ शरै र्बहुभिराच्छिद्य पातयामास संयुगे । स हताश्वाद्वप्लुत्य रथाद्वै रथिनाम्वरः ॥२९॥

के समान बाणको बड़ी शीघ्रता से शंख के ऊपर छोड़ा, वह बाण उसके हृदय में घुस उसके रुधिरको पानकर लालरंग लोहूमें भराहुआ पृथ्वी में गिरा, वह शंख द्रोणाचार्य के बाण से घायल पिताकेही सम्मुख धनुषबाणको त्याग कर गिरपड़ा फिर राजा विराट अपने पुत्रको मृतक देखकर और द्रोणाचार्य को मृत्युके समान समझकर बड़े भयमें उनको छोड़कर भागा, इसके पीछे द्रोणाचार्यने शीघ्रही पांडवोंकी हजारों बड़ी २ सेनाओं को हटाया । २५ । हे महाराज शिखण्डी ने भी बड़ी शीघ्रतासे अश्वत्थामा को पाकर तीव्रगामी तीन नाराचों से दोनों भृकुटी के मध्यभाग मस्तक को घायल किया, फिर वह नरोत्तम ललाटपर नियत हुए तीनों बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे ऊंचे सुवर्ण के तीन शिखरों से मेरु पर्वत शोभित होताहै, फिर क्रोध भरे अश्वत्थामा ने आधेही निमेष में शिखण्डी के सारथीरथ घोड़े शस्त्र और ध्वजा को अनेक बाणों से काटकर गिराया, फिर

nacharya in anger, discharged his serpent like arrows at Shankh. The arrow pierced through his breast and having come out on the other side and drunk his blood, fell down on the ground. Wounded by the arrow of Dronacharya, Shankh fell down dead within sight of his father, and his bow and arrows fell from his hand. King Virat finding his son dead and Dranacharya ready like Death to pounce upon, fled away in terror. Then Dronacharya soon dispersed thousands of the Pandav warriors. 25. Shikhandi too, in great haste, finding Ashwathama before him, wounded him with three arrows in the middle of the forehead. That best of men, with the three arrows standing on his forehead, looked glorious like mount Meru with its three golden peaks. Ashwathama in the excess of anger, cut down with his arrows the chariot driver, the chariot, horses, weapons and banner of Shikhandi. Then that best of charioteers, jumping down from his

खड्गमादाय सुचिरं विमलञ्च शरा वरम । श्येनवद्व्यचरत् क्रुद्ध शिखण्डी शत्रुतापन ॥ ३० ॥ सखड्गस्य महाराज चरतस्तस्य संयुगे । नान्तरं ददृशे द्रौणिस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ३१ ॥ तत शरसहस्राणि बहूनि भरतर्षभ । प्रेषयामास समरे द्रौणि परमकोपन ॥ ३२ ॥ तामापतन्तीं समरे शरवृष्टिं सुदारुणाम । असिना तीक्ष्णधारेण चिच्छेद बलिनांवर ॥ ३३ ॥ ततोस्यविमलं द्रौणि शतचन्द्र मनोरमम् । चर्माच्छिनदसिञ्चास्य खण्डयामास संयुगे ॥ ३४ ॥ शितैस्तु बहुशो राजन् तञ्च विव्याध पत्रिभिः । शिखण्डी तु तत खड्ग खण्डित तेन सायकै ॥ ३५ ॥ आविध्य व्यसृजत् तूर्णं ज्वलन्तमिव पन्नगम । तमापतन्त सहसा कालानलसमप्रभम् ॥ ३६ ॥ चिच्छेद समरे द्रौणिर्दर्शयन् पाणिलाघवम् । शिखण्डिनञ्च विव्याध शरैर्बहुभिरायसै ॥ ३७॥ शिखण्डी तु भृशं राजंस्ताड्यमान शितै शरै । आरुरोह रथं तूर्णं माधवस्य

रथियों में श्रेष्ठ मृतक घोड़ों के रथसे कूदकर अपने तीक्ष्ण खड्ग और ढालको लेकर बड़ा क्रोध में भरा हुआ सब सेना में बाजपक्षी के समान घूमा । ३० । हेराजा युद्ध में खड्ग लिये हुये उसशिखंडी को अश्वत्थामाने कोई अवकाश नहीं देखा यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ इसके पीछे महाक्रोध युक्त अश्वत्थामा ने हजारों बाणों की वर्षाकरी परन्तु उसमहापराक्रमी ने अपने खड्गसेही उन सब बाणों को काट डाला। फिर अश्वत्थामा ने इसकी सूर्य चन्द्रमावाली स्वच्छ ढालको काटकर खड्ग के भी खण्ड २ करडाले और बहुत से बाणों से उसको घायल किया फिर शिखण्डी ने उसके बाणों से कटेहुए खड्गको देखकर शीघ्रही-सर्प के समान महा ज्वलित खड्गको छोड़ा तब हस्तलाघवता दिखातेहुए अश्वत्थामाने उस वज्र और बिजली के समान शब्दायमान अकस्मात गिरतेहुए खड्गको युद्धमेंही काटडाला और बहुतसे लोहे के बाणों से शिखण्डी को घायल किया । ३७ । फिर तीव्र बाणों से अत्यन्त घायल शिखण्डी शीघ्रहीमहात्मा सात्यकी के रथपर सवार हुआ

chariot of which the horses were dead ran with his sword and shield throughout the army in great anger like a hawk 30 Ashwathama could not see Shikhandi staying at any place in the field of battle and this was a great wonder Then Ashwathama in great anger showered thousands of arrows, but that great warrior cut them all down with his sword alone Ashwathama then cut into pieces his shining shield bearing the sun and the moon, his sword too was broken and he himself was wounded by the arrows. Finding his sword cut down by the arrows Shikhandi flung away the sword venomous like a serpent Then showing the dexterity of his hand Ashwathama cut into pieces the sword falling with a noise like that of vajra or thunder, and with many other arrows he wounded Shikhandi 37 Much wounded by sharp arrows, Shikhandi mounted the chariot of Satyaki Brave

महात्मन ॥ ३८ ॥ सात्यकिश्चापिसक्रुद्धो राक्षस क्रूरमाहवे । अलम्बुष शरस्तीक्ष्णैर्विव्याध बलिनावर ॥३९॥ राक्षसेन्द्रस्ततस्तस्य धनुश्चिच्छेद भारत । अर्धचन्द्रेण समरे तञ्च विव्याध सायकैः ॥ ४० मायाञ्च राक्षसीं कृत्वा शरवर्षैरवाकिरत् । तत्राद्भुतमपश्याम शैनेयस्य पराक्रमम् ॥ ४१ ॥ असम्भ्रमस्तु समरे वध्यमानः शितैः शरैः । ऐन्द्रमस्त्रञ्च वार्ष्णेयो योजयामास भारत ॥ ४२ ॥ विजयाद्यदनुप्राप्त माधवेन यशस्विना । तदस्त्रमभस्मसात् कृत्वा मायान्तां राक्षसीं तदा ॥ ४३ ॥ अलम्बुष शरैरन्यैरभ्याकिरत सर्वत । पर्वत वारिधाराभि प्रावृषीव बलाहक ॥ ४४ ॥ तत्तथा पीडितं तेन माधवेन यशस्विना । प्रदुद्राव भयाद्रक्षस्त्यक्त्वा सात्यकिमाहवे ॥ ४५ ॥ ततजेय राक्षसेन्द्र सख्ये मघवताऽपि । शैनेय प्राणदज्जित्वा योधानातवपश्यताम् ४६ न्यहनत्तावकांश्चापि सात्यकि सत्य विक्रम । निशितैर्बहुभिर्बाणैस्ते द्रवन्त भया

फिर महाबली सात्यकी ने भी बडा क्रोध करके अपने घोर बाणों से उस पराक्रमी अलम्बुप राक्षस को घायल किया. फिर राक्षसाधिप अलम्बुप ने अपने अर्द्धचन्द्र नाम बाणों से उसके धनुषको काटकर बहुत से शायकों से उसको घायल किया । ४० । और राक्षसी मायाको करके बाणों की वर्षा से ढकदिया वहां हमने सात्यकी के अपूर्व पराक्रम को देखा, कि वह युद्ध में बडे तीक्ष्ण बाणों से घायल होकर भी व्याकुल नहीं हुआ है भरतबंशी सात्यकी ने उस ऐन्द्र अस्त्र का प्रयोग किया, जो कि महात्मा माधवजी और अर्जुन से मिलाथा उस अस्त्रसे सब राक्षसी माया को अत्यन्त नाश करके अपने घोर बाणों से अलम्बुप को इसरीति से ढक दिया जैसे कि वर्षाऋतु में बलाहकनाम बादल अपने जलों से पर्वत को ढकते हैं, उस यशस्वी सात्यकी से पीडित होकर वह राक्षस महाभयभीत होकर सात्यकी को त्यागकर भागगया । ४५ । सात्यकी आपके शूरवीरों के देखतेहुए उस राक्षसाधिपको जो कि इन्द्रसे भी विजयहोना कठिनथा जीतकर सिंहके समान

Satyaki too in great anger wounded valliant Alamvush the rakshas with his dreadful arrows Alamvush the prince of rakshases cut down with his half moon shaped arrows his bow and wounded him with his darts 40 He then covered him with arraws dicharged by the demonaic art There we saw the prowess of Satyaki who though wounded with many sharp arrows was not disheartened and discharged his Aindra weapon which he had got from the great Madhav and Arjun and having destroyed all the artfulness of the rakshas covered him with his arrows as clouds cover a mountain with their waters Wounded by the arrows of Satyaki the rakshas in great terror fled away leaving him there 45 Having concured the rakshas chief who could not easily be conquered even by Indra, Satyaki roared like a lion Then Satyaki wounded his sons too with sharp arrows and they too ran away in terror -In the meantime, Dhrishta-

हिताः ॥ ४७ ॥ तस्मिन्नेवकालेतु द्रुपदस्यात्मजो बली । धृष्टद्युम्नो महाराज पुत्र तव जनेश्वरम् ॥ ४८ ॥ छादयामास समरे शरैः सन्नतपर्वभिः । सच्छाद्यमानो विशिखैर्धृष्टद्युम्नेन मारत ॥ ४९ ॥ विव्यथे न च राजेन्द्र तव पुत्रो जनेश्वर । धृष्टद्युम्नञ्च समरे तूर्णं विव्याध पत्रिभिः ॥ ५० ॥ षष्ट्या च त्रिंशता चैव तदद्भुतमिवाभवत् । तस्य सेनापतिः क्रुद्धो धनुश्चिच्छेद मारिष ॥ ५१ ॥ हयांश्च चतुरः शीघ्रं निजघान महाबलः । शरैश्चैनं सुनिशितैः क्षिप्रं विव्याध सप्तभिः ॥ ५२ ॥ स हताश्वान्महाबाहुरवप्लुत्य रथाद्बली । पदातिरसिमुद्यम्य प्राद्रवत् पार्षतं प्रति ॥५३॥ शकुनिस्तं समभ्येत्य राजगृद्धी महाबल । राजानं सर्वलोकस्य रथमारोपयत् स्वकम् ॥५४॥ ततो नृपं पराजित्य पार्षतः परवीरहा । न्यहनत्तावकं सैन्यं वज्रपाणिरिवासुरान् ॥ ५५ ॥ कृतवर्मा रणे भीमं शरैराच्छन्महारथम् । प्रच्छादयामास च तं महामेघो रविं यथा ॥ ५६ ॥ ततः

गर्जा, फिर सत्य पराक्रमी सात्यकी ने आपके पुत्रों को भी बड़े तीक्ष्ण बाणों से घायल किया वह भी भयसे पीड़ितहोकर भागे हे महाराज उसी समय द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र दुर्योधन को, वहां गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से आच्छादित करदिया, हे राजेन्द्र धृष्टद्युम्न के बाणों से ढकाहुआभी दुर्योधन पीड़ामान नहीं हुआ और बड़ी शीघ्रतासे अपने बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल किया यह एक आश्चर्यसाहुआ हे राजा फिर उस क्रोधयुक्त सेनापति ने उसके धनुषको काटकर शीघ्रही चारों घोड़ों को मारा और सात तीक्ष्ण बाणों से उस को तत्क्षण घायल किया, वहमहाबाहु मृतक घोड़ों के रथमें कूदकर पैदल ही खड्ग को उठाकर धृष्टद्युम्न के ऊपर दौड़ा । ५३ । राज्य के लोभी महाबली शकुनीने समीप आकर राजा दुर्योधन को अपने रथपर सवार किया, इस के पीछे शत्रुहन्ता धृष्टद्युम्न ने राजा को विजय करके उसकी सेना को ऐसा मारा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र असुरों के समूहों को मारता है, कृतवर्मा ने महारथी भीमको युद्ध में मोहित करके बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बड़ा बादल सूर्य को ढक देता है, इसके पीछे शत्रु सन्तापी

dyumn the son of Drupad hid your son Duryodhan with his arrows *having hidden knots*, but the latter, being hidden by the arrows of Dhrishtadyumn, was not terrified and soon wounded him with his own. This was a wonderful deed. Then the enraged commander of armies cut down his bow and having killed his horses, wounded him with seven sharp arrows. The brave warrior jumped down from the chariot of which the horses were dead and rushed sword in hand towards Dhrishtadyumn 53. Brave Shakuni, desirous of kingdom advanced towards Duryodhan and mounted him on his own chariot. Then Dhrishtadyumn the destroyer of enemies, having defeated the king, killed and destroyed his armies as Indra the wielder of vajra destroys the asurs. Kritvarma, having made Bhim insensible in battle covered him with his arrows as clouds hide the sun. Then

प्रहस्य समरे भीमसेन परन्तप । प्रेषयामास संक्रुद्ध सायकान् कृतवर्मणे ॥ ५७ ॥ तैरर्धमानोति रथ सात्वत सत्यकोविद । नाकम्पत महाराज भीमं चार्छच्छितै शरैः ॥ ५८ ॥ तस्याश्वांश्चतुरो हत्वा भीमसेनो महारथ । सारथिं पातयामास सध्वजं सुपरिष्कृतम् ॥ ५९ ॥ शरैर्बहुविधैश्चैनमाचिनोत् परवीरहा । शकलीकृतसर्वाङ्गोहताश्व प्रत्य दृश्यत ॥ ६० ॥ हताश्वश्चततस्तूर्णं वृषकस्य रथं ययौ । स्यालस्य ते महाराज तव पुत्रस्य पश्यतः ॥ ६१ ॥ भीमसेनोपि संक्रुद्धस्तव सैन्यमुपाद्रवत् । निजघान च संक्रुद्धो दण्डपाणिरिवान्तक ॥ ६२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वैरथे त्र्यशीतोऽध्याय ॥ ८३ ॥

भीमसेन ने महाक्रोधित होकर अच्छे प्रकार हँसकर कृतवर्मा के ऊपर शायकों की वर्षा करी हे महाराज अति रथी कृतवर्मा उन भीमसेन के बाणों से घायल होकर कम्पायमान नहीं हुआ और फिर भीमसेन को तीक्ष्ण बाणों से घायल किया । ५८ । इसके पीछे महाबली भीमसेनने उसके चारों घोड़ों को मारकर सारथी और ध्वजायुक्त उसके उत्तम रथको भी गिराया, शत्रुहन्ताने फिर उस कृतवर्मा को भी अनेक बाणों से ढक दिया फिर वह महाघायल सब अंगों से शिथिल हुए पड़ा, हे महाराज फिर वह शीघ्रही आपके पुत्रको देखकर मृतक घोड़ों के रथ से कूदकर आपके वृषकनाम साले के रथपर गया, फिर महाक्रोधरूप होकर भीमसेन भी आप की सेना के ऊपर दौड़ा और मृत्यु के समान हाथ में दण्ड लेकर बड़े क्रोध में उसको मारा ६२ ॥

Bhimsen the terror of enemies in great anger, laughed loudly and showered his arrows, upon Kritvarma. Valliant Kritvarma, wounded by the arrows of Bhimsen was not shaken and again wounded him with his arrows 58 Then brave Bhim killed the four horses of his chariot and cut down the banner and the chariot That destroyer of enemies again hid him with more arrows and he was seen much wounded and tired. Then seeing your son, he jumped down from his chariot and mounted the chariot of Vrishak your brother in-law Then Bhimsen in great anger rushed upon your army and with the staff of Death in his hand destroyed it in great anger" 62



धृतराष्ट्र उवाच । बहूनि हि विचित्राणि द्वैरथानि स्मसञ्जय । पाण्डूनां मामकैः सार्धं मश्रौषं तव जल्पतः ॥ १ ॥ न चैव मामकं किंचित् दृष्ट शंससि सञ्जय । नित्यं पाण्डुसुतान् हृष्टानभग्नान्संप्रशंससि ॥ २ ॥ जीयमानान् विमनसो मानकान् विगतौजसः । वद से सयुगे सूत दिष्टमेतन्न सदायः ॥ ३ ॥ सञ्जय उवाच । यथाशक्ति यथोत्साह-युद्धे चेष्टन्ति तावकाः । दर्शयाना. पर शक्त्या पौरुष पुरुतर्षभ ॥ ४ ॥ गङ्गाया सुरनद्या वै स्वादुभूत्वा यथोदकम् । महोदधेर्गुणाभ्यासाल्लवणत्व निगच्छति ॥ ५ ॥ तथा तत् पौरुष राजस्तावकानां परंतप । प्राप्य पाण्डुसुतान् वीरान् व्यर्थं भवति संयुगे ॥ ६ ॥ घटमानान् यथाशक्ति कुर्वाणान् कर्म दुष्करम् । न दोषेण कुरुश्रेष्ठ कौरवान् गन्तुमर्हसि ॥ ७ ॥ तवापराधात् सुमहान् सपुत्रस्य विशाम्पते । पृथिव्याः प्रक्षयो घोरो यमराष्ट्रविवर्धन ॥ ८ ॥ आत्मदोषात् समुत्पन्न शोचितु नार्हसे नृप ।

अध्याय ८४ ॥

हे संजय मैने तेरे कहने से अपने पुत्रोंके साथ पांडवों के विचित्र १ युद्ध सुने, हे सूतपुत्र तू मेरी सेनाको कुछ प्रसन्न नहीं कहता है सदैव पांडवों को प्रसन्न चित्त और अजेय कहा करता है, और मेरे पुत्रों को युद्ध में पराजित व अनुत्साह-युक्त और घायल कहता है, निश्चय करके यही होनहार है, संजय बोले आपके पुरुषोत्तम बेटे युद्ध में बड़े पराक्रम से वीरता और पुरुषार्थ को दिखलाते बल साहस के अनुसार ऐसे युद्ध करतेहैं जैसे कि देवनदी गंगाजीका जल महास्वादिष्ट महा समुद्रके मिलजाने के प्रभाव से लवणताको प्राप्तहोताहै ।५। हे राजा इसी प्रकारसे आप के पुत्र भी महात्मा और वीर पांडवों के पुरुपार्थको पाकर निष्फल होते है, हे कौरवोत्तम सामर्थ्य के अनुसार उपाय कर्त्ता और कठिन साध्यकर्मों के करनेवाले आप अपने शूरवीरों को दोपके भागी करने को योग्य नहीं हो, हे राजा बेटेसमेत आपके अपराध से पृथ्वीभर का नाश अत्यन्ततासे यमराज के देशका वृद्धि कारक है, आप अपने दोपजन्य फल के शोचने के योग्य नहीं हो,

CHAPTER LXXXIV

"I have heard from thee, Sanjaya," said Dhritrashtra, "the wonderful account of the war of the Pandavas. Thou sayst, Sut, that my army is not cheerful While the Pandavas are represented as inconquerable and cheerful, my sons are spoken of as destitute of prowess, conquered and wounded Surely, it is sure to happen." Your sons, the best of men," replied Sanjaya, "fight bravely in battle and show their prowess to the best of their strength but the attempts of your sons become futile before the Pandavas as the sweet waters of the divine Ganges become salt in contact with the Ocean 5 You should not blame your sons who do hard work and try their best in doing their duty Through your fault and your son's the destruction of the world is sure to augment the region of Yamraj, and you should

न हि रक्षन्ति राजानं सर्वथात्रापि जीवितम् ॥ ९ ॥ युद्धे सुकृतिनां लोकानिच्छन्तो वसुधाधिपाः । चमूं विगाह्य युध्यन्ते नित्यं स्वर्गपरायणाः ॥ १० ॥ पूर्वाह्णे तु महाराज प्रावर्तत जनक्षयः । तन्त्वमेकमनाः भूत्वा शृणु देवासुरोपमम् ॥ ११ ॥ आवन्त्यौ तु महेष्वासौ महासेनौ महाबलौ । इरावन्तमभिप्रेक्ष्य समेयातां रणोत्कटौ ॥ १२ ॥ तेषां प्रवृत्ते युद्धं सुमहल्लोमहर्षणम् । इरावांस्तु सुसंक्रुद्धो भ्रातरौ देवरूपिणौ ॥ १३ ॥ विव्याध निशितैस्तूर्णं शरैः सन्नतपर्वभिः । तावेन प्रत्यविध्येतां समरे चित्रयोधिनौ ॥ १४ ॥ युध्यतां हि तथा राजन् विशेषो न व्यदृश्यत । यततां शत्रुनाशाय कृतप्रतिकृतैषिणाम् ॥ १५ ॥ इरावांस्तु ततो राजन्ननुविन्दस्य सायकैः । चतुर्भिश्चतुरो वाहाननयद्यमसादनम् ॥ १६ ॥ भल्लाभ्यां च सुतीक्ष्णाभ्यां धनुः केतुं च मारिष । चिच्छेद समरे राजंस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ १७ ॥ त्यक्त्वानुविन्दोऽथ रथं विन्दस्य रथमा

यहां सब राजालोग अपने जीवनकी रक्षा नहीं करते हैं, राजालोग युद्ध के द्वारा उत्तम औरपवित्र लोकों को चाहतेहैं और सदैव स्वर्गकोही उत्तम स्थान समझनेवाली सेनामें घुसकर युद्धको करतेहैं ।१०। हेराजा प्रातःकालके समय मनुष्योंका नाशहोना मारंभहुआ, उस देवता और असुरों के युद्ध समान महा संग्रामको आप एकाचित्त होकर मुझ से सुनो, बड़े धनुषधारी महात्मा और तेजस्वी लाल नेत्रवाले अवन्ति देश के राजा लोग इरावानको सम्मुख देखकर युद्धाभिलाषी हुए, और उनका रोमहर्षण महातुमुल युद्ध जारी हुआ फिर अत्यन्त क्रोधित होकर इरावानने देवतारूप दोनों भाइयों को, बड़ी शीघ्रता से गुप्त ग्रंथी वाले बाणों से घायल किया और उन दोनों नेभी अपूर्व्व युद्धकर के उसको घायल किया, इस के पीछे शत्रुके नाश के करने में उपाय करने वाले महारपर महार करनेकी इच्छा से युद्ध करनेवालोंकी मुख्यता देखने में नहीं आई ।१५। फिर इरावानने अपने चारशायकोंसे राजा अनुविन्दके चारों घोड़ों को मारकर अत्यन्त तीक्ष्ण भल्लों से धनुष और ध्वजाको काटा

not lament at the fruit of your own folly All the princes donot hold their lives dear for your sake They desire pure and holy regions through war and always regarding paradise as the most desirable place, they fight in the thickest of the battle.10 The destruction of the warriors began in the morning, O king. Hear attentively the account of that great war which was like that between the gods and asurs— The great archers, the princes of Avanti, with red eyes, seeing Iravan before them, desired to fight and the battle between them was very severe. Then in great anger, Irawan soon wounded the two brothers with his arrows having hidden knots and was himself wounded by them. Then those destroyers of enemies, wishing to discharge weapons at one another, could not show their skill in the hurry of the moment. 15. Iravan killed the four horses of Anuvind with four arrows and with very sharp darts cut down his banner and bow All this was wonderful.

स्थित ॥ धनुर्गृहीत्वा परमं भारसाधनमुत्तमम् ॥ १८ ॥ तावेकस्थौ रणे वीरावावन्त्यौ रथिनाम्वरौ । शरान् मुमुचतुस्तूर्णं मिरावतिमहात्मनि ॥ १९ ॥ ताभ्यां मुक्ता महावेगा शरा काञ्चनभूषणा । दिवाकरपथं प्राप्य च्छादयामासुरम्बरम् ॥ २० ॥ इरावांस्तु रणे क्रुद्धो भ्रातरौ तौ महारथौ । ववर्ष शरवर्षेण सारथिं चाप्यपातयत् । २१ ॥ तस्मिन्स्तुपतिते भूमौ गतसत्वेतु सारथौ । रथः प्रदुद्राव दिशः समुद्भ्रान्तहयस्तत ॥ २२ ॥ तौसजित्वा महाराज नागराजसुतासुत । पौरुषं ख्यापयंस्तूर्णंव्यधमत्तववाहिनीम् ॥२३॥ सा वध्यमाना समरे धार्त्तराष्ट्री महाचमू । वेगान् बहुविधांश्चक्रे विषं पीत्वेव मानव ॥ २४ ॥ हैडिम्बो राक्षसेन्द्रस्तु भगदत्त समाद्रवत् । रथेनादित्यवर्णेन सध्वजेन महाबल ॥ २५ ॥ तत प्राग्ज्योतिषो राजा नागराज समास्थित । यथा वज्रधरं पूर्वं संग्रा

यह भी आश्चर्यसा हुआ, फिर अनुविन्द वड़े दृढ़ और उत्तम धनुष को लेकर अपने रथको छोड़कर विन्द के रथपर नियत हुआ, वे दोनों महारथी एक रथपर बैठेहुए विन्द अनुविन्द ने बड़ी शीघ्रता से इरावान के ऊपर बाणों की वर्षाकरी, इन दोनों के सुवर्ण से शोभित छोड़े हुए तीक्ष्ण बाणोंने सूर्य्य के रथको पाकर आकाशको आच्छादित करदिया ।२०। फिर महारथी इरावान नेभी क्रोधयुक्त होकर उन दोनों भाई महारथियोंपर बाणों की वर्षाकरके उन के सारथी को गिराया, हे राजा उस सारथी के गिरने और मरनेपर वह रथ जिस के घोड़े भ्रान्ति में संयुक्तथे इधर उधरको भागा, हे महाराज उस नागराज के पौत्र ने उन दोनों को विजय करके पुरुषार्थ को प्रसिद्ध करतेहुए आपकी सेना को भी बड़ी शीघ्रतासे भस्मीभूत करदिया, दुर्य्योधनकी युद्ध में प्रवृत्त उस बड़ी सेनाने बहुतप्रकारके ऐसे २ वेगों को किया, जैसे कि विषपान करके मनुष्य किया करतेहैं, फिर राक्षसों का राजा महाबली घटोत्कच सूर्य्यवर्ण ध्वजाधारी रथमें चढ़कर भगदत्तके सम्मुख दौड़ा ।२५। इसके पीछे राजा प्राग्ज्योतिष गजेन्द्र पर ऐसे सवारहुआ जैसे कि पूर्वसमयमें दानवों के युद्ध में

Anuvind thereupon took up a large and hard bow, and leaving his own chariot seated himself on the chariot of Vind Both those warriors, Vind and Anuvind, seated on the same chariot poured a sharp shower of arrows over Iravan The gold decked arrows of those two warriors covered the sun on high 20 The valiant Iravan too in great anger, showered his arrows over those charioteers and killed the driver At the fall and death of the driver, the horses wandered hither and thither dragging the chariot, after them That grandson of the prince of nagas having conquered the two warriors, showed his prowess by destroying your armies as well The fighting warriors of Duryodhan made dreadful attacks like those who have drunk poison Then the prince of rakshases brave Ghatotkach, mounted on his bannered chariot bright like the sun, rushed upon Bhagatta. 25 The king of Pragjyotish mounted on his huge elephant looked like

मे तारकामये ॥ २६ ॥ तत्र देवा सगन्धर्वा ऋषयश्च समागता । विशेषं नरसं गिविवुर्हिडिम्बभगदत्तयोः ॥ २७ ॥ यथा सुरपति शक्रस्त्रासयामास दानवान् । तथैव समरे राजा द्रावयामास पाण्डवान् ॥ २८ ॥ तेन विद्राव्य माणास्ते पाण्डवा सर्वतो दिशम् । त्रातार नाध्यगच्छन्त स्वेष्वनीकेषु भारत ॥ २९ ॥ भैमसेनिं रथस्थन्तु तत्रापश्याम भारत । शेषा विमनसो भूत्वा प्राद्रवन्त महारथा ॥ ३० ॥ निवृत्तेषु पाण्डूना पुनः सैन्येषु भारत आसीन्निष्टानको घोरस्तत्र सैन्यस्य सयुगे ॥ ३१ ॥ घटोत्कचस्ततोराजन् भगदत्त महारणे । शरै प्रच्छादयामास मेरु गिरि मिवाम्बुदः ॥ ३२ ॥ निहत्य तान् शरान् राजा राक्षसस्य धनुश्च्युतान् । भैमसेनिं रणे तूर्णं सर्वं मर्म्म स्वताडयत् ॥३३॥ स ताड्यमानो बहुभि शरै सन्नत पर्वभि । न विव्यथे राक्षसेन्द्रो विघमान इवाचल ॥ ३४ । तस्य प्राग्ज्योतिष क्रुद्धस्तोमराश्च चतुर्दश । प्रेषयामास समरे तांश्चिच्छेद स

वज्रधारी इन्द्र ऐरावत हाथी पर सवार होताथा, उस स्थान में गंधर्वों समेत देवता और ऋषिलोग आये घटोत्कच ने भगदत्त की मुख्यता को नहीं जाना जैसे कि देवेन्द्र ने दानवों का भयभीत किया उसी प्रकार युद्ध में उस राजा ने पांडवोंको भगाया, हे भरतवंशी उस से भग येहुए उनपांडवों ने अपनी सेनामें जाकर सब दिशों में कोई अपना रक्षक नहीं पाया, हे भरतवंशी वहां मैंने अकेले भीमसेन के पुत्र घटोत्कच कोही रथपर नियत देखा और शेष महारथी अपने मनसे हार, २ कर इधर उधरको भागे ।३०। फिर पांडवोंकी सेनाके लौटनेपर युद्धमें आपकी सेनाका बड़ाघोर निष्ठानक हुआ, इस-के पीछे घटोत्कचने बाणोंसे भगदत्तको ऐसा ढकदिया जैसेकि बादल मेरु पर्वतको ढकदेते है राजा भगदत्तनेभी घटोत्कचके फेंके हुए बाणोंको काटकर अपने बाणोंसे उसके मर्मस्थलों को घायलकिया, वह घटोत्कच उन गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे एम पीडामान नहीहुआ जैसे कि घायल पर्व्वतपीड़ित नही होता, फिर उसक्रोध भरे राजाप्राग्ज्योतिष ने युद्धमें चौदह तोमर उसके ऊपर फेंके उनको घटोत्कचने

Indra riding on Airavat in the war of danavas Then the gods with the gandharvas and rishis came there Ghatotkach did not know the greatness of Bhagdatta who dispersed the Pandav armies as Indra had done the danavas The Pandavas terrified by the attacks of that kings could dot find a protector among their friends There I saw Bhim's son Ghatotkach alone seated on his chariot; the rest of the warriors ran away in terror in diffi'ent directions 30 Again on the return of the Pandava army there was a great slaughter of your armies, Ghatotkach covered Bhagdatta with his arrows as clouds do Meru Bhagdatta too, cut down the arrows of Ghatotkach and wounded him in vital parts, but the latter was not disturbed by those wounds and stood firm like a hill Then the enraged king of Pragjyotish discharged fourteen tomars at Ghatotkach who cut them all down 35 And having cut them down the brave prince of rakshases

राक्षस ॥ ३५ ॥ स तोमरांश्छित्त्वा महाबाहुस्तोमरान्निशितैः शरैः । भगदत्तञ्च विव्याध सप्त
त्या कंकपत्रिभिः ॥ ३६ ॥ ततः प्राग्ज्योतिषो राजा प्रहसन्निव भारत । तस्याश्वांश्चतुरः
संख्ये पातयामास सायकैः ॥ ३७ ॥ स हताश्वे रथे तिष्ठन् राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् । श
क्तिं चिक्षेप वेगेन प्राग्ज्योतिषगजं प्रति ॥ ३८ ॥ तामापतन्तीं सहसा हेमदण्डां सुवे
गिनीम् । त्रिधा चिच्छेद नृपतिः सा व्यकीर्यत मेदिनीम् ॥ ३९ ॥ शक्तिं विनिहतां दृष्ट्वा
हैडिम्बः प्राद्रवद्भयात् । यथेन्द्रस्य रणात् पूर्वं नमुचिर्दैत्यसत्तमः ॥ ४० ॥ तं विजित्य
रणे शूरं विक्रान्तं ख्यातपौरुषम् । अजेयं समरे वीरं यमेन वरुणेन च ॥ ४१ ॥
पाण्डवीं समरे सेनां सम्ममर्द सकुञ्जरः । यथा वनगजो राजन् मृद्नंश्चरति पद्मिनीम्
॥ ४२ ॥ मद्रेश्वरस्तु समरे यमाभ्यां समसज्जत । स्वस्रीयौ छादयाञ्चक्रे शरौघैः
पाण्डुनन्दनौ ॥ ४३ ॥ सहदेवस्तु समरे मातुलं दृश्य सङ्गतम् । अवारयच्छरौघेण

काया ।३५। फिर तोमरों को काटकर उस महाबाहु राक्षसाधिप ने कंकपत्रवाले सत्रह बाणों से भगदत्त को घायल किया फिर हे भरतर्षभ राजा भगदत्त ने भी शायकों से उसके चारों घोड़ोंको गिराया, तदनन्तर उस मृतक घोड़ोंके रथपर नियत प्रतापी घटोत्कचने बड़ वेगसे भगदत्त के हाथी पर बरछी को छोड़ा, राजा ने भी उससुनहरी अकस्मात् गिरती हुई तीक्ष्ण बरछीके तीन टुकड़े करदिये, घटोत्कच अपनी बरछीको टूटाहुआ देखकर भयसे ऐसा भागा जैसे कि पूर्वकाल में युद्ध भूमि से दैत्येन्द्र नमुचि इन्द्रके भयसे भागाथा।४०। हेराजा, उसने युद्धमें उसप्रसिद्ध पराक्रमी यमराज के समान अजेय शत्रुको विजय करके हाथीसमेत उसी युद्धके भीतर पांडवोंकी सेना को भी ऐसे मर्दन किया जैसे कि जंगली हाथी कुमुदिनियों को मर्दन करता हुआ चलता है, और युद्ध में नकुल और सहदेवके साथ भिड़ते हुए मद्रदेशके राजाने बाणों के समूहों से दोनों पांडुनन्दन अपने भानजों को आच्छादित कर दिया फिर सह

wounded his adversary with seventeen arrows fitted with vulture quills. Then O best of Bharats, Bhagdatta too, killed his four horses with his sharp arrows. Seated on the chariot of which the horses were dead, brave Ghatotkach swiftly discharged a spear at the elephant of Bhagdatta. The latter cut it down in three parts with his arrows. Seeing his spear cut down, Ghatotkach ran away in terror as Namuchi the prince of rakshases had run away from before Indra. 40
Having conquered the famous warrior and invincible enemy, he entered with his elephant in the midst of the Pandava army and destroyed it like an elephant crushing the lotus plants. Fighting with Nakul and Sahadev the king of Madra wounded the two sons of Pandu, his nephews. Sahadev seeing his maternal uncle before him, hid him with his arrows as clouds hide the sun. Hidden by those arrows, he was much pleased and loved them the more for the sake of their

मेघो यद्वद्दिवाकरम् ॥ ४४ ॥ छाद्यमानं शरौघेण हृष्टरूपतरोऽभवत् । तयोश्चाप्यभवत् प्रीतिरतुला मातृ कारणात् ॥ ४५ ॥ ततः प्रहस्य समरे नकुलस्य महारथः । अश्वांश्च चतुरो राजश्चतुर्भिः सायकोत्तमैः ॥ ४६ ॥ प्रेषयामास समरे यमस्य सदनप्रति । हताश्वात्तु रथात्तूर्णमवप्लुत्य महारथः ॥ ४७ ॥ आरुरोह ततो यानं भ्रातुरेव यशस्विनः । एकस्थौ तु रणे शूरौ दृढे विक्षिप्य कार्मुके ॥ ४८ ॥ मद्रराजरथं तूर्णं छादयामासतुः क्षणात् । स च्छाद्यमानो बहुभिः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ४९ ॥ स्वस्रीयाभ्यां नरव्याघ्रो नाकम्पत यथाचलः । प्रहसन्निव ताञ्चापि शरवृष्टिं जघान ह ॥ ५० ॥ सहदेवस्ततः क्रुद्धः शरमुद्गृह्य वीर्यवान् । मद्रराजमभिप्रेक्ष्य प्रेषयामास भारत ॥ ५१ ॥ स शरः प्रेषितस्तेन गरुडानिलवेगवान् । मद्रराजं विनिर्भिद्य निपपात महीतले ॥ ५२ ॥ स गाढविद्धो व्यथितो रथोपस्थे महारथः ।

देव ने युद्ध में सम्मुख हुए अपने मामा को देखकर बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल सूर्य को ढकदेते हैं, वह बाणों से ढकाहुआ अत्यन्त प्रसन्नरूप हुआ और माता के कारण से उन दोनोंकी अत्यन्त प्रीति हुई, हेराजा इसके पीछे उसमहारथी ने बहुत हँसकर युद्धमें चार उत्तम सायकोंसे नकुलके चारोंघोड़ोंको मारा ४८। फिर वहमहारथीभी शीघ्रही मृतक घोड़ेवाले रथसे कूदकर, अपने यशस्वी भाईकेरथपर सवार हुआ फिर एकरथपर सवार दोनों क्रोधयुक्त शूरभाइयोंने दृढधनुषों को खैंचकर क्षणमात्रमेंही राजामद्र के रथको बाणोंसे ढकादिया वह बाणों से आच्छादित होकर भी पर्वत के समान कंपायमान नहीं हुआ और हँसतेही उसने उन बाणों की वर्षा कोनाश किया, तदनन्तर पराक्रमी सहदेवने बड़े क्रोध से बाणको खैंचकर राजा मद्रके ऊपर फेंका ५०। उसका फेंका हुआ वह गरुड़समान बाण राजा मद्र को घायल करके पृथ्वीपर गिरा, फिर वह महा घायल पीड़ामान महारथी बड़ी दृढ़ता से रथ में बैठकर अचेत होगया उसका सूत उसको अचेत हुआ देखकर उस संग्राम भूमि से रथ के द्वारा दूर लेगया, धृतराष्ट्र के सबपुत्रोंने राजा मद्रके रथको फिरा हुआ

mother Then that warrior with a smile, killed the four horses of Nakul with four arrows 45 The latter jumped down from the chariot of which the horses were dead and mounted on the chariot of his brother Mounted on the same chariot, the two brave brothers drawing their hard bows, hid the chariot of the king of Madra with a shower of arrows, but in spite of that the king was not discomforted and with a smiling face he destroyed those arrows Then valliant Sahadev, drawing his bow ... ow which flew like ... the ground The bra ... the driver had to take him far away from the field of battle The sons of Dhritrashtra seeing the chariot of the King of Madra turn back

निपसाद महाराज कश्मलञ्च जगामह ॥ ५३ ॥ तं विसंज्ञं निपतितं सूतः सम्प्रेक्ष्य संयुगे । अपोवाह रथेनाजौ यमाभ्यामभिपीडितम् ॥ ५४ ॥ दृष्ट्वा मद्रेश्वररथं धार्तराष्ट्राः पराङ्मुखम् । सर्वेविमनसो भूत्वा नेदमस्तीत्यचिन्तयन् ॥ ५५ ॥ निर्जित्य मातुलं संख्ये माद्रीपुत्रौ महारथौ । दध्मतुर्मुदितौ शंखौ सिंहनादञ्च नेदतुः ॥५६ ॥ अभिदुद्रुवतुर्हृष्टौ तव सैन्यं विशाम्पते । यथा दैत्यचमूं राजन्निन्द्रोपेन्द्राविवामरौ ॥ ५७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वन्द्वयुद्धे चतुरशीतोऽध्यायः ८४ ॥

सञ्जयउवाच । ततो युधिष्ठिरो राजा मध्यंप्राप्ते दिवाकरे । श्रुतायुषमभिप्रेक्ष्य प्रेषयामास वाजिनः ॥१॥ अभ्यधावत्ततोराजा श्रुतायुषमरिन्दमम् । विनिघ्नन् सायकैस्तीक्ष्णैर्नवभिर्नतपर्वभिः ॥ २ ॥ स सम्वार्य्य रणे राजा प्रेषितान् धर्म्मसूनुना । शरान् सप्तमहे

देखकर बड़ी व्याकुलता से चिन्ताकरी और जाना कि वह नहीं है, माद्रीके दोनों महारथी पुत्रों ने युद्ध में अपने मामाको जीतकर शंखों को बजाके बड़े सिंह नाद से गर्जनाओं को किया और हे राजा वह दोनों बड़े प्रसन्न होकर आपकी सेना पर ऐसे दौड़े जैसे कि इन्द्र और विष्णु दोनों देवता दैत्यों की सेनापर दौड़ें ५७ ॥

अध्याय ८५ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे आकाश के मध्यगत सूर्य्य के आजाने पर राजा युधिष्ठिर ने श्रुतायुषको सम्मुख देखकर घोड़ों को चैतन्य किया और गुप्तग्रन्थी वाले नौसायकों से शत्रुजित श्रुतायुषको घायल करके उसके सम्मुख दौड़ा धनुषधारीने कोपित होकर युद्ध में बाणों को रोककर सात बाण युधिष्ठिर पर चलाये, वह बाण उस महात्मा के प्राणों को खोजकरते हुए उसके कवच को काटकर रुधिर को पीने

thought that he was no more. The sons of Madri blew loud blasts from their conchs at their conquest of the king and roared loud roars. And with cheerful minds they rushed upon your armies like Indra and Vishnu rushing upon the daityas in the war between the gods and the danavas. 57.

CAAPTER LXXXV

"When the sun had risen on the middle of the sky," said Sanjaya, "Prince Yudhishthir, seeing Shrutayush before him, moved his horses and with nine arrows having hidden knots wounded Shrutayush the destroyer of enemies and then rushed upon him. The great archer checked the arrows in a rage and discharged seven arrows at Yudhishthir. The arrows cutting through his armour

ध्वास. कौन्तेयाय समार्पयत् ॥३॥ ते तस्य कवच भित्वा पपु शोणितमाहवे । असूनिव विचिन्वन्तो देहे तस्य महात्मन ॥ ४ ॥ पाण्डवस्तु भृश क्रुद्धो विद्धस्तेन महात्मना । रणे वराहकर्णेन राजान हृद्यविध्यत ॥ ५ ॥ अथा परेण भल्लेन केतुं तस्य महात्मन । रथश्रेष्ठो रथात्तूर्णं भूमौ पार्थो न्यपातयत् ॥ ६ ॥ केतु निपतित दृष्ट्वा श्रुतायु सतु पार्थिव । पाण्डव विशिखैस्तीक्ष्णै राजन् निव्याध सप्तभि ॥७॥ तत क्रोधात् प्रजज्वाल धर्मपुत्रो युधिष्ठिर । यथा युगान्ते भूतानि दिधक्षु रिव पावक ॥ ८ ॥ क्रुद्धन्तु पाण्डव दृष्ट्वा देवगन्धर्वराक्षसा । प्रविव्यथुर्महाराज व्याकुल चाप्यभज्जगत् ॥ ९ ॥ सर्वेषाञ्चैव भूताना मिदमासी-मनोगतम् । त्रींल्लोकानद्य सक्रुद्धो नृपोऽय धक्ष्यतीति वै ॥ १० ॥ ऋषयश्चैव देवाश्च चक्रु स्वस्त्ययन महत् । लोकानां नृप शान्त्यर्थ क्रोधिते पाण्डवे तदा ॥११॥ स च क्रोधसमाविष्ट सृक्किणी परिसंलिहन् । दधारात्मवपु

लगे फिर उससे अत्यन्त घायलहुए युधिष्ठिर ने वराहकर्ण नाम बाणसे राजा के हृदय को घायल किया।५। फिर रथियों मे श्रेष्ठ युधिष्ठिरने दूसरे भल्लसे उस महात्मा की ध्वजाको शीघ्रही काटकर रथ से नीचे गिराया, उसके पीछे उसराजा श्रुतायुपने अपनी ध्वजाको गिराहुआ देखकर सातविशिखों से धर्मराजको घायल किया, इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ऐसा अत्यन्त क्रोधमें ज्वलित हुआ जैसे कि प्रलयकालकी अग्निदेदीप्त होती है, हेराजा देवतागंधर्व राक्षस युधिष्ठिर को क्रोधयुक्त देखकर पीड़ामान हुए और सब संसार कोभी व्याकुलता हुई और सब जीवों के चित्त में यह बात वर्त्तमान हुई कि अब यह राजा अत्यन्त क्रोध युक्तहोकर तीनों लोकों को भस्म करेदगा।१०। हे राजा तबतो युधिष्ठिरके अत्यन्त क्रोधितहोनेपर ऋषियों और देवताओंने लोकों की शान्ती के निमित्त बडी२ ईश्वरसे प्रार्थनाकरी, उस क्रोधमें भरेहोठों को चावतेहुए युधिष्ठिरने प्रलयकालके सूर्य के समान अपने भयानक रूपको धारण किया, तदनन्तर हे राजा वहां आपकी सब सेनाजीवनके विषय में निराश हुई,

pierced his body and drank his blood seeking for his life , Wounded with the arrows, Yudhishthir pierced the breast of the king with a sort of arrows known as hog's ear 5 and with another dart he cut down the banner from his chariot. Seeing his banner fallen down, Shrutayush wounded Dharmraj with seven sharp arrows The latter thereupon burnt with anger like the fire of pralaya. Seeing Yudhishthir subject to anger, the gods gandharvas and rakshases were much disturbed in their minds and the world shook with fear as if the king would burn the three worlds 10 The gods and rishis prayed God to appease the wrath of Yudhishthir, Biting his lips in anger, Prince Yudhishthir looked glorious like the sun and all your warriors became hopeless of their lives But the prince carefully checked his anger and cut asunder the large bow of Shrutayush near the

घोरं युगान्तादित्यसन्निभम् ॥ १२ ॥ ततः सैन्यानि सर्वाणि तावकानि विशाम्पते ।
निराशान्यभवंस्तत्र जीवितं प्रति भारत ॥ १३ ॥ स तु धैर्य्येण तं कोपं सन्निवार्य्य
महायशः । श्रुतायुषः प्रचिच्छेद मुष्टिदेशे महाधनुः ॥ १४ ॥ अथैनं छिन्नधन्वानं
नाराचेन स्तनान्तरे । निर्विभेद रणे राजा सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ १५ ॥ सत्वरं च रणे
राजन् तस्य वाहान्महात्मनः । निजघान शरैः क्षिप्रं सूतञ्च सुमहाबलः ॥१६॥ हताश्वंतु
रथं त्यक्त्वा दृष्ट्वा राज्ञोऽस्य पौरुषम् । विप्रदुद्राव वेगेन श्रुतायुः समरे तदा ॥ १७ ॥
तस्मिन्जिते महेष्वासे धर्म्मपुत्रेण संयुगे । दुर्य्योधनबलं राजन् सर्वमासीत् पराङ्मु-
खम् ॥ १८ ॥ एतत् कृत्वा महाराज धर्म्मपुत्रो युधिष्ठिरः । व्यात्ताननो यथा कालस्तव
सैन्य जघानह ॥१९॥ चेकितानस्तु वार्ष्णेयो गौतमं रथिनाम्वरम् । प्रेक्षतां सर्वसैन्या-
नां छादयामास सायकैः ॥ २० ॥ सन्निवार्य्य शरांस्तांस्तु कृपः शारद्वतो युधि । चेकि-

तब उस राजाने धैर्यता से उसक्रोधको अच्छी रीति से रोककर श्रुतायुषके बड़े धनुषको मूठपर से काटा, फिर राजा ने भी सब सेना के देखतेहुए इस टूटे धनुष वालेको अपने नाराच बाणों से छातीपर घायल किया ।१५। और इसी महात्मा ने शीघ्रता से उस महात्मा के घोड़ों को बाणों से मार कर सारथी को तत्क्षणही मार डाला, तब श्रुतायुष मृतकघोड़ों के रथ को त्यागकर राजा के पराक्रम को देखके बड़ी तीव्रता से संग्रामभूमि से भागा हे राजा उस युद्ध में धर्मपुत्र युधिष्ठिर से उस धनुषधारी के विजयहोने पर दुर्योधनकी सब सेना मुख मोड़गई, फिर धर्मराज ने यह कर्म करके अत्यन्त काल मृत्यु के समानहोकर आपकी सब सेना को मारा फिर वृष्णिवंशी चेकितान ने सब सेना के देखते रथियों में श्रेष्ठगौतम कृपाचार्य्य को शायकों से ढक दिया ।२०। और कृपाचार्य्यने उन बाणों को रोककर युद्ध में कुशलचेकितानको बाणों से घायल किया फिर उसशीघ्रताकरने वाले कृपाचार्य्यने दूसरे भल्लसे उसके धनुष को काट कर उसके सारथी को भी गिराया, इसके पीछे

handle, and within sight of all the armies the prince wounded him in the breast 15. and killed his horses and the driver with his arrows Leaving the chariot of which the horses were dead, Shrutayush fled from the field of battle at the sight of the king's prowess. In that battle, O king, on Yudhishthir the Jus 's conquering thrt archer, Duryodhan's army turned back and Dharmraj having done this deed of prowess, assumed a dreadful form like that of Death to destroy your armies. Then Chekitan of the Vrishni family within sight of all the warriors, hid Kripacharya the best Goutams with his arrows. 20. and the latter, having checked those arrows wounded Chekitan, skilful in battle, with his arrows. The dexterous Kripacharya having cut his bow with another arrow, killed his driver too, and having killed the horses and the driver, he also killed the rear

तान रणे यत्त राजन् विव्याध पञ्चभि ॥ २१ ॥ अथापरेण भल्लेन धनुश्चिच्छेद मारिष । सारथिञ्चास्य समरे क्षिप्रहस्तो न्यपातयत् ॥२२॥ हताश्वाद्रथात्तस्याद्राजन्नु भौ तौ पार्ष्णि सारथी । सोवप्लुत्य रथात्तूर्णं गदाजग्राह सात्वत ॥ २३ ॥ स तया वीरघातिन्या गदया गदिनाम्वर । गौतमस्य हयान् हत्वा सारथिञ्च न्यपातयत् ॥ २४ ॥ भूमिष्ठो गौतमस्तस्य शराश्चिक्षेप षोडश । शरास्ते सात्वत भित्वा प्राविशन् धरणितलम्। २५ ॥ चेकितानस्तत क्रुद्ध पुनश्चिक्षेप ता गदा। गौतमस्य वधाकाङ्क्षी वृत्रस्येव पुरन्दर ॥ २६ ॥ तामापतन्तीं विपुला मश्मगर्भा महागदाम्। शरैरनेकसाहस्रैर्वारयामास गौतम ॥ २७ ॥ चेकितानस्तत खड्ग कोशादुद्धृत्य भारत। लाघव परमास्थाय गौमत समुपाद्रवत् ॥ २८ ॥ गौतमोपि धनुस्त्यक्त्वा प्रगृह्यासि सुसयत वेगेन महता राजश्चेकितानमुपाद्रवत् ॥ २९ ॥ तावुभौ वलसम्पन्नौ निस्त्रिंशवरधारिणौ निस्त्रिंशाभ्या सुतीक्ष्णाभ्यामन्योन्य सलतक्षतु ॥ ३० ॥ निस्त्रिंशवेगाभिहतौ ततस्तौ

घोडोंको मार कर सारथी और पीछे के रक्षक को मारा फिर उसगदा मे कुशल यादव ने शीघ्रही रथसे कूदकर गदाको हाथमें लिया, और उस वीरोंकीमारनेवाली गदासे कृपाचार्य्य के घोड़ो को और सारथी को मारा, फिर पृथ्वी पर, वर्त्तमान कृपाचार्य्य ने सोलह बाणों को उसके ऊपर फेंका वह सब बाण, उस यादव को घायलकरके पृथ्वीपर गिरे।२५। फिर कृपाचार्य्यको मारनेकी इच्छा से महाक्रोधित चेकितान ने उस गदाको ऐसे फेंका जैसेकि इन्द्रने वृत्रासुर के ऊपर फेंकाथा फिर कृपाचार्य्य ने उस लोहेकी महा स्थूल गिरती हुई गदाको हजारों बाणों से रोका इसके पीछे चेकितान खड्ग को मियान से निकालकर बड़ी तीव्रतासे कृपाचार्य्य के समीप गया, फिरबड़े सावधान कृपाचार्य्य भी धनुषको छोडकर बड़ी तीव्रतासे चेकितानके पासगये, वहां उन दोनों महा पराक्रमी खड्ग धारियोंने तीक्ष्ण धारवाले खड्गों से परस्पर में घायल किया । ३० । फिर वह दोनों पुरुषोत्तम खड्गों के आघातो से घायल सवजीवों के निवासस्थान पृथ्वीपर गिरपड़े, और मूर्च्छा से

guard Then that Yadav, skilful in mace exercise jumped down from his chariot mace in hand and with that mace, the destroyer of enemies, he killed the horses and the driver of Kripacharya who discharged at him sixteen arrows and having wounded the Yadav, those arrows fell on the ground 25 Desiring to kill Kripacharya Chekitan much enraged hurled his mace at him as Indra had hurled his at Namuchi Kripacharya checked with thousands of arrows that iron macefalling with great velocity Then Chekitan drew out his sword from the scabbard and rushed upon Kripacharya Kripacharya carefully left his sword and went in haste to Chekitan and then the two warriors wounded each other with swords 30 Wounded with sword cuts the two warriors fell on earth the habitation of all living beings

पुरुषर्षभौ । धरणीसमनुप्राप्तौ सर्वभूतनिषेविताम ॥ ३१ ॥ मूर्च्छयाभिपरीताङ्गौ व्यायामेन तु मोहितौ । ततोऽभ्यधावद्वेगेन करकर्षः सुहृत्तया ॥ ३२ ॥ चेकितानं तथाभूतं दृष्ट्वा समरदुर्मदः । रथमारोपयच्चैनं सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ ३३ ॥ तथैव शकुनिः शूरः स्यालस्तव विशाम्पते । आरोपयद्रथं तूर्णं गौतमं रथिनाम्वरम ॥ ३४ ॥ सौमदत्तिं तथा क्रुद्धो धृष्टकेतुर्महाबलः । नवत्या सायकैः क्षिप्रं राजन् विव्याध वक्षसि ॥ ३५ ॥ सौमदत्ति रुरस्यैस्तैर्भृशं बाणैरशोभत । मध्यन्दिने महाराज रश्मिभिस्तपनो यथा ॥ ३६ ॥ भूरिश्रवास्तु समरे धृष्टकेतुं महारथम् । हतसूतहयं चक्रे विरथं सायकोत्तमैः ॥ ३७ ॥ विरथं तं समालोक्य हताश्वं हतसारथिम् । महता शरवर्षेण च्छादयामास संयुगे ॥ ३८ ॥ स तु तं रथमुत्सृज्य धृष्टकेतुर्महामनाः । आरुरोह ततो यानं शतानीकस्यमारिष ॥ ३९ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च राजन् दुर्मर्षणस्तथा । रथिनो हेमसन्नाहाः सौभद्रमभिदुद्रुवुः ॥ ४० ॥ अभिमन्योस्ततस्तैस्तु घोरं युद्ध मवर्त्तत । शरी

महा व्याकुल देह होकर बड़े परिश्रमसे अचेत होगये इसके पीछे करिकर्ष उस दशा में युक्त युद्ध में दुर्मद चेकितान को देखकर प्रीति के कारण बड़ी तीव्रता से सम्मुख दौड़ा और सेनाके देखतेहुए उसको रथपर सवार किया, इसी प्रकार हे राजा आप के साले शूरशकुनी ने उस रथियों में श्रेष्ठकृपाचार्य्य को भी शीघ्ररथपर सवारकिया इसी प्रकार से महाबली क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने नब्बे तीक्ष्ण बाणों से भूरिश्रवा को हृदयमें घायलकिया।३५। हेराजा भूरिश्रवा उन हृदयपर नियत बाणोंसे ऐसा अत्यन्त शोभित हुआ जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य्य अपनी किरणों से शोभित होता है, फिर भूरिश्रवा ने उत्तम शायकों से महारथी धृष्टकेतुके सारथी रथ घोड़ों को मार रथसे विरथकर दिया, फिर इसको युद्ध में रथहीन देखकर बाणों से ढक दिया हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर वह बड़ा साहसी धृष्टकेतु उस रथको छोड़कर शतानीक के रथपर सवार हुआ, इस के पीछे सुनहरी कवच धारण करने वाले चित्रसेन विकर्ण

and having swooned with great exertion they became insensible. Then Karikarsh, seeing Chekitan in that condition rushed to the spot out of affection for him and within sight of all the armies bore him on his chariot. In the same manner, O king, your brother-in-law brave Shakuni put brave Kripacharya soon on the chariot. In the same manner brave and enraged Dhrishtadyumn wounded Bhurishrava in the breast with ninety sharp arrows. 35. With the arrow standing on his breast, Bhurishrava looked as glorious as the midday sun with his rays. Bhurishrava then with his good arrows, having killed the chariot driver and horses of Dhrishtaketu, deprived him of the use of his chariot and finding him out of his chariot, he covered him with arrows. Then brave Dhrishtketu left this own chariot and mounted that of Shatanik. Sheathed in golden armour, Chitrasen, Vikarn

रस्य यथा राजन् वात पित्त कफैस्त्रिभि ॥ ४१ ॥ विरथांस्तवपुत्रांस्तु कृत्वा राजन् महाहवे । न जघान नरव्याघ्र. स्मरन् भीम वचस्तदा ॥ ४२ ॥ ततो राज्ञां बहुशतैर्गजा श्वरथयायिभि. । संवृतं समरे भीष्मं देवैरपि दुरासदम ॥ ४३ ॥ प्रयांतं शीघ्रमुद्दीक्ष्य परित्रातुं सुतास्तव । अभिमन्युं समुद्दिश्य बालमेकं महारथम ॥ ४४ ॥ वासुदेवमुवा चेदं कौन्तेयः श्वेतवाहन. । चोदयाश्वान् हृषीकेश यत्रैते बहुला रथा. ॥ ४५ ॥ एते हि बहव शूरा कृतास्त्रा युद्धदुर्मदा । यथा हन्युर्नन. सेनां तथा माधव चोदय ॥४६॥ एवमुक्तः स वार्ष्णेय. कौन्तेयेनामितौजसा । रथं श्वेतहयैर्युक्तं प्रेषयामास संयुगे ४७॥ निष्टानको महानासीत् तवसैन्यस्य मारिष । यदर्जुनो रणे क्रुद्ध संयातस्तावकान्प्रति ॥ ४८ ॥ समासाद्यतु कौन्तेयो राज्ञस्तान्भीष्मरक्षिण. । सुशर्माणमथो राजन् निदं वचन मब्रवीत् ॥ ४९ ॥ जाना मित्वा युधा श्रेष्ठ मत्यन्तं पूर्वं वैरिणम । अनयस्याद्य

दुर्मर्षण नाम तीनों रथी अभिमन्युके सम्मुख दौड़े ।४०। इसकेपीछे अभिमन्युसे और उन रथियों से ऐसा घोरयुद्ध मचा जैसे कि देह से और वात पित्त कफ इन तीनों से युद्ध होताहै, हे राजा फिर भीमसेन के वचन को स्मरण करते हुए उस नरोत्तम ने आपके पुत्रों को विरथ करके मारा नहीं तदनन्तर देवताओं से भी अजेय भीष्मजी बहुत से हाथी घोड़े और रथोंपर सवार हजारों राजाओं से आकर संयुक्त हुए इसप्रकार आपके पुत्रों की रक्षा के लिये बड़ी शीघ्रता से आते हुए भीष्मजी को, देखके और महारथी अभिमन्यु को अकेला देखकर श्वेत घोड़े के रथपर सवार अर्जुन वासुदेव जी से यह वचन बोला कि हे हृषीकेश घोड़ोंको तेज करिये और जहां यह बहुतसे रथहैं वहां चलिये ।४५। यह अस्त्रोंके जाननेवाले युद्धमें दुर्मद बड़े शूरवीर जैसे कि हमारी सेनाको नहीं मारें हे माधवजी उसी प्रकारसे आप घोड़ों को चलाइये, बड़े तेजस्वी अर्जुनके कहेहुए ऐसे वचनो को सुनकर श्रीकृष्ण जी ने उन्हीं श्वेत घोड़ों के द्वारा रथको संग्राम भूमि में पहुँचाया, हे राजा यह

---

and Durmarshan, the three great warriors rushed upon Abhimanyu,
40 and the battle amongst them was as dreadful at that of wind, bile and phlegm the, three humours of the body. And remembering the words of Bhimsen, that best of warriors made the chariots of your sons useless, but spared their life. Then Bhishm, inconquerable even by gods, joined them together with thousands of elephants, horse and charioteer princes. Thus seeing Bhishm in haste coming for the protection of your sons and finding Abhimanyu alone, Arjun, mounted on the chariot drawn by white horses, said to Vasudev. "Make the horses run swiftly and go to the place where these chariots are,
45 so that these great warriors skilful in the use of arms, may not destroy our armies. Make haste to reach there." Having heard the words of glorious Arjun, Shree Krishn drove the chariot into

सम्प्राप्त फलं पश्य सुदारुणम् ॥ ५० ॥ अद्य ते दर्शयिष्यामि पूर्वं प्रेतान् पितामहान् । एवं संजल्पतस्तस्य बीभत्सोः शत्रु घातिनः ॥ ५१ ॥ श्रुत्वापि परुषं वाक्यं सुशर्मा रथ यूथपः । न चैनमब्रवीत् किञ्चिच्छुभं वा यदि वाशुभम् ॥ ५२ ॥ अभिगम्यार्जुनं वीरं राजभिर्बहुभिर्वृतः । पुरस्तात् पृष्ठतश्चैव पार्श्वतश्चैव सर्वतः ॥ ५३ ॥ परिवार्यार्जुनं संख्ये तव पुत्रैर्महारथः । शरैः संछादयामास मेघैरिव दिवाकरम् ॥ ५४ ॥ ततः प्रवृत्तः सुमहान् संग्रामः शोणितोदकः । तावकानांच समरे पाण्डवानाञ्च भारत ॥ ५५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सुशर्मार्जुनसमागमे पञ्चाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥

आपकी सेना का बड़ा निष्ठानक हुआ जो युद्ध में क्रुद्ध अर्जुन आपके पुत्रों पर चढ़ाई करनेवाला हुआ, हे राजेन्द्र अर्जुन उन भीष्मजी के रक्षक राजाओं को प्राप्तहोकर राजा सुशर्मा से यह वचन बोला, कि मैं तुझ को शूरवीरों में अत्यन्त श्रेष्ठ और पहला शत्रु जानताहूं अब इस अन्याय से प्राप्तहुए भयानक फलको देखो ।५०। अब मैं तेरेमरेहुए पूर्वजोंसे तुझे मिलाऊंगा यह अर्जुन के वचन सुनकर महारथी सुशर्मा ने उसको अच्छा बुरा कोई उत्तर नहीं दिया, फिर बहुत राजाओं समेत आपके महारथी पुत्रों ने महा पराक्रमी अर्जुन के सम्मुख जाकर अर्जुन को चारोंओर से घेरकर बाणोंकी वर्षा से ऐसा आच्छादित करादिया जैसे कि बादल सूर्य को ढकलेतेहैं हे भरतर्षभ इसके पीछे आप के पुत्रों से और अर्जुनसे ऐसा महा भयानक युद्ध प्रारंभ हुआ कि जिसे में रुधिरों की नदी वह निकली ॥ ५५ ॥

-the field of battle. That enraged Arjun's attack upon your armies was very injurious to your cause. Having met the princes that guarded Bhishm, Arjun said to Susharma, "I know you to be the best of warriors and first among my enemies. See the result of this unjust war.50. I shall now send you to your deceased predecessors." Having heard these words of Arjun, Susharma returned him no reply, either good or bad. Then your brave sons with many princes surrounded Arjun on all sides and hid him with the shower of his arrows as the clouds hide the sun. The battle between your sons and Arjun was so fierce that a river of blood flowed on the field of battle." 55.



सञ्जय उवाच । सताड्यमानस्तु शरैर्धनञ्जयः पदाहतो नाग इवश्वसन्बली । बाणेन बाणेन महारथानां चिच्छेद चापानि रणे प्रसह्य ॥ १ ॥ सञ्छिद्य चापानि च तानि राज्ञां तेषां रणे वीर्यवतां क्षणेन । विव्याध बाणैर्युगपन्महात्मा निःशेषतां तेष्वथ मन्यमानः ॥ २ ॥ निपेतुराजौ रुधिरप्रदिग्धास्ते ताडिता शक्रसुतेन राजन् । विभिन्नगात्राः पतितोत्तमाङ्गा गतासवश्छिन्नतनुत्रकायाः ॥ ३ ॥ महीं गताः पार्थबलाभिभूता विचित्ररूपा युगपद्विनेशुः । दृष्ट्वा हतांस्तान्युधि राजपुत्रांस्त्रिगर्तराजः प्रययौ रथेन ॥ ४ ॥ तेषां रथानामथ पृष्ठगोपा द्वात्रिंशदन्येऽभ्यपतन्त पार्थम् । तथैव ते तं परिवार्य्य पार्थं प्रकृष्य चापानि महारवाणि ॥ ५ ॥ अवीवृषन् बाणमहौघवृष्ट्या यथा गिरिं तोयधरा जलौघैः । सम्पीड्यमानस्तु शरौघवृष्ट्या धनञ्जयस्तान् युधि जातरोषः ॥ ६ ॥ षष्ट्या शरैः संयति तैलधौतैर्जघान

अध्याय ८६ ॥

संजय बोले कि बाणों से घायल सर्पके समान श्वास लेने वाले महा पीड़ित बलवान अर्जुनने युद्धमें महा हठकरके एक २ बाणसे सब महारथियों के बाणों को और धनुषों को एक क्षणमें काटकर उस नाशकर्त्ता महात्मा अर्जुनने बाणों से सब को एकही समय में घायल किया हे राजा इन्द्रके पुत्र अर्जुन के हाथ से घायल वह राजालोग रुधिर में भरे अत्यन्त टूटे अंग शिर कटे मृतकहोके कवच पहरेहुए संग्राम भूमि में गिरपड़े, अर्जुन के पराक्रम से विचित्ररूप होकर सब महारथी एकसाथही नाशको प्राप्तहुए, युद्ध में उन राजकुमारों को मृतक देखकर राजा त्रिगर्त रथकी सवारी में चला, फिर उन रथियों के पीछे भी पीछे की रक्षाकरने वाले वीर अर्जुन के सम्मुख आये और अर्जुन को चारों ओर से घेरकर बड़े शब्दायमान धनुषों को चढ़ाके, हजारों बाणों की ऐसी वर्षा करने लगे जैसे कि जल समूह से बादल पहाड़पर वर्षाकरते हैं फिर बाणोंकी वर्षा से पीड़ित अर्जुन ने बड़े क्रोधयुक्त होकर उन पृष्ठ रक्षकों को भी युद्धके भीतर तेलसे सफा किये हुए बाणों से मारा फिर उस यशस्वी प्रसन्न चित्त अर्जुनने युद्ध में उन साठ रथियों को विजय

CHAPTER LXXXVI

Sanjaya continued —"Wounded by arrows, hissing like a serpent and exceedingly oppressed, brave Arjun, with great exertion in battle cut down the bows and arrows of all the warriors in an instant and wounded them all at the same time with his arrows. Wounded by Arjun the son of Indra, the princes fell down in the field of battle, bleeding out of their broken limbs, heads cut and armours pierced. With the wonderful prowess of Arjun, the warriors were annihilated in a moment. Seeing those princes slain in battle the king of Trigart proceeded in his chariot, and the rear guards too of those charioteers advanced to meet Arjun. They surrounded him on all sides and drawing their loud sounding bows showered over him thousands of arrows as clouds pour forth rain over mountains. Much

तानप्यथ पृष्ठगोपान् । रथं इचतांस्तानवजित्यसख्ये धनञ्जय प्रीतमना यशस्वी ॥७॥
अथात्वरद्भीष्मवधाय जिष्णुर्बलानि राजन् समरे निहत्य। त्रिगर्त्तराजो निहतान् समीक्ष्य
महात्मना तो नथ बन्धुवर्गान् ॥८। रणे पुरस्कृत्य नराधिपांस्तान् जगाम पार्थं त्वरितो
वधाय । अभिद्रुतं चास्त्रभृता वरिष्ठ धनञ्जय वीक्ष्य शिखण्डिमुख्या ॥ ९ ॥ अभ्युद्
युस्ते शितशस्त्रहस्ता रिरक्षिषन्तो रथमर्जुनस्य। पार्थोऽपि तानापततः समीक्ष्य त्रिगर्त्त
राज्ञा सहितान् नृवीरान् ॥ १० ॥ विध्वंस धित्वा समरे धनुष्मान् गाण्डीवमुक्तैर्निशितैः
पृषत्कै । भीष्मं यियासुर्युधि सन्ददर्श दुर्योधन सैन्धवादींश्च राज्ञः ॥११। आवारयिष्णून
भिवारयित्वा मुहूर्त्तमायोध्य बलेन वीर । उत्सृज्य राजानमनन्तवीर्यो जयद्रथादींश्च
नृपान्महौजा ॥ १२ ॥ ययौ ततो भीमबलो मनस्वी गाङ्गेयमाजौ शरचापपाणि ।
युधिष्ठिरश्चोग्रबलो महात्मा समाययौ त्वरितो जातकोप ॥ १३ ॥ मद्राधिप समभित्य-
[illegible]

कर युद्ध में राजाओं की सेनाओं को मार भीष्मजी के मारने के लिये शीघ्रता
करी, फिर राजा त्रिगर्त के हाथसे मरेहुए बांधवों के उन समूहों को देखकर
राजाओं को आगे करके अर्जुन के मारने के लिये बहुत शीघ्रगया, फिर शिखण्डी
आदि उस अस्त्र अर्जुन को सम्मुख गया हुआ जानकर बड़े तीव्र अस्त्रों को
हाथमें लिये बड़ी शीघ्रता से अर्जुनकी रक्षा के निमित्त उसके पास गये फिर उन
बड़े धनुषधारी अर्जुनने भी राजा त्रिगर्त के साथ आतेहुए उन नरोत्तम वीरोंको देखकर
गांडीव धनुषसे छोड़े हुए तीक्ष्ण पृषत्क बाणों से मारकर भीष्मजी की ओर जाते
हुए मार्ग में दुर्योधन और जयद्रथ आदि राजाओं को देखा ११ फिर वह वीर उन
रोकनेके इच्छावालों के सम्मुख होकर और एक मुहूर्त्त युद्ध करके बड़े पराक्रमी
राजा जयद्रथ आदि को छोड़ कर, हाथ में भयकारी धनुष लेकर भीष्मजीके
सम्मुखगया फिर भयकारी पराक्रम वाला युधिष्ठिर भी बड़े क्रोध में भरके उन के
सम्मुखगया, फिर वहअत्यन्त कीर्तिवान् अपने भाग में मिले हुए उस राजा मद्रको

afflicted and chagrined with the shower of their arrows, Arjun killed those rear guards too, with his well oiled arrows Then glorious Arjun with a cheerful mind, having conquered the sixty charioteers and destroyed the armies of princes hastened to slay Bhishm Seeing the parties of his relations, slain in battle by Arjun, the king of Trigart, preceded by kshatryas hastened to slay him Shikhandi and others seeing Arjun engaged in combat, hastened to help him with their weapons The great archer Arjun too seeing those warriors coming on with the king of Trigart, destroyed them with his sharp arrows shot from the Gandiv bow, and advancing again towards Bhishm, he saw Daryadhan, Jayadrath and other princes 11, He faced the warriors desirous of checking his advance and, fought for a while against them —Then leaving the great warriors, Jayadrath and

ज्य संख्ये स्वमागमासन्तमनन्तकीर्त्ति । सार्धं समाद्रीसुतभीमसेनैर्भीष्म ययौ शान्तनव रणाय ॥ १४ ॥ तै सम्प्रयुक्त स महारथाग्र्यैर्गङ्गासुत समर चित्रयोधी । न विव्यथे शान्तनवो महात्मा समागतं पाण्डुसुतै समस्तै ॥ १५ ॥ अथैत्य राजा युधि सत्यसन्धो जयद्रथोऽत्युग्रबलो मनस्वी । चिच्छेद चापानि महारथानां प्रसह्य तेषा धनुषा वरेण ॥ १६ ॥ युधिष्ठिर भीमसेन यमौ च पार्थं कृष्ण युधि सञ्जातकोप । दुर्योधन क्रोधविषो महात्मा जघान बाणैरनलप्रकाशै ॥ १७ ॥ कृपेण शल्येन शलेन चैव तथा विभो चित्रसेनेन चार्जौ । विद्धा शरैस्तेऽतिविवृद्धकोपैर्देवा यथा दैत्यगणै समेतै ॥ १८ ॥ छिन्नायुधं शान्तनवेन राजा शिखण्डिनं प्रेक्ष्य च जातकोप । अजात शत्रु समरे महात्मा शिखण्डिन क्रुद्ध उवाच वाक्यम् ॥ १९ ॥ उक्त्वा तथा त्व पितुर प्रतो मा मह हनिष्यामि महाव्रतन्तम् । भीष्म शरौघैर्विमलार्कवर्णै सत्य वदामीति

त्यागकरके नकुल सहदेव और भीमसेन को साथलिये भीष्मजी के सम्मुखगया युद्धमें अपूर्व्व पराक्रम दिखाने वाले गंगापुत्र शतनु के पुत्र भीष्मजी उनउत्तम महारथियों से संयुक्तहोकर सब पांडवों से, भिडे हुए भी पीडामान नहीं हुए ।१५। इस के पीछे भयानक बल साहसी सत्य संकल्प राजा जयद्रथने युद्धमें आकर उत्तम धनुष से उन महारथियों के धनुषों को काटा, और क्रोध युक्त शत्रुता रखनेवाले दुर्योधन ने अग्नि के समान प्रकाशमान बाणों से युधिष्ठिर भीमसेन नकुल और सहदेव समेत श्रीकृष्ण और अर्जुनको घायल किया हे समर्थ वह पांडव युद्धभूमि में उन महाक्रोध में भरेहुए कृपाचार्य शल्ल और शल्य व चित्रसेन के बाणों से ऐसे घायल किये गये जैसे कि दैत्यों के समूह से मिलेहुए देवता घायल होते हैं, फिर क्रोधयुक्त महात्मा युधिष्ठिर भीष्मजी के हाथसे टूटे अस्त्रवाले शिखण्डीको देखकर महाक्रोध युक्त शिखण्डीसे यह वचन बोला, कि तुमने अपने पिता के सम्मुख प्रतिज्ञा करके हमलोगों से कहाथा कि मैं निर्म्मल सूर्य्य रूपी बाणोंके समूहोंसे महाव्रत भीष्मजी को

others, he faced Bhim with the dreadful bow in his hand. Yudhishthir too, of dreadful prowess, faced them in great anger. Then leaving the king of Madra allotted to him he faced Bhishm in company with Nakul Sahdev and Bhim. The son of Ganga and Shantanu, of great prowess in war was not afflicted by his encounter with the Pandavas assisted as they were by so many warriors of note. Then king Jaydrath of dreadful prowess and courage and true of word, came into the field of battle and cut down their bows. And enraged Duryodhan of envious temper with his bright arrows like fire wounded Yudhishthir, Bhim, Nakul, Sahdev, Shree Krishn and Arjun. The Pandavas, O king were wounded in battle by the enraged Kripacharya Shal, Shalya and Chitrasen as the gods are by the hosts of Danavas. Seeing Shikhandi broken of weapons by Bhishm, Yudhishthir thus addressed him,—' You gave me your word in the presence of your father that

कृता प्रतिज्ञा ॥ २० ॥ त्वया न चैनां मफलां करोषि देवव्रतं यन्न निहंसि युद्धे । मिथ्याप्रतिज्ञो भव मात्रवीर रक्षस्व धर्मस्व कुलं यशश्च ॥ २१ ॥ प्रेक्षस्व भीष्मं युधि भीमवेगं सर्वांस्तपन्तं मम सैन्यसंघान् । शरौघजालैरतितिग्मवेगैः काल यथा कालकृतं क्षणेन ॥ २२ ॥ निकृत्तचापः समरेनपेक्षः पराजितः शान्तनवेन चाजौ । विहाय बन्धूनथ सोदरांश्च क्व यास्यसे नानुरूपं तवेदम् ॥ २३ ॥ दृष्ट्वाहि भीष्मं तमनन्तवीर्य्यं भग्नञ्च सैन्यं द्रवमाणमेवम् । भीतोसिनूनं द्रुपदस्य पुत्र तथा हि ते मुखवर्णोप्रहृष्टः ॥२४॥ अज्ञायमानेच धनञ्जयेपि महाहवे सम्प्रसक्ते नृवीरे । कथं हि भीष्मात् प्रथितः पृथिव्यां भयं त्वमद्य प्रकरोषि वीर ॥ २५ ॥ स धर्मराजस्य वचो निशम्य रूक्षाक्षरं विप्रलापानुबद्धम् । प्रत्यादेशं मन्यमानो महात्मा प्रतत्वरे भीष्मवधाय राजन् ॥ २६ ॥ तमापतन्तं महता जवेन शिखण्डिनं भीष्ममभिद्रवन्तम् । निवारयामास हि शल्य

मार्गणा ।२०।तुम अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करके क्यों नहीं भीष्मजीको मारते हो, हे नरोत्तम तुम असत्य प्रतिज्ञावाले मतहो धर्म्म यश और कुलकी रक्षा करो; तुम अत्यन्त तीव्र प्रकाशित बाणोंके समूहों से मेरी सेनाके सब यूथोंके संतप्त करनेवाले और युद्ध में भयंकारी रूप भीष्मको ऐसा देखो जैसे कि कालपुरुष क्षणभरमें सबकोमारे युद्ध में राजालोग भीष्मके हाथ से टूटे धनुषवाले हुए तुमको ऐसा उचित नहीं हैकि अपने सगे भाई और बान्धवों को छोड़कर जातेहो, यह बात तुम्हारे योग्य नहीं है हे द्रुपद के पुत्र तू उस अतुल पराक्रमी भीष्म को और इस छिन्न भिन्न भागी हुई सेना को देखकर अवश्य भयभीत है और तेरे मुखकी शोभा बिगड़ी हुई है, बड़े भारी युद्ध में चारों ओरसे जातेहुए अर्जुनके साथ भिड़े हुए नरवीर भीष्मको देखो हे वीर तू पृथ्वीपर विख्यात होकर क्यों भीष्मजी से शत्रुता करता है ।२५। हेराजा उस महात्माने धर्मराज के रूखे अनेक मर्म स्पर्श करने वाले वचनोंको सुनकर आज्ञाको मानकर भीष्मके मारने की शीघ्रता करी, उस समय बडे वेगसे भीष्मके सम्मुख आतेहुए शिखण्डीको शल्यने बड़े दुर्जयघोर अस्त्रोंमे रोका हेराजा महाइन्द्र के समान

"with your arrows bright like the sun you will destroy Bhishm of dreadful vows. Why do you not redeem your promise by slaying him ? Donot break your promise, best of men, protect Dharm Fame and family With your bright and sharp arrows you can destroy armies. Look at dreadful Bhishm as Death the destroyer of all The bows of the warriors are cut down by Bhishm Your leaving your brothers and relations is not worthy of you It is not worthy of you son of Drupad, that you seem frightened at the sight of dreadful Bhishm and the scattered army The glory of thy face is gone. Look at brave Bhishm engaged in fight with Arjun Being famous in the world, you call yourself Bhishm's enemy in vain" Hearing the taunts of Dharmraj, touching his vital parts he hastened to destroy Bhishm. Shalya checked the advance of Shikhandi against Bhishm,-

पनमस्त्रेण घोरेण सु दुर्ज्जयेन । २७ । स चापि दृष्ट्वा समुदीर्य्यमाणमस्त्र युगान्ताग्नि
समानकाशम् । न सम्मुमोह द्रुपदस्य पुत्रो राजन् महेन्द्रप्रतिमप्रभावः । २८ ॥ तस्यां च
शरौघैर्महाधनुष्मान् शरैस्तदस्त्र प्रतिबाधमानः । अथाददे वारुणमन्यदस्त्र शिखण्ड्यथोग्र
प्रतिघातमस्य ॥ २९ ॥ तदस्त्रमस्त्रेण विदार्य्यमाण यस्था सुरा ददृशु पार्थिवाश्च ।
भीष्मस्तु राजन् समरे महात्मा धनुश्चचिच्छेद ध्वजमेव चापि ॥ ३० ॥ छित्वानदत
पाण्डुसुतस्य वीरो युधिष्ठिरस्याजमीढस्य राज्ञ । तत समुत्सृज्य धनु सबाण युधि-
ष्ठिर वीक्ष्य भयाभिभूतम् । ३१। गदाप्रगृह्याभिपपात सख्ये जयद्रथ भीमसेन पदाति ।
तमापतन्त सहसा त्वन्न जयद्रथ सगद भीमसेनम । ३२ ॥ विव्याध घोरैर्यमदण्डक
ल्पै शितै शरै पञ्चशतै समन्तात् । अचिन्तयित्वा स शरांस्तरस्वी वृकोदर
क्रोधपरीतचेता । ३३ । जघान वाहान् समरे समन्तात्पारावतान् सिन्धुराजस्य
संख्ये । ततोभिवीक्ष्याप्रतिमप्रभावस्तवात्मजस्त्वरमाणो रथेन । ३४ । अभ्याययौ भीम

प्रभाववाला वह द्रुपद का पुत्र उस प्रलयाग्निके समान प्रकाशित अस्त्रको देखकर मोहित नहीं हुआ और बडे धनुष के बाणों से उस अस्त्रको नाशकरके उसी स्थान में नियतहुआ फिर शिखण्डी ने इस के नाश करनेवाले दूसरे वरुणास्त्रको लिया उस अस्त्रसे अस्त्रको रुकेहुए को स्वर्गवासी देवता और राजाओंने देखा । ३० । फिर उस महात्मा वीर भीष्मजी ने युद्ध में अजमीढ वंशी पाण्डव युधिष्ठिर के धनुषको जाकर ध्वजा समेत काटकर बडा शब्द किया इसके पीछे भीमसेन युधिष्ठिर को भयभीत देखकर बाणों समेत धनुषको छोडकर, गदा को हाथ में लिये पैदल ही संग्राम में जयद्रथ के सम्मुख आया, जयद्रथ ने गदाधारी भीमसेन को बडे वेग से आता हुआ देखकर यमराज के दण्ड के समान घोर नौ बाणों से चारोंओर घायल किया फिर क्रोध में पूर्ण भीमसेनने बाणो को कुछ न मानकर, राजा सिंधु के पारावत नाम सब घोडों को मारा फिर अतुल प्रभाव इन्द्र के समान अस्त्रधारी आपका पुत्र चित्रसेन बडी शीघ्रता से अपने रथ के द्वारा भीमसेन के

with his sharp arrows Drupad's son Shikhandi, of prowess like that of Indra was not frightened at the sight of his weapons bright like the fire of pralaya but stood firmly destroying his weapons with the arrows discharged from his huge bow Then Shikhandi drew out his Varunastra to destroy his weapons. The gods of heaven and the princes saw his weapons checked by the Varunastra 30 The great warrior Bhishm roared a tremendous roar after cutting asunder the jewelled bow and banner of Yudhishthir Finding Yudhishthir terrified, Bhimsen left his bow and arrows and with mace in his hand has turned on foot to destroy Jayadrath Seeing Bhimsen coming in haste with his mace Jayadrath with nine arrows dreadful like the staff of Yam wounded him from all sides Bhimsen in the excess of rage

सेनं नियन्तुं समुद्यतास्त्रो सुरराजकल्पः । भीमोऽप्यथैनं सहसा विनद्य प्रत्युद्ययौ गदया तर्जयानः ॥ ३५ ॥ समुद्यतां तां यमदण्डकल्पां दृष्ट्वा गदान्ते कुरवः समन्तात् । विहायसर्वे तव पुत्रमुग्रं पातं गदायाः परिहर्तुकामाः ॥ ३६ ॥ अपक्रान्तास्तुमुले संप्रमर्दे सुदारुणे भारत मोहनीये । अमूढचेतास्त्वथ चित्रसेनो महागदामापतन्तीं निरीक्ष्य ॥ ३७ ॥ रथंसमुत्सृज्य पदातिराजौ प्रगृह्य खड्गं विपुलश्च चर्म । अवप्लुतः

। प्राप्य रथं सुचित्र

। अप्सोऽवपद्वामिव

संप्रहृष्टाः । सर्वे

रथभङ्गे

षडशीतोऽध्यायः ॥ ८६ ॥

मारनेको सम्मुखगया तब भीमसेनभी खूब गजकर गदा से उसको रोकता हुआ सम्मुख गया॥३५॥ फिर वह कौरवलोग चहुं ओरको यमदण्ड के समान गदा उठाये भीमसेनको देखकर सब आपके पुत्रों को छोड़कर उस भयकारी गदा से बचने के लिये इच्छा करनेवाले हुए और उस बड़े भारी तुमुल युद्ध से दूर हटगये फिर चित्रसेन आतीहुई महाघोर गदा को देखकर रथको त्यागकर युद्धभूमि में पैदलही निर्मल खड्ग और ढाल को लेकर रथ से पृथ्वीपर ऐसे कूदा जैसे कि पर्वत के कोणसे सिंहकूदताहै यह गदा भी बड़े जड़ाऊ रथों को पाकर घोड़े और सारथी समेत रथको विध्वंस न करके पृथ्वीपर ऐसे गिरी जैसे कि आकाशसे गिराहुई बड़ी ज्वलित उल्का पृथ्वी को जाती है, आपके पुत्र और भाई अत्यन्त प्रसन्न उस बड़े आश्चर्य को देखकर एक साथही गर्जे और चारों ओर से सेनासमेत सबोंने उसकी प्रशंसा करी ॥ ४० ॥

took no care of the arrows and killed all the horses of the king of Sindh. Then your son Chitrasen of Indra like prowess and matchless strength faced Bhimsen. The latter with a loud roar faced him with his mace. 35. Then the Kauravas seeing him with his mace raised on high, left your sons and desirous of escaping the dreadful mace, fled away from the field of battle. And Chitrasen seeing that dreadful mace left his chariot and with his bright sword and shield jumped down from his chariot like a lion springing from the hill side. The mace meeting with the gem-bedecked chariot destroyed it together with the horses and driver and fell down on earth like lightning. All your sons roared cheerfully at the sight of that wonder and all the warriors praised his work." 40.

सञ्जय उवाच । विरथं तं समासाद्य चित्रसेनं यशस्विनम् । रथमारोपयामास विकर्णस्तनयस्तव ॥ १ ॥ तस्मिंस्तथा वर्त्तमाने तुमुले संकुले भृशम् । भीष्मः शान्तनवस्तूर्णं युधिष्ठिरमुपाद्रवत् ॥ २ ॥ ततः सरथनागाश्वाः समकम्पत सृञ्जयाः । मृत्योरास्यमनुप्राप्तं मेनिरे च युधिष्ठिरम् ॥ ३ ॥ युधिष्ठिरोऽपि कौरव्यो यमाभ्यां सहित प्रभुः । महेष्वासं नरव्याघ्रं भीष्मं शान्तनवं ययौ ॥ ४ ॥ ततः शरसहस्राणि प्रमुञ्चन् । पांडवो युधि । भीष्मं संछादयामास यथा मेघो दिवाकरम् ॥ ५ ॥ तेन सम्यक् प्रणीतानि शरजालानि मारिष । प्रतिजग्राह गाङ्गेयः शतशोऽथसहस्रशः ॥ ६ ॥ तथैव शरजालानि भीष्मेणास्तानि मारिष । आकाशे समदृश्यन्त खगमानां व्रजा इव ॥ ७ ॥ निमिषार्धेन कौन्तेयं भीष्म शान्तनवो युधि । अदृश्यं समरे चक्रे शरजालेन भागशः ॥ ८ ॥ ततो

अध्याय ८७ ॥

संजय बोले कि इस के अनन्तर आपके पुत्र विकर्ण ने उस विरथ और प्रसन्न चित्त चित्रसेन को पाकर रथपर सवार किया, इसरीति से उस अत्यन्त कठिन तुमुल युद्धके वर्त्तमान होने पर शांतनु के पुत्र भीष्मजी ने बड़ी शीघ्रता से युधिष्ठिर के सम्मुख दौड़े, उसके पीछे सृंजयनाम बड़े बलवान् क्षत्रियोंने. रथहाथी और घोड़ों समेत अत्यन्त कोपित होकर युधिष्ठिर को काल के मुखमें गया जाना फिर समर्थ धर्मराज युधिष्ठिर भी नकुल सहदेव दोनों अपने भाइयों समेत उस बड़े धनुषधारी नरोत्तम भीष्मजी के सम्मुख गया, इस के पीछे पांडवों ने हजारों बाणों से भीष्मको ऐसा ढक दिया जैसे कि सूर्य्य को बादल ढक देताहै ।५। फिर गांगेय भीष्मजी ने उस युधिष्ठिर के अच्छी रीति से छोड़े हुये. हजारों बाणों को अपने बाणों से रोक दिया हे राजा फिर इसी रीति से भीष्म केभी छोड़े हुए बाण आकाश में ऐसे दिखाई दिये जैसे कि पक्षियों के समूह उड़ते हैं इन भीष्मजी ने क्षणमात्र में ही युधिष्ठिर समेत उनके सब बाण समूहों को गुप्त कर दिया फिर

CHAPTER LXXXVII

"Your son Vikarn," continued Sanjaya, finding Chitrasen destitute of chariot with a cheerful mind, took him up on his own. Thus when the battle was raging furious, Bhishm the son of Shantanu rushed upon Yudhishthir, and the brave Srinjaya warriors with their chariots, elephants and horses, much enraged, knew Yudhishthir as if fallen in the jaws of Death. Powerful Dharmraj Yudhishthir too, followed by his two brothers Nakul and Sahadev faced the great archer Bhishm the be t of men. Then the Panadvas hid Bhim with thousands of arrows as clouds hide the sun. Bhishm the son Ganga, checked with his arrows those thousands of well discharged ones. In the same manner, the arrows discharged by Bhishm looked in the sky like the flights of birds and hid Yudhishthir and his arrows in a

युधिष्ठिरो राजा कौरव्यस्य महात्मन । नाराचंप्रेषयामास क्रुद्ध आशीविषोपमम् ।९॥ असंप्राप्तं ततस्तन्तु क्षुरप्रेण महारय । चिच्छेद समरे राजन् भीष्मस्तस्य धनुश्च्युतम् ॥ १० ॥ तन्तुच्छित्वा रणे भीष्मो नाराचंकालसम्मितम् । निजघ्ने कौरवेन्द्रस्यहयान् काञ्चनभूषणान् ॥ ११ ॥ हताश्वन्तु रथं त्यक्त्वा धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः । आरुरोहरथंतूर्ण नकुलस्यमहात्मनः ॥ १२ ॥ यमावपि हि संक्रुद्धः समासाद्य रणे तदा । शरैः सञ्छादयामास भीष्मः परपुरञ्जयः ॥ १३ ॥ तौ तु दृष्ट्वा महाराज भीष्मबाणप्रपीडितौ । जगाम परमां चिन्तां भीष्मस्य वधकांक्षया ॥ १४ ॥ ततो युधिष्ठिरो वश्यान् राज्ञस्तान् सम चोदयत् । भीष्मं शान्तनवं सर्वे निहनेतिसुहृद्गणान् ॥ १५ ॥ ततस्ते पार्थिवा सर्वे श्रुत्वा पार्थस्य भाषितम् । महता रथवंशेन परि वव्रः पितामहम् ॥ १६ ॥ स समन्तात् परि वृतः पितादेव व्रतस्तत्र । चिक्रीड धनुषा राजन् पातयानो महारथान् ॥ १७ ॥ तं

युधिष्ठिर ने महा क्रोधित होकर सर्प के समान नाराच भीष्मजी के ऊपर फेंके फिर वहां महारथी भीष्मजीने अपने क्षुमनाम बाण से उसके छोड़े हुए बाणों को बीचही में काटा । १० । उसकाल समान नाराचको काटकर भीष्मजी ने सुवर्ण भूषित युधिष्ठिर के घोड़ों को मारा, फिर युधिष्ठिर उस मृतक घोड़ों के रथको त्याग कर शीघ्रही महात्मा नकुल के रथपर सवार हुआ, फिर शत्रुपुर के विजयी भीष्म ने क्रोध युक्त दोनों नकुल सहदेव कोभी बाणों से आच्छादित कर दिया, फिर राजा युधिष्ठिर भीष्म के बाणों से अत्यन्त पीड़ित उनदोनों भाइयों को देखकर भीष्मजी के मारने की इच्छा से बड़े चिन्ता युक्त हुए, इस के पीछे युधिष्ठिर ने उन अपने आज्ञावर्ती राजाओं को और मित्र समूहों को सावधान किया और कहा कि इस युद्ध में भीष्मजी को मारो ।१५। फिर सब राजाओंने युधिष्ठिर के वचन को सुनकर बड़े रथ समूहों समेत पितामह को घेर लिया हे राजा चारों ओर से घिरे हुये आपके पिता देवव्रत भीष्म बाणों से महारथियों को गिराते हुए धनुषक्रीड़ा करनेवाले

moment. Yudhishthir in a rage discharged his sharp arrows like serpents at Bhishm, but the latter cut them down in the way with his sharp arrows. 10 And having cut down that fatal arrow Bhishm killed the gold bedecked horses. Leaving the chariot of which the horses were dead, Yudhishthir at once mounted that of Nakul. Then Bhishm the *conquerer of enemies*, in the excess of anger, hid both Nakul and Sahadev with his arrows. Seeing both his brothers much wounded with the arrows of Bhishm, Yudhishthir was plunged in thought, wishing to destroy him. Then he roused the princes and allies who obeyed his orders and told them to slay Bhishm. By Yudhishthir's orders all the kings surrounded the grandfather with their chariots on all sides. Surrounded on all sides, your father Devabrat played with his bow, destroying the warriors with his arrows. Roaming in the field of battle the Pandavas looked

चरन्त रणे पार्थो ददृशु कौरव युधि । मृगमध्य प्रविश्येव यथा सिंहशिशु वने ॥१८॥
तर्जयान रणे शूरान्त्रासयानश्च सायकै । दृष्वा त्रेसुर्महाराज सिंह मृगगणाइव १९॥
रणे भारतसिंहस्य ददृशु क्षत्रियागतिम् । अनवायुसहायस्य यथाकक्ष दिधक्षत ॥२०॥
शिरासि रथिना भीष्म पातयामास सयुगे । तालेभ्य परिपक्वानि फलानि कुशलो
नर ॥ २१ ॥ पतद्भिश्च महाराज शिरोभिर्धरणीतले । बभूव तुमुलः शब्द पतताम श्म
नामिव । २२ ॥ तस्मिन् सुतुमुले युद्धे वर्त्तमाने भयानके सर्वेषामेव सैन्यानामासी
द्व्यतिकरो महान् ॥ २३ ॥ भिन्नेषु तेषु व्यूहेषु क्षत्रियाइतरेतरम । एकमेक समाहूय
युद्धायैवावतस्थिरे ॥ २४ ॥ शिखण्डीतु समासाद्य भरताना पितामहम । अभिदुद्राव
वेगेन तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवित् ॥२५। अनादृत्य ततो भीष्मस्त शिखण्डिनमाहवे । प्रययौ
सृञ्जयान् क्रुद्ध स्त्रीत्व चिन्त्य शिखण्डिन ॥ २६ ॥ सृञ्जयास्तु ततो दृष्वाहृष्टभीष्म

होगये, संग्राम भूमि में घूमतेहुए भीष्मजी को पांडवों ने ऐसा देखा जैसे कि बड़े वन के मध्यमृगों में प्रवेश करके सिंह घूमता है, फिर युद्ध में शूरों को घुड़कते और वाणों से उड़ाते हुए भीष्मको देखकर सब पाडवी सेना ऐसी भयभीतहुई जैसे कि सिंह को देखकर मृगों के यूथ कंपित होते हैं, उस समय सब क्षत्रियों ने भीष्मजी की गतिको उस युद्धभूमि में ऐसा देखा मानों वायुका सखा अग्नि सूखेवन को जलारहा है, वहा भीष्म ने रथियों के शिरों को ऐस गिराया जैसे कि बुद्धिमान् मनुष्य ताल वृक्ष के पक्के फलों को गिराताहै, हे राजा पृथ्वी पर गिरते हुए शिरों के ऐसे बड़े कठिन शब्द हुए जैसे कि गिरतेहुए पत्थरों के शब्द होते है, उसमहा भयानक घोर युद्धके होनेपर सबसेना में बड़ा खेदउत्पन्न हुआ फिर उनव्यूहोंके टूटने पर क्षत्री लोग परस्पर में एकएक को बुलाकर युद्धके निमित्त सम्मुख नियत हुए, फिर शिखंडी भरतवंशियोंके पितामहको पाकर बड़े वेग से तिष्ठ २ वचनों को कहता हुआ सम्मुख दौड़ा इसके पीछे भीष्मजी उस शिखण्डी को तिरस्कार

on Bhishm like a lion roaming in a large forest in the midst of a flock of deer Then daunting the warriors in battle and killing them with his arrows Bhishm was the terror of the Pandav armies as a lion is of a flock of deer All the kshatryas looked upon his prowess in the field of battle as if he were Agni the friend of wind burning a dry forest 20 He felled the heads of men as a skilful man fells down the ripe fruits of a palm tree The heads of warriors fell down with a crash like that of falling stones All the warriors were much disturbed in mind by the fury of the attack. Then on the breaking through of the arrays, the warriors challenged one another and fought duels Then meeting the grandfather of the Bharats, Shikhandi hastened towards him with a cry of 'stay, stay' But disregarding him on account of his former womanhood, Bhishm turned towards the

महारणे । सिंहनादाश्च विविधाश्चक्रु शङ्खविमिश्रितान् ॥ २७ ॥ तत प्रववृते युद्ध व्यतिषक्तरथद्विपम् । पश्चिमां दिशमासाद्य स्थिते सवितरि प्रभो ॥ २८ ॥ धृष्टद्युम्नोऽथ पाञ्चाल्य सात्यकिश्च महारथ । पीडयन्तौ भृशं सैन्यं शक्तितोमरवृष्टिभि ॥ २९ ॥ शस्त्रैश्च बहुभीराजन् जघ्नतुस्तावकान्रणे । ते हन्यमाना समरे तावका भरतर्षभ ॥ ३० ॥ आर्य्यां युद्धे मतिं कृत्वा न त्यजन्ति स्म संयुगम् । यथोत्साहंतु समरे निजघ्नु स्तावकारणे ॥ ३१ ॥ तत्राक्रन्दो महानासीत्तावकानां महात्मनाम् । वध्यतां समरे राजन् पार्षतेन महात्मना ॥ ३२ ॥ तश्रुत्वा निनदं घोरं तावकानां महारथौ । विन्दानु विन्दावावन्त्यौ पार्षतं प्रत्युपस्थितौ ॥ ३३ ॥ तौतस्य तुरगान् हत्वा त्वरमाणौ महारथौ छादयामासतुरुभौ शरवर्षेण पार्षतम् ॥ ३४ ॥ अवप्लुत्याथ पाञ्चाल्यो रथात्तूर्णं महाबल । आरुरोह रथं तूर्णं सात्यकेस्तु महात्मन ॥ ३५ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा

करके उसके रोपने को विचारते हुए सृंजयों के सम्मुख गये फिर प्रसन्न चित्त सृंजय लोगों ने महारथी भीष्म को देखकर शंखके शब्दोंसमेत बड़े सिंहनादको किया ।२७। तदनन्तर भीष्मकी दिशामें नियत होकर सूर्य्य के वर्त्तमान होनेपर रथ हाथियों समेत युद्ध जारीहुआ हे राजा फिर बरछी तोमरों की वर्षा से सेनाको अत्यन्त पीड़ित करते हुए पांचालदेशी धृष्टद्युम्न और महारथी सात्यकी ने, अनेक प्रकारके बाणोंसे आपके शरीरोंको घायल किया परन्तु आपके उनघायल शूरोंने बड़ी बुद्धिमानी से युद्धभूमिको नहीं त्यागा और बड़े उत्साहसे लोगोंको मारा ।३१। हे राजा वहां महात्मा धृष्टद्युम्नके हाथसे घायलहुए आपके पुत्रों के बड़े शब्दहुए, फिर आपके पुत्रों के घोर शब्दों को सुनकर महारथी विन्द अनुविन्द और अवन्ति देश के राजा लोग सबमिलकर धृष्टद्युम्न के सम्मुख हुए, फिर उन शीघ्रता युक्तदोनों महारथियों ने उसके घोड़ोंको मारकर बाणों की वर्षा से धृष्टद्युम्न को ढकदिया, तब महाबली धृष्टद्युम्न शीघ्रही रथसे कूदकर बड़े महात्मा सात्यकी के रथपर चढ़गया ।३५। फिर वहां

Srinjaya who seeing the grandfather in their midst, cheerfully blew their conchs and uttered war cries 27 A fierce battle ensued when the sun was on the opposite side (West) Wounding the warriors with spears and tomars Dhrishtadyumn of Panchal and brave Satyaki discharged arrows at them, but your warriors in spite of wounds wisely remained firm on the field of battle and returned their blows with great courage 31 Wounded by the arrows of Dhrishtadyumna your sons uttered loud cries Vind and Anuvind the princes of Avanti hearing the loud cries hastened to encounter Dhrishtadyumn Those two brave warriors soon killed his horses and hid him with the shower of their arrows. The great warrior Dhrishtadyumn at once jumped down from his chariot and mounted that of Satyaki. Thereupon Yudhishthir with a large army rushed on to encounter the

महत्या सेनया वृतः । आवन्त्यौ समरे क्रुद्धावभ्ययात् स परन्तपौ ॥ ३६ ॥ तथैवतव पुत्रोपि सर्वोद्योगेन मारिष । विन्दानुविन्दौ समरे परिवार्यावतस्थिवान् ॥ ३७ ॥ अर्जुनश्चापि संक्रुद्धः क्षत्रियान् क्षत्रियर्षभः । अयोधयत संग्रामे वज्रपाणिरिवासुरान् ॥ ३८ ॥ द्रोणस्तु समरे क्रुद्धः पुत्रस्य प्रियकृत्तव व्यधमत् सर्वपाञ्चालांस्तूलराशिमिवानलः ॥ ३९ ॥ दुर्य्योधनपुरोगास्तु पुत्रास्तव विशाम्पते । परिवार्य्य रणे भीष्मं युयुधुः पाण्डवैः सह ॥ ४० ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा लोहितायति भास्करे । अब्रवीत् तावकान् सर्वांस्त्वरध्वमिति भारत ॥ ४१ ॥ युध्यतान्तु तथा तेषां कुर्वतां कर्म्म दुष्करम् । अस्तं गिरिमथारूढे अ प्रकाशति भास्करे ॥ ४२ ॥ प्रावर्त्तत नदी घोरा शोणितौघतरङ्गिणी । गोमायुगणसङ्कीर्णा क्षणेन क्षणदामुखे ॥ ४३ ॥ शिवाभिरशिवाभिश्च रुवद्भिर्भैरवंरवम् । घोरमायोधनं जज्ञे भूतसंघै समाकुलम् ॥ ४४ ॥ राक्षसाश्च पिशाचाश्च तथान्ये पिशिताशिनः । समन्ततो व्यदृश्यन्त शतशोथ सहस्रशः ॥ ४५ ॥ अर्जुनोथ

सेना समेत राजा युधिष्ठिर उन क्रोधयुक्त अवन्ति देशके राजाओं की ओर दौड़ा, और इसीप्रकार आपका पुत्रभी विन्द और अनुविन्द को रक्षित करके नियत हुआ ।३७। हे क्षत्रियोत्तम धृतराष्ट्र युद्धमे अर्जुन ने भी अत्यन्त कोपयुक्त होकर क्षत्रियों से ऐसा युद्ध किया जैसे कि असुरों से वज्रधारी इन्द्र ने कियाथा, फिर युद्ध में क्रुद्ध आपके पुत्रों के शुभचिन्तक द्रोणाचार्य्यने सबपांचालदेशियों को ऐसे नष्ट किया जैसे कि तृणराशिको अग्नि भस्म करदेता है, फिर आप के दुर्योधनादि पुत्र भीष्मजी को रक्षित करके पांडवोंसे युद्ध करने लगे ।४०। इस के पीछे सूर्य के अरुण होने पर राजा दुर्योधन आपके सब शूरवीरों से बोला कि शीघ्रता करो, फिर इसी प्रकार इनके लड़ते और कठिन कर्म करते हुए सूर्यके अस्तंगत होने पर रात्रि के प्रारंभमें भयानक रुधिरकी नदीवही जिसमें हजारों शृगाल वर्त्तमानथे और भूत समूहों से व्याप्त संग्राम भूमि चारोंओर को घूमते हुए अशुभ शृगालों से

prince of Avanti, while your sons stood firmly to protect them Arjun too much enraged, fought against those warriors, O king, as Indra the wielder of vajra had fought against the Daityas Dronacharya the well wisher of your sons angrily smote the Panchals as fire consumes a heap of straw Your sons, Duryodhan and others, fought against the Pandavas for the protection of Bhishm. 40 After this, when the sun had assumed a reddish hue, Prince Duryodhan ordered your warriors to make haste The battle continued, till at the close of the day there flowed a river of blood where thousands of jackals were to be seen The field of battle strewn over with dead bodies and the wandering of the ominous jackals was very dreadful to behold Thousands of rakshases, pishaches and carnivorous beings were to be seen on all sides. Having defeated the armies of Sushrama and other

सुशर्मादीन् राजन्यान् सपदानुगान् । विजित्य पृतनामध्ये ययौ स्वशिविरं प्रति ॥ ४६ ॥
युधिष्ठिरोपि कौरव्यो भ्रातृभिस्सहितस्तथा । ययौस्वशिविरं राजा निशायां सैनया
वृत. ॥ ४७ ॥ भीमसेनोपि राजेन्द्र दुर्य्योधनमुखान्रथान् । अवजित्य तत सङ्ख्ये
ययौस्वंशिविरम्प्रति ॥ ४८ ॥ दुर्य्योधनोपि नृपति. परिवार्य्य महारणे । भीष्मंशान्तनवं
तूर्णं प्रयात शिविरं प्रति ॥ ४९ ॥ द्रोणो द्रौणि कृप शल्य कृतवर्मा च सात्वत. ।
परिवार्य्य चमू सर्वां प्रययुः शिविरं प्रति ॥ ५० ॥ तथैव सात्यकी राजन् धृष्टद्युम्नश्च
पार्षत । परिवार्य्यरणे योधान्ययतुः शिविरं प्रति ॥ ५१ ॥ एवमेते महाराज तावका
पाण्डवै. सह । पर्य्यवर्त्तन्त सहिता निशाकाले परन्तप ॥ ५२ ॥ तत स्वशिविरं
गत्वा पाण्डवा कुरवस्तथा । न्यविशन्त महाराज पूजयन्त परस्परम् ॥ ५३ ॥ रक्षांकृत्वा
तत शूरा न्यस्य गुल्मान् यथाविधि । अपनीय च शल्यानि स्नात्वा च विविधैर्जलै.
॥ ५४ ॥ कृतस्वस्त्ययना सर्वे संस्तूयंतश्च बन्दिभि । गीतवादित्रशब्देन व्यक्रीडन्त

महाभयानक होगई और हजारों राक्षस पिशाच और अनेक मांसाहारी जीवभी चारों ओर के टूटपड़े इनके पीछे अर्जुन भी सुशर्मा आदि राजाओं को उन के साथियों समेत विजय कर के सेना में जाकर अपने डेरों को गये फिर युधिष्ठिर भी सेना समेत भाइयों को साथलिये रात्रि के समय अपने डेरेको गये, और भीमसेन भी दुर्य्योधनादि महारथी राजाओंको विजय करके अपने डेरोंको गये, दुर्य्योधन भी भीष्मजीको मध्यमें करके डेरेकोगया, और द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य अश्वत्थामा शल्य कृतवर्मा यादव यह सबसेनाको मध्य में करकेडेरोंको गये । ५० । इसीप्रकार सात्यकी और धृष्टद्युम्न वीरों को मथनकरके डेरों को गये हेमहाराज इस रीतिसे यह शत्रु सन्तापी आपके सबशूरवीर रात्रिके समान पाण्डवोंसहितलौटे, हेराजा इसरीति से पांडव और कौरव परस्पर प्रशंसा करते अपने २ डेरोंमें स्थितहुए, यह सब वीर अपनी रक्षाकरके और गुल्मनाम सेनाको बुद्धिके अनुसार देखकर और भालों समेत सफाई से स्नानकर ब्राह्मणों से आशीर्वादमांग वंदीजनोंसे प्रशंसितहो गतिवाद्यों

princes, Arjun returned to his own army and from there to his camp. Yudhishthir with his brothers and armies went to camp for the night, Bhimsen too, having conqured Duryodhan and other mighty princes went to camp Duryodhan with Bhishm in the middle went to camp. Dronacharya, Kripacharya, Ashwathama, Shalya and Kritvarma the yadav went to camp with their armies Satwiki and Dhrishtadyumn, having killed may warriors went to camp Thus O king, your foe shriking warriors and the Pandavas returned with the night and stayed in their camps praising one another. All those warriors having fortified their camps and examined the armies, washed their weapons and their bodies and with benedictions of Brahmans and the prasies of bards, joined in recreation. The recreation

यशस्विन ॥ ५५ ॥ मुहूर्तादिव तत्सर्वं ममजत् स्वर्गसन्निभम् । न हि युद्धकथांकाचि त्तत्रा कुर्वन् महारथा ॥ ५६ ॥ ते प्रसुते वले तत्र परिश्रान्तजने नृप । हस्त्यश्ववहुले रात्री प्रेक्षणीये वभूवतु ॥ ५७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सप्तमदिवस युद्धावहारे सप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥

सञ्जय उवाच । परिणाम्य निशान्तान्तु सुखप्राप्ता जनेश्वरा । कुरव पाण्डवाश्चैव पुनर्युद्धाय निर्ययु ॥ १ ॥ तत शब्दो महानासीत् सैन्ययोरुभयोर्नृप । निर्गच्छमानयो सङ्ख्ये सागरप्रतिमो महान् ॥ २ ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा चित्रसेनो विविंशति । भीष्मश्च रथिनां श्रेष्ठो भारद्वाजश्च वै नृप ॥ ३ ॥ एकीभूता सुसयत्ता कौरवाणा महाचमूम् । व्यूहायविद्धूराजन् पाण्डवान् प्रति दंशिता ॥ ४ ॥ भीष्म कृत्वा महाव्यूह पितातव विशाम्पते । सागरप्रतिमं घोर वाहनोर्मितरङ्गिणम् ॥ ५ ॥ अग्रत सर्वसैन्यानां भीष्म

समेत आनन्द से क्रीडा करनेलगे फिर एक मुहूर्तमेंही वह सब क्रीड़ास्थान स्वर्ग के तुल्यहो गया वहा किसी महारथीने भी युद्धकी कथाका वर्णन नही किया फिर वह दोनोंसेनाओं के वीर हाथी घोड़ों समेत वडे आनन्दपूर्व्वक सोये ॥ ५७ ॥

अध्याय ८८ ॥

संजय बोले कि सुख पूर्व्वक सोये हुए कौरव और पांडवों समेत राजा लोग रात्रिको व्यतीत करके फिर युद्धके निमित्त गये, और संग्राम भूमि में जाने वाले वीरों के बड़े २ शब्द समुद्र के समान हुए, तब राजा दुर्य्योधन चित्रसेन विविंशति भीष्मजी द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण इनसब वडे सावधान और एक मन कौरवोंके महारथी कवच शस्त्र धारियों ने पांडवों के सम्मुख व्यूहों को अलंकृत किया फिर शन्तनु के पुत्र आपके पितामह भीष्मजी सागर के समान भयानक सवारी रूपी लहरों से लहरातेहुए महाव्यूहको शोभित करके । १ । मालव देशी दक्षिण देशी और अवन्ति

ground was like the paradise in a moment There no mention of war was made by any warrior Then the warriors of the two armies and their beasts slept soundly for the night 57

CHAPTER LXXXVIII

Sanjaya continued: Having soundly slept for the night, the princes with the Kauravas and the Pandavas went again for battle The roar of the warriors going to battle was like that of the ocean Then Prince Duryodhana Chitrasena, Vivimshati, Bhishma and Drona charya the Brahman all these Kaurava warriors, wide awake and well united, armed with weapons and armour arranged their armies in front of the Pandavas Then Shantanu's son, your grandfather Bhishma, moving like the surge of the sea in his carriage, embellished

शान्तनवो ययौ । मालवैर्दाक्षिणात्यैश्च आवन्त्यैश्च समन्वित ॥ ६ ॥ ततोनन्तरमेवासी
द्भारद्वाज प्रतापवान् । कुलिन्दैः पारदैश्चैव तथा क्षुद्रकमालवैः ॥ ७ ॥ द्रोणादनन्तरं
यत्तो भगदत्तः प्रतापवान् । मगधैश्च कलिङ्गैश्च पिशाचैश्च विशाम्पते ॥ ८ ॥ प्राग्ज्यो
तिषादनुनृप कौसल्योऽथबृहद्बलः । मेकलै कुरु विंदैश्च चैपुरैश्चसमन्वित ॥ ९ ॥ बृहद्बला
त्तत शूरस्त्रिगर्त प्रस्थलाधिपः । काम्बोजैर्बहुभि सार्द्धं यवनैश्च सहस्रश ॥ १० ॥ द्रौणि
स्तुरमसः शूरस्त्रिगर्त्तादनुभारत । प्रययौ सिंहनादेन नादयानो धरातलम् ॥ ११ ॥ तथा
सर्वेण सैन्येन राजा दुर्य्योधनस्तदा । द्रौणेरनन्तरं प्रायात् सौदर्यैः परिवारितः ॥ १२ ॥
दुर्य्योधनादनु तत कृपः शारद्वतो ययौ । एवमेष महाव्यूह प्रययौ सागरोपम ॥१३॥
रेजुस्तत्र पताकाश्च श्वेतछत्राणि वा विभो । अङ्गदान्यत्र चित्राणि महार्हाणि धनूषिच
॥ १४ ॥ तंतु दृष्ट्वा महाव्यूहं तावकानां महारथ । युधिष्ठिरोऽब्रवीत्तूर्णं पार्थं पृतनाप

देशियों से संयुक्त सब सेनाओं के अग्रगामी होकर चले इसके पीछे प्रतापवान्
द्रोणाचार्य्यजी पुलिंदपारद् क्षुद्रक और मालवीलोगोंके साथहुए हेराजा फिर प्रतापी
सावधान राजा भगदत्त मागध कलिंग और पिशाचोंसमेत द्रोणाचार्य्य के पीछे हुआ
और राजा वृहद्बल कौशल्य मेकल त्रैपुर और चिवुकों समेत प्राग्ज्योतिप के राजा
भगदत्तके पीछे चला उसकेपीछे त्रिगर्त्त देशी महाशूर पराक्रमी राजा प्रस्थल बहुतसे
काम्बोजों से युक्त होकर नियतहुआ।१.०। इसके पीछे महावेगवान् शूरवीर अश्वत्थामा
त्रिगर्त्त देशियों के पीछे अपने सिंहनाद से पृथ्वीको शब्दायमान करताहुआ चला
इसी प्रकार से इसके पीछे राजा दुर्य्योधन सब भाइयों समेत सब सेना के साथ
अश्वत्थामा के पीछे चला इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य्य जी दुर्य्योधन के पीछे
चले इसरीति से सागर के समान वह बड़ाव्यूह चला, उस व्यूहकी पताका श्वेत
छत्र सड़ाऊ बाजूबन्दतोमर धनुषों समेत महा शोभायमान हुई, फिर महारथी युधि-
ष्ठिर आपके बेटों के उस बड़े व्यूहको देखकर बहुत जल्दी से अपने सेनापति

the great array The people of Malav, South country, Avanti and other places moved on with their leaders. Then glorious Dronacharya, together with the Pulinds, Parads, Kshudraks and malavis, joined the array. Glorious and watchful king Bhagdatta with Magadhas, Kalings and Pishachas, brought up the rear of Dronacharya, and Prince Vrihadval with the Kaushalyas, Mekals, Traipuras and Chibuks, followed Bhagdatta the king of Pragjyotish Then the brave warriors of Trigart and their king Prasthal stationed themselves with numberless Cambojes. Ashwathama of great glory and valour, stationed himself behind the warriors of Trigart and went on ringing the earth with his cries Prince Duryodhan with his brothers and warriors followed Ashwathama Sharadwat Kripacharya followed Duryodhan Thus like an Ocean that huge array moved on. The array was decked with banners, white shades, jewelled armlets, to-

तिम ॥ १५ ॥ पश्य व्यूहं महेष्वास निर्मितं सागरोपमम् । प्रतिव्यूहन्त्वमपि हि कुरु पार्षतसत्वरम् ॥ १६ ॥ ततः स पार्षत क्रूरो व्यूहञ्चक्रे सुदारुणम् । शृङ्गाटकंमहाराज परव्यूहविनाशनम् ॥ १७ ॥ शृङ्गाभ्यां भीमसेनश्च सात्यकिश्च महारथ । रथैरनेकसाहस्रैस्तथा हयपदातिभिः ॥ १८ ॥ नाभ्यांवभौनरश्रेष्ठ श्वेताश्व कृष्णसारथिः । मध्ये युधिष्ठिरो राजा माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ ॥ १९ ॥ अथोत्तरे महेष्वासा सहसैन्यानराधिपा । व्यूह तं पूरयामासुर्व्यूहशास्त्रविशारदा ॥ २० ॥ अभिमन्युस्ततः पश्चाद्विराटश्च महारथः । द्रौपदेयाश्च संहृष्टा राक्षसश्च घटोत्कचः ॥ २१ ॥ एवमेतन्महाव्यूह व्यूह्यभारत पाण्डवा । अतिष्ठन् समरे शूरा योद्धुकामा जयैषिणः ॥ २२ ॥ भेरीशब्दैश्चविमलैर्विमिश्रैः शङ्खनिस्वनैः । क्ष्वेडितास्फोटितोत्कुष्टैर्नादिताः सर्वतो दिश ॥२३॥ तत शूरा समासाद्य समरे ते परस्परम् । नेत्रैरनिमिषैराजन्नवैक्षन्त पर

धृष्टद्युम्नसे बोला ।१५। कि हे वड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्न इस समुद्र के समान रचे हुए व्यूहको देखो और तुमभी उसके समान शीघ्रही हमारे व्यूहको अलंकृत करो, इस के पीछे उसशूर धृष्टद्युम्न ने वड़े भयानक शत्रुओं के व्यूह के नाश करने वाले श्रृंगाटक नाम व्यूहको बड़ी उत्तमता से वनाया, उस व्यूहमें महारथी भीमसेन और सात्यकी तो हजारों हाथी घोड़े रथ पदातियों समेत शिखररूप हुए, और नरोत्तम श्वेत घोड़े वाला श्रीकृष्णको सरथी रखनेवाला अर्जुन नाभि के ऊपर वर्त्तमान हुआ और मध्य में राजा युधिष्ठिर और नकुल सहदेव दोनों भाईहुए, इसी प्रकार व्यूहशास्त्र में कुशल बुद्धि वड़े धनुषधारी अन्य महारथियों ने सेना समेत उस व्यूहको पूर्ण किया।२०। और महारथी अभिमन्यु विराट द्रौपदी के पुत्र और घटोत्कच राक्षस उसके पीछे हुए, हे राजा इसरीति से वह व्यूहवीर पांडव अपने व्यूहको रचकर युद्धाभिलाषी विजय के चाहने वाले संग्राम भूमि में आकर नियतहुए, शंखध्वनि से युक्त भेरियों के कठोर शब्द वा सिंहनाद और

mars and bows. Mighty Yudhishthir, seeing the great array of your sons, thus addressed Dhrishtadyumn the commander of his armies — "Mighty archer Dhrishtadyumna, look at this ocean like array and form your own array like this." Thereupon brave Dhrishtadyumn made carefully the array known as Shringhatak the destroyer of the hosts of enemies. In that array mighty Bhimsen and Satyaki, with thousands of elephants, horses, chariots and foot soldiers, formed the horn; the best of men, riding the white horses and having Shree Krishn for the driver, Arjun stationed himself at the navel. In the middle were king Yudhishthir and the two brothers Nakul and Sahadev, and other warriors skilful in forming arrays and great archers and warriors with Bhimsen filled up the array. Valiant Abhimanyu, Virat, the sons of Draupadi and Ghatotkach the rakshas followed him. Thus, O king the Pandavas, brave in war, having formed the array with a desire to win, stationed themselves

स्परम् ॥ २४ ॥ नामभिस्ते मनुष्येन्द्र पूर्वं योधाः परस्परम् । युद्धाय समवर्त्तन्त समाहूयेतरेतरम् ॥ २५ ॥ ततः प्रवृत्ते युद्धे घोररूपं भयावहम् । तावकानां परेषाञ्च निघ्नतामितरेतरम् ॥ २६ ॥ नाराचा निशिता संख्ये सम्पतन्तिस्मभारत । व्यात्ताननाभयकरा उरगा इव संघशः ॥ २७ ॥ निष्पेतुर्विमलाः शक्त्यस्तैलधौता सुते जताः । अम्बुदेभ्यो यथा राजन् भ्राजमानाः शतह्रदाः ॥ २८ ॥ गदाश्च विमलैः पट्टैः पिनद्धाः स्वर्णभूषितैः । पतन्त्यस्तत्र दृश्यन्ते गिरिशृङ्गोपमाः शुभा ॥ २९ ॥ निस्त्रिंशाश्च व्यदृश्यन्त विमलाम्बरसन्निभाः । आर्षभाणि विचित्राणि शतचन्द्राणि भारत ॥ ३० ॥ अशोभन्त रणे राजन् पात्यमानानि सर्वश । सेन्योन्यं समरे सेने युध्यमाने नराधिप ॥३१॥ अशोभेतां यथा देव दैत्यसेनेसमुद्यते । अभ्यद्रवन्त समरे तेऽन्योन्यं वै समन्ततः ॥ ३२ ॥ रथास्तु रथिभिस्तूर्णं प्रेषिताः परमाहवे । युगैर्युगानि संश्लिष्य

भुजाओं के शब्दों से शब्दायमान सब दिशायें अत्यन्त भयानक विदित हुई इस के पीछे उन शूरवीरों ने परस्पर सम्मुख होकर एकने एकको टकटके नेत्रों से देखा हे राजा वह शूरवीर पूर्वनामों के द्वारा परस्पर में बुला बुलाकर युद्ध के निमित्त वर्त्तमान हुए, इसके अनन्तर परस्पर मारने वाले आपके पुत्र और पांडवी सेना का महा घोर और भयानक रूप युद्ध जारी हुआ, हे भरतर्षभ उस युद्ध में बड़ेतीक्ष्ण नाराचों की ऐसी वर्षाहुई जैसे कि महाभयानक डंशकरनेवाले सर्प चारों ओरसे गिरते होयँ, और तेलसे शुद्ध तीक्ष्णबरछियांभी चारोंओरसे ऐसी गिरीं जैसे कि बादलों से प्रकाशमान बिजली गिरतीहै और रेशमी वस्त्रों से मढ़ेहुए सुवर्णसेजटितपर्व्वत के शिखर के समान बड़ी २ गदा और निर्मल आकाश के समान खड्ग और सूर्य चंद्रमाओं से चिह्नित उत्तम ढालें यह सब गिरती हुई बड़ी शोभायमान हुई हे राजा वह खड्ग ढालें पृथ्वीपर गिरीहुई सब ओर से शोभायमान हुई फिर वह परस्पर युद्ध करनेवाली दोनों सेना ऐसी शोभित हुई

in the field of battle. The harsh peals of trumpets mixed with the blasts from conchs, war cries and beating of arms, made a dreadful noise in the field of battle. Then the warriors facing one another gazed at their adversaries. And those warriors, O king, called one another by their names and challenged to fight. Then the battle between your sons and the Pandavas, killing one another, was very severe and awful. The shower of sharp arrows in the battle was very severe and awful. The shower of sharp arrows in the battle was like the fall of venomous serpents biting dreadfully. Rubbed over with oil the sharp spears fell down from all sides like lightning flashes detached from clouds. Sheathed in silk cloth, huge, gold bedecked *maces like mountain peaks, the swords like the clear sky and* the large shields bearing suns and moons, looked very glorious in their fall. The swords and shields fallen on the ground, O king, were *shining on all sides. Then the two fighting armies looked glorious*

युयुधु पार्थिवर्षभा ॥ ३३ ॥ दन्तिना युध्यमानानां सघर्षात् पावकोऽभवत् । दन्तेषु भरतश्रेष्ठ सधूम सर्वतादिशम् ॥ ३४ ॥ प्रासैरभिहता केचिद्गजयोधा समन्तत । पतमाना स्म दृश्यन्ते गिरिशृङ्गान्नगा इव । ३५ ॥ पादाताश्चाप्यदृश्यन्त निघ्नन्तोऽथ परस्परम् । चित्ररूपधरा शूरा नखरप्रासयोधिन ॥ ३६ ॥ अन्योन्यन्ते समासाद्य कुरुपाण्डवसैनिका । अस्त्रैर्नानाविधैर्घोरै रण निन्युर्यमक्षयम् ॥ ३७ ॥ तत शान्तनवो भीष्मो रथघोषेण नादयन् । अभ्यागमद्रण पार्थान् धनु शब्देन मोहयन् ॥ ३८ ॥ पाण्डवाना रथाश्चापि नदन्तो भैरव स्वनम् । अभ्यद्रवन्त सयत्ता धृष्टद्युम्न पुरोगमा ॥ ३९ ॥ तत प्रववृते युद्ध तव तेषाञ्च भारत । नराश्वरथनागानां व्यतिषक्त परस्परम् ॥ ४० ॥

इति महा०-भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि अष्टमदिवसयुद्धारम्भे अष्टाशीतोऽध्याय ॥८८॥

जैसे कि देव दानवों की सेनाहोती है उस समय एकएकके सम्मुख दौडे रथी रथियों के साथ बहुत जल्दी से भेजे गये और उत्तम राजा लोग रथके जुओं को जुओं से मिलाकर युद्ध करनेलगे, हे राजा सबओर लडतेहुए हाथियोंकी, रगडसे दांतों के ऊपर सधूम अग्नि उत्पन्न होगये कोई हाथी के सवार हो जगी फरसों से घायल हुए सब ओरसे गिरते हुए ऐसे दृष्टपडे जैसे कि पर्वतके शिखर से वृक्ष गिरतेहैं और विचित्र रूपधारी शूर वीर नख और फरसों से युद्ध करनेवाले पदाती परस्पर में मारते हुए दृष्ट पडे, फिर उन कौरव और पाण्डवों की सेनाके मनुष्यों ने परस्पर सम्मुख होकर युद्ध में नाना प्रकारके बाणों से एकने दूसरेको यमपुर को भेजा और रथ वा धनुष के शब्दों से गर्जना करते हुए भीष्म जी पाण्डवों के सम्मुख गये, और पाण्डवों के भी सावधान रथी धृष्टद्युम्न को आगे किये हुये बडे भयानक घोर शब्दों को करते हुए कौरवों के सम्मुख दौडे, इसके पीछे आपके शूर वीरोंके और पाण्डवोंके वीरोंका युद्ध जारी हुआ और मनुष्य हाथी घोडे और रथोंका परस्पर मेल न हुआ ४० ॥

like the armies of gods and danavas. Soldiers rushed against one another. The charioteers rushed against one another and yoke to yoke they fought hard. Fire and smoke appeared on the tusks of fighting elephants. Some riders wounded by battle axes were seen falling here and there like trees from mountain peaks. The foot soldiers in various colours were seen fighting with nails and axes and killed one another. The Kaurav and Pandav armies, facing each other, sent the warriors to the region of Yam with their arrows. Raising a tremendous noise with his chariot and bow, Bhishm faced the Pandavas, who led by Dhrishtadyumn the skilful charioteer and uttering loud war cries, rushed against the Kauravas. Then a severe battle ensued between the warriors of your sons and those of the Pandavas and there was no order amongst men elephant, horses and chariots. 40

सञ्जय उवाच । भीष्मन्तु समरे क्रुद्धं प्रतपन्तं समन्ततः । न शेकुः पाण्डवा
द्रष्टुं तपन्तमिव भास्करम् ॥ १ ॥ ततः सर्वाणि सैन्यानि धर्मपुत्रस्य शासनात् ।
अभ्यद्रवन्त गांगेयं मर्दयन्तं शितैः शरैः ॥ २ ॥ स तु भीष्मो रणश्लाघी सोमकान्
सहसृञ्जयान् । पाञ्चालांश्च महेष्वासान् पातयामास सायकैः ॥ ३ ॥ ते वध्य
माना भीष्मेण पाञ्चालाः सोमकैः सह । भीष्ममेवाभ्ययुस्तूर्णं त्यक्त्वा मृत्युकृतं
भयम् ॥ ४ ॥ स तेषां रथिनां वीरो भीष्मः शान्तनवो युधि । चिच्छेद सहसा राजन्
बाहूनथ शिरांसि च ॥ ५ ॥ विरथान् रथिनश्चक्रे पिता देवव्रतस्तव । पतितान्युत्तमा-
ङ्गानि हयेभ्यो हयसादिनाम् ॥ ६ ॥ निर्मनुष्यांश्च मातङ्गान् शयानान् पर्वतोपमान् ।
अपश्याम महाराज भीष्मास्त्रेण प्रमोहितान् ॥ ७ ॥ न तत्रासीत् पुमान् कश्चित्
पाण्डवानां विशाम्पते । अन्यत्र रथिनां श्रेष्ठाद्भीमसेनान् महाबलात् ॥ ८ ॥ स

अध्याय ८९ ॥

संजय बोले कि पाण्डव लोग युद्धमें क्रोधित चारों ओरसे संतप्त करने वाले भीष्मजीके देखनेको भी ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि अत्यन्त प्रचंड सूर्य्य के तेजको कोई नहीं देखसक्ता है, इसके पीछे धर्म्म पुत्र युधिष्ठरकी आज्ञासे पाण्डवों की सब सेना भीष्मजी के सम्मुख दौड़ी, फिर उस प्रतापी भीष्मने सृंजय लोगों को सोमकों समेत और बड़े धनुषधारी पांचालदेशियों को शायकों से आच्छादित किया तब भीष्मसे घायल हुए सोमकों समेत पांचाल देशी भयको त्यागकर शीघ्र भीष्मजी के सम्मुख जापहुँचे, तब उस शांतनु के पुत्र बलवान् भीष्म ने उन रथियोंकी भुजाओंको अस्त्रों समेत काटकर रथोंसे विरथ करदिया ।५। फिर खड्गोंसे सवारोंके शिर गिराये हेमहाराज हम ने भीष्मजीके अस्त्रसे अत्यन्त मोहित बिना शिरके हाथियों को ऐसा देखा जैसे कि बिना वृक्षके पर्व्वत होते हैं, उस काल वहाँ रथियों में श्रेष्ठ महाबली भीमसेन के सिवाय पाण्डवोंका कोई भी मनुष्य नियत नहीं हुआ, उस ने

CHAPTER LXXIX

Sanjaya continued—'The Pandavas were unable to look at Bhishm burning all round in his rage, as no one can gaze at the bright sun. Then by Yudhishthir's order the whole army of the Pandavas rushed against Bhishm, but the latter hid with his arrows the Srinjayas, the Somaks and the great archers of Panchal. Wounded by Bhishm the Panchals and the Somaks, setting aside all fear faced Bhism but the brave son of Shantanu cut down the arms of those charioteers bearing weapons and made their chariots useless 5 With the sword he beheaded the horsemen We saw O king elephants made limbless and headless by his weapons like hills destitute of trees No warrior of the Pandavas could remain firm there except mighty Bhim the best of charioteers He checked Bhishm in battle and the des- [illegible] was great in the encounter between those [illegible] s raised war cries in great cheer 10 When

हि भीष्मं समासाद्य ताडयामास संयुगे । ततो निष्ठानको घोरो भीष्मभीमसमागमे ॥ ९ ॥ बभूव सर्वसैन्यानां घोररूपो भयानकः । तथैव पाण्डवा दृष्ट्वा सिंहनादमथानदन् ॥ १० ॥ ततो दुर्योधनो राजा सोदर्यैः परिवारितः । भीष्मं जुगोप समरे वर्त्तमाने जनक्षये ॥ ११ ॥ भीमस्तु सारथिं हत्वा भीष्मस्य रथिनाम्वरः । विद्रुताश्वे रथे तस्मिन् द्रवमाणे समन्ततः ॥ १२ ॥ सुनाभस्य शरेणाशु शिरश्चिच्छेद भारत । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन स हतो न्यपतद्भुवि ॥ १३ ॥ हते तस्मिन् महाराज तव पुत्रे महारथे । नामृष्यन्त रणे शूराः सोदराः सप्त संयुगे ॥ १४ ॥ आदित्यकेतुर्बह्वाशी कुण्डधारो महोदरः । अपराजितः पण्डितको विशालाक्ष सुदुर्जयः ॥ १५ ॥ पाण्डवं चित्रसन्नाहा विचित्रकवचध्वजाः । अभ्यद्रवन्त संग्रामे योद्धुकामारिमर्दनाः ॥ १६ ॥ महोदरस्तु समरे भीमं विव्याध पत्रिभिः । नवभिर्वज्रसङ्काशैर्नमुचिं वृत्रहा यथा

युद्धमें भीष्मजीको पाकर रोक दिया फिर भीम और भीष्मकी सम्मुखता में सब सेनाओं को निष्ठानक महाघोर और भयानकहुआ और पाण्डवों ने प्रसन्नहोकर बड़े सिंहनाद किया१०इसके पीछे बड़ेघोर नाश के वर्तमान होनेपर अपने निज भाइयोंसमेत दुर्योधनने आकर भीष्मजीकी रक्षाकरी, फिर रथियों में श्रेष्ठ भीमसेनने भीष्मजी के सारथीको मारकर बड़े वेगवान् घोड़ेवाले रथपर बैठकर धनुषको तान बड़ी शीघ्रता से अपने क्षुरप्रबाण से सुनाभ के शिरको काटा वह शिरके कटतेही पृथ्वीपर गिरपड़ा हे महाराज उस महारथी आपके पुत्रके मरने पर उसके आदित्यकेतु बह्वाशी कुण्डधार महोदर अपराजित पंडितक, विशालाक्ष दुर्जय नाम शूरवीर सगे भाई जड़ाऊ कवच अस्त्रादिकोंसे अलंकृत होकर उस भीमसेन के सम्मुख दौड़े।१६। उस समय महोदर ने वज्रके समान नौबाणों से भीमसेनको ऐसा घायल किया जैसे इन्द्रने नमुचिको कियाथा, फिर आदित्यकेतु ने सत्तर बाणों से बह्वाशीने पांच बाणोंसे कुण्डधार ने नौ बाणसे विशालाक्ष ने सात बाणसे और महारथी अपरा-

the slaughter of the armies was great, Duryodhan and his brothers came to Bhishm and protected him Bhim the best of charioteers killed the driver of Bhishma's chariot and mounted on his swift chariot with his bow drawn, with much dexterity he beheaded Sunabh by his sharp arrow. On the death of your brave son, O king, his brothers Adityaketu, Bahwashi, Kund dhar, Mahodar, Aparajit, Panditak, Vishalaksh and Durjaya, armed with weapons and golden armour rushed against Bhim 16 Mahodar wounded Bhim severely with nine arrows as Indra had pierced Namuchi. Then Adityaketu wounded him with seventy arrows, Bahwashi with five, Kund dhar with nine, Vishalaksh with seven and brave Aparajit with many. Again Panditak wounded him with three arrows 20 Wounded by those arrows mighty Bhimsen the destroyer of foes, drew his bow with his left hand

॥ १७ ॥ आदित्यकेतु सप्तत्या बह्वाशी चापि पञ्चभि । नवत्या कुण्डधारश्च त्रिशा लाक्षश्च पञ्चभि ॥ १८ ॥ अपराजितो महाराज पराजिष्णुर्महारथम । शरैर्बहुभि रानर्च्छद्भीमसेनं महाबलम ॥ १९ । रणे पण्डितकस्त्रिभिर्बाणे समार्पयत् । स तन्न ममृषे भीम शत्रुभिर्वधमाहवे ॥ २० ॥ धनु प्रपीड्य वामेन करेणामित्रकर्शन । शिरश्चिच्छेद समरे शरेणानतपर्वणा ॥ २१ ॥ अपराजितस्य सुनस तव पुत्रस्य संयुगे । पराजितस्य भीमेन निपपात शिरो महीम ॥ २२ ॥ अथापरेण भल्लेन कुण्डधारं महारथम । प्राहिणोन्मृत्युलोकाय सर्व लोकस्य पश्यत ॥ २३ ॥ तत पुनरमेयात्मा प्रसन्धाय शिलीमुखम । प्रेषयामास समरे पण्डित प्रति भारत २४॥ स शर पण्डित हत्वा विवेश धरणीतलम । यथा नर निहत्याशु भुजग कालचोदित ॥ २५ ॥ विशालाक्षशिरश्छित्वा पातयामासभूतले । त्रिभि शरैरदीनात्मा स्मरन् क्लेशं पुरातनम ॥ २६ ॥ महोदर महेष्वास नाराचेनस्तनान्तरे । विव्याध

जिसने अनेक बाणों से महाबली भीमसेन को व्याकुल करदिया, फिर पंडितकने तीनबाणमे घायल किया।२०।इसके पीछे इन सबके बाणोंसे पीड़ित शत्रुसंतापी महा बली भीमसेनने क्रोधयुक्त हो बायें हाथसे दृढ धनुषको खेंचकर गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से आपके पुत्र अपराजित के शिरको काटा फिर वह गिर पृथ्वी पर गिरा, इसके पीछे सब सेनाके देखत हुए दूसरे भल्ल से महारथी कुण्डधारको कालवश किया, हे भारतर्षभ फिर बड़े साहसी भीमसेनने धनुष में शिली मुख बाणको चढ़ाकर पंडितक को मारा, वह बाण पंडितकको मारकर पृथ्वी में ऐसे प्रवेश करगया जैसे कि कालका भेजा सर्प मनुष्य को काटकर पृथ्वी में घुसजाताहै ।२५। फिर पूर्व समय के दुःखोंको स्मरण करके प्रसन्नचित्त भीमसेनने तीनबाण से विशालाक्ष को मारकर पृथ्वी पर गिराया, हेराजा बड़े धनुषधारी महोदर को नाराचसे छाती के ऊपर घायल किया वहभी मृतक होकर भूमिमें गिरा, फिर एक बाण से आदित्यकेतु के छत्र को काटकर बड़े तीक्ष्ण भल्ल से उसके

in great anger and with arrows having hidden knots, beheaded your son Aparajit The head fell down on the ground And within sight of the armies with another dart he killed Kund dhar Then, Bhimsen of great prowess, put to his bow an arrow sharpened on stone and killed Panditak with it Having killed Panditak that arrow entered the ground as a serpent sent by Death does after biting a man 25 Then remembering the former wrongs Bhimsen with three arrows killed Vishalaksh who fell down dead on earth Then he wounded the great archer Mahodar with an arrow on the breast and he too fell down dead on earth, Then having cut down the umbrella of Adityaketu with an arrow he beheaded him with another dart Then Bhimsen in the excess of wrath with arrows having hidden knots sent Bah-

समरे राजन् स हतोन्यपतद्भुवि ॥ २७ ॥ आदित्यकेतो केतुश्चच्छिन्नाणेन सयुगे। भल्लेन भृशातीक्ष्णेन शिरश्चिच्छेदभारत ॥ २८ ॥ बह्वाशिन ततो भीम शरेणानत पर्वणा । प्रेषयामास सक्रुद्धो यमस्य सदन प्रति ॥ २९ ॥ प्रदुद्रुवुस्ततस्तेन्ये पुत्रास्तव विशाम्पते । मन्यमाना हि तत्सत्य सभाया तस्य भाषितम् ॥ ३० ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा भ्रातृव्यसनकर्शित । अब्रवीत्तावकान् योधान् भीमोय युधिवध्यताम् ॥३१। एवमेत महेष्वासा पुत्रास्तव विशाम्पत । भ्रातृन् सन्दृश्य निहतान् प्रास्मरस्तदि तद्वच ॥ ३२ ॥ यदुक्तवान् महाप्राज्ञ क्षत्ता हितमनामयम् । तदिद समनुप्राप्त वचनं दिव्यदर्शिन ॥ ३३ ॥ लोभमोहसमाविष्ट पुत्रप्रीत्या धनाधिप । न बुध्यसेपुरा यत्तत् तथ्यमुक्त वचोमहत् ॥ ३४ ॥ तथैव च वधार्थाय पुत्राणां पाण्डवो बली । नून जातो महाबाहुर्यथा हान्तिस्म कौरवान् ॥ ३५ ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा भीष्ममासाद्य सयुगे । दु खेन महताविष्टो विललापसुदु खित ॥ ३६ ॥ निहताभ्रातर

भी शिरको काटा, फिर अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेन ने गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से बह्वाशीको भी यमलोकको भेजा, इसके पीछे आपके और सबबेटे सभाके मध्य में कहेहुए भीमके वचनोंको सत्य२ जानकर युद्धभूमिसे भागे ।३०। तदनन्तर भाइयों के दु खसे पीडामान् राजा दुर्य्योधन आपके सब पुत्रों को बुलाकर यह बोला कि हे भाइयो इस भीमसेनको मारो, इस रीति से इन धनुषधारी आपके पुत्रोंने भाइयोंको माराहुआ देख कर उस वचन को याद किया जो बड़े शुभ चिन्तक विदुरजी ने हितकारी समझ कर कहाथा वही उन महात्मा का वचन अब सत्य २ वर्त्तमान हुआ है हे राजा तुम लोभ मोह में भरे हुए पुत्रकी प्रीति से नहीं जानतेहो पूर्व्व समयमें सत्यहितकारी वचन कहागयाथा निश्चय कर के महाबाहु बलवान् भीमसेन तेरेपुत्रोंके मारने के लिये ऐसाही उत्पन्न हुआहै जैसा कि कौरवोंको माररहाहै।३५। इसके पीछे राजा दुर्योधन भीष्म के पास जाकर बड़ा खेद युक्त होकर रोदन करनेलगा कि मेरे शूरवीर भाई युद्ध में भीमसेन के हाथ से मारेगये, इसीप्रकार और सब सेना

washi to the region of Yam Then the rest of your sons, believing the words of Bhimsen said in the court to be true, fled from the field of battle 30 Sorry for the death of his brothers *Prince Duryodhan* called all your sons together and said to them —" Kill this Bhimsen, brothers !' Your brave sons seeing their brothers dead, remembered the words which their well wisher Vidur had said for their benefit. His words have proved tru Out of love for your avaricious and foolish son you donot know what true and beneficial words were said Surely brave Bhimsen is born to destroy your sons as well as other Kauravas 35 *Then Prince Duryodhan went to Bhishm* and wept for sorrow, saying, ' My brothers are killed by Bhimsen in battle and he is destroying our armies. You always express your disinterested

शूरा भीमसेनेन मे युधि । यतमानास्तथान्येपि हन्यन्ते सर्व सैनिकाः ॥ ३७ ॥ भवांश्च मध्यस्थतया नित्यमस्मानुपेक्षते । सोहं कुपथमारूढ पश्य दैवं मिदंमम ॥ ३८ ॥ एतच्छ्रुत्वाच्च क्रूरं पितादेवव्रतस्तत । दुर्योधनमिदं वाक्यमब्रवीत् साश्रुलोचन ॥ ३९ ॥ उक्तमेतन्मया पूर्वं द्रोणेन विदुरेणच । गान्धार्या च यशस्विन्या तच्च तात न बुद्धवान् ॥ ४० ॥ समयश्च मया पूर्वं कृतो वै शत्रुकर्शन । नाहं युधि नियोक्तव्यो नाप्याचार्य्यं कथञ्चन ॥ ४१ ॥ यं यं हि धार्त्तराष्ट्राणां भीमो द्रक्ष्यति संयुगे । हनिष्यति रणे नित्यं सत्यमेतद्ब्रवीमि ते । ४२ ॥ सत्त्व राजन् स्थिरोभूत्वा रणे कृत्वा दृढांमतिम् । योधयस्व रणे पार्थान् स्वर्गं कृत्वा परायणम् ॥ ४३ ॥ न शक्या पाण्डवा जेतुं सेन्द्रैरपिसुरासुरैः । तस्माद्युद्धेस्थिरां कृत्वा मतिंयुध्यस्वभारत ॥४४॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि आदित्यकेतुप्रभृतिवधे एकोननवतितमोऽध्यायः ॥ ८९ ॥

के मनुष्य भी मारेजाते हैं, आप सदैव हमको उदासीनपने से त्याग करतेहो मैं कुमार्ग में वर्त्तमानहूं मेरी अभाग्यता देखिये, संजय बोले कि इस वचन को सुनकर आपके पिता भीष्मजी उस अश्रुपात करनेवाले दुर्योधन से यह वचन बोले कि मैंने और द्रोणाचार्य्य विदुर गांधारी आदि ने प्रथमही कहाथा परन्तु हेतात तुमने उसको नहीं समझा, मैंने प्रथम तुम्हारे साथ नियम किया है सो मैं और आचार्य्यजी दोनों किसी रीति से तुम को छोड़ने को नहीं, धृतराष्ट्र के पुत्रों में से युद्ध में जिस २ को भीमसेन देखेगा उसको सत्य २ ही मारे विना नहीं छोड़ेगा, सो स्वर्गको अपना स्थान समझ कर मनको स्थिर कर के पाडवों से युद्धकरो हेभरतर्षभ इन्द्रादिक देवता भी पाडवों के जीतनेको समर्थ नहीं है इस हेतुस युद्धमें स्थिरबुद्धी होकर संग्रामकरो ॥ ४४ ॥

ness in our cause, while I stay in the evil path Look my at my bad luck." "Having heard these words," continued Sanjaya, "your father Bhishm said to the weeping Duryodhan —"I as well as Dronacharya, Vidur, Gandhari and others have already warned you, but you were indifferent to hear their advice I have already given you my word that the acharya and I will never forsake you It is true that whoever of the sons of Dhritrashtra will meet Bhimsen, will meet his death So with a firm mind, regarding paradise to be your proper residence fight against the Pandavas. Indra and other gods, O best of Bharats, are unable to conquer the Pandavas, therefore fight out with a firm resolution" 44



धृतराष्ट्र उवाच ॥ दृष्ट्वा मे निहतान् पुत्रान् बहूनेकेन संजय । भीष्मो द्रोण कृपश्चैव किम कुर्वंत संयुगे ॥ १ ॥ अहन्यहनि मे पुत्रा क्षयं गच्छन्ति संजय । मन्येह सर्वथासूत देवेनापि हता भृशम ॥ २ ॥ यत्रमे तनया सर्वे जीय तेन जयत्युत । यत्र भीष्मस्य द्रोणस्य कृपस्यच महात्मन ॥ ३ ॥ सौमदत्तेश्चभूरिश्रवस्य भगदत्तस्यचोभयो अश्वत्थाम्नस्तथा तात शूराणाम निवर्तिताम ॥ ४ ॥ अन्येषाञ्चैव शूराणा मध्यगास्त नयामम । यदहन्यन्त समरे किमन्यद्भागधेयत ॥ ५ ॥ नहि दुर्योधनो मन्द पुराप्रोक्त मबुध्यत । वार्यमाणो मयातात भीष्मेण विदुरेणच ॥ ६ ॥ गान्धार्याचैव दुर्मेधा सतत हित काम्यया । नाबुध्यतपुरामोहात् तस्यप्राप्त मिदं फलम ॥ ७ ॥ यद्भीमसेन समरे पुत्रान्मम विचेतस । अहन्यहनि संक्रुद्धो नयतेय मसादनम ॥ ८ ॥ संजय उवाच । इद तत्समनुप्राप्त क्षत्तुर्वचन मुत्तमम । नबुद्धवानसि विभो प्रोच्यमान हित तदा ॥९॥

अध्याय ॥ ९० ॥

धृतराष्ट्र ने कहा हे संजय एक भीमसेन के हाथसे मेरेबहुत से पुत्रों को माराहुआ देखकर भीष्म द्रोण कृपाचार्य्य आदिने क्या २ किया और मेरे पुत्र प्रतिदिन युद्धमें नाशहोते हैं इससे हेसूत मै मानताहू कि सबरीति से प्रारब्ध से हीन हू, कि मेरे शत्रुनाश होतेहै और विजय नहीं पातेहै भीष्म, द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य भूरिश्रवा, भगदत्त, अश्वत्थामा आदि बडे २ प्रतापी लोगोके मध्य में मेरे पुत्र वर्त्त मान होकर भी मारेजाते है यहां प्रारब्ध से दूसरी कौनसी बातहै, हे तातमेरे और भीष्म विदुरआदि अनेक सुहृदों के समझाने और निषेध करने से भी निर्बुद्धी दुर्य्योधननेपहले वचनों को नहीं समझा और हितकारिणी अपनी माता गांधारी केभी वचनको उसदुर्बुद्धीने नहींसमझा उसीका यहफल पारहा है, वहमहा क्रोधी भीमसेन युद्ध में प्रतिदिन मेरेपुत्रों कोही अधिकता से मारकर यमलोक में पहुँचाताहै संजयबोले कि हे समर्थ विदुरजीका वह उत्तम वचनवर्तमान हुआहै जोविदुर ने कहाथा

CHAPTER XC

Dhritrashtra said "What did Bhishm Drona, Kripacharya and others do at seeing many of my sons destroyed by Bhimsen ? My sons are killed every day in battle, I believe therefore, Sut, that I am luckless My sons are destroyed and gain no victory In the midst of great men like Bhishm, Kripacharya Bhurishrava, Bhagdat, Ashwathama and others the destruction of my sons can be ascribed to nothing but fate In spite of the remonstrances of Bhishm, Vidur, myself and other well wishers foolish Duryodhan did not become wise He was unwise to disregard the advice of his mother Gandhari and is reaping the fruit of his so doing. Furious Bhimsen destroys most of my sons in battle" Sanjaya replied — 'The prediction of Vidur is coming to be true He told you to stop gambling and to avoid enmity with the Pandavas. You disregarded the

निवारय सुतान् द्यूतात् पाण्डवैर्न मा द्रुहेति च । सुहृदं हितकामानां ग्रुवतां तत्तदेव च ॥ १० ॥ न शुश्रूषसि यद्वाक्यं मर्त्यः पथ्यमिवौषधम् । तदेव त्वामनुप्राप्तं वचनं साधुभाषितम् ॥ ११ ॥ विदुरद्रोणभीष्माणां तथान्येषां हितैषिणाम् । अकृत्वा वचनं पथ्यं क्षयं गच्छन्ति कौरवाः ॥ १२ ॥ तदेतत् समनुप्राप्तं पूर्वमेव विशाम्पते । तस्मात् त्वं शृणु तत्त्वेन यथा युद्धमवर्तत ॥ १३ ॥ मध्याह्ने सुमहारौद्रं सङ्ग्रामः समपद्यत । लोकक्षयकरो राजस्तन्मे निगदतः शृणु ॥ १४ ॥ ततः सर्वाणि सैन्यानि धर्मपुत्रस्य शासनात् । संरब्धान्यभ्यवर्तन्त भीष्ममेव जिघांसया ॥ १५ ॥ धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च सात्यकिश्च महारथः । युक्तानीका महाराज भीष्ममेव समभ्ययुः ॥ १६ ॥ विराटो द्रुपदश्चैव सहिताः सर्वसोमकैः । अभ्यद्रवन्त सङ्ग्रामे भीष्ममेव महारथम् ॥ १७ ॥ केकया धृष्टकेतुश्च कुन्तिभोजश्च दंशितः । युक्तानीका महाराज भीष्ममेव

कि पुत्रों को जुआ खेलनेसे निषेध करो और पांडवों से शत्रुतामतकरो सो उनशुभ चिंतक मित्रों के वचनों को तुमने ऐसे नहीं माना जैसे कि रोगी अपनी नीरोगी करने वाली औषधी को नहीं खाता है वही साधुओं का कहाहुआ वचन आपके आगे वर्त्तमान हुआहै। ११ यह सब कौरवलोग अपने शुभचिन्तक विदुर द्रोणाचार्य्य भीष्म और अन्य बहुत से हितकारियों के वचनों को न मानकर नाशहोते जातेहैं, इसके पीछे हे राजामध्याह्न के समय संसारका नाशकारी बड़ा भारी भयानक युद्ध जो प्रारंभ हुआ उसको मुझसे सुनो कि धर्मपुत्र युधिष्ठिर की आज्ञा से पाण्डवों की सबसेना महाक्रोधित होकर भीष्म के मारने के लिये सम्मुख दौड़ी हे महाराज धृष्टद्युम्न शिखण्डी सात्यकी यहतीनों अपनी २ सेना समेत भीष्म के सम्मुख गये १६ विराट् द्रुपद आदि महारथी भी सबसोमकों समेत भीष्म के सम्मुख गये और पांचों भाई केकय धृष्टकेतु कुन्तिभोज आदि भी सबकवचधारी होकर सेना समेत भीष्म के सम्मुख गये, अर्जुन और द्रौपदी के पांचों पुत्र और पराक्रमी

advice of your friends like a patient who does not take doses of curative medicine The very same saintly predictions are coming before you 11 The Kauravas who disregarded the advice of their well wishers, Vidur Dronacharya Bhishm and other friends are being destroyed Then, O king, at midday commenced a furious battle destructive of the world Hear from me all about it —By the order of Yudhishthir the just all the Pandav army much enraged, rushed on to slay Bhishm 16 Dhrishtadyumn, Shikhandi and Satyaki with their armies faced Bhishm Virat, Drupad and other warriors too along with the Somaks the five Kaikaya brothers Dhrishtaketu, Kuntibhoj and others sheathed in armour, encountered him Arjun with the five sons of Draupadi and valliant Chekitan faced the kings sent by Duryodhan Likewise Abhimanyu, valliant Ghatotkach and enraged Bhimsen rushed against the Kauravas.20 Two parties of the

समभ्यय १८॥ अर्जुनोद्रौपदेयाश्च चेकितानश्चवीर्यवान् । दुर्योधनसमादिष्टान्राज्ञ सर्वान् समभ्यय । १९। अभिमन्युस्तथा शूरा हैडिम्बश्च महारथ । भीमसनश्च सक्रुद्धस्तभ्यधावत कौरवान् । २० । त्रिधाभूतैरवध्यन्त पाण्डवै कौरवा युधि । तथैव कौरवैराजन्नवध्य त पर रण । २१ ॥ द्रोणस्तु रथिन श्रेष्ठान् सामकान् सृञ्जयै सह । अभ्यधावत सक्रुद्ध प्रेषयिष्यन् यमक्षयम ॥ २२ ॥ तत्राक्रन्दो महानासीत् सृजयाना महात्मनाम् । वध्यता समर राजन् भारद्वाजेन धन्विना ॥ २३ ॥ द्रोणेन निहतास्तत्र क्षत्रिया बहवो रण । विचष्टताद्यडश्यन्त व्याधिक्लिष्टा नरा इव ॥ २४ ॥ कूजता क्रन्दताञ्चेव स्तनताञ्चैव भारत । अनिश शुश्रुव शब्द क्षुत्क्लिष्टाना नृणामिव ॥ २५ ॥ तथैव कौन्तेयाणा भीमसेना महावल । चकार कदन घोर क्रुद्ध काल इवापर ॥२६॥ वध्यता तत्र सैन्याना मन्योन्येन महारणे । प्रावर्त्तत

चेकितान उनसवराजाओं के सम्मुख गये जिन को कि दुर्योधन ने आज्ञादीथी, इसीप्रकारवीर अभिमन्यु ओर महारथी घटोत्कच और क्रोधित भीमसन भी कौरवों के सम्मुख दौड़ा । २० । हे राजा पांडवों के दोयूथोंसेतो कौरव मारेगये और कौरवों सेभी उधर के लोग मारेगये फिर महारथी द्रोणाचार्य्य बडे क्रोधयुक्त होकर सृजियों सहित सोमकों का मारतेहुए पांडवों के सम्मुख गये उसयुद्धमें द्रोणाचार्य्य के हाथसे मरतेहुए महात्मा सृजियों के बडे २ शब्दहुए उसस्थानमें द्रोणाचार्य्य के हाथसे मरेहुए बहुत से क्षत्री ऐसे तडफडाते दिखाई दिये जैसे कि रोगयुक्त मनुष्य विकलहोकर तडफडाते हैं युद्ध में वोलते गर्जते पुकारते हुए शूरवीरोंके ऐसे शब्दसुने गये जैसे कि भूखसे व्याकुल मनुष्योंके शब्द निकलाकरतेहै ।२५। इसीप्रकार द्वितीयकालके समान क्रोध रूप महावली भीमसेन ने कौरवों के महाघोर नाशको किया, उस महाघोर युद्ध मे परस्पर सब सेनाओं के मरने से रुधिर की घोर भयानक नदी जारी हुई हे महाराज कौरव और पाण्डवों की वह महायुद्ध घोर लडाई यमराज के पुरको

Pandavas destroyed the Kauravas and the latter killed the warriors of the opposing side Valliant Dronacharya much enraged destroyed the Srinjayas and the Somaks and then encountered the Pandavas The Srinjaya warriors, destroyed by Dronacharya made a great noise The warriors wounded by him shook like those who are overtaken by sickness The cries and roars of the warriors resembled those of the starving people 25 In the same manner like a second Death, valliant Bhimsen much enraged, destroyed the Kauravs in large numbers In that dreadful battle the opposite sides destroying one another produced a river of blood The dreadful battle between the Kauravas and the Pandavas, O king, augmented the region of Yamraj Then full of anger and destitute of pride Bhimsen destryed the army of elephants and sent it to the region of Yam Killed by the darts of Bhimsen

नदी घोरा रुधिरौघप्रवाहिनी ॥ २७ ॥ स संग्रामो महाराज घोररूपोभवन्महान् । कुरूणां पाण्डवानाञ्च यमराष्ट्रविवर्धनः ॥ २८ ॥ ततो भीमो रणे क्रुद्धो रभसश्च विशेषतः । गजानीकं समासाद्य प्रेषयामास मृत्यवे ॥ २९ ॥ तत्र भारत भीमेन नाराचाभिहतागजाः । पेतुर्नेदुश्च सेदुश्च दिशश्च परिवभ्रमुः ॥ ३० ॥ छिन्नहस्ता महानागाश्छिन्नगात्राश्च मारिष । क्रौञ्चवद्व्यनदन्भीताः पृथिवीमधिशेरते ॥ ३१ ॥ नकुलः सहदेवश्च हयानीकमभिद्रुतौ । ते हयाः काञ्चनापीडा रुक्मभाण्डपरिच्छदाः ॥ ३२ ॥ वध्यमाना व्यदृश्यन्त शतशोथ सहस्रशः । पतद्भिस्तुरगै राजन् समास्तीर्यत मेदिनी ॥ ॥ ३३ ॥ निर्जिह्वैश्च श्वसद्भिश्च कूजद्भिश्च गतासुभिः । हयैर्बभौ नरश्रेष्ठ नानारूपधरैर्धरा ॥ ३४ ॥ अर्जुनेन हतैः संख्ये तथा भारत राजभिः । प्रबभौ वसुधा घोरा तत्र तत्र विशाम्पते ॥ ३५ ॥ रथैर्भग्नैर्ध्वजैश्छिन्नैर्निकृत्तैश्च महायुधैः । चामरैर्व्यजनैश्चैव छत्रैश्च सुमहाप्रभैः ॥ ३६ ॥ हारैर्निष्कैः सकेयूरैः शिरोभिश्च सकुण्डलैः । उष्णीषैरपविद्धैश्च पताकाभिश्च सर्वशः ॥ ३७ ॥ अनुकर्षैः शुभैराजन्

वृद्धि करने वाली हुई इसके पीछे क्रोधमें भरे निरभिमानी भीमसेन ने हाथियों की सेनाको मारकर यमपुर भेजा वहां भीमसेन के नाराचों से मरेहुए हाथी अचेत होकर शब्द करते दिशाओं में घूमते हुए पृथ्वीपर गिरे।३०। हे राजा धृतराष्ट्र वह सूंड और अंगों से रहित हाथी क्रौंच पक्षी के समान शब्द करते हुए पृथ्वीपर मरकर सोये, और नकुल सहदेव दोनों भाई घोड़ों की सेनाके सम्मुख गये वहां सुवर्ण भूषणों से अलंकृत सैकड़ों और हज़ारों घोड़े मरे कटे हुए पड़े उस समय वह पृथ्वी गिरे हुए घोड़ों से पूर्ण हुई, और बहुतसे जिह्वा से रहित श्वास लेते हुए शब्दायमान मृतकरूप अनेक रंग वाले घोड़ों से पृथ्वी बड़ी शोभायमान हुई, हे भरतर्षभ इसी प्रकार से अर्जुन के हाथ से मरे हुए राजाओं से भी भयानक पृथ्वी महाशोभा को प्राप्तहुई।३५। बड़े शस्त्रों से टूटे रथ ध्वजा और प्रकाशित छत्रों से वा टूटे हुए चामर और व्यजनों से अथवा हार केयूरादिक आभूषणों से युक्त कुंडल धारी शिर अनेक प्रकारकी पताकाओं से, और रथों की अनेक रंगवाली डोरियों से युक्त रथों से ढकीहुई पृथ्वी ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि वसन्त ऋतु में फूलों

and made insensible the elephants fell down with hideons cries. Devoid of trunks and limbs the elephants cried like herons and fell down dead on earth. *The two brothers Nakul and Sahadev faced the squadron of horses* and killed hundreds and thousands of horses decked with gold trappings, filling the ground with their dead bodies The earth looked glorious with the carcases of horses of different colours, tongueless, gasping and neighing. In the same manner, O best of Bharats, the scene on the field of battle was awful on account of the corpses of the kings killed by Arjun. Broken by powerful weapons, the chariots destitute of banners, bright sun shades, fly flappers, fans, garlands and other ornaments, heads decked with earrings, banners of sorts and chariot ropes

योधैन्द्रैश्चैवसरश्मिभिः सङ्कीर्णा वसुधाभाति वसन्ते कुसुमैरिव ॥ ३८ ॥ यथैमेवक्षयो
वृत्त पाण्डूनामपि भारत। क्रुद्धेशान्तनवे भीष्मे द्रोणेचरथसत्तमे ॥ ३९ ॥ अश्वत्थाम्नि
कृपे चैव तथैव कृतवर्मणि। तथेतरेषु क्रुद्धेषु तावकानामपिक्षय ॥ ४० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि अष्टमदिवसयुद्धे
नवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

सजय उवाच॥ वर्तमाने तथा रौद्रे राजन् वीरवरक्षये। शकुनिः सौवल श्रीमान्
पाण्डवान् समुपाद्रवत् ॥ १ ॥ तथैव सात्वतो राजन् हार्दिक्य परवीरहा। अभ्यद्रव
ससग्रामे पाण्डवानामनीकिनीम् ॥२॥ तत काम्बोज मुख्यानां नदीजानाच वाजिनाम्।
आरट्टाना महीजानां सिन्धुजानांच सर्वश ॥ ३ ॥ वनायुजाना शुभ्राणां तथा पर्वतवा
सिनाम्। वाजिनांबहुभिः सख्ये समन्तात् परि वारयन् ॥ ४ ॥ ये चापरे तित्तिरिजा

से शोभित होती है, जिसप्रकार से भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा कृपाचार्य्य और कृतवर्मा इन सबके क्रोधरूप होने से पाण्डवों के शूरवीरों का नाश हुआ उसी प्रकार पाण्डवों के कोपित होने से आपके भी वीरों का नाशहुआ ॥ ४० ॥

अध्याय ९१ ॥

संजय बोले हे राजा इस प्रकार उनउत्तम वीरों के नाशहोनेपर सुवलका पुत्र श्रीमान् शकुनि और शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला यादव कृतवर्मा पाण्डवों की सेना के सम्मुख गया, फिर काम्बोज देशी उत्तम घोडे व नदी के समीप उत्पन्न होनेवाले अरट्ट देशी व सिन्धु देशी आदि सब प्रकार के घोडे और वनायुज देशी श्वेतरूप पहाड़ी घोडे इन सब प्रकारके अनेक घोड़ोंके द्वारा युद्धके चारो ओरको नियत करके दूसरे प्रकार तित्तिरिज वायुके समान वेगवान् सुवर्ण भूषणों से अलङ्कृत श्रेष्ठ

of different colours beautified the earth like flowers in the season of *spring* The destruction of Pandav armies caused by Bhishm, Dronacharya the best of charioteers Ashwathama Kripacharya and Kritvarma was as great as that of your armies caused by angry Pandavas 40

CHAPTER XCI

Sanjaya said —"On the destruction of those warriors, O king, Subal's son shakuni and Kritvarma the Yadav, destroyer of warlike foes, faced the Pandav armies Then with good horses of Camboj of Aratta by the river side and of Sindh, the white horses of mountain forests, stationed all round in the field of battle and with horses of the colour of partridge swift like the wind, decked with gold ornaments, sheathed in armours of the best make Arjun's son Irawan faced that

जवनावातरंहसः। सुवर्णालंकृते रेतैर्वर्मवद्भिः सुकम्पितैः ॥ ५ ॥ हयैर्वातजवैर्मुख्यैः
पाण्डवस्यसुतो बली। अभ्यवर्तत तत्सैन्यं हृष्टरूपः परन्तपः ॥ ६ ॥ अर्जुनस्य सुतःश्री
मां निरावान्नाम वीर्यवान्। स्नुषायां नागराजस्य जातः पार्थेन धीमता ॥ ७ ॥ ऐराव
तेन सा दत्ता अनपत्या महात्मना। पत्यौ हते सुपर्णेन कृपणा दीनचेतना ॥ ८ ॥ भा
र्यार्थं तांच जग्राह पार्थः कामवशानुगाम्। एवमेष समुत्पन्नः परक्षेत्रेऽर्जुनात्मजः ॥ ९ ॥
सनाग लोके संवृद्धो मात्राच परि रक्षित। पितृव्येण परित्यक्तः पार्थद्वेषाद्दुरात्मना
॥ १० ॥ रूपवान् बलसम्पन्नो गुणवान् सत्य विक्रम। इन्द्रलोकं जगामाशु श्रुत्वा
तत्रार्जुनकृतम् ॥ ११ ॥ सोभिगम्य महाबाहुः पितरं सत्य विक्रमः। अभ्यवादयदव्यग्रो
विनयेन कृतांजलिः ॥ १२ ॥ न्यवेदयतचात्मान मर्जुनस्य महात्मनः। इरावानस्मि भद्र
न्ते पुत्रश्चाहं तवप्रभो ॥ १३ ॥ मातुः समागमो यश्च तत् सर्वं प्रत्य वेदयत्। तच्च सर्वं

रचना किये हुए कवचों को धारण करने वाले वायुके समान शीघ्रगामी उत्तम घोड़ों समेत बलवान् रूपवान् श्रीमान् पराक्रमी अर्जुन का पुत्र इरावान् उससेना के सम्मुख हुआ यह इरावान् अर्जुन का पुत्र नाग कन्या में इस रीति से उत्पन्न हुआ था कि ऐरावत नाम नागों के राजाने गरुड़जी से महा दुःखित होकर अर्जुन को अपनी कामवती कन्यादी तब अर्जुनने उस कामासक्त को अपनी स्त्री बनाने के लिये ग्रहण किया इसरीतिसे यह अर्जुन का पुत्र दूसरे के क्षेत्र में उत्पन्न हुआ, वह माता से रक्षित होकर नागलोक में बड़ा हुआ और अर्जुन की शत्रुता से उसके चाचाने उसको पृथक्‌किया१० फिर वह रूपवान् पराक्रमी गुणोंसे संपन्न सत्य पराक्रमी अर्जुन को स्वर्ग में वर्त्तमान सुनकर शीघ्रही इन्द्र लोकको गया, वहां उस सावधान सत्य पराक्रमी ने हाथ जोड़ कर पिता के पास जाकर दण्डवत् की, और अपने को अर्जुन के सम्मुख वर्णन किया कि हे प्रभु आप का कल्याण हो मैं इरावान् नाम आपका पुत्र हूं और जैसे माता का मिलाप हुआ था वह सब वर्णन

army. This Iravan the son of Arjun was born in the daughter of the king of Nagas. For Airavat the king of Nagas, much distressed by Garur, gave his daughter Kamwati to Arjun and the latter accepted her for his wife. Thus this son of Arjun was born in a widow. He was brought up by his mother in the region of Nagas; his uncle being an enemy of Arjun did not take care of him 10. Then that handsome. brave warrior of good qualities, hearing af Arjun's visit to paradise, went to the region of Indra There that wise man of true prowess went to his father and with joined palms having saluted him, introduced himself thus,—"May you be happy, lord," said he, "I am Iravan your son." He related to Arjun how he had met his mother. Then Arjun remembered what had happened, and in the palace of Indra seeing his son to be like himself in good qualities, embraced him cheer-

यथावृत्त मनुसस्मार पाण्डव ॥ १४ ॥ परिष्वज्य सुतञ्चापि आत्मन. सदृश गुणै ।
प्रीतिमान नयत् पार्थो देवराज निवेशने ॥१५॥ सोर्ज्जुनेन समाज्ञप्तो देवलोके तदानृप ।
प्रीति पूर्वं महाबाहुः स्वकार्यं प्रति भारत ॥ १६ ॥ युद्धकाले त्वयास्माक साह्यं देयमि
तिप्रभो । बाढमित्येव मुक्त्वातु युद्धकाल इहागत. ॥ १७ ॥ कामवर्ण जवैरश्वैर्बहुभि.
संवृतो नृप । ते हया कांचनापीडा नानावर्णा मनोजवाः ॥१८॥ उत्पेतु. सहसाराजन्
हंसा इव महोदधौ । ते त्वदीयान् समासाद्य हयसंघान् मनोजवान् ॥ १९ ॥ क्रोडै
क्रोडानभिघ्नन्तो घोणाभिश्च परस्परम् । निपेतु. सहसा राजन् सुवेगाभिहता भुवि
॥ २० ॥ निपतद्भिस्तथा तैश्च हयसंघैः परस्परम् । शुश्रुवे दारुणः शब्दः सुपर्ण पतने
यथा ॥ २१ ॥ तथैव तावका राजन् समेत्यान्योन्य माहवे । परस्परवधं घोरं चक्रस्ते
हयसादिनः ॥ २२ ॥ तस्मिस्तथा वर्तमाने संकुले तुमुले भृशम् । उभयो रपि संशान्ता

किया तब अर्जुन ने उसका यथार्थ वृत्तान्त जैसा हुआ था सब स्मरण किया वह अर्जुन देवराज के भवन के भीतर गुणों में अपने समान पुत्रको देखकर बहुत स्नेहसे मिलकर प्रसन्न हुआ। १५। हे भरत बंशी धृतराष्ट्र तब इन्द्र-लोक में वह महाबाहु इरावान् अर्जुन से बोला कि हे पिता आप मुझे कोई काम कर-ने की आज्ञा दीजिये, अर्जुनने कहा कि हे पुत्र युद्ध के समय तुम को हमारी सहायता करनी उचित है उसकी आज्ञा को स्वीकार करके युद्ध के समय वह उन पूर्वोक्त उत्तम घोड़ों समेत वहां आया। जो अकस्मात् ऐसे ऊंचे होकर चलने लगे जैसे कि महा समुद्रमें हंस चलते हैं वह शीघ्रगामी घोड़े आपके घोड़ों के समूहों को पाकर, अपनी तीव्रता से पृथ्वी पर छाती से छाती को नाकों से नाकों को परस्पर घायल करतेहुये दौड़े।२०। इस रीति सेउस परस्पर दौड़ते हुये घोड़ोंके समूहोंसे ऐसे भयकारी शब्द सुनेगये जैसे कि गरुड़ के गिरने में होते हैं, इसी प्रकार घोड़े के सवारों ने भी परस्पर में मिलकर एक ने एक का नाश किया, इस रीतिके

fully. 15. Then in the region of Indra, Iravan said to Arjun—"Give me some work to do, father." "You must help me in the coming war." replied Arjun. The son accepted the father's offer and in due course came there with those good horses which strode with raised heads like swans in the sea. Those swift horses meeting your own rushed against them, striking with their noses and breasts 20. The sounds made by the rushing of horses against one another were dreadful like the fall of Garur. Then the horsemen meeting together, destroyed one another. When the battle was raging so furiously the horses on both sides ran on all sides The warriors whose arrows were exhausted and the horses were dead, were themselves killed.25. When the squadron of horses was nearly destroyed, the brothers of Shakuni, brave warriors came into the field of battle, riding horses

हयसंघाः समन्ततः ॥ २३ ॥ प्रक्षीणसायकाः शूरा निहताश्वाः श्रमातुराः । विलयंसम नुप्रातास्तक्षमाणाः परस्परम् ॥ २४ ॥ ततः क्षीणे हयानीके किञ्चिच्छेषे च भारत । सौबलस्यानुजाः शूरा निर्गता रणमूर्द्धनि ॥ २५ ॥ वायुवेगसमस्पर्शान् जवे वायु समांश्चते । आरुह्य बलसम्पन्नान् वयःस्थांस्तुरगोत्तमान् ॥ २६ ॥ गजो गवाक्षो वृष भश्चर्मवानार्जवः शुकः । षडेते बलसम्पन्ना निर्ययुर्महतो बलात् ॥ २७ ॥ वार्यमाणाः शकुनिना तैश्च योधैर्महाबलैः । सन्नद्धा युद्धकुशला रौद्ररूपामहाबलाः ॥ २८ ॥ तद नीकं महाबाहो भित्वा परमदुर्ज्जयम् । बलेन महता युक्ताः स्वर्गायाविजयैषिणः २९॥ विविशुस्ते तदा हृष्टा गान्धारा युद्धदुर्मदाः । तान् प्रहृष्टांस्तदा दृष्ट्वा इरावानपि वीर्यवान् ॥ ३० ॥ अब्रवीत् समरे योधान् विचित्रान्दारुणायुधान् । यथैते धार्त्त राष्ट्रस्य योधाः सानुगवाहनाः ॥ ३१ ॥ हन्यन्ते समरे सर्वे तथा नीतिर्विधीयताम् ।

कठिन घोर-तुमुल युद्धके होनेपर दोनों ओर के घोड़ों के समूह भी चारों ओर से भ्रमण करने लगे, जिनके कि बाण अत्यन्त निबट गये और घोड़े भी मारेगये उन शूरवीरों ने नाशको पाया।२५। फिर घोड़ोंकी सेना के नाश होने और कुछ शेष रहजाने पर शकुनी के छोटे भाई महाशूरवीर युद्ध भूमि में वायुके समान तीव्र स्पर्श युक्त और शीघ्रगामीपने में तीव्र वायु के समान प्रसन्न रूप तरुण घोड़ों पर चढ़कर आये, गज, गवाक्ष, वृषभ, चर्मवान्, आर्जव शुक यह छत्रों महावीर गान्धारकुनाद युद्ध में दुर्मद बड़ीसेना समेत महा प्रवीण भयानकरूप अतिबली कवच आदि से अलंकृत शकुनि और अपने बड़े २ वीरों से निषेधित होकरभी विजयाभिलाषी हो उस बड़ी कठिन सेनाको चीरकर स्वर्ग के निमित्त युद्ध में आये उस समय पराक्रमी इरावान् भी उन राजकुमारों को आया हुआ देखकर अपनेशस्त्र आभूषणोंसे अलंकृत वीर पुरुषोंसे बोला।३०। कि जिस प्रकार से दुर्य्योधन के यह सब शूरवीर मारेजायँ वही काम तुमको करना उचित है यह

swift as the wind cheerful and youthful. Gaj, Gawaksh, Vrishabh Charmvan, Arjav and Shuk, the brave warriors of Gandhar, invincible in battle, followed by a large army, very wise, dreadful, very strong, armed with arms and armours, although forbidden by Shakuni and other great warriors, came into the field of battle desirous of paradise, passing through the inpregnable forces. Valliant Iravan, seeing the advance of those princes addressed his warriors decked with arms and ornaments:—"You should cause the destruction of all these warriors of Duryodhan." Iravan's soldiers obeyed his orders and destroyed their armies. Seeing the destruction of their warriors by those of Iravan, the sons of Suval, of unbearable temper surrounded him on all sides and rushed upon him with their clubs and battle axes. 35. Wounded by those warriors and bleeding, Iravan looked like an elephant

बाढमित्येवमुक्त्वा ते सर्वे योधा इरावतः ॥३२॥ जघ्नुस्ते पार्थिवानीकं दुर्जयं समरे परैः । तदनीकमनीकेन समरे वीक्ष्य पातितम् ॥३३॥ अमृष्यमाणास्ते सर्वे सुबलस्यात्मजा रणे। इरावन्तमभिद्रुत्य सर्वतः पर्य्यवारयन् ॥ ३४ ॥ ताडयन्तः शितैः प्रासैश्चोदयन्तः परस्परम् । ते शूराः पर्य्यधावन्त कुर्वन्तो महदाकुलम् ॥ ३५ ॥ इरावानथ निर्भिन्नः प्रासैस्तीक्ष्णैर्महात्मभिः । स्रवता रुधिरेणाक्तस्तोत्रैर्विद्ध इव द्विपः ॥ ३६ ॥ पुरतोपि च पृष्ठे च पार्श्वयोश्च भृशाहतः। एको बहुभिरत्यर्थं धैर्य्याद्राजन्न विव्यथे ॥ ३७ ॥ इरावानपि संक्रुद्धः सर्वांस्तान्निशितैः शरैः । मोहयामास समरे विद्ध्वा परपुरंजय ॥ ३८ ॥ प्रासानुत्कृष्य तरसा स्वशरीरादरिन्दम । तैरेव ताडयामास सुबलस्यात्मजा न्रणे ॥ ३९ ॥ विकृष्य च शितं खड्गं गृहीत्वा च शरावरम्। पदातिर्द्रुतमागच्छज्जिघांसुः सौबलान् युधि ॥ ४० ॥ ततः प्रत्यागतप्राणाः सर्वे ते सुबलात्मजाः । भूय क्रो

सुनकर इरावान् के शूरों ने अंगीकार करके, उन्होंकी दुर्जन सेनाको मारा युद्ध में इस सेना से मारीहुई अपनी सेनाको देखकर, महा असहिष्णु सुबलके पुत्रों ने इरावान् को चारों ओरसे घेरलिया और बड़े परशों से और परिघोंसे प्रहार करते हुए उनके ऊपर दोड़े ।३५। इरावान्भी उन वीरोंसे घायल रुधिरमें डूबाहुआ ऐसा विदित हुआ जैसे कि दण्डों से घायल हाथी होताहै, हे राजा वह अकेला उनसब से हाथ छाती पीठ और कुक्षिपर घायल होने पर भी पीड़ित नहीं हुआ, फिर शत्रु के पुरको विजय करने वाले अत्यन्त क्रोधयुक्त इरावान् ने भी उन सबको अपने तीक्ष्ण बाणों से घायल किया, फिर उस शत्रुहन्ताने अपने शरीर में से सब परशों को उखाड़कर उन्ही परशों से सुबलके पुत्रों को घायल किया, इसके पीछे अपने तीक्ष्ण खड्ग और ढालको धारण करके बड़ी शीघ्रता से उन सुबलके पुत्रों के मारनेको पैदलहीगया ४० फिर चैतन्यहोकर क्रोधमें भरेहुए वह सब सुबलके पुत्रभी इरावान्के सम्मुख गये तब तो इरावान् अपने खड्गकी हस्तलाघवता को दिखलाता

wounded by staffs Wounded by them on his arms, breast, back and sides, he was not disheartened in spite of his being alone against so many. Then Iravan the conqueror of enemies in great anger wounded them all with his arrows. And that destroyer of enemies having removed weapons from his body, wounded the sons of Suval with their own weapons Then taking up his sharp sword and shield, he quickly rushed on foot to slay the sons of Suval 40 The enraged sons of Suval carefully encountered Iravan who rushed against them all showing the dexterity of his hand. All those princes, riding their carriage, could not match him in swiftness of movement and surrounding him on all sides, they desired to capture him But singly he went to them and cut down their limbs 46. They all died of the wounds except one of them who escaped with his life by the great exertion of his

घसमाविष्टा इरावन्तमभिद्रुता ॥ ४१ ॥ इरावानपि खड्गेन दर्शयन् पाणिलाघवम् । अभ्यवर्त्तत तान् सर्वान् सौबलान् बलदर्पितान् ॥ ४२ ॥ लाघवेनाथ चरत सर्वे त सुबलात्मजा । अन्तरं नाभ्यगच्छन्त चरन्तं शीघ्रगेऽहवे ॥ ४३ ॥ भूमिष्ठमथ तं सर्वे सम्प्रदृश्य तत पुन । परिवार्य भृशं सर्वे गृहीतुमुपचक्रमु ॥ ४४ ॥ अथाभ्यास गताना स खड्गेनामित्रकर्षण । असिहस्ताथापहस्तांस्तेषा गात्राण्यकृन्तत ॥ ४५ ॥ आयुधानि च सर्वेषा बाहूनापितं भूषितान् । अपतन्त विद्यताङ्गा मृता भूमौ गतासव ॥ ४६ ॥ वृषभस्तु महाराज बहुधा परिरक्षित । अमुच्यत महारौद्रात्तस्मादीरा वकर्त्तनात् ॥ ४७ ॥ तान् सर्वान् पतितान् दृष्ट्वा सुना दुर्योधनस्तिथ अभ्यभा षत सक्रुद्धो राक्षसघोरदर्शनम् ॥ ४८ ॥ आर्ष्यशृङ्ग महेष्वास मायाविनमरिन्दमम् । वैरिणं भीमसेनस्य पूर्वतवकवधेन वै ॥४९॥ पश्यवीर यथाह्येष फाल्गुनस्य सुतोबली ।

हुआ उन सबके सम्मुख दौडा, उस समय उन सब पुत्रों ने अपनी शीघ्र गामी सवारियों सेभी उसकी तीव्रताको नहीं पाया, फिर उसको घेरकर सबने पक डना चाहा, परन्तु उस अकेले महाबली नेही पासजाकर उनसब खड्गधनुप धारियों के अंगोंको काटा और अंगों के कटतेही वहसब मृतक होकर पृथ्वीपर गिरे ।४६। हे महाराज इनमें से एक वृषभही इस घोर रुद्र युद्धमें से बडी सहायताओं से बचा। फिर आपका पुत्रइन शूरवीरोंको मराहुआ देखकर महाक्रोध में भराहुआ महावली शत्रुहन्ता मायावी आर्ष्यशृंग राक्षस जो कि बकासुर के वध में भीमसेनका शत्रुथा उस से बोला, हे वीर देखो जैसे कि इसपराक्रमी और मायावी अर्जुन के पुत्र ने विजयकर्म से सेनाके नाश को किया है सो हे तात तूभी इच्छानुचारी मायावी अस्त्र विद्या में कुशलहै।५०। और पांडवोंसे शत्रुता करनेवाला है इस हेतुसे इस इरावान् को युद्ध में तुम मारो, उसकी आज्ञापातेही वह घोररूप राक्षस बडा सिंहनाद करता हुआ अर्जुन के पुत्र के पास गया और दोसहस्र युद्धसे शेप बचेहुए घोडों से महाबली इरावान के मारने का अभिलाषी हुआ, फिर अत्यन्त पराक्रमी शत्रुहन्ता

assistants Seeing those warriors dead, your son, much enraged said to the deceitful rakshas, Aryashring the mighty destroyer of foes who was Bhim's adversary at the time of his killing Vakasur —"Look here, brave warrior! You are cunning, skilful in war, capable of going everywhere at will and an enemy to the Pandavas 50 Kill Iravan in battle as that brave and cunning son of Arjun has conqured and destroyed my armies " At Duryodhan's command, the dreadful rakshas rushed upon Arjun's son with a tremendous roar, wishing to destroy him and his two thousand horse which remained with him after the last battle 55 Dexterous Iravan the mighty destroyer of foes, checked the rakshas desirous of killing him Soon the brave rakshas, seeing his advance, artfully conjured up rakshas' horsemen armed with weapons, and meeting the two thousand horsemen of Iravan both parties des

मायावी विप्रिय घोरं माकार्षीन्मे बलक्षयम् ॥ ५० ॥ तच्च कामगमस्तात मायास्त्रे च विशारदः । कृतवैरश्च पार्थेन तस्मादेनं रणे जहि ॥ ५१ ॥ बाढमित्येवमुक्त्वातु राक्षसो घोर दर्शन । प्रययौ सिंहनादेन यत्रार्जुनसुतो युवा ॥ ५२ ॥ आरूढैर्युद्धकुशलैर्विमल-प्रासयोधिभिः । वीरैः प्रहारिभिर्युक्तैः स्वैरनीकैः समावृत. ॥ ५३ ॥ तत. शेषैर्महा राज द्विसाहस्रैर्हयोत्तमैः । निहन्तुकामः समरे इरावन्त महाबलम् ॥ ५४ ॥ इरा वानपि संक्रुद्धस्त्वरमाण. पराक्रमी । हन्तुकामममित्रघ्नो राक्षसं प्रत्यवारयत् ॥ ५५ ॥ तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य राक्षस सुमहाबलः । त्वरमाणस्ततो मायां प्रयोक्तुमुपचक्रमे ।५६। तेन मायामयाः सृष्टा हयास्तावन्तएवहि । आरूढा राक्षसैर्घोरैः शूलपट्टिशपाणिभिः ॥ ५७ ॥ ते संरब्धा. समागम्य द्विसाहस्राः प्रहारिणः । अचिरादूगमयामासु. प्रेतलोकं परस्परम् ॥ ५८ ॥ तस्मिंस्तु निहते सैन्ये तावुभौ युद्धदुर्मदौ । संग्रामे व्यवतिष्ठितां यथा वै वृत्रवासवौ ॥ ५९ ॥ आद्रवन्तमभिप्रेक्ष्य राक्षसं युद्धदुर्मदम् । इरावान् क्रोधसंरब्धो धारयन् सुमहाबलः ॥ ६० ॥ समभ्यासगतस्याजौ तस्य खड्गेन

शीघ्रता करनेवाले इरावान्‌ने अपने मारने के इच्छावान उस राक्षसको रोका ।५५। इसके अनन्तर शीघ्रता से बड़े महाबली राक्षस ने उस आते हुए को देखकर मायाको प्रकट किया, अर्थात उस ने उतनेही मायारूपी घोड़े जिनपर शूल पट्टिश धारण किये हुए घोर राक्षस सवार थे प्रकट किये; फिर उन दो हजार क्रोधकर प्रहार करनेवालों ने सम्मुख होकर थोड़ेही समय में परस्पर युद्ध करके एकने एकको प्रेतलोकमें भेजा, उस सेनाके मरने पर वह युद्ध में दुर्मद दोनों ऐसे युद्ध करने लगे जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रने युद्धकिया था, उस युद्ध में दुर्मद राक्षस को सम्मुख आया हुआ देखकर महाबली इरावान् बड़े क्रोधसे उसके ऊपर दौड़ा ।६०। और उस निर्बुद्धी के धनुषको अपने खड्ग से काटकर पांच प्रकार के पांच बाणों से व्याकुल किया, फिर वह अपने धनुषको टूटा जानकर बड़े क्रोधसे इरावान् को अपनी माया से मोहित करके बड़ी तीव्रतासे आकाश में पहुँचा, इस

troyed each other. On the destruction of the two armies, the two warriors fought like Indra and Vritrasur. Seeing the brave rakshas before him, brave Iravan rushed upon him, and cutting down his bow with his sword he wounded him with five arrows of five sorts57. Finding his bow broken, in great anger he deprived Iravan of his reasoning and ascended in the air with great rapidity. Iravan too, followed him in mid air and cut down his limbs. That best of rakshases, wounded again and again became whole of body and youthful in appearance like Iravan who knew all Dharm and was invincible and beautiful. The *maya* produced from the bodies of rakshases is youthful and assumes any form at will. Thus the body of that rakshas, cut again and again, became whole When Iravan cut the body of the brave rakshas with arrows and axes again and again, he assumed a form

राजंस्तव तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्नर्जुनथापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे शूरान् राजस्तान् भीष्म रक्षिण- ॥ ८२ ॥ तथैव तावका राजन् सृञ्जयाश्च सहसूराः । जुहुवतः समरे प्राणान्निजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विकवचा विरथा श्छिन्नकार्मुका । बाहुभिः समयुध्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निजघान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥ तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्यच भारत । रौद्रमासीद्रणेयुद्धं सात्यकस्यच धन्विनः ॥८८॥ दृष्ट्वा द्रौणस्य विक्रांतं पाण्डवान्भयमा विशत् । एक एव रणे शक्तोनिहन्तु सर्व सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुन- पृथिव्या शूरैर्योधव्रातै समावृतः । इत्यब्रुवन् महाराज रणे द्रोणेन पीडिता ॥९०॥ वर्त्तमाने तथा रौद्रे सग्रामेभरतर्षभ । उभयोः सेनयोःशूरा नामृष्यन्त परस्परम् ॥९१॥ आविष्टा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहाबलाः । तावका पाण्डवे

इसी रीति से उसयुद्धमें प्राणों को होमकर सृंजी लोगों ने आपके शूरवीरों को परस्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन टूटे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूरवीर भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये परन्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी बाणोंसे महारथियोंको मारा ।८५। उनभीष्मजी के हाथमें युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको जाना और इसीप्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्द्धारि सात्यकीकाभी युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य्य सब सेनाओं के मारने को समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में असहिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishm' Seeing the great prowess of Bhishm, we thought him to be equal in stength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrishtadyumn and Satyaki the great archer fought very bravely. At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capalle of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world When the battle was thus rag'ng, the warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

राजंस्तव तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्नर्जुनश्चापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे शूरान् राजस्तान् भीष्म रक्षिण. ॥ ८२ ॥ तथैव तावका राजन् सृञ्जयाश्च सहस्रश. । जुह्वतः समरे प्राणान्निजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विकवचा विरथा श्छिन्नका र्मुका । बाहुभिः समयुध्यन्त सम वेता. परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां ,पाण्डवानांपरंतप. ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे सैन्ये वहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥ तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्यच भारत । रौद्रमासीद्रणेयुद्धं सात्यकस्यच धन्विन ॥८८॥ दृष्ट्वा द्रोणस्य विक्रांत पाण्डवानभयमा विशत् । एक एव रणे शक्तोनिहन्तु सर्व सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुन पृथिव्या शूरैर्योधव्रातै समावृतः । इत्यब्रुवन् महाराज रणे द्रोणेन पीडिता ॥९०॥ वर्त्तमाने तथा रौद्रे सग्रामेभरतर्षभ । उभयो. सेनयो.शूरा नामृष्यन्त परस्परम् ॥९१॥ आविष्टा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहाबलाः । तावका.पाण्डवे

इसी रीति से उसयुद्धमें प्राणों को होमकर सृंजी लोगों ने आपके शूरवीरों को परस्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन टूटे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूरवीर भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये परन्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी वाणोंसे महारथियोंको मारा ।८५। उनभीष्मजी के हाथमें युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत वंशी! वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको जाना और इसप्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्द्धारि सात्यकीकाभी युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य्य सब सेनाओं के मार नेको समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में असहिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishm' Seeing the great prowess of Bhishm, we thought him to be equal in strength to Indra In the same manner, Bhimsen, Dhrishtadyumn and Satyaki the great archer fought very bravely At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capable of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world When the battle was thus raging, the warriors on both sides fought recklessly Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

राजस्तव तेषांच सकुले ॥ ८१ ॥ अज्ञानन्तर्जुनथापि निहत पुत्रमौरसम् । जघान समरे शूरान् राक्षसतान् भीष्म रक्षिण ॥ ८२ ॥ तथैव तावका राजन् सृञ्जयाश्च सहस्रश. । जुहुवत. समरे प्राणाज्जिघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विकवचा विरथा श्छिन्नकार्मुका । बाहुभि. समयुध्यन्त सम वेता परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निजघान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरतप ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिन. सादिनश्चैव रथिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥ तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्यच भारत । रौद्रमासीद्रणेयुद्ध सात्यकस्यच धन्विन ॥८८॥ दृष्ट्वा द्रोणस्य विक्रान्त पाण्डवान्भयमा विशत् । एक एव रणे शक्तोनिहन्तु सर्वे सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुन पृथिव्या शूरैर्योधव्रातै समावृत. । इत्यब्रुवन् महाराज रणे द्रोणेन पीडिता ॥९०॥ वर्त्तमाने तथा रौद्रे सग्रामेभरतर्षभ । उभयो. सेनयो. शूरा नामृष्यन्त परस्परम् ॥९१॥ आविष्टा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहाबला । तावका.पाण्डवे

इसी रीति से उसयुद्धमें प्राणों को होमकर सृंजी लोगों ने आपके शूरवीरों को परस्पर में मार, नगेशिर कवचों से रहित रथहीन टूटे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूरवीर भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कपाते हुये परन्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी वाणोंसे महारथियोंको मारा ।८५। उनभीष्मजी के हाथसे युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको जाना और इसीप्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्द्धार सात्यकीकाभी युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य्य सब सेनाओं के मार नेको समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में असहिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishm Seeing the great prowess of Bhishm, we thought him to be equal in strength to Indra In the same manner, Bhimsen, Dhrishtadyumn and Satyaki the great archer fought very bravely At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capable of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world When the battle was thus raging, the warriors on both sides fought recklessly Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

राजंस्तव तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ अज्ञानन्तर्जुनश्चापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिण. ॥ ८२ ॥ तथैव तावका राजन् सृञ्जयाश्च सहस्रशः । जुह्वतः समरे प्राणान्निजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विकवचा विरथा श्छिन्नका र्मुका । बाहुभिः समयुध्यन्त सम वेता. परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतप. ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे सैन्ये वहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥ तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्य च भारत । रौद्रमासीद्रणेयुद्धं सात्यकस्यच धन्विन. ॥८८॥ दृष्ट्वा द्रोणस्य विक्रान्तं पाण्डवान्भयमा विशत् । एक एव रणे शक्तोनिहन्तु सर्व सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः पृथिव्या शूरैर्योधव्रातै समावृतः । इत्यब्रन् महाराज रणे द्रोणेन पीडिता. ॥९०॥ वर्त्तमाने तथा रौद्रे संग्राममरर्तषम । उभयोः सेनयोःशूरा नामृष्यन्त परस्परम् ॥९१॥ आविष्टा इव युध्यन्ते रक्षांसिनामहावलाः । तावकाःपाण्डवे

इसी रीति से उसयुद्ध में प्राणों को होमकर सृञ्जी लोगों ने आपके शूरवीरों को परस्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन टूटे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूरवीर भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये परन्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी वाणोंसे महारथियोंको मारा ।८५। उनभीष्मजी के हाथसे युधिष्ठिरकी सेनाके वहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको जाना और इसी प्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्द्धारि सात्यकीकाभी युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य्य सव सेनाओं के मार ने को समर्थ है तो सवपृथ्वी के वड़े २ पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में असहिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishm' Seeing the great prowess of Bhishm, we thought him to be equal in stength to Indra In the same manner, Bhimsen, Dhrishtadyumn and Satyaki the great archer fought very bravely. At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capable of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world When the battle was thus raging, the warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

राजंस्तव तेषांच संकुले ॥८१॥ अजानन्नर्जुनश्चापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे शूरान् राक्षसान् भीष्म रक्षिण॥८२॥ तथैव तावका राजन् सृञ्जयाश्च सहसूशः । जुह्वतः समरे प्राणान्निजघ्नुरितरेतरम् ॥८३॥ मुक्त केशा विकवचा विरथा श्छिन्नका र्मुका। बाहुभिः समयुध्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥८४॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानां परंतप ॥ ८५॥ तेन यौधिष्ठिरे सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥ तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्य च भारत। रौद्रमासीद्रणेयुद्धं सात्यकस्यच धन्विनः ॥८८॥ दृष्ट्वा द्रोणस्य विक्रांत पाण्डवान्भयमा विशत् । एक एव रणे शक्तोनिहन्तु सर्व सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः पृथिव्यां शूरैर्योधव्रातै समावृतः । इत्यब्रुवन् महाराज रणे द्रोणेन पीडिता ॥९०॥ वर्त्तमाने तथा रौद्रे संग्रामेभरतर्षभ । उभयोः सेनयोःशूरा नामृष्यन्त परस्परम् ॥९१॥ आविष्टा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहाबलाः । तावका:पाण्डवे

इसी रीति से उसयुद्धमें प्राणों को होमकर सृंजी लोगों ने आपके शूरवीरों को परस्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन टूटे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूरवीर भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये परंतप भीष्मजी ने मर्म भेदी बाणोंसे महारथियोंको मारा।८५। उनभीष्मजी के हाथसे युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको जाना और इसप्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्द्धार सात्यकीकाभी युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य्य सब सेनाओं के मारने को समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में असहिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishm' Seeing the great prowess of Bhishm, we thought him to be equal in strength to Indra In the same manner, Bhimsen, Dhrishtadyumn and Satyaki the great archer fought very bravely. At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capable of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world When the battle was thus raging, the warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

राजंस्तव तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्नर्जुनश्चापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे शूरान् राजंस्तान् भीष्म रक्षिण- ॥ ८२ ॥ तथैव तावका राजन् सृञ्जयाश्च सहस्रशः । जुह्वतः समरे प्राणान्निजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विकवचा विरथा श्छिन्नका र्मुका. । बाहुभिः समयुध्यन्त सृञ्जयाः कुरुभिः सह ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥ तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्यच भारत । रौद्रमासीद्रणेयुद्धं सात्य कस्यच धन्विन. ॥८८॥ दृष्ट्वा द्रोणस्य विक्रान्तं पाण्डवान्भयमा विशत् । एक एव रणे शक्तोनिहन्तु सर्व सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुन. पृथिव्या शूरैर्योधव्रातै समावृतः । इत्यब्रुवन्- महाराज रणे द्रोणेन पीडिता ॥९०॥ वर्त्तमाने तथा रौद्रे संग्रामेभरतर्षभ । उभयोः सेनयोःशूरा नामृष्यन्त परस्परम् ॥९१॥ आविष्टा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहाबलाः । तावकाःपाण्डवे

इसी रीति से उसयुद्धमें प्राणों को होमकर सृंजी लोगों ने आपके शूरवीरों को परस्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन टूटे धनुप परस्परमें भिड़ेहुये शूरवीर. भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये परन्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी बाणोंसे महारथियोंको मारा ।८५। उनभीष्मजी के हाथमे युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको जाना और इसीप्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्द्धर सात्यकीकाभी युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य्य सब सेनाओं के मार नेको समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में असहिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishm' Seeing the great prowess of Bhishm, we thought him to be equal in stength to Indra In the same manner, Bhimsen, Dhrishtadyumn and Satyaki the great archer fought very bravely. At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capable of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world When the battle was thus raging, the warriors on both sides fought recklessly Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

तादृशीं मायां राक्षसस्य दुरात्मन ॥ ७१ ॥ इरावानपि संक्रुद्धो मायां स्रष्टुं प्रचक्रमे । तस्य क्रोधाभि भूतस्य समरेष्व निवर्तिन ॥ ७२ ॥ योन्वयो मातृकस्तस्य स पन्नमभि पेदिवान् । स नागैर्बहुभी राजन् निरावान् संवृतो रणे ॥ ७३ ॥ दधार सुमहद्रूपमनन्त इव भोगवान् । ततो बहुविधैर्नागैश्छादयामास राक्षसम् ॥ ७४ ॥ छाद्यमानस्तु नागैः स ध्यात्वा राक्षसपुंगवः । सौपर्ण रूपमास्थाय भक्षयामास पन्नगान् ॥ ७५ ॥ मायया भक्षिते तस्मिन् नन्वये तस्य मातृके । विमोहित मिरावन्त' न्यहनद्राक्षसोसिना ॥७६॥ सकुण्डलं समुकुटं पद्मेन्दुसदृशप्रभम । इरावत शिरो रक्ष पातयामास भूतले ॥ ७७ ॥ तस्मिस्तु निहते वीरे राक्षसेनार्जुनात्मजे । विशोका समपद्यन्त धार्त्तराष्ट्राः सराजकाः ॥ ७८ ॥ तस्मिन् महति संग्रामे तादृशे भैरवे पुनः । महान् व्यतिकरो घोरः सेनयोः समपद्यत ॥ ७९ ॥ गजा हयाः पदाताश्च विमिश्रादन्ति भिर्हताः । रथाश्वा दन्तिनश्चैव पत्तिभिस्तत्र सूदिताः ॥ ८० ॥ तथा पत्तिरथौघाश्च हयाश्च बहवो रणे । रथिभिर्निहता

हे राजा बहुतसे सर्पोंसे युक्त उस इरावान ने शेषनाग के समान अपने महान् रूप को धारण किया और अनेक नागों से उसराक्षसको घेरा, फिर उस राक्षसों में श्रेष्ठने अपना गरुड़रूप धारण करके उनघिरेहुए सर्पोंको खाया ।७५। माया से उसके ननसारी सर्पोंके भक्षणहोजानेपर वह इरावान् अचेत हुआ फिर उस अत्यन्त मोहित इरावान् को राक्षस ने खड्ग से मारकर उसके कुंडल मुकुटधारी चन्द्रमाके समान प्रकाशमान शिर को पृथ्वीपर गिराया उसराक्षसके हाथ से उस इरावान के मरने पर धृतराष्ट्र के सब पुत्र शोकसे निवृत्त होकर बड़े प्रसन्नहुए, फिर उस भयकारी महायुद्ध में दोनों सेनाओं का घोर नाश होना प्रारंभहुआ रथ हाथी घोड़े पदाती सवार वह सब परस्पर में युद्ध कर करके और पत्तियों के हाथों से नाशको प्राप्तहुये । ८० । इसी प्रकार उसतुमुल युद्ध मेंआपके और उन्होंके अनेक घोड़े पति और रथियों के समूह रथियों के हाथों से मारे गये, और उस पुत्रको मृतक न जाननेवाले अर्जुन ने भी भीष्मजी के रक्षक उन शूरवीर राजाओं को मारा

Iravan by the rakshas all the sons of Dhritrashtra relieved of sorrows, were much pleased. Then in that dreadful war a terrible destruction of armies began. Chariots, elephants, horses and foot-soldiers were destroyed by the warriors In that dreadful battle the horses, warriors and charioteers of both sides were destroyed by the charioteers.80. Not knowing of the death of his son, Arjun too, destroyed the princes who protected Bhishm. The Srinjayas, sacrificing their lives in that great battle, destroyed your warriors. Warriors destitute of helmets, armours, chariots and bows fought against one another with fists. Striking the Pandav armies, mighty Bhishm killed the warriors with his arrows piercing the vital parts 85 Many charioteers, elephant riders, horse and foot soldiers of Yudhishthir's army were destroyed by

राजंस्तव तेषांच संकुले ॥८१॥ अज्ञानन्नर्जुनश्चापि निहतं पुत्रमौरसम्। जघान समरे शूरान् राक्षसान् भीष्म रक्षिणः ॥८२॥ तथैव तावका राजन् सृञ्जयाश्च सहस्रशः। जुह्वतः समरे प्राणान्निजघ्नुरितरेतरम् ॥८३॥ मुक्त केशा विकवचा विरथा श्छिन्नकार्मुकाः। बाहुभिः समयुध्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥८४॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निजघान महारथान्। कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः॥ ८५॥ तेन यौधिष्ठिरे सैन्ये बहवो मानवा हताः। दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोथ हयास्तथा ॥८६॥ तत्रभारत भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम्। अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७॥ तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्य च भारत। रौद्रमासीद्रणेयुद्धं सात्यकस्यच धन्विनः॥८८॥ दृष्ट्वा द्रोणस्य विक्रांतं पाण्डवान्भयमा विशत्। एक एव रणे शक्तोनिहन्तुं सर्व सैनिकान् ॥८९॥ किं पुनः पृथिव्या शूरैर्योधव्रातै समावृतः। इत्यब्रुवन् महाराज रणे द्रोणेन पीडिता ॥९०॥ वर्त्तमाने तथा रौद्रे संग्रामेभरतर्षभ। उभयोः सेनयोःशूरा नामृष्यन्त परस्परम् ॥९१॥ आविष्टा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहाबलाः। तावकाःपाण्डवे

इसी रीति से उसयुद्धमें प्राणों को होमकर सृंजी लोगों ने आपके शूरवीरों को परस्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन टूटे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूरवीर भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये परन्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी बाणोंसे महारथियोंको मारा ।८५। उनभीष्मजी के हाथसे युधिष्ठिरकी सेनांके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको जाना और इसप्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्द्धर सात्यकीकाभी युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस प्रकारको महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य्य सब सेनाओं के मारने को समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में असहिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishm Seeing the great prowess of Bhishm, we thought him to be equal in stength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrishtadyumn and Satyaki the great archer fought very bravely. At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capable of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world When the battle was thus raging, the warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

याश्च संरब्धास्तात धन्विनः ॥ ९२ ॥ नस्म पश्यामहे कंचित् प्राणान्यःपरिरक्षति । संग्रामे दैत्यसंकाशे तस्मिन् वीरवरक्षये ॥ ९३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि अष्टमदिवसयुद्धे एकनवतितमोऽध्यायः ॥ ९१ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । इरावन्तन्तु निहतं दृष्ट्वा पार्थामहारथाः । संग्रामे किमकुर्वन्त तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । इरावन्तन्तु निहतं संग्रामे वीक्ष्यराक्षस । व्यनदत् सुमहानादं भैमसेनिर्घटोत्कचः ॥ २ ॥ नदतस्तस्य शब्देन पृथिवीसागराम्बरा । स पर्वतवना राजंश्चचाल सुभृशं तदा ॥ ३ ॥ अन्तरीक्षं दिशश्चैव सर्वाश्च प्रदिशस्तथा । तं श्रुत्वा सुमहानादं तव सैन्यस्य भारत ॥ ४ ॥ ऊरुस्तम्भः समभवद्वेपथुः स्वेद एवच । सर्व एव महाराज तावका दीनचेतसः ॥ ५ ॥ सर्वतः समवेष्टन्त

युद्ध करते हैं हमने उस देव दानवों के युद्धकी समान संग्राममें किसी को ऐसा न देखा जो अपने प्राणों की रक्षाकरताहो ९३ ॥

अध्याय ९२ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें इरावान् को मरा देखकर पांडवों ने क्या किया उस को मुझ से कहो, संजयबोले कि भीमसेन का पुत्र घटोत्कच राक्षस उस इरावान्को युद्धमें मराहुआ देखकर महाध्वनि से गर्जा, उसकी गर्जना से पर्वत और समुद्रों समेत पृथ्वी चलायमान हुई, और दिशा विदिशाओं समेत आकाश भी शब्दायमान हुआ और उस महाघोर शब्दको सुनकर आपकी सेना में भी सबको प्रस्वेद हुआ और सब वीर महाखेदित होकर सब ओरसे ऐसे भयभीत हुए जैसे कि सिंहसे भयभीत हाथी होते हैं, उस राक्षस ने इसघोर शब्दको करके, महाज्वलित रूप

We saw none caring for his life in that battle like that of the gods and the danavas 93

CHAPTER XCII

"Tell me Sanjaya," asked Dhritrshtra, "how the Pandavas behaved at seeing Irawan dead." "Bhim's son, Ghatotkach the rakshas," replied Sanjaya, "roared a loud roar at the death of Iravan The earth with her mountains and seas trembled with his roar, and all the directions in the sky rang with the echo. The bodies of your warriors were covered with sweat to hear that dreadful sound. The warriors of your army were afraid of that sound as elephants are at the roar of a lion Having made that roar the rakshas lifted up his spear, and in a dreadful form, accompanied by armed rakshases, enraged like Death, began to strike Seeing that

सिंहाद्रीता गजा इव सुमहानादं निर्घातमिव राक्षसः ॥ ६ ॥ ज्वलितं शूलमुद्यम्य रूपं कृत्वा विभीषणम् । नानारूपप्रहरणैर्वृतो राक्षसपुङ्गवैः ॥ ७ ॥ आजघान सुसं क्रुद्धः कालान्तकयमोपमः । तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य संक्रुद्ध भीमदर्शनम् ॥ ८ ॥ स्वं बलञ्च भयात्तस्य प्रायशो विमुखीकृतम् । ततो दुर्योधनोराजा घटोत्कच मुपाद्रवत् ॥ ९ ॥ प्रगृह्य विपुलं चापं सिंहवद्व्यनदन्मुहु । पृष्ठतोनुययौ चैनं स्रवद्भिः पर्वतोपमैः ॥ १० ॥ कुञ्जरैर्दशसाहस्रैर्वङ्गानामधिपः स्वयम् । तमापतन्तं संप्रेक्ष्य गजानीकेन संवृतम् ॥ ११ ॥ पुत्रंतव महाराज चुकोप स निशाचरः । ततः प्रववृते युद्ध तुमुलं लोमहर्षणम् ॥ १२ ॥ राक्षसानाञ्च राजेन्द्र दुर्य्योधनबलस्यच । गजानीकञ्च सम्प्रेक्ष्य मेघवृन्दामिवोद्यतम् ॥ १३ ॥ अभ्यधावन् सुसंक्रुद्धा राक्षसाः शस्त्रपाणयः । नदन्तो विविधान्नादान्मेघा इव सविद्युतः ॥ १४ ॥ शरशक्त्यृष्टिनाराचैर्निघ्नन्तो गजयोधिनः । भिन्दिपालैस्तथ

शूलको धारण कर उग्ररूप होके नाना प्रकार के रूप और शस्त्रधारी राक्षसों को सायलिये काल मृत्यु के समान क्रोधी होकर मारना प्रारंभकिया इसक्रोधयुक्त भयानक रूप राक्षसको आता देखकर, और उसके भयसे अपनी सेना का मुख फेरना देखकर राजा दुर्य्योधन बड़े भारी धनुषको लेकर सिंह के समान गर्जना करता हुआ घटोत्कचके सम्मुख गया इसके पीछे बंगदेशियों का राजा चलते हुए पर्व्वताकार दशहजार हाथियों को सायलेकर गया उस हाथियों की सेना समेत आपके पुत्रको देखकर वह राक्षसमहाक्रोधाग्निरूप होगया ।११। फिर रोमहर्षण महातुमुल युद्ध जारिहुआ, उस समय राक्षसों से और आपकी सेनासे युद्धहोनेलगा फिर बादलों के समूहों के समान युद्ध में प्रवृत्त हाथियों की सेना को देखकर, बिजली से अनेक शस्त्रों को धारण किये हुए बादलों के समान गर्जनाकरते हजारों राक्षस सम्मुखदौड़े, बाण बरछी दुधारासड्ग नाराच भिन्दिपाल शूल मुद्गर और परशे

angry rakshas of dreadful visage coming towards him and seeing as well the return of his army by his fear, Prinee Duryodhan took up his heavy bow and with a lion's roar faced Ghatotkach Then the king of Bang with ten thousands of elephents like moving hills, went to the help of your son. Seeing Duryodhan accompanied by that army of elephants, the rakshas becamefred like fire with anger.11. Thereupon a furious battle ensued between your armies and the rakshases Spread like a mass of clouds was the army of elephants to which the rakshases came armed with weapons like lightning and roaring like thunder. Arrows, spears, double edged swords, naraches, Bhindpals, darts; clubs and battle axes were used by the aakshases to destroy the riders and hills and trees to destroy the elephants. We saw, O king, elephants with heads broken by the rakshases, falling down on earth with the loss of blood. When the elephants,

शूलैर्मुद्गरै सपरश्वधैः ॥ १५ ॥ पर्वताग्रैश्च वृक्षैश्च निजघ्नुस्ते महागजान् । भिन्नकुम्भान् विरुधिरान् भिन्नगात्रांश्च वारणान् ॥ १६ ॥ अपश्याम महाराज वध्यमानान्निशाचरैः । तेषु प्रक्षीयमाणेषु भग्नेषु गजयोधिषु ॥ १७ ॥ दुर्य्योधनो महाराज राक्षसान् समुपाद्रवत् । अमर्षवशमापन्नस्त्यक्त्वा जीवितमात्मनः ॥ १८ ॥ मुमोच निशितान् बाणान् राक्षसेषु परन्तप जघान च महेष्वासः प्रधानांस्तत्र राक्षसान् ॥ १९ ॥ सक्रुद्धो भरतश्रेष्ठ पुत्रो दुर्य्योधनस्तव । वेगवन्तं महारौद्रं विद्युज्जिह्वं प्रमाथिनम् ॥ २० ॥ शरैश्चतुर्भिश्चतुरो निजघान महाबलः । ततः पुनरमेयात्मा शरवर्षं दुरासदम् ॥ २१ ॥ मुमोच भरतश्रेष्ठ निशाचरबलं प्रति । तत्तु दृष्ट्वा महत्कर्म तव पुत्रस्य मारिष ॥ २२ ॥ क्रोधेनाभि प्रजज्वाल भीमसेनिर्महाबल ।

इत्यादि शस्त्रोंसे हाथियों के सवारों को मारकर उन राक्षसों ने पर्व्वत और वृक्षों से हाथियों को मारा हे राजा हमने राक्षसों के हाथसे टूटेहुए मस्तकोंसमेत हाथियों को रुधिर से रहित होकर मरा हुआ देखा उन हाथी और हाथीवालों के पराजित होने पर, महाक्रोधरूप होके दुर्य्योधन अपने जीवनकी आशाको त्यागकर उन राक्षसों के सम्मुख गया हे शत्रुसन्तापी उस बड़े धनुषधारी दुर्य्योधन ने वहां जाकर अपने तीक्ष्ण बाणों की वर्षासे बड़े २ राक्षसों को मारकर अपने महतीव्र चारबाणों से उसमहाभयकर घोररूपवाले घटोत्कचको घायल किया।२१। फिर वह राक्षस इन्द्रधनुष के समान अपने धनुषको खैंचकर, बड़ेवेगसे दुर्य्योधन के सम्मुख गया उसमृत्यु समान राक्षस को आता हुआ देखकर आपका पुत्र दुर्य्योधन पीड़ामान् नहीं हुआ तब अत्यन्त रक्तनेत्र क्रोधसे युक्त वह राक्षस इससे कहने लगा कि अबमैं उन अपने माता पितासे अऋण होजाऊंगा जिनको कि तुझनिर्दयी ने वनवासी किया, और

---

and their riders were vanquished. Duryodhan much enraged and despairing of his life faced the rakshasas and O destroyer of foes the great archer Duryodhan having destroyed great the rakshases with the shower of his arrows wounded Ghatotkach the dreadful rakshas 21 Then drawing his bow like the bow of Indra the rakshas rushed upon Duryodhan. Your son Duryodhan was not disheartened at the sight of the rakshas coming upon him like Death and the latter with eyes blood red in anger said — "Now I shall be able to satisfy the debt of my parents whom by your cruelty you sent into exile and deceitfully won in gambling. Sinful wretch! it was you who brought Draupadi into court while she was in her monthly courses wearing one garment. Your well wisher foolish Jayadrath disregarding my parents absconded

स विस्फार्य्य महच्चापमिन्द्राशनिसमप्रभम् ॥ २३ ॥ अभिदुद्राव वेगेन दुर्य्योधनमरिन्दमम् । समापतन्तमुद्वीक्ष्य कालरूपमिवान्तकम् ॥ २४ ॥ न विव्यथे महाराज पुत्रो दुर्य्योधनस्तव अथैनमब्रवीत् क्रुद्ध क्रोधसंरक्तलोचन ॥ २५ ॥ अद्यानृण्य गमिष्यामि पितॄणां मातुरेव च । ये त्वया सुनृशंसेन दीर्घकालं प्रवासिता ॥ २६ ॥ यच्च ते पाण्डवा राजंश्छल द्यूते पराजिता । यच्चैव द्रौपदी कृष्णा एकवस्त्रा रजस्वला ॥ २७ ॥ सभामानीय दुर्बुद्धे बहुधा क्लेशिता त्वया । तव च प्रियकामेन आश्रमस्था दुरात्मना ॥ २८ ॥ सैन्धवेन परामृष्टा परिभूय पितॄन् मम । एतेषामवमानानामन्येषां च कुलाधम ॥ २९ ॥ अन्तमद्य गमिष्यामि यदि नोत्सृजसे रणे । एवमुक्त्वा तु हैडिम्बो महद्विस्फार्य कार्मुकम् ॥ ३० ॥ सन्दश्य दशनैरोष्ठं सृक्किणी परिसंलिहन् महता शरवर्षेण दुर्य्योधनमवाकिरत् । पर्वतं वारिधाराभि प्रावृषीव बलाहक ॥ ३१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि इरावद्वधे द्विनवतितमोऽध्याय: ॥ ९२ ॥

सञ्जय उवाच ततस्तद्बाणवर्षं तु सहदानवैरपि । दधार युधि राजेन्द्रो यथा वर्षं महाद्विप ॥ १ ॥ तत क्रोधसमाविष्टो नि श्वसन्निव पन्नग । संशयं परमं प्राप्त पुत्रस्ते भरतर्षभ ॥ २ ॥ मुमोच निशितांस्तीक्ष्णान्नाराचान्पञ्चविंशतिं । तेऽपतन्स

छलसे द्यूतमें जीता और पापात्मा निर्बुद्धी एकवस्त्रा रजस्वला कृष्णाद्रौपदी को जो तुमने सभा में लाकर महादुःखित किया और तेरे अर्थ चाहनेवाले दुर्बुद्धी जयद्रथ ने मेरे पितालोगों को निरादर करके आश्रम में नियत द्रौपदी को पकड़ कर हरण किया है कुलध्वंसी महानीच उन अपराधों का फल मैं अब तुझको देकर उनका प्रतीकार पाऊंगा, फिर ओठों को चबाकर घटोत्कच ने धनुष को खैंचकर मारे बाणों के दुर्य्योधन को ऐसे ढकदिया जैसे कि वर्षा ऋतु में बादल जलकी धाराओं से पर्व्वत को ढक देते हैं ॥ २९ ॥

अध्याय ९३ ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन ने दानवोंसे भी असह्य उन बाणों की वर्षा को ऐसे सहा जैसे कि बड़ाहाथी पानी की वर्षा को सहलेता है हे भरतवंशी इसके पीछे क्रोधमें पूर्ण सर्प की समान श्वासलेते हुए आपके पुत्रने बड़े

with Draupadi from the hermitage into the forest Mean wretch, curse of thy family, I shall now give you the reward of your wicked deeds Then biting his lips in anger, Ghatothach drew his bow and covered Duryodhan with his arrows as clouds hide a hill with the shower of rain " 29

CHAPTER XCIII

Sanjaya said —' Prince Duryodhan bore the shower of arrows, unbearable by Daityas, as an elephant stands under a shower of rain. Then filled in anger and sighing, your son in a great suspense, dis

इसाराजस्तस्मिन्राक्षसपुंगवे ॥ ३ ॥ आशी विषाइवक्रुद्धा पर्वते गंधमादने। सतै विंद्ध स्रवन् रक्तंप्रभिन्नइवकुंजर ॥ ४ ॥ द्धेमर्तिविनाशावराक्ष सपि शिताशन। जग्राहच महा शक्ति गिरीणाम दारिणीं ॥ ५ ॥ सप्रदीप्तांमहोल्काभा मशानि ज्वलितामिव। समुदिच्छन्महा बाहुर्जि घांसुस्तन यंतव। ६ ॥ तामुद्यताम भिप्रे क्ष्यवंगानाम धिपस्त्वरन्। कुंजर गिरिशकाशराक्षसं प्रत्यचोदयत् ॥ ७ ॥ सनाग प्रवरणाजौ बलिना शीघ्रगामिना। ततो दुर्य्योधनरथस्तं मार्ग प्रत्यपद्यत ॥ ८ ॥ रथच वारयामास कुंजरेण सुतस्यते। मार्गमावारितं दृष्ट्वा राज्ञावंगेनधीं मता ॥ ९ ॥ घटोत्कचो महाराज क्रोधसं रक्तलोचन। उद्यतांता महा शक्ति तास्मि न्निक्षेपवारणे ॥ १० ॥ सतयभिहतो राजंस्तेन बाहुप्रमुक्तया। संजातरुधिरो त्पीड पपात ममारच ॥ ११ ॥ पतत्यथगजे चापि वंगानामीश्वरोबली। जवेनसम भिद्रु

सन्देहसे युक्तहोकर पच्चीस नाराचोंको छोड़ा वह नाराच बाण उस राक्षस परऐसे जाकर गिरे, जैसेकि गन्धमादन पर्व्वतपर क्रोधयुक्त सर्प गिरतेहैं उन बाणोंसे घायल मदवाले हाथीके समान रुधिरगिरते, उस मांसाहारी राक्षस ने राजा के मारने का विचार किया और पर्व्वतोंके चीरनेवाली बड़ी बरछी को लिया।५। फिर आपके पुत्र के मारने के लिये उस महाबाहु ने उस महाघोर उलकाके समान प्रकाशमान बरछी को उठाया उस समय महाशीघ्रता करने वाले वंगदेशी राजाने उस उठाई बरछी को देखकर पर्व्वताकार अपने हाथी को उस राक्षस के ऊपर चलाया और उस शीघ्रचलनेवाले हाथी के द्वारा आप उस मार्ग मे वर्त्तमान हुआ जिधर दुर्य्योधन का रथथा अर्थात् उस हाथी से आपके पुत्र के रथको गुप्तकरदिया उस वंगदेशके राजा करके मार्गको बन्द देखकर घटोत्कच ने महा क्रोधितहोकर उस उठाई हुई बरछी को हाथीपर फेंका।१०। उस बरछी के प्रहार से वह हाथी महापीड़ित होकर

charged twenty five arrows which fell over the rakshas like angry serpents on Gandhmadan hills Wounded by those arrows and enraged like a mad elephant with the blood dropping down, the cannibal rakshas thought of destroying the king and took up a spear which could pierce a hill. 5. Then that brave warrior raised up the dreadful spear, bright like fire, to kill your son Seeing this the king of Bang rushed against Bhim with his elephant huge like hill and came between him and the chariot of Duryodhan. Seeing the king, of Bang impeding the way, Ghtotkach in a rage hurled the spear at at the elephant which struck by the dart fell down dead by the wound The king of Bang hastened to jump down from the falling elephant 10 Duryodhan, seeing the fall of the huge elephant and the turning back of the army, was much disheartened, and remembering the duties of a warrior stood firmly as a hill even when the soldiers

त्यजगाम धरणीतलम् ॥ १२ ॥ दुर्य्योधनोपि सम्प्रेक्ष्य पतितं धरयारणम् । प्रभग्नञ्च चलं दृष्ट्वा जगाम परमां व्यथाम् ॥ १३ ॥ क्षत्रधर्मं पुरस्कृत्य आत्मनश्चाभिमानिताम् । प्राप्तेपक्रमणे राजा तस्थौ गिरिरिवाचलः ॥ १४ ॥ सन्धाय च शितं वाणं कालाग्निसम तेजसम् । मुमोच परमक्रुद्धस्तस्मिन् घोरे निशाचरे ॥ १५ ॥ तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य वाण मिन्द्राशनिप्रभम् । लाघवान्मोचयामास महात्मा वै घटोत्कचः ॥ १६ ॥ भूयश्च विननादोग्रं क्रोधसंरक्तलोचनः । त्रासयामास सैन्यानि युगान्ते जलदो यथा ॥ १७ ॥ तं श्रुत्वा निनदं घोरं तस्य भीमस्य रक्षसः । आचार्य्यमुपसङ्गम्य भीष्मः शान्तनवोऽब्रवीत् ॥ १८ ॥ यथैष निनदो घोरः श्रूयते राक्षसेरितः । हैडिम्बो युध्यते नूनं राज्ञा दुर्य्योधनेन ह ॥ १९ ॥ नैव शक्यो हि संग्रामे जेतुं भूतेन केनचित् । तत्र गच्छत भद्रं वो राजानं परिरक्षत ॥ २० ॥ अभिद्रुतो महाभागो राक्षसेन महात्मना । एतद्धिवः परं कृत्यं सर्वेषां नः परंतपा ॥ २१ ॥ पितामहवचः श्रुत्वा त्वरमाणा महारथाः । उत्तमं जवमास्थाय प्रययुर्यत्र

गिरकर मर गया फिर वह वंगदेशी वलवान राजाभी वहुत शीघ्र हाथी से उछलकर पृथ्वीपर बड़ी तीव्रता से गया, दुर्योधनने उसगिरे हुये बड़े हाथी को और सेनाके हटजाने को देखकर बड़े खेदको पाया, और राजा दुर्योधन क्षत्री धर्मको विचार अपने अहंकारको करके सेनाके भाग जानेपर भी पर्वत के समान अचल होकर युद्धमें खड़ारहा, फिर महाक्रोधित होकर बड़े धनुषको खैंचकर एकवड़े तीक्ष्णवाण को उस राक्षस पर छोड़ा।१५। उस इन्द्र वज्रके समान आतेहुये वाणको देखकर घटोत्कचने वड़ी हस्तलाघवतासे निष्फल कर दिया और लालनेत्र करके बड़े क्रोध पूर्वक भयानक शब्द से गर्जना को करके सेना को ऐसा भयभीय कर दिया जैसे कि प्रलय काल में वादल सवको भयसे पीडित करते हैं, उस राक्षस के उसघोर शब्द को सुनकर शांतनुके पुत्र भीष्मजी द्रोणाचार्य्य के पास जाकर वोले कि यह राक्षसका घोर और भयानक शब्द सुनाजाता है निश्चय करके यह घटोत्कच ही राजादुर्य्योधन से लड़ताहै युद्धमें इस राक्षस को कोई जीव विजय नहीं करसक्ता है आपका श्रेयहो आपवहीं जाकर राजाकी सब ओरसे रक्षाकरो।२०। वह महाभाग दुर्य्योधन बड़े साहसी राक्षससे लड़ताहै हे शत्रु संतापियो तुम्हारा और हमसबक

had left him. Then in a rage drawing his huge bow, he dischrged a sharp arrow at the rakshas 15 Seeing that arrow coming towards him like the vajra of India, Ghatotkach made it futile by his swift movement and with eyes red in anger roaring a dreadful roar, terrified the armies as the clouds of *pralaya* do Hearing the tremendons roar of the rakshas, Bhishm the son of Shantanu came to Dronacharya and said, "We hear the deep and dreadful roar of the rakshas, surely Ghatotkach in fighting with Prince Duryodhan, No mortal can vanquish the rakshas in battle. Go there in person and protect the king, may you be happy '20. Great Duryodhan is figting with the dreadful rakshas. It is our duty to protect the king, O destroyer of

कौरव ॥ २२ ॥ द्रोणश्च सोमदत्तश्च बाह्लीकोथ जयद्रथ । कृपो भूरिश्रवा शल्य
श्चावन्त्य सबृहद्बल. ॥ २३ ॥ अश्वत्थामा विकर्णश्च चित्रसेनो विविंशति । रथाश्च
नेकसाहस्राये तेषामनुयायिन ॥ २४ ॥ अभिद्रुत परिप्सन्त पुत्र दुर्य्योधन तव ।
तदनीकमनाधृष्यं पालितन्तु महारथैः । २५। आततायिनमायान्त प्रेक्ष्य राक्षससत्तम ।
नाकम्पत महाबाहुर्मैनाक इव पर्वत ॥ २६ ॥ प्रगृह्य विपुल चाप ज्ञातिभि परिवारित ।
शूलमुद्गरहस्तैश्च नानाप्रहरणैरपि ॥ २७ ॥ तत समभवद्युद्ध तुमुल लोमहर्षणम् ।
राक्षसानाञ्च मुख्यस्य दुर्य्योधनबलस्य च ॥ २८ ॥ धनुषा कूजता शब्द सर्वतस्तु
मुलो रणे । अश्रूयतमहाराज वंशाना दह्यतामिव ॥ २९ ॥ अस्त्राणां पात्यमानानां
कवचेषु शरीरिणाम् । शब्द समभवद्राजन् गिरीणामिव भिद्यताम् ॥ ३० । वीरबाहु
विसृष्टाना तोमराणा विशाम्पते । रूपमासींद्वियत्स्थाना सर्पाणामिव सर्पताम् । ३१॥

भी उत्तमकर्म है पितामहके इसवचनको सुनकर शीघ्रता करनेवाले महारथी द्रोणा चार्य्य सोमदत्त बाह्लीक जयद्रथ कृपाचार्य भूरिश्रवा शल्य अवन्ति का राजा वृहद्वल अश्वत्थामा विकर्ण चित्रसेन विविंशति और हजारों उनके पीछे चलने वाले रथ वह सब मिले हुये आपके पुत्र दुर्य्योधन की रक्षा के लिये वहां गये जहाँ राजादुर्य्योधन था। २५। फिरवह राक्षसोत्तम महाबाहु घटोत्कच उस दुर्जय महारथियों से रक्षित मारनेकी इच्छा रखने वाली सेनाको आताहुआ देखकर मेनाक पर्व्वत के समान भयभीत नहीं हुआ, और शूल मुद्गर आदि अनेकप्रकार के शस्त्रधारी राक्षसोंसे युक्त घटोत्कच बडे धनुषको खैंचकर खड़ाहुआ, फिरघटोत्कच और दुर्य्योधन की सेना का महारोमहर्षण युद्ध जारी हुआ उस समय हे राजा धनुष की टंकारों के महाकठिन शब्द चारोंओर से ऐसे सुनाई दिये जैसे कि जलतेहुये बांसों के शब्द होतेहैं, और शरीर के कवचों पर लगनेवाले अस्त्र शस्त्रों के भी ऐसे शब्द होतेथे जैसे कि फटेहुये पहाड़ों के महाशब्द होतेहैं। ३०। हे राजा वीरोंकी भुजाओं से

foes!" [Hearing these words of the grandfater, dexterous Dronacharya together with Somdatta, Vahlik, Jayadrath, Kripacharya, Bhurishrava, Shalya Brahadwal the prince of Avanti, Ashwathama, Vikarn Chitrsen, Vivinshati and thousands of others riding on chariots, went to help Duryodhan and reached the place where Duryodhan was 25 Then Ghtotkach the best of rakshases, seeing that army protected by those warriors coming to dertroy him was not moved like Menak hill Assisted by rakshases armed with spears and clubs, Ghatotkach stood with his bow drawn The battle was severe between the armies of Ghatotkach and Duryodhan The hard sounds from the twanging bows were heard on all sides like the burning of bamboos and the sounds of striking the weapons on the bodies were like the rending of mountains. 30 The tomars hurled by warriors looked like serpents running in the sky. Then much enraged and roaring dreadfully, the prince of rakshases taking up his huge bow cut down with a half moon shaped dart the

ततः परमसंक्रुद्धो विस्फार्य्य सुमहद्धनुः । राक्षसेन्द्रो महाबाहुर्विनदन् भैरवं रवम्
॥ ३२ ॥ आचार्य्यस्यार्द्धचन्द्रेण क्रुद्धश्चिच्छेद कार्मुकम् । सोमदत्तस्य भल्लेन ध्वजञ्चो
न्मथ्य चानदत् ॥ ३३ ॥ बाह्लीकञ्च त्रिभिर्बाणैः प्रत्यविध्यत् स्तनान्तरे । कृपमेकेन
विव्याध चित्रसेनं त्रिभिः शरैः ॥ ३४ ॥ पूर्णायतविसृष्टेन सम्यक्प्रणिहितेनच । जत्रु
देशे समासाद्य विकर्णं समताडयत् ॥ ३५ ॥ न्यषीदत् स्व रथोपस्थे शोणितेन परि
प्लुतः । ततः पुनरमेयात्मा नाराचान्दश पञ्चच ॥ ३६ ॥ भूरिश्रवसि संक्रुद्धः प्राहिणो
द्भरतर्षभ । ते वर्म भित्वा तस्याशु विविशुर्धरणीतलम् ॥ ३७ ॥ विविंशतेश्च द्रौणेश्च
यन्तारौ समताडयत् । तौ पेततु रथोपस्थे रश्मीनुत्सृज्य वाजिनाम् ॥३८॥ सिन्धुराजो
र्द्धचन्द्रेण वाराहंस्वर्णभूषितम् । उन्ममाथमहाराज द्वितीयेनाच्छिनद्धनुः ॥३९॥ चतुर्भि
रथ नाराचै रावन्त्यस्यमहात्मनः । जघान चतुरो वाहान् क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ ४० ॥
पूर्णायतविसृष्टेन पीतेन निशितेन च । निर्बिभेद महाराज राजपुत्रं वृहद्बलम् ॥ ४१ ॥

फेंके हुये तोमरोंके ऐसे रूप दिखाई दिये जैसे कि आकाश में चलतेहुये सर्पों के आकार दिखाई देतेहैं इसके पीछे अत्यन्त क्रोधरूप भयकारी गर्जना करतेहुये उस राक्षसों के राजा ने बहुतबड़े धनुष को लेकर, अर्द्धचन्द्र नाम बाणसे द्रोणाचार्य्य के धनुषको काटके भल्ल से सोमदत्त की ध्वजाको तोड़ता हुआ महा गर्जना करके बाह्लीक को तीन बाणसे छाती परघायल किया और एक बाणसे कृपा चार्य्य को तीन बाणसे चित्रसेन को, घायल करके कानतक खैंचेहुए बाणसे विकर्णको घायल किया।३५।फिर वहविकर्ण रुधिर भरे देहसेरथमें बैठा इसके पीछे उस पराक्रमी ने पन्द्रह नाराच भूरिश्रवा पर फेंके वह नाराच उसके कवचको काट कर पृथ्वी पर गिरे, फिर विविंशति और अश्वत्थामा के सारथियों को घायल किया जिसके मारे वह घोड़ों की रस्सियों को छोड़कर पृथ्वी पर गिरपड़े और अर्द्धचन्द्र बाणसे राजा सिन्धुके सुनहरी वाराहको और दूसरेबाण से उसके धनुष को काटा, फिर क्रोध से अत्यन्त रक्तनेत्र ने आने चार नाराचों से महात्मा राजा

bow of Dronachrya, and cutting down with an arrow the banner of Somdatt, he wounded Vahlik with three arrows in the breast with a loud roar. And wounding Kripacharya with one arrow and Chitrasen with three he pierced Vikarn with his arrows discharged from his bow drawn to the ear.35. Blood flowed down from the wounds of Vikarn seated in the chariot. Then that warrior discharged fifteen arrows at Bhurishrava and they fell down on the ground piercing through his armour. Then he wounded the chariot drivers of Vivinshati and Ashwathama and they fell down from their seats leaving the reins of horses. With a half-moon-shaped arrow he pierced the boar of the king of Sindh and with another he cut down his bow. Then with eyes red in anger he killed the four horses of the king of Avanti with four darts. And with a sharp arrow he

स गाढविद्धो व्यथितो रथोपस्थ उपाविशत् । भृशं क्रोधेन चाविष्टो रथस्थो राक्षसाधिप. ।४२॥ चिक्षेपनिशितांस्तीक्ष्णाञ्छरानाशीविषोपमान् । विभिदुस्तेमहाराज शल्यं युद्धविशारदम् ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मबधपर्वणि हैडिम्बयुद्धे त्रिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९३ ॥

संजय उवाच ॥ विमुखीकृत्य सर्वांस्तु तावकान् युधि राक्षसः । जिघांसुर्भरतश्रेष्ठ दुर्योधन मुपाद्रवत् ॥ १ ॥ तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य राजानं प्रति वेगितम। अभ्यधावन् जिघांसन्तस्तावका युद्धदुर्मदा· ॥ २ ॥ तालमात्राणि चापानि विकर्षन्तो महारथा । तमेकमभ्यधावन्त नदन्त सिंहसंघवत् ॥ ३ ॥ अथैनं शरवर्षेण समन्तात् पर्यवाकिरन् पर्वतं वारिधाराभिः शरदीव वलाहका· ॥ ४ ॥ स गाढविद्धो व्यथित स्तोत्रार्दित इव द्विप. । उत्पपात तदाकाशं समन्ताद्वैनतेयवत् ॥ ५ ॥ व्यनदत् सुमहानादं जीमूत इव

अवन्तिके चारों घोड़ों को मारा है महाराज फिर बड़े तीक्ष्ण बाणसे राजा वृहद्वलको घायल किया वह भी महा घायल होकर रथमें बैठगया फिर राक्षसाधिप घटोत्कचने सर्पाकृति अनेक बाणों से राजाशल्यको व्यथित किया ४३ ॥

अध्याय ९४ ॥

संजय बोले कि फिर वह राक्षस आपके सब योद्धाओं को युद्ध में भगाकर मारने की इच्छा से दुर्योधनके सम्मुख दौड़ा, उस राक्षस को राजा के ऊपर आता देखकर मारने के इच्छावाले युद्ध में दुर्मद आपके भी शूरवीर उसके सम्मुख दौड़े, वह महा वीर ताल वृक्ष के समान धनुषोंको खैंचेहुए सिंहोंके समान गर्जना करते हुए उस अकेले के ऊपर दौड़े, और बाणों की वर्षा से उसको चारों ओरसे ऐसे ढकदिया जैसे कि शरद ऋतु में वलाहक नाम बादल अपनी जल धाराओं से पर्वत को ढक देते हैं ।५। दण्ड से घायल हाथी के समान वह अत्यन्त घायल घटोत्कचगरुड़के समान

pierced prince Brahadval who sat down much wounded in his chariot. Then Ghatotkach the prince of rakshases wounded Shalya with several arrows like serpents" 47.

CHAPTER XCIV

Sanjaya said:—"Having put all your warriors to flight, the rakshas desirous of slaying your son rushed against him. Seeing him coming upon the prince, your invincible warriors desirous of slaying him, hastened to encounter him. All those warriors with their bows like palm trees drawn, rushed upon the rakshas alone roaring like lions and covered him with the shower of their arrows as clouds in the cold season hide a hill 5 Like an elephant wounded by a goad, Ghatotkach much wounded sprang like Garur on all sides up in the air and ringing

शारदः । दिश खं विदिशश्चैव नादयन् भैरवस्वनः ॥ ६ ॥ राक्षसस्यतु तं शब्दं श्रुत्वा राजा युधिष्ठिरः । उवाच भरत श्रेष्ठ भीमसेनं मरिंदमम् ॥ ७ ॥ युध्यते राक्षसो नूनं धार्तराष्ट्रैर्महारथैः । यथास्य श्रूयते शब्दो नदतो भैरवस्वनम् ॥ ८ ॥ अति भारञ्च पश्यामि तस्मिन् राक्षस पुंगवे । पितामहश्च संक्रुद्धः पांचालान् हन्तु मुद्यतः ॥ ९ ॥ तेषांच रक्षणार्थाय युध्यते फाल्गुन परैः । एतज्ज्ञात्वा महाबाहो कार्यद्वयमुपस्थितम् ॥ १० ॥ गच्छ रक्षस्व हैडिम्बं संशयं परमं गतम् । भ्रातुर्वचनमाज्ञाय त्वरमाणो वृकोदरः ॥ ११ ॥ प्रययौ सिंहनादेन त्रासयन् सर्वपार्थिवान् । वेगेन महताराजन् पर्वकाले यथोदधिः ॥ १२ ॥ तमन्वगात् सत्यधृति सौचित्तिर्युद्ध दुर्मदः । श्रेणिमान् वसुदानश्च पुत्रः काश्यस्यचा भिभूः ॥ १३ ॥ अभिमन्यु मुखाश्चैव द्रौपदेया महारथाः । क्षत्र देवश्च

चारों ओरसे आकाश को उछला, और भयानक शब्द करता हुआ दिशा विदिशा समेत आकाशको शब्दायमान करके शरदऋतु के बादलों के समान महा घोर गर्जना करने लगा इसके पीछे हे भरतर्षभ उस राक्षस के शब्द को सुनकर राजा युधिष्ठिर शत्रु विजयी भीमसेन से बोले, कि निश्चय वह घटोत्कच राक्षस धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रों से लड़रहा है क्योंकि यह महाघोर शब्दकी गर्जना उसी की सुनी जाती है इस समय उस राक्षस के ऊपर मुझको बड़ी भारी - विपत्ति जान पड़ती है और अत्यन्त कोपयुक्त भीष्मजी पांचाल देशियों के मारनेको युद्धमें प्रवृत्त हैं उन पांचालों की रक्षाके निमित्त अर्जुन ही शत्रुओं से लड़ता है हे महाबाहु इसबात को जानकर दोकाम वर्त्तमान हुए ।१०। अबचलकर बड़ी विपत्तिसे घटोत्कचकी रक्षा करो यह भाई के वचन सुनतेही शीघ्रता करनेवाला भीमसेन अपने सिंहनादसे सब राजाओं को डराता हुआ ऐसे महावेग से वहां पहुँचा जैसे कि पर्व्वकालमें समुद्र जाता है, और इस के पीछेही सत्यधृति युद्ध में दुर्मद सुचित्ती श्रेणिमान वसुदान और महासमर्थ काशिराजकापुत्र यहसब गये, और अग्रवर्त्ती अभिमन्यु

all the directions will his tremendous roars he thundred like the clouds in Winter. Hearing his sound, O king, Prince Yudhishthir said to the conquering Bhimsen, "Surely this Ghatotkach the rakshas is *fighting against the sons of Dhritrastra, for this tremendous roar can* be of no one else. Meseems he is in a great trouble and Bhishm in the excess of his rage, is engaged in destroying the Panchals. For the protection of the Panchals, Arjun is fighting against the enemies. Under these circumstance there are two things to do 10. Let us protect Ghatotkach from the great *trouble."* Having heard these words from his brother, dexterous Bhimsen, terrifying all the warriors with his leonine roar, hastened to reach there like the ocean at the full moon. Following him went the wise warriors Suchitti, Vasudan and the powerful son of the king of Kashi. Led by Abhimanyu, the five brave sons of Draupadi, Kshatradev, Vikrant, Kshatradharma and

विक्रांतः क्षत्रधर्मा तथैवच ॥ १४ ॥ अनूपाधि पतिश्चैव नीलः स्वबलमास्थितः। मह ताशरवंशेन हैडिम्बं पर्यवारयत् ॥ १५ ॥ कुञ्जरैश्च महामत्तै षट्सहस्रै. प्रहारिभिः अभ्यरक्षन्त सहिता राक्षसेन्द्रं घटोत्कचम् ॥ १६ ॥ सिंहनादेन महता नेमिघोषेण चै वह । खुरशब्दनिपातैश्च कम्पयन्तो वसुन्धराम् ॥ १७ ॥ तेषामापततां श्रुत्वा शब्द न्तं तावकं बलम् । भीमसेन भयोद्विग्नं विवर्णं वदनं तथा ॥ १८ ॥ परिवृत्त महाराज परित्यज्य घटोत्कचम् । तत प्रववृते युद्धं तत्र तेषां महात्मनाम् ॥ १९ ॥ तावकानां परेषांच संग्रामेष्व निवर्त्तिनाम् । नानारूपाणि शस्त्राणि विसृजन्तो महारथाः ॥ २० ॥ अन्योन्य मभिधावन्त सम्प्रहार प्रचक्रिरे । व्यतिषक्तं महारौद्रं युद्धं भीरुभयापहम् ॥ २१ ॥ हयागजैः समाजग्मु पदाता रथिभि सह । अन्योन्य समरे राजन् प्रार्थयाना· समभ्ययुः ॥ २२ ॥ सहसाचाभवत्तीव्रं सन्निपातान्महद्रजः । गजाश्ववरथपत्तीना पद नेमि समुद्धतम् ॥ २३ ॥ धूम्रारुणंरजस्तीव्रं रणभूमिं समावृणोत् । नैव स्वेन परे राजन्

के साथ द्रौपदी के महारथी पुत्र क्षत्रदेव विक्रान्त क्षत्रधर्मा और नील नाम अनुपदेश का राजा अपनी सेना में नियत होकर चला यहसब शूर रथों के समूहों समेत घटोत्कचकी रक्षा के लिये उसके चारों ओर को नियतहुए, इनसब वीरोंके साथ तहादुर्मद मतवाले छःसहस्र हाथी थे इन सबहाथियोंकी और रथोंकी गर्जना और ध्वनियों से पृथ्वी शब्दायमान होगई उन आते हुओं के शब्दको सुनकर आप की सेना भीमसेन के भय से महा व्याकुलहोकर रूपान्तर दशाको प्राप्तहुई, हे महा राज वह सेना घटोत्कचको छोड़कर चारों ओर को घूमने लगी फिरसम्मुख लड़ने वाले आपके और दूसरों के शूरवीरों का नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रों समेत युद्ध होना प्रारम्भ हुआ।२०। और परस्पर सम्मुख दौड़तेहुए महारथियोंने बड़े प्रहार किये और अत्यन्त भयकारी घोरयुद्ध होनेलगा, घोड़े हाथियोंके साथ और पदाती रथि यों के साथ युद्ध करने लगे उस युद्धमें परस्पर एक दूसरेको चाहतेहुए सम्मुख गये उससमय अनेक हाथी घोड़े रथ पैदलों के समूहोंसे उठीहुई बहुत भारी धूल उड़ी

Nil the prince of Anup with his army, followed by the hosts of charioteers, went to help Ghatotkach and stationed themselves round him Six thousand elephants of great prowess accompanied these warriors. The sounds of these elephants and chariots rang all over the earth. Hearing those sounds the state of your army was quite changed with fear of Bhim, and leaving Ghatotkach alone all the warriors dispersed in different directions Then the warriors on both sides fought with different weapons and rushing against one another they fought hard and the battle was hard on the two sides. The horsemen fought against the elephant riders and the foot soldiers against charioteers They rushed against one another. With the armies of elephants, horses, chariots and foot-soldiers there rose a great

सम्जानन्परस्परम् ॥ २४ ॥ पिता पुत्रं न जानीते पुत्रो वा पितरं तथा । निर्मर्यादेतथा
सूते वैशसे लोमहर्षणे ॥ २५ ॥ शस्त्राणांभरतश्रेष्ठ मनुष्याणांच गर्जताम् । सुमहानभव
च्छब्द: प्रेतानामिव भारत ॥ २६ । गजवाजि मनुष्याणां शोणितौघ तरङ्गिणी । प्राव
र्तत नदी तत्र केशशैवलशाद्वला ॥ २७ ॥ नराणाचैव कायेभ्यः शिरसां पततां रणे ।
शुश्रुवे सुमहाञ्छब्दः पतता मश्मना मिव ॥ २८ ॥ विशिरस्कैर्मनुष्यैश्च छिन्नगात्रैश्च
वारणैः । अश्वैः सम्भिन्न देहैश्च संकीर्णाभूद्वसुन्धरा ॥ २९ ॥ नानाविधानि शस्त्राणि
विसृजन्तो महारथाः । अन्योन्यमभिधावन्तः सम्प्रहारार्थमुद्यताः ॥ ३० ॥ हया हयान्
समासाद्य प्रेषिता हयसादिभिः । समाहत्य रणेन्योन्यं निपेतुर्गतजीविताः ॥ ३१ ॥ नरा
नरान् समासाद्य क्रोधरक्तेक्षणा भृशम् । उरांस्युरोभिरन्योन्यं समाश्लिष्य निजघ्निरे
॥ ३२ ॥ प्रेषिताश्च महामात्रैर्वारणाः परवारणैः । अभ्यघ्नन्त विषाणाग्रैर्वारणानिव

फिर उस काली और लाल रंगवाली उग्र धूलिसे संग्रामभूमि ऐसी आच्छादित होगई कि जिस में अपने पराये की कुछ पहचान न होसकी, इसप्रकार के रोमहर्षण करनेवाले महाप्रलयकाल में पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको भी नहीं पहचाना।२५। हे भरतर्षभ उसयुद्ध में शस्त्रों के और गर्जना करनेवालों के प्रेतों केसे महाघोर शब्दहुए, फिर वहां हाथी घोड़े रथपैदलोंके रुधिरसे नदी वह निकली उसमें शिरोंके बालही कुमुदिनी सवेन शाड्वलथे उससंग्राम में मनुष्यों के गिरते हुए शिरोंके ऐसे महा शब्द सुनाई दिये जैसे कि गिरतेहुए पत्थरों के शब्दहोते हैं फिर बिना शिरके मनुष्य और अंगभंग हाथी घोड़ों के शरीरोंसे पृथ्वी व्याप्त होगई औरबड़े २ महारथी परस्पर में नानाप्रकारके शस्त्रोंको प्रहारकरतेहुए एकएकके सम्मुख मारने को प्रवृत्तहुए । ३० । फिर सवारों से शोभित घोड़े घोड़ों से लड़ते २ मरकर पृथ्वीपर गिरे, और क्रोधसे रक्तनेत्र मनुष्यों ने दूसरे मनुष्योंको पाकर एकने दूसरेको छातीसे छाती मिलाकर मारा, फिर पीछे के हाथियों ने बड़े २ शरीर

cloud of dust and the field of battle was so surrounded by the black and red dust that the warriors on the two sides could not know friends from foes. In that dreadful battle like that of pralaya, the father did not know the son.25. The sounds of weapons and the roars of warriors in that battle were like those of hobgoblins. A river of blood flowed down from the elephants, horses, charioteers and foot-soldiers, having the hair of heads for its weeds, The sounds of the fall of the heads of the warriors were like those of stones falling down. The headless bodies of men and parts of the bodies of elephants and horses covered the face of the earth. Great warriors discharged diffirent sorts of weapons against one another. 30. Horsemen fought against horsemen and fell dead on the field of battle. With eyes red in anger the warriors fought abreast and destroyed their adversaries. The elephants rushed against elephants and pierced their huge bodies with their

संयुगे ॥ ३३ ॥ ते जातरुधिरोत्पीडा पताकाभिरलंकृताः । संसक्ताः प्रत्यदृश्यन्त मेघा इव सविद्युतः ॥ ३४ ॥ केचिद्भिन्ना विषाणाग्रैर्भिन्नकुम्भाश्च तोमरैः । विनदन्तो ऽभ्यधावन्त गर्ज्जमाना घना इव ॥ ३५ । केचिद्धस्तैर्द्विधा च्छिन्नैश्छिन्नगात्रास्तथापरे । निपेतुस्तुमुले तस्मिंश्छिन्नपक्षा इवाद्रयः ॥ ३६ ॥ पार्श्वैस्तुदारितैरन्येवारणैर्वरवारणाः । मुमुचुः शोणितं भूरि धातूनिव महीधराः ॥ ३७ ॥ नाराचनिहतास्त्वन्ये तथा विद्धाश्च तोमरैः । विनदन्तो ऽभ्यधावत विशृङ्गा इव पर्वताः ॥ ३८ ॥ केचित् क्रोधसमाविष्टा मदान्धा निरवग्रहाः । रथान् हयान् पदातींश्च ममृदुः शतशो रणे ॥ ३९ ॥ तथा हया हयारोहैस्ताडिताः प्रासतोमरैः । तेन तेनाभ्यवर्त्तन्त कुर्वन्तो व्याकुला दिशः ॥ ४० ॥ रथिनो रथिभिः सार्द्धं कुलपुत्रास्तनुत्यजः । परं शक्तिं समास्थाय चक्रुः कर्माण्यभीतवत् ॥ ४१ ॥ स्वयम्वर इवामर्दे प्रजह्रुरितरेतरम् । प्रार्थयाना यशो राजन् स्वर्गं वा युद्ध

मुखवाले शत्रुके हाथियों के सम्मुख होकर दांतोंकी नोकों से हाथियोंको मारा वह पताकाओं से शोभित हाथी रुधिरसे पीड़ितहोकर ऐसे संसक्त दिखाई देतेथे जैसे कि बादलोंमें बिजली दीखतीहै ३५ कोई हाथीदांतों की नोकोंसे घायल और तोमरों से फूटेहुए कुंभ बादलोंके समान गर्जते हुए सम्मुख दौड़े, कोई टूटी सूंड़वाले वा टूटे अंगवाले हाथी युद्धमें ऐसे गिरे जैसे कि टूटे पर्व्वत और कितनेही कुक्षोंमें घायल हाथियोंने बहुतसा रुधिर ऐसा डाला जैसे कि पर्व्वत धातुओंको गेरते हैं, और बहु तेरे तोमरोंसे और नाराचोंसे घायल और पीडितहोकर शब्द करतेहुए ऐसे दौड़े जैसे कि विनाशिखरके पहाड़ होतेहैं, और अनेक क्रोधयुक्त मदान्ध हाथियोंने क्रो धितहोकर हजारों रथघोड़े और पदातियों को मर्द्दन किया, इसीप्रकार अश्वसवारों के प्रास और तोमरोंसे घायल घोड़े दिशाओं को व्याकुल करते हुए प्रत्येक मार्गमें सम्मुख हुए। ४० ।कुलीन और शरीर त्यागने वाले रथियोंने बड़ी सामर्थ से निर्भयता पूर्व्वक रथियोंसे युद्धकिया, हे राजा युद्धमें कुशल यश और स्वर्गके अभिलाषी वीरोंने उस स्वयंवर के समान युद्धमें एकने एकको परस्पर में हरण किया,

tusks The elephants decked with banners and streams of blood *flowing from their bodies looked like clouds with lightning 35.* Some elephants wounded with the points of tusks and tomars rushed on thundering like clouds, others with broken trunks and limbs fell down on earth like the pieces of hills Elephants wounded in their sides dropped streams of blood as mountains drop minarals, others wounded by tomars and arrows ran away shrieking with pain like mountains without peaks. Mad elephants in excessive rage trampled thousands of chariots, horses and foot-soldiers. In the same manner, horses wounded by *prases* and *tomars* rushed on all sides in anguish. 40 The dying warriors of noble blood fought fearlessly against charioteers. Dexterous in battle, desirous of fame and paradise the warriors took up one another like brides in a swayamvar. Thus when the battle

शालिनः ॥४२॥ तस्मिंस्तथा वर्त्तमाने संग्रामे लोमहर्षणे। धार्त्तराष्ट्रं महत् सैन्यं प्रायशो विमुखी कृतम् ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि हैडिम्बयुद्धे चतुर्नवतितमोऽध्यायः॥ ९४ ॥

सञ्जय उवाच। स्वसैन्यं निहतं दृष्ट्वा राजा दुर्योधन स्वयम्। अभ्यधावत संक्रुद्धो भीमसेन मरिन्दमम् ॥१॥ प्रगृह्य सुमहच्चाप मिन्द्राशनिसमस्वनम्। महता शरवर्षेण पाण्डवं समवाकिरत् ॥२॥ अर्द्धचन्द्रञ्च सन्धाय सुतीक्ष्णं लोमवाहिनम्। भीमसेनस्य चिच्छेद चापं क्रोधसमन्वितः ॥३॥ तदन्तरञ्च सम्प्रेक्ष्य त्वरमाणो महारथः। सन्दधे शितं बाणं गिरीणामपि दारणम् ॥ ४ ॥ तेनोरसि महाराज भीमसेनमताडयत्। स गाढ विद्धो व्यथितः सृक्किणी परिसंलिहन् ॥ ५ ॥ समालम्बे तेजस्वी ध्वजं हेमपरिष्कृतम्। तथा विमनसं दृष्ट्वा भीमसेनं घटोत्कचः ॥ ६ ॥ क्रोधेनाग्निप्रजज्वाल दिधक्ष

इसी प्रकार से इस रोमहर्षण युद्ध के आरंभ होने पर दुर्योधन की प्रबल सेना बहुधा भगाई गई ॥ ४३ ॥

अध्याय ९५ ॥

संजय बोले कि राजा दुर्योधन अपनी सेना का नाश हुआ देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर आपभी उस शत्रुजेता भीमसेनके सन्मुख दौड़ा, और इन्द्र धनुषके समान शब्दायमान धनुषसे बाणों की वर्षा करके भीमसेनको ढक दिया, और क्रोधमें भरकर अत्यन्त तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाणसे भीमसेन के धनुषको काटकर बड़ी शीघ्रता से समयको पाकर उसने पर्वतोंके भी तोड़नेवाले तीक्ष्णबाण को धनुष पर चढ़ाया, हे राजा उस बाणसे भीमसेन को छाती पर घायल किया, फिर उस तेजस्वी भीम ने होठों को चाटकर अपनी सुनहरी ध्वजा को पकड़ लिया, उस समय घटोत्कच भीमसेन को व्याकुल देखकर, क्रोधरूपी अग्निसे ज्वलित हुआ और महाक्रोधयुक्त अभिमन्यु आदिमहा

was raging furiously, many of Duryodhan's brave warriors left the field." 43.

CHAPTER XCV

"Seeing the destruction of his own army," continued Sanjaya, "Prince Duryodhan, in the excess of rage, rushed against Bhim the destroyer of foes and hid him with the arrows sho from his bow sounding like Indra's bow. In the excess of rage, having cut down Bhim's bow with an arrow of the shape of halfmoon and thus gaining time, he soon put up a sharp arrow capable of piercing through a mountain. That arrow, O king, wounded Bhim in the breast. The latter, licking his lip in anger, held fast the staff of his golden banner. Ghatotkach was inflamed with the fire of wrath at the sight of Bhim's

शिव पावक । अभिमन्युमुखाश्चापि पाण्डवाना महारथा ॥ ७ ॥ समभ्यधावन् क्रोश न्तो राजान जातसम्भ्रमा । सम्प्रेक्ष्य तान्सपतत सक्रुद्धान् जातसम्भ्रमान् ॥ ८ ॥ भार द्वाजो ब्रवीद्वाक्य तावकाना महारथान् । क्षिप्रंगच्छत भद्रंवो राजान परिरक्षत ॥९॥ सशय परम प्राप्त मज्जन्त व्यसनार्णवे । एते क्रुद्धा महेष्वासा पाण्डवाना महारथा ॥ १० ॥ भीमसेन पुरस्कृत्य दुर्योधनमुपाद्रवन् । नानाविधानि शस्त्राणि विसृजन्तो जयैषिता ॥ ११ ॥ नदन्तो भैरवान्नादांस्त्रासयन्तश्च भूमिपान् । तदाचार्य्यवचः श्रुत्वा सोमदत्तपुरोगमा ॥ १२ ॥ तावका समवर्तत पाण्डवानामनीकिनीम् । कृपोभूरि श्रवा शल्यो द्रोणपुत्रो विविंशति ॥ १३ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च सैन्धवोथ बृहद्बल । आवन्त्यौ च महेष्वासौ कौरव पर्य्यवारयन् ॥ १४ ॥ त विंशतिपद गत्वा सम्प्रहार प्रचक्रिरे । पाण्डवा धार्त्तराष्ट्राश्च परस्परजिघांसव ॥ १५ ॥ एवमुक्त्वा महाबाहुर्महद्वि स्फार्य कार्मुकम । भारद्वाजस्ततो भीम षड्विंशत्या समार्पयत् ॥ १६ ॥ भूयश्चैन

रथी राजा को पुकारते हुए सम्मुख दौड़े अत्यन्त क्रोधयुक्त उन लोगों को आता हुआ देखकर, भारद्वाज द्रोणाचार्य्य जी आप के महारथियों से बोले कि तुम्हारा कल्याणहो तुम शीघ्रजाओ और बड़े दुःख समुद्रमें पड़ेहुए राजाको चारों ओर से रक्षाकरो, यह महाकोपयुक्त पाण्डवों के धनुषधारी महारथी अनेक प्रकार के शस्त्रों को चलाते और शब्दों की गर्जनाओं से राजाओंको भयभीत करते सब भीमसेन को आगे करके दुर्योधन के सम्मुख गये, द्रोणाचार्य्य के इस वचन को सुनकर सोमदत्त को अग्रगामी कर के वह सब आपके शूरवीर पाण्डवों के सम्मुख पहुँचे कृपाचार्य्य भूरिश्रवा शल्य अश्वत्थामा विविंशति । १३ । चित्रसेन विकर्ण जयद्रथ बृहद्बल और बड़े धनुषधारी राजा अवन्ती ने चारों ओरसे दुर्योधन को रक्षित किया । १४ । और परस्पर मारने की इच्छा से उन पाण्डव और धृतराष्ट्र के पुत्रों ने बीस २ चरण चलकर प्रहारोंको किया, फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने बड़े धनुषको लेकर छब्बीस बाणोंसे भीमसेनको पीड़ित कर के अनेक

wound, and Abhimanyu and other warriors much enraged, rushed on challenging the Prince Seeing the advance of those enraged warriors Bharadwaj Donacha yr o d i d your warriors to protect the Prince from the coming danger saying Those enrag d Pandav warriors using diff rent sorts of w apons a l terrify ng the warriors with their roars are led by Bhim on agun t Duryodhan Protect him from danger, may you be happy!" At the command of Drona y our warriors led by Somdatta advanced against the Pandavas. Kripacharya, Bhurishrava Shalya Ashwathama Vivinshati Chitrasen Vikarn, Jayadrath, Vrahadval and the great archer princes of Avanti protected Duryodhan on all sides And wishing to destroy one another, the Pandavas and the sons of Dhritrashtra advanced twenty paces on each side and discharged their weapons Then taking up his mighty

महत्बाहु शरै शीघ्रमवाकिरत् । पर्वत वारिधाराभि प्रावृषीव बलाहक
॥ १७ ॥ त-प्रत्यविध्यद्दशभिर्भीमसेन शिलीमुखै । त्वरमाणो महेष्वास.
मध्ये पार्श्वे महाबल ॥ १८ ॥ स गाढविद्धो व्यथितो वयोवृद्धश्च भारत ।
प्रनष्टसंज्ञ सहसा रथोपस्थ उपाविशत् ॥ १९ ॥ गुरुं प्रव्यथित दृष्ट्वा राजा दुर्य्योधन
स्वयम् । द्रौणायनिश्च सक्रुद्धौ भीमसेनमभिद्रुतौ ॥ २० ॥ तावापतन्तौ सम्प्रेक्ष्य काला
न्तकयमोपमौ, । भीमसेनो महाबाहुर्गदामादाय सत्वरम् ॥ २१ ॥ अवप्लुत्य रथात्तूर्णं
तस्थौ गिरिरिवाचल । समुद्यम्य गदा गुर्वी कालदण्डोपमा रणे ॥ २२ ॥ तमुद्यतगद
दृष्ट्वा कैलासमिव शृङ्गिणम् । कौरवौ द्रोणपुत्रश्च सहितावभ्यधावताम् ॥ २३ ॥ तावा
पतन्तौ सहितौ त्वरितौ बलिनावरौ । अभ्यधावत वेगेन त्वरमाणो वृकोदर ॥ २४ ॥
तमापतन्त सम्प्रेक्ष्य सक्रुद्ध भीमदर्शनम् । समभ्यधावस्त्वरिता कौरवाणा महारथा.

अनप बाणोंसे ऐसे शीघ्र ढक दिया जैसे कि जलकी धारोंसे बलाहक नाम बादल पर्व्वतको ढकदेते हैं, बडे धनुषधारी महाबली शीघ्रतायुक्त भीमसेनने शिलीमुख नाम दशबाणों से उनको घायल किया फिर वह वृद्ध द्रोणाचार्य्य अत्यन्त घायल और पीडित होकर अकस्मात रथमें बैठगये गुरु को पीडामान देखकर आप राजा दुर्य्योधन और अश्वत्थामा बडे क्रोधितहो के भीमसेन के सम्मुख गये, फिर महाबली भीमसेन उन काल और मृत्युके समान दोनों को आता हुआ देखकर, शीघ्रही रथ से कूद यमदण्डके समान अपनी भारी गदाको लेकर युद्ध में पर्व्वताकार निश्चल होकर खडा हुआ फिर शिखरधारी पर्व्वतके समान उस उठीहुई गदाको देखकर दुर्य्योधन और अश्वत्थामा दोनों एक साथही उसके सम्मुख दौडे, भीमसेन भी उन तीव्र दौडनेवालों को सम्मुख आता देखकर बडी शीघ्रता से उनपर दौडा, फिर उस क्रोधयुक्त भयानक भीमसेन को आता हुआ देखकर कौरवों के महारथी यह दोनों भी शीघ्रता से दौडे और सबों ने आकर

bows Dronacharya wounded Bhimsen with twentysix arrows and hid him with the shower of arrows as Winter clouds do a mountain with the showers of rain. In his turn, the great archer Bhim of great prowess wounded him with ten arrows sharpened on stone. Old Dronacharya, much wounded and distressed, sat down of a sudden in his chariot. Seeing the acharya in distress, Prince Duryodhan himself together with Ashwathama much enraged faced Bhimsen. Valliant Bhim seeing their advance like that of Time and Death, at once jumped down from his chariot and with his heavy mace like the staff of Yam stood firmly like a hill in the field of battle. Seeing that mace upraised, Ashwathama and Duryodhan rushed together against him. Bhimsen too seeing the advance of the two swiftly running warriors, rushed against them. dreadful Bhimsen, much

मश्वत्थामानमवच । प्रायशश्च महष्वासा ये प्रधाना सकौरवा ॥ ४४ ॥ विध्वस्ता रथिन सर्वे राजानश्च निपातिता । हयाश्चैव हयारोहा सन्निकृत्ता सहस्रश ॥४५॥ तद्दृष्ट्वा तावक सैन्य विद्रुत शिविर प्रति । मम प्राक्रोशता राजस्तथा देवव्रतस्यच ॥ ४६ । युध्यध्व मा पलायध्व मायैषा राक्षसीरण । घटोत्कच प्रयुक्ते ति ना तिष्ठन्त विमोहिता ॥ ४७ ॥ नैवते श्रद्दधुर्भीता वदतो रावयोर्वच । ताश्च प्रद्रवतो दृष्ट्वा जय प्राप्ताश्च पाण्डवा ॥ ४८ ॥ घटोत्कचन सहिता सिंहनादान् प्रचक्रिरे । शख दुन्दुभि निर्घोषे स्त तान् मेदिरे भृशम् ॥ ४९ ॥ एव तव बल सर्वं हैडिम्बेन दुरात्मना । सूर्यास्तमन वलाया प्रभग्न विद्रुत दिश ॥ ५० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि हैडिम्बमायाया पचनवतितमोऽध्यायः ॥ ९५ ॥

आदि जो वडे धनुषधारी कौरवीय शूरवीर थे उन सबको राजाओंगों ने भी रथ सारथी हाथी घोडों समेत उस ने पृथ्वीपर गिराया, हे राजा उस आपकी सेना के डेरोंकी ओर भागता हुआ देखकर मेंने और देवव्रत भीष्मजीने बहुत २ पुकारा कि डरामत यह राक्षसी माया घटोत्कच की पैदा कीहुई है इसको सुनकर भी वह महा अचेत होकर नियत नहीं हुए उन भयभीतोंने हम दोनोंके कहनेपर भी विश्वास नहीं किया उस सेना को भागाहुआ देखकर विजय पानेवाले पाडवों ने घटोत्कच समेत मिलकर वडे सिंहनादोंको किया और शखदुन्दुभी भी चारों ओर से अच्छी रीति से वजाई, इस रीतिसे सायंकालको सूर्यास्त के समय दुष्टात्मा घटोत्कच की मायासे आप का सब सेना चारोंओरको भागी ॥ ५० ॥

well as the kings accompanying them were struck down to the ground together with their chariot drivers elephants and horses. Seeing them flying towards your camp Devbrat and I tried again and again to stop and comfort them, saying that it was nothing but the deception of the rakshases but in spite of our efforts they could not be brought back and would not believe us At the sight of their rout the conquering Pandavas and Ghatotkach together raised a tremendous war cry and blew their conchs and trumpets. Thus in the evening at sunset all your armies were dispersed by the deception of mischievous Gatotkach 50



सञ्जय उवाच । तस्मिन् महति सक्रन्दे राजा दुर्योधनस्तदा । गाङ्गेयमुपसङ्गम्य विनयेनाभिवाद्य च ॥ १ ॥ तस्य सर्वं यथावृत्तमाख्यातु मुपचक्रमे । घटोत्कचस्य विजयमात्मनश्च पराजयम् ॥ २ ॥ कथयामास दुर्धर्षो विनि स्वस्य पुन पुन । अब्रवीच तदा राजन् भीष्म कुरुपितामहम् ॥ ३ ॥ भवन्त समुपाश्रित्य वासुदेव यथा परैं । पाण्डवैर्विग्रहो घोर "स"रब्धो मया प्रभो ॥ ४ ॥ एकादश समाख्याता अक्षौहिण्यश्च या मम । निदेशे तव तिष्ठन्ति मया सार्धं परन्तप ॥ ५ ॥ सोऽहं भरतशार्दूल भीमसेन पुरोगमै । घटोत्कच समाश्रित्य पाण्डवैर्युधिनिर्जित ॥ ६ ॥ तन्मे दहति गात्राणि शुष्कवृक्षमिवानल । तदिच्छामि महाभाग त्वत्प्रसादात् परन्तप ॥ ७ ॥ राक्षसापसद हन्तु स्वयमेव पितामह । त्वा समाश्रित्य दुर्धर्ष तन्मे कर्त्तुमर्हसि ॥८॥ एतच्छ्रुत्वातु वचन राज्ञो भरतसत्तम । दुर्योधनमिद वाक्य भीष्म शान्तनवोऽब्रवीत् ॥ ९ ॥ शृणु राजन् ममवचो यत्त्वा वक्ष्यामि कौरव । यथा त्वया महाराज वर्त्तितव्यं

अध्याय ॥ ९६ ॥

सञ्जय बोले हे महाराज उसबड़े शब्द के होनेपर राजा दुर्योधन ने भीष्मजी के समीप जाके बड़ी नम्रता पूर्वक दण्डवत करके, घटोत्कचकी विजय और अपनी पराजय होनेके मुख्य वृत्तान्तको बड़ी२ श्वासा लेकर वर्णन किया और पितामह से कहनेलगा, कि हे प्रभु मैंने वासुदेवजीके समान आपको अपनारक्षक समझकर बड़ी भयकारी शत्रुतापांडवोंसेकरीहै हेशत्रुहन्ता जो मेरी ग्यारह अक्षौहिणी प्रसिद्धहैं वहसब मुझ समेत आपकी आज्ञामें नियतहैं । ५ । हेभरतर्षभ ऐसा योगहोने परभी मैं भीमसेन आदि पाडव जिनका कि घटोत्कच रक्षक है उनसे पराजय हुआ, वह भीमसेन मेरेअंगों को ऐसा जलारहाहै जैसे सूखे वृक्षको अग्निजलाताहै, हे शत्रुहन्ता पितामह आपसे दुर्जय पुरुषकी रक्षा में होकर आपकी कृपासे उस नीच राक्षसको मैं अपने हाथसे माराचाहता हू आपमेरे मनोरथको पूराकरने को योग्यहो, दुर्योधन के इस

CHAPTER XCVI

Sanjaya said, 'On hearing that sound Prince Duryodhan went to Bhishm and humbly bowing down to him, recounted the facts of the conquest of Ghatotkach and his own defeat with deep sighs, saying "Knowing you to be my protector like Vasudev I have, O grandfather contracted enmity with the Pandavas I and my eleven akshauhinis O destroyer of foes obey your orders 5 Being so united, O best of Bharats I have been defeated by Bhimsen and other Pandavas led by Ghatot kach Bhimsen burns the parts of my body as fire does dry wood Protected by a personage like you, O grandfather, destroyer of enemies I wish to slay that despicable rakshas with my own hand You have the power to satisfy the desire of my mind" To those words of Duryodhan, Bhishm the son of Shantanu made the following

परन्तप ॥ १० ॥ आत्मा रक्ष्यो रणे तात सर्वावस्थास्वरिन्दम । धर्मराजेन संग्रामस्त्वया कार्यः सदानघ ॥ ११ ॥ अर्जुनेन यमाभ्यां वा भीमसेनेन वा पुनः । राजधर्मं पुरस्कृत्य राजा राजानमार्च्छति ॥ १२ ॥ अहं द्रोणः कृपो द्रौणिः कृतवर्मा च सात्वतः । शल्यश्च सौमदत्तिश्च विकर्णश्च महारथाः ॥ १३ ॥ तव च भ्रातरः श्रेष्ठा दुःशासनपुरोगमाः । त्वदर्थं प्रतियोत्स्यामो राक्षसं तं महाबलम् ॥ १४ ॥ रौद्रे तस्मिन् राक्षसेन्द्रे यदि ते तुरापो महान् । अयं वा गच्छतु रणे तस्य युद्धाय दुर्मते ॥ १५ ॥ भगदत्तो महीपालः पुरन्दरसमो युधि । एतावदुक्त्वा राजानं भगदत्तमथाब्रवीत् ॥ १६ ॥ समक्षं पार्थिवेन्द्रस्य वाक्यं वाक्यविशारदः । गच्छ शीघ्रं महाराज हैडिम्बं युद्धदुर्मदम् १७॥ वारयस्व रणे यत्तो मिषतां सर्वधन्विनाम् । राक्षसं क्रूरकर्माणं यथेन्द्रस्तारकं पुरा ॥ १८ ॥ दिव्यानि तव शस्त्राणि विक्रमश्च परन्तप । समागमश्च बहुभिः पुराभूदसुरैः

वचनको सुन कर शांतनु भीष्मजी यह वचन बोले, हे कौरवेन्द्र जो मैं वचन कहताहूं उस को सुनकर उसीके अनुसार तुमको भी करना योग्यहै । १० । हे शत्रुहन्ता पुत्र युद्ध में सब प्रकारसे अपना शरीर रक्षा के योग्य है हे निष्पाप तुमको सदैव धर्म राज से युद्ध करना उचित है, और अर्जुन नकुल सहदेव अथवा भीमसेनके साथ युद्ध करना उचित है राजा राजधर्म को आगे करके किसी राजा के सम्मुख होता है, मैं और द्रोणाचार्य कृपाचार्य अश्वत्थामा कृतवर्मा यादव शल्य भूरिश्रवा महारथी विकर्ण औरतेरे वह सब भाई जिनमें अग्रगण्य दुःशासन है, यह सबतेरे निमित्त उस महाबली राक्षस से लड़ेंगे । १४ । उस रुद्ररूप राक्षसों के राजा से जो तेरी बड़ी शत्रुता है तो उस दुर्बुद्धी राक्षस के युद्ध के लिये भगदत्त को भेजो यह कहकर राजा भगदत्त से बोले कि हे महाराज तुम बड़ी शीघ्रता से उस दुर्मद घटोत्कच के सम्मुख जाओ और सब राजाओं के देखते हुए उस कठिनकर्मा राक्षसको ऐसे हटाओ जैसे कि पूर्व समय में इन्द्र ने तारकको हटायाथा, हे शत्रुहन्ता तुम्हारे पास

reply:—"Hear my words, Princeof Kauravas, and act upon them 10. My son, destroyer of foes, one's own body is worthy of protection by all means. You may fight against Dharmraj, Arjun, Nakul, Sahadev or Bhimsen by all means. A king may justly fight with another king. I as well as Dronacharya, Kripacharya, Ashwathama, Kritvarma the Yadav, Shalya, Bhurishrava, valliant Vikarn and all your brothers led by Dushasan will fight for you against the powerful rakshas.14. Send Bhagatta against that prince of rakshases, if you are inclined to kill him." Then turning towards Bhagdatta he said, "Hasten to encounter with the dreadful rakshas, king, and within sight of all the warriors defeat the dreadful rakshas of great prowess as Indra in the days of yore had defeated Tarak. You have divine weapons, O destroyer of enemies. You are full of prowess and have in former days fought many rakshases. You are worthy of fighting

सह॥ १९ ॥ त्वं तस्य नृपशार्दूल प्रतियोद्धा महाहवे । स्वबलेनोच्छ्रितो राजन् जहि राक्षसपुङ्गवम् ॥ २० ॥ एतच्छ्रुत्वातु वचनं भीष्मस्य पृतनापते । प्रययौ सिंहनादेन परानभिमुखो द्रुतम् ॥ २१ ॥ तमाद्रवन्तं सम्प्रेक्ष्य गर्जन्तमिव तोयदम् । अभ्यवर्त्तन्त संक्रुद्धा पाण्डवानां महारथाः ॥२२॥ भीमसेनोभिमन्युश्च राक्षसश्च घटोत्कचः । द्रौपदेयाः सत्यधृतिः क्षत्रदेवश्च भारत ॥ २३ ॥ चेदिपो वसुदानश्च दशार्णाधिपतिस्तथा । सुप्रतीकेन तांश्चापि भगदत्तोप्युपाद्रवत् ॥ २४ ॥ ततः समभवद्युद्धं घोररूपं भयानकम् । पाण्डूनां भगदत्तेन यमराष्ट्रविवर्धनम् ॥ २५ ॥ प्रयुक्ता रथिभिर्बाणा भीमवेगाः सुतेजनाः । ते निपेतुर्महाराज नागेषु च रथेषु च ॥ २६ ॥ प्रभिन्नाश्च महानागा विनीता हस्तिसादिभिः । परस्परं समासाद्य सन्निपेतुरभीतवत् ॥ २७ ॥ मदान्धा रोषसंरब्धा विषाणाग्रैर्महाहवे । बिभिदुर्दन्तमुसलैः समासाद्य परस्परम् ॥ २८ ॥ हयाश्च चामरापीडाः प्रासपाणिभिरास्थिताः । चोदिता सादिभिः क्षिप्रं निपेतुरितरेतरम् ॥२९॥

दिव्य अस्त्रहैं और महापराक्रमीहो और पूर्वसमय में भी तुमने बहुतसे असुरोंसे सम्मुखता करी है, हे राजेन्द्र तुम इस युद्ध में उस राक्षस से युद्ध करने के योग्यहो, इस से हेराजा तुम अपनी बड़ी सेनाके बलसे राक्षसको मारो।२०।यह भीष्मजीके वचनोंको सुनकर भगदत्त बड़े सिंहनाद पूर्वक शत्रुओंके सम्मुख गया और पांडवों केभी आगे लिखेहुए महाबली शरमा उस क्रोध युक्त बादल के समान गर्जते भगदत्तको देखकर सम्मुख आकर वर्त्तमानहुये भीमसेन, अभिमन्यु, घटोत्कच, द्रौपदी के पुत्र, सत्यधृति, क्षत्रदेव, चेदिकाराजा, वसुदान, औरदशार्णाधिपति सुप्रतीक हाथी पर सवार भगदत्तके सम्मुखगये, और भगदत्तकेसाथ पांडवोंका खबयुद्धहुआ वहयुद्ध बड़ाभयानक और यमराजके पुरका वृद्धिकारक था ।२५। रथियों ने बड़े २ भयानक बाणों से रथी और हाथियों को मारा और बड़े २ मदोन्मत्त हाथियों को हाथीवानों ने-संग्राम भूमिमें लेजाकर बड़ी निर्भयतासे एक एक के पीछे दौड़ाया फिर हाथियों ने परस्परमें अपने २ तीक्ष्ण दांतोंसे घायल किया, चमर और प्रासधारी

with the dreadful rakshas, kill him with the help of your armies 20 Having heard the words of Bhishm, Bhagdatta faced the enemies with a roar, and seeing the advance of Bhagdatta there came on to fight against him the following warriors of the Pandavas, namely Bhimsen, Abhimanyu, Ghatotkach, the sons of Draupadi, Satya dhriti, Kshatradev, the king of Chedi Vasudan and the king of Dasharn All these warriors encountered Bhagdatta who rode on his elephant named Supratik The battle between the two parties was very severe and dreadful and filled the region of Yamraj 25 The charioteers with their dreadful arrows killed the charioteers and elephant riders and the drivers of elephants goaded their beasts fearlessly against others in the field of battle The elephants wounded one another with their sharp tusks. The horsemen armed with barbed

पादाताश्च पदात्यौघैस्ताडिताः शक्तितोमरैः। न्यपतन्त तदा भूमौ शतशोथ सहस्रशः॥ ३० ॥ रथिनश्च रथैराजन् कर्णिनालीकसायकैः। निहत्य समरे वीरान् सिंहनादान् विनेदिरे। ३१ ॥ तस्मिंस्तथा वर्तमाने संग्रामे लोमहर्षणे। भगदत्तो महेष्वासो भीमसेनमथाद्रवत् ॥ ३२ ॥ कुञ्जरेण प्रभिन्नेन सप्तधा स्रवता मदम्। पर्वतेन यथा तोयं स्रवमाणेनसर्वशः ॥ ३३ । किरञ्छरसहस्राणि सुप्रतीकशिरोगतः। ऐरावतस्थो मघवान् वारिधारा इवानघ ॥ ३४ ॥ स भीमं शरधाराभिस्ताडयामास पार्थिवः। पर्वतं वारिधाराभिस्तपान्ते जलदो यथा ॥ ३५ ॥ भीमसेनस्तु संक्रुद्धः पादरक्षान् परःशतान्। निजघान महेष्वासः संरब्धः शरवृष्टिभिः ॥ ३६ ॥ तान्दृष्ट्वा निहतान् क्रुद्धो भगदत्तः प्रतापवान्। चोदयामास नागेन्द्रं भीमसेनरथं प्रति ॥ ३७ ॥ स नागः प्रेषितस्तेन बाणोऽज्याचोदितो यथा। अभ्यधावत वेगेन भीमसेनमरिन्दमम् ॥ ३८ । तमाप

घोडों के सवार नियत हुये और बडी शीघ्रतासे एकदूसरे पर दौडे, तब हजारों पदाती शत्रुओं के बरछी आदि शस्त्रों से मरेहुये पृथ्वी पर गिरे । ३० । और रथियों के शायकों से अन्य रथी घायल होकर गिरे फिर युद्धमें गिराने वाले वीरों ने सिंहनाद किये, इस प्रकार के रोमहर्षण युद्ध के जारी होने पर बड़ा धनुषधारी भगदत्त बडेभारी सप्तांग मदस्रावी गजेन्द्रकी सवारी के द्वारा भीमसेन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि जलके छिडकनेवाले बादल बडे पर्व्वतके ऊपर जाते है फिरउसने उस सुप्रतीक हाथी के शिरपर सवार होकर हजारों बाणों को ऐसे बर्षाया जैसेकि ऐरावत हाथीपर चढाहुआ इन्द्रजलकी धाराओ को वर्षाता है, उस राजाने बाणोंसे भीमसेनको ऐसा घायल किया जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल जलकी धाराओंसे पर्व्वत को घायल करता है । ३५ । फिर बडे धनुषधारी भीमसेनने अत्यन्त क्रोधित होकर वाणों की वर्षासे सैकडों पादरक्षकों को मारा फिर बडे प्रतापवान् भगदत्त ने उन पादरक्षकों को माराहुआ देखकर बडे क्रोधसे अपने गजेन्द्रको भीमसेनके रथ पर पेला, जैसे कि धनुषसे चलाया हुआ बाण जाताहै उसीप्रकार उसकापेला हुआहाथी

missiles and fly flappers rushed against one another Thousands of foot soldiers slain by spears and other weapons of enemies lay on earth. 30 Charioteers wounded by the arrows of other charioteers fell on earth The warriors roared like lions When the battle was raging so furiously Bhagdatta the great archer riding his huge elephant which dropped juice from seven places in his body faced Bhimsen as raining clouds pass over a mountain. From his elephant named Suprátik he showered thousands of arrows as Indra sends forth showers of rain from the back of Airavat He showered his arrows over Bhimsen as a cloud send forth rain over a mountain 35 Then the great archer Bhimsen in great anger killed hundreds of the king's guards with his arrows Bhagdatta of great prowess seeing his foot guards slain sent his huge elephant against Bhimsen in great anger

तन्तं सम्प्रेक्ष्य पाण्डवानां महारथाः । अभ्यवर्त्तन्त वेगेन भीमसेनपुरोगमाः ॥ ३९ ॥
केकयाश्चाभिमन्युश्च द्रौपदेयाश्चसर्वशः । दशार्णाधिपतिः शूरः क्षत्रदेवश्चमारिष ।४०॥
चेदिपश्चित्रकेतुश्च संरब्धाः सर्व एव ते । उत्तमास्त्राणि दिव्यानि दर्शयन्तो महाबलाः
॥ ४१ ॥ तमेकं कुञ्जरं क्रुद्धाः समन्तात् पर्य्यवारयन् । स विद्धो बहुभिर्बाणैर्व्यरोचत
महाद्विपः ॥ ४२ ॥ सञ्जातरुधिरोत्पीडो धातुचित्र इवाद्रिराट् । दशार्णाधिपतिश्चापि
गजं भूमिधरोपमम् ॥ ४३ ॥ समास्थितोभिदुद्राव भगदत्तस्य वारणम् । तमापतन्तं
समरे गजं गजपतिः स च ॥ ४४ ॥ दधार सुप्रतीकोपि वेलेव मकरालयम् । वारितं
प्रेक्ष्य नागेन्द्रं दशार्णस्य महात्मनः ॥ ४५ ॥ साधुसाध्विति सैन्यानि पाण्डवेयान्य
पूजयन् । ततः प्राग्ज्योतिषः क्रुद्धस्तोमरान् वै चतुर्दश ॥ ४६ ॥ प्राहिणोत्तस्य नागस्य
प्रमुखे नृपसत्तम । वर्म मुख्यं तनुत्राणं शातकुम्भपरिष्कृतम् ॥ ४७ ॥ विदार्य्य प्रावि-

भी शत्रुजित भीमसेनके ऊपर बड़ी शीघ्रगतिसे दौड़ा, उसआतेहुये हाथी को देख कर, भीमसेनके आगे चलनेवाले अभिमन्यु पांचोंकेकय द्रौपदी के पांचों पुत्र राजा दुदशार्ण क्षत्रदेव । ४० । चेदिका राजाचित्रकेतुइन सबने क्रोध युक्त होकर दिव्य अस्त्रोंके द्वारा, उस अकेले हाथीको चारों ओर से घेर लिया वह महागजेन्द्र दश बाणों से घायल होकर रुधिरको डालता हुआ ऐसा महाशोभायमान हुआ, जैसे कि धातुओंमे चित्रित गिरिराज पर्व्वत शोभित होता है । ४३ । फिर पर्व्वतके समान हाथी पर सवार राजा दुशार्ण भी भगदत्त के हाथी पर दौड़ा, तब उस हाथियोंके राजा सुप्रतीक ने उस आते हुये हाथी को ऐसे रोका जैसे कि किनारा समुद्र को रोकता है । ४५ । महात्मा राजा दुशार्ण के हाथी को रुकाहुआ देखकर पाण्डवों की सेना ने साधुसाधु करके प्रशंसा करी इस के पीछे बड़े क्रोधयुक्त राजा प्राग्ज्योतिष ने चौदह तोमर उसहाथी के ऊपर फेंके वह सब तोमर स्वर्णमयी कवचको भेदन करके उसके शरीर में ऐसे प्रवेश करगये जैसे सर्प वामी में प्रवेश

Like an arrow discharged from a bow, the elephant goaded by the king rushed against Bhim. Seeing that elephant coming towards them, Abhimanyu, the five Kaikaya brothers, the five sons of Draupadi, king Dusharn, Kshatradev, 40 the king of Chedi and Chitraketu the leaders of Bhimsen's army armed with celestial weapons, surrounded the elephant in great rage. Wounded by ten arrows, the huge elephant, bleeding from wounds, looked glorious like a mountain variegated with its minerals 43. Mounted on his elephant huge like a mountain, king Dusharn rushed against king Bhagdatta. Supratik the *prince of elephants, seeing that elephant coming towards him,* checked him as the shore does the ocean 45 Seeing the elephant of the king of Dusharn thus checked, the Pandavas raised a cry of 'good, good', and praised him. Then the king of Pragjyotish discharged

क्रौंचं महाराज चमैवाग्नौ समाहितम् । भग्नन्तु स्वबलं दृष्ट्वा भगदत्तेन धीमता
॥ ५७ ॥ घटोत्कचाथ संक्रुद्धो भगदत्तमुपाद्रवत् । विकटः पुरुषो राजन् दीप्तास्यो
दीप्तलोचनः ॥ ५८ ॥ रूपं विभीषणं कृत्वा रोषेण प्रज्वलन्निव । जग्राह विमलं शूलं
गिरिणामपि दारणम् ॥ ५९ ॥ नागं जिघांसुः सहसा चिक्षेप च महाबलः । सविस्फु
लिङ्गमालाभिः समन्तात् परिवेष्टितः ॥ ६० ॥ तमापतन्तं सहसा दृष्ट्वा प्राग्ज्योतिषो
नृपः । चिक्षेप रुचिरं तीक्ष्ण मर्धचन्द्रं सुदारुणम् ॥ ६१ ॥ चिच्छेद तन्महच्छूलं तेन
बाणेन वेगवान् । उत्पपात द्विधा च्छिन्नं शूलं हेमपरिष्कृतम् ॥ ६२ ॥ महाशनिर्यथा
भ्रष्टा शक्रमुक्ता नभोगता । शूलं निपातितं दृष्ट्वा द्विधा कृत्तं च पार्थिवः ॥ ६३ ॥ रुक्म
दण्डां महाशक्तिं जग्राहाग्निशिखोपमाम् । चिक्षेप तां राक्षसस्य तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत्
॥ ६४ ॥ तामापतन्तीं सम्प्रेक्ष्य वियत्स्थामशनीमिव । उत्पत्य राक्षसस्तूर्णं जग्राह च
ननाद च ॥ ६५ ॥ बभञ्ज चैनां त्वरितो जान्वारोप्य भारत । पश्यत पार्थिवेन्द्रस्य

से पीड़ित अपनी सेना को देखकर, बड़े क्रोध में भराहुआ घटोत्कच भगदत्त के सम्मुख गया हे राजा उसविकटरूप क्रोधसे लाल नेत्र पराक्रमी घटोत्कचने अपने रूपको भयानक करके पर्व्वतोंके भी तोड़ने वाले बड़ेउग्र शूलको हाथमें लिया, और हाथीके मारने की इच्छासे अकस्मात घुमाकर फेंका. वहशूल चारों ओरसे अग्नि कणों करके व्याप्तथा ६० उस अकस्मात गिरते हुये शूलको देखकर राजा प्राग्ज्योतिष भगदत्तने बड़ेसुन्दर तीक्ष्ण भयानक अर्द्धचन्द्र नाम बाणको फेंककर उसशूल को काटा तब वह सुनहरी शूल दोखण्ड होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि इन्द्रकावज्र आकाश से गिरता है हे राजा शूलको टूटा और गिराहुआ देखकर भगदत्त बड़ी तीक्ष्ण सुनहरी बरछीको लेकर राक्षसपर फेंककर तिष्ठतिष्ठ इस वचनको कहने लगा, उस आकाशसे गिरतीहुई वज्रके समान बरछीको देखकर उसराक्षसने बड़ी शीघ्रता से उछलकर पकड़ा और महागर्जना को किया।६५।और शीघ्रही उस बरछी को घोंटू

by that elephant and standing as if it were in fire and wounded by the enraged Bhagdatta, the Pandav army was much distressed. At this Ghatotkach much enraged rushed against Bhagdatta. Ghatotkach of wonderful form with eyes red in anger, assumed a dreadful shape and took up a dreadful spear that could pierce through a mountain, he hurled it with an intention to kill the elephant. The spear had flames of fire on all sides. 60. Seeing the spear coming suddenly upon him, Bhagdatta the king of Pragjyotish cut it with a beautiful sharp and dreadful arrow of the shape of crescent. The golden spear cut by the arrow into two pieces fell down on earth like the vajra of Indra. Seeing the spear cut and fallen, Bhagdatta took up a very sharp spear made of gold and hurled it at the rakshas with a cry of 'stay stay.' Seeing the spear falling from the sky like vajra, the rakshas with a jump hold it in his hand and roared a loud roar. 65 And

शान् क्षिप्रं वल्मीकमिव पन्नगाः । स गाढविद्धो व्यथितो नागो भरतसत्तम ॥ ४८ ॥ उपावृत्तमदः क्षिप्रमभ्यवर्त्तत वेगिनः । स प्रदुद्राव वेगेन प्रणदन् भैरवं रवम् ॥ ४९ ॥ सम्मर्द्दयानः स्वबलं वायुर्वृक्षानिवौजसा । तस्मिन् पराजिते नागे पाण्डवानां महारथाः ॥ ५० ॥ सिंहनादं विनद्योच्चैर्युद्धायैवावतस्थिरे । ततो भीमं पुरस्कृत्य भगदत्तमुपाद्रवन् ॥ ५१ ॥ किरन्तो विविधान् बाणान् शस्त्राणि विविधानि च । तेषामापततां राजन् संक्रुद्धानाममर्षिणाम् ॥ ५२ ॥ श्रुत्वा स निनदं घोरममर्षाद्गतसाध्वसः । भगदत्तो महेष्वासः स्वं नागं प्रत्यचोदयत् ॥ ५३ ॥ अंकुशांगुष्ठ नुदितः सगजप्रवरो युधि । तस्मिन् क्षणे समभवत् साम्वर्त्तक इवानलः ॥ ५४ ॥ रथसंघांस्तथा नागान् हयांश्च सह सादिभिः । पादातांश्च सुसंक्रुद्धः शतशोथ सहस्रशः ॥ ५५ ॥ अमृद्नात्स मरे नागः संप्रधावंस्ततस्ततः । तेन संलोड्यमानन्तु पांडवानां बलं महत् ॥ ५६ ॥ सञ्चु

करता है, फिर वह महा घायल और पीड़ामान मदोन्मत्तहाथी बड़े भयानक शब्द को करके प्रथम तो सम्मुख हुआ फिर बड़ी शीघ्रता से अपनी सेना को दबाता कुचलताहुआ महाव्याकुलहोकर ऐसा दौड़ा जैसे कि वायु अपने बलसे वृक्षों को गिराता हुआ जाता है। ५०। उस हाथी के पराजय होनेपर पाण्डवोंके महारथियों ने, बड़े उच्च स्वर से सिंहनाद किया और सब युद्ध के निमित्त सम्मुख नियत हुये इस के पीछे भीमसेन को आगे करके नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रों को फेंकते मारते भगदत्तके सम्मुख गये हे राजा उन अत्यन्त क्रोधयुक्त आतेहुये असह्य लोगों के भयानक शब्दों को सुनकर क्रोध से निर्भय बड़े धनुषधारी भगदत्त ने अपने हाथी को चलायमान किया, फिर अंकुशरूपी उंगलीसे पीड़ामान हाथी उसयुद्धमें संवर्त्तक अग्नि के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर हजारों रथ समूहोंको हाथी घोड़े सवार और पदातियों समेत मारता तोड़ता कुचलताहुआ इधर उधर को दौड़ा । ५५ । उस हाथी से घायल मलयाग्नि में नियत होने के समान क्रोधयुक्त भगदत्त के हाथ

fourteen tomars which pierced through the golden armour and entered his body as a serpent enters an ant-hill Excessively wounded and distressed the huge elephant shrieked loud, and facing the enemy for a moment, ran away trampling and killing the warriors of his own party as the wind destroys the trees in its fury. 50. When the elephant was thus vanquished, the Pandav warriors roared like lions and faced the enemy in the field of battle. Discharging different sorts of weapons and led by Bhimsen, they rushed against king Bhagdatta. Hearing the sounds of those enraged warriors coming towards him in great force, the intrepid archer Bhagdatta moved his elephant in a rage. Goaded by the hook the elephant, enraged like the fire of pralaya, rushed hither and thither, destroying and trampling thousands of chariots, elephants, horsemen and foot soldiers 55. Wounded

क्रोध महाराज चमूँवाग्नौ समाहितम् । भग्नन्तु स्वबल दृष्ट्वा भगदत्तेन धीमता ॥ ५७ ॥ घटोत्कचोथ सक्रुद्धो भगदत्तमुपाद्रवत् । विकट पुरुषो राजन् दीप्तास्यो दीप्तलोचन ॥ ५८ ॥ रूप विभीषण कृत्वा रोषेण प्रज्वलन्निव । जग्राह विमल शूल गिरिणामपि दारणम् ॥ ५९ ॥ नाग जिघांसु सहसा चिक्षेप च महाबल । सविस्फुलिङ्गमालाभि समन्तात परिवेष्टित ॥ ६० ॥ तमापतन्त सहसा दृष्ट्वा प्राग्ज्योतिष नृप । चिक्षेप रुचिर तीक्ष्ण मर्धचन्द्रं सुदारुणम् ॥ ६१ ॥ चिच्छेद तन्महच्छूल तेन बाणेन वेगवान् । उत्पपात द्विधा छिन्न शूल हेमपरिष्कृतम् । ६२ ॥ महाशनिर्यथा भ्रष्टा शक्रमुक्ता नभोगता । शूल निपातित दृष्ट्वा द्विधा कृत्तं च पार्थिव ॥ ६३ ॥ रुक्म दण्डा महाशक्तिं जग्राहाग्निशिखोपमाम् । चिक्षेप तां राक्षसस्य तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ६४ ॥ तामापतन्तो सम्प्रेक्ष्य वियत्स्थामशनीमिव । उत्पत्य राक्षसस्तूर्ण जग्राह च ननाद च ॥ ६५ । बभञ्ज चैनां त्वरितो जान्वारोप्य भारत । पश्यत पार्थिवेन्द्रस्य

से पीड़ित अपनी सेना को देखकर, बड़े क्रोध में भराहुआ घटोत्कच भगदत्त के सम्मुखगया हे राजा उसविकटरूप क्रोधसे लाल नेत्र पराक्रमी घटोत्कचने अपने रूपको भयानक करके पर्वतोंके भी तोड़ने वाले बड़ेउग्र शूलको हाथमें लिया, और हाथीके मारने की इच्छासे अकस्मात घुमाकर फेंका वहशूल चारों ओरसे अग्नि कणों करके व्याप्तथा ६० उस अकस्मात गिरते हुये शूलको देखकर राजा प्राग्ज्योतिष भगदत्तने बड़ेसुन्दर तीक्ष्ण भयानक अर्द्धचन्द्र नाम बाणको फेंककर उसशूल को काटा तब वह सुनहरी शूल दोखण्ड होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि इन्द्रकावज्र आकाश से गिरता है हे राजा शूलको टूटा और गिराहुआ देखकर भगदत्त बड़ी तीक्ष्ण सुनहरी बरछीको लेकर राक्षसपर फेंककर तिष्ठतिष्ठ इस वचनको कहने लगा, उस आकाशसे गिरतीहुई वज्रके समान बरछीको देखकर उसराक्षसने बड़ी शीघ्रता से उछलकर पकड़ा और महागर्जना को किया।६५।और शीघ्रही उस बरछी को घोटू

by that elephant and standing as if it were in fire and wounded by the enraged *Bhagdatta*, the *Pandav* army was much distressed At this Ghatotkach much enraged rushed against Bhagdatta Ghatotkach of wonderful form with eyes red in anger, assumed a dreadful shape and took up a dreadful spear that could pierce through a mountain, he hurled it with an intention to kill the elephant. The spear had flames of fire on all sides 60 Seeing the spear coming suddenly upon him Bhagdatta the king of Pragjyotish cut it with a beautiful sharp and dreadful arrow of the shape of crescent The golden spear cut by the arrow into two pieces fell down on earth like the vajra of Indra Seeing the spear cut and fallen, Bhagdatta took up a very sharp spear made of gold and hurled it at the rakshas with a cry of stay stay' Seeing the spear falling from the sky like vajra, the rakshas with a jump held it in his hand and roared a loud roar 65 And

तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ६६ ॥ तद्वेक्ष्य कृत कर्म राक्षसेन बलीयसा । दिवि देवा सगन्धर्वा मुनयश्चापि विस्मिता ॥ ६७ ॥ पाण्डवाश्च महाराज भीमसेनपुरोगमा । साध्साध्विति नादेन पृथिवीमन्वनादयन् ॥ ६८ ॥ त तु श्रुत्वा महानाद प्रहृष्टाना महात्मनाम् । नामृष्यत महेष्वासो भगदत्त प्रतापवान् ॥ ६९ ॥ स विस्फार्य्य मह ञ्चाप मिन्द्राशनिसमप्रभम् । तर्जयामास वेगेन पाण्डवाना महारथान् ॥ ७० ॥ विसृजन् विमलास्तीक्ष्णान्नाराचान् ज्वलनप्रभान् । भीममेकेन विव्याध राक्षस नवभि शरै ॥ ७१ ॥ अभिमन्यु त्रिभिश्चैव केकयान् पञ्चभिस्तथा । पूर्णायतविसृष्टेन शरेणानत पर्वणा ॥ ७२ ॥ बिभेद दक्षिण बाहु क्षत्रदेवस्य चाहवे । पपात सहसा तस्य सशरधनु रुत्तमम ॥ ७३ ॥ द्रौपदेयास्तत पञ्च पञ्चभि समताडयत् । भीमसेनस्य च क्रोधा न्निजघान तुरङ्गमान् ॥ ७४ ॥ ध्वज केसरिण चास्य चिच्छेद विशिखैस्त्रिभि ।

पर रखकर राजा के देखतेही देखते तोडडाला यह सबको आश्चर्यसा हुआ । ६६ । पराक्रमी राक्षस से किये हुए उस कर्म को देखकर आकाश में गन्धर्वों समेत देवता और मुनि भी आश्चर्य करनेलगे, हेमहाराज जिनमें भीमसेन अग्र गणनीयहैं उनपाण्डव लोगों ने धन्यधन्य शब्दों से पृथ्वी को शब्दायमान किया, फिर वडा धनुषधारी प्रतापवान भगदत्त पाण्डवों के उस अत्यन्त आनन्दकारी शब्द को सुनकर न सहसका । ६९ । और इन्द्र के वज्रके समान वडे धनुष को चढाकर उस ने पाण्डवों के महारथियों को घुडका । ७० । फिर निर्मल स्वच्छ प्रकाशमान नाराचों को छोडते हुये भगदत्त ने एक बाणसे भीमसेन को और नौ वाणों से राक्षस को घायल करके तीन बाणसे अभिमन्यु को पाच से केकय लोगों को व्याकुल किया और फिर अच्छे प्रकारसे खेंचे और झुके ग्रन्थीवाले बाणसे, क्षत्र देवकी दक्षिण भुजा को ऐसा घायल किया कि वह भुजा धनुष समेत अकस्मात पृथ्वी पर गिरपडी, फिर पाच वाणों से द्रौपदी के पुत्रों को घायल करके बडे क्रोधसे

within sight of the king he broke it into pieces with the help of his knee. This was a wonder. Seeing the wonderful deed of the rakshas the gandharvas, gods and munis on high were much amazed. The Pandavas as led by Bhimsen rang the directions with their war-cries. Then the great archer Bhagdatta of great prowess could not bear the joyful sounds of the Pandavas and taking up his bow like the vajra of Indra challenged the Pandav warriors. 70. Then discharging his bright arrows, Bhagdatta wounded Bhimsen with one arrow, the rakshas with nine, Abhimanyu with three and the Kaikayas with five, and with well drawn bow discharging arrows having hidden knots so wounded Kshatradeva's right arm that it was severed from his body and fell down with the bow. Then wounding the sons of Draupadi in a rage, he killed Bhimsen's horses. Then with three sharp arrows, he

निर्बिभेद त्रिभिश्चान्यैः सारथिं चास्य पत्रिभिः । ७५॥ स गाढविद्धो व्यथितो रथोपस्थ उपाविशत् । विशोको भरतश्रेष्ठ भगदत्तेन संयुगे ॥ ७६ ॥ ततो भीमो महाबाहुर्विरथो रथिनांवरः । गदां प्रगृह्य वेगेन प्रचस्कन्द रथोत्तमात् ॥ ७७ ॥ तमुद्यतगदं दृष्ट्वा सशृङ्गमिव पर्वतम् । तावकानां भयं घोरं समपद्यत भारत ॥ ७८ ॥ एतस्मिन्नेवकाले तु पाण्डवः कृष्णसारथिः । आजगाम महाराज निघ्नन्शत्रून् समन्ततः ॥ ७९ ॥ यत्रतौ पुरुषव्याघ्रौ पितापुत्रौ महाबलौ । प्राग्ज्योतिषेण संयुक्तौ भीमसेनघटोत्कचौ ॥ ८० ॥ दृष्ट्वाच पाण्डवो भ्रातॄन् युध्यमानान्महारथान् । त्वरितो भरतश्रेष्ठ तत्रायुध्यतकिरञ्छरान् ॥ ८१ ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा त्वरमाणो महारथः । सेनामचोदयत् क्षिप्रं रथनागाश्वसंकुलाम् ॥ ८२ ॥ तामापतन्तीं सहसा कौरवाणां महाचमूम् । अभिदुद्रावचे-

भीमसेन के घोड़ों को मारा, फिर विशिखनाम तीन बाणों से सिंह के चिह्न रखनेवाली उसकी ध्वजा को काटा और दूसरे तीन बाणों से उसके सारथी को घायल किया ७५ हे भरतर्षभ युद्ध में भगदत्तसे अत्यन्त घायल और पीड़ित वह विशोक सारथी रथके भीतर बैठगया, इसके अनन्तर रथियों में श्रेष्ठ महाबाहु भीमसेन विरथहोकर बड़ी शीघ्रतासे गदाको हाथमें लेकर उस रथ से कूदा, हे राजा उस पर्वतके समान उठाई हुई गदाको देखकर आपके शूरों में बड़ाभय उत्पन्न हुआ, इसके पीछे श्रीकृष्ण भगवान्को सारथी रखने वाला पांडव अर्जुन चारों ओर से शत्रुओंको मारताहुआ वहां आपहुँचा जहां कि वह महाबली पुरुषोत्तम पिता पुत्र भीमसेन और घटोत्कच प्राग्ज्योतिष के राजा भगदत्त से युद्ध कररहे थे हे भरतर्षभ वह अर्जुन युद्धकरते हुए महारथी भाइयों को देखकर अत्यन्त क्रोधसे बाणों की वर्षा करके युद्ध में प्रवृत्तहुआ, उसके पीछे महारथी राजा दुर्य्योधन ने बड़ी शीघ्रता से रथ हाथी घोड़ों से संयुक्त सेना को भेजा, फिर श्वेत घोड़े रखनेवाला पांडव अर्जुन बड़े वेग से उस अकस्मात् आनेवाली कौरवी महासेना के सम्मुखगया, और राजा

cut down his ensign bearing the figure of a lion and with three more wounded the driver. 75. Excessively wounded and distressed by Bhagdatta, Vishok the driver sat down within the chariot. Then the best of charioteers, valliant Bhimsen, destitute of chariot, jumped down from it mace in hand. Your warriors were much terrified at the sight of that mace upraised like a mountain. Then Arjun the Pandav having Shree krishn for his chariot driver, came on destroying the foes where the father and son, Bhimsen and Ghatotkach were fighting against prince Bhagdatta. 80. Seeing his brave brothers engaged in fight, O best of Bharats, Arjun began to fight discharging his weapons. Then the great warrior Prince Duryodhan sent an army of chariots, elephants and horses in great haste. Arjun the possessor of white horses rushed against the Kaurav army which was

गेन पाण्डव दैवतवाहन ॥ ८३ । भगदत्तश्च समरे तेन नागेन भारत । विमृद्नन्पाण्डवबलं युधिष्ठिरमुपाद्रवत् ॥ ८४ ॥ तदासीत्सुमहद्युद्धं भगदत्तस्य मारिष । पञ्चालैः पाण्डवैश्चैव केकयैश्चायतायुधैः ॥ ८५ ॥ भीमसेनोपि समरे तावुभौ केशवार्जुनौ । अश्रावयद्यथावृत्तमिरावद्वधमुत्तमम् ॥ ८६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भगदत्तपराक्रमे षडनवतितमोऽध्यायः ॥ ९६ ॥

सञ्जय उवाच । पुत्रं विनिहतं श्रुत्वा इरावन्तं धनञ्जयः । दुःखेन महताविष्टो निःश्वसन् पन्नगो यथा ॥ १ ॥ अब्रवीत् समरे राजन् वासुदेवमिदं वचः । इदं नूनमहाप्राज्ञो विदुरो दृष्टवान् पुरा ॥ २ ॥ कुरूणां पाण्डवानाञ्च क्षयं घोरं महामतिः । स ततो निवारितवान् धृतराष्ट्रं जनेश्वरम् ॥ ३ ॥ अन्येच बहवो वीराः सङ्ग्रामे मधुसूदन ।

भगदत्त उस अपने हाथी के द्वारा पांडवों की सेना को मर्दन करता हुआ युधिष्ठिर के सम्मुख गया, इसके पीछे हे राजा धृतराष्ट्र वहां भगदत्त का और पांडवोंका युद्ध पांचालदेशी और केकयदेशी लोगों समेत बड़े २ अस्त्र शस्त्रों के द्वारा महा भयानक हुआ, फिर भीमसेन ने भी उसी युद्ध में उन केशव और अर्जुन दोनों महात्माओं से इरावानके मारेजानेका जैसा वृत्तान्त हुआ सब यथार्थ वर्णन किया ।८६।

अध्याय ९७ ॥

संजय बोले हेराजा उस इरावान नाम पुत्रकोमराहुआ सुनकर बड़े खेद और शोकसे भरा, सर्प की समान श्वासा लेता हुआ अर्जुन वासुदेवजी से यह बचन बोला कि परम चतुर बुद्धिमान् सत्यवक्ता विदुरजी ने पूर्वसमय में बड़े निश्चय से इस कौरव और पांडवों के महाघोर नाशको देखाथा इसी कारण उन्होंने राजाधृतराष्ट्र से निषेध किया था, हे मधुसूदनजी इस के विशेष बहुतसे वीर लोग युद्ध में जैसे कौरवों

thus advancing King Bhagdatta destroying the Pandava armies with the help of his elephant encountered Yudhishthir Then, O king Dhritrashtra the battle between Bhagdatta and the Pandavas assisted by the Kaikayas and the Panchals, using weapons and missiles was very severe. Bhimsen then gave Keshav and Arjun in the field of battle, a detailed account of the death of Irawan as it happened' 86

CHAPTER XCVIII

"Hearing of the death of Iravan,' said Sanjaya, "Arjun was filled with grief and dismay, and sighing like a serpent said to Vasudev Surely Vidur had already foreseen the great destruction of the Kauravas and the Pandavas as he forbade Dhritarashtra. As many brave warriors are destroyed by the Kauravas as I have slain them. All this battle is being done for the sake of wealth. I despise a wealth

निहताः कौरवैः संख्ये तथास्माभिश्च कौरवाः ॥ ४ ॥ अर्थहेतोर्नरश्रेष्ठ क्रियते कर्म कुत्सितम् । धिगर्थान् यत्कृते ह्येवं क्रियते ज्ञातिसंक्षयः ॥ ५ ॥ अधनस्य मृतं श्रेयो नच ज्ञातिवधाद्धनम् । किन्नु प्राप्स्यामहे कृष्ण हत्वा ज्ञातीन्समागतान् ॥ ६ ॥ दुर्योधनापराधेन शकुनेः सौबलस्य च । क्षत्रिया निधनं यान्ति कर्णदुर्मन्त्रितेनच ॥ ७ ॥ इदानीञ्च विजानामि सुकृतं मधुसूदन । कृतं राज्ञा महाबाहो याचता च सुयोधनम् ॥ ८ ॥ राज्यार्द्धं पञ्च वा ग्रामा नाकार्षीत् स च दुर्मतिः । दृष्ट्वा हि क्षत्रियान्शूरान् शयानान् धरणीतले ॥ ९ ॥ निन्दामि भृशमात्मानं धिगस्तु क्षत्रजीविकाम् । अशक्तमिति मामेते ज्ञास्यन्ते क्षत्रिया रणे ॥ १० ॥ युद्धन्तु मेन रुचितं ज्ञातिभिर्मधुसूदन । सञ्चोदय हयान् शीघ्रं धार्त्तराष्ट्रचमूं प्रति ॥ ११ ॥ प्रतरिष्ये महापारं भुजाभ्यां समरोदधिम् । नायं यापयितुं कालो विद्यते माधव कर्हिचित् ॥ १२ ॥

के हाथ से मारेगये उसी प्रकार युद्ध में मेरे हाथ से भी अनेक कौरव मारेगये, हे नरोत्तम यह सब युद्ध कर्म केवल धनही के निमित्त किये जातेहैं ऐसे धन आदि को धिक्कार है जिस के कारण ऐसा जातिवालों का नाश किया जाताहै । ५ । इस जाति के मारने से तो निर्धनही मरना श्रेष्ठ है हे श्रीकृष्णजी हम जात वालोंको मार कर क्या फल पावेंगे, दुर्योधन और सुबल के पुत्र शकुनी के अपराध अथवा कर्ण की बुरी सलाहों से क्षत्रीलोगों का नाश हुआ जाताहै, हे महाबाहु श्रीकृष्णजी अब मैं अच्छी रीति से जानता हूं कि राजा युधिष्ठिर ने बड़ा अच्छा काम किया कि दुर्योधन से आधेराज्य वा पांचही गांवोंकी अभिलाषा चाही और उस निर्बुद्धी ने वह भी उनकी अभिलाषा पूरी नहीं की मैं इस युद्ध भूमि में सोते हुए बड़े २ शूर वीर क्षत्रियों को देखकर, अपनेको अत्यन्त बुराकहकर क्षत्री की जीविका को अत्यन्त धिक्कार देताहूं, हे मधुसूदनजी मैं ज्ञातिवालों से युद्ध करना न चाहूं तो सब क्षत्री लोग मुझको युद्ध में असमर्थ समझेंगे । १० । इस कारण हे मधुसूदन आप घोड़ों को शीघ्रही दुर्योधन की सेना में ले चलो, अब मैं भी अपनी भुजाओं से इस युद्ध रूपी महासमुद्रको शीघ्रही तरूंगा क्योंकि यह समय किसी स्थान पर भी असामर्थ्य

for which kinsmen are slain 5. To die in poverty is better than the destruction of kinsmen. What shall we gain Krishn, after destroying them. By the fault of Duryodhan and Shakuni the son of Su'al and the wicked council of Karan all this destruction of Kshatryas is taking place. I know well, brave Krishn, that Prince Yudhishthir was right in that he wished to take half the kingdom or even five villages from Duryodhan, but the latter would not part with even that much. Seeing these great warriors sleeping on the field of battle, I blame myself and the work of a kshatrya. The kshatryas will think me to be weak, if I donot fight against my kinsmen 10. Drive therefore my horses into the field of battle, Madhusudan. I too,

एवमुक्तस्तु पार्थेन केशवः परवीरहा । चोदयामास तानश्वान् पाण्डुरान् वातरंहसः
॥ १३ ॥ अथ शब्दो महानासीत् तव सैन्यस्य भारत । मारुतोद्धूत वेगस्य सागरस्येव पर्वणि ॥ १४ ॥ अपराह्णे महाराज संग्राम समपद्यत । पर्जन्यसमनिर्घोषो भीष्मस्य सह पाण्डवैः ॥ १५ ॥ ततो राजंस्तव सुता भीमसेनमुपाद्रवन् । परिवार्य्य रणे द्रोण वसवो वासवं यथा ॥ १६ ॥ ततः शान्तनवो भीष्मः कृपश्च रथिनांवरः । भगदत्तः सुशर्माचधनञ्जयमुपाद्रवन् ॥ १७ ॥ हार्दिक्यो बाह्लिकश्चैव सात्यकिं समभिद्रुतौ । अम्बष्ठकस्तु नृपतिरभिमन्युमवस्थितः ॥ १८ ॥ शेषास्त्वन्ये महाराज शेषानेव महारथान् । ततः प्रववृते युद्धं घोररूपं भयावहम् ॥ १९ ॥ भीमसेनस्तु सम्प्रेक्ष्य पुत्रांस्तव जनेश्वर । प्रजज्वाल रणे क्रुद्धो हविषा हव्यवाडिव ॥ २० ॥ पुत्रास्तु तव कौन्तेय छादयाञ्चक्रिरे

होने का वर्त्तमान नहीं है, इस प्रकार अर्ज्जुन के वचनों को सुनकर शत्रु संहारी केशव जी ने उन श्वेतरूप वायुके समान तीव्रगामी घोड़ों को हांका, इसके पीछे हे राजा आप की सेना में ऐसा महा शब्द हुआ जैसे कि पर्व के समय वायुसे उठे हुए वेगवान् समुद्रका घोर शब्द होताहै, हे महाराज अपराह्नके समय भीष्मजी के और पांडवलोगों के युद्धमें बादल के समान शब्द हुए ।१५। इसके पीछे हे राजा आपके पुत्र युद्धमें द्रोणाचार्य्यको रक्षितकरके भीमसेनके सम्मुख ऐसे गये जैसे इन्द्रको रक्षित करके अष्टवसुजाते है, फिर शन्तनुकेपुत्र भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य, भगदत्त, सुशर्मा, यह सब अर्जुनके सम्मुखगये और, कृतवर्मा व बाह्लीक सात्यकी के सम्मुख हुए और राजा अम्बष्ठक अभिमन्यु के सम्मुख वर्त्तमान हुआ, इन के विशेष शेष बचेहुए शूरवीर बचेहुए महारथियों के सम्मुख गये फिर महा भयानक युद्ध आरम्भ हुआ, हे राजा फिर भीमसेन आपके पुत्रोंको देखकर ऐसा क्रोधित होकर अग्निरूप हुआ जैसे कि हव्य को पाकर अग्नि प्रचण्ड होते है, फिर आप के पुत्रों ने बाणों से भीमसेन को ऐसा ढक दिया, जैसे कि वर्षाऋतु में बादल

shall with my arms cross the ocean of battle, for it is no time to stand still like a weakling ' On hearing the words of Arjun, Keshav the destroyer of foes drove those white horses swift as wind Then there was an uproar in your army like that of the ocean caused by the wind at the full moon Bhishm and the Pandavas thundered like clouds in the field of battle in the afternoon 15 Then, O king, your sons protected Dronacharya in battle who faced Bhimsen like Indra protected by the Vasus Then Bhishm the son of Shantanu Kripacharya the best of charioteers Bhagdatta and Susharma encountered Arjun, Kritvarma and Vahlik faced Satyaki and king Amvashtak met Abhimanyu. The rest of the warriors encountered the remaining army on the opposite side. A dreadful battle ensued Then, O king, Bhimsen, seeing your sons there he became furious like fire on pouring libations Your sons hid Bhim on with their arrows as clouds in the

शरै । प्रावृषीव महाराज जलदाद्ध्यपर्वतम् ॥ २१ ॥ संच्छाद्यमानो बहुधा पुत्रैस्तव विशांपते । सृक्किणीमलिहन्वीर शार्दूल इव दर्पितः ॥ २२ ॥ व्यूढोरस्कं ततो भीम पातयामास भारत । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन सोऽभवद्गतजीवितः ॥ २३ ॥ अपरेण तु भल्लेन पीतेननिशितेनतु । अपातयत् कुण्डलिनं सिंह क्षुद्रमृगं यथा ॥ २४ ॥ ततः सुनिशितान् पीतान् समादत्त शिलीमुखान् । ससर्ज्ज त्वरया युक्तः पुत्रांस्ते प्राप्य मारिष ॥ २५ ॥ प्रेषिता भीमसेनेन शरास्ते दृढधन्वना । अपातयन्त पुत्रास्ते रथेभ्यः सुमहारथान् ॥ २६ ॥ अनाधृष्टिं कुण्डभेदिं वैराटं दीर्घलोचनम् । दीर्घबाहुं सुबाहुञ्च तथैव कनकध्वजम् ॥ २७ ॥ प्रपतन्तस्म वीरास्ते विरेजुर्भरतर्षभ । वसन्ते पुष्पशवलाश्चूताः प्रपतिताइव ॥ २८ ॥ ततः प्रदुद्रुवुः शेषास्तवपुत्रा महाहवे । तं कालमिव मन्यन्तो भीमसेनं महाबलम् ॥ २९ ॥ द्रोणस्तु समरे वीरं निर्दहन्तं सुतांस्तव । यथाद्रिं वारिधाराभिः समन्ताद्व्यकिरच्छरैः ॥ ३० ॥ तत्राद्भुतमपश्याम कुन्तीपुत्रस्य पौरुषम् । द्रोणेन

पर्वतको ढक देते हैं ।२१। हे राजा आपके पुत्रोंसे बहुत ढके हुए होठोंको चाबते शार्दूलके समान गर्वित महारथी भीमसेनने, अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रबाणसे व्यूढोरस्क को ऐसा गिराया कि वह मरगया, फिर दूसरे पीले तीक्ष्ण भल्लसे कुंडली कोभी ऐसे गिराया जैसे कि छोटेमृगको सिंह गिराताहै, इसके पीछे हेराजा बड़ीशीघ्रतासे भीमसेन ने अत्यन्त तीक्ष्ण शिलीमुख बाणों को हाथों में लिया ।२५। और आपके पुत्रोंपर छोड़े उनभीमसेनके चलायेहुए बाणोंने आपके महारथी अनाधृष्ट, कुण्डभेद, वैराट, दीर्घलोचन, दीर्घबाहु, सुबाहु, कनकध्वज पुत्रोंको पृथ्वीपर गिराया और सब वीर गिर कर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बसन्तऋतु में गिरे और पड़ेहुए लाल२ फूल होतेहैं, । २८ । इसके पीछे आपके शेष बचेहुए पुत्र भीमसेन को काल के समान जानकर युद्ध से भाग गये, फिर द्रोणाचार्य्य ने आपके पुत्रों के जलाने वाले भीमसेन को बाणों की वर्षा करके चारों ओरसे ऐसा ढक दिया जैसे कि बादल जलकी धाराओं से पर्वतको ढकता है, । ३० । वहां हमने कुन्ती के पुत्र

rainy season hide a hill 21 Excessively hidden by your sons and biting his lips, valliant Bhimsen, proud as a lion, killed Vyudhorask with a sharp arrow By another yellow dart he felled Kundali as a lion kills a small deer. Then O king, he took up in his hand very sharp arrows grinded on stone 25 He discharged them at your sons. By those arrows Bhimsen caused the fall of your sons Anadhrisht, Kund bhed, Vairat, Dirghlochan, Dirghvahu, Suvahu and Kanakdhwaj. All these warriors, lying on the ground, looked glorious like red flowers lying on earth in the season of Spring The rest of your sons, regarding him as dangerous as Death, fled from the field of battle. Then Dronacharya hid Bhimsen the *destroyer of your sons* with his arrows as clouds hide a mountain with the showers of rain 30 There we saw the prowess of Bhimsen, the son of Kunti, who

वार्य्यमाणोपि निजघ्ने यत् सुतास्तव ॥ ३१ ॥ यथा गोवृषभो वर्ष सन्धारयति खात् पतत् । भीमस्तथा द्रोणमुक्तं शरवर्षमदीधरत् ॥ ३२ ॥ अद्भुतञ्च महाराज तत्र चक्रे वृकोदर । यत् पुत्रांस्तेऽवधीत्सख्ये द्रोणञ्चैव न्यवारयत् ॥३३॥ पुत्रेषु तववीरेषु चिक्रीडा र्जुनपूर्वज । मृगेष्विव महाराज चरन् व्याघ्रो महाबल ॥३४॥ यथाहि पशुमध्यस्थो द्रावयेत पशून् वृक । वृकोदरस्तव सुतांस्तथा व्यद्रावयद्रणे ॥ ३५ ॥ गाङ्गेयोभगदत्तश्च गौतमश्च महारथा । पाण्डवं रभसं युद्धे वारयामासुरर्जुनम् ॥ ३६ ॥ अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य्य तेषासोतिरथो रथे । प्रवीरांस्तव सैन्येषु प्रेषयामास मृत्यवे ॥ ३७ ॥ अभिमन्युस्तुराजानं मम्बष्ठ लोकविश्रुतम् । विरथं रथिनांश्रेष्ठ वारयामास सायकैः ॥ ३८ ॥ विरथो वध्यमानस्तु सौभद्रेण यशस्विना । अवप्लुत्य रथात्तूर्णं मंबष्ठोवसुधाधिप ३९॥ असिं चिक्षेप समरे सौभद्रस्य महात्मन । आरुरोह रथं चैव हार्दिक्यस्य महाबल

भीमसेन के पराक्रम को देखा कि जिसने द्रोणाचार्य्य के रोकने पै भी आपके पुत्रों को मारा, हे राजा जैसे कि आकाश से गिरेहुए जलको गो वृषभ जंगल में सहते हैं उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य के बाणोको भीमसेन ने सहा, फिर वहां भीमसेनने दूसरा अद्भुत कर्म किया कि आपके बेटोको मारकर द्रोणाचार्य्य को भी रोका, अर्जुन का बड़ाभाई आपके वीरपुत्रोंका महापीड़ा देनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि मृगोंके मध्य में महाबली व्याघ्र पीड़ा देनेवाला होताहै जैसे कि भेड़िया पशुओं के बीचमें नियत होकर पशुओं को व्याकुल और चलायमान करता है इसी प्रकार भीमसेन ने युद्ध मे आपके पुत्रोंको भगादिया । ३५ । फिर भीष्मजी भगदत्त और महारथी कृपाचार्य्य ने युद्ध में वेगवान् अर्जुन को धारण किया अर्थात् उसके बाणों को सहा उस अति रथी ने युद्ध में इन सब के अस्त्रोंको अपने अस्त्रों से रोककर आपकी सेना के बड़े २ वीरोंको मारा, और अभिमन्यु ने भी रथियों में श्रेष्ठ संसार मे विख्यात राजा अंबष्ठ को शायकों से विरथ कर दिया, फिर उस यशस्वी अभिमन्यु से विरथ हुए राजा अंबष्ठ ने शीघ्रही रथ से कूद महात्मा अभिमन्यु

although checked by Dronacharya could not be kept back from killing your sons. Bhimsen bore the arrows of Dronacharya as cattle undergo the shower of rain in a forest Bhimsen then performed another wonder having killed your sons he checked Dronacharya The elder brother of Arjun destroyed your sons as a lion destroys a herd of deer. As a wolf entering a flock disturbs and disperses them, so did Bhimsen cause your sons to scamper away 35 Then Bhishm, Bhagdatt and valiant Kripacharya bore the velocity of Arjun's arrows. That brave warrior, having checked the weapons of other warriors with his own, killed the great warriors of your army. Abhimanyu too, with his arrows, caused the best of chariotees, famous king Amvasht to leave his chariot Made destitute of chariot by Abhi-

॥ ४० ॥ आपतन्तं तु निस्त्रिंशं युद्धमार्गविशारद । लाघवात् व्यसर्यामास सौभद्रः परवीरहा ॥ ४१ ॥ व्यसितं वाक्ष्य निस्त्रिंशं सौभद्रेण रणे तदा । साधुसाध्विति सैन्यानां
प्रणादोभूद्विशाम्पते ॥ ४२ ॥ धृष्टद्युम्नमुखास्त्वन्ये तव सैन्यमयोधयन् । तथैव तावका.
सर्वे पाण्डुसैन्यमयोधयन् ॥ ४३ ॥ तत्राक्रन्दो महानासीत्तव तेषाञ्च भारत । निघ्नतां
दृढमन्योन्यं कुर्वतां कर्म दुष्करम् ॥ ४४ ॥ अन्योन्यं हि रणे शूरा. केशेष्वाक्षिप्य मानिनः ।
नखैर्दन्तैरयुध्यन्त मुष्टिभिर्जानुभिस्तथा ॥ ४५ ॥ तलैश्चैवाथ निस्त्रिंशैर्बाहुभिश्च
सुसंस्थितैः । विवरम्प्राप्य चान्योन्यमनयन् यमसादनम् ॥ ४६ ॥ न्यहनच्च पिता
पुत्रं पुत्रश्च पितरं तथा । व्याकुलीकृतसर्वाङ्गा युयुधुस्तत्र मानवा ॥ ४७ ॥
रणे चारूणि चापानि हेमपृष्ठानि भारत । हतानामपविद्धानि कलापाश्च महाधना ४८
जातरूपमयै पुङ्खै राजतैर्निशिता शरा । तैलधौता व्यराजन्त निर्मुक्तभुजगोपमा ॥ ४९ ॥
हस्तिदन्तत्सरून्खड्गान् जातरूपपरिष्कृतान् । चर्माणि चापविद्धानि रुक्मचित्राणि

के ऊपर अपने खड्ग को फेंका और बड़ी शीघ्रता से महाबली कृतवर्मा के रथ पर
सवार हुआ । ४० । फिर युद्ध में महाकुशल शत्रुहन्ता अभिमन्यु ने उस गिरतेहुए
खड्गको अपनी तीव्रता से निष्फल किया तब अभिमन्यु से निष्फल किये हुए
खड्ग को देखकर सेना के लोगों ने साधु॰ शब्द उच्चारण किया, और जैसे कि
धृष्टद्युम्न आदि वीर लोग आपकी सेनासे लड़े उसी प्रकार आपके सब वीर पुरुष
भी पांडवों की सेना से लड़े हे भरतर्षभ वहां परस्पर में मारोंको मारते और कठिन
कर्मोंको करते हुए आपके और पांडवों के वीरों के महाशब्द हुए । ४४ । युद्ध में
प्रशंसनीय वीर लोग परस्पर में बालों को खैंचकर नख दांत और मुष्टिका और
जांघों से भी युद्ध करनेवाले हुए और अवकाश पाकर तमाचों तलवारों और
अच्छे नियत भुजों से बहुतोंने बहुतोंको यमपुरीमें भेजा, उसयुद्ध में पिताने पुत्रकोभी
मारा अर्थात् सब मनुष्य सर्वांगरहित व्याकुलहो होकरभी युद्धको करतेहुए, हे राजा
धृतराष्ट्र युद्ध में मरेहुए वा घायल शूरवीरों के सुनहरी पृष्ठवाले सुन्दर धनुष और

manyu, king Amrasht soon jumped down from his chariot and having hurled his sword at him, mounted the chariot of Kritvarma 40 Then dexterous in battle Abhimanyu the destroyer of foes made the falling sword futile by his own swiftness. Seeing that sword made useless by Abhimanyu, the people raised cries of good and well. Your warriors fought as bravely against the Pandav warriors as Dhrishtadyumn and other warriors fought against your army Killing one another and doing hard deeds your warriors and the Pandavas made a great noise. Brave warriors of great merit in battle dragged others by the hair and wounded them with their nails, teeth, blows and kicks. On some occasions they used slaps, swords and strong arms to destroy their adversaries Fathers destroyed their sons in

पतितनाम ॥ ५० ॥ सुवर्णविकृतप्रासान् परिशान् हेमभूषितान् । जातरूपमयाश्चर्ष्टीः शक्तीश्च कनकोज्ज्वलाः ॥ ५१ ॥ मुसलाश्चाद्रिश्च पतिता मुसलानि गुरूणि च । परिघान्पट्टिशांश्चैव भिन्दिपालांश्च मारिष ॥ ५२ ॥ पतितान् विविधांश्चापांश्चित्रान्हेम परिष्कृतान् । कुथाबहुविधाकाराश्चामरान्व्यजनानि च ॥ ५३ ॥ नाना विधानि शस्त्राणि प्रगृह्य पतितान्नरान् । जीवन्त इव दृश्यन्ते गतसत्त्वामहारथाः ॥ ५४ ॥ गदाविमथितैर्गात्रैर्मुसलैर्भिन्नमस्तकाः । गजवाजिरथक्षुण्णाः शेरतेस्मनरा क्षितौ ॥ ५५ ॥ तथैवाश्वनृनागानां शरीरैर्बभौ तदा । सञ्छन्ना वसुधाराजन् पर्वतैरिव सर्वशः ॥ ५६ ॥ समरे पतितैश्चैव शक्त्यृष्टिशरतोमरैः निस्त्रिंशैः पट्टिशैः प्रासैरयस्कुन्तैः परश्वधैः ॥ ५७ ॥ परिघैर्भिन्दिपालैश्च शतघ्नीभिश्च मारिष । शरीरैः शस्त्रनिर्भिन्नैः समास्तीर्यत मेदिनी ॥ ५८ ॥ विशब्दैरल्पशब्दैश्च शोणितौघपरिप्लुतैः । गतासुभिरमित्रघ्न विबभौ निचिता मही ॥ ५९ ॥

तमीर अथवा सुनहरी रुपहरी पुखवाले छोड़ेहुए तीक्ष्णधार बाणतेलमे शुद्ध किए हुए सर्पों के समान शोभायमान हुए, हाथीदांत की मूठवाले सुवर्ण मे जटित खड्ग धनुष ढाल परास, दुधारे, खड्ग, शक्ति, कवच, भारीमुशल, परिघ, पट्टिश, भिण्डिपाल अनेक प्रकारके गिरेहुए धनुष और अनेक प्रकार की झूलचमर पंखे वा अनेक प्रकार के शस्त्रधारी महारथी और मरे मनुष्य भी जीवते मे दिखाई देते हैं । ५८ । हे राजा गदाओं से मथे हुए अंगों समेत मुशलों से टूटे शिर घायल हाथी घोडे और रथ पृथ्वी पर शयन कर रहे हैं अर्थात् बिछे हुए हैं, उनहाथी घोडे रथ और मनुष्यों से ढकी हुई पृथ्वी सब ओर से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि पर्वतों से शोभित होता है, युद्धभूमि में गिरी हुई बरछी और दुधारे खड्ग बाण तोमर पट्टिश परास भल्ल लोहे के फरसे परिघ भिण्डिपाल शतघ्नी और शस्त्रों से कटे हुए शरीरों से पृथ्वी सविस्तर विदित होती है अल्प शब्द के वा दीर्घ शब्द के मृतक मनुष्यों के समूहों से व्याप्त हुई पृथ्वी महाशोभित विदितहुई, तत्र केयूर

the hurry of the battle. The golden bows of the warriors killed or wounded in battle quivers and arrows having silver or gold feathers sharpened and oiled looked like serpents. The gold decked swords with ivory handles bows shields missiles double edged swords spears armours clubs and other weapons lying down together with the fine trappings flags flappers fans made the heads of warriors look as they were alive 54 Broken of limbs and heads by maces and clubs elephants horses and chariots are lying on the ground. Strewn over with them the earth looks glorious as if covered with mountains Fallen over the field of battle spears double edged swords, tomars, darts axes clubs bhindipala's Shataghnis and other weapons and the bodies cut by them cover the whole earth. Crying low and loud, crowds of dying warriors embellish the face of the earth. Decked with

सतलत्रै सकेयूरर्बाहुभिश्चन्दनोक्षितै । हस्तिहस्तोपमैश्छिन्नै रूरुभिश्च तरस्विनाम्
॥ ६० ॥ बद्धचूडामणिवरैः शिरोभिश्च सकुण्डलैः । पातितैर्ऋषभाक्षाणां बभौ भारत
मेदिनी ॥ ६१ ॥ कवचैः शोणितादिग्धैर्विप्रकीर्णैश्च काञ्चनैः । रराज सुभृशं भूमिः शान्ता
र्चिभिरिवानलैः ॥ ६२ ॥ विप्रविद्धैः कलापैश्च पतितैश्च शरासनैः विप्रकीर्णैः शरैश्चैव
रुक्मपुङ्खैः समन्ततः ॥ ६३ ॥ रथैश्च सर्वतो भग्नैः किङ्किणीजालभूषितैः । वाजिभि
श्च हतैर्वर्णैः स्रस्तजिह्वैः सशोणितैः ॥ ६४ ॥ अनुकर्षैः पताकाभिरुपासङ्गैर्ध्वजैरपि ।
प्रवीराणां महाशङ्खैर्विप्रकीर्णैश्च पाण्डुरैः ॥ ६५ ॥ स्रस्तहस्तैश्च मातङ्गैः शयानैर्विबभौ मही ।
नानारूपैरलङ्कारैः प्रमदेवाभ्यलङ्कृता ॥ ६६ ॥ दन्तिभिश्चापरैस्तत्र सप्रासैर्गाढवेदनैः ।
करैः शब्दं विमुञ्चद्भिः शीकरं च मुहुर्मुहुः ॥ ६७ ॥ विबभौ तद्रणस्थानं स्यन्दमानैरि
वाचलैः । नानारागैः कम्बलैश्च परिस्तोमैश्च दन्तिनाम् ॥ ६८ ॥ वैदूर्यमणिदण्डैश्च
पतितैरङ्कुशैः शुभैः । घण्टाभिश्च गजेन्द्राणां पतिताभिः समन्ततः ॥ ६९ ॥ विपाटित

रक्षक और चन्दन चर्चित भुजा हाथियों की शूंड के समान कटी जंघा और चूडामणि बँधे हुए उत्तम शूरों के कुण्डलधारी शिरों से पृथ्वी अपूर्वही शोभा देरही है । ६१ । और हे भरतवंशी सुवर्णके फैलेहुए रुधिरसे भरे कवचों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि निर्धूम अग्नियों से शोभित होती है, टूटे धनुष तरकस और फैलेहुए सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से और चारो ओर से घण्टों से युक्त टूटे हुए रथों से वा बाणोंसे मारे हुए रुधिर से भरे जिनकी जिह्वा मुख से बाहर निकली थी उनघोड़ोंसे वा खेंचीहुई पताकाओं से और उपासंगिक ध्वजाओंसे और वीरोंकी खोपड़ियों से वा बिखरी हुई चोटियों से और शूंडटूटेहुए हाथियों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नानाप्रकार के आभूषणोंसे अलङ्कृतस्त्री शोभित होतीहै । ६६ । बड़ा बहुत पीड़ित सूंडोंसे शब्दकरते हुए पराशों समेत अन्य हाथियों से वह युद्धभूमि ऐसी शोभित हुई जैसे कि चलते हुए पहाड़ों से शोभायमान होती है, नानाप्रकार के रंगवाले हाथियों के कम्बलों से वा परश तोमरों से और वैडूर्यमणिवाले शुभ अङ्कुशों से व चारों ओर से गिरेहुए गजेन्द्रों के घंटों

armlets, guards and sandal paste, the severed arms, the thigh like the
trunks of elephants and the heads of warriors wearing ear-rings and
head jewels make the ground look yet more beautiful 61 Covered
with blood stained and gold filled armours the earth looked as if cover
ed with fire without smoke With the broken bows and quivers, the
arrows with golden feathers strewn all over, chariots and their bells
lying all over, the discharged arrows, the bleeding horses with their
tongues lolling out, broken banners, skulls of warriors strewn over like
peaks and the trunkless elephants, the earth looked beautiful like a
damsel decked with various sorts of ornaments and jewels 66 With
other elephants, wounded in trunks and shrieking, the field of battle
looked beautiful as if it had mountains moving on it. The field of
battle looked like starlit sky with the coloured trappings of elephants,

विचित्राभि कुथाभि रंकुशैस्तथा। ग्रैवेयैश्च विरूपैश्च रुक्मकक्ष्याभिरेव च ॥७०॥ य
न्त्रैश्च बहुधाच्छिन्नैस्तोमरैश्चापि काञ्चनैः। अश्वानां रेणुकपिलै रुक्मच्छन्नैरुरश्छदैः
॥ ७१ ॥ सादिनां भुजगैश्छिन्नैः पतितैः साङ्गदैस्तथा। प्रासैश्च विमलैस्तीक्ष्णैर्विमला
भिस्तथर्ष्टिभिः ॥ ७२ ॥ उष्णीषैश्च तथा चित्रैर्विप्रविद्धैस्ततस्ततः। विचित्रैर्बाणवर्षैश्च
जातरूपपरिष्कृतैः ॥ ७३ ॥ अश्वास्तरपरिस्तोमै राङ्कवैर्मृदितैस्तथा। नरेन्द्रचूडामणिभि
र्विचित्रैश्च महाधनैः ॥ ७४ ॥ छत्रैस्तथापविद्धैश्च चामरव्यजनैरपि। पद्मेन्दुद्युतिभि
श्चैव वदनैश्चारुकुण्डलैः ॥ ७५ ॥ कॢप्तश्मश्रुभिरत्यर्थं वाराणां समलङ्कृतैः। अपविद्धै
र्महाराज सुवर्णोज्ज्वलकुण्डलैः ॥ ७६ ॥ ग्रहनक्षत्रशबला द्यौरिवासीद्वसुन्धरा। एवमेते
महासेने मृदिते तत्र भारत ॥ ७७ ॥ परस्परं समासाद्य तव तेषां च संयुगे। तेषु श्रान्तेषु
भग्नेषु मृदितेषु च भारत ॥ ७८ ॥ रात्रिः समभवत्तत्र नापश्याम ततो युगम्। ततो
ऽवहारं सैन्यानां प्रचक्रुः कुरुपाण्डवाः ॥ ७९ ॥ रजनीमुखे सुरौद्रे तु वर्त्तमाने महाभये। अव
हारं ततः कृत्वा सहिताः कुरुपाण्डवाः। न्यविशन्त यथाकालं गत्वा स्वशिबिरं तदा ॥ ८० ॥
इति महा० भीष्मप० भीष्मवधप० अष्टमदिवसयुद्धावहारे सप्तनवतितमोऽध्यायः ॥ ९७ ॥

से और चित्रविचित्र झूल और ग्रीवाओं के भूषणों से वा हाथीके बांधने वाली सुवर्ण की रस्सियोंने बाजूबन्दों समेत गिरीहुई भुजाओं से वा शुद्ध तीक्ष्ण फरसों से और निर्मल दुधारा खड्गों से विचित्र बाणों की वर्षामें जोकि राक नामसृगके रोमोंसे बनेहुए अत्यन्त मृदुथे वा राजाओंकी अमूल्य चूडामणियोंसे वा टूटे छत्र चामर व्यजन और चन्द्रकमल के समान मुखों के प्रकाशों से और हे महाराजवीरों की अच्छे प्रकार से रची हुई डाढ़ी मूछसे पृथ्वी ऐसी होगई जैसे कि नक्षत्र समूहों से प्रकाशमान आकाश होताहै। ७७। हे भरतर्षभ इसप्रकार आप की और उन्होंकी यह दोनों सेना युद्ध में परस्पर सम्मुखहोकर गई मर्द होगई, उन सेनाओं के थकने और तितरबितरहोने और मर्दन होनेपर, रात्रिहोगई इसके पीछे हमने चलने वालों को नहीं देखा फिर कौरव पाडवों ने सेनाओं का विश्राम किया रात्रि के प्रारंभ होजानेपर कौरव और पाण्डव एकसाथही सदैव के समान अपने २ डेरों में नियतहुए ८० ॥

battle axes missiles, jewelled goads, bells of elephants strewn all over, coverings of various colours necklaces of elephants, gold chains, machines, arms of warriors decked with jewels, sharp axes, bright double edged swords, shower of arrows covered over with soft deerskin, head jewels of princes broken shades chamars and fans, faces bright as the moon or lotus flowers and with the fine beards and moustaches of warriors 17 Thus O best of Bharats the armies of both sides met in battle and were destroyed When these armies were thus tired and dispersed or destroyed, the night came on. We could not see them going to their camp The two parties took rest for the night and both Kauravas and Pandavas slept during the night as usual" 80

सञ्जय उवाच । ततो दुर्य्योधनो राजा शकुनिश्चापि सौबलः । दुःशासनश्च पुत्रस्ते सूतपुत्रश्च दुर्जयः ॥ १ ॥ समागम्य महाराज मन्त्रं चक्रुर्विवक्षितम् । कथं पाण्डुसुता सङ्ख्ये जेतव्याः सगणा इति ॥२॥ ततो दुर्य्योधनो राजा सर्वांस्तानाह मन्त्रिणः । सूत पुत्रं समाभाष्य सौबलञ्च महाबलम् ॥ ३ ॥ द्रोणो भीष्मः कृपः शल्यः सौमदत्तिश्च संयुगे । न पार्थान् प्रतिबाधन्ते न जाने तच्च कारणम् ॥ ४ ॥ अवध्यमानास्ते चापि क्षपयन्ति बलं मम । सोस्मि क्षीणबलः कर्ण क्षीणशस्त्रश्च संयुगे ॥ ५ ॥ निकृतः पाण्डवैः शूरैरवध्यैर्दैवतैरपि । सोहं संशयमापन्नः प्रहरिष्ये कथं रणे । तमब्रवीन्महाराज सूत पुत्रो नराधिपम् ॥ ६ ॥ कर्ण उवाच । माशोच भरतश्रेष्ठ करिष्येहं प्रियं तव । भीष्मः शान्तनवस्तूर्णमपयातु महारणात् ॥७॥ निवृत्ते युधि गाङ्गेये न्यस्तशस्त्रे च भारत । अहं पार्थान् हनिष्यामि सहितान् सर्वसोमकैः ॥ ८ ॥ पश्यतो युधि भीष्मस्य शपे सत्येन ते नृप । पाण्डवेषु दयां नित्यं स हि भीष्मः करोति वै ॥ ९ ॥ अशक्तश्च रणे भीष्मो जेतु

अध्याय ९८ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे राजा दुर्य्योधन और सुबलकापुत्र शकुनि, दुश्शासन और दुर्जयकर्ण इनसबने मिलकर सलाहकरी कि पाण्डवों को सेना समेत कैसे विजय करनाचाहिये, यह सुनकर राजा दुर्य्योधन महाबली शकुनि और कर्ण को सम्मुख करके उनसब मन्त्रियों से बोला, कि द्रोणाचार्य्य, भीष्म, कृपाचार्य्य, शल्य, भूरिश्रवा यह सब मिले हुये पाण्डवों को युद्ध में पीड़ानहीं देतेहैं इसका कारण मैंनहीं जानता हूं, वहसब बिना घायल हुएही मेरीसेनाका नाशकरे डालतेहैं, हे कर्ण मैं युद्ध में अपनी सेना और शस्त्रों से नाशयुक्तहोकर देवताओंसे भी अजेय शूरवीर पांडवों से निरादर कियागयाहूं इस सन्देहमें पड़ा हुआ मैं युद्धको कैसे करूंगा । ६ । हे राजा यह सुनकर कर्ण ने कहा कि हे भरतर्षभ चिन्तामतकरो मैं तुम्हारे हितको करूंगा शंतनु के पुत्र भीष्मजी शीघ्रही युद्धसे निवृत्त होजायँ, युद्धसे भीष्मजी के हटजाने और शस्त्रोंसे रहित होजानेपर मैं सब सोमकों समेत पाण्डवों को भीष्मजी के देखतेहुएही

CHAPTER XCVIII

Sanjaya said, "Then Prince Duryodhan and Shakuni the son of Suval with Dushasan and invincible Karan met in council to determine how to conquer the Pandavas. Prince Duryodhan thus addressed brave Shakuni, Karan and other ministers:—"Dronacharya, Bhishm, Kripacharya, Shalya and Bhurishrava together donot destroy the Pandavs, what is the reason? They destroy our armies without being themselves wounded With my armed warriors, O Karan, I think myself invincible by the gods and yet I am being despised by the Pandavas. Being so doubtful how shall I fight out?" On hearing this, O king, Karan said, "Remove all care form your mind, best of Bharats; for I shall gratify your desire. Let Bhishm the son of Shantanu desist from fighting. On his giving up arms, I shall, with-

मेतान् महारथान् । अभिमानी रणे भीष्मो जेतुमेतान् महारथान् । अभिमानी रणेभी
ष्मो नित्यं चापि रणप्रिय ॥ १० ॥ स कथं पाण्डवान् युद्धे जेष्यते तात संहतान् । स
त्वं शीघ्रमितो गत्वा भीष्मस्य शिबिरं प्रति ॥ ११ ॥ अनुमान्य गुरुं वृद्धं शस्त्रं न्यासय
भारत । न्यस्तशस्त्रे ततो भीष्मे निहतान् पश्य पाण्डवान् ॥ १२ ॥ मयैकेन रणे राजन्
ससुहृद्गणबान्धवान् । एवमुक्तस्तु कर्णेन पुत्रो दुर्योधनस्तव ॥ १३ ॥ अब्रवीद् भ्रातरं तत्र
दुःशासनमिदं वच । अनुयात्रं यथा सर्वं सज्जीभवति सर्वशः ॥ १४ ॥ दुःशासन तथा
क्षिप्रं सर्वमेवोपपादय । एवमुक्त्वा ततो राजन् कर्णमाह जनेश्वर ॥ १५ ॥ अनुमान्य
रणे भीष्मं मेषोह द्विपदाम्वरम् । आगमिष्ये ततः क्षिप्रं त्वत्सकाशमरिन्दम ॥ १६ ॥
अपक्रान्ते ततो भीष्मे प्रहरिष्यसि संयुगे । निष्पपात ततस्तूर्णं पुत्रस्तव विशाम्पते ॥ १७ ॥
सहितो भ्रातृभिस्तैस्तु देवैरिव शतक्रतुः । ततस्तं नृपशार्दूलं शार्दूलसमविक्रमम् ॥ १८ ॥

मारूंगा हे राजा यह मैं तेरे सम्मुख, सत्य संकल्प पूर्वक, प्रतिज्ञा को करता हूं और शपथ से कहता हूं कि वह भीष्म निश्चय करके पांडवों पर दया करता है, इससे भीष्मजी युद्ध में उन महारथियों के विजय करने को असमर्थ है। १० । यह भीष्म युद्ध में महाअहंकारी और युद्धही को सदैव प्रिय मानता है, हे तात वह सम्मुख आये हुए पांडवों को युद्ध में कैसे विजय करेगा सो तुम शीघ्रही यहां से भीष्म के डेरे में जाकर, उन वृद्ध गुरु को नमस्कार करके शस्त्रों के त्यागने के लिये कहो हे राजा भीष्मजी के शस्त्र त्यागने पर युद्ध में सेना और मित्रों समेत पांडवों को मुझ अकेले केही हाथ से मराहुआ देखोगे कर्ण के ऐसे वचन सुनकर आप का पुत्र दुर्योधन, अपने भाई दुश्शासन से बोला कि यात्राकी सब सामग्री सब प्रकार से तैयार हो । १५ । ऐसा दुश्शासन को कह दुर्योधन कर्ण से बोला, कि हे शत्रुओं के विजय करने वाले मैं पुरुषोत्तम भीष्म को युद्धके लिये समझाकर और प्रणाम करके शीघ्रही तेरे सम्मुख आऊंगा, उसके पीछे भीष्मजी के हट जाने पर तुम युद्धमें प्रहार करोगे, हे राजा ऐसा कहकर आपका पुत्र अपने भाइयों

in sight of Bhishm destroy all the Pandavas with the Somaks. I make a true promise in your presence and swear that Bhishm is kind to the Pandavas and therefore incapable of conquering them 10. He is proud of his power and loves battle, but he can not conquer the Pandavas. You may be pleased to go at once to Bhishm's camp, and humbly ask that old man to give up arms. You will see all Pandavas with their armies and friends slain by me alone as soon as Bhishm gives up fighting.' Hearing the words of Karan your son Duryodhan said to Dushasan his brother "Let there be every thing ready for my departure." 15 Then turning to Karan he said 'Destroyer of foes! I shall soon come back to you after asking Bhishm the best of men to desist from fighting and paying my respects to him. You will fight in the field of battle when Bhishm gives up fighting.' Having said

आरोहयद्धयं तूर्णं भ्राता दुःशासनस्तदा । अङ्गदी बद्धमुकुटो हस्ताभरणवान्नृप ॥१९॥
धार्त्तराष्ट्रो महाराज विबभौ स पथि व्रजन् । भण्डीपुष्पनिकाशेन तपनीयनिभेन च २०॥
[illegible] ॥२१॥

[illegible]

स्यचामरा दिवि ॥ २५ ॥ सम्पूज्य
राजा गाङ्गेयस्य यशस्विनः ॥ २६
पक्षिणः काले संभृत्य स्वभुजं तदा ॥ २७ ॥ हस्तिहस्तोपमं शैक्षं सर्वशत्रुनिबर्हणम् ।

समेत ऐसी शीघ्रता से चला जैसे कि देवताओं समेत इन्द्र जाता है, इस के पीछे राजाओं में श्रेष्ठ सिंह समान पराक्रमी दुर्योधनको भाई दुश्शासन ने शीघ्रही घोड़े पर सवार किया । १९ । हे धृतराष्ट्र बाजूबन्द और मुकुट हस्त भूषणादि से अलंकृत वह दुर्योधन मार्ग में चलता हुआ भिण्डी के फूल और सुवर्ण के समान प्रकाशमान उत्तम चन्दनादि से सुगंधित देह निर्मल वस्त्रादिकों को पहरे सिंह समान गति से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में निर्मल किरण युक्त सूर्य प्रकाशमान होता है, भीष्म के डेरे में जाते हुये उस नरोत्तम के पीछे सब लोकों के बड़े धनुषधारी शूरवीर और महाधनुर्धर भाई लोग ऐसे चले जैसे कि इन्द्र के पीछे देवता चलते हैं, हे नरोत्तम इसी प्रकार कोई हाथी पर कोई रथ पर कोई घोड़े पर सवार होकर उसके साथ हुये, राजा की रक्षा के निमित्त वह सुहृदजन जिन्होंने शस्त्रोंको त्यागकर दिये थे एक साथही ऐसे प्रकट हुये जैसे कि इन्द्र की रक्षा के निमित्त देवता स्वर्ग में प्रकट होते हैं, कौरवों का राजा अपने सब कौरवलोगों से सेवित उन यशस्वी भीष्मजी के डेरेको गया, उस समय उसके पीछे तो

this, your son hastened with his brothers to go to Bhishm as Indra does with the gods. Then Dushasan helped Duryodhan, the best of kings and full of prowess like a lion, to ride his horse. 19. Adorned, O king, with armlets diadem and finger-jewels, looking like a golden flower, his body anointed with sandal and other scents, wearing fine clothes and walking like a lion, Duryodhan looked like the sun with his pure rays in the sky. Going to the camp of Bhim, that best of men was followed by the famous archers and warriors of the world and his brothers, mighty bowyers, like Indra followed by gods. Some of his followers, O best of men, were mounted on elephants, some on chariots, and others on horse back. Those of his friends, who had laid aside their weapons, came at once to guard the king as gods, in the heaven, do to protect Indra. The prince of the Kauravs, followed by

वान् । तस्मादर्हसि गांगेय कृपांकर्त्तुं मयिप्रभो ॥ ३७ ॥ जहि पांडुसुतान्वीरान् महेन्द्रइव
दानवान् । अहं सर्वान् महाराज निहनिष्यामि सोमकान् ॥ ३८ ॥ पञ्चालान् केकयैः
सार्धंकरूषांश्चेति भारत । त्वद्वचः सत्यमेवास्तु जहिपार्थान् समागतान् ॥ ३९ ॥
सोमकांश्च महेष्वासान् सत्यवाग्भव भारत । दययायदि वाराजन् द्वेष्यभावान्ममप्रभो
॥ ४० ॥ मंदभाग्यतयावापि ममरक्षसि पांडवान् । अनुजानीहि समरे कर्णं माहवशोभि-
नम् ॥ ४१ ॥ स जेष्यति रणे पार्थान् ससुहृद्गणबान्धवान् । स एवमुक्त्वा नृपतिः
पुत्रो दुर्य्योधनस्तव । नोवाच वचनं किञ्चिन्द्गोष्मं सत्यपराक्रमम् ॥ ४२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मदुर्योधनसम्वादे
अष्टनवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

इन्द्र समेत देव दानवों के भी विजय करने की अभिलाषा रखते हैं तो इन पांडवोंको उन के सहायकों समेत विजय करना कितनी बात है हे गांगेय भीष्म जी आप मुझपर कृपा करने को योग्य हो, आप उनवीर पांडवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र दानव लोगों को मारता है हे महाराज मैं सब सोमकों को मारूंगा फिर करूषोंको और पांचालों समेत केकय लोगों को भी मारूंगा आप अपने वचन को सत्यकरके सम्मुख आये हुए पांडवों को मारो और बड़े धनुषधारी सोमकों कोभी मारकर अपने वचनको सत्यकरो, हे भरतवंशी भीष्मपितामह दयासे वामेरे वैरभावसे अथवा मेरी प्रारब्ध हीनतासे जो आप पांडवों की रक्षा करते हो तो युद्ध में शोभा पानेवाले कर्ण को आज्ञादो, वह कर्ण युद्धमें सब सेनाऔर सुहृदों समेत पांडवों को मारेगा, आपका पुत्र इस प्रकारके वचन कहकर फिर उस सत्य पराक्रमी भीष्मजी से कुछ नहींबोले ॥ ४२ ॥

gods and danavas with Indra, how easy it is for us to conquer the Pandavas and their allies! I crave your favour, Bhishm the son of Ganga. Kill the Pandavas as Indra does the danavas. I shall, O king, destroy all the Somaks and the Panchals together with the Kaikayas. Fulfil your promise by killing the Pandavas when they face you, fulfil also your promise of killing the Somaks, Grandfather, Bhishm, descendant of Bharat! If through kindness to them, or unkindness to me or through my misfortune you spare the Pandavas, allow the great warrior Karan to do the work. He will destroy all the Pandavas and their allies in battle." Having said these words to Bhishm of true prowess, your son became silent." 42.



प्रगृहणानां जलीश्रणा सुचतान् सर्वतो दिशः ॥ २८ ॥ शुश्राव मधुरा वाचो नानादेशनिवासिनाम् । संस्तूयमान सूतैश्च मागधैश्च महायशा ॥ २९ ॥ पूजयानश्चतान् सर्वान् सर्वलोके श्वरेश्वर । प्रदीपैः काञ्चनैस्तत्र गन्धतैलावसेचितैः ॥ ३० ॥ परिवव्रुर्महाराजं प्रज्वलद्भिः समन्ततः । सतैः परिवृतो राजा प्रदीपैः काञ्चनैर्ज्वलन् ॥ ३१ ॥ शुशुभे चन्द्रमा युक्तो दीप्तैरिव महाग्रहैः । काञ्चनोष्णीपिणस्तत्र वेत्रझर्झरपाणयः ॥ ३२ ॥ प्रोत्साहयन्तः शनकैस्तं जनं सर्वतो दिशम् । सम्प्राप्यतु ततो राजा भीष्मस्य सदन शुभम् ॥ ३३ ॥ अवतीर्य हयाच्चापि भीष्मं प्राप्य जनेश्वर । अभिवाद्य ततो भीष्मं निषण्ण परमासने ॥ ३४ ॥ कांचने सर्वतो भद्रे स्पर्द्ध्यास्तरणसवृते । उवाचप्रांजलिर्भीष्मं वाष्पकण्ठोश्रुलोचनः ॥ ३५ । त्वांवयंहि समाश्रित्य संयुगे शत्रुसूदन । उत्सहे मरणेजेतु सेंद्रानपि सुरा सुरान् ॥ ३६ ॥ किमुपांडुसुतान्वीरान्ससुहृद्गणबांध

वीर लोग और ओर पास सब भाई बन्धु अपने सुन्दर भुज दण्डों में अंजुली साधे हुये और देशनिवासियों से मीठे वचनों को सुनता हुआ वह महायशस्वी सूत मागधों से प्रशंसित होकर उनसब अपनी प्रजाओं को प्रसन्न करने लगा । ३० । वहां महात्मा पुरुषों ने सुगन्धित वस्तुओं से पूर्ण सुवर्ण के दीपकों के द्वारा उसको चारों ओरसे प्रकाशित किया, फिर उन सुवर्ण के बड़े २ दीपकों के प्रकाश से महाप्रकाशमान, वह राजा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बड़े २ ग्रहों से संयुक्त चन्द्रमा प्रकाशमान होता है उस स्थान पर पुनहरी सितार आदि बाजे हाथों में रखनेवाले मनुष्य सबओर से उन मनुष्योंको मीठे वचनों से हटानेवाले हुए फिर राजा भीष्म के शुभ डेरे को पाकर घोड़े से उतर भीष्म के सम्मुख उनको नमस्कार करके उत्तम आसन पर बैठगया । ३५ । वह डेरा सुनहरी उत्तम बिछौनों से सब दिशा में कल्याणरूप था उस में बैठेहुए भीष्मजी से राजा दुर्योधन हाथ जोड़ेहुए गदगदवाणी से बोला कि हे शत्रुहंता हमलोग युद्ध में आपसे रक्षितहोकर

all the Kauravs went to the tent of Bhishm Followed by warriors and surrounded by his brothers and kinsmen with upraised arms, Prince Duryodhan went on hearing the sweet words of the citizens and the praises of the bards and pleased his subjects in this manner 30. Great men illumined his way from all sides with gold lamps fed by scented materials. Looking glorious in the light of gold lamps the king appeared like the moon surrounded by stars. A band of musicians went on in front, playing sweet tunes to clear the way Having reached the tent of Bhishm, the king dismounted from his horse, and having paid his respects to him sat on the best seat : 35 Golden carpets were spread all over in the tent where Bhishm sat, and the prince with folded palms and choked voice thus addressed him,—' Being protected by you during war of fire, we aspire to conquer the

यान् । तस्मादर्हसि गांगेय कृपांकर्तुं मयिप्रभो ॥ ३७ ॥ जहि पांडुसुतान्वीरान् महेंद्र इव दानवान् । अहं सर्वान् महाराज निहनिष्यामि सोमकान् ॥ ३८ ॥ पञ्चालान् केकयैः सार्धंकरूषंथिति भारत । त्वद्वचः सत्यमेवास्तु जहिपार्थान् समागतान् ॥ ३९ ॥ सोमकांश्च महेष्वासान् सत्यवाग्भवभारत । दययाय दिराजाच द्रव्यमतवानमममो ॥ ४० ॥ मंदभाग्यतयावापि ममरक्षसि पांडवान् । अनुजानीहि समरे कर्णं माहवशोभिनम् ॥ ४१ ॥ स जेष्यति रणे पार्थान् ससुहृद्गणबान्धवान् । स एवमुक्त्वा नृपतिः पुत्रो दुर्योधनस्तव । नोवाच वचनं किञ्चिद्भीष्मं सत्यपराक्रमम् ॥ ४२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मदुर्योधनसम्वादे अष्टनवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

इन्द्र समेत देव दानवों के भी विजय करने की अभिलाषा रखते हैं तो इन पाण्डवोंको उन के सहायकों समेत विजय करना कितनी बात है हे गांगेय भीष्मजी आप मुझपर कृपा करने को योग्य हो, आप उनवीर पांडवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र दानव लोगों को मारता है हे महाराज मैं सब सोमकों को मारूंगा फिर करूषोंको और पांचालों समेत केकय लोगों को भी मारूंगा आप अपने वचन को सत्यकरके सम्मुख आये हुए पाण्डवों को मारो और बड़े धनुषधारी सोमकों कोभी मारकर अपने वचनको सत्यकरो, हे भरतवंशी भीष्मपितामह दयासे यामेरे वैरभावसे अथवा मेरी प्रारब्ध हीनतासे जो आप पांडवों की रक्षा करते हो तो युद्ध में शोभा पानेवाले कर्ण को आज्ञादो, वह कर्ण युद्धमेंसब सेनाओरसुहृदों समेत पांडवों को मारेगा, आपका पुत्र इस प्रकारके वचन कहकर फिर उस सत्य पराक्रमी भीष्मजी से कुछ नहींबोला ॥ ४२ ॥

gods and danavas with Indra, how easy it is for us to conquer the Pandavas and their allies? I crave your favour, Bhishm the son of Ganga. Kill the Pandavas as Indra does the danavas." I shall, O king, destroy all the Somaks and the Panchals together with the Kaikayas. Fulfil your promise by killing the Pandavas when they face you, fulfil also your promise of killing the Somaks, Grandfather, Bhishm, descendant of Bharat. If through kindness to them, or unkindness to me, or through my misfortune you spare the Pandavas, allow the great warrior Karan to do the work. He will destroy all the Pandavas and their allies in battle." Having said these words to Bhishm, of true prowess, your son became silent." 42.



सञ्जय उवाच । वाक्शल्यैस्तव पुत्रेण सोऽतिविद्धो महामनाः । दुःखेन महताविष्टो
नोवाच प्रियमण्वपि ॥ १ ॥ स ध्यात्वा सुचिरं कालं दुःखरोषसमन्वितः । श्वसमानो
यथा नागः प्रणुन्नो वाक्शलाकया ॥ २ ॥ उद्वृत्य चक्षुषी कोपान्निर्दहन्निव भारत ।
सदेवासुरगन्धर्वं लोकं लोकविदां वरः ॥ ३ ॥ अब्रवीत् तव पुत्रं स सामपूर्वमिदं
वचः ॥ किं त्वं दुर्योधनैवं मां वाक्शल्यैरपकृन्तसि ॥ ४ ॥ घटमानं यथाशक्ति कुर्वा-
णञ्च तव प्रियम् । जुह्वानं समरे प्राणांस्तवैव प्रियकाम्यया ॥ ५ ॥ यदा तु पाण्डवः
शूरः खाण्डवेऽग्निमतर्पयत् । पराजित्य रणे शक्रं पर्याप्तं तन्निदर्शनम् ॥ ६ ॥ यदा च त्वां
महाबाहो गन्धर्वैर्हृतमोजसा । अमोचयत् पाण्डुसुतः पर्याप्तं तन्निदर्शनम् ॥ ७ ॥
द्रवमाणेषु शूरेषु सोदरेषु तव प्रभो । सूतपुत्रे च राधेये पर्याप्तं तन्निदर्शनम् ॥ ८ ॥
यच्च नः सहितान् सर्वान् विराटनगरे तदा । एक एव समुद्यातः पर्याप्तं तन्निदर्श-
नम् ॥ ९ ॥ द्रोणञ्च युधि संरब्धं मांच निर्जित्य संयुगे । वासांसि स समादत्त पर्याप्तं

अध्याय ९९

संजय बोले कि आपके पुत्रके वचनरूपी भालों से अत्यन्त घायल और वचन
रूपी शलाकाओं से भिदे हुए सर्पकी समान श्वासलेते बड़े साहसी महाकष्टमें पड़ेहुए
भीष्मजी बड़ी विलम्ब तक शोचरूपी ध्यान में मग्नहोकर अपने क्रोधसे देव दनुज
मनुष्योंको भस्म करनेवाले बड़े क्रोधसे दोनों नेत्रोंको खोलकर बड़ी मधुरवाणी
द्वारा आपके पुत्र से वचन बोले कि हे दुर्योधन इस प्रकार से अपनी सामर्थ्यके
अनुसार उपाय करके तेरे हितके लिये अपने प्राणों को होमतेहुए मुझको तू अपने
वचनरूपी भालों से क्यों घायल करता है ॥ ५ ॥ जिस दशामें कि शूरवीर पाण्डवों
ने युद्ध में इन्द्र को विजय करके खांडव वनमें अग्निको तृप्त किया और हे महाबाहु
गन्धर्वों के पराक्रम से तुम पकड़े हुएको तेरेभाई बन्धु औरकर्णआदि बड़े २ शूरों
के भागजाने पर अकेले पांडव अर्जुनने छुटाया यही दृष्टान्त तुमको शोचनेके योग्य
है और विराटनगर में हम सब के सम्मुख अकेला अर्जुनही हुआ वहभी दृष्टान्त

CHAPTER XCIX

"Wounded by the darts of your son's taunts and pierced by those verbal spears," said Sanjaya, "great Bhishm remained long plunged in thoughtful predicament, heaving deep sighs of distress. Capable of destroying gods, danavas and men with his anger, he opened wide both his eyes in anger and in a very sweet tone said to your son, "Thus trying to the best of my ability and sacrificing my life for your sake, I am wounded by your taunts. 5 You must bear in mind how the Pandavas conquered Indra and burnt the forest of Khandev. Remember how you and your brothers captivated by the gandharvas were liberated by Arjun when Karan and other warriors had been put to flight by them. You must remember that Arjun faced us all at

तन्निदर्शनम् ॥ १० ॥ तथा द्रौणिं महेष्वासं शारद्वत मथापिच । गोग्रहे जितवान्पूर्वं पर्य्याप्तं तन्निदर्शनम् ॥ ११ ॥ विजित्य च यदा कर्णं सदा पुरुषमानिनम् । उत्तरायै ददौ वस्त्रं पर्याप्तं तन्निदर्शनम् ॥ १२ ॥ निवातकवचान् युद्धे वासवेनापि दुर्जयान् । जितवान् समरे पार्थः पर्याप्तं तन्निदर्शनम् ॥ १३ ॥ कोहि शक्तो रणे जेतुं पाण्डवं रभसं तदा । यस्य गोप्ता जगद्गोप्ता शंखचक्रगदाधरः ॥ १४ ॥ वासुदेवोनन्त शक्तिः सृष्टिसंहारकारकः । सर्वेश्वरो देवदेवः परमात्मा सनातनः ॥ १५ ॥ उक्तोऽसि बहुशो राजन् नारदाद्यैर्महर्षिभिः । त्वन्तु मोहान्न जानीषे वाच्यावाच्यं सुयोधन ॥ १६ ॥ मुमूर्षुर्हि नरः सर्वान् वृक्षान् पश्यति काञ्चनान् । तथा त्वमपि गान्धारे विपरीतानि पश्यसि १७

[illegible] । युध्यस्वतानद्य रणे पश्यामः पुरुषोत्तम

[illegible] भाग जानेपर युद्ध दुर्मद द्रोणाचार्य और मुझको संग्राम में विजय करके वस्त्र उतार लिये वहभी दृष्टान्त योग्य है । इसी प्रकार गो हरण में भी बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य को भी विजय किया वहभी दृष्टान्त ठीक है, जब कि सब पुरुषों में बड़े धनुर्द्धर कर्णको विजय करके उत्तराके लिये वस्त्र दिये वह दृष्टान्त भी बहुत है, अर्जुन ने इन्द्रसे भी कठिनता पूर्वक विजय होने व [illegible] किया वहभी दृष्टान्त बहुत है, तब [illegible] युद्धमें विजय करने को समर्थ होय और दुर्योधन जिसका रक्षा करने वाला जगत् का स्वामी शंख चक्र गदा पद्म धारण करने वाला, महा शक्तिमान् वासुदेव सृष्टि संहार का करने वाला सर्वेश्वर देव देव परमात्मा सनातन है, जिसको कि नारदादि महर्षियों ने भी तुझको समझाया है ऐसा जानकर भी हे दुर्बुद्धी तू मोहसे कहने और न कहने की बातको भी नहीं जानता है । १६ । मरने की इच्छा रखने वाला पुरुष जैसे कि सब वृक्षोंको स्वर्णमयी देखता है उसी प्रकार हे गान्धारी के पुत्र तू भी विपरीत बातों को देखता है, तैंने आप पाण्डव और सृंजियों से बड़ी भारी शत्रुता

Virat and when your brothers had run away he conquered invincible Dronacharya and me and took off our clothes. 10. At the occasion of the cap [illegible] and the great archer Ashwath [illegible] after conquering the Kaurayas, and this is a sufficient example of his bravery. Arjun conquered the rakshases known as Nibat Kabaches whom Indra himself could not conquer and this is a sufficient example. Who is then brave enough to conquer Arjun in battle? He has for his guardian the wielder of conch, discus, mace and lotus, mighty Vasudev, the destroyer of the world, lord of all gods, eternal lord who has been pointed out as such to you by Narad and other rishis. Knowing these facts, O, foolish Daryodhan, [illegible] 16. Like a dying person [illegible]

॥१८॥ अहन्तु सोमकान् सर्वान् पञ्चालांश्च समागतान् । निहनिष्ये नरव्याघ्र वर्जयित्वा शिखण्डिनम् । १९ । तैर्वाहं निहतः संख्ये गमिष्ये यमसादनम् । तान् वा निहत्य समरे प्रीतिं दास्याम्यहं तव ॥ २० ॥ पूर्वं हि स्त्री समुत्पन्ना शिखण्डी राजवेश्मनि । वरदानात् पुमान् जातः सैषा वै स्त्री शिखण्डिनी ॥२१॥ तमहं न हनिष्यामि प्राणत्यागेऽपि भारत । यासौ प्राङ्निर्मिता धात्रा सैषा वै स्त्री शिखण्डिनी । २२ ॥ सुखं स्वपिहि गान्धारे श्वोऽस्मि कर्त्ता महारणम् । यं जनाः कथयिष्यन्ति यावत् स्थास्यति मेदिनी, ॥२३॥ एवमुक्तस्तव सुतो निर्जगाम जनेश्वर । अभिवाद्य गुरुं मूर्ध्ना प्रययौ स्वं निवेशनम् ॥ २४ ॥ आगम्य तु ततो राजा विसृज्य च महाजनम् । प्रविवेश ततस्तूर्णं क्षयं शत्रुक्षयंकर. ॥ २५ ॥ प्रविष्टः स निशां तां च गमयामास पार्थिव । प्रभातायां च शर्व

करी है इस से युद्धभूमि में उन से तू संग्राम करियो हमभी देखेंगे, हे नरोत्तम मैं शिखण्डी को छोड़कर सम्मुख आयेहुए सब सोमकोंको और पांचालोंको मारूंगा, मैं युद्धमें उनके हाथसे मराहुआ यमलोकको जाऊंगा या मैंही उनको मारकर तुझको प्रसन्न करूंगा । २० । क्योंकि प्रथम राजमहल में शिखण्डी स्त्री होकर उत्पन्न हुआ था फिर वरदानसे पुरुष हुआ है निश्चय करके यह शिखण्डी स्त्री है इससे हे दुर्योधन मैं अपने प्राण जाते हुए भी उसको कभी न मारूंगा जो इस को ईश्वर ने प्रथम स्त्री उत्पन्न किया था इसीसे यह शिखण्डी अब भी निश्चय स्त्री है हे गान्धारीके पुत्र आनन्द से शयनकर मैं प्रातःकालही ऐसा महामारी युद्ध करूंगा जिसको मनुष्य जब तक पृथ्वी नियतरहैगी तब तक कहाकरेंगे, हे राजा भीष्मजी से ऐसे वचनों को सुनकर आपका पुत्र मस्तकसे उनको दण्डवत् करके डेरेसे बाहर निकल अपने निवासस्थान को गया, और सब साथ के लोगों को बिदाकरके शीघ्रही अपने डेरे में प्रवेश कर गया । २५ । वहां रात्रिभर सोया, प्रातःकाल उठ कर

contrary to what they are You have intentionally made the Pandavas and the Srinjayas your enemies and we shall see what prowess you can show against them I shall O best of men, kill all the Somaks and Panchals who face me in battle with the exception of Shikhandi I shall either be killed in battle and go to the region of Yam or shall please you by their slaughter 20 For Shikhandi orginally was born a woman in the palace of the king and then was changed to manhood through a boon, he is surely a woman and I shall not kill him even if I am in the danger of losing my life. Because he was born a woman, he must be regarded as such. Sleep soundly, son of Gandhari; I shall in the morning, make a hard fight which shall be remembered till the end of the world" Hearing these words from Bhishm, Duryodhan bowed down to him and went out to his residence. Then dismissing all his companions, he entered his tent 24. There he slept during the night and rising early in the morning, he ordered the

र्थां प्रातरुत्थायतान्नृप ॥ २६ ॥ राज्ञः समाज्ञापयत सेनां योजयतेति ह । अद्य भीष्मो रणे क्रुद्धो निहनिष्यति सोमकान् ॥ २७ ॥ दुर्योधनस्य तच्छ्रुत्वा रात्रौ विलपितंबहु । मन्यमानः स तं राजन् प्रत्यादेशं मिवात्मनः ॥ २८ ॥ निर्वेदं परमं गत्वा विनिन्द्यपर वक्ष्यताम् । दीर्घं दध्यौ शान्तनवो योद्धुकामोऽर्जुनं रणे ॥ २९ ॥ इङ्गितेनतु तज्ज्ञात्वा गाङ्गेये न विचिन्तितम् । दुर्योधनो महाराज दुःशासन मचोदयत् ॥ ३० ॥ दुःशासन रथास्तूर्णं युज्यन्तां भीष्मरक्षिणः । द्वाविंशतिं मनीकानि सर्वाण्येवाभिचोदय ॥ ३१ ॥ इदं हि समनुप्राप्तं वर्षपूगाभि चिंतितम् । पाण्डवानां ससैन्यानां वधो राज्यस्यचागमः ३२ तत्र कार्यतमं मन्ये भीष्मस्यैवाभि रक्षणम् । स नो गुप्तः सहायः स्याद्धन्यात् पार्थान् सयुगे ॥ ३३ ॥ अब्रवीद्धि विशुद्धात्मा नाहं हन्यां शिखण्डिनम् । स्त्री पूर्वको ह्यसौ रा जस्तस्माद्वर्ज्यो मया रणे ॥ ३४ ॥ लोकस्तद्वेद यदहं पितुः प्रिय चिकीर्षया । राज्यं

उसने राजाओं को आज्ञा करी कि सेनाको तैयार करो अब युद्धमें क्रोध हेकर भीष्मजी सोमकों को मारेंगे, हे राजा रात्रि में दुर्योधन के उन बड़े भारी विलाप को सुन और अपना निरादर समझ बड़े वैराग्य को प्राप्त होकर दूसरे का दोष दर्शन करने की निन्दा करके युद्ध में अर्जुन से संग्राम करने के अभिलाषी भीष्मजी ने बड़ा ध्यान किया और दुर्योधन ने शरीर की चेष्टा से भीष्मजी की बड़ी चिन्ता को जानकर दुःशासन से कहा । ३० । कि हे दुश्शासन भीष्मजी के रक्षा करने वाले रथ बहुत शीघ्र तैयार हों और बाईस अनीक सेना को भी प्रेरणा करदो, कि बहुत काल से विचार किया हुआ सम्पूर्ण सेना समेत पाण्डव लोगों का मरण अब अच्छी तरह से प्राप्त हुआ उस स्थान में भीष्मजी की रक्षा को ही मैं बड़ा काम जानता हूं वह रक्षित कियाहुआ भीष्म हमारा सहायक होकर पाण्डवों को मारेगा, क्योंकि इसने बड़े शुद्ध अन्तःकरण से कहाहै कि मैं शिखण्डीको नहीं मारूंगा इस निमित्त कि वह पहले स्त्री था वह युद्ध में मुझको त्याज्य है, और सब संसार इस बातको जानताहै कि मैंने पिताकी प्रीति के निमित्त राज्य करनेको

princes to arrange the army, informing them that Bhishm would destroy the Somakas Hearing of the excessive lamentations of Duryodhan in the night and feeling his dignity wounded, Bhishm lost all love for the world, and commenting on the evil practice of back biting, he thought a great deal of his desire to fight against Arjun, Seeing indications of thoughtfulness on the face of Bhishm Duryodhan said to Dushasan, "Prepare soon chariots for the protection of Bhishm and order twenty two *units* (*divisions*) of the army to be ready 31 The long wished for destruction of the Pandavas and their armies is at hand, I think the protection of Bhishm to be the highest duty Well protected he will help me to destroy the Pandavas, for with a true intention he said that he would not slay Shikhandi who was originally a woman and that all the world knew that for the

स्फीतं महाबाहो स्त्रियश्च त्यक्तवान्पुरा ॥ ३५ ॥ नैव चाहं स्त्रियं जातु न स्त्रीपूर्वं कथञ्चन । हन्यांयुधि नरश्रेष्ठ सत्य मेतद् ब्रवीमिते ॥ ३६ ॥ अयं स्त्रीपूर्वको राजञ्छिखण्डी यदि ते श्रुतः । उद्योगे कथितं यत्तत्तथा जाता शिखण्डिनी ॥ ३७ ॥ कन्या भूत्वा पुमान् जातः सच मां योधयिष्यति । तस्याहं प्रमुखे बाणान् न मुञ्चेयं कथञ्चन ३८॥ युद्धेहि क्षत्रियांस्तात पाण्डवानां जयैषिणः । सर्वो नन्यान् हनिष्यामि सम्प्राप्तान् रणमूर्धनि ॥ ३९ ॥ एवं मां भरतश्रेष्ठ गाङ्गेयः प्राह शास्त्रवित् । तत्र सर्वात्मना मन्ये गाङ्गेयस्यैव पालनम् ॥ ४० ॥ अरक्ष्य माणं हि वृको हन्यात् सिंहं महाहवे । मा वृकेणेव गाङ्गेयं घातयेम शिखण्डिना ॥ ४१ ॥ मातुलः शकुनिः शल्यः कृपो द्रोणो विविंशतिः । यत्तारक्षन्तु गाङ्गेयं तस्मिन्गुप्ते ध्रुवोजयः ॥ ४२ ॥ एतच्छ्रुत्वातु ते सर्वे दुर्योधन वचस्तदा । सर्वतो रथ वंशेन गाङ्गेय पर्यधारयन् ॥ ४३ ॥ पुत्राश्च तव गाङ्गेयं परिवार्य ययुर्मुदा । कम्पयन्तो भुवं द्याञ्च क्षोभयन्तश्च पाण्डवान् ॥ ४४ ॥ ते रथैः सुप्रसंयुक्तैर्दंति

और स्त्री संग्रह को त्याग किया है । ३५ । इस निमित्त हे नरोत्तम मैं किसी दशा में भी युद्धमें इस जन्म की स्त्री को व पूर्व्व जन्मकी स्त्री को कभी न मारूंगा यह मैं सत्य सत्य तुम से वर्णन करता हूं, हे राजा यह शिखण्डी जिसको कि आपने सुना है यह स्त्री था फिर उद्योग करनेसे यह शिखण्डनी नाममे उत्पन्नहुई जो कन्या होकर मुझसे युद्ध करेगी उस पर मैं कभी अपना शस्त्र न चलाऊंगा, हे तात मैं पाण्डवों की विजय चाहनेवाले क्षत्रियों को या युद्धमें सम्मुख आये हुए अन्य क्षत्रियों को भी संग्राम करके मारूंगा, यह भरतर्षभ गांगेय भीष्मजी ने मुझ से कहाहै इस से मैं सर्वात्मभाव से ही भीष्मजीकी रक्षाको चाहताहूं । ४० । क्योंकि बिना रक्षा किये हुए सिंह को भेड़िया भी मारसक्ता है मेरा मामा शकुनि शल्य कृपाचार्य्य द्रोणाचार्य विविंशति यह सब मिलकर बड़ी सावधानी से भीष्मजी की रक्षाकरें उसके रक्षित होने से अवश्य विजय होगी, तब तो सब लोगों ने दुर्योधन के इस वचनको सुनकर सब ओर से रथों के समूहों से भीष्मजी की रक्षाकरी, फिर भीष्मजी की रक्षा करके

love of his father he had forsaken the flourishing kingdom and the society of women 35. He has promised to spare one who was a woman in this life as well as in the former one. Shikhandi was formerly a woman and therefore he would not lay hands on him. With this exception he would slay all the kshatryas of the Pandavas desirous of conquest or any other warriors seeking battle with him. All this was said to me by Bhishm the son of Ganga and therefore with all my heart I am desirous of Bhishm's protection 40. A wolf may slay an unprotected lion. My uncle Shakuni, Shalya, Kripacharya Dronacharya and Vivinshati should protect him jointly. Victory will fall on our side if he is well protected" Hearing these words of Duryodhan, all the warriors mounted on chariots, protected Bhishm from all sides. Surrounding Bhishm, your sons went on shaking

मिश्र महारथाः। परिवार्य रणे भीष्मं दंशिताः समवस्थिताः ॥ ४५ ॥ यथा देवा सुरे युद्धे त्रिदशा वज्रधारिणम् । सर्वेतेस्म व्यतिष्ठन्त रक्षंतस्तं महारथम् ॥ ४६ ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा पुनर्भ्रातरमब्रवीत्। सव्य चक्रं युधामन्यु रुत्तमौजाश्च दक्षिणम् ॥ ४७ ॥ गोप्तारावर्जुनस्यैतावर्जुनोपि शिखण्डिनः । रक्ष्यमाण: स पार्थेन तथास्माभिर्विवर्जितः ॥ ४८ ॥ यथा भीष्मं नन्नो हन्या दु शासन तथा कुरु । भ्रातुस्तद्वचनं श्रुत्वा पुत्रो दुःशासनस्तव ॥ ४९ ॥ भीष्मं प्रमुखतः कृत्वा प्रययौ सह सेनया। भीष्मन्तु रथवंशेन दृष्ट्वा समभिसंवृतम् ॥ ५० ॥ अर्जुनो रथिनां श्रेष्ठो धृष्टद्युम्न मुवाचह । शिखण्डिनं नरव्याघ्रं भीष्मस्य प्रमुखेनृप। स्थापयस्वाद्यपाञ्चाल्य तस्य गोप्ताहमित्युत॥५१॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दुर्य्योधनदुःशासनसम्वादे नवनवतितमोऽध्यायः ॥ ९९ ॥

आपके वेटे पृथ्वी और आकाश को कम्पायमान करके, पाण्डवों को भयभीत करातेहुए बड़े प्रसन्न होकर चले, वह सब महारथी बड़ी रीतिसे नियत कियेहुए रथियों से भीष्मजी को मध्य में रक्षित कर के कवच और अस्त्र शस्त्रोंको धारण कियेहुए ऐसे सब इकट्ठे हुए जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में देवता और वज्रधारी इन्द्रकूदे यह सब इस प्रकारसे उस महारथी को रक्षित करके नियतहुए ॥ ४६ ॥ तदनन्तर राजा दुर्योधन ने फिर अपने भाई से कहा, कि अर्जुन के वाम ओर का रक्षक युधामन्यु और दक्षिण भागका उत्तमौजा यह दोनों हैं और अर्जुन भी शिखण्डीका रक्षक है, वह अर्जुन से रक्षित और हम से त्यागाहुआ शिखण्डी जैसे भीष्मको और हमको नहीं मारे हे दुश्शासन तुम वही उपायकरो। फिर आपका पुत्र दुश्शासन भाई के इस वचनको सुनकर भीष्मजी को आगे करके सेना के साथ में चला, और रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन रथियों के समूहों से भीष्मजी को चारों ओरसे रक्षित देखकर धृष्टद्युम्न से बोला कि हे राजा धृष्टद्युम्न अब नरोत्तम शिखंडी को भीष्म के सम्मुख नियत करो मैं उस का रक्षकहूं ॥ ५१ ॥

the earth and sky and terrifying the Pandavas with their cheerful mood. All these warriors, properly stationed round Bhishm with their chariots and elephants, arms and armour looked like Indra surrounded by gods in the war of the gods and asurs.46. Then Prince Duryodhan, again addressing his brother, said, "Yudhadmanyu protects Arjun from the left and Uttamauja from right, and Arjun himself protects Shikhandi. Let not Shikhandi, protected by Arjun and deserted by us, kill Bhishm and ourselves. You must look to this Dushasan." Your son Dushasan, hearing these words of his brother, followed the army led by Bhishm. And Arjun the best of charioteers, seeing Bhishm well protected by the hosts of charioteers, said to Dhrishtadyumna, "Let Shikhandi face Bhishma, I shall guard him." 51.

सञ्जय उवाच । तत शान्तनवो भीष्मो निर्ययौ सह सेनया। व्यूहञ्चाव्यूहत महत् सर्वतोभद्रमारमन. ॥ १ ॥ कृपश्च कृतवर्मा च शैब्यश्चैव महारथ. । शकुनि सैन्धवश्चैव काम्बोजश्च सुदक्षिण ॥ २ ॥ भीष्मेण सहिता. सर्वे पुत्रैश्चतव भारत। अग्रत सर्व सैन्याना व्यूहस्य प्रमुखे स्थिताः ॥ ३ ॥ द्रोणो भूरिश्रवा शल्यो भगदत्तश्च मारिष। दक्षिणं पक्षमाश्रित्य स्थिता व्यूहस्य दंशिता ॥ ४ ॥ अश्वत्थामा सोमदत्तश्चा वन्त्यौ च महारथौ। महत्या सेनया युक्ता वामं पक्षमपालयन् ॥ ५ ॥ दुर्योधनो महाराज त्रिगर्त्तै सर्वतो वृतः। व्यूहमध्ये स्थिता राजन् पाण्डवान् प्रति भारत॥ ६ ॥ अलम्बुषा रथश्रेष्ठ श्रुतायुश्च महारथ। पृष्ठत सर्वसैन्याना स्थितौ व्यूहस्य दंशितौ ॥ ७ ॥ एवञ्च त तदा व्यूह कृत्वा भारत तावका सन्नद्धा. समदृश्यन्त प्रतान्तावा ग्नय ॥ ८ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा भीमसेनश्च पाण्डव.। नकुल सहदेवश्च माद्रीपु

अध्याय ॥ १०० ॥

संजय बोले कि इसके पीछे शंतनुके पुत्र भीष्मजी अपनी सेना को सायलेकर चले और अपनी बुद्धिसे सवतोभद्र नाम व्यूह को तैयार किया, और कृपाचार्य्य कृतवर्मा महारथी शल्य शकुनि सैंधव कांबोज सुदक्षिण यहसब भीष्मजी और आप के पुत्रों समेत सेनाके अग्रगामी होकर व्यूहके मुखपर नियतहुए और द्रोणाचार्य्य भूरिश्रवा शल्य भगदत्त यह सब शस्त्र और कवचोंका धारणकरके व्यूह के दक्षिण भाग में रक्षकहो कर नियत हुए, और अश्वत्थामा सोमदत्त और दोनों अवन्ति देश के महारथी राजा यह सब बड़ी सेना समेत व्यूह के बामभाग में रक्षक हुए। ५। और हे भरतवंशी धृतराष्ट्र राजा दुर्योधन सब ओर से त्रिगर्त्त देशियों से संयुक्त व्यह के मध्यमें पांडवों के सम्मुख नियतहुआ, रथियों में श्रेष्ठ अलंबुष और महारथी श्रुतायु यहदोनों कवच शस्त्रधारी व्यूहकी सब सेनाओं के पीछे नियतहुए, हे भरतर्षभ उससमय आप के शूरवीर शस्त्र कवचों से अलंकृत ऐसे दृष्टपड़े जैसे कि अत्यन्त संतप्त करनवाली अग्नियां होतीहैं, इनके पीछे राजा युधिष्ठिर-भीमसेन

CHAPTER C

Sanjaya said "Then Bhishm the son of Shantanu with his army proceeded to form a phalanx known as the Best-of-all. Kripacharya, Kritvarma, valliant Sharvya, Shakuni, Saindhav, Camboj, Sudakshin, Bhishm and your sons, leading the army, stood at the mouth of the array, Dronacharya, Bhurishrava, Shalya and Bhagdatta, armed with arms and armour, stood at the right wing, and Ashwathama, Somdatta and the two princes of Avanti, together with a large army, protected the left flank. 5. Prince Duryodhan with all the Trigartas stood in the middle to face the Pandavas. Alamvush the best of chariote rs and valliant Shrutayu, armed with weapons and armour, stood behind all the armies Your warriors decked with weapons and armour looked like burning fires. Then prince Yudhishthir, Bhimsen and the

भ्रातुमावपि ॥ ९ ॥ अग्रत सर्वसैन्यानां स्थिताम्व्यूहस्य दंशिता । धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्च महारथ ॥ १० ॥ स्थिता सैन्येन महता परानीकविनाशना । शिखण्डी विजयश्चैव राक्षसश्च घटोत्कच ॥ ११ ॥ चेकितानो महाबाहु कुन्तिभोजश्च वीर्यवान् । स्थिता रणे महाराज महत्या सेनया वृता ॥ १२ ॥ अभिमन्युर्महेष्वासो द्रुपदश्च महाबल । युयुधानो महेष्वासो युधामन्युश्च वीर्यवान् ॥ १३ ॥ कैकया भ्रातरश्चैव स्थिता युद्धाय दंशिता । एव तेपि महाव्यूह प्रतिव्यूह्य सुदुर्जयम ॥ १४ ॥ पाण्डवा समरे शूरा स्थिता युद्धाय दंशिता । तावकास्तु रणे यत्ता सहसेना नराधिप ॥ १५ ॥ अभ्युद्यपूरेगे पार्थान् भीष्म कृत्वाग्रतो नृप । तथैव पाण्डवाराजन् भीमसेनपुरोगमा ॥ १६ ॥ भीष्मे योद्धुमभीप्सन्त सग्रामे विजयैषिण । क्ष्वेडा किलकिला शङ्खान् क्रकचान् गोविषाणिका ॥ १७ ॥ भेरीमृदङ्गपणवान् नादयन्तश्च पुष्करान् । पाण्डवा अभ्यवर्तन्त नदन्तो भैरवान् रवान् ॥१८॥ भेरीमृदङ्गशङ्खानां दुन्दुभीनाञ्च निस्वनै ।

और माद्री के दोनों पुत्र नकुल और सहदेव भी शस्त्र और कवच धारण कियेहुए बहुत शोभा युक्त अपने व्यूहकी सब सेनाओं के आगे नियत हुए और धृष्टद्युम्न विराट महारथी सात्यकी। १० । यह सब शत्रुहन्ता वीर बहुतसी सेना समेत नियत हुए शिखंडी घटोत्कच राक्षस, महाबाहु चेकितान, कुन्तिभोज यह सब भी बहुतसी सेना समेत युद्धमें उपस्थित हुए, और महा धनुषधारी अभिमन्यु और महाबली द्रुपद और कैकयलोग शस्त्रादिसे अलंकृत होकर युद्धके निमित्त नियत हुए इसरीति से वह शूरवीर पांडवलोग भी दुर्जेय व्यूहको रचकर शत्रुओं के सम्मुख संग्राम भूमिमें युद्धके निमित्त वर्त्तमान हुए, हेराजा फिर युद्ध में कुशल आपके पुत्र और सेना समेत सब राजा लोग भीष्मजी को आगे करके संग्रामभूमि में पांडवों के सम्मुख गये। १५ । इसी प्रकार पांडव लोगभी भीमसेन को आगे करके भीष्मसे लड़नेकी इच्छा से विजयाभिलाषी होकर सिंहनाद पूर्वक किलकिला शब्दों को करते और भेरी मृदंगादि बाजोंसे और दुन्दुभियोंसे शत्रुओंको भय उत्पन्न करतेहुए बड़े प्रसन्न चित्त कौरवों के सम्मुख वर्त्तमान हुए, पृथक् २ रीति से प्रत्येक से मँझायेहुए सिंह

two sons of Madri Nakul and Sahadev armed with arms and armour, stood in the van of all the armies in front of the array Dhrishtadyumn Virat, valliant Satyaki 10 all these brave warriors, destroyers of enemies, together with a large army, stood behind Shikhandi, Ghatotkach the rakshas, brave Chekitan and Kuntibhoj were stationed with their armies The mighty archer Abhimanyu, brave Drupad and the Kaikayas, armed with weapons stood ready for battle Thus the brave Pandavas too, having formed the invincible array stood ready to fight facing the enemy Your sons, skilful in battle and the princes with the armies led by Bhishm, faced the Pandavas 15 The Pandavas too, led by Bhimsen, desirous of gaining victory against Bhishm, roaring like lions with a tremendous roar and causing fear to

उत्कृष्ट सिंहनादैश्च वल्गितैश्च पृथग्विधैः ॥ १९ ॥ वयं प्रतिनदन्तस्तान् गच्छामत्वरा न्विता । सहसैवाभिसंक्रुद्धास्तदासीत्तुमुलं महत् २० । ततोऽन्योन्यं प्रधावन्त सम्प्रहारं प्रचक्रिरे । ततः शब्देन महता प्रचकम्पे वसुन्धरा ॥ २१ ॥ पक्षिणश्च महाघोरं व्याह रन्तो विचभ्रमुः । सप्रभश्चोदितः सूर्य्यो निष्प्रभः समपद्यत ॥ २२ ॥ ववुश्च वातास्तु मुला शंसन्तः सुमहद्भयम् । घोराश्च घोरनिर्ह्रादा शिवास्तत्र ववाशिरे । २३ ॥ वेद यन्त्यो महाराज महद्वैशसमागतम् । दिशः प्रज्वलिताराजन् पांसुवर्षं पपात च ॥२४॥ रुधिरेण समुन्मिश्रमस्थिवर्षं तथैव च । रुदता वाहनानाञ्च नेत्रेभ्यः प्रापतज्जलम् ॥ २५ ॥ सुस्रुवुश्चसकृन्मूत्रं प्रध्यायन्तो विशाम्पते । अन्तर्हिता महानादाः श्रूयन्ते भरत र्षभ ॥२६॥ रक्षसा पुरुषादानां नदतां भैरवान् रवान् । सम्पतन्तश्च दृश्यन्त गोमायु बलवायसाः ॥ २७ ॥ श्वानश्च विविधैर्नादैर्वाशन्तस्तत्र मारिष । ज्वलिताश्च महा ल्कावै समाहत्य दिवाकरम् । निपेतुः सहसा भूमौ वेदयन्त्यो महद्भयम् ॥ २८ ॥ महा

नादों से गर्जना करते हुए हम सबलोग बड़ी शीघ्रता से उनके सम्मुख हुए, और अकस्मात् अत्यन्त क्रोधित होकर बड़े कठोर शब्दों को करते हुए परस्परमें सम्मुख दौड़कर बड़े २ प्रहार करने लगे । २० । इसके होतेंही पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान हुई, और बड़े भारी कठोर शब्दों को करते हुए पक्षी घूमने लगे, और बड़ा प्रकाश मान सूर्य्य उस समय प्रभा से रहित हुआ और बड़ी भयानक कठोर शब्दवाली तीक्ष्ण वायु चली, हे महाराज वहां घोरनाश के सूचक नाना रूपधारी भयानक शृगालों के समूह भी कठोर शब्दों को करने लगे, और सब दिशाओं में दिग्दाह हुआ और धूलकी वर्षाहुई और रुधिर से संयुक्त हाड़ों की वर्षाहुई, और रोते हुए वाहनोंने बड़े ध्यान में मग्न होकर मूत्र और विष्ठाको कर दिया ।२५। और हेराजा मांसभक्षी राक्षसों केभी बड़े २ अशुभ शब्द वहां गुप्त सुने गये और गोमायु वा कौवों के झुंड भी गिरते हुए दृष्ट पड़े और नाना शब्दों से कुत्ते घूसने और रोने लगे, और सूर्य्य को आच्छादित करके बड़े भारी उल्कापातभी पृथ्वी पर हुए इसके पीछे पांडवों की और दुर्य्योधन की बड़ी सेना शंख और मृदंगों के शब्दों

the enemies with the sounds of trumpets, drums and other musical instruments, faced the Kauravas with cheerful minds and much enraged of a sudden, rushing with tremendous war cries, began to smite. 20. With this the earth shook and the birds screamed with a dreadful noise. The sun lost his brightness and the storm of wind blew with a tremendous roar. Significant of great destruction, dreadful jackals howled ominously, the directions lit up, dust fell and blood and bones fell down from the sky. The beasts with tears in their eyes dropped urine and excretion. 25 The cannibal rakshases unseen made a tremendous noise and crows swooped down. Dogs howled ominously and the sun being hidden by the dust there fell from the sky sparks

न्यनीकानि महासमुत्थे ततस्तयोः पाण्डवधार्तराष्ट्रयोः । चकम्पिरे शङ्खमृदङ्गनिस्वने प्रकम्पितानीव वनानि वायुना ॥ २९ । नरेन्द्रनागाश्वसमाकुलानामभ्यायतीनामशिवे मुहूर्ते । बभूव घोषस्तुमुलश्चमूनां वातोद्धतानामिव सागराणाम् ॥ ३० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि उत्पातदर्शने शततमोऽध्यायः १०० ॥

सञ्जय उवाच । अभिमन्युरथोदारः पिशङ्गैस्तुरगोत्तमैः । अभिदुद्राव तेजस्वी दुर्योधनबलं महत् ॥ १ ॥ विकिरन् शरवर्षाणि वारिधारा इवाम्बुदः । न शेकुः समरे क्रुद्धं सौभद्रमरिसूदनम् ॥ २ ॥ शस्त्रौघिणं गाहमानं सेनासागरमक्षयम् । निवारयितुमप्याजौ त्वदीयाः कुरुनन्दन ॥ ३ ॥ तेन मुक्ता रणे राजन् शराः शत्रुनिबर्हणाः । क्षत्रियाननयन्शूरान् प्रेतराजनिवेशनम् ॥ ४ ॥ यमदण्डोपमान् घोरान् ज्वलिताशीविषोपमान् । सोऽसृजत् समरे क्रुद्धः प्रेषयामास सायकान् ॥ ५ ॥ सरथान् रथिनस्तूर्णं हयां

से ऐसी कम्पायमान हुई जैसे कि वायु के वेग से वन कम्पायमान होते हैं, हे राजा हाथी घोड़े और रथों से पूर्ण अशुभ मुहूर्त में आई हुई सेनाओं के ऐसे कठोर शब्द हुए जैसे कि वायु से उठे हुए समुद्र के शब्द होते हैं ३० ॥

अध्याय १०१ ॥

संजय बोले कि बड़ा रथी और तेजस्वी अभिमन्यु पिंगल वर्ण के उत्तम घोड़ों के द्वारा बादल की जलधाराओं के समान बाणों की वर्षा करता हुआ दुर्योधन की सेनाके सम्मुख गया उस के हटाने को आपके महाबली शत्रुहन्ता महा उत्तम शस्त्रधारी शूरवीर लोगभी समर्थ नहीं हुए,, हेराजा उस के छोड़े हुए शत्रु संहारी बाणों ने युद्ध में अनेक क्षत्रियों को मारकर यमपुर को भेजा, फिर युद्ध में क्रोधित अभिमन्यु ने यमदण्ड और ज्वलित सर्पाकार घोरबाणों को छोड़कर बड़ी शीघ्रता से रथी समेत रथों को और सवारों के साथ घोड़ों को और हाथियों समेत

of fire The armies of Duryodhan and the Pandavas shook with the sounds of conchs and trumpets as forests shake with the storm of wind Full of elephants, horses and chariots collected in evil time the army of warriors made an uproar like that of a stormy ocean" 30

CHAPTER CI

Sanjaya said —' Mighty and glorious charioteer Abhimanyu, riding his yellow horses and showering his arrows like rain, faced the army of Duryodhan, even your strong warriors, destroyers of foes and wielders of arms were unable to cope with him His arrows destroyers of enemies, killed numerous Kshatryas and sent them to the region of Yam. Then enraged Abhimanyu discharging his dreadful and serpent like arrows soon destroyed the charioteers with chariots, horsemen with horses and elephant riders with elephants. All the kings cheer

इवैव समादिन । गजारोहांश्च सगजान् वारयामास फाल्गुनि । तस्य तत् कुर्वत कर्म महत् संख्ये महीभृत । पूजयाञ्चक्रिरे हृष्टा प्रशशंसुश्च फाल्गुनिम् । ७ ॥ तान्य नीकानि सौभद्रो द्रावयामास भारत । तूलराशी निवाकाशे मारुत सर्वतो दिशम् ८॥ तेन विद्राव्यमाणानि तव सैन्यानि भारत । त्रातारं नाध्यगच्छ तपङ्के मग्नाइव द्विपा ॥ ९ । विद्राव्य सर्वसैन्यानि तावकानि नरोत्तम । अभिमन्यु स्थितो राजन् विधूमोग्नि रिवज्वलन् ॥ १० ॥ न चैन तावकाराजन् विषेहुररिघातिनम । प्रदीप्त पावक यद्वत् पतङ्गा कालचोदिता ॥ ११ ॥ प्रहरन् सर्वे शत्रुभ्य पाण्डवानां महारथ । अदृश्यत महेष्वास सवज्र इव वासव । १२ ॥ हेमपृष्ठ धनुश्चास्य ददृशे विचरद्दिश । तोयदेषु यथा राजन् राजमाना शतह्रदा । १३ ॥ शराश्च निशिता पीता निश्चरन्तिस्म संयुगे । वनाद् फुल्लद्रुमाद्राजन् भ्रमराणामिव प्रजा ॥ १४ ॥ तथैव चरतस्तस्य सौभद्रस्यमहा

हाथीवानों को चूर्णकर डाला । ६ । युद्ध में ऐसे महाकर्म करनेवाले अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की सब राजाओं ने बड़ी प्रसन्न चित्ततासे धन्य २ करके प्रशंसा करी हे राजा उस सुभद्रा के पुत्र ने उन सेनाओं को ऐसे घायल किया जैसे कि वायु आकाश में रूईको चारों ओर को बखेरदेता है, और हे राजा उस अभिमन्यु से भगी हुई तुम्हारी सेनाको कोई रक्षक ऐसेनहीं मिला जैसे कि कीचमें फँसे हुए हाथी को कोई रक्षकनहीं मिलसक्ता, फिरवह अभिमन्यु आपकी सब सेना को भगाकर निर्धूम अग्नि के समान क्रोधमें भराहुआ स्थिर होगया । १० । हे राजा इसको देखकर आपके शूरवीर लोग ऐसे नहीं सहसके जैसे कि कालके प्रेरित पतंग अत्यन्त प्रकाशमान अग्नि को, फिर वहपांडवों का महारथी उग्रधनुषधारी सबशत्रुओं को घायल करता हुआ वज्रधारी इन्द्रके समान दृष्टपड़ा, और उसका सुवर्ण की पृष्ठवाला धनुष दिशाओं में घूमता हुआ ऐसा दिखाई दिया जैसे कि बादलों में प्रकाशमान बिजली होती है, अत्यन्त तीक्ष्ण नोक पीतरंग विष के भरे हुए बाण युद्ध में घूमनेलगे हे राजा जैसे कि फूले वृक्षवाले वन से भँवरों के समूह

fully praised the great works of Abhimanyu the son of Arjun. That son of Subhadra, O king, dispersed the armies as the wind does the flakes of cotton. Your armies put to flight by Abhimanyu found no protector like an elephant sunk in mud. Having dispersed your armies, Abhimanyu stood enraged like smokeless fire. 10 Your warriors, O king could not bear the sight of him as insects fated to die cannot bear the sight of burning fire. Then that mighty archer of the Pandavas looked like Indra wounding all enemies. And his bow of golden back, circling on all sides, looked like lightning in the midst of clouds. Very sharp pointed arrows of yellow colour, flew in the field of battle. Like swarms of black bees issuing out of a

रमन । रथेन काञ्चनाङ्गेन ददृशुर्नान्तर जना ॥ १५ ॥ मोहयित्वा कृप द्रोणं द्रौणिञ्च सबृहद्बलम । सैन्धवञ्च महेष्वासो व्यचरल्लघु सुष्ठुच ॥ १६ । मण्डलीकृत मेवास्य धनु पश्याममारत । सूर्य्यमण्डलसकाशं दहतस्तव वाहिनीम ॥ १७ ॥ त दृष्ट्वाक्षत्रिया शूरा प्रतपततरस्विनम । द्विफाल्गुनमिम लोक मेनिरे तस्य कर्मभि ॥ १८ । तेना र्दिता महाराज भारती सा महाचमू । बभ्राम तत्र तत्रैव योषिन्मदवशादिव ॥ १९ । द्रावयित्वा महासैन्य कम्पयित्वामहारथान् । नन्दयामास सुहृदो मयं जित्वेव वासव ॥ २० ॥ तेन विद्राव्यमाणानि तव सैन्यानि संयुगे । चक्रुरार्तस्वरं घोर पर्जन्यनिनदोपमम ॥ २१ ॥ त श्रुत्वा निनद घोर तव सैन्यस्य भारत । मारुतोद्धूतवेगस्य सागरस्येव

निकलते हुए दृष्ट नहीं आते; उसी प्रकार मनुष्यों ने सुनहरी अंगवाले रथों से घूमते उस महात्मा अभिमन्यु का अन्तर अर्थात् अवकाश नहीं देखा । १५ । कि यह बडा धनुषधारी उत्तमहस्तलाघव करनेवाला वन कृपाचार्य्य द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा बृहद्बल और जयद्रथको मोहित करके अत्यन्तता से घूमा, हे धृतराष्ट्र आपकी सेना भस्म करनेवाला उस अभिमन्यु का धनुष सूर्य्यमंडल के समान मंडली करनेवाला हमने देखा, बड़े २ शूरवीर क्षत्रियों ने उस वेगवान् शीघ्रगामी कठिन दौडनेवाले अभिमन्युको देखकर उसके कर्मों से इस लोकको दो अर्जुनका रखनेवाला माना, हे महाराज उस अभिमन्यु से पीडामान आपकी सेना स्थान २ पर ऐसी अत्यन्तता से घूमी जैसे कि तरुणताके मद में भरी हुई स्त्री इधर उधर घूमती है, फिर सेना समेत महारथियों को घायल और कम्पायमानकरके उसअभिमन्यु ने अपने सुहृदों को ऐसा प्रबल किया जैसे कि इन्द्र ने मय दैत्यको जीतकर सबको प्रसन्न किया था । २० । और युद्ध में अभिमन्यु से भगाई हुई आपकी सेनाओं ने ऐसी पीडा के भयानक शब्दकिये जैसे कि भयकारी बादल की गर्जना के शब्द होते हैं, इसरीति के आपकी सेनाके शब्दों को सुनकर राजा दुर्य्योधन आर्य्यभृङ्ग

forest in bloom' the arrows issuing out of chariots were invisible on account of their swiftness 15— Having made Kripacharya, Drona charya, Ashwathama Brahadval and Jayadrath insensible the swift archer moved incessantly! We saw, O king, the bow of Abhimanyu the destroyer of your armies, moving in a circle like the sun The great warriors seeing the exceedingly swift movement of Abhimanyu and his brave deeds thought that there were two Arjunas in the world. Wounded by Abhimanyu your armies, O king, rushed hither and thither like a young woman who has lost her senses. Then wounding and shaking the army of warriors Abhimanyu made his party as strong as Indra had made all the people after conquering the Maya danavas 20 Put to flight by him your armies uttered dreadful noises of distress like those of thundering clouds Thus hearing the distressing sounds of your warriors, Prince Duryodhan said to Aryabhring the rakshas

पर्वणि । २१ ॥ दुर्योधनस्तदा राजनार्ष्यशृङ्गिमभाषत । एष कार्ष्णिर्महाबाहो द्वितीय इव फाल्गुनः ॥ २३ ॥ चमूं द्रावयते क्रोधाद्वृत्रो देव चमूमिव । तस्य चान्यन्न पश्यामि संयुगे भेषजं महत् ॥ २४ ॥ श्रुतेत्वां राक्षसश्रेष्ठ सर्व विद्यासुपारगम् । स गत्वा त्वरितं वीरं जहि सौभद्रमाहवे ॥ २५ ॥ वयं पार्थं हनिष्यामो भीष्मद्रोणपुरोगमाः । स एवमुक्तो बलवान् राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् ॥ २६ ॥ प्रययौ समरे तूर्णं तव पुत्रस्य शासनात् । नर्दमानो महानादं प्रावृषीव बलाहकः ॥ २७ ॥ तस्य शब्देन महता पाण्डवानां बलं महत् । प्राचलत् सर्वतो राजन् वातोद्धूत इवार्णवः ॥ २८ ॥ बहवश्च महाराज तस्य नादेन भीषिताः । प्रियान् प्राणान् परित्यज्य निपेतुर्धरणीतले ॥ २९ ॥ कार्ष्णिश्चापि मुदा युक्तः प्रगृह्य सशरं धनुः । नृत्यन्निव रथोपस्थे तद्रक्षः समुपाद्रवत् ॥ ३० ॥ ततः स राक्षसः क्रुद्धः सम्प्राप्यैवार्जुनिं रणे । नातिदूरे स्थितां तस्य द्रावयामास

नाम राक्षस से बोला कि हे महाबाहो यह दूसरे अर्जुन के समान अभिमन्यु क्रोध से सेनाको ऐसे भगाये देता है जैसे कि देवताओं की सेना को वृत्रासुर भगाता था तुम सर्व विद्या और शस्त्र सम्पन्न के सिवाय इस युद्ध में इसका मारने वाला मुझको कोई नहीं दिखाई देता सो तुम शीघ्रही जाकर इस अभिमन्यु को मारो ।२५। और हम सब भीष्म और द्रोणाचार्य्य को आगे करके अर्जुन को मारेंगे, इस प्रकार से वह आज्ञादिया हुआ प्रतापी बलवान् राक्षसाधिप वर्षा ऋतु के बादल के समान बड़े शब्दों को करता हुआ आपके पुत्रकी आज्ञासे शीघ्रही युद्ध भूमि में गया, हे राजा उसके भयंकर शब्द से पांडवों की बड़ी सेना सब ओर से ऐसी चलायमान हुई जैसे कि वायु से उठाहुआ समुद्र चलायमान होता है, ।२८। बहुत से मनुष्य तो उसके भयकारी शब्दही से अपने प्यारे जीवनको त्यागकर पृथ्वी पर गिर पड़े ।२९। परन्तु शूरवीर अभिमन्यु बड़ी प्रसन्नता से युक्त बाणों समेत धनुष को हाथों में लेकर नाचता हुआ सा रथ में बैठकर उस राक्षस के सम्मुख पहुँचा ।३०। इस के पीछे उस क्रोधयुक्त राक्षस ने युद्ध में अभिमन्यु को पाकर उसकी समीपी सेना को घायल किया इस रीति से उस

"Like a second Arjun much enraged Abhimanyu is dispersing all the armies as Vritrasur did the armies of gods; I see none of my warriors capable of slaying him. Go at once and kill him. 25. All of us, led by Bhishm and Dronacharya, will slay Arjun." Thus ordered that brave warrior the prince of rakshasas making a loud noise like that of thundering clouds, at once rushed to battle by the order of your son, and with his dreadful cries the armies of the Pandavas were agitated like the ocean with the storm of wind. 28. Many men lost their dear lives by his dreadful sound and fell down on earth; but brave Abhimanyu cheerfully held his bow and arrows and as if dancing in his chariot he faced the rakshas. 30. Then the enraged rakshas, coming face to face with Abhimanyu wounded his attendant warriors, and seeing the

मास वै चमूम ॥ ३१ ॥ तां वध्यमानाञ्च तथा पाण्डवानां महाचमूम् । प्रत्युद्ययौ रणे
रक्षो देवसेनां यथा बलः । ३२ ॥ विमर्दः सुमहानासीत् तस्य सैन्यस्य मारिष । रक्षसा
घोररूपेण वध्यमानस्य संयुगे ॥ ३३ ॥ ततः शरसहस्रैस्तां पाण्डवानां महाचमूम् ।
व्यद्रावयद्रणे रक्षो दर्शयत् स्वपराक्रमम् । ३४ ॥ सा वध्यमाना च तथा पाण्डवानाम
नीकिनी । रक्षसा घोररूपेण प्रदुद्राव रणभयात् ॥ ३५ ॥ प्रमृद्य च रणे सेनां
पद्मिनीं वारणो यथा । ततोऽभिदुद्राव रणे द्रौपदेयान् महाबलान् ॥ ३६ ॥ ते तु
क्रुद्धा महेष्वासा द्रौपदेयाः प्रहारिणः । राक्षसं दुद्रुवुः संख्ये ग्रहाः पञ्च रविं यथा
॥ ३७ ॥ वीर्यवद्भिस्ततस्तैस्तु पीडितो राक्षसोत्तमः । यथा युगक्षये घोरे चन्द्रमाः
पञ्चभिर्ग्रहैः ॥ ३८ ॥ प्रतिविन्ध्यस्ततो रक्षो बिभेद निशितैः शरैः । सर्वपारशवैस्तूर्णमकुण्ठाग्रैर्महाबलः ॥ ३९ ॥ स तैर्भिन्नतनुत्राणः शुशुभे राक्षसोत्तमः । मरी
चिभिरिवार्कस्य संस्यूतो जलदो महान् ॥ ४० ॥ विषक्तैः स शरैश्चापि तपनीय

पांडवकी घायल और भागी हुई बड़ी सेना को देखकर वह राक्षस युद्ध में उसके
सम्मुख ऐसे गया जैसे कि देवताओं की सेना के सम्मुख दैत्यों का राजा बलि गया
था, हे धृतराष्ट्र युद्ध में उस घोर राक्षस ने सेना का बड़ा मर्दन किया, और अपने
पराक्रम को दिखाकर हजारों बाणों को फेंका; तब तो वह पाण्डवी सेना भय
से महाव्याकुल होकर भाग निकली, जैसे कि हाथी कमलिनियों को मर्दन
करता है उसी प्रकार सेना को मर्दन करके युद्ध भूमि में द्रौपदी के पुत्रों के सम्मुख
गया । ३६ । तब वह बड़े धनुषधारी प्रहार करनेवाले महाबली द्रौपदी के पुत्र भी
महा क्रोधरूप होकर उसके सम्मुख ऐसे गये जैसे कि पांच ग्रह सूर्य को सम्मुख से
घेरते हैं, फिर उन पांचों महाबली शूरोंने उसको ऐसा घायल किया जैसे कि युगके
अन्त में अर्थात् प्रलय होने के समय में पांच भयकारी ग्रह चन्द्रमा को पीड़ा देते हैं
इस के अनन्तर महाबली प्रतिविंध ने अत्यन्त शीघ्रता से तीक्ष्ण धारवाले लोहे के
बाणों से उस राक्षस को अत्यन्त घायल किया, उन बाणों से कटेहुए कवचवाला
वह राक्षस ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य की किरणों से गर्भित
बड़ाबादल होता है । ४० । हेराजा वह आर्ष शृंग राक्षस सुवर्ण जटित बाणों से

army of the Pandav wounded and dispersed, the rakshas faced him as
Bali the prince of the daityas had faced the armies of gods. That
dreadful rakshas made a dreadful slaughter of the armies and discharg-
ed thousands of arrows to show prowess, putting to flight the Pandav
armies. And trampling the armies as an elephant tramples a clump of
lotuses, he faced the sons of Draupadi. 36. The great archers, the
sons of Draupadi faced him much enraged like five constellations
surrounding the face of the earth. Then the five warriors wounded
him as severely as five dreadful constellations distress the moon at
the end of a yug. Then brave Pratibindh with very sharp edged

परिच्छदै । आर्प्यंशृङ्गैर्विभौ राजन् दीप्तशृङ्ग इवाचलः ॥ ४१ ॥ ततस्ते भ्रातरः
पञ्च राक्षसेन्द्रं महाहवे । विव्यधुर्निशितैर्बाणैस्तपनीयविभूषितैः ॥ ४२ ॥ स नि:
र्भिन्न शरैर्घोरैर्भुजगैः कोपितैरिव । अलम्बुषो भृशं राजन् नागेन्द्र इव चुक्रुधे ॥ ४३ ॥
सोऽतिविद्धो महाराज मुहूर्तमथ मारिष । प्रविवेश तमो दीर्घं पीडितस्तैर्महारथैः
॥ ४४ ॥ प्रतिलभ्य ततः संज्ञां क्रोधेन द्विगुणीकृत । चिच्छेद सायकांस्तेषां
ध्वजांश्चैव धनूंषि च ॥ ४५ ॥ एकैकं पञ्च भिर्बाणै राजमानस्समर्पयिव । अल
म्बुषो रथोपस्थे नृत्यन्निव महारथ ॥ ४६ ॥ त्वरमाण सुसंरब्धो हयांस्तेषां महा
त्मनाम् । जघान राक्षसः क्रुद्धः सारथींश्च महाबलः ॥ ४७ ॥ बिभेद च सुसं
रब्धः पुनश्चैनान्सुसंशितैः । शरैर्बहुविधाकारैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ४८ ॥ विरथांश्च मही
ष्वासान् कृत्वा तत्र स राक्षसः । अभिदुद्राव वेगेन हन्तुकामो निशाचरः ॥ ४९ ॥ तानर्दि
तान् रणे तेन राक्षसेन दुरात्मना । दृष्ट्वार्जुनसुतः संख्ये राक्षसं समुपाद्रवत् ॥ ५० ॥ तयो-

भिदाहुआ ऐसा शोभित विदित होता है जैसे कि प्रकाशित शिखरवाला पर्वत शोभायमान होता है, फिर उन पांचों भाइयों ने उस राक्षस को बड़े तीक्ष्ण स्वर्ण मयी बाणों से घायल किया । ४२ । तब तो महाविष भरे सर्पों के समान बाणों से विदीर्ण वह गजेन्द्र रूप राक्षस बड़ा क्रोधयुक्त होकर एक मुहूर्त्त मात्र तो अचेत होगया, फिर उस क्रोध से द्विगुणित पराक्रमवाले ने उनके बाण धनुष और ध्वजा ओंको काटा । ४५ । और रथमें बैठेहुए नाचते और आश्चर्य करते महारथी अलम्बुष ने प्रत्येक को पांच २ बाणों से घायल करके बड़ी शीघ्रता से उन महात्मा ओं के घोड़े और सारथियों को मारा, और बहुत प्रकारके अनेक रूपके हजारों बाणों से उनके शरीरों को घायल किया । उनसबकामोंको कर के उनसबके मारने की इच्छा करके वह राक्षस बड़ी तीव्रता से उनके पास गया, अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु उस दुष्टात्मासे अपने भाइयों को पीड़ित देखकर शीघ्रही उसके सम्मुख गया । ५० ।

swift arrows made of iron, wounded the rakshas. Pierced through the armour by golden arrows, the rakshas was glorious to behold like a mountain of shining peak. Then the rakshas wounded the five brothers with very sharp golden arrows. 42. Wounded by those arrows like venomous serpents, the rakshas like an angry elephant, became insensible for a moment, and then becoming doubly energetic with rage he cut their bows and arrows. 45. Seated in his chariot, dancing and wondering brave Alamvush wounded each of them with five arrows and killed their horses and drivers. He pierced through their bodies with thousands of arrows and having done all this, the rakshas desirous of slaying them, rushed upon them. Abhimanyu the son of Arjun, seeing his brothers distressed by the rakshas, hastened to face him 50. The battle between them was as severe as that bet-

समभवद्युद्धं वृत्रवासवयोरिव । ददृशुस्तावकाः सर्वे पाण्डवाश्च महारथाः ॥ ५१ ॥ तौ समेतौ महायुद्धे क्रोधदीप्तौ परस्परम् । महाबलौ महाराज क्रोधसंरक्तलोचनौ ॥ ५२ ॥ परस्परमवेक्षेतां कालानलसमौ युधि । तयोः समागमो घोरो बभूव कटुकोदयः ॥ ५३ ॥ यथा देवासुरे युद्धे शक्रशम्बरयोः पुरा ॥ ५४ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि नवमदिवसयुद्धारम्भे अलम्बुषाभिमन्युसमागमे एकाधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०१ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । आर्जुनिं समरे शूरं विनिघ्नन्तं महारथान् । अलम्बुषः कथं युद्धे प्रत्ययुध्यत संजय ॥ १ ॥ आर्ष्यशृङ्गिं कथं चैव सौभद्रः परवीरहा । तन्ममाचक्ष्व तत्त्वेन यथावृत्तं स्म संयुगे ॥ २ ॥ धनञ्जयश्च किं चक्रे मम सैन्येषु संयुगे । भीमो वा रथिनां श्रेष्ठो राक्षसो वा घटोत्कचः ॥ ३ ॥ नकुलः सहदेवो वा सात्यकिर्वा महारथः । एतदाचक्ष्व मे सर्वं कुशलो ह्यसि सञ्जय ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच । हन्त तेऽहं प्रवक्ष्यामि संग्रामं

वहां उन दोनों का ऐसा महायुद्ध हुआ जैसा कि इन्द्र और वृत्रासुर का हुआ था इस युद्ध को आपके सब पुत्रों ने और महारथी पाण्डवों ने देखा कि दोनों परस्पर को क्रोध युक्त और लाल २ नेत्र करके अत्यन्त लड़े और युद्ध में कालाग्नि के समान दोनों वीरों ने अपने को देखा फिर दोनों का भयकारी युद्ध ऐसा अमित जारी पड़ा जैसा कि पूर्व समय में देवता और असुरों के युद्ध में इन्द्र और शम्बर का हुआ था ॥ ५३ ॥

अध्याय ॥ १०२ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्ध में अलम्बुष राक्षस किस रीति से पांचों महा रथियों को मारता हुआ शूरवीर अभिमन्यु के सम्मुख हुआ और शत्रुओं के वीरों को मारनेवाला अभिमन्यु कैसे २ उस अलम्बुष से लड़ा इसको यथार्थता से मुझसे वर्णन करो, रथियों में श्रेष्ठ भीमसेन घटोत्कच राक्षस नकुल सहदेव और महारथी सात्यकी यह सब कैसे २ लड़े और अर्जुन के युद्ध में मेरी सेना में क्या क्या हुआ इन सब बातों को मेरे आगे पूरा २ वर्णन करो, संजय बोले कि हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र

ween Indra and Vritrasur. The Pandavas as well as your sons witnessed the fighting of the two warriors who with eyes red in great anger fought with each other. The two warriors of fiery temper fought like Indra and Samvar in the war of gods and asurs." 53.

CHAPTER CII

"How did Alamvush the rakshas beat the five warriors?" asked Dhritrashtra of Sanjaya, "how did he face Abhimanyu and how did Abhimanyu the destroyer of foes encounter him? Pray tell me all this in detail. How did Bhimsen the best of charioteers, Ghatotkach the rakshas, Nakul, Sahadev and brave Satyaki fight, and what was done is my army in the war with Arjun? Pray give a detailed account of all these facts." "I shall tell you of that thrilling war," replied

लोमहर्षणम् । यथाभूद्राक्षसेन्द्रस्य सौभद्रस्य च मारिष ॥ ५ ॥ अर्जुनश्च यथा संख्ये भीमसेनश्च पाण्डवः । नकुलः सहदेवश्च रणे चक्रुः पराक्रमम् ॥ ६ ॥ तथैव तावका सर्वे भीष्मद्रोणपुरः सराः । अद्भुतानि विचित्राणि चक्रुः कर्माण्यनेकशः ॥७॥ अलम्बुषस्तु समरे अभिमन्युं महारथम् । विनद्य सुमहानादं तर्जयित्वा मुहुर्मुहुः ॥ ८ ॥ अभिदुद्राव वेगेन तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् । अभिमन्युश्च वेगेन सिंहवद्विनदन्मुहुः ॥ ९ ॥ आर्ष्यशृङ्गिं महेष्वासं पितुरत्यन्तवैरिणम् । ततः समीयतुः संख्ये त्वरितौ नरराक्षसौ १०॥ रथाभ्यां रथिनौ श्रेष्ठौ यथावै देवदानवौ । मायावी राक्षसश्रेष्ठो दिव्यास्त्रश्चैव फाल्गुनिः ॥ ११ ॥ ततः कार्ष्णिर्महाराज निशितैः सायकैस्त्रिभिः । आर्ष्यशृङ्गिं रणे विध्वा पुनर्विव्याध पञ्चभिः ॥ १२ ॥ अलम्बुषोपि सङ्क्रुद्धः कार्ष्णिं नवभिराशुगैः । हृदि विव्याध वेगेन तोत्रैरिव महाद्विपम् ॥ १३ ॥ ततः शरसहस्रेण क्षिप्रकारी निशाचरः । अर्जुनस्य

मै उस रोमहर्षण युद्धको तुम से कहताहू जो उस राक्षस और अभिमन्यु ने किया है और जैसे कि पाण्डव अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव और सात्यकी ने युद्धमें पराक्रम किया है, और जो २ कठिन कर्म आपके उन शूरोंने किया जिनके कि अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य थे उनको और जैसे २ फिर, अलम्बुष युद्ध में बड़े शब्दसे गर्जकर वा धड़ककर महारथी अभिमन्यु के सम्मुख गया और बड़ी तीव्रता से तिष्ठ तिष्ठ शब्द करके सिंह के समान गर्जना करता हुआ अभिमन्यु पिता के महाशत्रु अलम्बुष के सम्मुख जैसे गया तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ शीघ्रता करने वाले नर और राक्षस युद्धमें रथों के द्वारा देवदानव के समान सम्मुख हुए मायाका जाननेवाला राक्षस और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु यह दोनों दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले थे, फिर अभिमन्यु ने तीन तीक्ष्ण वाणों से अलम्बुष को घायल करके पांचवाणों से विदीर्ण किया, और अत्यन्त क्रोधयुक्त अलम्बुष ने भी नौ वाणों से अभिमन्यु के हृदयको ऐसा घायल किया, जैसे कि अंकुश से बड़े हाथी को करते हैं। ११।

Sanjaya, "I shall tell you of the doings of the rakshas and Abhimanyu and of the brave deeds of the Pandav Arjun, Bhimsen, Nakul, Sahadeva and Satyaki. I shall tell you of the brave deeds of your warriors who were led by Bhishm and Dronacharya as well as of Alamvush who, roaring and flashing, faced Abhimanyu and how the latter, roaring like a lion and uttering forth the cry of 'stay, stay,' rushed upon Alamvush the great enemy of his father. Both the best of charioteers, man and rakshas, mounted on swift chariots, faced each other like gods and Danavas. The rakshas, skilful in the use of maya and Abhimanyu the son of Arjun were both skilful in the use of celestial weapons. Having wounded Alamvush with three arrows, Abhimanyu pierced him with five more. Alamvush too, much enraged, wounded Abhimanyu in the breast with nine arrows as they do an elephant with a goad. 13. Then, O best of Bharats, Alamvush

सुतं संख्ये पीडयामास भारत ॥ १४ ॥ अभिमन्युस्तत क्रुद्धो नवभिर्नत पर्वभिः । बिभेद निशितैर्वाणै राक्षसेन्द्रं महोरसि ॥ १५ ॥ ते तस्य विविशुस्तूर्णं कार्यं निर्भिद्यमर्मसु । सतैर्विभिन्नसर्वाङ्गः शुशुभे राक्षसोत्तमः ॥ १६ ॥ पुष्पितैः किंशुकैः राजन् संस्तीर्ण इव पर्वतः । सन्धारयाणश्च शरान् हेम पुंखान् महाबल ॥ १७ ॥ विबभौ राक्षसश्रेष्ठः सज्वाल इव पर्वतः । तत क्रुद्धो महाराज आर्ष्य शृङ्गिरमर्षणः ॥ १८ ॥ महेन्द्रप्रतिमं कार्ष्णिं छादयामास पत्रिभिः । तेन ते विशिखामुक्ता यमदण्डोपमाः शिताः ॥ १९ ॥ अभिमन्युं विनिर्भिद्य प्राविशन्तधरातलम् । तथैवार्जुनिनामुक्ताः शरा कनकभूषणा ॥ २० ॥ अलम्बुषं विनिर्भिद्य प्राविशन्त धरातलम् । सौभद्रस्तु रणे रक्षः शरैः सन्नत पर्वभि ॥ २१ ॥ चक्रे विमुख मासाद्य मयं शक्र इवाहवे । विमुखश्च रणे रक्षो व... मानं रणे रिणा ॥ २२ ॥ प्रादुश्चक्रे महामायां तामसीं परतापनाम् । ततस्ते तमसा सर्वे

हे भरतर्षभ इन के पीछे शीघ्रता करने वाले अलम्बुष ने अपने हजार वाणों से अभिमन्युको पीड़ावान् किया, फिर महाक्रोध भरे अभिमन्यु ने भी ग्रन्थी वाले नौ वाणों से राक्षसों के राजा को बड़ी छाती पर घायल किया, वह वाण मर्मों में प्रवेश करके शीघ्रही उसकी देह में घुसगये उन वाणों से वह राक्षस सब शरीर में घायल होकर ऐसा शोभायमान हुआ, जैसे कि फूले हुए किंशुक वृक्षों से पर्व्वत शोभित होताहै और सुनहरी पुंखवाले वाणों से उसकी ऐसी अद्भुत शोभाहुई जैसे अग्नि वाले पहाड़की होती है इनके पीछे महाक्रोध युक्त असह्य अलम्बुष ने वाणों से महाइन्द्र के समान अभिमन्यु को ढकदिया. फिर उसके वाण अभिमन्यु को घायल करके पृथ्वी में घुसगये इसीप्रकार अभिमन्यु के छोड़े सुवर्ण जटित वाण भी अलम्बुष को घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगये फिर अभिमन्यु ने युद्धमें अच्छे झुके हुए ग्रन्थी के वाण अलम्बुषके ऐसे मारे जिनके मारे उसने ऐसे मुख फेर लिया जैसेकि इन्द्रके मारेहुए वाणोंसे मयदैत्यने मुखफेर लियाथा फिर राक्षसाधिपने अपनी तामसी बड़ी मायासे अन्धकार को प्रकटकिया उस अन्धकारमें वहसब गुप्तहोगये, तब

dexterously wounded Abhimanyu with thousands of arrows, and the latter too, much enraged pierced that prince of rakshases with nine arrows in the breast The arrows pierced the vital parts in his body and the rakshas with the wounds on his body, looked beautiful like kinshuk trees in bloom on a mountain. With the arrows having golden feathers stuck to his body, he looked glorious like a volcano. Then enraged Alamvush of unbearable nature hid Abhimanyu with his arrows like those of Indra His arrows having pierced through the body of Abhimanyu, entered the ground Then Abhimanyu pierced him with his arrows of hooked points and the rakshas turned face like Maya daitya wounded by Indra. The rakshas prince thereupon created a storm of darkness by his art of darkness and hid all the comba-

धुलाश्चासन् महीपते ॥ २३ ॥ नाभिमन्युमपश्यन्त नैव स्वान् न परान् रणे । अभिमन्यु
श्रतदृष्ट्वा घोररूपं महत्तमः ॥ २४ ॥ प्रादुश्चक्रे तवत्युमं भास्करं कुरुनन्दनः । तत
प्रकाशमभवज्जगत् सर्वं महीपते ॥२५॥ ताञ्चाभिजघ्निवान् माया राक्षसस्य दुरात्म
नः । संक्रुद्धश्चमहावीर्यो राक्षसेन्द्रं नरोत्तम. ॥ २६ ॥ छादयामास समरे शरैः सन्नत
पर्वभिः । बह्वीस्तथान्या मायाश्च प्रयुक्तास्तेन रक्षसा ॥ २७ । सर्वाश्च विदमेयात्मा
धारयामास फाल्गुनिः । हतमायःततो रक्षो वध्यमानश्चसायकैः ॥ २८ ॥ रथतत्रैव सं
त्यज्य प्राद्रवत् महतो भयात् । तस्मिन् विनिर्जिते तूर्णं कूटयोधिनि राक्षसे ॥ २९ ॥
आर्जुनिः समरे सैन्यं तावकं सं ममर्दह । मदान्धो गन्धनागेन्द्रः सपद्मा पद्मिनीमिव
॥ ३० ॥ ततः शान्तनवो भीष्मः सैन्यं दृष्ट्वाभि विद्रुतम । महता शरवर्षेण सौभद्रं
पर्य्यवारयत् ॥ ३१ ॥ कोष्ठीकृत्यच तं वीरं धार्त्तराष्ट्रा महारथाः । एकं सुबहवो युद्धे

न राक्षसको न अपने शूरवीरों को न शत्रुओंको अभिमन्यु ने देखा इसमहाभयकारी
प्रबल मायाको देखकर अभिमन्युने प्रकाशमान सौरनाम अस्त्रको प्रकटकिया तबसब
संसार दीखने लगा । २५ । और प्रकाश के होनेही उन निर्बुद्धी दुष्टात्मा राक्षसकी
प्रबल मायाको दूरकरके बड़े वीर पराक्रमी नरोत्तम अभिमन्युने उस राक्षसाधिपको
युद्धमें गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से ढकदिया फिरउस राक्षस ने अनेक २ मायाकरी
परन्तु सब मायाओंको उस महाअस्त्रज्ञ अभिमन्युने दूर किया फिर मायाके नाशहो-
तेही सायकों से घायल होकर वह राक्षस बड़ा भयभीत होके रथको उसी स्थान में
छोड़कर भागगया फिरउस कठिन युद्ध कर्त्ता राक्षसके शीघ्र विजय होनेपर युद्धमें
मत्तहोकर अभिमन्युने आपकी सेनाका ऐसा विध्वंसनकिया जैसे कि मदोन्मत्त वन
वासी गजेन्द्र निर्बल कुमुदिनियों के वनको विध्वंसकरता है । ३० । इसके पीछे
शान्तनुके पुत्र भीष्मजीने अपनी सेना को भागाहुआ देखकर बाणों की वर्षा से
अभिमन्युको ढकदिया, फिर धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रों ने उसवीर को चारों ओर

tants under it. 23. Neither the rakshas nor the warriors of both sides were discernible to Abhimanyu Seeing that dreadful delusion, Abhimanyu discharged his light producing weapon known as Sour (solar) and the firmament was again clear. 25. Thus dispelling darkness caused by the unwise and ill natured rakshas, brave Abhimanyu hid him by his arrows having hidden knots. The rakshas devised various deceptions, but Abhimanyu, skilled in the use of all weapons, made all his schemes futile. With the destruction of his artfulness, the rakshas wounded by arrows and afraid, left his chariot and fled from the field of battle. After the conquest of that warrior rakshas Abhimanyu began to destroy your armies as a mad elephant of the forest tramples down the helpless lotuses. 30 Then Bhishm the son of Shantanu, seeing his army put to flight, hid Abhimanyu with his sharp shower of arrows The sons of Dhritrashtra then surrounded that

ततश्च सायकैर्वहुभिः ॥ ३२ ॥ स तेषां रथिनांवीर- पितुस्तुल्य पराक्रमः । सदृशो वासुदेवस्य विक्रमेण बलेन च । ३३ ॥ उभयोः सदृशं कर्म स पितुर्मातुलस्य च । रणे बहुविधं चक्रे सर्वशस्त्रभृतां वरः ॥ ३४ ॥ ततो धनञ्जयो वीरो विनिघ्नंस्तव सैनिकान् । आससाद रणे भीष्मं पुत्रप्रेप्सुरमर्षणः ॥ ३५ ॥ तथैव समरे राजन् पिता देवव्रतस्तव । आससाद रणे पार्थं स्वर्भानुरिव भास्करम् ॥ ३६ ॥ ततः सरथनागाश्वाः पुत्रास्तव जनेश्वर । परिवव्रू रणे भीष्मं जुगुपुश्च समन्ततः ॥ ३७ ॥ तथैव पाण्डवा राजन् परिवार्य्य धनञ्जयम् । रणाय महते युक्ता दंशिता भरतर्षभ ॥ ३८ ॥ शारद्वतस्ततो राजन् भीष्मस्य प्रमुखे स्थितम् । अर्जुनं पञ्चविंशत्या सायकानां समार्पयत् ॥ ३९ ॥ प्रत्युद्गम्याथ विव्याध सात्यकिस्तं शितैः शरैः । पाण्डवप्रियकामार्थं शार्दूल इव कुञ्जरम् ॥ ४० ॥ गौतमोपि त्वरायुक्तो माधवंनवभिः

से घेरकर युद्धमें अनेकों ने अकेले को बहुतसे बाणों से अत्यन्त घायल किया, उस पिता के समान बली व बल पराक्रम में वासुदेवजीके तुल्यसब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ वीर अभिमन्युने उन रथियों के सम्मुख पिता और मामाके समान अनेक प्रकारके कर्मोंको किया । ३४ । उसके पीछे पुत्रको चाहते और आपकी सेनाको मारते क्रोधयुक्त वीर अर्जुनने युद्ध में अपने पुत्रको पाया, इसी प्रकार अन्य अपने वीरों को भी सम्मुख लड़ते हुए पाया और आप के पिता देवव्रतने लड़ाई में अर्जुन को ऐसे सम्मुख पाया जैसे कि राहु सूर्य्य को सम्मुख पाता है, इसके पीछे रथ हाथी और घोड़ों समेत आपके पुत्रों ने युद्ध में भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित किया, हे राजा धृतराष्ट्र इसी प्रकारसे अलंकृत पांडव अर्जुनको घेर कर बड़े युद्धके लिये सन्नद्धहुए, इसके पीछे कृपाचार्य्य ने पच्चीस बाणों से भीष्म के आगे वर्त्तमान अर्जुन को ढकदिया फिर सात्यकीने अर्जुन के प्रियकरने की इच्छा में सम्मुख जाकर उनको तीक्ष्णबाणों से ऐसा घायल किया जैसे कि शार्दूल हाथी को घायल करताहै । ४० । और अत्यन्त कोपयुक्त शीघ्रताकरनेवाले कृपाचार्य्य जीने भी कंक

warrior on all sides and many of them united together wounded the single. Valiant Abhimanyu the best of warriors, strong like his father and full of prowess like his uncle Vasudev, performed deeds of valour like those of his father and uncle. Then out of love for his son killing your warriors, brave Arjun, much enraged, approached him and found him opposed by many. Then your father Devabrat met Arjun in combat as Rahu meets the sun Your sons protected Bhishm with chariots, elephants and horses, and surrounding the Pandov Arjun they fought against him. Then Kripacharya with twenty five arrows hid Arjun who opposed Bhishm. Satyaki, wishing to please Arjun, faced him and wounded him with his arrows as a lion wounds an elephant. 40. Skilful Kripacharya, much enraged, wounded Satyaki

शरैः। हृदि विव्याध संक्रुद्धः कंकपत्रपरिच्छदैः ॥ ४७ ॥ शैनेयोपि ततः क्रुद्धश्चापमानम्य वेगवान्। गौतमान्तकरं तूर्णं समाधत्त शिलीमुखम् ॥ ४२ ॥ तमापतन्तं वेगेन शक्राशनिसमद्युतिम्। द्विधा चिच्छेद संक्रुद्धो द्रौणिः परमकोपनः ॥ ४३ ॥ समुत्सृज्याथ शैनेयो गौतमं रथिनांवरः। अभ्यद्रवद्रणे द्रौणिं राहुः खे शशिनं यथा ॥४४॥ तस्य द्रोणसुतश्चापं द्विधा चिच्छेदभारत। अथैनं छिन्नधन्वानं ताडयामास सायकैः ॥ ४५ ॥ सोन्यत् कार्मुकमादाय शत्रुघ्नं भारसाधनम्। द्रौणिं षष्ठ्या महाराज बाह्वोरुरसि चार्पयत् ॥ ४६ ॥ स विद्धो व्यथितश्चैव मुहूर्त्तं कश्मलायुत.। निषसाद रथोपस्थे ध्वजयष्टिं समाश्रितः ॥ ४७ ॥ प्रतिलभ्य ततः संज्ञां द्रोणपुत्रः प्रतापवान्। वार्ष्णेयं समरे क्रुद्धो नाराचेन समर्पयत् ॥ ४८ ॥ शैनेयं स तु निर्भिद्य प्राविशद्धरणीतलम्।

पत्र युक्त नौ बाणों से सात्यकी को हृदय में घायल किया फिर वेगवान् क्रोध भरे सात्यकी ने अपने धनुषको खेंचाकर कृपाचार्य्य के नाश करनेवाले शिलीमुख नाम बाणको धनुषपर चढ़ाया उस समय अत्यन्त क्रोध से भरे हुए अश्वत्थामा ने उस तीव्रतासे गिरते हुए इन्द्र वज्र के समान बाणको दोस्थानों में काटा, इसके पीछे रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी कृपाचार्य्य को त्यागकर युद्ध में अश्वत्थामा के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि आकाश में चन्द्रमा के सम्मुख राहुजाता है । ४४ । हे भरतवंशी द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा ने उसके धनुष के दो खण्ड करके उसको मारे बाणों के प्रच्छादित करादिया फिर सात्यकी ने शत्रुओं के मारने-वाले दूसरे धनुष को खैंचकर साठ बाणों से अश्वत्थामाकी छाती और दोनों भुजाओं को घायल किया उन बाणों से घायल और पीड़ित होकर अश्वत्थामा महाव्याकुल व अचेत होकर कई मुहूर्त्ततक ध्वजाके आश्रयसे रथमें बैठगया, थोड़ेही समयमें अश्वत्थामाने सचेतहो बड़े क्रोधसे सात्यकीको नाराच बाणसे घायल किया, वहबाण सात्यकी को घायल करता हुआ पृथ्वीमें ऐसे घुसगया जैसे किवसन्त ऋतुमें सर्पका बलवान्

in the breast with nine arrows having vulture quills, and Satyaki much enraged sharply bent his bow and desirous of killing Kripacharya, put to his bow an arrow whetted on stone Ashwathama exceedingly enraged, cut that swift arrow like the vajra of India, in two places. Then Satyaki the best of charioteers left Kripacharya and rushed against Ashwathama as Rahu goes against the moon. 44 The latter cut down his bow and hid him with his arrows. Satyaki then took up another bow destructive of enemies and discharging from it sixty arrows, wounded him on the breast and arms. Wounded and pained by them, Ashwathama became unconscious for some time and held his banner staff to keep himself from falling down. On regaining consciousness he wounded Satyaki with a long shafted arrow. Having wounded Satyaki that arrow entered the ground as a young and powerful snake enters his hole in the season of Spring 49. Then

वसन्तकाले बलवान् विलं सर्पशिशुर्यथा ॥ ४९ ॥ अथा परेण भल्लेन माधवस्यध्वजो त्तमम् । चिच्छेद समरे द्रौणिः सिंहनादं मुमोचह ॥ ५० ॥ पुनश्चैनं शरैर्घोरैश्छादया मास भारत । निदाघान्ते महाराज यथा मेघो दिवाकरम् ॥ ५१ ॥ सात्यकोपिर्महाराज शरजालं निहत्य तत् । द्रौणिमभ्या किरत्तूर्णं शरजालैरनेकधा ॥ ५२ ॥ तापयामास च द्रौणिं शैनेय परवीरहा । विमुक्तो मेघजालेन यथैव तपनस्तथा ॥ ५३ ॥ शराणांच सहस्रेण पुनरेव समुद्यतः । सात्यकिश्छादयामास ननाद च महाबलः ॥ ५४ ॥ दृष्ट्वा पुत्रंचतं ग्रस्तं राहुणेव निशाकरम् । अभ्यद्रवत् शैनेयं भारद्वाजः प्रतापवान् ॥ ५५ ॥ विव्याध च सुतीक्ष्णेन पृषत्केन महामृधे । परीप्सन् स्वसुतं राजन् वार्ष्णेये नाभिपीडितम् ॥ ५६ ॥ सात्यकिस्तु रणे हित्वा गुरुपुत्रं महारथम् । द्रोणं विव्याध विंशत्या सर्व पारशवैः शरैः ॥ ५७ ॥ तदन्तरममेयात्मा कौन्तेयः शत्रुतापनः । अभ्य

बच्चा बिलमें प्रवेश करता है । ४९ । फिर अश्वत्थामाने दूसरे भल्ल से सात्यकी की उत्तम ध्वजाको काटकर बड़े सिंहनाद पूर्व्वक उसको महाघोर बाणों से ऐसा ढकदिया जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल सूर्यको ढकदेता है हे महाराज फिर सात्यकीने भी बड़ी शीघ्रतासे उस बाणोंके जालको काटकर अपने बाणसमूहोंसे अश्वत्थामाको आच्छादित करदिया फिर उसशत्रुहन्ता सात्यकीने अश्वत्थामाको ऐसा संतप्त किया जैसे कि स्वच्छ आकाशवाला सूर्य सबको अत्यन्त तपाता है, इसके पीछे बड़े उपाय करनेवाले सात्यकी ने बड़ी गर्जनाओंको करके हजारों बाणोंसे अश्वत्थामाको व्याप्त करदिया, तबराहुसे ग्रसेहुए सूर्यके समान अपनेपुत्रको देखकरप्रतापवान् द्रोणाचार्य्य जी इस सात्यकी के सम्मुख गये । ५५ । हे राजा सात्यकी के हाथसे पीड़ामान् अपने पुत्रको चाहते हुए द्रोणाचार्य्य ने उसको युद्ध में बड़े तीव्र पृषत्कबाणसे घायल किया फिर सात्यकी ने युद्धमें गुरुके पुत्र महारथी को छोड़कर लोहमयी बाणों से द्रोणाचार्य्यजी को महा व्याकुल किया, उसी अन्तर में बड़ा साहसी

---

having cut down his good banner with another dart, Ashwathama roared like a lion and hid him with his arrows as clouds in the rainy season hide the sun. Satyaki with great velocity cut down that network of arrows and his Ashwathama with a swarm of his own That destroyer of foes then heated Ashwathama as does the sun when the sky is clear. With great skill Satyaki hid Ashwathama with thousands of arrows and uttered loud roars. Then seeing his son like the sun arrested by Rahu, Dronacharya faced Satyaki. 55. Out of affection for his son who was wounded by Satyaki, Dronacharya wounded the latter with his very sharp arrows. Satyaki then left the son of Acharya and wounded Dronacharya with his steel arrows. In the meantime, valliant

द्रुपदणे क्रुद्धो द्रोणंप्रति महारथम ॥ ५८ ॥ ततो द्रोणस्य पार्थस्य समेपातो महामृधे।
यथा बुधस्य शुक्रस्य महाराज नभस्तले ॥ ५९ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे द्रोणार्जुन-
समागमे द्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०२ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं द्रोणो महेष्वासः पाण्डवश्च धनञ्जय । समीयतू रणे यत्तौ तावुभौ पुरुषर्षभौ ॥ ॥ प्रियोहि पाण्डवो नित्यं भारद्वाजस्य धीमतः । आचार्यश्च रणे नित्यं प्रियः पार्थस्य सञ्जय ॥ २ ॥ तावुभौ रथिनौ संख्ये दृप्तौ सिंहाविवोत्कटौ। कथं समीयतुर्यत्तौ भारद्वाजधनञ्जयौ । ३ । सञ्जय उवाच । न द्रोण समरे पार्थं जानीते प्रियमात्मनः क्षत्रधर्म पुरस्कृत्य पार्थो वा गुरुमाहवे ॥ ४ ॥ न क्षत्रिया रणे राजन् वर्जयन्ति परस्परम । निर्मर्य्यादं हि युध्यन्ते पितृभिर्भ्रातृभिः सह ॥ ५ ॥ रणे

शत्रुसंतापी महारथी क्रोध भरा अर्जुन युद्धमें द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गया फिर द्रोणाचार्य्य और अर्जुन ने उस घोर युद्ध में ऐसी बड़ी सम्मुखता करी जैसी कि आकाश में बुध और शुक्रने करीथी ५९ ॥

अध्याय १०३ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्ध में कुशल दोनों पुरुषोत्तम अर्थात् बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य और पाण्डव अर्जुन परस्पर कैसे सम्मुख हुए, हे संजय वह अर्जुन उस बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्य का सदैव प्यारा है और आचार्य्यजी भी अर्जुन को सदैव प्यारे हैं, वह दोनों महारथी युद्ध में प्रसन्न चित्त सिंहकी समान मदोन्मत्त और सावधान होके किस रीति से युद्धकरने को प्रवृत्तहुए, संजय बोले कि द्रोणाचार्य्यजी युद्ध में अर्जुन को अपना प्यारा नहीं जानते हैं इसी प्रकार अर्जुन भी क्षत्री धर्मको आगे करके गुरुको युद्ध में प्यारा नहीं मानता है, हे राजा क्षत्री लोग परस्पर में एक दूसरेको त्याग नहीं करतेहैं किन्तु पिता और भाई

Arjun of great courage and destroyer of foes went against Dronacharya much enraged and met him in a severe combat like that of Budh and Shukra in heaven."59.

CHAPTER CIII

"Describe the encounte between the two skilful warriors and best of men, viz., Dronacharya the great archer and Arjun the Pandav" said Dhritrashtra to Sanjaya, "Arjun is always dear to Dronacharya and the former has equal regard for the latter, how did the two warriors, with cheerful minds like two madd ned lions, fight against each other in earnest?" "Dronacharya casts aside his love for Arjun at the time of fighting," replied Sanjaya, "and likewise Arjun's idea of kshatrya duty overcomes that of love for his preceptor. Kshatryas, O king, donot spare any one in battle they

आहता पार्थेन द्रोणो त्रिभिस्त्रिभि शरैः। नाचिन्तयच्च तान् बाणान् पार्थचापच्युतान् युधि ॥ ६ ॥ शरवृष्ट्या पुन पार्थ छादयामास तं रणे। स प्रजज्वाल रोषेण गहने शिखिशर्जित ॥ ७ ॥ ततोऽर्जुनं रणे द्रोण शरै सन्नतपर्वभि। छादयामास राजेन्द्र न चिरादेव भारत ॥ ८ ॥ ततो दुर्योधनो राजा सुशर्माणमचोदयत्। द्रोणस्य समरे राजन् पार्ष्णिग्रहणकारणात् ॥ ९ ॥ त्रिगर्त्तराडपि क्रुद्धो भृशमायम्यकार्मुकम्। छादयामास समरे पार्थं बाणैरयो मुखै ॥ १० ॥ ताभ्यां मुक्ताः शरा राजन्नन्तरिक्षे विरेजिरे। हंसा इव महाराज शरत्काले नभस्तले ॥ ११ ॥ ते शरा. प्राप्य कौन्तेयं समन्ताद्विविशु प्रभो। फलभारनत यद्वत् स्वादुवृक्षं विहङ्गमा. ॥ १२ ॥ अर्जुनस्तु रणे नाद विनद्य रथिनांवर.। त्रिगर्तराजं समरे सपुत्रं विव्यधे शरैः ॥ १३ ॥ ते विध्यमाना पार्थेन कालेनेव युगक्षये। पार्थमेवाभ्यवर्त्तन्त मरणे कृतनिश्चया ॥ १४ ॥ मुमुक्षु

के साथ में भी अनर्यादा से लड़ते हैं हे राजा युद्धमें अर्जुन के तीन बाणों से घायल द्रोणाचार्यजीने अर्जुन के धनुष से गिरेहुए बाणों को विचार नहीं किया, फिर अर्जुन युद्धभूमि में बाणों की वर्षा करता हुआ ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसे कि बड़े वन में वृद्धि पानेवाला अग्नि प्रचण्ड होजाता है, फिर द्रोणाचार्यने भी शीघ्रही गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से अर्जुन को ढकादिया, तदनन्तर राजा दुर्य्योधन ने युद्ध में द्रोणाचार्य्य की सहायता के कारण राजा सुशर्मा को आज्ञाकरी, उस त्रिगर्त के क्रोधयुक्त राजा ने भी अपने धनुषको अच्छे प्रकार खैंचकर लोहे की पुंखवाले बाणों से अर्जुन को आच्छादित करदिया। १०। हे राजा उन दोनों के छोड़ेहुये बाण अन्तरिक्ष में ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि शरदऋतुके आकाश में हंसशोभित होतेहैं, वह बाण चारोंओरसे अर्जुन को पाकर ऐसे प्रवेशहुए जैसे कि फलों के बोझ से झुकेहुए वृक्षों में पक्षी प्रवेश करते है, फिर रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने बड़ी गर्जना करके मारे बाणों के पुत्र समेत त्रिगर्त्त के राजा को घायल कर दिया जैसे कि युग के अन्त में काल से घायल होतेहैं इसी प्रकार अर्जुन से घायल

fight against their fathers and brothers. Wounded with three arrows of Arjun, O king, Dronacharya took no notice of them. Ar-this Arjun, showering his arrows was exceedingly enraged like the advancing fire in a forest. Dronacharya too, hid Arjun with the sh w of h s arrows having hidden knots. Then Prince Duryodhan o l d king Susharma to assist D onacharya, and that enraged ... Trigart too, d ew his bow and hid Arjun with his feathered ... made ... 10 he arrows discharged by both looked ... like s ... flying on high in the Winter season. The arrows entered the chariot of A-jun as birds enter the foliage of a fruit bearing tree. Then Arjun the best of charioteers with a long roar wounded the king of Trigart and his son with the shower of arrows

शरवृष्टिञ्च पाण्डवस्य रथं प्रति । शरवृष्टिं ततस्तान्तु शरयैः समन्ततः ॥ १५ ॥ प्रतिजग्राह राजेन्द्र तोयवृष्टिमिवाचलः । तत्राद्भुतमपश्याम बीभत्सोर्हस्तलाघवम् ॥ १६ ॥ विमुक्तां बहुभिर्योधैः शस्त्रवृष्टिं दुरासदाम् । यदेको वारयामास मारुतोऽभ्रगणानिव ॥ १७॥ कर्मणातेन पार्थस्य तुतुषुर्देवदानवाः । अथक्रुद्धो रणे पार्थ त्रिगर्त्तान् प्रति भारत ॥१८॥ मुमोचास्त्रं महाराज वायव्यं पृतनामुखे । प्रादुरासीत्ततो वायुः क्षोभयाणो नभस्तलम् ॥ १९ ॥ पातयन् वै तरुगणान् विनिघ्नंश्चैव सैनिकान् । ततो द्रोणो भिवीक्ष्यैव वायव्यास्त्रं सुदारुणम् ॥ २० ॥ शैलमन्यन्महाराज घोरमस्त्रं मुमोचह । द्रोणेन युधि निर्मुक्ते तस्मिन्नस्त्रे नराधिप ॥ २१ ॥ प्रशशाम ततो वायुः प्रसन्नाश्च दिशोदश । ततः पाण्डुसुतो वीरस्त्रिगर्त्तस्य रथव्रजान् ॥ २२ ॥ निरुत्साहान्रणेचक्रे विमुखान् विपराक्रमान् । ततो दुर्य्योधनश्चैव कृपश्च, रथिनांवरः ॥ २३ ॥ अश्वत्था

और मरने में निश्चय करनेवाले यह लोग अर्जुन केही सम्मुख आकर वर्तमान हुए । १४ । और युद्धमें इन लोगोंने अर्जुन के रथ पर बाणों की वर्षाकरी और अर्जुन ने अपने बाणों से उनके बाण जालों को ऐसे रोका जैसे कि जलकी वर्षा को पर्व्वत रोकता है हे राजा यहां हमने अर्जुन की हस्तलाघवता को भी अपूर्व देखा कि जो अकेले ने बहुत से वीरोंकी छोड़ी हुई असह्य बाणों की वर्षाको और शस्त्रों को ऐसे रोका जैसे कि वायु बादलोंके समूहोंको रोकदेता है, अर्जुन के उस कर्म से देवता और दानव भी महाप्रसन्न हुए हेराजा अर्जुन ने महा क्रोधित होकर सेना के मुखरूप त्रिगर्त्त देशियों के ऊपर वायव्य अस्त्रको छोड़ा उस में से आकाशको व्याकुल करते या देवताओंके समूहोंको गिराते और सेनाओं को मारते हुए वायु प्रकटहुए फिर द्रोणाचार्य जी ने बड़े भयकारी वायव्य अस्त्र को देखकर । २०। दूसरे शैल्य नाम घोर अस्त्रको छोड़ा उसद्रोणाचार्य के उस अस्त्र के छोड़तेही वहवायु शान्त होगई और दशोंदिसा प्रसन्नहुईं इस के पीछे उसवीर अर्जुन ने त्रिगर्त्त राजा के रथों के समूहोंको, बेउत्साह व निर्बल व मुख फेरनेवाला

like those of Death. Thus wounded by Arjun, they faced him believing in their death 14 They showered arrows at the chariot of Arjun and the latter with the network of his arrows checked them as a mountain checks a shower of rain. There we saw, O King, the wonderful swiftness of Arjun who checked the shower of their arrows as the wind does the masses of clouds. The gods and the danavs were pleased at the prowess of Arjun. He discharged his Vayavya (airy) weapon at the Trigartas who led the army. It produced winds disturbing the skies, making the crowds of gods fall from their seats and destroying the armies. Seeing the effect of that weapon Dronacharya discharged another, known as Shailya, which subsided the storm of wind and the people were pleased. Then

मातथा शल्यः काम्बोजश्च सुदक्षिणः । विन्दानुविन्दावावन्त्यौ वाह्लिकः सह
वाह्लिके ॥ २४ ॥ महता रथवंशेन पार्थस्यावारयन् दिशः । तथैव भगदत्तश्च श्रुता
युश्च महाबलः ॥ २५ ॥ गजानीकेन भीमस्य ताववारयतां दिशः । भूरिश्रवाः शलश्चैव
सौबलश्च विशाम्पते ॥ २६ ॥ शरैर्विमलैस्तीक्ष्णैर्माद्रीपुत्राववारयन् । भीष्मस्तु
संहतः सह्यैर्धार्तराष्ट्रैः ससैनिकैः ॥ २७ ॥ युधिष्ठिरं समासाद्य सर्वतः पर्यवार
यत् । आपतन्तं गजानीकं दृष्ट्वा पार्थो वृकोदरः ॥ २८ ॥ लेलिहन् सृक्किणी वीरो
मृगराडिव कानने । भीमस्तु रथिनांश्रेष्ठो गदां गृह्य महाहवे ॥ २९ ॥ अवप्लुत्य रथा
त्तूर्णं तव सैन्यान्यभीषयत् । तमुद्वीक्ष्य गदाहस्तं ततस्ते गजसादिनः ॥ ३० ॥ परि
वव्रुर्दे यत्ता भीमसेनं समन्ततः । गजमध्यमनुप्राप्तः पाण्डवः स व्यराजत ॥ ३१ ॥
मेघजालस्य महतो यथा मध्यगतो रविः । व्यधमत् स गजानीकं गदया पाण्डवर्षभः

किया, इसके पीछे दुर्योधन व रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य अश्वत्थामा शल्य काम्बोज सुदक्षिण विन्द अनुविन्द अवन्तिके राजा लोग बाल्हीक देशियों समेत राजा बाल्हीक इन सब वीरों ने रथों के समूहों से अर्जुन की दिशाको रोकदिया । २५ । उसीप्रकार भगदत्त व महाबली श्रुतायु इनदोनों ने हाथियों की सेनासमेत भीमसेन की दिशाओं को रोका और भूरिश्रवा शल्य शकुनी इन सबने बड़े तीव्र बाणों से माद्री के दोनों पुत्र नकुल सहदेव को घेरलिया और सेना वा धृतराष्ट्र के सब पुत्रों समेत भीष्मजी ने युधिष्ठिर को पाकर सब ओर से घेरलिया, फिर भीमसेन ने उन गिरती हुई हाथियों की सेनाको देखकर, वनके सिंहके समान होठोंको चाटते हुए अपनी बड़ी गदाको लेकर शीघ्रही रथसे कूदके आपकी सेनाओं को भयभीत किया इसके पीछे युद्धमें कुशल उन हाथियों के सवारों ने भीमसेन को गदा धारण किये देखकर ३० । चारोंओर से घेरलिया तब वह भीमसेन हाथियों के मध्यवर्त्ती होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बादलोंके बड़े

bravo Arjun made the hosts of Trigart charioteers powerless and they turned back out of despair. Then Duryodhan, Kripacharya the best of charioteers, Ashwathama, Shalya, Camboj, Sudakshin, Vind and Anuvind the two princes of Avanti and Vahlik with his countrymen *checked Arjun from all sides* 25. In the same manner, Bhagdatta and mighty Shrutayu with their armies of elephants checked Bhimsen from all directions; and Bhurishrava, Shalya and Shakuni checked with their arrows the advance of Nakul and Sahadev the two sons of Madri. Bhishm with all the sons of Dhritrashtra and the armies surrounded Yudhishthir. Seeing the armies of elephants falling on him, Bhimsen licked his lips like a lion and taking up his huge mace, jumped down from his chariot and terrified your armies. The *elephant riders saw Bhimsen mace in hand (30 and surrounded him* on all sides. Surrounded by those huge elephants Bhimsen looked

॥ ३२ ॥ महाभ्रजालमतुलं मातरिश्वेव सन्ततम् । ते वध्यमाना बलिना भीमसेनेन दन्तिनः ॥ ३३ ॥ आर्त्तनादं रणे चक्रुर्गर्जन्तो जलदा इव । बहुधा दारितश्चैव विषाणैस्तत्र दन्तिभिः ॥ ३४ ॥ फुल्लाशोकनिभः पार्थः शुशुभे रणमूर्धनि । विषाणे दन्तिनं गृह्य निर्विषाणमथाकरोत् । ३५ ॥ विषाणेन च तेनैव कुम्भेऽभ्याहत्य दन्तिनम् । पातयामास समरे दण्डहस्त इवान्तकः ॥ ३६ ॥ शोणिताक्तां गदां बिभ्रन् मेदोमज्जाकृतच्छविः । कृताङ्गदः शोणितेन रुद्रवत् प्रत्यदृश्यत । ३७ ॥ एवं ते वध्यमानाश्च हतशेषा महागजाः । प्राद्रवन् दिशो राजन् विमृद्नन्तः स्वकं बलम् ॥ ३८ ॥ द्रवद्भिस्तैर्महानागैः समन्ताद्भरतर्षभ । दुर्य्योधनबलं सर्वं पुनरासीत्पराङ्मुखम् ॥ ३९ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे
द्व्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०१ ॥

जालमें वर्त्तमान होकर सूर्य्य शोभित होताहै और वीर भीमसेनने अपनी गदासे हाथियोंकी सेना को ऐसे पृथक् २ करदिया जैसे कि वायु बड़े और असंख्य फैले हुए बादलों के जालों को पृथक् २ करता है उस महाबली भीमसेन से घायल बादलों के समान गर्जनेवाले हाथियों ने पीड़ायुक्त शब्द किये और हाथियो के दांतों से बहुत घायल हुआ भीमसेन रणभूमि में फूलेहुए अशोकके समान शोभित हुआ फिर हाथीको दांतपर से पकड़कर बिना दांत करदेता और उसी दांत से हाथी के मुखको घायल करके रणभूमि में गिराया उस समय मृत्यु समान दण्ड हाथ में लिये मस्तकों की चरबी से शोभित रुधिर भरे देह से रुधिर में डूबी हुई गदाका धारण करनेवाला भीमसेन रुद्र के समान दृष्ट पड़ा इस रीति से सब हाथी मारेगये और मरने से बचेबचाये बड़े हाथी अपनीही सेना को दबाते मर्दन करते इधर उधरको भागगये उन चारों ओर को भागते हुए उनबड़े २ हाथियों के कारण से दुर्य्योधनकी सबसेना मुख फेरगई ३९ ॥

---

glor.ous like the sun surrounded by clouds. With his mace he dispersed the army of elephants as the wind disperses the clouds. Wounded by mighty Bhimsen the elephants thundering like clouds uttered shrieks of distress; and exceedingly wounded by elephants, Bhimsen looked beautiful like the ashok tree. He pulled out the tusks of the elephants and felled them in the field of battle with the blows of the tusks. Holding the fatal staff in hand, stained with the [illegible] heads, with his body and mace reeking in blood, Bhimsen [illegible] like Rudra. Thus nearly all the elephants were slain, while the rest, huge ones, fled hither and thither crushing their own [illegible] and with those huge elephants all the army of Duryodhan turned back." 39.

सञ्जय उवाच । मध्यंदिने महाराज संग्रामः समपद्यत । लोकक्षयकरो रौद्रो भीष्मस्य सह सोमकैः ॥ १ ॥ गांगेयो रथिनां श्रेष्ठः पांडवानामनीकिनीम् । व्यधमन्निशितैर्बाणैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ २ ॥ संममर्द च तत्सैन्यं पितादेवव्रतस्तव । धान्यानामिव लूनानां प्रकरं गोगणा इव ॥ ३ ॥ धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च विराटो द्रुपदस्तथा । भीष्ममासाद्य समरे शरैर्जघ्नुर्महारथम् ॥ ४ ॥ धृष्टद्युम्नं ततो विध्वा विराटं च शरैस्त्रिभिः । द्रुपदस्य च नाराचं प्रेषयामास भारत ॥ ५ ॥ तेन विद्धा महेष्वासा भीष्मेणामित्रकर्षिणा । चुक्रुधुः समरे राजन् पादस्पृष्टा इवोरगाः ॥ ६ ॥ शिखण्डी तं च विव्याध भरतानां पितामहम् । स्त्रीमयं मनसा ध्यात्वा नास्मै प्राहरदच्युत ॥ ७ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु समरे क्रोधादग्निरिव ज्वलन् । पितामहं त्रिभिर्बाणैर्बाह्वोरुरसि चार्पयत् ॥ ८ ॥ द्रुपदः पञ्चविंश

अध्याय १०४ ॥

संजय बोले कि हे राजा मध्याह्न के समय सोमकोंसे भीष्मजी का युद्ध वर्तमान हुआ वह महाघोर युद्ध लोकों के नाशका करने वाला भयंकर रूप था, रथियों में श्रेष्ठ गंगापुत्र भीष्मजी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से पांडवों की हजारों सेनाओं को तितिरबितिर कर दिया और ऐसा मर्दन किया जैसे कि बैलों का समूह बहुत से कटेहुए नाज के ढेरको करदेता है, धृष्टद्युम्न शिखण्डी विराट् औ द्रुपद ने युद्ध में महारथी भीष्मको पाकर बाणों से घायल कर दिया इस के पीछे भीष्म ने धृष्टद्युम्न को घायल कर तीन बाणों से विराट् को व्यथित करते हुए द्रुपद के ऊपर नाराचको चलाया । ५ । तब तो उस भीष्म से घायल शत्रुहन्ता बड़े धनुषधारी चरण से छुये हुए सर्परूप क्रोधयुक्त शिखण्डी ने उस भरतवंशियों के पितामह भीष्मजी को घायल किया और उस अजेयने उसको स्त्री रूप ध्यान करके इसपर प्रहार नहीं किया फिर क्रोधरूप धृष्टद्युम्न ने अपने तीन बाणों से पितामहकी छाती और भुजाओं पर घायल किया द्रुपद ने पच्चीस बाणसे विराट ने दश बाणों से और शिखण्डी ने

CHAPTER CIV

"At midday," Said Sanjaya to Dhritrashtra, "Bhishm fought against the Somaks. That severe battle was destructive of the world and dreadful in the extreme. Ganga's son Bhishm the best of charioteers dispersed thousands of the Pandav charioteers with his sharp arrows and trampled them down as a herd of oxen does a heap of cut corn. Dhrishtadyumna, Shikhandi, Virat and Drupad met brave Bhishm in battle and wounded him with their arrows. Having wounded Drishtadyumn, Bhishm pierced Virat with three arrows and discharged an arrow at Drupad. 5. Wounded by Bhishm Shikhandi the great archer and destroyer of foes, enraged like a serpent trodden under foot, wounded Bhishm the grandfather of the Bharats; but the invincile one, knowing him to be a woman, did not discharge at him his weapons in return. Then Dhrishtadyumn,

श्या विराटोदशभि शरैः। शिखण्डीपञ्च विंशत्या,भीष्मं विव्याधसायकैः ।९॥ सोति
विद्धो महाराज शोणितौघपरिप्लुतः । वसन्ते पुष्पशवलो रक्ताशोक इवाबभौ ॥१०॥
तान् प्रत्यविध्यद् गाङ्गेयस्त्रिभिस्त्रिभिरजिह्मगैः । द्रुपदस्य च भल्लेन धनुश्चिच्छेदमा-
रिष ॥ ११ ॥ सोन्यत्कार्मुकमादाय भीष्मं विव्याध पञ्चभिः । सारथिञ्च त्रिभिर्बाणै
र्निशितैरपमूर्धनि ॥ १२ ॥ तथा भीमो महाराज द्रौपद्याः पञ्चचात्मजाः । केकया
भ्रातरः पञ्च सात्यकिश्चैव सात्वतः ॥ १३ ॥ अभ्यद्रवन्त गाङ्गेयं युधिष्ठिरपुरोगमाः ।
रिरक्षिषन्तः पाञ्चाल्यं धृष्टद्युम्नपुरोगमाः ॥ १४ ॥ तथैव तावकाः सर्वे भीष्मर
क्षार्थमुद्यताः । प्रत्युद्ययुः पाण्डुसेनां सहसैन्यानराधिप ॥ १५ ॥ तत्रासीत् सुमहद्युद्धं
तव तेषाञ्च संकुलम् । नराश्वरथनागानां यमराष्ट्रविवर्धनम् ॥ १६ ॥ रथी रथिनमा
साद्य प्राहिणोद्यमसादनम् । तथेतरान् समासाद्य नरनागाश्वसादिनः ॥ १७ ॥ अनयन्

पच्चीस शायकों से भीष्मजी को घायल किया, फिर अत्यन्त घायल रुधिर भरे शरीरसे वह पितामह ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि वसन्तऋतु में फूला हुआ लाल अशोक होता है । १० । इसके पीछे गंगापुत्र भीष्मजीने सीधे चलने वाले तीन २ बाणों से उन सबको घायल किया और भल्ल से द्रुपद के धनुष को काटा, फिर द्रुपद ने दूसरे धनुष को लेकर पांच बाणों से उनके शिरको घायल किया और अत्यन्त तीक्ष्ण तीन बाणों से सारथी को व्यथित किया, इसी प्रकार से भीमसेन व द्रौपदी के पांचों भाई केकय व यादव सात्यकी जिन में अग्रगामी युधिष्ठिर थे और पांचाल्य जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न था रक्षा पूर्वक यह सब लोग भीष्मजी के सम्मुख दौड़े । १५ । हे राजा इसी प्रकार से आप के शूरवीर भीष्मजीकी रक्षा के लिये उपाय करने वाली सेनाओं समेत पांडवी सेनाके सम्मुख गये वहां आपके और पांडवोंके मनुष्य घोड़े हाथी सवार और रथोंका बड़ा भारी युद्ध हुआ वहयुद्ध

much enraged, wounded Bhishm in the breast and arms with three arrows. Drupad wounded him with twentyfive arrows, Virat with ten and Shikhandi with twentyfive. Much wounded and reeking in blood, the grandfather looked glorious like the blooming ashok tree in Spring. 10. Then Bhishm the son of Ganga wounded them with three arrows each and cut down the bow of Drupad with one. Taking up another bow, Drupad wounded him in the head with five sharp arrows and with three more arrows of exceeding sharpness wounded his driver. In the same manner, Bhimsen, the five sons of Draupadi, the five Kaikaya brothers and Satyaki the Yadav, all led by Yudhishthir, and the Panchals headed by Dhrishtadyumn, well protected, rushed against Bhishm. 15. In the same manner, O king, your warriors with the armies, trying to protect Bhishm, encountered the Pandav armies. Your men and those of the Pandavas, mounted on horses, elephants and chariots, fought very bravely. That battle

परलोकाय शरैः सन्नतपर्वभिः । शरैश्च विविधैर्घोरैस्तत्र तत्र विशाम्पते ॥ १८ ॥
रथास्तु रथिभिर्हीना हतसारथयस्तथा । विप्रद्रुताश्च समरे दिशो जग्मुः समन्ततः१९॥
मृद्नंतस्तेनरान्राजन् हयांश्च सुबहून्रणे । वातायमानादृश्यन्ते गन्धर्वनगरोपमाः २०
रथिनश्च रथैर्हीना वर्मिणस्तेजसा युताः । कुण्डलोष्णीषिणः सर्वे निष्काङ्गदविभूषणाः
॥ २१ ॥ देवपुत्रसमाः सर्वे शौर्ये शक्रसमा युधि । ऋद्ध्या वैश्रवणञ्चाति नयेनच
बृहस्पतिम् ॥ २२ ॥ सर्व लोकेश्वराः शूरास्तत्र तत्र विशाम्पते । विप्रद्रुता व्यदृश्यन्त
प्राकृताइव मानवाः ॥ २३ ॥ दन्तिनश्च नरश्रेष्ठ हीनाः परमसादिभिः । मृद्नन्तः
स्वान्यनीकानि निपेतुः सर्वशब्दगाः ॥ २४ ॥ चर्मभिश्चामरैश्चित्रैः पताकाभिश्चमारिष ।
छत्रैः सितैर्हेमदण्डैश्चामरैश्च समन्तत ॥ २५ ॥ विशीर्णैर्विप्रधावन्तो दृश्यन्तेस्मदिशोदश ।

भी यमराजके पुरकी वृद्धिका करने वाला था जहां रथीने रथी को यमलोकमें भेजा और अन्य मनुष्योंने हाथी घोड़े और रथों को सम्मुख पाकर, गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से परलोक को पहुँचाया हे राजा जहां तहां नाना प्रकारके घोरबाणोंसे रथी रथोंसे हीन हुएऔर सारथी भी मारेगये तब चारों ओर को भागगये हे राजा युद्धमें गंधर्व नगरके समान बहुत से घोड़े मनुष्योंको खूंदते मर्दन करते भागते हुए दृष्टपड़े । २० । और रथी रथियोंसहीन कवचधारी और तेजयुक्त कुंडल मंडीलवाण और बाजूबन्द आदि भूषण धारी, सब देवकुमारों के समान और युद्धमें बलसे इन्द्र के समानधनसे कुबेर को और चित्तसे बृहस्पति को भी उल्लंघन करने वाले, सब संसारके शूरवीर राजा जहां तहां ऐसे भागे हुए दृष्टपड़े जैसे कि साधारण मनुष्य होते हैं, हे नरोत्तम हाथी अपने श्रेष्ठ सवारों से हीन अपनी सेनाओं को मर्दन करते हुए सब शब्दों के पीछे चलने वाले दौड़े, हे श्रेष्ठ ढाल चमर पताका सुन्दर सुनहरी दण्डवाले छत्रादिक । २५ । चारों ओर भागे हुओं के साथ दशों दिशाओं को दौड़तेहुए दृष्टपड़े

caused much increase in the population of the region of Yam. Chariot eers sent charioteers to the abode of Yam and others, encountering elephants, horses and chariots, sent them to the other world. With dreadful arrows of different sorts the charioteers were deprived of chariots and drivers and ran away in all directions. As in the city of gandharvas, many horses were to be seen running and trampling men.20. Charioteers, destitute of chariots, decked with armours, bright earrings, turbans, arrows, armlets and other ornaments, like the sons of gods, full of prowess like Indra, wealthier than Kuver and more magnanimous-minded than Vrihaspati, the warriors and princes of the world were seen running hither and thither like ordinary men. The elephants, O best of men, deprived of their riders ran away shrieking and trampling their own men. Shields, fly flappers, banners and shades with golden handles were seen as if running along with those who fled. Elephants huge as clouds, were seen as

मवर्मेघप्रतीकाशा जलदोपमनि स्वना ॥ २६ ॥ तथैवदन्तिभिर्हीना गजारोहा विशा म्पते । प्रधावन्तो व्यदृश्यन्त तव तेषाञ्च संकुले ॥ २७ ॥ नानादेशसमुत्थांश्च तुरगान्हेमभूषितान् । धावमानानपश्याम शतशोऽथसहस्रशः ॥ २८ ॥ अश्वारोहान् हतैरश्वैर्गृहीतासीन् समन्ततः । द्रवमाणानपश्याम द्राव्यमाणांश्च संयुगे ॥ २९ ॥ गजो गजं समासाद्य द्रवमाणं महाहवे । ययौप्रमृद्य तरसा पादातान् वाजिनस्तथा ॥ ३० ॥ तथैव च रथान् राजन् प्रममर्द्दरणे गजः । रथाश्चैव समासाद्य पतितांस्तुरगान् भुवि ॥ ३१ ॥ व्यमृद्नन् समरे राजंस्तुरङ्गाश्च नरान्रणे । एवं ते बहुधा राजन् प्रत्यमृद्नन् परस्परम् ॥ ३२ ॥ तस्मिन् रौद्रे तथा युद्धे वर्त्तमाने महाभये । प्रावर्त्तत नदी घोरा शोणितौघतरङ्गिणी ॥ ३३ ॥ अस्थिसंघातसम्बाधा केशशैवलशाद्वला । रथह्रदा शरावर्त्ता हयमीना दुरासदा ॥ ३४ ॥ शीर्षोपलसमाकीर्णा हस्तिग्राहसमाकुला । कवचोष्णीषफेनौघा

बादलके रूप हाथी घन कीसी गर्जना करने वाले विदितहुए, हेराजा इसी प्रकार उस तुमुल युद्धमें आपके और पांडवों के हाथियों के सवार हाथियों से रहित दौड़ते दृष्टिगोचर हुए, नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होने वाले सुवर्णमय भूषणों से अलंकृत हजारों घोड़ों को भी भागता हुआ देखा, घोड़ों के मरने से चारों ओर को हाथ में खड्ग लिये भागतेहुए घोड़ोंके सवारों को देखा, उसी बड़े युद्धमें भागतेहुए हाथी को पाकर हाथी बड़ी तीव्रता-युक्त पदातियों को और घोड़ों को मर्दन करता हुआ गया ।३० इसी प्रकार हाथीने रथियोंको और पृथ्वी पर पड़े हुए रथों और घोड़ोंको पाकर घोड़ों ने मनुष्यों को मर्द । किया और बहुतसोंने परस्पर में मर्दन किया इस प्रकार उस भयानक युद्धमें रुधिर की महा भयंकर नदीभी वर्त्तमान देखी खड्ग रूपों से गरेहुए केशरूप शैवाल रथरूपहृद बाणरूप चक्र घोड़े रूप मछलियां रखने वाली दुष्प्राप्य शिररूप पत्थरोंसे व्याप्त हाथी रूप ग्राहोंसे व्याकुल और कवच पंडील रूपके फेनोंसे भरी धनुष रूप वेग खड्ग रूपी कछुए रखने वाली,

if running along with those who fled Elephants, huge as clouds, were seen scampering with their thunder like shrieks In the same manner, O king the elephant riders belonging to both the armies, were seen running away without their elephants Decked with ornaments of different sorts thousands of horses of different countries were to be seen scampering in all directions. The horsemen with swords in their hands were to be seen running away without horses. Elephants were to be seen trampling down the horse and foot 30 In the same manner, the elephants trampled down the chariots, the chariots crushed the horses and the horses crushed those on foot. Others crushed one another producing a dreadful river of blood on the field That river, full of swords, having hair for its weeds, chariots for its pools arrows for eddies, horses for fish, rare heads for stones, elephants for crocodiles armours and turbans for foam, bows for torrent, swords

धनुर्वेगासि कच्छपा ॥ ३५ ॥ पताकाध्वजवृक्षाढ्या मर्त्यकूलापहारिणी । क्रव्यादहंस सङ्कीर्णा यमराष्ट्रविवर्धनी ॥ ३६ ॥ तां नदीं क्षत्रिया शूरा रथनागहयप्लवैः । प्रतेरुर्विहयो राजन् भयं त्यक्त्वा महारथाः ॥ ३७ ॥ अपोवाहरणे भीरून् कश्मलेनाभिसंवृतान् । यथा वैतरणीप्रेतान् प्रेतराजपुरं प्रति ॥ ३८ ॥ प्राक्रोशन् क्षत्रियास्तत्र दृष्ट्वा तद्वैशसं महत् । दुर्योधनापराधेन गच्छन्ति क्षत्रियाः क्षयम् ॥ ३९ ॥ गुणवत्सु कथं द्वेष धृतराष्ट्रो जनेश्वर । कृतवान् पाण्डुपुत्रेषु पापात्मा लोभमोहितः ॥ ४० ॥ एवंबहुविधावाचः श्रूयन्तेस्म परस्परम् । पाण्डवस्तवसंयुक्ताः पुत्राणां ते सुदारुणाः ॥ ४१ ॥ ता निशम्य ततो वाचः सर्वे योधैरुदाहृताः । आगस्कृत् सर्व लोकस्य पुत्रो दुर्योधनस्तव ॥ ४२ ॥ भीष्मद्रोणं कृपञ्चैव शल्यञ्चोवाच भारत । युध्यध्वमनहङ्काराः किं चिरं कुरुथेति च ॥ ४३ ॥ ततः प्रववृते युद्धं कुरूणांपाण्डवैः सह । अक्षयतस्तं

पताका ध्वजा रूप वृक्षों से संयुक्त मृत्युरूपी किनारे रखनेवाली नाशकारी मांस भक्षी राक्षस रूप हंसों से युक्त नदी यमराज के देशकी अत्यन्त बढ़ाने वालीथी।३८। हे राजा बड़े २ शूरवीर महारथी क्षत्रियों ने भय को त्यागकर रथहाथी घोड़े रूप नौकाओंके द्वारा उसनदी को तरा, युद्धमें भयभीत मूर्च्छावान् मनुष्यों को ऐसेदूर पहुँचाया जैसे कि वैतरणी नदी प्रेतराजके पुरमेंप्रेतोंको पहुँचाती है, वहां क्षत्रीलोग उसबड़ी प्रलयको देखकर पुकारे कि दुर्योधन के अपराधसे क्षत्री लोगोंका नाश होताहै, पापात्मा लोभी राजा धृतराष्ट्रने गुणवान पांडवों से कैसे शत्रुता करी।४०। इस प्रकार पांडवों की प्रशंसा से भरेहुए आपके पुत्रों समेत सेना के अनेक प्रकार के भयानक शब्द परस्पर में सुनेगये, इसके पीछे सबसंसारका अपराधी आपकापुत्र दुर्योधन उन शूरवीरों के कहेहुए वचनोंको सुनकर, भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य शल्य इत्यादि से बोलाकि आपलोग अहंकार को त्यागकर युद्ध करो विलम्बक्यों करतेहो, इसकेपीछे पांडवों और कौरवोंका महाघोर भयानक युद्धजारी हुआ, हे

for its boats, banners for trees, Death for its banks and destructive cannibal rakshas for its swans, augmented the population of Yam's abode 35 Mighty warriors casting aside fear, crossed that river through the boats of elephants and chariots, and cast away the terrified and the fainting for away as the Baitarni does the dead in the region of Yam. Seeing that great destruction, the warriors cried out, "Kshatryas are being destroyed for the fault of Duryodhan What enmity has the sinful and avaricious Dhritrashtra contracted with the Pandavas?" 40. Thus eulogising the Pandavas and blaming your sons, the cries of your warriors were heard on all sides. Then the culprit of the whole world, your son Duryodhan, hearing those words of his warriors, addressed Bhishm, Dronacharya, Kripacharya, Shalya and others, saying, "Fight without selfishness Why do you delay?" Then there was a severe fight between the Kauravas and

राजन् सुघोरं वैशसं तदा ॥ ४४ ॥ यत्पुरा न निगृह्णासि वार्य्यमाणो महात्मभिः । वैचित्रवीर्य्य तस्येदं फलं पश्यसुदारुणम् ॥ ४५ ॥ न हि पाण्डुसुता राजन् ससैन्याः सपदानुगाः । रक्षन्ति समरे प्राणान् कौरवा वापि संयुगे ॥ ४६ ॥ एतस्मात् कारणा द्घोरो वर्त्तते स्वजनक्षयः । दैवाद्वा पुरुषव्याघ्र तव चापनयान्नृप ॥ ४७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सङ्कुलयुद्धे चतुरधिकशतोऽध्यायः ॥ १०४ ॥

सञ्जय उवाच । अर्जुनस्तान् नरव्याघ्रः सुशर्मानुचरान्नृपान् । अनयत् प्रेतराजस्य सदनं सायकैः शितैः ॥ १ ॥ सुशर्मापि ततो बाणैः पार्थं विव्याध संयुगे । वासुदेवञ्च सप्तत्या पार्थञ्च नवभिः पुनः ॥ २ ॥ तन्निवार्य्य शरौघेण शक्रसूनुर्महारथः । सुशर्मणो रणे योधान् प्राहिणोद्यमसादनम् ॥ ३ ॥ ते वध्यमानाः पार्थेन कालेनेव युगक्षये ।

विचित्र वीर्य के पुत्रजोपूर्व समय में महात्माओं के कहने को तुमने नहीं माना उसी का यह महाभयकारी फल तुम देखो हे राजा पांडवलोग सेना और साथके चलने वालों समेत अपने प्राणों की रक्षा नहीं करतेहैं और कौरव लोगभी अपने प्राणों की रक्षा नहीं करतेहैं, हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र इसहेतु से सूचित होता है कि यातो दैव की इच्छा से अथवा आपके अन्याय से मनुष्यों का भयकारी और प्रलय रूपी नाश वर्त्तमानहै ४७ ॥

अध्याय १०५ ॥

संजय बोले कि पुरुषोत्तम अर्जुन ने सुशर्मा के पीछे चलनेवाले उन राजाओं को तीक्ष्ण बाणों से प्रेतराज के पुरको पहुंचाया, इस के पीछे सुशर्मा ने अर्जुन को बाणों से घायल करके वासुदेव जी को सत्तर बाणों से और अर्जुन को नौ बाणों से घायल किया तब इन्द्र के पुत्र महारथी अर्जुन ने अपने बाणों से उनको रोककर सुशर्मा के शूरवीरों को यमलोक में भेजा, हे राजा जैसे कि

---

the Pandavas Son of Vichitraviryal you paid no attention to the prophecy of great men and therefore you see this dreadful fruit. The Pandavas with their armies and followers, O king, donot care for their lives nor do the Kauravas care. Thus it is seen, O best of men, that this destruction like that of pralaya is raging on either side through the will of God or through your injustice." 47.

CHAPTER CV

Best of men," said Sanjaya to Dhritrashtra, "with his sharp arrows, Arjun sent the attendant warriors of Susharma to the region of Yam Susharma wounded Arjun with nine arrows and Shree Krishn with seventy. Then brave Arjun the son of Indra, having checked him with his arrows sent his followers to the region of Yam. Like those

व्यद्रवन्त रणे राजन् भये जाते महारथाः ॥ ४ ॥ उत्सृज्य तुरगान् केचित् रथान्
केचिच्च मारिष । गजानन्ये समुत्सृज्य प्राद्रवन्त दिशो दश ॥ ५ ॥ अपरे तु तदा
दाय वाजिनागरथान्रणे । त्वरया परया युक्ता प्राद्रवन्त विशाम्पते ॥६॥ पादाताश्चापि
शस्त्राणि समुत्सृज्य महारणे । निरपेक्षाव्यधावन्त तेन तेनस्म भारत ॥७॥ वार्य्यमाणाः
सुबहुशस्त्रैगर्त्तेन सुशर्मणा। तथान्यैः पार्थिवश्रेष्ठैर्न व्यतिष्ठन्त संयुगे ॥८॥ तद्बलं प्रद्रुतं
दृष्ट्वा पुत्रो दुर्य्योधनस्तव । पुरस्कृत्य रणे भीष्मं सर्वसैन्यपुरस्कृतः ॥ ९ ॥ सर्वोद्योगेन
महता धनञ्जयमुपाद्रवत् । त्रिगर्त्ताधिपतेरर्थे जीवितस्य विशाम्पते॥१०॥सएक समरे
तस्थौ किरन् बहुविधान् शरान् । भ्रातृभिः सहितः सर्वैः शेषाहि प्रद्रुता नराः ॥ ११ ॥
तथैव पाण्डवा राजन् सर्वोद्योगेन दंशिताः । प्रययुः फाल्गुनार्थाय यत्रभीष्मोव्यतिष्ठत
॥ १२ ॥ ज्ञायमाना रणे वीर्य्यं घोरं गाण्डीवधन्वनः । हाहाकारकृतोत्साहा भीष्मंजग्मुः

युगके अन्त में काल से प्रेरित लोग होते हैं इसी प्रकार अर्जुन से घायल हुए वह महारथी युद्ध में भयभीत होकर कोई तो घोड़ों को त्यागकर कोई रथ कोई हाथियों को त्यागकर दशों दिशाओं में भागे । ५ । और कोई शूर रथ घोड़े और हाथीकोही लेकरबड़ी शीघ्रतासेभागे, और पदातीलोग भी उस युद्ध में शस्त्रों को त्यागकर अनिच्छावान् होकर जहांतहांसे भागे, उससमय सुशर्मा मनसे हारकर त्रिगर्त्त के राजा और अन्य बहुत से उत्तम राजाओं के रोकने से नहीं रुकसका, तब आपका पुत्र दुर्य्योधन सेना समेत उन शूरवीरों को भागता हुआ देखकर युद्ध में भीष्मजी को आगे करके सब सेना के आगे बड़े उपायों समेत राजा त्रिगर्त्त के जीवन के लिये अर्जुन के सम्मुख गया।१०।हेराजा वह युद्धमें अनेक प्रकारकेबाणों की वर्षा करता हुआ सब भाइयों समेत युद्ध में वर्त्तमान रहा और शेष सब मनुष्य भागगये, हे राजा इसीप्रकारसे पाण्डव लोग भी सब उपायों समेत अर्जुन के लिये कवच शस्त्र धारण किये वहांगये जहांपर कि भीष्मजी नियतथे, यह सब वीर गांडिव

who are actuated by Death at the end of the yug, those warriors terrified in battle, ran hither and thither leaving their horses, chariots and elephants. 5. Some of the warriors ran away with their chariots, horses and elephants. The foot soldiers too, leaving their arms in the field of battle, lost their courage and ran away in all directions. Then Susharma lost heart and ran away in spite of the checking of Trigart and other warriors. Then your son Duryodhan, seeing the flight of those warriors hastened with a large army led by Bhishm to the rescue of the king of Trigart and encountered Arjun. 10. Showering their arrows of different sorts, Duryodhan and his brothers stood firmly in the field of battle. The Pandavas too, in the same manner, armed with weapons and armour, went there to help Arjun against Bhishm. All these warriors knew the prowess of Arjun the

नवभिः शरैः ॥ २१ ॥ ननाद बलवान्नादं सौभद्रः परवीरहा । हताश्वात्तु रथात्तूर्णं सा वप्लुत्य महारथः ॥२२॥ आरुरोह रथं तूर्णं दुर्मुखस्य विशाम्पते । द्रोणश्च द्रुपदं भित्त्वा शरैः संनतपर्वभिः ॥२३॥ सारथिञ्चास्य विव्याध त्वरमाणः पराक्रमी । पीड्यमानस्ततो राजा द्रुपदो वाहिनीमुखे ॥ २४ ॥ अपायाज्जवनैरश्वैः पूर्ववैरमनुस्मरन् । भीमसेनस्तु राजानं मुहूर्तादिव बाह्लिकम ॥ २५॥ व्यश्वसूतरथं चक्रे सर्वसैन्यस्य पश्यत । ससम्भ्रमो महाराज संशयं परमं गत ॥ २६ ॥ अवप्लुत्य ततो वाहाद्बाह्लीकः पुरुषोत्तमः । आरुरोह रथं तूर्णं लक्ष्मणस्य महारणे ॥२७ ॥ सात्यकिः कृतवर्माणं वारयित्वा महारणे । शरैर्बहुविधै राजन्नाससाद पितामहम । स विद्ध्वा भारतं षष्ट्या निशितैर्लोमवाहिभिः । नृत्यन्निव रथोपस्थे विधुन्वानो महद्धनुः २९तस्यायसामहाशक्तिं चिक्षेपाथ

के। मारकर बड़े वेग से गर्जा इस के पीछे यह महारथी चित्रसेन मृतक घोड़ों के रथ से शीघ्रही कूदकर दुर्मुख के रथ पर सवार हुआ फिर शीघ्रताकरने वाले पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने द्रुपद को गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से घायल करके उसके सारथी को भी घायल किया, फिर सेना मुखपर पीड़ामान् राजा द्रुपद पूर्व्व शत्रुता को स्मरण करके बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्ध से हट गया, फिर भीमसेन ने एक मुहूर्त्त में सब सेना के देखते हुए राजा बाह्लीक को घोड़े रथ और सारथी से रहित कर दिया ।२५। तदनन्तर पुरुषोत्तम बाह्लीक सवारी से उतरकर व्याकुल होके महा सन्देह युक्त हुआ, और शीघ्रही लक्ष्मण के रथ पर सवार होगया और सात्यकी ने कृतवर्मा को हटाकर बहुतसे बाणों के द्वारा पितामह को पाया और तीक्ष्ण साठ बाणों से उनको घायल कर बड़े धनुष को कंपाता हुआ रथ में बैठाहुआ नाचता सा दृष्ट पड़ा फिर पितामहने इनहर्गा बड़ी विचित्र वेगवान् नाग कन्या के समान शुभ लोहे की बड़ीभारी शक्ति को उस के ऊपर फेंका उस मृत्युके

roared a *tremendous roar.* Then *brave warrior* Chitrasen jumped down from the chariot of which the horses were dead and mounted that of Durmukh. Then Valliant Dronacharya of great swiftness, *having wounded* Drupad *with his arrows having* hidden knots, wounded the driver of his chariot. Being thus wounded, Prince Drupad the commander of the army, remembering his former enmity, betook himself from the *field of battle* by means of his swift horses. Then Bhimsen, within sight of all, deprived king Vahlik of horses, chariot and driver in a moment 25. Vahlik the best of men alighted from his carriage and *in a state of great anxiety* mounted *the chariot* of Lakshman. Satyaki pushed Kritvarma aside and showered his arrows at the grandfather. Having wounded him with sixty arrows, *he was seen shaking his bow* and *looked as if dancing on his seat in* the chariot Then the grandfather hurled at him a golden spear of wonderful sharpness like the daughter of a Naga, made of good

समन्वत ॥ १३ ॥ ततस्तालध्वजः शूरः पाण्डवानां वरूथिनीम् । छादयामास समरे शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ १४ ॥ एकीभूतास्ततः सर्वे कुरवः सह पाण्डवैः । अयुध्यन्त महाराज मध्यं प्राप्ते दिवाकरे ॥ १५ ॥ सात्यकिः कृतवर्माणं विध्वा पञ्चभिराशुगैः । अतिष्ठदाहवे शूरः किरन् बाणान् सहस्रशः ॥ १६ ॥ तथैव द्रुपदो राजा द्रोणं विध्वा शितैः शरैः । पुनर्विव्याध सप्तत्या सारथिञ्चास्य पञ्चभिः ॥१७॥ भीमसेनस्तु राजानं बाह्लीकं प्रपितामहम् । विव्यानदन्महानादं शार्दूल इव कानने ॥ १८ ॥ आर्जुनिश्चित्रसेनेन विद्धो बहुभिराशुगैः । अतिष्ठदाहवे शूरः किरन् बाणान् सहस्रशः ॥ १९ ॥ चित्रसेनं त्रिभिर्बाणैर्विव्याध समरे भृशम् । समागतौ तौ तु रणे महामात्रौ व्यरोचताम् ॥ २० ॥ यथा दिवि महाघोरौ राजन् बुधशनैश्चरौ । तस्याश्वांश्चतुरो हत्वा सूतञ्च

धनुषधारी के युद्ध में पराक्रम को जानते और हाहाकार से उत्पन्न डरादि को न रखनेवाले चारों ओर से भीष्मजी के सम्मुख गये फिर तालध्वज भीष्मजी ने गुप्तग्रन्थी के बाणों से पांडवों की सेना को ढक दिया, हे राजन् इसके पीछे आकाश के मध्यवर्ती सूर्य के होने पर सब कौरव और पांडवों में एकत्र होकर युद्ध प्रारम्भ हुआ । १५ । सात्यकी वीर कृतवर्मा को पांच बाणों से घायल करके हजारों बाण छोड़ता हुआ युद्ध में नियत हुआ इसी प्रकार राजा द्रुपद ने द्रोणाचार्य जी को तीक्ष्ण बाणों से घायल करके फिर सत्तर बाणों से घायल किया और पांच बाणों से उनके सारथी को व्यथित किया, फिर भीमसेन राजा बाह्लीक और पितामह को घायल करके ऐसी महागर्जना से गर्जा जैसे कि वन में सिंह गर्जता है, चित्रसेन के बहुत बाणों से घायल अभिमन्यु ने युद्ध में चित्रसेन को तीन बाणों से अत्यन्त घायल किया फिर युद्ध में भिड़े हुए वह दोनों बड़े शरीर वाले ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि आकाश में बड़े घोर बुध और शनैश्चर शोभित होते हैं । २० । शत्रुहन्ता अभिमन्यु नौ बाणों से सूत समेत उसके चारों घोड़ों

wielder of the Gandiv and with no artifical courage opposed Bhishm who with his banner of palm tree covered the Pandav armies under the shower of his arrows having hidden knots. When the sun had reached the middle of the sky O king the battle began between the Kauravas and the Pandavas 15 Valliant Satyaki having wounded Kritvarma with five arrows stood in the field of battle discharging thousands of arrows In the same manner Drupad wounded Dronacharya again and again with seventy arrows and his coachman with five. Having wounded king Vahlik and the grandfather, Bhim roared a loud roar as a lion does in a forest Wounded by many arrows of Chitrasen Abhimanyu exceedingly wounded him with three arrows Engaged in fighting the two warriors of huge bodies looked like mighty Budh and Satun in the sky 20 Having killed his four horses and the coachman with nine arrows, Abhimanyu

नवभिः शरैः ॥ २१ ॥ मनाद बलवान्नादं सौभद्रः परवीरहा । हताश्वात् रथात्तूर्णं सा
वप्लुत्य महारथ ॥२२॥ आरुरोह रथं तूर्णं दुर्मुखस्य विशाम्पते । द्रोणश्च द्रुपदं भित्वा
शरैः सन्नतपर्वभिः ॥२३॥ सारथिञ्चास्य विव्याध त्वरमाणः पराक्रमी । पीड्यमानस्
ततो राजा द्रुपदो वाहिनीमुखे ॥ २४ ॥ अपायाज्जवनैरश्वैः पूर्ववैरमनुस्मरन् । भीमसेन-
स्तु राजानं मुहूर्तादिव बाह्लिकम ॥ २५ ॥ व्यश्वसूतरथं चक्रे सर्वसैन्यस्य पश्यत । ।
ससम्भ्रमो महाराज संशयं परमं गत ॥ २६ ॥ अवप्लुत्य ततो वाहाद्बाह्लीकः पुरुषो-
त्तमः । आरुरोह रथं तूर्णं लक्ष्मणस्य महारणे ॥२७॥ सात्यकिः कृतवर्माणं वारयित्वा
महारणे । शरैर्बहुविधै राजन्नाससाद पितामहम । स विद्ध्वा भारतं षष्ट्या निशितैर्लो-
मवाहिभिः । नृत्यन्निव रथोपस्थे विधुन्वानो महद्धनुः२९तस्यायसीमहाशक्तिं चिक्षेपाथ

की। मारकर बड़े वेग से गर्जा इस के पीछे वह महारथी चित्रसेन मृतक घोड़ों के रथ से शीघ्रही कूदकर दुर्मुख के रथ पर सवार हुआ फिर शीघ्रताकरने वाले पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने द्रुपद को गुप्तग्रन्थी वाले वाणों से घायल करके उसके सारथी को भी घायल किया, फिर सेना मुखपर पीड़ामान राजा द्रुपद पूर्व्व शत्रुता को स्मरण करके बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्ध से हट गया, फिर भीमसेन ने एक मुहूर्त में सब सेना के देखते हुए राजा बाह्लीक को घोड़े रथ और सारथी से रहित कर दिया ।२५। तदनन्तर पुरुषोत्तम बाह्लीक सवारी से उतरकर व्याकुल होके महा सन्देह युक्त हुआ, और शीघ्रही लक्ष्मण के रथ पर सवार होगया और सात्यकी ने कृतवर्मा को हटाकर बहुतसे वाणों के द्वारा पितामह को पाया और तीक्ष्ण साठ वाणों से उनको घायल कर बड़े धनुष को कंपाता हुआ रथ में बैठाहुआ नाचता सा दृष्ट पड़ा फिर पितामहने सुनहरी बड़ी विचित्र वेगवान् नाग कन्या के समान शुभ लोहे की बड़ीभारी शक्ति को उस के ऊपरफेंका उस मृत्युके

roared a tremendous roar. Then brave warrior Chitrasen jumped down from the chariot of which the horses were dead and mounted that of Durmukh. Then Valliant Dronacharya of great swiftness, having wounded Drupad with his arrows having hidden knots, wounded the driver of his chariot. Being thus wounded, Prince Drupad the commander of the army, remembering his former enmity, betook himself from the field of battle by means of his swift horses. Then Bhimsen, within sight of all, deprived king Vahlik of horses, chariot and driver in a moment 25. Vahlik the best of men alighted from his carriage and in a state of great anxiety mounted the chariot of Lakshman. Satyaki pushed Kritvarma aside and showered his arrows at the grandfather. Having wounded him with sixty arrows, he was seen shaking his bow and looked as if dancing on his seat in the chariot Then the grandfather hurled at him a golden spear of wonderful sharpness like the daughter of, a Naga, made, of good

पितामह । हेमचित्रां महावेगां नागकन्योपमां शुभाम् ॥ ३० ॥ तामापतन्तीं सहसा मृत्युकल्पां सदुर्जयाम् । ध्वंसयामास वार्ष्णेयो लाघवेन महायशा ॥ ३१ ॥ अनासाद्य तु वार्ष्णेयं शक्तिः परमदारुणा । न्यपतद्धरणीपृष्ठे महोल्केव महाप्रभा ॥ ३२ ॥ वार्ष्णेयस्तु ततो राजन्स्वां शक्तिं कनकप्रभाम् । वेगवद्गृह्य चिक्षेप पितामहरथं प्रति ॥ ३३ ॥ वार्ष्णेयभुजवेगेन प्रणुन्नासा महाहवे । अभिदुद्राव वेगेन कालरात्रिर्यथा नरम् ॥ ३४ ॥ तामापतन्तीं सहसा द्विधा चिच्छेद भारत । क्षुरप्राभ्यां सुतीक्ष्णाभ्यां सा व्यशीर्यत मेदिनीम् ॥ ३५ ॥ छित्वा शक्तिन्तु गाङ्गेय सात्यकिं नवभिः शरैः । आजघानोरसि क्रुद्ध. प्रहसञ्छत्रुकर्शन ॥ ३६ ततः सरथनागाश्वाः पाण्डवा पाण्डुपूर्वजाः । परिवव्रुरणे भीष्मं माधवत्राणकारणात् ॥ ३७ ॥ ततः प्रववृते युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् । पाण्डवानां कुरूणाञ्च समरे विजयैषिणाम् ॥ ३८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मवार्ष्णेय युद्धे पञ्चाधिकशतोऽध्यायः ॥ १०५ ॥

समान अकस्मात् गिरती हुई शक्ति को अपने तेजसे सात्यकी ने निष्फल करदिया । ३० । फिर वह शक्ती सात्यकी को न पाकर पृथ्वी पर गिरपड़ी इस के पीछे सुवर्ण के समान अपनी बरछी को सात्यकी ने बड़ी तीव्रतासे पितामह के रथपर फेंका उस सात्यकीकी भुजाके वेग से वह शक्ती बड़ी तीव्रतासे उनके पास ऐसी गई जैसे कि मनुष्य के पास कालरात्रि आती है हे राजा उस अकस्मात् गिरतीहुई तीव्र शक्तीको भीष्म जी ने तीक्ष्णक्षुरप्रबाणों से दोखण्डकरके पृथ्वीपर गिरादिया फिर शत्रु सन्तापी गंगापुत्र भीष्मने उस शक्तीको तोड़ नौ बाणों से बहुत हँसतेहुए उसकी छाती पर घायल किया तदनन्तर रथ हाथी और घोड़ों समेत सात्यकी की रक्षा के लिये पाण्डवों ने भीष्मजी को घेर लिया फिर युद्धाभिलाषी पाण्डव लोगोंका और कौरवोंका रोमहर्षणकरनेवाला महाघोर युद्ध हुआ ३८ ॥

---

steel and very heavy; but Satyaki by his skill made useless the spear falling suddenly like Death. 30. The spear fell down on earth without touching Satyaki. Then Satyaki hurled with great force his golden spear at the grandfather. The spear leaving the powerful arm of Satyaki approached him like the night of Death; but Bhishm cut it down into two pieces with his sharp arrows Then Bhishm the son of Ganga, destroyer of foes, having cut it down, wounded Satyaki on the breast with nine arrows smiling all the while. Then for the protection of Satyaki the Pandavas surrounded Bhishm with their chariots, elephants and horses and the Pandavas desirous of battle fought a severe fight against the Kauravas " 37.

सञ्जय उवाच । दृष्ट्वा भीष्मं रणे क्रुद्धं पाण्डवैरभिसंवृतम् । यथा मेघैर्महाराज तपान्ते दिवि भास्करम् ॥ १ ॥ दुर्य्योधनो महाराज दुःशासनमभाषत । एष शूरो महेष्वासो भीष्मः शूरनिषूदनः ॥ २ ॥ छादितः पाण्डवैः शूरैः समन्ताद्भरतर्षभ । तस्य कार्य्यं त्वया वीर रक्षणं सुमहात्मनः ॥३॥ रक्ष्यमाणोहि समरे भीष्मोऽस्माकं पितामहः । निहन्यात् समरे यत्तान् पाञ्चालान् पाण्डवैः सह ॥ ४ ॥ तत्र कार्य्यतमं मन्ये भीष्मस्यैवाभिरक्षणम् । गोप्ता ह्येष महेष्वासो भीष्मोऽस्माकं महाव्रतः ॥ ५ ॥ स भवान् सर्वसैन्येन परिवार्य्य पितामहम् । समरे कर्म कुर्वाणं दुष्करं परिरक्षतु ॥ ६ ॥ स एवमुक्तः समरे पुत्रो दुःशासनस्तव । परिवार्य्य स्थितो भीष्मं सैन्येन महता वृतः ॥ ७ ॥ ततः शतसहस्राणां हयानां सुबलात्मजः । विमलप्रासहस्तानामृष्टितोमरधारिणाम् ॥ ८ ॥ दर्पितानां सुवेशानां बलस्थानां पताकिनाम् । शिक्षितैर्युद्धकुशलै रुपेतानां नरोत्तमैः

अध्याय १०६ ॥

संजय बोले कि हे महाराज जैसे कि वर्षा ऋतुके आकाश में बादलोंसे ढके हुए सूर्य्य को देखते हैं इसी प्रकार युद्धमें क्रुद्धरूप पांडवों से घिरे हुए भीष्मजी देखकर दुर्य्योधन उस दुश्शासन से बोला कि यह बड़ा धनुषधारी शूरों का मारने वाला भीष्म चारों ओरसे बड़े वीर पांडवों से घिराहुआ है इसकी रक्षा तुमलोगों को करनी अवश्य है, क्योंकि वह हमारा पितामह भीष्म युद्ध में पांडवों समेत पांचालों को मारेगा इस स्थानपर भीष्म जीकी रक्षा करना ही मैं बड़ा काम मानता हूं यह बड़ा धनुष धारी महाव्रत भीष्म हमारा बड़ा भारी रक्षक है। ५। सो अपनी सबसेना समेत उस कठिन युद्ध कर्मी भीष्मकी प्रीति से रक्षा करो इस प्रकारसे बड़े भाई की आज्ञा को सुन कर आपके पुत्र दुश्शासन ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी को चारों ओर से मध्य में करके रक्षित किया, फिर सुबलके पुत्र शकुनी ने बड़े स्वच्छ प्रास खड्ग तोमर धारी शुभ्रवस्त्रोंसे शोभित अहंकार में भरे बड़े बलवान ध्वजा धारी

CHAPTER CVI

Sanjaya said, "Seeing Bhishm surrounded by the enraged Pandavas like the sun hidden by clouds, Duryodhan said to Dushasan, This great archer Bhishm the destroyer of foes is surrounded by the brave Pandavas; it is incumbent on you to protect him. Our grandfather Bhishm will slay the Pandavas and the Panchals. The protection of Bhishm is to be my highest duty at this time, for this great archer Bhishm of mighty vows is our greatest protector. 5. So with all your army and love you must protect mighty Bhishm." On hearing the command of his older brothers, your son Dushasan surrounded Bhishm with a large army and protected him on all sides. Then Shakuni the sun Suval with a great many warriors bearing bright swords and tomars, clad in fine clothes, proud of prower, ban-

॥ ९ ॥ नकुलं सहदेवञ्च धर्मराजञ्च पाण्डवम् । न्यवारयन्नरश्रेष्ठान् परिवार्य्य समन्ततः ॥ १० ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा शूराणां हयसादिनाम् । अयुतं प्रेषयामास पांडवानां निवारणे ॥ ११ ॥ तैः प्रविष्टैर्महावेगैर्गरुत्मद्भिरिवाहवे । खुराहता धरा राजंश्चकम्पे च ननाद च ॥ १२ ॥ खुरशब्दश्च सुमहान् वाजिनां शुश्रुवे तदा । महावंशवनस्येव दह्यमानस्य पर्वते ॥ १३ ॥ उत्पतद्भिश्च तैस्तत्र समुद्भूतं महद्रजः । दिवाकरपथं प्राप्य च्छादयामास भास्करम् ॥ १४ ॥ वेगवद्भिर्हयैस्तैस्तु क्षोभिता पाण्डवी चमूः । निपतद्भिर्महावेगैर्हंसैरिव महत्सरः ॥ १५ ॥ ह्रेषतां चैव शब्देन न प्राज्ञायत किञ्चन । ततो युधिष्ठिरो राजा माद्रीपुत्रौ च पांडवौ ॥ १६ ॥ प्रत्यघ्नंस्तरसा वेगं समरे हयसादिनाम् । उद्वृत्तस्य महाराज प्रावृट्कालेतिपूर्य्यतः ॥ १७ ॥ पौर्णमास्यामम्बु वेगं यथा वेला महोदधेः । ततस्ते रथिनो राजन् शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ १८ ॥ न्यकृन्तन्नुत्तमाङ्गानि

शिक्षित युद्ध में कुशल अनेक नरोत्तम वीरों के और लाखों घोड़े रथ हाथियों के सवारों समेत मिलकर, नकुल सहदेव और धर्मराज नरोत्तम युधिष्ठिर को चारों ओर से घेरकर रोक लिया । १० । और राजा दुर्य्योधन ने दश सहस्र घोड़े के सवारोंका यूथ पांडवों के बड़े युद्ध में भेजा हे राजा वह युद्ध में गरुड़ के समान शीघ्रगामी उन पहुंचने वाले घुड़चढ़ों से घायल पृथ्वी के कंपाने वाले शब्दों को करते हुए वर्त्तमान हुए, उस समय घोड़ों के खुरों के ऐसे महा शब्द सुनेगये जैसे कि पर्व्वत में जलते हुए बांसों के बड़े वनमें शब्द होतेहैं, उस भूमि में घोड़ों के उछलने से ऐसी धूल उड़ी जिससे कि सूर्य्य का रथ ढक गया, फिर उन शीघ्रगामी घोड़ों की सेनासे पांडवों की सेना ऐसी व्याकुल हुई जैसे कि गिरते हुए बड़े शीघ्र गामी हंसो से तड़ाग व्यथित होता है । १५ । वहां घोड़ों के हींसनेकेशब्द से कुछ नहीं जाना गया इसके पीछे नकुल सहदेवने युद्धमें अपनेवेगसे सवारों के बड़े भारी वेगोंको ऐसेरोका जैसे कि वर्षाऋतुमें पूर्णमासीके दिन अत्यन्त उमगेहुए पूर्ण समुद्र के जल वेगको समुद्रका किनारा रोकता है इसके पीछे इन रथियों ने गुप्तग्रन्थिवाले

nored, trained and skilful in battle, and with millions of horsemen, elephant riders and charioteers checked Nakul, Sahadev and Dharamraj Yudhishthir the host of men. 10. Prince Duryodhan sent a body of a myriad horse against the Pandavas who encountered in battle the new coming horsemen, swift as Garur and shaking the earth with their cries. The sounds from the hoofs of horses were heard like the burning of a forest of bamboos on a mountain. With the bounding of horses there arose a storm of dust hiding the sun. The army of the Pandavas was so harrassed by the swift horsemen as a lake is agitated with the fall of a flight of swans. 15. No other sounds were audible above the neighing of horses. Then Nakul and Sahadev checked the great advance of the horsemen as the shore desists the rise of the mighty ocean on the day of the full moon. Then

शरेण हयसादिनाम् । ते निपेतुर्महाराज निहता ब्रह्मजिह्मगैः ॥ १९ ॥ नागैरिव महा-
नागा यथावद् गिरिगह्वरे । तेपि प्रासैः सुनिशितैः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ २० ॥ न्यकृ-
न्तन्नुत्तमाङ्गानि विचरन्तो दिशो दश । अभ्याहता हयारोहा ऋष्टिभिर्भरतर्षभ ॥२१॥
तत्यजुरुत्तमाङ्गानि फलानीव महाद्रुमाः । ससादिनो हया राजंस्तत्र तत्र निषूदिताः
॥ २२ ॥ पतिताः पात्यमानाश्च प्रत्यदृश्यन्त सर्वशः । वध्यमाना हयाश्चैव प्राद्रवन्त
भयार्दिताः ॥ २३ ॥ यथा सिंहं समासाद्य मृगाः प्राणपरायणाः । पाण्डवाश्च महाराज
जित्वा शत्रून्महाहवे ॥२४॥ दध्मुः शंखांश्च भेरीश्च ताडयामासुराहवे । ततो दुर्योधनो
दीनो दृष्ट्वा सैन्यं पराजितम् ॥ २५ ॥ अब्रवीद् भरतश्रेष्ठ मद्रराजमिदं वचः । एष
पाण्डुसुतो ज्येष्ठो यमाभ्यां सहितो रणे ॥ २६ ॥ पश्यतां वो महाबाहो सेनां द्रावयति
प्रभो । तं वारय महाबाहो वेलेव मकरालयम् ॥ २७ ॥ त्वं हि संश्रूय सेत्यर्थं मसहबल

बाणों से घोड़ों के सवारोंको काटा और इनके काटतेही वह सब मरमर कर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े। १९। जैसे कि पहाड़ी बन में हाथियों से हाथी गिरपड़ते हैं, फिर इन्होंने दशों दिशाओं में घूमते हुए अत्यन्त तीक्ष्ण प्रास और गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से सिरोंको काटा, और दुधारा खड्गों से मरेहुएघोड़ों के सवारों ने सिरोंको ऐसे त्यागकरदिया जैसे कि बड़ावृक्ष फलों को अलग कर देताहै उसयुद्धमें सवारोंसमेत घोड़ोंका नाशहोगया। फिर घायल घोड़े भयभीत और पीड़ित होकर ऐसे भागे, जैसे कि प्राणोंको प्रियमाननेवालेमृग सिंहकोदेखकर महाव्याकुलता से भागते हैं, हेराजा इसरीतिसे पांडव लोगोंने सब शत्रुओं को विजयकर के शंखोंको बजाया और भेरी दुन्दुभियोंको भी बजवाया इसके पीछे राजा दुर्योधन अपनीसेनाको पराजित देखकर । २५ । महादुःखीहो राजामद्रसे कहनेलगा कि हे महाबाहो यहनकुल सहदेव समेत पांडुका बड़ापुत्र राजायुधिष्ठिरयुद्धमें तुम्हारे देखतेहुए हमारी बड़ी सेनाको घायलकर के भगाताहै, उसको तुम ऐसेरोको जैसे कि समुद्रको किनारा रोकताहै, सदैव आप

the charioteers cut down the horsemen with their arrows having hidden knots and they fell dead on the ground (19) like elephants struck down by elephants in a hill forest. Then wandering in all directions, they cut down the heads with their sharp arrows having hidden knots. The horsemen dropped their heads, cut down by double edged swords as trees drop their flowers. There was a great destruction of horses and their riders in that great battle. The horses, wounded and terrified, scampered away as a herd of deer runs away for life at the sight of a lion. Thus, O king, the Pandavas having conquered the enemies sounded their conchs trumpets and horns. Prince Duryodhan, finding his army vanquished, (25) in great distress said to the king of Madra, "Prince Yudhishthir the eldest son of Pandu, together with Nakul and Sahadev is wounding and putting to flight our armies within your sight; be pleased to check him as the shore does

विक्रमः। पुत्रस्य तव तद्वाक्यं श्रुत्वा शल्य प्रतापवान् ॥ २८ ॥ स ययौ रथवंशेन यत्र राजा युधिष्ठिरः। तदापतद्धै सहसा शल्यस्य सुमहद्बलम् ॥ २९ ॥ महौघवेगं समरे धारयमास पाण्डवः। मद्रराजञ्च समरे धर्मराजो महारथः ॥३०॥ दशभिः सायकैस्तूर्णं माजघान स्तनान्तरे। नकुलः सहदेवश्च तं सप्तभिरजिह्मगैः॥ ३१ ॥ मद्रराजोऽपि तान् सर्वानाजघान त्रिभिस्त्रिभिः। युधिष्ठिरं पुनः षष्ट्या विव्याध निशितैः शरैः ॥ ३२ ॥ माद्रीपुत्रौ च सम्भ्रान्तो द्वाभ्यां द्वाभ्यामताडयत्। ततो भीमो महाबाहुर्दृष्ट्वा राजा धमाहवे ॥३३॥ मद्रराजरथं प्राप्तं मृत्योरास्यगतं यथा। अभ्यपद्यत संग्रामे युधिष्ठिरममित्रजित् ॥ ३४ ॥ ततो युद्धं महाघोरं प्रावर्त्तत सुदारुणम्। अपरां दिशमास्थाय पतमाने दिवाकरे ॥ ३५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि शल्यधर्मराज समागमे षडधिकशततोऽध्यायः । १०६ ॥

प्रसन्न और महाबली सुनेजातेहो इसप्रापके पुत्र के बचनको सुनकर वह प्रतापवान् शल्य बहुतसे रथोंसमेत वहां गया जहांकि राजायुधिष्ठिरथा वहां जाकर शल्यकी सेना अकस्मात् जाकर गिरी, तब महारथी पांडव धर्मराजने उसबड़ी सेनासमेत राजा मद्रके महावेगको रोककर वहीं शीघ्रतापूर्वक दशबाणों से घायल किया, इसी प्रकार से सातहीसात बाणों से नकुल सहदेवनेभी घायल किया। ३१। फिर शल्यने भी उन सबको तीन २ बाणोंसे घायल करके बड़े तीक्ष्ण साठबाणों से राजा युधिष्ठिरको घायलकिया, और भ्रान्तियुक्तहोकर उन दोनो नकुल सहदेवको भी दो २ बाणोंसे व्यथितकिया इसके अनन्तर शत्रुहन्ता महाबली भीमसेन राजाको युद्ध में देखकर और कालके मुखमें वर्तमान के समान राजमद्र के आगेहुए रथको देखकर बड़ेवेग से उस युद्धमें राजा युधिष्ठिर के पास जापहुँचा, उस के पीछे पश्चिम ओर में नियतहोकर सूर्य के चलने पर बड़ा घोर भयानक युद्ध जारी हुआ ॥ ३५ ॥

the sea. You are reported to be the most powerful and irresistible." Hearing these words of your son, Shalya of great prowess attacked Yudhishthir *with good many chariots* Shalya's army *fell on him all* of a sudden Then Dharmraj the mighty Pandav checked the king of Madra and his army and wounded him with ten arrows. Nakul and Sahadev wounded him with seven arrows. 31. Shalya then wounded them with three arrows each and Prince Yudhishthir with sixty. He again in confusion wounded Nakul and Sahadev with two arrows each. Then Bhimsen the destroyer of foes, seeing the king *engaged* in fighting and seeing the king of Madra in his chariot coming like one fallen in the jaws of death, went to help Yudhishthir. At this time when the sun was going towards the west, a dreadful fighting began." 35

सञ्जय उवाच । ततः पिता तव क्रुद्धो निशितैः सायकोत्तमैः । आजघान रणे पार्थान् सहसेनान् समन्ततः ॥१॥ भीमं द्वादशभिर्विद्ध्वा सात्यकिं नवभिः शरैः । नकुलं च त्रिभिर्विद्ध्वा सहदेवञ्च सप्तभिः ॥२॥ युधिष्ठिरं द्वादशभिर्बाह्वोरुरसि चार्पयत् । धृष्टद्युम्नस्ततो विद्ध्वा ननाद सुमहाबलः ॥ ३ ॥ तं द्वादशार्धैर्नकुलो माधवश्च त्रिभिः शरैः । धृष्टद्युम्नश्च सप्तत्या भीमसेनश्च सप्तभिः ॥ ४ ॥ युधिष्ठिरो द्वादशभिः प्रत्यविध्यत्पितामहम् । द्रोणस्तु सात्यकिं विद्ध्वा भीमसेनमविध्यत ॥ ५ ॥ एकैकं पञ्चभिर्बाणैर्यमदण्डोपमैः शितैः । तौ च तं प्रत्यविध्येतां त्रिभिस्त्रिभिरजिह्मगैः ॥ ६ ॥ तोत्त्रैरिव महानागं द्रोणं ब्राह्मणपुङ्गवम् । सौवीराः कितवाः प्राच्याः प्रतीच्योदीच्यमालवाः ॥ ७ ॥ अभीषाहाः शूरसेनाः शिबयोऽथ वसातयः । संग्रामे नाजहुर्भीष्मं वध्यमानाः शितैः शरैः ॥ ८ ॥ तथैवान्ये महीपाला नानादेशसमागताः । पाण्डवानभ्यवर्तन्त

अध्याय १०७ ॥

संजयबोले कि आपके पिता भीष्मजीने बड़े कोपमे तीक्ष्णधार के उत्तम बाणों से सेना समेत पांडवोंको ऐसे घायल किया कि भीमसेनको बारह बाणों से सात्यकी को नौबाणों से नकुलको तीनबाणों से और सहदेव को सातबाणों से युधिष्ठिरको बारहबाणों से भुजा और छातीपर घायलकर धृष्टद्युम्नको व्यथितकरके बड़ेवेगसे गर्जना की फिर नकुलने बारहबाणों से सात्यकीने तीनबाणोंसे धृष्टद्युम्नने सत्तरबाणोंसे भीमसेन ने सातबाणोंसे ।४। युधिष्ठिरने बारहबाणों से पितामहको घायल किया। फिर द्रोणने सात्यकी को और भीमसेनको घायलकरके प्रत्येकको पांच तीक्ष्ण बाणों से व्यथित किया और दोनोंने तीन २ बाणोंसे उन ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य्य को ऐसा घायल किया जैसे कि चाबकोंसे बड़े हाथीको घायल करतेहैं सौवीर कितव पूर्वी पश्चिमी और उत्तरी मालवी, अभीषाह शूरसेन शिबय और वशातयने युद्धमें भीष्मको घायलहोकर भी त्याग नहीं किया ।८। इसीप्रकार नानाप्रकारके शस्त्रों को हाथमें रखनेवाले अनेक

CHAPTER CVII

Sanjaya said:—"Your father Bhishm in the excess of anger with very sharp arrows wounded the Pandavas and their armies. He wounded Bhimsen with nine arrows, Satyaki with nine, Nakul with three and Sahadev with seven, and having wounded Yudhishthir with twelve arrows on the breast and arms he pierced Dhrishtadyumn and roared a loud roar. Then Nakul wounded him with twelve arrows (4) ,Satyaki with three, Dhrishtadyumn with seventy, Bhimsen with seven and Yudhishthir with twelve. Drona wounded Satyaki and Bhimsen with five arrows each, while the latter wounded that best of Brahmans with three arrows each, as a large elephant is wounded with goads. The Sauvirs, the Kitavas and the Eastern, Western and Northern Malavis did not desert Bhishma. 8. In the same manner, armed with different sorts of weapons, the princes of

विविधायुधपाणय ॥ ९ ॥ तथैव पाण्डवाराजन् परिवव्रु: पितामहम् । स समन्तात् परि वृतो रथौघैरपराजित: ॥ १० ॥ गहनेऽग्निरिवोत्सृष्ट: प्रजज्वाल दहन् परान् । रथाग्न्यगारश्चापार्चिरसिशक्तिगदेन्धन ॥ ११ ॥ शरस्फुलिङ्गो भीष्माग्निर्ददाह क्षत्रियर्षभान् । सुवर्णपुंखैरिषुभिर्गार्ध्रपक्षै सुतेजनै ॥ १२ ॥ कर्णिनालीकनाराचैश्छादयामास तद्बलम् । अपातयध्वजांश्चैव रथिनश्च शितै शरै ॥ १३ ॥ मुण्डतालवनानीव चकार स रथव्रजान् । निर्मनुष्यान् रथान् राजन् गजानश्वांश्च संयुगे ॥ १४ ॥ अकरोत् स महाबाहु सर्वशस्त्रभृतांवर । तस्य ज्यातलनिर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशने ॥ १५ ॥ निशम्य सर्वभूतानि समकम्पन्त भारत । अमोघाह्यपतन् बाणा पितुस्तेभरतर्षभ ॥ १६ ॥ नासज्जन्त तनुत्रेषु भीष्मचापच्युता शरा । हतवीरान् रथान्राजन् संयुक्तान् जवनैर्हयै ॥ १७ ॥ अपश्याम महाराज ह्रियमाणान् रणाजिरे । चेदिकाशि करूषाणा सहस्राणि चतुर्दश ॥ १८ ॥ महारथा समाख्याता कुलपुत्रास्तनुत्यज ।

देशोंसे आये हुए दूसरे राजालोग पाण्डवों के सम्मुख वर्त्तमानहुए, इस रीतिसे पाण्डवोंने चारोंओर से पितामहको घेरलिया फिर अनेकरथोंसे घिरेहुए उन अजेय शत्रुओंके वनोंको अग्निके समानजलानेवाले पितामहने बड़े २ शूरवीर क्षत्रियोंको भस्म कर दिया. और गृध्रपक्ष युक्त सुन्दर सुनहरी पुंखवाले अनेक प्रकारके नाराच नाम बाणोंसे उससेनाकोभी ढककर बड़े असिधारवाले बाणोंसे रथियोंके समूहों को गिराया ।१३। और रथोंके समूहों को भी मुण्ड तालवनों के समान करदिया फिर उस महाबाहु ने रथ हाथी घोड़ों को भी सवारों से रहित करदिया उसके धनुषकी प्रत्यञ्चाका शब्द इन्द्र वज्रके समान शब्दायमानथा उसके सुननेसे सब जीवमात्र कम्पायमानहोतेथे और हे राजा उन आपके पितामह के बाण निष्फल नहीं गिरते थे, हमने शीघ्रगामी घोड़ों को मृतक शूर वीरवाले रथों को और चंदेरी काशी और क्रोश देशियों के चौदहहजार महारथी शूरवीर कुलीन युद्ध में देहके त्यागनेवालों

various lands faced the Pandavas The Pandavas surrounded the grandfather from all sides Surrounded by innumerable chariots the invincible grandfather destroyer of foes burnt down the hosts of warriors as fire does forests Having covered the large army with his beautiful gold feathered arrows of vulture quills and long shafted ones he cut down the charioteers with his sharp edged arrows 13 He made the chariots like a forest of headless palms. Then that great warrior made the elephants, horses and chariots riderless The sound of his bowstring rang like that of vajra and shook all the hearers with terror The arrows of the grandfather did not fall in vain We saw the chariots drawn by swift horses destitute of riders. Fourteen thousands of the warriors of Chandri, Kashi and Krosh, of good families and ready to die, turned back, and thousands of warriors with

अपरावर्त्तिनः सर्वे सुवर्णविकृतध्वजाः ॥ १९ ॥ संग्रामे भीष्ममासाद्य व्यादितास्यमिवान्तकम् । निमग्नाः परलोकाय सवाजिरथकुञ्जराः ॥ २० ॥ भग्नाक्षोपस्करान् कांश्चिद्भग्नचक्रांश्च भारत । अपश्याम महाराज शतशोऽथ सहस्रशः ॥ २१ ॥ सवरूथैरथैर्भग्नैरथिभिश्च निपातितैः । शरैः सुकवचैश्छिन्नैः पट्टिशैश्च विशाम्पते ॥ २२ ॥ गदाभिर्भिन्दिपालैश्च निशितैश्च शिलीमुखैः । अनुकर्षैरुपासङ्गैश्चक्रैर्भग्नैश्च मारिष ॥ २३ ॥ बाहुभिः कार्मुकैः खड्गैः शिरोभिश्च सकुण्डलैः । तलत्रैरङ्गुलित्रैश्च ध्वजैश्च विनिपातितैः ॥ २४ ॥ चापैश्च बहुधाच्छिन्नैः समास्तीर्यत मेदिनी । हतारोहा गजा राजन् हयाश्च हयसादिनः ॥ २५ ॥ न्यपतन्त गतप्राणाः शतशोऽथ सहस्रशः । यतमानापि ते वीरा द्रवमाणान् महारथान् ॥ २६ ॥ नाशक्नुवन् वारयितुं भीष्मबाणप्रपीडितान् । महेन्द्रसमवीर्येण वध्यमाना महाचमूः ॥ २७ ॥ अभज्यत महाराज न च द्वौ सह धावतः । आविद्धरथनागाश्वं पतितध्वजसंकुलम् ॥ २८ ॥ अनीकं पाण्डुपुत्राणां हाहाभूतमचेतनम् । जघानात्र पिता पुत्रं पुत्रश्च पितरं तथा ॥ २९ ॥ प्रियं सखायञ्चाक्रन्दे सखा दैवबलात् कृतः । विमुच्य कवचानन्ये पाण्डुपुत्रस्य सैनिकाः ॥ ३० ॥ प्रकीर्य केशान् धावन्तः प्रत्यदृश्यन्त सर्वशः । तद्गोकुलमिवोद्भ्रान्तमुद्भ्रान्तरथकूबरम् ॥ ३१ ॥ ददृशे पाण्डुपुत्रस्य सैन्यमार्त्तस्वरं तदा । प्रभज्यमानं सैन्यन्तु दृष्ट्वा यादवनन्दनः ॥ ३२ ॥ उवाच पार्थं बीभत्सुं निगृह्य रथमुत्तमम् । अयं स कालः सम्प्राप्तः पार्थ यः काङ्क्षितस्तव ॥ ३३ ॥ प्रहरास्मिन्नरव्याघ्र नचेन्मोहाद्विमुह्यसे । यत् पुरा कथितं वीर त्वया

को मुखफेरनेवाला देखा और हजारों वीरोंको सुनहरी ध्वजायुक्त हाथीरथ घोड़ों समेत भीष्मजी के हाथसे मरे हुए परलोक के निमित्त देखा । २० । इनके सिवाय हजारों रथोंको ऐसा देखा कि जिनके पहिये आदि अनेक रथों के अंग टूटगयेथे, और कवचों समेत गिरायेहुए रथोंमयेत सवार जिन के कि वाण कवच टूटेहुये थे उनको भी देखा इस युद्ध में पिताने पुत्रको पुत्र ने पिता को भी मारडाला,, और प्रारब्धके बलसे प्रेरित मित्रने प्रिय मित्रको भी मारा फिरपांडवोंकी दूसरीसेनाके मनुष्य कवचको उतार शिरके बालोंको फैलातेहुए सबओरको दृष्टपड़े तब पांडवों की गौओं के समान पृथक् चलायमान सेना को रथकूबरके समान पीड़ामान देखकर श्रीकृष्णजी रथको रोककर अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन यह वह समय वर्त्तमान हुआहै जो तेरा अभीष्टहै । ३३ । हेनरोत्तम जो तू मोहसे अज्ञान नहीं है तो अब प्रहार

golden banners, mounted on elephants, chariots and horses, were slain by Bhishm.20. Besides these, thousands of chariots were to be seen destitute of chariots, arrows and armour. Fathers and sons slew each other in the fury of the battle. Friends actuated by Fate, slew their friends. Another army of the Pandavas, destitute of armour, were seen running in confusion with dishevelled hair. Seeing the army of the Pandavas dispersed like a herd of cows and distressed like yoke-encumbered beasts, Shree Krishn checking the reins of the chariot horses said to Arjun:– " This is the time which you longed for. 33.

तथा समागम ॥ ३४ ॥ विराटनगरे तातसञ्जयस्य समीपत । भीष्मद्रोणमुखान्
सर्वान् धार्त्तर ष्ट्रस्य सैनिकान् ॥ ३५ ॥ सानुबन्धान् हनिष्यामि ये मां योत्स्यन्ति
संगरे । इति तत् कुरु कौन्तेय सत्य वाक्यमरिन्दम ॥ ३६ ॥ क्षत्रधर्ममनुस्मृत्य युध्यस्व
विगतज्वर । इत्युक्ता वासुदेवेन तिर्य्यग्दृष्टिरधोमुख ॥ ३७ ॥ आकाम इव बीभत्सु
रिदं वचनमब्रवीत् । अवध्याना वधं कृत्वा राज्य वा नरकोत्तरम ॥ ३८ ॥ दु खानि
वनवासे वा किंनु मे सुकृत भवेत् । चोदयाश्वान् यतोभीष्म करिष्ये वचनतव ॥३९॥
पातयिष्यामि दुर्धर्षं भीष्म कुरुपितामहम । स चाश्वान् रजतप्रख्यांश्चोदयामास,
माधव ॥ ४० ॥ यतोभीष्मस्ततो राजन् दुष्प्रेक्ष्यो रश्मिमानिव । ततस्तत् पुनरावृत्त
युधिष्ठिर बल महत् ॥ ४१ ॥ दृष्ट्वा पार्थ महाबाहु भीष्मायोद्यतमाहवे । ततो भीष्म.

कहै हे वीर भाई अर्जुन पूर्व समय में विराट् नगरके मध्यमें उन राजाओं के मिलने में जो तुमने संजय के सम्मुख कहाथा कि मै दुर्योधन की सब सेनासमेत उन भीष्म द्रोणाचार्यको सब साथियों समेत मारूंगा जो मुझसे लड़ेंगे, हे शत्रुओंके विजय करनेवाले अर्जुन तू अपने उस वचनको सत्यकर, क्षत्रीधर्म को स्मरण करके दुःख को दूरकरके युद्धकर इसप्रकार वासुदेवजी के वचनों को सुनकर अर्जुन बहुत नम्र और अधोमुखहोकर निस्पृहके समान यह वचन बोला कि अवध्यवृद्ध गुरु लोगों को मारकर अन्त में नरकका देने वाला राज्यहो वा वनवास में दु खहो अथवा अन्य मेरा कोईसा प्रयोजन सिद्धहो आपघोड़ोंको तीव्रकरके जहां भीष्म हैं वहां रथको लेचलिये मैं आपके वचनको करूंगा, वहां कौरवों के दुर्जय पितामह भीष्म जी को गिराऊंगा यह सुनतेही माधवजीने चांदी के समान स्वेत घोड़ोंको अच्छे प्रकारसे चलायमान किया । ४० । और जिस ओर को सूर्य के समान दुःख से देखने के योग्य बड़े प्रतापवान् भीष्मजी थे वहां पहुँचे उसके पीछे युधिष्ठिरकी वह बड़ी सेना भी जो उस युद्ध में भीष्म के लिये तैयारथी अर्जुन को देखकर फिर

Use your weapon, best of men, if you are not out of your senses. Do you remember, brave Arjun, what you formerly said to Sanjaya at Virat in the midst of kings? You said that you would slay the armies of Duryodhan together with Bhishm, Dronacharya and others who should come against you in battle Fulfil your promise, Arjun the destroyer of foes! Recall the duties of Kshatryas and fight without hesitation." Hearing the words of Vasudev, Arjun with his head downcast for bashfulness, said, "Whether the slaughter of old and respectable men lead me to the kingdom of hell, or to pangs of exile, turn the horses of my chariot to the place where Bhishm is; I shall obey your orders and shall slay in battle the invincible grandfather of the Kauravas" At this Madhav drove swiftly the horses white as silver (40) till they reached the place where glorious Bhishm, difficult to be gazed at like the sun, was stationed. Then the great army of

कुरुश्रेष्ठ सिंहवद्विनदन्मुहु ॥ ४२ ॥ धनञ्जयरथं शीघ्रं शरवर्षैरवाकिरत् । क्षणेन स रथस्तस्य सहय सहसारथि ॥४३॥ शरवर्षेण महता न प्राज्ञायत भारत । वासुदेवस्त्व सम्भ्रान्तो धैर्य्यमास्थाय सत्वर ॥४४॥ चोदयामास तानश्वान् विनुन्नान् भीष्मसायकै । तत पार्थो धनुर्गृह्य दिव्य जलदनिस्वनम ॥ ४५ ॥ पातयमास भीष्मस्य धनुश्छित्वा शितै शरै । सञ्छिन्नधन्वा कौरव्य पुनरन्यन्महद्धनु । ४६ ॥ निमेषान्तरमात्रेण सज्य चक्रे पिता तव । चकर्षचततोदोर्भ्यां धनुर्जलदनिस्वनम् ॥ ४७ ॥ अथास्य तदपि क्रुद्धश्चिच्छेद धनुरर्जुन । तस्य तत् पूजयामास लाघव शान्तनो सुत ॥४८॥ गाङ्गेयस्त्व ब्रवीत्पार्थं धन्वि श्रेष्ठ मरिंदम । साधुसाधु महाबाहो साधु कुन्तीसुतेति च ॥ ४९ ॥ समाभाष्यैवमपर प्रगृह्य रुचिर धनु । मुमोच समरे भीष्म शरान् पार्थ रथ प्रति ॥ ५० ॥ अदर्शयद्वासुदेवो हययाने परं बलम् । मोघान् कुर्वन् शरांस्तस्य

लौटआई तदनन्तर सिंहके समान बारम्बार गर्जना करते कौरवों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने अपने बाणोंकी वर्षासेशीघ्रही अर्जुनके रथको ढकादिया तब क्षणभरमेंही उसका घोड़े और सारथी समेत रथ, भीष्मके बाणों की वर्षा से दिखाई नहीं दिया इसके अनन्तर भ्रान्तीमें भरेहुए शीघ्रता करनेवाले वासुदेवजीने धैर्यता में नियतहोकर उन घोड़ोंको जो कि भीष्मके बाणों से व्यथितथे अत्यन्त तीव्र किया और अर्जुन ने बादल के समानदिव्यधनुष को लेकर अपने तीक्ष्णबाणों से भीष्मजी के धनुष को काटकर पृथ्वीपर गिराया फिर धनुष टूटेहुए आपके पिता ने निमिषमात्र मेंही दूसरे धनुषको तैयार किया और उस बादल के समान शब्दायमान धनुषको अपनी दोनों भुजाओं से खैंचा,, फिर अर्जुन ने उन के उस धनुषको भी काटा शन्तनु के पुत्र भीष्म ने उसकी उस हस्तलाघवता की बड़ी प्रशंसा करी कि हे महाबाहु कुन्ती के पुत्र बहुत अच्छा बहुत अच्छा इस प्रकार की वार्त्ता करके दूसरे उत्तम धनुष को लेकर बाणों को अर्जुन के रथपर फेंका वहां वासुदेव जीने घोड़ों के चलाने में अपने बड़े बलको दिखाया । ५० । फिर भीष्म के बाणों से घायल

of Yudhishthir, ready for the encounter of Bhishm, came back at the sight of Arjun Then roaring like a lion, Bhishm the best of the Kauravas, hid Arjun's chariot with the shower of his arrows. The chariot together with the horses and driver was quite out of sight by the shower of Bhishma's arrows. Vasudev who was confused for a short time with the fury of the onslaught, recollected himself and drove swiftly the horses which were wounded by Bhishma's arrows Arjun took up his divine bow like a cloud and with his sharp arrows cut down the bow of Bhishm The latter soon prepared another bow and drew it with both arms with a sound like thunder Arjun cut down this second bow also. Bhishm praised the dexterity of Arjun's hand, saying "Good, brave son of Kunti, good!" Thus saying he prepared another bow and discharged arrows at the chariot of Arjun

मण्डलानि निदर्शयन् ॥ ५१ ॥ शुशुभाते नरव्याघ्रौ तौ भीष्मशरविक्षतौ । गोवृषाविव संरब्धौ विषाणोल्लिखिताङ्कितौ ॥ ५२ ॥ वासुदेवस्तु सम्प्रेक्ष्य पार्थस्य मृदुयुद्धताम् । भीष्मं च शरवर्षाणि सृजन्तमनिशं युधि ॥ ५३ ॥ प्रतपन्तमिवादित्यं मध्यमासाद्य सेनयोः । वरान् वरान् विनिघ्नन्तं पाण्डुपुत्रस्य सैनिकान् ॥ ५४ ॥ युगान्तमिव कुर्वाणं भीष्मं यौधिष्ठिरे बले । नामृष्यत महाबाहुर्माधवः परवीरहा ॥ ५५ ॥ उत्सृज्य रजत प्रख्यान् हयान् पार्थस्य मारिष । वासुदेवस्ततोयोगी प्रचस्कन्द महारथात् ॥ ५६ ॥ अभिदुद्राव भीष्मं स भुजप्रहरणो बली । प्रतोदपाणिस्तेजस्वी सिंहवद्विनदन्मुहुः ॥ ५७॥ दारयन्निव पद्भ्यां स जगतीं जगदीश्वर । क्रोधताम्रेक्षणः कृष्णो जिघांसुरमितद्युतिः ॥ ५८ ॥ ग्रसन्त इव चेतांसि तावकानां महाहवे । दृष्ट्वा माधवमाक्रन्दे भीष्मायोद्यत

वह दोनों नरोत्तम उनके बाणों को निष्फल करते मंडलोंको दिखाते हुए ऐसे शोभायमान हुए, जैसे कि सींगों के प्रहारोंसे छिन्नभिन्न चिह्नित कियेहुए वृषभ होते हैं, फिर वासुदेव जीने अर्जुन के मृदु युद्धको और पांडवों की सेनापर बड़ी तीव्रता से बाणों की वर्षा करते और दोनों सेनाओं के मध्यवर्ती सूर्य के समान तपाते और पांडवों के बड़े २ शूरवीरों को मारतेहुए युधिष्ठिर की सेना में प्रलय मचाते भीष्मको देखकर, क्षमा न करने वाले शत्रुहन्ता माधव वासुदेव जी अर्जुन के श्वेत घोड़ों को छोड़कर बड़े रथसे उतर हाथ में चाबुक लिये सिंह के समान वारंवार गर्जते चरणों से पृथ्वी को विदीर्ण करते क्रोध से रक्तनेत्र किये मारने के उत्सुक आपके शूरवीरों को भयभीत करते बड़े तेजस्वी जगत्कर्त्ता बड़े वेगसे भीष्मके सम्मुख गये । ५७ । हेराजा भीष्मजी के सम्मुख वर्त्तमान माधवजी को देखकर उस युद्ध में जहां तहां भयभीत लोग ऐसी २ वार्ता करने लगे कि भीष्म मारागया मारागया पीताम्बरधारी नीलमणि के समान रंगवाले

Then Vasudev showed his skill in driving the horses.50. Wounded by the arrows of Bhishm, the two best of men made his arrows futile, and performing circular movements they looked beautiful like strong oxen wounded by horns. Vasudev noticed the mild fighting of Arjun as well as the fast shower of arrows over the Pandav armies sent forth by Bhishm who standing in the midst of the two armies diffused heat like the sun, slaying the great warrior of the Pandavas and spreading destruction through the armies of Yudhishthir. At this the unforgiving destroyer of enemies, Madhav gave up the reins of Arjun's white horses and alighting from the huge chariot whip in hand rushed towards Bhishm. Roaring like a lion, breaking the earth under his feet, with eyes red in anger wishing to slay and terrifying your warriors, glorious creator of the world faced Bhishm. 57. Seeing Madhav face to face with Bhishm, the terrified people in the field of battle cried out, "Bhishm is slain, Beishm is slain." Running

मर्तिके ॥ ५९ ॥ हतो भीष्मो हतो भीष्मस्तत्र तत्र वचो महत् । अश्रूयत महाराज वासुदेवभयात्तदा ॥ ६० ॥ पीतकौशेयसंवीतोमणिश्यामो जनार्दनः । शुशुभे विद्रवन् भीष्मं विद्युन्मालीवयाम्बुदः ॥ ६१ ॥ स सिंह इव मातङ्गं यूथर्षभमिवर्षभः । अभिदुद्राव वेगेन विनदन् यादवर्षभः ॥ ६२ ॥ तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य पुण्डरीकाक्षमाहवे । असम्भ्रमं रणे भीष्मो विचकर्ष महद्धनुः ॥ ६३ ॥ उवाच चैव गोविन्दमसम्भ्रान्तेन चेतसा । एह्येहि पुण्डरीकाक्ष देवदेव नमोऽस्तुते ॥ ६४ ॥ मामद्य सात्वतश्रेष्ठ पातयस्व महाहवे । त्वया हि देव संग्रामे हतस्यापि ममानघ ॥ ६५ ॥ श्रेय एव परं कृष्णलोके भवति सर्वतः । सम्भावितोस्मि गोविन्द त्रैलोक्येनाद्यसंयुगे ॥ ६६ ॥ प्रहरस्व यथेष्टं वै दासोस्मि तव चानघ । अन्वगेव ततः पार्थः समभिद्रुत्य केशवम् ॥ ६७ ॥ निजग्राह महाबाहुर्बाहुभ्यां परिगृह्य वै । निगृह्यमाणः पार्थेन कृष्णो राजीवलोचनः ॥ ६८ ॥ ज

जनार्दनजी भीष्मकी ओर दौड़ते हुए ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि विद्युतरूपमाला धारी बादल होता है और जैसे कि समूहका स्वामी सिंह उत्तमहाथी की ओर दौड़ता है उसीप्रकार यादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी गर्जना करते तीव्रता से भीष्मके सम्मुख गये, युद्धमें आतेहुए उन कमलदललोचन को देखकर भीष्म ने सावधान चित्त होकर बड़े धनुषको खेंचकर । ६३ । बड़ी स्थिरचित्तता से उनको हाथ जोड़कर कहा हे पुंडरीकाक्षजी आप आइये हे देवदेव आपको नमस्कार है हे यादवेन्द्र अब मुझको आप इस महायुद्ध में गिराओ, हे निष्पाप श्रीकृष्णजी युद्धमें आपके हाथसे मुझ मारेहुए का भी सब ओरसे बड़ा कल्याण होता है, हे गोविन्दजी अद्य इस युद्ध में तीनों लोक से प्रतिष्ठा पाया गया हूं । ६६ । हे निष्पाप मैं आपका निस्सन्देह दास हूं आप इच्छाके समान प्रहार करो, इसके अनन्तर पीछे २ जाने वाले अर्जुन ने केशवजी के पास जाकर अपनी दोनों भुजाओं से उन महाबाहुको दाबकर पकड़ लिया, अर्जुन से पकड़े हुए कमललोचन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी इसको लेकर बड़ी शीघ्रता से

towards Bhishm, Janardan in his yellow clothes looked glorious like a cloud garlanded with lightning Shree Krishn the best of the Yadavas rushed upon Bhishm with loud roars as the king of beasts, lion rushes upon a huge elephant Seeing the lotus eyed one coming towards him, Bhishm carefully drew up his bow (62) and with a composed mind thus addressed him with joined palms, "Welcome Pundarikash! I bow to you god of gods! Kill me in the field of battle best of Yadavas! killed by you, sinless Shree Krishn, I shall attain great glory. I am respected by the three worlds, Govind! 65. I am surely your slave, sinless one Discharge your weapon as you like" Arjun who followed the footsteps of Krishn, approached in the meanwhile and caught him in both his arms Held fast by Arjun, the lotus eyed Krishn, best of male beings rushed along with

गामे वैनमादाय वेगेन पुरुषोत्तमः । पार्थस्तु विष्टभ्य बलाचरणौ परवीरहा ॥ ६९ ॥
निजग्राह हृषीकेशं कथं चिद्दशमे पदे । ततएवमुवाचार्त्तः क्रोधपर्य्याकुलेक्षणम ७०
निःश्वसन्तं यथा नागमर्जुनः प्रणयात्सखा । निवर्त्तस्व महाबाहो नानृतं कर्त्तुमर्हसि ७१॥
यत्वया कथितं पूर्वं न योत्स्यामीति केशव । मिथ्यावादीति लोकास्त्वां कथ यिष्यन्ति
माधव ॥ ७२ ॥ ममैष भारः सर्वो हि हनिष्यामि पितामहम । शपे केशव शस्त्रेण सत्येन
सुकृतेन च ॥ ७३ ॥ अन्तं यथा गमिष्यामि शत्रूणां शत्रुसूदन । अद्यैव पश्य दुर्धर्षं
पात्यमानं महारथम ॥ ७४ ॥ तारापतिमिवापूर्णमन्तकाले यदृच्छया । माधवस्तु वचः
श्रुत्वा फाल्गुनस्य महात्मनः ॥ ७५ अकिञ्चिदुक्त्वा सक्रोध आरुरोह रथं पुनः । तौ
रथस्थौ नरव्याघ्रौ भीष्मः शान्तनवः पुनः ॥ ७६ ॥ ववर्ष शरवर्षेण मेघो वृष्ट्या यथा-
चलौ । प्राणानादत्त योधानां पिता देवव्रतस्तथ ॥ ७७ ॥ गभस्तिभिरिवादित्यस्तेजां

चले, फिर शत्रुओं के वीरों के मारने वाले अर्जुन ने बड़े बलसे किसी प्रकार करके दशवेंही चरण पर दोनों चरणों को पकड़ लिया, तदनन्तर पीड़ामान सखा अर्जुन उन क्रोधसे व्याकुल सर्पके समान श्वास लेने वाले श्रीकृष्ण जीसे यह वचन बोला ॥ ७० ॥ हे महाबाहु श्रीकृष्णजी आपलौटिये और अपने उस वचनको और सत्यको न छोड़िये जो आपने कहाथा कि हमनहींलड़ेंगे क्योंकि हे माधव जो तुम ऐसा करोगे तो संसार आपको मिथ्यावादी कहैगा यह सब काम मेरा है मैं पितामह को मारूंगा, हे केशव मैं शस्त्र सत्यता और अपने उत्तम कर्मकी शपथ खाताहूं कि मैं शत्रुओं को मारकर जीतूंगा आप इसी समय इस महादुर्जय भीष्मको गिराहुआ ऐसे देखोगे जैसे कि युग के अन्त प्रलय में दैवइच्छा से चन्द्रमा गिरताहै यह सुनकर क्रोधभरे माधवभी अर्जुनसे कुछ न बोलकर रथपर सवारहुए ॥७५॥ फिर शान्तनुके पुत्र भीष्मने उनदोनों रथपर सवार नरोत्तमों पर ऐसे बाणों की वर्षाकरी जैसे कि पर्वत पर बादल जलको बरसाते हैं, उन आपके पिता

him in great haste. Then Arjun the destroyer of the warriors of the enemies somehow caught with great force both his feet at the tenth pace. Arjun in great distress thus addressed his enraged friend Shree Krishn who much agitated with anger breathed hard like a serpent 70. "Turn back, mighty Shree Krishn," said Arjun, "donot break your promise of remaining neutral. The world will call you a liar, if you will fight. It is my duty to slay the grandfather. I swear, O Keshav, by my arms, truth and duty that I shall slay and win the enemies. You will see the invincible Bhishm fallen like the moon at the end of the yug." Having heard this, enraged Madhav returned no reply to Arjun and mounted on the chariot. 75. Then Bhishm the son of Shantanu sent forth on the two best of men his shower of arrows as a cloud sends forth rain on a

सि शिशिरात्यये । यथा कुरूणां सैन्यानि बभञ्जु युधि पाण्डवा ॥ ७८ ॥ तथा पाण्डवसैन्यानि बभञ्ज युधि ते पिता । हत विद्रुतसैन्यास्तु निरुत्साहा विचेतस ॥ ७९ ॥ मध्यं गतमिवादित्यं प्रतपन्त स्वतेजसा । न शक्नुवन्ति भीष्मेण शतशोथ सहस्रशः ॥ ८० ॥ निरीक्षितुं न शेकुस्ते भीष्ममप्रतिमं रणे । कुर्वाणं समरे कर्माण्यतिमानुषविक्रमम् ॥ ८१ ॥ वीक्षाञ्चक्रु महाराज पाण्डवा भयपीडिता । तथा पाण्डवसैन्यानि द्राव्यमाणानि भारत । ८२॥ त्रातारं नाध्यगच्छन्त गाव पङ्कगता इव । पिपीलिका इव क्षुण्णा दुर्बला बलिना रणे ॥ ८३ ॥ महारथं भारत दुष्प्रकम्प शरौघिण प्रतपन्तं नरेन्द्रान् । भीष्मं न शेकु प्रतिवीक्षितुं ते शरार्चिषं सूर्यमिवातपन्तम् ॥८४॥ विमृद्नतस्तस्य तु पाण्डुसेनामस्तं जगामाथ सहस्ररश्मि । ततो बलानां श्रमकर्शितानां मनोऽवहारं प्रतिसमबभूव ॥ ८५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि नवमदिवसयुद्धसमाप्तौ सप्ताधिकशततोऽध्यायः ॥ १०७ ॥

देवव्रत ने शूरवीर लोगों के प्राणों को ऐसे लिया जैसे कि शिशिर ऋतु में सूर्य तेजों को आकर्षण करता है, और जैसे कि पाण्डवों ने कौरवों की सेना को छिन्नभिन्न किया उसी प्रकार आप के पिता ने भी पांडवों की सेना को अस्तव्यस्तकरदिया, मृतक और भागेहुए असाहसी व अचेत पांडवों की सेना युद्धमें अद्वितीय भीष्मके देखने को भी ऐसे समर्थ नहीं हुई जैसे कि मध्याह्नवर्ती अपने तेजसे तपाने वाले सूर्यको नहीं देखसक्ते । ८० । हेमहाराज भयसे दुःखीहुए पांडवोंने दृष्टिकी वीक्षाकरी हे भरतवंशी इस प्रकार से भागीहुई पांडवों की सेना ने ऐसे अपनारक्षक कोई नहीं पाया जैसे कि कीचमें फंसीहुई गौका कोई रक्षक नहीं होताहै और युद्धमें वह निर्बल सेना बड़े बलीके हाथसे चेंटियों के समान घायल हुई । ८३ । उस महारथी दुर्जय बाणरूपी किरणरखनेवाले राजाओं के तपानेवाले सूर्य की समान भीष्म के देखने को कोई समर्थ नहीं हुआ फिर सूर्य अस्ताचल को प्राप्तहुए तदनन्तर परिश्रम से थकीहुई सेनाओं के मनका विश्राम हुआ अर्थात् युद्ध समाप्त हुआ ॥ ८५ ॥

mountain Your father Devabrat took away the lives of men as the sun in Winter draws away light. Your father destroyed the armies of the Pandavas as the latter had done with the Kauravas. Dead and flying, terrified and insensible, the Pandav army was unable to gaze at Bhishm the matchless warrior like the sun at midday. 80 The terrified Pandavas looked on at the great destruction. The dispersed army of the Pandavas found no protector like a cow stuck in mud. That great and invincible charioteer, having arrows for his rays was not looked at like the sun by any warrior Then the sun set down and the armies retired for the night " 84

सञ्जय उवाच । युध्यतामेव तेषान्तु भास्करेऽस्तमुपागते । सन्ध्या समभवद्घोरा न पश्याम ततो रणम् ॥ १ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा सन्ध्यां स दृश्य भारत । वध्यमानञ्च भीष्मेण त्यक्तास्त्रं भयविह्वलम् ॥ २ ॥ स्वसैन्यञ्च पराक्रृत्त पलायनपरायणम् । भीष्मञ्च युधि संरब्धं पीडयन्तं महारथम् ॥ ३ ॥ सोमकांश्च जितान् दृष्ट्वा निरुत्साहान् महारथान् । चिन्तयित्वा ततो राजाऽवहारमरोचयत् ॥ ४ ॥ ततोऽवहारं सैन्यानां चक्रे राजा युधिष्ठिरः । तथैव तव सैन्यानामवहारो ह्यभूत्तदा ॥ ५ ॥ ततोऽवहारं सैन्यानां कृत्वा तत्र महारथाः । न्यविशन्त कुरुश्रेष्ठ संग्रामे क्षतविक्षताः ॥ ६ ॥ भीष्मस्य समरे कर्म चिन्तयानास्तु पाण्डवाः । नालभन्त तदा शान्तिं भीष्मबाणप्रपीडिताः ॥ ७ ॥ भीष्मोऽपि समरे जित्वा पाण्डवान् सहसृञ्जयान् । पूज्यमानस्तव सुतैर्वन्द्यमानश्च भारत ॥ ८ ॥ न्यविशत् कुरुभि-

अध्याय ॥ १०८ ॥

दशवेंदिनके युद्धका प्रारम्भ ।

सञ्जयबोले कि युद्ध करते हुए सूर्य के अस्त होने के समय भयकारी सन्ध्या वर्तमान हुई और युद्ध करना सब ओरसे बन्द हुआ, इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने सन्ध्याको देखकर और भीष्म के हाथ से घायल शस्त्रत्यागने वाली भयसे महाव्याकुल व शत्रुओं से घिरी भागने की इच्छा करने वाली अपनी सेना को जाने और युद्ध में क्रोधित पीडादेनेवाले महारथी भीष्म को देख सोमकों को सहित पराजय रूप जानकर बडीचिन्तापूर्वक विश्रामको चाहा इस प्रकार आपकी सेनाका विश्राम हुआ हे कौरवोत्तम धृतराष्ट्र फिरयुद्ध में घायल शरीरवाले महारथी वहां सेनाओंका विश्रामकरके स्थितहुए । ६ । और युद्धमें भीष्मकेकर्म को शोचते उन के बाणों से अत्यन्त पीडामान पाडवों ने शान्ती को नहीं पाया और चिन्ता से व्याकुलरहे फिरभीष्मभी पाडवों समेत सृञ्जियोंको विजयकरके आपके पुत्रों से

CHAPTER CVIII

The tenth day Sanjaya said After the battle at sunset the scene in the evening was dreadful and the battle stopped in all quarters. Seeing in the evening his army wounded by Bhishm, laying down arms much distressed with terror surrounded by enemies and ready to flight seeing as well the high-handedness and rage of Bhishm and finding the Somakas powerless and almost vanquished Prince Yudhishthir with a feeling of depression gave orders of retreat to his army In the same manner your armies too went to take rest Then the wounded warriors took rest 6 Thinking of Bhishm's work and much wounded by his arrows the Pandavas could find no rest and peace of mind Bhishm too having conquered the Pandavas and the Srinjayas, returned to the camping ground much honoured and praised by your sons and surrounded by the

सार्थं हृष्टरूपैःसमन्ततः । ततो रात्रिः समभवत् सर्वभूतप्रमोहिनी ॥ ९ ॥ तस्मिन् रात्रिमुखे घोरे पाण्डवावृष्णिभिः सह । सृञ्जयाश्च दुराधर्षा मन्त्राय समुपाविशन् ॥ १० ॥ आत्मनिःश्रेयसं सर्वे प्राप्तकालं महाबलाः । मन्त्रयामासुरव्यग्रा मन्त्रनिश्चय कोविदाः ॥ ११ ॥ ततो युधिष्ठिरोराजा मन्त्रयित्वा चिरं नृप । वासुदेवं समुद्वीक्ष्यवचनञ्चेदमाददे ॥१२॥ कृष्ण पश्य महात्मानं भीष्मंभीमपराक्रमम् । गजं नलवनानीव विमृद्नन्तं बलं मम ॥ १३ ॥ न चैवैनं महात्मानमुत्सहामो निरीक्षितुम् । लेलिह्यमानं सैन्येषु प्रवृद्धमिव पावकम् ॥ १४ ॥ यथा घोरो महानागस्तक्षको वै विषोल्वणः । तथा भीष्मो रणे क्रुद्धस्तीक्ष्णशस्त्रः प्रतापवान् ॥ १५ ॥ गृहीतचापः समरे प्रमुञ्चन्निशिताञ्छरान् । शक्यो जेतुंयम क्रुद्धो वज्रपाणिश्च देवराट् ॥ १६ ॥ वरुणः पाशभृच्चापि सगदो वा धनेश्वरः । न तु भीष्म सुसंक्रुद्धः शक्योजेतुं महाहवे ॥ १७ ॥ सोहमेवंगते

पूज्य और स्तुतिमान होकर चारोंओर से प्रसन्नरूपकौरवों समेत निवासस्थान में वर्त्तमान हुए जिसपीछे सवजीवोंको प्रसन्नकरने वाली रात्रि वर्त्तमानहुई उसघोररात्रिके प्रारंभमें दुर्जय पाण्डव सृंजय और वृष्णीलोग सलाहकरनेके लिये बैठे।१०। उनसावधान मंत्रके निश्चयमें पंडित सबमहाबलियोंने, अपनेकल्याणको विचारकिया, इसके पीछे राजा युधिष्ठिरने बहुत विलम्बतक विचारांशकरके वासुदेवजीको देखकर यह वचन कहा, कि हे श्रीकृष्णजी जैसे कि हाथी कमल के वनोंको मर्दनकरता है इसी प्रकारसे मेरी सेना के मर्द्दन करनेवाले भयके उत्पन्न कर्त्ता महात्मा भीष्मको देखो, कि इस अत्यन्त प्रबल अग्नि के समान सेनाओं के चाटने वाले महात्मा के देखने को हम सब समर्थ नहीं होते हैं, जैसे कि बड़ा विष भरा तक्षक नाग होता है इसी प्रकारके यह युद्धमें, क्रोधित महातेजस्वी शस्त्रधारी भीष्म हैं, युद्ध में धनुष हाथ में लिये तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते क्रोधरूप यमराज और वज्रधारी इन्द्रको वा पाशधारी वरुण और गदाधारी कुबेर को भी विजय करना संभव है परन्तु महा युद्धमें क्रोध संयुक्त भीष्मजी का विजय करनां महा कठिन और असंभव है, हे श्री

cheerful Kauravas. Then the night commenced giving happiness to all beings In the early part of that dark night the Pandavas, the Srinjayas and the Vrishnis met in council. 10. Those wise warriors skilful in council thought of their welfare. Then Prince Yudhishtir after deep thought thus addressed Vasudev:—" Bhishm the terror of our armies destroys my warriors as an elephant tramples down a clump of lotuses. We are unable to look at that destroyer of armies like a burning fire. He is like a venomous snake much enraged in the field of battle. It is easy to conquer the enraged Yam discharging his sharp arrows, Indra the wielder of vajra, Varun the bearer of noose or Kuver the mace bearer; but it is very difficult to conquer the enraged Bhishm in battle. Endowed with small wisdom as I am, O Krishn, I

कृष्ण निमग्न शोकसागरे। अत्मनो बुद्धिदौर्बल्याद् भीष्ममासाद्य सयुगे ॥ १८ ॥ वन यास्यामि दुर्धर्ष श्रेयोवै तत्रमे गतम् । न युद्ध रोचतेकृष्ण हन्ति भीष्मो हि न सदा ॥ १९ ॥ यथा प्रज्वलित वह्निं पतङ्ग समभिद्रवन् । एकतोमृत्युमभ्येति तथाह भीष्म मीयिवान् ॥ २० ॥ क्षय नीतोस्मि वार्ष्णेय राज्यहेतो पराक्रमी । भ्रातरश्चैवमेशूरा सायकैर्भृशपीडिता ॥ २१ ॥ मत्कृते भ्रातृसौहार्दाद्राज्यभ्रष्टा वन गता परिक्लिष्टा तथा कृष्णा मत्कृते मधुसूदन ॥२२॥ जीवित बहुमन्यह जीवित ह्यद्य दुर्लभम् । जीवि तस्याद्य शेषेण चरिष्ये धर्ममुत्तमम् ॥ २३ ॥ यदितेहमनुग्राह्यो भ्रातृभि सह केशव । स्वधर्मस्याविरोधेन हित व्याहर केशव ॥ २४ ॥ एव श्रुत्वा वचस्तस्य कारुण्याद्बहुवि स्तरम् । प्रत्युवाच तत कृष्णः सान्त्वयानो युधिष्ठिरम् ॥ २५ ॥ धर्मपुत्र विषादत्व मा

कृष्णजी मैं अपनी बुद्धिकी अल्पज्ञता से युद्धमें ऐसी दशाके द्वारा भीष्म कोपाकर शोक समुद्र में डूबाहुआ हूं । १८ । हे अजेय मैं वनको जाऊंगा निश्चयकरके मेरा कल्याण वनही में वर्त्तमान है हे माधव मैं युद्ध को अच्छा नही समझताहूं क्योंकि भीष्मजी सदैव हमारे शूरवीरों को मारते है, जैसे कि पतंगपक्षी बड़ी देदीप्ति अग्निकी ओर को दौड़ताहुआ एक साथ भस्म होता है इसी प्रकार हम अग्नि के समान भीष्म को भी देखते है कि जो इसकी ओर को गया वही भस्महुआ । २० । हे श्रीकृष्णजी राज्य के निमित्त पराक्रमकरनेवाला मैं नाश होने में ही हूं और मेरेशूरवीर भाई भी शायकों से अत्यन्त पीड़ामान है, हे मधुसूदनजी वह मेरे भाई भायपपने की प्रीति से मेरेही कारण राज्य से भ्रष्टहोकर वन को गये और मेरेही कारण से द्रोपदी भी महा दुःख में पड़ी, मैं जीवनको बहुत मानता हूं वह जीवन अब दुःख से प्राप्त होने के योग्य है अब मैं शेष अवस्था से उत्तम धर्मको करूंगा, हे केशवजी जो मैं भाइयों समेत आप का कृपापात्रहूं तो अपने धर्म की अविरोधतासे मेरे हितको करो इसप्रकार के उसके विस्तार युक्त वचनों को सुनकर बड़ी करुणा से श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर को विश्वासित करके यह वचन

am plunged in the ocean of grief on account of Bhishm 18 I shall go into exile, O invincible one! I see happiness now here but in a forest. I donot think the war will do me any good, Madhav, for Bhishm destroys our armies Like an insect which falls as soon as it looks upon a burning fire, we can not look Bhishm in the face 20 I myself am nearly dead in the attempt to win the kingdom, and my brothers too are much wounded by arrows My brothers, O destroyer of Madhu, were deprived of kingdom out of love for me and sent into exile It was for my sake that Draupadi underwent great hardships I love my life, but it is difficult to maintain it I shall therefore live a life of virtue the rest of my days If you are kind to me Keshav, do me good as far as it is not contradictory to the dictates of your Dharm " Hearing

कृथा. सत्यसङ्गर। यस्य ते भ्रातरः शूराः दुर्जया. शत्रुसूदनाः ॥ २६ ॥ अर्जुनोभीम
सेनश्च वाय्वग्निसमतेजसौ । माद्रीपुत्रौ च विक्रान्तौ त्रिदशानामिवेश्वरौ ॥२७॥
मांचापि युंक्ष्व सौहार्दाद्योत्स्ये भीष्मेणपाण्डव । त्वत्प्रयुक्तो महाराज किं न कुर्यांमहा
हवे ॥ २८ ॥ हनिष्यामि रणे भीष्ममाहूय पुरुषर्षभम् । पश्यतां धार्त्तराष्ट्राणांयदिने
च्छतिफाल्गुनः ॥२९॥ यदि भीष्मे हते वीरे जयं पश्यसि पाण्डव । हन्तास्म्येकरथे
नाद्य कुरुवृद्धं पितामहम् ॥ ३० ॥ पश्य मे विक्रमं राजन् महेन्द्रस्येव संयुगे । विमु
ञ्चन्तं महास्त्राणि पातयिष्यामि तं रथात् ॥ ३१ ॥ यः शत्रुः पाण्डुपुत्राणां मच्छत्रुःस
न संशयः । मदर्था भवदीया ये ये मदीयास्तवैव ते ॥ ३२ ॥ तव भ्राता मम सखा

बोले, हे धर्म पुत्र सत्यसंकल्प तुम व्याकुलता को मतकरो तेरे शूरवीर दुर्जयभाई शत्रुओं के मारनेवाले हैं, अर्जुन और भीमसेन वायु और अग्नि के समान तेजस्वी हैं और दोनों नकुल और सहदेव देवताओं के ईश्वर भगवान-इन्द्रके समान पराक्रमी हैं, हे पांडव तुम मुझको आज्ञा दो कि मैं भी तुम भाइयों की प्रीति से भीष्म के साथ लडूंगा हेराजा युधिष्ठिर जो तुम मुझको भी युद्ध में प्रवृत्त करोगे तो मैं भी उस महा युद्ध में सब कुछ करसक्ताहूं, जो अर्जुन नहीं चाहता है तो मैं पुरुषोत्तम भीष्म को बुलाकर धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखते हुएही मारूंगा, हे पांडव जो तू वीर भीष्म के मरनेपरही विजय देखता है तो मैं एकही रथके द्वारा कौरवों के वृद्ध पितामह को मारूंगा । ३० । हे राजा तुम युद्ध में महाइन्द्रके समान मेरे पराक्रम को देखो मैं बड़े २ अस्त्रोंको छोड़कर उसको रथसेगिराऊंगा, क्योंकि जो पांडवों का शत्रु है वह मेरा भी शत्रु है जो तुम्हारे निमित्त धनआदि हैं वह मेरे हैं और जो मेरे हैं वह तुम्हारे हैं । ३२ । आपका भाई मेरा मित्र और

his griefs in details, Shree Krishn felt much pity on Yudhishthir and thus consoled him, saying, "O son of Dharm, of true vows, be not distur ed in mind. Thy brave and invincible brothers are destroyers of enemies Arjun and Bhimsen are glorious like Agni and Vayu, and both Nakul and Sahadev are full of prowess like Indra the chief of gods. Allow me to fight against Bhishm for your sake. I can do everything, in battle, Prince Yudhishthir, if you will engage me in fighting. I shall, if Arjun be unwilling, challenge Bhishm and shall kill him in the presence of the sons of Dhritrashtra. If, O Panda , you see your victory in the death of Bhishm, I shall with a single chariot kill the old grandfather of the Kauravas. 30. You will see O king, my prowess like that of Indra. I shall, with mighty weapons, make him fall from his chariot, for the enemy of the Pandavas is my enemy, my prosperity lies in yours and my wealth belongs to you as well. 32. Your brother is my friend, kinsman

सम्बन्धी शिष्य एव च । मांसान्युत्कृत्य दास्यामि फाल्गुनार्थं महीपते ॥ ३३ ॥ एष चापि नरव्याघ्रो मत्कृते जीवित त्यजेत् । एष न समयस्तात तारयेम परस्परम् ॥ ३४ ॥ स मां नियुङ्क्ष्व राजेन्द्र यथायोद्धा भवाम्यहम् । प्रतिज्ञातमुपप्लव्ये यत्तत् पार्थेनपूर्वतः ॥ ३५ ॥ घातयिष्यामि गाङ्गेय मिति लोकस्य सन्निधौ । परिरक्ष्यमिदं तावद् वच पार्थस्य धीमत ॥ ३६ ॥ अनुज्ञातन्तु पार्थेन मयाकार्य्यमसंशय । अथ वा फाल्गुनस्यैष भार परिमितोरणे ॥ ३७ ॥ सहनिष्यति सग्रामे भीष्म परपुरञ्जयम् । अशक्यमपि कुर्य्याद्धि रणे पार्थ समुद्यत ॥ ३८ ॥ त्रिदशान्वा समुद्युक्तान् सहितान् दैत्यदानवैः । निहन्यादर्जुन सख्ये किमुभीष्म नराधिप ॥ ३९ ॥ विपरीतो महावीर्यो गतसत्वोऽल्पजीवित । भीष्म शान्तनवो नून कर्त्तव्य नाववुध्यते ॥ ४० ॥ युधिष्ठिर उवाच । एवमेतन्महाबाहोयथा वदसि माधव । सर्वे ह्येतेनपर्य्याप्तास्तव वेगविधारणे ॥ ४१ ॥ नियत समवाप्स्यामि

सम्बन्धी होकर शिष्यभीहै हे युधिष्ठिर मैं अर्जुनके निमित्त अपने मांसको भी काटकर देसक्ताहूं, और वह नरोत्तम अर्जुन भी मेरे निमित्त जीवनको त्यागकरसक्ता है हे तात हमारा यह नियम है कि हम परस्पर के दुःख से छूटें, सो तुम मुझको युद्ध करने की आज्ञा दो पूर्व में जो अर्जुनने प्रतिज्ञा की है उसको पहले से चाह रहे है सब लोक के सम्मुख गागेय भीष्म को मारूंगा उस बुद्धिमान अर्जुन का यह वचन रक्षाकरने के योग्य है, मुझको अर्जुनका मत पूराकरना योग्य है यह निस्सन्देह है कि वह शत्रुओं का विजय करनेवाला अर्जुन युद्ध में अवश्य भीष्म को मारेगा और युद्ध में अच्छी रीति से प्रवृत्त होकर असंभव कठिन कर्मों कोभी करेगा, यह अर्जुन युद्ध में क्रोधित होकर देवता और दैत्यों को भी मारसक्ता है तो हे राजा भीष्म का मारना इसको कितनी बडी बात है, निश्चय करके महा पराक्रमी शतनु का पुत्र भीष्म विपरीतता और निर्बलता से थोड़ी आयु रखनेवाला होकर करने के योग्य कर्म को नही जानता है । ४० । युधिष्ठिर बोले हे महाराज महाबाहु आपका यह सब कथन यथार्थही हे निश्चय करके आपका वेग किसी

and pupil, I can cut away my own flesh for Arjun's sake Yudhishthir, Arjun the best of men can lay down his life for my sake We strive to rid each other from misery allow me to fight Arjun's former promise to kill Gangeya in the presence of all warriors is worthy of respect and desirable I am bound to satisfy Arjun's desire Undoubtedly, Arjun the destroyer of foes is sure to kill Bhishm in battle and will achieve other hard and impracticable deeds When enraged in battle, Arjun can destroy the gods and danavas the destruction of Bhishm is not so very difficult Surely Shantanu's son Bhishm of great prowess does not know what to do because he is old and his life is short" 40 "You are quite right brave Prince" said Yudhishthir in reply "surely your velocity

सेवमतद्यर्थोप्सितम । यस्य मे पुरुषव्याघ्र भवान् पक्षे व्यवस्थितः ॥ ४२ ॥ सेन्द्रानपि रणे देवान् जयेयं जयतांवर । त्वया नाथेन गोविन्द किमु भीष्मं महारथम् ॥ ४३ ॥ न तु त्वामनृतं कर्त्तुमुत्सहे स्वात्मगौरवात् । अयुध्यमानः साहाय्यं यथोक्तं कुरुमाधव ॥ ४४ ॥ समयस्तु कृतः कश्चिन्मम भीष्मेण संयुगे । मन्त्रयिष्ये तवार्थाय न तु योत्स्ये कथञ्चन ॥ ४५ ॥ दुर्य्योधनार्थे योत्स्यामि सत्यमेतदिति प्रभो । स हि राज्यस्य मे दाता मन्त्रस्यैव च माधव ॥ ४६ ॥ तस्माद्देवव्रतं भूयो वधोपायार्थमात्मनः । भवताः सहिता सर्वे यायाम मधुसूदन ॥ ४७ ॥ तद्वयं सहितागत्वा भीष्ममाशु नरोत्तमम् । न चिरात् सर्वे वार्ष्णेय मन्त्रं पृच्छाम कौरवम् ॥ ४८ ॥ स वक्ष्यति हितं वाक्यं सत्यमस्मान् जनार्दन । यथा च वक्ष्यते कृष्ण तथा कर्तास्मि संयुगे ॥ ४९ ॥ स नो जयस्य दाता स्यान्मन्त्रस्य च दृढव्रतः । बालाः पित्रा विहीनाश्च तेन संवर्धिता वयम् ॥ ५० ॥

के सहने के योग्य नहीं है, इसको अपने मन की इच्छा के अनुसार मैं अवश्य प्राप्त करूंगा जब कि आप से कृपानिधि हमारे पक्षपर खड़े हैं हे महाविजयस्वरूप गोविन्दजी तुम से अपने नाथ के साथ होकर युद्ध में सब देवताओं समेत इन्द्र कोभी हम विजय करसक्ते हैं तो इन महारथी भीष्मजी का विजय करना कितनी बातहै मैं आपको मिथ्यावादी करना योग्य नहीं समझताहूं हे माधवजी आप युद्ध किये विनाही अपने स्वाभाविक बल पुरुषार्थ से अपने वचन के अनुसार हमारी सहायता करो, भीष्म ने मुझसे प्रणकिया है कि युद्ध में सलाह करूंगा परन्तुतेरे अर्थ कभी न लड़ूंगा मैं दुर्य्योधन केही लिये लड़ूंगा इसमें सन्देह नहीं है कि वह भीष्मजी मुझको राज्य की सलाह के देनेवाले हैं इस कारण से हम सब मिल कर आपको साथ लेकर उनके शरीर के मारने के निमित्त उस देवव्रत के पास चलें, हे जनार्दनजी वह हमसे हमारे अभीष्ट सत्य सत्य वचनोंको कहेंगे और जैसा वह कहेंगे वैसाही हम युद्धमें करेंगे, वह दृढ़ व्रत भीष्म हमारी विजय और कीर्ति का देनेवाला होगा क्योंकि पिताकर के विहीन हमबालकों को उन्हीं ने सबप्रकार

is unbearable. I own that on my side I have in you an ocean of kindness Invincible Govind, having you for our protector we can win Indra and the gods; it is not difficult to conquer Bhishm. But I would not make you break your word; for without engaging in battle, Madhav, you can with your natural strength and prowess help us as you have promised. Bhishm has promised to give me advice in wartime, though he will fight for Duryodhan and not for me. No doubt he will advise me how to gain kingdom; we shall therefore go with you to Devabrat in order to contrive his death He will, O Janardan, tell us truly how to gain our object and we shall act upon his advice in battle. Bhishm the observer of true vows will lead us to victory and fame; for he brought us up from childhood when we were fatherless 50. I desire, Madhav, to slay my old grandfather Bhishm; are

तञ्चेत्पितामहं वृद्धं हन्तुमिच्छामि माधव । पितुः पितरमिष्टञ्च धिगस्तु क्षत्रजीविकाम ॥ ५१ ॥ सञ्जय उवाच । ततोऽब्रवीन्महाराज वार्ष्णेयः कुरुनन्दनम । रोचतेमे महाप्राज्ञ राजेन्द्र तव भाषितम ॥ ५२ ॥ देवव्रत कृती भीष्मः प्रेक्षितेनापि निर्दहेत् । गम्यतां स वधोपायं प्रष्टुं सागरगासुतः ॥ ५३ ॥ वक्तुमर्हति सत्यं स त्वयापृष्टो विशेषतः । ते वयं तत्र गच्छाम प्रष्टुंकुरुपितामहम ॥ ५४ ॥ गत्वा शान्तनवं वृद्धं मन्त्रं पृच्छाम भारत । स नो वाक्ष्यति मन्त्रं यं तेन योत्स्यामहे परान् ॥ ५५ ॥ एवमामन्त्र्यते वीराः पाण्डवाः पाण्डुपूर्वजम । जग्मुस्तेसहिताः सर्वे वासुदेवश्च वीर्यवान् ॥ ५६ ॥ विमुक्तशस्त्रकवचा भीष्मस्य सदनं प्रति । प्रविश्य च तदा भीष्मं शिरोभिः प्रणिपेदिरे ॥ ५७ ॥ पूजयन्तो महाराज पाण्डवा भरतर्षभम । प्रणम्य शिरसाचैनं भीष्मं शरण

से भरण पोषणकर के इतना बड़ा किया है । ५० । हे माधवजी जो मैं अपने पिता के भी पितावृद्ध भीष्म पितामह को मारना चाहताहूं ऐसे क्षत्री धर्म को और क्षत्रियों की जीविकाको धिक्कार है, संजय बोले हे महाराज फिर श्रीकृष्णजी कौरवनन्दन युधिष्ठिरसे कह ने लगे कि हे बड़ेज्ञानी राजेन्द्र तेरा कहना मुझको अच्छालगता है शुभकर्मी देवताओं के बराबर व्रतरखनेवाला जो दृष्टि सेभी दूसरे को भस्म कर सक्ता है उस भीष्मके पास उसी से उसके मारने का उपाय पूछने के निमित्त जाओ, वह तेरेपूछने पर तुझ से सत्यही सत्य कहेगा इस से हम सब मिलकर उन कौरवों के पितामह के पास पूछने के हेतु चलें, हे भरत वंशी हम वृद्ध भीष्मसे मिलकर सलाह को पूंछे वह हमको जो सलाह देगा उसी के अनुसार हम शत्रुओंमे युद्ध करेंगे, हे पांडुके बड़े भाई धृतराष्ट्र वह वीर पांडव इस रीतिसे सलाह करके सबने वासुदेवजी समेत शस्त्रों से रहित होकर उस भीष्म के डेरों में प्रवेश करके उनको बड़ीनम्रता पूर्वक प्रणाम किया, हे राजा इसरीति से श्रीकृष्ण समेत पांडवलोग शिर से प्रणाम करते हुए भीष्मजीके समीप बैठने के स्थानों में

not kshatrya dharm and kshatrya life blameable?" Sanjaya continued "Then, O great king, Shree Krishn said to Yudhishthir the joy of Kauravas, "I like your idea, wise Prince. Let us go to Bhishm the virtuous, of true vows like gods, who can by his mere look burn others, in order to seek from his own lips the manner of his death. Being asked by you, he will speak the truth. Let us therefore all go together to ask of the grandfather of the Kauravas what is to be done. We shall take counsel of old Bhishm, O descendant of Bharat, and shall act accordingly in fighting against our enemies." Thus having consulted together, the Pandavas together with Vasudev, went without arms in the tent of Bhishm and humbly bowed down to him. And thus bowing down with their heads, the Pandavas with Shree Krishn approached the seat of Bhishm. Then brave

मभ्ययु ॥ ५८॥ तानुवाच । हाराहुर्भीष्मः कुरुपितामह । स्वागत तव वार्ष्णेयस्वागत-
न्तेधनञ्जय ॥ ५९ ॥ स्वागतं धर्मपुत्राय भीमाय यमयोस्तदा । किं वा कार्य्यं करोम्य
घयुष्माकं प्रीतिवर्धनम् ॥ ६० ॥ सर्वात्मनापि कर्त्तास्मि यदपि स्यात् सुदुष्करम् ।
तथा ब्रुवाणं गाङ्गेयं प्रीतियुक्त पुनः पुनः ॥ ६१ ॥ उवाच राजा दीनात्मा प्रीतियुक्त मिदं
वच- । कथं जयेम सर्वज्ञ कथं राज्यं लभेमहि ॥ ६२ ॥ प्रजानां संशयोनस्यात् कथंतन्मे
वद प्रभो । भवान् हि नो वधोपायं ब्रवीतु स्वयमात्मन ॥ ६३ ॥ भवन्तं समरेवीर
विषहेम कथं वयम् । न हि ते सूक्ष्ममप्यस्ति रन्ध्रं कुरुपितामह ॥ ६४ ॥ मण्डलेनैव
धनुर्यद् दृश्यसे संयुगे सदा । आददानं सन्दधानं विकर्षन्तं धनुर्न च ॥ ६५ । पश्याम
स्त्वांमहावाहो रथे सूर्यमिवापरम् । रथाश्वनरनागानां हन्तारं परवीरहन् ॥ ६६ ॥ को
वर्योत्सहते जेतुं त्वां पुमान् भरतर्षभ । वर्षता शरवर्षाणि संयुगे वैशसं कृतम् । ६७ ॥

पहुंचे, तब कौरवों के पितामह महाबाहु भीष्मजी श्रीकृष्ण जीसे बोले कि हे कृष्ण आपका आना शुभदायकहो और हे अर्जुन तेराभी आना सफलहो, और युधिष्ठिर भीमसेन नकुल सहदेव कामी आना मंगल कारीहो यह कहकर कहा कि अब में तुम्हारी प्रीति का बढ़ाने वाला कौनसातुम्हारा शिष्टाचारकरूं । ६० । मैं तुम्हारे दुःखसेभीकरने के योग्य हितको आत्मा से करनेको उपस्थित हूं इस प्रकारकेप्रीतिपूर्वक वारंवार वचन कहनेवाले गांगेय भीष्मजी से महादुःखीचित युधिष्ठिर बड़ी प्रीति में डूबकर यह वचन बोलाकि हे सर्वज्ञ हम कैसे सब को विजय करें और कैसे राज्यको पावें, और किसरीति से प्रजालोगों का नाशनहो हे प्रभु इस को हमसे कहिये और अपने भी मरण का उपाय हमको बताइये हे महावीर हम युद्धमें कैसे आपको सहसकें हे हमसब के पितामह आपके किसीसूक्ष्म दोषको भी हमनहीं जानते, तुमसदैव युद्ध में धनुष मंडल के साथहीदृष्ट पड़तेहो हे महाबाहु हमलोग आपको धनुष चढ़ाते बाणलेते संधानते और द्वितीय सूर्यके समान रथपर सवारहोते

Bhishm the grandfather of the Kauravas thus addressed Shree Krishn—" You are welcome Shree Krishn and you too, Arjun, will gain the object of your desire Yudhishthir, Bhimsen, Nakul and Sahdev too are welcome" Then he said, "What should I do to secure your love and pleasure? 60 I am ready with all my soul to do the most difficult work for your sake." Hearing the affectionate words of Bhishm, repeated again and again, Yudhishthir, plunged in deep love said, " How, O omniscience, shall we conquer all and win our kingdom? How can we avoid bloodshed? Tell me this as well as the manner of your death. How can we bear you in battle, mighty warrior? We do not know the least weakness of yours grandfather. You are always seen circling your bow in the field of battle; we can not see you riding your chariot like a second sun

क्षय नीताहि पृतना सयुगे महतीमम । यथा युधि जयेमत्वा यथा राज्य भवेमम
। ६८ मम सैन्यस्य च क्षेम त म ब्रूहि पितामह । ततोऽब्रवीच्छान्तनव पाण्डवान्
पाण्डुपूर्वज ॥ ६९ ॥ न कथञ्चन कौन्तेय मयि जीवति संयुगे । जयो भवतिसर्वज्ञ
सत्यमेतत्प्रब्रवीमिते । ७० ॥ निर्जिते मयि युद्धेन रणे जेष्यथ पाण्डवा । क्षिप्र मयि
प्रहरध्व यदीच्छथ रणे जयम । ७१ ॥ अनुजानामि व पार्था प्रहरध्व यथासुखम ।
एव हि सुकृत मन्ये भवता विदितोह्यहम । ७२ ॥ हते मयि हत सर्व तस्मादेव विधी
यताम । युधिष्ठिर उवाच । ब्रूहि तस्मादुपाय नो यथा युद्ध जयेमहि ॥ ७३ । भवन्त
समरे क्रुद्ध दण्डहस्तमिवान्तकम । शक्योवज्रधरो जेतु वरुणोथ यमस्तथा ॥ ७४ ॥
न भवान् समरे शक्य सेन्द्रैरपि सुरासुरै । भीष्म उवाच । सत्यमेतन्महाबाहोयथा

हुएभीनहीं देखत्ते है हेशत्रुओं के वीरलोगों के मारने वाले हे रथघोडे मनुष्यों के
मारने वाले, हे भरतर्षभ अबकिसपुरुषकी सामर्थ्य है जो आपको युद्धमें विजय
करसके आपने अपनेबाणों की वर्षाकरके युद्धमें मलयमचाकरमेरीबडी सेनाकाना-
शकियाहै अबजेसी रीतिसे हमतुमको युद्धमें विजयकरके राज्यकोपावें और मेरी
सेनाबचे हे पितामह वही आपको कहना योग्यहै इसके अनन्तर पाण्डुके पिताभीष्मजी
सब पाण्डवोंसे बोले, कि हे सर्वज्ञ युधिष्ठिर मेरे जीवतेहुए युद्धमें जैसेकि विजय नहीं
होतीहै उसको मैं तुम से कहता हू ।७०। हे पाण्डव लोगो युद्धमें मेरे विजय होने
पर युद्धकेही द्वारा तुम शत्रुओं को विजय करोगे जो युद्ध में विजय चाहतेहो तो
शीघ्रही मुझपर प्रहार करो, हेकुन्तीके पुत्रो मै तुमको आज्ञा देताहू तुम आनन्दसे
मेरेऊपर प्रहार करो मै इसरीति के कर्म को बहुत उत्तम मानताहू और मुझको तुम
अच्छी रीति से जानतेहो कि मेरेही मरने पर शत्रुओं की सब सेना अल्पही काल
में मारी जायगी इसहेतु से तुम ऐसा कर्म करो, युधिष्ठिर बोले कि वह उपाय
बतलाइये जिस से कि दडहाथ मे लिये मृत्यु के समान युद्धमें क्रुद्धरूप आपको

when putting arrows to your bow Destroyer of the warriors chariots, horses and men of the enemy best of Bharats who can conquer you in battle? You have with the shower of your arrows, annihilated my large army, now let me know grandfather how to conquer you get the kingdom and save my armies At this Bhishm the father of Pandu thus addressed the Pandavas, I shall tell you, wise Yudhishthir, why you cannot gain victory as long as I live 70 Having conquered me in battle O Pandav, you will defeat all the enemies by fighting Lay hands on me if you desire victory I give you permission sons of Kunti, to discharge cheerfully your weapons at me I approve this sort of work You know well that all the army of the enemies will be extirpated soon after my death and therefore you should do it ' Tell me said Yudhishthir how we can

पद्यारि पाण्डव ॥ ७५ ॥ नाहं जेतु रणे शक्यः सेन्द्रैरपि सुरासुरैः । आत्तशस्त्रो रणे यत्तो गृहीतवरकार्मुकः ॥ ७६ ॥ ततो मां न्यस्तशस्त्रं तु एते हन्युर्महारथाः । निक्षिप्त शस्त्रे पतिते विमुक्तकवचध्वजे ॥ ७७ ॥ द्रवमाणे च भीते च तवास्मीति च वादिनि । स्त्रियांस्त्रीनामधेये च विकले चैकपुत्रिणि ॥ ७८ ॥ अप्रशस्ते नरे चैव न युद्धं रोचते मम । इमं मे शृणुराजेन्द्र संकल्पं पूर्वचिन्तितम् ॥ ७९ ॥ अमङ्गल्यध्वजं दृष्ट्वा न युध्येयं कदाचन । य एष द्रौपदो राजंस्तव सैन्ये महारथः ॥ ८० ॥ शिखण्डी समरा मर्षी शूरश्च समितिञ्जयः । यथाभवच्च स्त्री पूर्वं पश्चात् पुंस्त्वं समागतः ॥ ८१ ॥ जानन्ति च भवन्तोपि सर्वमेतद्यथातथम् । अर्जुनः समरे शूरः पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्

विजयकरें, वज्रधारी इन्द्र वरुण कुबेर और यमराज भी विजय करने को योग्य हैं, परन्तु आप युद्धमें देवेन्द्र समेत देवता और असुरों से भी विजय करने के योग्य नहीं हैं, भीष्मजी बोले हे महाबाहु पांडव जो तू कहता है वह सत्यही है यथार्थ में मुझको इन्द्रसमेत देवता और असुरभी विजय करनेको समर्थ नहीं होसक्ते, जोकि शस्त्रोंकाधारण करनेवाला युद्ध में कुशल उत्तम धनुषका खैंचने वाला मैंहूं इसहेतु से यह सब महारथी मुझशस्त्रों के त्यागने वालेको मारें, शस्त्र त्यागने वाले पृथ्वी पर पड़े कवच और ध्वजासे रहित भागेहुए भयभीत और शरणमें आयेहुए वा स्त्रीके समान नाम रखने वाले व्याकुल वा एक पुत्र वाले से अथवा नीच मनुष्य के साथ युद्ध करना मैं उत्तम नहीं समझताहूं, हे राजेन्द्र पूर्व विचार कियेहुए मेरे इस संकल्पको सुनो कि मैं अमंगल रूप ध्वजा को देख करकभी नहींलड़ता, हेराजा तेरी सेनामें यह द्रुपदकाबेटा महारथी युद्धमें क्रोधरूप शूर वीर युद्धको जीतने वाला शिखण्डी नामहै । ८० । यह जैसे कि स्त्री हुआ और पीछे से पुरुषके चिह्न पाये इसका जैसा कि वृत्तान्तहै उसकोतुमभी जानतेहो शूर

conquer you in battle when you roam like Death the bearer of staff. Indra the wielder of vajra, Varun, Kuver and Yamraj may be conquerd, *but you are invincible by Indra and the gods and danavas."* "You are right," replied Bhishm, "undoubtedly the gods headed by Indra and the danavas cannot conquer as long as I use my weapons dexterously in battle and draw my good bow. Let the warriors therefore slay me when I have laid aside my arms. I donot like to fight with one who has laid down arms, one lying on the ground, without armour and banner, running away, terrified, seeking refuge, having a woman like name, distressed, father of one son or a low born. Hear, O king the resolution which I have arrived at: I never fight with one having ominous banner; in thy army, O king, Drupad's son, Shikhandi is a brave and invincible warrior 80. You know already how a woman at first he gained manhood. I shall not

॥ ८२ ॥ मामेव विशिखैस्तीक्ष्णैरभिद्रवतु दंशित । अमङ्गल्यध्वजे तस्मिन् स्त्रीपूर्वेच विशेषत ॥ ८३ ॥ न प्रहर्तुमभीप्सामिगृहीतेषु कथचन । तदतर समासाद्य पाण्डवो मांधनञ्जय ॥ ८४ ॥ शरैर्घातयतु क्षिप्र समन्ताद् भरतर्षभ । न त पश्यामि लोकेषुमा हन्याद्य.समुद्यतम ॥८५॥ ऋतेकृष्णा-महाभागात् पाण्डवाद्वा धनञ्जयात् । एवतस्मात्पुरोधाय कंचिदन्य ममाग्रत ॥ ८६ ॥ आत्तशस्त्रो रणे यत्तो गृहीतवरकार्मुक । मां पातयतु बीभत्सुरेव तवजयोध्रुवम ॥ ८७ ॥ एतत् कुरुष्व कौतेय यथोक्तं ममसुव्रत । संग्रामेधार्तराष्ट्रांश्च हत्वा सर्वान् समागतान् ॥ ८८ ॥ सञ्जय उवाच । तेतु ज्ञात्वा तत. पार्था जग्मु स्वशिबिरं प्रति । अभिवाद्यमहात्मान भीष्म कुरुपितामहम ॥८९॥ तथोक्तवति गाङ्गेये परलोकाय दीक्षिते । अर्जुनो दु खसन्तस. सव्रीडमिदमब्रवीत

वीर युद्धमें शस्त्रोंसे अलंकृत अर्जुन शिखण्डी को आगे करके विशिख बाणोंसे मेरेसम्मुख जो आवेतो धनुषबाण हाथमें लिये हुएभी उसअमंगली ध्वजावाले वा पूर्व्व में स्त्रीरूप रखने वाले पर मैं किसी दशामें भी प्रहार करना नही चाहताहूं हेराजेन्द्र युधिष्ठिर उस सेनाको पाकरशीघ्रही पांडव अर्जुनमुझे चारोंओर को बाणोंसे मारे मैं सब लोकों में महानुभाव श्रीकृष्णजी और पांडव अर्जुनके सिवाय किसीको नहीं देखताहूं जो मुझ युद्ध में मरनेको विजय करसके इस कारण यह शस्त्रधारण करने वाला और उत्तम धनुषधारी अर्जुन किसी दूसरेको मेरेआगे नियत करके, मुझको मारे निश्चय कर के इसरीति से तेरी विजयहै हे सुन्दरव्रत युधिष्ठिर तुमइस मेरे वचनको प्रतिपालन करो और युद्धमें सम्मुख होने वाले सब धृतराष्ट्र के पुत्रों को मारो संजय बोले कि इन वार्त्तालापोंके पीछे वह पांडव लोग सब बातों को जानकर भीष्मजीको दण्डवतकरके अपनेडेरों को गये, परलोक जानेको उत्सुकदीक्षा किये हुए गांगेय भीष्मजी के इसप्रकार कहने पर दुःख से शोच ग्रस्त अर्जुन बड़ी लज्जा से यह वचन बोले हे माधवजी मैं युद्ध करके वृद्ध महाज्ञानी बुद्धिमान कौरवों के

discharge my weapons at Sikhandi who has an ominous banner and who was formerly a woman, if he comes before me with bow and arrows and is followed by Arjun the brave in fight and armed with weapons Let Arjun and his army wound me with his arrows from all sides I see none except mighty Krishn and Arjun the Pandav that can conquer me in battle Then let this armed archer Arjun preceded by the other, discharge his weapons at me This is the only way to your conquest Act upon my advice, virtuous Yudhishthir, and destroy all the sons of Dhritarashtra in battle" Sanjaya continued.— 'Having thus conversed together, the Pandavas learnt all that was necessary, and having bowed down to Bhishm went to their camp Hearing the words of Bhishm the son of Ganga, desirous of departing to the next world, Arjun plunged in grief and shame, thus addressed Krishn — "How shall I fight against the head of the

॥ ९० ॥ गुरुणा कुरुवृद्धेन कृतप्रज्ञेन धीमता । पितामहेन संग्रामं कथं योत्स्यामि माधव
॥ ९१ ॥ क्रीडता हि मया बाल्ये वासुदेव महामना । पांसुरूषितगात्रेण महात्मा परुषी
कृत ॥ ९२ ॥ यस्याहमधिरुह्याङ्कं बाल किलगदाग्रज । तातेत्यवोचं पितरं पितु
पाण्डोर्महात्मन ॥ ९३ ॥ नाहं तातस्तव पितुस्तातोऽस्मि तव भारत । इति मामब्रवी
द्बाल्ये य स वध्य कथं मया ॥ ९४ ॥ काम वध्यतु मे सैन्यं नाहं योत्स्ये महात्मना ।
जयो वास्तु वधो वा मे कथं वा कृष्ण मन्यसे ॥ ९५ ॥ वासुदेव उवाच । प्रतिज्ञाय
वधं जिष्णो पुरा भीष्मस्य संयुगे । क्षत्रधर्मे स्थित पार्थ कथं नैनं हनिष्यसि ॥९६॥
पातयैनं रथात् पार्थ क्षत्रियं युद्धदुर्मदम् । नाहत्वा युधि गाङ्गेयं विजयस्ते भवि
ष्यति ॥ ९७ ॥ दृष्टमेतत्पुरा देवैर्गमिष्यति यमक्षयम् । यद्दृष्टं हि पुरा पार्थ तत्तथा न

पितामह भीष्मजी के साथ कैसे युद्धकरूंगा । ९० । हे वासुदेव जी बाल्यावस्था में खेलते हुए धूलभरे देहसे मैंने बडे साहसी पितामह को धूल में मिलाया, निश्चय करके हे श्रीकृष्णजी मुझ बालकने जिसकी बगलमें चढकर अपने पितामहात्मापांडु के पिताको तात कहाहै, हेमाधवजी जिसने बाल्यावस्थामें मुझको कहाथा कि मैं तेरेपिताका तातहूं तेरातात नहींहूं उस को मैं किसप्रकार से मारने के योग्यहूं वह अपनी इच्छाके अनुसार मेरी सेनाको मारे परन्तु उस महात्मा के साथनहीं लडूंगा मेरीविजय होय वा मृत्युहो हे श्रीकृष्णजी चाहो आप मुझे किसी प्रकार से जानों, वासुदेव जी बोले कि हे विजय करने वाले अर्जुन तुम पूर्व समय में युद्धके बीच भीष्मके मारने का प्रण करके क्षत्री धर्ममें नियतहुएहो सो तुमकैसे उसको नहीं मारोगे, हे अर्जुन इस युद्ध में दुर्मद क्षत्री को रथ से गिराओ तुमयुद्धमें गंगापुत्रको बिनामारे समरमें विजय और कीर्ति को नहीं पाओगे, आगे के समय में देवताओं ने देखा था कि तुम यमलोक को जाओगे सो हे अर्जुन वह बात मिथ्या नहीं है,

---

family, Bhishm the wise grandfather of the Kauravas 90 I have, O Vasudev often made the body of the grandfather dirty with my dust stained feet when I was playing in childhood Surely O Krishn, the father of the great Pandu whom when in his lap I called father and who in my childhood told me that he was not my father, but my father's father, I cannot find it in my heart that I should kill him Let him, at his desire, destroy my armies, but I shall not fight against him whether I conquer or die O Krishn or whatever you may think of me " You have already made a promise, said Krishn " that you will kill Bhishm in battle How is it that you say you will not kill him? Cause the fall of that great warrior from his chariot, O Arjun You can neither gain victory nor worldly fame without killing Bhishm The gods have already foreseen that you would go to the region of Yam and this cannot be false None except you not even Indra the wielder of

तदन्यथा ॥ ९८ ॥ न हि भीष्म दुराधर्षं व्यात्ताननमिवान्तकम । त्वदन्य शक्तुया
योद्धमपि वज्रधर स्वयम् । ९९ ॥ जहि भीष्म स्थिरो भूत्वा शृणुचेदं वचो मम ।
यथोवाच पुराशक्रं महाबुद्धिर्बृहस्पतिः ॥ १०० ॥ ज्यायांसमपि चेद् वृद्धं गुणैरपि
समन्वितम । आततायिनमायान्त हन्याद् घातकमात्मम ॥ १०१ ॥ शाश्वतोयंस्थितो
धर्मः क्षत्रियाणां धनञ्जय । योद्धव्य रक्षितव्यञ्च यष्टव्यञ्चानुसूयुभि. । १०२ ॥
अर्जुन उवाच । शिखण्डी निधन कृष्ण भीष्मस्य भविताध्रुवम् । दृष्ट्वैव हि
सदा भीष्म पाञ्चाल्य विनिवर्तते ॥ १०३ ॥ ते वय प्रमुखे तस्य पुरस्कृत्य शिखण्डि
नम । गाङ्गेय पातयिष्याम उपायेनेति मे मति ॥ १०४ ॥ अहमन्यान्महेष्वासान्वार
यिष्यामि सायकै । शिखण्ड्यपि युधां श्रेष्ठ भीष्ममेवाभियोधयेत् ॥ १०५ ॥ श्रुतहि

तेरेसिवाय आप वज्रधारी इन्द्रभी इस महावली मृत्यु के समान अजेय भीष्म से लड़ने के लिये समर्थ नहीं है इससे तू स्थिरहोकर भीष्मको मार और इस मेरेवचनको सुनकर जैसे कि पूर्वकाल में बड़े बुद्धिमान बृहस्पतिजीने इन्द्र से कहाथा कि अपने मारनेवाले आततायी आनेवालेको मारेचाहे वहगुणोंसे भराहुआ कुलका वृद्धभीहो ।१००। हे अर्जुन युद्धकरना रक्षाकरना दूसरेके गुणोंमें दोषलगानेवालेका पूजन न करना यहक्षत्रियोंका सनातन धर्मचलाआया है, अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी शिखण्डी भीष्मजीका अवश्य कालहोगा क्योंकि भीष्मजी उस पांचालदेशी शिखण्डीको युद्धमें देखकर सदैव लौटजातेहै, इससे हम शिखण्डीको उस के सम्मुख कर के युक्तियों से उस गांगेय भीष्मको युद्धमें अवश्य मारेंगे यह मेरा मतहै, मैं अपने शायकोंसे अन्य बड़े २ धनुषधारियों को रोकूंगा और शिखंडीबड़े युद्धकर्त्ता भीष्मकेही आगे युद्धकोकरे, मैंने उन कौरवेन्द्र भीष्मजी केही मुखसे सुना है कि मैं शिखंडी को नहीं मारूंगा निश्चय यह पूर्व्व समय में कन्या होकर पुरुष बना है,

vajra, can cope in battle with brave Bhishm who is invincible like Death Be therefore steady in killing Bhishm and hear the words which are the same as wise Vrihaspati said to India, 'Kill your enemy who attacks you whether he be full of virtues or the head of your family' 100 Fighting protecting and not giving respect to one who paints a virtuous character black are the old practices of Kshatryas' Arjun said "Shikhandi will surely be cause of Bhishm's death, O Krishn, for Bhishm always turns back from battle at seeing him We shall make Shikhandi to face Bhishm and thus shall kill him with artfulness This is my resolution I shall check the other great archers with my arrows and Shikhandi will be able to fight against Bhishm I have heard it said by Bhishm himself that he would not kill Shikhandi who was tramsformed from womanhood to manhood Thus the Pandavas came to resolution

कुरुमुख्यस्य नाहं हन्यां शिखण्डिनम । कन्या ह्येषापुरा भूत्वा पुरुषः समपद्यत ॥१०६॥ इत्येवं निश्चयं कृत्वा पाण्डवाः सहमाधवाः । अनुमान्य महात्मानं प्रययुर्हृष्टमानसाः ॥१०७॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि नवमदिवसाहारत्तमोमन्त्रे अष्टाधिकशततोऽध्यायः ॥ १०८ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं शिखण्डी गाङ्गेयमभ्यवर्त्तत संयुगे । पाण्डवांश्च कथं भीष्म स्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥१॥ सञ्जय उवाच । ततस्ते पाण्डवाः सर्वे सूर्यस्योदयनंप्रति । ताड्यमानासु भेरीषु मृदङ्गेष्वानकेषु च ॥ २ ॥ ध्मायत्सु दधिवर्णेषु जलजेषु समन्ततः । शिखण्डिनं पुरस्कृत्य निर्याताः पाण्डवायुधि ॥ ३ ॥ कृत्वाव्यूहं महाराज सर्वशत्रु निवर्हणम । शिखण्डी सर्व सैन्यानामग्र आसीद्विशाम्पते ॥ ४ ॥ चक्ररक्षौ ततस्तस्य भीमसेनधनञ्जयौ । पृष्ठतो द्रौपदेयाश्च सौभद्रश्चैव वीर्यवान् ॥५॥ सात्यकिश्चेकितानश्च तेषांगोप्ता महारथः । धृष्टद्युम्नस्ततः पश्चात् पञ्चालैरभिरक्षितः ॥ ६ ॥ ततो युधिष्ठिरो

इस प्रकार से पांडव लोग अपने बांधवों समेत निश्चय करके और महात्माओंका प्रतिष्ठा पूर्वक स्तुति पूजन करके प्रसन्न चित्त अपने २ डेरोंको गये १०७ ॥

अध्याय ॥ १०९ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि शिखंडीनेयुद्धमें किसरीति से गांगेयजीको उल्लंघन किया और भीष्मजीने किसरीति से पांडवोंको उल्लंघन किया है संजय इसको मुझे सम झाकर कहो, संजय बोले कि प्रातःकाल सूर्य्योदयके समय भेरी मृदंग ढोल आदि बाजोंके बजने और चारों ओर से दधिवर्ण शंखों के बजने पर वह सब पांडव शिखंडी को आगे करके युद्ध भूमि में गये,, हे महाराज राजा धृतराष्ट्र सब शत्रुओं के नाश करनेवाले व्यूहको करके सब सेनाओं के आगे शिखण्डी हुआ, इसके पीछे भीमसेन और अर्जुन उसके चक्र के रक्षकहुए और द्रौपदी के बेटे और पराक्रमी अभिमन्यु पीछेकी ओर हुए, फिर सात्यकी चेकितान और उनके

and having paid respect and praises to their elders went cheerfully to their respective camps." 106.

CHAPTER CIX.

How did Shikhandi," asked Dhritrashtra of Sanjaya, "defeat Bhishm the son of Ganga in battle, and how did Bhishm annoy the Pandavas ? Pray tell me all this in detail." "In the morning," said Sanjaya, "the Pandavas led by Shikhandi entered the field of battle and were accompanied by the sounds of trumpets, drums and conchs white as the curds of milk. Having formed an array destructive of enemies, Shikhandi led the army. Bhimsen and Arjun protected the wheels of his chariot; the sons of Draupadi and Abhimanyu were at his back and behind them were Satyaki, Chekitan

राजा यमाभ्यां सहितः प्रभुः । प्रययौ सिंहनादेन नादयन् भरतर्षभ ॥ ७ ॥ विराट
स्तुनतः पश्चात् स्वेन सैन्येन संवृतः । द्रुपदश्च महाबाहो ततः पश्चादुपाद्रवत् ॥ ८ ॥
केकया भ्रातरः पञ्च धृष्टकेतुश्च वीर्यवान् । जघनं पालयामासुः पाण्डुसैन्यस्य भारत
॥ ९ ॥ एवं व्यूह्य महासैन्यं पाण्डवास्तव वाहिनीम् । अभ्यद्रवन्त संग्रामे त्यक्त्वा
जीवितमात्मनः ॥ १० ॥ तथैव कुरवो राजन् भीष्मं कृत्वा महारथम् । अग्रतः
सर्वसैन्यानां प्रययुः पाण्डवान्प्रति ॥ ११ ॥ पुत्रैस्तव दुराधर्षो रक्षितः सुमहाबलैः ।
ततो द्रोणो महेष्वासः पुत्रश्चास्य महाबलः ॥ १२ ॥ भगदत्तस्ततः पश्चाद्गजानी
केन संवृतः । कृपश्च कृतवर्मा च भगदत्तमनुव्रतौ ॥ १३ ॥ काम्बोजराजो बलवांस्तत
पश्चात्सुदक्षिणः । मागधश्च जयत्सेनः सौबलश्च बृहद्बलः ॥ १४ ॥ तथैवान्ये
महेष्वासाः सुशर्मप्रमुखा नृपाः । जघनं पालयामासुस्तव सैन्यस्य भारत ॥ १५ ॥

पीछे पांचाल देशियोंसे रक्षित महारथी धृष्टद्युम्न उनका रक्षक हुआ इसके अनन्तर नकुल सहदेव समेत सबका प्रभु राजा युधिष्ठिर सिंहनादों को करता हुआ चला, उनके पीछे राजा विराट अपनी सेनाको साथ लेकर चला हे महाबाहु उसके पीछे राजा द्रुपद चला, फिर पांचोंभाई केकय और पराक्रमी धृष्टकेतु ने पांडवी सेना के जघनस्थान को रक्षित किया, इस रीतिसे पाण्डव लोग अपने बड़े व्यूह को रच कर और अपने जीवन की आशा को त्याग कर युद्ध भूमि में आपकी सेनाके सम्मुख आये । १० । हे महाराज इसी प्रकारसे कौरव लोगभी सब सेनाओं के आगे महारथी भीष्मको करके पांडवों के सम्मुख गये, वह अजेय भीष्म आपके शूरवीर पुत्रों से रक्षित थे उनके पीछे बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य और उनका महाबली पुत्र था, इस के पीछे हाथियोंकी सेना समेत राजा भगदत्त और इसकी रक्षामें कृपाचार्य्य और कृतवर्मा थे, इसकेपीछे राजा काम्बोज सुदक्षिण जयत्सेन राजा मगध शकुनि और बृहद्बल थे, हे राजाइसीप्रकारसुशर्मा आदि अन्य

and Dhrishtadyumn protected by the Panchal warriors. After them went Yudhishthir the lord of all, roaring like a lion and accompanied by Nakul and Sahadev. Then came the king of Virat together with his armies and was followed by king Drupad. The five Kaikays brothers and Dhrishtaketu protected the rear of the Pandav armies. Thus the Pandavas, having arranged their great army careless of their lives faced your armies 10. In the same manner, O king, the Kaurav armies led by Bhishm faced the Pandavas. The invincible Bhishm was guarded by your sons and behind them were the great archers Dronacharya and his valiant son. Behind them was king Bhagdatta with his army of elephants protected by Kripacharya and Kritvarma. Then came the kings of Combaj, Sudakshin and Jayatsen, the king of Magdh, Shakuni and Brahadval. Susharma and other great archer princes protected the rear. On each day, Bhishm the

दिवसे दिवसे प्राप्ते भीष्मः शान्तनवो युधि । आसुरानकरोद्व्यूहान् पैशाचानथ राक्षसान् ॥ १६ ॥ ततः प्रवृत्ते युद्धं तव तेषाञ्च भारत । अन्योन्यं निघ्नतां राजन् यमराष्ट्रविवर्धनम् ॥ १७ ॥ अर्जुनप्रमुखाः पार्थाः पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । भीष्मं युद्धेऽभ्यवर्तन्त किरन्तो विविधान् शरान् ॥ १८ ॥ तत्र भारत भीमेन ताडितास्तावकाः शरैः । रुधिरौघपरिक्लिन्नाः परलोकं ययुस्तदा ॥ १९ ॥ नकुलः सहदेवश्च सात्यकिश्च महारथः । तव सैन्यं समासाद्य पीडयामासुरोजसा ॥ २० ॥ ते वध्यमाना समरे तावका भरतर्षभ । नाशक्नुवन् वारयितुं पाण्डवानां महद्बलम् ॥ २१ ॥ ततस्तु तावकं सैन्यं वध्यमानं समन्ततः । सम्प्राप्तं दश दिशः काल्यमानं महारथैः ॥ २२ ॥ त्रातारं नाध्यगच्छन्त तावका भरतर्षभ । वध्यमानाः शितैर्बाणैः पाण्डवैः सहसृञ्जयैः ॥ २३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । पीड्यमानं बलं दृष्ट्वा पार्थैर्भीष्मः पराक्रमी । यदकार्षी

बड़े धनुषधारी राजाओंने आपकी सेना के जघनस्थान को रक्षित किया, प्रत्येक दिनके वर्त्तमान होनेपर शन्तनुके पुत्र भीष्मने युद्धके भीतर आसुर पैशाच और राक्षस व्यूहों को अलंकृत किया, हे भरतवंशी उस के पीछे परस्पर में मारतेहुए आप के पुत्रोंका और पाण्डवोंका यमराज के देशकी वृद्धि करनेवाला महाघोरयुद्ध जारीहुआ अर्जुन आदि पांडव शिखंडीको आगेकरके नानाप्रकारके बाणोंकी वर्षा करतेहुए युद्धमें भीष्म के सन्मुख वर्त्तमानहुए, वहां आपके शूरवीर भीमसेनके बाणों से घायल रुधिर में डूबेहुए परलोकको सिधारे, और महारथी सात्यकी और नकुल सहदेवने आपकी सेनाको पाकर अनेकपराक्रमसे पीड़ामान किया॥२०॥हेराजा युद्धमें घायल वह आपके शूरवीर पांडवों की बड़ी सेनाके रोकने को समर्थनहींहुए, फिर आपकी सेना चारों ओर से घायल दशो दिशाओं में पृथक् २ होकर महारथियोंके हाथमें अधिक व्याकुल होकर भागी, हेभरतर्षभ पांडवों के तीक्ष्ण बाणों से घायल सृंजियों समेत आपके शूरवीरों ने कोई अपना रक्षक नहीं पाया, धृतराष्ट्र बोले हे संजय पराक्रमी भीष्मने पांडवों के हाथ से पीड़ामान सेना को देखकर युद्धमें क्रोध

son of Shantanu had formed Asur, Paishach and rakshes arrays. Then there was a severe fighting between your sons and the Pandavas, slaying each other and augmenting the population of Yam's abode. Arjun and other Pandavas led by Shikhandi faced Bhishm with showers of arrows. Your warriors, wounded by the arrows of Bhimsen, went to the region of Yam. Valliant Satyaki, Nakul and Sahadev annoyed your warriors with their arrows. 20. Wounded in battle, your warriors were unable to check the army of the Pandavas Your army wounded on all sides, dispersed in different diractions and ran away much wounded. Wounded by the sharp arrows of the Pandavas and the Srinjayas your warriors could find no propector." " Tell me Sanjaya, all that valliant Bhishm did at seeing his army

द्रणे कुद्धस्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ २४ ॥ कथंवा पाण्डवान्युद्धे प्रत्युद्यात परन्तप । विनिघ्नन् सोमकान् वीरस्तदाचक्ष्व ममानघ ॥ २५ ॥ सञ्जय उवाच । आचक्षे ते महाराज यत्कार्षीत् पितातव । पीडिते तव पुत्रस्य सैन्ये पाण्डवसृञ्जयैः ।२६॥ प्रहृष्टमनसः शूरा पाण्डवा पाण्डुपूर्वज । अभ्यवर्तन्त निघ्नन्तस्तव पुत्रस्यवाहिनीम् ॥ २७ ॥ तं विनाशं मनुष्येन्द्र नरवारणवाजिनाम् । नामृष्यत तदा भीष्मः सैन्यघात रणे परे । २८ । स पाण्डवान् महेष्वास पञ्चालाश्चैव सृञ्जयान् । नाराचैर्वत्स दन्तैश्च शितैरञ्जलिकैस्तथा ॥ २९ ॥ अभ्यवर्षत दुर्धर्षस्त्यक्त्वा जीवितमात्मनः । स पाण्डवानां प्रवरान् पञ्च राजन् महारथान् ॥ ३० ॥ आत्तशस्त्रो रणे यत्नाद्वा रयामास सायकैः । नानाशस्त्रास्त्रवर्षैस्तान् वीर्य्यामर्षप्रचोदितैः ॥ ३१ ॥ निजघ्ने समरे क्रुद्धो हस्त्यश्वं चामितं बहु । रथिनोऽपातयद्राजन् रथेभ्य पुरुषर्षभ ॥ ३२ ॥ सादि

रूप होकर जो २ किया उसको मुझसे कहो, वह शत्रु सन्तापी वीर सोमकों को मारता हुआ युद्ध में कैसे पाण्डवों के सम्मुख गया उसको भी हे निष्पाप मुझ से वर्णनकर, संजय बोले कि हेमहाराज जो पाण्डवोंसे और सृंजियोंसे पीड़ित आपकी सेनाको देखकर जो २ आपके पिताने किया उसको मैं कहता हूं, हे पांडुके बड़े भाई वह अत्यन्त प्रसन्नचित्त शूर पाण्डव आपकेपुत्रकी सेनाको मारते हुए सम्मुख वर्त्तमान हुए, तब भीष्मजीने शत्रुओंके हाथ से पीड़ित मनुष्य हाथी घोड़ों के नाश को देखकर नहीं सहा, और उस बड़े धनुषधारी अजेयने अपने जीवनको त्याग करके वत्सदन्त अंजलिक सत नाम बाणों से पाडवों के ऊपर वर्षा करी हे राजा उस शस्त्र उठानेवालेने युक्ति से पाण्डवोंके अत्यन्त प्रबल पांच महारथियों को शायक नाम बाणों से वा नानाप्रकार के क्रोध से छोड़े हुए अस्त्रों से रोका ।३१। हे पुरुषोत्तम इसके विशेष उन्होंने असंख्य हाथी घोड़े और रथ से रथियों को भी गिराया शत्रुओंके विजय करनेवाले घोड़े के सवारों को घोड़ों की पीठसे और

wounded by the Pandavas," asked Dhritrashtra, "how did he slay the Somaks and face the Pandavas. Give a detailed account of all this, innocent one." "O king," replied Sanjaya "I shall tell you all that your father did at seeing your armies wounded by the Pandavas and the Srinjayas. The cheerful Pandavas, O elder brother of Pandu, faced him with a severe slaughter of the armies of your son Bhishm could not bear the destruction of men, elephants and horses by the enemies and the invincible archer not caring for his life, showered on them his arrows known as Vatsdant and Anjalik That great warrior checked the five valliant Pandavas with sharp arrows and other weapons discharged in anger 31. Besides this, he felled many warriors from their elephants, horses and chariots He struck down the great horsemen from their horses, the elephant riders from the

नश्चाश्वपृष्ठेभ्यः पादातांश्च समागतान् ॥ ३३ ॥ गजारोहान् गजेभ्यश्च परेषां जय कारिण. । तमेक समरे भीष्मं त्वरमाणं महारथम् ॥ ३४ ॥ पाण्डवाः समवर्त्तन्त वज्रहस्तमिवासुराः । शक्राशनिसमस्पर्शान् विमुचञ्छिशिताञ्छरान् ॥ ३५ ॥ दिक्ष्वदृश्यत सर्वासु घोरं सन्धारयन् वपुः । मण्डलीभूतमेवास्य नित्यं धनुरदृश्यत ॥ ३६ ॥ संग्रामे युध्यमानस्य शक्रचापोपमं महत् । तद्दृष्ट्वा समरे कर्म पुत्रास्तव विशाम्पते ॥३७॥ विस्मयं परमं गत्वा पितामहमपूजयन् । पार्था विमनसो भूत्वा प्रैक्षन्त पितरंतव३८ युध्यमानं रणेशूरं विप्रचित्तिमिवामराः । न चैनं वारयामासुर्व्यात्ताननमिवान्तकम ॥ ३९ ॥ दशमेहनि संप्राप्ते रथानीकं शिखण्डिनः । अदहन्निशितैर्बाणैः कृष्णवर्त्मेव काननम ॥ ४० ॥ तं शिखण्डी त्रिभिर्बाणैरभ्यविध्यत्स्तनान्तरे । आशीविषमिव क्रुद्धं कालसृष्टमिवान्तकम ॥ ४१ ॥ सतेनातिभृशं विद्धः प्रेक्ष्य भीष्मः शिखण्डिनम ।

हाथी के सवारों को हाथीकी पीठ से और सम्मुख आनेवाले पदातियोंको भी गिराया, फिर युद्धमें शीघ्रता करनेवाले महारथी अकेले भीष्मके सम्मुख पांडव लोग ऐसेहुए जैसे कि असुर लोग वज्रधारी इन्द्रके सम्मुख हुए थे, वहां इन्द्र वज्र के समान बाणों को छोड़तेहुए भीष्मजी सब दिशाओं में महा भयानक रूप को करते हुए दृष्ट पड़े और इनका धनुषभी इन्द्र धनुष के समान मंडल रूप दृष्टगोचर हुआ हे राजा आपके पुत्रों ने युद्धमें उस कर्म को देखकर बड़े आश्चर्य्य में होके पितामहकी प्रशंसा करी, और पाण्डवोंने उदासहोकर युद्धमें लड़तेहुए आपके शूर पिता को ऐसा देखा जैसे असुर लोगोंने विप्रचित्ती को देखा था, दशवें दिन के वर्त्तमान होने पर इस मृत्युके समान भीष्मको शिखंडीकी रथवाली सेनाने नहीं रोका, जैसे कि अग्नि वनको जलाता है उसी प्रकार शिखंडी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से सेना को भस्मकरके अपने तीन बाणोंसे उसकी छातीको घायल किया । ४० । जो कि कालपुरुषकी उत्पन्न की हुई मृत्यु और डाढ़में विष धारण करने वाले सर्पकी

back of elephants and the foot soldiers facing him in battle. Bhishm of great dexterty in battle alone harrassed all the Pandavas as Indra the wielder of vajra had done to the asurs. Discharging his arrows like the vajra of Indra, Bhishma's dreadful form was seen in all directions and his bow was seen moving in a circle like Indra's bow. Your sons, O king, wondered at and praised his work in the field of battle, while the Pandavas looked sorrowfully at your brave father fighting his battle as the asurs had done at the sight of Viprachitti. On the tenth day Shikhahdi's charioteers could not check Bhishm like death. As fire burns a forest, so did Shikhandi consume your army with his arrows and pierced him with three arrows in the breast 40. Like the death caused by the god of death and enraged like a venomous serpent, brave Bhishm finding himself wounded by Shi-

अनिच्छन्निव संक्रुद्धः प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ ४२ ॥ काममभ्यस वा मा वा न त्वां योत्स्ये कथञ्चन । यैव हि त्वं कृता धात्रा सैव हि त्वं शिखण्डिनी ॥ ४३ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा शिखण्डी क्रोधमूर्च्छितः । उवाचैनं तथा भीष्मं सृक्किणी परिसंलिहन् ॥ ४४ ॥ जानामित्वा महाबाहो क्षत्रियाणां भयङ्करम् । मया श्रुतञ्च ते युद्धं जामदग्न्येन वैसह ॥ ४५ ॥ दिव्यश्च ते प्रभावोयं मयाच बहुश श्रुतः । जानन्नपि प्रभावन्ते योत्स्येद्याहं त्वयासह ॥ ४६ ॥ पाण्डवानां प्रियं कुर्वन्नात्मनश्च नरोत्तम । अद्यत्वां योधयिष्यामि रणे पुरुषसत्तम ॥ ४७ ॥ ध्रुवञ्चत्वां हनिष्यामि शपे सत्येन ते ग्रतः । एतच्छ्रुत्वा च मद्वाक्यं यत् कृत्यं तत् समाचर ॥ ४८ ॥ काममभ्यस वामा वा नमे जीवन् प्रमोक्ष्यसे । सुदृष्ट क्रियतां भीष्म लोकोयं समितिञ्जय ॥ ४९ ॥

समान क्रोधी महाबली भीष्मथे वह महाधनुर्धारी अपनेको शिखंडीसे घायल देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धको न चाहकर हँसते हुए यह वचन बोले कि तू इच्छाके समान युद्धकर चाहै न कर परन्तु मैं किसी प्रकार से भी तुझ से नहीं लडूंगा, क्योंकि निश्चय करके ईश्वरसे उत्पन्न कीहुई तू वही शिखंडिनी है भीष्मके इस वचन को सुनकर क्रोध में भराहुआ शिखण्डी होठोंको चबाता हुआ भीष्म जीसे बोला कि हेमहाबाहु क्षत्रियों के नाशकरने वाले मैं तुझको जानताहूं, और तेरा परशुरामजीके साथ युद्धकरना भी सुना और बहुतसा तेरा दिव्य प्रभाव सुना, हे नरोत्तम अब मै तेरे प्रभावको जानताहुआ भी पाण्डवोंके और अपने प्रयोजनको सिद्ध करनेके निमित्त तुझसे लडूंगा, और युद्ध में संग्राम करके अवश्य तुझको मारूंगा यहतेरे आगे सत्य २ शपथ करताहूं, मेरे इस वचन को सुन कर जो तुझे करना उचितहो उसे अवश्यकर इच्छाके अनुसार चाहै युद्धकर या न कर तू मेरे हाथ से जीवता न छूटेगा, हे युद्ध में विजय करने वाले भीष्म तुम इसलोकको अच्छी रीति से प्रसन्नकरो, संजय बोले कि ऐसे २ वचनरूपी बाणों से अत्यन्त विदीर्ण हृदय करके झुकी हुई गांठवाले

khandi, was much enraged, yet not liking to fight against him, he said with a smile:— "I shall not discharge my weapons on you whether you do so or not; for surely thou art Shikhandini a girl produced by God" At this Shikhandi bit his lips in anger and said, "Brave Bhishm, destroyer of foes, I know you, I have heard of your battle with Parashuram and of your great fame Knowing all this, I shall fight with you for the sake of the Pandavas and for my sake. I shall surely kill you in battle, I make a true vow and swear in your presence. Do what you like after hearing this from me. Whether you fight or not, I shall not spare your life. Make the people of this world happy, Bhishm the conquerer !" Sanjaya continued that having wounded Bhishm's heart with his taunts, Shikandi

सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा ततो भीष्मं पञ्चाभिर्नतपर्वभिः । अविध्यत रणे भीष्मं प्रगुन्नं वाक्यसायकं ॥ ५० ॥ तस्यतद्वचनं श्रुत्वा सव्यसाची महारथः । कालो यमिति सञ्चिन्त्य शिखण्डिनमचोदयत् ॥ ५१ ॥ अहंत्वामनुयास्यामि परान् विद्राव यन्शरैः । अभिद्रव सुसंरब्धो भीष्मं भीमपराक्रमम् ॥ ५२ ॥ न हि ते संयुगे पीडां शक्तः कर्तुं महाबलः । तस्मादद्य महाबाहो यत्नो भीष्ममभिद्रव ॥ ५३ ॥ अहत्वासमरे भीष्मं यदि यास्यसि मारिष । अवहास्योस्य लोकस्य भविष्यसि मया सह ॥ ५४ ॥ नावहास्या यथावीर भवे मपरमाहवे । तथा कुरु रणे यत्नं साधयस्व पितामहम् ॥ ५५ ॥ अहन्ते रक्षण युद्धे करिष्यामि महाबल । वारयन् रथिनः सर्वान् साधयस्वपितामहम् ॥ ५६ ॥ द्रोणञ्च द्रोणपुत्रञ्च कृपञ्चाथसुयोधनम् । चित्रसेनं विकर्णञ्च सैन्धवञ्च जयद्रथम् ॥ ५७ ॥ विन्दानुविन्दावावन्त्यौ काम्बोजञ्चसुदक्षिणम् । भगदत्तं तथाशूरं मागधञ्चमहाबलम् ॥ ५८ ॥ सौमदत्तिंतथा शूरमार्ष्य

पांच बाणों से युद्ध भूमि में भीष्मजी को घायल किया, फिर महारथी अर्जुन ने उनके इनवचनों को सुनकर यहविचार किया कि अब यही समय है ऐसाजानकर शिखंडीको प्रेरणाकरी । ५० । और कहा कि मैं शत्रुओंको बाणोंसे हटाताहुआ तेरेपीछेरहूंगा तुमअत्यंतक्रोधित होकर उसभयानक बलरूपवाले भीष्म के सम्मुख जाओ, यहमहाबली युद्धमें तेरे पीड़ा देनेको समर्थ नहीं है इसहेतुसे हे महाबाहो अब युक्ति पूर्वक भीष्मके सम्मुखजाओ हे शिखंडी जो तू भीष्मको बिनामारेहुए युद्धमे जायगा तो मेरी और तेरीदोनों की इसलोक में हँसीहोगी, हे वीर जैसे इस लोकमें हमारी तुम्हारी हँसी न होय वही तुमको युद्धमें उपायकरना योग्य है, हे महाबली मैं सब रथियोंको रोकताहुआ युद्ध में तेरी सहायता करूंगा तुम अवश्य पितामहको विजयकरो, मैं द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा कृपाचार्य्य दुर्य्योधन चित्र सेन विकर्ण जयद्रथ सिन्धका राजा विन्द अनुविन्द और अवन्ति देशके राजा

pierced him with five arrows having knots. Arjun heard Shikhandi's words and knowing that it was the time for action, instigated him to go on. 50. He said, "I shall disperse the enemies fighting from behind you; you may with much force face Bhishm of dreadful form and strength. This valliant man is unable to give you truble in battle; therefore, O brave warriors, attack Bhishm carefully. Both you and I will be laughed at by the world, if you will return from the field of battle without killing him. You should so act today in the field of battle that you and I may not be laughed at. I shall help you, brave man by checking all the charioteers and you are sure to conquer the grandfather, As the coast checks the waters of the Ocean, I shall check Dronacharya, Ashwathama, Kripacharya, Duryodhan, Chitrasen, Vikarn, Jayadrath the king of Sindh, Vind and

शृङ्गिश्च राक्षसम । त्रिगर्त्तराजश्च रणे सह सर्वैर्महारथैः ॥५९॥ अहमावारयिष्यामि वेलव मकरालयम । कुरूंश्च सहितान् सर्वान् युध्यमानान् महाबलान् । निवारयिष्यामि रणे साधयस्व पितामहम ॥ ६० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दशमदिवसयुद्धारम्भ भीष्मशिखण्डिप्रलापे नवाधिकशततोऽध्यायः ॥ १०९ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं शिखण्डी गाङ्गेय मभ्यधावत् पितामहम । पाञ्चाल्य समरे क्रुद्धो धर्मात्मानं यतव्रतम ॥ १ ॥ केऽरक्षन् पाण्डवानीके शिखण्डिनमुदायुधाः । त्वरमाणास्त्वराकाले जिगीषन्तो महारथाः ॥ २ ॥ कथं शान्तनवो भीष्म स तस्मिन् दशमेहनि । अयुध्यत महावीर्य पांडवैः सहसृञ्जयैः ॥३॥ न मृष्यामि रणे भीष्मं प्रत्युद्यातं शिखण्डिनम । कश्चिन्नरथभङ्गोस्य धनुर्वाशीर्यतास्यतः ॥४॥ सञ्जय उवाच । नाशीयत

काम्बोज सुदक्षिण शूर भगदत्त महाबली राजामगध सोमदत्ति राक्षसोंके राजा आर्य्य शृङ्ग और त्रिगर्त इनसबको सब महारथियोंसमेत युद्धमें ऐसे रोकूंगा जैसे कि किनारा या समुद्रकी मर्य्यादा समुद्रको रोकतेहैं मैं सब सेना से लड़ताहुआ महाबली कौरवों को हटाऊंगा तुम पितामह को विजयकरो ६० ॥

अध्याय ११० ॥

धृतराष्ट्र बोले कि युद्ध में क्रोधयुक्त पांचालदेशी शिखंडी किसरीति से उस धर्मात्मा सावधान व्रत गांगेय भीष्मपितामह के सम्मुखदौड़ा । १ । पांडवों की सेनामें युद्ध के समय कौन,कौन से शस्त्रधारी विजयाभिलाषी शीघ्रताकरनेवाले महारथियोंने शिखंडी की रक्षाकरी, और वहशान्तनुके पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्म उस दशवें दिनमें पांडव और सृंजियों से कैसे २ युद्ध करनेवाले हुए मैं युद्धमें शिखंडी को भीष्मजी के सम्मुख जातेहुए शान्ती को नहीं पाताहूं अर्थात् सहनहीं सक्ताहूं चाहे इन भीष्म जीका रथ टूटगया वा खैंचते २ धनुष के खण्ड भी होगयेहों परन्तु तौभी शिखण्डी

Anuviud the princes of Avanti, Camboj, Sudakshin, valliant Bhagdatta, brave king of Magadh, Somdatti, Aryashring the prince of rakshases and Trigart. Fighting against all the army, I shall push back the Kauravas, you may conquer the grandfather." 59.

CHAPTER CX

"How did Shikhandi of Panchal, enraged in battle, rush upon Bhishm the son of Ganga of true vows," asked Dhritrashtra of Sanjaya, "and which of the Pandav warriors, desirous of victory, hastened to protect the former. How did Shantanu's son Bhishm of true prowess, fight against the Pandavas and the Srinjayas on the tenth day? I can ill bear the news of Shikhandi going against Bhishm. Shikhandi could not withstand him even when Bhishm's chariot and bow were broken into pieces." "O best of Bharats,"

धनुश्चास्य रथमङ्गो न चाप्यभूत् । युध्यमानस्य संग्रामे भीष्मस्य भरतर्षभ ॥ ५ ॥ निघ्नतः समरे शत्रून् शरैः सन्नतपर्वभिः । अनेकशतसाहस्रास्तावकानां महारथाः ॥ ६ ॥ तथा दन्तिगणा राजन् हयाश्चैव सुसज्जिताः । अभ्यवर्त्तन्त युद्धाय पुरस्कृत्य पितामहम् ॥ ७ ॥ यथाप्रतिज्ञं कौरव्य स चापि समितिञ्जयः । पार्थानामकरोद्भीष्मः सततं समितिक्षयम् ॥ ८ ॥ युध्यमानं महेष्वासं विनिघ्नन्तं परान् शरैः । पाञ्चालाः पाण्डवैः सार्द्धं सर्वे ते नाभ्यवारयन् ॥ ९ ॥ दशमेऽहनि सम्प्राप्ते ततस्तां रिपुवाहिनीम् । कीर्य्यमाणां शितैर्बाणैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १० ॥ न हि भीष्मं महेष्वासं पाण्डवाः पाण्डुपूर्वज । अशक्नुवन् रणे जेतुं पाशहस्तमिवान्तकम् ॥ ११ ॥ अथोपायान्महाराज सव्यसाची धनञ्जयः । त्रासयन् रथिनः सर्वान् बीभत्सुरपराजितः ॥ १२ ॥ सिंहवद्विनदन्नुच्चैर्धनुर्ज्यां विक्षिपन्मुहुः । शरौघान् विसृजन् पार्थो व्यचरत् कालवद्रणे

की सामर्थ्य न थी जो उन के सम्मुख जासके, संजयबोले कि हे भरतर्षभ युद्धमें लड़ते और गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से शत्रुओं को मारने में इस भीष्मका न धनुष टूटा न रथ खंडितहुआ हे राजा आपके पुत्रोंकेलाखों महारथी, और हजारोंही अलंकृत हाथी घोड़े पितामह को आगेकरके युद्धकरनेके लिये सम्मुख वर्त्तमानहुए, उसयुद्ध में भी सत्य प्रतिज्ञ भीष्मजी ने अपने प्रणके अनुसार पांडवोंकी सेनाका वारंवार नाश किया, फिर पांडवों समेत उनसब पांचालदेशियों ने बाणों से बड़े २ शत्रुओं के मारनेवाले युद्धमें प्रवृत्त धनुषधारी भीष्मको क्षमा न किया फिर दशवें दिनके वर्त्तमान होनेपर शिखंडी आदि हजारों शत्रुओंको सेनासमेत बाणोंसे पृथक् करदिया ॥ १० ॥ हे राजा युद्धमें पांडवलोग बड़े धनुषधारी भीष्मजी के विजय करनेको ऐसे नहीं समर्थहुए जैसे कि पाशधारी यमराजके विजयकरनेको कोई समर्थ नहीं, इसके पीछे सव्यसाची बाण फेंकनेवाला अर्थात् बायेंहाथसे भी बाण चलानेवाला सर्वसंसारी धन का जीतनेवाला अजेय अर्जुन सब रथियोंको भयभीत करताहुआ सम्मुख आया, वह अर्जुन सिंहकेसमान ऊंचे स्वरसे गर्जना करके प्रत्यंचाको वारंवार खैंचता और बाणोंकी

said Sanjaya in reply. "Bhishm's bow was not broken when he was discharging arrows to kill the enemies, nor was his chariot broken. Millions of your son's warriors and thousands of well decked elephants and horses followed the grandfather to do battle. In that battle too, Bhishm of true vows again and again destroyed the armies of the Pandavas. *But the Pandavas and the Panchals did not spare Bhishm* the destroyer of enemies having sharp arrows On the tenth day of battle he dispersed thousands of the enemies, Shikhandi and others together with their armies. 10. The Pandavas could not conquer in battle the *great* archer Bhishm like Yam the bearer of noose. Then invincible Arjun the conqueror of wealth who could discharge arrows with both hands, came to the front terrifying the warriors. Roaring like a lion, twanging his bowstring again and again, and *showering*

॥ १३ ॥ तस्य शब्देन वित्रस्तास्तावका भरतर्षभ । सिंहस्येव मृगाराजन् व्यद्रवन्त महाभयात् ॥ १४ ॥ जयन्तं पाण्डवं दृष्ट्वा तद् सैन्यञ्चाभिपीडितम् । दुर्य्योधनस्ततो भीष्ममब्रवीद् भयपीडितः ॥ १५ ॥ एषपाण्डुसुतस्तात श्वेताश्व कृष्णसारथिः । दहते मामकान्सर्वान् कृष्णवर्त्मेव काननम् । १६ ॥ पश्य सैन्यानि गाङ्गेय द्रवमाणानि सर्वशः । पाण्डवेन युधांश्रेष्ठ काल्यमानानि संयुगे १७ ॥ यथा पशुगणान् पाल सङ्कालयति कानने । तथेद मामकं सैन्य काल्यते शत्रुतापन ॥ १८ । धनञ्जयशरै र्भग्न द्रवमाण ततस्ततः । भीमोप्येव दुराधर्षो विद्रावयति मे बलम् ॥ १९ ॥ सात्य किश्चेकितानश्च माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । अभिमन्यु सुविक्रान्तो, वाहिनीं द्रवतेममर० धृष्टद्युम्नस्तथा शूरो राक्षसश्च घटोत्कचः । व्यद्रावयेतां सहसा सैन्यं ममममहारणे ॥ २१ ॥ वध्यमानस्य सैन्यस्य, सर्वैरेतैर्महारथैः । नान्याङ्गतिम्प्रपश्यामि स्थाने

वर्षा करताहुआ, युद्धमें काल के समान आकर विचरताहुआ, हे राजा आपके शूरवीर उसके शब्दसेही भयभीतहोकर बड़ीभयातुरतासे ऐसेभागे जैसेकि सिंहके शब्दसे मृग भागते है फिर विजय करनेवाले पाण्डवों को और आपकी पीड़ामान् सेनाको देख कर अत्यन्त दुखी दुर्योधन भीष्मजीसेबोला, हे तात यह श्वेत घोड़ेवालाश्रीकृष्णजी को सारथीरखनेवाला पांडव अर्जुन मेरे सब शूरवीरों को ऐसे भस्मकिये डालताहै जैसे अग्नि वनको भस्मकरता है हे गांगेयभीष्मजी पांडवके हाथसे सबप्रकारसे छिन्न भिन्न युद्धसे भागीहुई सेनाओंको देखो, जैसे कि वनमें गाय चराने वाला सब पशुओंके समूहोंको पृथक् २ कर के हांकता है इसी प्रकार यह शत्रुसंतापी मेरी सेनाको हांक छिन्नभिन्न करता है, अर्जुन के बाणोंसे विदीर्ण जहां तहां से भागी हुई मेरी सेनाको महादुर्जय भीमसेनभी वैसेही भगाता है, और सात्यकी चेकितान वा माद्री के पुत्र दोनों नकुल सहदेव और बड़ावली अभिमन्युयह सब मेरी सेनाको भगारहे हैं । २० । इसी प्रकार शूरवीर धृष्टद्युम्न और घटोत्कच राक्षसनेभी मेरी सेनाको भगायाहै, हे भरतर्षभ देवताओंके समान बल रखनेवाले आपके सिवाय इन

his arrows, he roamed in the field of battle like Yam Your warriors, O king, were terrified at his sound and ran away in terror as a flock of deer does at the roar of a lion Then seeing the Pandavas conquering and his army distressed, Duryodhan said to Bhishm—"Father, this Arjun the Pandav possessor of white horses, having Krishn for the driver, burns down all the warriors as fire burns a forest. Do you see, son of Ganga, our armies dispersed by the Pandav like a herd of cows driven by the herdsman Wounded by Arjun's arrows and driven away in all directions, my armies are defeated by invincible Bhim en Satyaki, Chekitan, the two sons of Madri—Nakul and Sahadev, and valliant Abhimanyu are all putting my armies to flight 20 In the same manner, valliant Dhrishtadyumn and Ghatotkach the rakshas have caused the flight of my armies O

युद्धे च भारत ॥ २२ ॥ ऋते त्वां पुरुषव्याघ्र देवतुल्यपराक्रम । पर्य्याप्तस्तु महान् शीघ्रं पीडितानां गतिर्भव ॥ २३ ॥ एवमुक्तो महाराज पिता देवव्रतस्तव । चिन्तयित्वा मुहूर्त्तन्तु कृत्वा निश्चयमात्मनः ॥ २४ ॥ तवसन्धारे यन् पुत्रमर्व्वीच्छान्तनोः सुतः । दुर्य्योधन विजानीहि स्थिरो भूत्वा विशाम्पते ॥ २५ ॥ पूर्वं काले तव मया प्रतिज्ञातं महाबल । हत्वा दशसहस्राणि क्षत्रियाणां महात्मनाम् ॥ २६ ॥ संग्रामाद्व्यपयातव्य मेतत् कर्म ममाह्निकम् । इति तत् कृतवांश्चाहं यथोक्तं भरतर्षभ ॥ २७ ॥ अद्य चापि महत् कर्म प्रकरिष्ये महाबल । अहं वाद्यहतः शेष्ये हनिष्ये वाद्य पाण्डवान् ॥ २८॥ अद्य ते पुरुषव्याघ्र प्रतिमोक्ष्ये ऋणन्तव । भर्तृपिण्डकृतं राजन् निहतः पृतनामुखे ॥२९॥ इत्युक्त्वा भरतश्रेष्ठ क्षत्रियान् प्रवपञ्छरैः । आससाद दुराधर्षः पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ ३० ॥ अनीकमध्ये तिष्ठन्तं गाङ्गेयं भरतर्षभ । आशीविषमिव क्रुद्धं पाण्डवाः प्रत्यवारयन् ॥ ३१ ॥

महारथियों से घायल हुई सेनाका कहीं कोई आश्रय नहीं दिखाई देता है हे पुरुषोत्तम आप समर्थ हैं इससे शीघ्रही इन महादुखियों के आश्रय हूजिये हेराजा इस प्रकारसे कहेहुए आपके पिता देवव्रत भीष्मजी एक मुहूर्त्त तक शोचमें मग्नहो अपने निश्चयको करके, आपके पुत्र से मिलकर बोले कि हे राजा दुर्योधन तुम स्थिर बुद्धि से समझो, हेमहाबली मैंने पूर्वसमयमें तुमसे वचन पूर्वक प्रण कियाथा कि दश हजार महात्मा क्षत्रियों को मारकर, युद्धसे पृथक् हूंगा, यह मेरामतिदिनका कर्म है सो हे दुर्योधन मैंने अपने वचनके अनुसार उसको पूराकिया, और अबभी बड़े कर्मको करूंगा अर्थात् मैं मृतकहोकर शयन करूंगा अथवा पाण्डवोंको मारूंगा हेराजा अब मैं स्वामी के ऋण से निवृत्त होकर सेनाके मुखपर मृतकहोकर तेरेऋण को चुकाऊंगा, यह कहकर क्षत्रियोंको बाणों से आच्छादित करते हुए अजेय भीष्म ने पाण्डवों की सेनाको सम्मुख पाया ।३०। हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उस सेना में नियत सर्पके समान क्रोधरूप गांगेय भीष्मजी को पाण्डवों ने युद्धभूमि में आकर रोका,

best of Bharats, possessor of godlike strength, I see no refuge for my wounded warriors except yourself. You have the power, best of men, protect therefore these distressed soldiers at once." Thus addressed, O king, your father Devabrat Bhishm remained plunged in thought for a short time, and then having formed a resolution in his mind, he *said to your son*—"*Hear attentively, Prince Duryodhan.* I have already given you word, mighty one, that I shall leave the field of battle after slaying ten thousand warriors. This is my daily work and I have been doing it according to my promise. *I shall do it* again. I shall lie down dead or shall destroy the Pandavas. I shall now die at the entrance of the army after having satisfied the debt which I owe you as my master." Thus saying, he covered the warriors who encountered him with the shower of his arrows 30. O best

दशमेहनि भीष्मस्तु दर्शयन् शक्तिमात्मनः । राजन् शतसहस्राणि सोवधीत् कुरु नन्दन ॥ ३२ ॥ पञ्चालानाञ्च ये श्रेष्ठा राजपुत्रा महारथाः । तेषामादत्त तेजांसि जलं सूर्य्य इवांशुभिः ॥ ३३ ॥ हत्वा दशसहस्राणि कुञ्जराणां तरस्विनाम् । सारोहाणां महाराज हयानाञ्चायुतन्तथा ॥ ३४ ॥ पूर्णे शतसहस्रे द्वे पादातानांनरोत्तम । प्रजज्वाल रणे भीष्मो विधूम इव पावकः ॥ ३५ ॥ न चैव पाण्डवेयानां केचिच्छेकुर्निरीक्षितुम् । उत्तर मार्गमास्थाय तपन्तमिव भास्करम् ॥ ३६ ॥ ते पाण्डवेयाः संरब्धा महेष्वासेन पीडिताः । वधायाभ्यद्रवन् भीष्मं सृञ्जयाश्च महारथाः ॥ ३७ ॥ संयुध्यमानो बहुभिर्भीष्मः शान्तनवस्तथा । अवकीर्णो महामेरुः शैलो मेघैरिवावृत. ॥ ३८ ॥ पुत्रास्तु तव गाङ्गेयं समन्तात् पर्य्यवारयन् । महत्या सेनया सार्द्धं ततो युद्धमवर्त्तत ॥ ३९ ॥

इति श्री महाभाते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दुर्य्योधनभीष्म संवादे दशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११० ॥

हे धृतराष्ट्र दशवें दिन अपनी सामर्थ्य को दिखाते हुये उस भीष्म पितामह नेलाखों कोही मारडाला, पांचाल देशियों में जो श्रेष्ठ और महारथी राजकुमार थे उनके पंजों को ऐसे ऐंचलिया जैसेकि सूर्य्य अपनी किरणों से जलको खैंचता है, हे महाराज दशहजार शीघ्रगामी हाथियोंको और इतनेही सवारों समेत घोड़ोंको मारा पूरे एक लाख पदातियों के मरने पर भीष्मजी युद्ध में ऐसे क्रोधयुक्त हुए जैसे निर्धूम अग्नि होताहै, पाण्डवों के शूरवीरों में से कोई भी इस सूर्य्य समान संतप्त करनेवाले भीष्म के सम्मुख देखने को समर्थ नहीं हुआ, तब उस युद्ध में बड़े धनुषधारी से पीड़ामान् पाण्डवों के वह शूरवीर महारथी संजय भीष्म के मारने के निमित्त सम्मुख गये और जैसे कि बड़ा मेरु पर्व्वत बादलोंसमेत जाताहै वैसेही शंतनु के पुत्र भीष्मभी अच्छे २ शूरवीरों समेत रक्षित होकर चले, फिर आपके पुत्रों ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित किया और युद्धजारी हुआ । ३९ ।

of Bharats, standing in the midst of the army like an angry serpent the son of Ganga was checked by the Pandavas. Showing his prowess on that tenth day, the grandfather slew thousands of warriors He drew the energy out of the Panchal warriors as the sun with his rays draws out water. Having killed ten thousands of swift goiug elephants, ten thousands of horses together with their riders and a hundred thousand foot soldiers, Bhishm was enraged in battle like smokeless fire. None of the Pandav warriors could look at Bhishma's face glorious like the sun. Wounded by that great archer, the Pandav and Srinjaya warriors faced Bhishm in order to slay him. Like the huge Meru hill covered by clouds, Bhishm protected by good warriors, advanced. Your sons with a large army protected him and the battle continued."39.

सञ्जय उवाच । अर्जुनस्तु रणे राजन् दृष्ट्वा भीष्मस्य विक्रमम् । शिखण्डिन मथोवाच समभ्येहि पितामहम् ॥ १ ॥ न चापि भीस्त्वया कार्य्या भीष्माद्य कथ ञ्चन । अहमेनं शरैस्तीक्ष्णैः पातयिष्ये रथोत्तमात् ॥ २ ॥ एवमुक्तस्तु पार्थेन शिखण्डी भरतर्षभ । अभ्यद्रवत गाङ्गेयं श्रुत्वा पार्थस्य भाषितम् ॥ ३ ॥ धृष्टद्युम्न स्तथा राजन् सौभद्रश्च महारथः । हृष्टावाद्रवतां भीष्मं श्रुत्वा पार्थस्य भाषितम् ॥ ४ ॥ विराटद्रुपदौ वृद्धौ कुन्तिभोजश्च दंशितः । अभ्यद्रवत गाङ्गेयं पुत्रस्य तव पश्यतः ॥ ५ ॥ नकुलः सहदेवश्च धर्मराजश्च वीर्य्यवान् । तथेतराणि सैन्यानि सर्वाण्येव विशाम्पते ।६॥समाद्रवन्त गांगेय श्रुत्वापार्थस्यभाषितम् प्रत्युद्य युस्तावकाश्च समेतांस्तान्महारथान् ॥७॥ यथाशक्ति यथोत्साहं तन्मेनिगदतःश्रृणु । चित्रसेनो महा राज चेकितानं समभ्ययात् ॥ ८ ॥ भीष्मप्रेप्सुं रणेयान्तं वृषं व्याघ्रशिशुर्यथा । धृष्ट

अध्याय ॥ १११ ॥

संजय बोले कि हे राजा फिर अर्जुन युद्धमें भीष्मके पराक्रमको देखकर शिख-ण्डी से बोला कि तुम पितामह के सम्मुख होजाओ, अब तुम भीष्मजी से किसी प्रकारका भय मत करो मैं इन भीष्मजी को अपने उत्तम बाणों के द्वारा रथसे गिराऊंगा हे राजा अर्जुन के ऐसे वचनको सुनकर वह शिखण्डी भीष्म के सम्मुख गया, और इसी प्रकार धृष्टद्युम्न और महारथी अभिमन्यु यह दोनोंभी अर्जुन के वचनों से प्रसन्न चित्त होकर भीष्मजी के सम्मुख गये, विराट और द्रुपद यह दोनों वृद्ध और शस्त्रों से अलंकृत राजा कुन्तभोज यह तीनों आपके पुत्रके देखते हुए भीष्मके सम्मुख गये, और नकुल सहदेव और पराक्रमी धर्मराज युधिष्ठिर और अन्य सब सेनाके लोगभी उनके सम्मुख गये, उससमय नकुल और सहदेव दोनों अर्जुनके वचनोंको सुनकर आपके पुत्र के देखते हुए भीष्मके सम्मुख दौड़े, फिर आप के शूरवीरभी अपनासामर्थ्य और साहस के द्वारा उन इकट्ठेहुए महारथियों के सम्मुख

CHAPTER CXI

Sanjaya continued:—"Seeing the prowess of Bhishm, Arjun thus addressed Shikhandi, "You may now face Bhishm. You need not be afraid of him, for I shall with my arrows cause his fall from his chariot." On hearing these words of Arjun, Shikhandi faced Bhishm. In the same manner, Dhrishtadyumn and valiant Abhimanyu, much pleased at the words of Arjun, encountered Bhishm. Virat and Drupad, the two old warriors, and Prince Kuntbhoj adorned with weapons, encountered Bhishm in the presence of your sons. Nakul, Sahdev and Yudhishthir the just with other warriors also faced him. Nakul and Sahdev rushed against Bhishm on hearing the words of Arjun. Your warriors too, as far as it lay in their power, encountered

द्युम्नं महाराज भीष्मान्तिक मुपागतम् ॥९॥ त्वरमाणं रणे यत्तं कृतवर्मा न्यवारयत् ।
भीमसेनं सुसंक्रुद्ध गाङ्गेयस्य वधैषिणम् ॥ १० ॥ त्वरमाणो महाराज सौमदत्ति॰र्यवार
यत् । तथैव नकुलं शूरं किरन्तं सायकान् बहून् ॥ ११ ॥ विकर्णो वारयामास इच्छन्
भीष्मस्य जीवितम् । सहदेवं तथा राजन् यान्त भीष्मरथं प्रति ॥ १२ ॥ वारयामास
संक्रुद्धः कृपः शारद्वतो युधि । राक्षसं क्रूरकर्माणं भैमसेनिं महाबलम् ॥ १३ ॥ भीष्मस्य
निधनं प्रेप्सुं दुर्मुखोऽभ्यद्रवद्बली । सात्यकिं समरेयान्तं तव पुत्रो न्यवारयत् ॥ १४ ॥
अभिमन्युं महाराज यान्तं भीष्मरथं प्रति । सुदक्षिणो महाराज काम्बोज॰ प्रत्यवारयत्
॥ १५ ॥ विराटद्रुपदौ वृद्धौ समेतावरिमर्दनौ । अश्वत्थामा तत क्रुद्धो वारयामास
भारत ॥१६॥ तथा पाण्डुसुतं ज्येष्ठ भीष्मस्य वधकांक्षिणम् । भारद्वाजो रणे यत्तो धर्म॰
पुत्रमवारयत् ॥ १७ ॥ अर्जुनं रभसयुद्धे पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । भीष्मप्रेप्सुं महाराज

गये उनका वृत्तान्त मुझसे सुनो, हेमहाराज भीष्मकी रक्षाके निमित्त चित्रसेनतो चेकितानके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि व्याघ्रका बच्चा बैलके सम्मुख जाता है हे राजा भीष्मके समीप आयेहुए शीघ्रताकरनेवाले युद्धमें कुशल धृष्टद्युम्नको कृतवर्मा ने रोका । १० । और शीघ्रता करने वाले सोमदत्त ने भीष्मजी के मारने की इच्छा रखने वाले महाक्रोधित भीमसेनको रोका, इसीप्रकार भीष्मजी के जीवनके चाहनेवाले विकर्ण ने बहुत शायकोंके फेंकने वाले शूर नकुलको रोका, ऐसेही युद्ध में अत्यन्त क्रोधी शारद्वत कृपाचार्य्यने भीष्म के रथपर जातेहुए सहदेवको रोका । १३ । औरबलवान् दुर्मुख उसभीष्मके मारनेमें प्रवृत्त भीमसेनके पुत्र घटोत्कच राक्षस के सम्मुख हुआ, और युद्धमें जाते हुए सात्यकी को आपके पुत्रने रोका और भीष्मके रथपर जाते हुए अभिमन्युको, राजा कांबोज सुदक्षिण ने रोका और शत्रुओं के मारने वाले विराट् और द्रुपद दोनों वृद्धोंको क्रोध युक्त अश्वत्थामाने रोका हे राजा भीष्म के मारनेको उत्सुक

them. Hear of me what they did: for the protection of Bhishm, Chitrasen faced Chekitan as a lion's whelp faces an ox Kritvarma checked Dhrishtadyumn the dexterous in battle who was approaching Bhishm. 10. Somdatta hastened to check angry Bhimsen desirous of slaying Bhishm. In the same manner, desirous of protecting Bhishm's life, Vikarn checked Nakul who was discharging many arrows. Likewise Kripacharya much enraged in battle, checked Sahadev advancing against the chariot of Bhishm 13. Valliant Durmukh faced Ghatotkach the son of Bhim desirous of slaying Bhishm. Your son checked the advance of Satyaki, and Sudakishin the king of camboj checked Abhimanyu's advance. Enraged Ashwathama checked the advance of Virat and Drupad the two old warriors. Dronacharya checked the advance of Pandu's eldest son, Yudhishthir the just desirous of slaying Bhishm, and the great archer

भासयन्त दिशो दश ॥ १८ ॥ दुःशासनो महेष्वासो वारयामास संयुगे । अन्ये च तावका योधाः पाण्डवानां महारथान् ॥ १९ ॥ भीष्मस्याभिमुखान्यातान् वारयामासु· राहवे । धृष्टद्युम्नस्तु सैन्यानि प्राक्रोशत्स्तु पुनः पुनः ॥ २० ॥ अभ्यद्रवतसंरब्धो भीष्म मेकं महारथः । एषोऽर्जुनो रणे भीष्मं प्रयाति कुरुनन्दन. ॥ २१ ॥ अभ्यद्रवत माभैष्ट भीष्मो हि प्राप्स्यते न वः । अर्जुनं समरे योद्धुं नोत्सहेतापि वासव. ॥ २२ ॥ किमु भीष्मो रणे वीरा गतसत्त्वोऽल्पजीवितः । इति सेनापतेः श्रुत्वा पाण्डवानां महारथाः ॥ २३ ॥ अभ्यद्रवन्त संहृष्टा गाङ्गेयस्य रथम्प्रति । आगच्छमानान् समरे वार्योघान् प्रवलानिव २४ अवारयन्त संहृष्टास्तावकाः पुरुषर्षभाः । दुःशासनो महाराज भयंत्यक्त्वा महारथ· ॥ २५ ॥ भीष्मस्य जीविताकांक्षी धनञ्जयमुपाद्रवत् । तथैव पाण्डवाः शूरा

पांडुके बड़े पुत्र धर्मराज युधिष्ठिरको द्रोणाचार्यने और शिखण्डी को आगे करके युद्धमें बेगवान् भीष्मको चाहते दशों दिशाओं के प्रकाश करनेवाले अर्जुनको बड़े धनुषधारी दुश्शासनने रोका, और आपके अन्य शूरवीरों ने भीष्मके सम्मुख जातेहुए पांडवों के महारथियों को युद्धमें रोका ।१०। इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी धृष्टद्युम्न अकेलाही बारंबार अपनी सेनाओं को इस रीतिसे पुकारताहुआ भीष्मके सम्मुखगया, कि यह कौरवनन्दन अर्जुन युद्ध में भीष्मके सम्मुख जाताहै समीप आजाओ डरोमत भीष्मही का नाशहोगा तुम्हारा नहीं होगा, युद्धमें अर्जुन से लड़ने को इन्द्रभी साहस नहीं करसक्ता है हे वीरलोगो फिर वह निर्बल थोड़ेजीवनवाला भीष्म युद्धमें क्याकरसक्ता है, पांडवों के महारथी सेनापति के इस वचनको सुनकर वह सब अत्यन्त प्रसन्नमनहोकर अर्जुनकेरथके समीप गये पुरुषोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त प्रसन्न चित्तआपके शूरवीरों ने बहुतसी सामर्थ्योंसे युक्त बड़े पराक्रमियोंके समानयुद्धमें आनेवालों को रोका, फिर भीष्म के जीवनका चाहनेवाला महारथी दुश्शासन भयको त्यागकर अर्जुन के सम्मुखगया· इसीप्रकार शूरवीर पांडव

Dushasan checked Arjun who led by Shikhandi was desirous of killing Bhishm and who illumined the ten directions by his glory. Your other warriors checked the advance of the other warriors of the Pandavas ready to assail Bhishm 20. Then the enraged warrior Dhrishtadyumn alone faced Bhishm, saying again and again to his warriors:–" Arjun the joy of the Kauravas is advancing against Bhishm; come on nearer without fear; for Bhishm will be killed and not you. Even Indra has not the courage to fight against Arjun; what can Bhishm who is infirm and of small duration of life, do against him?" Hearing those words from the brave commander of the Pandav forces, they cheerfully approached the chariot of Arjun. Your warriors the best of men, bravely and cheerfully checked the advancing men Valliant Dushasan, desirous of protecting Bhishma's life fearlessly encountered Arjun In the same manner the brave Pandavas

गाङ्गेयस्य रथम्प्रति ॥ २६ ॥ अभ्यद्रवन्त संग्रामे तव पुत्रान् महारथा । तथाद्भुतमप श्याम चित्ररूपं विशाम्पते ॥ २७ ॥ दु शासनरथं प्राप्य यत् पार्थो नात्यवर्त्तत । यथा वारयते वेला क्षुब्धतोय महार्णवम ॥ २८ ॥ तथैव पाण्डव क्रुद्धं तव पुत्रो न्यवारयत् । उभौ तौ रथिनः श्रेष्ठावुभौ भारत दुर्जयौ ॥२९॥ उभौ चन्द्रार्कसदृशौ कान्त्या दीप्त्या च भारत । तथा तौ जातसंरम्भावन्योन्यवधकांक्षिणौ ॥ ३० ॥ समीयतुर्महासंख्ये मय शक्रौ यथा पुरा । दु शासनो महाराज पाण्डव विशिखैस्त्रिभिः ॥ ३१ ॥ वासुदेवञ्च विंशत्या ताडयामास संयुगे । ततोऽर्जुनो जातमन्युर्वार्ष्णेयं वीक्ष्य पीडितम् ॥ ३२ । दुःशासनं शतेनाजौ नाराचाना समार्पयत् । ते तस्य कवचं भित्वा पपुःशोणितमाहवे ॥३३॥ दुःशासनस्त्रिभि क्रुद्धः पार्थं विव्याध पञ्चभि । ललाटेभरतश्रेष्ठ शरै सन्नतपर्वभि ३४ ललाटस्थैस्तु तैर्वाणै शुशुभे पाण्डवो रणे । यथामेरुर्महाराज शृङ्गैरत्यथमुच्छ्रितै ॥३५॥

लोगभी भीष्मजी के रथकेपास आप के महारथी पुत्रोंके सम्मुखगये, हे राजा वहाँ हमने अपूर्व्व रूप के आश्चर्य्यको देखा कि अर्जुन ने दुश्शासन के रथको पाकर उल्लघन नहीं किया, जैसे कि मर्य्यादा वा किनारा जल से व्याकुल समुद्रको रोकता है उसी प्रकार आपके पुत्र ने क्रोधयुक्त पांडव अर्जुनको रोका, वह दोनों रथियों में श्रेष्ठ दुर्जय पुरुष शोभा और प्रकाश से चन्द्रमा और सूर्य्य के समान विदित होतेथे । ३० । इसी प्रकार वह दोनों क्रोधभरे परस्पर मारने के इच्छावान् युद्ध में ऐसे बढ़े जैसे कि पूर्व्व समय में यमराज और इन्द्र बढ़ेथे, फिर दुश्शासन ने विशिखनाम तीन बाणोंसे अर्जुनको और बीसबाण से वासुदेवजी को घायल किया, तदनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुन ने श्रीकृष्णजी को पीड़ामान् देखकर युद्धभूमि में नाराचनाम बाणों के एक सैकड़ेसे दुश्शासनको घायल किया उन बाणोंने उसके कवचको काटकर उसके रुधिर को पिया फिर महाक्रोधी दुश्शासन ने गुप्तग्रन्थी वाले तीन वा पांचबाणोंसे अर्जुन को ललाटपर घायल किया उन

faced your sons near Bhishma's chariot. The sight we saw there O king, was wonderfully strange: Arjun could not pass over Dushasan's chariot and your son checked the enraged Pandav Arjun, as the coast does the troubled waters of the ocean The two best of chariot eers, on account of their beauty and glory, looked like the moon and the sun 30 Thus the two enraged warriors, desirous of slaying each other, advanced like Yam and Indra in the days of old With three sharp arrows Dushasan wounded Arjun and with twenty he wounded Shri Krishn. Arjun, much enraged at the sight of Krishna's wounds, discharged, a hundred long shafted arrows at Dushsan They pierced through his armour and drank his blood Then Dushasan of exceedingly hot temper wounded Arjun on the forehead with three and five arrows, and with those arrows stuck on

सोतिविद्धो महेष्वासः पुत्रेण तव धन्विना । व्यराजत् रणे पार्थः किंशुकः पुष्प
वानिव ॥ ३६ ॥ दुःशासनन्ततः क्रुद्धः पीडयामास पाण्डवः । पर्वणीव सुसंक्रुद्धो
राहुः पूर्णं निशाकरम् ॥ ३७ ॥ पीड्यमानो बलवता पुत्रस्तव विशाम्पते । विव्याध
समरे पार्थं कंकपत्रैः शिलाशितैः ॥ ३८ ॥ तस्य पार्थो धनुश्छित्वा रथञ्चास्य त्रिभिः
शरैः । आजघानततः पश्चात् पुत्रं ते निशितैः शरैः ॥ ३९ ॥ सोन्यत्कार्मुकमादायभी
ष्मस्य प्रमुखे स्थितः । अर्जुनं पंच विंशत्या बाह्वोरुरसिचार्पयत् ॥ ४० ॥ तस्य
क्रुद्धो महाराज पांडवः शत्रुतापनः । अप्रैषीद्विशिखान् घोरान् यमदण्डोपमान् बहून्
॥ ४१ ॥ अप्राप्तानेव यान् बाणान् चिच्छेद तनयस्तव । यतमानस्य पार्थस्य तदद्भु
तमिवाभवत् ॥ ४२ ॥ पार्थञ्च निशितैर्बाणैरविध्यत्तनयस्तव । ततः क्रुद्धो रणे पार्थः

ललाटपर नियत बाणों से वह अर्जुन ऐसा शोभायमान हुआ। जैसे कि अत्यन्त ऊंचे ऊंचे शिखरों से मेरु पर्वत शोभित होताहै फिर वह बड़ा धनुषधारी अर्जुन आपके धनुषधारी पुत्र से अत्यन्त घायल होकर युद्धमें ऐसा शोभायुक्त हुआ जैसा कि फूलाहुआ किंशुक वृक्ष होता है इसके पीछे अर्जुन ने उसक्रोधी दुःशासन को ऐसा पीड़ितकिया, जैसेकि पर्वके दिन अत्यन्त क्रोधयुक्त राहु पूर्णचंद्रमाको दुःखित करता है हे राजा पराक्रमी अर्जुनसे पीड़ामान् आपके पुत्रने, कंकपत्रवाले शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणों से अर्जुन को फिर पीड़ामान किया तबतो अर्जुन ने उसके धनुष को काटकर तीन बाणोंसे उसके रथको खंडित किया, उसके पीछे तीक्ष्ण बाणों से उसके शरीरको घायल किया फिर भीष्मके आगे नियत होकर उसने दूसरे धनुषको लेकर अर्जुन को पच्चीस २५ बाणों से भुजा और छातीपर घायल किया हे राजा फिर शत्रु संतापी क्रोधयुक्त अर्जुन ने उसके ऊपर यमराज के दण्ड के समान महाभयानक विशिख नाम बहुत से बाणों को चलाया तब आप के पुत्रने अर्जुन के उन बाणों को बीचमेंही काटा । ४२ । वह आश्चर्यसा हुआ

his forehead, Arjun looked glorious like mount Meru with its very high peaks. The great archer Arjun, excessively wounded by your *son's arrows, looked beautiful like the Kinshuk tree in bloom.* Then *Arjun so wounded Dushasan of hot temper as on the day of full moon* Rahu in its great rage harrasses the moon. Wounded by the darts of valliant Arjun, your son again wounded him with his sharp arrows having vulture feathers. Then having cut down his bow, Arjun broke his chariot with three arrows and pierced through his body with his sharp arrows. Then standing before Bhishm, Dushasan wounded Arjun with twenty five arrows on the breast and arms. Then, O king, Arjun the destroyer of foes, much enraged, discharged at him dreadful arrows like the staff of Yam, but your son cut them down in the way. 42. The sight was wonderful to behold. Then your

शरान् सन्धाय कार्मुके ॥ ४३ ॥ प्रेषयामास समरे स्वर्णपुङ्खाञ्छिलाशितान् ।
न्यमज्जंस्ते महाराज तस्य काये महात्मनः ॥ ४४ ॥ यथा हंसा महाराज तडागं
प्राप्य भारत । पीडितश्चैव पुत्रस्ते पाण्डवेन महात्मना ॥ ४५ ॥ हित्वा पार्थं रणे
तूर्णं भीष्मस्य रथमाव्रजत् । अगाधे मज्जतस्तस्य द्वीपो भीष्मोऽभवत्तदा ॥ ४६ ॥
प्रतिलभ्य ततः संज्ञां पुत्रस्तव विशाम्पते । अवारयत्ततः शूरो भूयएवपराक्रमी ॥ ४७ ॥
शरैः सुनिशितैः पार्थं यथा वृत्रं पुरन्दरः । निर्विभेद महाकायो विव्यथे नैव चार्जुनः ४८

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि अर्जुनदुःशासनसमागमे
एकादशाधिकशततोऽध्यायः ॥ १११ ॥

फिर आपके पुत्र ने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे अर्जुन को व्यथितकिया, इस के पीछे युद्धमें क्रोधभरे अर्जुन ने सुनहरी पुंखवाले वा शिलापर घिसेहुए बाणों को धनुष पर चढ़ाकर युद्धमें फेंका, हे राजा वह बाण उसमहात्मा के शरीरमें ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि तड़ाग को पाकर हंस प्रवेश करजाते हैं महात्मा पांडव के हाथ से पीड़ित आपकापुत्र युद्ध में अर्जुन को छोड़कर शीघ्रही भीष्मजी के रथके पास गया तब भीष्मजी उस अगाध जल के डूबेहुएको आधाररूप द्वीप होगये इसकेपीछे हे राजा आपके शूरवीर पुत्रने चैतन्यहोकर फिर महा तीव्र बाणों से अर्जुन को ऐसा ढकदिया जैसे कि बड़े शरीरवाले इन्द्रने वृत्रासुर को आच्छादित कियाथा उसके घायल करनेपरभी अर्जुन पीड़ामान् नहीं हुआ ४८ ॥

---

son wounded Arjun with sharp arrows. Thereupon Arjun, much enraged in the field of battle, put to his bow arrows sharpened on stone and furnished with gold feathers, and discharged them at him Those arrows pierced through the body of that great warrior as swans enter a lake. Wounded by the great Pandav your son left Arjun and hastened to approach Bhishma's chariot. Bhishm protected him as an island protects a man fallen into deep sea. Then, O king, your valliant son, having regained his consciousness, again covered Arjun with very sharp arrows as Indra covered the big body of Vritrasur, but Arjun was not disturbed in spite of those wounds." 48.



सञ्जय उवाच ॥ सात्यकिं दंशितं युद्धे भीष्मायाभ्युद्यतं रणे । आर्ष्यशृङ्गिर्महेष्वासो वारयामास संयुगे ॥ १ ॥ माधवस्तु सुसंक्रुद्धो राक्षसं नवभिः शरैः । आजघान रणे राजन् प्रहसन्निव भारत ॥ २ ॥ तथैव राक्षसो राजन् माधवं नवभिः शरैः । अर्दयामास राजेन्द्र संक्रुद्धः शिनिपुङ्गवम् ॥ ३ ॥ शैनेयः शरसंघं तु प्रेषयामास संयुगे । राक्षसाय सुसंक्रुद्धो माधवः परवीरहा ॥ ४ ॥ ततो रक्षो महाबाहुं सात्यकिं सत्यविक्रमम् । विध्वा विशिखैस्तीक्ष्णैः सिंहनादं ननाद च ॥५॥ माधवस्तु भृशं विद्धो राक्षसेन रणे तदा । वार्यमाणश्च तेजस्वी जहासच ननादच ॥ ६ ॥ भगदत्तस्ततः क्रुद्धो माधवं निशितैः शरैः । ताडयामास समरे तोत्रैरिव महागजम् ॥ ७ ॥ विहाय राक्षसं युद्धे शैनेयो रथिनांवरः । प्राग्ज्योतिषाय चिक्षेप शरान् सन्नतपर्वण ॥ ८ ॥ तस्य प्राग्ज्योतिषो राजा माधवस्य महद्धनुः । चिच्छेद शतधारेण भल्लेन कृतहस्तवत् ॥९॥

अध्याय ११२ ॥

संजय बोले कि युद्ध में शस्त्रोंसे अलंकृत भीष्म के सम्मुख जातेहुए सात्यकी को बड़े धनुषधारी आर्ष्यशृंगने युद्धभूमि में रोका, हे राजा फिर अत्यन्त क्रोधित और हँसतेहुए सात्यकीने नौ बाणों से राक्षस को घायल किया, इसीप्रकार अत्यन्त कोपयुक्त राक्षसनेभी शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकीको पीड़ितकिया, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शत्रुहन्तासात्यकीने बाणोंकी वर्षा राक्षस परकी और राक्षसने तीक्ष्ण विशिखों से उस सत्यपराक्रमी महाबाहु सात्यकी को घायल करके बड़े सिंहनाद को किया, फिर राक्षसके हाथसे अत्यन्त घायल और रोकाहुआ महातेजस्वी सात्यकीभी हँस हँस करगर्जा इसपीछे क्रोधयुक्त भगदत्तने तीक्ष्णबाणोंसे सात्यकी को ऐसा घायल किया जैसे कि चाबकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं फिर रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने उस राक्षसको छोड़कर गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से राजा प्राग्ज्योतिष को घायल किया और बड़े हस्तलाघवी राजा प्राग्ज्योतिषने उस सात्यकी के बड़े

CHAPTER CXII

Sanjaya continued—"*Aryashring the great archer checked* Satyaki going in the field of battle against Bhishm armed with weapons. Then, O king, Satyaki much enraged, yet with a smile on his face, wounded the rakshas with nine arrows. In the same manner, the enraged rakshas wounded Satyaki the best of Shinis Then Satyaki the destroyer of enemies, much enraged, showered his arrows over the rakshas, and the latter having wounded the former with his sharp arrows, roared a loud roar. Then much wounded by the rakshas and checked by him, Satyaki too laughed and roared Then Bhagdatta in anger wounded Satyaki with his sharp arrows as an elephant with goads Then Satyaki the best of charioteers left the rakshas and wounded the king of Pragjyotish with arrows having hidden knots. The king of Pragjyotish showed the swiftness

अथान्यद्धनुरादाय वेगवत् परवीरहा । भगदत्त रणे क्रुद्ध विव्याध निशितै शरै ॥ १० ॥
सोतिविद्धो महेष्वास सृक्किणी परिसंलिहन् । शक्ति कनकवैदूर्य्य भूषिता मायसीं
दृढाम् ॥ ११ ॥ यमदण्डोपमां घोरां चिक्षेप परमाहवे । तामापतन्तीं सहसा तस्य
बाहुबलेरिताम् ॥ १२ ॥ सात्यकि समरे राजन् द्विधा चिच्छेद सायकै । तत
पपात सहसा महोल्केव हतप्रभा ॥ १३ ॥ शक्तिं विनिहतां दृष्ट्वा पुत्रस्तव विशाम्प
ते । महता रथवंशेन वारयामास माधवम् ॥ १४ ॥ तथा परिवृत दृष्ट्वा वार्ष्णे
यानां महारथम् । दुर्य्योधनो भृश क्रुद्धो भ्रातॄन् सर्वानुवाचह ॥ १५ ॥ तथा
कुरुत कौरव्या यथा व सात्यको युधि । न जीवन् प्रति निर्याति महतोस्मात् रथ
व्रजात् ॥ १६ ॥ तस्मिन् हते हत मन्ये पाण्डवानां महद्बलम् । तथेति च वचस्तस्य
परिगृह्य महारथा ॥ १७ ॥ शैनेय योधयामासुर्भीष्मायाभ्युद्यतरणे । काम्बोजराजो

धनुपको सौ धारवाले भल्ल से काटा, फिर उस शत्रुहन्ता ने दूसरे वेगवान् धनुप को लेकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से भगदत्त को घायल किया ।१०। फिर इस अत्यन्त घायल होठोंको चाबते बड़े धनुषधारीने सुवर्ण और वैडूर्य्यमणिसे अलंकृत यमराज के दण्ड के समान महा भयानक लोहेकी दृढ़शक्ती को फेंका हे राजा उसके हाथसे प्रेरित उस अकस्मात् गिरतीहुई शक्तीको सात्यकी ने अपने बाणों से दो खण्ड कर के पृथ्वीपर गिराया फिर आपके पुत्र ने शक्ती को टूटाहुआ देखकर बड़े रथों के समूहों से सात्यकी को घेरा। फिर उस सात्यकी को घिराहुआ देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन अपने भाइयों सेबोला, कि हे कौरवो अब ऐसा करो जिससे कि सात्यकी हमारे इन रथसमूहोंसे जीवता न लौटे, उसके मरने पर मैं पांडवों की बड़ी सेनाको भी मृतकही मानताहूं तब महारथियों ने कहा कि ऐसाही होगा, यह कहकर भीष्म केही आगे सात्यकीसे युद्धकिया और महाबली राजा कम्बोजने भीष्मकी ओर जातेहुए युद्धमें प्रवृत्त अभिमन्युको रोका, अभिमन्युने गुप्त ग्रन्थीवाले

of his hand by cutting Satyaki's bow with a very sharp edged dart Then that destroyer of enemies took up another bow and wounded Bhagdatta with very sharp arrows 10. Then that great archer much wounded and biting his lips in anger discharged a hard spear of iron, like the staff of Yam decked with gold and jewels, but Satyaki cut down into two pieces with his arrows the spear so hurled and coming suddenly upon him Seeing the spear cut down, your son surrounded Satyaki with a great many chariots Seeing Satyaki surrounded by them, enraged Duryodhan said to his brothers—" Kaurvas! do so contrive that Satyaki may not leave the net work of our chariots alive At his death I belive that all the army of the Pandavas will be destroyed" The warriors said in reply that they would do as they were told and began to fight against Satyaki in the presence of Bhishm The mighty king of Kamboj

बलवान् वारयामास संयुगे ॥ १८ ॥ आर्जुनिर्नृपतिर्विध्या शरैःसप्तत पर्वभिः । पुनरेव चतु:षष्ट्या राजन् विव्याध तं नृप ॥ १९ ॥ सुदक्षिणस्तु समरे पुनर्विव्याध पञ्चभिः । सारथिञ्चास्य नवभि रिच्छन् भीष्मस्य जीवितम् ॥ २० ॥ तद्युद्धमासीत् सुमहत्तयो स्तत्रसमागमे । यदाऽभ्यधावद्गाङ्गेयं शिखण्डी शत्रुकर्शनः ॥ २१ ॥ विराटद्रुपदौ वृद्धौ वारयन्तौ महाचमूम् । भीष्मच युधि संरब्धा वाद्रवन्तौ महारथौ ॥ २२ ॥ अश्वत्थामा रणे क्रुद्धः समियाद्रथसत्तमः । ततः प्रववृते युद्धं तयोस्तस्यच भारत ॥ २३ ॥ विराटो दशभिर्भल्लै राजधान परन्तप । यतमानं महेष्वासं द्रौणिमाहवशोभिनम् ॥ २४ ॥ द्रुपदश्च त्रिभिर्बाणैर्विव्याध निशितैस्तदा । गुरुपुत्रं समासाद्य प्रहरन्तौ महाबलौ ॥ २५ ॥ अश्वत्थामाततस्तौ तु विव्याध बहुभिः शरैः । विराटद्रुपदौ वीरौ भीष्मं प्रति समुद्यतौ ॥ २६ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम वृद्धयोश्चरितं महत् । यद्द्रौणिसायकान्

बाणोंसे राजा को घायल करके चौंसठ बाणों से फिर व्यथित किया, इसके अनन्तर राजा सुदक्षिण ने पांचबाणोंसे घायल करके नौ बाणों से उसके सारथी को घायल किया ।२०। वहां उनदोनोंकी सम्मुखतामें बड़ाभारी युद्धहुआ और शत्रुहन्ता शिखण्डी गांगेयजीकी ओर दौड़ा औरयुद्धमें क्रोधयुक्त महारथी दोनों विराट् और द्रुपद उस सेना को हटातेहुए भीष्म की ओर को दौड़े तब महाक्रोधित महारथी अश्वत्थामा उनके सन्मुखगया तदनन्तर उसके साथ उन दोनों का बड़ा युद्ध जारी हुआ फिर राजा विराट् ने उस उपाय करनेवाले और युद्ध में शोभा पानेवाले बड़े धनुषधारी अश्वत्थामाको दश भल्लों से घायल किया फिर द्रुपदने तीक्ष्ण धारवाले तीन बाणों से घायल किया फिर वह दोनों गुरू के पुत्रको सम्मुख पाकर प्रहार करनेलगे, तदनन्तर अश्वत्थामाने उन भीष्मजी के ऊपर युद्ध में प्रवृत्त विराट् और द्रुपदको अनेक बाणों से घायल किया ।२६। वहां हमने उन दोनों वृद्धोंके बड़ेभारी

---

checked Abhimanyu who was coming towards Bhishm. Abhimanyu, having wounded the king with his arrows having hidden knots, pierced him again with sixtyfour arrows. Then king Sudakshin wounded his coachman with five and nine arrows. 20. The two warriors fought very hard. Shikhandi the destroyer of foes rushed upon Bhishm and the two warriors Virat and Drupad, much enraged in battle, rushed against Bhishm, pushing aside the armies. Then valliant Ashwathama much enraged faced him and the two fought very bravely. Then the king of Virat with ten darts wounded the great archer Ashwathama and Drupad wounded him with three. Then the two warriors finding themselves face to face with the son of *acharya*, began smiting him with their arrows. Ashwathama then wounded with many arrows the two warriors Virat and Drupad advancing against Bhishm. 26. There we saw the bravery of the

घोरान् प्रत्यवारयतां युधि ॥ २७ ॥ सह देवं तथायान्तं कृप शारद्वतोऽभ्ययात् ।
यथा नागो वने नागं मत्तो मत्तमपाद्रवत् ॥ २८ ॥ कृपश्च समरे शूरो माद्रीपुत्र
महारथम् । आजघान शरैस्तूर्णं सप्तत्या रुक्मभूषणैः ॥ २९ ॥ तस्य माद्रीसुतश्चाप
द्विधा चिच्छेद सायकैः । अथैनं छिन्नधन्वान विव्याध नवभिः शरैः ॥ ३० ॥ सोऽन्यत्
कार्मुकमादाय समरे भारसाधनम् । माद्रीपुत्रं सुसंहृष्टो दशभिर्निशितैः शरैः ॥ ३१ ॥
आजघानो रसि क्रुद्ध इच्छन् भीष्मस्य जीवितम् । तथैव पाण्डवो राजञ्छारद्वतम
मर्षणम् ॥ ३२ ॥ आजघानो रसि क्रुद्धो भीष्मस्य वधकाङ्क्षया । तयोर्युद्धं समभवत्
घोररूपं भयावहम् ॥ ३३ ॥ नकुलन्तु रणे क्रुद्धो विकर्णः शत्रुतापन । विव्याधसाय
कैः षष्ट्या रक्षन् भीष्मं महाबलम् ॥ ३४ ॥ नकुलोपि भृशं विद्धस्तव पुत्रेण धीमता ।
विकर्णं सप्तसप्तत्या निर्बिभेद शिलीमुखैः ॥३५॥ तत्र तौनरशार्दूलौ भीष्महेतोः परन्तपौ ।

कर्मको देखा कि युद्ध में अश्वत्थामा के महाघोर भयानक बाणों को रोका, और
कृपाचार्य्यजी उस जातेहुए सहदेवके सम्मुख ऐसे गये जैसे कि वन में मतवालाहाथी
मतवाले हाथी के सम्मुख जाताहै, वहां शीघ्रही शूरवीर कृपाचार्य्यने बड़े तीव्रसत्तर
बाणोंसे सहदेव को घायल किया, फिर सहदेव ने उनके धनुष के खण्ड २ करके
नौ बाणों से उनको घायल किया । ३० । भीष्मके जीवन को चाहते उस प्रसन्न
चित्त और क्रोध में युक्त कृपाचार्य्य ने माद्रीनन्दन सहदेवको तीव्र दश बाणों से
छाती के ऊपर घायल किया हे राजा इसप्रकार भीष्मके मारने की इच्छासे असह्य
क्रोध भरे सहदेव ने कृपाचार्य्यको भी छातीपर घायल किया तब उन दोनों
का महाघोर और भयानक युद्धहुआ, इसके पीछे शत्रुसंतापी युद्धमें क्रोधित
महाबली विकर्ण ने नकुलको सात बाणों से घायल किया तब आपके पुत्रसे अत्य
न्त घायल नकुलने भी सतत्तर शिलीमुख बाणोंसे विकर्णको घायल किया, फिर
उन शत्रुसंतापी वीरोंने भीष्मके कारण परस्पर में ऐसे प्रहार किये जैसे कि गो-

two old kings in checking the flight of Aswathama's arrows. Kripa charya rushed upon Sahadev as one mad elephant in a forest rushes against another. Valiant Kripacharya soon wounded Sahadev with seventy sharp arrows. Sahadeo in his turn cut his bow into pieces and wounded him with nine arrows 30 Desirous of protecting Bhishma's life, cheerful minded and enraged, Kripacharya wounded with ten swift arrows Sahadev the son of Madri in the breast. Desirous of slaying Bhishm, unbearable and enraged, Sahadev wounded Kripacharya on the breast and the two warriors fought very bravely Then the destroyer of enemies, enraged in battle, the brave warrior, Vikarn wounded Sahadev with seven arrows Much wounded by your son, Nakul, with seventy seven arrows sharpened on stone, wounded Vikarn on the breast. Then these warriors, destroyers of enemies, fought against each other on account of Bhishm like two

अन्योन्यं जग्रतुर्वीरौ गोष्ठे गोवृषभाविव ॥ ३६ ॥ घटोत्कचं रणयान्तं निघ्नन्तं तववाहिनीम । दुर्मुखः समरे प्रायाद् भीष्महेतोः पराक्रमी ॥ ३७ ॥ हैडिम्बस्तु रणे राजन् दुर्मुखं शत्रुतापनम । आजघानोरसि क्रुद्धः शरेणानतपर्वणा ॥ ३८ ॥ भीमसेनसुतश्चापि दुर्मुखः सुमुखैः शरैः । षष्ट्यावीरो नदन् हृष्टो विव्याध रणमूर्द्धनि ॥ ३९ ॥ धृष्टद्युम्नं तथायान्तं भीष्मस्य वधकाङ्क्षिणम । हार्दिक्यो वारयामास रथश्रेष्ठं महारथं ॥ ४० ॥ हार्दिक्यः पार्षतञ्चापि विध्वायस्यैश्चसायकैः । पुनः पञ्चाशतातूर्णं तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ४१ ॥ आजघान महाबाहुः पार्षतंतंमहारथ । तंचैव पार्षतो राजन् हार्दिक्यं नवभिःशरैः ॥ ४२ ॥ विव्याध निशितैस्तीक्ष्णैः कङ्कपत्रैरजिह्मगैः । तयोः समभवद्युद्धं भीष्महेतोर्महाहवे ॥ ४३ ॥ अन्योन्यातिशयेयुक्तं यथा वृत्रमहेन्द्रयोः । भीमसेनं तथायान्तं भीष्मं प्रति महारथम ॥ ४४ ॥ भूरिश्रवाभ्ययात्तूर्णं तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् । सौम

शाला में दो वृषभप्रहार करते हैं, भीष्म के कारण से पराक्रम करने वाला दुर्मुख युद्धमें आपकी सेनाको मारने वाले और घूमते हुए घटोत्कच के सम्मुख गया । ३७ । फिरक्रोधयुक्त घटोत्कच ने गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से उस शत्रुसंतापी दुर्मुख को छातीपर घायल किया, फिर गर्जना पूर्वक प्रसन्न चित्त दुर्मुखने भी सुन्दर मुखवाले साठ बाणों से भीमसेन के पुत्र घटोत्कचको घायल किया, इसीप्रकार महारथी कृतवर्मा ने भीष्मके मारनेकी इच्छा रखनेवाले रथियों में श्रेष्ठ जातेहुए धृष्टद्युम्न को रोका ।४०। फिर कृतवर्मानेभी पांच तीक्ष्ण बाणोंसे धृष्टद्युम्नकोघायल करके पचास बाणों से शीघ्रही छाती में घायल किया, इसी प्रकार धृष्टद्युम्न ने तीक्ष्ण कंकपक्षवाले नौ बाणों से कृतवर्मा को घायल किया युद्धमें भीष्मके कारण उन दोनोंका ऐसाकठिन युद्धहुआ जैसेकि वृत्रासुर और इंद्रका हुआथा, इसीप्रकार भूरिश्रवा उस भीष्मकी ओर जाते महारथी भीमसेन के सम्मुख शीघ्रता से गया और तिष्ठ २ शब्द बोला, उसके पीछे सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवाने युद्ध में तीक्ष्ण

angry bulls in the fold. Showing his prowess for the sake of Bhishm, Durmukh faced Ghatotkach who was roaring there and destroying your armies 37. Enraged Ghatotkach wounded Durmukh the terror of enemies on the breast with arrows having hidden knots. Then with a roar Durmukh of cheerful spirit wounded Ghatotkach the son of Bhim with sixty arrows. In the same manner, Kritvarma checked Dhrishtadyumn the best of charioteers, desirous of slaying Bhishm 40. Kritvarma too, with five and fifty iron arrows wounded Dhrishtadyumn on the breast. In the same manner, Dhrishtadyumn wounded Kritvarma with nine sharp arrows having vulture quills. The two heroes fought for the sake of Bhishm like Indra and Vritrasur. Bhurishrava encountered brave Bhim who was going towards Bhishm and stopped him with a cry stay, stay. Then Bhurishrava the son of Somdatta wounded [illegible]

दक्षिरयोमीममाजघान स्तनान्तरे ॥ ४५ ॥ नाराचेन सुतीक्ष्णेन रुक्मपुंखेन संयुगे ।
उरस्थेन बभौ तेन भीमसेन प्रतापवान् ॥ ४६ ॥ स्कन्दशक्त्या यथा क्रौञ्च पुरा
नृपतिसत्तम । तौ शरान् सूर्यसकाशान् कर्मारपरिमार्जितान् ॥ ४७ ॥ अन्योन्यस्य
रणे क्रुद्धौ चिक्षिपाते नरर्षभौ । भीमो भीष्मबधाकाङ्क्षी सौमदत्तिं महारथम् ॥ ४८ ॥
तथा भीष्मजये गृध्नु सौमदत्तिस्तु पाण्डवम् । कृतप्रतिकृते यत्तौ योधयामासतूरणे
॥ ४९ ॥ युधिष्ठिरन्तु कौन्तेय महत्या सेनयावृतम् । भीष्मामिमुखमायान्त भारद्वाजो
न्यवारयत् ॥ ५० ॥ द्रोणस्य रथनिर्घोष पर्जन्य निनदोपमम् । श्रुत्वा प्रभद्रका
राजन् समकम्पन्त मारिष ॥ ५१ ॥ सा सेना महती राजन् पाण्डुपुत्रस्य संयुगे ।
द्रोणेन वारिता यत्ता न चचालपदात् पदम् ॥ ५२ ॥ चेकितान रणे यत्त भीष्म
प्रति जनेश्वर । चित्रसेनस्तव सुन क्रुद्धरूपमवारयत् ॥ ५३ ॥ भीष्महेतो पराक्रान्त

सुनहरी पुंखवाले नाराच बाणसे भीमसेनको छाती में घायल किया प्रतापवान् भीम
सेन उस छाती पर नियत हुए बाणसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्व समयमें
स्वामिकार्त्तिकजी की शक्तीसे क्रौंचनाम पर्व्वत शोभायमान हुआ था, युद्धमें
क्रोधयुक्त उन दोनों नरोत्तमों ने सूर्य्य के समान प्रकाशित और साफ़ किये हुए
बाणों को परस्परमें फेका, फिर भीष्म के मारने की इच्छारखने वाले भीमसेनने
महारथी भूरिश्रवाको और भूरिश्रवा ने भीमसेन को घायल किया, प्रहार पर
प्रहार करने में कुशल वह दोनों युद्धमें संग्रामकर्त्ता हुए फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्य
जी ने बड़ी सेना समेत भीष्मके सम्मुख जाते हुए कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को
रोका हेराजा द्रोणाचार्य्य के रथका शब्द बादल के समान था उसको सुनकर
। ५० । प्रभद्रक नाम राजकुमार बड़े कम्पायमान हुए और पाण्डवों की वह
बड़ी सेना बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्य से रोकी हुई चरण से एक पदभी चलाने वाली
नहीं हुई और युद्धमें कुशल भीष्म के ऊपर कोप युक्त चेकितान को आप के पुत्र
चित्रसेन ने रोका पराक्रमी चित्रसेन भीष्मजी के लिये पराक्रमकरने वाला हुआ हे राजा

sen on the breast with sharp arrows having golden feathers With the arrows piercing his breast, Bhimsen looked glorious like Kraunch mountain pierced in the days of old with the spear of Lord Kartikeya Enraged in battle the two best of men discharged at each other bright arrows glorious as the sun Bhim desirous of slaying Bhishm wounded Bhurishrava and was himself wounded by him in return The two clever warriors fought valliantly Bharadwaj Dronacharya with his large army checked the advance of Yudhishthir the son of Kunti The sound from the chariot of Dronacharya was like the peal of thunder on hearing which (50) the Prabhadraks shook with fear The large army of the Pandavas checked by Dronacharya, remained motionless Your son Chitrasen checked

चित्रसेनः पराक्रमी । चेकितानं परं शक्त्या योधयामास भारत ॥ ५४ ॥ तथैव चेकितानोपि चित्रसेनमवारयत् । तद्युद्धमासीत् सुमहत् तयोस्तत्र समागमे ॥ ५५ ॥ अर्जुनो वार्य्यमाणस्तु बहुशस्तत्र भारत । विमुखीकृत्य पुत्रं ते सेनां तव ममर्द्द ह ॥ ५६ ॥ दुःशासनोपि परया शक्त्या पार्थमवारयत् । कथं भीष्मं नसो हन्या दिति निश्चित्य भारत ॥ ५७ ॥ सा वध्यमाना समरे पुत्रस्य तव वाहिनी । लोड्यते रथिभिः श्रेष्ठैस्तत्र तत्रैव भारत ॥ ५८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वन्द्वसमागमे द्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११२ ॥

सञ्जय उवाच । अथ वीरो महेष्वासो मत्तवारणविक्रमः । समादाय महच्चापं मत्तवारणवारणम् ॥ १ ॥ विधुन्वानो नरश्रेष्ठो द्रावयाणो वरूथिनीम् । पृतनां पाण्डवेयानां गाहमानो महाबलः ॥ २ ॥ निमित्तानि निमित्तज्ञः सर्वतो वीक्ष्य वी-

उस चित्रसेनने बड़ी सामर्थ्य से चेकितानसे युद्ध किया इसी प्रकार चेकितान ने भी चित्रसेन को रोका, उस समय पर उन दोनों का युद्ध बहुत बड़ा हुआ और वहां पर रुके हुए अर्जुन ने बहुत प्रकार से, आपके पुत्र का मुख मोड़कर आपकी सेनाका मर्द्दन किया और दुश्शासनने भी बड़ेपराक्रमसे यहनिश्चय करके अर्जुनको रोका कि यह किसी प्रकारसे हमारे पितामह भीष्मजीको नहीं मारे हेभरतर्षभयुद्धमें आप के पुत्रकी वह घायल हुई सेना उत्तम २ रथियों समेत जहां तहां अचेत होकर गिरी और भागगई ५७ ॥

अध्याय ११३ ॥

सञ्जय बोले कि फिर बड़े धनुषधारी मतवाले हाथी के समान पराक्रमी नरोत्तम महाबली द्रोणाचार्य्य भी महागजेन्द्र के हटाने वाले बड़े धनुष को लेकर सबको कँपाते सेना को घायल करते हुए पाण्डवी सेना को मथाते संतप्त करते हुए

Chekitan who came furiously against Bhishm. Chitrasen did deeds of valour for the sake of Bhishm. The two warriors fought very bravely and checked each other. Their fighting was tremendous. Arjun checked there in his advance made your son turn back and destroyed your armies. Dushasan too, desirous of protecting Bhishm, checked Arjun. The army of your son wounded in battle fell senseless here and there or left the field of battle." 57.

CHAPTER CXIII.

Sanjaya said: Then the great archer, full of prowess like a mad elephant, best of men, valliant Dronacharya took up his large bow capable of turning back a huge elephant, wounding and shaking the Pandav armies, and seeing signs on all sides, said to his son Ashwa-

र्ययान् । प्रतपन्तमनीकानि द्रोणः पुत्रमभाषत ॥ ३ ॥ अयं हि दिवसस्तात यत्र पार्थो महाबल । जिघांसुः समरे भीष्मं परं यत्नं करिष्यति ॥ ४ ॥ उत्पतन्ति हि मे बाणा धनुः प्रस्फुरतीव च । योगं मस्त्राणि गच्छन्ति क्रूरे मे वर्त्तते मतिः ॥ ५ ॥ दिक्ष्वशान्तानि घोराणि व्याहरन्ति मृगद्विजाः । नीचैर्गृध्रानि लीयन्ते भारतानां चमूं प्रति ॥ ६ ॥ नष्टप्रभ इवादित्यः सर्वतो लोहिता दिशः । रसते व्यथते भूमिः कम्पतीव च सर्वशः ॥ ७ ॥ कङ्कगृध्रा बलाकाश्च व्याहरन्ति मुहुर्मुहुः । शिवाश्चैवाशिवा घोरा वेदयन्त्यो महद्भयम् ॥ ८ ॥ पपात महती चोल्का मध्येनादित्यमण्डलात् । सकबन्धश्च परिधो भानुमावृत्य तिष्ठति ॥ ९ ॥ परिवेषस्तथा घोरश्चन्द्रभास्करयोरभूत् । वेदयानो भयं घोरं राज्ञां देहावकर्त्तनम् ॥ १० ॥ देवतायतनस्थाश्च कौरवेन्द्रस्य देवताः । कम्पन्ते च हसंतेच नृत्यन्ति च रुदन्तिच ॥११॥

सब ओर से चिह्नों को देखकर अपने पुत्र अश्वत्थामा से बोले । ३ । हे पुत्र यह वह दिन है जिसमेंयुद्धके बीच भीष्मको मारना चाहता महाबली अर्जुन बड़े २ उपायोंको करेगा क्योंकिमेरे बाणउछलतेहैं और धनुष कंपायमान होताहै और अस्त्रयोग को प्राप्त होते हैं और मेरी मति क्रूरवर्त्तमान है दिशाओंमें शान्तीसे रहित भयकारी पशु पक्षी बोलतेहैं और भरतवंशियोंकी सेनामें गृध्र नीच पक्षियोंकेसाथबैठे हैं. सूर्यप्रभासे रहित हैं और दिशा सब ओरसे लालहैं और पृथ्वी सब प्रकार से शब्दायमान और पीड़ित होकर कांपती है कंक गृध्र और बलाक बारम्बार बोलते हैं अशुभ भयानक शृगाल बड़े भय को प्रकट करतेहुए बोलतेहैं सूर्यमण्डलमेंसे बड़े उल्कापात होते हैं एक बंध परिघ सूर्य को ढककर नियत है इसी प्रकार ,चन्द्रमा और सूर्य का भयकारी प्रदेश अर्थात् परिघ नाम मण्डल राजाओं के शरीरों का नाश करने वाला महाभयको उत्पन्न करता हुआ वर्त्तमान हुआ है । १० । और राजा कुरु के मन्दिर में विराजमान देवता कांपते हँसते नाचते और रोवते हैं ग्रहों ने सूर्य को दक्षिणहोकर चिह्नसे रहित कर दिया और भगवान् चन्द्रमानीचे मुख होकर

them. "This is the day on which Arjun will try his best to kill Bhishm in battle; for my arrows jump up, the bow shakes and other weapons offer resistance My ideas are going wrong and the beasts and birds in all directions utter ominous sounds Vultures are perched side by side with lower birds in the army of the Kauravas The sun is dim and the directions are red The earth gives out sounds and signs of trouble *Kank* birds, vultures and herons cry again and again. Omininous and dreadful jackals utter cries of distress. The sun's orb is giving out large sparks of fire and a bar is seen hiding the sun. The circles round the sun and the moon portend a dreadful slaughter of kings 10. The gods in the palace of the king of Kurus are shaking, laughing dancing and weeping The stars to the right of the sun have changed their signs and the moon hangs down her face.

अपसव्यं महाश्चक्रुर्लक्ष्माणं दिवाकरम् । अवाक्शिराश्च भगवा नुपातिष्ठत चन्द्रमाः
॥ १२ ॥ वपूंषि च नरेन्द्राणां विगताभानि लक्षये । धार्त्तराष्ट्रस्य सैन्येषु नच भ्राजंति
दंशिता ॥ १३ ॥ सेनयोरुभयोश्चापि समन्ताच्छ्रूयते महान् । पाञ्चजन्यस्य निर्घोषो
गाण्डीवस्य च निस्वन ॥ १४ ॥ ध्रुवमास्थाय बीभत्सु रुत्तमास्त्राणि संयुगे ।
अपास्या न्यान् रणे योधानभ्येष्यति पितामहम् ॥१५॥ हृष्यन्ति रोमकूपाणि सीदतीव
च मे मन । चिन्तयित्वा महाबाहो भीष्मार्जुनसमागमम् ॥ १६ ॥ तञ्चेह निकृ
तिप्रज्ञं पाञ्चाल्यं पापचेतसम् । पुरस्कृत्य रणे पार्थो भीष्मस्यायोधनं गत ॥ १७ ॥
अब्रवीच्च पुरा भीष्मो नाहं हन्या शिखण्डिनम् । स्त्री ह्येषा विहिता धात्रा दैवाच्च
स पुन पुमान् ॥ १८ ॥ अमङ्गल्यध्वजश्चैव याज्ञसेनिर्महाबलः । न चामङ्गलिके
तस्मिन् प्रहरेदापगासुत. ॥ १९ ॥ एतद्विचिन्तयानस्य प्रज्ञा सीदति मे भृशम् ।

वर्त्तमान हुए राजाओं के शरीर शोभा से रहित दीख रहे हैं वह शस्त्रधारी अलंकृत राजा लोग दुर्योधन की सेनामें शोभायमान नहीं हैं दोनों सेनाओं में चारों ओर को उसी पांचजन्य शंख और गाण्डीवधनुष के शब्द सुने जाते हैं निश्चय करके वीर अर्जुन युद्ध में दिव्य अस्त्रों को धारण करके युद्ध करने वाले अन्य शूर वीरों को छोड़कर पितामह के सम्मुख जायगा, हे महाबाहु अश्वत्थामा भीष्म और अर्जुन की सम्मुखता को शोचकर मेरेरोयें खड़े हुए जाते हैं और चित्त भी पीड़ामान होता है वहां अर्जुन उस छली और पापात्मा शिखंडी को आगे करके भीष्म के मारने को गयाहै पूर्व समय में भीष्मने कहा था कि मैं शिखंडी को नहीं मारूंगा क्योंकि इसको ईश्वर ने पहले स्त्री किया था फिर प्रारब्ध से पुरुष होगया है, यह यज्ञसेन का पुत्र महाबली अशुभ ध्वजावाला है इस हेतु से गांगेय भीष्मजी उस अमांगल्य रूप पर प्रहार नहीं करेंगे यह विचारकर मेरेचित्त में बड़ा खेद होता

The faces of the kings have lost their splendour: the princes armed and decked in the armies of Duryodhan donot look splendid On all sides and in both the armies are heard the sounds of the conch Panchjanya and the bow Gandiv Surely brave Arjun, armed with divine weapons, leaving other warriors aside, will face the grandfather My hair, brave Ashwathama, stand on end when I think of the encounter between Bhishm and Arjun. My mind is distressed to think that Arjun under the cover of that deceitful and wicked Shikhandi has gone to slay Bhishm Bhishm has already said that he will not lay hands on Shikhandi who was originally a woman and turned to manhood as luck would have it This son of Yajyasen is of great strength and has ominous banner and therefore Bhishm will not discharge his weapons at him I am much distressed when I happen to think of this Shikhandi desirous of fighting and eating

र्वतात् । प्रतपन्नमनीकानि द्राण पुत्रमभाषत ॥ ३ ॥ अय हि दिवसस्तात यत्र पार्थो महाबल । जिघांसुः समरे भीष्म परं यत्नं करिष्यति ॥ ४ ॥ उत्पतन्ति हि मे बाणा धनुः प्रस्फुरतीव च । योग मस्त्राणि गच्छन्ति क्रूरे मे वर्त्तते मति ॥ ५ ॥ दिक्ष्वशान्तानि घोराणि व्याहरन्ति मृगद्विजाः । नीचैर्गृध्रानि लीयन्ते भारताना चमू प्रति ॥ ६ ॥ नष्टप्रभ इवादित्य सर्वतो लोहिता दिशः । रसते व्यथते भूमि कम्पतीव च सर्वशः ॥ ७ ॥ कङ्कगृध्रा बलाकाश्च व्याहरन्ति मुहुर्मुहुः । शिवाश्चैवाशिवा घोरा वेदयन्त्यो महद्भयम् ॥ ८ ॥ पपात महती चोल्का मध्ये नादित्यमण्डलात् । सकबन्धश्च परिघो भानुमावृत्य तिष्ठति ॥ ९ ॥ परिवेषस्तथा घोरश्चन्द्रभास्करयोरभूत् । वेदयानो भयं घोरं राज्ञा देहावकर्त्तनम् ॥ १० ॥ देवतायतनस्थाश्च कौरवेन्द्रस्य देवता । कम्पन्ते च हसन्ते च नृत्यन्ति च रुदन्ति च ॥११॥

सब ओर से चिह्नों को देखकर अपने पुत्र अश्वत्थामा से बोले । ३ । हे पुत्र यह वह दिन है जिसमें युद्ध के बीच भीष्म को मारना चाहता महाबली अर्जुन बड़े २ उपायों को करेगा क्योंकि मेरे बाण उछलते हैं और धनुष कपायमान होता है और अस्त्रयोग को मानहीं होते हैं और मेरी मति क्रूर वर्त्तमान है दिशाओं में शान्ति से रहित भयकारी पशु पक्षी बोलते हैं और भरतवंशियों की सेना में गृध्र नीच पक्षियों के साथ बैठे हैं। सूर्य प्रभा से रहित है और दिशा सब ओर से लाल है और पृथ्वी सब प्रकार से शब्दायमान और पीड़ित होकर कांपती है कङ्क गृध्र और बलाक बारम्बार बोलते हैं अशुभ भयानक शृगाल बड़े भय को प्रकट करते हुए बोलते हैं सूर्यमण्डल में से बड़े उल्कापात होते हैं एक बड़ा परिघ सूर्य को ढककर नियत हैं इसी प्रकार चन्द्रमा और सूर्य का भयकारी प्रदेश अर्थात् पारस नाम मण्डल राजाओं के शरीरों का नाश करने वाला महाभय को उत्पन्न करता हुआ वर्त्तमान हुआ है । १० । और राजा कुरु के मन्दिर में विराजमान देवता कांपते हँसते नाचते और रोवते हैं ग्रहों ने सूर्य को दक्षिण होकर चिह्न से रहित कर दिया और भगवान् चन्द्रमा नीचे मुख होकर

thama This is the day on which Arjun will try his best to kill Bhishm in battle, for my arrows jump up the bow shakes and other weapons offer resistance My ideas are going wrong and the beasts and birds in all directions utter ominous sound Vultures are perched side by side with lower birds in the army of the Kauravas The sun is dim and the directions are red The earth gives out sounds and signs of trouble *Kank* birds vultures and herons cry again and again Ominous and dreadful jackals utter cries of distress The sun's orb is giving out large sparks of fire and a bar is seen hiding the sun The circles round the sun and the moon portend a dreadful slaughter of king 10. The gods in the palace of the king of Kurus are shaking laughing dancing and weeping The stars to the right of the sun have changed their signs and the moon hangs down her face

ह्यपसव्य महाश्वक्रूरलक्ष्माणं दिवाकरम् । अवाक्शिराश्च भगवा नुपातिष्ठत चन्द्रमाः
॥ १२ ॥ वपूंषि च नरेन्द्राणां विगतानि लक्षये । धार्त्तराष्ट्रस्य सैन्येषु नच भ्राजन्ति
दंशिताः ॥ १३ ॥ सेनयोरुभयोश्चापि समन्ताच्छ्रूयते महान् । पाञ्चजन्यस्य निर्घोषो
गाण्डीवस्य च निःस्वनः ॥ १४ ॥ ध्रुवमास्थाय बीभत्सु रुत्तमास्त्राणि संयुगे ।
अपास्या न्यान् रणे योधानभ्येष्यति पितामहम् ॥१५ ॥ हृष्यन्ति रोमकूपाणि सीदतीव
च मे मनः । चिन्तयित्वा महाबाहो भीष्मार्जुनसमागमम् ॥ १६ ॥ तञ्चेह निकृ
तिप्रज्ञं पाञ्चाल्यं पापचेतसम् । पुरस्कृत्य रणे पार्थो भीष्मस्यायोधनं गतः ॥ १७ ॥
अब्रवीच्च पुरा भीष्मो नाहं हन्यां शिखण्डिनम् । स्त्री ह्येषा विहिता धात्रा दैवाच्च
स पुनः पुमान् ॥ १८ ॥ अमङ्गल्यध्वजश्चैव याज्ञसेनिर्महाबलः । न चामङ्गलिके
तस्मिन् प्रहरेदापगासुतः ॥ १९ ॥ एतद्विचिन्तयानस्य मज्जा सीदति मे भृशम् ।

वर्त्तमान हुए राजाओं के शरीर शोभा से रहित दीख रहे हैं वह शस्त्रधारी अलंकृत राजा लोग दुर्य्योधन की सेनामें शोभायमान नहीं हैं दोनों सेनाओं में चारों ओर को उसी पांचजन्य शंख और गाण्डीवधनुष के शब्द सुने जाते हैं निश्चय करके वीर अर्जुन युद्ध में दिव्य अस्त्रों को धारण करके युद्ध करने वाले अन्य शूर वीरों को छोड़कर पितामह के सन्मुख जायगा, हे महाबाहु अश्वत्थामा भीष्म और अर्जुन की सम्मुखता को शोचकर मेरेरोयें खड़े हुए जाते हैं और चित्त भी पीड़ामान् होता है वहां अर्जुन उस छली और पापात्मा शिखंडी को आगे करके भीष्म के मारने को गयाहै पूर्व समय में भीष्मने कहा था कि मैं शिखंडी को नहीं मारूंगा क्योंकि इसको ईश्वर ने पहले स्त्री किया था फिर प्रारब्ध से पुरुष होगया है, यह यज्ञसेन का पुत्र महाबली अशुभ ध्वजावाला है इस हेतु से गांगेय भीष्मजी उस अमंगल रूप पर प्रहार नहीं करेंगे यह विचारकर मेरेचित्त में बड़ा खेद होता

The faces of the kings have lost their splendour: the princes armed and decked in the armies of Duryodhan donot look splendid. On all sides and in both the armies are heard the sounds of the conch Panchjanya and the bow Gandiv. Surely brave Arjun, armed with divine weapons, leaving other warriors aside, will face the grandfather. My hair, brave Ashwathama, stand on end when I think of the encounter between Bhishm and Arjun. My mind is distressed to think that Arjun under the cover of that deceitful and wicked Shikhandi has gone to slay Bhishm. Bhishm has already said that he will not lay hands on Shikhandi who was originally a woman and turned to manhood as luck would have it. This son of Yajyasen is of great strength and has ominous banner and therefore Bhishm will not discharge his weapons at him. I am much distressed when I happen to think of this. Shikhandi desirous of fighting and enrag-

अभ्युद्यतोरणे पार्थः कुरुवृद्धमुपाद्रवत् ॥ २० ॥ युधिष्ठिरस्य च क्रोधो भीष्मश्चार्जुनसङ्गत । मम चात्र समारम्भः प्रजानामशिवं ध्रुवम् ॥ २१ ॥ मनस्वी बलवान् शूरः कृतास्त्रो लघुविक्रम । दूरपाती दृढेषुश्च निमित्तज्ञश्च पाण्डव. ॥ २२ ॥ अजेयः समरे चापि देवैरपि सवासवै. । बलवान् बुद्धिमांश्चैव जितक्लेशो युधांवर ॥ २३ ॥ विजयी च रणे नित्यं भैरवास्त्रश्च पाण्डवः । तस्य मार्गं परिहरन् द्रुतं गच्छ यतव्रत ॥ २४ ॥ पश्यैतन्महाघोरे संयुगं वैशसं महत् । हेमचित्राणि शूराणां महान्ति च शुभानि च ॥ २५ ॥ कवचान्य वदीर्यन्ते शरैः सन्नतपर्वभिः । छिद्यन्ते च ध्वजाग्राणि तोमराश्च धनूंषि च ॥ २६ ॥ प्रासाश्च विमलास्तीक्ष्णाः शक्त्यश्च कनकोज्ज्वलाः । वैजयन्त्यश्च नागानां संयुद्धेन किरीटिना ॥ २७ ॥ नायं संरक्षितुं

है युद्धमें प्रवृत्त चित्त क्रोधभरा शिखंडी भी कौरवों के वृद्ध पितामह भीष्मजी के सम्मुख गया है । २० । युधिष्ठिर को क्रोध और अर्जुन से सम्मुख हुआ भीष्म और यहांपर मेरा युद्धसम्बन्धी कर्मका प्रारम्भ यह सब बातें निश्चय करके प्रजाओं के अकल्याण की करनेवाली हैं, पांडव अर्जुन साहसी पराक्रमी शूरवीर अस्त्र शस्त्रों का ज्ञाता बड़े तीक्ष्ण दूर गिरने वाले बाणोंका फेंकनेवाला और लक्ष्य भेदी अर्थात् लक्ष्य का जाननेवाला है, यह अर्जुन इन्द्र समेत देवताओं से भी युद्धमें दुर्जय और अजेय है और पराक्रमी बुद्धिमान् दुःख रोगादि का जीतने वाला शूरवीरोंमें श्रेष्ठ युद्धमें सदैव विजयी और भयकारी अस्त्रोंका फेंकने वाला है हे सावधान व्रत पुत्र तुम अर्जुन के मार्ग को रोकते हुए शीघ्र जाओ अब इस महा भयकारी युद्धमें इस बड़े नाश को देखो शूर लोगों के कवच जो सुवर्ण से जटित और बड़े मंगल स्वरूप हैं वह सब गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से तोड़े जाते हैं और ध्वजा तोमर धनुषभी खंड २ किये जाते हैं, और अत्यंत क्रोधयुक्त अर्जुन के हाथ से साफ और तेजमास और सुवर्ण के समान उज्ज्वल शक्तियां और हाथियों

ed in battle has also gone to face the grandfather. 20 . Yushthir's anger, Arjun's encounter with Bhishm and my fighting here all these things portend ill to the people. Arjun the Pandav is courageous, strong, valliant and clever in the use of weapons and he throws his sharp arrows far and hits the mark. Arjun is invincible by Indra and other gods. He is full of prowess, wise, conquerer of pain and sickness, best of warriors, ever conquering, terror-striking and discharger of weapons. Haste, son, check Arjun's advance and see the dreadful slaughter in battle. The armours of the warriors, gold bedecked and of beautiful make, are being pierced by arrows having hidden knots and the banners, tomars and bows are being broken into pieces. Sharp *prases*, spears bright as gold, and banners on elephants are being cut down by Arjun. It is no time, my son to remain idle and to rely on the assistance of others Think of heaven

कालः प्राप्तान् पुत्रोपजीविभिः । याहि स्वर्गं पुरस्कृत्य यशसे विजयाय च ॥ २८ ॥
रथनागहयावर्त्तां महाघोरां सुदुर्गमाम् । रथेन संग्रामनदीं तरत्येष कपिध्वजः ॥२९॥
ब्रह्मण्यता दमो दानं तपश्च चरितं महत् । इहैव दृश्यते पार्थे भ्राता यस्य धनञ्जयः
॥ ३० ॥ भीमसेनश्च बलवान् माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । वासुदेवश्च वार्ष्णेयो यस्य
नाथो व्यवस्थितः ॥ ३१ ॥ तस्यैव मन्युप्रभवो धार्त्तराष्ट्रस्य दुर्मतेः । तपोदग्ध
शरीरस्य कोपो दहति भारतीम् ॥ ३२ ॥ एष संदृश्यते पार्थो वासुदेवव्यपाश्रयः ।
दारयन् सर्वसैन्यानि धार्त्तराष्ट्राणि सर्वशः ॥ ३३ ॥ एतदालोक्यते सैन्यं क्षोभ्य
माणं किरीटिना । महोर्मिनक्रं सुमहत्तिमिनेव महाजलम् ॥ ३४ ॥ हाहाकिलकिला
शब्दाः श्रूयन्तेच चमूमुखे । याहि पाञ्चालदायाद महं यास्ये युधिष्ठिरम् ॥ ३५ ॥
दुर्गमंह्यन्तर राज्ञो व्यूहस्यामिततेजसः । समुद्रकुक्षिप्रतिमं सर्वतोतिरथैः स्थितैः

की वैजयन्ती अर्थात् पताका दूरहीं है हे पुत्र दूसरेके आश्रयसे समयव्यतीत करने
वालोंसे प्राणोंकी रक्षाकरनेका यह समय नहीं है स्वर्गको मुख्य करके यश और
विजयकेनिमित्तुमजाओ, यह वानरध्वज अर्जुनरथकेद्वारा हाथी घोड़े और रथोंसे
लहराती बड़ीभयकारी अतिअगम्य युद्ध रूपी नदीको तरता है, इसलोकमें युधिष्ठि-
रहीमें कियाहुआ बड़ाभारी तप दान वा चित्तकी शान्ती और ब्राह्मणोंकी रक्षा
करना दृष्ट पड़ता है जिसकेभाई अर्जुन । ३० । वा महाबली भीमसेन वा माद्री के
पुत्र नकुल सहदेव और नाथ वासुदेवजी वर्त्तमानहैं । ३१ । उस दुर्बुद्धी जल
कुक्कुड़ दुर्य्योधनके अभिमान से उत्पन्न यह तपरूप क्रोध भरतवंशियों की सेना को
भस्मकरे डालताहै, यह वासुदेवजी का आश्रय रखनेवाला अर्जुन दुर्य्योधनकी सब
सेनाओं को सब रीतिसे छि न भिन्न करता विदितहोरहाहै, यह सबसेना अर्जुनके
हाथसे व्याकुल बड़े तरंगोंसे युक्त नानाप्रकारके जलजीवों से व्याकुल समुद्रकी समान
देखनेमें आती है, हाय हायऔर कलकलाशब्द सेना के मुखपर सुने जातेहैं तुमराजा
द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न के सन्मुख जाओ मैं युधिष्ठिर के सम्मुखजाऊंगा । ३५ ।

and go for victory and fame. Arjun of monkey's standard is crossing by means of his chariot the dreadful and hard-to-cross river having elephants, horses and chariots for its tides. It appears that Yudhishthir alone is the seat of penances, charity, peace of mind and protection of Brahmans. He has on his side his brothers Arjun, valliant Bhimson and Nakul and Sahadev the sons of Madri and Vasudev the lord of all.31. Produced by the folly of the unwise waterfowl Duryodhan, this ascetic anger will cousume all the armies. Arjun, relying on the help of Vasudev, is dispersing the Kaurav armies. All these armies are disturbed by Arjun like an angry sea with big waves and aquatic animals. The sounds of grief and anger are prominent throughout the armies You may go and face Dhrishtadyumn the son of Drupad and I shall encounter Yudhishthir.35.

॥ ३६ ॥ सत्यकिश्चाभिमन्युश्च धृष्टद्युम्नवृकोदरौ । पर्य्यरक्षन्त राजानं यमौ च मनुजेश्वरम् ॥ ३७ ॥ उपेन्द्रसदृशः श्यामो महाशाल इवोद्गतः । एष गच्छत्यनीकाग्रे द्वितीय इव फाल्गुनः ॥ ३८ ॥ उत्तमास्त्राणि चाधत्स्व गृहीत्वा च महद्धनुः । पार्षतं याहि राजानं युध्यस्व च वृकोदरम् ॥ ३९ ॥ कोहि नेच्छेत् प्रियं पुत्रं जीवन्तं शाश्वतीः समाः । क्षत्रधर्मन्तु सम्प्रेक्ष्य ततस्त्वां नियुनज्म्यहम् ॥ ४० ॥ एष चाति रणे भीष्मो दहते वै महाचमूम् । युद्धेषु सदृशस्तात यतस्य वरुणस्य च ॥ ४१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्रोणाश्वत्थामसंवादे त्रयोदशाधिकशततोऽध्यायः ॥ ११३ ॥

सञ्जय उवाच । भगदत्तः कृपः शल्यः कृतवर्मा तथैव च । विन्दानुविन्दावावन्त्यौ सैन्धवश्च जयद्रथः ॥ १ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च तथा दुर्मर्षणादयः । दशैते तावका योधा

बड़े तेजस्वी राजा युधिष्ठिर के बड़े व्यूहका मध्य सब ओरको नियत अति रथियों से समुद्रकी कुक्षिके समान कठिनतासे पार उतरने के योग्य है, सात्यकी अभिमन्यु धृष्टद्युम्न भीमसेन नकुल सहदेव इन सब ने राजा युधिष्ठिर को चारों ओर से रक्षित किया है, विष्णु के समान श्याम बड़े शालि वृक्षके समान उन्नत दूसरे अर्जुन के समान यह शूरवीर सेना के आगे जाता है, इससे तुम बड़े धनुषको ले उत्तम अस्त्रोंको धारणकर राजा धृष्टद्युम्न के सम्मुख जाकर भीमसेनसे लड़ो। कौनसामनुष्य अपने प्यारे पुत्रको सदैव चिरंजीवी नहीं चाहता है मैं क्षत्रीधर्म को देखकर उसके कारण से तुम को आज्ञा देताहूं कि ।४०। यह भीम महायुद्ध में बड़ी सेनाको नाश करताहै हेपुत्र यह भीमसेन युद्धमें यमराज और वरुणके समानहै ।४१।

अध्याय ११४ ॥

संजय बोले कि उस महात्मा द्रोणाचार्य्यके इसवचनको सुनकर भगदत्त कृपाचार्य्य शल्य कृतवर्मा विन्द अनुविन्द अवन्तिदेश के राजालोग वा सिन्धु का राजा

The centre of glorious Prince Yudhishthir's array, having brave warriors on all sides, is hard to cross like the ocean. Satyaki, Abhimanyu, Dhrishtadyumna, Bhimsen, Nakul and Sahadev protect prince Yudhishthir on all sides. Dark-skinned like Vishnu, tall as a *sal* tree and brave like a second Arjun is the commander of the armies. You may go armed with your good weapons and with your bow encounter Dhrishtadyumn and Bhimsen. What man will not wish long life to his son; but I, firm on Kshatrya duty, send you against Bhim who is destroying this large army in the field of battle like Yamraj or Varun. 41.

CHAPTER CXIV

Sanjaya continued:—" Having heard the words of Dronacharya, Bhagdatt, Kripacharya, Shalya, Kritvarma, Vind, Anuvind, the

भीमसेनमयोधयन् ॥ २ ॥ महत्या सेनया युक्ता नानादेशसमुत्थया । भीष्मस्य समरे राजन् प्रार्थयाना महद्यशः ॥ ३ ॥ शल्यस्तु नवभिर्बाणैर्भीमसेनमताडयत् । कृतवर्मा त्रिभिर्बाणैः कृपश्च नवभिः शरैः ॥ ४ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च भगदत्तश्च मारिष । दशभि र्दशभिर्बाणैर्भीमसेनमताडयन् ॥ ५ ॥ सैन्धवश्च त्रिभिर्बाणैर्भीमसेनमताडयत् । विन्दानु विन्दावावन्त्यौ पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः ॥ ६ ॥ दुर्मर्षणस्तु विंशत्या पाण्डवं निशितैः शरैः । स तान् सर्वान् महाराज राजमानान् पृथक् पृथक् ॥ ७ ॥ प्रवीरान् सर्वलोकस्य धार्त्तराष्ट्रान् महारथान् । जघान समरे वीरः पाण्डवः परवीरहा ॥ ८ ॥ सप्तभिः शल्य माविध्यत् कृतवर्माणमष्टभिः । कृपस्य सशरं चापं मध्ये चिच्छेद भारत ॥ ९ ॥ अथैनं छिन्नधन्वानं पुनर्विव्याधसप्तभिः । विन्दानुविन्दौ च तथा त्रिभिस्त्रिभिरताडयत् ॥१०॥

जयद्रथ चित्रसेन विकर्ण दुर्मर्षण आदि आपके इन दश शूरवीरों ने युद्धकिया, वह राजा लोग नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होनेवाले बड़ी सेना समेत थे और भीष्म के बड़े यशको चाहनेवाले थे उनमें से शल्य ने नौ बाणों से कृतवर्मा ने तीन बाणों से कृपाचार्य्य ने नौ बाणों से भीमसेनको घायल किया और चित्रसेन भगदत्त और विकर्ण ने दश २ बाणों से जयद्रथ ने तीन बाणों से व्यथित किया । ५ । और अवन्ति देशके राजा विन्द अनुविन्द ने पांच २ बाणों से और दुर्मर्षणने तीक्ष्णधारके बीस बाणों से भीमसेन को घायल किया, हे महाराज फिर उन सब पृथक् शोभायमान महाभारती धृतराष्ट्र के पुत्रोंको, युद्ध में घायलकरके शत्रुओं के मारनेवाले वीर पांडव भीमसेन ने सात बाणसे शल्य को आठ से कृतवर्मा को घायलकर, कृपाचार्य्यके बाण समेत धनुष को बीच में से काटकर फिर उस टूटे धनुषवाले को सात बाणों से घायल किया, वैसेही अवन्तिदेश के राजा विन्द अनुविन्द को तीन २ बाणों से और दुर्मर्षण को बीस बाणों से और चित्रसेन को

---

princes Avanti, the king of Sindh, Jayadrath, Chitrasen, Vikarn, Durmarshan and others—all these ten warriors encountered Bhimsen. They were accompanied by the warriors of different climes and were desirous of Bhishm's fame. Shalya wounded Bhim with nine arrows, Kritvarma wounded him with three, Kripacharya with nine Chitrasen Bhagdatta and Vikarn wounded him with ten arrows each and Jayad. rath with three 5. Vind and Anuvind, the princes of Avanti, wounded him with five arrows each and Durmarshan pierced him with twenty sharp arrows The destroyer of enemies, Bhimsen the brave Pandav wounded all those sons of Dhritrashtra in battle, he pierced Shalya with seven arrows and Kritvarma with eight, and having cut the bow and arrow of Kripacharya from the middle he wounded him with seven arrows. In the same manner he wounded Vind and Anuvind with three arrrows each, Durmarshan with twenty and Chitrasen

दुर्मर्षणञ्च विंशत्या चित्रसेनञ्च पञ्चभिः । विकर्णं दशभिर्वाणैः पञ्चभिश्च जयद्रथम् ॥११॥ विध्वा भीमोनदद्धृष्टः सैन्धवञ्च पुनस्त्रिभिः । अथान्यद्धनुरादाय गौतमो रथिनां वरः ॥ १२ ॥ भीमं विव्याध संरब्धो दशभिर्निशितैः शरैः । स विद्धो दशभिर्वाणैस्तोत्रै रिव महाद्विपः ॥ १३ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज भीमसेनः प्रतापवान् । गौतमं ताडयामास शरैर्बहुभिराहवे । १४ ॥ सैन्धवस्य तथाश्वांश्च सारथिञ्च त्रिभिः शरैः । प्राहिणो मृत्युलोकाय कालान्तकसमद्युतिः ॥ १५ ॥ हताश्वात्तु रथात्तूर्णमवप्लुत्य महारथः । शरांश्चिक्षेप निशितान् भीमसेनस्य संयुगे ॥ १६ ॥ तस्य भीमो धनुर्मध्ये द्वाभ्यां चिच्छेद मारिष । भल्लाभ्यां भरतश्रेष्ठ सैन्धवस्य महात्मनः ॥ १७ ॥ स छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः । चित्रसेनरथं राजन्नारुरोह त्वरान्वितः ॥ १८ ॥ अत्यद्भुततरं कर्म कृतवांस्तत्र पाण्डवः । महारथान् शरैर्विध्वा वारयित्वा च मारिष । १९॥ विरथं सैन्धवं

पांच वाणसे घायल किया, । १० । फिर विकर्णको दश वाणों से जयद्रथको पांच वाणसे घायलकर फिर उसी को तीन तीक्ष्ण वाणों से व्यथित कर के बड़े प्रसन्न चित्त होकर भीमसेन गर्जना करने लगे, तब रथियों में श्रेष्ठ क्रोधयुक्त कृपाचार्य्य ने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्ण धारवाले द्वादश वाणों से भीमसेनको घायल किया वह वारह वाणोंसे ऐसा घायल हुआ जैसे कि चाबकोंसे हाथी घायल होता है, इस के पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने, युद्धमें अनेक वाणों से कृपाचार्य्य को घायल करके तीन वाणों से जयद्रथ के घोड़े और सारथीको मृत्युके लोक में भेजा फिर उस महारथी ने मृतक घोड़ों के रथ से शीघ्रही कूदकर । १५ । भीमसेनके ऊपर तीक्ष्णधारवाले वाणों को फेंका हे राजा धृतराष्ट्र भीमसेन ने दो भल्लों से उस महात्मा जयद्रथ के धनुष को मध्य में से काटा, वह टूटेधनुषरथहीन शीघ्रता करने वाला जयद्रथ जिसके घोड़े और सारथी मरगये थे ।१७। चित्रसेन के रथपर सवार हुआ वहां पांडव भीमसेन ने युद्ध में अपूर्व कर्म को किया । १८ । अर्थात् उसने सब लोगों के देखते वाणों से महारथियोंको घायल कर के जयद्रथको विरथ किया,

with five 10. Then he wounded Vika n with ten arrows, and having wounded Jayadrath with five and three arrow he began to roar loud Then Kripacharya the best of charioteers, having taken up another bow, wounded Bhimsen with twelve arrows as an elephants is wounded with darts Then Bhimsen enraged and full of prowess, wounded Kripacharya with many darts and with three darts sent Jayadrath's horses and coachman to the region of Yam That great warrior soon leapt down from the chariot of which the horses were dead 15. He then showered his sharp arrows on Bhim The latter with two darts cut down Jayadrath's bow from the middle Then Jayadrath with his bow cut down and deprived of the use of his chariot of which the horses and driver were dead, mounted the chariot of Chitrasen There Bhimsen the Pandav did prodigies of valour 18 Within sight of

चक्रे सर्वलोकस्य पश्यतः । तदा न ममृषे शल्यो भीमसेनस्य विक्रमम् ॥ २० ॥ स सन्धाय शरांस्तीक्ष्णान् कर्मारपरिमार्ज्जितान्। भीमं विव्याध समरे तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् ॥२१॥ कृपश्च कृतवर्माच भगदत्तश्च वीर्य्यवान्। विन्दानुविंदावावन्त्यौ चित्रसेनश्च संयुगे॥ २२॥ दुर्मर्षणो विकर्णश्च सिन्धुराजश्च वीर्यवान्। भीमं ते विव्यधुस्तूर्णं शल्यहेतारारिन्दमाः ॥२३॥ स च तान् प्रतिविव्याध पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः। शल्यं विव्याध सप्तत्या पुनश्च दशभिः शरैः ॥ २४ ॥ तं शल्यो नवभिर्भित्वा पुनर्विव्याध पञ्चभिः। सारथिञ्चास्य भल्लेन गाढं विव्याध मर्म्मणि ॥ २५ ॥ विशोकं प्रेक्ष्य निर्भिन्नं भीमसेनः प्रतापवान्। मद्रराजं त्रिभिर्बाणैर्बाह्वोरुरसि चार्पयत् ॥ २६ ॥ तथेतरान् महेष्वासांस्त्रिभिस्त्रिभिरजिह्मगैः। ताडयामास समरे सिंहवद्विननादच ॥ २७॥ ते हि यत्ता मह-

तब शल्यने भीमसेनके पराक्रम को नहीं सहा और बड़े तीक्ष्ण बाणों को धनुषपर चढ़ाकर । २० । भीमसेन को घायल किया और तिष्ठ २ वचनको उच्चारण किया इस को देखकर पराक्रमी कृपाचार्य कृतवर्मा भगदत्त । २१ । और अवन्तिदेश के राजा विन्द अनुविन्द दुर्मर्षण विकर्ण पराक्रमी जयद्रथ इन सब शत्रु विजयी लोगोंनेभी शल्यको देखकर शीघ्रही भीमसेनको घायल किया और उसने उन सबको पांच २ बाणोंसे घायल किया । २३ । शल्यको सत्तर बाणों से और दश भल्लों से घायल किया फिर शल्यने उसको नौ बाणों से घायल करके पांच बाणों से फिर व्यथित कर दिया । २४ । और एक भल्ल से उसके सारथी को मर्मस्थल में घायल किया इसके पीछे उस प्रतापी भीमसेन ने अपने विशोकनाम सारथी को घायल देखकर । २५ । तीन बाणों से मद्र के राजा शल्यको भुजा और छाती पर घायल किया, इसी प्रकार सीधे चलनेवाले तीन २ बाणों से अन्य २ बड़े २ धनुषधारियों को व्यथित करताहुआ सिंह के समान गर्जना करी, फिर उन सावधान बड़े २ धनुषधारियों ने युद्धमें कुशल भीमसेन को तीक्ष्ण नोक

all he wounded tho-e warriors and made Jayadrath chariotless. Shalya could not bear to see his prowess and put up sharp arrows to his bow. 20 Havivg wounded Bhimsen he cried out 'stay, stay. At this valliant Kripachary, Kritvarma, Bhagdatta, Vind and Anuvind the two princes of Avanti, Durmarshan, Vikarn, and valliant Jayadrath, all these conquerers of foes followed the example of Shalya in wounding Bhimsen and he in his turn, wounded them with five arrows each. 23. He wounded Shalya with seventy arrows and ten darts. Shalya wounded him with nine and five arrows and his coachman with one. Glorious Bhimsen seeing Vishwak his coachman wounded, pierced the king of Madra with three arrows on the breast and arms. In the same maner he wounded the other great archers with three arrows each going straight and then roared like a lion. Then those mighty and skilful archers wounded Bhimsen, clever in fighting,

प्यासा. पाण्डव युद्धकोविदम्। त्रिभिस्त्रिभिरकुण्ठाग्रैर्भृशं मर्मस्वताडयन्॥ २८॥ सोतिविद्धो महेष्वासो भीमसेनो न विव्यथे। पर्वतो वारिधाराभिर्वर्षमाणैरिवाम्बुदैः॥ २९॥ स तु क्रोधसमाविष्ट पाण्डवानां महारथ। मद्रेश्वरं त्रिभिर्वाणैर्भृशं विध्वा महायशा॥ ३०॥ कृपञ्च नवभिर्वाणैर्भृशं विध्वा समंततः। प्राग्ज्योतिषं शतेराजौ राजन् विव्याध सायकैः॥ ३१॥ ततस्तु सशरं चापं सात्वतस्य महात्मनः। क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन चिच्छेद कृतहस्तवत्॥ ३२। तथान्यद्धनुरादाय कृतवर्मा वृकोदरम्। आजघान भ्रुवोर्मध्ये नाराचेन परन्तप॥ ३३॥ भीमस्तु समरे विध्वा शल्यं नवभिरायसैः। भगदत्तं त्रिभिश्चैव कृतवर्माणमष्टभिः॥ ३४॥ द्वाभ्यां द्वाभ्यान्तु विव्याध गौतमप्रभृतीन् रथान्। ते पित समरे राजन् विव्यधुर्निशितैः शरैः॥ ३५॥ स तथा पीड्यमानोपि

वाले तीन २ वाणों से मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल किया परन्तु वह अत्यन्त घायल बड़ा धनुषधारी भीमसेन ऐसे पीड़ामान् नहीं हुआ। २८। जैसे कि जल धारा वर्षा करने वाले बादलों से पर्व्वत पीड़ा नहीं पाता है फिर उस बड़े यशस्वी महारथी पाण्डव भीमसेन ने क्रोधमें भरके सल्य राजा को तीन वाणों से अत्यन्त घायल करके युद्धभूमि में सौ शायकों से राजा प्राग्ज्योतिष को घायल किया। ३०। इसके पीछे इसी यशस्वीने कृपाचार्य को वाणों से अत्यंत घायल करके अपनी हस्तलाघवता से महात्मा कृतवर्मा के वाण समेत धनुष को। ३१। अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रों से काटा और इसी प्रकार से कृतवर्मा ने दूसरे धनुषको लेकर भीमसेन को। ३२। दोनों भृकुटियों के मध्य में नाराच वाणसे घायल किया फिर शत्रु संतापी भीमसेन ने शल्य को नौ लोहेके वाणों से घायल करके। ३३। तीन वाणों से भगदत्तको आठ वाणों से कृतवर्माको और दो २ वाणोंसे कृपाचार्य आदि रथियोंको घायल किया। ३४। इन सबोंनेभी इसको तीक्ष्णधारके वाणोंसे घायल किया। ३५। फिर महारथियोंके सब शस्त्रोंसे पीड़ामान्

with three arrows each in the vital parts, but that great archer, though much wounded, was not distressed at all as a mountain is not distressed by the fall of rain. Then the great warrior Bhimsen the Pandav, much enraged, wounded the king of Madra with three arrows and the king of Pragjyotish with a hundred 30. Then having wounded brave Kripacharya with his arrows, he showed the swiftness of his hand in cutting down the bow of Kritvarma The latter took up another bow and wounded Bhim in the middle of the brow. Then Bhim the destroyer of enemies, wounded Shalya with nine iron arrows and having struck Bhagdatta with three, he pierced Kritvarma with eight and Kripacharya with two 34. Those warriors too, wounded him with their sharp arrows 35. Exceedingly wounded by their arrows, Bhim did not care for them a straw and roamed free

सर्वशस्त्रैर्महारथैः । मत्वा तृणेन तांस्तुल्यान् विचचारगतव्यथः ॥३६॥ ये चापि रथिनां
श्रेष्ठा भीमाय निशितान् शरान् । प्रेषयामासुरव्यग्राः शतशोथ सहस्रशः ॥ ३७ ॥ तस्य
शक्तिं महावेगां भगदत्तो महारथः । चिक्षेप समरे वीर स्वर्णदण्डां महामते । ।३८ ॥
तोमरं सैन्धवो राजा पट्टिशञ्चमहाभुजः । शतघ्नींच कृपो राजञ्छरं शल्यश्च संयुगे
॥ ३९ ॥ अथेतरे महेष्वासाः पञ्च पञ्च शिलीमुखान् । भीमसेनं समुद्दिश्य
प्रेषयामासुरोजसा ॥ ४० ॥ तोमरञ्च द्विधा चक्रे क्षुरप्रेणानिलात्मजः ॥ पट्टिशञ्च
त्रिभिर्बाणैश्चिच्छेद तिलकाण्डवत् ॥४१॥ स बिभेद शतघ्नीञ्च नवभिः कङ्कपत्रिभिः ।
मद्रराजप्रयुक्तञ्च शरंछित्त्वामहारथः ॥ ४२ ॥ शक्तिंचिच्छेदसहसा भगदत्त रितांरणे ।
तथेतरान्शरान्घोरान्शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ४३ ॥ भीमसेनो रणश्लाघी त्रिधैकैक
समाच्छिनत् । तांश्च सर्वान् महेष्वासान् त्रिभिस्त्रिभिरताडयत् ॥ ४४ ॥ ततो
धनञ्जयस्तत्र वर्त्तमाने महारणे । आजगाम रथेनाजौ भीमं दृष्ट्वा महारथम् ॥ ४५ ॥

वह भीमसेन भी उनको तृणके समान कर दुःख से रहित प्रसन्न मुखहोकर भ्रमण करने लगा । ३६ । उन सावधान रथियों में श्रेष्ठ लोगों ने भी भीमसेन के ऊपर हजारों तीक्ष्ण बाणोंको चलाया । ३७ । महावीर भगदत्त ने उस बुद्धिमान्के ऊपर बड़ी वेगवान् प्रकाशित सुनहरी दण्डवाली शक्तीको और राजा जयद्रथने तोमरको महाभुजने पट्टिशको कृपाचार्य ने शतघ्नीको शल्यने बाणको ।३९।और अन्य बड़े२ धनुषधारियों ने भीमसेनको लक्ष्य अर्थात् निशाना बनाकर पांच २ शिलीमुख बाणों को बड़े पराक्रम से चलाया । ४० । तब वायुपुत्र भीमसेन ने तोमरको तो क्षुरप्रनाम बाणने दो खण्ड किये और तीन बाणसे पट्टिश को तिल के कांड के समान काटा । ४१ । नौ बाणों से शतघ्नी को तोड़ राजामद्र के चलाये हुए बाणको काटकर भगदत्तकी चलाईहुई शक्ती को काटडाला इसी प्रकार युद्ध में प्रशंसनीय भीमसेनने गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से अन्य भयानक बाणों को काटा अर्थात् प्रत्येक के खण्ड २ कर दिये और उन सब धनुषधारियों को तीन २ बाणोंसे घायल किया । ४४ । इसके पीछे वहां घोरयुद्ध के होनेपर अर्जुन उस युद्ध

---

of pain with a cheerful mind. The wisest and best of charioteers too, discharged thousands of arrows at him Valiant Bhagdatta discharged at him a swift and bright spear with gold handle Prince Jayadrath hurled a *tomar*, Kripacharya a *Shataghni*, Shalya his arrows and others great archers, having made him their mark, discharged at him five arrows each 40. Then Bhim the son of Vayu cut the *tomar* in two by one sharp arrow and *pattish* with three He cut the *Shataghni* with nine arrows, and having cut down the arrow of the king of Madra, he cut into pieces the spear of Bhagdatta. Thus Bhimsen, clever in battle, cut down other arrows too having hidden knots and wounded those archers with three arrows each. 44. At this when the battle was raging furiously, Arjun saw brave Bhim-

निघ्नन्त समरे शत्रून् योधयानश्च सायकैः । तौ तु तत्र महात्मानौ समेतौ वीक्ष्य पाण्डवौ ॥ ४६ ॥ न शशासुर्जयं तत्र तावका पुरुषर्षभा । अथार्जुन रणे भीम योधयन्त महा रथान् ॥ ४७ ॥ भीष्मस्य निधनाकाक्षी पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । आससाद रणे वीरास्तावकान् दश भारत ॥ ४८ ॥ यस्म भीम रणे राजन् योधयन्तो व्यवस्थिता । वीभत्सुस्ता नधा विव्यद्धीमस्य प्रियकाम्यया ॥ ४९ ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा सुशर्माणमचोदयत् । अर्जुनस्य वधार्थाय भीमसेनस्य चोभयो ॥ ५० ॥ सुशर्मन् गच्छ शीघ्र त्व बलौंघै परिवारित । जहि पाण्डुसुतावेतौ धनञ्जयवृकोदरौ ॥ ५१ ॥ तच्छुत्वा वचन तस्य त्रैगर्त्त प्रस्थलाधिप । अभिद्रुत्य रणे भीम मर्ज्जुन चैव धन्विनौ ॥ ५२ ॥ रथैरनेक साहस्रै समन्तात् पर्य्यवारयत् । तत प्रवृते युद्ध मर्ज्जुनस्य परै सह ॥ ५३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्व्वणि भीष्मवधपर्व्वणि भीमार्जुन पराक्रमे चतुर्द्दशाधिकशततोऽध्यायः ॥ ११४ ॥

में शत्रुओं को मारता शायकों से लडता महारथी भीमसेन को देखकर रथपर बैठा हुआ युद्धभूमि में आया वहां उन दोनों महात्मा पाण्डवों को युद्धमें प्रवृत्त देखकर । ४६ । आपके शूरवीर पुरुषोंने वहां अपने विजयकी आशा नहीं की फिर युद्धमें महारथियों से लड़ते हुए भीमसेन को देखकर भीष्म के मारने की इच्छाकरने वाले अर्जुन ने शिखंडी को आगे करके उस युद्धमें आपके उन दश शूरों को पाया जो भीमसेन से युद्धकरने में नियतथे उनको अर्जुन ने भीमसेन की प्रसन्नता के लिये बाणों से घायल किया । ४९ । फिर राजा दुर्य्योधनने अर्जुन और भीमसेन इनदोनों के मारने के निमित्त राजासुशर्मा को आज्ञाकरी । ५० । कि हेसुशर्मा तुम अपनी सेनासमेत शीघ्रही जाकर इनदोनों पांडव अर्जुन और भीमसेन को मारो । ५१ । फिर प्रस्थलाधिप राजा सुशर्माने उसके उस वचनको सुन युद्ध में जाके भीमसेन और अर्जुन दोनों धनुषधारियों को । ५२ । हजारों रथियों समेत चारों ओरसे घेर लिया फिर अर्जुन से और शत्रुओं से युद्ध होना प्रारंभ हुआ ५३ ।

sen there and came on to him in his chariot, killing the enemies in the way And seeing the two Pandavas engaged there in battle your warriors despaired of their own victory Seeing Bhim engaged in fighting Arjun desirous of slaying Bhishm and led by Shikhandi, met in combat those ten warriors who were engaged in fighting with Bhim To please the latter he wounded them all with his arrows 49 Prince Duryodhan ordered king Susharma to kill Arjun and Bhim, saying, "Go, Susharma with your armies and kill both Arjun and Bhim." Susharma the king of Prasthal, at the order of Duryodhan, surrounded Bhim and Arjun with thousands of chariots and the fight was hard between Arjun and the enemies" 53

संजयउवाच ॥ अर्जुनस्तुरणेशल्यं यतमानंमहारथं । छादयामाससमरे शरैःसन्नतपर्वभिः ॥ १ ॥ सुशर्माणं कृपंचैव त्रिभिस्त्रिभिरविध्यत । प्राग्ज्योतिषं च समरे सैंधवंच जयद्रथं ॥ २ ॥ चित्रसेनं विकर्णंच कृतवर्माणमेवच । दुर्मर्षणंच राजेंद्र ह्यावंत्यौच महारथौ ॥ ३ ॥ एकैकं त्रिभिरानर्छत्कंककर्बर्हिणवाजितैः । शरैः रतिरथोयुद्धे पीडयन् वाहिनींतव ॥ ४ ॥ जयद्रथो रणेपार्थं विध्वाभारत सायकैः । भीमंविव्याध तरसा चित्रसेनरथेस्थितः ॥ ५ ॥ शल्यश्च समरे जिष्णुं कृपश्च रथिनांवरः । विव्याधाते महाराज बहुधाममभेदिभिः ॥ ६ ॥ चित्रसेना दयश्चैव पुत्रास्तवविशांपते । पंचभिः पंचभिस्तूर्णं संयुगे निशितैः शरैः ॥ ७ ॥ आजघ्नुरर्जुनंसंख्ये भीमसेनंच मारिष । तौतत्र रथिनां श्रेष्ठौ कौंतेयौ भरतर्षभौ ॥ ८ ॥ अर्पीडयेतां समरे त्रिगर्तानां महद्बलं । सुशर्मापि रणे पार्थं शरैर्नवभिराशुगैः ॥ ९ ॥ ननादबलवन्नादं त्रासयानो महद्बलं । अन्येच रथिनः

अध्याय ११५ ॥

संजय बोले कि फिर अर्जुन ने युद्ध में उपाय करनेवाले महारथी शल्य को गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे ढककर सुशर्मा कृपाचार्य्य राजाप्राग्ज्योतिष जयद्रथ राजा सिंध इनसबको तीन २ बाणों से घायल किया, और चित्रसेन विकर्ण कृतवर्मा दुर्मर्षण और अवन्तिदेशके महारथी राजालोग ।३। इन सबको कंक और मोरपक्षवाले तीन २ बाणों से घायल किया और युद्धमें अतिरथी जयद्रथने आपकी सेनाको बाणों से पीड़ित करते हुए अर्जुन को शायकों से घायल करके चित्रसेनके रथपर बैठकर बड़ीतीव्रतासे भीमसेनको घायल किया । ५ । हे राजा रथियों में श्रेष्ठ शल्य और कृपाचार्य्य ने मर्मभेदी बाणों से अर्जुन को अनेक रीतिसे घायल किया । ६ । और चित्रसेन आदि आपके पुत्रों ने तीक्ष्ण धारवाले पांच२ बाणों से, अर्जुन और भीमसेनको घायल किया वहां उन भरतवंशियों में और रथियों में श्रेष्ठ दोनों पांडवोंने । ८ । त्रिगर्त देशियों की बड़ी सेनाको पीड़ामान् किया फिर सुशर्माभी

CHAPTER CXV

Sanjaya continued:—"Having covered valliant Shalya with his arrows, Arjun wounded Susharma, Kripacharya, king Pragjyotish and Jayadrath the king of Sindh with three arrows each. He then wounded Chitrasen, Vikarn, Kritvarma, Durmarshan and the brave warrior princes of Avanti each with three arrows having peacock feathers. And wounding your armies with arrows, valliant Jayadrath wounded Arjun, and having mounted upon Chitrasen's chariot he wounded Bhim with great swiftness. 5. Shalya the best of charioteers, O king, and Kripacharya wounded Arjun in different ways. Your sons, Chitrasen and others, each of them wounded Bhim and Arjun with five arrows having sharp edges. Then the two Pandavas, best of charioteers and Bharats, cut down the large

शूरा भीमसेन धनंजयौ ॥ १०॥ विव्यधुर्निशितैर्बाणैः रुक्मपुंखैरजिह्मगैः । तेषान्तु रथिनां मध्ये कौंतेयौ भरतर्षभौ ॥ ११॥ क्रीडमानौ रथोदारौ चित्ररूपौ व्यदृश्यताम् । आमिषेप्सू गवामध्ये सिंहाविव मदोत्कटौ ॥ १२ ॥ छित्वाधनूंषिशूराणां शरांश्च बहुधारणे । पातयामास तुवीरौ शिरांसि शतशोनृणाम् ॥ १३ ॥ रथाश्च बहवोभग्ना हयाश्च शतशोहता । गजाश्च सगजारोहा पेतुरुर्व्यांमहाहवे ॥१४॥ रथिनः सादिनश्चापि तत्र तत्र निषूदिता दृश्यन्ते बहवोराजन्वेपमाना समंततः ॥ १५ ॥ हतैर्गजपदात्योघैर्वाजिभिश्चानिषूदितैः । रथैश्च बहुधाभग्नैः सतास्तीर्यतमेदिनी ॥ १६ ॥ छत्रैश्च पृथुभिश्छिन्नैर्ध्वजैश्च निपातितैः । अंकुशैः स्वपिविद्धैश्च परिस्तोमैश्चभारत ॥ १७ ॥ केयूरैः रांगदैर्हारै राङ्कवैर्मृदितैस्तथा । उष्णीषैर्ऋष्टिभिश्चैव चामरव्यजनैरपि ॥ १८ ॥ तत्र तत्रापविद्धैश्च बाहुभि

तीव्रगामी नौ बाणोंसे अर्जुन को घायल करके वहां सेनाको भयभीत करता हुआ बड़े शब्द से गर्जा और अन्य शूरवीर रथियों ने भीमसेन और अर्जुन को सीधे चलनेवाले सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण धारके बाणों से घायल किया उन रथियों के मध्य में भरतवंशियों में श्रेष्ठ कुन्ती के पुत्र महारथी क्रीडाकरते हुए ऐसे अपूर्व रूपसे आये जैसे कि बैलोंके मध्य में मांसकी इच्छा रखने वाले मतवाले दो सिंह आते है ।१२। उन दोनों वीरोंने युद्ध में शूरोंके धनुषोंको बहुत प्रकार से काटकर सैकड़ों मनुष्यों के शिरोंको गिराया । १३ । बहुतसे रथटूटे सैकड़ों घोडे मारेगये और सवारों समेत हाथी पृथ्वी पर गिरे । १४ । रथी और सवार भी जहां तहां नाशको प्राप्त चारों ओर से कंपते हुए दृष्टिआये । १५ । मृतक हाथी घोडे पदाती और अनेकप्रकारसे टूटेहुए रथों से पृथ्वी सविस्तरसी होगई, हे राजा अनेक प्रकार से टूटेहुए छत्र और गिराई हुई ध्वजा और खंडित अंकुश परशे केयूर बाजूबन्द हार कोमल मृगचर्म मंडील दुधारे खड्ग चामर वा व्यजनोंसे और जहांतहां कटीहुई

army of Trigartas Susharma too, having wounded Arjun with nine arrows, terrified the large army and roared a loud roar And other brave charioteers too, wounded Bhimsen and Arjun with straight going and sharp edged arrows having golden feathers In the midst of those charioteers entered the two valliant sons of Kunti, best of Bharats, like two lions desirous of flesh coming playfully in a strange way in the midst of a herd of bulls 12 The two warriors cut down in various ways the bows and heads of other warriors by hundreds Many chariots were broken, hundreds of horses were killed and elephants with their riders lay dead on the ground Chariots and their riders too, were destroyed here and there and were to be seen shaking 15 The ground was strewn over with the dead horses, elephants and foot soldiers and with the broken chariots The broken umbrellas, the fallen banners the broken goads, axes armlets, bracelets soft deer skins, turbans, double edged swords fly flappers

ध्वजोच्छ्रितैः । जन्मिद्व नरेन्द्राणां समास्तीर्यत मेदिनी ॥ १९ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम रणे पार्थस्य विक्रमम् । शरैः सवार्य्य तान् वीरान् यत् जघान महाबल ॥ २० ॥ पुत्रस्तु तवतं दृष्ट्वा भीमार्जुनपराक्रम । गांगेयस्य रथाभ्याश-मुपजग्मे महाबलः ॥२१॥ कृपश्च कृतवर्मा च सैन्धवश्च जयद्रथः । विन्दानुविन्दावावन्त्यौ नाजहुः संयुग तदा ॥ २२ ॥ ततो भीमो महेष्वासः फाल्गुनश्च महारथः । कौरवाणां चमूं घोरां भृशं दुद्रुवतू रणे ॥२३ ॥ ततो बर्हिणवाजानामयुतान्यर्बुदानिच । धनञ्जयरथे तूर्णं पातयन्तिस्मभूमिपा. ॥ २४ ॥ ततस्तान् शरजालेन सन्निवार्य्य महारथान् । पार्थः समन्तात् समरे प्रेषयामास मृत्यवे ॥ २५ ॥ शल्यस्तु समरे जिष्णुं क्रीडन्निव महारथ । आजघानोरसि क्रुद्धो भल्लै सन्नतपर्वभि ॥ २६ ॥ तस्य पार्थो धनुश्छित्वा हस्तावापञ्च पञ्चभिः । अथैनं सायकैस्तीक्ष्णैर्भृश विन्याध मर्मणि । २७ ॥ अथान्यद्धनुरादाय समरे भारता

राजाओं की चन्दनचर्चित भुजा और अंगोंओं मे भी पृथ्वी आच्छादित दीखती थी, वहां हमने युद्धके बीच अर्जुन के अपूर्व पराक्रम को देखा कि उस महाबली ने उन सबशूरवीरों को बाणों से ढककर घायल कर दिया । २० । फिर आपका महाबली पुत्र भीमसेन और अर्जुन के उस पराक्रम को देखकर गांगेय भीष्मजी के पास गया । २१ । तब कृपाचार्य्य कृतवर्मा जयद्रथ राजासिंध और अवन्ति देश के विन्द अनुविन्द नाम राजाओं ने युद्धको नहीं त्यागा । २२ । इसके पीछे बड़े धनुषधारी भीमसेन और महारथी अर्जुन युद्धमें कौरवोंकी महाभयकारी सेनाकी ओर दौड़े। २३ । इसके पीछे राजाओं ने बड़ी शीघ्रतासे मोरके समान चित्रित हजारों लाखों किन्तु अर्बुदों बाणों को अर्जुन के रथपर गिराया । २४ । तब अर्जुनने चारों ओर से उन महारथियों को बाणोंके जालसे रोककर मृत्यु के लोकों को भेजा । २५ । फिर क्रोधयुक्त युद्धमें क्रीड़ा करने महारथी शल्यने गुप्त ग्रंथीवाले भल्लों से अर्जुन को छातीपर घायल किया ।२६। तब अर्जुनने उसके धनुपको तोड़ पांचबाणोंसे उस के हस्तत्राणको काटके तीक्ष्ण शायकों से उसके मर्मस्थलोंको अत्यन्त घायल किया

and fans, the severed arms of the kings, sandal pasted, and other things covered the ground. Then we saw in the field of battle the wonder working prowess of Arjun who covered and wounded all those warriors with his arrows 20. Then your brave son, seeing the prowess of Bhim and Arjun, went to Bhishm the son of Ganga. Kripacharya, Kritvarma, Jayadrath the king of Sindh, and Vind and Anuvind the two princes of Avanti did not desert the field of battle Then the great archer warriors, Bhim and Arjun rushed up on the dreadful army of the Kauravas and the warriors with great dexterity discharged hundreds of thousands of arrows, peacock coloured, at the chariot of Arjun, but the latter destroyed the network of their arrows and sent them to the region of Yam 25 Valliant Shalya with arrows having hidden knots, as if playing in battle, wounded

धनम्। मद्रेश्वरो रणे जिष्णु ताडयामास रोषित ॥ २८ ॥ त्रिभि शरैर्महाराज वासुदेवं पञ्चभि.। भीमसेनञ्च नवभिर्बाहोरुरसि चार्पयत् ॥ २९ ॥ ततो द्रोणो महाराज मागधश्च महारथ ।। दुर्य्योधनसमादिष्टौ त देशमुपजग्मतु ॥ ३० ॥ यत्र पार्थो महाराज भीमसेनश्च पाण्डव । कौरव्यस्य महासेनां जघ्नतु सुमहारथौ ॥ ३१ ॥ जयत्सेनस्तु समरे भीम.भीमायुध युधि । विव्याध निशितैर्बाणैरष्टभिर्भरतर्षभ ॥३२ ॥ तं भीमो दशभिर्विध्वा पुनर्विव्याध पञ्चभि । सारथिञ्चास्य भल्लेन रथनीडादपातयत् ॥ ३३। उद्भ्रान्तैस्तुरगै स धद्रवमाणै समन्तत । मागधोपसृतो राजा सर्वसैन्यस्य पश्यत ॥ ३४। द्रोणश्च विवरं दृष्ट्वा भीमसेन शिलीमुखै । विव्याध बाणैर्निशितै पञ्चषष्टिभिरायसै ॥ ३५ ॥ त भीम समरश्लाघी गुरु पितृसम रणे । विव्याधपञ्चभिर्भल्लैस्तथा

। २७ । फिर क्रोधयुक्त राजा मद्रने दूसरे बड़े दृढ़धनुष को लेकर बाणों से अर्जुन को व्यथित किया ॥ २८ ॥ तीन बाणों से अर्जुन को पांच बाणों से वासुदेवजी को नव बाणों से भीमसेन को भुजा और छाती पर घायल किया । २९ । इसके पीछे महारथी द्रोणाचार्य्य और राजा मगध यह दोनों दुर्य्योधन की आज्ञासे उस स्थानपर पहुँचे ।३०। जहां कि बड़े महारथी अर्जुन और भीमसेन ने कौरवी दुर्य्योधन की बड़ी सेनाको माराथा फिर जयसेन ने भयकारी शस्त्रवाले भीमसेनको तीव्र आठबाणों से घायल किया । ३२ । और भीमसेनने उसको दश बाणों से घायल करके पांच बाणोंसे फिर घायल किया और एक भल्ल से उसके सारथीको रथके बैठने के स्थान से गिरादिया । ३३ । फिर वह राजा मगध सब सेना के देखतेहुए चारों ओर को बहकेहुए घोड़ों के कारण से युद्धसे दूर चलागया । ३४ । द्रोणाचार्य्यने समय पाकर तीक्ष्ण धारवाले लोहे के शिलीमुख नाम पैंसठ बाणों से भीमसेन को घायल किया । ३५ । हे भरतवंशी युद्धमें प्रशंसा पानेवाले भीमसेन ने

Arjun on the breast Arjun then cut down his bow and having cut asunder his hand guard with five arrows, wounded him in the vital parts very severely. Thereupon the king of Madra much enraged, taking up a hard bow, wounded Arjun with three arrows, Vasudev with five and Bhim with nine arrows on the breast and arms. In the meantime valliant Dronacharya and the king of Magadh came there by Duryodhan's order (30) where the great charioteers Arjun and Bhim were destroying the Kaurav armies Jayasen wounded Bhim of dreadful arms with eight arrows of very keen edge. Bhimsen wounded him with ten and five arrows and with one dart he caused the driver to fall down from his seat on the chariot. Then the king of Magadh was taken far from the sight of the armies by the driverless horses Dronacharya found an opportunity to pierce sixty-five iron arrows, sharpened on stone, through the body of Bhim, but the latter praiseworthy in battle wounded the venerable preceptor

पश्या च मारत ॥ ३६ ॥ अर्जुनस्तु सुशर्माणं विध्वा बहुभिरायसैः । व्यधमत्तस्य तत् सैन्यं महाभ्राणि यथानिलः ॥ ३७ ॥ ततो भीमश्च राजा च कौसल्यश्च बृहद्बलः । समवर्त्तन्त सङ्क्रुद्धा भीमसेनधनञ्जयौ ॥ ३८ ॥ तथैवपाण्डवा शूरा धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । अभ्यद्रवन् रणे भीष्मं व्यादितास्यमिवान्तकम् ॥ ३९ ॥ शिखण्डी तु समासाद्य भारतानां पितामहम् । अभ्यद्रवत सहृष्टो भयं त्यक्त्वा महारथात् ॥ ४० ॥ युधिष्ठिरमुखाः पार्था पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । अयोधयन् रणे भीष्मं सहिता सर्वसृञ्जयैः ॥ ४१ ॥ तथैव तावका सर्वे पुरस्कृत्य यतव्रतम् । शिखण्डिप्रमुखान् पार्थान् योधयन्तिस्म संयुगे ॥ ४२ ॥ तत प्रववृते युद्धं कौरवाणां भयावहम् । तत्र पाण्डुसुतैः सार्धं भीष्मस्य विजयं प्रति ॥ ४३ ॥ तावकानां जये भीष्मो ग्लह आसीद्विशाम्पते । तत्र हि द्यूतमासक्तं विजयायेतराय वा ॥ ४४ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु राजेन्द्र सर्वसैन्यान्य चोदयत् । अभ्यद्रवत गाङ्गेय

पिता के समान गुरूको भी पैसठ भल्लोंसे घायल किया । ३६ । फिर अर्जुनने बहुत से लोहेके बाणों से सुशर्मा को घायल करके उसकी उस भुजाको ऐसे अलग कर दिया जैसे कि वायु बादलों को अलग करदेताहै । ३७ । उसके पीछे भीष्म और राजा कौशल्य बृहद्बल यह सब अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर भीमसेन और अर्जुनके सम्मुख गये । ३८ । इसी रीतिसे शूर पांडव और पर्वतका पुत्र धृष्टद्युम्न उस मृत्युके समान भीष्मके सम्मुख गये ।३९। और अत्यन्त प्रसन्न चित्त शिखण्डी भरतवंशियों के पितामहको पाकर और उससे निर्भय होकर सम्मुख हुआ । ४० । और युधिष्ठिर आदि पांडव सब सृंजियों समेत शिखण्डीको आगे करके युद्ध में भीष्मजी से युद्ध करनेलगे ।४१। इसप्रकार आपके सबपुत्र भीष्मजीको आगे करके युद्ध में उन पांडवोंसे जिनका अग्रवर्ती शिखंडी था युद्ध करने में प्रवृत्तहुए । ४२ । उसके पीछे वहां पर भीष्मकी विजय के विषय में कौरवों का भयकारी युद्ध पांडवों के साथ जारीहुआ हे धृतराष्ट्र तब भीष्मजी आपके पुत्रों की विजयके ग्लह अर्थात् चौपड़के दांव हुए वहां पर विजय वा पराजय के निमित्त द्यूत प्रारम्भ हुआ फिर धृष्टद्युम्न ने सब सेनाको आज्ञाकरी कि हे श्रेष्ठ रथियो निर्भय होकर भीष्मके

with sixty five darts 36 Arjun then wounded Susharma with many iron arrows and severed his arm as the wind does the clouds. Then Bhishm with Princes Kosal and Vrihadbal, much enraged, encountered Bhim and Arjun In the same manner, the brave Pandav and Dhrishtadyumn the descendant of Parshat faced deadly Bhishm, and Shikhandi with a cheerful mind fearlessly encountered the grandfather of Bharat• 40 Yuddhishthi and other Pandavas with the Srinjayas, led by Shikhandi, fought against Bhishm In the same manner, your sons led by Bhishm encountered the Pandavas led by Shikhandi Then for the victory of Bhishm the Kauravas and the Pandavas fought a dreadful battle Bhishm

माभैष्ट स्वसत्तमा. ॥ ४५ ॥ सेनापतिवचः श्रुत्वा पाण्डवानां वरूथिनी । भीष्मं समभ्यधावन्त प्राणान्त्यक्त्वा महाहवे ॥ ४६ ॥ भीष्मोऽपि रथिनां श्रेष्ठः प्रतिजग्राह तां चमूम्। आपतन्तीं महाराज वेलामिव महोदधिः ॥ ४७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीमार्जुन पराक्रमे पंचदशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११५ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं शान्तनवो भीष्मो दशमेऽहनि सञ्जय । अयुध्यत महावीर्यः पाण्डवैः सह सृञ्जयैः ॥ १ ॥ कुरवश्च कथंयुद्धे पाण्डवान् प्रत्यवारयन्। आचक्ष्व मे महायुद्धं भीष्मस्याहवशोभिनः ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । कुरवः पाण्डवैः सार्धं यदयुध्यन्त भारत । यथा च तदभूद्युद्धं तत्तु वक्ष्यामि साम्प्रतम् ॥ ३ ॥ गमिताः परलोकाय परमास्त्रैः किरीटिना । अहन्यहनि संक्रुद्धास्तावकानां महारथा

सम्मुख चलो मन में किसी प्रकार भी सन्देह मतकरो । ४५ । तब पांडवों की सेना अपने सेनापति के वचन को सुनकर प्राणों के मोहको त्यागकर उस महायुद्ध में शीघ्रही भीष्म के सम्मुख गई । ४६ । हे महाराज रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने उस आईहुईबड़ी सेना को ऐसा रोका जैसे कि महासमुद्र को किनारा रोकताहै ४७ ॥

अध्याय ११६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय शंतनु के पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्मजी दशवें दिन पांडव और सृंजियों के साथ कैसे२ युद्धकरतेहुए और कौरवोंने युद्धमें पांडवोंको कैसे रोका हे संजय तू युद्धमें शोभापानेवाले भीष्मजीके महाभारी युद्धको मुझसे वर्णन करके कह ।२। संजय बोले कि हे भरतवंशी कौरव लोगोंने पांडवोंके साथ जैसे युद्धकिया और जैसे युद्धहुआ वह यथार्थ तुम से कहताहूं । ३ । अर्जुन के बड़े अस्त्रों से आप के महारथी अत्यन्त क्रोधपूर्वक प्रतिदिन परलोकमें भेजेगये ।४। और युद्धको विजयकरने

then was the bet in the game for victory and defeat Dhrishtadyumn gave an order to all his armies, to advance fearlessly against Bhishm without hesitation 45. The warriors careless of their lives rushed upon Bhishm at the word of command and Bhishm checked that advancing army as the coast checks the waters of the ocean " 47.

CHAPTER CXVI

Dhritarashtra said, " How did the son of Shantanu, Bhishm of great prowess, fight against the Pandavas and the Srinjayas on that tenth day ? How did the Kauravas check the Pandavas ? Give me Sanjaya, a detailed account of the great war of Bhishm " Sanjaya:— " I shall tell you how the Kauravas and the Pandavas fought against each other and the events of the war as they happened 3 By the powerful weapons of Arjun your enraged warriors were sent every

॥ ४ ॥ यथाप्रतिज्ञं कौरव्यः स चापि समितिञ्जयः । पार्थानामकरोद्भीष्मः सततं समितिक्षयम् ॥ ५ ॥ कुरुभिः सहितं भीष्मं युध्यमानंपरन्तप । अर्जुनञ्च सपाञ्चाल्यं संशयो विजये भवत् ॥ ६ ॥ दशमेहनि तस्मिंस्तु भीष्मार्जुनसमागमे । अवर्त्तत महारौद्रः सततं समितिक्षयः ॥ ७ ॥ तस्मिन्नयुतशो राजन् भूयशश्च परन्तपः । भीष्मः शान्तनवो योधान् जघान परमास्त्रवित् ॥ ८ ॥ येषामज्ञातकल्पानि नामगोत्राणि पार्थिव । ते हतास्तत्र भीष्मेण शूराः सर्वेऽनिवर्त्तिनः ॥ ९ ॥ दशाहानि ततस्तप्त्वा भीष्मः पाण्डववाहिनीम् । निरविद्यत धर्मात्मा जीवितेन परन्तप ॥ १० ॥ स क्षिप्रं वधमन्विच्छन्नात्मनोभिमुखोरणे । न हन्यां मानवश्रेष्ठान् संग्रामे सुबहूनिति ॥ ११ ॥ चिन्तयित्वा महाबाहुः पिता देवव्रतस्तव । अभ्यासस्थं महाराज पाण्डवं वाक्यमब्रवीत् ॥ १२ ॥ युधिष्ठिर महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद । शृणुष्व वचनं

वाले उस कौरवी भीष्मने भी अपने कियेहुए सत्यसंकल्पके अनुसार पांडवोंकी सेनाका सदैव नाश किया ।५। हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र कौरवों समेत भीष्म और धृष्टद्युम्नसमेत अर्जुन इनदोनों युद्धकरनेवालोंकोअपने २ विजय करने में सन्देह हुआ । ६ । फिर उस दशवेंदिन के युद्धमें भीष्म और अर्जुन की सम्मुखता में वारम्बार वड़ी भयकारी प्रलय वर्त्तमानहुई, उसदिनमें शत्रुसंतापी उत्तम अस्त्रों के ज्ञाता भीष्मजीने हजारों वड़े २ शूरवीरों को मारा । ८ । उनलोगों के नाम और गोत्र अज्ञातकल्पके समान थे अर्थात् नहीं मालूम सेही थे वह युद्ध में पीठ न मोड़नेवाले महाशूर भीष्मजी के हाथ से मारेगये । ९ । इसके पीछे धर्मात्मा भीष्मजी ने दशदिन तक पांडवी सेना को अच्छीरीति से संतप्त करके जीवन से वैराग्य पाया । १० । वह युद्ध में सम्मुख शीघ्रही अपने मरनेका इस रीति से विचार करनेवाला हुआ कि मैं युद्धमें बहुतसे श्रेष्ठ मनुष्यों को नहीं मारूंगा । ११ । हे महाराज आप के पिता देवव्रत महाबाहु भीष्मजी चिन्ताकरके पांडवों के सम्मुख होकर यह वचनबोला । १२ । कि हे वड़े ज्ञानी सर्वशास्त्रज्ञ

day to the other world. The conquerer in battle, Bhishm the Kaurav destroyed every day the army of the Pandavas according to his promise. The Kauravas with Bhishm and Arjun with Dhrishtadyumn on both sides were doubtful of their victory. On the tenth day both Arjun and Bhishm fought very hard. Bhishm the destroyer of enemies and skilful in the use of weapons killed thosands of great warriors on that tenth day. The names and families of the warriors who, not turning their face from the battle met their death at the hands of Bhishm, cannot be told. Having destroyed the armies of the Pandavas for ten day, Bhishm, left all regard for his life. 10. While in the field of battle his thoughts about his death ran thus:—" I shall not slay any more good warriors in battle." Your father Devarat, better known as Bhishm of great arms, with this thought uppermost

[४११२] तात धर्म्यं स्वर्ग्यञ्च जल्पत ॥ १३ ॥ निर्विंणोस्मि भृश तात देहेनानेन भारत।
... सुहृद् प्राणिनोरण ॥१४॥ तस्मात् पार्थ पुरोधाय पञ्चालान्
सृञ्जयांस्तथा । मद्वधे क्रियतां यत्नो मम चेदिच्छासि प्रियम् ॥ १५ ॥ तस्य तन्म
तमाज्ञाय पाण्डव सत्यदर्शी । भीष्म प्रति ययौ राजा सग्रामे सह सृञ्जयै ॥ १६॥
धृष्टद्युम्नस्ततो राजन् पाण्डवश्च युधिष्ठिर । श्रुत्वा भीष्मस्य तां वाच चोदयामास
दुर्बलम् ॥ १७ ॥ अभिद्रवध्व युध्यध्व भीष्म जयत सयुगे । रक्षिता सत्यसन्धेन
जिष्णुना रिपुजिष्णुना ॥ १८ ॥ अयञ्चापि महेष्वास पार्षतो वाहिनीपति । भीम
सेनश्च समरे पालयिष्यति वा ध्रुवम् ॥ १९ ॥ मा वो भीष्माद्भय किञ्चिदस्त्वद्य युधि
सृञ्जया । ध्रुव भीष्म विजेष्याम पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ॥ २० ॥ ते तथासमय

हे युधिष्ठिर मेरे इस स्वर्ग के देनेवाले धर्मरूपी वचनों को सुन । १३ । हे भरतवंशी बेटा मैं पुत्र युधिष्ठिर मेरे इस शरीर से अत्यन्त प्रीति रहित हूं और युद्ध में अनेकों जीवधारियों को मारते हुए मेरा समय व्यतीत हुआ । १४ । इस हेतुसे जो तू मेरा भला चाहता है तो तू अर्जुन को और इसी प्रकार पांचालदेशियों को और सृंजियों को आगेकर के मेरे मारने का विचार पूर्वक उपायकर । १५ सत्यदर्शी पांडव राजा युधिष्ठिर उन के इस अभिप्रायके मतको जानकर सृंजियों समेत युद्ध मे भीष्मजी के सम्मुख गया । १६ । हे राजा उसके पीछे धृष्टद्युम्न और पांडव युधिष्ठिर ने भीष्म जीके ऐसे वचनोंकोसुनकर सेनाको आज्ञा करी । १७ । कि चलकर युद्धकरो और युद्धमें सत्यसंकल्पएकही रथसे विजय करने वाले अर्जुन से रक्षित होकर तुम भीष्म जी को विजयकरो । १८ । निश्चय करके यह बड़ा धनुषधारी सेन पाति धृष्टद्युम्न और भीमसेनभी युद्धमें तुम्हारी रक्षाकरेंगे । १९ । हेसृंजियो अब युद्धमें तुमको भीष्मसे कोई प्रकारका भयनहींहोगा निश्चय करके हम शिखण्डी को आगेकरके भीष्मको विजयकरेंगे । २० । वह क्रोधसे

in his mind, said to the Pandavas, "Wise and learned son, Yudhisthir, hear my words which are giver of paradise Descendant of Bharat! son! I have lost all love for my body I have lost much time in killing the living beings in battle You should, if thou would t do me good, contrive for my death with the assistance of Arjun the Srinjayas and the Panchals" The truthful Pandav, Prince Yudhishthir learning the object of his desire, faced Bhishm in company with the Srinjayas 16 Then Dhrishtadyumna and Yudhishthir the Pandav, hearing the words of the grandfather, ordered the armies to advance for battle and to conquer Bhishm under the guidance of Arjun of true vows and conquerer with a single chariot 18 Surely this great archer Dhrishtadyumn the commander of armies and Bhimsen will protect you in battle You will have no cause of fear from Bhishm O Srinjaya surely, led by Shikhandi we shall

दशमेहनि पाण्डवाः । ब्रह्मलोकपरा भूत्वा सञ्जग्मु. क्रोधमूर्छिताः ॥ २१ ॥ शिखण्डिनं पुरस्कृत्य पाण्डवञ्च धनञ्जयम् । भीष्मस्य पातने यत्नं परमं ते समास्थिताः ॥ २२ ॥ ततस्तव सुतादिष्टा नानाजनपदेश्वराः । द्रोणेन सह पुत्रेण सह सेना महाबला. ॥ २३ ॥ दुःशासनश्च बलवान् सह सर्वैः सहोदरैः । भीष्मं समरमध्यस्थं पालयाञ्चक्रिरे तदा ॥ २४ ॥ ततस्तु तावकाः शूरा पुरस्कृत्य महाव्रतम् । शिखण्डीप्रमुखान् पार्थान् योधयन्तिस्म संयुगे ॥ २५ ॥ चेदिभिस्तु सपञ्चालैः सहितो वानरध्वजः । ययौ शान्तनवं भीष्मं पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ॥ २६ ॥ द्रोणपुत्रं शिनेर्नप्ता धृष्टकेतुस्तु पौरवम् । अभिमन्युः सहामात्य दुर्य्योधनमयोधयत् ॥ २७ ॥ विराटस्तु सहानीक सहसेनं जयद्रथम् । वृद्धक्षत्रस्य दायाद माससादपरन्तप ॥२८॥ मद्रराजं महेष्वास सहसैन्यं युधिष्ठिरः । भीमसेनोभिगुप्तस्तु नागानीकमुपाद्रवत्

मूर्च्छित पांडव दशवें दिन उसी प्रकार का नियम करके ब्रह्मलोक को उत्तम मानते हुए सब मिलकर चले। २१। और शिखण्डी को और पांडव अर्जुन को आगे करके भीष्मके गिराने के लिये बड़े उपायोंमें नियतहुए। २२। उसके पीछे आपके पुत्रकी आज्ञासे नानादेशों के राजालोग द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा और सेना समेत महाबली धनुषधारी दुश्शासन सब अपने इष्ट मित्र और बिरादरी वालोंसे युक्त इन सबोंने आकर युद्धमें नियत भीष्मजीको चारोंओरसे रक्षितकिया।२४। इसके पीछे आप के शूरवीर पुत्र भीष्मजी को आगे करके उन पांडवोंसे लड़नेके लिये जिनका कि अग्रगामी शिखण्डीथा युद्धमें प्रवृत्तहुए।२५। फिर वह वानरध्वज अर्जुन चंदेरी देशके और पांचाल देशके लोगों के साथ शिखण्डी को आगे करके शांतनुके पुत्र भीष्मजी के सम्मुख गया।२६। सात्यकीने अश्वत्थामाको और धृष्टकेतुने कौरवोंको और अभिमन्युने मंत्रियों समेत उसदुर्योधनको युद्धमें सम्मुखहोकर युद्धकिया।२७। और सेना समेत राजाविराट ने वार्द्धक्षेमके पुत्र जयद्रथसे सेनासमेत सम्मुखता करी।२८। और युधिष्ठिरने बड़ेधनुषधारी सेनासमेत राजामद्रको सम्मुखपायाऔर चारोंओर से रक्षित

conquer Bhishm 20. On that tenth day, the Pandavas insesibel with anger and firm on their resolve, went together thinking highly of the region of Brahm, and led by Shikhandi and Arjun they tried hard to slay Bhishm. Then by the order of your son, the princes of various countries together with Dronacharya, Ashwathama and Dushasan the mighty archer, followed by their armies, friends and allies, protected Bhishm from all sides. Then your brave sons, led by Bhishm, were ready to fight against the Pandavas led by Shikhandi. 25 Arjun of monkey's standard, together with the people of Chanderi and Panchal, led by Shikhandi, proceeded to encounter Bhishm the son of Shantanu. Satyaki met with Ashwathama in combat, Dhrishtketu with the Kauravas and Abhimanyu with Dur-

॥ २९ ॥ अप्रधृष्यमनाधार्य सर्वशस्त्रभृतांवरम् । द्रौणिं प्रति ययौ यत्तः पाञ्चाल्यः
सह सोदरैः ॥ ३० ॥ कर्णिकारध्वजश्चैव सिंहकेतुररिन्दम । प्रत्युज्जगाम सौभद्रं राज
पुत्रो बृहद्बलः ॥ ३१ ॥ शिखण्डिनश्च पुत्रास्ते पाण्डवश्च धनञ्जयम् । राजभिः समवे
पार्थ मभिपेतुर्जिघांसवः ॥३२॥ तस्मिन्नतिमहाभीमे सेनयोर्वै पराक्रमे । सम्प्रधावत्
स्वनीकेषु मेदिनी सम कम्पत ॥ ३३ ॥ तान्यनीकान्यनीकेषु समसज्जन्त भारत ।
तावकानां परेषाञ्च दृष्ट्वा शान्तनवं रणे ॥ ३४ ॥ ततस्तेषां प्रतप्तानां मन्यो
न्यमभिधावताम् । प्रादुरासीन्महाशब्दो दिक्षु सर्वासु भारत ॥ ३५ ॥ शङ्खदुन्दु
भिघोषश्च वारणानाञ्च बृंहितैः । सिंहनादश्च सैन्यानां दारुणः समपद्यत ॥ ३६ ॥

भीमसेन बड़ीसेनाकी ओर चला। २९। और मतवाला धृष्टद्युम्न अपने निजभाइयों और नातेदारों समेत उस अजेय सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ स्वाधीन न होनेवाले अश्वत्थामाके सम्मुखगया। ३०। शत्रुओंका विजयकरनेवाला सिंहकी ध्वजासे युक्त राजकुमार बृहद्बल उसकर्णिकार वृक्षकी चिह्नवाली ध्वजावाले अभिमन्युके सम्मुखगया।३१। आपके सब राजा सेनाओंसमेत शिखण्डी और पांडव अर्जुन के मारनेके इच्छावान् युद्धमें अर्जुनके सम्मुख दौड़े। ३२। उस समय उन भयानक सेनाओं समेत तुम्हारे पुत्रोंके दौड़ने से पृथ्वी अच्छेप्रकार से कंपायमान हुई।३३।हे भरतर्षभ भीष्मजी को युद्धमें देखकर आपके पुत्रोंकी और पांडवों की सेनापरस्परमें बड़े २ पराक्रमोंको कर करके लड़ीं। ३४। इसके पीछे उन अत्यन्त पीड़ामान परस्पर दौड़नेवालों का बड़ा भारी महाशब्द सब ओर को जारीहुआ। ३५। और शंख दुन्दुभियों के शब्द वा हाथियों की चिंहाड़ अथवा सेनाके मनुष्योंके सिंहनादोंसे महाभारी भय उत्पन्नहुआ। ३६। सब राजाओंका चन्द्रमा और सूर्यके समान तेज वा शूर वीर

yodhan and his counsellors. King Virat and his armies met Jayadrath the son of Vardhkshem and his armies. Yudhishthir found the great archer Prince of Madra and his army face to face with him and protected on all sides, Bhimsen rushed upon the great army. Proud Dhrishtadyumn with his brothers and allies faced invincible Ashwathama the best of arm-bearers. 30. Prince Vrahadval of lion's standard, the conqueror of foes faced Abhimanyu who had the *Karnikar* tree for his ensign. All your warriors together with the armies, desirous of slaying Shikhandi and Arjun, rushed to fight against the latter. The earth shook with the rushing on of your sons and their armies. Seeing Bhim in the field of battle, the armies of your sons and those of the Pandavas fought very bravely. Then there was a tremendous noise at the meeting of the two armies. 35. The scene was very dreadful with the uproar made by the peals of conchs and trumpets, the shrieks of elephants and the leonine roars of the warriors. The sun-and-moon like glory of all the kings and warriors

सा च सर्वनरेन्द्राणां चन्द्रार्कसदृशी प्रभा । वीराङ्गदकिरीटेषु निष्प्रभा समपद्यत ॥ ३७॥ रजो मेघास्तु सञ्जज्ञु: शस्त्रविद्युद्भिरावृताः । धनुषाञ्चापि निर्घोषो दारुणः समपद्यत ॥ ३८ ॥ बाणशङ्खप्रणादाश्च भेरीणाञ्च महास्वनाः । रथघोषश्च सञ्जज्ञे सेनयोरुभयो रपि ॥ ३९ ॥ प्रासशक्त्यृष्टिसंघैश्च बाणौघैश्च समाकुलम् । निष्प्रकाशमिवाकाशं सेनयोः समपद्यत ॥ ४० ॥ अन्योन्यं रथिन पेतुर्वाजिनश्च महाहवे । कुञ्जरान् कुञ्जरा जघ्नुः पादातांश्च पदातयः ॥ ४१ ॥ तत्रासीत् सुमहद्युद्धं कुरूणां पाण्डवैः सह । भीष्महेतोर्नरव्याघ्र श्येनयोरामिषे यथा ॥ ४२ ॥ तेषां समागमो घोरो बभूवयुधि सङ्गतः । अन्यो न्यस्य वधार्थाय जिगीषूणां महाहवे ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मोपदेशे षोडशाधिकशततोऽध्यायः ॥ ११६ ॥

सञ्जय उवाच । अभिमन्युर्महाराज तव पुत्रमयोधयत् । महत्या सेनया युक्तो भीष्महेतोः पराक्रमी ॥ १ ॥ दुर्योधनो रणे कार्ष्णिं नवभिर्नतपर्वभिः । आजघान

लोगों के बाजूबन्द और मुकुटप्रभासे रहितहोगये।३७। शस्त्ररूपी बिजलीसे युक्त धूलके बादल उत्पन्नहुए और धनुषों के भी भयकारी शब्दवर्त्तमानहुए । ३८ । दोनोंसेना- ओंका आकाश शक्ति पाश औरदुधारे खड्ग औरबाणोंके समूहोंसे व्याप्त होकर प्रभा से रहित होगया । ४० । उसबड़े भारी युद्धमेंरथी घोड़े हाथी ऐसे परस्पर में लड़े कि हाथीको हाथीने पदाती को पदातीने मारा, हे नरोत्तम वहां भीष्मके कारण पांडव और कौरवोंका ऐसा महाभारीयुद्ध हुआ जैसा कि पराये मांस के निमित्त दोबाज पक्षियोंका युद्ध होताहै । ४२ । उनविजयाभिलाषी शूरवीरोंका भयानकयुद्ध परस्पर में एक एकके मारने के निमित्त वर्त्तमानहुआ । ४३ ॥

अध्याय ॥ ११७ ॥

संजय बोला हे महाराज पराक्रमी अभिमन्यु ने भीष्मके कारण बड़ी सेनासे संयुक्त आपके पुत्रसे युद्ध किया । १ । तब क्रोधयुक्त दुर्योधन ने झुकीगांठ वाले

and of their bracelets and diadems, faded The clouds of dust arose having bright weapons for lightning and the sounds from the bows were tremendous. The space between the two armies was filled with nooses, double edged swords and flights of arrows. 40. In that battle the charioteers, horsemen and elephant riders fought and slew one another. The battle between the Kauravas and the Pandavas on account of Bhishm was very severe like that of two hawks for the flesh of another bird. The warriors desirous of conquest fought to slay one another. 43.

CHAPTER CXVII

Sanjaya said, "Brave Abhimanyu fought against your son and his large army on account of Bhishm. Then enraged Duryodhan

॥ २९ ॥ अप्रधृष्यमनावार्यं सर्वशस्त्रभृताम्बरम् । द्रौणिं प्रति ययौ मत्तः पाञ्चाल्यः सह सोदरैः ॥ ३० ॥ कर्णिकारध्वजञ्चैव सिंहकेतुररिन्दम । प्रत्युज्जगाम सौभद्रं राजपुत्रो बृहद्बलः ॥ ३१ ॥ शिखण्डिनञ्च पुत्रास्ते पाण्डवञ्च धनञ्जयम् । राजभिः समरे पार्थमभिपेतुर्जिघांसवः ॥३२॥ तस्मिन्नतिमहाभीमे सेनयोर्वै पराक्रमे । सम्प्रधावत्स्वनीकेषु मेदिनी सम कम्पत ॥ ३३ ॥ तान्यनीकान्यनीकेषु समसज्जन्त भारत । तावकानां परेषाञ्च दृष्ट्वा शान्तनवं रणे ॥ ३४ ॥ ततस्तेषां प्रतप्तानामन्योन्यमभिधावताम् । प्रादुरासीन्महाशब्दो दिक्षु सर्वासु भारत ॥ ३५ ॥ शङ्खदुन्दुभिघोषैश्च वारणानाञ्च बृंहितैः । सिंहनादश्च सैन्यानां दारुणः समपद्यत ॥ ३६ ॥

भीमसेन बड़ीसेनाकी ओर चला । २९ । और मतवाला धृष्टद्युम्न अपनेनिजभाइयों और नातेदारों समेत उसअजेय सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ स्वाधीन न होनेवाले अश्वत्थामाके सम्मुखगया । ३० । शत्रुओंका विजयकरनेवाला सिंहकी ध्वजासे युक्त राजकुमार बृहद्बल बसकर्णिकार वृक्षकी चिह्नवाली ध्वजावाले अभिमन्युके सम्मुखगया ।३१। आपके सब राजा सेनाओंसमेत शिखण्डी और पांडव अर्जुन के मारनेके इच्छावान् युद्धमें अर्जुनके सम्मुख दौड़े । ३२ । उस समय उन भयानक सेनाओं समेत तुम्हारे पुत्रोंके दौड़ने से पृथ्वी अच्छेप्रकार से कंपायमान हुई।३३।हे भरतर्षभ भीष्मजी को युद्धमें देखकर आपके पुत्रोंकी और पांडवों की सेनापरस्परमें बड़े २ पराक्रमोंको कर करके लड़ीं । ३४ । इसके पीछे उन अत्यन्त पीड़ामान परस्पर दौड़नेवालों का बड़ा भारी महाशब्द सब ओर को जारीहुआ । ३५ । और शंख दुन्दुभियों के शब्द वा हाथियों की चिंघाड़ अथवा सेनाके मनुष्योंके सिंहनादोंसे महाभारी भय उत्पन्नहुआ । ३६ । सब राजाओंका चन्द्रमा और सूर्यके समान तेज वा शूर वीर

yodhan and his counsellors. King Virat and his armies met Jayadrath the son of Vardhkshem and his armies. Yudhishthir found the great archer Prince of Madra and his army face to face with him and protected on all sides, Bhimsen rushed upon the great army. Proud Dhrishtadyumn with his brothers and allies faced invincible Ashwathama the best of arm-bearers.30. Prince Vrahadval of lion's standard, the conqueror of foes faced Abhimanyu who had the *Karnikar* tree for his ensign. All your warriors together with the armies, desirous of slaying Shikhandi and Arjun, rushed to fight against the latter. The earth shook with the rushing on of your sons and their armies. Seeing Bhim in the field of battle, the armies of your sons and those of the Pandavas fought very bravely. Then there was a tremendous noise at the meeting of the two armies.35. The scene was very dreadful with the uproar made by the peals of conchs and trumpets, the shrieks of elephants and the leonine roars of the warriors. The sun-and-moon like glory of all the kings and warriors

रसि क्रुद्ध पुनश्चैव त्रिभि शरै ॥ २ ॥ तस्य शक्ति रणे घा[illegible]र्मृत्योघोरा स्वसामिव।
प्रेषयामास सक्रुद्धो दुर्य्योधनरथ प्रति ॥३॥ तामापतन्तीं सहसा घोररूपा विशाम्पते।
द्विधा चिच्छेदते पुत्र क्षुरप्रेण महारथ ।४॥ तांशक्तिपतितादृष्ट्वाकार्ष्णि परमकोपन ।
दुर्योधन त्रिभिर्वाणैर्बाह्वोरुरसिचार्पयत् ॥ ५ ॥ पुनश्चैन शरैर्घोरै राजधानरतमातरे।
दशभिर्भरतश्रेष्ठ भरताना महारथ ॥६। तद्युद्धमभवद्घोर चित्ररूपञ्च भारत। इन्द्रिय
प्रीतिजनन सर्वपार्थिवपूजितम ॥ ७ ॥ भीष्मस्य निधनार्थाय पार्थस्य विजयायच ।
युयुधाते रण वीरौ सौभद्रकुरुपुङ्गवौ ॥ ८ ॥ सात्यकि रभस युद्धे द्रौणिर्ब्राह्मणपुङ्गव ।
आजघानोरसि क्रुद्धो नाराचेन परन्तप ॥ ९ ॥ शैनेयोपि गुरो पुत्र सर्वमर्मसु भारत।
अताडयद मेयात्मा नवभि कङ्कवाजितै ॥१०॥ अश्वत्थामा तु समरे सात्यकि नवभि
शरै । त्रिंशता च पुनस्तूर्ण बाह्वोररसि चार्पयत् ॥११॥ सोतिविद्धो महष्वासो द्रोणपु

नव वाणों से अभिमन्युको व्यथित करके तीन वाणों से फिर उस को घायल किया । २ । तब अत्यन्त कोपयुक्त अभिमन्यु ने मृत्युके समान भयकारी शक्ती को दुर्य्योधन के रथपर चलाया ।३। हेराजा आपके पुत्र महारथीनेउस अकस्मात् गिरती हुई भयकारी शक्तीको क्षुरप्र वाणोंसे दो खड कर दिये। ४। फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अभिमन्यु ने उसटूटकर गिरीहुई शक्ती को देखकर दुर्य्योधन की भुजा और छाती को तीन वाणों से घायल कर दिया हे राजा वह भयकारी युद्धमें अपूर्व्व रूप का चित्तका आनन्द देनेवाला सवराजाओंसे पूजितहुआ वह सुभद्राकापुत्र और कौरवों में श्रेष्ठ दुर्य्योधन दोनों शूरवीर भीष्म के मारने वा अर्जुन के विजय के निमित्त युद्ध करनेवाले हुए शत्रुओंके तपानेवाले युद्धमें वेगवान् व ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामा ने सात्यकी को नाराचनाम वाणसे छातीपर घायल किया । ९ । फिर वडे बुद्धिमान् सात्यकीनेभी गुरूके पुत्रको नववाणोंसे सवमर्मस्थलोंमें घायलकिया।१०। तिस पीछे अश्वत्थामा ने सात्यकी को नव वाणों से छातीपर और तीस वाणों से

with nine arrows having hooked joints wounded Abhimanyu and again pierced him with three more. Thereupon Abhimanyu much enraged hurled a deadly spear at Duryodhan's chariot but your brave son cut with his arrow the spear coming on towards him Abhimanyu much enraged at the sight of that falling spear wounded the breast and arm of Duryodhan with three arrows That dreadful battle O king was pleasing to the mind and respected by all the kings The son of Subhadra and Duryodhan the best of the kauravas both warriors fought for the death of Bhishm and the victory of Arjun Ashwathama the destroyer of foes clever in battle and best of Brahmans wounded Satyaki on the breast with an arrow known as Narach Satyaki the wise too, wounded the preceptor's son with nine arrows in the vital parts of the body 10 Then Ashwathama wounded Satyaki on the breast with nine arrows and on

क्षेण सात्वतः। द्रोणपुत्रं त्रिभिर्बाणैराजघान महायशाः ॥ १२ ॥ पौरवो धृष्टकेतुञ्च शरै राच्छाद्य संयुगे। बहुधा दारयाञ्चक्रे महेष्वासं महारथः ॥ १३ ॥ तथैव पौरवं युद्धे धृष्टकेतुर्महारथः। त्रिंशता निशितैर्बाणैर्विव्याधाशु महाभुजः ॥ १४ ॥ पौरवस्तु धनुश्छित्वा धृष्टकेतोर्महारथ। ननाद बलवन्नादं विव्याध च शितैः शरैः ॥ १५ ॥ सोऽन्यत् कार्मुकमादाय पौरवं निशितैः शरैः। आजघान महाराज त्रिसप्तत्या शिलीमुखैः ॥ १६ ॥ तौतु तत्र महेष्वासौ महामात्रौ महारथौ। महता शरवर्षेण परस्परमविध्यताम् ॥ १७ ॥ अन्योन्यस्य धनुश्छित्वा हयान् हत्वा च भारत। विरथावसियुद्धाय समीयतुरमर्षणौ ॥ १८ ॥ आर्षभे चर्मणी चित्रे शतचन्द्रपरिष्कृते। तारकाशतचित्रे च निस्त्रिंशौ सुमहाप्रभौ ॥ १९ ॥ प्रगृह्य विमलौ राजंस्तावन्योन्यमभिद्रुतौ। वासितासङ्गमे यत्तौ सिंहाविव महावने ॥ २० ॥ मण्डलानि विचित्राणि गतप्रत्यागतानि च। चेरतुर्दर्शयन्तौ च प्रार्थयन्तौ

भुजाओंपर घायल किया। ११। द्रोणाचार्य के पुत्रने अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी यशवान् सात्यकी ने अश्वत्थामा को तीन बाणों से घायल किया। १२। महारथी पौरवने बड़े धनुषधारी धृष्टकेतु को बाणोंसे ढककर अत्यन्त घायल किया, इसी प्रकार महारथी धृष्टकेतुने शीघ्रतासे तेजधारवाले बाणोंसे पौरव को घायल किया। १४। फिर महारथी पौरव धृष्टकेतु के धनुषको काट कर महाघोर शब्दसे गर्जा और तीव्र बाणों से घायल किया। १५। हेमहाराज उसने दूसरे धनुषको लेकर शिलीमुखनाम तीक्ष्ण बाणोंसे पौरवको व्यथित किया। १६ तबवहां उनदोनों बड़ेधनुषधारी शोभायमान महारथियोंने बाणोंकी बड़ीवर्षासे परस्परमें घायल किया। १७। वहदोनों क्रोधयुक्त परस्पर में धनुष काटकर वा घोड़ों को मारकर विरथ हो खड्गप्रहारी युद्ध करने के लिये सम्मुख हुए। १८। हे राजा वह दोनों शूरवीर अत्यन्त स्वच्छरूप सूर्य चन्द्रमा से प्रकाशित खड्ग और उत्तम चित्रोंसे चित्रित ढालों को। १९। लेकर परस्पर में ऐसे सम्मुख गये जैसे कि महा वन में सिंहनी के मिलाप में उपाय करने वाले दो सिंह होते हैं। २०। परस्पर दिखलाने और चाहते हुए दोनों

the arms with thirty. Much wounded by the son of *acharya* the great archer Satyaki of great glory, wounded him with three arrows. Valliant Paurav covered the great archer Dhrishtaketu with his arrows and wounded him much. In the same maner, brave Dhrishtketu wounded Paurav with his swift and sharp arrows. The brave Paurav cut down the bow of Dhrishtketu and with a loud roar wounded him with his arrows. 15. He took up another bow and with arrows sharpened on stone wounded Paurav. The two great archers then showered their arrows and wounded each other The two enraged warriors cut down each other's bows and having killed the horses they jumped down from their chariots and faced each other to fight with swords. The two brave warriors with clean swords, bright like the sun and the moon, and good shields worked over with figures

परस्परम् ॥ २१ ॥ पौरवो धृष्टकेतुन्तु शंखदेशे महासिना । ताडयामास संक्रुद्धस्तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ २२ ॥ चेदिराजोपि समरे पौरवं पुरुषर्षभम् - आजघान शितामेण जत्रुदेशे महासिना ॥२३॥ तावन्योन्यं महाराज समासाद्य महाहवे। अन्योन्यवेगाभिहतौ निपेततुररिन्दमौ ॥२४॥ ततः स्वरथमारोप्य पौरवं तनयस्तव । जयत्सेनो रथेनाजावपोवाह रणाजिरात् ॥२५॥ धृष्टकेतुन्तु समरेमाद्रीपुत्रः प्रतापवान्।अपोवाह रणेशूरःसहदेवः पराक्रमी ॥ २६ ॥ चित्रसेनः सुशर्माणं विद्ध्वा बहुभिरायसैः । पुनर्विव्याध तं षष्ट्या पुनश्च नवभिः शरैः ॥ २७ ॥ सुशर्मा तु रणे क्रुद्धस्तव पुत्रं विशाम्पते । दशभि र्दशभिश्चैव विव्याध निशितैः शरैः ॥ २८ ॥ चित्रसेनश्च तं राजं स्त्रिंशतानतपर्वभिः । आजघान रणे क्रुद्धः स च तं प्रत्यविध्यत ॥ २९ ॥ भीष्मस्य समरे राजन् यशो मानञ्च वर्द्धयन् । सौभद्रो राजपुत्रन्त बृहद्बलमयोधयत् ॥ ३० ॥ पार्थ हेतोः

वीरों ने विचित्र दाहेंबायें मंडलों को किया । २१ । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त पौरव बड़े खड्ग से धृष्टकेतु को शंखनाम अंग में घायल करके अर्थात् बाणों के नीचे छाती के ऊपर इधर उधरके हाड़ों में प्रहार करके तिष्ठ तिष्ठ यह शब्द बोले । २२ । राजा चन्देरीने भी युद्ध में पौरव को तीक्ष्ण धार वाले बड़े खड्ग से शत्रुदेश नाम अंगमें अर्थात् जाबड़े में घायल किया । २३ । हे शत्रुहन्ता यह दोनों महा युद्ध में परस्पर भिड़े हुए तीव्रता से घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े । २४ । उसके पीछे आपका पुत्र जितसेन युद्ध भूमि में पौरवको अपने रथपर सवार करके उसी रथके द्वारा युद्धभूमि से दूर लेगया । २५ । फिर माद्रीका पुत्र प्रतापवान् शूर पराक्रमी सहदेव युद्धमें धृष्टकेतु को दूरलेगया । २६ । चित्रसेन ने सुशर्मा को बहुत से लोहे के बाणों से घायल करके फिर साठ बाण से और नव बाणों से घायल किया । २८ । तब उस क्रोधयुक्तने भी उस चित्रसेन को झुकी गांठ वाले तीस बाणों से घायल किया फिर उसने उसको घायल किया । २९ । हे राजा भीष्म के युद्ध में यशकीर्त्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुए अभिमन्यु ने बृहद्बल

of various sorts, faced each other in battle as two furious lions wishing *to secure a lioness, meet each other in a forest* Showing their prowess, and desirous of fighting they turned right and left in circles. Then Paurav, much enraged, wounded his adversay on the breast and cried out 'stay, stay.' The prince of Chanderi too, wounded Paurav on the the jaw bone. The two warriors wounded by each other, fell down on earth. Then your son Jitsen took up Paurav on his chariot and carried him far away from the field of battle 25. Valliant Sahadev the son of Madri lifted up Dhrishtaketu and took him away out of the field of battle Chitrasen wounded Susharma with many iron arrows numbering sixty and nine. The other too, much enraged, wounded Chitrasen with thirty arrows having hooked points. They wounded each other In the war of Bhishm, Abhimanyu aspiring

पराक्रान्तो भीष्मस्यायोधनं प्रति । आर्जुनिं कोसलेन्द्रस्तु विध्वा पञ्च भिरायसैः ॥ ३१ ॥ पुनर्विव्याध विंशत्या शरैः सन्नतपर्वभिः । सौभद्रः कौसलेन्द्रन्तु विव्याधाष्ट भिरायसैः ॥ ३२ ॥ नाकम्पयत सङ्ग्रामे विव्याध च पुनः शरैः ॥ कौसल्यस्य धनुश्चापि पुनश्चिच्छेद फाल्गुनिः ॥ ३३ ॥ आजघान शरैश्चापि त्रिंशता कङ्कपत्रिभिः ॥ सोऽन्यत् कार्मुकमादाय राजपुत्रो बृहद्बलः ॥ ३४ ॥ फाल्गुनिं समरे क्रुद्धो विव्याध बहुभिः शरैः । तयोर्युद्धं समभवत् भीष्महेतोः परन्तप ॥ ३५ ॥ संरब्धयोर्महाराज समरे चित्रयोधिनो । यथा देवासुरे युद्धे बलिवासवयोरभूत् ॥ ३६ ॥ भीमसेनो रथानीकं योधयन् बह्वशोभत । यथा शक्रो वज्रपाणिर्दारयन् पर्वतोत्तमान् ॥ ३७ ॥ ते वध्यमाना भीमेन मातङ्गा गिरिसन्निभाः । निपेतुरुर्व्यां सहिता नादयन्तो वसुन्धराम् ॥ ३८ ॥ गिरिमात्रा हि ते नागा भिन्नाञ्जनचयोपमा । विरे

नाम राजकुमार से युद्ध किया । ३० । और अर्जुन के कारण से भीष्म की युद्धभूमि में पराक्रम करने वाला हुआ और राजा कौशल ने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को पांच लोहे के बाणों से वेध कर । ३१ । फिर गुप्तग्रन्थी वाले बीस बाणसे घायल किया और अभिमन्यु ने राजा कौशलको आठलोहे के बाणों से घायल और कम्पायमान करके उसके धनुष को भी काटा । ३३ । और कंकपत्रवाले तीस बाणों से भी घायल किया उस युद्ध में क्रोधयुक्त राजकुमार बृहद्बलने दूसरे धनुषको लेकर । ३४ । अभिमन्यु को बहुत से बाणों से घायल किया है शत्रुओं के संतप्त करनेवाले उन दोनों का युद्ध भीष्म के कारण ऐसा अच्छा हुआ जैसा कि देवता और असुरों के युद्ध में राजा बलि और इन्द्रका हुआथा । ३६ । भीमसेन रथों की सेनासे लड़ता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वज्रको धारण करने वाला इन्द्र उत्तम पर्वतों को फाड़ता हुआ शोभित होताहै । ३७ । भीमसेन के हाथ से घायल पर्वतों के समान वह सब हाथी एक साथही पृथ्वीको शब्दायमान करते हुए भूमिपर गिरे । ३८ । पर्वतके समान टूटेहुए वह हाथी पृथ्वीपर

for fame and greatness, fought against Prince Vrahadbal 30. He fought for the love of Arjun in the battle field of Bhishm. Prince Kosal wounded Arjun's son Ahimanyu with five and twenty iron arrows having hidden knots and Abhimanyu having wounded and shaken his adversary with eight iron arrows, cut down his bow. With thirty arrows having peacock feathers he wounded him again. Enraged in battle, Prince Vrahadbal took up another bow and wounded Abhimanyu with many arrows. The two heroes, O destroyer of foes, fought like Indra and Bali in the war between the gods and the danavas 36. Bhishm fighting against the army of chariots looked graceful like Indra the wielder of vajra breaking through mountains. Wounded by Bhimsen the elephants as huge as hills fell on earth ringing the air with their shrieks. The elephants

जुर्वसुधां प्राप्ता विकीर्णा इव पर्वताः ॥ ३९ ॥ युधिष्ठिरो महेष्वासो मद्रराजानमा
हवे । महत्या सेनया गुप्तं पीडयामास सङ्गतम् ॥ ४० ॥ मद्रेश्वरश्च समरे धर्म
पुत्रं महारथम् । पीडयामास संरब्धो भीष्महेतोः पराक्रमी ॥ ४१ । विराटं सैन्धवो
राजा विध्वा सन्नतपर्वभिः । नवभिः सायकैस्तीक्ष्णैस्त्रिंशता पुनरार्पयत् ॥ ४२ ॥
विराटश्च महाराज सैन्धवं वाहिनीपतिः । त्रिंशद्भिर्निशितैर्बाणैराजघान स्तनान्तरे
॥ ४३ ॥ चित्रकार्मुकनिस्त्रिंशौ चित्रवर्मायुधध्वजौ । रेजतुश्चित्ररूपौ तौ संग्रामे मत्स्य
सैन्धवौ ॥ ४४ ॥ द्रोणः पाञ्चालपुत्रेण समागम्य महारणे । महासमुदयं चक्रे शरैः
सन्नतपर्वभिः ॥ ४५ ॥ ततो द्रोणो महाराज पार्षतस्य महद्धनुः । छित्वा पञ्चाश
तेषूणां पार्षतं समविध्यत ॥ ४६ ॥ सोन्यत् कार्मुकमादाय पार्षतः परवीरहा ।
द्रोणस्य मिषतो युद्धे प्रेषयामास शायकान् ॥ ४७ ॥ ताञ्छराञ्छरघातेन चिच्छेद

वर्त्तमान ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि टूटे हुए पहाड़ होते हैं ३९ । बड़ी सेना
रक्षित बड़े धनुषधारी युधिष्ठिर ने युद्ध में सम्मुख आयेहुए राजा मद्रको पीड़ामान
किया । ४० । फिर क्रोधयुक्त महारथी राजा मद्र ने भीष्म के कारण से धर्म पुत्र
युधिष्ठिरको पीड़ामान किया । ४१ । राजा सिन्धने गुप्तग्रन्थी वाले नव बाणों से
विराट्को बेधकर तीस बाणों से घायल किया । ४२ । फिर वाहिनीपति विराट्ने
राजा सिन्धको तीक्ष्ण धारवाले तीस बाणों से छाती में घायल किया । ४३ ।
वह दोनों जड़ाऊ धनुष खड्ग चर्म ध्वजा शस्त्रवाले अपूर्व रूप विराट् और
जयद्रथ युद्ध में महाशोभायमान हुए । ४४ । द्रोणाचार्य्य ने अपूर्व युद्ध के बीच
धृष्टद्युम्न के साथ बढ़कर गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से महाप्रबल युद्ध किया । ४५ ।
इसके पीछे द्रोणाचार्य्य ने धृष्टद्युम्न के बड़े धनुष को काटकर पचास बाणोंसे
उसको बेधा । ४६ । फिर धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर द्रोणाचार्य्यके देखते
हुए शायकों को चलाया । ४७ । उस महारथी ने बाणों के प्रहारसेही उन बाणों

fallen down on the ground looked like huge mountains broken into pieces. Protected by a large army the great archer Yudhishthir wounded the king of Madra who was opposing him in battle. 40. 40. The valliant king of Madra, much enraged on account of Bhishm, wounded Yudhishthir the son of Dharm. The king of Sindh wounded and pierced king Virat with nine and thirty arrows having hidden knots and king Virat wounded the king of Sindh with thirty sharp edged arrows on the breast. The two warriors, Virat and Jayadrath, armed with jewelled bows, swords, banners, and weapons, looked wonderfully glorious in battle. In that wonderful battle Dronacharya and Dhrishtadyumn fought very valliantly with arrows having hidden knots 45. Then Dronacharya cut down the bow of Dhrishtadyumn and pierced him with fifty arrows. And the latter, taking up another bow, discharged his arrows at

समहारथः । द्रोणोद्रुपदपुत्राय प्राहिणोत्पंच सायकान् ॥ ४८ ॥ ततःक्रुद्धोमहाराज पार्षतः परवीरहा । द्रोणाय चिक्षेप गदां यमदण्डोपमां रणे ॥ ४९ ॥ तामापतन्तीं सहसा हेमपट्टविभूषिताम् । शरैः पञ्चाशता द्रोणो वारयामास संयुगे ॥ ५० ॥ सा छिन्ना बहुधा राजन् द्रोणचापच्युतैः शरैः । चूर्णीकृता विशीर्यन्ती पपात वसुधातले ॥५१॥ गदां विनिहतां दृष्ट्वा पार्षतः शत्रुतापनः । द्रोणाय शक्तिं चिक्षेप सर्वपारशवीं शुभाम् ॥ ५२ ॥ तां द्रोणो नवभिर्बाणैश्चिच्छेद युधि भारत । पार्षतञ्च महेष्वासं पीडयामास संयुगे ॥५३॥ एवमेतन्महायुद्धं द्रोणपार्षतयोरभूत् । भीष्मं प्रति महाराज घोररूपं भयानकम् ॥ ५४ ॥ अर्जुनः प्राप्य गाङ्गेयं पीडयन्निशितैःशरैः । अभ्यद्रवत सम्मत्तो वने मत्त मिवद्विपम् ॥ ५५ ॥ प्रत्युद्ययौच तं राजा भगदत्तःप्रतापवान् । त्रिधाभिन्नेननागेन मदान्धेन महाबलः ॥ ५६ ॥ तमापतंतं सहसा महेंद्रगज सन्निभं ।

को काटा फिर द्रोणाचार्य्य ने धृष्टद्युम्न के लिये पांच शायकों को चलाया ।४८। इसके पीछे क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने यमदण्ड के समान गदाको द्रोणाचार्य्य के ऊपर फेंका । ४९ । और द्रोणाचार्य्य ने उस गिरने वाली गदाको पचास बाणों से रोका । ५० । हे राजा द्रोणाचार्य्य के धनुष से निकले हुए बाणों ने उस गदा को चूर्ण करके पृथ्वी पर गेरा । ५१ । शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न ने गदाको टूटीहुई देख कर सब लोहमयी दृढ़शक्ती को द्रोणाचार्य के ऊपर फेंका । ५२ । फिर द्रोणाचार्य ने भी उस बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्न को पीड़ित किया । ५३ । हे राजा इस प्रकार भीष्म के सम्मुख द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न का महा भयानक रूप युद्ध हुआ । ५४ । फिर तीक्ष्ण बाणों से सबको पीड़ित करता हुआ गांगेय भीष्मजी को पाकर उन के सम्मुख ऐसा गया जैसे कि वन में अत्यन्त मतवाला हाथी मदोन्मत्त गजेन्द्रके सम्मुखहोवे ।५५। प्रतापवान् महाबली राजा भगदत्त तीन अंगोंसे मदचूने वाले महा मतवाले हाथी की सवारीसे सम्मुख गया । ५६ । तब अर्जुन बड़े

the former and cut down his arrows with his own. Dronacharya then discharged five arrows at him and Dhrishtadyumn much enraged hurled at him his mace like the staff of Yam; but Dronacharya checked it with fifty arrows. 50. The arrows shot from the bow of Dronacharya broke the mace into pieces. Seeing his mace cut down, Dhrishtadyumn the destroyer of foes hurled a hard spear, made entirely of iron, at Dronacharya. The latter too, wounded the former with his weapons. Thus in the presence of Bhishm there was a severe fight between Dronacharya and Dhrishtadyumn. Wounding all with his sharp arrows, he rushed against Dronacharya as one mad elephant rushes against another in a forest. 55. Mighty king Bhagdatta of great prowess came upon the back of the elephant who dropped juice from three parts of his body. Arjun carefully faced

परयत्न समास्थाय बीभत्सु प्रत्यपद्यत ॥ ५७ ॥ ततो गजगतोराजा भगदत्त प्रता पवान् । अर्जुन शरवर्षेण वारयामास संयुगे ॥ ५८ ॥ अर्जुनस्तु ततोनाग मायान्त रजतोपमै । विमलैरायसैस्तीक्ष्णैरविध्यत महारणे ॥ ५९ ॥ शिखण्डिनञ्च कौन्तेयो याहि याहीत्यचोदयत् । भीष्म प्रति महाराज जह्येनमिति चाब्रवीत् ॥ ६० ॥ प्राग्ज्योतिपस्ततो हित्वा पाण्डव पाण्डुपूर्वज । प्रययौ त्वरितो राजन् द्रुपदस्य रथ प्रति ॥ ६१ ॥ ततोर्जुनो महाराज भीष्ममभ्यद्रवद्द्रुतम् । शिखण्डिन पुरस्कृत्य ततो युद्धमवर्तत ॥ ६२ ॥ ततस्ते तावका शूरा पाण्डव रभस युधि । समभ्यधावन्क्रोशन्तस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ६३ ॥ नानाविधान्यनीकानि पुत्राणान्ते जनाधिप । अर्जुनो व्यधमत्काले दिवीवाभ्राणि मारुत ॥ ६४ ॥ शिखण्डीतु समासाद्य भरतानां पितामहम् इषुभिस्तूर्णमव्यग्रो बहुभि ससमाचिनोत् ॥ ६५ ॥ रथाग्न्यगारश्चापार्चिरसिशक्तिगदेन्धन । शरसघमहाज्वाल क्षत्रियान् समरेदहत् ॥ ६६ ॥ यथाग्नि सुमहानिद्ध कक्षे चरति मानिल । तथा जज्वाल

उपाय में नियत होकर उस गजेन्द्र ऐरावतके समान महाबली गिरतेहुए हाथीके सम्मुख हुआ । ५७ । उसके पीछे प्रतापवान् भगदत्तने बाणों की वर्षासे ढकादिया । ५८ । फिर अर्जुनने चांदीके समानस्वच्छ लोहेके बाणों से उस आतेहुए हाथीको वेधा । ५९ । हे महाराज फिर अर्जुनने शिखण्डीको भीष्मकी ओर प्रेरित किया और कहा कि जाओरे इसकोमारो । ६० । हेपांडुके ज्येष्ठभ्राता धृतराष्ट्र फिरराजा प्राग्ज्योतिप अर्जुनको छोड़ कर शीघ्रही द्रुपदके रथके समीपगया । ६१ । इसकेपीछे अर्जुन शिखण्डीको आगेकरके शीघ्रही भीष्मके सम्मुखगया और युद्ध जारीहुआ । ६२ । तदनन्तर आप के शूरवीर पुन पुकारते हुए बड़े वेगसे अर्जुन के सम्मुख दौड़े वह आश्चर्यसा हुआ । ६३ । वहां अर्जुन ने आपके पुत्रोंकी नानाप्रकार की सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न करादिया जैसे कि वायु आकाशमें बादलोंको छिन्न भिन्न करदेताहै । ६४ । फिर उस सावधान शिखण्डीने भरतवंशियोंके पितामह भीष्मको पाकर अनेकबाणोंसे ढकादिया । ६५ । उस रथरूप अग्निशाला और धनुषरूप ज्वाला वा खड्ग शक्तीरूप इन्धन वा बाण समूहरूप प्रज्वलितरूप वाले भीष्मने युद्धमें क्षत्रियोंको भस्म कर दिया

that powerful elephant coming on like Airavat the prince of elephants. Then glorious Bhagdatta hid him with the shower of his arrows. With iron arrows bright as silver, Arjun wounded that advancing elephant Then he sent Shikhandi against Bhishm saying, "Go and kill him 60 The king of Pragjyotish O elder brother of Pandu, left Arjun and hastened to encounter Drupad in his chariot. Then Arjun following Shikhandi hastened against Bhishm and began fighting Then your brave sons came up roaring against Arjun. It was a wonderful scene Arjun dispersed the armies of your sons as the wind disperses the clouds. Clever Shikhandi covered the grand father with his arrows. 65 In that sacrificial ground having chariots

भीष्मोऽपि विश्यन्नस्त्राण्युदीरयन् ॥ ६७ ॥ सोमकांश्च रणे भीष्मो जघ्ने पार्थपदानुगान्। न्यवारयत तत् सैन्यं पाण्डवस्य महारथ ॥६८॥ सुवर्णपुंखैरिषुभिः शितैः सन्नतपर्वभिः। नादयन् स दिशो भीष्मः प्रदिशश्च महाहवे ॥ ६९ ॥ पातयन् रथिनो राजन् हयांश्च सह सादिभिः । मुण्डतालवनानीव चकार स रथव्रजान् ॥ ७० ॥ निर्मनुष्यान् रथान् राजन् गजानश्वांश्च संयुगे । चकार समरे भीष्मः सर्वशस्त्रभृतांवरः ॥ ७१ ॥ तस्य ज्यातल निर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशनेः । निशम्य सर्वतो राजन् समकम्पन्त सैनिकाः ॥ ७२ ॥ अमोघा ह्यपतन् बाणाः पितुस्ते मनुजेश्वर । नासज्जन्त शरीरेषु भीष्मचापच्युताः शराः ॥ ७३ ॥ निर्मनुष्यान् रथान् राजन् सुयुक्तान् जवनैर्हयैः । वातायमानानद्राक्षं ह्रियमाणान् विशाम्पते ॥ ७४॥ चेदिकाशिकरूषाणां सहस्राणि चतुर्दश । महारथाः समाख्याताः

। ६६ । जैसे कि वन में वृद्धियुक्त बड़ी अग्निवायु के साथ घूमती है उसी प्रकार दिव्यअस्त्रोंको चलाते हुए भीष्मजीभी अग्निकी वर्षा करनेवाले हुये ।६७। भीष्मजी ने अर्जुन के पीछे चलने वाले सोमकों को मारकर सब सेनाको भी रोका । ६८ । हे राजा भारी युद्धमें दिशा और विदिशाओंको शब्दायमान करते और सुनहरी पुंखवाले वा गुप्तग्रन्थी वाले वाणोंसे । ६९ । रथी घोड़े और सवारोंको गिराते हुए भीष्मने रथके समूहोंको मुण्ड ताल वनोंके समान कर दिया । ७० । सब शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ भीष्मने युद्ध में रथ हाथी और घोड़ों को सवारों से रहित किया । ७१ । हे राजा उसके धनुष प्रत्यंचा के वज्र के समान शब्दको सब ओर से सुनकर सब सेना अत्यन्त कम्पायमान हुई। ७२ । इसके पीछे वह वाण बारम्बार सफल होकर गिरे और भीष्म के धनुष से निकले हुए वाण शरीरोंमें लग २ कर पारही होगये । ७३ । हे राजा मैंने तीव्रगामी घोड़ों से युक्त और वायुके समान चलने वाले रथों को बिना सवारों के घरेहुए देखा । ७४ । चन्देरी काशी क्रोश देशियों के कुलीन महारथी शरीरके मोहको त्यागने वाले महा प्रसिद्ध युद्धसे

for alter, bows for fire, swords and spears for fuel, glorious Bhishm burnt down with his arrows many a warrior in the field of battle. Bhishm went on spreading fire as the wind carries with it fire in a burning forest Bhishm killed the Somaks who followed Arjun and checked the whole army. Filling all the directions of the field of battle with sounds and slaying the riders of chariots and horses with his arrows having hidden knots, Bhishm made the groups of chariots like a forest of headless palms 70. Bhishm the best of warriors made the chariots, elephants and horses riderless in the field of battle. Hearing the vajra like sounds of his bowstring, all the army shook with fear. The arrows fell again and again hitting the marks and pierced through the bodies of those they touched. I saw, O king, chariots swift as wind made riderless. The noble warriors of Chanderi, Kashi and Krosh, setting aside all love for life, not turning

कुलपुत्रास्तनुत्यजः ॥ ७५ ॥ अपरावर्त्तिनः शूरा सुवर्णविकृतध्वजाः । संग्रामे भीष्ममासाद्य सवाजिरथकुञ्जराः ॥ ७६ ॥ जग्मुस्ते परलोकाय व्यादितास्यमिवान्तकम् । न तत्रासीद्रणे राजन् सोमकानां महारथः ॥७७॥ यः संप्राप्य रणे भीष्मं जीवितेस्ममनो वधे । तांश्च सर्वान् रणे योधान् प्रेतराजपुरं प्रति ॥ ७८ ॥ नीतानमन्यन्त जना दृष्ट्वा भीष्मस्यविक्रमम् । न कश्चिदेनं समरे प्रत्युद्याति महारथः ॥७९॥ ऋते पाण्डुसुतं वीरं श्वेताश्वं कृष्णसारथिम् । शिखण्डिनञ्च समरे पाञ्चालममितौजसम् ॥ ८० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे सप्तदशाधिकशततोऽध्यायः ॥ ११७ ॥

सञ्जय उवाच । शिखण्डीतुरणे भीष्म मासाद्य पुरुषर्षभम् । दशभिर्निशितैर्भल्लै राजघान स्तनान्तरे ॥ १ ॥ शिखण्डिनन्तु गाङ्गेयः क्रोधदीप्तेन चक्षुषा । सम्प्रैक्षत कटाक्षेण निर्दहन्निवभारत ॥ २ ॥ स्त्रीत्वं तस्य स्मरन् राजन् सर्वलोकस्य पश्यतः । नाजघान

मुख न मोड़नेवाले अति शूर सुनहरी ध्वजावाले घोड़े रथ हाथियों समेत उस मृत्युके समान भीष्मको युद्ध में पाकर परलोक को सिधारे हे राजा उसयुद्ध में सोमकों का ऐसा कोई महारथी नहीं हुआ ।७७। जो युद्धभूमि में भीष्म को पाकर जीवता हुआ जाते सबमनुष्यों ने भीष्मजी के पराक्रम को देखकर उन सब शूरवीरों को यमपुर को पहुँचा हुआही माना युद्धमें । ७९ । श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाले वीर अर्जुन और बड़े तेजस्वी पांचालदेशी शिखण्डी के सिवाय कोई महारथी उनके सम्मुख नहीं गया ८० ॥

अध्याय ११८ ॥

संजय बोले हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र शिखण्डी ने युद्ध में भीष्मजी को पाकर तीक्ष्ण धारवाले दश भल्लों से छाती में घायल किया । १ । फिर तिरछी दृष्टि से भस्मकरते हुए भीष्मजीने क्रोधयुक्त नेत्रोंसे शिखण्डीको देखा ।२। हेराजा उसके स्त्रीपनको ध्यान करते हुए भीष्मजीने सबके देखतेहुए प्रहार नहीं किया और उस

their faces from the field of battle, exceedingly brave, with golden banners, horses, chariots and elephants, died in battle before dreadful Bhishm. None of the Somak warriors went away alive from the field of battle after encountering Bhishm. The people who saw Bhishma's prowess believed that he would send all the warriors to the region of Yam. No warrior could oppose him except Shikhandi and Arjun whose white horses were driven by Krishn."80

CHAPTER CPVIII

Sanjaya said to Dhritrashtra, "Having encountered Bhishm in battle, Shikhandi wounded him with ten darts in the breast. Bhishm then turned his eyes in anger towards Shikhandi as if he would burn him down; but remembering his womanhood he gave him no reply with his weapons and Shikhandi did not know it. Then Arjun said

रणे भीष्मः स च तन्नावबुध्यवान् ॥ ३॥ अर्जुनस्तु महाराज शिखण्डिनमभाषत । अभि
द्रवस्व त्वरितं जहि चैनं पितामहम् ॥ ४ ॥ किन्ते विवक्षया वीर जहि भीष्मं महार
थम् । नह्यन्यमनुपश्यामि कञ्चिद्यौधिष्ठिरे बले ॥ ५ ॥ यः शक्तः समरे भीष्मं प्रति
योद्धुं मिहाहवे । ऋते त्वां पुरुषव्याघ्र सत्यमेतद्‌ब्रवीमि ते ॥ ६ ॥ एवमुक्तस्तु पार्थेन
शिखण्डी भरतर्षभ । शरैर्नानाविधैस्तूर्णं पितामहमवाकिरत् ॥ ७ ॥ अचिन्तयित्वा तान्
बाणान् पिता देवव्रतस्तव । अर्जुनं समरे क्रुद्धं वारयामास सायकैः ॥ ८ ॥ तथैव च
चमूं सर्वां पाण्डवानां महारथः । अप्रैषीत् स शरैस्तीक्ष्णैः परलोकाय मारिष ॥ ९ ॥
तथैव पाण्डवा राजन् सैन्येन महता वृताः । भीष्मं सञ्छादयामासुर्मेघा इव दिवाकरम्
॥ १० ॥ स समन्तात् परिवृतो भारतो भरतर्षभ । निर्ददाहरणे शूरान् वने वह्निरिव
ज्वलन् ॥११॥ तत्राद्भुतमपश्याम तव पुत्रस्य पौरुषम् । अयोधयच्चयत् पार्थं जुगोपच्च
पितामहम् ॥ १२ ॥ कर्मणा तेन समरे तव पुत्रस्य धन्विनः । दुःशासनस्य तुतुषुः सर्वे

शिखण्डीने उसको नहीं जाना । ३ । इसके पीछे अर्जुनने शिखण्डी से कहा कि शीघ्रही इन पितामह को सम्मुख चलकर मारो । ४ । हे वीर मैंने मारनेकीही इच्छासे तुमको आगे किया है कि तुम इस महारथी भीष्मको मारो में युधिष्ठिर की सेनाभर में किसी औरको ऐसा नहीं देखताहूं जो तेरे सिवाय इस प्रबल युद्धमें भीष्मजी के सम्मुख युद्ध करनेको समर्थ होवे हे पुरुषोत्तम मैं यह सत्यहीसत्य कहता हूं ।६। फिर अर्जुनसे इसरीति से कहेहुए शिखण्डीने शीघ्रही नानाप्रकारके बाणों से पितामहको ढक दिया । ७ । इस के पीछे आपके पिता देवव्रत भीष्मजीने उन बाणों को तुच्छ समझकर क्रोधयुक्तहोके युद्धभूमि में अर्जुनको सायकोंसेरोका । ८ । इसी प्रकार उसमहारथी अर्जुनने सबसेनाको अपनेबाणोंसे परलोकमें भेजा ।९। इसप्रकार बड़ीसेना समेत पाण्डवों ने भीष्मको ऐसे घेरलिया जैसे कि बादल सूर्यको घेरलेतेहैं । १० । फिर चारों ओरसे घिरेहुए भीष्मजी ने शूरवीरोंको ऐसा भस्मीभूत किया जैसे कि कोपित अग्नि वनको भस्मकरदेताहै । ११ । वहां हमने आपके पुत्रके पुरुषार्थ को देखा जो अर्जुन से युद्धकरके पितामह को रक्षित किया । १२ ।

to Shikhandi, "Hasten to face the grandfather and slay him. I have put you before me in order to slay him. I see none in Yudhishthir's army except you, who can withstand him in battle, and what I say is the truth." Thus addressed by Arjun, Shikhandi soon hid the grandfather with his arrows. Then your father Devabart Bhishm, disregarding those arrows, checked Arjun with his shafts. In the same manner, valliant Arjun sent the warriors to the region of Yam. The Pandavas surrounded Bhishm as clouds do the sun. 10 Then surrounded on all sides, Bhishm began to destroy the warriors as fire in its fury does a forest There we saw the prowess of your son who fought against Arjun and protected the grandfather. From

सोक्षा महात्मनः ॥ १३ ॥ यदेक्ष समरे पार्थान् साऽर्जुनान् समयोधयत् । न चैनं पाण्डवा युद्धे वारयामासुरुल्वणम् ॥१४॥ दुःशासनेन समरे रथिनो विरथीकृताः । सादिनोनथ महेष्वासा हस्तिनश्च महाबला ॥१५॥ विनिर्भिन्नाः शरैस्तीक्ष्णैर्निपेतुर्वसुधातले शरातुरास्तथैवान्ये दन्तिनो विद्रुतादिश ॥ १६ ॥ यथ ग्निरिन्धनं प्राप्य ज्वले दीप्तार्चिरत्युल्वणम् । तथा जज्वाल पुत्रस्ते पाण्डुसेनां विनिर्दहन् ॥ १७ ॥ तं भारतमहामात्रं पाण्डवानां महारथ । जेतुं नोत्सहते कश्चिन्नाभ्युद्यातुकथञ्चन ॥१८॥ ऋते महेन्द्रतनयाच्छ्वेताश्वात् कृष्णसारथे । सहितं समरे राजन् निर्जित्य विजयोर्ऽर्जुनः ॥ १९ ॥ भीष्ममेवाभिदुद्राव सर्वसैन्यस्य पश्यतः । विजितस्तवपुत्रोऽपि भीष्मबाहुव्यपाश्रयः ॥ २० ॥ पुनःपुनः समाश्वस्य प्रायुध्यत मदोत्कट । अर्जुनस्तु

आपके धनुषधारी पुत्र दुश्शासन के कर्मसे युद्ध में सब लोगों को विश्वास हुआ कि । १३ । इस प्रकारसे नेहो अर्जुन से उसके सब साथी पाण्डवों समेत युद्ध किया और अत्यन्त भी उसको पाण्डव लोग युद्ध से नहीं हटासके । १४ । उस युद्ध में दुश्शासन के हाथ से रथी विरथ हुए और बड़े धनुषधारी सवार और महाबली हाथी । १५ । तीक्ष्णबाणो से घायल होकर पृथ्वी पर गिरे और इसी प्रकार बाणों से पीड़ामान अन्य हाथी चारो दिशाओ में भागे । १६ । जैसे कि अग्नि इन्धन को पाकर प्रकाशित ज्वलित होकर अत्यन्त कोपयुक्त होती है उसी प्रकार पाण्डवों की सेनाको जलाता हुआ आपका पुत्र भी ज्वलित अग्नि के समान होगया ।१७। हेभरतवंशीपाण्डवोंके किसी महारथी ने श्वेतघोडे वाले श्रीकृष्ण महाराज को सारथी बनानेवाले महारथी इन्द्रके पुत्र अर्जुन के सिवाय उस बड़े शोभायमान के विजय करनेको साहस और उत्साह नहीं किया और न किसी रीति से सम्मुख जानेका विचार किया । १९ । हे राजा फिर वह विजयी अर्जुन युद्ध में उसको जीतकर सब सेना के देखते हुए भीष्मजी के सम्मुखगया और वह पराजय पाने वाला आपका पुत्र महामदोन्मत्त उन भीष्मजीकी भुजाओं

the prowess of your son Dushasan, all the people belived that he alone was capable of withstanding Arjun and other Pandavas Dushasan destroyed the chariots of the warriors, and the great archers, horsemen and powerful elephants, wounded by sharp arrows, fell down on earth Other elephants wounded by arrows fled in all directions. As fire fed by fuel burns and blazes up furiously, so did your son destroying the Pandav armies 17. None of the Pandav warriors, O king except the valliant son of Indra, Arjun who had Krishan for the driver of his white horses, dared to conquor him in battle, nor did any one oppose him. Then Arjun the conquerer, having conquered him in battle within sight of all the warriors, faced Bhishm, and your son, defeated in battle, took refuge with Bhishm. 20.

रणे राजन् योधयन् संन्यराजत ॥ २१ ॥ शिखण्डीतु रणे राजन् विव्याधैव पितामहम्। शरैरशनिसंस्पर्शैस्तथा सर्वविषोपमैः ॥ २२ ॥ न च स्म ते रुजं चक्रुः पितुस्तव जने श्वर। स्मयमानस्तु गाङ्गेयस्तान् बाणान्जगृहे तदा ॥ २३ ॥ उष्णार्त्तो हि नरोयद्वज् जलधाराः प्रतीच्छति। तथा जग्राह गाङ्गेयःशरधाराः शिखण्डिन ॥ २४ ॥ तं क्षत्रिया महाराज ददृशुर्घोरमाहवे। भीष्मं दहन्तं सैन्यानि पाण्डवानां महात्मनाम् ॥ २५ ॥ ततोऽब्रवीत्तव सुतः सर्वसैन्यानि मारिष। अभिद्रवत संग्रामे फाल्गुनं सर्वतो रणे ॥ २६ । भीष्मो व. समरे सर्वान् पालयिष्यति धर्मवित्। ते भयं सुमहत्त्यक्त्वा पांडवान्प्रतियुध्यत ॥२७॥ हेमतालेन महता भीष्मस्तिष्ठति पालयन्। सर्वेषां धार्त्तराष्ट्राणां समरे शर्म वर्म च ॥ २८ ॥ त्रिदशापि समुद्युक्तानालं भीष्मं समासितुम्। किमुपार्था महात्मानं मर्त्यभूता महाबलाः ॥ २९ ॥ तस्माद्द्रवत मायोधा फाल्गुनं

का आश्रयलेकर। २०। वारंवार साहसको करके फिर युद्ध करनेलगा तब वह अर्जुन युद्ध में लड़ताहुआ महा शोभायमान हुआ। २१ हे राजा फिर शिखंडी ने युद्ध में वज्रके समान स्पर्शवाले विषभरे सर्पके समान बाणों से पितामह को घायल किया। २२। उन बाणों से आपके पिताकुछ भी पीड़ित नहीं हुए उस समय आश्चर्य करते हुए भीष्मजीने उन बाणों को सह लिया। २३। जैसे प्याससे दुःखी मनुष्य जलकी धाराओं को चाहताहै उसी प्रकार भीष्मजी ने शिखण्डीकी बाणधाराओं को सहजहीमें सहलिया। २४। फिर क्षत्रियोंने महात्मा पांडवों की सेनाओं के भस्म करनेवाले भीष्मजी को युद्धमें भयंकर देखा। २५। इसके पीछे आपका पुत्र सब सेनाओं से बोला कि युद्ध में सब ओर से अर्जुन के सम्मुख जाओ। २६। धर्म के जानने वाले भीष्मजी युद्धमें तुमसब की रक्षाकरेंगे वह भयको अत्यन्त त्यागकरके पांडवोंके सम्मुख युद्धकरते हैं युद्धमें धृतराष्ट्रके सब पुत्रों के सुखरूप चित्तकी रक्षाकरते हुए भीष्मजी सुनहरी तालध्वजा समेत नियतहैं।२८।बड़े२ उपाय करनेवाले देवतालोगभी भीष्मके सम्मुख खड़े होनेको समर्थ नहीं

Again taking courage he engaged in battle. Arjun fighting there was very glorious to behold Again Shikhandi wounded the grandfather with his arrows hard of touch like vajra and poisonous like serpents. Your father was not disturbed with those arrows and bore them to the great amazement of all. 23. As one afflicted with thirst looks expectantly for a shower of rain, Bhishm bore patiently the shower of Sikhandi's arrows. The kshatryas then looked at the dreadful form of Bhishm the destroyer of Pandav armies. Your son then ordered his soldiers to attack Arjun on all sides, saying, "Bhishm who knows his dharm well, will protect you in battle. He is fighting fearlessly against the Pandavas and is standing in the battle field with his golden standard of palm tree, pleasing the sons of

प्राप्य संयुगे । अहमद्य रणे यत्तो योधयिष्यामि पाण्डवम् ॥ ३० ॥ सहितः सर्वतो
यत्तैर्मघद्भिर्वसुधाधिपैः । तच्छ्रुत्वातु वचो राजंस्तवैः पुत्रस्यधन्विनः ॥ ३१ ॥
सर्वे योधा सुसंरब्धा बलवन्तो महाबलाः । ते विदेहा कलिङ्गाश्च दासेरकगणाश्च
॥ ३२ ॥ अभिपेतुर्निषादाश्च सौवीराश्च महारणे । बाह्लिका दरदाश्चैव प्रती-
च्योदीमालवाः ॥ ३३ ॥ अभिषाहाः शूरसेनाः शिवयोथ वसातयः । शाल्वाः
शकास्त्रिगर्त्ताश्च अम्बष्ठा केकयै सह ॥३४॥ अभिपेतू रणे पार्थं पतङ्गा इव पावकम् ।
स ताम् सर्वान् शतानीकान् महाराज महारथान् ॥ ३५ ॥ दिव्यान्यस्त्राणि सञ्चिन्त्य
प्रसन्धाय धनञ्जयः । स तैरस्त्रैर्महावेगैर्ददाहाशु महाबलः ॥ ३६ ॥ शरव्रता
पैर्बीभत्सुः पतङ्गानिव पावकः । तस्य बाणसहस्राणि सृजतो दृढधन्विनः ॥ ३७॥
दीप्यमानमिवाकाशे गाण्डीवं समदृश्यत । ते शरार्त्ता महाराज विप्रकीर्णमहाध्वजाः

हैं तो मरण धर्मवाले पांडव उस महात्मा के सम्मुख होनेको कैसे समर्थ होसक्ते हैं । २९ । इस निमित्त मेरे शूरवीर लोग जाकर युद्धमें अर्जुन को पाकर संग्राम करो अब युद्ध में चैतन्यहोकर मैं तुमसब राजाओं समेत पांडव युधिष्ठिरसे लडूंगा हे राजा आपके धनुषधारी पुत्रके इस वचनको सुनकर । ३१ । सब शूरवीर लोग अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबली विदेह कालिंग दासेरक गण निषाद सौवीर वाल्हीक दरदऔर पश्चिमोत्तरीय राजा लोग मालव । ३३ । अभिषाह शूरसेन शिवय वशातय शाल्वशक त्रिगर्त्त केकयों समेत अम्बष्ट । ३४ । यहसब उस महायुद्ध में अर्जुनके सम्मुख दौड़े हे राजा जैसे कि पतंग और शलभा अग्नि में गिरते हैं इसी प्रकार युद्धमें उस अद्वितीय अर्जुन की ओरको दौड़े । ३५ । फिर उसमहाबली अर्जुनने दिव्य अस्त्रोंको विचार पूर्वक प्रयोग करके उन बड़े उत्तम दिव्य अस्त्रों और बाणों के उग्र तेजसे शीघ्रही इन सबसेना समेत महारथियों को ऐसे भस्म किया जैसे कि अग्नि पतंगोंको भस्म करदेताहै । ३७ । उसमहाबली अर्जुनका वह गांडिव धनुष हजारों

Dhritrashtra Even the great gods dare not withstand him; how can the Pandavas who are only mortals oppose him. All my warriors should therefore oppose Arjun and I with all my princes shall fight against Yudhishthir." Hearing those words of your son, the archer, (31) all the warriors in great anger—valliant Videh Kaling the Dasairaks, the Nishadas, the Sauviras, the Vahliks, the Daradas, the princes of the North-west, the Malvas, the Shursenas, the Shivayas, the Vatashayas, the Shalwashaks, the Trigartas, the Kaikayas and the Amvashtas—rushed upon Arjun. They ran against Arjun as insects fall into the burning fire. 35, Valliant Arjun then carefully discharged his divine weapons and with them as well as with the fire of his arrows, he soon destroyed those warriors as fire does the insects. The Gandiv bow of mighty Arjun, discharging myriads of arrows,

॥ ३८ ॥ नाभ्यवर्त्तन्त राजानः सहिता वानरध्वजम् । सध्वजा रथिनः पेतुर्हया रोहा हयैः सह ॥ ३९ ॥ सगजाश्च गजारोहाः किरीटिशरताडिताः । ततोर्जुन भुजोत्सृष्टैरावृतासीद्वसुन्धरा ॥ ४० ॥ विद्रवद्भिश्च बहुधा बलैराज्ञां समन्ततः । अथ पार्थो महाराज द्रावयित्वा वरूथिनीम् ॥ ४१ ॥ दुःशासनाय सुबहून् प्रेषयामास सायकान् । ते तु भित्वा तव सुतं दुःशासनमयोमुखाः ॥ ४२ ॥ धरणीं विविशुः सर्वे वल्मीक मिव पन्नगाः । हयांश्चास्य ततो जघ्ने सारथिञ्च न्यपातयत् ॥ ४३ ॥ विविंशतिञ्च विंशत्या विरथं कृतवान् प्रभुः । आजघान भृशञ्चैव पञ्चभिर्नतपर्वभिः ॥ ४४ ॥ कृपं विकर्णं शल्यञ्च विध्वा बहुभिरायसैः । चकार विरथांश्चैव कौन्तेय श्वेतवाहनः ॥ ४५ ॥ एवन्ते विरथाः सर्वे कृपः शल्यश्च मारिष । दुःशासनो विकर्णश्च तथैवच विविंशतिः ॥ ४६ ॥ सम्प्राद्रवन्त समरे निर्जिताः सव्य

बाणों को छोड़ताहुआ आकाश में प्रकाशमान दृष्टपड़ा वह बाणोंसे पीड़ामान राजालोग जिनकी बड़ी २ ध्वजा टूटगईथीं एक साथ उस वानरध्वज अर्जुन के सम्मुख वर्त्तमान नहीं रहे।३९। अर्जुनके बाणों से घायल रथी लोग ध्वजाओं समेत और घोड़ों समेत अश्वारूढ वा हाथियों समेत हाथियोंके सवार पृथ्वीपर गिरे। ४० । इसके पीछे अर्जुन के हाथोंके छूटेहुए बाणों से और चारों ओरसे राजाओंकी भागी हुई सेनाओं से पृथ्वी व्याप्त होगई। ४१। फिर अर्जुन ने सेनाको भगाकर दुश्शासन के ऊपर बहुतसे बाणोंकी वर्षा की।४२। वह लोहेके सबबाण आपके पुत्र दुश्शासन को। ४३। बेधकर पृथ्वी में ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि सर्पबामी में प्रवेश करता है तदनन्तर प्रभु अर्जुन ने उस के घोड़ों को मारकर सारथी को गिराया और बीसबाण से विविंशतिको रथ से विरथ करादिया । ४४ । और झुकीगांठवाले पांच बाणों से अत्यन्त घायल भी किया इसी रीति से उसश्वेत घोड़ेवाले अर्जुनने कृपाचार्य्य कर्ण और शल्यको बहुतसे लोहे के बाणोंसे बेधकर विरथकर दिया हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इस प्रकार वह सबकृपाचार्य्य और शल्य विरथ हुए । ४६ ।

looked glorious in the air. The princes afflicted by arrows, with broken banners, could no longer withstand his fury. Wounded by his arrows, the bannerd charioteers, horsemen with their horses and riders of elephants fell down on earth. 40. Then the ground was filled with the arrows of Arjun and the dead bodies of the warriors slain. Having put the army to flight, Arjun discharged many arrows at Dushasan. Those iron arrows having pierced through Dushasan's body entered the ground as a serpent enters a mole hill. He then killed his horses and driver and with twenty arrows made Vivinshati destitute of chariot. With five arrows having bent heads he wounded him severely. Thus Arjun the possessor of white steeds, having pierced Kripacharya, Karan and Shalya with many

साचिना। पूर्वाहणे भरतश्रेष्ठ पराजित्य महारथान् ॥४७॥ प्रजज्वाल रणे पार्थो विधूम इव पावकः। तथैव शरवर्षेण भास्करो रश्मिवानिव ॥ ४८ ॥ अन्यानपि महाराज ताप यामास पार्थिवान्। पराङ्मुखीकृत्य तथा शरवर्षैर्महारथान् ॥ ४९ ॥ प्रावर्त्तयत सङ्ग्रामे शोणितोदां महानदीम्। सध्येन कुरुसैन्यानां पाण्डवानाञ्च भारत ॥ ५० ॥ गजाश्चरथसंघाश्च बहुधा रथिभिर्हताः। रथाश्च निहता नागैर्हयाश्चैव पदातिभिः ॥ ५१ ॥ अन्तराच्छिद्यमानानि शरीराणि शिरांसि च। निपेतुर्दिक्षु सर्वासु गजाश्वरथयोधिनाम् ॥ ५२ ॥ छन्नमायोधनं राजन् कुण्डलाङ्गदधारिभिः। पतितैः पात्यमानैश्च राजपुत्रैर्महारथैः ॥ ५३ ॥ रथनेमिनिकृत्तैश्च गजैश्चैवावपोथितैः। पादाताश्चाप्यधावन्त साश्वाश्च हयोधिनः ॥ ५४ ॥ गजाश्च रथयोधाश्च परिपेतुः समन्ततः। विकीर्णाश्च रथा भूमौ भग्नचक्रयुगध्वजाः ॥ ५५ ॥ तद्गजाश्वरथौघानां रुधिरेण समुक्षितम्। छन्नमायोधनं

और युद्ध में अर्जुनसे पराजित दुश्शासन विकर्ण और विविंशति मुखको मोड़गये। ४७। हेभरतर्षभ मध्याह्नकाल में अर्जुन महारथियों को विजय करके युद्ध में निर्धूम अग्निके समान प्रकाशमान हुआ। ४८। इसीप्रकार बाणों की वर्षासे अन्य राजाओं को वा महारथियों के मुखों को फिरवाके युद्ध में रुधिर रूप जल रखने वाली बड़ी नदी को जारी किया। ५०। फिर पांडव और कौरवोंकी सेनाओं में बहुधाहाथी घोड़े और रथोंके समूह रथियों के हाथ से मारे गये। ५१। हाथियों से रथ और पैदलोंसे घोड़ेमारे गये और बीचमेंसे कटेहुए हाथी घोड़े रथ और वीरसवारों के शरीर दिशाओं में गिरे हे राजाकुण्डल बाजूबन्द धारण करनेवालों से युद्धभूमि आच्छादित होगई।५३। और गिरे वा गिरतेहुए महारथी राजकुमारों से वा रथोंकी नेमियों से कटे और मरेहुए हाथियों से भी वह युद्धभूमि ढकगई।५४ पैदल भी दौड़े और अश्व सवार घोड़ों समेत दौड़े वा हाथी घोड़े और रथों के शूरवीर चारों ओर से गिरे। ५५। और वह रथ जिनके पहिये जुए ध्वजा

arrows of iron, caused them to leave their chariots. Thus Kripacharya Shalya and others, O Dhritarashtra, were forced to leave their chariots. Defeated in battle by Arjun, Dushasan, Vikarn and Vivinshati turned their faces. Having conquerd those warriors by mid day, Arjun shone in the field of battle like smokless fire, causing the other kings and warriors to turn back with the force of his arrows, he caused a large river of blood to flow, 50. Then in the armies of the Pandavas and Kauravas many elephants, horses and chariots were destroyed by the charioteers. Chariots were destroyed by elephants and horses by foot soldiers. The elephants, horses and chariots with the dead bodies of warriors fell down in all directions and the ground was spread over with the bodies of those who wore ear-rings and armlets. The foot soldiers and war horses with riders were seen [illegible] in all directions.55. The chariots with their [illegible] and bal[illegible] wheels

रेजे रक्ताभ्रमिव शारदम् ॥ ५६ ॥ श्वानः काकाश्च गृध्राश्च वृका गोमायुभिः
सह । प्रणेदुर्भक्ष्यमासाद्य विकृताश्च मृगद्विजाः ॥ ५७ ॥ ववुर्बहुविधाश्चैव दिक्षु
सर्वासु मारुताः । दृश्यमानेषु रक्षःसु भूतेषु च नदत्सु च ॥ ५८ ॥ काञ्चनानि
च दामानि पताकाश्च महाधनाः । धूयमाना व्यदृश्यन्त सहसा मारुतेरिताः ॥ ५९ ॥
श्वेतच्छत्रसहस्राणि सध्वजाश्च महारथाः । विकीर्णाः समदृश्यन्त शतशोऽथसहस्रशः
॥ ६० ॥ सपताकाश्चमातंगा दिशोजग्मुः शरातुराः । क्षत्रियाश्च मनुष्येंद्रगदाशक्ति धनु
र्धराः ॥ ६१ ॥ समंततश्च दृश्यंते पतिता धरणीतले । ततो भीष्मो महाराज दिव्यमस्त्र
मुदीरयन् ॥ ६२ ॥ अभ्यधावत कौन्तेयं मिषतां सर्वधन्विनाम् । तं शिखण्डी रणे यान्त
मभ्यद्रवत दंशितः ॥ ६३ ॥ ततः समाहरद्भीष्मस्तदस्त्रं पावकोपमम् । त्वरितः पांड

टूट गई थीं पृथ्वीपर पड़ेहुए हाथी घोड़े और रथ समूहों के रुधिर से छिड़कीहुई व ढकीहुई वह युद्धभूमि ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि शरदऋतुका लाल बादल होताहै फिर कुत्ते कौवे गिद्ध भेड़िये शृगाल और विपरीत रूपके पशु पक्षी अपने भक्षको पाकर शब्द करने लगे और सब दिशाओं में अनेक प्रकार की वायु चली । ५८ । राक्षसों के देखने और जीवों के शब्द करनेपर सुनहरी रस्सी व माला व बहुमूल्य की पताका । ५९ । अकस्मात् हवासे चलायमान होकर दृष्टि गोचर हुई हजारों श्वेत छत्र व बड़े २ रथ ध्वजाओं समेत टूटेहुए दिखाईपड़े और बाणों से पीड़ामान हाथी पताकाओं समेत चारों दिशाओं को चलेगये । ६१ । हे महाराज गदाशक्ति और धनुष के धारण करनेवाले क्षत्रीलोग चारों ओर से पृथ्वीपर पड़ेहुए दृष्ट आये । ६२ । इस के पीछे भीष्मजी ने दिव्य अस्त्रों को प्रकट किया और सब धनुषधारियों के देखते हुए अर्जुन के सम्मुख दौड़े । ६३ । तब शस्त्रों से अलंकृत शिखण्डी उन भीष्मजी के सम्मुख पहुँचा इसको देखतेही भीष्मजीने उस अग्निके समान प्रकट कियेहुए अस्त्रको खैंचलिया । ६४ । हे राजा

broken down fell on earth, and the ground covered and besprinkled with the blood of elephants, horses and charioteers looked glorious like the red cloud of Winter. Dogs, crows, vultures jackals, wolves and other strange looking birds and beasts howled at the prospect of their food and the winds blew from all quarters. At the sight of rakshases and the sounds of anima's, golden ropes, chaplets and banners were seen fluttering with the sudden gust of wind. Thousands of white umbrellas and huge chariots with banners were to be seen lying on the ground and the elephants bearing banners, wounded with arrows, fled in all directions. 61. The wielders of prases, spears and bows were seen fallen on the ground. Then Bhishm drew out his divine weapons, and in the presence of all the warriors rushed upon Arjun; but Shikhandi, armed with weapons, came face to face with him and at the sight of him he withdrew his weapon

श्वेताश्वमध्यम श्वेतवाहन ॥ ६४ ॥ निजघ्ने तावक सैन्य मोहयित्वा पितामहम॥६५॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे
अष्टादशाधिकशततोऽध्यायः ॥ ११८ ॥

सञ्जय उवाच । सम व्यूढेष्वनीकेषु भूयिष्ठेष्वनिवर्त्तिन । ब्रह्मलोकपरा सर्वे समपद्यन्त भारत ॥ १ ॥ नह्यनीकमनीकेन समसज्जत सकुले । रथाम रथिभि॰ सार्धं पादातान पदातिभि ॥ २ ॥ अश्वानाश्वैरयुध्यन्त गजान गजयोधिभिः । उन्मत्तवन्महाराज युध्यन्ते तत्र भारत ॥ ३ ॥ महान् व्यतिकरो रौद्र सेनयो समपद्यत । नरनागगणेष्वेव विकीर्णेषु च सर्वश ॥ ४ ॥ क्षये तस्मिन्महारौद्रे निर्विशषमजायत । तत॰ शल्य कृपश्चैव चित्रसेनश्च भारत ॥ ५ ॥ दु शासनो विकर्णश्च रथानास्थायभास्वरान् । पाण्डवानां रणे शूरा ध्वजिनीं समकम्पयन् ॥६॥ सावध्यमाना समरे पाण्डुसेना महात्मभि ।

श्वेत घोड़े रखनेवाले मध्यमे पाण्डव अर्जुन ने शीघ्रही पितामह को मोहित करके आपकी सेनाको मारा ६५ ॥

अध्याय ॥ ११९ ॥

संजय बोले कि हे भरतवंशी इस रीति से उन बहुतसी सेनाओं के तैयारहोने पर युद्धमें मुख न मोड़नेवाले सब शूरवीर ब्रह्मलोक को उत्तम माननेवाले वर्त्तमान् हुए, इस तुमुल युद्ध में सेनासे सेना नहीं भिड़ी किन्तु इस रीति से लड़े कि रथी रथियों से पदाती पदातियो से घोड़े घोड़ों से हाथी हाथियों के सवारों से युद्ध करनेवाले हुए हे राजा उन्मत्त के समान युद्ध करने वाली दोनों सेनाओंको बड़ा भयकारी दुःख वर्त्तमान हुआ अर्थात् सबप्रकार से मनुष्य और हाथियोंके मरनेपर उस भयकारी नाशरूप प्रलयमें अनीति जारीहुई इसके पीछे शल्य कृपाचार्य्य चित्रसेन दुश्शासन विकर्ण इन सब शूरों ने प्रकाशित रथों पर सवार होकर पांडवों की सेनाको बहुतकम्पायमान किया हे राजा युद्ध मे महात्माओं के हाथसे घायल

glorious like fire Then the possessor of white horses, Arjun the middle one of the Pandavas, soon made the grandfather insensible and destroyed your armies"

CHAPTER CXIX

Sanjaya continued: "Thus, O descendant of Bharat, when numerous armies were ready, the warriors unwilling to turn their faces from the field of battle and desirous of departure to the region of Brahm, stood there. In that dreadful battle the two armies did not meet together, the charioteers fought against charioteers, horsemen met horsemen, elephant riders fought against the riders of elephants The two armies fighting furiously came to great grief After the slaughter of men and elephants in that dreadful distruction like *pralaya*, there was much harm done Then the great warriors

भ्राम्यते बहुधा राजन् मारुतेनेव नौर्जले ॥ ७ ॥ यथा हि शैशिरः कालो गवां मर्माणि
कृन्तति । तथा पाण्डुसुतानां वै भीष्मो मर्माणि कृन्तति ॥ ८ ॥ तथैव तव सैन्यस्य पार्थेन
च महात्मना । नवमेघप्रतीकाशाः पातिता बहुधा गजाः ॥ ९ ॥ मृद्यमानाश्च दृश्यन्ते
पार्थेन नरयूथपाः । इषुभिस्ताड्यमानाश्च नाराचैश्च सहस्रशः ॥१०॥ पेतुरार्त्तस्वरंघोरं
कृत्वा तत्र महागजाः । आबद्धाभरणैः कायैर्निहतानां महात्मनाम् ॥ ११ ॥ छन्नमायोधनं
रेजे शिरोभिश्च सकुण्डलैः । तस्मिन्नेव महाराज महावीरवरक्षये ॥ १२ ॥ भीष्मे च
युधि विक्रान्ते पाण्डवे च धनञ्जये । ते पराक्रान्तमालोक्य राजन् युधि पितामहम्
॥ १३ ॥ अभ्यवर्त्तन्त ते पुत्राः सर्वसैन्यपुरस्कृताः । इच्छन्तो निधनं युद्धे स्वर्गं कृत्वाप
राणम् ॥ १४ ॥ पाण्डवानभ्यवर्त्तन्त तस्मिन् वीरवरक्षये । पाण्डवापि महाराज स्मरन्तो

पाण्डवोंकी सेना अनेक प्रकार से ऐसे घूमी जैसे कि जलमें वायुके कारण नौका घूमती है, जैसे कि अत्यंत जाड़ा गौओंको सताताहै उसीप्रकार भीष्मजी पाण्डवोंके मर्मों को काटतेहैं ।८। महात्मा अर्जुन के हाथ से तुम्हारी सेनाके बहुत से हाथी जो कि नवीन बादलके समान थे युद्धमें गिराये गये ।९। अर्जुनके हाथ से सेनाकेप्रधान लोग मर्दन कियेहुए दृष्टआते हैं और वहां पर नाराच नाम बाणों से घायल हुए हजारों । १० । बड़े २ हाथी दुःख से महाभयानक शब्दोंको करके गिरपड़े मृतक हुए महात्माओं के भूषणों से अलंकृत शरीरों से । ११ । और कुण्डल धारी शिरों से ढकीहुई युद्धभूमि बड़ी शोभायमान हुई हे राजा उत्तम वीरोंके बड़े नाश होने पर युद्ध में भीष्म और पाण्डव अर्जुन की परस्पर में चढ़ाइयां होनेपर वह आपके सब पुत्र जिनके कि आगे सेना चलतीथी युद्ध में पितामहको पराक्रम करने वाला देखकर स्वर्गकोही श्रेष्ठ स्थान मानकर युद्ध में मरण को चाहते हुए । -१४ । उस उत्तम वीरोंके नाश में पाण्डवों के सम्मुख हुए हे

Shalya, Kripacharya, Chitrasen, Dushasan and Vikarn, mounted on glorious chariots, destroyed the armies of the Pandavas. Wounded in battle by those great men, the armies of the Pandavas turned round like a boat in the midst of stormy waters. As winter cuts the cattle to the quick so did Bhishm with the Pandav armies. Many elephants of your army, like new clouds, were destroyed in battle by Arjun. The principal warriors of your army are to be seen destroyed by Arjun, and wounded by long shafted arrows, thousands of elephants fell down with loud shrieks. The field of battle looked grand by the dead bodies of great men decked with ornaments and the heads decked with ear-rings. At the destruction of the great warriors in the war between Bhishm and Arjun the Pandav, your sons with their armies seeing the great prowess of the grandfather, desired to die in battle for the sake of paradise. 14. They faced the Pandavas during that destruction of the warriors. Engaged in battle for the

विविधान् बहून् ॥ १५ ॥ क्लेशान् कृतान् सपुत्रेण त्वया पूर्वं नराधिप। भयं त्यक्त्वा रणे शूरा ब्रह्मलोकाय तत्पराः ॥ १६ ॥ तावकांस्तव पुत्रांश्च योधयन्ति प्रहृष्टवत्। सेनापतिस्तु समरे प्राह सेनां महारथः ॥ १७ ॥ अभिद्रवत गाङ्गेयं सोमकाः सृञ्जयैः सह। सेनापतिवचः श्रुत्वा सोमकाः सृञ्जयाश्चते ॥ १८ ॥ अभ्यद्रवन्त गाङ्गेयं शरवृष्ट्यासमाहता। वध्यमानस्ततो राजन् पिता शान्तनवस्तव ॥ १९ ॥ अमर्षवशमापन्नो योधयामास सृञ्जयान्। तस्य कीर्तिमतस्तात पुरा रामेण धीमता ॥ २० ॥ सम्प्रदत्ताऽस्त्रशिक्षा वै परानीकविनाशिनी। सतां शिक्षाम धिष्ठाय कुर्वन् परबलक्षयम् ॥ २१ ॥ अहन्यहनि पार्थानां वृद्धः कुरुपितामहः। भीष्मो दशसहस्राणि जघान परवीरहा ॥ २२ ॥ तस्मिंस्तु दशमे प्राप्ते दिवसे भरतर्षभ। भीष्मेणैकेन मत्स्येषु पाञ्चालेषु च संयुगे ॥ २३ ॥ गजाश्व मभितं हत्वा हताःसत महारथाः।

महाराज ब्रह्मलोक के लिये युद्धमें प्रवृत्त शूर वीर पाण्डव पूर्व समय में पुत्र समेत आप के दिये हुए नाना प्रकार के कष्टोंको स्मरण करते युद्ध में भयको त्याग कर। १६। अत्यन्त प्रसन्नके समान आपके पुत्र और शूरवीरों से लड़ने हैं फिर महारथी सेनापति ने अपनी सेनासे कहा कि सब सृंजियों समेत सोमक लोग शीघ्र भीष्मके सम्मुख चलो वह सोमक और सृंजयनाम क्षत्री सेनापति के वचनको सुनकर। १८। शस्त्रों की वर्षासे घायल हुए भीष्मजी के सम्मुख गये हे राजा इसके पीछे आपके पिता भीष्मजी महा घायल और क्रोध के वशीभूत होकर उन सृंजियों से युद्ध करनेलगे हे तात पूर्वसमय में बुद्धिमान परशुरामजी ने उस को अच्छे प्रकार से शिक्षाकरी जोकि शत्रुकी सेनाके नाश करनेवाली और कौरवोंके वृद्ध पितामह भीष्मने उस शिक्षाको काममें लाकर शत्रुओंकी सेनाका नाशकरते हुए प्रतिदिन पाण्डवों की दशहजार सेनाको मारा। २१। हे भरतर्षभ उस दशवें दिनके वर्त्तमान होनेपर अकेले भीष्मने युद्धमें मत्स्य और पांचाल देशी सेना। २३। दश हजार हाथियोंका यूथ मारकर सात महारथी

sake of paradise, the brave Pandavas remembered the former wrongs done to them by yourself and your sons and setting aside all fear in battle, with cheerful minds face your sons and warriors. Then the brave commander ordered the armies of Srinjaya and Somak warriors to hasten against Bhishm. At the commands of their chief the Srinjayas and the Somaks faced Bhishm who was much wounded. Then your father much wounded and enraged, fought against the Srinjayas. Bhishm the old grandfather of the Kauravas used to his advantage the knowledge of arms which he had formerly acquired of Parashuram and killed ten thousand warriors of the Pandavas each day. 22. On that tenth day Bhishm alone killed ten thousand elephants of Matsya and Panchal with seven warriors of

हत्वा पञ्चसहस्राणि रथानां प्रपितामहः ॥ २४ ॥ नराणाञ्च महायुद्धे सहस्राणि चतुर्दश। दन्तिनाञ्च सहस्राणि हयानामयुतं पुनः ॥ २५ ॥ शिक्षाबलेन निहतं पिताव विशाम्पते। ततः सर्वं महीपानां क्षपयित्वा वरूथिनीम् ॥ २६ ॥ विराटस्य प्रियोभ्राता शतानीको निपातितः। शतानीकञ्च समरे हत्वा भीष्मः प्रतापवान् ॥ २७ ॥ सहस्राणि महाराज राज्ञां भल्लैरपातयत्। उद्विग्नाः समरे योधा विक्रोशंति धनञ्जयम् ॥२८॥ ये च केचन पार्थानामभियाता धनञ्जयम्। राजानो भीष्ममासाद्य गतास्ते यमसादनम् ॥ २९ ॥ एवं दशदिशो भीष्मः शरजालैः समन्ततः। अतीत्यसेनांपार्थानामवतस्थे चमूमुखे ॥ ३० ॥ स कृत्वा सुमहत् कर्म तस्मिन् वै दशमेहनि। सेनयोरन्तरे तिष्ठन् प्रगृहीतशरासनः ॥ ३१ ॥ नचैनं पार्थिवाः केचिच्छक्ता राजन् निरीक्षितुम्। मध्यं प्राप्तं यथा ग्रीष्मे तपन्तं भास्करंदिवि ॥३२॥ यथा दैत्यचमूंशक्रस्तापयामास संयुगे।

मारे फिर पांच हजार रथियोंको मारकर भयन युद्धमें मनुष्यों के चौदह हजार समूहको मारके हाथियोंके बहुत हजार और घोड़ों के दश हजार यूथ पराक्रम के द्वारा आपके पिता के हाथ से मारे गये इसके पीछे सब राजाओं की सेना को इधर उधर करके । २६ । विराटके प्यारे भाई शतानीकको रथसे गिराया है राजा प्रतापवान् भीष्मने शतानीकको मारकर । २७ । हजारों राजाओं को भल्लोंसे मारडाला और जो कोई राजा पाण्डवों के वा अर्जुन के आगे पीछे चारों ओर को चलनेवाले थे । २८ । वह राजालोगभी भीष्मको पाकर यमलोकको सिधारे भीष्मजीने इस रीति से बाणों के जालों से चारों ओर की दशों दिशाओं को ढक दिया । २९ । और आप पाण्डवों की सेनाको उल्लंघन करके सेना मुखपर नियत हुआ वह उस दशवें दिन में बड़े कर्मको कर के।३०। धनुषको हाथमें पकड़नेवाला दोनों सेनाओंके मध्यमें नियतहुआ कोई राजालोग युद्धमें उसके देखनेको ऐसे समर्थ नहीं हुए। ३१ । जैसे कि ग्रीष्म ऋतु में आकाश स्थल संतप्त करने सूर्य्य को नहीं देखसक्ता और जैसे कि इन्द्रने युद्ध में दैत्योंकी सेनाको तपाया । ३२ । इसी प्रकार भीष्म

renown, five thousands of charioteers and fourteen thousand men. He destroyed many thousands of elephants and ten thousands of horses by his great prowess. Then having dispersed the army of kings he felled Shatanik the dear brother of king Virat. Having slain Shatanik, valliant Bhishm destroyed thousands of warriors with his darts and whatever warriors of the Pandavas followed Arjun were sent by Bhishm to the region of Yam. With the network of his arrows he filled all the directions and having crossed the army of the Pandavas he stood at the entrance. He did prodigies of wonder on that tenth day. 30. With the bow in his hand he stood in the midst of the two armies and none of the warriors could gaze at him like the sun standing high in heaven in Summer. He destroyed the Pandav armies as Indra did the armies of the danavas Devaki's

तथा भीष्म पाण्डवेयांस्तापयामास भारत । तथा चैन पराक्रान्तमालोक्य मधुसूदनः।
उवाच देवकीपुत्र प्रीयमाणो धनञ्जयम् ॥ ३४ ॥ एष शान्तनवो भीष्म. सेनयो
रन्तरेस्थितः । सन्निहत्य बलादेनं विजयस्ते भविष्यति ॥ ३५ ॥ बलात् संस्तम्भयस्वैनं
यत्रैषा भिद्यतेचमूः । न हि भीष्मशरानन्यः सोढुमुत्सहते विभो ॥ ३६ ॥ ततस्तस्मिन्
क्षणे राजंश्चोदितो वानरध्वजः । सध्वजं सरथं साश्वं भीष्ममन्तर्दधे शरैः ॥ ३७॥
सचापि कुरुमुख्यानामृषभ. पाण्डवेरितान् । शरव्रातैः शरव्रातान् बहुधा विदु
धावतान् ॥ ३८ ॥ ततः पञ्चालराजश्च धृष्टकेतुश्च वीर्यवान् । पाण्डवो भी॰ सेनश्च
धृष्टद्युम्नश्च पार्षत. ॥३९॥ यमौ च चेकितानश्च केकया. पञ्च चैवह । सात्यकिश्च
महाबाहु. सौभद्रोऽथघटोत्कच. ॥ ४० ॥ द्रौपदेयाः शिखण्डी च कुन्तिभोजश्च
वीर्यवान् । सुशर्मा च विराटश्च पाण्डवेया महाबलाः ॥ ४१ ॥ एते चान्ये च बहवः

जी ने पाण्डवों के शूरवीरों को भी संतप्त किया मधुदैत्य के मारनेवाले देवकी
के पुत्र श्रीकृष्णजी इस प्रकार पराक्रम करनेवाले भीष्मको देखकर अपने मित्र
अर्जुन से बोले कि यह शांतनुका पुत्र भीष्म दोनों सेनाओं में नियत है । ३४ ।
बड़े बलसे इसको मारकर तेरी विजय होगी तू बलसे इसको वहां नियत कर जहां
यह सेना घायल होती है । ३५ । हे समर्थ भीष्मके बाण सहने को कोई साहस
नहीं करता है इसके अनन्तर उस क्षण में प्रेरित वानरध्वज अर्जुन ने । ३६ ।
बाणों से भीष्मको ध्वजा रथ और घोड़ों समेत गुप्त करादिया फिर उस प्रतापी
भीष्मनेभी पांडवों के चलाये हुए बाण समूहोंको अपने बाणों से अनेक प्रकार
करके छिन्न भिन्न करादिया । ३८ । इसके पीछे राजा द्रुपद और पराक्रमी धृष्ट-
केतु पांडव भीमसेन धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव चेकितान पांचोभाई केकय । ३९ ।
महाबाहु सात्यकी अभिमन्यु घटोत्कच द्रौपदी के पांचोपुत्र शिखण्डी पराक्रमी
राजा कुन्तभोज । ४० । सुशर्मा राजा विराट् यह सब बहुतसे पांडवों के शूरवीर
भीष्मजीके शायकोंसे पीड़ामानहुए । ४१ । अर्जुनके हाथ से पीड़ित शूरवीर शोक

son Shree Krishn the destroyer of Madhu, seeing the prowess of Bhishm, said to his friend Arjun: "Bhishm the son of Shantnu is standing between the two armies 34. Thy conquest lies in killing him. Force him with the strength of your arms to move from the place where the armies are being wounded. They are unable to withstand his arrows." Thus advised, Arjun of monkey's standard hid with his arrows the banner, chariot and horses of Bhishm; but the latter destroyed with his arrows the network of the Pandava's arrows. Then Prince Drupad, valliant Bhimsen, Dhrishtadyumn, Nakul, Sahadev, Chekitan, the five Kaikaya brothers, Shikhandi, valliant king Kuntibhoj. 40. Susharma, king Virat and other warriors of the Pandavas were wounded by his arrows. The warriors wounded by his arrows were plunged in the ocean of grief. Then

पीडिता भीष्मसायकैः । समसृताः फाल्गुनेन निमग्ना. शोकसागरे ॥ ४२ ॥ ततः-
शिखण्डी वेगेन प्रगृह्य परमायुधम् । भीष्ममेवाभिदुद्राव रक्ष्यमाणः किरीटिना ॥ ४३ ॥
ततोऽस्यानुचरान् हत्वा सर्वान् रण विभागवित् । भीष्ममेवाभिदुद्राव बीभत्सुरपरा
जितः ॥ ४४ ॥ सात्यकिश्चेकितानश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । विराटो द्रुपदश्चैव माद्री-
पुत्रौ च पाण्डवौ ॥ ४५ ॥ दुद्रुवुर्भीष्ममेवाजौ रक्षिता दृढधन्वना । अभिमन्युश्च समरे
द्रौपद्याः पञ्च चात्मजाः ॥ ४६ ॥ दुद्रुवुः समरे भीष्मं समुद्यतमहायुधाः । ते सर्वे दृढ
धन्वानः संयुगेष्वपलायिनः ॥ ४७ ॥ बहुधा भीष्ममानर्छुर्मार्गणैः क्षतमार्गणैः । विधूय
तान् बाणगणान् ये मुक्ताः पार्थिवोत्तमैः ॥ ४८ ॥ पाण्डवानामदीनात्मा व्यगाहत वरू-
थिनीम् । चक्रे शरविघातञ्च क्रीडन्निव पितामहः ॥ ४९ ॥ नाभिसन्धत्त पाञ्चाल्ये
स्मयमानो मुहुर्मुहुः । स्त्रीत्वं तस्यानुसंस्मृत्य भीष्मो बाणान् शिखण्डिने ॥ ५० ॥

समुद्रमें डूबगये इसके पीछे बड़ी तीव्रतासे शिखण्डी उत्तम धनुषको लेकर।४२।अर्जुन
से रक्षाकियाहुआ भीष्मकेसम्मुखचलायुद्धके प्रकारोंकाज्ञाता अजेयअर्जुन भीष्मकेसब
साथियोंकोमारकर उनके सम्मुखचला सात्यकी चेकितान धृष्टद्युम्न।४४।विराट् द्रुपद-
माद्रीके-दोनों पुत्र यहसब दृढ़ धनुषयुक्त अर्जुनसे रक्षित होकर युद्धभूमि में भीष्मके
सम्मुख गये । ४५ । और अभिमन्यु वा द्रौपदीके पांचोपुत्र यह भी बड़े शस्त्रोंके
धारण करनेवाले युद्ध में भीष्मकी ओर चले । ४६ । और दृढ़धनुषधारी युद्ध में
मुख न मोड़नेवाले बाणोंसे घायल उन सबने भी पितामह भीष्मको बाणोंकी बड़ी
वर्षासे आच्छादित किया । ४७ । फिर प्रसन्नचित्त भीष्मने उन बाण समूहों को
जिनको कि उत्तम राजाओंने छोड़ा था काटकर पांडवोंकी सेनाको मथाया ।४८।
क्रीड़ा करतेहुए पितामहने बाणों को निष्फलकर बारम्बार आश्चर्य युक्त होकर
उसके स्त्रीपने को स्मरणकर के बाणोंको पांचालदेशी शिखण्डी पर नहीं चलाया
फिर उस महारथीने द्रुपदकी सेनामें सात रथियोंको मारा । ५० । इसके अनन्तर

Shikhandi taking up his good bow, protected by Arjun, faced Bhishm, and Arjún, skilful in all the ways of war, killed all the followers of Bhishm and encountered him. Satyaki, Chekitan, Dhrishtadyumn, Virat, Drupad, the two sons of Madri and other great archers, protected by Arjun, faced Bhishm in battle 45. Abhimanyu and the five sons of Draupadi, armed with powerful weapons, rushed towards him Those wielders of hard bows, firm in the field of battle, though wounded by arrows covered the grandfather with the shower of their arrows. Bhishm with a cheerful mind cut down the arrows discharged by those princes and wounded the Pandav warriors. The grandfather, as if in play, cutting again and again those arrows in a wonderful manner and remembering the womanhood of Shikhandi of Panchal, did not discharge his arrows at him. Then the brave warrior struck down seven charioteers of Drupad's army. 50 .

जघान द्रुपदानीके रथान्सप्त महारथः । ततः किलकिलाशब्दः क्षणेन समभूत्तदा ५१ मत्स्यपाञ्चालचेदीनां तमेकमभिधावताम् । ते नराश्वरथव्रातैर्मार्गणैश्च परन्तप ॥ ५२ ॥ तमेकं छादयामासुर्मेघा इव दिवाकरम् । भीष्मं भागीरथीपुत्रं प्रतपन्तंरणे रिपून् ॥ ५३ ॥ ततस्तस्य च तेषाञ्च युद्धे देवासुरोपमे । किरीटी भीष्ममानर्च्छत् पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ॥ ५४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मपराक्रमे एकोनविंशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११९ ॥

सञ्जय उवाच । एवन्ते पाण्डवाः सर्वे पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । विव्यधुः समरे भीष्मं परिवार्य्य समन्ततः ॥ १ ॥ शतघ्नीभिः सुघोराभिः परिघैश्च परश्वधैः । मुद्गरैर्मुसलैः प्रासैः क्षेपणीयैश्च सर्वशः ॥ २ ॥ शरैः कनकपुंखैश्च शक्तितोमरकम्पनैः । नाराचैर्वत्सदन्तैश्च भुशुण्डीभिश्च सर्वस ॥ ३ ॥ अताडयन् रणे भीष्मं सहिताः सर्वे

क्षणमात्रही में उस अकेले की ओर दौड़ते हुये मत्स्य पांचाल और चंदेरी देशके क्षत्रियों का कलकला शब्द उत्पन्नहुआ । ५१ । हे शत्रुसंतापी उन मनुष्यों ने रथके समूह और बाणों से उस युद्ध में शत्रुके तपानेवाले भागीरथी के पुत्र अकेले भीष्म को ऐसे ढक दिया जैसे कि बादल सूर्य्यको ढकदेते हैं इस के पीछे देव दानवोंके समान दोनोंके युद्धमें अर्जुनने शिखंडी को आगेकरके भीष्म को मोहित किया । ५३ ।

अध्याय १२० ॥

संजय बोले कि इसप्रकार से उन सब पांडवों ने शिखंडी को आगे करके और युद्ध में चारों ओर से भीष्मजी को घेरकर घायल किया । १ । बड़े भयानक शतघ्नी परिघ फरसे मुद्गल मुशल प्रास क्षेपणी कनकपुंखवाले शरशक्ति तोमर कंपन नाराच वत्सदन्त भुशुंडी आदि अनेक शस्त्रों के द्वारा युद्ध में सब सृंजियों

Immediately after this there was a great noise from the armies of Matsya, Panchal and Chanderi warriors rushing against him With their numerous chariots, O destroyer of enemies, they so covered brave Bhishm under the flight of their arrows as clouds hide the sun Then in that war, like that of the gods and danavas, Arjun from behind the back of Shikhandi discharged his arrows and made Bhishm insensible."53.

CHAPTER CXX

Sanjaya continued:— " Thus led by Shikhandi, the Pandavas surrounded Bhishm and wounded him with dreadful *Shataganis*, clubs, axes, *mudgals*, *mushals*, *prases*, missiles, arrows with golden feathers, spears, *tomars*, *Kampans*, *vatsdants*, *bhushundis* and other weapons. All the Srinjayas discharged their weapons at once and

सृञ्जयाः । स विशीर्णतनुत्राणः पीडितो बहुभिस्तदा ॥ ४ ॥ न विव्यथे तदा भीष्मो भिद्यमानेषु मर्मसु । सन्दीप्तशरचापाग्निरस्त्रप्रसृतमारुतः ॥ ५ ॥ नेमिनिर्ह्रादसन्तापो महास्त्रोदयपावकः । चित्रचापमहाज्वालो वीरक्षयमहेन्धनः ॥ ६ ॥ युगान्ताग्निसमप्रख्यः परेषां समपद्यत । विवृत्य रथसंघानामन्तरेण विनिःसृतः ॥ ७ ॥ दृश्यते स्म नरेन्द्राणां पुनर्मध्यगतश्चरन् । ततः पाञ्चालराजञ्च धृष्टकेतुमचिन्त्य च ॥ ८ ॥ पाण्डवानीकिनीमध्यमाससाद विशाम्पते । ततः सात्यकिभीमौ च पाण्डवञ्च धनञ्जयम् ॥ ९ ॥ द्रुपदञ्च विराटञ्च धृष्टद्युम्नञ्च पार्षतम् । भीमघोषैर्महावेगैर्मर्मावरणभेदिभिः ॥ १० ॥ षडेतान्निशितैर्भीष्म प्रविव्याधोत्तमै शरैः । तस्य ते निशितान् बाणान् सन्निवार्य महारथाः ॥ ११ ॥ दशभिर्दशभिर्भीष्ममर्दयामासुरोजसा । शिखण्डीतु महाबाणान् यान्मुमोच महारथ ॥ १२ ॥ ते चक्रुस्ते व्रजतस्य स्वर्णपुंखा शिलाशिताः ।

ने एकसाथही भीष्म को बहुत प्रकार से घायल किया तब वह भीष्म टूटे कवच बहुतशस्त्रोंसे पीड़ामान ।४। और मर्मस्थनों के घायलहोने परभी दुःखी नहींहुए जिसके बाण और अस्त्रों से प्रकटहोने वाली प्रकाशित अग्नि और रथकी चक्रधारा का शब्द व पट्टिश आदि बड़े २ अस्त्रोंका प्रकाश और जड़ाऊ धनुषवाले बड़े२ शूरवीरोंकानाशही बड़ाइंधनथा । ६ । वह प्रलयाग्निके समान शत्रुओं के सम्मुखहुआ और अवकाश पाकर रथों के समूहोंमें से बाहर निकलगया फिर राजाओं के मध्यमें वर्त्तमानहोकर घूमता दृष्टपड़ा इसके पीछे राजा पांचाल और धृष्टकेतुको ध्यान न करके पाण्डवों की सेना के मध्यवर्त्तीहोकर भीष्मजी ने सात्यकी भीमसेन अर्जुन द्रुपद विराट धृष्टद्युम्न इन छः महारथियोंको बड़े भयकारी युद्धमें घायल करनेवाले उत्तम तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया फिर उन महारथियोंने उनके उन तीक्ष्णबाणों को दूरकरके बड़ेवेगसे दश दशबाणों के द्वारा भीष्मजीको पीड़ामान किया और महारथी शिखंडीने सुनहरी पुंखवाले शिलापर तीक्ष्णकिये बाणोंकोमारा वह बाण शीघ्रही

wounded Bhishm on all sides Bhishm with his armour broken and wounded with different sorts of weapons in the vital parts felt no pain. Having his arrows and weapons for blazing fire of which the rumbling of his chariot wheels was the din, the mighty weapons were the light and the dead bodies of the warriors having jewelled bows, formed the fuel Thus like the fire of *pra'aya* he faced his enemies and in good time got clear of the lines of their chariots Then he was seen roaming in the midst of the princes. And disregarding the king of Panchal and Dhrishtaketu, he wounded with his dreadful arrows the six warriors of the Pandavas, namely Satyaki, Bhimsen, Arjun, Drupad, Virat and Dhrishtadyumn Those warriors however removed his arrows and wounded him with ten arrows each Valliant Shikhandi discharged his arrows having golden feathers and sharpened on stone. They pierced through his body. Then enraged Arjun

ततः किरीटीसंरब्धो भीष्ममेवाभ्यधावत ॥१३॥ शिखण्डिनं पुरस्कृत्य धनुश्चास्यसमाच्छिनत् । भीष्मस्य धनुषश्छेदं नामृष्यन्तमहारथाः ॥ १४ ॥ द्रोणश्च कृतवर्माच सैन्धवश्च जयद्रथः । भूरिश्रवाः शल. शल्यो भगदत्तस्तथैवच ॥ १५ ॥ सप्तैतेपरमक्रुद्धाः किरीटिनमभिद्रुताः । तत्र शस्त्राणि दिव्यानि दर्शयन्तो महारथाः ॥ १६ ॥ अभिपेतुर्भृशं क्रुद्धाश्छादयन्तश्च पाण्डवम् । तेषामापततां शब्दः शुश्रुवे फाल्गुनं प्रति ॥ १७ ॥ उद्धूतानां यथाशब्दः समुद्राणांयुगक्षये । घ्नतानयत गृह्णीत विध्यध्वमथकर्तत ॥१८॥ इत्यासीत्तुमुलःशब्दः फाल्गुनस्य रथं प्रति । तं शब्दं तुमुलं श्रुत्वा पाण्डवानां महारथाः ॥ १९ ॥ अभ्यधावन् परीप्सन्तः फाल्गुनं भरतर्षभ । सात्यकिर्भीमसेनश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ॥ २० ॥ विराटद्रुपदौ चोभौ राक्षसश्च घटोत्कचः । अभिमन्युश्च संक्रुद्धः सप्तैते क्रोधमूर्च्छिताः ॥ २१ ॥ समभ्यधावंस्त्वरिताश्चित्रकार्मुकधारिणः । तेषां समभवद्युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् ॥ २२ ॥ संग्रामे भरतश्रेष्ठ देवानां दानवैरिव ।

भीष्मजीके शरीरमें प्रवेश करगये इसके पीछे क्रोधयुक्त अर्जुनने शिखंडीको आगे करके भीष्मजीके सम्मुख दौड़कर उनके धनुषको काटा फिर द्रोणाचार्य्य कृतवर्मा महारथी जयद्रथ भूरिश्रवा शल्य और भगदत्त भीष्मके धनुष को तोड़ना न सहकर बड़े क्रोधयुक्तहोकर सातोंमिलकर अर्जुनके सम्मुखगये वहां दिव्य अस्त्रों को दिखातेहुए । १६ । पांडवोंको शस्त्रोंसे ढकते उन सबक्रोधभरे महारथी पुरुषोंके ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि प्रलयकाल में उठेहुए समुद्र के शब्द होतेहैं और अर्जुन के रथपर ऐसे कठिन शब्दहुए कि लेचलो पकड़ो घायल करो मारो । १८ । हे राजा पांडवों के महारथी उस कठिन कठोर शब्दको सुनकर अर्जुन को चाहते हुए उन महारथियों के सम्मुख दौड़े सात्यकी भीमसेन धृष्टद्युम्न विराट द्रुपद नकुल सहदेव घटोत्कचराक्षस और अत्यन्तक्रोधयुक्त अभिमन्यु महाक्रोधमें ज्वलित होकर अपूर्व धनुषोंको लिये उनसातोंमहारथियोंके सम्मुख दौड़े इनसबलोगोंका युद्धऐसा

led by Shikhandi rushed against Bhishm and cut down his bow. Dronacharya, Kritvarma, valliant Jayadrath, Bhurishrava, Shalya and Bhagdatta could not bear that injury to Bhishma's bow and all those seven warriors together faced Arjun Then diplaying their divine weapons and covering the Pandavas with their weapons, the sounds of those enraged warriors were heard like that of the angry ocean at the end of the Yug. Approaching Arjun's chariot they cried out, "Take him, seize him, wound him, kill him," The Pandav warriors hearing those cries, rushed against them for the sake of Arjun Satyaki, Bhimsen, Dhrishtadyumn, Virat, Drupad Nakul, Sahadev, Ghato'kach the rakshas and enraged Abhimanyu, all these warriors much enraged took up their wonderful bows and rushed upon the seven. Then the battle between the two parties was as

शिखण्डीतु रणे श्रेष्ठो रक्षमाण किरीटिना ॥ २३ ॥ अविध्यद्दशभिर्भीष्मं छिन्नधन्वा नमाहवे । सारथिं दशभिश्चास्य ध्वजञ्चैकेन चिच्छिदे ॥ २४ ॥ सोन्यत् कार्मुक मादाय गाङ्गेयो वेगवत्तरम् । तदप्यस्य शितैर्बाणैस्त्रिभिश्चिच्छेद फाल्गुन ॥ २५ ॥ एव स पाण्डवः क्रुद्ध आत्तमात्तं पुनःपुनः । धनुश्चिच्छेद भीष्मस्य सव्यसाचीपर न्तपः ।२६॥ सछिन्नधन्वा संक्रुद्धः सृक्किणी परिसंलिहन् । शक्तिंजग्राह तरसा गिरीणा मपि दारुणीम ॥ २७ ॥ ताञ्च चिक्षेप संक्रुद्धः फाल्गुनस्य रथं प्रति । तामापतन्तीं सम्प्रेक्ष्य ज्वलन्तीमशनीमिव ॥ २८ ॥ समादत्त शितान् भल्लान् पञ्च पाण्डवनन्दन । तस्य चिच्छेदतां शक्तिं पञ्चधा पञ्चभि शरैः ॥२९॥ संक्रुद्धोभरतश्रेष्ठ भीष्मबाहुप्रवेरि ताम् । सापपात तयाछिन्ना संक्रुद्धेन किरीटिना ॥ ३० ॥ मेघवृन्दपरिभ्रष्टा विच्छि-

महाघोर रोमहर्षणहुआ ।२२। जैसाकिदैत्योंसे और देवताओंसे हुआथा फिर युद्धमें अर्जुनमे रक्षित शिखंडीने उन टूटे धनुषवाले भीष्मको दशबाणोंसे बेधा औरदशही बाणोंसे सारथीको घायल किया और एकबाणसे उसकीध्वजाकोभीछिदडाला।२४। गांगेय भीष्मजी बड़े वेगवान् दूसरे धनुषको लेकर युद्धकरने लगे अर्जुन ने उन के उस धनुषकोभी तीन तीक्ष्ण बाणों से काटा । २५ । इसरीति से उसशत्रुसंतापी क्रोधभरे अर्जुन ने बारंबार लिये हुए भीष्मके धनुषोंको काटा । २६ । तब उन टूटे धनुष अत्यन्त क्रोधयुक्त होटोंको चाबतेहुए भीष्मजीने पर्वतों कोभी फाड़ने वाली घोरशक्ती को हाथ में लिया । २७ । और बड़े क्रोधमे उस शक्ती को अर्जुन के रथपर फेंका उस वज्रके समान प्रकाशमान आतीहुई शक्ती को देखकर पांडुनन्दन अर्जुन ने पांच तीक्ष्ण भल्लोंको हाथ में लिया और उनकी उस शक्ती को पांचबाणों से टुकड़े टुकड़े करदिया । २९ । हे राजा अर्जुन नेभीष्मकी भुजासे फेंकी हुई शक्ती को काटा फिर अर्जुन से कटीहुई शक्ती रथसे ऐमे गिर- पड़ी । ३० । जैसे कि बादलोंके समूहों से अलग होकर बिजली गिरती है शत्रु-

fierce as that between the gods and danavas. Then Shikhandi, protected by Arjun, wounded Bhishm, whose bow was cut down, with ten arrows, with ten more he wounded his driver and with one he pierced through his banner. Bhishm the son of Ganga then took up another bow and began fighting. Arjun cut down the other bow too, with three sharp arrows. Thus in his rage Arjun the destroyer of enemies again and again cut down Bhishm's bow. 26 Much enraged at the cutting of his bows, Bhishm biting his lips in anger, took up a dreadful spear capable of piercing mountains and in great rage hurled it at Arjun's chariot. Seeing that spear coming on like bright vajra, Arjun the joy of Pandu, took up five darts in his hand and with them he cut down the spear in pieces. Hurled by the arms of Bhishm the spear was cut down by Arjun and it fell off the chariot (30) as lightning from clouds. Bhishm the destroyer of the

श्चेव शतहृदा । छिन्नांतां शक्तिमालोक्य भीष्मः क्रोधसमन्वितः ॥ ३१ ॥ अचिन्तयद्रणे
वीरो बुद्ध्यापरपुरञ्जयः । शक्तोऽहं धनुषैकेन निहन्तुं सर्वपाण्डवान् ॥ ३२ ॥ यद्येषां
न भवेद्गोप्ता विष्वक्सेनो महाबलः । कारणद्वयमास्थाय नाहं योत्स्यामि पाण्डवान्
॥ ३३ ॥ अवध्यत्वाच्च पाण्डूनां स्त्रीभावाच्च शिखण्डिनः । पित्रा तुष्टेन
मे पूर्वं यदा काली मुदावहम् ॥३४॥ स्वच्छन्दमरणं दत्तं मवध्यत्वं रणे तथा । तस्मान्मृत्यु
महं मन्ये प्राप्तकालमिवात्मनः ॥ ३५ ॥ एवं ज्ञात्वा व्यवसितं भीष्मस्यामिततेजसः ।
ऋषयो वसवश्चैव वियत्स्था भीष्ममब्रुवन् ॥ ३६ ॥ यत्ते व्यवसितं तात तदस्माकमपि
प्रियम् । तत् कुरुष्व महाराज युद्धे बुद्धिं निवर्तय ॥३७॥ अस्य वाक्यस्य निधने प्रादु
रासीच्छिवोऽनिलः । अनुलोमः सुगन्धी च पृषतैश्च समन्वितः ॥ ३८ ॥ देवदुन्दुभय
श्चैव सम्प्रणेदुर्महास्वनाः । पपात पुष्पवृष्टिश्च भीष्मस्योपरि मारिष ॥ ३९ ॥ नभ

श्रोंके पुरोंके विजयकरने वाले वीर भीष्म ने उस टूटी हुई शक्ती को देखकर युद्ध में चिन्ताकरी कि मैं अकेले धनुष से सब पांडवों के मारने को कैसे समर्थहूंगा । ३२ । दूसरे इन्हों के रक्षक महावली श्रीकृष्णजी हैं इन दोनों कारणों से मैं पांडवों से नहीं लडूंगा प्रथम तो पांडवों के अवध्यहोने से दूसरे शिखंडी के स्त्रीपनेसे पूर्वसमय में मेरे प्रसन्न चित्त पिताने काली नाम मायाको विवाहा । ३४ । उससमय मुझको वरदान दिया था कि तू अपनी इच्छा के अनुसार मरैगा और युद्धमें सबसे अवध्य होगा इसकारण से मैं अपनी मृत्यु को समय पर वर्त्तमान मानताहूं । ३५ । बड़ेतेजस्वी भीष्मजी के इस प्रकारके निश्चयको जान कर आकाशमें नियत ऋषियों ने और अष्ट वसुओं ने भीष्मजी से कहा । ३६ । हे तात तुमने निश्चय किया वही हमको भी अभीष्ट है हे महाराज तुम इसी को करो और युद्धसे अपने चित्तको हटाओ । ३७ । इसवचन के समाप्त होने पर चारोंओर से वह वायु प्रकटहुई जो कि आनन्दरूप त्रिविध प्रकार से सुगन्ध युक्त थी । ३८ । उस समय देवताओं की भी दुन्दुभियां अच्छे प्रकार

enemies seeing his spear broken down thought within himself:—"With a single bow I can not destroy the Pandavas who have mighty Shree Kaishn for their protector. I shall not fight against the Pandavas for two reasons:—firstly they are not destructible and *secondly on account of the womanhood of Shikhandi. Formerly*, my father of cheerful spirit married my stepmother Kali and granted me the boons that I should die when I desired and should not be killed in battle Now I think that this is the proper time for me to die." At this resolution of Bhishm there came a sound from the rishis and the eight Vasus staying in mid air, "Your resolution is desirable to us. Do as you say and remove your mind from battle." As soon as those words were finished there blew from all quarters a breeze

तच्छुश्रुवे कश्चिच्चैषां सम्वदतां नृप । ऋते भीष्म महाबाहुं माञ्चापि मुनितेजसा ॥ ४० ॥ सम्भ्रमश्च महानासीत् त्रिदशानां विशाम्पते । पतिष्यति रथाद्भीष्मे सर्वलोकप्रिये तदा ॥ ४१ ॥ इति देवगणानाञ्च वाक्यं श्रुत्वा महातपाः । ततः शान्तनवो भीष्मो बीभत्सुं नात्यवर्त्तत ॥ ४२ ॥ भिद्यमानः शितैर्बाणैः सर्वावरणभेदिभिः । शिखण्डीतु महाराज भरतानां पितामहम ॥ ४३ ॥ आजघानोरसि क्रुद्धो नवभिर्निशितैः शरैः । सतेना भिहतः संख्ये भीष्मः कुरुपितामह ॥ ४४ ॥ नाकम्पत महाराज क्षितिकम्पेयथाचलः । ततः प्रहस्य बीभत्सुर्व्याक्षिपन् गाण्डिवं धनुः ॥ ४५ ॥ गाङ्गेयं पञ्चविंशत्या क्षुद्रकाणां समार्पयत् । पुनः पुन शतैरेनं त्वरमाणो धनञ्जयः ॥ ४६ ॥ सर्वगात्रेषु संक्रुद्धः सर्वमर्मस्वताडयत् । एवमन्यैरपि भृशं विध्यमानः सहस्रश ॥ ४७ ॥ तानप्याशु शरैर्भीष्म प्रतिविव्याध महारथः । तैश्च मुक्ता ञ्छरान् भीष्मा युधि सत्यपरा

से बजीं और भीष्मजी के ऊपर पुष्पोंकीवर्षा हुई, हे राजा व्यासमुनिके तेजसे मेरे और महाबाहु भीष्म के सिवाय उन वार्त्तालाप करनेवालों के वचनको किसी ने भी नहीं सुना । ४० । तब सब लोकके प्यारे भीष्मजी के रथ से पृथक्होने पर भीष्मके चाहने वाले सब देवताओं को बड़ा आश्चर्य हुआ । ४१ । इस के पीछे शंतनुका पुत्र तेजस्वी भीष्म देवगणों के वचनको सुनकर अर्जुन के सम्मुख नहीं रहा । ४२ । जो कि सब पत्तों के तोड़नेवाले तीक्ष्ण बाणों से भी घायल था तो भी क्रोधयुक्त शिखंडी ने भरतवंशियों के पितामहको । ४३ । तीक्ष्ण धार के नौ बाणों से छातीपर घायल किया वह कौरवों के पितामह भीष्मजी युद्ध में उस प्रहार से घायल होकर भी ऐसे कंपायमान नहीं हुए जैसे कि भूकम्प होने पर पर्वत नहीं हिलता इस के पीछे गांडीव धनुष को खैंचनेवाले अर्जुन ने हँसकर गांगेय भीष्मजीको क्षुद्रक नामके पच्चीस बाणों से घायल किया फिर शीघ्रता करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने जैसे भीष्मको सैकड़ों बाणों से सब अंग और मर्मस्थलों पर घायल किया इसीप्रकार दूसरे शत्रुओं ने भी इनको अनेक प्रकारसे घायल किया ।४७। फिर महारथी भीष्मने शीघ्रही उनको अपने बाणों से

giving pleasure and charged with sweet odours. The trumpets of the gods sounded and there was a shower of flowers over Bhishm. None except Bhishm and myself favoured of *Vayas*, could hear that talk. 40. All the gods were filled with wonder when Bhishm the favourite of all the world fell down from his car. After hearing the words of the gods Bhishm encountered Arjun no more. Already wounded by the sharp arrows, the grandfather of the Bharats was again wounded by furious *Shikhandi* with nine arrows in the breast, but Bhishm did not shake even with these fresh wounds and remained firm as a mountain at the time of earthquake. Then Arjun the wielder of Gandiv wounded the son of Ganga with twenty five

क्रमः ॥ ४८ ॥ निवारयामास शरैः समं सन्नतपर्वभिः । शिखण्डीतु रणे बाणान् यान्
मुमोच महारथः ॥ ४९ ॥ न चक्रुस्ते रुजं तस्य रुक्मपुंखाः शिलाशिताः । ततः किरी
टीसंक्रुद्धो भीष्ममेवाभ्यवर्त्तत ॥ ५० ॥ शिखण्डिनं पुरस्कृत्य धनुश्चास्य समाच्छि
नत् । अथैनंनवभिर्विध्वा ध्वजमेकेन चिच्छिदे ॥ ५१ ॥ सारथिं विशिखैश्चास्यदशभिः
समकम्पयत् । सोन्यत् कार्मुकमादाय गाङ्गेयो बलवत्तरम् ॥ ५२ ॥ तदप्यस्य शितैर्भल्लै
स्त्रिधा त्रिभिरघातयत् । निमेषार्धेन कौंतेय आत्तमात्रं महारणे ॥ ५३ ॥ एवमस्यधनूं
ष्याजौ चिच्छेद सुबहून्यथ । ततः शान्तनवो भीष्मो बीभत्सुं नात्यवर्त्तत ॥ ५४ ॥
अथैनं पञ्चविंशत्या क्षुद्रकाणां समार्पयत् । सोतिविद्धो महेष्वासो दुःशासन

घायलकिया और उनके छोड़हुए बाणों को गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से जहांका तहां
रोंकदिया । ४८ । इसके पीछे महारथी शिखंडी ने युद्धमें जिन बाणोंको छोड़ा
उन सुनहरीपुंखवाले तीक्ष्णधार युक्त बाणोंने उन भीष्मजी को पीड़ित नहीं किया
। ४९ । इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन शिखण्डी को आगे करके भीष्म
के सम्मुख वर्त्तमान हुआ और उनके धनुष को काटा उसीप्रकार इनको दशबाणोंसे वेध
करएक बाणसे उन की ध्वजा को भी काटा और दश विशिखबाणों से उनके सारथी
को अत्यन्त कम्पायमान किया ।५१। फिर भीष्मने दूसरे मलय धनुषको लेकर तैयार
किया इसधनुषके भी अर्जुनने तीन तीक्ष्ण भल्लों से तीन खंडकिये ।५२। इसीप्रकार
से अर्जुन ने आधेही निमिष में उसयुद्धभूमि में हाथमें लिये हुए उनके अनेक धनुषोंको
काटा । ५३ । फिर शंतनु के पुत्र भीष्म अर्जुन के सम्मुख वर्त्तमान नहीं हुए
तब अर्जुन ने उनको क्षुद्रक नाम पच्चीस बाणों से घायल किया । ५४ । फिर
वह अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी भीष्मजी दुश्शासन से बोले कि इस पांडवों के
महारथी युद्धमें क्रोधरूप अर्जुन ने युद्ध के बीच हजारों बाणों से मुझको घायल

arrows with a smiling face. Then much enraged he pierced all parts of his body with hundreds of arrows. Then valliant Bhishm soon wounded him with his arrows and checked the flight of his arrows with his arrows having hidden knots. Shikhandi the brave warrior again discharged his arrows, but those arrows having golden feathers did not trouble him much. Then Arjun much enraged, stepping behind Shikhandi; encountered Bhishm and cut down his bow. 50. Having wounded him with ten arrows, he cut down his banner with one and wounded his chariot driver with ten more. Then Bhishm prepared another strong bow which was cut into three parts by Arjun's three arrows. Then Arjun cut down several bows of Bhishm. As the son of Shantanu encountered Arjun no more, and the latter again wounded him with twenty five arrows. 54. Exceedingly wounded, Bhishm the mighty archer said to Dushasan, "This mighty charioteer of the Pandavas, Arjun the embodiment of anger,

मभाषत ॥ ५५ ॥ एष पार्थो रणे क्रुद्धः पाण्डवानां महारथः । शरैरनेकसाहस्रैर्मा मेवाभ्य हनद्रणे ॥ ५६ ॥ न चैष समरे शक्यो जेतुं वज्रभृता अपि । न चापि सहिता वीरा देवदानवराक्षसाः ॥ ५७ ॥ माञ्चापि शका निर्जेतुं किमु मर्त्या महारथाः । एवं तयो सम्वदतोः फाल्गुनो निशितैः शरैः ॥ ५८ ॥ शिखण्डिनं पुरस्कृत्य भीष्मं विव्याध संयुगे । ततो दुःशासनं भूय. स्मयमानोऽभ्यभाषत ॥ ५९ ॥ अतिविद्धः शितैर्बाणैर्भृशं गाण्डीवधन्वना । वज्राशनिसमस्पर्शा अर्जुनेन शरा युधि ॥ ६० ॥ मुक्ताः सर्वेऽव्यवाच्छिन्ना नेमे बाणाः शिखण्डिनः । निकृन्तमाना मर्माणि दृढावरणभेदिनः ॥ ६१ ॥ मुसला इव मे घ्नन्ति नेमे बाणाः शिखण्डिन. । वज्रदण्ड

किया है यह अर्जुन युद्धमें वज्रधारी इन्द्रसे भी विजय करनेके योग्य नहीं है । ५५ । और वीर देवता दानव राक्षसभी सब मिलकर मेरे विजय करनेको समर्थ नहीं हैं फिर पृथ्वी के नर महारथी क्या पदार्थ हैं । ५६ । इस रीति से इन दोनों के वार्त्तालाप होनेपर अर्जुन ने शिखंडी को आगे करके भीष्मजीको तीक्ष्ण धारवाले बाणों से फिर घायल किया । ५७ । तब तो उस गांडीवधनुषधारी के तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त घायल और आश्चर्य युक्त भीष्मजी दुश्शासन से कहने लगे । ५८ । कि युद्ध में इन्द्रवज्रके समान अर्जुन के छोड़े हुए स्पर्श करने वाले बाण सब सफल हुए हैं इस से विदित होता है कि ये बाण शिखंडी के नहीं हैं । ५९ । बड़ेदृढ़ और मर्मस्थलों के काटने वाले पर्वतों को भेदनकरने वाले बाण मुसलोंके समान मुझकोमारतेहैं यहबाण किसी प्रकार से शिखंडी के नहीं हैं ।६०। ब्रह्मदण्ड के समान स्पर्शवाले वा वज्रके समान तीक्ष्ण कष्ट से सहने के योग्य बाण मेरे प्राणों को पीड़ा देते हैं इससे यह शिखण्डी के बाण नहीं हैं । ६१ । यमदूतों के समान अप्रिय गदा और परिघ के समान स्पर्शवाले बाण मेरे

has wounded me with thousands of arrows. Surely Arjun is invincible even by Indra the wielder of vajra 55. Valliant gods, danavas and rakshases joined together cannot conquer me; what to say of mortal men?" When the two were thus talking together, Arjun preceded by Shikhandi again wounded Bhishm with his sharp arrows. Exceedingly wounded by the sharp arrows of the wielder of Gandiv and much amazed, Bhishm thus addressed Dushasan:—"The arrows discharged by Arjun, hard to the touch like vajra, have all done their work; I think therefore that those arrows were not discharged by Shikhandi. Very hard, piercing the vital parts and capable of breaking through mountains, those arrows hit me like maces; they cannot belong to Shikhandi 60. Hard to the touch like Brahm-dand, sharp and unbearable like vajra, the arrows give me pain and therefore they could not belong to Shikhandi. Like the unwelcome messengers of Yam, the arrows hard as maces and clubs, draw life out of me

समस्पर्शा वज्रवेग दुरासदा. ॥ ६२ ॥ मम प्राणानारुजन्ति नेमे बाणाः शिखण्डिन । नाशयन्तीव मे प्राणान् यमदूता इवाहिताः ॥ ६३ ॥ गदापरिघसंस्पर्शा नेमे बाणा. शिखण्डिनः । भुजगा इव संक्रुद्धा लेलिहाना विषोल्बणाः ॥ ६४ ॥ समा विशन्ति मर्माणि नेमेबाणा शिखण्डिनः । अर्जुनस्य इमेबाणा नेमेबाणा शिखण्डिनः ॥६५॥ कृन्तन्ति मम गात्राणि माघमासे गवाइव । सर्वे ह्यपि नमे दुःखं कुर्य्युरन्ये नराधिपाः ॥ ६६ ॥ वीरं गाण्डीव धन्वान मृते जिष्णु कपिध्वजम् । इति ब्रुवञ्छान्तनवो दिधक्षुरिव पाण्डवान् ॥६७॥ शक्तिंभीष्म सपार्थाय ततश्चिक्षेपभारत । तामस्य विशिखैश्छित्त्वा त्रिधा त्रिभिरपातयत् ॥६८॥ पश्यतां कुरुवीराणां सर्वेषां तव भारत । चर्माथारूप गाङ्गेयो जातरूपपरिष्कृतम् ॥६९॥ खड्गंचान्यतरप्रेप्सुर्मृत्योरग्रेजयायवा ।

मार्गों को निकालते हैं यह बाण शिखण्डी के नहीं हैं । ६२ । सर्पों के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त विषभरे चाटतेहुए मेरे मर्मों में प्रवेश करते हैं इसमे यहबाण शिखण्डी के नहीं हैं । ६३ । यह बाण अवश्य अर्जुन के हैं शिखण्डी के नहीं हैं क्योंकि यह बाण मेरे अंगों को ऐसे चूर्ण किये डालते हैं जैसे कि भाद्रपदके महान में प्रचण्ड सूर्य्य अंगों को संतप्त करके चूर्णीभूत करते हैं । ६४ । विजयी गांडीव धनुषधारी वानरध्वज वीर अर्जुन के सिवाय अन्य पृथ्वी के सबराजा लोग भी मुझको व्यथित नहीं करसक्ते । ६५ । हे भरतर्षभ इस प्रकार बोलते वा पाण्डवोंको भस्मकरना चाहते उन शंतनु के पुत्र भीष्मने अर्जुन के ऊपर शक्तीको छोड़ा । ६६ । इसको देखकर अर्जुन ने आपके सब कौरवी वीरोंके देखते हुए इनकी शक्तीको विशिखनाम तीनबाणों से काटकर गिराया । ६७ । फिर दोबातों में से एकको चाहते गांगेय भीष्मजी ने सुवर्ण जटित ढाल और तलवारको मृत्यु के लिये वा विजय के निमित्त हाथ में पकड़ा । ६८ । तब अर्जुन ने उसरथ से नहीं उतरेहुए की उस ढालको शायकनाम बाणों से सौ टुकड़े किया यह बड़ा आश्चर्यसा हुआ । ६९ । इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने अपनी

those are not Shikhandi's arrows. Like venomous serpents much enraged with tongues projected, the arrows enter my vital parts and therefore they cannot be Shikhandi's arrows. They are certainly Arjun's and not Shikhandi's, for these arrows are withering up my limbs like the sun of Bhadrapad. Except conquering Arjun, the wielder of the Gandiv, who has a monkey's figure on his banner, none of the kings of the world can wound me" Thus talking and wishing to destroy the Pandavas, Bhishm the son of Shantanu hurled a spear at Arjun, and seeing that spear coming towards him, Arjun in the presence of all the warriors of the Kauravas, cut it down with three arrows. Then remembering his adored god, Bhishm the son of Ganga took up his sword and shield for death or victory; but before he could dismount his chariot, Arjun cut his shield into hundred pieces

तस्य तच्चुतथा चर्म व्यधमत्सायकैस्तथा ॥ ७० ॥ स्यादनवरुद्धस्य तदद्भुतमिवाभवत् । ततो युधिष्ठिरो राजा स्वान्यनीकान्यचोदयत् ॥ ७१ ॥ अभिद्रवत गाङ्गेयं मा वोऽस्तुभयमण्वपि । अथ ते तोमरैः प्रासैर्बाणौघैश्च समन्ततः ॥ ७२ ॥ पट्टिशैश्च सुनिस्त्रिंशैर्नाराचैश्च तथा शितैः । वत्सदन्तैश्च भल्लैश्च तमेकमभिदुद्रुवुः ॥ ७३ ॥ सिंहनादस्ततो घोरः पांडवानामभूत्तदा । तथैव तव पुत्राश्च नेदुर्भीष्मजयैषिणः ॥ ७४ ॥ तमेकमभ्यरक्षन्त सिंहनादांश्चचक्रिरे । तत्रासीत्तुमुलं युद्धं तावकानां परैः सह ॥ ७५ ॥ दशमेऽहनि राजेन्द्र भीष्मार्जुनसमागमे । आसीद्गाङ्ग इवावर्त्तो मुहूर्त्तमुदधेरिव ॥७६॥ सैन्यानां युध्यमानानां निघ्नतामितरेतरम् । असौम्यरूपा पृथिवी शोणिताक्तामवत्तदा ॥ ७७ ॥ समञ्च विषमञ्चैव न प्राज्ञायत किञ्चन । योधानामयुतं हत्वा तस्मिन् स

सेनाओं को आज्ञाकी कि भीष्म के सम्मुख जाओ तुमको थोड़ासाभी भय न होगा । ७० । यह सुनकर वह सेना चारों ओरसे तोमर प्रास बाणसमूह पट्टिश सुन्दर खड्ग तीक्ष्णनाराच । ७१ । वत्सदन्त और भल्लों समेत उस अकेले के सम्मुख गये इसके पीछे पांडवों के महाभयकारी सिंहनाद जारी हुए । ७२ । इसी प्रकार भीष्मकी विजय चाहने वाले आपके पुत्रभी गर्जे और उस अकेले भीष्मके ओर पास वर्त्तमान होकर सिंहनाद करनेलगे । ७३ । हेराजेन्द्र वहां दशवें दिन भीष्म और अर्जुनकी सम्मुखतामें आपके पुत्रोंका युद्ध अन्य लोगोंसे महाघोर रूपहुआ । ७४ । परस्पर में मारती और लड़ती हुई सेनाके भ्रमण चक्र एक मुहूर्त्त पर्यन्त गङ्गा और समुद्रके गिर्दावके समान हुए । ७५ । तबपृथ्वी अशुभरूपी औररुधिरसे पूर्ण होगई उस समय अच्छा बुरा कुछनहीं मालूम हुआ । ७६ । वह भीष्म उस दशवें दिन में दश हजार वीरों को मारकर मर्मस्थलों में महाघायल होनेपर भी युद्ध में नियतरहे । ७७ । इसके पीछे उससेना मुखपर नियत धनुषधारी अर्जुन ने

with his sharp arrows. It was a wonder. Then Yudhishthir ordered his armies to face Bhishm without fear. 70. At this the warriors armed with *tomars*, *prases*, arrows, *pattishas*, swords, sharp arrows, *vatsdants* and darts, faced Bhishm. Then the Pandavas roared like lions. In the same manner, desirous of Bhishma's conquest, the Kauravas raised their war cries and having stationed themselves all round him, began roaring like lions. On that tenth day in the encounter of Bhishm and Arjun, your sons fought very valliantly against other foes. The rounds of the armies killing and fighting against one another were like the *tides of the Ganges and the sea for some time.* The ground became *hideous and full of blood* and nothing good or bad, was discernible. Having killed ten thousand warriors on that tenth day, Bhishm *remained* firm in battle although he was much wounded in the vital parts. Then, stationed on the entrance

दशमेहनि ॥ ७८ ॥ अतिप्रदाहवे भीष्मो भिद्यमानेषु मर्मसु । ततः सेनामुखे तस्मिन् स्थितः पार्थोधनुर्धरः ॥ ७९ ॥ मध्येन कुरुसैन्यानां द्रावयामास वाहिनीम् । वयश्वेत हयाद्भीताः कुन्तीपुत्राद्धनञ्जयात् ॥ ८० ॥ पीड्यमाना शितैः शस्त्रैः माद्रवामरणेतदा । सौवीराः कितवाः प्राच्या प्रतीच्योदीच्यमालवाः ॥ ८१ ॥ अभीषाहाः शूरसेनाः शिवयोथवशातयः । शाल्वा श्रयात्रिगर्त्ताश्च अम्बष्ठाः केकयैः सह ॥ ८२ ॥ सर्वएते महात्मानः शरार्त्ता व्रणपीडिताः । सग्रामे नाजहुर्भीष्मं युध्यमानं किरीटिना ८३॥ ततस्तमेकं बहवः परिवार्य्यसमन्ततः । परिकाल्यकुरून् सर्वान् शरवर्षैरवाकिरन् ।८४॥ निपातयत गृह्णीत युध्यध्वं मवकृन्तत । इत्यासीत् तुमुलः शब्दो राजन् भीष्मरथ प्रति ॥८५॥ निहत्य समरे राजन् शतशोथ सहस्रशः । न तस्यासीदनिर्भिन्नं गात्रेष्वयगु लवन्तरम् ॥ ८६ ॥ एवंभूतस्तव पिता शरैर्विशकलीकृतः । शिताग्रैः फाल्गुनेनाजौ प्राक्

कौरवी सेनाके मध्यमें से सेनाको भगाया । ७८ । तब हम उस श्वेतघोड़े रखनेवाले कुन्ती के पुत्र अर्जुनसे भयभीत व तीक्ष्ण शस्त्रों से पीड़ामान होकर युद्ध से भागे । ७९ । सौवीर कितव व पूर्व्वी पश्चिमी और उत्तरीय राजा व मालव देश अभीषाह शूरसेन शिवय वशातय शाल्व आश्रय त्रिगर्त्त अंवष्ठ केकयों समेत इनसब बाणों से पीड़ित और घावोंसे दुःखी महात्माओंने युद्धमें अर्जुनके साथ लड़तेहुए भीष्मको त्याग नहीं किया इसके पीछे बहुतसे क्षत्रियों ने चारों ओरसे उस अकेले को घेरकर । ८२ । और सबकौरवों को हटाकर बाणों की वर्षा से ढकादिया और गिराओ पकड़ो लड़ो काटो यह कठिन शब्द भीष्म के रथ के पासहुए और युद्धमें हज़ारों को मारकर । ८५ । उसके शरीर में दोअ दलका भी अन्तर घावोंसे बाक़ी नहींरहा ऐसी दशावाले अर्जुन के तीक्ष्ण नोकवाले बाणों से अत्यन्त घायल किये हुए आपके पिता भीष्मजी कुछ सूर्य्य के शेष रहनेपर आपके पुत्रों के देखतेहुए रथ परसे औंधेशिर होकर पृथ्वी पर गिरपड़े । ८६ । हेभरतवंशी रथ से भीष्मजी के

of the army, Arjun hit the centre of the Kaurav army and put it to flight. Afraid of Kunti's son Arjun the possessor of white horses, and wounded by his arrows, we fled from the field of battle. 79. The Sauvirs, the Kitavas, the Eastern, Western and Northern princes, the Malavas, the Avishahs the Shursenas, the Shivayas, the Vashatayas, the Shalwas, the Ashrayas, the Trigartas, the Amvashtas and the Kaikayas, although pierced with arrows and smarting with the wounds, did not desert Bhishm as long as he fought against Arjun. Then many kshatrya warriors having surrounded him and pushed back the Kauravas, covered him with their arrows and the cries of "Pull, seize, fight and cut" were heard round the chariot of Bhishm. Having killed thousands there was not the space of an inch left unwounded on his body. Thus wounded by the sharp pointed arrows

शिरा: प्रापतद्रथात् ॥ ८७ ॥ किञ्चिच्छेषे दिनकरे पुत्राणां तव पश्यताम् । हाहेति दिवि देवानां पार्थिवानाञ्च भारत ॥८८॥ पतमाने रथाद्भीष्मे बभूव सुमहास्वन । सम्पतन्त मभिप्रेक्ष्य महात्मानं पितामहम ॥ ८९ ॥ सह भीष्मेण सर्वेषां प्रापतन् हृदयानिनः । स पपात महाबाहुर्वसुधा मनुनादयन् ॥ ९० इन्द्रध्वज इवोत्सृष्टः केतु सर्वधनुष्मताम् । धरणीं न स पस्पर्श शरसंघैः समावृतः ॥९१॥ शरतल्पे महेष्वासं शयानं पुरुषर्षभम् । रथात् प्रपतितं चैनं दिव्यो भाव शमाविशत् ॥ ९२ ॥ अभ्यवर्षच्च पर्जन्यः प्राकम्पत च मेदिनी । पतन् स ददृशे चापि दक्षिणेन दिवाकरम् ॥ ९३ ॥ संज्ञां चोपालभद्वीरः कालं सञ्चिन्त्य भारत । अन्तरिक्षेच शुश्राव दिव्या वाचः समन्तत ॥ ९४ ॥ कथंमहा

गिरतेही राजाओं में और आकाशके देवताओं में हाय२ आदि बहुत से शब्दहोने लगे । ८७ । उस महात्मा पितामहको गिरतेहुए देखकर भीष्मके साथ हमसबके भी हृदयफटगये । ८८ । वह महाबाहु इन्द्र ध्वजा के समान ऊंचा और सबधनुषधारियों में ध्वजा रूप भीष्म पृथ्वी को अच्छी रीति से कंपायमान करता गिरा । ८९ । उन बाणसमूहों से वेधित होनेपर भी भीष्मजी ने पृथ्वी को स्पर्श नहीं किया अर्थात् बाण शय्याही के ऊपर रहे फिर उस बाणशय्या पर सोते हुए बड़े धनुषधारी पुरुषोत्तमरूप रथसे गिरेहुए भीष्मजी में दिव्यभाव प्रविष्ट हुआ बादल वर्षा करनेलगे पृथ्वी कंपायमान हुई । ९१ । उस गिरते हुए ने भी दक्षिण दिशा में नियत सूर्य्य को देखा हे भरतर्षभ उसमतापी शूरवीर ने कालज्ञानको विचार कर सावधानी को पाया । ९२ । और अन्तरिक्ष में चारों ओर से यह दिव्य वचन सुने कि सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महात्मा पुरुषोत्तम भीष्म दक्षिणायन सूर्य्य वर्त्तमान रहने पर किसी प्रकार से भी अपना शरीर नहीं त्यागेगा भीष्मजी इस वचन को सुनकर बोले कि मैं अभी नियत वर्त्तमान हूं । ९४ । पृथ्वीपर गिरेहुए उत्तरा-

of Arjun, your father, a little before sunset, with n sight of your sons, fell down prone from his chariot. At the fall of Bhishm from the chariot, there were cries of sorrow raised from the kings and the gods on high. Our hearts broke with his fall. That valliant man, tall as Indra's banner, shook the earth with his fall, but pierced with arrows as he was, he did not touch the ground and remained upraised on the bed of arrows. While lying on that bed of arrows, the great archer, best of men, Bhishm fallen down from his chariot, exhibited signs of his divine origin: rain fell from clouds and the earth shook. 91. At his fall he saw the sun in his southern course and thinking of the unfitness of the time he regained his senses He heard these words from the mid air:—" Mighty Bhishm the best of men bearing arms, will not leave his mortal frame as long as the sun will stay in the South." On hearing these words Bhishm said—"I am yet alive" and longing

रमा गाङ्गेय सर्वशस्त्रभृतावर । काल कर्त्ता नरव्याघ्र सम्प्राप्ते दक्षिणायने ॥ ९५ ॥ स्थितोऽस्मीति च गाङ्गेयस्तच्छ्रुत्वा वाक्यमब्रवीत् । धारयामास च प्राणान् पतितोऽपि महीतले ॥ ९६ ॥ उत्तरायणमन्विच्छन् भीष्म कुरुपितामहः । तस्य तन्मतमाज्ञाय गङ्गा हिमवत सुता । ९७ ॥ महर्षीन् हंसरूपेण प्रेषयामास तत्रवै । तत सम्पातिनो हंसा स्त्वरिता मानसौकस ॥ ९८ ॥ आजग्मु सहिता द्रष्टुं भीष्म कुरुपिता महम् । यत्रशेते नरश्रेष्ठ शरतल्पे पितामहः ॥ ९९ ॥ तेतुभीष्मं समासाद्य ऋषयो हंसरूपिण । अपश्य ञ्छर तल्पस्थ भीष्म कुरुकुलोद्वहम् ॥ १०० ॥ ते त दृष्ट्वा महात्मान कृत्वा चापि प्रद क्षिणम् । गाङ्गेयं भरतश्रेष्ठ दक्षिणे नच भास्करम् ॥ १०१ ॥ इतरेतरमामन्त्र्य प्राहुस्त मनीषिणः । भीष्म कथं महात्मासन् संस्थाता दक्षिणायने ॥ १०२ ॥ इत्युक्त्वा प्रस्थिता हंसा दक्षिणामभितो दिशम् । सम्प्रेक्ष्य वै महाबुद्धिश्चिन्तयित्वाच भारत ॥१०३॥ तानत्र

यण को चाहते उन कौरवों के पितामह भीष्मजी ने प्राणों को धारण किया ।९५। हिमाचल की पुत्री श्रीगंगाजीने उन के अभिप्रायको जानकर महर्षि लोगोंको हंस रूप करके उनके समीप भेजा ।९६। इसके पीछे वह बहुत उड़ने वाले शीघ्रगामी हंस एक साथही उन कौरवों के पितामह भीष्मजी के देखनेको ।९७ उस स्थानपर आये जहां नरोत्तम भीष्म पितामह शरशय्या पर सोतेथे वहां आकर हंसरूप महर्षियों ने उस शरशय्या पर नियतहुए कौरव भीष्मजी को देखा और उनको दक्षिणायन सूर्य में पड़ाहुआ देखकर बड़ी परिक्रमा कर परस्पर में सलाह करके यह कहा । १०० । कि भीष्म महात्मा दक्षिणायनमें कैसे जायगा ऐसा कहकर वह हंस दक्षिणाकी ओरको चलेगये । १०१ । हेभरतर्षभ बड़े बुद्धिमान् भीष्मजी अच्छी रीति से उनको देख विचारकर शोच पूर्वक बोले कि हे महर्षियो मैं किसी रीतिसे भी दक्षिणायन सूर्य में नहीं जाऊंगा यही मेरे मनमें दृढ़ता है उत्तरायण सूर्य होने पर मैं अवश्य अपने प्राचीन स्थान पर जाऊंगा। १०३ । हे हंसरूप महात्मा लोगो मैं आप लोगों से

for the Northern course of the sun the grandfather of the Kauravas did not die 95 Ganga the daughter of Himachal, knowing the object of his desire, sent to him the Maharshis in the disguise of swans. Those swift going swans came at once to see the grandfather of the Kauravas to the place where he was lying on the bed of arrows They saw him lying there on the arrowy bed, and seeing him lying down during the southern course of the sun, they went round him and said unanimously. 100 " This great Bhishm cannot depart from this world when the sun is in its southern course." Having said this, the swans flew away towards the south Bhishm the wise, having looked at them carefully, said, " I am resolved, O great rishis, not to leave this world during the southern course of the sun, but as soon as he changes his course towards the north I

धीच्छान्तनवो नाहं गन्ता कथञ्चन । दक्षिणावर्त्ते आदित्ये एतन्मे मनसि स्थितम् १०४ गमिष्यामि स्वकं स्थानमासीद्यन्मे पुरातनम् । उदगायन आदित्ये हंसाः सत्यं ब्रवीमि वः ॥ १०५ ॥ धारयिष्याम्यहं प्राणानुत्तरायणकाङ्क्षया । ऐश्वर्य्यभूतः प्राणानामुत्सर्गो हि यतो मम ॥ १०६ ॥ तस्मात् प्राणान् धारयिष्ये मुमूर्षुरुदगायने । यश्च दत्तो वरो मह्यं पित्रा तेन महात्मना ॥ १०७ ॥ छन्दतो मृत्युरित्येवं तस्य चास्तु वरस्तथा । धारयिष्ये ततः प्राणानुत्सर्गे नियते सति ॥ १०८ ॥ इत्युक्त्वा तांस्तदा हंसान् स शेते शरतल्पगः । एवं कुरूणां पतिते शृङ्गे भीष्मे महौजसि ॥ १०९ ॥ पाण्डवाः सृञ्जयाश्चैव सिंहनादं प्रचक्रिरे । तस्मिन् हते महासत्वे भरतानां पितामहे ॥ ११० ॥ न किञ्चित् प्रत्यपद्यन्त पुत्रास्ते भरतर्षभ । सम्मोहश्चैव तुमुलः कुरूणामभवत्तदा ॥ १११ ॥ कृप

कहताहूं कि मैं उत्तरायण की इच्छा से प्राणों को धारण करूंगा । १०४ । क्योंकि अपने प्राणोंका त्यागना मेरेही स्वाधीन है इस हेतुसे उत्तरायण सूर्य्य में प्राण त्यागकरने की इच्छासे मैं तबतक अपने प्राणोंको धारण करूंगा । १०५ । उस महात्मा पिताने जो मुझको अपनी इच्छाके अनुसार जब चाहे तब मरें यह जो वर प्रदान किया है उसको मैं वैसेही समझता हूं और वास्तव में भी वह यथार्थ है । १०६ । इस कारण देहत्याग निश्चय होजाने पर भी अपने प्राणों को धारण करूंगा उन हंसों से ऐसा कहकर शर शय्या पर शयन कर गये । १०७ । इस प्रकार उस बड़े पराक्रमी कौरवोंके वृद्ध और प्रधान भीष्मजी के गिराने पर पाण्डवोंने और सृंजियोंने सिंहनाद किया । १०८ । हे राजा उनबड़े बलिष्ठ प्रतापवान् कौरवों के वृद्ध पितामह के आसन्न मृत्युहोने पर आपके पुत्रोंने कुछ करने के योग्य कर्म को नहीं माना । १०९ । उस समय कौरवोंको बड़ा भारी मोह उत्पन्नहुआ उसकेपीछे कृपाचार्य्य औरदुर्य्योधनआदि सबलोग स्वासाओं को लेलेकर बड़ारुदन करनेलगे और इसी व्याकुलतामें बहुत विलम्ब तक अचेत नियत

shall depart to my old seat in heaven. I say to you, great rishis in the form of swans, that I shall live and wait till then; for my life is in my power and I will not die till the sun has changed his course towards the north. 105. My mighty father granted me the boon that I should live as long as I desired. I think his words were true to the letter. I shall therefore keep my life although the desertion of this body is certain." Having said this to the swans, he lay down again on his arrowy bed. Thus the mighty ancestor of the Kauravas fell, and the Pandavas with the *Srinjayas* raised a leonine roar. At the fall of that mighty ancestor of the Kauravas and his being at the point of death, your sons knew not what to do. The Kauravas were then very dejected, and Duryodhan and others wept with deep sighs. They remained insensible

दुर्योधनमुखा नि श्वस्य रुदुस्तत । विषादाच्च चिरंकालनतिष्ठन् विगतेन्द्रियाः ॥ ११२ ॥ दध्युश्चैव महाराज न युद्धे दधिरे मनः । ऊरुग्राहगृहीताश्च नाऽभ्यधावन्त पाण्डवान् ॥११३॥ अवध्ये शान्तनो पुत्रे हते भीष्मे महौजसि । अभावः सहसा राजन् कुरुराजस्य तर्कित. ॥ ११४ ॥ हतप्रवीरास्तु वयं निकृत्ताश्च शितैः शरैः। कर्त्तव्यं नाभिजानीमो निर्जिताः सव्यसाचिना ॥ ११५ ॥ पाण्डवाश्च जयं लब्ध्वा परत्र च परां गतिम् । सर्वे दध्मुर्महाशंखान् शूराः परिघबाहवः ॥ ११६ ॥ सोमकाश्च सपञ्चालाः प्राहृष्यन्तजनेश्वर । ततस्तूर्यसहस्रेषु नदत्सु समहाबलः ॥ ११७ ॥ आस्फोटयामास भृशं भीमसेनो ननाद च । सेनयोरुभयोश्चापि गाङ्गेये निहते विभौ ॥ ११८ ॥ संन्यस्य वीरा. शस्त्राणि प्राध्यायन्त समन्ततः । प्राक्रोशन् प्राद्रवंश्चान्ये जग्मुर्मोहं तथा परे

होकर महा शोचग्रहणसे युद्धमें चित्तनहीं लगाया । १११ । हृदयके ग्राह से पकड़ेहुये अर्थात् शोचसे ग्रसितहोके पाण्डवों के सम्मुख भी नहीं दौड़े । ११२ । जिनके कि बड़े २ शूरवीर मारेगये ऐसे हमलोगोंने दुर्य्योधनका नाशहोना चित्त से विचारकिया । ११३ । अर्जुनसे परास्तहोकर हमलोगोंने करने के योग्यकर्म कोभी नहींजाना और परिघ के समान भुजाधारी सबशूरवीर पांडवोंने इसलोक में तो विजयरूपी कीर्तिको और परलोक में उत्तम गतिको पाकर बड़े २ शंखों को बजाया हे राजा पांचालों समेत सोमकलोग अत्यन्त प्रसन्न हुए । ११५ । फिर हजारों बाजों के बजने पर उस महाबली भीमसेन ने भुजदण्डों के कठिन शब्द किये अर्थात् दोनों खंभ ठोककर बड़ी गर्जनाकरी । ११६ । उस समय गांगेय भीष्मजी के आसन्न मृत्युहोने पर दोनों सेनाओं के शूरवीरों ने शस्त्रोंको त्यागकरके चारों ओरसे बड़ा ध्यान किया । ११७ । कोई पुकारा कोई भागा कोई अचेत हुआ किसीने क्षत्रीकुलकी प्रशंसाकरी किसी ने भीष्मजी की प्रशंसा करी । ११८ । ऋषियों ने और पितरों ने भी महाव्रत भीष्मजी की प्रशंसा करी

for a long time and did not rejoin in battle on account of sorrow. 111. Being much dejected in mind they did not rush against the Pandavas. At the death of our great warriors, we thought that the destruction of Duryodhan was sure. Defeated by Arjun we did not know what to do, and all the Pandav warriors with their arms like clubs, got victory and fame in this world and the regions of the righteous in the next. They blew their conchs and the Somaks with the Panchals were much pleased. 115. At the sounds of thousands of the musical instruments, valiant Bhimsen made a great noise by the beating of his upper arms and roared a loud roar. When mighty Bhishm the son of Ganga was at the point of death, the warriors of both the armies laid down their arms and remained plunged in deep thought. Some cried out, some fled, some became insensible, some praised the

॥ ११९ ॥ क्षत्र चान्येऽभ्यनिन्दन्त भीष्मं चान्येऽभ्यपूजयन् । ऋषयः पितरश्चैव प्रशशंसुर्महाव्रतम् ॥ १२० ॥ भरतानाञ्च ये पूर्वे ते चैनं प्रशशंसिरे । महोपनिषदञ्चैव योगमास्थाय वीर्य्यवान् । जपन् शान्तनवो धीमान् कालाकांक्षी स्थितोऽभवत् ॥ १२१ ।

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मपराक्रमे विंशत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १२० ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथमासंस्तदा योधा हीना भीष्मेण सञ्जय । बलिना देवकल्पेन गुर्वर्थे ब्रह्मचारिणा ॥ १ ॥ तदैव निहतान् मन्ये कुरूनन्यांश्च पाण्डवैः । न प्राहरद्यदा भीष्मो घृणित्वाद्द्रुपदात्मजम् ॥ २ ॥ ततो दुःखतरं मन्ये किमन्यत् प्रभविष्यति । यद्याहं पितरं श्रुत्वा निहतं स्मसुदुर्मतिः ॥ ३ ॥ अश्मसारमयं नूनं हृदयं मम सञ्जय । श्रुत्वा विनिहतं भीष्मं शतधा यन्न दीर्य्यते ॥ ४ ॥ यदन्य

और भरतवंशियों के जो पूर्व के स्वर्गवासी पुरखालोग थे उन्हों ने भी उनकी बड़ी प्रशंसा की । ११९ । पराक्रमी और बुद्धिमान् भीष्मजी महा उपनिषद्रूपी योग में वर्त्तमान होकर जपमें प्रवृत्त उत्तरायण सूर्य्य काल के इच्छावान् होकर नियत हुए १२१ ॥

अध्याय १२१ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय उन पराक्रमी देवता के समान गुरु पिता ब्रह्मचारी भीष्म से पृथक् होकर शूरवीर लोग किसदशा में होकर कौन काम करनेलगे । १ । जबकि भीष्मजी ने दयाकरके शिखण्डी के ऊपर किसी शस्त्रका प्रकार नहीं किया तभी से मैं कौरवों को पांडवों के हाथ से मृतकरूप मानता हूं । २ । हे संजय अब इससे अधिक दूसरा कौनसा दुःखहोगा कि पिता को भी मृतक सुनकर मैं निर्बुद्धी जीता हूं । ३ । हे तात निश्चयकरके मेरा हृदय लोहे से भी कठोर है जो अपने पिता भीष्मजी को भी सुनकर सौ टुकड़े नहीं होता है सुन्दर व्रत

kshatryas and some praised Bhishm. The rishis and pitars too, praised Bhishm of dreadful vow and the forefathers of the Bharats residing in heaven, gave him much praise. Valliant and wise Bhishm engaged in *yog* and *jap*, waited there for the northern course of the sun." 120.

CHAPTER CXXI

Dhritrashtra said:—"What did the warriors do, Sanjaya, after being separated from Bhishm the grandfather, venerable like a god? When I heard that he, out of mercy spared Shikhandi and did not wound him in return, I thought that the Kauravas were all slaughtered by the Pandavas. What grief can be greater, O Sanjaya, than that I am alive after hearing the death of my father! Surely my heart must be harder than iron as it does not break into a hundred pieces at hearing the news of my father's death. Let me

निहतेनाजौ भीष्मेण जयमिच्छता । चेष्टितं कुरुसिंहेन तन्मे कथय सुव्रत ॥ ५ ॥ पुनः पुनर्नमृष्यामि हतं देवव्रतं रणे । नहतो जामदग्न्येन दिव्यैरस्त्रैर्य पुरा ॥ ६ ॥ स हतो द्रौपदेयेन पाञ्चाल्येन शिखण्डिना । सञ्जय उवाच । सायाह्ने निहतो भूमौ धार्त्तराष्ट्रान् विषादयन् ॥ ७ ॥ पञ्चालानां ददौ हर्षं भीष्मः कुरुपितामहः । स शेते शरतल्पस्थो मेदिनीमस्पृशंस्तदा ॥ ८ ॥ भीष्मे रथात् प्रपतिते प्रच्युते धरणीतले । हाहेति तुमुलः शब्दो भूतानां सम पद्यत ॥ ९ ॥ सीमावृक्षे निपतते कुरूणां समितिञ्जये । सेनयो रुभयो राजन् क्षत्रियान् भयमाविशत् ॥ १० ॥ भीष्मं शान्तनवं दृष्ट्वा विशीर्णकवचध्वजम् । कुरवः पर्यवर्त्तन्त पाण्डवाश्च विशाम्पते ॥ ११ ॥ खं तमः संवृतमभूदासीद्भानुर्गतप्रभः । ररासपृथिवी चैव भीष्मे शान्तवे हते ॥१२॥ अयं ब्रह्मविदां

धारी संजय यहां युद्धभूमि में विजयाभिलाषी कौरवोत्तम आसन्न मृत्यु भीष्मजी ने जो काम किया वह मुझ से कहो । ५ । मैं युद्ध में मृतक देवव्रत भीष्मको वारम्वार स्मरण करके अधैर्य होता हूं कि जो भीष्म पूर्व समय में परशुरामजी के भी दिव्य अस्त्रों से नहीं मारागया वह द्रुपद के पुत्र पांचाल देशी शिखण्डी के हाथ से मारागया । ६ । संजय बोले कि सायंकाल के समय धृतराष्ट्र के पुत्रों के व्याकुल करनेवाले पांचाल देशियों को कौरवों के पितामह भीष्म जी ने आनन्द दिया, और वाणशय्यापर नियत पृथ्वी को विना स्पर्श किये शयन करनेवाले हुए रथसे भीष्मके गिरने और पृथ्वीतल से ऊपर पड़ने पर जीवोंका हाय हाय शब्द अत्यन्ततासे हुआ। कौरवों के युद्ध की सीमाके वृक्षरूप महाविजयी भीष्म के गिरने पर । ९ । दोनों सेनाओं के क्षत्रियों में महाभय उत्पन्न हुआ हे राजा शंतनु के पुत्र भीष्मको टूटा कवच और ध्वजा से रहित देखकर चारों ओरसे कौरव और पांडव वर्त्तमान हुए आकाश में अंधेरी छागई सूर्यमें अप्रकाशता आगई । ११ । औरपृथ्वी ऐसे शब्दों से शब्दायमान हुई कि यह ब्रह्मज्ञानियों में वा ब्रह्मके जानने वालों में

know, good Sanjaya, all that Bhishm the best of Kauravas desirous of victory and fated to die did in the field of battle. Remembering Devabrat Bhishma's death in the field of battle, I become impatient again and again to think that he who was not killed by the divine weapons of Parashuram, is now destroyed by Shikhandi of Panchal the son of Drupad."6. "By the approach of evening," said Sanjaya, "Bhishm the grandfather pleased the Panchals to the great grief of the Kauravas. Lying on the bed of arrows without touching the ground, Bhishm fallen from his chariot caused great grief to all the people. At the fall of Bhishm the great conquerer and boundary tree of the Kaurav war, great fear was caused among the warriors of both the armies. Seeing Bhishm with the armour and banner broken the Kauravas and the Pandavas gathered on all sides; the sky became dark and the sun's light dimmed. 11. The earth was filled with the

श्रेष्ठो ह्ययं ब्रह्म विदांवरः । इत्यभाषन्त भूतानि शयानं पुरुषर्षभम् ॥ १३ ॥ अयं पितरमाज्ञाय कामार्त्तं शान्तनुं पुरा । ऊर्ध्वरेतसमात्मानं चकार पुरुषर्षभः ॥ १४ ॥ इति स्म शरतल्पस्थं भरतानां महत्तमम् । ऋषयस्त्वभ्यभाषन्त सहिताः सिद्धचारणैः ॥ १५ ॥ हते शान्तनवे भीष्मे भरतानां पितामहे । न किञ्चित् प्रत्यपद्यन्त पुत्रास्तव हि मारिष ॥ १६ ॥ विषण्णवदनाश्चासन् हतश्रीकाश्च भारत । अतिष्ठन् व्रीडिताश्चैव ह्रिया युक्ता ह्यधोमुखाः ॥ १७ ॥ पाण्डवाश्च जयं लब्ध्वा संग्रामशिरसि स्थिताः । सर्वे दध्मुर्महाशङ्खान् हेमजालपरिष्कृतान् ॥ १८ ॥ हर्षात्तूर्यसहस्रेषु वाद्यमानेषु चानघ । अपश्याम महाराज भीमसेनं महाबलम् ॥ १९ ॥ विक्रीडमानं कौन्तेय हर्षेण महतायुतम् । निहत्य तरसा शत्रुं महाबलसमन्वितम् ॥ २० ॥ सम्मोहश्चापि तमुल कुरूणामभवत्ततः । कर्णदुर्य्योधनौ चापि निःश्वसेतां मुहुर्मुहुः ॥ २१ ॥ तथा निपतिते भीष्मे कौरवाणां पिता

श्रेष्ठ है । १२ । जीवों ने उस सोतेहुए पुरुषोत्तम के विषय में यह वचन कहा कि पूर्व समय में इसी श्रेष्ठ पुरुषने अपने पिता शन्तनु को कामाग्नि से पीड़ित जानकर अपने को ब्रह्मचारी किया ओर चारणों समेत ऋषियों ने उन बाण शय्य पर नियत कौरवों के पितामह भीष्मजी के आसन्न मृत्युहोने पर यह वचन कहा । १५ । कि आपके पुत्रों ने कुछ करने योग्य कर्मको नहीं जाना हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उनशोभा से रहित खिन्न स्वरूप लज्जा युक्त ईर्षा से भर युद्ध में प्रवृत्त पाण्डवों ने विजय को पाकर । १७ । सुवर्ण जालों से अलंकृत बड़े बड़े शंखों को बजाया हे निष्पाप बड़े आनन्द के हजारों बाजों के बजने पर हमने महाबली कुन्ती के पुत्र भीमसेन को बड़ी प्रसन्नता युक्त क्रीड़ा करता हुआ देखा । १९ । बड़े बली पांडव शत्रुको अपने वेग से मारकर महा प्रसन्न हुए तब कौरवों में महा कठिन मोह उत्पन्न हुआ । २० । इसीप्रकार भीष्म जी के मरने पर कर्ण और दुर्योधन ने भी बारम्बार श्वास लिये । २१ ।

sounds of 'He was the best of those who know Brahm' People remarked about that best of men lying there—"This is he who in former times Knowing his father Shantanu to be burning in the fire of lust, observed a vow of perpetual celibacy Seeing the grandfather of the Kauravas lying on the bed of arrows from head to foot and ready to die, the rishis said —15. "The sons of Dhritrashtra did not act wisely." Splendourless and ashamed full of enmity and engaged in battle, the Pandavas having got victory blew their conchs decked with the network of gold At the sound of thousands of the musical instruments we saw mighty Bhimsen, the son of Kunti, beating time in his glee. The valliant Pandavas having killed the enemy by their prowess, were cheerful in spirit and the Kauravas were much chagrined. 30. At the fall of Bhishm Duryodhan and Karan heaved sighs of distress All the people wept for grief and there was cofusion

महे । हाहाभूतमभूत् सर्वं निर्मर्य्यादमवर्त्तत ॥ २२ ॥ दृष्ट्वाच पतितं भीष्मं पुत्रो दुःशा
सनस्तव । उत्तमं जवमास्थाय द्रोणानीकमुपाद्रवत् ॥ २३ ॥ भ्रात्रा प्रस्थापितो वीरः
स्वेनानीकेन दंशितः । प्रययौ पुरुषव्याघ्रः स्वसैन्यंस विषादयन् ॥ २४ ॥ तमायान्तमभि
प्रेक्ष्य कुरवः पर्य्यवारयन् । दुःशासनं महाराज किमयं वक्ष्यतीति च ॥ २५ ॥ ततो
द्रोणाय निहतं भीष्ममाचष्ट कौरवः । द्रोणस्तदप्रियं श्रुत्वा मुमोह भरतर्षभ ॥ २६ ॥ स
संज्ञामुपलभ्याशु भारद्वाजः प्रतापवान् । निवारयामास तदा स्वान्यनीकानि मारिष
॥ २७ ॥ विनिवृत्तान् कुरून् दृष्ट्वा पाण्डवापि स्वसैनिकान् । दूतैः शीघ्राश्वसंयुक्तैः सम
न्तात् पर्य्यवारयन् ॥ २८ ॥ निवृत्तेषु च सैन्येषु पारंपर्येण सर्वशः । निर्मुक्तकवचाः सर्वे
भीष्ममीयुर्नराधिपाः ॥ २९ ॥ व्युपरम्य ततो युद्धाद्योधा शतसहस्रशः उपतस्थुर्महात्मानं

सब हाय हाय रूप हुआ और अमर्य्यादा वर्त्तमान हुई आपका पुत्र दुश्शासन भीष्मजी को गिरा हुआ देखकर । २२ । बड़ी तीव्रता में नियत होकर द्रोणाचार्य्य की सेना में गया वह भाई का भेजाहुआ अपनी सेना से अलंकृत वीर दुश्शासन अपनी सेनाको विह्वल करता हुआ गया हे राजा कौरवों ने उस आये हुए दुश्शासन को देखकर चारोंओरसे इस निमित्त घेर लिया कि देखिये यह क्या कहता है । २४ । इसके पीछे दुश्शासन ने भीष्मजी के मरनेका वृत्तान्त द्रोणाचार्य्य जी से कहा । २५ । तब द्रोणाचार्य्य उसके अप्रिय वचनको सुन कर शोक से अचेतहोगये फिर उसप्रतापवान् द्रोणाचार्य्य ने सचेतहोकर । २६ । अपनी सेनाओं को और कौरवों ने भी लौटेहुए अपने कौरवी लोगों को देखकर अपनी प्रबल सेनाको निषेधकरदिया । २७ । और शीघ्रगामी घोड़ों पर सवार अपने दूतों को इधर उधर भेजकर सब को निषेध करवादिया । २८ । फिर सबराजालोग अपने २ कवचोंको उतार २ कर भीष्मजी के पासगये तदनन्तर लाखों शूरवीर युद्ध को विश्राम करके उसमहात्मा भीष्मके पास आकर ऐसे नियतहुए जैसे कि देवता लोग ब्रह्माजी के पास इकट्ठे होते हैं हे राजा इसके पीछे सब पांडव लोग

throughout. At the sight of Bhishma's fall your son Dushasan hastened to the army of Dronacharya. Sent by his brother with his army, brave Dushasan went on upsetting the minds of the soldiers. At his arrival the Kauravas surrounded him on all sides to hear what he had to say to them He related to Dronacharya the account of Bhishma's death, and hearing that unwelcome news Dronacharya swooned. On regaining consciousness he ordered his soldiers to desist from fighting and other Kauravas followed his example They sent swift messengers all round the army to stop fighting. Then all the warriors put off their armour and went to Bhishm, and millions of warriors, leaving the field of battle, collected all round him like gods round Brahma. Then the Pandavas and the Kauravas, seeing

प्रजापतिमिवामराः ॥३०॥ ते तु भीष्मं समासाद्य शयानं भरतर्षभम्। अभिवाद्याथ तिष्ठन्त पाण्डवाः कुरुभिः सह ॥ ३१ ॥ अथ पाण्डून् कुरूंश्चैव प्रणिपत्याग्रतः स्थितान्। अभ्यभाषत धर्मात्मा भीष्मः शान्तनवस्तदा ॥३२॥ स्वागतं वो महाभागाः स्वागतं वो महारथाः। तुष्यामि दर्शनाच्चाहं युष्माकममरोपमाः ॥ ३३ ॥ अभिमन्त्र्याथ तानेवं शिरसा लम्बताब्रवीत्। शिरो मे लम्बतेत्यर्थं उपधानं प्रदीयताम् ॥ ३४ ॥ ततो नृपा समाजह्रुस्तनूनि च मृदूनि च। उपधानानि मुख्यानि नैच्छत्तानि पितामहः ॥ ३५ ॥ अथाब्रवीन्नरव्याघ्रः प्रहसन्निव तान्नृपान्। नैतानि वीरशय्यासु युक्तरूपाणि पार्थिवाः ॥ ३६ ॥ ततो वीक्ष्य नरश्रेष्ठ मभ्यभाषत पाण्डवम्। धनञ्जयं दीर्घबाहुं सर्वलोकमहारथम् ३७॥ धनञ्जय महाबाहो शिरो मे तात लम्बते। दीयतामुपधानं वै यद्युक्तमिह मन्यसे ॥३८॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दशमदिवसावहारे एकविंशत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ २१ ॥

भी कौरवों समेत उस शयनकरते हुए भीष्मजी को पाकर । ३० । दोनों हाथोंसे दण्डवत्करके नियतहुए इसके पीछे शंतनुकेपुत्र भीष्मजी सबको यथायोग्य शिष्टाचारी करके अपनेसम्मुख बैठेहुए पांडव और कौरवोंसे बोले हे महाभागो तुम्हारा आगमन सफल हो और हेमहारथी लोगो तुम्हारा आगमन श्रेष्ठहो । ३२ । हे देवताओंके समान पुरुष लोगो में तुम्हारे देखनेसे बड़ा प्रसन्न होताहूं इन सबलोगों से ऐसा कहकर फिर शिरको लटकाये हुए कहने लगे ।३३। कि मेराशिर अत्यन्त लटकता है इससे मुझे तकिया दो यह सुनकर राजाओं ने बड़े उत्तम मृदुस्पर्शवाले तकिये लाकर दिये । ३४ । उन तकियों को पितामहने नहींचाहा और हँसकर राजाओं से कहा कि । ३५ । हे राजाओ यह तकिये वीरोंकी शय्याओं पर शोभित नहीं होते हैं फिरसब लोकके महारथी प्रतापी पांडव अर्जुनको देखकर बोले कि हेमहाबाहु अर्जुन मेरा शिर लटकता है तू मुझको उचित तकिये देदे । ३८ ।

---

him lying there, stationed themselves after saluting him with both hands. Then Bhishm the son of Shantanu, having asked of their welfare, said to the Kauravas and Pandavas seated before them, "You are welcome, great men, may you be happy and prosperous, brave warriors! men like gods, I am much pleased to see you." Having said this he again continued with his head lying low:—" My head is hanging painfully, pray give me a pillow." At this the kings brought him soft pillows; but the grandfather was not satisfied and with a smiling face he said to them, "These pillows are not befitting the warrior." Then looking towards Arjun the world's bravest warrior, he said:—"My head hangs down, brave Arjun, give me a fitting pillow."37.

सञ्जय उवाच । समारोप्य महच्चाप मभिवाद्य पितामहम् । नेत्राभ्यामश्रुपूर्णाभ्या मिदं वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ आज्ञापय कुरुश्रेष्ठ सर्वशस्त्रभृतांवर । प्रेष्योऽहं तव दुर्धर्ष क्रियतां किं पितामह ॥ २ ॥ तमब्रवीच्छान्तनवः शिरो मे तात लम्बते । उपधानं कुरुश्रेष्ठ फाल्गुनोपधत्स्व मे ॥ ३ ॥ शयनस्यानुरूपं वै शीघ्रं वीर प्रयच्छ मे । त्वं हि पार्थ समर्थो वै श्रेष्ठः सर्वधनुष्मताम् ॥ ४ ॥ क्षत्रधर्मस्य वेत्ता च बुद्धिसत्त्वगुणान्वितः । फाल्गुनोपि तथेत्युक्त्वा व्यवसायमरोचयत् ॥ ५ ॥ गृह्यानुमन्त्र्य गाण्डीवं शरान् सन्नतपर्वणः । अनुमान्य महात्मानं भरतानां महारथम् ॥ ६ ॥ त्रिभिस्तीक्ष्णैर्महावेगैरन्वगृह्णाच्छिरः शरैः । अभिप्राये तु विदिते धर्मात्मा सव्यसाचिना ॥ ७ ॥ अतुष्यद्भरतश्रेष्ठो भीष्मो धर्मार्थतत्त्ववित् । उपधानेन दत्तेन प्रत्यनन्दद्

अध्याय ॥ १२२ ॥

संजय बोले कि इसवचनको सुननेही अर्जुन बड़े भारी धनुष को हाथमें लेके अश्रुपातयुक्त हो पितामहको दण्डवत्करके यह वचनबोला । १ । हे कौरवोंमें श्रेष्ठ सब शस्त्रधारियों के शिरोमणि महादुर्जय पितामह मैं आपका दासहूं आपमुझ को जो आज्ञादें वही मैं करूं । २ । भीष्मजीने कहा हे तात कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुनमेरा शिरलटकता है तू मुझको तकियादे । ३ । हे वीर बहुतशीघ्र मेरे शयनके योग्य तकियादेदे हे अर्जुन तूही समर्थहोगा तूही सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ होगा तूही क्षत्रीधर्मका जानने वाला बुद्धिमान् सतोगुणयुक्त होगा यह सुनकर अर्जुन ने भी बहुत श्रेष्ठ कहकर,उपाय और परिश्रमको अंगीकारकिया । ५ । और गांडीवधनुष को हाथमें लेकर गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों को अभिमंत्रितकर भीष्मजीकी प्रतिष्ठाकरके तीक्ष्ण और वेग युक्त तीनबाणों से उनके शिरको सीधाकिया चित्तका अभिप्रज्ञात होने पर धर्म्मात्मा और मुख्यता के जाननेवाले भरतर्षभ भीष्मजी इस कर्मको देख कर अर्जुनपर अत्यन्त प्रसन्नहुये और इसतकिये के देनेसे अर्जुनकी बड़ी प्रशंसाकी

CHAPTER CXXII

"As soon as Arjun heard those words," said Sanjaya, "he took up in his hand his large bow with tears in his eyes, and bowing down before him he said, "Best of the Kauravas and prince of warriors, invincible grandfather, I am at your service to do your behest." "My head hangs down, son, best of the Kauravas," replied Bhishm, "give me a pillow. Hasten, O warrior, to give me a pillow suitable for my repose. Thou alone canst give it. Thou art the foremost of archers. Thou knowst the duties of a kshatrya and art wise and endowed with *satogun*." At this Arjun said 'Very well' and accepted the undertaking 5. Having taken up the Gandiv bow he pronounced aphorisms on his arrows having hidden knots, and with three sharp arrows he respectfully upraised the head of the grandfather. Virtuous Bhishm the best of Bharats was exceedingly pleased with Arjun at thus giving him the object of his desire and eulogised him for giving

नञ्जयम् ॥ ८ ॥ प्राह सर्वान् समुद्वीक्ष्य भरतान् भारतं प्रति । कुन्तीपुत्रं युधां श्रेष्ठं सुहृदां प्रीतिवर्धनम् ॥ ९ ॥ शयनस्यानुरूपं मे पाण्डवोपहितं त्वया । यद्यन्यथा प्रपद्येथाः शपेयं त्वामहं रुषा ॥ १० ॥ एवमेव महाबाहो धर्मेषु परितिष्ठता । स्वप्तव्यं क्षत्रियेणाजौ शरतल्पगतेन वै ॥ ११ ॥ एवमुक्त्वा तु बीभत्सुं सर्वांस्तानब्रवीद्वचः । राज्ञश्च राजपुत्रांश्च पंडवानभिसंस्थितान् ॥ १२ ॥ पश्यध्वमुपधानं मे पाण्डवेनाभिसन्धितम् । शिष्येऽहमस्यां शय्यायां यावदावर्त्तनं रवे ॥ १३ ॥ ये तदा मां गमिष्यन्ति ते च द्रक्ष्यन्ति मां नृपाः । दिशं वैश्रवणाक्रान्तां यदा गन्ता दिवाकरः ॥ १४ ॥ नूनं सप्ताश्वयुक्तेन रथेनोत्तमतेजसा । विमोक्ष्येऽहं तदा प्राणान् सुहृदः सुप्रियानिव ॥ १५ ॥ परिखाः खन्यतामत्र ममावसदने नृपाः । उपासिष्ये विवस्वन्तमेवं शरशताचितः । उपारमध्वं संग्रामाद्वैरमुत्सृज्य पार्थिवाः ॥ १६ ॥ सञ्जय उवाच । उपातिष्ठन्नथो वैद्याः शल्योद्धरणको-

। ८ । और सब भरतवंशियोंके मध्यमें इस श्रेष्ठ मित्रोंकी प्रीतिके बढ़ाने वाले कुन्ती के पुत्र अर्जुन से बोले कि । ९ । हे पांडव तुमने शयनके समान मुझको तकिया दिया और जो कदाचित् विपरीत कर्म करते तो मैं अवश्य तुमको शाप देता । १० । हे महाबाहु धर्मोंमें नियत शरशय्यापर वर्त्तमान क्षत्रीको युद्धभूमि में निश्चय करके इसीरीति से शयनकरना योग्य है । ११ । इस रीति के वचन अर्जुन से कह कर और पास बैठे हुए राजकुमारों से बोले । १२ । कि पांडवके लगाये हुए मेरे तकिये को देखो मैं इसशय्या पर तबतक शयन करूंगा जबतक कि सूर्य्य दक्षिण मार्ग से उत्तर मार्ग में अर्थात् दक्षिणायन से उत्तरायण होजायँगे । १३ । जो राजा उस समय मुझको मिलेंगे वह मुझको देखेंगे । १४ । जब सूर्य सात घोड़ों के उत्तम प्रकाशवान रथपर चढ़कर कुबेर की दशा को जावेगा तब मैं भी अपने सुहृद् इष्ट मित्रों समेत प्राणों को त्यागूंगा । १५ । हे राजालोगो यहां मेरे निवासस्थान पर तुम खाई को खुदवाओ क्योंकि मैं इसरीति से हजारों बाणों से छिदे हुए शरीरसे सूर्य्य की उपासना करूंगा और तुम सब शत्रुताको त्यागकर युद्ध मतकरो । १६ ।

him the pillow. In the midst of all the descendants of Bharats, he thus addressed Arjun the joy of his friends:— "You have given me, O Pandav, a pillow to mach my bed. I should have cursed you, if you had acted otherwise. 10. A kshatrya, firm on duty and lying on the bed of arrows in the battle field, should certainly repose like this." Having said such words to Arjun, he turned to the princes sitting by, saying, "Look at the pillow which the Pandav has furnished for me. I shall repose on this bed as long as the sun would take to change his course from South to North; the kings who come to me then, will see me. When the sun on his brilliant chariot drawn by seven fleet horses will turn in the direction of Kuver, I shall leave my body with my friends. Dig a ditch round me warriors; for, with my body pierced by thousands of arrows, I shall *adore the sun*. I

विदा । सर्वोपकरणैर्युक्ता. कुशलै साधुशिक्षिता. ॥ १७ ॥ तान् दृष्ट्वा जाह्नवीपुत्र प्रोवाच तनय तव । धन दत्त्वा विसृज्यन्तां पूजयित्वा चिकित्सका ॥ १८ ॥ एवगते मयेदानीं वैद्यै कार्य्यमिहास्तिकिं । क्षत्रधर्मे प्रशस्तोहि प्राप्तोस्मि परमागतिम ॥१९॥ नैष धर्मो महीपाला शरतल्पगतस्य मे । एभिरेव शरैश्चाह दग्धव्योस्मि नराधिपा ॥२०॥ तच्छ्रुत्वा वचन तस्य पुत्रो दुर्य्योधनस्तव । वैद्यान् विसर्ज्जयामास पूजयित्वा यथार्हत ॥ २१ ॥ ततस्ते विस्मय जग्मुर्नानाजनपदेश्वरा. । स्थितिं धर्मे परांदृष्ट्वा भीष्मस्यामिततेजस ॥ २२ ॥ उपधानन्ततोदत्त्वा पितुस्तेमनुजेश्वरा । सहिता पाडवा सर्वे कुरवश्च महारथा ॥ २३ ॥ उपगम्यमहात्मान शयान शयने शुभे । तेभिवाद्यततो भीष्म कृत्वाच त्रि प्रदक्षिणम ॥२४॥ विधाय रक्षां भीष्मस्य सर्वे एव समन्तत । धीरा स्वशिबिराण्येव ध्यायन्त परमातुरा ॥ २५ ॥ निवेशायाभ्युपागच्छन् सायाह्ने रुधिरो

इसके अनन्तर हे राजा वहां सब भूषण और चिकित्सा के यन्त्रों से अलंकृत पंडितों से स्तूयमान सर्ववैद्य लोग आनकर वर्त्तमानहुए । १७ । गांगेय भीष्मजी उनको देखकर आपके पुत्र से बोले कि इन वैद्योंको सत्कार करके दक्षिणापूर्व्वक तुम विदाकरदो । १८ । अब यहां मेरी यह दशाहोने पर मुझको वैद्योंसे क्या प्रयोजन है क्योंकि मैं क्षत्री धर्म में श्रेष्ठ होकर परम गतिको प्राप्तहूं । १९ । हे राजाओ मुझ बाणशय्यापर वर्त्तमानकायही धर्म है कि मैं इन्हीं बाणोंसमेत जलाया जाऊं।२०। उन के इस वचनको सुनकर आपके पुत्र दुर्य्योधनने अपनी योग्यता के अनुसार उन वैद्योंको पारतोषिक देकर विदाकिया । २१ । फिर नानादेश के राजाओंने बड़े तेजस्वीभीष्मजीको अपने धर्ममेंदृढ देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया।२२।इसकेपीछे आपके पिताको तकिया देकर वहसब महारथी राजा वा पांडव और कौरव एक साथही शुभशय्यापर सोतेहुए महात्मा भीष्मकेपास जाकर दंडवत् पूर्व्वक तीनपरिक्रमाकर । २४ । सायंकाल के समय सबवीर चारों ओर से ध्यानकरते बड़े दुःखी

advise you to give up enmity and bloodshed." In the meantime there came to the place, all the physicians, praised by the wise, with medicines and surgical instruments Bhishm the son of Ganga, casting his eye on them, said to your son, "Dismiss these physicians with donations and respect What can the physicians avail me in this state of health ? I have got all that a Kshatrya, firm on his duty, should desire. It is my duty and do ne, that, lying on the bed of arrows as I am, I should be burnt along with these arrows.' 20 At this, your son Duryodhan dismissed the physicians with donations befitt ng his rank. The princes of different countries, finding Bhishm firm on his duty, were much amazed. Then having furnished a pillow for your father, all the kings with the Kauravas and the Pandavas bowed to Bhishm who was lying on the bed of arrows and having turned round him three times retired to their respective tents with

क्षिताः। निविष्टान्पांडवांश्चैवप्रीयमाणान्महारथान् ॥२६॥ भीष्मस्यपतने हृष्टानुपगम्यमहा
यदः। उवाचमाधवःकाले धर्मपुत्रंयुधिष्ठिरम् ॥२७॥ दिष्ट्याजयसिकौरव्य दिष्ट्याभीष्मो
निपातितः। अवध्यो मानुषैरेष सत्यसन्धोमहारथः ॥२८॥ अथवा दैवतैः सार्धं सर्वशा
स्त्रस्य पारगः। त्वांतु चक्षुर्हणं प्राप्यदग्धो घोरेण चक्षुषा ॥ २९ ॥ एवमुक्तो धर्मराजः
प्रत्युवाच जनार्दनम्। तव प्रसादाद्विजयः क्रोधात्तव पराजयः ॥ ३० ॥ त्वंहिनः शरणं
कृष्ण भक्तानामभयङ्कर। अनाश्चर्यो जयस्तेषां येषांत्वमसि केशव ॥ ३१ ॥ रक्षितासमरे
नित्यं नित्यञ्चापि हिते रत.। सर्वथात्वां समासाद्य नाश्चर्यमिति मे मतिः॥ ३२ ॥ एव
मुक्तःप्रत्युवाच स्मयमानो जनार्दन.। त्वय्येवैतद्युक्तरूपं वचनं पार्थिवोत्तम॥ ३३ ॥

इति महा० भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वाविंशत्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १२२ ॥

रुधिर से भरेहुए अपने२ डेरोंमें विश्राम करनेके लिये गये और महाबली माधवजी उस प्रसन्न चित्त बैठेहुए महारथी भीष्मजी के गिरनेपर प्रसन्न हृदय पांडवोंके पास जाकर समय पाकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर से कहनेलगे । २७ । हे कौरव तुमप्रारब्ध से विजय पातेहो और यह मनुष्यों से अवध्य सत्यप्रतिज्ञ महारथी भीष्म प्रारब्ध से गिरायागया । २८ । अथवा देवताओं समेत सबशस्त्रों में पूर्ण तुमनेत्र से मारनेवाले को पाकर घोर नेत्र से भस्महोगया । २९ । यह सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने श्री कृष्णजी को उत्तर दिया कि आपके प्रसन्नहोनेसे विजय है औरआपकेही अप्रसन्न होने से पराजयहै । ३० । हे भक्तभयहारी श्रीकृष्णजी आपही हमारेरक्षाके स्थानहो और उन लोगोंको विजयकापाना कुछ आश्चर्य नहीं है जिनके हितकरने में सदैव प्रवृत्त चित्त और युद्धमें सदैव रक्षकहो आपको सबप्रकार से प्राप्त होकर विजयका होना कुछ आश्चर्य नहीं है यहमेरा मतहै । ३२ । इस रीतिके युधिष्ठिर के वचनों को सुनकर श्रीकृष्णजी बड़ी मन्दमुसकान समेत बोले कि हेराजाओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर यहकहना तुम्ही को योग्यहै ॥ ३३ ॥

heavy hearts. Mighty Madhav went to the Pandavas sitting much pleased at the fall of Bhishm, and in his leisure thus addressed Yudhishthir:— "You have got victory by your good luck and it was by your good fortune that invincible Bhishm of true vows was slain. We may say that he was barnt by thy wrathful eyes which can slay all the gods armed with weapons" To these words of Shri Krishn, Yudhishthir made the following reply:— "Victory goes hand in hand with your pleasure and defeat goes along with your displeasure. 30. O dispeller of the fear of your devotees, Shree Krishn, you are our only refuge. It is not difficult for them to gain victory who alway have you for their well-wisher and protector in battle. I think it is not strange for us to gain victory when you are on our side." On hearing these words of Yudhishthir, Shree Krishn smiled very slowly and said, "O best of kings; Yudhishthir, such words can come from thee alone"33.

सञ्जय उवाच ॥ व्युष्टायान्तु महाराज सर्वर्यां सर्वपार्थिवाः । पाण्डवा धार्त्तराष्ट्राश्च उपातिष्ठन् पितामहम् ॥ १ ॥ तं वीरशयने वीरं शयानं कुरुसत्तमम् । अभिवाद्योपतस्थुर्वै क्षत्रियाः क्षत्रियर्षभम् ॥ २ ॥ कन्याश्चन्दनचूर्णैश्च लाजैर्माल्यैश्च सर्वशः । अवाकिरञ्छान्तनवं तत्र गत्वा सहस्रशः ॥ ३ ॥ स्त्रियोवृद्धास्तथा बालाः प्रेक्षकाश्च पृथग्जनाः । समभ्ययुः शान्तनवं भूतानीवतमोनुदम् ।४॥तूर्याणि शतसंख्यानि तथैवनटनर्त्तकाः । शिल्पिनश्च तथा जग्मुः कुरुवृद्धं पितामहम् ॥ ५ ॥ उपारम्यच युद्धेभ्यः सन्नाहान् विप्रमुच्यते । आयुधानि च निक्षिप्य सहिताः कुरुपाण्डवाः ॥ ६ ॥ अन्वासन्त दुराधर्षं देवव्रतमरिन्दमम् । अन्योन्य प्रीतिमन्तस्ते यथापूर्वं यथावयः ॥७॥ सापार्थिवशताकीर्णा

अध्याय । १२३ ।

संजय बोले हे महाराज रात्रिके व्यतीत होने पर सबराजा वा पाण्डव और धृतराष्ट्र के पुत्र पितामह के पास वर्त्तमान हुए । १ । क्षत्रीलोग उन कौरवोत्तम क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ वीरशय्या पर सोतेहुए वीर भीष्मजी को दण्डवत करके उनके पास नियत हुए । २ । वहांपर हजारों कन्याओं ने जाकर चन्दन चूराखील और सब प्रकारकी मालाओंसे भीष्मजी का पूजन किया । ३ । वृद्धास्त्री वा बाला स्त्री और देखने वाले अन्य सावधान लोगभी उनभीष्मजी के समीप ऐसे गये जैसे कि सूर्य की उपासनाको मनुष्य और स्त्री जाते हैं । ४ । तालस्वर समेत ईश्वर का वर्णनकरने वाले बाजेगाजे समेत नाचनेवाले नट नागर और कारीगर लोग भी वृद्ध पितामह भीष्मजी के पासगये । ५ । वह कौरव पांडवयुद्धों से निवृत्तहो शरीर के कवचादिकों को उतार सब शस्त्रोंको त्याग एकसाथ मिले हुए । ६ । उनदुर्जय शत्रुंजय देवव्रत भीष्मजी के पासआकर बैठगये और सब लोग पूर्वके समान अवस्था के क्रमसे परस्पर में प्रीतिमान् थे, वह सैकड़ों राजाओं से व्याप्त भीष्मजी से

CHAPTER CXXIII

Sanjaya continued.—"At the close of the night, all the kings with the Pandavas and the sons of Dhritrashtra came to the grandfather and sat by him after bowing to that best of the Kauravas and kshatryas lying on the warlike bed. Thousands of girls came there and worshipped him with sandal powder, fried paddy and garlands. Old and young women and wise men came to Bhishm as if to worship the sun. Singers, players, dancers, acrobats, artisans and others too, came to see the old grandfather. The Kauravas and the Pandavas having given up fighting and put off their armour and their arms, came together and sat by the invincible destroyer of enemies, Devabrat Bhishm. As in the days of old they behaved affectionately in the order of their ages. Consisting of thousands of kings, the court of the descendants of Bharat, glorious by the presence of Bhishm, looked beautiful like the sun's orb in the sky.

समितिर्भीष्मशोभिता । शुशुभे भारतीदीप्ता दिवीवादित्यमण्डलम् ॥ ८ ॥ विबभौ च नृपाणां सा गङ्गासुतमुपासताम् । देवानामिव देवेशं पितामहमुपासताम् ॥ ९ ॥ भीष्म स्तुवेदनां धैर्य्यान्निगृह्य भरतर्षभ । अभितप्तः शरैश्चैव निःश्वसन्नुरगो यथा ॥ १० ॥ शराभितप्तकायोपि शस्त्रसन्तापमूर्च्छितः । पानीयमिति संप्रेक्ष्य राज्ञस्तान् प्रत्यभाषत ॥ ११ ॥ ततस्ते क्षत्रिया राजन् समाजह्रुःसमन्ततः । भक्ष्यानुच्चावचान् राजन् वारि कुम्भांश्च शीतलान् ॥ १२ ॥ उपानीतन्तुपानीयं दृष्ट्वा शान्तनवोब्रवीत् । नाद्यातीतामया शक्या भोगाः केचनमानुषाः ॥१३॥ अपक्रान्तो मनुष्येभ्यः शरशय्यां गतोह्यहम् । प्रतीक्षमाणस्तिष्ठामि निवृत्तिं शशि सूर्य्ययोः ॥ १४ ॥ एवमुक्त्वा शान्तनवो निन्दन् वाक्येन पार्थिवान् । अर्जुनं द्रष्टुमिच्छामीत्यभ्यभाषत भारत ॥१५॥अथोपेत्य महाबाहुरभिवाद्य पितामहम् · अतिष्ठत् प्राञ्जलिः प्रह्वः किंकरोमीति चाब्रवीत् ॥ १६॥ तंदृष्ट्वा पाण्डवं

शोभायमान भरतवंशियों की सभा ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि आकाश में सूर्य्य मंडल शोभित होताहै । ८ । गंगाजी के पुत्र की उपासना करनेवाले राजाओंकी यह सभा ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी की उपासना करने वाली देवसभा होती है । ९ । भरतवंशियों में श्रेष्ठ बाणों से पीड़ामान सर्प के समान श्वास लेते बाणों से पीड़ित शरीर और शस्त्रोंके प्रहार से मूर्छावान् भीष्मजी उन राजाओंको देखकर धैर्य्य से पीड़ाको सहकर यह वचन बोले कि हमारे लिये जल को लाओ । ११ । इसके पीछे उनक्षत्रियों ने चारों ओर से छोटे बड़े भोजन पात्र और शीतलजलके घटादिक पात्रों को मँगाया । १२ । भीष्मजी उसप्रकार से लाये हुए जलको देखकर बोले कि हे तात अबकोई मानुषी भोग मुझ से भोगानहीं जाता । १३ । मैं मनुष्यों से पृथक् बाणशय्यापर वर्त्तमान चन्द्रमा और सूर्य्य के लौटने की बाट देखता हुआ नियतहूं । १४ । हे धृतराष्ट्र भीष्मजी इस प्रकार से कहकर अपने मुखसे राजाओं की निन्दा करते हुए फिर बोले किमैं अर्जुन को देखा चाहता हूं । १५ । इन के पीछे महाबाहु अर्जुन पितामहके समीप दण्डवत् पूर्व्वक आकर बड़ीनम्रतासे झुका हुआ नियत हुआ और हाथ जोड़ कर

The assembly of kings adoring Bhishm the son of Ganga, looked glorious like the assembly of gods adoring Brahma. Best of the descendants of Bharat, wounded by arrows, sighing like a serpent on account of the wounds of arrows and insensible on account of the wounds of other weapons, Bhishm, looking at the assemblage of kings and bearing the pangs with patience, said, "Fetch me water to drink."11. Those kshatryas brought large and small vessels full of cold water; but Bhishm casting his eye on them, said, "I can no longer enjoy human things. I am lying on the bed of arrows separate from men and waiting for the change of the Sun's course." Having said this, Bhishm rebuked those kings, saying, "I wish to see Arjun." At this brave Arjun approached the grandfather bow-

राजमभिवाद्याग्रत स्थितम् । अभ्यभाषत धर्मात्मा भीष्मःप्रीतोधनञ्जयम् । १७ ॥
दह्यतीव शरीरं मे संवृतस्य तवेषुभिः । मर्माणि परिदूयन्ते मुखञ्च परिशुष्यति ॥ १८ ॥
वेदनार्त्तशरीरस्य प्रयच्छापो ममार्जुन । त्वंहि शक्तो महेष्वास दातुमापो यथाविधि
॥ १९ ॥ अर्जुनस्तु तथेत्युक्त्वा रथमारुह्य वीर्यवान् । अधिज्यं बलवत् कृत्वा गांडीवं
व्याक्षिपद्धनुः ॥ २० ॥ तस्य ज्यातलनिर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशनेः । वित्रेसुः सर्वभूतानि
सर्वे श्रुत्वाच पार्थिवाः ॥ २१ ॥ ततः प्रदक्षिणंकृत्वा रथेन रथिनांवरः । शयानं भरत
श्रेष्ठं सर्वशस्त्रभृतांवरम् ॥२२॥ सन्धाय च शरं दीप्तमभिमन्त्र्य स पाण्डवः । पर्जन्या
स्त्रेण संयोज्य सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ २३ ॥ अविध्यत् पृथिवीं पार्थः पार्श्वे भीष्मस्य

बोला कि मुझेक्या आज्ञाहोती है । १६ । फिर धर्मात्मा भीष्मजी बहुत प्रसन्न होके उसविनीत हाथजोड़े हुए वर्त्तमान संसारके धनादि संपत्तियों के विजय करने वाले अर्जुन को अपने सम्मुख खड़ा हुआ देखकर बोले । १७ । कि तेरे बाणोंसे भरा हुआ मेराशरीर जलरहा है और मर्मस्थलों में बड़ीपीड़ा है मुख सूखा जाता है १८ हे अर्जुन मुझ दुःख से पीड़ावान् को जलपिलादे हे बड़े धनुषधारी तूही बुद्धि के अनुसार जलदेने को समर्थ है । १९ । इतनी बातके सुनतेही उस पराक्रमी अर्जुन ने बहुत अच्छा ऐसा कहकर रथपर सवारहो बड़े पराक्रमी गांडीवधनुष को प्रत्यंचा युक्त करके बलसे खैंचा । २० । उसकी प्रत्यंचा का और धनुषकी टंकारका शब्द इन्द्रवज्रके समान था उस शब्दको सुनकर सब जीवधारी और राजालोग भयभीत होगये । २१ । तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने रथके द्वारा उसभरतर्षभ महाशस्त्र धारी सोतेहुए भीष्मजी की परिक्रमा करके धनुष पर प्रकाशवान अभिमंत्रित बाण को चढ़ाकर मेघ अस्त्र से संयुक्त करके सब लोगों के देखते हुए । २३ । भीष्मजी के दक्षिण ओर में पृथ्वी को बेधा उसके बेधतेही पृथ्वी में से निर्मल महा शुभ

ing and stood there with downcast head. Then with joined palms he said, "What is your wish?"16. Virtuous Bhishm, much pleased with the humble attitude of Arjun the conquer of the world and seeing him standing in his presence, said, "Full of thy arrows my body is burning and I feel much pain in the vital parts. My mouth is parched. Give me, distressed with pain as I am, water to drink. Thou alone, O great archer, canst supply me water by your wisdom!" At this Arjun said, "Very well" and mounting his chariot, he put string to the Gandiv bow of great strength and pulled it with great force. 20. The sound of his bow and bowstring was like that of the vajra of Indra causing fear to the kings as well as the other living beings. Then Arjun the best of charioteers having gone round the sleeping warrior Bhishm, the best of Bharats, put to his bow bright arrow and having inspired it with aphorism and united it with the weapon producing water, pierced with it the ground to

दक्षिणे । उत्पपात ततो धारा वारिणो विमलाशुभा ॥ २४ ॥ शीतस्यामृतकल्पस्य
दिव्यगन्धरसस्य च । अतर्पयत्ततः पार्थः शीतया जलधारया ॥ २५ ॥ भीष्मं कुरूणा
मृषभं दिव्यकर्म पराक्रमम् । कर्मणा तेन पार्थस्य शक्रस्येव विकुर्वतः ॥ २६ ॥ विस्मयं
परमं जग्मुस्ततस्ते वसुधाधिपाः । तत् कर्म प्रेक्ष्य बीभत्सोरतिमानुषविक्रमम् ॥ २७ ॥
संप्रावेपन्त कुरवो गावः शीतार्दिता इव । विस्मयाच्चोत्तरीयाणि व्याविध्यन् सर्वतो
नृपाः ॥ २८ ॥ शंखदुन्दुभिनिर्घोषस्तुमुलः सर्वतोऽभवत् । तृप्त शान्तनवश्चापि राजन्
बीभत्सुमब्रवीत् ॥ २९ ॥ सर्वपार्थिववीराणां सन्निधौ पूजयन्निव । नैतच्चित्रं महा
बाहो त्वयि कौरवनन्दन ॥ ३० ॥ कथितो नारदेनासि पूर्वर्षिरमितद्युते । वासुदेवसहाय
स्त्वंमहत् कर्म करिष्यसि ॥ ३१ ॥ यन्नोत्सहति देवेन्द्रः सह देवैरपि ध्रुवम् । विदुस्त्वां
निधनं पार्थ सर्वक्षत्रस्य तद्विदः ॥ ३२ ॥ धनुर्धराणामेकस्त्वं पृथिव्यांप्रवरो नृषु ॥ ३३॥

पवित्र जलकी धारा ऊपरकी ओर फुव्वारे के समान निकली । २४ । वहजल महाशीतल अमृत के समान दिव्य सुगन्धित और रससे भरा हुआ था उसशीतल जलकी धारा से अर्जुन ने कौरवों में श्रेष्ठ दिव्य कर्म और वलवाले भीष्मजी को तृप्तकरादिया इस के पीछे इन्द्रके समान अर्जुन के उसकर्म से । २६ । उनसब राजाओंको बड़ा आश्चर्य हुआ। अर्जुन के इस अमानुषी कर्म और वलको देखकर कौरवलोग ऐसे महाकंपायमानहुए जैसे कि शीतसे कंपायमान गौयें होती हैं राजा लोगों ने वड़े आश्चर्य से सब ओरको अपने २ दुपट्टोंको हिलाया । २८ । और सब ओरसे शंख दुन्दुभियों के कठिनशब्द हुये हे राजा उस जलसे तृप्तहुए भीष्म जी सब सूरवीर राजाओं के सम्मुख बड़ी प्रशंसा करके अर्जुन से यह वचन वोले कि हे महावाहु हे कौरवनन्दन यह तुममें आश्चर्य की वातनहीं है ।३०। हे वड़े तेजस्वी तुमको नारदजीने प्राचीन ऋषि वर्णन कियाहै तुम वासुदेवजीके संगहोकर वड़े २ कर्म करोगे ।३१। जिस कर्म के करनेको देवताओं समेत इन्द्रभी असमर्थ हैं वह तुम करसकोगे हे अर्जुन मुख्य वृत्तान्तके ज्ञातालोगोंने तुमको सब क्षत्रीकुलमात्र

the *right* of Bhishm within sight of all. As soon as the arrow pierced the ground, there came out of it a fountain of pure water, cold and sweet to the taste like nectar and sweet scented. With that fountain of cold water **Arjun** quenched the thirst of brave Bhishm. All the kings wondered at the Indra-like prowess of **Arjun**. The Kauravas trembled at the superhuman deed and strength of arms as cows shake by cold. The kings fluttered their cloths at the wonderful deed and loud peals of conchs and trumpets were heard on all sides. Satisfied by the drink, Bhishm praised Arjun's work in the presence of all the kings, saying, " It is not strange for you, joy of Kauravas.30. O glorious one, thou art spoken of as an ancient rishi by Narad and, accompanied by Varsudev, you will do great deeds. Thou canst do deeds impossible to Indra and other

मनुष्या जगति श्रेष्ठा· पक्षिणां पतगेश्वर । सरितां सागरः श्रेष्ठो गौर्वरिष्ठा चतुष्पदाम
॥ ३४ ॥ आदित्यस्तेजसां श्रेष्ठो गिरीणां हिमवान् वर । जातीनांब्राह्मणः श्रेष्ठ· श्रेष्ठस्त्व
मसि धन्विनाम् ॥ ३५ ॥ नवै श्रुतं धार्त्तराष्ट्रेण वाक्य मयोच्यमानं विदुरेण चैव।
द्रोणेन रामेण जनार्दनेन मुहुर्मुहु· सञ्जयेनापि चोक्तम् ॥ ३६ ॥ परीतबुद्धिर्हि विसंज्ञ
कल्पो दुर्योधनो न च तच्छ्रद्दधाति । स शेष्यते वै निहतश्चिराय शास्त्रातिगो भीम·
बलाभिभूत ॥ ३७ ॥ एतच्छ्रुत्वा तद्वचः कौरवेन्द्रो दुर्य्योधनो दीनमना बभूव। तमग्र
वीच्छान्तनवोभिवीक्ष्य निबोध राजन् भव गतिमन्यु ॥ ३८ ॥ दृष्टं दुर्य्योधनै तत्ते यथा
पार्थेन धीमता । जलस्य धारा जनिता शीतस्यामृतगन्धिनः ॥ ३९ ॥ एतस्य कर्त्ता

का निधनजानाहै । ३२ । तुम उत्तम धनुषधारियों में अद्वितीयहो और पृथ्वीके सब मनुष्योंमें तुम अत्यन्त श्रेष्ठहो इस संसार में मनुष्य सब से उत्तम है पक्षियोंमें गरुड़ श्रेष्ठ है । ३३ । नदियों में समुद्र श्रेष्ठ है पशुओं में गौ उत्कृष्टहै प्रकाशवानों में सूर्य्य श्रेष्ठ है पर्वतों में हिमालय जातियों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है इसी प्रकार तुम धनुष धारियों में श्रेष्ठ हो धृतराष्ट्रके पुत्र ने मेरा कहना वा विदुरजी द्रोणाचार्य्य परशुराम जी और श्रीकृष्णजी का जो कहना और वारंवार संजयका भी कहना नहीं सुना । ३५ । निश्चयकरके निर्बुद्धी और अचेतों के समान दुर्य्योधन उस कहनेपर श्रद्धा नहीं करता है वह शास्त्रके विपरीत कर्मकर्त्ता भीमसेनके बलसे हाराहुआ मरा हुआ बहुत काल तक सोवेगा । ३६ । कौरवोंका राजा दुर्य्योधन उनके इस वचनको सुनकर चित्त से उदास होगया इस को उदास देखकर भीष्मजी ने कहा कि हे राजा अबभी समझकर निरहंकारी होजाओ । ३७ । हे दुर्य्योधन तुमने यह देखा जैसे कि बुद्धिमान अर्जुन ने शीतल अमृतकेतुल्य सुगन्धियोंसे व्याप्त उत्तम जलकी धारा उत्पन्नकरी । ३८ । इसलोकमें इसकर्मकाकरने वाला दूसरा कोईमनुष्य नहीं है आग्नेय वारुण सौम्य वायव्य वैष्णव ऐन्द्र पाशुपति पारमेष्ठ्य

gods; those who know the reality, say that thou art the death of all kshatryas. You are matchless among warriors and are the best among men Man is foremost of all beings in this world; garur is foremost among birds; the Ocean is foremost among rivers; cow is the best of beasts; the sun holds the first place amongst luminaries; Himalyas amongst mountains, Brahmans among the four orders and you among the archers The son of Dhritrashtra disregarded my advice as well as that of Vidur, Dronacharya, Parashuram, Krishn and Sanjaya. 35 Surely, Duryodhan is foolish and unwise enough to disregard that advice. Doing deeds against the dictates of the Shastras, he will sleep long defeated and slain by Bhim" Duryodhan the prince of the Kauravas was displeased at these words and seeing him in that state Bhishm said, "Be wise even now O king, and give up self conceit. You have seen, Duryodhan, how Arjun

लोकेऽस्मिन् नान्यः कश्चन् विद्यते । आग्नेयंवारुणं सौम्यं वायव्यमथ वैष्णवम् ॥ ४० ॥ ऐन्द्रं पाशुपतं ब्राह्मं पारमेष्ठ्यं प्रजापतेः । धातुस्त्वष्टुश्च सवितुर्वैवस्वतमथापिवा ॥ ४१ ॥ सर्वस्मिन्मानुषे लोके वेत्त्येको हि धनञ्जयः । कृष्णो वा देवकीपुत्रो नान्यो वेदेह कश्चन ॥ ४२ ॥ अशक्यः पाण्डवस्तात युद्धे जेतुं कथंचन । अमानुषाणि कर्माणि तस्यैतानि महात्मनः॥४३॥तेनसत्त्ववता संख्ये शूराणाहवशोभिना। कृतिना समरेराजन सन्धिर्भवतु माचिरम् ॥ ४४ ॥ यावत् कृष्णो महाबाहुः स्वाधीनः कुरुसत्तम। तावत् पार्थेन शूरेण सन्धिस्ते तात युज्यताम् ४५ यावन्नतेचमू.सर्वाः शरैःसन्नतपर्वभि.र्नाश यत्यर्जुनस्तावत्संधिस्ते तावयुज्याताम् ॥४६॥ यावत्तिष्ठन्ति समरे हतशेषाः सहोदराः नृपाश्च बहवो राजंस्तावत् सन्धि. प्रयुज्यतां ॥ ४७ ॥ न निर्दहति ते यावत् क्रोधदृष्टे क्षणश्चमूम । युधिष्ठिरो रणे तावत् सन्धिस्ते तात युज्यताम् ॥ ४८ ॥ नकुलः सहदेवश्च

प्रजापत धाता त्वष्टा और सविता के अस्त्र और सौरि इन सब अस्त्रों को भी इस नर लोक में अकेला अर्जुनही जानता है वा देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी जानते हैं इनदोनों महापुरुषों के सिवाय इस लोक में दूसरा कोई नहीं जानता है । ४१ । हे तात युद्ध में इन पाण्डवों को देवता और असुर भी जीतनेको समर्थ नहींहैं जिस महात्मा के यह अमानुषी कर्म हैं हे राजा उस युद्धमें पराक्रमी शूरवीर युद्धमें शोभापाने वाले अर्जुनके साथ सन्धिकरने में विलम्ब मतकरो । ४३ । हे कौरवोत्तम जबतक महाबाहु श्रीकृष्णजी अपने स्वाधीन हैं तबतक शूरवीर अर्जुन के साथ तुमकोसन्धिकरलेना योग्य है । ४४ । हे तात जबतक अर्जुन गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से तेरी सब सेनाका नाश नहीं करे तबतक तुमको सन्धिकरलेना अत्यन्तही योग्यहै । ४५ । हे राजा जबतक युद्धमें मरनेसे शेष बचेहुए अपने निज बांधव लोग वा बहुतसे राजालोग नियतहैं तबतक सन्धिहोजाय और जबतक कि क्रोधसे अग्निरूप नेत्र युधिष्ठिर इस तेरी सेनाको भस्मनहीं करता है वा पाण्डव नकुल सहदेव और भीमसेन सब ओर से सेनाका नाशनहीं करें । ४८ । तबतक

the wise produced the fine fountain of water cold as nectar and full sweet scent, *None in this world can do it.* None in this world knows the use of the weapons of Agni, Varun, Som, Vayu, Vishnu, Indra, Pashupati, Parmeshthi, Prajapati, Dhata, Twashta, Savita and Surya except Arjun and Shree Krishn. 41. Even the gods and asurs are unable to conquer the Pandavas. You must have no hesitation in contracting peace with one who can do such superhuman deeds. Make peace with Arjun so long as Krishn is with us. You can make peace with Arjun so long as his arrows having hidden knots have not destruyed all your warriors .45. It is well to have peace so long as some of our kinsmon and many kings are alive and so long as Yndhishthir with his fiery eyes has not burnt your armies

भीमसेनश्च पाण्डवः । यावच्चत्वं महाराज नाशयन्ति न सर्वशः ॥ ४९ ॥ तावत्ते
पाण्डवैर्वीरैः सौहार्दं मम रोचते । युद्धं मदन्तमेवास्तु तात संशाम्य पाण्डवैः ॥ ५० ॥
एतत्तु रोचतां वाक्यं यदुक्तोसि मयानघ । एतत् क्षेममहं मन्ये तव चैव कुलस्यच
॥ ५१ ॥ त्यक्त्वा मन्युंव्युपशाम्य त्वं पार्थैः पर्य्याप्तमेतद्यत् कृतं फाल्गुनेन । भीष्मस्यां
तादस्तु वः सौहृदञ्च जीवन्तु शेषा. साधु राजन् प्रसीद ॥ ५२ ॥ राज्यस्यार्धं दीयतां
पाण्डवानामिन्द्रप्रस्थं धर्मराजोभियातु । मामित्रध्रुक् पार्थिवानां जघन्यः पापां कीर्त्तिं
प्राप्स्यसे कौरवेन्द्र ॥ ५३ ॥ ममावसानाच्छान्तिरस्तु प्रजानां संगच्छन्तां पार्थिवाः प्रीति
मन्तः । पिता पुत्रं मातुलं भागिनेयो भ्राता चैव भ्रातरं प्रैतु राजन् ॥ ५४ ॥ नचे देवं
प्राप्तकालं वचो मे मोहाविष्टः प्रतिपत्स्यस्यबुद्ध्या । तप्स्यस्यन्तेपतदन्ताः स्थ सर्वे सत्या

वीर पाण्डवों के साथ तेरी प्रीतिहोना मुझको अभीष्टहो हेतात मैं चाहताहूं कि यह महाभयंकर युद्ध मेरेही मरण पर्य्यन्तरहै तू अवश्य पाण्डवों से सन्धिकर । ४९ । इस बातको तू मनसे समझकर अंगीकारकर हे तात यह मैंने तुझको समझाया है यदि तू समझैगा तो तेरी और कुल के लोगोंकी कुशल अवश्य होगी । ५० । अहंकारको त्यागकरके पाण्डवों से सन्धिकर अर्जुनके इतने ही करनेको तू बहुत समझ भीष्मकेही मरणान्तसे तुम्हारी और पाण्डवोंकी प्रीतिहो यह बहुतश्रेष्ठहै इसी प्रीतिमें शेष बचेहुएक्षत्री बचजायँगे हे राजा मेरे इस कहनेपर प्रसन्नहोके पाण्डवों के आधे राज्यको देदो और धर्मराज राजा युधिष्ठिर इन्द्रप्रस्थको जाय हे कौरवेन्द्र तू मित्रोंसे शत्रुता करनेवाला राजाओंमें नीच मतहो नहीं तो पापरूपी अपकीर्त्तिको पावेगा । ५२ । मेरेनाश होने से प्रजाओं को सुखहो और प्रीति रखनेवाले राजा लोग परस्पर में मिलें हे तात पिता पुत्र से मामा भानजे से भाई भाई से आनन्द पूर्वक मिलें जो मोहसे भरेहुए निर्बुद्धितासे समय के अनुसार मेरेकहे हुए वचन को नहीं मानेगा तो अन्त में महादुःखों को पावेगा और सबकी एकसीही दशा है मैं इस बातको सत्यही कहता हूं । ५४ । गांगेय भीष्मजी राजाओंके मध्य में बड़ी

and the Pandavas Bhim, Nakul and Sahadev have not destroyed them. I like to see you united with the brave Pandavas. I shall be happy, if this war ends with my death. Be sure to make peace with the Pandavas. Act upon my advice; your welfare and that of your kinsmen depends upon it 50. Give up selfishness and make peace with 'the Pandavas. What Arjun has done is sufficient. Let Bhishma's death be the restoration of friendship between the Kauravas and the Pandavas. Thus the rest of the kshatryas will not die. Be pleased to give half the kingdom to the Pandavas. Take Prince Yudhishthir to Indraprasth. Prince of the Kauravas, donot achieve sinful notoriety among kings by incurring the reproach of meanness and making foes of friends. Let the people be happy with my death and the loving kings meet together. Let fathers

मेतां भारतीमीरयामि ॥५५॥ एतद्वाक्यसौहृदादापगेयो मध्ये राज्ञां भारतं श्रावयित्वा। तूष्णीमासीच्छल्यसन्तप्तमर्मा योज्यात्मानं वेदनां सन्नियम्य ॥ ५६ ॥ सञ्जय उवाच। धर्मार्थसहितंवाक्यं श्रुत्वा हितमनामयम्। नारोचयतपुत्रस्ते मुमूर्षु रिव भेषजम् ५७॥

इति महा० भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि त्रयविंशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ १२३ ॥

सञ्जय उवाच। ततस्ते पार्थिवाः सर्वे जग्मुः स्थानान्यपान् पुनः। तूष्णीं भूते महाराज भीष्मे शान्तनुनन्दने ॥ १ ॥ श्रुत्वा तु निहतं भीष्म राधेयः पुरुषर्षभः। ईषदागत सन्त्रासस्त्वरयोपजगामह ॥ २ ॥ स ददर्श महात्मानं शरतल्पगतं तदा। जन्मशय्यागतं वीरं कार्त्तिकेयमिव प्रभुम ॥ ३ ॥ निमीलिताक्षं तं वीरं साश्रुकण्ठस्तदा वृषः। भीष्मभीष्ममहाबाहो इत्युवाच महाद्युतिः ॥४॥ राधेयोहं कुरुश्रेष्ठ नित्यमक्षिगतस्तव। द्वेष्योहं तव सर्वत्र इति चैनमुवाचह ॥ ५ ॥ तच्छ्रुत्वा कुरुवृद्धोहि बलात्संवृतलोचनः

शुभचिन्तकतासे कौरवोंके राजा दुर्योधन को यहवचन सुनाकर भालोंसे पीड़ित अंगों के दुःखोंको सहकर मनबुद्धिको आत्मामें लयकरके मौन होगये ।५५। संजयबोले कि आपके पुत्रने धर्म अर्थ से संयुक्तहोकर प्रियकारी निर्दोष निरुपाधि वचनोंको सुनकर ऐसे स्वीकार नहीं किया जैसे कि सन्निकट मरनेवाला पुरुषवैद्यकी औषधीको नहीं अंगीकार करताहै ५६ ॥ अध्याय १२४ ॥

संजय बोले हे महाराज शंतनुके पुत्र भीष्मजीके मौनहोनेपरवह सब राजा लोग फिर अपने२ डेरोंकोगये ।१। पुरुषोत्तम कर्ण भीष्मजीको मृतकसुनकर कुछेकव्याकुलसाहोकर बड़ी शीघ्रतासे उनकेपासगया ।२।वहां उसने जब उसमहात्मा समर्थ शूर वीर जन्मशय्या पर वर्त्तमान स्वामिकार्तिकके समान शरशय्यापर नियत भीष्मजीको देखा ।३। तब अश्रुपातोंसे गद्गद कण्ठहोकर बड़ातेजस्वी कर्ण उस निमीलिताक्षने बोला हेमहाबाहु भीष्म हे कौरवोत्तम मैं राधाका पुत्र सदैव आपके नेत्रोंके आगेरहने वालाहूं हेसर्वज्ञ मैं आपकाद्वेषी हूं इन बातों को सुनकर बड़ेबलसे नेत्रों को खोलकर गांगेय भीष्मजीने अपने निवासस्थान को एकान्तरूप देखकर स्थानके रक्षकों को

meet sons, maternal uncles with sisters, sons and brothers with brothers. You will fall into deep misery, if you will not give ear to my advice and all others will suffer with you. I speak the truth:" Having said these words to Duryodhan the prince of the Kauravas, Bhishm suffering from the pangs of darts, became silent and fell in *meditation. Sanjaya says, "Your son heard those words full of wisdom* and profit, but did not accept them as a person about to die refuses to take medicine."56. CHAPTER XXIV

Sanjaya said, "When Bhishm the sun of Shantanu had become silent, all the kings went away to their respective tents. Karan the best of men, having heard of Bhishm's fall, came to him with a distressed mind. Seeing him on the bed of arrows, like Lord Kartikeya lying at his birth on his bed of reeds, glorious Karan with tears in his eyes and voice choked said to Bhishm whose eyes were closed, "Valliant Bhishm, best of the Kauravas, I am Radha's son who was always hateful

शनैरुद्वीक्ष्य सस्नेह मिदंवचनमब्रवीत् ॥६॥ रहितं धिष्ण्यमालोक्य समुत्सार्य्य च रक्षिणः
पितेवपुत्रं गांगेयः परिरभ्यैकपाणिना ॥ ७ ॥ एह्येहि मे विप्रतीपस्पर्धसेत्वं मयासह ।
यदिमांनाधिगच्छेथानते श्रेयोध्रुवं भवेत् ॥८॥ कौंतेयस्त्वं नराधेयो नतवाधिरथ पिता।
सूर्यजस्त्वं महाबाहो विदितो नारदान्मया ॥ ९ ॥ कृष्णद्वैपायनाच्चैव तच्चसत्यं न
संशयः । न च द्वेषोस्ति मे तात त्वयि सत्यं ब्रवीमिते ॥ १० ॥ तेजोवधनिमित्तन्तु परुष
त्वाहमब्रवं । अकस्मात्पाण्डवान्सर्वा नवाक्षिपसि सुव्रत ॥ ११ ॥ यनासि बहुशोराज्ञा
चोदितः सूतनंदन । जातोसि धर्मलोपेन ततस्ते बुद्धिरीदृशी ॥ १२ ॥ नीचाश्रयान्मत्स
रेण द्वेषिणी गुणिनामपि । तेनासि बहुशो रूक्षं श्रावित. कुरुसंसदि ॥ १३ ॥ जानामि
समरे वीर्यं शत्रुभिर्दुःसहं भुवि । ब्रह्मण्यता च शौर्यञ्च दानेच परमांस्थितिम् ॥१४॥
न त्वया सदृशः कश्चित् पुरुषेष्वमरोपम । कुलभेदभयाच्चाहं सदा परुषमुक्तवान्

उठाकर जैसे कि पिता पुत्रपर स्नेहकरताहै उसीप्रकारसे कर्णको एकहाथसे छातीके द्वारा मिलकर बड़े धीरे२ यहवचन बोले ।७। कि हे मेरेद्वेषी आओर तू मेरेसाथ ईर्षा करताहै जो तू मुझको नहीं मिलता तो निश्चयकरके तेराभला नहीं होता ।८। तू राधाका पुत्रनहींहै किन्तु कुन्तीकाही पुत्रहै और तेरापिता अधिरथीनहीं है सूर्य्यका पुत्र है यहभेद मुझको नारदजीने बताया है ।९। और व्यासजी वा केशवजीसेभी विदित हुआ इसमें किसी बातकाभी सन्देह नहीं है और यहबातभी मैं सत्य २ कहताहूं कि तेरेसाथ मेरी किसीप्रकारकी भी द्वेषता नहीं है ।१०। मैंने तेरे तेज नष्टहोने के लिये कठोर वचनकहे थे हे सुन्दरव्रतवाले कर्ण तू अकस्मात् सब पांडवोंको मारेगा। । ११ हेसूतनन्दन इसीकारणसे राजा दुर्य्योधन ने तुमको बारबार कहकर उद्युक्त किया है तू धर्मके यूपसे उत्पन्न हुआ है इसहेतुसे तेरी ऐसी बुद्धि है । १२। गुणवान् मनुष्यों की बुद्धिभी नीचों के संगसे वा ईर्षासे द्वेप करनेवाली होजाती है इसीहेतुसे कौरवों की सभामें बहुधा कठोर वचन सुनेगये १३ मैं युद्धमें तेरे पराक्रमको पृथ्वी भर के भी शत्रुओंसे असह्य जानताहूं और वेद ब्राह्मण की रक्षाकरने में शूरतामें और दान में तेरी बड़ी दृढ़ताको जानताहूं ।१४। मनुष्यमात्रों में तेरेसमान देवताओं के समान

in your sight." At this Bhishm opened his eyes with great exertion and seeing his habitation deserted, he ordered the guards to move away, and as a father loves a son, he embraced Karan with one arm at

॥ १५ ॥ इष्वस्त्रे चास्त्रसन्धाने लाघवेस्त्रबले तथा । सदृशः फाल्गुनेनासि कृष्णे नचमहात्मना ॥ १६ ॥ कर्ण काशिपुरं गत्वा त्वयैकेनधनुष्मता । कन्यार्थे कुरुराजस्य राजानो मृदितायुधि ॥ १७ ॥ तथा च बलवान् राजा जरासन्धो दुरासदः । समरे समरश्लाघिन्त्वत्तया न सदृशोभवत् ॥ १८ ॥ ब्रह्मण्य सत्यवादीच तेजसा च बलेनच । देवगर्भसमः संख्ये मनुष्यैरधिको युधि ॥ १९ ॥ व्यपनीतोद्य मन्युर्मे यस्त्वां प्रति पुराकृतः । दैवं पुरुषकारेण न शक्यमतिवर्त्तितुम् ॥ २० ॥ सोदर्य्याः पाण्डवावीरा भ्रातरस्तेऽरिसूदन । सङ्गच्छतैर्महाबाहो ममचेदिच्छसिप्रियम् ॥ २१ ॥ मयाभवतुनिर्वृत्तं वैरमादित्यनन्दन । पृथिव्यांसर्वराजानो भवन्त्वद्यानिरामया ॥ २२ ॥ कर्ण उवाच । जानाम्येव महाबाहो सर्वमेतन्न संशयः । यथावदसिमेभीष्म कौन्तेयोहंनसूतजः ॥२३॥ अवकीर्णस्त्वहंकुन्त्या

पराक्रमी कोई नहीं है मैंने कुलकी द्वेषताके भयसे सदैव कठोरवचन कहे ।१५। बाण और अस्त्रोंके चलानेमें और हस्तलाघवतामेंवा अस्त्रबलमें तू महात्मा श्रीकृष्णजी और अर्जुन के समान है । १६ । हे कर्ण तुझ अकेले धनुषधारी ने काशीपुरी में जाकर कुरुराजकी कन्याके निमित्त बड़े२ राजाओंका युद्धमें मर्दन किया ।१७। इसीप्रकार पराक्रमी और दु:खसे विजयहोनेवाला कीर्तिमान् राजाजरासन्ध युद्धमें तेरेसमान नहीं हुआ ।१८। तुम वेद और ब्राह्मणोंकी रक्षाकरनेवाले अपने तेज बलसे युद्धकरनेवाले देवगर्भके समान युद्धमें मनुष्यों से अधिकहो ।१९। अब वह मेराक्रोध दूरहुआ जो पूर्वसमय में मैंने तुझपर कियाथा दैवी बातको अर्थात् होनहारको कोईभी उपायोंसे उल्लंघन नहीं करसक्ता २०। हे शत्रुहन्ता यह वीर पांडव तेरेसगेभाई हैं हे महाबाहु जो तू मेरा हित चाहताहै तो उन से मिलापकर।२१। हे सूर्यनन्दन अब तू मेरेकहनेसे शत्रुताको त्यागकर जिससे कि पृथ्वी के सबराजालोग निर्विघ्नहों ।२२। कर्ण ने कहा हे महाबाहु भीष्मजी मैं यह निस्सन्देह सबप्रकारसे जानताहूं कि मैं कुन्ती का पुत्रहूं परन्तु मुझे कुन्ती ने त्यागकर दिया तब सूत ने मेरा पोषण किया इस से

reason why you spoke harsh words in the camp of the Kauravas. I know that thy prowess is unbearable by all thy foes. I know also thy regard for Brahmans, thy courage and thy attachment to alms giving. O godlike man, thou art matchless From fear of dissentions I always spoke ill of thee. In bowmanship, in the use of weapons in lightness of hand and in the strength of arms thou art a match for Arjun or Krishn. At Kashi you alone crushed all the kings to fetch a bride to the king of Kurus. Even king Jarasandh of great prowess could not withstand thee You are the protector of the Vedas and Brahmans and like the progeny of gods you are above men in the field of battle. All my former anger against you is subsided, but none can overstep Fate by worldly means. 20. The brave Pandavas, O destroyer of foes, are your own brothers Mix with them if you would please me Take my advice and leave the side of the enemy so that all the princes of the world may not be destroyed." To this Karan made the following reply—"I know well that I am Kunti's son and not

शनैरुद्वीक्ष्य सस्नेह मिदंवचनमब्रवीत् ॥६॥ रहितं धिष्ण्यमालोक्य समुत्सार्य्य च रक्षिणः
पितेवपुत्रं गांगेय. परिरभ्यैकपाणिना ॥ ७ ॥ एह्येहि मे विप्रतीपस्पर्धसत्वं मयासह ।
यदिमांनाधिगच्छेथास्ते श्रेयोध्रुवं भवेत् ॥ ८ ॥ कौंतेयस्त्वं नराधेयो नतवाधिरथ पिता।
सूर्यजस्त्वं महाबाहो विदितो नारदान्मया ॥ ९ ॥ कृष्णद्वैपायनाच्चैव तच्चसत्यं न
संशयः । न च द्वेषोस्ति मे तात त्वयि सत्यं ब्रवीमिते ॥ १० ॥ तेजोवधनिमित्तन्तु परुष
स्त्वाहमब्रवं । अकस्मात्पाण्डवान्सर्वा नवाक्षिपसि सुव्रत ॥ ११ ॥ यनासि बहुशोराजा
चोदितः सूतनंदन । जातोसि धर्मलोपेन ततस्ते बुद्धिरीदृशी ॥ १२ ॥ नीचाश्रयान्मत्स
रेण द्वेषिणी गुणिनामपि । तेनासि बहुशो रूक्षं श्रावितः कुरुसंसदि ॥ १३ ॥ जानामि
समरे वीर्यं शत्रुभिर्दुःसहं भुवि । ब्रह्मण्यता च शौर्यञ्च दानेच परमांस्थितिम् ॥१४॥
न त्वया सदृशः कश्चित् पुरुषेष्वमरोपम । कुलभेदभयाच्चाहं सदा परुषमुक्तवान्

उठाकर जैसे कि पिता पुत्रपर स्नेहकरताहै उसीप्रकारसे कर्णको एकहाथसे छातीके द्वारा मिलकर बड़े धीरे२ यहवचन बोले ।७। कि हे मेरेद्वेषी आओ२ तू मेरेसाथ ईर्षा करताहै जो तू मुझको नहीं मिलता तो निश्चयकरके तेराभला नहीं होता ।८। तू राधाका पुत्रनहींहै किन्तु कुन्तीकाही पुत्रहै और तेरापिता अधिरथीनहीं है सूर्य्यका पुत्र है यहभेद मुझको नारदजीने बताया है ।९। और व्यासजी वा केशवजीसेभी विदित हुआ इसमें किसी बातकाभी सन्देह नहीं है और यहबातभी मैं सत्य २ कहताहूं कि तेरेसाथ मेरी किसीप्रकारकी भी द्वेषता नहीं है ।१०। मैंने तेरे तेज नष्टहोने के लिये कठोर वचनकहे थे हे सुन्दरव्रतवाले कर्ण तू अकस्मात् सब पांडवोंको मारेगा। । ११।
हेसूतनन्दन इसीकारणसे राजा दुर्य्योधन ने तुमको वारवार कहकर उद्युक्त किया है तू धर्मके लोपसे उत्पन्न हुआ है इसहेतुसे तेरी ऐसी बुद्धि है ।१२। गुणवान् मनुष्यों की बुद्धिभी नीचों के संगसे वा ईर्षासे द्वेष करनेवाली होजाती है इसीहेतुसे कौरवों की सभा में बहुधा रूखे२ वचन सुनेगये १३ मैं युद्धमें तेरे पराक्रमको पृथ्वी भर के भी शत्रुओंसे असह्य जानताहूं और वेद ब्राह्मण की रक्षाकरने में शूरतामें और दान में तेरी बड़ी दृढ़ताको जानताहूं ।१४। मनुष्यमात्रों में तेरेसमान देवताओं के समान

in your sight." At this Bhishm opened his eyes with great exertion and seeing his habitation deserted, he ordered the guards to move away, and as a father loves a son, he embraced Karan with one arm and said these words very slowly:—"Come my opponent and adversary. Certainly it would not be well for thee if you had not come to me. You are the son of Kunti and not of Radha; your father is Surya and not the chariot driver. I have got this information from Narad. Vyas and Keshav too, know this and there is no doubt about it. I tell you truly that I bear no enmity against you. 10. I said harsh words in order to deprive thee of thy zeal and that you may not destroy all the Pandavas at once. It is why Prince Duryodhan instigates you again and again. You came into this world in a sinful way and therefore thy heart is so inclined. Even good men may lean towards wickedness by the society of bad men and this was the

॥ १५ ॥ इष्वस्त्रे चास्त्रसन्धाने लाघवेस्त्रबले तथा । सदृशः फाल्गुनेनासि कृष्णे नचमहात्मना ॥ १६ ॥ कर्ण काशिपुरं गत्वा त्वयैकेनधनुष्मता । कन्यार्थे कुरुराजस्य राजानो मृदितायुधि ॥ १७ ॥ तथा च बलवान् राजा जरासन्धो दुरासदः । समरे समरश्लाघिन्त्वया सदृशोभवत् ॥ १८ ॥ ब्रह्मण्य सत्ययोधीच तेजसा च बलेनच । देवगर्भसमः संख्ये मनुष्यैरधिको युधि ॥ १९ ॥ व्यपनीतोद्य मन्युर्मे यस्त्वां प्रति पुराकृत । दैवं पुरुषकारेण न शक्यमतिवर्तितुम् ॥ २० ॥ सोदर्य्या पाण्डवाशीरा भ्रातरस्तेऽरिसूदन । सङ्गच्छतैर्महाबाहो ममचेदिच्छसिप्रियम् ॥ २१ ॥ मयाभवतुनिर्वृत्तं वैरमादित्यनन्दन । पृथिव्यांसर्वराजानो भवन्त्वद्यनिरामयाः ॥ २२ ॥ कर्ण उवाच । जानाम्येव महाबाहो सर्वमेतन्न संशयः । यथावदसिमेभीष्म कौन्तेयोहंनसूतज ॥२३॥ अवकीर्णस्त्वहंकुन्त्या

पराक्रमी कोई नहीं है मैंने कुलकी द्वेषताके भयसे सदैव कठोरवचन कहे ।१५।शस्त्र और अस्त्रोंके चलानेमें और हस्तलाघवतामें वा अस्त्रबलमें तू महात्मा श्रीकृष्णजी और अर्जुन के समान है । १६ । हे कर्ण तुझ अकेले धनुषधारी ने काशीपुरी में जाकर कुरुराजकी कन्याके निमित्त बड़े२ राजाओंका युद्धमें मर्दन किया ।१७। इसीप्रकार पराक्रमी और दुःखसे विजयहोनेवाला कीर्तिमान् राजाजरासन्ध युद्धमें तेरेसमान नहीं हुआ ।१८। तुम वेद और ब्राह्मणोंकी रक्षाकरनेवाले अपने तेज बलसे युद्धकरनेवाले देवगर्भके समान युद्धमें मनुष्यों से अधिकहो ।१९। अब वह मेराक्रोध दूरहुआ जो पूर्वसमय में मैंने तुमपर कियाथा दैवी बातको अर्थात् होनहारको कोईभी उपायोंसे उल्लंघन नहीं करसक्ता २०। हे शत्रुहन्ता यह वीर पांडव तेरेसगेभाई हैं हे महाबाहु जो तू मेरा हित चाहताहै तो उन से मिलापकर।२१। हे सूर्य्यनन्दन अब तू मेरेकहनेसे शत्रुताको त्यागकर जिससे कि पृथ्वी के सबराजालोग निर्विघ्नहों ।२२। कर्ण ने कहा हे महाबाहु भीष्मजी मैं यह निस्सन्देह सबप्रकारसे जानताहूं कि मैं कुन्ती का पुत्रहूं परन्तु मुझे कुन्ती ने त्यागकर दिया तब सूत ने मेरा पोषण किया इस से

reason why you spoke harsh words in the camp of the Kauravas. I know that thy prowess is unbearable by all thy foes. I know also *thy regard for Brahmans, thy courage and thy attachment to alms giving* O godlike man, thou art matchless From fear of dissentions I always spoke ill of thee In bowmanship, in the use of weapons in lightness of hand and in the strength of arms thou art a match for Arjun or Krishn. At Kashi you alone crushed all the kings to fetch a bride to the king of Kurus. Even king Jarasandh of great prowess could not withstand thee You are the protector of the Vedas and Brahmans and like the progeny of gods you are above men in the field of battle. All my former anger against you is subsided, but none can overstep Fate by worldly means. 20. The brave Pandavas, O destroyer of foes, are your own brothers Mix with them if you would please me Take my advice and leave the side of the enemy so that all the princes of the world may not be destroyed" To this Karan made the following reply—"I know well that I am Kunti's son and not

सूतेन च विवर्धितः । भुक्त्वा दुर्य्योधनैश्वर्यं न मिथ्याकर्त्तुमुत्सहे ॥ २४ ॥ वसुदेवसुतो यद्वत्पाण्डवायदृढव्रतः । वसुचैव शरीरञ्च पुत्रदारांस्तथायशः ॥ २५ ॥ सर्वंदुर्य्योधनस्यार्थे त्यक्तंमे भूरिदक्षिण । माचैतद्व्याधिमरणं क्षत्रंस्यादिति कौरव ॥ २६ ॥ कोपिताः पांडवानित्यंसमाश्रित्य सुयोधनम् । अवश्यभावीह्यर्थोयं योनशक्योनिवर्तितुम् ॥ २७॥ दैवं पुरुषकारेणको निवर्त्तितुमुत्सहेत् । पृथिवीक्षयशंसीनि निमित्तानिपितामह ॥ २८ ॥ भवद्भिरुपलब्धानि कथितानिच संसदि । पाण्डवावासुदेवश्च विदितामनसर्वशः ॥२९॥ अजेयाःपुरुषैरन्यैरिति तांश्चोत्सहामहे । विजयिष्येरणे पाण्डू नितिमेनिश्चितंमनः ॥३०॥ नचशक्यमवसृष्टुं वैरमेतत्सुदारुणम् । धनञ्जयेनयोत्स्येहं स्वधर्मप्रीतमानसः ॥ ३१ ॥ अनुजानीष्वमांतात युद्धायकृतनिश्चयम् । अनुज्ञातस्त्वया वीरयुध्येयमिति मे मतिः ३२॥

दुर्य्योधनके ऐश्वर्यको भोगकर उसको निष्फलकरना मैं उचित नहीं समझता हूं जैसे कि वसुदेव जीके पुत्र श्रीकृष्णजी पांडवों के निमित्त दृढ़ व्रतवाले हैं उसीप्रकार मैंने भी ।२५। धन जन पुत्र स्त्री परिवार और कीर्त्ति दुर्य्योधनके निमित्त विचारकर लिये हैं हे बड़ी दक्षिणावाले कौरव कुल क्षत्री में रोगादिकों से मरना योग्य नहीं समझताहूं । २६ । मैंने दुर्य्योधन के आश्रय में होकर पांडवों को सदैव क्रोधित किया है और होतव्यता है वह तो अवश्यही होगी उसका मिटाने वाला कोई भी नहीं है कौन सा मनुष्य होनहारको उपायोंके द्वारा लौटा सक्ताहै हेपितामह संसारके मनुष्योंके नाशकारी चिह्न आपलोगोंने देखेहैं और सभामें वर्णन किये पांडव और वासुदेवजी सब प्रकारसे मेरे जाने हुए हैं ।२९। वह अन्य मनुष्य से अजेय हैं परन्तु उत्साह पूर्व्वक कहताहूं कि मैं उन पांडवों को विजय करूंगा यह मेरे चित्तका निश्चय है ।३०। जोकियह महा भयकारी शत्रुता त्यागकरने के योग्य नहीं है इस कारण अपने धर्ममें प्रसन्न चित्त होकर मैं अर्जुनसे लड़ूंगा।३१। हे तात युद्धके निमित्त तुम्हीं निश्चय करके मुझको आज्ञादो आपकीही आज्ञा से मैं युद्ध करूं यही मैं चाहता हूं ।३२। और जो मैंनेनि-

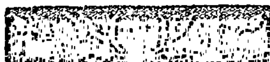
of the Sut. But he brought me up when I was deserted by Kunti and, having enjoyed Duryodhan's wealth, I donot like to desert him. All my wealth, sons, wives will I sacrifice for the good of Duryodhan and shall be as faithful to him as Krishn is to the Pandavas. Being born a kashtrya I donot like to die of sickness or other causes. Being attached to Duryodhan I have always looked down upon the Pandavas. Fate will have her course; none can undo her works. You have seen, O gradfather, the signs destructive of the world and have spoken of them in the assembly. I know that the Pandav (Arjun) and Vasudev are invincible and yet I aspire to conquer them. I am resolved to do this. 30. I shall fight against Arjun because I donot like to set aside this great enmity. I ask your own permission to fight, and it is the desire of my heart that I should fight with your consent I ask your pardon for all the harsh words which I ever uttered." At this Bhishm said.

गुरुष्वंधिमतीपंथा त्वमसाधापलापतथा। यन्मयेहकृतं किञ्चित्तन्मेत्वं क्षन्तुमर्हसि ॥३३॥ भीष्म उवाच। न चेच्छक्यमथस्त्रं वैरमेतत्सुदारुणम्। अनुजानामि कर्णत्वांयुद्धयस्व स्वर्गकाम्यया ॥ ३४ ॥ निर्मन्युर्गतसंरम्भः कृतकर्मारणेस्मह। यथाशक्तियथोत्साहंसतां वृत्तेषुवृत्तवान् ॥ ३५ ॥ अहंत्वामनुजानामि यदिच्छसि तदाप्नुहि। क्षत्रधर्मजितान् लोकानवाप्स्यसि धनञ्जयात्॥३६॥युध्यस्वनिरहङ्कारो बलवीर्यव्यपाश्रयः। धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते ॥३७॥ प्रशमेहि कृतोयत्नः सुमहान् सुचिरंमया। न चैवशकितः कर्तुं कर्ण सत्यं ब्रवीमिते ॥ ३८ ॥ सञ्जय उवाच। इत्युक्तवति गाङ्गेये अभिवाद्योपमंत्र्यच। राधेयो रथमारुह्य प्रायात्तव सुतंप्रति ॥ ३९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मकर्णसमागमे
चतुर्विंशत्यधिकशततोऽध्यायः ॥ १२४ ॥
समाप्तञ्चेदम्भीष्मपर्व।

युद्धिता व चपलता से अत्यन्त बुरी ३ विपरीत वार्त्ता करी आप उन मेरे कठोर वचनों को क्षमा करनेके योग्य हैं।३३। भीष्मजी बोले कि जो यह अत्यन्त भय उत्पन्न करने वाली शत्रुता त्याग करनेके योग्य नहीं है तो हे कर्ण मैं तुमको आज्ञा देताहूं कि स्वर्ग की इच्छासे तू युद्धकर।३४। क्रोध अहंकार से रहित बल और साहसके अनुसार युद्धमें क्षमा करनेवाला शक्ति और उत्साह के समान सतलोगोंकी वृत्ती करे ३५। मैं तुमको आज्ञादेताहूं और जोतू चाहता है उसको मांसहो क्षत्रीधर्मसे पराजय पानेवाले निस्सन्देह उत्तम लोकोंको पातेहैं।३६। अहंकार रहित बलिष्ठ अपनी सामर्थ्य के आश्रय में रहने वाले को धर्मयुद्धके सिवाय क्षत्री का कल्याण करनेवाला दूसरा कोई भी धर्म नहीं है।३७।अर्थात् बहुतकाल तक सन्धिमें बहुतसा उपाय किया परन्तु करने को समर्थ नहीं हुआ हे कर्ण यह तुझमें सत्यही सत्य कहता हूं।३८। संजय बोले कि गांगेय भीष्मजी के इस प्रकार कहने पर राधाका पुत्र कर्ण दण्डवत् पूर्वक अत्यन्त स्तुतिकर रोता हुआसा अपने रथपर सवारहोकर आपके पुत्रके पास आया ३९॥

" If you donot like to withdraw yourself from war, I give you permission to fight for the sake of heaven. Purge thyself of anger and selfishness and be brave and forgiving in battle. Do as you like I give you permission. Even the conquered in war gain good regions.36. Free from pride, powerful and self relying men have no other duty than war. I always tried to have peace but all my efforts were in vain. I speak the truth, Karan." Sanjaya said that on hearing the words of Bhishm the son of Ganga, Karan bowed down to him with tears in his eyes and took leave of him. He then mounted his chariot and came back to Duryodhan. 39.



CONTENTS OF BHISHM PARVA.